القرآن الكريم

सच्चा इस्लाम

हिंदी अनुवाद



सामग्री

अल फतहिह 1
अल Baqarah 2
अली इमरान 39
एक-नसिा 61
अल-मदैाह 84
अल-अनआम 101
अल-आराफ़ 120
अल Anfal 142
एट-तौबाह 151
जोनाह 167
कनटोप 179
यूसुफ़ 192
अर-रअद 204
इब्राहमि 210
अल-हजि़र 216
एक Nahl 223
अल-इसरा 236
अल Kahf 247
मरयम 258
टा-हा 266
अल Anbiya 277
अल हज 286
अल-Mu'minun 295
एक-नूर 304
अल-Furqan 312
ऐश-शअुरा 319
अन-नमल 333
अल-क़सस 341
अल-अंकबतु 351
अर-रम 358
लकु़मान 364
क रेप्ल मे-Sajdah 368
अल-अहज़ाब 371
साबा 380
फातरि 386
हा-सनि 392
क रेप्ल मे-Saffat 398

दख़द 408
अज़-ज़ुमर 415
ग़ाफिर 423
उधम मचाना 431
राख शूरा 437
अज़-ज़ुख़रुफ़ 443
वज़िआपन इख़ान 450
अल-जथियाह 454
अल Ahqaf 458
महुमम्द 462
अल-फतह 466
अल-Hujurat 470
कफ़ 473
अध-धारयात 477
एट-Tur 481
एक-नाज़म 485
अल कमर 489
उपकारी 493
अल-Waqi'ah 498
अल हादीद 503
अल-Mujadilah 507
अल हश्र 510
अल-Mumtahanah 513
अस-सफ्फ 516
अल- जमुा 518
अल Munafiqun 520
अत-तगाबनु 522
अत-तलाक 524
एट-Tahrim 526
अल-मलुक 528
अल Qalam 531
अल-Haqqah 535
अल-Ma'arij 539
नहू 542
अल जनि्न 544
अल-मज़ुज़म्मलि 547
अल-Muddaththir 549
अल-Qiyamah 553
अल-इंसान 556
अल-Mursalat 559

एक-नव 562
एक-Nazi'at 565
अबासा 568
अत-तकवरि 571
अल-इनफ़तिार 573
अल-Mutaffifin 575
अल-इंशकिाक 578
अल-बरुज 580
एट-तारकि 582
अल-ए' ला 584
अल-ग़शियिाह 586
अल-फजर 588
अल-बलाद 590
ऐश-शमेस 592
अल-layl 593
वजिज़ापन-दह्हा 595
ऐश-Sharh 596
पर टनि 597
अल-'Alaq 598
अल-कादर 600
अल-Bayyinah 601
अज़-ज़लज़लाह 602
अल-'adiyat 603
अल-Qari'ah 604
अत-तकाथरु 605
अल-असर 606
अल Humazah 607
अल-फ़लि 608
करुशै 609
अल-माउन 610
अल-कौथर 611
अल-काफ़रिनु 612
एक-नसर 613
अल-मसदद 614
अल इखलास 615
अल-फलक 616
एक-नसै 617

छंदों की संख़्या	اَلْفَاتِحَة	مكية
७	अल फतहिाह - 1	मक्की

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल फतहिाह (उद्घाटन)

1	अल्लाह क॓नाम स॓, जो अत्यंत दयाल॒, अत्यंत कृपाशील ह॑ै	بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
2	सारी प्रशंसा अल्लाह क॓लिए ह॑ै, जो सार॓ वशि्व का पालनहार ह॑ै	اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ
3	जो अत्यंत दयाल॒, अत्यंत कृपाशील ह॑ै	الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
4	प्रतशिोध क॓दनि का स्वामी।	مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ
5	हम कवेल तझु॑ी की उपासना करत॓ ह॑ै और कवेल तझु॑ी स॓ सहायता माग॓ँत॓ ह॑ै	اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ
6	हम॑ै सीधा मार्ग दखि्रा।	اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ
7	उन लोगों॑ का मार्ग जनि्ह॑ै तनू॓ कृपा प्रदान की; न कि॑ उन लोगों॑ का (मार्ग) जनि पर तरे॓ प्रकोप हुआ, और न ही उन लोगों॑ का जो पथभ्रष्ट हुए।	صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

छंदों की संख्या	اَلْبَقَرَة	مدنية
२८६	अल Baqarah - 2	मदनी

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल Baqarah (गाय)

1	अलफि लाम मीम।	الٓمّٓ
2	यह कतािब (अल-कुआन) ऐसी ह ैजसिम ेकोई संदहे नहीं ह;ै यह उन लोगों के लिए मारग़दर्शन ह ैजो डरत ेह ै(अल्लाह स)े,	ذٰلِكَ الْكِتٰبُ لَا رَيْبَ فِيْهِ هُدًى لِّلْمُتَّقِيْنَ
3	(अर्थात) व ेलोग जो ग़बै (अदृश्य) पर वशि्वास करत ेह,ै नमाज़ कायम करत ेह,ै और उस रज़िक़ (जीवकिा) का कछु हसि्सा खर्च करत ेह ैजो हमन ेउनह ैदयिा,	الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِالْغَيْبِ وَيُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ
4	और व ेलोग जो उस (अल-कुआन) पर वशि्वास करत ेह ैजो तमु (मुहम्मद) पर उतारा गया और जो कतािब ेतमुस ेपहल ेउतारी गई, और व ेआखरित (परलोक) क ेप्रतयिकीन रखत ेह।ै	وَالَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ وَمَآ اُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ وَبِالْاٰخِرَةِ هُمْ يُوْقِنُوْنَ
5	वही ह ैजो अपन ेरब स ेमारग़दर्शन प्राप्त करत ेह,ै और वही लोग सफल ह।ै	اُولٰٓئِكَ عَلٰى هُدًى مِّنْ رَّبِّهِمْ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ
6	नशि्चय ही, जो लोग काफरि ह,ै उनक ेलिए एक समान ह,ै चाह ेतमु (मुहम्मद) उनह ैचेतावनी दो या न दो, व ेवशि्वास नहीं करगे।	اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا سَوَآءٌ عَلَيْهِمْ ءَاَنْذَرْتَهُمْ اَمْ لَمْ تُنْذِرْهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ
7	अल्लाह न ेउनक ेदलिों और उनक ेकानों को बंद कर दयिा ह,ै उनकी आँखों पर परदा पड़ा ह,ै और उनक ेलिए भारी सजा होगी।	خَتَمَ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ وَعَلٰى سَمْعِهِمْ وَعَلٰٓى اَبْصَارِهِمْ غِشَاوَةٌ وَّلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ
8	और कछु लोग ऐस ेह ैजो कहत ेह,ै 'हम अल्लाह और आखरिी दनि पर वशि्वास करत ेह,ै' जबकि वास्तव म ेव ेवशि्वास करन ेवाल ेनहीं ह।ै	وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّقُوْلُ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَبِالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَمَا هُمْ بِمُؤْمِنِيْنَ
9	व ेअल्लाह और वशि्वास करन ेवालों को धोखा दते ेह,ै जबकि व ेकवेल अपन ेआप को धोखा द ेरह ेह,ै और उनह ैइसका एहसास नहीं ह।ै	يُخٰدِعُوْنَ اللّٰهَ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَمَا يَخْدَعُوْنَ اِلَّآ اَنْفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُوْنَ
10	उनक ेदलिों म ेबीमारी ह,ै और अल्लाह न ेउनकी बीमारी को और बढ़ा दयिा, और उनह ैउनक ेझठू बोलन ेके कारण दरदनाक सजा मलिगेी।	فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ فَزَادَهُمُ اللّٰهُ مَرَضًا وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ بِمَا كَانُوْا يَكْذِبُوْنَ
11	और जब उनस ेकहा जाता ह,ै 'धरती पर बगिाड़ न करो,' तो व ेजवाब दते ेह,ै 'हम तो कवेल सधुार करन ेवाल ेह।ै'	وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ لَا تُفْسِدُوْا فِى الْاَرْضِ قَالُوْٓا اِنَّمَا نَحْنُ مُصْلِحُوْنَ

12	सावधान रहो, वास्तव में वही लोग बिगाड़ करने वाले हैं, लेकिन उन्हें इसका एहसास नहीं हो	اَلَآ اِنَّهُمْ هُمُ الْمُفْسِدُوْنَ وَلٰكِنْ لَّا يَشْعُرُوْنَ
13	और जब उनसे कहा जाता है, 'विश्वास करो जैसे अन्य लोगों ने विश्वास किया,' तो वे जवाब देते हैं, 'क्या हम उन मूर्खों की तरह विश्वास कर जो विश्वास करते हैं?' सावधान रहो, वास्तव में वही मूर्ख हैं, लेकिन वे नहीं जानते।	وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ اٰمِنُوْا كَمَآ اٰمَنَ النَّاسُ قَالُوْٓا اَنُؤْمِنُ كَمَآ اٰمَنَ السُّفَهَاۤءُ اَلَآ اِنَّهُمْ هُمُ السُّفَهَاۤءُ وَلٰكِنْ لَّا يَعْلَمُوْنَ
14	और जब वे विश्वास करने वालों से मिलते हैं, तो कहते हैं, 'हमने विश्वास किया।' लेकिन जब वे अपने शैतानों (नेताओं) के पास लौटते हैं, तो कहते हैं, 'निश्चय ही हम तुम्हारे साथ हैं, हम तो केवल मज़ाक कर रहे थे।'	وَاِذَا لَقُوا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قَالُوْٓا اٰمَنَّا ۚ وَاِذَا خَلَوْا اِلٰى شَيٰطِيْنِهِمْ ۙ قَالُوْٓا اِنَّا مَعَكُمْ ۙ اِنَّمَا نَحْنُ مُسْتَهْزِءُوْنَ
15	अल्लाह उनका मज़ाक उड़ाता है और उन्हें उनकी सरकशी में भटकने देता है	اَللّٰهُ يَسْتَهْزِئُ بِهِمْ وَيَمُدُّهُمْ فِيْ طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ
16	ये वही लोग हैं जिन्होंने हिदायत के बदले गुमराही खरीदी, तो उनका सौदा नफ़े में नहीं रहा, और न ही वे हिदायत पाने वाले बने।	اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اشْتَرَوُا الضَّلٰلَةَ بِالْهُدٰى فَمَا رَبِحَتْ تِّجَارَتُهُمْ وَمَا كَانُوْا مُهْتَدِيْنَ
17	उनकी मिसाल उस शख़्स की तरह है जिसने आग जलाई, और जब उसने उसके आसपास रोशनी की, तो अल्लाह ने उनकी रोशनी छीन ली और उन्हें अंधेरों में छोड़ दिया, जहाँ वे कुछ नहीं देख सकते।	مَثَلُهُمْ كَمَثَلِ الَّذِى اسْتَوْقَدَ نَارًا ۚ فَلَمَّآ اَضَاۤءَتْ مَا حَوْلَهٗ ذَهَبَ اللّٰهُ بِنُوْرِهِمْ وَتَرَكَهُمْ فِيْ ظُلُمٰتٍ لَّا يُبْصِرُوْنَ
18	वे बहरे, गूंगे और अंधे हैं, इसलिए वे (हक की ओर) नहीं लौटते।	صُمٌّۢ بُكْمٌ عُمْيٌ فَهُمْ لَا يَرْجِعُوْنَ
19	या उनकी मिसाल उस बारिश की तरह है जो आकाश से आती है, जिसमें अंधेरा, गड़गड़ाहट और बिजली होती है। वे बिजली के डर से अपनी उंगलियाँ अपने कानों में डाल लेते हैं और अल्लाह काफ़िरों को घेरे हुए है।	اَوْ كَصَيِّبٍ مِّنَ السَّمَاۤءِ فِيْهِ ظُلُمٰتٌ وَّرَعْدٌ وَّبَرْقٌ ۚ يَجْعَلُوْنَ اَصَابِعَهُمْ فِيْٓ اٰذَانِهِمْ مِّنَ الصَّوَاعِقِ حَذَرَ الْمَوْتِ ۗ وَاللّٰهُ مُحِيْطٌۢ بِالْكٰفِرِيْنَ
20	लगभग बिजली उनकी नज़र छीन लेती है। जब भी (बिजली) चमकती है, वे उसके प्रकाश में चलते हैं, और जब अंधेरा उन पर छा जाता है, वे रुक जाते हैं। यदि अल्लाह चाहता, तो उनकी सुनने और देखने की शक्ति छीन लेता। निश्चय ही, अल्लाह हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है।	يَكَادُ الْبَرْقُ يَخْطَفُ اَبْصَارَهُمْ ۗ كُلَّمَآ اَضَاۤءَ لَهُمْ مَّشَوْا فِيْهِ ۙ وَاِذَآ اَظْلَمَ عَلَيْهِمْ قَامُوْا ۗ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَذَهَبَ بِسَمْعِهِمْ وَاَبْصَارِهِمْ ۗ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ
21	ऐ लोगो! अपने रब की इबादत करो जिसने तुम्हें और तुमसे पहले वालों को पैदा किया, ताकि तुम डरने वाले (तक़वा) बनो।	يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اعْبُدُوْا رَبَّكُمُ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ وَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ

الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ فِرَاشًا وَّالسَّمَاۤءَ بِنَاۤءً وَّاَنْزَلَ مِنَ السَّمَاۤءِ مَاۤءً فَاَخْرَجَ بِهٖ مِنَ الثَّمَرٰتِ رِزْقًا لَّكُمْ ۚ فَلَا تَجْعَلُوْا لِلّٰهِ اَنْدَادًا وَّاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ	**22**	(वही) जिसने तुम्हारे लिए धरती को बिछौना बनाया और आकाश को छत, और उसने आकाश से पानी (बारिश) उतारा, फिर उससे तुम्हारे लिए फल उत्पन्न किए जो तुम्हारी जीविका हैं इसलिए तुम जानते हुए भी अल्लाह के लिए समकक्ष (साझी) न ठहराओ।
وَاِنْ كُنْتُمْ فِيْ رَيْبٍ مِّمَّا نَزَّلْنَا عَلٰى عَبْدِنَا فَاْتُوْا بِسُوْرَةٍ مِّنْ مِّثْلِهٖ ۪ وَادْعُوْا شُهَدَاۤءَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ	**23**	और अगर तुम्हें इस बात में शक हो जो हमने अपने बन्दे (मुहम्मद) पर उतारा, तो उस जैसी एक सूरह लाओ, और अपने गवाहों को बुलाओ, अल्लाह के सिवा, अगर तुम सच्चे हो।
فَاِنْ لَّمْ تَفْعَلُوْا وَلَنْ تَفْعَلُوْا فَاتَّقُوا النَّارَ الَّتِيْ وَقُوْدُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ ۖ اُعِدَّتْ لِلْكٰفِرِيْنَ	**24**	यदि तुम ऐसा नहीं कर सकते, और (निश्चित रूप से) तुम नहीं कर पाओगे, तो उस आग से डरो जिसका ईंधन इंसान और पत्थर हैं, जो काफिरों के लिए तैयार की गई है।
وَبَشِّرِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ اَنَّ لَهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۭ كُلَّمَا رُزِقُوْا مِنْهَا مِنْ ثَمَرَةٍ رِّزْقًا ۙ قَالُوْا هٰذَا الَّذِيْ رُزِقْنَا مِنْ قَبْلُ ۙ وَاُتُوْا بِهٖ مُتَشَابِهًا ۭ وَلَهُمْ فِيْهَآ اَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ ۙ وَّهُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ	**25**	और उन लोगों को ख़ुशख़बरी दो जो विश्वास करते हैं और नेक काम करते हैं, कि उनके लिए जन्नत (बाग) हैं जिनके नीचे नदियाँ बहती हैं जब भी उन्हें वहाँ से फल दिए जाएँगे, वे कहेंगे, 'यह वही रिज़्क़ है जो हमें पहले दिया गया था।' उन्हें (फल) समान रूप में दिए जाएँगे। और वहाँ उनके लिए पवित्र जोड़े होंगे वे वहाँ हमेशा रहेंगे।
اِنَّ اللّٰهَ لَا يَسْتَحْيٖٓ اَنْ يَّضْرِبَ مَثَلًا مَّا بَعُوْضَةً فَمَا فَوْقَهَا ۭ فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فَيَعْلَمُوْنَ اَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّهِمْ ۚ وَاَمَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَيَقُوْلُوْنَ مَاذَآ اَرَادَ اللّٰهُ بِهٰذَا مَثَلًا ۘ يُضِلُّ بِهٖ كَثِيْرًا وَّيَهْدِيْ بِهٖ كَثِيْرًا ۭ وَمَا يُضِلُّ بِهٖٓ اِلَّا الْفٰسِقِيْنَ	**26**	निश्चय ही, अल्लाह एक मच्छर या उससे भी छोटी चीज़ की मिसाल देने में संकोच नहीं करता। जो लोग विश्वास करते हैं, वे जानते हैं कि यह उनके रब की ओर से सत्य है लेकिन जो काफिर हैं, वे कहते हैं, 'इस मिसाल से अल्लाह का क्या मतलब है?' इसके द्वारा वह बहुतों को गुमराह होने देता है, और इसके द्वारा बहुतों को मार्गदर्शन देता है लेकिन इसके द्वारा वह केवल फासिकों (पापियों) को ही गुमराह करता है,
الَّذِيْنَ يَنْقُضُوْنَ عَهْدَ اللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ مِيْثَاقِهٖ ۠ وَيَقْطَعُوْنَ مَآ اَمَرَ اللّٰهُ بِهٖٓ اَنْ يُّوْصَلَ وَيُفْسِدُوْنَ فِي الْاَرْضِ ۭ اُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ	**27**	(अर्थात) वे लोग जो अल्लाह के साथ किए गए वादे को तोड़ते हैं और जो अल्लाह ने जोड़ने का हुक्म दिया उसे काटते हैं, और धरती पर बिगाड़ करते हैं वही लोग घाटे में हैं।
كَيْفَ تَكْفُرُوْنَ بِاللّٰهِ وَكُنْتُمْ اَمْوَاتًا فَاَحْيَاكُمْ ۚ ثُمَّ يُمِيْتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيْكُمْ ثُمَّ اِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ	**28**	तुम अल्लाह का इनकार कैसे करते हो, जबकि तुम (पहले) मरे हुए थे, फिर उसने तुम्हें ज़िंदगी दी, फिर वह तुम्हें मारेगा और फिर ज़िंदगी देगा, और फिर उसी की ओर तुम्हें लौटना है।
هُوَ الَّذِيْ خَلَقَ لَكُمْ مَّا فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا ۤ ثُمَّ اسْتَوٰٓى اِلَى السَّمَاۤءِ فَسَوّٰىهُنَّ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ ۭ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ	**29**	वही है जिसने तुम्हारे लिए धरती की सारी चीज़ें पैदा कीं, फिर आकाश की ओर मुड़ा और सात आकाशों को बनाया। और वह हर चीज़ को जानने वाला है।

30	और (याद करो) जब तुम्हारे रब ने फ़रिश्तों से कहा, 'मैं धरती पर एक ख़लीफ़ा (प्रतिनिधि) बनाने वाला हूँ।' उन्होंने कहा, 'क्या तू उसमें उसे बनाएगा जो उसमें बिगाड़ करेगा और ख़ून बहाएगा, जबकि हम तेरी तारीफ़ और तसबीह करते हैं और तेरे लिए पवित्रता बयान करते हैं?' उसने जवाब दिया, 'मैं वह जानता हूँ जो तुम नहीं जानते।'	وَاِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلٰٓئِكَةِ اِنِّيْ جَاعِلٌ فِي الْاَرْضِ خَلِيْفَةً قَالُوْٓا اَتَجْعَلُ فِيْهَا مَنْ يُّفْسِدُ فِيْهَا وَيَسْفِكُ الدِّمَاءَ وَنَحْنُ نُسَبِّحُ بِحَمْدِكَ وَنُقَدِّسُ لَكَ قَالَ اِنِّيْٓ اَعْلَمُ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ
31	और उसने आदम को सभी चीज़ों के नाम सिखाए, फिर उन्हें फ़रिश्तों के सामने पेश किया, और कहा, 'मुझे इनके नाम बताओ, यदि तुम सच्चे हो!'	وَعَلَّمَ اٰدَمَ الْاَسْمَاءَ كُلَّهَا ثُمَّ عَرَضَهُمْ عَلَى الْمَلٰٓئِكَةِ فَقَالَ اَنْۢبِـُٔوْنِيْ بِاَسْمَاۤءِ هٰٓؤُلَاۤءِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ
32	उन्होंने जवाब दिया, 'तेरी तारीफ़ हो, हमें वही ज्ञान है जो तूने हमें दिया। निश्चय ही, तू ही सर्वज्ञ, सर्वबुद्धिमान है।'	قَالُوْا سُبْحٰنَكَ لَا عِلْمَ لَنَآ اِلَّا مَا عَلَّمْتَنَا اِنَّكَ اَنْتَ الْعَلِيْمُ الْحَكِيْمُ
33	उसने (अल्लाह ने) कहा, 'ऐ आदम! उन्हें उनके नाम बता!' जब उसने (आदम ने) उनके नाम बताए, तो उसने कहा, 'क्या मैंने तुमसे नहीं कहा था कि मैं आकाशों और धरती का रहस्य जानता हूँ और मैं जानता हूँ जो तुम प्रकट करते हो और जो तुम छिपाते हो?'	قَالَ يٰٓاٰدَمُ اَنْۢبِئْهُمْ بِاَسْمَاۤىِٕهِمْ فَلَمَّآ اَنْۢبَاَهُمْ بِاَسْمَاۤىِٕهِمْ قَالَ اَلَمْ اَقُلْ لَّكُمْ اِنِّيْٓ اَعْلَمُ غَيْبَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاَعْلَمُ مَا تُبْدُوْنَ وَمَا كُنْتُمْ تَكْتُمُوْنَ
34	और (याद करो) जब हमने फ़रिश्तों से कहा, 'आदम को सजदा करो!' तो उन्होंने सजदा किया, सिवाय इबलीस के। उसने इंकार किया और घमंड किया, और वह काफ़िरों में से हो गया।	وَاِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِيْسَ اَبٰى وَاسْتَكْبَرَ وَكَانَ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ
35	और हमने कहा, 'ऐ आदम! तुम और तुम्हारी पत्नी जन्नत में रहो, और वहाँ जो चाहो, आनंद से खाओ। लेकिन इस पेड़ के पास न जाना, वरना तुम ज़ालिमों में से हो जाओगे।'	وَقُلْنَا يٰٓاٰدَمُ اسْكُنْ اَنْتَ وَزَوْجُكَ الْجَنَّةَ وَكُلَا مِنْهَا رَغَدًا حَيْثُ شِئْتُمَا وَلَا تَقْرَبَا هٰذِهِ الشَّجَرَةَ فَتَكُوْنَا مِنَ الظّٰلِمِيْنَ
36	फिर शैतान ने उन्हें वहाँ से फिसलने पर मजबूर किया और उन्हें उस हालत से निकाल दिया जिसमें वे थे। हमने कहा, 'तुम सब नीचे उतरो, तुम एक-दूसरे के दुश्मन हो। और तुम्हारे लिए धरती पर ठिकाना और एक निश्चित समय तक जीविका होगी।'	فَاَزَلَّهُمَا الشَّيْطٰنُ عَنْهَا فَاَخْرَجَهُمَا مِمَّا كَانَا فِيْهِ وَقُلْنَا اهْبِطُوْا بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ وَلَكُمْ فِي الْاَرْضِ مُسْتَقَرٌّ وَّمَتَاعٌ اِلٰى حِيْنٍ
37	फिर आदम ने अपने रब से कुछ शब्द सीखे, और उसने (अल्लाह ने) उनकी तौबा कबूल की। निश्चय ही, वह बहुत तौबा कबूल करने वाला, रहम करने वाला है।	فَتَلَقّٰٓى اٰدَمُ مِنْ رَّبِّهٖ كَلِمٰتٍ فَتَابَ عَلَيْهِ اِنَّهٗ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ
38	हमने कहा, 'तुम सब यहाँ से नीचे उतरो। फिर जब तुम्हें मेरी ओर से कोई हिदायत आए, तो जो मेरी हिदायत का अनुसरण करेंगे, उन्हें न कोई डर होगा और न वे दुखी होंगे।'	قُلْنَا اهْبِطُوْا مِنْهَا جَمِيْعًا فَاِمَّا يَاْتِيَنَّكُمْ مِّنِّيْ هُدًى فَمَنْ تَبِعَ هُدَايَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ
39	और जो लोग कुफ़्र करेंगे और हमारी आयतों को झुठलाएँगे, वे जहन्नम के बाशिंदे होंगे। वे उसमें हमेशा रहेंगे।	وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَآ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ

يٰبَنِيْٓ اِسْرَاۤءِيْلَ اذْكُرُوْا نِعْمَتِيَ الَّتِيْٓ اَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ وَاَوْفُوْا بِعَهْدِيْٓ اُوْفِ بِعَهْدِكُمْ وَاِيَّايَ فَارْهَبُوْنِ	**40**	ऐ बनी इस्राइल! मरी उन नअेमतों को याद करो जो मनै तुमुह दीं। और मरे साथ कए गए अपन वाद को पूरा करो, ताकि मै तुमुहार साथ कए गए अपन वाद को पूरा कर और कवेल मुझस डरो।
وَاٰمِنُوْا بِمَآ اَنْزَلْتُ مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَكُمْ وَلَا تَكُوْنُوْٓا اَوَّلَ كَافِرٍ بِهٖ ۖ وَلَا تَشْتَرُوْا بِاٰيٰتِيْ ثَمَنًا قَلِيْلًا وَّاِيَّايَ فَاتَّقُوْنِ	**41**	और उस (अल-कुआन) पर वशि्वास करो जो मनै उतारा, जो उस (तौरात) की पषुटि करता ह जो तुमुहार पास ह, और इसक पहल काफरि होन वाल न बनो। मरी आयतों को ससत दाम म न बचेो, और कवेल मुझस डरत रहो।
وَلَا تَلْبِسُوا الْحَقَّ بِالْبَاطِلِ وَتَكْتُمُوا الْحَقَّ وَاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ	**42**	और सतय को असतय क साथ न मलिाओ, और सतय को न छपिाओ, जबकि तमु उस जानत हो।
وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَارْكَعُوْا مَعَ الرّٰكِعِيْنَ	**43**	और नमाज़ कायम करो, ज़कात दो, और उन लोगों क साथ रकुअ करो जो रकुअ करत हैं।
اَتَأْمُرُوْنَ النَّاسَ بِالْبِرِّ وَتَنْسَوْنَ اَنْفُسَكُمْ وَاَنْتُمْ تَتْلُوْنَ الْكِتٰبَ ۭ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ	**44**	क्या तमु दूसरों को नकेी का हुक्म दते हो और अपन आप को भूल जात हो, जबकि तमु कतािब पढ़त हो? क्या तमु बुद्धि स काम नहीं लते?
وَاسْتَعِيْنُوْا بِالصَّبْرِ وَالصَّلٰوةِ ۭ وَاِنَّهَا لَكَبِيْرَةٌ اِلَّا عَلَي الْخٰشِعِيْنَ	**45**	और सबर और नमाज़ क साथ (अल्लाह स) मदद माँगो। नशि्चय ही, यह भारी ह, सविाय उन लोगों क लिए जो खौफ रखत हैं,
الَّذِيْنَ يَظُنُّوْنَ اَنَّهُمْ مُّلٰقُوْا رَبِّهِمْ وَاَنَّهُمْ اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ	**46**	जो यकीन करत हैं कि उनह अपन रेब स मलिना ह और उसी की ओर लौटना ह।
يٰبَنِيْٓ اِسْرَاۤءِيْلَ اذْكُرُوْا نِعْمَتِيَ الَّتِيْٓ اَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ وَاَنِّيْ فَضَّلْتُكُمْ عَلَي الْعٰلَمِيْنَ	**47**	ऐ बनी इस्राइल! मरी उन नअेमतों को याद करो जो मनै तुमुह दीं, और यह कि मनै तुमुह तमाम आलम पर फज़ीलत दी।
وَاتَّقُوْا يَوْمًا لَّا تَجْزِيْ نَفْسٌ عَنْ نَّفْسٍ شَيْـًٔا وَّلَا يُقْبَلُ مِنْهَا شَفَاعَةٌ وَّلَا يُؤْخَذُ مِنْهَا عَدْلٌ وَّلَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ	**48**	और उस दनि स डरो जब कोई कसिी क लिए कछु न कर सकगेा, न कोई सफिारशि कबलू होगी, न कोई फरौती ली जाएगी, और न उनह कोई मदद मलिगेी।
وَاِذْ نَجَّيْنٰكُمْ مِّنْ اٰلِ فِرْعَوْنَ يَسُوْمُوْنَكُمْ سُوْۗءَ الْعَذَابِ يُذَبِّحُوْنَ اَبْنَاۗءَكُمْ وَيَسْتَحْيُوْنَ نِسَاۗءَكُمْ ۭ وَفِيْ ذٰلِكُمْ بَلَاۗءٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ عَظِيْمٌ	**49**	और (याद करो) जब हमन तुमुह फरिऔन और उसक अनुआयियों स बचाया। व तमु पर बहतु भारी अज़ाब डालत थे। व तुमुहार बटेों को मार डालत थे और तमुहारी बटेियों को जीवति छोड़त थे। और इसम तुमुहार रेब की ओर स बड़ी आज़माइश थी।
وَاِذْ فَرَقْنَا بِكُمُ الْبَحْرَ فَاَنْجَيْنٰكُمْ وَاَغْرَقْنَآ اٰلَ فِرْعَوْنَ وَاَنْتُمْ تَنْظُرُوْنَ	**50**	और (याद करो) जब हमन तुमुहार लिए समदुर को दो भागों म बाँटा, ताकि हम तुमुह बचा सक और फरिऔन और उसक अनुआयियों को डबुो दयिा, जबकि तमु दखे रह थे।

51	और (याद करो) जब हमन`मूसा स`चालीस रातों`का वादा कयि। फरि तमु (बनी इसराइल) न`उनक`जान`क`बाद (बछड़`की मूरत) को) पूजना शरू कयि, और तमु जालमि हो गए।	وَاِذْ وٰعَدْنَا مُوْسٰٓى اَرْبَعِيْنَ لَيْلَةً ثُمَّ اتَّخَذْتُمُ الْعِجْلَ مِنْ بَعْدِهٖ وَاَنْتُمْ ظٰلِمُوْنَ
52	फरि भी हमन`इसक`बाद तमुह`माफ कर दयि, ताकि तमु शकु़रगज़ार बनो।	ثُمَّ عَفَوْنَا عَنْكُمْ مِّنْ بَعْدِ ذٰلِكَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ
53	और (याद करो) जब हमन`मूसा को कताब (तौरात) और फरुकान (हक़ और बातलि का फरक़) दी, ताकि तमु हदियायत पाओ।	وَاِذْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ وَالْفُرْقَانَ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ
54	और (याद करो) जब मूसा न`अपनी कौम स`कहा, 'ऐ मरी कौम! तमुन`बछड़`को (पूजकर) अपन`ऊपर जलुम कयि। तो अपन`पदा करन`वाल`की ओर तौबा करो और अपन`नफ़स को मार डालो। यह तमुहार`लएि तमुहार`पदा करन`वाल`क`पास बहेतर ह' फरि उसन`तमुहारी तौबा कबलू की। नशि़चय ही, वह बहतु तौबा कबलू करन`वाला, रहम करन`वाला ह'	وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ يٰقَوْمِ اِنَّكُمْ ظَلَمْتُمْ اَنْفُسَكُمْ بِاتِّخَاذِكُمُ الْعِجْلَ فَتُوْبُوْٓا اِلٰى بَارِئِكُمْ فَاقْتُلُوْٓا اَنْفُسَكُمْ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ عِنْدَ بَارِئِكُمْ فَتَابَ عَلَيْكُمْ اِنَّهٗ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ
55	और (याद करो) जब तमुन`कहा, 'ऐ मूसा! हम तब तक तझु पर वशि़वास नहीं करगे`जब तक हम अलल़ाह को साफ-साफ न दखे ल' तो तमु पर बजिली गरी, जबकि तमु दखे रह`थे।	وَاِذْ قُلْتُمْ يٰمُوْسٰى لَنْ نُّؤْمِنَ لَكَ حَتّٰى نَرَى اللّٰهَ جَهْرَةً فَاَخَذَتْكُمُ الصّٰعِقَةُ وَاَنْتُمْ تَنْظُرُوْنَ
56	फरि हमन`तमुह`तमुहारी मौत क`बाद जदि कयि, ताकि तमु शकु़रगज़ार बनो।	ثُمَّ بَعَثْنٰكُمْ مِّنْ بَعْدِ مَوْتِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ
57	और हमन`तमु पर बादलों की छाया की, और तमुह`मनन और सलवा भजेा। उस अचछ`रेजि़क़ स`खाओ जो हमन`तमुह`दयि। उनहोंन`हम पर जलुम नहीं कयि, बलकि व`अपन`आप पर जलुम कर रह`थे।	وَظَلَّلْنَا عَلَيْكُمُ الْغَمَامَ وَاَنْزَلْنَا عَلَيْكُمُ الْمَنَّ وَالسَّلْوٰى كُلُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ وَمَا ظَلَمُوْنَا وَلٰكِنْ كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ
58	और (याद करो) जब हमन`कहा, 'इस शहर (बतैलुमकदसि) म`पऱवशे करो, और वहा`जो चाहो, आनद स`खाओ। और इसक`दऱवाज पर झकुकर पऱवशे करो, और कहो, 'हम`(हमार`गनुाहों`स`) मकु़ति दो,' ताकि हम तमुहार`गलतयिों को माफ कर' और हम नकेी करन`वालों`को और बढ़ाएँगे।'	وَاِذْ قُلْنَا ادْخُلُوْا هٰذِهِ الْقَرْيَةَ فَكُلُوْا مِنْهَا حَيْثُ شِئْتُمْ رَغَدًا وَّادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا وَّقُوْلُوْا حِطَّةٌ نَّغْفِرْ لَكُمْ خَطٰيٰكُمْ وَسَنَزِيْدُ الْمُحْسِنِيْنَ
59	लकेनि ज़ालमिों न`उस बात को बदल दयि जो उनस`कही गई थी, कछु और कहन`लग। तो हमन`उन पर आकाश स`अज़ाब उतारा, क़योंकि व`जलुम करत`थे।	فَبَدَّلَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا قَوْلًا غَيْرَ الَّذِيْ قِيْلَ لَهُمْ فَاَنْزَلْنَا عَلَى الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا رِجْزًا مِّنَ السَّمَاۤءِ بِمَا كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ

60	और (याद करो) जब मूसा न॓अपनी कौम क॓लिए पानी माँगा। हमन॓कहा, 'अपनी लाठी स॓इस चट्टान पर मारो।' फरि उसम॑से॓ बारह चश्म॓फूट निकिलो॓ हर कबील॓न॓अपना चश्मा जान लयिा। (हमन॓कहा), 'अल्लाह क॓रज़िक़ स॓खाओ और पयिो, और धरती पर बगिाड़न फलैाओ।'	وَاِذِ اسْتَسْقٰى مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ فَقُلْنَا اضْرِبْ بِّعَصَاكَ الْحَجَرَ فَانْفَجَرَتْ مِنْهُ اثْنَتَا عَشْرَةَ عَيْنًا قَدْ عَلِمَ كُلُّ اُنَاسٍ مَّشْرَبَهُمْ كُلُوْا وَاشْرَبُوْا مِنْ رِّزْقِ اللّٰهِ وَلَا تَعْثَوْا فِى الْاَرْضِ مُفْسِدِيْنَ
61	और (याद करो), जब तमु न॓कहा, 'ऐ मूसा! हम एक ही तरह क॓ खान॓को बरदा़श्त नहीं कर सकत॓, इसलिए अपन॓रब स॓हमार॓ लिए दआु करो कि॑वह हम॑वह द॓जो धरती उगाती ह॑, जसै॓ सबज़यिा॑, खीर॓, लहसनु, मसरू और पय़ाज।' उसन॓(मूसा न॑) जवाब दयिा, 'क़या तमु अचछी चीज़ क॓बदल॓म॑घटयिा चीज़ माँगत॓हो? कसिी शहर म॑जाओ, तमुह॑वह मलिगेा जो तमुन॓ माँगा।' फरि उन पर अपमान और गरीबी थोप दी गई, और व॓ अल़लाह क॓गसु्स॓क॓भागी बन॓ ऐसा इसलिए हआु क़योंकि व॓ अल़लाह की आयतों का इनकार करत॓थ॓और नबयिों को नाहक कतल़ करत॓थ॓। यह उनकी नाफरमानी और हद स॓गज़रन॓क॓ कारण हआु।	وَاِذْ قُلْتُمْ يٰمُوْسٰى لَنْ نَّصْبِرَ عَلٰى طَعَامٍ وَّاحِدٍ فَادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُخْرِجْ لَنَا مِمَّا تُنْۢبِتُ الْاَرْضُ مِنْۢ بَقْلِهَا وَقِثَّآئِهَا وَفُوْمِهَا وَعَدَسِهَا وَبَصَلِهَا قَالَ اَتَسْتَبْدِلُوْنَ الَّذِىْ هُوَ اَدْنٰى بِالَّذِىْ هُوَ خَيْرٌ اِهْبِطُوْا مِصْرًا فَاِنَّ لَكُمْ مَّا سَاَلْتُمْ وَضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الذِّلَّةُ وَالْمَسْكَنَةُ وَبَآءُوْ بِغَضَبٍ مِّنَ اللّٰهِ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَيَقْتُلُوْنَ النَّبِيّٖنَ بِغَيْرِ الْحَقِّ ذٰلِكَ بِمَا عَصَوْا وَّكَانُوْا يَعْتَدُوْنَ
62	नशि़चय ही, जो लोग वशि़वास करत॓ह॑, और जो यहद्वी, ईसाई और साबईि॑न ह॑, उनम॑स॓जो कोई भी अल़लाह और आख़रिी दनि पर वशि़वास करता ह॑, और नके काम करता ह॑, उनह॑अपन॓रब स॓इनाम मलिगेा, उनह॑कोई डर नहीं होगा, और व॓दख़्ी नहीं होंगे।	اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَالَّذِيْنَ هَادُوْا وَالنَّصٰرٰى وَالصَّابِـِٕيْنَ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ
63	और (याद करो) जब हमन॓तमुस॓वादा लयिा और तमुहार॓ऊपर (सनिाई) पहाड़ उठाया (और कहा), 'जो हमन॓तमुह॑दयिा ह॑उस॓ मजबूती स॓थामो और सनुो।' उनहो॑न॓जवाब दयिा, 'हमन॓सनुा और हमन॓नाफरमानी की।' और उनक॓बछड़॓(पज़ूा) क॓कारण उनक॓दलिो॑म॑वह (पय़ार) डाल दयिा गया। कहो, 'कतिना बरु ह॑ जो तमुहारा ईमान तमुह॑हक़ुम दतेा ह॑, अगर तमु ईमान वाल॓ हो।'	وَاِذْ اَخَذْنَا مِيْثَاقَكُمْ وَرَفَعْنَا فَوْقَكُمُ الطُّوْرَ خُذُوْا مَآ اٰتَيْنٰكُمْ بِقُوَّةٍ وَّاذْكُرُوْا مَا فِيْهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ
64	फरि इसक॓बाद तमु मड़ु गए। अगर अल़लाह की महेरबानी और रहमत तमु पर न होती, तो तमु नशि़चति रप़ू स॓घाट॑म॑होत॓।	ثُمَّ تَوَلَّيْتُمْ مِّنْ بَعْدِ ذٰلِكَ فَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهٗ لَكُنْتُمْ مِّنَ الْخٰسِرِيْنَ
65	और तमु उन लोगों को जानत॓हो जनिहो॑न॓सबत़ (शनविार) क॓ दनि हद स॓गज़ुर कयिा, तो हमन॓उनस॓कहा, 'बंदर बन जाओ, हक़ीर।'	وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ الَّذِيْنَ اعْتَدَوْا مِنْكُمْ فِى السَّبْتِ فَقُلْنَا لَهُمْ كُوْنُوْا قِرَدَةً خٰسِـِٕيْنَ
66	तो हमन॓इस॓उनक॓लिए और उनक॓बाद वालों क॓लिए एक नसीहत बनाया, और तकवा वालों क॓लिए एक सबक।	فَجَعَلْنٰهَا نَكَالًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهَا وَمَا خَلْفَهَا وَمَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِيْنَ
67	और (याद करो) जब मूसा न॓अपनी कौम स॓कहा, 'अल़लाह तमुह॑हक़ुम दतेा ह॑कि॑तमु एक गाय ज़बह करो।' उनहो॑न॓कहा, 'क़या तमु हमारा मज़ाक उड़ा रह॓हो?' उसन॓जवाब दयिा, 'म॑ अल़लाह की पनाह माँगता हू॑कि॑म॑जाहलिों म॑स॓होऊँ।'	وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهٖٓ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُكُمْ اَنْ تَذْبَحُوْا بَقَرَةً قَالُوْٓا اَتَتَّخِذُنَا هُزُوًا قَالَ اَعُوْذُ بِاللّٰهِ اَنْ اَكُوْنَ مِنَ الْجٰهِلِيْنَ

68	उनहोंने कहा, 'हमारे लिए अपने रब से दुआ करो कि वह हमें बताए कि वह (गाय) कैसी होनी चाहिए।' उसने (मूसा ने) जवाब दिया, 'वह (अल्लाह) कहता है कि न वह बहुत बूढ़ी हो और न बहुत जवान, बल्कि बीच की उमर की। तो जो तुम्हें हुक्म दिया गया है, उसे करो।'	قَالُوا ادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّنْ لَّنَا مَا هِيَ قَالَ اِنَّه يَقُوْلُ اِنَّهَا بَقَرَةٌ لَّا فَارِضٌ وَّلَا بِكْرٌ عَوَانٌ بَيْنَ ذٰلِكَ فَافْعَلُوْا مَا تُؤْمَرُوْنَ
69	उनहोंने कहा, 'हमारे लिए अपने रब से दुआ करो कि वह हमें इसका रंग बताए।' उसने (मूसा ने) जवाब दिया, 'वह (अल्लाह) कहता है कि यह एक गहरे पीले रंग की गाय होनी चाहिए, जो देखने वालों को खुश करे।'	قَالُوا ادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّنْ لَّنَا مَا لَوْنُهَا قَالَ اِنَّه يَقُوْلُ اِنَّهَا بَقَرَةٌ صَفْرَاءُ فَاقِعٌ لَّوْنُهَا تَسُرُّ النّٰظِرِيْنَ
70	उनहोंने कहा, 'हमारे लिए अपने रब से दुआ करो कि वह हमें इसके बारे में और स्पष्ट करे। (क्योंकि) निश्चित रूप से यह गाय हमारे लिए स्पष्ट नहीं है, और अगर अल्लाह चाहे, तो हमें मार्गदर्शन मिलेगा।'	قَالُوا ادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّنْ لَّنَا مَا هِيَ اِنَّ الْبَقَرَ تَشٰبَهَ عَلَيْنَا وَاِنَّآ اِنْ شَاءَ اللّٰهُ لَمُهْتَدُوْنَ
71	उसने (मूसा ने) जवाब दिया, 'वह (अल्लाह) कहता है, यह एक ऐसी गाय होनी चाहिए जिसे न खेते जोतने के लिए इस्तेमाल किया गया हो और न ही खेतों को सींचने के लिए, सुव्यस्थ और बिना किसी दाग के।' उनहोंने कहा, 'अब तुमने पूरी तरह स्पष्ट कर दिया।' फिर उनहोंने उस गाय को ज़बह किया, हालाँकि वे ऐसा करने के करीब नहीं थे।	قَالَ اِنَّه يَقُوْلُ اِنَّهَا بَقَرَةٌ لَّا ذَلُوْلٌ تُثِيْرُ الْاَرْضَ وَلَا تَسْقِى الْحَرْثَ مُسَلَّمَةٌ لَّا شِيَةَ فِيْهَا قَالُوا الْـٰٔنَ جِئْتَ بِالْحَقِّ فَذَبَحُوْهَا وَمَا كَادُوْا يَفْعَلُوْنَ
72	और (याद करो) जब तुमने एक शख़्स को कत्ल किया और तुम उसमें झगड़ने लगे। और अल्लाह ने वह ज़ाहिर कर दिया जो तुम छिपा रहे थे।	وَاِذْ قَتَلْتُمْ نَفْسًا فَادّٰرَءْتُمْ فِيْهَا وَاللّٰهُ مُخْرِجٌ مَّا كُنْتُمْ تَكْتُمُوْنَ
73	तो हमने कहा, 'उस (मृत) को उस (गाय) के कुछ हिस्से से मारो।' इस तरह अल्लाह मुर्दों को ज़िंदा करता है और तुम्हें अपनी निशानियाँ दिखाता है, ताकि तुम समझ सको।	فَقُلْنَا اضْرِبُوْهُ بِبَعْضِهَا كَذٰلِكَ يُحْيِ اللّٰهُ الْمَوْتٰى وَيُرِيْكُمْ اٰيٰتِه لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ
74	फिर इसके बाद तुम्हारे दिल सख़्त हो गए, जैसे पत्थर, बल्कि उससे भी सख़्त। क्योंकि पत्थरों से तो नदियाँ बह निकलती हैं। कुछ तो फट जाते हैं और उनसे पानी निकलता है। और कुछ तो अल्लाह के डर से गिर पड़ते हैं। और अल्लाह तुम्हारे करमों से बेख़बर नहीं है।	ثُمَّ قَسَتْ قُلُوْبُكُمْ مِّنْ بَعْدِ ذٰلِكَ فَهِيَ كَالْحِجَارَةِ اَوْ اَشَدُّ قَسْوَةً وَاِنَّ مِنَ الْحِجَارَةِ لَمَا يَتَفَجَّرُ مِنْهُ الْاَنْهٰرُ وَاِنَّ مِنْهَا لَمَا يَشَّقَّقُ فَيَخْرُجُ مِنْهُ الْمَاءُ وَاِنَّ مِنْهَا لَمَا يَهْبِطُ مِنْ خَشْيَةِ اللّٰهِ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ
75	क्या तुम (मुसलमानो) को उम्मीद है कि वे तुम पर विश्वास करेंगे, जबकि उनमें से कुछ लोग अल्लाह का कलाम सुनते थे, फिर उसे समझने के बाद बदल देते थे, जबकि वे जानते थे?	اَفَتَطْمَعُوْنَ اَنْ يُّؤْمِنُوْا لَكُمْ وَقَدْ كَانَ فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ يَسْمَعُوْنَ كَلَامَ اللّٰهِ ثُمَّ يُحَرِّفُوْنَه مِنْ بَعْدِ مَا عَقَلُوْهُ وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ
76	और जब वे विश्वास करने वालों से मिलते हैं, तो कहते हैं, 'हमने विश्वास किया।' लेकिन जब वे अपने लोगों के पास लौटते हैं, तो कहते हैं, 'क्या तुम उन्हें वह बताओगे जो अल्लाह ने तुम्हें बताया, ताकि वे तुम्हारे रब के सामने तुम्हारे खिलाफ तर्क दे सकें? क्या तुम नहीं समझते?'	وَاِذَا لَقُوا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قَالُوْٓا اٰمَنَّا وَاِذَا خَلَا بَعْضُهُمْ اِلٰى بَعْضٍ قَالُوْٓا اَتُحَدِّثُوْنَهُمْ بِمَا فَتَحَ اللّٰهُ عَلَيْكُمْ لِيُحَاجُّوْكُمْ بِه عِنْدَ رَبِّكُمْ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ

77	क्या वे नहीं जानते कि अल्लाह जानता है जो वे छिपाते है और जो वे प्रकट करते है?	اَوَلَا يَعْلَمُوْنَ اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّوْنَ وَمَا يُعْلِنُوْنَ
78	और उनमे से कुछ अनपढ़ है, जो किताब (तौरात) को नहीं समझते, सिवाय ख़्वाहशों के, और वे केवल अनुमान लगाते है।	وَمِنْهُمْ اُمِّيُّوْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ الْكِتٰبَ اِلَّآ اَمَانِيَّ وَاِنْ هُمْ اِلَّا يَظُنُّوْنَ
79	फिर उन लोगों के लिए तबाही है जो अपने हाथों से किताब लिखते है, फिर कहते है, 'यह अल्लाह की ओर से है,' ताकि उसे सस्ते दाम में बेच सकें। तबाही है उनके लिए जो उनके हाथों ने लिखा, और तबाही है उनके लिए जो वे कमाते है।	فَوَيْلٌ لِّلَّذِيْنَ يَكْتُبُوْنَ الْكِتٰبَ بِاَيْدِيْهِمْ ثُمَّ يَقُوْلُوْنَ هٰذَا مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ لِيَشْتَرُوْا بِهٖ ثَمَنًا قَلِيْلًا فَوَيْلٌ لَّهُمْ مِّمَّا كَتَبَتْ اَيْدِيْهِمْ وَوَيْلٌ لَّهُمْ مِّمَّا يَكْسِبُوْنَ
80	और वे कहते है, 'आग हमे कुछ ही दिन छूएगी।' कहो (मुहम्मद), 'क्या तुमने अल्लाह से कोई वादा लिया है, जिसे अल्लाह कभी नहीं तोड़ेगा? या तुम अल्लाह पर वह कहते हो जो तुम नहीं जानते?'	وَقَالُوْا لَنْ تَمَسَّنَا النَّارُ اِلَّآ اَيَّامًا مَّعْدُوْدَةً قُلْ اَتَّخَذْتُمْ عِنْدَ اللّٰهِ عَهْدًا فَلَنْ يُّخْلِفَ اللّٰهُ عَهْدَهٗٓ اَمْ تَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ
81	हाँ, जो कोई बुराई कमाए और उसका गुनाह उसे घेरे ले, वही लोग जहन्नम के बाशिंदे है, वे उसमे हमेशा रहेंगे।	بَلٰى مَنْ كَسَبَ سَيِّئَةً وَّاَحَاطَتْ بِهٖ خَطِيْٓـَٔتُهٗ فَاُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ
82	और जो लोग ईमान लाए और नेक काम किए, वही लोग जन्नत के बाशिंदे है, वे उसमे हमेशा रहेंगे।	وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ
83	और (याद करो) जब हमने बनी इसराइल से वादा लिया, 'तुम अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न करो, और माता-पिता, रिश्तेदारों, यतीमों और मिस्कीनों के साथ अच्छा व्यवहार करो, और लोगों से अच्छी बात कहो, और नमाज़ क़ायम करो और ज़कात दो।' फिर तुम में से कुछ ही को छोड़कर, बाकी मुड़ गए और तुम मुड़ते रहे।	وَاِذْ اَخَذْنَا مِيْثَاقَ بَنِيْٓ اِسْرَاۤءِيْلَ لَا تَعْبُدُوْنَ اِلَّا اللّٰهَ وَبِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا وَّذِى الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ وَقُوْلُوْا لِلنَّاسِ حُسْنًا وَّاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ ثُمَّ تَوَلَّيْتُمْ اِلَّا قَلِيْلًا مِّنْكُمْ وَاَنْتُمْ مُّعْرِضُوْنَ
84	और (याद करो) जब हमने तुमसे वादा लिया, 'तुम अपने ख़ून (कत्ल) न बहाओ, और अपने लोगों को उनके घरों से न निकालो।' फिर तुमने इकरार किया और गवाही दी।	وَاِذْ اَخَذْنَا مِيْثَاقَكُمْ لَا تَسْفِكُوْنَ دِمَاۤءَكُمْ وَلَا تُخْرِجُوْنَ اَنْفُسَكُمْ مِّنْ دِيَارِكُمْ ثُمَّ اَقْرَرْتُمْ وَاَنْتُمْ تَشْهَدُوْنَ

ثُمَّ اَنْتُمْ هٰٓؤُلَاۤءِ تَقْتُلُوْنَ اَنْفُسَكُمْ وَتُخْرِجُوْنَ فَرِيْقًا مِّنْكُمْ مِّنْ دِيَارِهِمْ تَظٰهَرُوْنَ عَلَيْهِمْ بِالْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ وَاِنْ يَّاْتُوْكُمْ اُسٰرٰى تُفٰدُوْهُمْ وَهُوَ مُحَرَّمٌ عَلَيْكُمْ اِخْرَاجُهُمْ اَفَتُؤْمِنُوْنَ بِبَعْضِ الْكِتٰبِ وَتَكْفُرُوْنَ بِبَعْضٍ فَمَا جَزَاۤءُ مَنْ يَّفْعَلُ ذٰلِكَ مِنْكُمْ اِلَّا خِزْيٌ فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ يُرَدُّوْنَ اِلٰٓى اَشَدِّ الْعَذَابِ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ	फरि भी तमु (बनी इस्राइल) अपन लोगों को मारत हो, और अपन कछु लोगों को उनक घरों स निकालत हो। तमु उनकी खलिाफत म पाप और दशु्मनी म एक-दसूर की मदद करत हो। और अगर व तमुहार पास बंदी बनकर आए, तो तमु उनह छड़ुात हो, जबकि तमुह उनह निकालन स मना कयि गया था। कय़ा तमु कतिाब (तौरात) क कछु हसिस पर वशि़वास करत हो और कछु का इनकार करत हो? तो तमु म स जो ऐसा करता ह, उसकी सजा दनुयि की ज़दिगी म रसुवाई क सवि और कय़ा हो सकती ह, और कयिामत क दनि उनह सबस सख़त अज़ाब की ओर लौटाया जाएगा। और अल़लाह तमुहार करमों स बेख़बर नहीं ह	85
اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اشْتَرَوُا الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا بِالْاٰخِرَةِ فَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمُ الْعَذَابُ وَلَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ	य वही लोग ह जनिहोंन आख़रित क बदल दनुयि की ज़दिगी ख़रीद ली। तो न उनका अज़ाब हल़का कयि जाएगा और न उनह कोई मदद मलिेगी।	86
وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ وَقَفَّيْنَا مِنْ بَعْدِهٖ بِالرُّسُلِ وَاٰتَيْنَا عِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ الْبَيِّنٰتِ وَاَيَّدْنٰهُ بِرُوْحِ الْقُدُسِ اَفَكُلَّمَا جَاۤءَكُمْ رَسُوْلٌۢ بِمَا لَا تَهْوٰٓى اَنْفُسُكُمُ اسْتَكْبَرْتُمْ فَفَرِيْقًا كَذَّبْتُمْ وَفَرِيْقًا تَقْتُلُوْنَ	और हमन मूसा को कतिाब दी और उनक बाद एक क बाद एक रसूल भजे और हमन ईसा इबन मरयम को सपष्ट नशिानयिाँ दीं और उनह रूहुल कुद्दसु (जबि़ील) स मजबूत कयि। कय़ा हर बार जब कोई रसूल तमुहार पास वह लाया जो तमुहारी ख़वाहशिों क ख़लिाफ था, तमुन घमंड कयि? फरि तमुन कछु को झठुलाया और कछु को मार डाला।	87
وَقَالُوْا قُلُوْبُنَا غُلْفٌ بَلْ لَّعَنَهُمُ اللّٰهُ بِكُفْرِهِمْ فَقَلِيْلًا مَّا يُؤْمِنُوْنَ	और व कहत ह, 'हमार दलि बंद ह।' नही! अल़लाह न उनकी नाफरमानी क कारण उन पर लानत की, इसलिए बहतु कम लोग वशि़वास करत ह	88
وَلَمَّا جَاۤءَهُمْ كِتٰبٌ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ مُصَدِّقٌ لِّمَا مَعَهُمْ وَكَانُوْا مِنْ قَبْلُ يَسْتَفْتِحُوْنَ عَلَى الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَلَمَّا جَاۤءَهُمْ مَّا عَرَفُوْا كَفَرُوْا بِهٖ فَلَعْنَةُ اللّٰهِ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ	और जब उनक पास अल़लाह की ओर स एक कतिाब (अल-कुरआन) आई जो उनकी कतिाब की पषुट करती थी, जबकि पहल व काफरिों पर जीत की दआु माँगत थे, फरि जब वह आया जसि व जानत थे, उनहोंन उसका इनकार कर दयि। तो काफरिों पर अल़लाह की लानत हो।	89
بِئْسَمَا اشْتَرَوْا بِهٖٓ اَنْفُسَهُمْ اَنْ يَّكْفُرُوْا بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ بَغْيًا اَنْ يُّنَزِّلَ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ عَلٰى مَنْ يَّشَاۤءُ مِنْ عِبَادِهٖ فَبَاۤءُوْ بِغَضَبٍ عَلٰى غَضَبٍ وَلِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ	कतिना बरु ह कि उनहोंन अपनी जान बचे दीं, अल़लाह की उतारी हईु चीज़ का इनकार करक, कवेल इसलिए कि अल़लाह अपनी महेरबानी अपन जसि बनद पर चाहता ह, उतारता ह। इसलिए उनहोंन गसु़सा पर गसु़सा झलेा। और काफरिों क लिए अपमानजनक सजा ह	90
وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ اٰمِنُوْا بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ قَالُوْا نُؤْمِنُ بِمَآ اُنْزِلَ عَلَيْنَا وَيَكْفُرُوْنَ بِمَا وَرَاۤءَهٗ وَهُوَ الْحَقُّ مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَهُمْ قُلْ فَلِمَ تَقْتُلُوْنَ اَنْۢبِيَاۤءَ اللّٰهِ مِنْ قَبْلُ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ	और जब उनस कहा जाता ह, 'अल़लाह की उतारी हईु चीज़ (अल-कुरआन) पर वशि़वास करो,' तो व कहत ह, 'हम उस पर वशि़वास करत ह जो हमार लिए उतारा गया।' और व उसक बाद की चीज़ का इनकार करत ह, जबकि वह हक़ (सत्य) ह जो उनकी कतिाब की पषुट करता ह। कहो (मह़ममद), 'अगर तमु वशि़वास करन वाल हो, तो तमुन पहल अल़लाह क नबयिों को कयों मारा?'	91

وَلَقَدْ جَاءَكُمْ مُّوْسٰى بِالْبَيِّنٰتِ ثُمَّ اتَّخَذْتُمُ الْعِجْلَ مِنْ بَعْدِهٖ وَاَنْتُمْ ظٰلِمُوْنَ	और मूसा तुम्हारे पास सुपष्ट निशानियाँ लेकर आए, फिर तुमने उनके बाद बछड़े को (पूजा के लिए) लिया, और तुम ज़ालिम थे।	**92**
وَاِذْ اَخَذْنَا مِيْثَاقَكُمْ وَرَفَعْنَا فَوْقَكُمُ الطُّوْرَ خُذُوْا مَآ اٰتَيْنٰكُمْ بِقُوَّةٍ وَّاسْمَعُوْا قَالُوْا سَمِعْنَا وَعَصَيْنَا وَاُشْرِبُوْا فِيْ قُلُوْبِهِمُ الْعِجْلَ بِكُفْرِهِمْ قُلْ بِئْسَمَا يَأْمُرُكُمْ بِهٖٓ اِيْمَانُكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ	और (याद करो) जब हमने तुमसे वादा लिया और तुम्हारे ऊपर (सिनाई) पहाड़ उठाया, (और कहा), 'जो हमने तुम्हें दिया है उसे मजबूती से थामो और सुनो।' उन्होंने कहा, 'हमने सुना और हमने नाफरमानी की।' और उनके बछड़े (पूजा) के कारण उनके दिलों में वह (प्यार) डाल दिया गया। कहो, 'कितना बुरा है जो तुम्हारा ईमान तुम्हें हुक्म देता है, अगर तुम ईमान वाले हो।'	**93**
قُلْ اِنْ كَانَتْ لَكُمُ الدَّارُ الْاٰخِرَةُ عِنْدَ اللّٰهِ خَالِصَةً مِّنْ دُوْنِ النَّاسِ فَتَمَنَّوُا الْمَوْتَ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ	कहो (मुहम्मद), 'अगर आख़िरत का घर अल्लाह के पास केवल तुम्हारे लिए है, दूसरों के लिए नहीं, तो अगर तुम सच्चे हो तो मौत माँगो।'	**94**
وَلَنْ يَّتَمَنَّوْهُ اَبَدًا بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالظّٰلِمِيْنَ	लेकिन वे अपने हाथों के किए हुए गुनाहों के कारण कभी भी मौत नहीं माँगेंगे। और अल्लाह ज़ालिमों को अच्छी तरह जानता है।	**95**
وَلَتَجِدَنَّهُمْ اَحْرَصَ النَّاسِ عَلٰى حَيٰوةٍ وَمِنَ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا يَوَدُّ اَحَدُهُمْ لَوْ يُعَمَّرُ اَلْفَ سَنَةٍ وَمَا هُوَ بِمُزَحْزِحِهٖ مِنَ الْعَذَابِ اَنْ يُّعَمَّرَ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌۢ بِمَا يَعْمَلُوْنَ	और तुम (मुहम्मद) पाओगे कि वे (यहूदी) दुनिया की ज़िंदगी के लिए सबसे लालची हैं, यहाँ तक कि मुशरिकों से भी ज़्यादा। उनमें से हर एक चाहता है कि उसे हज़ार साल की उम्र दी जाए, जबकि लंबी उम्र उन्हें अज़ाब से दूर नहीं करेगी। और अल्लाह उनके करमों को देख रहा है।	**96**
قُلْ مَنْ كَانَ عَدُوًّا لِّجِبْرِيْلَ فَاِنَّهٗ نَزَّلَهٗ عَلٰى قَلْبِكَ بِاِذْنِ اللّٰهِ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ وَهُدًى وَّبُشْرٰى لِلْمُؤْمِنِيْنَ	कहो (मुहम्मद), 'जो कोई जिब्रील का दुश्मन है, उसे (यह जान लेना चाहिए कि) उसने अल्लाह की इजाज़त से तुम्हारे दिल में (अल-क़ुरआन) उतारा, जो पहले की किताबों की पुष्टि करता है, और विश्वास करने वालों के लिए मार्गदर्शन और खुशखबरी है।'	**97**
مَنْ كَانَ عَدُوًّا لِّلّٰهِ وَمَلٰٓئِكَتِهٖ وَرُسُلِهٖ وَجِبْرِيْلَ وَمِيْكٰلَ فَاِنَّ اللّٰهَ عَدُوٌّ لِّلْكٰفِرِيْنَ	जो कोई अल्लाह, उसके फरिश्तों, उसके रसूलों, जिब्रील और मीकाइल का दुश्मन है, तो निश्चय ही अल्लाह काफिरों का दुश्मन है।	**98**
وَلَقَدْ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ اٰيٰتٍۢ بَيِّنٰتٍ وَمَا يَكْفُرُ بِهَآ اِلَّا الْفٰسِقُوْنَ	और हमने तुम्हारे लिए (मुहम्मद) सुपष्ट आयतें उतारी हैं, और कोई भी उनका इनकार नहीं करता सिवाय फासिकों (पापियों) के।	**99**
اَوَكُلَّمَا عٰهَدُوْا عَهْدًا نَّبَذَهٗ فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ	क्या हर बार जब वे कोई वादा करते हैं, तो उनमें से कुछ लोग उसे तोड़ देते हैं? बल्कि उनमें से ज़्यादातर विश्वास नहीं करते।	**100**
وَلَمَّا جَاءَهُمْ رَسُوْلٌ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ مُصَدِّقٌ لِّمَا مَعَهُمْ نَبَذَ فَرِيْقٌ مِّنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ كِتٰبَ اللّٰهِ وَرَاۤءَ ظُهُوْرِهِمْ كَاَنَّهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ	और जब उनके पास अल्लाह की ओर से एक रसूल (मुहम्मद) आया जो उनकी किताब की पुष्टि करता था, तो अहल किताब में से कुछ लोगों ने अल्लाह की किताब को अपनी पीठ पीछे फेंक दिया, जैसे कि वे कुछ जानते ही नहीं।	**101**

102	और व`उसका अनुसरण करत`े ह`ैजो शैतानों न`े सुलैमान क`े राज़्यकाल म`े पढ़ा। सुलैमान न`े कफ़ुर नहीं कयिा, लकेनि शैतानों न`े कफ़ुर कयिा, व`े लोगों को जाद ूसखिात`े थ`ेऔर वह जो बाबलि म`े दो फरशि़तों, हारूत और मारूत पर उतारा गया था। और व`े दोनों कसिी को कछु सखिान`े स`े पहल`े कहत`े थ,े 'हम कवेल एक आज़माइश ह,ै इसलएि काफरि न बनो।' फरि भी व`े उनस`े वह सीखत`े थ`ेजसिस`े पतऔिर पत्नी क`े बीच जदुाई हो सकती थी। व`े कसिी को अपन`े जाद ूस`े नकुसान नहीं पहचुँा सकत`े थ`ेसवािय अलल़ाह की इजाज़त को और व`े वह सीखत`े थ`े जो उनह`े नकुसान पहचुँाता था और फायदा नहीं दतेा था। और उनह`े मालमू था कि जो कोई इस`े खरीदगेा, उसका आखरित म`े कोई हसिस़ा नहीं होगा। कतिना बरु ा ह`ैजो उनहोंन`े अपनी जानों क`े बदल`े बचेा, काश व`े जानत!े	وَاتَّبَعُوْا مَا تَتْلُوا الشَّيٰطِيْنُ عَلٰى مُلْكِ سُلَيْمٰنَ وَمَا كَفَرَ سُلَيْمٰنُ وَلٰكِنَّ الشَّيٰطِيْنَ كَفَرُوْا يُعَلِّمُوْنَ النَّاسَ السِّحْرَ وَمَآ اُنْزِلَ عَلَى الْمَلَكَيْنِ بِبَابِلَ هَارُوْتَ وَمَارُوْتَ وَمَا يُعَلِّمٰنِ مِنْ اَحَدٍ حَتّٰى يَقُوْلَآ اِنَّمَا نَحْنُ فِتْنَةٌ فَلَا تَكْفُرْ فَيَتَعَلَّمُوْنَ مِنْهُمَا مَا يُفَرِّقُوْنَ بِهٖ بَيْنَ الْمَرْءِ وَزَوْجِهٖ وَمَا هُمْ بِضَآرِّيْنَ بِهٖ مِنْ اَحَدٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ وَيَتَعَلَّمُوْنَ مَا يَضُرُّهُمْ وَلَا يَنْفَعُهُمْ وَلَقَدْ عَلِمُوْا لَمَنِ اشْتَرٰىهُ مَا لَهٗ فِى الْاٰخِرَةِ مِنْ خَلَاقٍ وَلَبِئْسَ مَا شَرَوْا بِهٖٓ اَنْفُسَهُمْ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ
103	और अगर व`े ईमान लात`े और तकवा अपनात,े तो अलल़ाह क`े पास स`े इनाम उनक`े लएि बहेतर होता, काश व`े जानत!े	وَلَوْ اَنَّهُمْ اٰمَنُوْا وَاتَّقَوْا لَمَثُوْبَةٌ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ خَيْرٌ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ
104	ऐ ईमान वालो! 'राइना' (हम`े दखे) न कहो, बलक़ि 'उनज़ुरना' (हमारी तरफ दखे) कहो, और सनुो। और काफरिों क`े लएि दरदनाक अज़ाब ह।ै	يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَقُوْلُوْا رَاعِنَا وَقُوْلُوا انْظُرْنَا وَاسْمَعُوْا وَلِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابٌ اَلِيْمٌ
105	अहल`े कतिाब (पवत्रि कतिाब वालो) और मशु्रकिों म`े स`े काफरि लोग नहीं चाहत`े कि तमु्हार`े रब की ओर स`े तमु पर कोई भलाई उतरो लकेनि अलल़ाह अपनी रहमत जसि`े चाहता ह,ै उस`े दतेा ह।ै और अलल़ाह बहत्त बड़ी कपृा का मालकि ह।ै	مَا يَوَدُّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ وَلَا الْمُشْرِكِيْنَ اَنْ يُّنَزَّلَ عَلَيْكُمْ مِّنْ خَيْرٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَاللّٰهُ يَخْتَصُّ بِرَحْمَتِهٖ مَنْ يَّشَآءُ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ
106	जो आयत हम रदद् करत`े ह`ैया भलुा दत`े ह,ै हम उसस`े बहेतर या उसक`े समान लात`े ह।ैं क्या तमु नहीं जानत`े कि अलल़ाह हर चीज़ पर कदुरत रखता ह?ै	مَا نَنْسَخْ مِنْ اٰيَةٍ اَوْ نُنْسِهَا نَاْتِ بِخَيْرٍ مِّنْهَآ اَوْ مِثْلِهَا اَلَمْ تَعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ
107	क्या तमु नहीं जानत`े कि आकाशों और धरती की बादशाहत अलल़ाह की ह?ै और तमु्हारा कोई रक्षक और सहायक अलल़ाह क`े सवाि नहीं ह।ै	اَلَمْ تَعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ
108	क्या तमु अपन`े रसलू (मह्मम़द) स`े वही माँगना चाहत`े हो जो मसूा स`े पहल`े माँगा गया था? जो कोई ईमान को कफ़ुर स`े बदलता ह,ै वह नशि़चति रप़ स`े सीध`े रासत`े स`े भटक गया ह।ै	اَمْ تُرِيْدُوْنَ اَنْ تَسْـَٔلُوْا رَسُوْلَكُمْ كَمَا سُئِلَ مُوْسٰى مِنْ قَبْلُ وَمَنْ يَّتَبَدَّلِ الْكُفْرَ بِالْاِيْمَانِ فَقَدْ ضَلَّ سَوَآءَ السَّبِيْلِ

109	अहल॰ कितिाब म॰ से॰ बहतु स॰ लोग, अपन॰ मन म॰ जलन क॰ कारण, चाहत॰ ह॰ कि॰ तमु वशि़ास करन॰ क॰ बाद फरि स॰ काफरि हो जाओ, जबकि॰ सतय़ उनक॰ लएि सपषट हो चक़ा ह॰ तो तमु माफ करो और नज़रअंदाज़ करो, जब तक कि॰ अल़लाह अपना हक़ुम न दो॰ नशि़चय ही, अल़लाह हर चीज़ पर कद़रत रखता ह॰	وَدَّ كَثِيْرٌ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ لَوْ يَرُدُّوْنَكُمْ مِّنْۢ بَعْدِ اِيْمَانِكُمْ كُفَّارًا حَسَدًا مِّنْ عِنْدِ اَنْفُسِهِمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْحَقُّ فَاعْفُوْا وَاصْفَحُوْا حَتّٰى يَاْتِيَ اللّٰهُ بِاَمْرِهٖ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ
110	और नमाज़ क़ायम करो और ज़क़ात दो। और जो भी नकेी तमु अपन॰ लएि करत॰ हो, उस॰ तमु अल़लाह क॰ पास पाओगो॰ नशि़चय ही, अल़लाह तमु़हार॰ कर्मो॰ को दखे रहा ह॰	وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَمَا تُقَدِّمُوْا لِاَنْفُسِكُمْ مِّنْ خَيْرٍ تَجِدُوْهُ عِنْدَ اللّٰهِ اِنَّ اللّٰهَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ
111	और व॰ कहत॰ ह॰, 'जनऩत म॰ कोई नहीं॰ जाएगा सविाय यहद्वयिो॰ और ईसाइयो॰ क॰' यह उनकी ख़वाहशि॰ ह॰ कहो (महु़मम़द), 'अपना सबू़त लाओ, अगर तमु सच़ हो।'	وَقَالُوْا لَنْ يَّدْخُلَ الْجَنَّةَ اِلَّا مَنْ كَانَ هُوْدًا اَوْ نَصٰرٰى تِلْكَ اَمَانِيُّهُمْ قُلْ هَاتُوْا بُرْهَانَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ
112	हाँ, जो कोई अपन॰ चहेर॰ को अल़लाह क॰ सामन॰ पूरी तरह समर्पति कर द॰ और नकेी करता हो, उसका इनाम उसक॰ रब क॰ पास ह॰ उन॰ कोई डर नहीं॰ होगा और न व॰ दखु़ी होगो॰	بَلٰى مَنْ اَسْلَمَ وَجْهَهٗ لِلّٰهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ فَلَهٗۤ اَجْرُهٗ عِنْدَ رَبِّهٖ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ
113	और यहद्वी कहत॰ ह॰, 'ईसाई कसिी सही चीज़ पर नहीं॰ ह॰,' और ईसाई कहत॰ ह॰, 'यहद्वी कसिी सही चीज़ पर नहीं॰ ह॰,' जबकि॰ व॰ (दोनो) कतिाब पढ़त॰ ह॰ इसी तरह जो लोग नहीं॰ जानत॰, व॰ भी वसैी ही बात कहत॰ ह॰ तो अल़लाह कयिामत क॰ दनि उनक॰ बीच फसैला करगेा, जसिम॰ व॰ मतभदे करत॰ ह॰	وَقَالَتِ الْيَهُوْدُ لَيْسَتِ النَّصٰرٰى عَلٰى شَيْءٍ وَّقَالَتِ النَّصٰرٰى لَيْسَتِ الْيَهُوْدُ عَلٰى شَيْءٍ وَّهُمْ يَتْلُوْنَ الْكِتٰبَ كَذٰلِكَ قَالَ الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ مِثْلَ قَوْلِهِمْ فَاللّٰهُ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ
114	और उस॰ बड़ा ज़ालमि कौन हो सकता ह॰ जो अल़लाह की मसज़दिो॰ म॰ उसक॰ नाम का ज़क़ि॰ करन॰ स॰ रोकता हो और उन॰ उजाड़न॰ की कोशशि करता हो? उन॰ तो इनम॰ डरत॰ हुए प॰वशे करना चाहए।ि उनक॰ लएि दन्ुयिा म॰ रसु्वाई ह॰ और आख़रित म॰ भारी अज़ाब ह॰	وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ مَّنَعَ مَسٰجِدَ اللّٰهِ اَنْ يُّذْكَرَ فِيْهَا اسْمُهٗ وَسَعٰى فِيْ خَرَابِهَا اُولٰٓئِكَ مَا كَانَ لَهُمْ اَنْ يَّدْخُلُوْهَاۤ اِلَّا خَآئِفِيْنَ لَهُمْ فِي الدُّنْيَا خِزْيٌ وَّلَهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيْمٌ
115	और पूरब और पश़चमि अल़लाह का ह॰ तमु जसि ओर भी महुँ करो, वहा॰ अल़लाह का चहेरा ह॰ नशि़चय ही, अल़लाह बहतु व़यापक, सरव़ज़्ञ ह॰	وَلِلّٰهِ الْمَشْرِقُ وَالْمَغْرِبُ فَاَيْنَمَا تُوَلُّوْا فَثَمَّ وَجْهُ اللّٰهِ اِنَّ اللّٰهَ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ
116	और व॰ कहत॰ ह॰, 'अल़लाह न॰ बटेा लयिा।' वह पवत्रि ह॰, बल़कि॰ जो कछु आकाशो॰ और धरती म॰ ह॰, व॰ वह उसी का ह॰ सब उसक॰ सामन॰ झकु॰ हुए ह॰	وَقَالُوا اتَّخَذَ اللّٰهُ وَلَدًا سُبْحٰنَهٗ بَلْ لَّهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ كُلٌّ لَّهٗ قٰنِتُوْنَ
117	वह आकाशो॰ और धरती का पदैा करन॰ वाला ह॰ जब वह कसिी चीज़ का इरादा करता ह॰, तो बस कहता ह॰, 'हो जा!' और वह हो जाती ह॰	بَدِيْعُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاِذَا قَضٰۤى اَمْرًا فَاِنَّمَا يَقُوْلُ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ

118	और जो लोग नहीं जानत,े व ेकहत हे,ै 'अल्लाह हमस ेबात कय़ों नहीं करता या हमार ेपास कोई नशिानी कय़ों नहीं आती?' उनक ेपहल ेवालो ंन ेभी ऐसा ही कहा था। उनक ेदलि एक जसै ेही हमन ेउन लोगो ंक ेलए नशिानयिा ँस्पष्ट कर दी ह ैजो यकीन करत ेहै।	وَقَالَ الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ لَوْلَا يُكَلِّمُنَا اللّٰهُ اَوْ تَاْتِيْنَآ اٰيَةٌ ۭ كَذٰلِكَ قَالَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ مِّثْلَ قَوْلِهِمْ ۘ تَشَابَهَتْ قُلُوْبُهُمْ ۭ قَدْ بَيَّنَّا الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يُّوْقِنُوْنَ
119	नश्चिय ही, हमन ेतमु्ह ै(मुहम्मद) हक़ क ेसाथ खशुखबरी दने ेवाला और डरान ेवाला बनाकर भजेा ह,ै और तमु्स ेजहन्नम वालों की जवाबदहेी नहीं मागँी जाएगी।	اِنَّآ اَرْسَلْنٰكَ بِالْحَقِّ بَشِيْرًا وَّنَذِيْرًا ۙ وَّلَا تُسْـَٔـلُ عَنْ اَصْحٰبِ الْجَحِيْمِ
120	और यहद्दी और ईसाई तमु्स ेकभी रज़ी नहीं होंग ेजब तक कि तमु उनक ेदीन का अनसुरण न करो। कहो, 'नश्चिय ही, अल्लाह की हदिायत ही असली हदिायत ह।ै' और अगर तमु उस ज्ञान क ेबाद जो तमु्ह ेमलिा ह,ै उनकी ख़वाहशिों का अनसुरण करो, तो तमु्हारा कोई रक्षक और सहायक अल्लाह क ेसवि नहीं होगा।	وَلَنْ تَرْضٰى عَنْكَ الْيَهُوْدُ وَلَا النَّصٰرٰى حَتّٰى تَتَّبِعَ مِلَّتَهُمْ ۭ قُلْ اِنَّ هُدَى اللّٰهِ هُوَ الْهُدٰى ۭ وَلَىِٕنِ اتَّبَعْتَ اَهْوَاۗءَهُمْ بَعْدَ الَّذِيْ جَاۗءَكَ مِنَ الْعِلْمِ ۙ مَا لَكَ مِنَ اللّٰهِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ
121	जनि लोगों को हमन ेकताब दी, व ेउस ेउसी तरह पढत ेह ैजसैा उसका हक़ ह।ै वही लोग उस पर ईमान लात ेह।ैं और जो कोई उसका इनकार करता ह,ै वही लोग घाट मे ंह।ैं	اَلَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَتْلُوْنَهٗ حَقَّ تِلَاوَتِهٖ ۭ اُولٰۗىِٕكَ يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ ۭ وَمَنْ يَّكْفُرْ بِهٖ فَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ
122	ऐ बनी इस्राइल! मरी उन नअेमतों को याद करो जो मन ैतमु्ह ैदीं, और यह कि मन ैतमु्ह ैतमाम आलम पर फज़ीलत दी।	يٰبَنِيْٓ اِسْرَاۗءِيْلَ اذْكُرُوْا نِعْمَتِيَ الَّتِيْٓ اَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ وَاَنِّىْ فَضَّلْتُكُمْ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ
123	और उस दनि स ेडरो, जब कोई कसिी क ेलए कछु नहीं कर सकेगा, न कोई फरीती स्वीकार होगी, न कोई मदद काम आएगी, और न उनह ेकोई सहायता मलिेगी।	وَاتَّقُوْا يَوْمًا لَّا تَجْزِيْ نَفْسٌ عَنْ نَّفْسٍ شَيْـــًٔا وَّلَا يُقْبَلُ مِنْهَا عَدْلٌ وَّلَا تَنْفَعُهَا شَفَاعَةٌ وَّلَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ
124	और (याद करो), जब इब्राहीम को उनक ेरब न ेकछु शब्दों स ेआज़माया, और उनहोंन ेउस ेपूरा कयिा। वह (अल्लाह) बोला, 'म ैतमु्ह ैतमाम इंसानों का इमाम (नेता) बनाऊँगा।' उसन े(इब्राहीम न)ै कहा, 'और मरी औलाद म ेंस ेभी?' अल्लाह न ेकहा, '(हा,ँ लकेनि) मरो वादा ज़ालमिों क ेलए नहीं ह।ै'	وَاِذِ ابْتَلٰٓى اِبْرٰهٖمَ رَبُّهٗ بِكَلِمٰتٍ فَاَتَمَّهُنَّ ۭ قَالَ اِنِّىْ جَاعِلُكَ لِلنَّاسِ اِمَامًا ۭ قَالَ وَمِنْ ذُرِّيَّتِيْ ۭ قَالَ لَا يَنَالُ عَهْدِي الظّٰلِمِيْنَ
125	और (याद करो), जब हमन ेउस घर (काबा) को लोगों क ेलए मलिन-स्थल और अमन का ठकिाना बनाया। और इब्राहीम क ेमकाम को नमाज़ की जगह बनाओ। और हमन ेइब्राहीम और इस्माइल को हक़ुम दयिा कि मरे ेघर को तवाफ करन ेवालों, इबादत करन ेवालों, रक़ुअ और सजदा करन ेवालों क ेलए पाक करो।	وَاِذْ جَعَلْنَا الْبَيْتَ مَثَابَةً لِّلنَّاسِ وَاَمْنًا ۭ وَاتَّخِذُوْا مِنْ مَّقَامِ اِبْرٰهٖمَ مُصَلًّى ۭ وَعَهِدْنَآ اِلٰٓى اِبْرٰهٖمَ وَاِسْمٰعِيْلَ اَنْ طَهِّرَا بَيْتِيَ لِلطَّاۗىِٕفِيْنَ وَالْعٰكِفِيْنَ وَالرُّكَّعِ السُّجُوْدِ
126	और (याद करो) जब इब्राहीम न ेकहा, 'ऐ मरे ेरब! इस ेअमन का शहर बना, और इसक ेबाशदिों म ेंस ेजो लोग अल्लाह और आखरिी दनि पर वश्विास करत ेह,ै उनह ेफलों का रज़िक़ द।ो' उसन े(अल्लाह न)ै जवाब दयिा, 'और जो काफरि ह,ै उस ेभी म ैथोड़ा फायदा दगूँा, फरि उस ेआग क ेअज़ाब की ओर मजबूर करगूँा। और वह कतिना बरा ठकिाना ह।ै'	وَاِذْ قَالَ اِبْرٰهٖمُ رَبِّ اجْعَلْ هٰذَا بَلَدًا اٰمِنًا وَّارْزُقْ اَهْلَهٗ مِنَ الثَّمَرٰتِ مَنْ اٰمَنَ مِنْهُمْ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ۭ قَالَ وَمَنْ كَفَرَ فَاُمَتِّعُهٗ قَلِيْلًا ثُمَّ اَضْطَرُّهٗٓ اِلٰى عَذَابِ النَّارِ ۭ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ

127	और (याद करो) जब इब्राहीम और इसमाइल बतैलुलाह की नीव उठा रहे थे, (और दआ कर रहे थे), 'ऐ हमारे रब! हमसे (हमारा काम) कबूल कर। निशचय ही, तू सुनने वाला, जानने वाला है'	وَاِذْ يَرْفَعُ اِبْرٰهٖمُ الْقَوَاعِدَ مِنَ الْبَيْتِ وَاِسْمٰعِيْلُ رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا اِنَّكَ اَنْتَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ
128	ऐ हमारे रब! हम तुझ पर समरपति होने वाला बना, और हमारी औलाद को भी तुझ पर समरपति होने वाला उममत बना। और हम हमारी इबादत (हज) के तरीके दिखा, और हमारी तौबा कबूल कर। निशचय ही, तू बहतु तौबा कबूल करने वाला, रहम करने वाला है	رَبَّنَا وَاجْعَلْنَا مُسْلِمَيْنِ لَكَ وَمِنْ ذُرِّيَّتِنَآ اُمَّةً مُّسْلِمَةً لَّكَ وَاَرِنَا مَنَاسِكَنَا وَتُبْ عَلَيْنَا اِنَّكَ اَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ
129	ऐ हमारे रब! उनके बीच उनके ही मे से एक रसूल भेज, जो उनकी तरफ तेरी आयतें पढ़े और उन्हें किताब और हकिमत (बदुधिमतता) सखिाए, और उन्हें पाक करे निशचय ही, तू बहतु इजज़त वाला, हकिमत वाला है	رَبَّنَا وَابْعَثْ فِيْهِمْ رَسُوْلًا مِّنْهُمْ يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِكَ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَيُزَكِّيْهِمْ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ
130	और जो इब्राहीम के दीन (धरम) से नफरत करता है, वह कवेल वही है जो अपने आप को मूरख बनाता है और हमने उसे दुनिया मे चुन लिया। और निशचय ही, आखरित मे वह नके लोगों मे से होगा।	وَمَنْ يَّرْغَبُ عَنْ مِّلَّةِ اِبْرٰهٖمَ اِلَّا مَنْ سَفِهَ نَفْسَه وَلَقَدِ اصْطَفَيْنٰهُ فِى الدُّنْيَا وَاِنَّه فِى الْاٰخِرَةِ لَمِنَ الصّٰلِحِيْنَ
131	(याद करो) जब उसके रब ने उससे कहा, 'समरपण कर!' उसने जवाब दिया, 'मनै अपने आप को तमाम आलम के रब के सामने समरपति कर दिया।'	اِذْ قَالَ لَه رَبُّه اَسْلِمْ قَالَ اَسْلَمْتُ لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ
132	और इब्राहीम ने अपने बेटों को यह वसीयत की, और याकब ने भी (कहा), 'ऐ मरे बेटो! निशचय ही अललाह ने तुमहार लिए इस दीन को चना है तो तुम मरो, मगर मुसलमि बनकर।'	وَوَصّٰى بِهَآ اِبْرٰهٖمُ بَنِيْهِ وَيَعْقُوْبُ يٰبَنِيَّ اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰى لَكُمُ الدِّيْنَ فَلَا تَمُوْتُنَّ اِلَّا وَاَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ
133	क्या तुम गवाह थे जब याकब के पास मौत आई, जब उसने अपने बेटों से कहा, 'मरे बाद तुम कसिकी इबादत करोगे?' उनहोंने जवाब दिया, 'हम तरे रब और तरे बाप-दादा इब्राहीम, इसमाइल और इसहाक के रब की इबादत करगे, जो एकमात्र रब है, और हम उसी के सामने समरपति है'	اَمْ كُنْتُمْ شُهَدَاءَ اِذْ حَضَرَ يَعْقُوْبَ الْمَوْتُ اِذْ قَالَ لِبَنِيْهِ مَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ بَعْدِيْ قَالُوْا نَعْبُدُ اِلٰهَكَ وَاِلٰهَ اٰبَائِكَ اِبْرٰهٖمَ وَاِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ اِلٰهًا وَّاحِدًا وَنَحْنُ لَه مُسْلِمُوْنَ
134	वह एक उममत थी जो गज़र गई। उनके लिए वही है जो उनहोंने कमाया, और तुमहार लिए वही है जो तुमने कमाया। और तुमसे उनके करमों की जवाबदही नहीं माँगी जाएगी।	تِلْكَ اُمَّةٌ قَدْ خَلَتْ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَلَكُمْ مَّا كَسَبْتُمْ وَلَا تُسْـَٔلُوْنَ عَمَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ
135	और वे कहते है, 'यहद्वी या ईसाई बनो, तो तुमहे हदिायत मलिगेी।' कहो, 'नही! बलक इब्राहीम का दीन, जो सीधा है, और वह मशुरकिों (मूरतपिूजकों) मे से नहीं था।'	وَقَالُوْا كُوْنُوْا هُوْدًا اَوْ نَصٰرٰى تَهْتَدُوْا قُلْ بَلْ مِلَّةَ اِبْرٰهٖمَ حَنِيْفًا وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ

136	कहो, 'हम अल्लाह पर वशि्वास करत`े ह`ैऔर उस पर जो हम पर उतारा गया, और जो इब्राहीम, इस्माइल, इसहाक, याकब़ और उनकी औलाद पर उतारा गया, और जो मूसा और ईसा को दयिा गया, और जो नबयिों को उनक`ेरब स`ेदयिा गया। हम उनक`ेबीच कोई फरक़ नहीं करत,े और हम उसी क`ेसामन`े समरप़ति ह`ैं'	قُوْلُوْٓا اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَمَآ اُنْزِلَ اِلَيْنَا وَمَآ اُنْزِلَ اِلٰٓى اِبْرٰهٖمَ وَاِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ وَالْاَسْبَاطِ وَمَآ اُوْتِيَ مُوْسٰى وَعِيْسٰى وَمَآ اُوْتِيَ النَّبِيُّوْنَ مِنْ رَّبِّهِمْ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْهُمْ وَنَحْنُ لَه مُسْلِمُوْنَ
137	तो अगर व`ेउसी तरह वशि्वास कर`ेजसै`ेतमु्न`ेवशि्वास कयिा, तो नशि्चय ही उनह`ेंहदिायत मलिगेी। लकेनि अगर व`ेमडु़ गए, तो व`ेतमु्हार`ेसाथ दशु्मनी म`ेंह,ै तो अल्लाह तमु्ह`ें(मह़म्मद) उनकी ख़लिाफत म`ेंकाफी ह`ैऔर वह सनु्न`ेवाला, जानन`ेवाला ह`ै	فَاِنْ اٰمَنُوْا بِمِثْلِ مَآ اٰمَنْتُمْ بِه فَقَدِ اهْتَدَوْا وَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّمَا هُمْ فِيْ شِقَاقٍ فَسَيَكْفِيْكَهُمُ اللّٰهُ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ
138	(हमारा रंग ह)ै अल्लाह का रंग। और अल्लाह क`ेरंग स`ेबहेतर रंग कसिका हो सकता ह?ै और हम उसी की इबादत करत`ेह`ैं	صِبْغَةَ اللّٰهِ وَمَنْ اَحْسَنُ مِنَ اللّٰهِ صِبْغَةً وَّنَحْنُ لَه عٰبِدُوْنَ
139	कहो (मह़म्मद), 'क्या तमु्ह मस`ेअल्लाह क`ेबार`ेम`ेंबहस करत`ेहो, जबकि वह हमारा और तमु्हारा रब ह?ै हमार`ेकरम् हमार`ेलएि और तमु्हार`ेकरम् तमु्हार`ेलएि। और हम उसी क`े लएि इख़्लास (नषि्ठा) रखत`ेह`ैं'	قُلْ اَتُحَاۤجُّوْنَنَا فِى اللّٰهِ وَهُوَ رَبُّنَا وَرَبُّكُمْ وَلَنَآ اَعْمَالُنَا وَلَكُمْ اَعْمَالُكُمْ وَنَحْنُ لَه مُخْلِصُوْنَ
140	क्या तमु्ह कहत`ेहो कि इब्राहीम, इस्माइल, इसहाक, याकब़ और उनकी औलाद यहद्दी या ईसाई थ?े कहो, 'क्या तमु्ह ज़्यादा जानत`ेहो या अल्लाह? और उसस`ेबड़ा ज़ालमि कौन हो सकता ह`ैजो अल्लाह की दी हुई गवाही को छपिाए?' और अल्लाह तमु्हार`ेकरम्ों स`ेबखे़बर नहीं ह`ैं	اَمْ تَقُوْلُوْنَ اِنَّ اِبْرٰهٖمَ وَاِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ وَالْاَسْبَاطَ كَانُوْا هُوْدًا اَوْ نَصٰرٰى قُلْ ءَاَنْتُمْ اَعْلَمُ اَمِ اللّٰهُ وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ كَتَمَ شَهَادَةً عِنْدَه مِنَ اللّٰهِ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ
141	वह एक उम्मत थी जो गज़ुर गई। उनक`ेलएि वही ह`ैजो उनह`ोंन`े कमाया, और तमु्हार`ेलएि वही ह`ैजो तमु्न`ेकमाया। और तमु्स`े उनक`ेकरम्ों की जवाबदही नहीं माँगी जाएगी।	تِلْكَ اُمَّةٌ قَدْ خَلَتْ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَلَكُمْ مَّا كَسَبْتُمْ وَلَا تُسْـَٔلُوْنَ عَمَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ
142	लोगों म`ेस`ेकछु मूर्ख कहग,ें 'क्या चीज़ न`ेउनह`ें(मसु्लमानों को) उस कबिल`ेस`ेफरे दयिा जसि पर व`ेथ?े' कहो (मह़म्मद), 'पूरब और पश्चमि अल्लाह का ह;ै वह जसि`ेचाहता ह,ै सीध`े रास्त`ेकी हदिायत दतेा ह'ै	سَيَقُوْلُ السُّفَهَاۤءُ مِنَ النَّاسِ مَا وَلّٰىهُمْ عَنْ قِبْلَتِهِمُ الَّتِيْ كَانُوْا عَلَيْهَا قُلْ لِّلّٰهِ الْمَشْرِقُ وَالْمَغْرِبُ يَهْدِيْ مَنْ يَّشَاۤءُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ

143	और इस तरह हमने तुम (उम्मत इस्लाम) को 'उम्मत वस्त' (मध्य मार्ग की उम्मत) बनाया ताकि तुम इंसानों पर गवाह बनो और रसूल (मुहम्मद) तुम पर गवाह बनो और हमने उस किबला को, जिस पर तुम थे, केवल इसलिए बनाया ताकि हम जान सकें कि कौन रसूल का अनुसरण करता है और कौन पीछे हटता है निश्चय ही, (किबला का बदलना) भारी था, सिवाय उन लोगों के लिए जिन्हें अल्लाह ने हिदायत दी। और अल्लाह तुम्हारा ईमान बेकार नहीं करेगा। निश्चय ही, अल्लाह इंसानों के लिए बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है	وَكَذٰلِكَ جَعَلْنٰكُمْ اُمَّةً وَّسَطًا لِّتَكُوْنُوْا شُهَدَاءَ عَلَى النَّاسِ وَيَكُوْنَ الرَّسُوْلُ عَلَيْكُمْ شَهِيْدًا ۗ وَمَا جَعَلْنَا الْقِبْلَةَ الَّتِيْ كُنْتَ عَلَيْهَآ اِلَّا لِنَعْلَمَ مَنْ يَّتَّبِعُ الرَّسُوْلَ مِمَّنْ يَّنْقَلِبُ عَلٰى عَقِبَيْهِ ۗ وَاِنْ كَانَتْ لَكَبِيْرَةً اِلَّا عَلَى الَّذِيْنَ هَدَى اللّٰهُ ۗ وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُضِيْعَ اِيْمَانَكُمْ ۗ اِنَّ اللّٰهَ بِالنَّاسِ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ
144	हम तुम्हारा (मुहम्मद) चेहरा बार-बार आकाश की ओर उठते देखते है, तो हम तुम्हें उस किबला की ओर फरे देगे जो तुम्हें पसंद है तो अपना मुँह मस्जिदुल हराम की ओर करो। और तुम जहाँ भी हो, अपना मुँह उसी ओर करो। और जिन्हें किताब दी गई, वे जानते है कि यह उनके रब की ओर से हक़ है और अल्लाह उनके करमों से बेखबर नहीं है	قَدْ نَرٰى تَقَلُّبَ وَجْهِكَ فِي السَّمَاۤءِ ۚ فَلَنُوَلِّيَنَّكَ قِبْلَةً تَرْضٰىهَا ۪ فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۗ وَحَيْثُ مَا كُنْتُمْ فَوَلُّوْا وُجُوْهَكُمْ شَطْرَهٗ ۗ وَاِنَّ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ لَيَعْلَمُوْنَ اَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّهِمْ ۗ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا يَعْمَلُوْنَ
145	और अगर तुम अहले किताब को हर निशानी दे दो, तो भी वे तुम्हारे किबला का अनुसरण नहीं करेगे। और न तुम उनके किबला का अनुसरण करने वाले हो। और न वे एक-दूसरे के किबला का अनुसरण करने वाले है और अगर तुम उस ज्ञान के बाद जो तुम्हें मिला है, उनकी ख्वाहिशों का अनुसरण करो, तो निश्चय ही तुम ज़ालिमों में से हो जाओगे।	وَلَئِنْ اَتَيْتَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ بِكُلِّ اٰيَةٍ مَّا تَبِعُوْا قِبْلَتَكَ ۚ وَمَآ اَنْتَ بِتَابِعٍ قِبْلَتَهُمْ ۚ وَمَا بَعْضُهُمْ بِتَابِعٍ قِبْلَةَ بَعْضٍ ۗ وَلَئِنِ اتَّبَعْتَ اَهْوَاۤءَهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَا جَاۤءَكَ مِنَ الْعِلْمِ ۙ اِنَّكَ اِذًا لَّمِنَ الظّٰلِمِيْنَ
146	जिन्हें हमने किताब दी, वे उस (मुहम्मद को) उसी तरह पहचानते है जैसे अपने बेटों को पहचानते है लेकिन उनमें से कुछ लोग सत्य को जानबूझकर छुपाते है	اَلَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَعْرِفُوْنَهٗ كَمَا يَعْرِفُوْنَ اَبْنَاۤءَهُمْ ۗ وَاِنَّ فَرِيْقًا مِّنْهُمْ لَيَكْتُمُوْنَ الْحَقَّ وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ
147	सत्य तुम्हारे रब की ओर से है, तो तुम कभी भी शक करने वालों में से न होना।	اَلْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِيْنَ
148	और हर एक की अपनी दिशा है जिसकी ओर वह मुँह करता है तो नेकी कामों में एक-दूसरे से आगे बढ़ो। तुम जहाँ भी हो, अल्लाह तुम सबको एक साथ लाएगा। निश्चय ही, अल्लाह हर चीज़ पर कुदरत रखता है	وَلِكُلٍّ وِّجْهَةٌ هُوَ مُوَلِّيْهَا فَاسْتَبِقُوا الْخَيْرٰتِ ۗ اَيْنَ مَا تَكُوْنُوْا يَاْتِ بِكُمُ اللّٰهُ جَمِيْعًا ۗ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ
149	और तुम (मुहम्मद) जहाँ से भी निकलो, अपना मुँह मस्जिदुल हराम की ओर करो। निश्चय ही, यह तुम्हारे रब की ओर से हक़ (सत्य) है और अल्लाह तुम्हारे करमों से बेखबर नहीं है	وَمِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۗ وَاِنَّهٗ لَلْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ ۗ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ

150	और तमु (मुहम्मद) जहाँ से भी निकलो, अपना मुँह मसजिदिल हराम की ओर करो। और तमु जहाँ भी हो, अपना मुँह उसी ओर करो, ताकि लोगों को तमुहारे खिलाफ कोई बहाना न मिले, सिवाय उनमे से जो जालिम हैं उनसे न डरो, बलकि मुझसे डरो, ताकि मै अपनी नअेमत तमु पर पूरी करूँ और ताकि तमु हिदायत पाओ।	وَمِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَحَيْثُ مَا كُنْتُمْ فَوَلُّوْا وُجُوْهَكُمْ شَطْرَه لِئَلَّا يَكُوْنَ لِلنَّاسِ عَلَيْكُمْ حُجَّةٌ اِلَّا الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْهُمْ فَلَا تَخْشَوْهُمْ وَاخْشَوْنِيْ وَلِاُتِمَّ نِعْمَتِيْ عَلَيْكُمْ وَلَعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ
151	जसै हमने तमुहारे बीच तमु मे से एक रसूल (मुहम्मद) भेजा जो हमारी आयतें तमुह पढ़ता है, और तमुह पाक करता है, और तमुह किताब और हिकमत सिखाता है, और वह सिखाता है जो तमु नहीं जानते थे।	كَمَآ اَرْسَلْنَا فِيْكُمْ رَسُوْلًا مِّنْكُمْ يَتْلُوْا عَلَيْكُمْ اٰيٰتِنَا وَيُزَكِّيْكُمْ وَيُعَلِّمُكُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَيُعَلِّمُكُمْ مَّا لَمْ تَكُوْنُوْا تَعْلَمُوْنَ
152	तो मुझे याद करो, मै तमुह याद करूँगा। मेरा शुक्र अदा करो, और मेरे साथ नाफरमानी न करो।	فَاذْكُرُوْنِيْٓ اَذْكُرْكُمْ وَاشْكُرُوْا لِيْ وَلَا تَكْفُرُوْنِ
153	ऐ ईमान वालो! सबर और नमाज़ के साथ (अल्लाह से) मदद माँगो। निश्चय ही, अल्लाह सबर करने वालों के साथ है।	يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اسْتَعِيْنُوْا بِالصَّبْرِ وَالصَّلٰوةِ اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ
154	और जो लोग अल्लाह के रास्ते मे मारे गए, उनके बारे मे न कहो कि वे मर गए। बल्कि, (वे) ज़िंदा है, लेकिन तमुह इसका एहसास नहीं है।	وَلَا تَقُوْلُوْا لِمَنْ يُّقْتَلُ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَمْوَاتٌ بَلْ اَحْيَاءٌ وَّلٰكِنْ لَّا تَشْعُرُوْنَ
155	और हम निश्चिति रूप से तमुहारी आज़माइश करेंगे थोड़े से डर, भूख, माल, जान और फलों की कमी के साथ। और सबर करने वालों को खुशखबरी दो,	وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ بِشَيْءٍ مِّنَ الْخَوْفِ وَالْجُوْعِ وَنَقْصٍ مِّنَ الْاَمْوَالِ وَالْاَنْفُسِ وَالثَّمَرٰتِ وَبَشِّرِ الصّٰبِرِيْنَ
156	(अर्थात) वे लोग जो जब मुसीबत पड़ती है, कहते है, 'हम अल्लाह के है और उसी की ओर हम लौटना है।'	اَلَّذِيْنَ اِذَآ اَصَابَتْهُمْ مُّصِيْبَةٌ قَالُوْٓا اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّآ اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ
157	वही है जिन पर उनके रब की रहमत और माफी है, और वही लोग हिदायत पाने वाले है।	اُولٰٓئِكَ عَلَيْهِمْ صَلَوٰتٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ وَرَحْمَةٌ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُهْتَدُوْنَ
158	निश्चय ही, सफा और मरवा अल्लाह के निशानों मे से है। तो जो कोई बैतुल्लाह मे हज या उमराह करे, उसके लिए उन दोनों के बीच सई करना कोई गुनाह नहीं है। और जो कोई अपनी मरज़ी से नेकी करता है, तो अल्लाह बहुत शुक्रगुज़ार, जानने वाला है।	اِنَّ الصَّفَا وَالْمَرْوَةَ مِنْ شَعَآئِرِ اللّٰهِ فَمَنْ حَجَّ الْبَيْتَ اَوِ اعْتَمَرَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِ اَنْ يَّطَّوَّفَ بِهِمَا وَمَنْ تَطَوَّعَ خَيْرًا فَاِنَّ اللّٰهَ شَاكِرٌ عَلِيْمٌ
159	निश्चय ही, जो लोग उस सपष्टता और हिदायत को छपिाते है जो हमने किताब (अल-कुरआन) मे इंसानों के लिए बयान की, उनह अल्लाह और लानत करने वाले लानत करते है,	اِنَّ الَّذِيْنَ يَكْتُمُوْنَ مَآ اَنْزَلْنَا مِنَ الْبَيِّنٰتِ وَالْهُدٰى مِنْ بَعْدِ مَا بَيَّنّٰهُ لِلنَّاسِ فِى الْكِتٰبِ اُولٰٓئِكَ يَلْعَنُهُمُ اللّٰهُ وَيَلْعَنُهُمُ اللّٰعِنُوْنَ

160	सिवाय उन लोगों के जो तौबा करें, सुधार करें और सत्य को ज़ाहिर करें। मैं उनकी तौबा कबूल करता हूँ और मैं बहुत तौबा कबूल करने वाला, रहम करने वाला हूँ	اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا وَاَصْلَحُوْا وَبَيَّنُوْا فَاُولٰٓئِكَ اَتُوْبُ عَلَيْهِمْ وَاَنَا التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ
161	निश्चय ही, जो लोग कुफ़्र करते हैं और काफ़िर ही मर जाते हैं, उन पर अल्लाह, फ़रिश्तों और तमाम इंसानों की लानत है।	اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَمَاتُوْا وَهُمْ كُفَّارٌ اُولٰٓئِكَ عَلَيْهِمْ لَعْنَةُ اللّٰهِ وَالْمَلٰٓئِكَةِ وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ
162	वे उस (लानत) में हमेशा रहेंगे, उनका अज़ाब हल्का नहीं किया जाएगा, और उन्हें कोई मोहलत नहीं दी जाएगी।	خٰلِدِيْنَ فِيْهَا لَا يُخَفَّفُ عَنْهُمُ الْعَذَابُ وَلَا هُمْ يُنْظَرُوْنَ
163	और तुम्हारा रब एकमात्र रब है, उसके सिवा कोई रब नहीं, जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है।	وَاِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ لَآاِلٰهَ اِلَّا هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ
164	निश्चय ही, आकाशों और धरती की पैदाइश में, रात और दिन के बदलने में, जहाज़ जो समुद्र में इंसानों के लिए फ़ायदेमंद चीज़ों के साथ चलते हैं, और जो पानी अल्लाह ने आकाश से उतारा, फिर उसके द्वारा मरी हुई धरती को ज़िंदा किया, और उसमें हर तरह के जानवर फैलाए, और हवाओं के चलने और आकाश और धरती के बीच नियंत्रित बादलों में, निश्चय ही, समझने वालों के लिए (अल्लाह की) निशानियाँ हैं।	اِنَّ فِيْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاخْتِلَافِ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَالْفُلْكِ الَّتِيْ تَجْرِيْ فِي الْبَحْرِ بِمَا يَنْفَعُ النَّاسَ وَمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ مِنَ السَّمَاءِ مِنْ مَّاءٍ فَاَحْيَا بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا وَبَثَّ فِيْهَا مِنْ كُلِّ دَآبَّةٍ وَّتَصْرِيْفِ الرِّيٰحِ وَالسَّحَابِ الْمُسَخَّرِ بَيْنَ السَّمَاءِ وَالْاَرْضِ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ
165	और कुछ लोग ऐसे हैं जो अल्लाह के सिवा दूसरों को उसका साझी बनाते हैं, और उन्हें वैसा ही प्यार करते हैं जैसा अल्लाह को करना चाहिए। लेकिन जो लोग ईमान लाए, उनका अल्लाह से प्यार बहुत गहरा है। काश ज़ालिम लोग उस समय को देख लें जब वे अज़ाब को देखेंगे, कि सारी ताकत अल्लाह की है, और अल्लाह सख़्त अज़ाब देने वाला है।	وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّتَّخِذُ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَنْدَادًا يُّحِبُّوْنَهُمْ كَحُبِّ اللّٰهِ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَشَدُّ حُبًّا لِّلّٰهِ وَلَوْ يَرَى الَّذِيْنَ ظَلَمُوْٓا اِذْ يَرَوْنَ الْعَذَابَ اَنَّ الْقُوَّةَ لِلّٰهِ جَمِيْعًا وَّاَنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعَذَابِ
166	(वह समय जब) वे लोग जिनका अनुसरण किया गया, अपने अनुयायियों से अलग हो जाएँगे, और वे अज़ाब देखेंगे, और उनके बीच सारे रिश्ते टूट जाएँगे।	اِذْ تَبَرَّاَ الَّذِيْنَ اتُّبِعُوْا مِنَ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْا وَرَاَوُا الْعَذَابَ وَتَقَطَّعَتْ بِهِمُ الْاَسْبَابُ
167	और जो लोग अनुसरण करते थे, वे कहेंगे, 'काश हमें (दुनिया में) लौटने का मौका मिले, तो हम उनसे उसी तरह अलग हो जाएँ जैसे उन्होंने हमसे अलग किया।' इस तरह अल्लाह उन्हें उनके करम दिखाएगा, जो उनके लिए हसरत बनेंगे। और वे जहन्नम से निकलने वाले नहीं हैं।	وَقَالَ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْا لَوْ اَنَّ لَنَا كَرَّةً فَنَتَبَرَّاَ مِنْهُمْ كَمَا تَبَرَّءُوْا مِنَّا كَذٰلِكَ يُرِيْهِمُ اللّٰهُ اَعْمَالَهُمْ حَسَرٰتٍ عَلَيْهِمْ وَمَا هُمْ بِخٰرِجِيْنَ مِنَ النَّارِ
168	ऐ लोगो! धरती में जो कुछ हलाल और पाकीज़ा है, उसे खाओ, और शैतान के क़दमों का अनुसरण न करो। निश्चय ही, वह तुम्हारा खुला दुश्मन है।	يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ كُلُوْا مِمَّا فِي الْاَرْضِ حَلٰلًا طَيِّبًا وَّلَا تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ اِنَّه لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ

169	वह तमुह कवेल बरुाई और बहेयाई का हक़ुम दतेा ह,ै और यह कि तमु अलल़ाह पर वह कहो जो तमु नहीं जानत।े	اِنَّمَا يَأْمُرُكُمْ بِالسُّوْءِ وَالْفَحْشَاءِ وَاَنْ تَقُوْلُوْا عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ
170	और जब उनस कहा जाता ह,ै 'उसका अनसुरण करो जो अलल़ाह न उतारा,' तो व कहत ह,ै 'नहीं, हम तो उसी का अनसुरण करगे जो हमन अपन बाप-दादा को करत पाया।' भल ही उनक बाप-दादा कछु न समझत हों और न हदिायत पाए हों?	وَاِذَا قِيْلَ لَهُمُ اتَّبِعُوْا مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ قَالُوْا بَلْ نَتَّبِعُ مَآ اَلْفَيْنَا عَلَيْهِ اٰبَاءَنَا ۭ اَوَلَوْ كَانَ اٰبَاؤُهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ شَيْـــًٔا وَّلَا يَهْتَدُوْنَ
171	और काफरिों की मसिाल उस शख़्स की तरह ह,ै जो उस चीज़ को पक़ुारता ह,ै जो न सनुती ह,ै और न दखेती ह,ै सवािय चीख़न और पक़ुारन को। व बहर, गूगं ेऔर अधं ेह,ै इसलए व समझत नहीं।	وَمَثَلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا كَمَثَلِ الَّذِيْ يَنْعِقُ بِمَا لَا يَسْمَعُ اِلَّا دُعَاۗءً وَّنِدَاۗءً ۭ صُمٌّۢ بُكْمٌ عُمْيٌ فَهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ
172	ऐ ईमान वालो! उस अच्छ रेज़िक़ स खाओ जो हमन तमुह दयिा और अलल़ाह का शक़ुर अदा करो, अगर तमु कवेल उसी की इबादत करत हो।	يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُلُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ وَاشْكُرُوْا لِلّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ اِيَّاهُ تَعْبُدُوْنَ
173	नशि्चय ही, उसन तमु पर कवेल मरुदार, ख़ून, सअुर का मासँ, और वह (जानवर) जो अलल़ाह क सवि कसिी और क नाम पर ज़बह कयिा गया हो, हराम कयिा ह। लकेनि जो कोई मजबूरी म (इस खाए), बनि इच्छा क और हद स आग न बढ,े तो उसक लए कोई गनुाह नहीं ह। नशि्चय ही, अलल़ाह बहत माफ करन वाला, रहम करन वाला ह।	اِنَّمَا حَرَّمَ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةَ وَالدَّمَ وَلَحْمَ الْخِنْزِيْرِ وَمَآ اُهِلَّ بِهٖ لِغَيْرِ اللّٰهِ ۚ فَمَنِ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَّلَا عَادٍ فَلَآ اِثْمَ عَلَيْهِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ
174	नशि्चय ही, जो लोग अलल़ाह की उतारी हई कतिाब को छपिात ह और उस ससत दाम म बचेत ह,ै व अपन पटे म आग भर रह ह। अलल़ाह कयिामत क दनि उनस बात नहीं करगेा और न उनह पाक करगेा। और उनक लए दरद्नाक अज़ाब ह।	اِنَّ الَّذِيْنَ يَكْتُمُوْنَ مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ مِنَ الْكِتٰبِ وَيَشْتَرُوْنَ بِهٖ ثَمَنًا قَلِيْلًا ۙ اُولٰۗىِٕكَ مَا يَاْكُلُوْنَ فِيْ بُطُوْنِهِمْ اِلَّا النَّارَ وَلَا يُكَلِّمُهُمُ اللّٰهُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَلَا يُزَكِّيْهِمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ
175	वही लोग ह जनिह़ोंन हदिायत क बदल गमुराही ख़रीदी और माफी क बदल अज़ाब। व आग को बरद्ाशत करन म कतिन साहसी ह।	اُولٰۗىِٕكَ الَّذِيْنَ اشْتَرَوُا الضَّلٰلَةَ بِالْهُدٰى وَالْعَذَابَ بِالْمَغْفِرَةِ ۚ فَمَآ اَصْبَرَهُمْ عَلَى النَّارِ
176	यह इसलए कि अलल़ाह न हक़ क साथ कतिाब उतारी। और जो लोग कतिाब म मतभदे करत ह,ै व नशि्चति रूप स बहत दूर की दशु्मनी म ह।	ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ نَزَّلَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ ۭ وَاِنَّ الَّذِيْنَ اخْتَلَفُوْا فِي الْكِتٰبِ لَفِيْ شِقَاقٍۢ بَعِيْدٍ

177	ईमान यह नहीं ह कि तुम अपने मुँह को पूरब या पश्चिम की ओर करो। बल्कि ईमान उसका ह जो अल्लाह, आख़िरी दिन, फ़रिश्तों, किताब और नबियों पर विश्वास करता ह, और अपनी पसंदीदा दौलत रिश्तेदारों, यतीमों, मिस्कीनों, मुसाफ़िरों, माँगने वालों और गुलामों को आज़ाद करने के लिए देता ह, नमाज़ क़ायम करता ह और ज़कात देता ह, जो अपने वादे पूरे करता ह, और तंगी, तकलीफ़ और जंग के वक़्त सब्र करता ह। यही लोग सच्चे ह, और यही लोग तकवा वाले ह।	لَيْسَ الْبِرَّ اَنْ تُوَلُّوْا وُجُوْهَكُمْ قِبَلَ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ وَلٰكِنَّ الْبِرَّ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَالْمَلٰٓئِكَةِ وَالْكِتٰبِ وَالنَّبِيّٖنَ وَاٰتَى الْمَالَ عَلٰى حُبِّهٖ ذَوِى الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنَ وَابْنَ السَّبِيْلِ وَالسَّآئِلِيْنَ وَفِى الرِّقَابِ وَاَقَامَ الصَّلٰوةَ وَاٰتَى الزَّكٰوةَ وَالْمُوْفُوْنَ بِعَهْدِهِمْ اِذَا عٰهَدُوْا وَالصّٰبِرِيْنَ فِى الْبَاْسَآءِ وَالضَّرَّآءِ وَحِيْنَ الْبَاْسِ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ صَدَقُوْا وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُتَّقُوْنَ
178	ऐ ईमान वालो! कत्ल के मामले में तुम पर क़िसास (बदला) अनिवार्य किया गया ह। आज़ाद को आज़ाद के बदले, गुलाम को गुलाम के बदले, और औरत को औरत के बदले। लेकिन जो कोई अपने भाई से माफ़ी पा ले, उसे अच्छे तरीके से उसका पालन करना चाहिए, और उसे अच्छे तरीके से दियात (ख़ून-बहार) अदा करना चाहिए। यह तुम्हारे रब की ओर से राहत और रहमत ह। जो इसके बाद हद से गुज़रे, उसके लिए दर्दनाक अज़ाब ह।	يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِصَاصُ فِى الْقَتْلَى اَلْحُرُّ بِالْحُرِّ وَالْعَبْدُ بِالْعَبْدِ وَالْاُنْثٰى بِالْاُنْثٰى فَمَنْ عُفِيَ لَه مِنْ اَخِيْهِ شَيْءٌ فَاتِّبَاعٌ بِالْمَعْرُوْفِ وَاَدَآءٌ اِلَيْهِ بِاِحْسَانٍ ذٰلِكَ تَخْفِيْفٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَرَحْمَةٌ فَمَنِ اعْتَدٰى بَعْدَ ذٰلِكَ فَلَه عَذَابٌ اَلِيْمٌ
179	और क़िसास में तुम्हारे लिए ज़िंदगी ह, ऐ बुद्धिमानो, ताकि तुम तकवा अपनाओ।	وَلَكُمْ فِى الْقِصَاصِ حَيٰوةٌ يّٰاُولِى الْاَلْبَابِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ
180	तुम पर अनिवार्य किया गया ह कि जब तुम में से किसी की मौत नज़दीक आए, और वह माल छोड़ जाए, तो वह अपने माता-पिता और रिश्तेदारों के लिए उचित तरीके से वसीयत करे। यह तकवा वालों पर एक हक़ ह।	كُتِبَ عَلَيْكُمْ اِذَا حَضَرَ اَحَدَكُمُ الْمَوْتُ اِنْ تَرَكَ خَيْرَا ِالْوَصِيَّةُ لِلْوَالِدَيْنِ وَالْاَقْرَبِيْنَ بِالْمَعْرُوْفِ حَقًّا عَلَى الْمُتَّقِيْنَ
181	फिर जो कोई इसे (वसीयत को) सुनने के बाद बदल दे, तो उसका गुनाह उसी पर ह जो इसे बदलता ह। निश्चय ही, अल्लाह बहुत सुनने वाला, जानने वाला ह।	فَمَنْ بَدَّلَه بَعْدَمَا سَمِعَه فَاِنَّمَآ اِثْمُه عَلَى الَّذِيْنَ يُبَدِّلُوْنَه اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ
182	लेकिन अगर किसी को वसीयत करने वाले की तरफ से कोई गलती या गुनाह का डर हो, और वह उनके बीच सुधार कर दे, तो उस पर कोई गुनाह नहीं ह। निश्चय ही, अल्लाह बहुत माफ करने वाला, रहम करने वाला ह।	فَمَنْ خَافَ مِنْ مُّوْصٍ جَنَفًا اَوْ اِثْمًا فَاَصْلَحَ بَيْنَهُمْ فَلَآ اِثْمَ عَلَيْهِ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ
183	ऐ ईमान वालो! तुम पर रोज़ा अनिवार्य किया गया ह, जैसे तुमसे पहले वालों पर अनिवार्य किया गया था, ताकि तुम तकवा अपनाओ,	يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ

184	(यानी) कछ ख़ास दनि। तो तमु म`स`जो कोई बीमार हो या सफर म`हो (और रोज़ा न रख), तो उस`दूसर`दनिों म`उतन`ही रोज़`पूर`करन`होंगे। और जनिक`लिए यह भारी हो, उनह`एक मसि़्कीन को खाना खलिाकर फदि़या दनेा होगा। लकेनि जो कोई अपनी मरज़ी स`नकेी करता ह`तो यह उसक`लिए बहेतर ह`और तमुहारा रोज़ा रखना तमुहार`लिए बहेतर ह`अगर तमु जानत`हो।	اَيَّامًا مَّعْدُوْدٰتٍ فَمَنْ كَانَ مِنْكُمْ مَّرِيْضًا اَوْ عَلٰى سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِّنْ اَيَّامٍ اُخَرَ وَعَلَى الَّذِيْنَ يُطِيْقُوْنَهٗ فِدْيَةٌ طَعَامُ مِسْكِيْنٍ فَمَنْ تَطَوَّعَ خَيْرًا فَهُوَ خَيْرٌ لَّهٗ وَاَنْ تَصُوْمُوْا خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ
185	रमज़ान का महीना वह ह`जसिम`अल-कुरआन उतारा गया, जो इंसानों क`लिए हदिायत ह`और हदिायत की सपष्ट नशिानयिाँ और (हक़ और बातलि क`बीच) फरक़ करन`वाला ह`। इसलिए तमु म`स`जो कोई इस महीन`म`मौजद्द हो, उस`रोज़ा रखना चाहिए। और जो कोई बीमार हो या सफर म`हो, तो उस`दूसर`दनिों म`उतन`ही रोज़`पूर`करन`होंगे। अल्लाह तमुहार`लिए आसानी चाहता ह`और तमुहार`लिए मशु़क़लि नहीं चाहता। तमुह`गनिती पूरी करनी चाहिए और अल्लाह को उस हदिायत क`लिए बड़ा करना चाहिए जो उसन`तमुह`दी, ताकि तमु शक्रगज़ार बनो।	شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِيْٓ اُنْزِلَ فِيْهِ الْقُرْاٰنُ هُدًى لِّلنَّاسِ وَبَيِّنٰتٍ مِّنَ الْهُدٰى وَالْفُرْقَانِ فَمَنْ شَهِدَ مِنْكُمُ الشَّهْرَ فَلْيَصُمْهُ وَمَنْ كَانَ مَرِيْضًا اَوْ عَلٰى سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِّنْ اَيَّامٍ اُخَرَ يُرِيْدُ اللّٰهُ بِكُمُ الْيُسْرَ وَلَا يُرِيْدُ بِكُمُ الْعُسْرَ وَلِتُكْمِلُوا الْعِدَّةَ وَلِتُكَبِّرُوا اللّٰهَ عَلٰى مَا هَدٰىكُمْ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ
186	और जब मरे`बनद्`तमुस`(मह्मम्द) मरे`बार`म`पछू, तो (कहो कि) म`बहत्त नज़दीक हूँ। म`उसकी दआु कबलू करता हूँ, जो मझुस`दआु करता ह`जब वह मझुस`माँगता ह`तो उनह`चाहिए कि मरी बात मान`और मझु पर ईमान लाएँ, ताकि व`सीध`रास्त`पर चलें।	وَاِذَا سَاَلَكَ عِبَادِيْ عَنِّيْ فَاِنِّيْ قَرِيْبٌ اُجِيْبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ اِذَا دَعَانِ فَلْيَسْتَجِيْبُوْا لِيْ وَلْيُؤْمِنُوْا بِيْ لَعَلَّهُمْ يَرْشُدُوْنَ
187	तमुहार`लिए रोज़`की रात म`अपनी बीवयिों क`पास जाना हलाल कर दयिा गया ह`। व`तमुहार`लिए लबिास ह`और तमु उनक`लिए लबिास हो। अल्लाह जानता ह`कि तमु अपन`नफ्स क`साथ धोखा कर रह`थ, तो उसन`तमुहारी तौबा कबलू की और तमुह`माफ कर दयिा। अब उनक`पास जाओ और जो अल्लाह न`तमुहार`लिए लखिा ह`, उस`तलाश करो। और खाओ-पयिो यहाँ तक कि सबुह की सफदी रात की सयिाही स`अलग हो जाए। फरि रोज़ा रात तक पूरा करो। और जब तमु मस्ज़दिों म`इतकिाफ म`हो, तो उनस`(बीवयिों स) संबंध न बनाओ। यह अल्लाह की हद`ह`, उनक`नज़दीक न जाओ। इस तरह अल्लाह अपनी आयत`लोगों क`लिए सपष्ट करता ह`, ताकि व`तकवा अपनाएँ।	اُحِلَّ لَكُمْ لَيْلَةَ الصِّيَامِ الرَّفَثُ اِلٰى نِسَآئِكُمْ هُنَّ لِبَاسٌ لَّكُمْ وَاَنْتُمْ لِبَاسٌ لَّهُنَّ عَلِمَ اللّٰهُ اَنَّكُمْ كُنْتُمْ تَخْتَانُوْنَ اَنْفُسَكُمْ فَتَابَ عَلَيْكُمْ وَعَفَا عَنْكُمْ فَالْـٰٔنَ بَاشِرُوْهُنَّ وَابْتَغُوْا مَا كَتَبَ اللّٰهُ لَكُمْ وَكُلُوْا وَاشْرَبُوْا حَتّٰى يَتَبَيَّنَ لَكُمُ الْخَيْطُ الْاَبْيَضُ مِنَ الْخَيْطِ الْاَسْوَدِ مِنَ الْفَجْرِ ثُمَّ اَتِمُّوا الصِّيَامَ اِلَى الَّيْلِ وَلَا تُبَاشِرُوْهُنَّ وَاَنْتُمْ عٰكِفُوْنَ فِي الْمَسٰجِدِ تِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ فَلَا تَقْرَبُوْهَا كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ اٰيٰتِهٖ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ
188	और तमु अपन`माल को आपस म`गलत तरीक`स`न खाओ, और न ही उस`हाकमिों को रशि़वत क`तौर पर दो, ताकि तमु जानबझूकर दूसरों क`माल का कछ हसि़्सा गन्नाह क`साथ खा सको।	وَلَا تَاْكُلُوْٓا اَمْوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ وَتُدْلُوْا بِهَآ اِلَى الْحُكَّامِ لِتَاْكُلُوْا فَرِيْقًا مِّنْ اَمْوَالِ النَّاسِ بِالْاِثْمِ وَاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ

يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْاَهِلَّةِ قُلْ هِيَ مَوَاقِيْتُ لِلنَّاسِ وَالْحَجِّ وَلَيْسَ الْبِرُّ بِاَنْ تَأْتُوا الْبُيُوْتَ مِنْ ظُهُوْرِهَا وَلٰكِنَّ الْبِرَّ مَنِ اتَّقٰى وَأْتُوا الْبُيُوْتَ مِنْ اَبْوَابِهَا وَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ	**189**	व`तमुस`(महुम्मद) चाँद क`बार`म`पछुत`हौ कहो, 'यह इंसानों और हज क`लिए वक़्त का निशान हौ' और यह नेकी नहीं ह`कि तमु घरों म`उनकी पीठ स`घुसो, बलक़ि नेकी उसकी ह`जो तकवा रखता हौ घरों म`उनक`दरवाज़ों स`घुसो, और अल्लाह स`डरो ताकि तमु कामयाब हो।
وَقَاتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ الَّذِيْنَ يُقَاتِلُوْنَكُمْ وَلَا تَعْتَدُوْا اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِيْنَ	**190**	और अल्लाह क`रास्त`म`उन लोगों स`लड़ो जो तमुस`लड़त`हैं, लेकिन हद स`न गज़ुरो। निश्चय ही, अल्लाह हद स`गज़ुरन`वालों को पसंद नहीं करता।
وَاقْتُلُوْهُمْ حَيْثُ ثَقِفْتُمُوْهُمْ وَاَخْرِجُوْهُمْ مِّنْ حَيْثُ اَخْرَجُوْكُمْ وَالْفِتْنَةُ اَشَدُّ مِنَ الْقَتْلِ وَلَا تُقٰتِلُوْهُمْ عِنْدَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ حَتّٰى يُقٰتِلُوْكُمْ فِيْهِ فَاِنْ قٰتَلُوْكُمْ فَاقْتُلُوْهُمْ كَذٰلِكَ جَزَاءُ الْكٰفِرِيْنَ	**191**	और उनह`जहा कँहीं पाओ, मारो, और उनह`वहा स`निकालो जहा स`उनहोंन`तमुह`निकाला। और फतिना (उपद्रव) कत्ल स`भी बदतर हौ और मस्ज़िदुल हराम म`उनस`न लड़ो, जब तक कि व`तमुस`वहा न लड़ें लेकिन अगर व`तमुस`लड़, तो तमु भी उनह`मारो। काफिरों का यही बदला हौ
فَاِنِ انْتَهَوْا فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ	**192**	लेकिन अगर व`रुक जाएँ, तो निश्चय ही अल्लाह बहतु माफ करन`वाला, रहम करन`वाला हौ
وَقٰتِلُوْهُمْ حَتّٰى لَا تَكُوْنَ فِتْنَةٌ وَّيَكُوْنَ الدِّيْنُ لِلّٰهِ فَاِنِ انْتَهَوْا فَلَا عُدْوَانَ اِلَّا عَلَى الظّٰلِمِيْنَ	**193**	और उनस`तब तक लड़ो जब तक फतिना (उपद्रव) खत्म न हो जाए, और दीन पूरी तरह अल्लाह क`लिए न हो जाए। अगर व`रुक जाएँ, तो कोई दुश्मनी नहीं, सिवाय ज़ालिमों क`खिलाफ।
اَلشَّهْرُ الْحَرَامُ بِالشَّهْرِ الْحَرَامِ وَالْحُرُمٰتُ قِصَاصٌ فَمَنِ اعْتَدٰى عَلَيْكُمْ فَاعْتَدُوْا عَلَيْهِ بِمِثْلِ مَا اعْتَدٰى عَلَيْكُمْ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُتَّقِيْنَ	**194**	हराम महीन`का बदला हराम महीना ह, और हर पवित्र चीज़ क`लिए क़िसास (बदला) हौ इसलिए जो कोई तमु पर हमला कर, तमु उस पर वैसा ही हमला करो जैसा उसन`तमु पर किया। अल्लाह स`डरो और जान लो कि अल्लाह तकवा वालों क`साथ हौ
وَاَنْفِقُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَلَا تُلْقُوْا بِاَيْدِيْكُمْ اِلَى التَّهْلُكَةِ وَاَحْسِنُوْا اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ	**195**	और अल्लाह क`रास्त`म`(अपना माल) खर्च करो, और अपन`आप को अपन`हाथों स`हलाकत म`न डालो, और नेकी करो। निश्चय ही, अल्लाह नेकी करन`वालों को पसंद करता हौ

196	और अल्लाह क॓लिए हज और उमराह को पूरा करो। लकेनि अगर तमु (दशु्मन स॓) घरि जाओ, तो जो हदयिा (कुरबानी) आसानी स॓ मलि जाए (वही दो), और अपन॓ सरि न मंडुाओ, जब तक कि हदयिा अपनी जगह न पहचुँ जाए। अगर तमु म॑स॓ कोई बीमार हो या उसक॓ सरि म॑ कोई तकलीफ हो (और वह मंडुन कर ल॓), तो उस॓ फदि्या दनेा होगा, यानी रोज़ा रखना, सदक़ा दनेा या कुरबानी करना। और जब तमु अमन म॑ हो, तो जो कोई उमराह को हज स॓ पहल॓ करता ह॓, उस॓ जो हदयिा आसानी स॓ मलि जाए, वह दनेा होगा। लकेनि अगर उस॓ न मलि॓, तो हज क॓ दौरान तीन दनि और लौटन॓ क॓ बाद सात दनि रोज़ा रखना होगा। यह पूरा दस दनि ह॓। यह उस वय्क्त॑ क॓ लिए ह॓ जसिका परविार मस्ज़दिुल हराम म॑ न हो। और अल्लाह स॓ डरो, और जान लो कि अल्लाह सख़्त अज़ाब दने॓वाला ह॓	وَاَتِمُّوا الْحَجَّ وَالْعُمْرَةَ لِلّٰهِ فَاِنْ اُحْصِرْتُمْ فَمَا اسْتَيْسَرَ مِنَ الْهَدْيِ وَلَا تَحْلِقُوْا رُءُوْسَكُمْ حَتّٰى يَبْلُغَ الْهَدْيُ مَحِلَّه فَمَنْ كَانَ مِنْكُمْ مَّرِيْضًا اَوْ بِه اَذًى مِّنْ رَّأْسِه فَفِدْيَةٌ مِّنْ صِيَامٍ اَوْ صَدَقَةٍ اَوْ نُسُكٍ فَاِذَآ اَمِنْتُمْ فَمَنْ تَمَتَّعَ بِالْعُمْرَةِ اِلَى الْحَجِّ فَمَا اسْتَيْسَرَ مِنَ الْهَدْيِ فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ ثَلٰثَةِ اَيَّامٍ فِى الْحَجِّ وَسَبْعَةٍ اِذَا رَجَعْتُمْ تِلْكَ عَشَرَةٌ كَامِلَةٌ ذٰلِكَ لِمَنْ لَّمْ يَكُنْ اَهْلُه حَاضِرِى الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ
197	हज क॓ महीन॓ मालमू ह॓। जो कोई उनम॑ हज का इरादा कर ल॓, उस॓ चाहि कि हज क॓ दौरान न कोई फहश बात कर॓, न कोई बरु काम कर॓, और न कोई झगड़ा कर॓। और जो भी नकेी तमु करत॓ हो, अल्लाह उस॓ जानता ह॓। और अपन॓ लिए रास्त॓ का सामान ल॓ लो, लकेनि सबस॓ अच्छा सामान तकवा ह॓। तो ऐ बदु्धमिानों, मझुस॓ डरो।	اَلْحَجُّ اَشْهُرٌ مَّعْلُوْمٰتٌ فَمَنْ فَرَضَ فِيْهِنَّ الْحَجَّ فَلَا رَفَثَ وَلَا فُسُوْقَ وَلَا جِدَالَ فِى الْحَجِّ وَمَا تَفْعَلُوْا مِنْ خَيْرٍ يَّعْلَمْهُ اللّٰهُ وَتَزَوَّدُوْا فَاِنَّ خَيْرَ الزَّادِ التَّقْوٰى وَاتَّقُوْنِ يٰٓاُولِى الْاَلْبَابِ
198	तमु पर कोई गनुाह नहीं ह॓ कि तमु अपन॓ रब की महेरबानी (रज़िक़) तलाश करो। और जब तमु अरफात स॓ रवाना हो, तो मशअरलि हराम म॑ अल्लाह का ज़कि्र करो। और उसका ज़कि्र उसी तरह करो जसै॓ उसन॓ तमु्ह॓ हदिायत दी, हालाकँि पहल॓ तमु नशि्चति रू्प स॓ गमुराहों म॑ स॓ थे।	لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ اَنْ تَبْتَغُوْا فَضْلًا مِّنْ رَّبِّكُمْ فَاِذَآ اَفَضْتُمْ مِّنْ عَرَفٰتٍ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ عِنْدَ الْمَشْعَرِ الْحَرَامِ وَاذْكُرُوْهُ كَمَا هَدٰىكُمْ وَاِنْ كُنْتُمْ مِّنْ قَبْلِه لَمِنَ الضَّآلِّيْنَ
199	फरि वहा॑ स॓ रवाना हो जहा॑ स॓ लोग रवाना होत॓ ह॓ (अरफात) और अल्लाह स॓ माफी माँगो। नशि्चय ही, अल्लाह बहत्त माफ करन॓वाला, रहम करन॓वाला ह॓।	ثُمَّ اَفِيْضُوْا مِنْ حَيْثُ اَفَاضَ النَّاسُ وَاسْتَغْفِرُوا اللّٰهَ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ
200	और जब तमु अपन॓ हज क॓ करम पूर॓ कर लो, तो अल्लाह का ज़कि्र करो, जसै॓ तमु अपन॓ बाप-दादा का ज़कि्र करत॓ हो, बल्क़ि उससे॓ भी ज़्यादा। और लोगों म॑ स॓ कछु कहत॓ ह॓, 'ऐ हमार॓ रब! हम॑ दनु्यिा म॑ दे॓' उनक॓ लिए आखरित म॑ कोई हसि्सा नहीं ह॓।	فَاِذَا قَضَيْتُمْ مَّنَاسِكَكُمْ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَذِكْرِكُمْ اٰبَآءَكُمْ اَوْ اَشَدَّ ذِكْرًا فَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّقُوْلُ رَبَّنَآ اٰتِنَا فِى الدُّنْيَا وَمَا لَه فِى الْاٰخِرَةِ مِنْ خَلَاقٍ
201	और उनम॑ स॓ कछु लोग कहत॓ ह॓, 'ऐ हमार॓ रब! हम॑ दनु्यिा म॑ भलाई द॓ और आखरित म॑ भलाई द॓, और हम॑ आग क॓ अज़ाब स॓ बचा।'	وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّقُوْلُ رَبَّنَآ اٰتِنَا فِى الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِى الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ
202	वही लोग ह॓ जनि्ह॓ उनक॓ करमों का हसि्सा मलिगेा, और अल्लाह बहत्त जलद् हसिाब करन॓वाला ह॓।	اُولٰٓئِكَ لَهُمْ نَصِيْبٌ مِّمَّا كَسَبُوْا وَاللّٰهُ سَرِيْعُ الْحِسَابِ

203	और तय कए गए दनिों म अल्लाह का ज़कि्र करो। जो कोई दो दनि बाद (मना स) जलद़ी रवाना हो, उसक लए कोई गन्नाह नहीं ह और जो कोई दरे कर, उसक लए भी कोई गन्नाह नहीं ह, (यह) उस व्यक्त क untuk yang तकवा रखता ह और अल्लाह स डरो, और जान लो क तम सब उसी क पास जमा कए जाओग।	وَاذْكُرُوا اللّٰهَ فِيْٓ اَيَّامٍ مَّعْدُوْدٰتٍ ۗ فَمَنْ تَعَجَّلَ فِيْ يَوْمَيْنِ فَلَآ اِثْمَ عَلَيْهِ ۚ وَمَنْ تَاَخَّرَ فَلَآ اِثْمَ عَلَيْهِ ۙ لِمَنِ اتَّقٰى ۗ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّكُمْ اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ
204	और कछ लोग ऐस ह जनिकी दन्नयिा की ज़दिगी क बार म बात तमह (महम्मद) हरैान करती ह, और व अल्लाह को अपन दलि की गवाही दते ह, जबक व सबस बड़ झगड़ाल ह।	وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُّعْجِبُكَ قَوْلُهٗ فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَيُشْهِدُ اللّٰهَ عَلٰى مَا فِيْ قَلْبِهٖ ۙ وَهُوَ اَلَدُّ الْخِصَامِ
205	और जब वह (ऐसा शख़्स) मड़ता ह, तो धरती पर बगिाड़ फलान की कोशशि करता ह, फसलों और नसलों को नष्ट करता ह और अल्लाह बगिाड़ को पसंद नहीं करता।	وَاِذَا تَوَلّٰى سَعٰى فِى الْاَرْضِ لِيُفْسِدَ فِيْهَا وَيُهْلِكَ الْحَرْثَ وَالنَّسْلَ ۗ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ الْفَسَادَ
206	और जब उसस कहा जाता ह, 'अल्लाह स डरो,' तो उसका घमंड उस गन्नाह की ओर ल जाता ह तो जहन्नम उसक लए काफी ह, और वह कतिना बर ठकिाना ह!	وَاِذَا قِيْلَ لَهُ اتَّقِ اللّٰهَ اَخَذَتْهُ الْعِزَّةُ بِالْاِثْمِ ۚ فَحَسْبُهٗ جَهَنَّمُ ۗ وَلَبِئْسَ الْمِهَادُ
207	और कछ लोग ऐस ह जो अल्लाह की रज़ामंदी क लए अपनी जान बचे दते ह और अल्लाह अपन बन्दों पर बहत मेहरबान ह।	وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّشْرِيْ نَفْسَهُ ابْتِغَاۤءَ مَرْضَاتِ اللّٰهِ ۗ وَاللّٰهُ رَءُوْفٌۢ بِالْعِبَادِ
208	ऐ ईमान वालो! इसल्लाम म पूरी तरह दाखलि हो जाओ, और शतैान क कदमों का अनसुरण न करो। नश्चिय ही, वह तमुहारा खला दश्मन ह।	يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا ادْخُلُوْا فِى السِّلْمِ كَاۤفَّةً ۖ وَّلَا تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ ۗ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ
209	फरि अगर तम सपष्ट नशिानयिाँ आन क बाद भी फसिल जाओ, तो जान लो क अल्लाह बहत इज़्ज़त वाला, हकिमत वाला ह।	فَاِنْ زَلَلْتُمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَا جَاۤءَتْكُمُ الْبَيِّنٰتُ فَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ
210	क्या व इसकी प्रतीक्षा करत ह कि अल्लाह बादलों की छाया म उनक पास आए और फरश्ति (भी आएँ), और मामला तय हो जाए? और सार मामल अल्लाह की ओर लौटाए जात ह।	هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّآ اَنْ يَّاْتِيَهُمُ اللّٰهُ فِيْ ظُلَلٍ مِّنَ الْغَمَامِ وَالْمَلٰٓئِكَةُ وَقُضِيَ الْاَمْرُ ۗ وَاِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ
211	बनी इस्राइल स पछो, 'हमन उन्ह कतिनी सपष्ट नशिानयिाँ दीं।' और जो कोई अल्लाह की नअेमत को, उसक आन क बाद बदल द, तो नश्चिय ही अल्लाह सख़्त अज़ाब दने वाला ह।	سَلْ بَنِيْٓ اِسْرَاۤءِيْلَ كَمْ اٰتَيْنٰهُمْ مِّنْ اٰيَةٍۢ بَيِّنَةٍ ۗ وَمَنْ يُّبَدِّلْ نِعْمَةَ اللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ مَا جَاۤءَتْهُ فَاِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ
212	काफरिों क लए दन्नयिा की ज़दिगी सजाई गई ह और व ईमान वालों का मज़ाक उड़ात ह, लकेनि जो लोग तकवा रखत ह, व कयिामत क दनि उनस ऊपर होंग। और अल्लाह जसि चाहता ह, बगेनिती रज़िक़ दता ह।	زُيِّنَ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا وَيَسْخَرُوْنَ مِنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۘ وَالَّذِيْنَ اتَّقَوْا فَوْقَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۗ وَاللّٰهُ يَرْزُقُ مَنْ يَّشَاۤءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ

213	लोग एक ही उम्मत थ,े फरि अल्लाह न ेनबयिों को खशुखबरी दने ेवाला और डरान ेवाला बनाकर भजेा, और उनक ेसाथ हक़ क ेसाथ कतिाब उतारी ताकि वह लोगों क ेबीच उनक ेमतभदेों म ेफसैला करे और उन लोगों न,े जनिह़ कतिाब दी गई थी, आपस म ेमतभदे कयिा, जलन की वजह स,े जबकि उनक ेपास सपष्ट नशिानयिाँ आ चुकी थीं। तो अल्लाह न ेअपनी इजाज़त स ेईमान वालों को उस सत्य की ओर हदिायत दी जसिम ेवे मतभदे करत े थ।े और अल्लाह जसि ेचाहता ह,ै सीध ेरास्त ेकी हदिायत दतेा ह।ै	كَانَ النَّاسُ اُمَّةً وَّاحِدَةً فَبَعَثَ اللّٰهُ النَّبِيّٖنَ مُبَشِّرِيْنَ وَمُنْذِرِيْنَ وَاَنْزَلَ مَعَهُمُ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ لِيَحْكُمَ بَيْنَ النَّاسِ فِيْمَا اخْتَلَفُوْا فِيْهِ وَمَا اخْتَلَفَ فِيْهِ اِلَّا الَّذِيْنَ اُوْتُوْهُ مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَتْهُمُ الْبَيِّنٰتُ بَغْيًا بَيْنَهُمْ فَهَدَى اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لِمَا اخْتَلَفُوْا فِيْهِ مِنَ الْحَقِّ بِاِذْنِهٖ وَاللّٰهُ يَهْدِيْ مَنْ يَّشَاءُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ
214	क्या तमुन ेसोचा कि तमु जन्नत म ेदाख़लि हो जाओग,े जबकि तमु पर वह नहीं बीता जो तमुस ेपहल ेवालों पर बीता? उन पर तंगी और तकलीफ आई, और व ेहलि गए, यहा ँतक कि रसूल और उनक ेसाथ ईमान वालों न ेकहा, 'अल्लाह की मदद कब आएगी?' सनुो, नश्चिय ही अल्लाह की मदद नज़दीक ह।ै	اَمْ حَسِبْتُمْ اَنْ تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ وَلَمَّا يَأْتِكُمْ مَّثَلُ الَّذِيْنَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِكُمْ مَسَّتْهُمُ الْبَأْسَاءُ وَالضَّرَّاءُ وَزُلْزِلُوْا حَتّٰى يَقُوْلَ الرَّسُوْلُ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَه مَتٰى نَصْرُ اللّٰهِ اَلَآ اِنَّ نَصْرَ اللّٰهِ قَرِيْبٌ
215	व ेतमुस े(मह़म्मद) पछूत ेह ैकि व ेक्या खरच़ करें। कहो, 'जो कछु भी तमु खरच़ करत ेहो, वह माता-पता, रश्तिदेारों, यतीमों, मसि्कीनों और मसुाफरिों क ेलए होना चाहए। और जो नकेी तमु करत ेहो, अल्लाह उस ेजानता ह।ै'	يَسْـَٔلُوْنَكَ مَاذَا يُنْفِقُوْنَ قُلْ مَآ اَنْفَقْتُمْ مِّنْ خَيْرٍ فَلِلْوَالِدَيْنِ وَالْاَقْرَبِيْنَ وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ وَابْنِ السَّبِيْلِ وَمَا تَفْعَلُوْا مِنْ خَيْرٍ فَاِنَّ اللّٰهَ بِه عَلِيْمٌ
216	तमु पर जहिाद अनविार्य कयिा गया ह,ै हालाकँि वह तमुह ैनापसंद हो। हो सकता ह ैकि तमु कसिी चीज़ को नापसंद करो, और वह तमुहार ेलए अच्छी हो, और तमु कसिी चीज़ को पसंद करो, और वह तमुहार ेलए बरुी हो। अल्लाह जानता ह,ै और तमु नहीं जानत।े	كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِتَالُ وَهُوَ كُرْهٌ لَّكُمْ وَعَسٰٓى اَنْ تَكْرَهُوْا شَيْـًٔا وَّهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ وَعَسٰٓى اَنْ تُحِبُّوْا شَيْـًٔا وَّهُوَ شَرٌّ لَّكُمْ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ
217	व ेतमुस े(मह़म्मद) हराम महीन ेम ेलड़ाई क ेबार ेम ेपछूत ेह।ैं कहो, 'उसम ेलड़ना बड़ा गनुाह ह।ै लकेनि अल्लाह क ेरास्त ेस ेरोकना, और उसका इनकार करना, और मस्जदिुल हराम स ेरोकना, और उसक ेबाशदिों को वहा ँस ेनकिालना, अल्लाह क ेनज़दीक इससे भी बड़ा (गनुाह) ह।ै और फतिना (उपद्रव) कत्ल स ेभी बदतर ह।ै' और अगर उनकी ताकत होती, तो व ेतमुस ेतब तक लड़त ेरहत ेजब तक तमु अपन ेदीन स ेन फरि जाओ। और तमु म ेस ेजो कोई अपन ेदीन स ेफरि जाए और काफरि होकर मर जाए, उनक ेकर्म दनुयिा और आख़रित म ेबकेार हो जाएँग।े और वही लोग जहन्नम क ेबाशदिे ह,ैं व ेउसम ेहमशेा रहेंग।े	يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الشَّهْرِ الْحَرَامِ قِتَالٍ فِيْهِ قُلْ قِتَالٌ فِيْهِ كَبِيْرٌ وَصَدٌّ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَكُفْرٌ بِه وَالْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَاِخْرَاجُ اَهْلِه مِنْهُ اَكْبَرُ عِنْدَ اللّٰهِ وَالْفِتْنَةُ اَكْبَرُ مِنَ الْقَتْلِ وَلَا يَزَالُوْنَ يُقَاتِلُوْنَكُمْ حَتّٰى يَرُدُّوْكُمْ عَنْ دِيْنِكُمْ اِنِ اسْتَطَاعُوْا وَمَنْ يَّرْتَدِدْ مِنْكُمْ عَنْ دِيْنِه فَيَمُتْ وَهُوَ كَافِرٌ فَاُولٰٓئِكَ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ وَاُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ
218	नश्चिय ही, जो लोग ईमान लाए, और जनिहोंन ेहजिरत की और अल्लाह क ेरास्त ेम ेजहिाद कयिा, व ेअल्लाह की रहमत की उम्मीद रखत ेह।ैं और अल्लाह बहत्त माफ करन ेवाला, रहम करन ेवाला ह।ै	اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَالَّذِيْنَ هَاجَرُوْا وَجَاهَدُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اُولٰٓئِكَ يَرْجُوْنَ رَحْمَتَ اللّٰهِ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ

219	व`तमुस`(महुम्मद) शराब और जुए क`बार`मे`पछुत`हौ कहो, 'इन दोनों`म`बड़ा गुनाह ह,ै और इंसानों`क`लिए कछु फायद`भी ह,ै लेकिन इनका गुनाह उनक`फायद`से`बड़ा हौ' और व`पछुत`हे,ै 'व`क्या खर्च करै?' कहो, 'जो तमुहार`लिए ज़रूरत स`ज़्यादा हो।' इस तरह अल्लाह तमुहार`लिए अपनी आयत`स्पष्ट करता ह`ैताकि तमु सोच-विचार करो,	يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْخَمْرِ وَالْمَيْسِرِ قُلْ فِيْهِمَآ اِثْمٌ كَبِيْرٌ وَّمَنَافِعُ لِلنَّاسِ وَاِثْمُهُمَآ اَكْبَرُ مِنْ نَّفْعِهِمَا وَيَسْـَٔلُوْنَكَ مَاذَا يُنْفِقُوْنَ قُلِ الْعَفْوَ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ تَتَفَكَّرُوْنَ
220	दनुयिा और आख़रित क`बार`मौ और व`तमुस`यतीमों क`बार`मे` पछुत`हौ कहो, 'उनक`लिए सधुार करना बहेतर हौ और अगर तमु उनक`साथ मलिकर रहो, तो व`तमुहार`भाई हौ' और अल्लाह बगिाड़ करन`वाल`और सधुार करन`वाल`को जानता हौ और अगर अल्लाह चाहता, तो तमु पर सख़्ती करता। नशि्चय ही, अल्लाह बहतु इज़्ज़त वाला, हकिमत वाला हौ	فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ وَيَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْيَتٰمٰى قُلْ اِصْلَاحٌ لَّهُمْ خَيْرٌ وَاِنْ تُخَالِطُوْهُمْ فَاِخْوَانُكُمْ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ الْمُفْسِدَ مِنَ الْمُصْلِحِ وَلَوْ شَاۤءَ اللّٰهُ لَاَعْنَتَكُمْ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ
221	और मशु्रकि औरतों`स`नकिाह न करो जब तक कि व`ईमान न लाएँ और नशि्चय ही, एक ईमान वाली गलुाम औरत, मशु्रकि औरत स`बहेतर ह,ै भल`ही वह तमुह`पसंद हो। और मशु्रकि मरद़ों`स`(मसुलमि औरतों का) नकिाह न करो जब तक कि व`ईमान न लाएँ और नशि्चय ही, एक ईमान वाला गलुाम, मशु्रकि मरद स`बहेतर ह,ै भल`ही वह तमुह`पसंद हो। व`(मशु्रकि) तमुह`आग की ओर बलुात`ह,ै जबकि अल्लाह अपनी इजाज़त स`तमुह`जन्नत और माफी की ओर बलुाता हौ और वह अपनी आयत`लोगों`क`लिए स्पष्ट करता ह`ैताकि व`नसीहत हासलि करौ	وَلَا تَنْكِحُوا الْمُشْرِكٰتِ حَتّٰى يُؤْمِنَّ وَلَاَمَةٌ مُّؤْمِنَةٌ خَيْرٌ مِّنْ مُّشْرِكَةٍ وَّلَوْ اَعْجَبَتْكُمْ وَلَا تُنْكِحُوا الْمُشْرِكِيْنَ حَتّٰى يُؤْمِنُوْا وَلَعَبْدٌ مُّؤْمِنٌ خَيْرٌ مِّنْ مُّشْرِكٍ وَّلَوْ اَعْجَبَكُمْ اُولٰٓئِكَ يَدْعُوْنَ اِلَى النَّارِ وَاللّٰهُ يَدْعُوْٓا اِلَى الْجَنَّةِ وَالْمَغْفِرَةِ بِاِذْنِهٖ وَيُبَيِّنُ اٰيٰتِهٖ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ
222	और व`तमुस`(महुम्मद) माहवारी क`बार`मे`पछुत`हौ कहो, 'यह एक तकलीफ हौ तो माहवारी क`दौरान औरतों`स`अलग रहो, और उनक`नज़दीक न जाओ जब तक कि व`पाक न हो जाएँ फरि जब व`पाक हो जाएँ, तो वहा`स`उनक`पास जाओ जहा` अल्लाह न`तमुह`हकुम दयिा। नशि्चय ही, अल्लाह तौबा करन`वालों और पाक रहन`वालों को पसंद करता हौ'	وَيَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْمَحِيْضِ قُلْ هُوَ اَذًى فَاعْتَزِلُوا النِّسَاۤءَ فِى الْمَحِيْضِ وَلَا تَقْرَبُوْهُنَّ حَتّٰى يَطْهُرْنَ فَاِذَا تَطَهَّرْنَ فَاْتُوْهُنَّ مِنْ حَيْثُ اَمَرَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ التَّوَّابِيْنَ وَيُحِبُّ الْمُتَطَهِّرِيْنَ
223	तमुहारी बीवयिा`तमुहारी खेती ह,ै तो अपनी खेती म`जाओ जसै`चाहो। और अपन`लिए (नकेी) पहल`स`भजेो। और अल्लाह स`डरो, और जान लो कि तमुह`उससे मलिना हौ और ईमान वालों को खशुखबरी दो।	نِسَاۤؤُكُمْ حَرْثٌ لَّكُمْ فَاْتُوْا حَرْثَكُمْ اَنّٰى شِئْتُمْ وَقَدِّمُوْا لِاَنْفُسِكُمْ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّكُمْ مُّلٰقُوْهُ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ
224	और अल्लाह को अपनी कसमों का बहाना न बनाओ कि तमु नकेी करन`, तकवा रखन`और लोगों`क`बीच सधुार करन`स`रुक जाओ। और अल्लाह बहतु सनु`वाला, जानन`वाला हौ	وَلَا تَجْعَلُوا اللّٰهَ عُرْضَةً لِّاَيْمَانِكُمْ اَنْ تَبَرُّوْا وَتَتَّقُوْا وَتُصْلِحُوْا بَيْنَ النَّاسِ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ
225	अल्लाह तमुह`तमुहारी बकेार की कसमों पर नहीं पकड़ेगा, लकेनि उन कसमों पर पकड़ेगा जो तमु`अपन`दलिों`स`बाधँी। और अल्लाह बहतु माफ करन`वाला, बहतु सबर करन`वाला हौ	لَا يُؤَاخِذُكُمُ اللّٰهُ بِاللَّغْوِ فِيْٓ اَيْمَانِكُمْ وَلٰكِنْ يُّؤَاخِذُكُمْ بِمَا كَسَبَتْ قُلُوْبُكُمْ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ حَلِيْمٌ

226	जो लोग अपनी बीवियों से कसम खाकर अलग रहने का इरादा करें, उनके लिए चार महीने की प्रतीक्षा है। फिर अगर वे लौट आएँ, तो निश्चय ही अल्लाह बहुत माफ करने वाला, रहम करने वाला है।	لِلَّذِيْنَ يُؤْلُوْنَ مِنْ نِّسَآئِهِمْ تَرَبُّصُ اَرْبَعَةِ اَشْهُرٍ فَاِنْ فَآءُوْ فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ
227	और अगर उन्होंने तलाक का फैसला कर लिया, तो निश्चय ही अल्लाह बहुत सुनने वाला, जानने वाला है।	وَاِنْ عَزَمُوا الطَّلَاقَ فَاِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ
228	और तलाकशुदा औरतों को अपने लिए तीन माहवारी तक इंतज़ार करना चाहिए। और उनके लिए जायज़ नहीं है कि वे उस (गर्भ) को छुपाएँ जो अल्लाह ने उनके गर्भाशय में पैदा किया, अगर वे अल्लाह और आख़िरी दिन पर ईमान रखती हों। और उनके शौहर इस दौरान उन्हें वापस लेने के ज़्यादा हकदार हैं, अगर वे सुधार चाहते हों। और औरतों के हक़ वैसे ही हैं जैसे मर्दों के हक़ उन पर हैं, उचित तरीके से। और मर्दों को उन पर एक दर्ज़ा हासिल है। और अल्लाह बहुत इज़्ज़त वाला, हिकमत वाला है।	وَالْمُطَلَّقٰتُ يَتَرَبَّصْنَ بِاَنْفُسِهِنَّ ثَلٰثَةَ قُرُوْٓءٍ وَلَا يَحِلُّ لَهُنَّ اَنْ يَّكْتُمْنَ مَا خَلَقَ اللّٰهُ فِيْٓ اَرْحَامِهِنَّ اِنْ كُنَّ يُؤْمِنَّ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَبُعُوْلَتُهُنَّ اَحَقُّ بِرَدِّهِنَّ فِيْ ذٰلِكَ اِنْ اَرَادُوْٓا اِصْلَاحًا وَلَهُنَّ مِثْلُ الَّذِيْ عَلَيْهِنَّ بِالْمَعْرُوْفِ وَلِلرِّجَالِ عَلَيْهِنَّ دَرَجَةٌ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ
229	तलाक दो बार है। फिर या तो उन्हें अच्छे तरीके से रखो या अच्छे तरीके से छोड़ दो। और तुम्हारे लिए जायज़ नहीं है कि जो कुछ तुमने उन्हें दिया, उसमें से कुछ वापस लो, सिवाय इसके कि दोनों को डर हो कि वे अल्लाह की हदों को कायम नहीं रख सकेंगे। अगर तुम्हें डर हो कि वे अल्लाह की हदों को कायम नहीं रख सकेंगे, तो इसमें कोई गुनाह नहीं है कि औरत अपने हक़ से कुछ छोड़ दे। यह अल्लाह की हद है, इनसे हद न गुज़रो। और जो कोई अल्लाह की हदों से गुज़रे, वही ज़ालिम है।	اَلطَّلَاقُ مَرَّتٰنِ فَاِمْسَاكٌ بِمَعْرُوْفٍ اَوْ تَسْرِيْحٌ بِاِحْسَانٍ وَلَا يَحِلُّ لَكُمْ اَنْ تَاْخُذُوْا مِمَّآ اٰتَيْتُمُوْهُنَّ شَيْـًٔا اِلَّآ اَنْ يَّخَافَآ اَلَّا يُقِيْمَا حُدُوْدَ اللّٰهِ فَاِنْ خِفْتُمْ اَلَّا يُقِيْمَا حُدُوْدَ اللّٰهِ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا فِيْمَا افْتَدَتْ بِهٖ تِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ فَلَا تَعْتَدُوْهَا وَمَنْ يَّتَعَدَّ حُدُوْدَ اللّٰهِ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ
230	फिर अगर उसने उसे (तीसरी बार) तलाक दे दी, तो वह औरत उसके लिए हलाल नहीं होगी जब तक कि वह किसी और शौहर से निकाह न कर ले। फिर अगर दूसरा शौहर उसे तलाक दे दे, तो उनके लिए कोई गुनाह नहीं है कि वे एक-दूसरे के पास लौट आएँ, अगर उन्हें लगता है कि वे अल्लाह की हदों को कायम रख सकेंगे। यह अल्लाह की हद है, जिन्हें वह जानने वालों के लिए स्पष्ट करता है।	فَاِنْ طَلَّقَهَا فَلَا تَحِلُّ لَهٗ مِنْۢ بَعْدُ حَتّٰى تَنْكِحَ زَوْجًا غَيْرَهٗ فَاِنْ طَلَّقَهَا فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَآ اَنْ يَّتَرَاجَعَآ اِنْ ظَنَّآ اَنْ يُّقِيْمَا حُدُوْدَ اللّٰهِ وَتِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ يُبَيِّنُهَا لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ
231	और जब तुम औरतों को तलाक दो और वे अपनी मुद्दत पूरी कर लें, तो उन्हें अच्छे तरीके से रखो या अच्छे तरीके से छोड़ दो। लेकिन उन्हें नुकसान पहुँचाने के लिए न रोको ताकि तुम उन पर जुल्म करो। और जो कोई ऐसा करता है, उसने अपने आप पर जुल्म किया। और अल्लाह की आयतों को मज़ाक न बनाओ। और अल्लाह की उन नेअमतों को याद करो जो उसने तुम पर दीं, और जो किताब और हिकमत उसने तुम पर उतारी, जिसके ज़रिए वह तुम्हें नसीहत देता है। और अल्लाह से डरो, और जान लो कि अल्लाह हर चीज़ को जानने वाला है।	وَاِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَآءَ فَبَلَغْنَ اَجَلَهُنَّ فَاَمْسِكُوْهُنَّ بِمَعْرُوْفٍ اَوْ سَرِّحُوْهُنَّ بِمَعْرُوْفٍ وَّلَا تُمْسِكُوْهُنَّ ضِرَارًا لِّتَعْتَدُوْا وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ فَقَدْ ظَلَمَ نَفْسَهٗ وَلَا تَتَّخِذُوْٓا اٰيٰتِ اللّٰهِ هُزُوًا وَّاذْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَمَآ اَنْزَلَ عَلَيْكُمْ مِّنَ الْكِتٰبِ وَالْحِكْمَةِ يَعِظُكُمْ بِهٖ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ

وَاِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَاءَ فَبَلَغْنَ اَجَلَهُنَّ فَلَا تَعْضُلُوْهُنَّ اَنْ يَّنْكِحْنَ اَزْوَاجَهُنَّ اِذَا تَرَاضَوْا بَيْنَهُمْ بِالْمَعْرُوْفِ ذٰلِكَ يُوْعَظُ بِهٖ مَنْ كَانَ مِنْكُمْ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ذٰلِكُمْ اَزْكٰى لَكُمْ وَاَطْهَرُ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ	और जब तुम औरतों को तलाक दो और वे अपनी मुद्दत पूरी कर लें, तो उन्हें अपने शौहरों से (दूसरा) निकाह करने से न रोको, अगर वे आपस में उचित तरीके से सहमत हों यह उस व्यक्ति के लिए नसीहत है जो तुम में से अल्लाह और आखिरी दिन पर ईमान रखता हो यह तुम्हारे लिए ज़्यादा पाकीज़ा और साफ-सथुरा हो और अल्लाह जानता है, और तुम नहीं जानते।	**232**
وَالْوٰلِدٰتُ يُرْضِعْنَ اَوْلَادَهُنَّ حَوْلَيْنِ كَامِلَيْنِ لِمَنْ اَرَادَ اَنْ يُّتِمَّ الرَّضَاعَةَ وَعَلَى الْمَوْلُوْدِ لَهٗ رِزْقُهُنَّ وَكِسْوَتُهُنَّ بِالْمَعْرُوْفِ لَا تُكَلَّفُ نَفْسٌ اِلَّا وُسْعَهَا لَا تُضَارَّ وَالِدَةٌ بِوَلَدِهَا وَلَا مَوْلُوْدٌ لَّهٗ بِوَلَدِهٖ وَعَلَى الْوَارِثِ مِثْلُ ذٰلِكَ فَاِنْ اَرَادَا فِصَالًا عَنْ تَرَاضٍ مِّنْهُمَا وَتَشَاوُرٍ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا وَاِنْ اَرَدْتُّمْ اَنْ تَسْتَرْضِعُوْٓا اَوْلَادَكُمْ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ اِذَا سَلَّمْتُمْ مَّآ اٰتَيْتُمْ بِالْمَعْرُوْفِ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ	और माएँ अपने बच्चों को दो साल तक दूध पिलाएँ, जो कोई पूरा दूध पिलाना चाहे और जिसके लिए बच्चा पैदा हुआ, उस पर उनकी (माओं की) खुराक और कपड़े उचित तरीके से देना अनिवार्य है किसी को उसकी ताकत से ज़्यादा ज़िम्मेदारी नहीं दी जाती। न माँ को उसके बच्चे की वजह से नुकसान पहुँचाया जाए और न बाप को उसके बच्चे की वजह से। और वारिस पर भी यही ज़िम्मेदारी है फिर अगर दोनों आपसी सहमति और सलाह से दूध छुड़ाना चाहें, तो उन पर कोई गुनाह नहीं है और अगर तुम अपने बच्चों को (किसी और से) दूध पिलवाना चाहो, तो इसमें कोई गुनाह नहीं है, बशर्ते तुम जो कुछ देना चाहते हो, उसे उचित तरीके से दे दो। और अल्लाह से डरो, और जान लो कि अल्लाह तुम्हारे करमों को देख रहा है।	**233**
وَالَّذِيْنَ يُتَوَفَّوْنَ مِنْكُمْ وَيَذَرُوْنَ اَزْوَاجًا يَّتَرَبَّصْنَ بِاَنْفُسِهِنَّ اَرْبَعَةَ اَشْهُرٍ وَّعَشْرًا فَاِذَا بَلَغْنَ اَجَلَهُنَّ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيْمَا فَعَلْنَ فِيْٓ اَنْفُسِهِنَّ بِالْمَعْرُوْفِ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ	और तुम में से जो लोग मर जाएँ और अपनी बीवियों को छोड़ जाएँ, वे (बीवियाँ) अपने लिए चार महीने और दस दिन इंतज़ार करें फिर जब वे अपनी मुद्दत पूरी कर लें, तो उनके लिए कोई गुनाह नहीं है कि वे अपने लिए उचित तरीके से कुछ करें और अल्लाह तुम्हारे करमों से खबरदार है।	**234**
وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيْمَا عَرَّضْتُمْ بِهٖ مِنْ خِطْبَةِ النِّسَاۤءِ اَوْ اَكْنَنْتُمْ فِيْٓ اَنْفُسِكُمْ عَلِمَ اللّٰهُ اَنَّكُمْ سَتَذْكُرُوْنَهُنَّ وَلٰكِنْ لَّا تُوَاعِدُوْهُنَّ سِرًّا اِلَّآ اَنْ تَقُوْلُوْا قَوْلًا مَّعْرُوْفًا وَلَا تَعْزِمُوْا عُقْدَةَ النِّكَاحِ حَتّٰى يَبْلُغَ الْكِتٰبُ اَجَلَهٗ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا فِيْٓ اَنْفُسِكُمْ فَاحْذَرُوْهُ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ حَلِيْمٌ	और तुम पर कोई गुनाह नहीं है कि तुम औरतों को (निकाह का) इशारा दो, या अपने दिलों में (निकाह का) इरादा रखो। अल्लाह जानता है कि तुम उन्हें ज़रूर याद करोगे, लेकिन उनके साथ गुपत रूप से वादा न करो, सिवाय इसके कि तुम उचित बात कहो। और निकाह का बंधन न बाँधो जब तक कि उनकी मुद्दत पूरी न हो जाए। और जान लो कि अल्लाह वह जानता है जो तुम्हारे दिलों में है तो उससे सावधान रहो, और जान लो कि अल्लाह बहुत माफ करने वाला, बहुत सब्र करने वाला है।	**235**
لَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ اِنْ طَلَّقْتُمُ النِّسَاۤءَ مَا لَمْ تَمَسُّوْهُنَّ اَوْ تَفْرِضُوْا لَهُنَّ فَرِيْضَةً وَّمَتِّعُوْهُنَّ عَلَى الْمُوْسِعِ قَدَرُهٗ وَعَلَى الْمُقْتِرِ قَدَرُهٗ مَتَاعًا بِالْمَعْرُوْفِ حَقًّا عَلَى الْمُحْسِنِيْنَ	तुम पर कोई गुनाह नहीं है अगर तुम औरतों को तलाक दे दो, इससे पहले कि तुम उन्हें छुओ या उनकी महेर तय करो। लेकिन उन्हें कुछ दे दो—जो मालदार है, अपनी ताकत के मुताबिक, और जो तंगदस्त है, अपनी ताकत के मुताबिक—उचित तरीके से कुछ देना अनिवार्य है यह नेकी करने वालों पर एक हक है।	**236**

237	और अगर तमु उनह्ेतलाक द्ेदो, इसस्ेपहल्ेकि तमु उनह्े छओु, लकेनि उनकी महेर तय कर चक्ु्ेहो, तो आधी महेर दनेा होगा, सवािय इसक्ेकि वे(औरत) माफ कर द्ेया वह माफ कर द्ेजसिक्ेहाथ म्ेनकिाह का बंधन ह्ै और माफ करना (अल्लाह की) तकवा क्ेज़्यादा नज़्दीक ह्ै और आपस म्ै नकेी करना न भलूो। नशि्चय ही, अल्लाह तमु्हार्ेकर्मों को दखे रहा ह्ै	وَاِنْ طَلَّقْتُمُوْهُنَّ مِنْ قَبْلِ اَنْ تَمَسُّوْهُنَّ وَقَدْ فَرَضْتُمْ لَهُنَّ فَرِيْضَةً فَنِصْفُ مَا فَرَضْتُمْ اِلَّآ اَنْ يَّعْفُوْنَ اَوْ يَعْفُوَا الَّذِيْ بِيَدِهٖ عُقْدَةُ النِّكَاحِ ۭ وَاَنْ تَعْفُوْٓا اَقْرَبُ لِلتَّقْوٰى ۭ وَلَا تَنْسَوُا الْفَضْلَ بَيْنَكُمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ
238	नमाज़ों की हफिाज़त करो, ख़ासकर बीच की नमाज़ की, और अल्लाह क्ेसामन्ेख़ड़्ेहोकर (नमाज़ पढ़ो)।	حَافِظُوْا عَلَي الصَّلَوٰتِ وَالصَّلٰوةِ الْوُسْطٰى وَقُوْمُوْا لِلّٰهِ قٰنِتِيْنَ
239	और अगर तमु्हे ड़र हो, तो पदैल या सवारी पर (नमाज़ पढ़ो)। फरि जब तमु अमन म्ै हो, तो अल्लाह का ज़क्रि करो, जसै्े उसन्ेतमु्हे सखिाया, जो तमु पहल्ेनहीं जानत्े थे।	فَاِنْ خِفْتُمْ فَرِجَالًا اَوْ رُكْبَانًا ۚ فَاِذَآ اَمِنْتُمْ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَمَا عَلَّمَكُمْ مَّا لَمْ تَكُوْنُوْا تَعْلَمُوْنَ
240	और तमु म्ेस्ेजो लोग मर जाएँ और अपनी बीवयिों को छोड़ जाएँ, उनह्े चाहए कि अपनी बीवयिों क्ेलए एक साल तक रज़िक़ की वसीयत करें, बनिा उनह्े (घर स)े नकिालो लकेनि अगर व्ेख़ुद नकिल जाएँ, तो उनक्ेलए कोई गन्ुाह नहीं ह्ै कि व्ेअपन्ेलए उचति तरीक्ेस्ेकछु करें। और अल्लाह बहत्ु इज़्ज़त वाला, हकिमत वाला ह्ै	وَالَّذِيْنَ يُتَوَفَّوْنَ مِنْكُمْ وَيَذَرُوْنَ اَزْوَاجًا وَّصِيَّةً لِّاَزْوَاجِهِمْ مَّتَاعًا اِلَى الْحَوْلِ غَيْرَ اِخْرَاجٍ ۚ فَاِنْ خَرَجْنَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيْ مَا فَعَلْنَ فِيْٓ اَنْفُسِهِنَّ مِنْ مَّعْرُوْفٍ ۭ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ
241	और तलाकशद्ुा औरतों क्ेलए उचति तरीक्ेस्ेरज़िक़ दनेा अनविार्य ह्ै यह तकवा वालों पर एक हक़ ह्ै	وَلِلْمُطَلَّقٰتِ مَتَاعٌۢ بِالْمَعْرُوْفِ ۚ حَقًّا عَلَي الْمُتَّقِيْنَ
242	इस तरह अल्लाह अपनी आयत्ेतमु्हार्ेलए स्पष्ट करता ह्ै ताकि तमु समझ सको।	كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ اٰيٰتِهٖ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ
243	क्या तमु्न्ेउन लोगों को नहीं दखेा जो अपन्ेघरों स्ेनकिल्े, जबकि व्ेहज़ारों की तादाद म्ें थे, मौत क्ेडर स?े तो अल्लाह न्े उनस्ेकहा, 'मरो!' फरि उसन्ेउनह्े ज़ंदिा कयिा। नशि्चय ही, अल्लाह इंसानों पर बहत्ु महेरबान ह्ै, लकेनि ज़्यादातर लोग शक्ुर नहीं करत्े।	اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ خَرَجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ وَهُمْ اُلُوْفٌ حَذَرَ الْمَوْتِ فَقَالَ لَهُمُ اللّٰهُ مُوْتُوْا ثُمَّ اَحْيَاهُمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ لَذُوْ فَضْلٍ عَلَي النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَشْكُرُوْنَ
244	और अल्लाह क्ेरास्त्े म्ें जहिाद करो, और जान लो कि अल्लाह बहत्ु सन्ुन्ेवाला, जानन्ेवाला ह्ै	وَقَاتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ
245	कौन ह्ै जो अल्लाह को अच्छा कर्ज़ द्े, ताकि वह उस्ेकई गन्ुा बढ़ाकर लौटाए? और अल्लाह ही तंगी दत्ेा ह्ै और वही कश्ुादगी दत्ेा ह्ै, और उसी की ओर तमु्हे लौटना ह्ै	مَنْ ذَا الَّذِيْ يُقْرِضُ اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا فَيُضٰعِفَهٗ لَهٗٓ اَضْعَافًا كَثِيْرَةً ۭ وَاللّٰهُ يَقْبِضُ وَيَبْصُۜطُ ۠ وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ

246	क्या तमुन`बनी इस्राइल क`उन सरदारों को नहीं दखा जो मूसा क`बाद थ, जब उनहोंन`अपन`नबी स`कहा, 'हमार`लिए एक बादशाह मक़ुरर्र करो ताकि हम अल्लाह क`रास्त`म`जहिाद करें।' उसन`(नबी न) कहा, 'क्या हो सकता ह`कि अगर तमु पर जहिाद अनविार्य कयिा जाए, तो तमु जहिाद न करो?' उनहोंन`जवाब दयिा, 'हम अल्लाह क`रास्त`म`जहिाद क्यों न कर, जबकि हम`हमार`घरों और हमार`बच्चों स`नकिाल दयिा गया ह?' फरि जब उन पर जहिाद अनविार्य कयिा गया, तो व`मुड़ गए, सविाय कछु लोगों क`और अल्लाह ज़ालमिों को अच्छी तरह जानता ह।	اَلَمْ تَرَ اِلَى الْمَلَاِ مِنْ بَنِيْٓ اِسْرَاۤءِيْلَ مِنْۢ بَعْدِ مُوْسٰىۘ اِذْ قَالُوْا لِنَبِيٍّ لَّهُمُ ابْعَثْ لَنَا مَلِكًا نُّقَاتِلْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۗقَالَ هَلْ عَسَيْتُمْ اِنْ كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِتَالُ اَلَّا تُقَاتِلُوْا ۗقَالُوْا وَمَا لَنَآ اَلَّا نُقَاتِلَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَقَدْ اُخْرِجْنَا مِنْ دِيَارِنَا وَاَبْنَاۤىِٕنَا ۗفَلَمَّا كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقِتَالُ تَوَلَّوْا اِلَّا قَلِيْلًا مِّنْهُمْ ۗوَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالظّٰلِمِيْنَ
247	और उनक`नबी न`उनस`कहा, 'नश्चिय ही, अल्लाह न`तालूत को तमुहारा बादशाह मक़ुरर्र कयिा ह। उनहोंन`कहा, 'वह हम पर बादशाहत कसै`कर सकता ह, जबकि हम बादशाहत क`ज़्यादा हकदार ह, और उस`माल की कशुादगी भी नहीं दी गई?' उसन`(नबी न) जवाब दयिा, 'अल्लाह न`उस`तमु पर चनु लयिा और उस`ज़्ञान और जसिमानी ताकत म`बढ़ोतरी दी।' और अल्लाह अपनी बादशाहत जसि`चाहता ह, दतेा ह। और अल्लाह बहत्त व्यापक, जानन`वाला ह।	وَقَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ اِنَّ اللّٰهَ قَدْ بَعَثَ لَكُمْ طَالُوْتَ مَلِكًا ۗقَالُوْٓا اَنّٰى يَكُوْنُ لَهُ الْمُلْكُ عَلَيْنَا وَنَحْنُ اَحَقُّ بِالْمُلْكِ مِنْهُ وَلَمْ يُؤْتَ سَعَةً مِّنَ الْمَالِ ۗقَالَ اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰىهُ عَلَيْكُمْ وَزَادَهٗ بَسْطَةً فِى الْعِلْمِ وَالْجِسْمِ ۗوَاللّٰهُ يُؤْتِيْ مُلْكَهٗ مَنْ يَّشَاۤءُ ۗوَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ
248	और उनक`नबी न`उनस`कहा, 'उसकी बादशाहत की नशिानी यह ह`कि तमुहार`पास वह संदूक़ आएगा जसिम`तमुहार`रब की तरफ स`सकुून ह`और मूसा और हारून की कौम की छोड़ी हई चीज़`ह, जसि`फरशि्त`उठाकर लाएँगे। अगर तमु ईमान वालों म`स`हो, तो इसम`तमुहार`लिए नशि्चति रूप स`एक नशिानी ह।'	وَقَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ اِنَّ اٰيَةَ مُلْكِهٖٓ اَنْ يَّاْتِيَكُمُ التَّابُوْتُ فِيْهِ سَكِيْنَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَبَقِيَّةٌ مِّمَّا تَرَكَ اٰلُ مُوْسٰى وَاٰلُ هٰرُوْنَ تَحْمِلُهُ الْمَلٰۤئِكَةُ ۗاِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ
249	और जब तालूत फौज लकेर नकिला, तो उसन`कहा, 'नश्चिय ही, अल्लाह तमुहारी आज़माइश एक नदी स`करेगा। जो कोई उसस`पानी पएिगा, वह मरो नहीं ह। और जो उसका स्वाद न ल`, वह मरो ह, सविाय उस शख़्स क`जो अपन`हाथ स`एक चल्लू ल`ल`।' फरि उनम`स`ज़्यादातर न`उसस`पानी पी लयिा, सविाय कछु लोगों क`। फरि जब वह (तालूत) और उसक`साथ ईमान वाल`उस (नदी) को पार कर गए, तो उनहोंन`कहा, 'आज हमार`पास जालूत और उसकी फौज क`मक़ुाबल`की ताकत नहीं ह। लकेनि जनि्ह`यकीन था कि उनह`अल्लाह स`मलिना ह, उनहोंन`कहा, 'कतिनी ही छोटी जमातों न`अल्लाह की इजाज़त स`बड़ी जमातों को हरा दयिा।' और अल्लाह सबर करन`वालों क`साथ ह।	فَلَمَّا فَصَلَ طَالُوْتُ بِالْجُنُوْدِ ۙقَالَ اِنَّ اللّٰهَ مُبْتَلِيْكُمْ بِنَهَرٍ ۚفَمَنْ شَرِبَ مِنْهُ فَلَيْسَ مِنِّيْ ۚوَمَنْ لَّمْ يَطْعَمْهُ فَاِنَّهٗ مِنِّيْٓ اِلَّا مَنِ اغْتَرَفَ غُرْفَةً ۢبِيَدِهٖ ۚفَشَرِبُوْا مِنْهُ اِلَّا قَلِيْلًا مِّنْهُمْ ۗفَلَمَّا جَاوَزَهٗ هُوَ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ ۙقَالُوْا لَا طَاقَةَ لَنَا الْيَوْمَ بِجَالُوْتَ وَجُنُوْدِهٖ ۗقَالَ الَّذِيْنَ يَظُنُّوْنَ اَنَّهُمْ مُّلٰقُوا اللّٰهِ ۙكَمْ مِّنْ فِئَةٍ قَلِيْلَةٍ غَلَبَتْ فِئَةً كَثِيْرَةًۢ بِاِذْنِ اللّٰهِ ۗوَاللّٰهُ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ
250	और जब व`जालूत और उसकी फौज क`सामन`आए, तो उनहोंन`दआु की, 'ऐ हमार`रब! हम पर सबर बरस, और हमार`कदम जमा द`और काफरि कौम क`ख़लिाफ हमारी मदद कर।'	وَلَمَّا بَرَزُوْا لِجَالُوْتَ وَجُنُوْدِهٖ قَالُوْا رَبَّنَآ اَفْرِغْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَّثَبِّتْ اَقْدَامَنَا وَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ

فَهَزَمُوْهُمْ بِاِذْنِ اللّٰهِ وَقَتَلَ دَاوٗدُ جَالُوْتَ وَاٰتٰىهُ اللّٰهُ الْمُلْكَ وَالْحِكْمَةَ وَعَلَّمَه مِمَّا يَشَاۤءُ ۗ وَلَوْلَا دَفْعُ اللّٰهِ النَّاسَ بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ لَّفَسَدَتِ الْاَرْضُ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ ذُوْ فَضْلٍ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ	तो उनहोंने अल्लाह की इजाज़त से उनहें हरा दिया, और दाऊद ने जालूत को मार डाला, और अल्लाह ने उसे बादशाहत और हिकमत दी, और उसे जो चाहा, सिखाया। और अगर अल्लाह कुछ लोगों को दूसरों के ज़रिए न रोकता, तो धरती बिगड़ जाती। लेकिन अल्लाह तमाम आलम पर महेरबान है।	**251**
تِلْكَ اٰيٰتُ اللّٰهِ نَتْلُوْهَا عَلَيْكَ بِالْحَقِّ ۗ وَاِنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ	ये अल्लाह की आयतें हैं, जिन्हें हम तुम्हें (मुहम्मद) हक़ के साथ पढ़ते हैं और निश्चय ही, तुम रसूलों में से हो।	**252**
تِلْكَ الرُّسُلُ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلٰى بَعْضٍ ۘ مِنْهُمْ مَّنْ كَلَّمَ اللّٰهُ وَرَفَعَ بَعْضَهُمْ دَرَجٰتٍ ۗ وَاٰتَيْنَا عِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ الْبَيِّنٰتِ وَاَيَّدْنٰهُ بِرُوْحِ الْقُدُسِ ۗ وَلَوْ شَاۤءَ اللّٰهُ مَا اقْتَتَلَ الَّذِيْنَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَا جَاۤءَتْهُمُ الْبَيِّنٰتُ وَلٰكِنِ اخْتَلَفُوْا فَمِنْهُمْ مَّنْ اٰمَنَ وَمِنْهُمْ مَّنْ كَفَرَ ۗ وَلَوْ شَاۤءَ اللّٰهُ مَا اقْتَتَلُوْا وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَفْعَلُ مَا يُرِيْدُ	ये रसूल हैं, जिनमें से कुछ को हमने दूसरों पर फज़ीलत दी। उनमें से कुछ से अल्लाह ने बात की, और कुछ को उसने दरज़ों में ऊँचा किया। और हमने ईसा इब्न मरयम को स्पष्ट निशानियाँ दीं और उन्हें रूहुल कुद्दुस (जिब्रील) से मजबूत किया। और अगर अल्लाह चाहता, तो उनके बाद वाले लोग, जिनके पास स्पष्ट निशानियाँ आई थीं, आपस में न लड़ते लेकिन उनहोंने मतभेद किया, तो उनमें से कुछ ईमान लाए और कुछ काफ़िर हो गए। और अगर अल्लाह चाहता, तो वे आपस में न लड़ते लेकिन अल्लाह जो चाहता है, करता है।	**253**
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنْفِقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ يَوْمٌ لَّا بَيْعٌ فِيْهِ وَلَا خُلَّةٌ وَّلَا شَفَاعَةٌ ۗ وَالْكٰفِرُوْنَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ	ऐ ईमान वालो! उस रिज़्क़ में से खर्च करो जो हमने तुम्हें दिया, इससे पहले कि वह दिन आए जब न कोई ख़रीद-फ़रोख़्त होगी, न कोई दोस्ती, और न कोई सिफ़ारिश। और काफ़िर ही ज़ालिम हैं।	**254**
اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ اَلْحَيُّ الْقَيُّوْمُ ۚ لَا تَاْخُذُه سِنَةٌ وَّلَا نَوْمٌ ۗ لَه مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ ۗ مَنْ ذَا الَّذِيْ يَشْفَعُ عِنْدَه اِلَّا بِاِذْنِه ۗ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ ۚ وَلَا يُحِيْطُوْنَ بِشَيْءٍ مِّنْ عِلْمِه اِلَّا بِمَا شَاۤءَ ۚ وَسِعَ كُرْسِيُّهُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ ۚ وَلَا يَـُٔوْدُه حِفْظُهُمَا ۚ وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيْمُ	अल्लाह—उसके सिवा कोई रब नहीं है, वह ज़िंदा है, क़ायम रहने वाला। उसे न झपकी आती है और न नींद। जो कुछ आकाशों और धरती में है, उसी का है। कौन है जो उसकी इजाज़त के बिना उसके सामने सिफ़ारिश कर सके? वह जानता है जो उनके सामने है और जो उनके पीछे है। और वे उसकी जानकारी में से कुछ भी नहीं पा सकते, सिवाय इसके जो वह चाहे। उसकी कुर्सी आकाशों और धरती को घेरे हुए है, और उनकी हिफ़ाज़त उसे थकाती नहीं। और वह बहुत बुलंद, बहुत बड़ा है।	**255**
لَآ اِكْرَاهَ فِى الدِّيْنِ ۙ قَدْ تَّبَيَّنَ الرُّشْدُ مِنَ الْغَيِّ ۚ فَمَنْ يَّكْفُرْ بِالطَّاغُوْتِ وَيُؤْمِنْ بِاللّٰهِ فَقَدِ اسْتَمْسَكَ بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقٰى لَا انْفِصَامَ لَهَا ۗ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ	दीन में कोई ज़बरदस्ती नहीं है। हिदायत गुमराही से साफ़ ज़ाहिर हो चुकी है। तो जो कोई ताग़ूत (झूठे ख़ुदाओं) का इनकार करे और अल्लाह पर ईमान लाए, उसने उस मज़बूत रस्सी को थाम लिया जो कभी नहीं टूटती। और अल्लाह बहुत सुनने वाला, जानने वाला है।	**256**

257	अल्लाह ईमान वालों का सरपरस्त है वह उन्हें अंधेरों से निकालकर रोशनी की ओर ले जाता है और जो लोग काफिर है, उनके सरपरस्त ताग़ूत है, जो उन्हें रोशनी से निकालकर अंधेरों की ओर ले जाते है वही लोग जहन्नम के बाशिंदे है, वे उसमें हमेशा रहेंगे।	اَللّٰهُ وَلِيُّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يُخْرِجُهُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَوْلِيَاۤؤُهُمُ الطَّاغُوْتُ يُخْرِجُوْنَهُمْ مِّنَ النُّوْرِ اِلَى الظُّلُمٰتِ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ
258	क्या तुमने उस शख़्स को नहीं देखा जिसने इब्राहीम से उसके रब के बारे में बहस की, क्योंकि अल्लाह ने उसे बादशाहत दी थी? जब इब्राहीम ने कहा, 'मेरा रब वह है जो ज़िंदगी देता है और मौत देता है,' उसने जवाब दिया, 'मैं भी ज़िंदगी देता हूँ और मौत देता हूँ।' इब्राहीम ने कहा, 'निश्चय ही, अल्लाह सूरज को पूरब से लाता है, तो तू उसे पश्चिम से ला।' तो वह काफिर हक़्का-बक़्का रह गया। और अल्लाह ज़ालिमों को हिदायत नहीं देता।	اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْ حَآجَّ اِبْرٰهٖمَ فِيْ رَبِّهٖٓ اَنْ اٰتٰىهُ اللّٰهُ الْمُلْكَ اِذْ قَالَ اِبْرٰهٖمُ رَبِّيَ الَّذِيْ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ۙ قَالَ اَنَا اُحْيٖ وَاُمِيْتُ ۗ قَالَ اِبْرٰهٖمُ فَاِنَّ اللّٰهَ يَاْتِيْ بِالشَّمْسِ مِنَ الْمَشْرِقِ فَاْتِ بِهَا مِنَ الْمَغْرِبِ فَبُهِتَ الَّذِيْ كَفَرَ ۗ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ
259	या उस शख़्स की तरह जिसने एक बस्ती के पास से गुज़रा, जो उजड़ी हुई थी। उसने कहा, 'अल्लाह इस मौत के बाद कैसे ज़िंदा करेगा?' तो अल्लाह ने उसे सौ साल तक मरने दिया, फिर उसे ज़िंदा किया। उसने (अल्लाह ने) कहा, 'तू यहाँ कितने समय रहा?' उसने जवाब दिया, 'एक दिन या उसका कुछ हिस्सा।' उसने (अल्लाह ने) कहा, 'नहीं, तू यहाँ सौ साल रहा। अपने खाने और पानी को देख, वह ख़राब नहीं हुआ। और अपने गधे को देख। और हम तुझे इंसानों के लिए एक निशानी बनाएँगे। और हड्डियों को देख, हम उन्हें कैसे जोड़ते है और उन पर माँस चढ़ाते है।' जब यह उसके लिए साफ़ हो गया, तो उसने कहा, 'मैं जानता हूँ कि अल्लाह हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है।'	اَوْ كَالَّذِيْ مَرَّ عَلٰى قَرْيَةٍ وَّهِيَ خَاوِيَةٌ عَلٰى عُرُوْشِهَا ۚ قَالَ اَنّٰى يُحْيٖ هٰذِهِ اللّٰهُ بَعْدَ مَوْتِهَا ۚ فَاَمَاتَهُ اللّٰهُ مِائَةَ عَامٍ ثُمَّ بَعَثَهٗ ۗ قَالَ كَمْ لَبِثْتَ ۗ قَالَ لَبِثْتُ يَوْمًا اَوْ بَعْضَ يَوْمٍ ۗ قَالَ بَلْ لَّبِثْتَ مِائَةَ عَامٍ فَانْظُرْ اِلٰى طَعَامِكَ وَشَرَابِكَ لَمْ يَتَسَنَّهْ ۚ وَانْظُرْ اِلٰى حِمَارِكَ وَلِنَجْعَلَكَ اٰيَةً لِّلنَّاسِ ۚ وَانْظُرْ اِلَى الْعِظَامِ كَيْفَ نُنْشِزُهَا ثُمَّ نَكْسُوْهَا لَحْمًا ۗ فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهٗ ۙ قَالَ اَعْلَمُ اَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ
260	और (याद करो) जब इब्राहीम ने कहा, 'ऐ मेरे रब! मुझे दिखा कि तू मुर्दों को कैसे ज़िंदा करता है।' उसने (अल्लाह ने) जवाब दिया, 'क्या तूने ईमान नहीं लाया?' उसने कहा, 'हाँ, लेकिन ताकि मेरा दिल सकून पाए।' उसने (अल्लाह ने) कहा, 'चार परिंदे ले, और उन्हें अपने पास कर ले, फिर हर पहाड़ पर उनका एक हिस्सा रख दे, फिर उन्हें बुला, वे तेरी ओर दौड़कर आएँगे।' और जान लो कि अल्लाह बहुत इज़्ज़त वाला, हिकमत वाला है।	وَاِذْ قَالَ اِبْرٰهٖمُ رَبِّ اَرِنِيْ كَيْفَ تُحْيِ الْمَوْتٰى ۗ قَالَ اَوَلَمْ تُؤْمِنْ ۗ قَالَ بَلٰى وَلٰكِنْ لِّيَطْمَىِٕنَّ قَلْبِيْ ۗ قَالَ فَخُذْ اَرْبَعَةً مِّنَ الطَّيْرِ فَصُرْهُنَّ اِلَيْكَ ثُمَّ اجْعَلْ عَلٰى كُلِّ جَبَلٍ مِّنْهُنَّ جُزْءًا ثُمَّ ادْعُهُنَّ يَاْتِيْنَكَ سَعْيًا ۗ وَاعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ
261	उन लोगों की मिसाल जो अपने माल को अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करते है, उस दाने की तरह है जिससे सात बालियाँ उगती है, और हर बाली में सौ दाने होते है और अल्लाह जिसके लिए चाहता है, उसके कई गुना बढ़ा देता है और अल्लाह बहुत व्यापक, जानने वाला है।	مَثَلُ الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ كَمَثَلِ حَبَّةٍ اَنْۢبَتَتْ سَبْعَ سَنَابِلَ فِيْ كُلِّ سُنْۢبُلَةٍ مِّائَةُ حَبَّةٍ ۗ وَاللّٰهُ يُضٰعِفُ لِمَنْ يَّشَاۤءُ ۗ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ

262	जो लोग अपने माल को अल्लाह के रास्ते में खर्च करते हैं, फिर अपने खर्च के बाद न एहसान जताते हैं और न नुकसान पहुँचाते हैं, उनका इनाम उनके रब के पास है। उनके कोई डर नहीं होगा और न वे दुखी होंगे।	اَلَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ثُمَّ لَا يُتْبِعُوْنَ مَآ اَنْفَقُوْا مَنًّا وَّلَآ اَذًى لَّهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ
263	अच्छी बात कहना और माफ करना उस सदके से बेहतर है जिसके बाद नुकसान पहुँचाया जाए। और अल्लाह बेनियाज, बहुत सब्र करने वाला है।	قَوْلٌ مَّعْرُوْفٌ وَّمَغْفِرَةٌ خَيْرٌ مِّنْ صَدَقَةٍ يَّتْبَعُهَآ اَذًى ۗ وَاللّٰهُ غَنِيٌّ حَلِيْمٌ
264	ऐ ईमान वालो! अपने सदके को एहसान जताकर और नुकसान पहुँचाकर बेकार न करो, जैसे वह शख़्स जो अपने माल को लोगों को दिखाने के लिए खर्च करता है और न अल्लाह पर ईमान रखता है और न आख़िरी दिन पर। उसकी मिसाल उस चट्टान की तरह है जिस पर मिट्टी हो, फिर उस पर ज़ोरदार बारिश पड़े और वह उसे साफ़ कर दे। वे अपने किए हुए का कुछ भी हासिल नहीं कर सकते। और अल्लाह काफ़िरों को हिदायत नहीं देता।	يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُبْطِلُوْا صَدَقٰتِكُمْ بِالْمَنِّ وَالْاَذٰى ۙ كَالَّذِيْ يُنْفِقُ مَالَهٗ رِئَآءَ النَّاسِ وَلَا يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ۗ فَمَثَلُهٗ كَمَثَلِ صَفْوَانٍ عَلَيْهِ تُرَابٌ فَاَصَابَهٗ وَابِلٌ فَتَرَكَهٗ صَلْدًا ۗ لَا يَقْدِرُوْنَ عَلٰى شَيْءٍ مِّمَّا كَسَبُوْا ۗ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الْكٰفِرِيْنَ
265	और उन लोगों की मिसाल जो अपने माल को अल्लाह की रज़ामंदी और अपने नफ़्स की मज़बूती के लिए खर्च करते हैं, उस बाग़ की तरह है जो ऊँची ज़मीन पर हो, जिस पर ज़ोरदार बारिश पड़े और वह दुगुना फल दे। और अगर ज़ोरदार बारिश न भी पड़े, तो हल्की बारिश ही काफी है। और अल्लाह तुम्हारे करमों को देख रहा है।	وَمَثَلُ الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمُ ابْتِغَآءَ مَرْضَاتِ اللّٰهِ وَتَثْبِيْتًا مِّنْ اَنْفُسِهِمْ كَمَثَلِ جَنَّةٍۢ بِرَبْوَةٍ اَصَابَهَا وَابِلٌ فَاٰتَتْ اُكُلَهَا ضِعْفَيْنِ ۚ فَاِنْ لَّمْ يُصِبْهَا وَابِلٌ فَطَلٌّ ۗ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ
266	क्या तुम में से कोई चाहेगा कि उसका एक बाग़ हो जिसमें खजूर और अंगूर हों, और उसके नीचे नदियाँ बह रही हों, और उसमें हर तरह के फल हों, और वह बूढ़ा हो जाए और उसके बच्चे कमज़ोर हों, फिर उस बाग़ पर आग का बवंडर आए और वह जल जाए? इस तरह अल्लाह अपनी आयतें तुम्हारे लिए स्पष्ट करता है ताकि तुम सोच-विचार करो।	اَيَوَدُّ اَحَدُكُمْ اَنْ تَكُوْنَ لَهٗ جَنَّةٌ مِّنْ نَّخِيْلٍ وَّاَعْنَابٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۙ لَهٗ فِيْهَا مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ ۙ وَاَصَابَهُ الْكِبَرُ وَلَهٗ ذُرِّيَّةٌ ضُعَفَآءُ ۖ فَاَصَابَهَآ اِعْصَارٌ فِيْهِ نَارٌ فَاحْتَرَقَتْ ۗ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ تَتَفَكَّرُوْنَ
267	ऐ ईमान वालो! अपने अच्छे कमाए हुए माल में से और उसमें से जो हमने तुम्हारे लिए धरती से निकाला, खर्च करो। और उस खराब चीज़ को न चुनो जिसे तुम खर्च करने के लिए लेते हो, जबकि तुम खुद उसे नहीं लेते, सिवाय इसके कि तुम आँखें मूँद लो। और जान लो कि अल्लाह बेनियाज, बहुत तारीफ वाला है।	يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنْفِقُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ مَا كَسَبْتُمْ وَمِمَّآ اَخْرَجْنَا لَكُمْ مِّنَ الْاَرْضِ ۖ وَلَا تَيَمَّمُوا الْخَبِيْثَ مِنْهُ تُنْفِقُوْنَ وَلَسْتُمْ بِاٰخِذِيْهِ اِلَّآ اَنْ تُغْمِضُوْا فِيْهِ ۗ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ غَنِيٌّ حَمِيْدٌ
268	शैतान तुम्हें गरीबी का डर दिखाता है और तुम्हें बेहयाई का हुक्म देता है और अल्लाह तुम्हें अपनी माफी और मेहरबानी का वादा करता है और अल्लाह बहुत व्यापक, जानने वाला है।	اَلشَّيْطٰنُ يَعِدُكُمُ الْفَقْرَ وَيَاْمُرُكُمْ بِالْفَحْشَآءِ ۚ وَاللّٰهُ يَعِدُكُمْ مَّغْفِرَةً مِّنْهُ وَفَضْلًا ۗ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ

يُؤْتِى الْحِكْمَةَ مَنْ يَّشَاءُ ۚ وَمَنْ يُّؤْتَ الْحِكْمَةَ فَقَدْ اُوْتِيَ خَيْرًا كَثِيْرًا ۗ وَمَا يَذَّكَّرُ اِلَّآ اُولُوا الْاَلْبَابِ	**269**	वह जसि`चाहता ह,ै हकिमत दतेा हो और जसि`हकिमत दी गई, उस`बहतु सारी नकेी दी गई। और नसीहत कवेल बद्धमिान लोग हासलि करत`हो।
وَمَآ اَنْفَقْتُمْ مِّنْ نَّفَقَةٍ اَوْ نَذَرْتُمْ مِّنْ نَّذْرٍ فَاِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُهٗ ۗ وَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ اَنْصَارٍ	**270**	और जो कछु तमु खरच करत`हो या कोई मनन्त मानत`हो, नशि्चय ही अलल्ाह उस`जानता हो और ज़ालमिों का कोई मददगार नहीं होगा।
اِنْ تُبْدُوا الصَّدَقٰتِ فَنِعِمَّا هِيَ ۚ وَاِنْ تُخْفُوْهَا وَتُؤْتُوْهَا الْفُقَرَاءَ فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۚ وَيُكَفِّرُ عَنْكُمْ مِّنْ سَيِّاٰتِكُمْ ۗ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ	**271**	अगर तमु अपन`सदक़`को ज़ाहरि करो, तो यह अचछा हो लकेनि अगर तमु उस`छपिाकर मसि्कीनों को दो, तो यह तमुहार`लएि बहेतर ह,ै और यह तमुहार`कछु गन्ाहों का कफ्फारा बनगेा। और अलल्ाह तमुहार`कर्मो`स`खबरदार हो
لَيْسَ عَلَيْكَ هُدٰىهُمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَهْدِيْ مَنْ يَّشَاءُ ۗ وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ خَيْرٍ فَلِاَنْفُسِكُمْ ۗ وَمَا تُنْفِقُوْنَ اِلَّا ابْتِغَاءَ وَجْهِ اللّٰهِ ۗ وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ خَيْرٍ يُّوَفَّ اِلَيْكُمْ وَاَنْتُمْ لَا تُظْلَمُوْنَ	**272**	उनकी हदिायत तमुहारी (महुम्मद) जम्मिदेारी नहीं ह,ै बलक़ि अलल्ाह जसि`चाहता ह,ै हदिायत दतेा हो और जो कछु नकेी तमु खरच करत`हो, वह तमुहार`लएि हो और तमु कवेल अलल्ाह की रज़ामंदी क`लएि खरच करो। और जो कछु नकेी तमु खरच करत`हो, वह तमुह`पूरी तरह लौटाई जाएगी, और तमु पर जलु्म नहीं होगा।
لِلْفُقَرَاءِ الَّذِيْنَ اُحْصِرُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ ضَرْبًا فِى الْاَرْضِ ۖ يَحْسَبُهُمُ الْجَاهِلُ اَغْنِيَاءَ مِنَ التَّعَفُّفِ ۚ تَعْرِفُهُمْ بِسِيْمٰهُمْ ۚ لَا يَسْـَٔلُوْنَ النَّاسَ اِلْحَافًا ۗ وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ خَيْرٍ فَاِنَّ اللّٰهَ بِهٖ عَلِيْمٌ	**273**	(खरच करो) उन मसि्कीनों क`लएि जो अलल्ाह क`रासत`मे`रुक`हुए ह,ै व`धरती म`सफर नहीं कर सकत।े जाहलि लोग उनकी बपेरवाही को दखेकर उनह`मालदार समझत`हो तमु उनह`उनक`चनि्हों स`पहचान लोग।े व`लोगों स`जद़ि करक`नहीं माँगत।े और जो कछु नकेी तमु खरच करत`हो, अलल्ाह उस`जानता हो
اَلَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ بِالَّيْلِ وَالنَّهَارِ سِرًّا وَّعَلَانِيَةً فَلَهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ	**274**	जो लोग अपन`माल को रात और दनि, छपिाकर और ज़ाहरि करक`अलल्ाह क`रासत`मे`खरच करत`ह,ै उनका इनाम उनक`रब क`पास हो उनह`कोई डर नहीं होगा और न व`दखु़ी होंग।े
اَلَّذِيْنَ يَاْكُلُوْنَ الرِّبٰوا لَا يَقُوْمُوْنَ اِلَّا كَمَا يَقُوْمُ الَّذِيْ يَتَخَبَّطُهُ الشَّيْطٰنُ مِنَ الْمَسِّ ۚ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَالُوْٓا اِنَّمَا الْبَيْعُ مِثْلُ الرِّبٰوا ۘ وَاَحَلَّ اللّٰهُ الْبَيْعَ وَحَرَّمَ الرِّبٰوا ۗ فَمَنْ جَآءَهٗ مَوْعِظَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ فَانْتَهٰى فَلَهٗ مَا سَلَفَ ۗ وَاَمْرُهٗٓ اِلَى اللّٰهِ ۗ وَمَنْ عَادَ فَاُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ	**275**	जो लोग सद्द खात`ह,ै व`(कयिामत क`दनि) उसी तरह खड़`होंग`जसै`वह शख़्स खड़ा होता ह`जसि`शैतान न`छ्कर पागल कर दयिा हो। यह इसलएि कि उनहों`न`कहा, 'खरीद-फरोख़त भी तो सद्द की तरह ह'ै जबकि अलल्ाह न`ख़रीद-फरोख़त को हलाल कयिा और सद्द को हराम कयिा। तो जसि`उसक`रब की नसीहत मलिी और वह रुक गया, तो जो पहल`हो चुका, वह उसका ह,ै और उसका मामला अलल्ाह क`पास हो और जो फरि स`(सद्द खान)े लौट,`वही लोग जहनन्म क`बाशदि`ह,ै व`उसम`हमशेा रहगे।ं
يَمْحَقُ اللّٰهُ الرِّبٰوا وَيُرْبِى الصَّدَقٰتِ ۗ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ كُلَّ كَفَّارٍ اَثِيْمٍ	**276**	अलल्ाह सद्द को मटिाता ह`और सदक़`को बढ़ाता हो और अलल्ाह कसिी काफरि, गन्हगार को पसंद नहीं करता।

277	नश्चिय ही, जो लोग ईमान लाए और नके काम कए, और नमाज़ कायम की और ज़कात दी, उनका इनाम उनक रब क पास ह। उनह कोई डर नहीं होगा और न व दखी होग।	اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ لَهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ
278	ऐ ईमान वालो! अलाह स डरो और जो कछ सद बाकी ह, उस छोड़ दो, अगर तम ईमान वालो म स हो।	يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَذَرُوْا مَا بَقِيَ مِنَ الرِّبٰوٓا اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ
279	फरि अगर तम ऐसा न करो, तो अलाह और उसक रसूल की तरफ स जग की खबर ल लो। और अगर तम तौबा करो, तो तमहारा असल माल तमहारा ह न तम जलम करो और न तम पर जलम होगा।	فَاِنْ لَّمْ تَفْعَلُوْا فَاْذَنُوْا بِحَرْبٍ مِّنَ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَاِنْ تُبْتُمْ فَلَكُمْ رُءُوْسُ اَمْوَالِكُمْ لَا تَظْلِمُوْنَ وَلَا تُظْلَمُوْنَ
280	और अगर (करज़दार) तगी म हो, तो उस कशादगी तक मोहलत दो। और अगर तम (करज़) माफ कर दो, तो यह तमहार लए बहेतर ह, अगर तम जानत हो।	وَاِنْ كَانَ ذُوْ عُسْرَةٍ فَنَظِرَةٌ اِلٰى مَيْسَرَةٍ وَاَنْ تَصَدَّقُوْا خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ
281	और उस दनि स डरो जब तम अलाह की ओर लौटाए जाओग, फरि हर शख़स को उसका पूरा बदला दयिा जाएगा जो उसन कमाया, और उन पर जलम नहीं होगा।	وَاتَّقُوْا يَوْمًا تُرْجَعُوْنَ فِيْهِ اِلَى اللّٰهِ ثُمَّ تُوَفّٰى كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ
282	ऐ ईमान वालो! जब तम आपस म एक मद्दत क लए करज़ का लने-दने करो, तो उस लखि लो। और कोई लखक तमहार बीच इंसाफ स लखि। और लखक को लखिन स इंकार नहीं करना चाहए, जसै कि अलाह न उस सखिाया। तो उस लखिना चाहए, और जसि पर करज़ ह, उस बयान करना चाहए, और उस अलाह स डरना चाहए, अपन रब, और उसम स कछ भी कम नहीं करना चाहए। और अगर वह जसि पर करज़ ह, नासमझ, कमज़ोर या बयान करन म असमरथ हो, तो उसका सरपरसत इंसाफ स बयान कर। और अपन मरदो म स दो गवाहो को गवाही क लए बलाओ। और अगर दो मरद न हो, तो एक मरद और दो औरत, जनिह तम गवाह क तौर पर पसंद करो, ताकि अगर एक भूल जाए, तो दूसरी उस याद दलाए। और गवाहो को, जब उनह बलाया जाए, इंकार नहीं करना चाहए। और छोटा हो या बड़ा, उसकी मद्दत तक लखिन म आलस न करो। यह अलाह क नज़दीक ज़यादा इंसाफ़ भरा ह, गवाही क लए ज़यादा मज़बूत ह, और इस बात क ज़यादा करीब ह कि तम शक म न पड़ो। सविाय इसक कि यह मौक की खरीद-फरोख़त हो जो तम आपस म करत हो, तो इसम कोई गनाह नहीं ह कि तम उस न लखि। और जब तम खरीद-फरोख़त करो, तो गवाह बनाओ। और न लखेक को नकसान पहुँचाया जाए और न गवाह को। और अगर तम ऐसा करो, तो यह तमहारी नाफरमानी होगी। और अलाह स डरो। और अलाह तमह सखिाता ह और अलाह हर चीज़ को जानन वाला ह।	يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا تَدَايَنْتُمْ بِدَيْنٍ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى فَاكْتُبُوْهُ وَلْيَكْتُبْ بَّيْنَكُمْ كَاتِبٌۢ بِالْعَدْلِ وَلَا يَاْبَ كَاتِبٌ اَنْ يَّكْتُبَ كَمَا عَلَّمَهُ اللّٰهُ فَلْيَكْتُبْ وَلْيُمْلِلِ الَّذِيْ عَلَيْهِ الْحَقُّ وَلْيَتَّقِ اللّٰهَ رَبَّهٗ وَلَا يَبْخَسْ مِنْهُ شَيْـًٔا فَاِنْ كَانَ الَّذِيْ عَلَيْهِ الْحَقُّ سَفِيْهًا اَوْ ضَعِيْفًا اَوْ لَا يَسْتَطِيْعُ اَنْ يُّمِلَّ هُوَ فَلْيُمْلِلْ وَلِيُّهٗ بِالْعَدْلِ وَاسْتَشْهِدُوْا شَهِيْدَيْنِ مِنْ رِّجَالِكُمْ فَاِنْ لَّمْ يَكُوْنَا رَجُلَيْنِ فَرَجُلٌ وَّامْرَاَتٰنِ مِمَّنْ تَرْضَوْنَ مِنَ الشُّهَدَاۤءِ اَنْ تَضِلَّ اِحْدٰىهُمَا فَتُذَكِّرَ اِحْدٰىهُمَا الْاُخْرٰى وَلَا يَاْبَ الشُّهَدَاۤءُ اِذَا مَا دُعُوْا وَلَا تَسْـَٔمُوْٓا اَنْ تَكْتُبُوْهُ صَغِيْرًا اَوْ كَبِيْرًا اِلٰٓى اَجَلِهٖ ذٰلِكُمْ اَقْسَطُ عِنْدَ اللّٰهِ وَاَقْوَمُ لِلشَّهَادَةِ وَاَدْنٰٓى اَلَّا تَرْتَابُوْٓا اِلَّآ اَنْ تَكُوْنَ تِجَارَةً حَاضِرَةً تُدِيْرُوْنَهَا بَيْنَكُمْ فَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ اَلَّا تَكْتُبُوْهَا وَاَشْهِدُوْٓا اِذَا تَبَايَعْتُمْ وَلَا يُضَاۤرَّ كَاتِبٌ وَّلَا شَهِيْدٌ وَاِنْ تَفْعَلُوْا فَاِنَّهٗ فُسُوْقٌۢ بِكُمْ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَيُعَلِّمُكُمُ اللّٰهُ وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ

وَاِنْ كُنْتُمْ عَلٰى سَفَرٍ وَّلَمْ تَجِدُوْا كَاتِبًا فَرِهٰنٌ مَّقْبُوْضَةٌ فَاِنْ اَمِنَ بَعْضُكُمْ بَعْضًا فَلْيُؤَدِّ الَّذِى اؤْتُمِنَ اَمَانَتَه وَلْيَتَّقِ اللّٰهَ رَبَّه وَلَا تَكْتُمُوا الشَّهَادَةَ وَمَنْ يَّكْتُمْهَا فَاِنَّه اٰثِمٌ قَلْبُه وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ عَلِيْمٌ	और अगर तमु सफर मे हो और कोई लखेक न मलि,े तो गरिवी रखी हई चीज़ ले लो। फरि अगर तमु मे से कोई दसूर पर भरोसा कर,े तो जसि पर भरोसा कयिा गया, उस चाहए कि वह अपनी अमानत अदा करे और अपन रेब, अलल़ाह स डरे और गवाही न छपिाओ। और जो कोई उस छपिाए, उसका दलि गनुहगार है और अलल़ाह तमुहार करम़ों को जानता है	**283**
لِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ وَاِنْ تُبْدُوْا مَا فِىْٓ اَنْفُسِكُمْ اَوْ تُخْفُوْهُ يُحَاسِبْكُمْ بِه اللّٰهُ فَيَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَاءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَاءُ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ	जो कछु आकाशों और धरती म है, वह अलल़ाह का है और अगर तमु अपन दलि की बात ज़ाहरि करो या छपिाओ, अलल़ाह तमुस उसका हसिाब लगेा। फरि वह जसि चाह, माफ कर दगेा, और जसि चाह, सजा दगेा। और अलल़ाह हर चीज़ पर कद़रत रखता है	**284**
اٰمَنَ الرَّسُوْلُ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِ مِنْ رَّبِّه وَالْمُؤْمِنُوْنَ كُلٌّ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَمَلٰٓئِكَتِه وَكُتُبِه وَرُسُلِه لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْ رُّسُلِه وَقَالُوْا سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا غُفْرَانَكَ رَبَّنَا وَاِلَيْكَ الْمَصِيْرُ	रसलू न उस पर ईमान लाया जो उसक रब की ओर स उस पर उतारा गया, और ईमान वालों न भी। हर एक न अलल़ाह, उसक फरशि़तों, उसकी कतिाबों और उसक रसलूों पर ईमान लाया। (व कहत ह,ै) 'हम उसक रसलूों क बीच कोई फरक़ नहीं करत।ो' और उनहोंन कहा, 'हमन सनुा और हमन इताअत की। (ऐ हमार रेब!) तरी माफी (माँगत ह)ै, और तरी ही ओर लौटना है'	**285**
لَا يُكَلِّفُ اللّٰهُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا لَهَا مَا كَسَبَتْ وَعَلَيْهَا مَا اكْتَسَبَتْ رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَآ اِنْ نَّسِيْنَآ اَوْ اَخْطَاْنَا رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْ عَلَيْنَآ اِصْرًا كَمَا حَمَلْتَه عَلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِنَا رَبَّنَا وَلَا تُحَمِّلْنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِه وَاعْفُ عَنَّا وَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا اَنْتَ مَوْلٰنَا فَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ	अलल़ाह कसिी को उसकी ताकत स ज़यादा ज़मि़मदेारी नहीं दते।ा उसक लएि वही ह जै ो उसन कमाया, और उसक खलिाफ वही ह जै ो उसन कयिा। ऐ हमार रेब! अगर हम भल जाए ँया गलती कर द,ं तो हम न पकड।ो ऐ हमार रेब! हम पर वसै ा बोझ न डाल जसै ा तनू हेमस पहल वालों पर डाला। ऐ हमार रेब! हम पर वह बोझ न डाल जसि उठान की हम म ताकत नहीं। और हम माफ कर, और हम बख़श द,ं और हम पर रहम कर। तू हमारा मौला ह,ै तो काफरि कौम क खलिाफ हमारी मदद कर।	**286**

छंदों की संख्या	آلِ عِمْرَان	مدنية
२००	अली इमरान - 3	मदनी

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अली इमरान (इमरान का परिवार)

1	अलफि लाम मीम।	الٓمّٓ
2	अल्लाह, उसके सिवा कोई इबादत के योग्य नहीं। वह सदा जीवित है, जो (अपने प्राणियों का) निरंतर संभाल करता है	اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّوْمُ
3	उसने तुम (मुहम्मद) पर सत्य के साथ किताब (कुरान) उतारी, जो पहले की किताबों को सत्य मानती है, और उसने तौरात और इंजील उतारी,	نَزَّلَ عَلَيْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ وَاَنْزَلَ التَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ
4	पहले, मानव के लिए मार्गदर्शन के रूप में, और उसने फुरकान उतारी। निश्चय ही, जो लोग अल्लाह की आयतों का इंकार करते है, उनके लिए कठोर सजा है अल्लाह सर्वशक्तिमान है और दंड देने वाला है	مِنْ قَبْلُ هُدًى لِّلنَّاسِ وَاَنْزَلَ الْفُرْقَانَ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ ذُو انْتِقَامٍ
5	अल्लाह के लिए धरती और आकाश में कुछ भी छुपा नहीं है	اِنَّ اللّٰهَ لَا يَخْفٰى عَلَيْهِ شَيْءٌ فِى الْاَرْضِ وَلَا فِى السَّمَاءِ
6	वही है जो तुम्हें गर्भ में जैसा चाहता है, वैसा आकार देता है उसके सिवा कोई इबादत के योग्य नहीं। वह सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञानी है	هُوَ الَّذِيْ يُصَوِّرُكُمْ فِى الْاَرْحَامِ كَيْفَ يَشَاءُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ
7	वही है जिसने तुम (मुहम्मद) पर किताब (कुरान) उतारी। इसमें कुछ आयतें मुहकमात हैं, जो किताब (कुरान) का आधार हैं, और कुछ मुतशाबिहात हैं जिनके दिलों में टेढ़ापन है, वे मुतशाबिहात का अनुसरण करते हैं, फितना पैदा करने और उसका तावील खोजने के लिए, जबकि उसका तावील कोई नहीं जानता सिवाय अल्लाह को और जिनके पास गहरा ज्ञान है, वे कहते हैं, 'हम उस पर ईमान लाए, यह सब हमारे रब की ओर से है।' और केवल बुद्धिमान लोग ही सबक ले सकते हैं।	هُوَ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ عَلَيْكَ الْكِتٰبَ مِنْهُ اٰيٰتٌ مُّحْكَمٰتٌ هُنَّ اُمُّ الْكِتٰبِ وَاُخَرُ مُتَشٰبِهٰتٌ فَاَمَّا الَّذِيْنَ فِىْ قُلُوْبِهِمْ زَيْغٌ فَيَتَّبِعُوْنَ مَا تَشَابَهَ مِنْهُ ابْتِغَاءَ الْفِتْنَةِ وَابْتِغَاءَ تَاْوِيْلِهٖ وَمَا يَعْلَمُ تَاْوِيْلَهٗٓ اِلَّا اللّٰهُ وَالرّٰسِخُوْنَ فِى الْعِلْمِ يَقُوْلُوْنَ اٰمَنَّا بِهٖ كُلٌّ مِّنْ عِنْدِ رَبِّنَا وَمَا يَذَّكَّرُ اِلَّآ اُولُوا الْاَلْبَابِ
8	(वे प्रार्थना करते हैं), 'हमारे रब, हमें मार्गदर्शन देने के बाद हमारे दिलों को भटकने न दे, और हमें अपनी ओर से रहमत प्रदान कर, निश्चय ही तू बहुत देने वाला है'	رَبَّنَا لَا تُزِغْ قُلُوْبَنَا بَعْدَ اِذْ هَدَيْتَنَا وَهَبْ لَنَا مِنْ لَّدُنْكَ رَحْمَةً اِنَّكَ اَنْتَ الْوَهَّابُ
9	'हमारे रब, तू ही वह है जो लोगों को उस दिन इकट्ठा करेगा, जिसमें कोई संदेह नहीं।' निश्चय ही, अल्लाह अपने वादे के खिलाफ नहीं जाता।	رَبَّنَآ اِنَّكَ جَامِعُ النَّاسِ لِيَوْمٍ لَّا رَيْبَ فِيْهِ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُخْلِفُ الْمِيْعَادَ

10	निश्चय ही, जिन लोगों ने कुफ़्र किया, उनके लिए उनकी संपत्ति और उनकी संतान (अल्लाह की सजा के सामने) कुछ भी काम नहीं आएंगी। और वही लोग नरक की आग का ईंधन बनेंगे।	إِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَنْ تُغْنِيَ عَنْهُمْ اَمْوَالُهُمْ وَلَآ اَوْلَادُهُمْ مِّنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا وَاُولٰٓئِكَ هُمْ وَقُوْدُ النَّارِ
11	(उनका हाल) फ़िरऔन के अनुयायियों और उनसे पहले के लोगों जैसा है। उन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया, तो अल्लाह ने उनके पापों के कारण उन्हें सजा दी। अल्लाह की सजा बहुत कठोर है।	كَدَأْبِ اٰلِ فِرْعَوْنَ وَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا فَاَخَذَهُمُ اللّٰهُ بِذُنُوْبِهِمْ وَاللّٰهُ شَدِيْدُ الْعِقَابِ
12	(मुहम्मद) काफ़िरों से कहो, 'तुम (निश्चय ही) पराजित होगे और जहन्नम की आग में ले जाए जाओगे। और वह सबसे ख़राब ठिकाना है।'	قُلْ لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا سَتُغْلَبُوْنَ وَتُحْشَرُوْنَ اِلٰى جَهَنَّمَ وَبِئْسَ الْمِهَادُ
13	निश्चय ही, तुम्हारे लिए दो गुटों में, जो आमने-सामने थे, एक निशानी थी। एक गुट अल्लाह के रास्ते में लड़ रहा था और दूसरा काफ़िरों का था, जो अपनी आँखों से देख रहे थे कि (मुसलमान) उनकी संख्या से दोगुने हैं। अल्लाह जिसे चाहता है, अपनी मदद से मजबूत करता है। निश्चय ही, इसमें उन लोगों के लिए सबक है जो (दिल की) आँखों से देखते हैं।	قَدْ كَانَ لَكُمْ اٰيَةٌ فِيْ فِئَتَيْنِ الْتَقَتَا فِئَةٌ تُقَاتِلُ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَاُخْرٰى كَافِرَةٌ يَّرَوْنَهُمْ مِّثْلَيْهِمْ رَأْيَ الْعَيْنِ وَاللّٰهُ يُؤَيِّدُ بِنَصْرِهٖ مَنْ يَّشَاۤءُ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَعِبْرَةً لِّاُولِي الْاَبْصَارِ
14	मनुष्यों की नजर में जो कुछ वांछित है, उसे सुंदर बनाया गया है, जैसे औरत, बच्चे, ढेरे सारा सोना और चांदी, चुनिंदा घोड़े, पशु और खेते। यह दुनिया के जीवन का सुख है, और अल्लाह के पास सबसे अच्छा ठिकाना है।	زُيِّنَ لِلنَّاسِ حُبُّ الشَّهَوٰتِ مِنَ النِّسَاۤءِ وَالْبَنِيْنَ وَالْقَنَاطِيْرِ الْمُقَنْطَرَةِ مِنَ الذَّهَبِ وَالْفِضَّةِ وَالْخَيْلِ الْمُسَوَّمَةِ وَالْاَنْعَامِ وَالْحَرْثِ ذٰلِكَ مَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَاللّٰهُ عِنْدَهٗ حُسْنُ الْمَاٰبِ
15	कहो, 'क्या मैं तुम्हें उससे बेहतर चीज की ख़बर दूँ?' जो लोग तकवा रखते हैं, उनके लिए उनके रब के पास ऐसी जन्नतें हैं, जिनके नीचे नदियाँ बहती हैं, वे उसमें हमेशा रहेंगे, और शुद्ध जोड़े और अल्लाह की प्रसन्नता। और अल्लाह अपने बन्दों को देखने वाला है।	قُلْ اَؤُنَبِّئُكُمْ بِخَيْرٍ مِّنْ ذٰلِكُمْ لِلَّذِيْنَ اتَّقَوْا عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا وَاَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ وَّرِضْوَانٌ مِّنَ اللّٰهِ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌۢ بِالْعِبَادِ
16	(वही) लोग जो प्रार्थना करते हैं, 'हमारे रब, हमने ईमान लाया, तो हमारे गुनाहों को माफ कर और हमें नरक की सजा से बचा।'	اَلَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَآ اِنَّنَآ اٰمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ
17	(और) जो लोग धैर्य रखते हैं, सत्यवादी हैं, आज्ञाकारी हैं, अपनी संपत्ति खर्च करते हैं, और फजर से पहले क्षमा माँगते हैं।	اَلصّٰبِرِيْنَ وَالصّٰدِقِيْنَ وَالْقٰنِتِيْنَ وَالْمُنْفِقِيْنَ وَالْمُسْتَغْفِرِيْنَ بِالْاَسْحَارِ
18	अल्लाह गवाही देता है कि उसके सिवा कोई इबादत के योग्य नहीं; (इसी तरह) फरिश्ते और ज्ञानी लोग, जो न्याय स्थापित करते हैं, (कहते हैं) कि उसके सिवा कोई इबादत के योग्य नहीं, वह सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञानी है।	شَهِدَ اللّٰهُ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ وَالْمَلٰٓئِكَةُ وَاُولُوا الْعِلْمِ قَاۤئِمًا بِالْقِسْطِ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ

19	निश्चय ही, अल्लाह के पास धर्म इस्लाम है। जिन लोगों को किताब दी गई थी, वे ज्ञान प्राप्त करने के बाद ही आपस में बंट गए, क्योंकि उनके बीच ईर्ष्या थी। जो कोई अल्लाह की आयतों का इंकार करता है, तो निश्चय ही, अल्लाह बहुत जल्द हिसाब करने वाला है।	إِنَّ الدِّيْنَ عِنْدَ اللهِ الْإِسْلَامُ وَمَا اخْتَلَفَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ اِلَّا مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَهُمُ الْعِلْمُ بَغْيًا بَيْنَهُمْ وَمَنْ يَّكْفُرْ بِاٰيٰتِ اللهِ فَاِنَّ اللهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ
20	फिर यदि वे तुमसे विवाद करें (मुहम्मद), तो कहो, 'मैंने और मेरे अनुयायियों ने अल्लाह के सामने समर्पण कर दिया।' और उन लोगों से, जिन्हें किताब दी गई थी और जो अनपढ़ हैं, कहो, 'क्या तुमने इस्लाम स्वीकार कर लिया?' यदि वे इस्लाम स्वीकार करते हैं, तो वे मार्गदर्शन प्राप्त कर चुके हैं, लेकिन यदि वे मुड़ जाते हैं, तो तुम्हारा कर्तव्य केवल (संदेश) पहुँचाना है और अल्लाह अपने बन्दों को देखने वाला है।	فَاِنْ حَاجُّوْكَ فَقُلْ اَسْلَمْتُ وَجْهِيَ لِلّٰهِ وَمَنِ اتَّبَعَنِ وَقُلْ لِّلَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ وَالْاُمِّيّٖنَ ءَاَسْلَمْتُمْ فَاِنْ اَسْلَمُوْا فَقَدِ اهْتَدَوْا وَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلٰغُ وَاللهُ بَصِيْرٌ بِالْعِبَادِ
21	निश्चय ही, जो लोग अल्लाह की आयतों का इंकार करते हैं और बिना हक नबियों को मारते हैं और उन लोगों को मारते हैं जो इंसाफ करने का आदेश देते हैं, उन्हें खुशखबरी दे दो, यानी कठोर सजा की।	اِنَّ الَّذِيْنَ يَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللهِ وَيَقْتُلُوْنَ النَّبِيّٖنَ بِغَيْرِ حَقٍّ وَّيَقْتُلُوْنَ الَّذِيْنَ يَأْمُرُوْنَ بِالْقِسْطِ مِنَ النَّاسِ فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ
22	वे वही लोग हैं जिनके कर्म दुनिया और आखिरत में व्यर्थ हो गए, और उनके लिए कोई सहायक नहीं है।	اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ وَمَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ
23	क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा, जिन्हें किताब का हिस्सा दिया गया था? उन्हें अल्लाह की किताब की ओर बुलाया गया ताकि वह उनके बीच फैसला करे। फिर उनमें से कुछ लोग मुड़ गए और (सत्य को) ठुकरा दिया।	اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ اُوْتُوْا نَصِيْبًا مِّنَ الْكِتٰبِ يُدْعَوْنَ اِلٰى كِتٰبِ اللهِ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ ثُمَّ يَتَوَلّٰى فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ وَهُمْ مُّعْرِضُوْنَ
24	ऐसा इसलिए है क्योंकि उन्होंने कहा, 'नरक की आग हमें कुछ ही दिनों के लिए छुएगी।' वे अपनी बनाई हुई बातों से अपने धर्म में धोखे में पड़ गए।	ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَالُوْا لَنْ تَمَسَّنَا النَّارُ اِلَّآ اَيَّامًا مَّعْدُوْدٰتٍ وَّغَرَّهُمْ فِيْ دِيْنِهِمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ
25	तो क्या होगा जब हम उन्हें उस दिन इकट्ठा करेंगे, जिसमें कोई संदेह नहीं, और प्रत्येक व्यक्ति को उसका पूरा बदला दिया जाएगा जो उसने किया, और उनका कोई नुकसान नहीं किया जाएगा?	فَكَيْفَ اِذَا جَمَعْنٰهُمْ لِيَوْمٍ لَّا رَيْبَ فِيْهِ وَوُفِّيَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ
26	कहो (मुहम्मद), 'ऐ मेरे रब, सत्ता का मालिक, तू जिसे चाहे सत्ता देता है, और जिससे चाहे सत्ता छीन लेता है। तू जिसे चाहे इज़्ज़त देता है और जिसे चाहे अपमानित करता है। तेरे हाथ में सारी भलाई है। निश्चय ही, तू हर चीज पर कुदरत रखता है।	قُلِ اللّٰهُمَّ مٰلِكَ الْمُلْكِ تُؤْتِي الْمُلْكَ مَنْ تَشَاءُ وَتَنْزِعُ الْمُلْكَ مِمَّنْ تَشَاءُ وَتُعِزُّ مَنْ تَشَاءُ وَتُذِلُّ مَنْ تَشَاءُ بِيَدِكَ الْخَيْرُ اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ
27	तू रात को दिन में प्रवेश कराता है और दिन को रात में प्रवेश कराता है। और तू जीवित को मृत से निकालता है, और मृत को जीवित से निकालता है। और तू जिसे चाहे बिना हिसाब के रिज़क देता है।'	تُوْلِجُ الَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَتُوْلِجُ النَّهَارَ فِي الَّيْلِ وَتُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَتُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَتَرْزُقُ مَنْ تَشَاءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ

لَا يَتَّخِذِ الْمُؤْمِنُوْنَ الْكٰفِرِيْنَ اَوْلِيَاۤءَ مِنْ دُوْنِ الْمُؤْمِنِيْنَ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ فَلَيْسَ مِنَ اللّٰهِ فِيْ شَيْءٍ اِلَّآ اَنْ تَتَّقُوْا مِنْهُمْ تُقٰىةً وَيُحَذِّرُكُمُ اللّٰهُ نَفْسَه وَاِلَى اللّٰهِ الْمَصِيْرُ	मोमनिों को अपन गरै-मजहब वालों को वशि़ासपात्र दोसत नहीं बनाना चाहिए, कयोंकि व तमुह नकुसान पहुँचान म कोई कसर नहीं छोड़त। व तमुहारी बरबादी चाहत हैं उनकी नफरत उनक मुँह स साफ झलकती ह, और जो उनक दिलों म छपिा ह, वह और भी बरु ह। हमन तमुहार लिए आयत सपष्ट कर दी ह, यदि तमु समझत हो।	**28**
قُلْ اِنْ تُخْفُوْا مَا فِيْ صُدُوْرِكُمْ اَوْ تُبْدُوْهُ يَعْلَمْهُ اللّٰهُ وَيَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ	कहो, 'यदि तमु अपन दिल म जो ह उस छपिाओ या परकट करो, अलल़ाह उस जानता ह।' वह जानता ह जो आकाश म ह और जो धरती पर ह। अलल़ाह हर चीज पर कदुरत रखता ह।	**29**
يَوْمَ تَجِدُ كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ مِنْ خَيْرٍ مُّحْضَرًا وَمَا عَمِلَتْ مِنْ سُوْۤءٍ تَوَدُّ لَوْ اَنَّ بَيْنَهَا وَبَيْنَه اَمَدًا بَعِيْدًا وَيُحَذِّرُكُمُ اللّٰهُ نَفْسَه وَاللّٰهُ رَءُوْفٌ بِالْعِبَادِ	(याद रखो) उस दनि को जब परतयके वयकति को उसकी की गई भलाई सामन लाई जाएगी, और उसकी की गई बरुाई भी। वह चाहगेा कि काश उस दनि और उसक बीच लंबा फासला होता। और अलल़ाह तमुह अपनी (सजा) स सावधान करता ह। अलल़ाह अपन बनदों क परति बहत दयाल ह।	**30**
قُلْ اِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّوْنَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُوْنِيْ يُحْبِبْكُمُ اللّٰهُ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ	कहो (महममद), 'यदि तमु अलल़ाह स महबबत करत हो, तो मरेा अनसुरण करो, ताकि अलल़ाह तमुस महबबत कर और तमुहार गनुाहों को माफ कर दे।' अलल़ाह बहत कषमाशील, बहत दयाल ह।	**31**
قُلْ اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْكٰفِرِيْنَ	कहो (महममद), 'अलल़ाह और रसलू की आजञा मानो।' यदि व मडु जात ह, तो जान लो कि अलल़ाह काफरिों को पसंद नहीं करता।	**32**
اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰۤى اٰدَمَ وَنُوْحًا وَّاٰلَ اِبْرٰهِيْمَ وَاٰلَ عِمْرٰنَ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ	नशि़चय ही, अलल़ाह न आदम, नहू, इबराहीम क खानदान और इमरान क खानदान को सार जहान पर चन लयिा,	**33**
ذُرِّيَّةً بَعْضُهَا مِنْ بَعْضٍ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ	एक-दसूर की संतान क रप म। और अलल़ाह सब कछ सनन वाला, जानन वाला ह।	**34**
اِذْ قَالَتِ امْرَاَتُ عِمْرٰنَ رَبِّ اِنِّيْ نَذَرْتُ لَكَ مَا فِيْ بَطْنِيْ مُحَرَّرًا فَتَقَبَّلْ مِنِّيْ اِنَّكَ اَنْتَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ	(याद करो) जब इमरान की पतनी न कहा, 'मरे रब, मनै जो मरे गरभ म ह उस तरे लिए नजर कर दयिा, पूरी तरह (तरी इबादत क लिए) मकुत। तो इस मझुस कबलू कर। नशि़चय ही, तू सब कछ सनन वाला, जानन वाला ह।'	**35**
فَلَمَّا وَضَعَتْهَا قَالَتْ رَبِّ اِنِّيْ وَضَعْتُهَاۤ اُنْثٰى وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا وَضَعَتْ وَلَيْسَ الذَّكَرُ كَالْاُنْثٰى وَاِنِّيْ سَمَّيْتُهَا مَرْيَمَ وَاِنِّيْۤ اُعِيْذُهَا بِكَ وَذُرِّيَّتَهَا مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ	जब उसन उस जनम दयिा, तो उसन कहा, 'मरे रब, मनै एक लड़की को जनम दयिा ह।' और अलल़ाह अचछी तरह जानता था कि उसन कया जनम दयिा, और नर बचचा वसैा नहीं ह जसैा मादा बचचा। 'और मनै उसका नाम मरयम रखा, और म उसकी और उसकी संतान की शरण माँगता हूँ तझुस शैतान क (परभाव) स।'	**36**

فَتَقَبَّلَهَا رَبُّهَا بِقَبُوْلٍ حَسَنٍ وَّاَنْۢبَتَهَا نَبَاتًا حَسَنًا وَّكَفَّلَهَا زَكَرِيَّا ۗ كُلَّمَا دَخَلَ عَلَيْهَا زَكَرِيَّا الْمِحْرَابَ وَجَدَ عِنْدَهَا رِزْقًا ۚ قَالَ يٰمَرْيَمُ اَنّٰى لَكِ هٰذَا ۗ قَالَتْ هُوَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ۗ اِنَّ اللّٰهَ يَرْزُقُ مَنْ يَّشَاۤءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ	**37**	तो उसक॓रब न॓उस॓अच्छी तरह कबूल कयि, और उस॓अच्छी तरह बढ़ाया और उसकी दे॓खभाल की जमि़्मेदारी ज़क॓रयि को सौपी। हर बार जब ज़क॓रयि उसक॓पास महिराब (इबादत का ख़ास कमरा) म॓आता, उस॓उसक॓पास खाना पाता। उसन॓कहा, 'ऐ मरयम! यह तमुह॓कहा॓स॓मलि?' उसन॓जवाब दयि, 'यह अल़्लाह की ओर स॓है॑' नशि़्चय ही, अल़्लाह जसि॓चाहता ह॓, बनि हसिाब क॓रेजिक दे॓ता है॑'
هُنَالِكَ دَعَا زَكَرِيَّا رَبَّهٗ ۚ قَالَ رَبِّ هَبْ لِيْ مِنْ لَّدُنْكَ ذُرِّيَّةً طَيِّبَةً ۚ اِنَّكَ سَمِيْعُ الدُّعَاۤءِ	**38**	वहा॓ज़क॓रयि न॓अपन॓रेब स॓दुआ की। उसन॓कहा, 'मरे॓रेब, मुझ॓अपनी ओर स॓अच्छी संतान द॓, नशि़्चय ही त॓दुआ सनु॓न॓वाला है॑'
فَنَادَتْهُ الْمَلٰٓئِكَةُ وَهُوَ قَاۤىِٕمٌ يُّصَلِّيْ فِي الْمِحْرَابِ اَنَّ اللّٰهَ يُبَشِّرُكَ بِيَحْيٰى مُصَدِّقًۢا بِكَلِمَةٍ مِّنَ اللّٰهِ وَسَيِّدًا وَّحَصُوْرًا وَّنَبِيًّا مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ	**39**	फरि फरशि़्तों॓न॓उस॓पुकारा, जब वह महिराब म॓नमाज़॓पढ़॓रहा था, 'अल़्लाह तमुह॓याह़्या (क॓जनम़्) की ख़ुशख़बरी दे॓ता ह॓, जो अल़्लाह क॓एक कलमि॓(फरमान) को सत़्य मानगे॓, एक अगआ॓ होगा, (हवस स॓) संयम रखन॓वाला और नके लोगों॓म॓स॓एक नबी होगा।'
قَالَ رَبِّ اَنّٰى يَكُوْنُ لِيْ غُلٰمٌ وَّقَدْ بَلَغَنِيَ الْكِبَرُ وَامْرَاَتِيْ عَاقِرٌ ۗ قَالَ كَذٰلِكَ اللّٰهُ يَفْعَلُ مَا يَشَاۤءُ	**40**	उसन॓(ज़क॓रयि न॓) कहा, 'मरे॓रब, मरे॓लए बचि़्चा कसै॓हो सकता ह॓, जबकि म॓है॑बहत़ बढ़ा हो गया हू॑और मरी॓पत़्नी बाझ॑ ह॓?' उसन॓(अल़्लाह न॓) कहा, 'ऐसा ही ह॓, अल़्लाह जो चाहता ह॓, वही करता है॑'
قَالَ رَبِّ اجْعَلْ لِّيْٓ اٰيَةً ۗ قَالَ اٰيَتُكَ اَلَّا تُكَلِّمَ النَّاسَ ثَلٰثَةَ اَيَّامٍ اِلَّا رَمْزًا ۗ وَاذْكُرْ رَّبَّكَ كَثِيْرًا وَّسَبِّحْ بِالْعَشِيِّ وَالْاِبْكَارِ	**41**	उसन॓(ज़क॓रयि न॓) कहा, 'मरे॓रब, मरे॓लए एक नशिानी द॓' अल़्लाह न॓कहा, 'तरे॓लए नशिानी यह ह॓कि त॓तीन दनि तक लोगों॓स॓बात नहीं॑करगे॓, सवि़ाय इशारों॓को और अपन॓रेब का नाम बहत़ याद कर, और सबुह-शाम उसकी तस़्बीह (पऱ़शंसा) कर।'
وَاِذْ قَالَتِ الْمَلٰٓئِكَةُ يٰمَرْيَمُ اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰىكِ وَطَهَّرَكِ وَاصْطَفٰىكِ عَلٰى نِسَاۤءِ الْعٰلَمِيْنَ	**42**	और (याद करो) जब फरशि़्तों॓न॓कहा, 'ऐ मरयम! नशि़्चय ही, अल़्लाह न॓तमुह॓चना, तमुह॓शुद्ध कयि, और उस समय क॓सार॓जहान की औरतों॓स॓ऊपर रखा।'
يٰمَرْيَمُ اقْنُتِيْ لِرَبِّكِ وَاسْجُدِيْ وَارْكَعِيْ مَعَ الرّٰكِعِيْنَ	**43**	ऐ मरयम! अपन॓रेब की आज़ा॓मान, सजदा कर और उन लोगों॓क॓साथ रकुअ़ कर जो रकुअ़ करत॓है॑'
ذٰلِكَ مِنْ اَنْۢبَاۤءِ الْغَيْبِ نُوْحِيْهِ اِلَيْكَ ۗ وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ اِذْ يُلْقُوْنَ اَقْلَامَهُمْ اَيُّهُمْ يَكْفُلُ مَرْيَمَ ۖ وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ اِذْ يَخْتَصِمُوْنَ	**44**	यह उन गबै की ख़बरों॓म॓स॓है॑, जो हम तमु (मह़म्मद) पर वह़्य करत॓है॑, जबकि त॓उनक॓साथ नहीं॑था जब व॓अपनी कलमों॓को फके॓रह॓थ॓(लॉट डाल रह॓थे) कि॓उनम॓स॓कौन मरयम की दे॓खभाल करगे॓। और त॓उनक॓साथ नहीं॑था जब व॓आपस म॓झगड़॓रह॓थे।
اِذْ قَالَتِ الْمَلٰٓئِكَةُ يٰمَرْيَمُ اِنَّ اللّٰهَ يُبَشِّرُكِ بِكَلِمَةٍ مِّنْهُ اسْمُهُ الْمَسِيْحُ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ وَجِيْهًا فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ وَمِنَ الْمُقَرَّبِيْنَ	**45**	(याद करो), जब फरशि़्तों॓न॓कहा, 'ऐ मरयम! नशि़्चय ही, अल़्लाह तमुह॓अपन॓एक कलमि॓(फरमान) की ख़ुशख़बरी दे॓ता ह॓, जसिका नाम अल-मसीह ईसा बनि मरयम होगा, जो दनु॓यि और आख़रित म॓सम़्मानति होगा, और (अल़्लाह क॓) नजदीक वालों॓म॓स॓होगा,

وَيُكَلِّمُ النَّاسَ فِي الْمَهْدِ وَكَهْلًا وَّمِنَ الصّٰلِحِيْنَ	और वह लोगों स`े(बचपन म) पालन`े म`ैऔर बड़`ेहोन`ेपर बात करेगा, और वह नके लोगों म`ैस`ेहोगा।'	**46**
قَالَتْ رَبِّ اَنّٰى يَكُوْنُ لِيْ وَلَدٌ وَّلَمْ يَمْسَسْنِيْ بَشَرٌ قَالَ كَذٰلِكِ اللّٰهُ يَخْلُقُ مَا يَشَاۤءُ اِذَا قَضٰٓى اَمْرًا فَاِنَّمَا يَقُوْلُ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ	उसन`े(मरयम न) कहा, 'मरे`ेरब, मरे`ेलिए बचचा कसै`ेहोगा, जबकि मझु`ेकिसी पर्षु न`ेनहीं छआ?' उसन`े(अल्लाह न) कहा, 'ऐसा ही ह,ै अल्लाह जो चाहता ह,ै उस`ेपदैा करता ह।ै जब वह किसी चीज का फसैला करता ह,ै तो बस कहता ह,ै हो जा!" तो वह हो जाता ह।ै"'	**47**
وَيُعَلِّمُهُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَالتَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ	और वह (अल्लाह) उस`े(ईसा को) कतिाब, हकिमत, तौरात और इंजील सखिाएगा।	**48**
وَرَسُوْلًا اِلٰى بَنِيْٓ اِسْرَاۤءِيْلَ اَنِّيْ قَدْ جِئْتُكُمْ بِاٰيَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ اَنِّيْٓ اَخْلُقُ لَكُمْ مِّنَ الطِّيْنِ كَهَيْـَٔةِ الطَّيْرِ فَاَنْفُخُ فِيْهِ فَيَكُوْنُ طَيْرًا بِاِذْنِ اللّٰهِ وَاُبْرِئُ الْاَكْمَهَ وَالْاَبْرَصَ وَاُحْيِ الْمَوْتٰى بِاِذْنِ اللّٰهِ وَاُنَبِّئُكُمْ بِمَا تَاْكُلُوْنَ وَمَا تَدَّخِرُوْنَ فِيْ بُيُوْتِكُمْ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ	और (वह उस) बनी इसराइल क`ेलिए रसलू बनाएगा (वह कहगेा), 'म`ैतमु्हार`ेपास तमु्हार`ेरब की नशिानी लकेर आया ह,ूँ कि म`ैतमु्हार`ेलिए मटि्टी स`ेपक्षी जसैी आकृति बनाता ह,ूँ फरि उसम`ेफकूँ मारता ह,ूँ तो वह अल्लाह की इजाज़त स`े पक्षी बन जाता ह।ै और म`ैजन्म स`ेअध`ेऔर कोढ़ी को ठीक करता ह,ूँ और म`ैअल्लाह की इजाज़त स`ेमृतकों को जीवति करता ह,ूँ और म`ैतमु्ह`ेबताता ह,ूँ कि तमु क्या खात`ेहो और क्या अपन`ेघरों म`ेजमा करत`ेहो। नशि्चय ही, इसम`ैतमु्हार`े लिए (मरे`ेरसलू होन`ेकी) नशिानी ह,ै यदि तमु ईमान लान`ेवाल`े हो।'	**49**
وَمُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيَّ مِنَ التَّوْرٰىةِ وَلِاُحِلَّ لَكُمْ بَعْضَ الَّذِيْ حُرِّمَ عَلَيْكُمْ وَجِئْتُكُمْ بِاٰيَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ	और म`ैउस तौरात को सत्य मानता ह,ूँजो मझु`ेस`ेपहल`ेआई थी, और ताकि म`ैतमु्हार`ेलिए कछु ऐसी चीजों को हलाल कर,ूँजो तमु्हार`ेलिए हराम की गई थीं। और म`ैतमु्हार`ेपास तमु्हार`ेरब की नशिानी लकेर आया ह,ूँ इसलिए अल्लाह स`ेडरो और मरी आज्ञा मानो।	**50**
اِنَّ اللّٰهَ رَبِّيْ وَرَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْهُ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ	नशि्चय ही, अल्लाह मरेा रब और तमु्हारा रब ह,ै इसलिए उसी की इबादत करो। यही सीधा रास्ता ह।ै'	**51**
فَلَمَّآ اَحَسَّ عِيْسٰى مِنْهُمُ الْكُفْرَ قَالَ مَنْ اَنْصَارِيْٓ اِلَى اللّٰهِ قَالَ الْحَوَارِيُّوْنَ نَحْنُ اَنْصَارُ اللّٰهِ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَاشْهَدْ بِاَنَّا مُسْلِمُوْنَ	जब ईसा न`ेउनकी (बनी इसराइल की) नाफरमानी महसूस की, तो उसन`ेकहा, 'कौन (अल्लाह क`ेदीन को) कायम करन`ेक`े लिए मरेा साथ दगेा?' हवारयियनु (उसक`ेखास साथयिों) न`े जवाब दयिा, 'हम अल्लाह क`ेदीन क`ेसहायक ह।ैं हम अल्लाह पर ईमान लाए, और गवाही दो कि हम मसु्लमान ह।ैं'	**52**
رَبَّنَآ اٰمَنَّا بِمَآ اَنْزَلْتَ وَاتَّبَعْنَا الرَّسُوْلَ فَاكْتُبْنَا مَعَ الشّٰهِدِيْنَ	'हमार`ेरब, हमन`ेउस पर ईमान लाया जो तनू`ेउतारा और हमन`े रसलू का अनसुरण कयिा, इसलिए हम`ेउन लोगों क`ेसाथ लखि ल`ेजो गवाही दते`ेहैं।'	**53**
وَمَكَرُوْا وَمَكَرَ اللّٰهُ وَاللّٰهُ خَيْرُ الْمٰكِرِيْنَ	और उन्होंन`े(काफरिों न) चाल चली, तो अल्लाह न`ेभी चाल चली। और अल्लाह सबस`ेअच्छा चाल चलन`ेवाला ह।ै	**54**

55	(याद करो), जब अल्लाह ने कहा, 'ऐ ईसा! मैं तुम्हें (दुनिया से) उठा लूँगा और तुम्हें अपनी ओर बुला लूँगा, और तुम्हें काफिरों से शुद्ध करूँगा, और उन लोगों को जो तेरे पीछे आएँगे, कियामत के दिन तक काफिरों से ऊपर रखूँगा। फिर तुम सब की वापसी मेरी ओर होगी, और मैं तुम्हारे बीच उसका फैसला करूँगा जिसमें तुम मतभेद करते थे।'	اِذْ قَالَ اللّٰهُ يٰعِيْسٰٓى اِنِّيْ مُتَوَفِّيْكَ وَرَافِعُكَ اِلَيَّ وَمُطَهِّرُكَ مِنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَجَاعِلُ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْكَ فَوْقَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ ثُمَّ اِلَيَّ مَرْجِعُكُمْ فَاَحْكُمُ بَيْنَكُمْ فِيْمَا كُنْتُمْ فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ
56	रहे वे जो काफिर हुए, मैं उन्हें दुनिया और आख़िरत में कठोर सजा दूँगा, और उनका कोई सहायक नहीं होगा।	فَاَمَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَاُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا شَدِيْدًا فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ وَمَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ
57	और जो लोग ईमान लाए और नेक कार्य किए, उन्हें उनका पूरा बदला दिया जाएगा। और अल्लाह ज़ालिमों को पसंद नहीं करता।	وَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَيُوَفِّيْهِمْ اُجُوْرَهُمْ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ الظّٰلِمِيْنَ
58	यह हम तुम (मुहम्मद) पर आयतों और हिकमत भरी नसीहत के रूप में पढ़ते हैं।	ذٰلِكَ نَتْلُوْهُ عَلَيْكَ مِنَ الْاٰيٰتِ وَالذِّكْرِ الْحَكِيْمِ
59	निश्चय ही, अल्लाह के लिए ईसा की मिसाल आदम की तरह है। उसने उसे मिट्टी से बनाया, फिर उससे कहा, 'हो जा!' तो वह हो गया।	اِنَّ مَثَلَ عِيْسٰى عِنْدَ اللّٰهِ كَمَثَلِ اٰدَمَ خَلَقَه مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ قَالَ لَه كُنْ فَيَكُوْنُ
60	यह सत्य तेरे रब की ओर से है, इसलिए तू उन लोगों में से न हो जो संदेह करते हैं।	اَلْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ فَلَا تَكُنْ مِّنَ الْمُمْتَرِيْنَ
61	जो कोई इस मामले में तुझसे विवाद करे, जबकि तुझे ज्ञान प्राप्त हो चुका है, तो कह (मुहम्मद), 'आओ, हम अपने बेटों और तुम्हारे बेटों को, अपनी औरतों और तुम्हारी औरतों को, और हम खुद और तुम्हें बुलाएँ, फिर हम मुबाहला करें ताकि अल्लाह की लानत झूठ बोलने वालों पर पड़े।'	فَمَنْ حَاجَّكَ فِيْهِ مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَكَ مِنَ الْعِلْمِ فَقُلْ تَعَالَوْا نَدْعُ اَبْنَاءَنَا وَاَبْنَاءَكُمْ وَنِسَاءَنَا وَنِسَاءَكُمْ وَاَنْفُسَنَا وَاَنْفُسَكُمْ ثُمَّ نَبْتَهِلْ فَنَجْعَلْ لَّعْنَتَ اللّٰهِ عَلَى الْكٰذِبِيْنَ
62	निश्चय ही, यह सच्ची कहानी है। अल्लाह के सिवा कोई इबादत के योग्य नहीं, और निश्चय ही, अल्लाह सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञानी है।	اِنَّ هٰذَا لَهُوَ الْقَصَصُ الْحَقُّ وَمَا مِنْ اِلٰهٍ اِلَّا اللّٰهُ وَاِنَّ اللّٰهَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ
63	फिर यदि वे मुड़ जाते हैं, तो (जान लो) कि अल्लाह उन लोगों को अच्छी तरह जानता है जो फसाद करते हैं।	فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ بِالْمُفْسِدِيْنَ
64	कहो (मुहम्मद), 'ऐ अहले किताब! आओ, हम एक ऐसी बात की ओर बढ़ें जो हमारे और तुम्हारे बीच समान हो, कि हम अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न करें और उसके साथ किसी को शरीक न करें, और न हम एक-दूसरे को अल्लाह के सिवा रब बनाएँ।' यदि वे मुड़ जाते हैं, तो कहो, 'गवाही दो, कि हम मुसलमान हैं।'	قُلْ يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ تَعَالَوْا اِلٰى كَلِمَةٍ سَوَاءٍ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ اَلَّا نَعْبُدَ اِلَّا اللّٰهَ وَلَا نُشْرِكَ بِه شَيْـًٔا وَّلَا يَتَّخِذَ بَعْضُنَا بَعْضًا اَرْبَابًا مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَقُوْلُوا اشْهَدُوْا بِاَنَّا مُسْلِمُوْنَ

65	ऐ अहल॰ किताब! तुम इब्राहीम क॰ बार॰ मे॰ क्यों॰ ववाद करत॰ हो, जबकि तौरात और इंजील उसक॰ बाद उतारी गई थीं? क्या तुम समझत॰ नहीं?	يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تُحَاۤجُّوْنَ فِيْٓ اِبْرٰهِيْمَ وَمَآ اُنْزِلَتِ التَّوْرٰىةُ وَالْاِنْجِيْلُ اِلَّا مِنْۢ بَعْدِهٖ ۗاَفَلَا تَعْقِلُوْنَ
66	ऐसा ही ह॰ तुम्हारा हाल! तुम उस बार॰ मे॰ ववाद करत॰ हो जसिका तुम्हे॰ जऱ्ञान ह॰, लकेनि उस बार॰ मे॰ भी क्यों॰ ववाद करत॰ हो जसिका तुम्हे॰ जऱ्ञान नहीं? अल्लाह जानता ह॰ और तुम नहीं जानत॰।	هٰٓاَنْتُمْ هٰٓؤُلَاۤءِ حَاجَجْتُمْ فِيْمَا لَكُمْ بِهٖ عِلْمٌ فَلِمَ تُحَاۤجُّوْنَ فِيْمَا لَيْسَ لَكُمْ بِهٖ عِلْمٌ ۗوَاللّٰهُ يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ
67	इब्राहीम न यहद्दी था और न नसऱ्ञानी, बल्कि वह एक सीधा-सादा मुसलमान था, और वह मुशऱ्ञिकों॰ मे॰ से॰ नहीं था।	مَا كَانَ اِبْرٰهِيْمُ يَهُوْدِيًّا وَّلَا نَصْرَانِيًّا وَّلٰكِنْ كَانَ حَنِيْفًا مُّسْلِمًا ۗوَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ
68	इब्राहीम क॰ सबस॰ करीब व॰ लोग ह॰ जो उसका अनुसरण करत॰ ह॰, और यह नबी (मुहम्मद), और जो लोग ईमान लाए। अल्लाह ईमान वालों॰ का संरक्षक ह॰	اِنَّ اَوْلَى النَّاسِ بِاِبْرٰهِيْمَ لَلَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُ وَهٰذَا النَّبِيُّ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۗوَاللّٰهُ وَلِيُّ الْمُؤْمِنِيْنَ
69	अहल॰ किताब म॰ से॰ कुछ लोग चाहत॰ ह॰ कि तुम्हे॰ गुमराह करी लकेनि (वास्तव मे॰) व॰ खुद को ही गुमराह करत॰ ह॰, और उन्हे॰ इसका अहसास नहीं होता।	وَدَّتْ طَّاۤىِٕفَةٌ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ لَوْ يُضِلُّوْنَكُمْ ۗوَمَا يُضِلُّوْنَ اِلَّآ اَنْفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُوْنَ
70	ऐ अहल॰ किताब! तुम अल्लाह की आयतों॰ का इंकार क्यों॰ करत॰ हो, जबकि तुम (उनक॰ सत्य) को जानत॰ हो?	يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَاَنْتُمْ تَشْهَدُوْنَ
71	ऐ अहल॰ किताब! तुम सत्य को असत्य क॰ साथ क्यों॰ मलित॰ हो, और सत्य को छपित॰ हो, जबकि तुम जानत॰ हो?	يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تَلْبِسُوْنَ الْحَقَّ بِالْبَاطِلِ وَتَكْتُمُوْنَ الْحَقَّ وَاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ
72	और अहल॰ किताब म॰ से॰ कुछ लोग कहत॰ ह॰, 'जो किताब मोमनिों॰ पर उतारी गई ह॰, उस पर सुबह को ईमान लाओ और शाम को उसका इंकार कर दो, शायद व॰ (ईमान स॰) फरि जाएँ'	وَقَالَتْ طَّاۤىِٕفَةٌ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ اٰمِنُوْا بِالَّذِيْٓ اُنْزِلَ عَلَى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَجْهَ النَّهَارِ وَاكْفُرُوْٓا اٰخِرَهٗ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ
73	और (कहत॰ ह॰), 'कसिी पर ईमान न लाओ, सवाय उसक॰ जो तुम्हार॰ मजहब का हो।' कहो (मुहम्मद), 'मार्गदर्शन तो अल्लाह का मार्गदर्शन ह॰' (और व॰ कहत॰ ह॰), 'यह न मानो कि कसिी को वसैा ही (वह्य) दयिा जाएगा जसैा तुम्हे॰ दयिा गया, या कि व॰ तुम्हार॰ रब क॰ सामन॰ तुम्स॰ बहस करेंगे।' कहो, 'करम तो अल्लाह क॰ हाथ म॰ ह॰, वह जसि॰ चाहता ह॰, दतेा ह॰ और अल्लाह बहुत वसिृत (करम वाला), सर्वज्ञानी ह॰'	وَلَا تُؤْمِنُوْٓا اِلَّا لِمَنْ تَبِعَ دِيْنَكُمْ ۗقُلْ اِنَّ الْهُدٰى هُدَى اللّٰهِ ۙاَنْ يُّؤْتٰٓى اَحَدٌ مِّثْلَ مَآ اُوْتِيْتُمْ اَوْ يُحَاۤجُّوْكُمْ عِنْدَ رَبِّكُمْ ۗقُلْ اِنَّ الْفَضْلَ بِيَدِ اللّٰهِ ۚيُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَاۤءُ ۗوَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ
74	वह अपनी रहमत जसि॰ चाहता ह॰, दतेा ह॰ और अल्लाह बहुत बड़ी कृपा का मालकि ह॰	يَخْتَصُّ بِرَحْمَتِهٖ مَنْ يَّشَاۤءُ ۗوَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ

وَمِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ مَنْ اِنْ تَأْمَنْهُ بِقِنْطَارٍ يُّؤَدِّهٖٓ اِلَيْكَ وَمِنْهُمْ مَّنْ اِنْ تَأْمَنْهُ بِدِيْنَارٍ لَّا يُؤَدِّهٖٓ اِلَيْكَ اِلَّا مَا دُمْتَ عَلَيْهِ قَآئِمًا ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَالُوْا لَيْسَ عَلَيْنَا فِى الْاُمِّيّٖنَ سَبِيْلٌ وَيَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ	और अहल`किताब म`कछु ऐस`है`कि यदि तमु उनह`बहतु सारी सपत़ा सौप दो, तो व`उस`तमुह`लौटा दगे। लकेनि उनम`स`कछु ऐस`भी ह`कि यदि तमु उनह`एक दीनार भी सौप दो, तो व`उस`तमुह`नही लौटाएँगे, जब तक कि तमु बार-बार माँगत`न रहो। ऐसा इसलिए ह`क़्योंकि व`कहत`ह,ै 'अनपढ़ लोगो क`खलिाफ हम`कोई गनुाह नही।' व`जानबझूकर अल़लाह क`खलिाफ झठू बोलत`ह।ै	**75**
بَلٰى مَنْ اَوْفٰى بِعَهْدِهٖ وَاتَّقٰى فَاِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِيْنَ	वास़तव म,ै जो कोई अपन`वाद`को पूरा करता ह`ैऔर तकवा रखता ह,ै तो नशि़चय ही, अल़लाह तकवा रखन`वालो को पसंद करता ह।ै	**76**
اِنَّ الَّذِيْنَ يَشْتَرُوْنَ بِعَهْدِ اللّٰهِ وَاَيْمَانِهِمْ ثَمَنًا قَلِيْلًا اُولٰٓئِكَ لَا خَلَاقَ لَهُمْ فِى الْاٰخِرَةِ وَلَا يُكَلِّمُهُمُ اللّٰهُ وَلَا يَنْظُرُ اِلَيْهِمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَلَا يُزَكِّيْهِمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ	नशि़चय ही, जो लोग अल़लाह क`वाद`और अपनी कसमो को ससत़`दामो म`बचेत`ह,ै उनक`लिए आख़रित म`कोई हसि़सा नही। अल़लाह न तो उनस`बात करगेा, न कयिामत क`दनि उनकी ओर दख़ेगेा, और न उनह`शदु्ध करगेा। उनक`लिए कठोर सजा ह।ै	**77**
وَاِنَّ مِنْهُمْ لَفَرِيْقًا يَّلْوٗنَ اَلْسِنَتَهُمْ بِالْكِتٰبِ لِتَحْسَبُوْهُ مِنَ الْكِتٰبِ وَمَا هُوَ مِنَ الْكِتٰبِ وَيَقُوْلُوْنَ هُوَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ وَمَا هُوَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ وَيَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ	और नशि़चय ही, उनम`स`कछु लोग ऐस`ह`ैजो कताब पढ़त`समय अपनी जीभ को मोड़त`ह,ै ताकि तमु समझो कि (जो व`पढ़त`ह)ै वह कताब का हसि़सा ह,ै जबकि वह कताब का हसि़सा नही ह,ै और व`कहत`ह,ै 'यह अल़लाह की ओर स`ह,ै जबकि वह अल़लाह की ओर स`नही ह।ै व`जानबझूकर अल़लाह क`खलिाफ झठू बोलत`ह।ै	**78**
مَا كَانَ لِبَشَرٍ اَنْ يُّؤْتِيَهُ اللّٰهُ الْكِتٰبَ وَالْحُكْمَ وَالنُّبُوَّةَ ثُمَّ يَقُوْلَ لِلنَّاسِ كُوْنُوْا عِبَادًا لِّىْ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلٰكِنْ كُوْنُوْا رَبَّانِيّٖنَ بِمَا كُنْتُمْ تُعَلِّمُوْنَ الْكِتٰبَ وَبِمَا كُنْتُمْ تَدْرُسُوْنَ	कसिी ऐस`व़यकत़ि क`लिए मम़ुकनि नही कि जसि`अल़लाह न`कताब, हकिमत और नबवूत दी हो, फरि वह लोगो स`कह,े 'मरे`उपासक बनो, अल़लाह क`नही,' बल़्कि (वह कहगेा), 'अल़लाह क`भकत़ बनो, क़्योंकि तमु कताब सखिात`हो और क़्योंकि तमु उस`पढ़त`हो!'	**79**
وَلَا يَأْمُرَكُمْ اَنْ تَتَّخِذُوا الْمَلٰٓئِكَةَ وَالنَّبِيّٖنَ اَرْبَابًا اَيَأْمُرُكُمْ بِالْكُفْرِ بَعْدَ اِذْ اَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ	और न ही (वह) तमुह`आदशे दगेा कि तमु फरशि़तो और नबयिो को रब बनाओ। क़्या (यह उचति ह`कि) वह तमुह`काफरि बनन`का आदशे द,े जबकि तमु मसुलमान हो चक़ु`हो?	**80**
وَاِذْ اَخَذَ اللّٰهُ مِيْثَاقَ النَّبِيّٖنَ لَمَآ اٰتَيْتُكُمْ مِّنْ كِتٰبٍ وَّحِكْمَةٍ ثُمَّ جَآءَكُمْ رَسُوْلٌ مُّصَدِّقٌ لِّمَا مَعَكُمْ لَتُؤْمِنُنَّ بِهٖ وَلَتَنْصُرُنَّهٗ قَالَ ءَاَقْرَرْتُمْ وَاَخَذْتُمْ عَلٰى ذٰلِكُمْ اِصْرِىْ قَالُوْٓا اَقْرَرْنَا قَالَ فَاشْهَدُوْا وَاَنَا مَعَكُمْ مِّنَ الشّٰهِدِيْنَ	और (याद करो), जब अल़लाह न`नबयिो स`वादा लयिा, 'जब म`ै तमुह`कताब और हकिमत द,ूँ फरि तमुह`ार`पास एक रसलू आए जो तमुह`ार`पास जो कछु ह`उस`सत़्य मान,े तो तमु नशि़चय ही उस पर ईमान लाओग`और उसकी मदद करोग।' अल़लाह न`कहा, 'क़्या तमु इस शरत़ पर सहमत हो और मरेा यह वादा सव़ीकार करत`हो?' उनहो`न`जवाब दयिा, 'हम सहमत ह।ै' अल़लाह न`कहा, 'तो गवाही दो (ऐ नबी) और म`ैतमुह`ार`साथ गवाही दने`वालो म`हू।ँ'	**81**
فَمَنْ تَوَلّٰى بَعْدَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ	फरि जो कोई इसक`बाद मड़ु जाता ह,ै तो व`लोग फासकि ह।ै	**82**

83	तो क्या वे अल्लाह के दीन के अलावा कोई और दीन तलाश करते हैं, जबकि जो कुछ आकाश और धरती में है, वह उसी के सामने समर्पण करता है, चाहे खुशी से हो या मजबूरी में, और उसी की ओर उनकी वापसी होगी?	اَفَغَيْرَ دِيْنِ اللّٰهِ يَبْغُوْنَ وَلَهٗٓ اَسْلَمَ مَنْ فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ طَوْعًا وَّكَرْهًا وَّاِلَيْهِ يُرْجَعُوْنَ
84	कहो (मुहम्मद), 'हम अल्लाह पर ईमान लाए और जो कुछ हम पर उतारा गया और जो इब्राहीम, इस्माइल, इसहाक, याकूब और उनकी संतानों पर उतारा गया, और जो मूसा, ईसा और नबियों को उनके रब की ओर से दिया गया, उस पर। हम उनमें से किसी एक को भी अलग नहीं करते और उसी के सामने समर्पण करते हैं'	قُلْ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَمَآ اُنْزِلَ عَلَيْنَا وَمَآ اُنْزِلَ عَلٰٓى اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ وَالْاَسْبَاطِ وَمَآ اُوْتِيَ مُوْسٰى وَعِيْسٰى وَالنَّبِيُّوْنَ مِنْ رَّبِّهِمْ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْهُمْ وَنَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ
85	और जो कोई इस्लाम के अलावा कोई और दीन तलाश करता है, वह स्वीकार नहीं किया जाएगा, और आखिरत में वह घाटे में रहेगा।	وَمَنْ يَّبْتَغِ غَيْرَ الْاِسْلَامِ دِيْنًا فَلَنْ يُّقْبَلَ مِنْهُ وَهُوَ فِى الْاٰخِرَةِ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ
86	अल्लाह उन लोगों को कैसे मार्गदर्शन देगा जो ईमान लाने के बाद काफिर हो गए, और यह तस्दीक करने के बाद कि रसूल (मुहम्मद) सच्चा है, और उनके पास साफ-साफ निशानियाँ आ चुकी थी? अल्लाह ज़ालिमों को मार्ग नहीं दिखाता।	كَيْفَ يَهْدِى اللّٰهُ قَوْمًا كَفَرُوْا بَعْدَ اِيْمَانِهِمْ وَشَهِدُوْٓا اَنَّ الرَّسُوْلَ حَقٌّ وَّجَآءَهُمُ الْبَيِّنٰتُ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ
87	उनका बदला यह है कि उन पर अल्लाह, फरिश्तों और सारे इंसानों की लानत पड़े,	اُولٰٓئِكَ جَزَآؤُهُمْ اَنَّ عَلَيْهِمْ لَعْنَةَ اللّٰهِ وَالْمَلٰٓئِكَةِ وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ
88	वे उसमें हमेशा रहेंगे, उनकी सजा न तो हल्की की जाएगी और न उन्हें राहत दी जाएगी,	خٰلِدِيْنَ فِيْهَا لَا يُخَفَّفُ عَنْهُمُ الْعَذَابُ وَلَا هُمْ يُنْظَرُوْنَ
89	सिवाय उन लोगों के जो इसके बाद तौबा करें और सुधार करें, तो निश्चय ही, अल्लाह बहुत क्षमाशील, बहुत दयालु है।	اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا مِنْ بَعْدِ ذٰلِكَ وَاَصْلَحُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ
90	निश्चय ही, जो लोग ईमान लाने के बाद काफिर हो गए, फिर उनकी कुफ्र में और वृद्धि हुई, उनकी तौबा स्वीकार नहीं की जाएगी, और वही लोग गुमराह हैं।	اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بَعْدَ اِيْمَانِهِمْ ثُمَّ ازْدَادُوْا كُفْرًا لَّنْ تُقْبَلَ تَوْبَتُهُمْ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الضَّآلُّوْنَ
91	निश्चय ही, जो लोग काफिर हुए और कुफ्र की हालत में मर गए, उनमें से किसी की भी (छुटकारे के लिए) पूरी धरती भर सोना भी स्वीकार नहीं किया जाएगा, यदि वह उसे छुड़ाने के लिए दे। उनके लिए कठोर सजा है और उनके लिए कोई सहायक नहीं है।	اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَمَاتُوْا وَهُمْ كُفَّارٌ فَلَنْ يُّقْبَلَ مِنْ اَحَدِهِمْ مِّلْءُ الْاَرْضِ ذَهَبًا وَّلَوِ افْتَدٰى بِهٖ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ وَّمَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ
92	तुम तब तक भलाई प्राप्त नहीं करोगे, जब तक तुम अपनी पसंदीदा संपत्ति का कुछ हिस्सा खर्च न करो। और जो कुछ तुम खर्च करते हो, उसके बारे में अल्लाह अच्छी तरह जानता है।	لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتّٰى تُنْفِقُوْا مِمَّا تُحِبُّوْنَ وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ شَيْءٍ فَاِنَّ اللّٰهَ بِهٖ عَلِيْمٌ

93	बनी इसराइल क॓लिए सारी ख़ुराक हलाल थी, सिवाय उस ख़ुराक क॓जिसि॓इसराइल (याक़ूब) न॓तौरात उतरन॓स॓पहल॓ अपन॓लिए हराम कर लिया था। कहो (मुहम्मद), 'तो तौरात लाओ और उस॓पढ़ो, यदि तुम सच्च॓हो।'	كُلُّ الطَّعَامِ كَانَ حِلًّا لِّبَنِيْٓ اِسْرَاۤءِيْلَ اِلَّا مَا حَرَّمَ اِسْرَاۤءِيْلُ عَلٰى نَفْسِهٖ مِنْ قَبْلِ اَنْ تُنَزَّلَ التَّوْرٰىةُ قُلْ فَأْتُوْا بِالتَّوْرٰىةِ فَاتْلُوْهَآ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ
94	फिर जो कोई इसक॓बाद अल्लाह क॓ख़िलाफ झूठ गढ़ता ह॑तो वही लोग ज़ालिम ह॑	فَمَنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ مِنْ بَعْدِ ذٰلِكَ فَاُولٰۤىِٕكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ
95	कहो (मुहम्मद), '(जो कुछ) अल्लाह न॓फरमाया वह सत्य ह॑' तो इब्राहीम क॓सीध॓दीन का अनुसरण करो, और वह मुश्रिकों म॑स॓नहीं था।	قُلْ صَدَقَ اللّٰهُ فَاتَّبِعُوْا مِلَّةَ اِبْرٰهِيْمَ حَنِيْفًا وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ
96	निश्चय ही, इंसानों क॓लिए सबस॓पहल॓बना घर (इबादत का) वह ह॑जो बक्क़ा (मक्क़ा) म॑ह॑, जो बरकत वाला ह॑और सार॓ जहान क॓लिए मार्गदर्शन ह॑	اِنَّ اَوَّلَ بَيْتٍ وُّضِعَ لِلنَّاسِ لَلَّذِيْ بِبَكَّةَ مُبٰرَكًا وَّهُدًى لِّلْعٰلَمِيْنَ
97	वहा॑साफ-साफ निशानिया॑ह॑, (उनम॓स॑) मकाम-ए-इब्राहीम ह॑ जो कोई उसम॓(बतैतुल्लाह म॑) दाख़िल होता ह॑, वह अमन म॑ होता ह॑ और अल्लाह क॓लिए लोगों पर उस घर (बतैतुल्लाह) का हज करना ज़िम्मेदारी ह॑, जो लोग वहा॑की यात्रा करन॓की सामर्थ्य रखत॓ह॑ जो कोई हज की (ज़िम्मेदारी) का इंकार करता ह॑, तो जान लो कि अल्लाह सार॓जहान स॓बेनियाज़ ह॑	فِيْهِ اٰيٰتٌۢ بَيِّنٰتٌ مَّقَامُ اِبْرٰهِيْمَ وَمَنْ دَخَلَهٗ كَانَ اٰمِنًا وَلِلّٰهِ عَلَى النَّاسِ حِجُّ الْبَيْتِ مَنِ اسْتَطَاعَ اِلَيْهِ سَبِيْلًا وَمَنْ كَفَرَ فَاِنَّ اللّٰهَ غَنِيٌّ عَنِ الْعٰلَمِيْنَ
98	कहो (मुहम्मद), 'ऐ अहल॓किताब! तुम अल्लाह की आयतों का इंकार क्यों॓करत॓हो, जबकि अल्लाह तुम्हार॓करमों को दे॓खन॓ वाला ह॑?'	قُلْ يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَاللّٰهُ شَهِيْدٌ عَلٰى مَا تَعْمَلُوْنَ
99	कहो (मुहम्मद), 'ऐ अहल॓किताब! तुम ईमान वालों को अल्लाह क॓रास्त॓स॓क्यों॓रोकत॓हो, और उस॓टेढ़ा करना चाहत॓ हो, जबकि तुम (उसक॓सत्य को) दे॓खत॓हो?' और अल्लाह तुम्हार॓करमों स॓बेख़बर नहीं ह॑	قُلْ يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ مَنْ اٰمَنَ تَبْغُوْنَهَا عِوَجًا وَّاَنْتُمْ شُهَدَاۤءُ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ
100	ऐ ईमान वालो! यदि तुम उन लोगों म॓स॓कुछ की बात मान लते॓ हो जिन्ह॑किताब दी गई थी, तो व॓तुमह॑ईमान लान॓क॓बाद काफ़िर बना दें॓गे।	يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنْ تُطِيْعُوْا فَرِيْقًا مِّنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ يَرُدُّوْكُمْ بَعْدَ اِيْمَانِكُمْ كٰفِرِيْنَ
101	और तुम काफ़िर कैस॓हो सकत॓हो, जबकि तुमह॑अल्लाह की आयत॓पढ़ी जा रही ह॑, और उसका रसूल (मुहम्मद) तुम्हार॓बीच म॑ह॑? जो कोई अल्लाह (क॓दीन) को मज़बूती स॓थाम लेता ह॑, उस॓निश्चय ही सीध॓रास्त॓की हदायत दी जाती ह॑	وَكَيْفَ تَكْفُرُوْنَ وَاَنْتُمْ تُتْلٰى عَلَيْكُمْ اٰيٰتُ اللّٰهِ وَفِيْكُمْ رَسُوْلُهٗ وَمَنْ يَّعْتَصِمْ بِاللّٰهِ فَقَدْ هُدِيَ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ
102	ऐ ईमान वालो! अल्लाह स॓डरो जैसा कि उसस॓डरन॓का हक ह॑, और न मरो मगर मुसलमान होकर।	يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ حَقَّ تُقٰتِهٖ وَلَا تَمُوْتُنَّ اِلَّا وَاَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ

وَاعْتَصِمُوْا بِحَبْلِ اللّٰهِ جَمِيْعًا وَّلَا تَفَرَّقُوْا وَاذْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ اِذْ كُنْتُمْ اَعْدَاۤءً فَاَلَّفَ بَيْنَ قُلُوْبِكُمْ فَاَصْبَحْتُمْ بِنِعْمَتِهٖٓ اِخْوَانًا وَكُنْتُمْ عَلٰى شَفَا حُفْرَةٍ مِّنَ النَّارِ فَاَنْقَذَكُمْ مِّنْهَا كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ اٰيٰتِهٖ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ	और अल़्लाह की रस्सी को मज़बूती स॓थामो, सब एक साथ, और आपस म॓बंटो नहीं। और अल़्लाह की उस नअ़मत को याद करो जो तुम पर हुई, जब तुम आपस म॓दुश्मन थ॓, तो उसन॓ तुम्हार॓दिलों को जोड़ा, और तुम उसकी कृपा स॓भाई बन गए। और तुम आग क॓गड्ढ॓क॓किनार॓थ॓, तो उसन॓तुम्ह॓उससे॓बचा लिया। इस तरह अल़्लाह तुम्हार॓लिए अपनी आयत॓स्पष्ट करता ह॓, ताकि तुम हिदायत पाओ।	103
وَلْتَكُنْ مِّنْكُمْ اُمَّةٌ يَّدْعُوْنَ اِلَى الْخَيْرِ وَيَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ	और तुम म॓स॓एक जमात ऐसी होनी चाहिए जो भलाई की ओर बुलाए, नेके काम करन॓का आदेश द॓, और बुराई स॓रोके॰ और वही लोग कामयाब ह॓ै	104
وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ تَفَرَّقُوْا وَاخْتَلَفُوْا مِنْ بَعْدِ مَا جَاۤءَهُمُ الْبَيِّنٰتُ وَاُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ	और उन लोगों जैस॓न बनो जो साफ सबूत आन॓क॓बाद बंट गए और आपस म॓झगड़न॓लग॰ और उनक॓लिए कठोर सजा ह॓ै	105
يَّوْمَ تَبْيَضُّ وُجُوْهٌ وَّتَسْوَدُّ وُجُوْهٌ فَاَمَّا الَّذِيْنَ اسْوَدَّتْ وُجُوْهُهُمْ اَكَفَرْتُمْ بَعْدَ اِيْمَانِكُمْ فَذُوْقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ	उस दिन कुछ चेहरों को चमकदार होंग॓और कुछ चेहरों को काल॓ पड़ जाएँग॰ जिनक॓चेहर॓काल॓पड़ जाएँगे, (उनस॓कहा जाएगा), 'तुम ईमान लान॓क॓बाद काफिर क्यों हो गए? तो अपनी कुफ़्र की वजह स॓सजा भोगो।'	106
وَاَمَّا الَّذِيْنَ ابْيَضَّتْ وُجُوْهُهُمْ فَفِيْ رَحْمَةِ اللّٰهِ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ	और जिनक॓चेहर॓उज़्ज़वल और चमक रह॓ह॓ै, व॓अल़्लाह की कृपा (सवरग) म॓ह॓ै, व॓उसम॓सदवै रहेंगे॰	107
تِلْكَ اٰيٰتُ اللّٰهِ نَتْلُوْهَا عَلَيْكَ بِالْحَقِّ وَمَا اللّٰهُ يُرِيْدُ ظُلْمًا لِّلْعٰلَمِيْنَ	यह अल़्लाह की आयत॓ह॓ै, जो हम तुम्ह॓सत्य क॓साथ पढ़त॓ह॓ै, और अल़्लाह सार॓जहान म॓किसी पर जुल़्म नहीं चाहता।	108
وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ وَاِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ	और जो कुछ आकाश और धरती म॓ह॓ै, व॓ह अल़्लाह का ह॓ै, और सार॓मामल॓उसी की ओर लौटाए जात॓ह॓ै	109
كُنْتُمْ خَيْرَ اُمَّةٍ اُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ تَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَتَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَتُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَلَوْ اٰمَنَ اَهْلُ الْكِتٰبِ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ مِنْهُمُ الْمُؤْمِنُوْنَ وَاَكْثَرُهُمُ الْفٰسِقُوْنَ	तुम (मुसलमान) इंसानों क॓लिए निकाला गया सबस॓अच्छा उम्मत हो, (क्योंकि तुम) नेके काम करन॓का आदेश दते॓हो, और बुराई स॓रोकत॓हो, और अल़्लाह पर ईमान लात॓हो। यदि अहल॓किताब ईमान लात॓, तो यह उनक॓लिए बेहतर होता।	110
لَنْ يَّضُرُّوْكُمْ اِلَّآ اَذًى وَاِنْ يُّقَاتِلُوْكُمْ يُوَلُّوْكُمُ الْاَدْبَارَ ثُمَّ لَا يُنْصَرُوْنَ	व॓तुम्ह॓कोई नुकसान नहीं पहुँचाएँग॓, सिवाय तकलीफ दने॓क॰ और यदि व॓तुमस॓लड़, तो पीठ दिखाएँग॓, फिरि उनकी मदद नहीं की जाएगी।	111

ضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الذِّلَّةُ اَيْنَ مَا ثُقِفُوْٓا اِلَّا بِحَبْلٍ مِّنَ اللّٰهِ وَحَبْلٍ مِّنَ النَّاسِ وَبَآءُوْ بِغَضَبٍ مِّنَ اللّٰهِ وَضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الْمَسْكَنَةُ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَيَقْتُلُوْنَ الْاَنْۢبِيَآءَ بِغَيْرِ حَقٍّ ذٰلِكَ بِمَا عَصَوْا وَّكَانُوْا يَعْتَدُوْنَ	**112**	वे जहा कँहीं हों, उन पर अपमान छाया रहेगा, सिवाय इसके कि वे अल्लाह की रस्सी और लोगों के साथ (अहद की) रस्सी को थाम लों उन्होंने अल्लाह का गुस्सा मोल लिया और उन पर हमेशा तंगी छाई रही। ऐसा इसलिए कि वे अल्लाह की आयतों का इंकार करते थे और नबियों को बिना हक मारा करते थे। ऐसा उनकी नाफरमानी और हद से बढ़ने की वजह से हुआ।
لَيْسُوْا سَوَآءً مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ اُمَّةٌ قَآئِمَةٌ يَّتْلُوْنَ اٰيٰتِ اللّٰهِ اٰنَآءَ الَّيْلِ وَهُمْ يَسْجُدُوْنَ	**113**	वे सब एक जैसे नहीं हैं अहले किताब में एक जमात ऐसी है जो सच्ची है, वे रात को अल्लाह की आयत पढ़ते हैं, और वे (नमाज़ में) सजदा भी करते हैं
يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَيَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُسَارِعُوْنَ فِى الْخَيْرٰتِ وَاُولٰٓئِكَ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ	**114**	वे अल्लाह और आखिरी दिन पर ईमान लाते हैं, नेके काम करने का आदेश देते हैं, और बुराई से रोकते हैं और भलाई के कामों में जल्दी करते हैं वे नेक लोगों में से हैं
وَمَا يَفْعَلُوْا مِنْ خَيْرٍ فَلَنْ يُّكْفَرُوْهُ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالْمُتَّقِيْنَ	**115**	और जो भी भलाई वे करते हैं, उसका इंकार नहीं किया जाएगा। और अल्लाह तकवा रखने वालों को अच्छी तरह जानता है
اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَنْ تُغْنِىَ عَنْهُمْ اَمْوَالُهُمْ وَلَآ اَوْلَادُهُمْ مِّنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا وَاُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ	**116**	निश्चय ही, जो लोग काफिर हैं, न तो उनकी संपत्ति और न ही उनके बच्चे अल्लाह की सजा को रोक सकते हैं वे नरक के बाशिंदे हैं, और वे उसमें हमेशा रहेंगे।
مَثَلُ مَا يُنْفِقُوْنَ فِىْ هٰذِهِ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا كَمَثَلِ رِيْحٍ فِيْهَا صِرٌّ اَصَابَتْ حَرْثَ قَوْمٍ ظَلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ فَاَهْلَكَتْهُ وَمَا ظَلَمَهُمُ اللّٰهُ وَلٰكِنْ اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ	**117**	इस दुनिया के जीवन में उनके द्वारा खर्च की गई संपत्ति की मिसाल उस हवा की तरह है जिसमें बहुत ठंडक होती है, जो उन लोगों की खेती पर पड़ती है जिन्होंने अपने आप पर जुल्म किया, फिर वह उसे नष्ट कर देती है। अल्लाह ने उन पर जुल्म नहीं किया, बल्कि उन्होंने अपने आप पर जुल्म किया।
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوْا بِطَانَةً مِّنْ دُوْنِكُمْ لَا يَاْلُوْنَكُمْ خَبَالًا وَدُّوْا مَا عَنِتُّمْ قَدْ بَدَتِ الْبَغْضَآءُ مِنْ اَفْوَاهِهِمْ وَمَا تُخْفِىْ صُدُوْرُهُمْ اَكْبَرُ قَدْ بَيَّنَّا لَكُمُ الْاٰيٰتِ اِنْ كُنْتُمْ تَعْقِلُوْنَ	**118**	ऐ ईमान वालो! अपने मजहब से बाहर के लोगों को विश्वासपात्र दोस्त न बनाओ, क्योंकि वे तुम्हें परेशान करने में कोई कसर नहीं छोड़ते। वे तुम्हारी बरबादी चाहते हैं उनकी नफरत उनके मुँह से साफ झलकती है, और जो उनके दिलों में छिपा है, वह और भी बुरा है हमने तुम्हारे लिए आयतें स्पष्ट कर दी हैं, यदि तुम समझते हो।
هٰٓاَنْتُمْ اُولَآءِ تُحِبُّوْنَهُمْ وَلَا يُحِبُّوْنَكُمْ وَتُؤْمِنُوْنَ بِالْكِتٰبِ كُلِّهٖ وَاِذَا لَقُوْكُمْ قَالُوْٓا اٰمَنَّا وَاِذَا خَلَوْا عَضُّوْا عَلَيْكُمُ الْاَنَامِلَ مِنَ الْغَيْظِ قُلْ مُوْتُوْا بِغَيْظِكُمْ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ	**119**	ऐसा है तुम्हारा हाल! तुम उन्हें चाहते हो, जबकि वे तुम्हें नहीं चाहते, और तुम सारी किताबों पर ईमान लाते हो। जब वे तुमसे मिलते हैं, तो कहते हैं, 'हम ईमान लाए,' और जब अकेले होते हैं, तो तुम्हारे प्रति गुस्से और नफरत से अपनी उंगलियों को काटते हैं कहो, 'अपने गुस्से में मर जाओ!' निश्चय ही, अल्लाह दिलों की बात अच्छी तरह जानता है

120	यदि तुम्हे कोई भलाई मिलती है, तो वे उदास हो जाते है, लेकिन यदि तुम पर कोई मुसीबत आती है, तो वे उससे खुश होते है। यदि तुम धैर्य रखते हो और तकवा अपनाते हो, तो उनकी चाले तुम्हे कोई नुकसान नहीं पहुँचाएँगी। निश्चय ही, अल्लाह उनके करमों को पूरी तरह घेरे लेता है।	اِنْ تَمْسَسْكُمْ حَسَنَةٌ تَسُؤْهُمْ وَاِنْ تُصِبْكُمْ سَيِّئَةٌ يَّفْرَحُوْا بِهَا ۗ وَاِنْ تَصْبِرُوْا وَتَتَّقُوْا لَا يَضُرُّكُمْ كَيْدُهُمْ شَيْـًٔا ۗ اِنَّ اللّٰهَ بِمَا يَعْمَلُوْنَ مُحِيْطٌ
121	और (याद करो), जब तू (मुहम्मद) सुबह को अपने परिवार को छोड़कर निकला ताकि मोमिनों को जंग के लिए मोर्चो पर तैनात करे। अल्लाह सब कुछ सुनने वाला, जानने वाला है।	وَاِذْ غَدَوْتَ مِنْ اَهْلِكَ تُبَوِّئُ الْمُؤْمِنِيْنَ مَقَاعِدَ لِلْقِتَالِ ۗ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ
122	जब तुम में से दो गुट डर के मारे (पीछे हटने) को तयैार थ,े जबकि अल्लाह उनका मददगार था। इसलिए मोमिनों को केवल अल्लाह पर भरोसा करना चाहिए।	اِذْ هَمَّتْ طَّاۤىِٕفَتٰنِ مِنْكُمْ اَنْ تَفْشَلَا ۙ وَاللّٰهُ وَلِيُّهُمَا ۗ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ
123	और निश्चय ही, अल्लाह ने तुम्हे बदर की जंग में मदद की, जबकि तुम कमजोर थे। इसलिए अल्लाह से डरो, ताकि तुम उसका शुक्र अदा करो।	وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ ۚ فَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ
124	(याद करो), जब तू (मुहम्मद) मोमिनों से कह रहा था, 'क्या तुम्हारे लिए यह काफी नहीं कि तुम्हारा रब तुम्हारी मदद के लिए तीन हजार फरिश्ते उतारे?'	اِذْ تَقُوْلُ لِلْمُؤْمِنِيْنَ اَلَنْ يَّكْفِيَكُمْ اَنْ يُّمِدَّكُمْ رَبُّكُمْ بِثَلٰثَةِ اٰلٰفٍ مِّنَ الْمَلٰۤىِٕكَةِ مُنْزَلِيْنَ
125	हाँ, यदि तुम धैर्य रखते हो और तकवा अपनाते हो, और वे (दुश्मन) तुम पर तुरंत हमला करते है, तो तुम्हारा रब तुम्हारी मदद के लिए पाचँ हजार फरिश्तों से, जो निशान लगाए हुए है, मदद करेगा।	بَلٰٓى ۙ اِنْ تَصْبِرُوْا وَتَتَّقُوْا وَيَاْتُوْكُمْ مِّنْ فَوْرِهِمْ هٰذَا يُمْدِدْكُمْ رَبُّكُمْ بِخَمْسَةِ اٰلٰفٍ مِّنَ الْمَلٰۤىِٕكَةِ مُسَوِّمِيْنَ
126	और अल्लाह ने इसे (फरिश्तों की मदद) केवल तुम्हारे लिए खुशखबरी और तुम्हारे दिलों की तसल्ली के लिए बनाया। और जीत केवल अल्लाह की ओर से है, जो सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञानी है।	وَمَا جَعَلَهُ اللّٰهُ اِلَّا بُشْرٰى لَكُمْ وَلِتَطْمَئِنَّ قُلُوْبُكُمْ بِهٖ ۗ وَمَا النَّصْرُ اِلَّا مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ
127	(अल्लाह ने तुम्हे बदर में मदद दी और सहायता दी) ताकि काफिरों की एक जमात को नष्ट कर दे, या उन्हे अपमानित कर, ताकि वे कुछ हासिल किए बिना लौट जाएँ।	لِيَقْطَعَ طَرَفًا مِّنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْۤا اَوْ يَكْبِتَهُمْ فَيَنْقَلِبُوْا خَاۤىِٕبِيْنَ
128	यह तुम्हारा (मुहम्मद) काम नहीं कि अल्लाह उनकी तौबा कबूल करे या उन्हे सजा दे, क्योंकि निश्चय ही वे जालिम है।	لَيْسَ لَكَ مِنَ الْاَمْرِ شَيْءٌ اَوْ يَتُوْبَ عَلَيْهِمْ اَوْ يُعَذِّبَهُمْ فَاِنَّهُمْ ظٰلِمُوْنَ
129	और जो कुछ आकाश और धरती में है, वह अल्लाह का है। वह जिसे चाहता है माफ करता है, और जिसे चाहता है सजा देता है। और अल्लाह बहुत क्षमाशील, बहुत दयालु है।	وَلِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ ۗ يَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَاۤءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَاۤءُ ۗ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ
130	ऐ ईमान वालो! सूद को दोगुना और चौगुना करके न खाओ और अल्लाह से डरो ताकि तुम कामयाब हो।	يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَاْكُلُوا الرِّبٰوٓا اَضْعَافًا مُّضٰعَفَةً ۖ وَّاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ

131	और अपने आप को उस नरक की आग से बचाओ, जो काफ़िरों के लिए तैयार की गई है।	وَاتَّقُوا النَّارَ الَّتِيْٓ اُعِدَّتْ لِلْكٰفِرِيْنَ
132	और अल्लाह और रसूल (मुहम्मद) की आज्ञा मानो, ताकि तुम पर रहम किया जाए।	وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ
133	और अपने रब से माफ़ी माँगने और उस जन्नत को हासिल करने की जल्दी करो, जिसकी चौड़ाई आकाश और धरती जितनी है, जो तक़वा रखने वालों के लिए तैयार की गई है,	وَسَارِعُوْٓا اِلٰى مَغْفِرَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ اُعِدَّتْ لِلْمُتَّقِيْنَ
134	(वही) लोग जो सुख और दुख में ख़र्च करते हैं, और जो लोग अपने ग़ुस्से को पी जाते हैं, और लोगों को माफ़ कर देते हैं। और अल्लाह नेकी करने वालों को पसंद करता है।	الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ فِي السَّرَّاۗءِ وَالضَّرَّاۗءِ وَالْكٰظِمِيْنَ الْغَيْظَ وَالْعَافِيْنَ عَنِ النَّاسِ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ
135	और (वही) लोग जो जब कोई गंदा काम करते हैं या अपने आप पर जुल्म करते हैं, (तुरंत) अल्लाह को याद करते हैं, फिर अपने गुनाहों की माफी माँगते हैं, और गुनाहों को माफ करने वाला अल्लाह के सिवा कौन है? और वे जानबूझकर अपने गुनाहों को दोहराते नहीं।	وَالَّذِيْنَ اِذَا فَعَلُوْا فَاحِشَةً اَوْ ظَلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ ذَكَرُوا اللّٰهَ فَاسْتَغْفَرُوْا لِذُنُوْبِهِمْ وَمَنْ يَّغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اللّٰهُ ۡ وَلَمْ يُصِرُّوْا عَلٰي مَا فَعَلُوْا وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ
136	उनका बदला उनके रब की ओर से माफी और ऐसी जन्नत है जिनके नीचे नदियाँ बहती हैं, वे उसमें हमेशा रहेंगे। और यह नेकी करने वालों के लिए सबसे अच्छा बदला है।	اُولٰۗىِٕكَ جَزَاۗؤُهُمْ مَّغْفِرَةٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ وَجَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۭ وَنِعْمَ اَجْرُ الْعٰمِلِيْنَ
137	तुमसे पहले अल्लाह की रीतियाँ (सुन्नत) गुज़र चुकी हैं, इसलिए धरती पर चलो-फिरो और देखो कि झुठलाने वालों का अंजाम कैसा हुआ।	قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِكُمْ سُنَنٌ فَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَانْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِيْنَ
138	यह (क़ुरान) सारे इंसानों के लिए स्पष्ट बयान है, और तक़वा रखने वालों के लिए मार्गदर्शन और नसीहत है।	هٰذَا بَيَانٌ لِّلنَّاسِ وَهُدًى وَّمَوْعِظَةٌ لِّلْمُتَّقِيْنَ
139	और न तुम कमज़ोर पड़ो, और न उदास हो, क्योंकि तुम सबसे ऊँचे (दरज़े में) हो, यदि तुम ईमान वाले हो।	وَلَا تَهِنُوْا وَلَا تَحْزَنُوْا وَاَنْتُمُ الْاَعْلَوْنَ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ
140	यदि तुम्हें (उहद की जंग में) चोट लगी, तो (बद्र की जंग में) उन्हें भी वैसी ही चोट लगी थी। और ये दिन (जय और पराजय के), हम उन्हें इंसानों के बीच बारी-बारी से बदलते रहते हैं (ताकि वे सबक लें), और ताकि अल्लाह उन लोगों को अलग कर दे जो ईमान लाए (और काफ़िरों को), और ताकि तुम में से कुछ को शहीद बनाए। और अल्लाह ज़ालिमों को पसंद नहीं करता,	اِنْ يَّمْسَسْكُمْ قَرْحٌ فَقَدْ مَسَّ الْقَوْمَ قَرْحٌ مِّثْلُهٗ ۭ وَتِلْكَ الْاَيَّامُ نُدَاوِلُهَا بَيْنَ النَّاسِ ۚ وَلِيَعْلَمَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَيَتَّخِذَ مِنْكُمْ شُهَدَاۗءَ ۭ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ الظّٰلِمِيْنَ
141	और ताकि अल्लाह ईमान वालों को (उनके गुनाहों से) शुद्ध कर दे और काफ़िरों को नष्ट कर दे।	وَلِيُمَحِّصَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَيَمْحَقَ الْكٰفِرِيْنَ

142	क्या तुम समझते हो कि तुम जन्नत में दाखिल हो जाओगे, जबकि अल्लाह ने अभी तक तुम में से उन लोगों को जाहिर नहीं किया जो जिहाद करते हैं और न ही उन लोगों को जो धैर्य रखते हैं।	اَمْ حَسِبْتُمْ اَنْ تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ وَلَمَّا يَعْلَمِ اللّٰهُ الَّذِيْنَ جَاهَدُوْا مِنْكُمْ وَيَعْلَمَ الصّٰبِرِيْنَ
143	और तुम शहादत की तमन्ना करते थे, इससे पहले कि तुम उसका सामना करो; तो (अब) तुमने उसे देख लिया और तुम उसे देख रहे हो।	وَلَقَدْ كُنْتُمْ تَمَنَّوْنَ الْمَوْتَ مِنْ قَبْلِ اَنْ تَلْقَوْهُ فَقَدْ رَاَيْتُمُوْهُ وَاَنْتُمْ تَنْظُرُوْنَ
144	और मुहम्मद केवल एक रसूल हैं; उनसे पहले भी कई रसूल गुज़र चुके हैं तो क्या यदि वह मर जाएँ या मार दिए जाएँ, तो तुम पीछे मुड़ जाओगे (मुरतद हो जाओगे)? जो कोई पीछे मुड़ता है, वह अल्लाह को ज़रा भी नुकसान नहीं पहुँचाएगा। अल्लाह शुक्र करने वालों को बदला देगा।	وَمَا مُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُوْلٌ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ اَفَاۡئِنْ مَّاتَ اَوْ قُتِلَ انْقَلَبْتُمْ عَلٰٓى اَعْقَابِكُمْ وَمَنْ يَّنْقَلِبْ عَلٰى عَقِبَيْهِ فَلَنْ يَّضُرَّ اللّٰهَ شَيْـًٔا وَسَيَجْزِى اللّٰهُ الشّٰكِرِيْنَ
145	और कोई भी प्राणी अल्लाह की इजाज़त के बिना नहीं मरता, यह एक तय समय की बात है। जो कोई दुनिया का बदला चाहता है, हम उसे वह (दुनिया का) बदला देते हैं, और जो कोई आख़िरत का बदला चाहता है, हम उसे वह (आख़िरत का) बदला देते हैं, और हम शुक्र करने वालों को बदला देंगे।	وَمَا كَانَ لِنَفْسٍ اَنْ تَمُوْتَ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ كِتٰبًا مُّؤَجَّلًا وَمَنْ يُّرِدْ ثَوَابَ الدُّنْيَا نُؤْتِهٖ مِنْهَا وَمَنْ يُّرِدْ ثَوَابَ الْاٰخِرَةِ نُؤْتِهٖ مِنْهَا وَسَنَجْزِى الشّٰكِرِيْنَ
146	और कितने ही नबी थे जिनके साथ बहुत सारे तकवा रखने वाले अनुयायी लड़ते थे। वे अल्लाह के रास्ते में आई मुसीबतों से कमज़ोर नहीं पड़े, न हिम्मत हारी और न (दुश्मन के सामने) झुके। और अल्लाह धैर्य रखने वालों को पसंद करता है।	وَكَاَيِّنْ مِّنْ نَّبِيٍّ قٰتَلَ مَعَهٗ رِبِّيُّوْنَ كَثِيْرٌ فَمَا وَهَنُوْا لِمَآ اَصَابَهُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَمَا ضَعُفُوْا وَمَا اسْتَكَانُوْا وَاللّٰهُ يُحِبُّ الصّٰبِرِيْنَ
147	और उनकी बात बस इतनी थी कि (वे दुआ करते थे), 'हमारे रब, हमारे गुनाहों और हमारे कामों में हमारी हद से बढ़ने को माफ कर, और हमारे कदमों को मज़बूत कर, और हमें काफिरों के खिलाफ मदद दे।'	وَمَا كَانَ قَوْلَهُمْ اِلَّآ اَنْ قَالُوْا رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَاِسْرَافَنَا فِيْٓ اَمْرِنَا وَثَبِّتْ اَقْدَامَنَا وَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ
148	तो अल्लाह ने उन्हें दुनिया में बदला दिया और आख़िरत में अच्छा बदला। और अल्लाह नेकी करने वालों को पसंद करता है।	فَاٰتٰىهُمُ اللّٰهُ ثَوَابَ الدُّنْيَا وَحُسْنَ ثَوَابِ الْاٰخِرَةِ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ
149	ऐ ईमान वालो! यदि तुम काफिरों की बात मानते हो, तो वे तुम्हें पीछे (मुरतद) कर देंगे, फिर तुम घाटे में रह जाओगे।	يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنْ تُطِيْعُوا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يَرُدُّوْكُمْ عَلٰٓى اَعْقَابِكُمْ فَتَنْقَلِبُوْا خٰسِرِيْنَ
150	बल्कि केवल अल्लाह ही तुम्हारा संरक्षक है, और वह सबसे अच्छा मददगार है।	بَلِ اللّٰهُ مَوْلٰىكُمْ وَهُوَ خَيْرُ النّٰصِرِيْنَ
151	हम काफिरों के दिलों में डर डाल देंगे, क्योंकि उन्होंने अल्लाह के साथ उस चीज को शरीक किया जिसके बारे में अल्लाह ने कोई सबूत नहीं उतारा। और उनका ठिकाना नरक है और यह ज़ालिमों के लिए सबसे खराब ठिकाना है।	سَنُلْقِيْ فِيْ قُلُوْبِ الَّذِيْنَ كَفَرُوا الرُّعْبَ بِمَآ اَشْرَكُوْا بِاللّٰهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهٖ سُلْطٰنًا وَمَاْوٰىهُمُ النَّارُ وَبِئْسَ مَثْوَى الظّٰلِمِيْنَ

وَلَقَدْ صَدَقَكُمُ اللّٰهُ وَعْدَه اِذْ تَحُسُّوْنَهُمْ بِاِذْنِه حَتّٰٓى اِذَا فَشِلْتُمْ وَتَنَازَعْتُمْ فِى الْاَمْرِ وَعَصَيْتُمْ مِّنْ بَعْدِ مَآ اَرٰىكُمْ مَّا تُحِبُّوْنَ مِنْكُمْ مَّنْ يُّرِيْدُ الدُّنْيَا وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّرِيْدُ الْاٰخِرَةَ ثُمَّ صَرَفَكُمْ عَنْهُمْ لِيَبْتَلِيَكُمْ وَلَقَدْ عَفَا عَنْكُمْ وَاللّٰهُ ذُوْ فَضْلٍ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ	**152**	और निश्चय ही, अल्लाह ने तुमसे किया हुआ अपना वादा पूरा किया, जब तुम उसकी इजाज़त से उन्हें (दुश्मनों को) मार रहे थे, यहाँ तक कि तुम कमज़ोर पड़ गए और उस मामले में आपस में झगड़ने लगे और रसूल के आदेश को नज़रअंदाज़ कर दिया, जब अल्लाह ने तुम्हें वह दिखाया जो तुम्हें पसंद था। तुम में से कुछ लोग दुनिया चाहते थे और कुछ आख़िरत चाहते थे। फिर अल्लाह ने तुम्हें उनसे दूर कर दिया ताकि तुम्हारी आज़माइश करे, लेकिन उसने तुम्हें माफ कर दिया। और अल्लाह मोमिनों पर बहुत कृपा करता है।
اِذْ تُصْعِدُوْنَ وَلَا تَلْوٗنَ عَلٰٓى اَحَدٍ وَّالرَّسُوْلُ يَدْعُوْكُمْ فِىْٓ اُخْرٰىكُمْ فَاَثَابَكُمْ غَمًّا بِغَمٍّ لِّكَيْلَا تَحْزَنُوْا عَلٰى مَا فَاتَكُمْ وَلَا مَآ اَصَابَكُمْ وَاللّٰهُ خَبِيْرٌ بِمَا تَعْمَلُوْنَ	**153**	(याद करो) जब तुम भागे और किसी की ओर नहीं मुड़े, जबकि रसूल (मुहम्मद) तुम में से दूसरों के बीच तुम्हें पुकार रहा था, तो अल्लाह ने तुम पर एक के बाद एक गम थोपा, ताकि तुम उस चीज के लिए उदास न हो जो तुमसे छूट गई और जो तुम पर आ पड़ी। और अल्लाह तुम्हारे करमों से अच्छी तरह वाकिफ है।
ثُمَّ اَنْزَلَ عَلَيْكُمْ مِّنْ بَعْدِ الْغَمِّ اَمَنَةً نُّعَاسًا يَّغْشٰى طَآئِفَةً مِّنْكُمْ وَطَآئِفَةٌ قَدْ اَهَمَّتْهُمْ اَنْفُسُهُمْ يَظُنُّوْنَ بِاللّٰهِ غَيْرَ الْحَقِّ ظَنَّ الْجَاهِلِيَّةِ يَقُوْلُوْنَ هَلْ لَّنَا مِنَ الْاَمْرِ مِنْ شَىْءٍ قُلْ اِنَّ الْاَمْرَ كُلَّه لِلّٰهِ يُخْفُوْنَ فِىْٓ اَنْفُسِهِمْ مَّا لَا يُبْدُوْنَ لَكَ يَقُوْلُوْنَ لَوْ كَانَ لَنَا مِنَ الْاَمْرِ شَىْءٌ مَّا قُتِلْنَا هٰهُنَا قُلْ لَّوْ كُنْتُمْ فِىْ بُيُوْتِكُمْ لَبَرَزَ الَّذِيْنَ كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقَتْلُ اِلٰى مَضَاجِعِهِمْ وَلِيَبْتَلِىَ اللّٰهُ مَا فِىْ صُدُوْرِكُمْ وَلِيُمَحِّصَ مَا فِىْ قُلُوْبِكُمْ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ	**154**	फिर तुम पर गम पड़ने के बाद, उसने तुम्हें अमन की नींद दी, जो तुम में से एक जमात को घेरे लेती थी, जबकि दूसरी जमात अपनी जान की फिक्र में डूबी थी; वे अल्लाह के बारे में गलत जाहिलाना गुमान कर रहे थे। वे कहते थे, 'क्या इस मामले में हमारा कुछ बस है?' कहो (मुहम्मद), 'निश्चय ही, सारा मामला अल्लाह के हाथ में है।' वे अपने दिलों में वह छुपाते हैं जो तुम्हें नहीं बताते। वे कहते थे, 'काश इस मामले में हमारा कुछ बस होता, तो हम यहाँ मारे (हारे) न जाते।' कहो (मुहम्मद), 'यदि तुम अपने घरों में भी होते, तो जिन लोगों के लिए कत्ल लिखा गया था, वे अपनी कत्ल की जगह की ओर निकलते।' अल्लाह ने (ऐसा किया) ताकि वह आज़माए जो तुम्हारे दिलों में है और जो तुम्हारे दिलों में है उसे शुद्ध करे। और अल्लाह दिलों की बात अच्छी तरह जानता है।
اِنَّ الَّذِيْنَ تَوَلَّوْا مِنْكُمْ يَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعٰنِ اِنَّمَا اسْتَزَلَّهُمُ الشَّيْطٰنُ بِبَعْضِ مَا كَسَبُوْا وَلَقَدْ عَفَا اللّٰهُ عَنْهُمْ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ حَلِيْمٌ	**155**	निश्चय ही, तुम में से जो लोग उस दिन पीछे मुड़ गए, जब दोनों फौजों का सामना हुआ, उन्हें शैतान ने उनकी कुछ (पहली) गलतियों (पापों) की वजह से फिसलाया, लेकिन अल्लाह ने उन्हें माफ कर दिया। निश्चय ही, अल्लाह बहुत क्षमाशील, बहुत सहनशील है।
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَقَالُوْا لِاِخْوَانِهِمْ اِذَا ضَرَبُوْا فِى الْاَرْضِ اَوْ كَانُوْا غُزًّى لَّوْ كَانُوْا عِنْدَنَا مَا مَاتُوْا وَمَا قُتِلُوْا لِيَجْعَلَ اللّٰهُ ذٰلِكَ حَسْرَةً فِىْ قُلُوْبِهِمْ وَاللّٰهُ يُحْىٖ وَيُمِيْتُ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ	**156**	ऐ ईमान वालो! उन काफिरों जैसे न बनो जो अपने भाइयों के बारे में कहते हैं, जब वे धरती पर सफर करते हैं या जंग में जाते हैं, 'यदि वे हमारे साथ रहते, तो न मरते और न मारे जाते।' (ऐसी बातों से) क्योंकि अल्लाह उनके दिलों में पछतावा पैदा करना चाहता था। अल्लाह ज़िंदगी देता है और मौत देता है, और अल्लाह तुम्हारे करमों को देखने वाला है।

وَلَئِنْ قُتِلْتُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَوْ مُتُّمْ لَمَغْفِرَةٌ مِّنَ اللّٰهِ وَرَحْمَةٌ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُوْنَ	और नश्चिय ही, यदि तुम अल्लाह के रास्ते में शहीद हो या मर जाओ, तो अल्लाह की माफी और उसकी रहमत उसस (लूट के माल) से बेहतर है जो वे जमा करते हैं।	**157**
وَلَئِنْ مُّتُّمْ اَوْ قُتِلْتُمْ لَاِلَى اللّٰهِ تُحْشَرُوْنَ	और नश्चिय ही, यदि तुम मरते हो या शहीद हो, तो नश्चिय ही अल्लाह की ओर इकट्ठा कए जाओगे।	**158**
فَبِمَا رَحْمَةٍ مِّنَ اللّٰهِ لِنْتَ لَهُمْ وَلَوْ كُنْتَ فَظًّا غَلِيْظَ الْقَلْبِ لَانْفَضُّوْا مِنْ حَوْلِكَ فَاعْفُ عَنْهُمْ وَاسْتَغْفِرْ لَهُمْ وَشَاوِرْهُمْ فِي الْاَمْرِ فَاِذَا عَزَمْتَ فَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُتَوَكِّلِيْنَ	तो अल्लाह की रहमत की वजह से तू (मुहम्मद) उनके प्रति नरम रहा। यदि तू सख़्त और कठोर दिल का होता, तो वे तेरे आसपास से छटपटाकर चले जाते। इसलिए उन्हें माफ कर और उनके लिए माफी माँग, और उस मामले में उनसे मशवरा कर। फिर, जब तू इरादा पक्का कर लिया, तो अल्लाह पर भरोसा कर। नश्चिय ही, अल्लाह भरोसा करने वालों को पसंद करता है।	**159**
اِنْ يَّنْصُرْكُمُ اللّٰهُ فَلَا غَالِبَ لَكُمْ وَاِنْ يَّخْذُلْكُمْ فَمَنْ ذَا الَّذِيْ يَنْصُرُكُمْ مِّنْ بَعْدِهٖ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ	यदि अल्लाह तुम्हारी मदद करता है, तो कोई तुम्हें हरा नहीं सकता, लकेनि यदि अल्लाह तुम्हें (मदद न दकेर) छोड़ दे, तो उसके बाद कौन तुम्हारी मदद करगेा? इसलिए मोमनिों को कवेल अल्लाह पर भरोसा करना चाहए।	**160**
وَمَا كَانَ لِنَبِيٍّ اَنْ يَّغُلَّ وَمَنْ يَّغْلُلْ يَأْتِ بِمَا غَلَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ثُمَّ تُوَفّٰى كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ	और कसिी नबी के लिए मुमकनि नहीं कि वह (लूट के माल में) खयिानत करे। जो कोई खयिानत करता है, वह कयिामत के दनि अपनी खयिानत के साथ आएगा। फिर हर व्यक्ति को उसका पूरा बदला दयिा जाएगा जो उसने कयिा, और उनका कोई नुकसान नहीं कयिा जाएगा।	**161**
اَفَمَنِ اتَّبَعَ رِضْوَانَ اللّٰهِ كَمَنْ بَاۤءَ بِسَخَطٍ مِّنَ اللّٰهِ وَمَاْوٰىهُ جَهَنَّمُ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ	तो क्या वह व्यक्ति जो अल्लाह की रज़ामंदी का अनुसरण करता है, उस व्यक्ति के समान है जो अल्लाह की नाराज़गी लकेर लौटता है और उसका ठकिाना जहन्नम की नरक है? यह सबसे खराब ठकिाना है।	**162**
هُمْ دَرَجٰتٌ عِنْدَ اللّٰهِ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌ بِمَا يَعْمَلُوْنَ	(उनके) दरज़े अल्लाह के पास अलग-अलग हैं, और अल्लाह उनके करमों को दखेने वाला है।	**163**
لَقَدْ مَنَّ اللّٰهُ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ اِذْ بَعَثَ فِيْهِمْ رَسُوْلًا مِّنْ اَنْفُسِهِمْ يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِهٖ وَيُزَكِّيْهِمْ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَاِنْ كَانُوْا مِنْ قَبْلُ لَفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ	नश्चिय ही, अल्लाह ने मोमनिों पर बहुत कृपा की जब उसने उनके बीच में उनके ही लोगों में से एक रसूल (मुहम्मद) भजेा, जो उन्हें उसकी आयतें पढ़ता है, उनकी (रूहों को) शुद्ध करता है, और उन्हें कतािब (कुरान) और हकिमत (सुन्नत) सखिाता है, हालाकँि पहले वे साफ गुमराही में थे।	**164**
اَوَلَمَّاۤ اَصَابَتْكُمْ مُّصِيْبَةٌ قَدْ اَصَبْتُمْ مِّثْلَيْهَا قُلْتُمْ اَنّٰى هٰذَا قُلْ هُوَ مِنْ عِنْدِ اَنْفُسِكُمْ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ	और तुम्हें (उहद की जंग में) मुसीबत (हार) पड़ने पर क्यों (हरैानी हुई), जबकि तुमने (बदर की जंग में) उनके (दुश्मनों) पर दोगुनी मुसीबत डाली थी, तुमने कहा, 'यह (हार) कहाँ से आई?' कहो, 'यह तुम्हारी अपनी (गलती) की वजह से है।' नश्चिय ही, अल्लाह हर चीज पर कुदरत रखता है।	**165**
وَمَاۤ اَصَابَكُمْ يَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعٰنِ فَبِاِذْنِ اللّٰهِ وَلِيَعْلَمَ الْمُؤْمِنِيْنَ	और जो कुछ तुम पर उस समय पड़ा जब दोनों फौजों का सामना हुआ, वह अल्लाह की इजाजत से था, और ताकि अल्लाह उन लोगों को जाहरि कर दे जो सच्चे ईमान वाले हैं।	**166**

وَلِيَعْلَمَ الَّذِيْنَ نَافَقُوْا وَقِيْلَ لَهُمْ تَعَالَوْا قَاتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَوِ ادْفَعُوْا قَالُوْا لَوْ نَعْلَمُ قِتَالًا لَّاتَّبَعْنٰكُمْ هُمْ لِلْكُفْرِ يَوْمَىِٕذٍ اَقْرَبُ مِنْهُمْ لِلْاِيْمَانِ يَقُوْلُوْنَ بِاَفْوَاهِهِمْ مَّا لَيْسَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا يَكْتُمُوْنَ	और ताकि वह उन लोगों को जाहिर कर दे जो मुनाफिक हैं उनसे कहा गया, 'आओ, अल्लाह के रास्ते में जंग करो या (कम से कम) बचाव करो।' उन्होंने कहा, 'यदि हमें जंग का इल्म होता, तो हम ज़रूर तुम्हारे पीछे आते।' वे उस दिन ईमान से ज़्यादा कुफ्र के करीब थे। वे अपने मुँह से वह कहते हैं जो उनके दिलों में नहीं है और अल्लाह अच्छी तरह जानता है कि वे क्या छुपाते हैं।	**167**
اَلَّذِيْنَ قَالُوْا لِاِخْوَانِهِمْ وَقَعَدُوْا لَوْ اَطَاعُوْنَا مَا قُتِلُوْا قُلْ فَادْرَءُوْا عَنْ اَنْفُسِكُمُ الْمَوْتَ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ	(वे वही लोग हैं जो अपने भाइयों के बारे में कहते हैं, और वे जंग में नहीं गए, 'यदि उन्होंने हमारी बात मानी होती, तो वे मारे न जाते।' कहो, 'तो अपनी मौत को अपने से टाल दो, यदि तुम सच्चे हो।'	**168**
وَلَا تَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ قُتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَمْوَاتًا بَلْ اَحْيَاۤءٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ يُرْزَقُوْنَ	और जो लोग अल्लाह के रास्ते में शहीद हुए, उन्हें कभी मरा हुआ न समझो; बल्कि वे अपने रब के पास जीवित हैं, और उन्हें रिज़्क़ दिया जाता है,	**169**
فَرِحِيْنَ بِمَاۤ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ وَيَسْتَبْشِرُوْنَ بِالَّذِيْنَ لَمْ يَلْحَقُوْا بِهِمْ مِّنْ خَلْفِهِمْ اَلَّا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ	वे उस नेअमत से खुश हैं जो अल्लाह ने उन्हें दी, और उन लोगों के लिए खुश हैं जो अभी उनके पीछे हैं और उन्हें नहीं मिले, कि उन पर न तो कोई डर है और न वे उदास होंगे।	**170**
يَسْتَبْشِرُوْنَ بِنِعْمَةٍ مِّنَ اللّٰهِ وَفَضْلٍ وَّاَنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيْعُ اَجْرَ الْمُؤْمِنِيْنَ	वे अल्लाह की नेअमत और कृपा से खुश हैं और निश्चय ही, अल्लाह ईमान वालों का बदला जाया नहीं करता,	**171**
اَلَّذِيْنَ اسْتَجَابُوْا لِلّٰهِ وَالرَّسُوْلِ مِنْۢ بَعْدِ مَاۤ اَصَابَهُمُ الْقَرْحُ لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوْا مِنْهُمْ وَاتَّقَوْا اَجْرٌ عَظِيْمٌ	(वही) लोग जो अल्लाह और रसूल की आज्ञा मानते हैं, हालाँकि उन्हें (उहुद की जंग में) चोट लगी थी। उनमें से जो लोग नेकी करते हैं और तकवा रखते हैं, उनके लिए बहुत बड़ा बदला है।	**172**
اَلَّذِيْنَ قَالَ لَهُمُ النَّاسُ اِنَّ النَّاسَ قَدْ جَمَعُوْا لَكُمْ فَاخْشَوْهُمْ فَزَادَهُمْ اِيْمَانًا وَّقَالُوْا حَسْبُنَا اللّٰهُ وَنِعْمَ الْوَكِيْلُ	(वही) लोग जिनसे कुछ लोगों ने कहा, 'लोगों (क़ुरैश ने) तुम्हारे ख़िलाफ़ फौज इकट्ठी की है, इसलिए उनसे डरो,' लेकिन इससे उनकी (ईमान की) ताकत और बढ़ गई और उन्होंने जवाब दिया, 'हमारे लिए अल्लाह काफी है और वह सबसे अच्छा संरक्षक है।'	**173**
فَانْقَلَبُوْا بِنِعْمَةٍ مِّنَ اللّٰهِ وَفَضْلٍ لَّمْ يَمْسَسْهُمْ سُوْۤءٌ وَّاتَّبَعُوْا رِضْوَانَ اللّٰهِ وَاللّٰهُ ذُوْ فَضْلٍ عَظِيْمٍ	तो वे अल्लाह की नेअमत और बड़ी कृपा के साथ लौटे, उन्हें कोई मुसीबत नहीं छुई और उन्होंने अल्लाह की रज़ामंदी का अनुसरण किया। अल्लाह बहुत बड़ी कृपा का मालिक है।	**174**
اِنَّمَا ذٰلِكُمُ الشَّيْطٰنُ يُخَوِّفُ اَوْلِيَاۤءَهٗ فَلَا تَخَافُوْهُمْ وَخَافُوْنِ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ	निश्चय ही, वह केवल शैतान है जो अपने दोस्तों को डराता है, तो तुम उनसे न डरो, बल्कि यदि तुम ईमान वाले हो, तो मुझसे डरो।	**175**

وَلَا يَحْزُنْكَ الَّذِيْنَ يُسَارِعُوْنَ فِى الْكُفْرِ اِنَّهُمْ لَنْ يَّضُرُّوا اللّٰهَ شَيْـًٔا يُرِيْدُ اللّٰهُ اَلَّا يَجْعَلَ لَهُمْ حَظًّا فِى الْاٰخِرَةِ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ	**176**	और जो लोग जलद़बाज़ी म॑ काफ़रि बन जात॑ ह॑, व॑ तमुह॑ (महुमम़द) परशेान न कर॑, नशि़चय ही व॑ अलल़ाह को ज़रा भी नक़ुसान नहीं पहचुँात। अलल़ाह उनह॑ आख़रित म॑ कोई हसिस़ा नहीं दगेा, और उनक॑ लएि कठोर सजा ह॑।
اِنَّ الَّذِيْنَ اشْتَرَوُا الْكُفْرَ بِالْاِيْمَانِ لَنْ يَّضُرُّوا اللّٰهَ شَيْـًٔا وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ	**177**	नशि़चय ही, जो लोग ईमान क॑ बदल॑ कफ़ुर ख़रीदत॑ ह॑, व॑ अलल़ाह को ज़रा भी नक़ुसान नहीं पहचुँात॑, और उनक॑ लएि कठोर सजा ह॑।
وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَنَّمَا نُمْلِيْ لَهُمْ خَيْرٌ لِّاَنْفُسِهِمْ اِنَّمَا نُمْلِيْ لَهُمْ لِيَزْدَادُوْٓا اِثْمًا وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ	**178**	और काफ़रिों को यह न समझना चाहएि कि हम जो उनह॑ मोहलत द॑ रह॑ ह॑, वह उनक॑ लएि बहेतर ह॑। हम उनह॑ मोहलत इसलएि द॑ रह॑ ह॑ ताकि उनक॑ गनुाह बढ़॑, और उनक॑ लएि अपमानजनक सजा ह॑।
مَا كَانَ اللّٰهُ لِيَذَرَ الْمُؤْمِنِيْنَ عَلٰى مَآ اَنْتُمْ عَلَيْهِ حَتّٰى يَمِيْزَ الْخَبِيْثَ مِنَ الطَّيِّبِ وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُطْلِعَكُمْ عَلَى الْغَيْبِ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَجْتَبِيْ مِنْ رُّسُلِهٖ مَنْ يَّشَاۤءُ فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ وَاِنْ تُؤْمِنُوْا وَتَتَّقُوْا فَلَكُمْ اَجْرٌ عَظِيْمٌ	**179**	अलल़ाह ईमान वालों को तमुहारी इस हालत म॑ नहीं छोड़गेा, जब तक कि वह बरु॑ को अचछ॑ स॑ अलग न कर द॑। अलल़ाह तमुह॑ ग़बै की बात॑ नहीं दखिाएगा, लकेनि अलल़ाह अपन॑ रसलूों म॑ स॑ जसि॑ चाहता ह॑, चन॑ लेता ह॑। इसलएि अलल़ाह और उसक॑ रसलूों पर ईमान लाओ। और यदि तमु ईमान लात॑ हो और तकवा रखत॑ हो, तो तमुह॑ बहत॒ बड़ा बदला मलिगेा।
وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ يَبْخَلُوْنَ بِمَآ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ هُوَ خَيْرًا لَّهُمْ بَلْ هُوَ شَرٌّ لَّهُمْ سَيُطَوَّقُوْنَ مَا بَخِلُوْا بِهٖ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَلِلّٰهِ مِيْرَاثُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ	**180**	और जो लोग उस चीज म॑ कंजूसी करत॑ ह॑ जो अलल़ाह न॑ अपनी कपृा स॑ उनह॑ दी, उनह॑ यह न समझना चाहएि कि यह उनक॑ लएि अचछा ह॑, बलक़ि यह उनक॑ लएि बरु॒ा ह॑। जो कछु व॑ कंजूसी करत॑ ह॑, वह कयिामत क॑ दनि उनक॑ गल॑ म॑ डाल दयिा जाएगा। आकाश और धरती की मीरास अलल़ाह की ह॑। और अलल़ाह तमुहार॑ कर्मों स॑ अचछी तरह वाकफि ह॑।
لَقَدْ سَمِعَ اللّٰهُ قَوْلَ الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّ اللّٰهَ فَقِيْرٌ وَّنَحْنُ اَغْنِيَاۤءُ سَنَكْتُبُ مَا قَالُوْا وَقَتْلَهُمُ الْاَنْۢبِيَاۤءَ بِغَيْرِ حَقٍّ وَّنَقُوْلُ ذُوْقُوْا عَذَابَ الْحَرِيْقِ	**181**	नशि़चय ही, अलल़ाह न॑ उन लोगों (यहद़ियों) की बात सनु॒ी जो कहत॑ ह॑, 'अलल़ाह गरीब ह॑ और हम अमीर ह॑।' हम उनकी बात॑ और उनक॑ नबयिों को बना हक मारन॑ को लख़ि लगे॑, और हम कहगे॑, 'जलती हई॒ आग की सजा भोगो।'
ذٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْكُمْ وَاَنَّ اللّٰهَ لَيْسَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ	**182**	यह तमुहार॑ अपन॑ हाथों की कमाई की वजह स॑ ह॑, और नशि़चय ही, अलल़ाह अपन॑ बनद़ों पर जलु़म नहीं करता।
اَلَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّ اللّٰهَ عَهِدَ اِلَيْنَآ اَلَّا نُؤْمِنَ لِرَسُوْلٍ حَتّٰى يَاْتِيَنَا بِقُرْبَانٍ تَاْكُلُهُ النَّارُ قُلْ قَدْ جَاۤءَكُمْ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِيْ بِالْبَيِّنٰتِ وَبِالَّذِيْ قُلْتُمْ فَلِمَ قَتَلْتُمُوْهُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ	**183**	(वही) लोग (यहद़ी) जो कहत॑ ह॑, 'नशि़चय ही, अलल़ाह न॑ हम॑ आदशे दयिा कि हम कसिी रसलू पर ईमान न लाए॑, जब तक कि वह हमार॑ लएि ऐसी क़रुबानी न लाए जो आग स॑ खाई जाए।' कहो (महुमम़द), 'मझुस॑ पहल॑ कई रसलू तमुहार॑ पास साफ-साफ सबतू और वह चीज लकेर आए जो तमु कहत॑ हो, फरि तमुन॑ उनह॑ क॑यों मार डाला, यदि तमु सचच॑ हो?'

فَاِنْ كَذَّبُوْكَ فَقَدْ كُذِّبَ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِكَ جَاۤءُوْ بِالْبَيِّنٰتِ وَالزُّبُرِ وَالْكِتٰبِ الْمُنِيْرِ	तो यदि उनहोंने तुझे (मुहम्मद) झुठलाया, तो (जान लो) तुझसे पहले के रसूलों को भी झुठलाया गया, जो साफ-साफ मुकजिज़ात, जबूर और रोशनी देने वाली किताब लाए थे।	**184**
كُلُّ نَفْسٍ ذَاۤىِٕقَةُ الْمَوْتِ وَاِنَّمَا تُوَفَّوْنَ اُجُوْرَكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فَمَنْ زُحْزِحَ عَنِ النَّارِ وَاُدْخِلَ الْجَنَّةَ فَقَدْ فَازَ وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَاۤ اِلَّا مَتَاعُ الْغُرُوْرِ	हर पराणी को मौत का सवाद चखना है और कवेल कयिामत के दिन ही तुमहारा पूरा बदला दिया जाएगा। जो कोई नरक से दूर रखा गया और जननत में दाखिल किया गया, उसने निशचय ही कामयाबी हासिल की। दुनिया की ज़िंदगी कवेल धोखे का सुख है।	**185**
لَتُبْلَوُنَّ فِيْۤ اَمْوَالِكُمْ وَاَنْفُسِكُمْ وَلَتَسْمَعُنَّ مِنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَمِنَ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْۤا اَذًى كَثِيْرًا وَاِنْ تَصْبِرُوْا وَتَتَّقُوْا فَاِنَّ ذٰلِكَ مِنْ عَزْمِ الْاُمُوْرِ	तुमहारी समपतति और तुमहारी जान में निशचय ही आज़माइश होगी। और तुम उन लोगों से, जिनहें तुमसे पहले किताब दी गई थी और मुशरिकों से, बहुत सी दिल दुखाने वाली बात सुनोगे। यदि तुम धरैय रखते हो और तकवा अपनाते हो, तो निशचय ही यह बहुत महतवपूरण मामलों में से है।	**186**
وَاِذْ اَخَذَ اللّٰهُ مِيْثَاقَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ لَتُبَيِّنُنَّهٗ لِلنَّاسِ وَلَا تَكْتُمُوْنَهٗ فَنَبَذُوْهُ وَرَاۤءَ ظُهُوْرِهِمْ وَاشْتَرَوْا بِهٖ ثَمَنًا قَلِيْلًا فَبِئْسَ مَا يَشْتَرُوْنَ	और (याद करो), जब अललाह ने उन लोगों से वादा लिया जिनहें किताब दी गई थी, (यानी), 'तुम इस लोगों के सामने जरूर बयान करोग, और इसे छपिाओग नहीं,' फिर उनहोंने (उस वादे को) अपनी पीठ पीछे फेके दिया और उसे ससते दामों में बेचे दिया। तो यह बहुत खराब सौदा है जो उनहोंने किया।	**187**
لَا تَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ يَفْرَحُوْنَ بِمَاۤ اَتَوْا وَّيُحِبُّوْنَ اَنْ يُّحْمَدُوْا بِمَا لَمْ يَفْعَلُوْا فَلَا تَحْسَبَنَّهُمْ بِمَفَازَةٍ مِّنَ الْعَذَابِ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ	कभी यह न समझो कि जो लोग अपने किए हुए पर खुश होते हैं और उस काम के लिए तारीफ चाहते हैं जो उनहोंने नहीं किया, वे सजा से बच जाएँगे। उनके लिए कठोर सजा है।	**188**
وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ	और आकाश और धरती की सलतनत अललाह की है, और अललाह हर चीज पर कुदरत रखता है।	**189**
اِنَّ فِيْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاخْتِلَافِ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ لَاٰيٰتٍ لِّاُولِى الْاَلْبَابِ	निशचय ही, आकाश और धरती की रचना में, और रात और दिन के बदलने में, बुदधिमान लोगों के लिए (अललाह की कुदरत की) निशानियाँ हैं,	**190**
الَّذِيْنَ يَذْكُرُوْنَ اللّٰهَ قِيَامًا وَّقُعُوْدًا وَّعَلٰى جُنُوْبِهِمْ وَيَتَفَكَّرُوْنَ فِيْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ رَبَّنَا مَا خَلَقْتَ هٰذَا بَاطِلًا سُبْحٰنَكَ فَقِنَا عَذَابَ النَّارِ	(वही) लोग जो खड़े, बैठे या लेटे हुए अललाह को याद करते हैं, और आकाश और धरती की रचना के बारे में सोचते हैं (और कहते हैं), 'हमारे रब, तूने यह सब वयरथ नहीं बनाया, तू पवितर है, हमें नरक की सजा से बचा।'	**191**
رَبَّنَاۤ اِنَّكَ مَنْ تُدْخِلِ النَّارَ فَقَدْ اَخْزَيْتَهٗ وَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ اَنْصَارٍ	'हमारे रब, निशचय ही, जिसे तू नरक में डालेगा, उसे तूने अपमानित किया, और ज़ालिमों के लिए कोई सहायक नहीं है।'	**192**

193	ऐ हमार रेब! हमन उन लोगों को सुना जिन्होंन ईमान की ओर पुकारा, "अपन रेब पर ईमान लाओ।" तो हम भी ईमान लाए। ऐ हमार रेब! हमार गुनाहों को क्षमा कर द और हमारी ग़लतियों को मिटा द, और हम भी उन लोगों क साथ मार डाल जो इबादत करन वालों स क़त्ल कर द।	رَبَّنَآ اِنَّنَا سَمِعْنَا مُنَادِيًا يُّنَادِيْ لِلْاِيْمَانِ اَنْ اٰمِنُوْا بِرَبِّكُمْ فَاٰمَنَّا رَبَّنَا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَكَفِّرْ عَنَّا سَيِّاٰتِنَا وَتَوَفَّنَا مَعَ الْاَبْرَارِ
194	'हमार रेब, हम वह द जो तू अपन रसूलों क ज़रिए हमस वादा कयि था। और कयामत क दिन हम अपमानित न कर। निश्चय ही, तू अपन वाद क ख़लाफ नहीं जाता।'	رَبَّنَا وَاٰتِنَا مَا وَعَدْتَّنَا عَلٰى رُسُلِكَ وَلَا تُخْزِنَا يَوْمَ الْقِيٰمَةِ اِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِيْعَادَ
195	तो उनक रेब न उनकी दुआ कबूल की (और फरमाया), 'निश्चय ही, म तुम म स किसी भी अमल करन वाल का अमल ज़ाया नहीं करता, चाह वह मरद हो या औरत, (क्योंकी) तुम एक-दूसर स हो। तो जिन लोगों न हिजरत की, जिन्हें उनक घरों स निकाला गया, जिन्हें मेरे रास्त म सताया गया, जो लड़े और मार गए, म निश्चय ही उनकी गलतियों को मिटा दूँगा और उन्हें ऐसी जन्नतों म दाखिल करूँगा जिनक नीच नदियाँ बहती हैं, यह अल्लाह की ओर स बदला है और अल्लाह क पास सबस अच्छा बदला है'	فَاسْتَجَابَ لَهُمْ رَبُّهُمْ اَنِّيْ لَآ اُضِيْعُ عَمَلَ عَامِلٍ مِّنْكُمْ مِّنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى بَعْضُكُمْ مِّنْ بَعْضٍ فَالَّذِيْنَ هَاجَرُوْا وَاُخْرِجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ وَاُوْذُوْا فِيْ سَبِيْلِيْ وَقٰتَلُوْا وَقُتِلُوْا لَاُكَفِّرَنَّ عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ وَلَاُدْخِلَنَّهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ثَوَابًا مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ وَاللّٰهُ عِنْدَه حُسْنُ الثَّوَابِ
196	काफरों की (नकेयों स भरी) गतविधियों स तू धोख म न आए जो सार मुल्क़ म (हो रही हैं)।	لَا يَغُرَّنَّكَ تَقَلُّبُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِى الْبِلَادِ
197	यह कवेल थोड़े समय का सुख है, फिर उनका ठिकाना जहन्नम की नरक है और यह सबस ख़राब ठिकाना है	مَتَاعٌ قَلِيْلٌ ثُمَّ مَأْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ وَبِئْسَ الْمِهَادُ
198	लकेनि जो लोग अपन रेब स डरत हैं, उनक लिए ऐसी जन्नत है जिनक नीच नदयिाँ बहती हैं, व उसम हमशेा रहगे, यह अल्लाह की ओर स मेहेमाननवाज़ी है और जो कछु अल्लाह क पास है, वह नके लोगों क लिए बहेतर है	لٰكِنِ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ لَهُمْ جَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا نُزُلًا مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ وَمَا عِنْدَ اللّٰهِ خَيْرٌ لِّلْاَبْرَارِ
199	और निश्चय ही, अहल कताब म स कछु लोग ऐस हैं जो अल्लाह पर और जो कछु तुम पर और उन पर उतारा गया, उस पर ईमान लात हैं, क्योंकि व अल्लाह क सामन झुकत हैं, और व अल्लाह की आयतों को सस्त दामों म नहीं बचेत। उनक लिए उनक रेब क पास उनका बदला है। निश्चय ही, अल्लाह बहुत जल्द हसिाब करन वाला है	وَاِنَّ مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ لَمَنْ يُّؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ وَمَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِمْ خٰشِعِيْنَ لِلّٰهِ لَا يَشْتَرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ثَمَنًا قَلِيْلًا اُولٰٓئِكَ لَهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ اِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ
200	ऐ ईमान वालो! धरैय रखो और अपन धरैय को मज़बूत करो और (अपन मुल्क़ की सरहद पर) तयैार रहो और अल्लाह स डरो ताकि तुम कामयाब हो।	يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اصْبِرُوْا وَصَابِرُوْا وَرَابِطُوْا وَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ

छदों की सख़्या	اَلنِّسَاء	मदनी
१७६	एक-नसिा - 4	मदनी

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

एक-नसिा (महलिाएँ)

1	ह मानवो! अपन पर्भ ुस डरत रहो, जसिन तमुह एक आतम्ा (आदम) स बनाया, और उसन उसी स उसकी जोड़ी (हव्वा) बनाई; और उन दोनों स उसन बहत्ु सार पर्ुष और सत्रयिाँ फलैाईं। अल्लाह स डरत रहो, जसिक नाम पर तम्ु एक-दसू र स माँगत हो, और रशि्तदेारी क बंधन को बनाए रखो। नशि्चय ही अल्लाह हमशे ा तमुहारी दखेभाल और नगिरानी करता ह।	يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمُ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ وَّخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالًا كَثِيْرًا وَّنِسَآءً وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِيْ تَسَآءَلُوْنَ بِهٖ وَالْاَرْحَامَ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيْبًا
2	और अनाथ बच्चों को उनकी सपंत्त दे दो, अच्छ को बर्ु क साथ न बदलो, और उनकी सपंत्त को अपनी सपंत्त क साथ न खाओ। नशि्चय ही, यह एक बड़ा पाप ह।	وَاٰتُوا الْيَتٰمٰۤى اَمْوَالَهُمْ وَلَا تَتَبَدَّلُوا الْخَبِيْثَ بِالطَّيِّبِ وَلَا تَاْكُلُوْۤا اَمْوَالَهُمْ اِلٰۤى اَمْوَالِكُمْ اِنَّهٗ كَانَ حُوْبًا كَبِيْرًا
3	यद तमुह डर ह कि तमु अनाथ लड़कयिों क पर्त न्याय नहीं कर पाओग,े तो उन अन्य सत्रयिों स ववािह करो जो तमुह पसंद हों: दो, तीन या चार। लकेनि यद तमुह डर ह कि तमु न्याय नहीं कर पाओग,े तो कवेल एक स ही ववािह करो, या उन दासयिों स जो तमुहार पास ह। यह तमुह अन्याय करन स रोकन के लएि अधकि नकिट ह।	وَاِنْ خِفْتُمْ اَلَّا تُقْسِطُوْا فِى الْيَتٰمٰى فَانْكِحُوْا مَا طَابَ لَكُمْ مِّنَ النِّسَآءِ مَثْنٰى وَثُلٰثَ وَرُبٰعَ فَاِنْ خِفْتُمْ اَلَّا تَعْدِلُوْا فَوَاحِدَةً اَوْ مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ ذٰلِكَ اَدْنٰۤى اَلَّا تَعُوْلُوْا
4	और सत्रयिों को उनकी महेर (दहजे) पूरी इच्छा क साथ दो। फरि, यद वे अपनी खशु ी स उसका कछु हसि्सा तमुह दे दें, तो उस स्वीकार करो और उसका आनंद लो।	وَاٰتُوا النِّسَآءَ صَدُقٰتِهِنَّ نِحْلَةً فَاِنْ طِبْنَ لَكُمْ عَنْ شَيْءٍ مِّنْهُ نَفْسًا فَكُلُوْهُ هَنِيْٓـًٔا مَّرِيْٓـًٔا
5	और उन लोगों को उनकी सपंत्त न दो जनिका दमिाग अभी पूर्ण रूप स वकिसति नहीं हुआ ह, जो सपंत्त अल्लाह न तमुहार जीवन का आधार बनाया ह। उनकी सपंत्त स उनह भोजन और वस्त्र दो और उनक साथ अच्छ शब्दों म बात करो।	وَلَا تُؤْتُوا السُّفَهَآءَ اَمْوَالَكُمُ الَّتِىْ جَعَلَ اللّٰهُ لَكُمْ قِيٰمًا وَّارْزُقُوْهُمْ فِيْهَا وَاكْسُوْهُمْ وَقُوْلُوْا لَهُمْ قَوْلًا مَّعْرُوْفًا
6	और अनाथ बच्चों का परीक्षण करो जब तक व ेववािह क लएि पर्याप्त आय ुक न हो जाएँ। फरि यद तमुह लगता ह कि व ेबद्धमिान हो गए ह, तो उनकी सपंत्त उनह सौंप दो। उनकी सपंत्त को अनचु ति रूप स न खाओ और न ही जलदबाजी म जो सक्षम ह, उस अनाथों की सपंत्त खान स बचना चाहए, और जो गरीब ह, वह उचति तरीक स उसका उपयोग कर सकता ह। और जब तम्ु उनकी सपंत्त उनह सौंपो, तो गवाहों को शामलि करो। और अल्लाह पर्याप्त ह नगिरानी करन वाला।	وَابْتَلُوا الْيَتٰمٰى حَتّٰۤى اِذَا بَلَغُوا النِّكَاحَ فَاِنْ اٰنَسْتُمْ مِّنْهُمْ رُشْدًا فَادْفَعُوْٓا اِلَيْهِمْ اَمْوَالَهُمْ وَلَا تَاْكُلُوْهَآ اِسْرَافًا وَّبِدَارًا اَنْ يَّكْبَرُوْا وَمَنْ كَانَ غَنِيًّا فَلْيَسْتَعْفِفْ وَمَنْ كَانَ فَقِيْرًا فَلْيَاْكُلْ بِالْمَعْرُوْفِ فَاِذَا دَفَعْتُمْ اِلَيْهِمْ اَمْوَالَهُمْ فَاَشْهِدُوْا عَلَيْهِمْ وَكَفٰى بِاللّٰهِ حَسِيْبًا

7	पुरुषों के लिए उनके माता-पिता और रिश्तेदारों की विरासत में हिस्सा है, और स्त्रियों के लिए भी उनके माता-पिता और रिश्तेदारों की विरासत में हिस्सा है, चाहे वह कम हो या अधिक, जो हिस्सा निर्धारित किया गया है।	لِلرِّجَالِ نَصِيْبٌ مِّمَّا تَرَكَ الْوَالِدٰنِ وَالْاَقْرَبُوْنَ وَلِلنِّسَاۤءِ نَصِيْبٌ مِّمَّا تَرَكَ الْوَالِدٰنِ وَالْاَقْرَبُوْنَ مِمَّا قَلَّ مِنْهُ اَوْ كَثُرَ نَصِيْبًا مَّفْرُوْضًا
8	और जब विरासत का बँटवारा हो रहा हो और कुछ रिश्तेदार, अनाथ और गरीब लोग मौजूद हों, तो उन्हें उस संपत्ति से कुछ दो और उनके साथ अच्छे शब्दों में बात करो।	وَاِذَا حَضَرَ الْقِسْمَةَ اُولُوا الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنُ فَارْزُقُوْهُمْ مِّنْهُ وَقُوْلُوْا لَهُمْ قَوْلًا مَّعْرُوْفًا
9	और उन लोगों को डरना चाहिए (अल्लाह से) जो यदि अपने पीछे कमजोर संतान छोड़ जाएँ, तो उनकी चिंता करो। इसलिए अल्लाह से डरें और सत्य वचन बोलो।	وَلْيَخْشَ الَّذِيْنَ لَوْ تَرَكُوْا مِنْ خَلْفِهِمْ ذُرِّيَّةً ضِعٰفًا خَافُوْا عَلَيْهِمْ فَلْيَتَّقُوا اللّٰهَ وَلْيَقُوْلُوْا قَوْلًا سَدِيْدًا
10	निश्चय ही, जो लोग अनाथों की संपत्ति को अन्यायपूर्वक खाते हैं, वे अपने पेट में आग भर रहे हैं और वे जलती हुई नरक की आग में प्रवेश करेंगे।	اِنَّ الَّذِيْنَ يَاْكُلُوْنَ اَمْوَالَ الْيَتٰمٰى ظُلْمًا اِنَّمَا يَاْكُلُوْنَ فِيْ بُطُوْنِهِمْ نَارًا ۗ وَسَيَصْلَوْنَ سَعِيْرًا
11	अल्लाह तुम्हें तुम्हारे बच्चों के बारे में आदेश देता है, कि एक पुरुष का हिस्सा दो स्त्रियों के हिस्से के बराबर है। यदि सभी बच्चे स्त्रियाँ हों और उनकी संख्या दो से अधिक हो, तो उन्हें छोड़ी गई संपत्ति का दो-तिहाई हिस्सा मिलेगा। यदि वह केवल एक हो, तो उसे आधा हिस्सा मिलेगा। और माता-पिता के लिए, प्रत्येक को छोड़ी गई संपत्ति का छठा हिस्सा मिलेगा, यदि मृतक का बच्चा हो। यदि मृतक का कोई बच्चा न हो और केवल उसके माता-पिता ही वारिस हों, तो उसकी माँ को तीसरा हिस्सा मिलेगा। यदि मृतक के कई भाई-बहन हों, तो उसकी माँ को छठा हिस्सा मिलेगा। ये सभी हिस्से वसीयत पूरी होने या कर्ज़ चुकाने के बाद दिए जाएँगे। तुम्हारे माता-पिता और बच्चों में से, तुम नहीं जानते कि उनमें से कौन तुम्हारे लिए अधिक लाभकारी है। यह अल्लाह का आदेश है। निश्चय ही, अल्लाह सर्वज्ञ, सर्वबुद्धिमान है।	يُوْصِيْكُمُ اللّٰهُ فِيْٓ اَوْلَادِكُمْ لِلذَّكَرِ مِثْلُ حَظِّ الْاُنْثَيَيْنِ ۚ فَاِنْ كُنَّ نِسَاۤءً فَوْقَ اثْنَتَيْنِ فَلَهُنَّ ثُلُثَا مَا تَرَكَ ۚ وَاِنْ كَانَتْ وَاحِدَةً فَلَهَا النِّصْفُ ۗ وَلِاَبَوَيْهِ لِكُلِّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا السُّدُسُ مِمَّا تَرَكَ اِنْ كَانَ لَهٗ وَلَدٌ ۚ فَاِنْ لَّمْ يَكُنْ لَّهٗ وَلَدٌ وَّوَرِثَهٗٓ اَبَوٰهُ فَلِاُمِّهِ الثُّلُثُ ۚ فَاِنْ كَانَ لَهٗٓ اِخْوَةٌ فَلِاُمِّهِ السُّدُسُ مِنْۢ بَعْدِ وَصِيَّةٍ يُّوْصِيْ بِهَآ اَوْ دَيْنٍ ۗ اٰبَاۤؤُكُمْ وَاَبْنَاۤؤُكُمْ لَا تَدْرُوْنَ اَيُّهُمْ اَقْرَبُ لَكُمْ نَفْعًا ۗ فَرِيْضَةً مِّنَ اللّٰهِ ۗ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا حَكِيْمًا

وَلَكُمْ نِصْفُ مَا تَرَكَ اَزْوَاجُكُمْ اِنْ لَّمْ يَكُنْ لَّهُنَّ وَلَدٌ فَاِنْ كَانَ لَهُنَّ وَلَدٌ فَلَكُمُ الرُّبُعُ مِمَّا تَرَكْنَ مِنْ بَعْدِ وَصِيَّةٍ يُّوْصِيْنَ بِهَآ اَوْ دَيْنٍ وَلَهُنَّ الرُّبُعُ مِمَّا تَرَكْتُمْ اِنْ لَّمْ يَكُنْ لَّكُمْ وَلَدٌ فَاِنْ كَانَ لَكُمْ وَلَدٌ فَلَهُنَّ الثُّمُنُ مِمَّا تَرَكْتُمْ مِّنْ بَعْدِ وَصِيَّةٍ تُوْصُوْنَ بِهَآ اَوْ دَيْنٍ وَاِنْ كَانَ رَجُلٌ يُّوْرَثُ كَلٰلَةً اَوِ امْرَاَةٌ وَّلَهٗ اَخٌ اَوْ اُخْتٌ فَلِكُلِّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا السُّدُسُ فَاِنْ كَانُوْٓا اَكْثَرَ مِنْ ذٰلِكَ فَهُمْ شُرَكَآءُ فِى الثُّلُثِ مِنْ بَعْدِ وَصِيَّةٍ يُّوْصٰى بِهَآ اَوْ دَيْنٍ غَيْرَ مُضَآرٍّ وَصِيَّةً مِّنَ اللّٰهِ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَلِيْمٌ	और तुम्हारा (पतियों का) हिस्सा तुम्हारी पत्नियों द्वारा छोड़ी गई संपत्ति का आधा है, यदि उनका कोई बच्चा न हो। यदि उनकी संतान हो, तो तुम्हें उनकी छोड़ी हुई संपत्ति का चौथा हिस्सा मिलेगा, वसीयत पूरी होने या कर्ज़ चुकाने के बाद। पत्नियों को तुम्हारी छोड़ी हुई संपत्ति का चौथा हिस्सा मिलेगा यदि तुम्हारा कोई बच्चा न हो। यदि तुम्हारी संतान हो, तो पत्नियों को तुम्हारी छोड़ी हुई संपत्ति का आठवाँ हिस्सा मिलेगा, वसीयत पूरी होने या कर्ज़ चुकाने के बाद। यदि कोई व्यक्ति, पुरुष हो या स्त्री, मर जाता है, जिसके न तो पिता है और न ही बच्चे, लेकिन उसका एक भाई (सहोदर) या एक बहन (सहोदर) हो, तो उनमें से प्रत्येक को छठा हिस्सा मिलेगा। लेकिन यदि सहोदर भाई-बहन एक से अधिक हों, तो वे तीसरे हिस्से में बराबर के भागीदार होंगे, वसीयत पूरी होने या कर्ज़ चुकाने के बाद, बिना किसी वारिस को नुकसान पहुँचाए। यह अल्लाह का आदेश है। अल्लाह सर्वज्ञ, अति सहनशील है।	12
تِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ يُدْخِلْهُ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا وَذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ	ये अल्लाह की सीमाएँ (कानून) हैं। जो कोई अल्लाह और उसके रसूल का आज्ञापालन करता है, उसे वह स्वर्ग में प्रवेश कराएगा, जिसके नीचे नदियाँ बहती हैं, जहाँ वे हमेशा रहेंगे। और यही सबसे बड़ी जीत है।	13
وَمَنْ يَّعْصِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَيَتَعَدَّ حُدُوْدَهٗ يُدْخِلْهُ نَارًا خَالِدًا فِيْهَا وَلَهٗ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ	और जो कोई अल्लाह और उसके रसूल की अवज्ञा करता है और उसकी सीमाओं का उल्लंघन करता है, उसे अल्लाह नरक की आग में डालेगा, जहाँ वह हमेशा रहेगा और उसे अपमानजनक सजा मिलेगी।	14
وَالّٰتِيْ يَأْتِيْنَ الْفَاحِشَةَ مِنْ نِّسَآئِكُمْ فَاسْتَشْهِدُوْا عَلَيْهِنَّ اَرْبَعَةً مِّنْكُمْ فَاِنْ شَهِدُوْا فَاَمْسِكُوْهُنَّ فِى الْبُيُوْتِ حَتّٰى يَتَوَفّٰهُنَّ الْمَوْتُ اَوْ يَجْعَلَ اللّٰهُ لَهُنَّ سَبِيْلًا	और तुम्हारी स्त्रियों में से जो कोई अश्लील कार्य करे, उनके खिलाफ तुम्हारे चार गवाह होने चाहिए। यदि वे गवाही दे दें, तो उन स्त्रियों को घर में बंद रखो जब तक उनकी मृत्यु न हो जाए, या अल्लाह उनके लिए कोई अन्य रास्ता न दे।	15
وَالَّذٰنِ يَأْتِيٰنِهَا مِنْكُمْ فَاٰذُوْهُمَا فَاِنْ تَابَا وَاَصْلَحَا فَاَعْرِضُوْا عَنْهُمَا اِنَّ اللّٰهَ كَانَ تَوَّابًا رَّحِيْمًا	और तुममें से दो लोग जो अश्लील कार्य करें, उन्हें सजा दो। यदि वे पश्चाताप करें और सुधार करें, तो उन्हें छोड़ दो। निश्चय ही, अल्लाह पश्चाताप स्वीकार करने वाला, दयालु है।	16
اِنَّمَا التَّوْبَةُ عَلَى اللّٰهِ لِلَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ السُّوْٓءَ بِجَهَالَةٍ ثُمَّ يَتُوْبُوْنَ مِنْ قَرِيْبٍ فَاُولٰٓئِكَ يَتُوْبُ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا	निश्चय ही, अल्लाह के पास पश्चाताप केवल उन लोगों के लिए है जो अज्ञानता में बुराई करते हैं, फिर जल्दी पश्चाताप करते हैं। उनका पश्चाताप अल्लाह स्वीकार करता है। अल्लाह सर्वज्ञ, सर्वबुद्धिमान है।	17
وَلَيْسَتِ التَّوْبَةُ لِلَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ السَّيِّاٰتِ حَتّٰٓى اِذَا حَضَرَ اَحَدَهُمُ الْمَوْتُ قَالَ اِنِّيْ تُبْتُ الْـٰٔنَ وَلَا الَّذِيْنَ يَمُوْتُوْنَ وَهُمْ كُفَّارٌ اُولٰٓئِكَ اَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا	और उन लोगों का पश्चाताप स्वीकार नहीं होता जो बुराइयाँ करते रहते हैं, यहाँ तक कि जब उनमें से किसी की मृत्यु का समय आता है, तब वह कहता है, 'अब मैं वास्तव में पश्चाताप करता हूँ।' और न ही उन लोगों का जो काफिर अवस्था में मर जाते हैं। उनके लिए हमने दर्दनाक सजा तैयार की है।	18

19	ह ईमान वालो! तमुहार लिए कसी सत़री को जबरदसती वारसि करना जायज नहीं ह और न ही उनह परेशान करना ताकि तमु उनक दए हुए कछु हसिस को वापस ल सको, सविाय इसक कि उनहोंन सपष्ट अशलील कारय कयि हो। और उनक साथ उचति वय़वहार करो। यदि तमु उनह पसंद नहीं करत, तो धरैय रखो क्योंकि हो सकता ह कि तमु कसी चीज को नापसंद करो, पर अलल़ाह न उसम बहत़ सारी भलाई रखी हो।	يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا يَحِلُّ لَكُمْ اَنْ تَرِثُوا النِّسَاءَ كَرْهًا ۗ وَلَا تَعْضُلُوْهُنَّ لِتَذْهَبُوْا بِبَعْضِ مَآ اٰتَيْتُمُوْهُنَّ اِلَّآ اَنْ يَّأْتِيْنَ بِفَاحِشَةٍ مُّبَيِّنَةٍ ۚ وَعَاشِرُوْهُنَّ بِالْمَعْرُوْفِ ۚ فَاِنْ كَرِهْتُمُوْهُنَّ فَعَسٰٓى اَنْ تَكْرَهُوْا شَيْـًٔا وَّيَجْعَلَ اللّٰهُ فِيْهِ خَيْرًا كَثِيْرًا
20	और यदि तमु अपनी पतनी को दूसरी पतनी स बदलना चाहत हो, और तमुन उनम स कसी एक को बहत़ सारी सपतति दी हो, तो उसका एक भी हसिसा वापस न लो। कय़ा तमु इस झठू आरोपों और सपष्ट पाप क साथ वापस लोग?	وَاِنْ اَرَدْتُّمُ اسْتِبْدَالَ زَوْجٍ مَّكَانَ زَوْجٍ ۙ وَّاٰتَيْتُمْ اِحْدٰىهُنَّ قِنْطَارًا فَلَا تَأْخُذُوْا مِنْهُ شَيْـًٔا ۗ اَتَأْخُذُوْنَهٗ بُهْتَانًا وَّاِثْمًا مُّبِيْنًا
21	और तमु इस कैस वापस ल सकत हो, जबकि तमु एक-दूसर क साथ मलि चक हो। और उनहोंन तमुस मजबूत वचन लयि ह	وَكَيْفَ تَأْخُذُوْنَهٗ وَقَدْ اَفْضٰى بَعْضُكُمْ اِلٰى بَعْضٍ وَّاَخَذْنَ مِنْكُمْ مِّيْثَاقًا غَلِيْظًا
22	और उन सत़रियों स वविाह न करो जनिस तमुहार पति न वविाह कयि था, सविाय इसक कि यह अतीत म हआु हो। नशि़चय ही, यह अत़यंत अशलील और घण़ति कारय ह और सबस खराब रास़ता ह	وَلَا تَنْكِحُوْا مَا نَكَحَ اٰبَاۤؤُكُمْ مِّنَ النِّسَاۤءِ اِلَّا مَا قَدْ سَلَفَ ۗ اِنَّهٗ كَانَ فَاحِشَةً وَّمَقْتًا ۗ وَسَاۤءَ سَبِيْلًا
23	तमुहार लिए नषिदि्ध ह तमुहारी माताएँ, तमुहारी बटेयिाँ, तमुहारी बहन, तमुहारी पति की बहन, तमुहारी माता की बहन, तमुहार भाइयों की बटेयिाँ, तमुहारी बहनों की बटेयिाँ, तमुहारी दूध माताएँ, तमुहारी दूध बहन, तमुहारी पतनयिों की माताएँ, तमुहारी पतनयिों की बटेयिाँ जो तमुहारी दखेरख म ह, जनि पतनयिों क साथ तमुन संसरग कयि ह, लकेनि यदि तमुन अपनी पतनी क साथ संसरग नहीं कयि, तो उनस वविाह करना तमुहार लिए पाप नहीं ह, तमुहार अपन बटेों की पतनयिाँ, और दो बहनों को एक साथ रखना, सविाय इसक कि यह अतीत म हआु हो। नशि़चय ही, अलल़ाह अति क्षमाशील, दयाल ह	حُرِّمَتْ عَلَيْكُمْ اُمَّهٰتُكُمْ وَبَنٰتُكُمْ وَاَخَوٰتُكُمْ وَعَمّٰتُكُمْ وَخٰلٰتُكُمْ وَبَنٰتُ الْاَخِ وَبَنٰتُ الْاُخْتِ وَاُمَّهٰتُكُمُ الّٰتِيْٓ اَرْضَعْنَكُمْ وَاَخَوٰتُكُمْ مِّنَ الرَّضَاعَةِ وَاُمَّهٰتُ نِسَاۤىِٕكُمْ وَرَبَاۤىِٕبُكُمُ الّٰتِيْ فِيْ حُجُوْرِكُمْ مِّنْ نِّسَاۤىِٕكُمُ الّٰتِيْ دَخَلْتُمْ بِهِنَّ ۫ فَاِنْ لَّمْ تَكُوْنُوْا دَخَلْتُمْ بِهِنَّ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ ۫ وَحَلَاۤىِٕلُ اَبْنَاۤىِٕكُمُ الَّذِيْنَ مِنْ اَصْلَابِكُمْ ۙ وَاَنْ تَجْمَعُوْا بَيْنَ الْاُخْتَيْنِ اِلَّا مَا قَدْ سَلَفَ ۗ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا
24	और वविाहति सत़रियों स वविाह करना भी नषिदि्ध ह, सविाय उन दासयिों क जो तमुहार पास ह यह अलल़ाह का वधिान ह इसक अलावा, तमुह अपनी सपतति क साथ वविाह करन की अनमुति ह, न कि वय़भचिार करन की। जनि सत़रियों क साथ तमुन आनंद लयि, उनह उनकी महेर दनेा अनविारय ह महेर तय करन क बाद, यदि तमु आपसी सहमति स कछु और तय करत हो, तो इसम कोई दोष नहीं ह नशि़चय ही, अलल़ाह सरव़ज़्ञ, सरव़बदु्धमिान ह	وَالْمُحْصَنٰتُ مِنَ النِّسَاۤءِ اِلَّا مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ ۚ كِتٰبَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ ۚ وَاُحِلَّ لَكُمْ مَّا وَرَاۤءَ ذٰلِكُمْ اَنْ تَبْتَغُوْا بِاَمْوَالِكُمْ مُّحْصِنِيْنَ غَيْرَ مُسٰفِحِيْنَ ۗ فَمَا اسْتَمْتَعْتُمْ بِهٖ مِنْهُنَّ فَاٰتُوْهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ فَرِيْضَةً ۗ وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيْمَا تَرٰضَيْتُمْ بِهٖ مِنْۢ بَعْدِ الْفَرِيْضَةِ ۗ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا حَكِيْمًا

25	और तुमम`से`जो कोई सवतंत्र ईमान वाली सत्रियों`से`विवाह करन`की सामरथ्य न रखता हो, तो वह उन ईमान वाली दासियों`से`विवाह कर सकता ह`जो तुमहार`पास ह`। अलल़ाह तुमहार`ईमान को जानता ह`। तुम म`से`कुछ दूसर`से ह`, इसलिए उनक`मालकि की अनुमति`से`उनस`विवाह करो और उनह`उचित महेर दो, कयोंकि व`पवित्र बनाए रखन`वाली सत्रिया ँह`, न कि व्यभिचारिणी और न ही ऐसी जो अनय पुरुषों को परेमी बनाएँ। यदि व`विवाहित होन`क`बाद अशलील कारय कर`, तो उनकी सजा सवतंत्र सत्रियों की सजा की आधी होगी। यह उन लोगों क`लिए ह`जो अपनी पवित्रता बनाए रखन`म`कठिनाई स`डरत`ह`। लेकिन यदि तुम धैरय रखत`हो, तो यह तुमहार`लिए बेहतर ह`। अलल़ाह अति कषमाशील, दयाल ह`।	وَمَنْ لَّمْ يَسْتَطِعْ مِنْكُمْ طَوْلًا اَنْ يَّنْكِحَ الْمُحْصَنٰتِ الْمُؤْمِنٰتِ فَمِنْ مَّا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ مِّنْ فَتَيٰتِكُمُ الْمُؤْمِنٰتِ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِاِيْمَانِكُمْ بَعْضُكُمْ مِّنْ بَعْضٍ فَانْكِحُوْهُنَّ بِاِذْنِ اَهْلِهِنَّ وَاٰتُوْهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ بِالْمَعْرُوْفِ مُحْصَنٰتٍ غَيْرَ مُسٰفِحٰتٍ وَّلَا مُتَّخِذٰتِ اَخْدَانٍ فَاِذَآ اُحْصِنَّ فَاِنْ اَتَيْنَ بِفَاحِشَةٍ فَعَلَيْهِنَّ نِصْفُ مَا عَلَى الْمُحْصَنٰتِ مِنَ الْعَذَابِ ذٰلِكَ لِمَنْ خَشِيَ الْعَنَتَ مِنْكُمْ وَاَنْ تَصْبِرُوْا خَيْرٌ لَّكُمْ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ
26	अलल़ाह तुमह`उसक`नियम सपषट करना चाहता ह`, और तुमह`उन लोगों क`रासत`दिखाना चाहता ह`जो तुमस`पहल`थ`, और वह तुमहारा पशचाताप सवीकार करता ह`। अलल़ाह सरवज्ञ, सरवबुदधिमान ह`।	يُرِيْدُ اللّٰهُ لِيُبَيِّنَ لَكُمْ وَيَهْدِيَكُمْ سُنَنَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَيَتُوْبَ عَلَيْكُمْ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ
27	और अलल़ाह तुमहारा पशचाताप सवीकार करना चाहता ह`, जबकि व`लोग जो अपनी इचछाओं का पालन करत`ह`, चाहत`ह`ि कि तुम सतय स`बहुत दूर भटक जाओ।	وَاللّٰهُ يُرِيْدُ اَنْ يَّتُوْبَ عَلَيْكُمْ وَيُرِيْدُ الَّذِيْنَ يَتَّبِعُوْنَ الشَّهَوٰتِ اَنْ تَمِيْلُوْا مَيْلًا عَظِيْمًا
28	अलल़ाह तुमह`राहत देना चाहता ह`, कयोंकि मनुषय कमजोर सवभाव क`साथ बनाया गया ह`।	يُرِيْدُ اللّٰهُ اَنْ يُّخَفِّفَ عَنْكُمْ وَخُلِقَ الْاِنْسَانُ ضَعِيْفًا
29	ह`ईमान वालो! तुम एक-दूसर`की सपतति को गलत तरीक`स`न खाओ, सिवाय इसक`कि यह आपसी सहमति स`वयापार क`माधयम स`हो। और अपनी जान न लो। निशचय ही, अलल़ाह तुमहार`परति अति दयाल ह`।	يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَأْكُلُوْٓا اَمْوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ اِلَّآ اَنْ تَكُوْنَ تِجَارَةً عَنْ تَرَاضٍ مِّنْكُمْ وَلَا تَقْتُلُوْٓا اَنْفُسَكُمْ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِكُمْ رَحِيْمًا
30	और जो कोई कानून तोड़कर और अनयाय क`साथ ऐसा करता ह`, उस`हम नरक म`डालेंगे। यह अलल़ाह क`लिए आसान ह`।	وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ عُدْوَانًا وَّظُلْمًا فَسَوْفَ نُصْلِيْهِ نَارًا وَكَانَ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرًا
31	यदि तुम उन बड़े पापों`स`बचत`हो जिनस`तुमह`मना कयिा गया ह`, तो हम तुमहारी छोटी गलतियों को मिटा दें`गे और तुमह`सममानजनक सथान म`परवेश कराएँगे।	اِنْ تَجْتَنِبُوْا كَبَاۤئِرَ مَا تُنْهَوْنَ عَنْهُ نُكَفِّرْ عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ وَنُدْخِلْكُمْ مُّدْخَلًا كَرِيْمًا
32	और उस अनुगरह क`परति ईरषया न करो जो अलल़ाह न`तुमम`स`कुछ को दूसरों`स`अधिक दिया ह`। पुरुषों क`लिए उनकी कमाई का हिससा ह`, और सत्रियों क`लिए उनकी कमाई का हिससा ह`। अलल़ाह स`उसकी कृपा का कुछ हिससा माँगो। निशचय ही, अलल़ाह हर चीज को जानता ह`।	وَلَا تَتَمَنَّوْا مَا فَضَّلَ اللّٰهُ بِهٖ بَعْضَكُمْ عَلٰى بَعْضٍ لِلرِّجَالِ نَصِيْبٌ مِّمَّا اكْتَسَبُوْا وَلِلنِّسَاۤءِ نَصِيْبٌ مِّمَّا اكْتَسَبْنَ وَسْـَٔلُوا اللّٰهَ مِنْ فَضْلِهٖ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمًا

وَلِكُلٍّ جَعَلْنَا مَوَالِيَ مِمَّا تَرَكَ الْوَالِدٰنِ وَالْاَقْرَبُوْنَ ۗ وَالَّذِيْنَ عَقَدَتْ اَيْمَانُكُمْ فَاٰتُوْهُمْ نَصِيْبَهُمْ ۗ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدًا	**33**	और प्रत्यके क लिए हमन उनक माता-पिता और रिश्तेदारों द्वारा छोड़ गए धन क वारिस नियुक्त किए हैं और जिन लोगों क साथ तुमन मजबूत वचन दिया है, उन्हें उनका हिस्सा दो। निश्चय ही, अल्लाह हर चीज का गवाह है।
اَلرِّجَالُ قَوَّامُوْنَ عَلَى النِّسَاۤءِ بِمَا فَضَّلَ اللّٰهُ بَعْضَهُمْ عَلٰى بَعْضٍ وَّبِمَآ اَنْفَقُوْا مِنْ اَمْوَالِهِمْ ۗ فَالصّٰلِحٰتُ قٰنِتٰتٌ حٰفِظٰتٌ لِّلْغَيْبِ بِمَا حَفِظَ اللّٰهُ ۗ وَالّٰتِيْ تَخَافُوْنَ نُشُوْزَهُنَّ فَعِظُوْهُنَّ وَاهْجُرُوْهُنَّ فِى الْمَضَاجِعِ وَاضْرِبُوْهُنَّ ۚ فَاِنْ اَطَعْنَكُمْ فَلَا تَبْغُوْا عَلَيْهِنَّ سَبِيْلًا ۗ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيًّا كَبِيْرًا	**34**	पुरुष सत्रियों क संरक्षक है, क्योंकि अल्लाह न कुछ को दूसरों पर श्रेष्ठता दी है, और क्योंकि व अपनी संपत्ति स खरच करत हैं। इसलिए धरमी सत्रियाँ व हैं जो आज्ञा मानती हैं और अपन पति की अनुपस्थिति म अपनी रक्षा करती हैं, क्योंकि अल्लाह उनकी रक्षा करता है। जिन सत्रियों क बार म तुम्हें डर है कि व अवज्ञा करेंगी, उन्हें नसीहत दो, उन्हें बिस्तर म अकेला छोड़ दो, और यदि आवश्यक हो, उन्हें हल्क स मारो। लेकिन यदि व तुम्हारी बात मान लें, तो उनक खिलाफ कोई बहाना न ढूँढ़ो। निश्चय ही, अल्लाह सर्वोच्च, महान है।
وَاِنْ خِفْتُمْ شِقَاقَ بَيْنِهِمَا فَابْعَثُوْا حَكَمًا مِّنْ اَهْلِهٖ وَحَكَمًا مِّنْ اَهْلِهَا ۚ اِنْ يُّرِيْدَآ اِصْلَاحًا يُّوَفِّقِ اللّٰهُ بَيْنَهُمَا ۗ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا خَبِيْرًا	**35**	और यदि तुम्हें डर है कि पति-पत्नी क बीच विवाद होगा, तो पुरुष क परिवार स एक मध्यस्थ और सत्री क परिवार स एक मध्यस्थ नियुक्त करो। यदि दोनों सुधार करना चाहत हैं, तो अल्लाह पति-पत्नी को सफलता दगा। निश्चय ही, अल्लाह सूक्ष्मदर्शी, सर्वज्ञ है।
وَاعْبُدُوا اللّٰهَ وَلَا تُشْرِكُوْا بِهٖ شَيْـًٔا وَّبِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا وَّبِذِى الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ وَالْجَارِ ذِى الْقُرْبٰى وَالْجَارِ الْجُنُبِ وَالصَّاحِبِ بِالْجَنْۢبِ وَابْنِ السَّبِيْلِ ۙ وَمَا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ ۗ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ مَنْ كَانَ مُخْتَالًا فَخُوْرًا	**36**	और अल्लाह की इबादत करो और उसक साथ किसी को साझी न बनाओ। और माता-पिता, रिश्तेदारों, अनाथों, गरीबों, नजदीकी और दूर क पड़ोसियों, साथियों, यात्री और तुम्हार दासों क साथ अच्छा व्यवहार करो। निश्चय ही, अल्लाह उन लोगों को पसंद नहीं करता जो घमंडी और आत्ममुग्ध है।
الَّذِيْنَ يَبْخَلُوْنَ وَيَأْمُرُوْنَ النَّاسَ بِالْبُخْلِ وَيَكْتُمُوْنَ مَآ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ ۗ وَاَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابًا مُّهِيْنًا	**37**	व लोग जो कंजूस हैं और दूसरों को भी कंजूसी करन का आदेश दते हैं और उस अनुग्रह को छिपात हैं जो अल्लाह न उन्हें दिया है। हमन काफिरों क लिए अपमानजनक सजा तैयार की है।
وَالَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ رِئَآءَ النَّاسِ وَلَا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَلَا بِالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ۗ وَمَنْ يَّكُنِ الشَّيْطٰنُ لَهٗ قَرِيْنًا فَسَآءَ قَرِيْنًا	**38**	और व लोग जो अपनी संपत्ति दिखाव और दूसरों क सामन प्रशंसा पान क लिए खरच करत हैं और अल्लाह और आखिरी दिन पर विश्वास नहीं करत। जो कोई शैतान को अपना साथी बनाता है, वह बहुत बुरा साथी है।
وَمَاذَا عَلَيْهِمْ لَوْ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَاَنْفَقُوْا مِمَّا رَزَقَهُمُ اللّٰهُ ۗ وَكَانَ اللّٰهُ بِهِمْ عَلِيْمًا	**39**	और उनक लिए क्या आपत्ति होगी यदि व अल्लाह और आखिरी दिन पर विश्वास कर और उस रिज़्क का कुछ हिस्सा खरच कर जो अल्लाह न उन्हें दिया है? अल्लाह उनकी स्थिति को अच्छी तरह जानता है।
اِنَّ اللّٰهَ لَا يَظْلِمُ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ ۚ وَاِنْ تَكُ حَسَنَةً يُّضٰعِفْهَا وَيُؤْتِ مِنْ لَّدُنْهُ اَجْرًا عَظِيْمًا	**40**	निश्चय ही, अल्लाह किसी पर भी एक कण क बराबर भी अन्याय नहीं करता, और यदि कोई अच्छाई हो, तो वह उस कई गुना बढ़ा देता है और अपनी ओर स बड़ा इनाम देता है।

فَكَيْفَ اِذَا جِئْنَا مِنْ كُلِّ اُمَّةٍ بِشَهِيْدٍ وَّجِئْنَا بِكَ عَلٰى هٰٓؤُلَاۤءِ شَهِيْدًا	**41**	और उनकी स्थिति कैसी होगी, जब हम प्रत्येक समुदाय से एक गवाह लाएँगे और तुम्हें उनके ख़िलाफ़ गवाह के रूप में लाएँगे।
يَوْمَئِذٍ يَّوَدُّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَعَصَوُا الرَّسُوْلَ لَوْ تُسَوّٰى بِهِمُ الْاَرْضُ وَلَا يَكْتُمُوْنَ اللّٰهَ حَدِيْثًا	**42**	उस दिन, जो लोग काफ़िर हैं और रसूल की अवज्ञा करते हैं, वे चाहेंगे कि काश उन्हें धरती के साथ समतल कर दिया जाए, जबकि वे अल्लाह से कोई भी घटना छिपा नहीं सकते।
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَقْرَبُوا الصَّلٰوةَ وَاَنْتُمْ سُكٰرٰى حَتّٰى تَعْلَمُوْا مَا تَقُوْلُوْنَ وَلَا جُنُبًا اِلَّا عَابِرِيْ سَبِيْلٍ حَتّٰى تَغْتَسِلُوْا وَاِنْ كُنْتُمْ مَّرْضٰٓى اَوْ عَلٰى سَفَرٍ اَوْ جَاۤءَ اَحَدٌ مِّنْكُمْ مِّنَ الْغَاۤئِطِ اَوْ لٰمَسْتُمُ النِّسَاۤءَ فَلَمْ تَجِدُوْا مَاۤءً فَتَيَمَّمُوْا صَعِيْدًا طَيِّبًا فَامْسَحُوْا بِوُجُوْهِكُمْ وَاَيْدِيْكُمْ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَفُوًّا غَفُوْرًا	**43**	हे ईमान वालो! नशे की हालत में नमाज़ के पास न जाओ, जब तक तुम्हें यह न पता हो कि तुम क्या कह रहे हो, और न ही जनुबु की हालत में, सिवाय इसके कि तुम केवल रास्ते से गुज़र रहे हो, जब तक तुम नहा न लो। और यदि तुम बीमार हो या यात्रा पर हो, या तुममें से कोई शौच से आए, या तुमने अपनी पत्नी के साथ संसर्ग किया हो और तुम्हें पानी न मिले, तो सुथरी मिट्टी से तयम्मुम करो; अपने चेहरों और हाथों को उससे मल लो। निश्चय ही, अल्लाह अति क्षमाशील, दयालु है।
اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ اُوْتُوْا نَصِيْبًا مِّنَ الْكِتٰبِ يَشْتَرُوْنَ الضَّلٰلَةَ وَيُرِيْدُوْنَ اَنْ تَضِلُّوا السَّبِيْلَ	**44**	क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जिन्हें किताब का हिस्सा दिया गया था? वे भटकाव को ख़रीदते हैं और चाहते हैं कि तुम भी सही रास्ते से भटक जाओ।
وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِاَعْدَاۤئِكُمْ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَلِيًّا وَّكَفٰى بِاللّٰهِ نَصِيْرًا	**45**	और अल्लाह तुम्हारे दुश्मनों को बेहतर जानता है। अल्लाह रक्षक के रूप में और सहायक के रूप में पर्याप्त है।
مِنَ الَّذِيْنَ هَادُوْا يُحَرِّفُوْنَ الْكَلِمَ عَنْ مَّوَاضِعِهٖ وَيَقُوْلُوْنَ سَمِعْنَا وَعَصَيْنَا وَاسْمَعْ غَيْرَ مُسْمَعٍ وَّرَاعِنَا لَيًّا بِاَلْسِنَتِهِمْ وَطَعْنًا فِى الدِّيْنِ وَلَوْ اَنَّهُمْ قَالُوْا سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا وَاسْمَعْ وَانْظُرْنَا لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ وَاَقْوَمَ وَلٰكِنْ لَّعَنَهُمُ اللّٰهُ بِكُفْرِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُوْنَ اِلَّا قَلِيْلًا	**46**	यहूदियों में से कुछ लोग शब्दों को उनके स्थान से बदल देते हैं और वे कहते हैं, 'हमने सुना, लेकिन हम इसका पालन नहीं करेंगे।' और 'सुनो,' जबकि वे कुछ भी नहीं सुनते। और 'राइना' अपनी जीभ को मोड़कर और धर्म की निंदा करते हुए। यदि वे कहते, 'हमने सुना और हम पालन करते हैं,' और सुनो, और हम पर ध्यान दो,' तो यह उनके लिए बेहतर और अधिक उचित होता, लेकिन अल्लाह ने उनकी काफ़िरी के कारण उन्हें लानत दी। वे बहुत कम ही विश्वास करते हैं।
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ اٰمِنُوْا بِمَا نَزَّلْنَا مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ نَّطْمِسَ وُجُوْهًا فَنَرُدَّهَا عَلٰٓى اَدْبَارِهَآ اَوْ نَلْعَنَهُمْ كَمَا لَعَنَّآ اَصْحٰبَ السَّبْتِ وَكَانَ اَمْرُ اللّٰهِ مَفْعُوْلًا	**47**	हे लोग जिन्हें किताब दी गई थी! उस पर विश्वास करो जो हमने तुम्हारे पास मौजूद किताब की पुष्टि करने के लिए उतारा है, इससे पहले कि हम तुम्हारे चेहरों को बदल दें और उन्हें पीछे की ओर मोड़ दें या उन्हें लानत दें जैसे हमने शनिवार के दिन पाप करने वालों को लानत दी थी। और अल्लाह का आदेश निश्चित रूप से लागू होता है।
اِنَّ اللّٰهَ لَا يَغْفِرُ اَنْ يُّشْرَكَ بِهٖ وَيَغْفِرُ مَا دُوْنَ ذٰلِكَ لِمَنْ يَّشَاۤءُ وَمَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَقَدِ افْتَرٰٓى اِثْمًا عَظِيْمًا	**48**	निश्चय ही, अल्लाह उस पाप को नहीं माफ करता जो उसके साथ साझेदारी करने का हो, और वह उस पाप को माफ करता है जो इसके अलावा है, जिसके लिए वह चाहता है। जो कोई अल्लाह के साथ साझेदारी करता है, उसने वास्तव में बड़ा पाप किया है।

49	क्या तुम उन लोगों को नहीं देखा जो खुद को पवित्र मानते हैं? वास्तव में, अल्लाह जिसे चाहता है उसे पवित्र करता है और उनके रेशे भर भी अन्याय नहीं किया जाता।	اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ يُزَكُّوْنَ اَنْفُسَهُمْ بَلِ اللّٰهُ يُزَكِّيْ مَنْ يَّشَاۤءُ وَلَا يُظْلَمُوْنَ فَتِيْلًا
50	देखो, वे अल्लाह के खिलाफ कैसे झूठ गढ़ते हैं! और यह कार्य अपने आप में एक स्पष्ट पाप है।	اُنْظُرْ كَيْفَ يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ وَكَفٰى بِهٖٓ اِثْمًا مُّبِيْنًا
51	क्या तुम उन लोगों को नहीं देखा जिन्हें किताब का हिस्सा दिया गया था? वे जिबित और तागूत पर विश्वास करते हैं, और काफिरों से कहते हैं कि वे विश्वास करने वालों से अधिक सही रास्ते पर हैं।	اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ اُوْتُوْا نَصِيْبًا مِّنَ الْكِتٰبِ يُؤْمِنُوْنَ بِالْجِبْتِ وَالطَّاغُوْتِ وَيَقُوْلُوْنَ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا هٰٓؤُلَاۤءِ اَهْدٰى مِنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا سَبِيْلًا
52	वे वही लोग हैं जिन्हें अल्लाह ने लानत दी है और जिसे अल्लाह लानत देता है, उसके लिए तुम कोई सहायक नहीं पाओगे।	اُولٰۤىِٕكَ الَّذِيْنَ لَعَنَهُمُ اللّٰهُ وَمَنْ يَّلْعَنِ اللّٰهُ فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ نَصِيْرًا
53	या क्या उनके पास राज्य का कोई हिस्सा है, भले ही वे मानवों को थोड़ा सा भी न दें?	اَمْ لَهُمْ نَصِيْبٌ مِّنَ الْمُلْكِ فَاِذًا لَّا يُؤْتُوْنَ النَّاسَ نَقِيْرًا
54	या क्या वे मनुष्यों से ईर्ष्या करते हैं क्योंकि अल्लाह ने उन्हें जो अनुग्रह दिया है? निश्चय ही, हमने इब्राहिम के परिवार को किताब और बुद्धि दी थी, और हमने उन्हें बड़ा राज्य दिया था।	اَمْ يَحْسُدُوْنَ النَّاسَ عَلٰى مَآ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ فَقَدْ اٰتَيْنَآ اٰلَ اِبْرٰهِيْمَ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَاٰتَيْنٰهُمْ مُّلْكًا عَظِيْمًا
55	तो उनमें से कुछ लोग उन पर विश्वास करते हैं और कुछ लोग रोकते हैं। उनके लिए नरक की जलती हुई आग ही काफी है।	فَمِنْهُمْ مَّنْ اٰمَنَ بِهٖ وَمِنْهُمْ مَّنْ صَدَّ عَنْهُ وَكَفٰى بِجَهَنَّمَ سَعِيْرًا
56	निश्चय ही, जो लोग हमारे संदेशों को नकारते हैं, उन्हें हम नरक में डालेंगे। हर बार जब उनकी त्वचा जल जाएगी, हम उसे दूसरी त्वचा से बदल देंगे, ताकि वे सजा को महसूस करें। निश्चय ही, अल्लाह सर्वशक्तिमान, सर्वबुद्धिमान है।	اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِنَا سَوْفَ نُصْلِيْهِمْ نَارًا كُلَّمَا نَضِجَتْ جُلُوْدُهُمْ بَدَّلْنٰهُمْ جُلُوْدًا غَيْرَهَا لِيَذُوْقُوا الْعَذَابَ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَزِيْزًا حَكِيْمًا
57	और जो लोग विश्वास करते हैं और अच्छे कर्म करते हैं, उन्हें हम स्वर्ग में प्रवेश कराएँगे, जिसके नीचे नदियाँ बहती हैं, जहाँ वे हमेशा रहेंगे। वहाँ उनके लिए शुद्ध जोड़े होंगे, और हम उन्हें छायादार और आरामदायक स्थान में प्रवेश कराएँगे।	وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ سَنُدْخِلُهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا لَهُمْ فِيْهَآ اَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ وَّنُدْخِلُهُمْ ظِلًّا ظَلِيْلًا
58	निश्चय ही, अल्लाह तुम्हें आदेश देता है कि अमानत को उसके हकदारों तक पहुँचाओ, और जब तुम मनुष्यों के बीच फैसला करो तो न्याय के साथ करो। निश्चय ही, अल्लाह तुम्हें सबसे अच्छा उपदेश देता है। निश्चय ही, अल्लाह सब कुछ सुनता और देखता है।	اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُكُمْ اَنْ تُؤَدُّوا الْاَمٰنٰتِ اِلٰٓى اَهْلِهَا وَاِذَا حَكَمْتُمْ بَيْنَ النَّاسِ اَنْ تَحْكُمُوْا بِالْعَدْلِ اِنَّ اللّٰهَ نِعِمَّا يَعِظُكُمْ بِهٖٓ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ سَمِيْعًا بَصِيْرًا

59	हे ईमान वालो! अल्लाह का आज्ञापालन करो और रसूल और तुममे से अधिकारियों का। फिर, यदि तुम किसी बात पर मतभेद करते हो, तो उसे अल्लाह और रसूल की ओर लौटाओ, यदि तुम अल्लाह और आख़िरी दिन पर विश्वास करते हो। यह तुम्हारे लिए बेहतर और परिणाम में उत्तम है।	يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ وَاُولِى الْاَمْرِ مِنْكُمْ فَاِنْ تَنَازَعْتُمْ فِيْ شَيْءٍ فَرُدُّوْهُ اِلَى اللّٰهِ وَالرَّسُوْلِ اِنْ كُنْتُمْ تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ذٰلِكَ خَيْرٌ وَّاَحْسَنُ تَأْوِيْلًا
60	क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जो दावा करते है कि वे उस पर विश्वास करते है जो तुम्हारे लिए और तुमसे पहले उतारा गया था? फिर भी वे ताग़ूत से फ़ैसला चाहते है, जबकि उन्हे ताग़ूत को नकारने का आदेश दिया गया था। और शैतान उन्हे बहुत दूर तक भटकाना चाहता है।	اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ يَزْعُمُوْنَ اَنَّهُمْ اٰمَنُوْا بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ وَمَآ اُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ يُرِيْدُوْنَ اَنْ يَّتَحَاكَمُوْٓا اِلَى الطَّاغُوْتِ وَقَدْ اُمِرُوْٓا اَنْ يَّكْفُرُوْا بِهٖ وَيُرِيْدُ الشَّيْطٰنُ اَنْ يُّضِلَّهُمْ ضَلٰلًا بَعِيْدًا
61	और जब उनसे कहा जाता है, 'अल्लाह ने जो उतारा है और रसूल की ओर आओ,' तो तुम देखते हो कि मुनाफ़िक़ तुमसे कठोरता से रोकते है।	وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ تَعَالَوْا اِلٰى مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ وَاِلَى الرَّسُوْلِ رَاَيْتَ الْمُنٰفِقِيْنَ يَصُدُّوْنَ عَنْكَ صُدُوْدًا
62	तो उनकी स्थिति कैसी होगी जब उनके अपने करमों की वजह से उन पर मुसीबत आएगी, फिर वे तुम्हारे पास आएँगे और कसम खाएँगे, 'अल्लाह की कसम, हमने केवल भलाई और शांति चाही थी।'	فَكَيْفَ اِذَآ اَصَابَتْهُمْ مُّصِيْبَةٌۢ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ ثُمَّ جَاءُوْكَ يَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ اِنْ اَرَدْنَآ اِلَّآ اِحْسَانًا وَّتَوْفِيْقًا
63	वे वही लोग है जिनके दिलों में क्या है, अल्लाह जानता है। इसलिए उनसे मुँह फेरो, और उन्हे नसीहत दो, और उनके साथ ऐसी बात कहो जो उनकी आत्मा पर असर करे।	اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ يَعْلَمُ اللّٰهُ مَا فِيْ قُلُوْبِهِمْ فَاَعْرِضْ عَنْهُمْ وَعِظْهُمْ وَقُلْ لَّهُمْ فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ قَوْلًا بَلِيْغًا
64	हमने कोई रसूल नहीं भेजा सिवाय इसके कि उसकी आज्ञा का पालन किया जाए, अल्लाह की अनुमति से। यदि वे, जब उन्होंने अपने आप को नुक़सान पहुँचाया, तुम्हारे पास आते और अल्लाह से क्षमा माँगते, और रसूल उनके लिए क्षमा माँगता, तो वे अल्लाह को अति क्षमाशील, दयालु पाते।	وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا لِيُطَاعَ بِاِذْنِ اللّٰهِ وَلَوْ اَنَّهُمْ اِذْ ظَّلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ جَاءُوْكَ فَاسْتَغْفَرُوا اللّٰهَ وَاسْتَغْفَرَ لَهُمُ الرَّسُوْلُ لَوَجَدُوا اللّٰهَ تَوَّابًا رَّحِيْمًا
65	तो तुम्हारे परम क़ी कसम, वे तब तक विश्वास नहीं करेंगे जब तक वे तुम्हे अपने विवादों में फ़ैसला करने वाला न बनाएँ, फिर उनके दिलों में तुम्हारे फ़ैसले के ख़िलाफ़ कोई आपत्ति न हो, और वे इसे पूरी तरह स्वीकार करे।	فَلَا وَرَبِّكَ لَا يُؤْمِنُوْنَ حَتّٰى يُحَكِّمُوْكَ فِيْمَا شَجَرَ بَيْنَهُمْ ثُمَّ لَا يَجِدُوْا فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ حَرَجًا مِّمَّا قَضَيْتَ وَيُسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا
66	और यदि हमने उन्हे आदेश दिया होता कि 'अपनी जान लो या अपने गाँव से निकल जाओ,' तो ऐसा नहीं करते, सिवाय उनके कुछ ही लोगों के। और यदि वे वास्तव में दिए गए आदेशों का पालन करते, तो यह उनके लिए बेहतर होता और उनके ईमान को और मजबूत करता।	وَلَوْ اَنَّا كَتَبْنَا عَلَيْهِمْ اَنِ اقْتُلُوْٓا اَنْفُسَكُمْ اَوِ اخْرُجُوْا مِنْ دِيَارِكُمْ مَّا فَعَلُوْهُ اِلَّا قَلِيْلٌ مِّنْهُمْ وَلَوْ اَنَّهُمْ فَعَلُوْا مَا يُوْعَظُوْنَ بِهٖ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ وَاَشَدَّ تَثْبِيْتًا

وَّاِذًا لَّاٰتَيْنٰهُمْ مِّنْ لَّدُنَّآ اَجْرًا عَظِيْمًا	और इस तरह, हम नशि्चति रूप स`उनह`अपनी ओर स`बड़ा इनाम दते।	**67**
وَّلَهَدَيْنٰهُمْ صِرَاطًا مُّسْتَقِيْمًا	और नशि्चति रूप स`हम उनह`सीधा रास्ता दखिात।	**68**
وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ فَاُولٰٓئِكَ مَعَ الَّذِيْنَ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ مِّنَ النَّبِيّٖنَ وَالصِّدِّيْقِيْنَ وَالشُّهَدَاۤءِ وَالصّٰلِحِيْنَ وَحَسُنَ اُولٰٓئِكَ رَفِيْقًا	और जो कोई अल्लाह और रसूल का आज्ञापालन करता ह,ै व` उन लोगों क`साथ होग`जनिह`अल्लाह न`अनग्रुह दयिा ह,ै अर्थात् नबी, सत्यपर्मी, शहीद और धर्मी लोग। और य` सबस`अच्छ`साथी ह।ै	**69**
ذٰلِكَ الْفَضْلُ مِنَ اللّٰهِ وَكَفٰى بِاللّٰهِ عَلِيْمًا	यह अल्लाह की कृपा ह,ै और अल्लाह का जानना ही काफी ह।ै	**70**
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا خُذُوْا حِذْرَكُمْ فَانْفِرُوْا ثُبَاتٍ اَوِ انْفِرُوْا جَمِيْعًا	ह`ईमान वालो! तयैार रहो, और समूहों म`आग`बढ़ो, या एक साथ आग`बढ़ो।	**71**
وَاِنَّ مِنْكُمْ لَمَنْ لَّيُبَطِّئَنَّ فَاِنْ اَصَابَتْكُمْ مُّصِيْبَةٌ قَالَ قَدْ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيَّ اِذْ لَمْ اَكُنْ مَّعَهُمْ شَهِيْدًا	और नशि्चय ही तमु्म`स`कछु लोग ऐस`ह`ैजो बहत्त अनचि्छक ह।ै फरि यदि तमु्ह पर कोई मसु्ीबत आती ह,ै तो वह कहता ह,ै 'नशि्चय ही, अल्लाह न`मझु्पर अनग्रुह दयिा क्योंकि म`उनक`साथ यद्ध म`नहीं गया।'	**72**
وَلَئِنْ اَصَابَكُمْ فَضْلٌ مِّنَ اللّٰهِ لَيَقُوْلَنَّ كَاَنْ لَّمْ تَكُنْۢ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهٗ مَوَدَّةٌ يّٰلَيْتَنِيْ كُنْتُ مَعَهُمْ فَاَفُوْزَ فَوْزًا عَظِيْمًا	और यदि तमु्ह`अल्लाह स`कोई अनग्रुह मलिता ह,ै तो वह कहता ह,ै जसै`कि तमु्हार`और उसक`बीच कभी कोई सम्बन्ध नहीं था, 'काश म`उनक`साथ होता, तो मझु्भी बड़ी जीत मलिती।'	**73**
فَلْيُقَاتِلْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ الَّذِيْنَ يَشْرُوْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا بِالْاٰخِرَةِ وَمَنْ يُّقَاتِلْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَيُقْتَلْ اَوْ يَغْلِبْ فَسَوْفَ نُؤْتِيْهِ اَجْرًا عَظِيْمًا	इसलिए, जो लोग दनु्यिा की जदिंगी को आखरित क`लिए बचेत` ह,ै उनह`अल्लाह क`रास्त`म`यद्ध करना चाहिए। और जो कोई अल्लाह क`रास्त`म`यद्ध करता ह,ै फरि चाह`वह मर जाए या जीत हासलि कर ल`, हम उस`बड़ा इनाम दगे।	**74**
وَمَا لَكُمْ لَا تُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَالْمُسْتَضْعَفِيْنَ مِنَ الرِّجَالِ وَالنِّسَاۤءِ وَالْوِلْدَانِ الَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَآ اَخْرِجْنَا مِنْ هٰذِهِ الْقَرْيَةِ الظَّالِمِ اَهْلُهَا وَاجْعَلْ لَّنَا مِنْ لَّدُنْكَ وَلِيًّا وَّاجْعَلْ لَّنَا مِنْ لَّدُنْكَ نَصِيْرًا	और तमु्म अल्लाह क`रास्त`म`और कमजोर लोगों, पुरुषों, सत्रियों और बच्चों की रक्षा क`लिए यद्ध क्यों नहीं करत`, जो प्रार्थना करत`ह,ै 'ह`हमार`प्रभ,ु हम`इस शहर स`नकिाल ल`, जसिक`नवािसी अत्याचारी ह।ैं हम`अपनी ओर स`एक रक्षक द`, और हम`अपनी ओर स`एक सहायक दो।'	**75**
اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا يُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ الطَّاغُوْتِ فَقَاتِلُوْٓا اَوْلِيَاۤءَ الشَّيْطٰنِ اِنَّ كَيْدَ الشَّيْطٰنِ كَانَ ضَعِيْفًا	जो लोग वशि्वास करत`ह,ै व`अल्लाह क`रास्त`म`यद्ध करत` ह,ै और जो काफरि ह,ै व`तागतू क`रास्त`म`यद्ध करत`ह,ै इसलिए शैतान क`दोस्तों स`लड़ो, क्योंकि नशि्चय ही शैतान की चालबाजी कमजोर ह।ै	**76**

77	क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जिनसे कहा गया था, 'अपने हाथों को रोक लो, नमाज़ क़ायम करो और ज़कात दो!' फिर, जब उन्हें युद्ध करने का आदेश दिया गया, तो उनमें से कुछ लोग इंसानों से डरने लगे जैसे वे अल्लाह से डरते हैं, बल्कि उससे भी अधिक। उन्होंने कहा, 'हे हमारे प्रभु, तूने हमें युद्ध क्यों अनिवार्य किया? तूने हमें थोड़े समय के लिए क्यों नहीं छोड़ा?' कहो, 'दुनिया की जिंदगी का सुख थोड़ा है, और आख़िरत उन लोगों के लिए बेहतर है जो डरते हैं, और तुमपर रत्ती भर भी अन्याय नहीं किया जाएगा।'	اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ قِيْلَ لَهُمْ كُفُّوْٓا اَيْدِيَكُمْ وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ فَلَمَّا كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقِتَالُ اِذَا فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ يَخْشَوْنَ النَّاسَ كَخَشْيَةِ اللّٰهِ اَوْ اَشَدَّ خَشْيَةً ۚ وَقَالُوْا رَبَّنَا لِمَ كَتَبْتَ عَلَيْنَا الْقِتَالَ لَوْلَآ اَخَّرْتَنَآ اِلٰٓى اَجَلٍ قَرِيْبٍ ۗ قُلْ مَتَاعُ الدُّنْيَا قَلِيْلٌ ۚ وَالْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لِّمَنِ اتَّقٰى ۗ وَلَا تُظْلَمُوْنَ فَتِيْلًا
78	तुम जहाँ भी हो, मृत्यु तुमपर पा लेगी, भले ही तुम ऊँचे और मजबूत क़िलों में हो। यदि उनपर कोई अच्छाई मिलती है, तो वे कहते हैं, 'यह अल्लाह की ओर से है,' और यदि उनपर कोई बुराई मिलती है, तो वे कहते हैं, 'यह तुम (मुहम्मद) की वजह से है।' कहो, 'सब कुछ अल्लाह की ओर से है।' तो ये लोग लगभग कोई बात नहीं समझते।	اَيْنَ مَا تَكُوْنُوْا يُدْرِكْكُّمُ الْمَوْتُ وَلَوْ كُنْتُمْ فِيْ بُرُوْجٍ مُّشَيَّدَةٍ ۗ وَاِنْ تُصِبْهُمْ حَسَنَةٌ يَّقُوْلُوْا هٰذِهٖ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ۚ وَاِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ يَّقُوْلُوْا هٰذِهٖ مِنْ عِنْدِكَ ۗ قُلْ كُلٌّ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ ۗ فَمَالِ هٰٓؤُلَاۤءِ الْقَوْمِ لَا يَكَادُوْنَ يَفْقَهُوْنَ حَدِيْثًا
79	तुमपर जो भी अच्छाई मिलती है, वह अल्लाह की ओर से है, और जो भी बुराई तुमपर मिलती है, वह तुम्हारी अपनी वजह से है। हमने तुमपर सभी मनुष्यों के लिए रसूल बनाकर भेजा है। और अल्लाह गवाह के रूप में पर्याप्त है।	مَآ اَصَابَكَ مِنْ حَسَنَةٍ فَمِنَ اللّٰهِ ۘ وَمَآ اَصَابَكَ مِنْ سَيِّئَةٍ فَمِنْ نَّفْسِكَ ۗ وَاَرْسَلْنٰكَ لِلنَّاسِ رَسُوْلًا ۗ وَكَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا
80	जो कोई रसूल का आज्ञापालन करता है, उसने वास्तव में अल्लाह का आज्ञापालन किया है। और जो कोई मुँह फेरे लेता है, तो हमने तुमपर उनके लिए रखवाला बनाकर नहीं भेजा है।	مَنْ يُّطِعِ الرَّسُوْلَ فَقَدْ اَطَاعَ اللّٰهَ ۚ وَمَنْ تَوَلّٰى فَمَآ اَرْسَلْنٰكَ عَلَيْهِمْ حَفِيْظًا
81	और वे कहते हैं, '(हम) आज्ञा मानते हैं,' लेकिन जब वे तुम्हारे पास से चले जाते हैं, तो उनमें से कुछ लोग रात में ऐसी योजनाएँ बनाते हैं जो उनके कहे से विपरीत हैं। अल्लाह उनके द्वारा रात में बनाई गई योजनाओं को लिख लेता है। इसलिए उनसे मुँह फेरो और अल्लाह पर भरोसा रखो। अल्लाह रक्षक के रूप में पर्याप्त है।	وَيَقُوْلُوْنَ طَاعَةٌ ۖ فَاِذَا بَرَزُوْا مِنْ عِنْدِكَ بَيَّتَ طَآئِفَةٌ مِّنْهُمْ غَيْرَ الَّذِيْ تَقُوْلُ ۗ وَاللّٰهُ يَكْتُبُ مَا يُبَيِّتُوْنَ ۚ فَاَعْرِضْ عَنْهُمْ وَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ۗ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا
82	क्या वे क़ुरआन पर विचार नहीं करते? यदि यह अल्लाह की ओर से न होता, तो वे इसमें बहुत सारी विसंगतियाँ पाते।	اَفَلَا يَتَدَبَّرُوْنَ الْقُرْاٰنَ ۗ وَلَوْ كَانَ مِنْ عِنْدِ غَيْرِ اللّٰهِ لَوَجَدُوْا فِيْهِ اخْتِلَافًا كَثِيْرًا
83	और जब उनके पास कोई सुरक्षा या भय की ख़बर आती है, तो वे उसे फैला देते हैं। यदि वे उस ख़बर को रसूल या अपने अधिकारियों के पास ले जाते, तो जो लोग उसकी सत्यता जानना चाहते हैं, वे उनसे जान लेते। यदि अल्लाह की कृपा और दया तुम पर न होती, तो तुममें से कुछ ही को छोड़कर, तुम शैतान के पीछे चल जाते।	وَاِذَا جَآءَهُمْ اَمْرٌ مِّنَ الْاَمْنِ اَوِ الْخَوْفِ اَذَاعُوْا بِهٖ ۗ وَلَوْ رَدُّوْهُ اِلَى الرَّسُوْلِ وَاِلٰٓى اُولِى الْاَمْرِ مِنْهُمْ لَعَلِمَهُ الَّذِيْنَ يَسْتَنْۢبِطُوْنَهٗ مِنْهُمْ ۗ وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهٗ لَاتَّبَعْتُمُ الشَّيْطٰنَ اِلَّا قَلِيْلًا

84	तो (महुम्मद) अल्लाह क॓रास्त॓ म॓ युद्ध करो, तमु पर कवेल तमुहार॓ लिए जिम्मेदारी ह॓ै वशि़वासयिों को प्रोतस़ाहति करो। हो सकता ह॓ै कि अल्लाह काफरिों क॓ हमल॓ को रोक दे। अल्लाह की शक्ति बहत्त बड़ी ह॓ै और उसकी सजा बहत्त कठोर ह॓ै	فَقَاتِلْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ لَا تُكَلَّفُ اِلَّا نَفْسَكَ وَحَرِّضِ الْمُؤْمِنِيْنَ عَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّكُفَّ بَأْسَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَاللّٰهُ اَشَدُّ بَأْسًا وَّاَشَدُّ تَنْكِيْلًا
85	जो कोई अच्छ॓ कार्य म॓ मदद करता ह॓ै, उस॓ उसका हसि़्सा मलिेगा। और जो कोई बुर॓ कार्य म॓ मदद करता ह॓ै, वह उसका हसि़्सा भोगगेा। अल्लाह हर चीज पर नयिंत्रण रखता ह॓ै	مَنْ يَّشْفَعْ شَفَاعَةً حَسَنَةً يَّكُنْ لَّهٗ نَصِيْبٌ مِّنْهَا وَمَنْ يَّشْفَعْ شَفَاعَةً سَيِّئَةً يَّكُنْ لَّهٗ كِفْلٌ مِّنْهَا وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ مُّقِيْتًا
86	और जब तमुह॓ कसिी सम्मान क॓ साथ बधाई दी जाए, तो उसका जवाब उसस॓ बहेतर बधाई क॓ साथ दो, या कम स॓ कम उसी क॓ बराबर दो। नशि़्चय ही, अल्लाह हर चीज का हसिाब रखता ह॓ै	وَاِذَا حُيِّيْتُمْ بِتَحِيَّةٍ فَحَيُّوْا بِاَحْسَنَ مِنْهَآ اَوْ رُدُّوْهَا اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ حَسِيْبًا
87	अल्लाह, उसक॓ सवि कोई ईश्वर नहीं ह॓ै वह नशि़्चति रूप स॓ तमुह॓ कयामत क॓ दनि इकट्ठा करगेा, जसिक॓ होन म॓ कोई संदहे नहीं ह॓ै और अल्लाह स॓ ज़्यादा सच्ची बात कौन कह सकता ह॓ै?	اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ لَيَجْمَعَنَّكُمْ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ لَا رَيْبَ فِيْهِ وَمَنْ اَصْدَقُ مِنَ اللّٰهِ حَدِيْثًا
88	तमु मनुाफकिों क॓ बार॓ म॓ दो समूहों म॓ क्यों बट॔ गए हो, जबकि अल्लाह न॓ उनह॓ उनक॓ करमों॓ की वजह स॓ काफरिों की ओर लौटा दयिा ह॓ै? क्या तमु उन लोगों॓ को मार्ग दखिाना चाहत॓ हो जनिह॓ अल्लाह न॓ भटका दयिा ह॓ै? जसि॓ अल्लाह भटका दते॓ा ह॓ै, उसक॓ लिए तमु कोई रास्ता नहीं पाओगे।	فَمَا لَكُمْ فِى الْمُنٰفِقِيْنَ فِئَتَيْنِ وَاللّٰهُ اَرْكَسَهُمْ بِمَا كَسَبُوْا اَتُرِيْدُوْنَ اَنْ تَهْدُوْا مَنْ اَضَلَّ اللّٰهُ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ سَبِيْلًا
89	व॓ चाहत॓ ह॓ै कि तमु भी काफरि हो जाओ जसै॓ व॓ काफरि हो गए ह॓ै, ताकि तमु उनक॓ समान हो जाओ। इसलिए उनम॓ स॓ कसिी को अपना दोस्त न बनाओ, जब तक कि व॓ अल्लाह क॓ रास्त॓ पर हजिरत न करें। यदि व॓ मुँह फरे लें, तो उनह॓ पकड़ लो और जहाँ कहीं मलिें, उनह॓ मार डालो, और उनम॓ स॓ कसिी को अपना वशि़्वसनीय दोस्त या सहायक न बनाओ।	وَدُّوْا لَوْ تَكْفُرُوْنَ كَمَا كَفَرُوْا فَتَكُوْنُوْنَ سَوَاءً فَلَا تَتَّخِذُوْا مِنْهُمْ اَوْلِيَاءَ حَتّٰى يُهَاجِرُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَخُذُوْهُمْ وَاقْتُلُوْهُمْ حَيْثُ وَجَدْتُّمُوْهُمْ وَلَا تَتَّخِذُوْا مِنْهُمْ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا
90	सवािय उन लोगों क॓ जो कसिी ऐस॓ समदुाय स॓ आश्रय माँगत॓ ह॓ै जनिक॓ साथ तमुहारा शांति समझौता ह॓ै, या जो लोग तमुहार॓ पास आत॓ ह॓ै और उनक॓ दलि तमुस॓ या अपन॓ लोगों स॓ लड़न॓ को तयैार नहीं ह॓ै। यदि अल्लाह चाहता, तो वह उनह॓ तमुहार॓ खलिाफ शक्ति दते॓ा, और व॓ तमुस॓ लड़ते। लकेनि यदि व॓ तमुह॓ छोड़ दें, और तमुस॓ न लड़ें और तमुह॓ शांति का प्रस्ताव दें, तो अल्लाह न॓ तमुह॓ उनक॓ खलिाफ कोई रास्ता नहीं दयिा।	اِلَّا الَّذِيْنَ يَصِلُوْنَ اِلٰى قَوْمٍ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ مِّيْثَاقٌ اَوْ جَاءُوْكُمْ حَصِرَتْ صُدُوْرُهُمْ اَنْ يُّقَاتِلُوْكُمْ اَوْ يُقَاتِلُوْا قَوْمَهُمْ وَلَوْ شَاءَ اللّٰهُ لَسَلَّطَهُمْ عَلَيْكُمْ فَلَقَاتَلُوْكُمْ فَاِنِ اعْتَزَلُوْكُمْ فَلَمْ يُقَاتِلُوْكُمْ وَاَلْقَوْا اِلَيْكُمُ السَّلَمَ فَمَا جَعَلَ اللّٰهُ لَكُمْ عَلَيْهِمْ سَبِيْلًا

سَتَجِدُوْنَ اٰخَرِيْنَ يُرِيْدُوْنَ اَنْ يَّأْمَنُوْكُمْ وَيَأْمَنُوْا قَوْمَهُمْ كُلَّ مَا رُدُّوْٓا اِلَى الْفِتْنَةِ اُرْكِسُوْا فِيْهَا فَاِنْ لَّمْ يَعْتَزِلُوْكُمْ وَيُلْقُوْٓا اِلَيْكُمُ السَّلَمَ وَيَكُفُّوْٓا اَيْدِيَهُمْ فَخُذُوْهُمْ وَاقْتُلُوْهُمْ حَيْثُ ثَقِفْتُمُوْهُمْ وَاُولٰٓئِكُمْ جَعَلْنَا لَكُمْ عَلَيْهِمْ سُلْطٰنًا مُّبِيْنًا	तमुह॑ कछु अन॒य लोग मलिगे॑, जो चाहत॑ ह॑ कि व॑ तमुहार॑ साथ और अपन॑ लोगों॑ क॑ साथ सरुक॒षति रह॑। हर बार जब उनह॑ फतिना की ओर वापस बल॒ाया जाता ह॑, व॑ उसम॑ डब॒ जात॑ ह॑। इसलिए यदि व॑ तमुह॑ नहीं॑ छोड॒त॑, और न ही तमुह॑ शांति का प॒रस॒ताव दते॑ ह॑, और न ही अपन॑ हाथों॑ को रोकत॑ ह॑, तो उनह॑ पकड॒ लो और जहा॑ कहीं॑ मलि॑, उनह॑ मार डालो, और यही व॑ लोग ह॑ जिनक॑ ख़लिाफ हमन॑ तमुह॑ स॒पष॒ट कारण दयिा ह॑।	91
وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ اَنْ يَّقْتُلَ مُؤْمِنًا اِلَّا خَطَـًٔا وَمَنْ قَتَلَ مُؤْمِنًا خَطَـًٔا فَتَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةٍ وَّدِيَةٌ مُّسَلَّمَةٌ اِلٰٓى اَهْلِهٖٓ اِلَّآ اَنْ يَّصَّدَّقُوْا فَاِنْ كَانَ مِنْ قَوْمٍ عَدُوٍّ لَّكُمْ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَتَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةٍ وَاِنْ كَانَ مِنْ قَوْمٍ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ مِّيْثَاقٌ فَدِيَةٌ مُّسَلَّمَةٌ اِلٰٓى اَهْلِهٖ وَتَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةٍ فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ شَهْرَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ تَوْبَةً مِّنَ اللّٰهِ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا	और कसिी वशि॒वासी क॑ लिए यह उचति नहीं॑ ह॑ कि॑ वह कसिी अन॒य वशि॒वासी को मार डाल॑, सविाय इसक॑ कि॑ यह गलती स॑ हो। जो कोई गलती स॑ कसिी वशि॒वासी को मार दते॑ ह॑, उस॑ एक वशि॒वासी दास को मक॒त करना चाहिए और मृतक क॑ परविार को मआ॒वजा दने॑ चाहिए, सविाय इसक॑ कि॑ व॑ मआ॒वज॑ को माफ कर दं॑। यदि॑ मृतक उस समद॒ाय स॑ ह॑ जो तमुहारा दश॒मन ह॑, फरि भी वह वशि॒वासी ह॑, तो एक वशि॒वासी दास को मक॒त करना चाहिए। और यदि॑ मृतक उस समद॒ाय स॑ ह॑ जसिक॑ साथ तमुहारा शांति॑ समझौता ह॑, तो मृतक क॑ परविार को मआ॒वजा दने॑ चाहिए और एक वशि॒वासी दास को मक॒त करना चाहिए। जो कोई दास नहीं॑ पाता, उस॑ अल॒लाह क॑ लिए दो महीन॑ लगातार उपवास करना चाहिए। और अल॒लाह सरव॒ज॒ञ, सरव॒बद॒धमिान ह॑।	92
وَمَنْ يَّقْتُلْ مُؤْمِنًا مُّتَعَمِّدًا فَجَزَآؤُهٗ جَهَنَّمُ خَالِدًا فِيْهَا وَغَضِبَ اللّٰهُ عَلَيْهِ وَلَعَنَهٗ وَاَعَدَّ لَهٗ عَذَابًا عَظِيْمًا	और जो कोई जानबझकर कसिी वशि॒वासी को मारता ह॑, उसका बदला नरक की आग ह॑, जहा॑ वह हमशेा रहगेा। अल॒लाह उस पर क॒रोधति ह॑, और उस॑ लानत दते॑ ह॑ और उसक॑ लिए बड॒ी सजा तयैार करता ह॑।	93
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا ضَرَبْتُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَتَبَيَّنُوْا وَلَا تَقُوْلُوْا لِمَنْ اَلْقٰٓى اِلَيْكُمُ السَّلٰمَ لَسْتَ مُؤْمِنًا تَبْتَغُوْنَ عَرَضَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا فَعِنْدَ اللّٰهِ مَغَانِمُ كَثِيْرَةٌ كَذٰلِكَ كُنْتُمْ مِّنْ قَبْلُ فَمَنَّ اللّٰهُ عَلَيْكُمْ فَتَبَيَّنُوْا اِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا	ह॑ ईमान वालो! जब तमु अल॒लाह क॑ रास॒त॑ म॑ यात॒रा करो, तो जाचँ-पड॒ताल करो और उस व॒यकि॒त को जो तमुह॑ 'सलाम' कहता ह॑, यह न कहो, 'तमु वशि॒वासी नहीं॑ हो,' क॒योंकि तमु दन॒यिा की स॑पति॒त चाहत॑ हो, जबकि॑ अल॒लाह क॑ पास बहत॒ सारी स॑पति॒त ह॑। पहल॑ तमु भी ऐस॑ ही थ॑, फरि अल॒लाह न॑ तमु पर अपनी कप॒ा की, इसलिए जाचँ-पड॒ताल करो। नशि॒चय ही, अल॒लाह तमुहार॑ कार॒यों॑ का सक॒ष॒म नरीक॒षक ह॑।	94
لَا يَسْتَوِى الْقٰعِدُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ غَيْرُ اُولِى الضَّرَرِ وَالْمُجٰهِدُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ فَضَّلَ اللّٰهُ الْمُجٰهِدِيْنَ بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ عَلَى الْقٰعِدِيْنَ دَرَجَةً وَكُلًّا وَّعَدَ اللّٰهُ الْحُسْنٰى وَفَضَّلَ اللّٰهُ الْمُجٰهِدِيْنَ عَلَى الْقٰعِدِيْنَ اَجْرًا عَظِيْمًا	वशि॒वासयिों॑ म॑ जो बनिा कसिी बहान॑ य॒द॒ध म॑ नहीं॑ जात॑ और जो अल॒लाह क॑ रास॒त॑ म॑ अपनी स॑पति॒त और जान स॑ जहिाद करत॑ ह॑, व॑ समान नहीं॑ ह॑। अल॒लाह न॑ अपनी स॑पति॒त और जान स॑ जहिाद करन॑ वालों॑ को उन लोगों॑ स॑ ऊचँा दरज॒ा दयिा ह॑ जो बनिा बहान॑ नहीं॑ जात॑। प॒रत॒येक को अल॒लाह न॑ अचछा वादा कयिा ह॑, और अल॒लाह न॑ जहिाद करन॑ वालों॑ को उन लोगों॑ स॑ बड॒ा इनाम दयिा ह॑ जो बनिा बहान॑ नहीं॑ जात॑।	95
دَرَجٰتٍ مِّنْهُ وَمَغْفِرَةً وَّرَحْمَةً وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا	उनक॑ लिए अल॒लाह की ओर स॑ कई दरज॒ें और कष॒मा और दया। अल॒लाह अति॒कष॒माशील, दयाल॒ ह॑।	96

97	निश्चय ही, जिन लोगों की आत्मा फरिश्तों द्वारा ली जाती है जब वे स्वयं पर अत्याचार कर रहे होते हैं, वे पूछते हैं, 'तुम लोग कैसे हो?' वे जवाब देते हैं, 'हम धरती पर उत्पीड़ित थे।' वे पूछते हैं, 'क्या अल्लाह की धरती इतनी विशाल नहीं थी कि तुम उसमें कहीं और चले जाते?' ऐसे लोगों का ठिकाना नरक की आग है, और यह सबसे खराब जगह है।	إِنَّ الَّذِيْنَ تَوَفّٰىهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ ظَالِمِيْٓ اَنْفُسِهِمْ قَالُوْا فِيْمَ كُنْتُمْ قَالُوْا كُنَّا مُسْتَضْعَفِيْنَ فِى الْاَرْضِ قَالُوْٓا اَلَمْ تَكُنْ اَرْضُ اللّٰهِ وَاسِعَةً فَتُهَاجِرُوْا فِيْهَا فَاُولٰٓئِكَ مَأْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ وَسَاۤءَتْ مَصِيْرًا
98	सिवाय उन लोगों के जो उत्पीड़ित हैं, चाहे पुरुष हों या स्त्रियाँ या बच्चे, जो न तो सामर्थ्य रखते हैं और न ही रास्ता जानते हैं।	اِلَّا الْمُسْتَضْعَفِيْنَ مِنَ الرِّجَالِ وَالنِّسَاۤءِ وَالْوِلْدَانِ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ حِيْلَةً وَّلَا يَهْتَدُوْنَ سَبِيْلًا
99	ऐसे लोगों को, हो सकता है कि अल्लाह माफ कर दे। अल्लाह अति माफ करने वाला, क्षमाशील है।	فَاُولٰٓئِكَ عَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّعْفُوَ عَنْهُمْ ۗ وَكَانَ اللّٰهُ عَفُوًّا غَفُوْرًا
100	और जो कोई अल्लाह के रास्ते में हिजरत करता है, वह धरती पर कई जगहें और बहुतायत पाएगा। जो कोई अपने घर से अल्लाह और उसके रसूल के लिए हिजरत करने के इरादे से निकलता है, फिर मृत्यु उसे पा लेती है, तो निश्चय ही, उसका इनाम अल्लाह के पास तय हो चुका है। और अल्लाह अति क्षमाशील, दयालु है।	وَمَنْ يُّهَاجِرْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ يَجِدْ فِى الْاَرْضِ مُرٰغَمًا كَثِيْرًا وَّسَعَةً ۗ وَمَنْ يَّخْرُجْ مِنْۢ بَيْتِهٖ مُهَاجِرًا اِلَى اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ثُمَّ يُدْرِكْهُ الْمَوْتُ فَقَدْ وَقَعَ اَجْرُهٗ عَلَى اللّٰهِ ۗ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا
101	और जब तुम धरती पर यात्रा कर रहे हो, तो यदि तुम्हें काफिरों के हमले का डर हो, तो नमाज़ को छोटा करने में कोई पाप नहीं है। निश्चय ही, काफिर तुम्हारे स्पष्ट दुश्मन हैं।	وَاِذَا ضَرَبْتُمْ فِى الْاَرْضِ فَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ اَنْ تَقْصُرُوْا مِنَ الصَّلٰوةِ اِنْ خِفْتُمْ اَنْ يَّفْتِنَكُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۗ اِنَّ الْكٰفِرِيْنَ كَانُوْا لَكُمْ عَدُوًّا مُّبِيْنًا
102	और जब तुम उनके बीच में हो और उनके साथ नमाज़ पढ़ाना चाहते हो, तो उनमें से एक समूह तुम्हारे साथ नमाज़ पढ़े और अपने हथियार लिए रहे, फिर जब वे सजदा करें, तो उन्हें तुम्हारे पीछे जाना चाहिए और दूसरा समूह जो अभी तक नमाज़ नहीं पढ़ा, वह तुम्हारे साथ नमाज़ पढ़े, और उन्हें सतर्क रहना चाहिए और अपने हथियार लिए रहना चाहिए। काफिर चाहते हैं कि तुम अपने हथियारों और सामान से लापरवाह हो जाओ, ताकि वे एक साथ तुम पर हमला करें। और यदि तुम्हें बारिश या बीमारी के कारण परेशानी हो, तो अपने हथियार रखने में कोई हरज़ नहीं, लेकिन सतर्क रहो। निश्चय ही, अल्लाह ने काफिरों के लिए अपमानजनक सजा तैयार की है।	وَاِذَا كُنْتَ فِيْهِمْ فَاَقَمْتَ لَهُمُ الصَّلٰوةَ فَلْتَقُمْ طَاۤئِفَةٌ مِّنْهُمْ مَّعَكَ وَلْيَاْخُذُوْٓا اَسْلِحَتَهُمْ ۗ فَاِذَا سَجَدُوْا فَلْيَكُوْنُوْا مِنْ وَّرَاۤئِكُمْ ۪ وَلْتَاْتِ طَاۤئِفَةٌ اُخْرٰى لَمْ يُصَلُّوْا فَلْيُصَلُّوْا مَعَكَ وَلْيَاْخُذُوْا حِذْرَهُمْ وَاَسْلِحَتَهُمْ ۗ وَدَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْ تَغْفُلُوْنَ عَنْ اَسْلِحَتِكُمْ وَاَمْتِعَتِكُمْ فَيَمِيْلُوْنَ عَلَيْكُمْ مَّيْلَةً وَّاحِدَةً ۗ وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ اِنْ كَانَ بِكُمْ اَذًى مِّنْ مَّطَرٍ اَوْ كُنْتُمْ مَّرْضٰٓى اَنْ تَضَعُوْٓا اَسْلِحَتَكُمْ ۚ وَخُذُوْا حِذْرَكُمْ ۗ اِنَّ اللّٰهَ اَعَدَّ لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابًا مُّهِيْنًا

103	जब तमु अपनी नमाज़ पूरी कर लो, तो खड़े होकर, बैठकर और लेटकर अल्लाह को याद करो। फिर, जब तमु सुरक्षित हो जाओ, तो नमाज़ को सामान्य रूप से पढ़ो। निश्चय ही, नमाज़ विश्वासियों पर समयबद्ध करतव्य है।	فَاِذَا قَضَيْتُمُ الصَّلٰوةَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ قِيَامًا وَّقُعُوْدًا وَّعَلٰى جُنُوْبِكُمْ فَاِذَا اطْمَاْنَنْتُمْ فَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ اِنَّ الصَّلٰوةَ كَانَتْ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ كِتٰبًا مَّوْقُوْتًا
104	और अपने दुश्मनों का पीछा करने में कमजोर दिल न बनो। यदि तमु दरद महसूस करते हो, तो जान लो कि वे भी उसी तरह दरद महसूस करते हैं, जैसा तमु महसूस करते हो, जबकि तमु अल्लाह से वह उम्मीद कर सकते हो जो वे नहीं कर सकते। अल्लाह सरवज्ञ, सरवबद्धिमान है।	وَلَا تَهِنُوْا فِى ابْتِغَاۤءِ الْقَوْمِ اِنْ تَكُوْنُوْا تَاْلَمُوْنَ فَاِنَّهُمْ يَاْلَمُوْنَ كَمَا تَاْلَمُوْنَ وَتَرْجُوْنَ مِنَ اللّٰهِ مَا لَا يَرْجُوْنَ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا
105	निश्चय ही, हमने तमुहारे लिए किताब सतय के साथ उतारी है, ताकि तमु उन लोगों के बीच फैसला करो जो अल्लाह ने तमुहें सिखाया है, और उन लोगों के लिए पकषपात न करो जो विश्वासघात करते हैं।	اِنَّاۤ اَنْزَلْنَاۤ اِلَيْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ لِتَحْكُمَ بَيْنَ النَّاسِ بِمَاۤ اَرٰىكَ اللّٰهُ وَلَا تَكُنْ لِّلْخَاۤئِنِيْنَ خَصِيْمًا
106	और अल्लाह से माफी माँगो। निश्चय ही, अल्लाह अति कषमाशील, दयालु है।	وَّاسْتَغْفِرِ اللّٰهَ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا
107	और उन लोगों के लिए बहस न करो जो अपनी आतमा को धोखा देते हैं। निश्चय ही, अल्लाह उन लोगों को पसंद नहीं करता जो हमेशा विश्वासघात करते हैं और पाप में डूबे रहते हैं।	وَلَا تُجَادِلْ عَنِ الَّذِيْنَ يَخْتَانُوْنَ اَنْفُسَهُمْ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ مَنْ كَانَ خَوَّانًا اَثِيْمًا
108	वे मनषुयों से छिप सकते हैं, लेकिन वे अल्लाह से नहीं छिप सकते, कयोंकि अल्लाह उनके साथ है, जब वे रात में ऐसी गपुत योजनाएँ बनाते हैं जो उसे पसंद नहीं हैं। और अल्लाह उनके कारयों को पूरी तरह घेरे हुए है।	يَّسْتَخْفُوْنَ مِنَ النَّاسِ وَلَا يَسْتَخْفُوْنَ مِنَ اللّٰهِ وَهُوَ مَعَهُمْ اِذْ يُبَيِّتُوْنَ مَا لَا يَرْضٰى مِنَ الْقَوْلِ وَكَانَ اللّٰهُ بِمَا يَعْمَلُوْنَ مُحِيْطًا
109	कया तमु दनुयिा की जिंदगी में उनके लिए बहस करते हो, लेकिन कयामत के दिन उनके लिए अल्लाह के खिलाफ कौन बहस करेगा? या उनके लिए रकषक कौन बनेगा?	هٰۤاَنْتُمْ هٰٓؤُلَاۤءِ جٰدَلْتُمْ عَنْهُمْ فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا فَمَنْ يُّجَادِلُ اللّٰهَ عَنْهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ اَمْ مَّنْ يَّكُوْنُ عَلَيْهِمْ وَكِيْلًا
110	और जो कोई बरुई करता है या अपनी आतमा पर अतयाचार करता है, फिर अल्लाह से माफी माँगता है, वह अल्लाह को अति कषमाशील, दयालु पाएगा।	وَمَنْ يَّعْمَلْ سُوْۤءًا اَوْ يَظْلِمْ نَفْسَهٗ ثُمَّ يَسْتَغْفِرِ اللّٰهَ يَجِدِ اللّٰهَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا
111	और जो कोई पाप करता है, वह वासतव में अपने लिए करता है। अल्लाह सरवज्ञ, सरवबद्धिमान है।	وَمَنْ يَّكْسِبْ اِثْمًا فَاِنَّمَا يَكْسِبُهٗ عَلٰى نَفْسِهٖ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا
112	और जो कोई गलती या पाप करता है, फिर उसे किसी बेगनुाह पर थोप देता है, उसने वासतव में एक झठू और सपषट पाप का बोझ उठाया है।	وَمَنْ يَّكْسِبْ خَطِيْٓـَٔةً اَوْ اِثْمًا ثُمَّ يَرْمِ بِهٖ بَرِيْٓـًٔا فَقَدِ احْتَمَلَ بُهْتَانًا وَّاِثْمًا مُّبِيْنًا

113	यदि अल्लाह की कृपा और दया तुम पर न होती, तो उनमें से एक समूह तुम्हें भटकाने की कोशिश करता। लेकिन वे अपने आप को ही भटकाते हैं, और वे तुम्हें कोई नुकसान नहीं पहुँचा सकते। अल्लाह ने तुम्हारे लिए किताब और बुद्धि उतारी है, और तुम्हें वह सिखाया है जो तुम नहीं जानते थे। और अल्लाह की कृपा तुम पर बहुत बड़ी है।	وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكَ وَرَحْمَتُه لَهَمَّتْ طَّآئِفَةٌ مِّنْهُمْ اَنْ يُّضِلُّوْكَ وَمَا يُضِلُّوْنَ اِلَّآ اَنْفُسَهُمْ وَمَا يَضُرُّوْنَكَ مِنْ شَيْءٍ وَاَنْزَلَ اللّٰهُ عَلَيْكَ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَعَلَّمَكَ مَا لَمْ تَكُنْ تَعْلَمُ وَكَانَ فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكَ عَظِيْمًا
114	उनकी अधिकांश गुप्त बातों में कोई भलाई नहीं है, सिवाय उस व्यक्ति की बात के जो दान करने, अच्छाई करने या लोगों के बीच सुलह कराने का आदेश देता है। जो कोई अल्लाह की प्रसन्नता के लिए ऐसा करता है, उसे हम बड़ा इनाम देंगे।	لَا خَيْرَ فِيْ كَثِيْرٍ مِّنْ نَّجْوٰىهُمْ اِلَّا مَنْ اَمَرَ بِصَدَقَةٍ اَوْ مَعْرُوْفٍ اَوْ اِصْلَاحٍ بَيْنَ النَّاسِ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ ابْتِغَاءَ مَرْضَاتِ اللّٰهِ فَسَوْفَ نُؤْتِيْهِ اَجْرًا عَظِيْمًا
115	और जो कोई रसूल का विरोध करता है, सत्य के स्पष्ट होने के बाद, और उन लोगों का रास्ता अपनाता है जो विश्वासी नहीं हैं, हम उसे उसी ओर जाने देंगे जिस ओर वह गया है, और उसे नरक में डाल देंगे, और वह सबसे खराब जगह है।	وَمَنْ يُّشَاقِقِ الرَّسُوْلَ مِنْ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُ الْهُدٰى وَيَتَّبِعْ غَيْرَ سَبِيْلِ الْمُؤْمِنِيْنَ نُوَلِّه مَا تَوَلّٰى وَنُصْلِه جَهَنَّمَ وَسَاءَتْ مَصِيْرًا
116	निश्चय ही, अल्लाह उस पाप को नहीं माफ करता जो उसके साथ साझेदारी करने का हो, और वह उस पाप को माफ करता है जो इसके अलावा है, जिसके लिए वह चाहता है। जो कोई अल्लाह के साथ साझेदारी करता है, वह वास्तव में बहुत दूर भटक गया है।	اِنَّ اللّٰهَ لَا يَغْفِرُ اَنْ يُّشْرَكَ بِه وَيَغْفِرُ مَا دُوْنَ ذٰلِكَ لِمَنْ يَّشَاءُ وَمَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَقَدْ ضَلَّ ضَلٰلًا بَعِيْدًا
117	वे अल्लाह के अलावा कुछ भी नहीं पूजते, सिवाय मूर्तियों के, और वे केवल विद्रोही शैतान की पूजा करते हैं।	اِنْ يَّدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِه اِلَّآ اِنٰثًا وَاِنْ يَّدْعُوْنَ اِلَّا شَيْطٰنًا مَّرِيْدًا
118	जिसे अल्लाह ने लानत दी है और उसने कहा, 'मैं निश्चित रूप से तेरे बन्दों में से एक निश्चित हिस्सा लूँगा।'	لَّعَنَهُ اللّٰهُ وَقَالَ لَاَتَّخِذَنَّ مِنْ عِبَادِكَ نَصِيْبًا مَّفْرُوْضًا
119	'और मैं निश्चित रूप से उन्हें भटकाऊँगा, और उनके मन में खोखली आशाएँ जगाऊँगा और उन्हें पशुओं के कान काटने का आदेश दूँगा, और मैं उन्हें अल्लाह की रचना को बदलने का आदेश दूँगा।' जो कोई अल्लाह के अलावा शैतान को अपना रक्षक बनाता है, वह निश्चित रूप से स्पष्ट नुकसान में है।	وَّلَاُضِلَّنَّهُمْ وَلَاُمَنِّيَنَّهُمْ وَلَاٰمُرَنَّهُمْ فَلَيُبَتِّكُنَّ اٰذَانَ الْاَنْعَامِ وَلَاٰمُرَنَّهُمْ فَلَيُغَيِّرُنَّ خَلْقَ اللّٰهِ وَمَنْ يَّتَّخِذِ الشَّيْطٰنَ وَلِيًّا مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ فَقَدْ خَسِرَ خُسْرَانًا مُّبِيْنًا
120	शैतान उन्हें वादे देता है और उनके मन में खोखली आशाएँ जगाता है, जबकि शैतान उन्हें केवल धोखे के वादे देता है।	يَعِدُهُمْ وَيُمَنِّيْهِمْ وَمَا يَعِدُهُمُ الشَّيْطٰنُ اِلَّا غُرُوْرًا
121	ऐसे लोगों का ठिकाना नरक की आग है और वे उससे बचने की कोई जगह नहीं पाएँगे।	اُولٰٓئِكَ مَأْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ وَلَا يَجِدُوْنَ عَنْهَا مَحِيْصًا

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ سَنُدْخِلُهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا وَعْدَ اللّٰهِ حَقًّا وَمَنْ اَصْدَقُ مِنَ اللّٰهِ قِيْلًا	और जो लोग वशि़वास करत`े ह,ै और अचछ`े करम करत`े ह,ै उनह`ै हम सवरग म`े परवेश कराएँगे, जसिक`े नीच`े नदयिा ँबहती ह,ै जहा ँव`े हमशेा रहगे। और अलल़ाह का वादा सतय़ ह।ै और अलल़ाह स`े जय़ादा सचची बात कौन कह सकता ह?ै	122
لَيْسَ بِاَمَانِيِّكُمْ وَلَآ اَمَانِيِّ اَهْلِ الْكِتٰبِ مَنْ يَّعْمَلْ سُوْٓءًا يُّجْزَ بِهٖ وَلَا يَجِدْ لَهٗ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا	(सफलता) न तो तमुहारी इचछाओं पर ह`ै और न ही अहल`े कताब की इचछाओं पर। जो कोई बरुाई करता ह,ै उस`े उसी क`े अनसुार बदला दयिा जाएगा, और उस`े अलल़ाह क`े अलावा कोई रकष़क या सहायक नहीं मलिेगा।	123
وَمَنْ يَّعْمَلْ مِنَ الصّٰلِحٰتِ مِنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَاُولٰٓئِكَ يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ وَلَا يُظْلَمُوْنَ نَقِيْرًا	और जो कोई अचछ`े करम करता ह,ै चाह`े वह पुरुष हो या सतऱी, और वह वशि़वासी हो, तो व`े सवरग म`ें परवेश करग`े और उनह`ै रतती भर भी अनय़ाय नहीं कयिा जाएगा।	124
وَمَنْ اَحْسَنُ دِيْنًا مِّمَّنْ اَسْلَمَ وَجْهَهٗ لِلّٰهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ وَّاتَّبَعَ مِلَّةَ اِبْرٰهِيْمَ حَنِيْفًا وَاتَّخَذَ اللّٰهُ اِبْرٰهِيْمَ خَلِيْلًا	और उस वयकत़ स`े बहेतर धरम कौन हो सकता ह`ै जो अपन`े आपको अलल़ाह क`े सामन`े समरपति करता ह,ै और वह अचछाई करता ह,ै और इबऱाहमि क`े धरम का पालन करता ह,ै जो सतय़ पर था? और अलल़ाह न`े इबऱाहमि को अपना परयि मतिऱ बनाया।	125
وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ وَكَانَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ مُّحِيْطًا	और जो कछु आकाश म`े ह`ै और जो कछु धरती पर ह,ै वह अलल़ाह का ह।ै और अलल़ाह हर चीज को घर`े हुए ह।ै	126
وَيَسْتَفْتُوْنَكَ فِي النِّسَاءِ قُلِ اللّٰهُ يُفْتِيْكُمْ فِيْهِنَّ وَمَا يُتْلٰى عَلَيْكُمْ فِي الْكِتٰبِ فِيْ يَتٰمَى النِّسَاءِ الّٰتِيْ لَا تُؤْتُوْنَهُنَّ مَا كُتِبَ لَهُنَّ وَتَرْغَبُوْنَ اَنْ تَنْكِحُوْهُنَّ وَالْمُسْتَضْعَفِيْنَ مِنَ الْوِلْدَانِ وَاَنْ تَقُوْمُوْا لِلْيَتٰمٰى بِالْقِسْطِ وَمَا تَفْعَلُوْا مِنْ خَيْرٍ فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِهٖ عَلِيْمًا	व`े तमुस`े सतऱयिों क`े बार`े म`ें फतवा माग ँत`े ह।ै कहो, 'अलल़ाह तमुह`ै उनक`े बार`े म`ें फतवा दतेा ह,ै और जो तमुह`ै कऱुआन म`ें पढ़ा गया ह`ै उन अनाथ सतऱयिों क`े बार`े म`ें जनिह`ै तमु वह नहीं दत`े जो उनक`े लएि नरि़धारति ह,ै जबकि तमु उनस`े ववािह करना चाहत`े हो, और कमजोर बचचों क`े बार`े मी और कि तमु अनाथों क`े साथ नय़ाय करो। और तमु जो भी अचछाई करत`े हो, नशि़चय ही अलल़ाह उस`े जानता ह।ै'	127
وَاِنِ امْرَاَةٌ خَافَتْ مِنْ بَعْلِهَا نُشُوْزًا اَوْ اِعْرَاضًا فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَآ اَنْ يُّصْلِحَا بَيْنَهُمَا صُلْحًا وَالصُّلْحُ خَيْرٌ وَاُحْضِرَتِ الْاَنْفُسُ الشُّحَّ وَاِنْ تُحْسِنُوْا وَتَتَّقُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا	और यदि कोई सतऱी अपन`े पति स`े अवजञा या उदासीनता का डर रखती ह,ै तो दोनों क`े लएि सचचाई क`े साथ सलुह करना उचति ह,ै और सलुह उनक`े लएि बहेतर ह,ै हालाकँि मनषुय सवभाव स`े कंजसू होता ह।ै और यदि तमु वयवहार को सधुारत`े हो और अपनी रकष़ा करत`े हो, तो नशि़चय ही, अलल़ाह तमुह`ारे कारय़ों का सकष़म नरीकष़क ह।ै	128
وَلَنْ تَسْتَطِيْعُوْٓا اَنْ تَعْدِلُوْا بَيْنَ النِّسَاءِ وَلَوْ حَرَصْتُمْ فَلَا تَمِيْلُوْا كُلَّ الْمَيْلِ فَتَذَرُوْهَا كَالْمُعَلَّقَةِ وَاِنْ تُصْلِحُوْا وَتَتَّقُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا	और तमु अपनी पतनयिों क`े बीच पूरी तरह नय़ाय नहीं कर पाओग,े भल`े ही तमु बहतु चाहो, इसलएि इतना झकुाव न करो कि तमु दसूरी को लटकता छोड़ दो। और यदि तमु सधुार करत`े हो और अपनी रकष़ा करत`े हो, तो नशि़चय ही, अलल़ाह अति कष़माशील, दयाल ुह।ै	129

وَاِنْ يَّتَفَرَّقَا يُغْنِ اللّٰهُ كُلًّا مِّنْ سَعَتِهٖ وَكَانَ اللّٰهُ وَاسِعًا حَكِيْمًا	यदि दोनों अलग हो जाते है, तो अल्लाह अपनी कृपा की विशालता से प्रत्येक को पर्याप्त प्रदान करेगा। और अल्लाह बहुत उदार, सर्वबुद्धिमान है।	**130**
وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ وَلَقَدْ وَصَّيْنَا الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَاِيَّاكُمْ اَنِ اتَّقُوا اللّٰهَ وَاِنْ تَكْفُرُوْا فَاِنَّ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ وَكَانَ اللّٰهُ غَنِيًّا حَمِيْدًا	आकाश और धरती में जो कुछ है, वह अल्लाह का है। हमने तुमसे पहले जिन्हें किताब दी गई थी, उन्हें और तुम्हें आदेश दिया है कि अल्लाह से डरो। और यदि तुम इनकार करते हो, तो जान लो कि आकाश और धरती में जो कुछ है, वह अल्लाह का है। अल्लाह बहुत समृद्ध, प्रशंसनीय है।	**131**
وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا	आकाश और धरती में जो कुछ है, वह अल्लाह का है और अल्लाह रक्षक के रूप में पर्याप्त है।	**132**
اِنْ يَّشَاْ يُذْهِبْكُمْ اَيُّهَا النَّاسُ وَيَاْتِ بِاٰخَرِيْنَ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى ذٰلِكَ قَدِيْرًا	यदि वह चाहे तो वह तुम सबको, हे मानवों, नष्ट कर सकता है और दूसरों को ला सकता है और अल्लाह ऐसा करने में पूरी तरह समर्थ है।	**133**
مَنْ كَانَ يُرِيْدُ ثَوَابَ الدُّنْيَا فَعِنْدَ اللّٰهِ ثَوَابُ الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ وَكَانَ اللّٰهُ سَمِيْعًا بَصِيْرًا	जो कोई दुनिया का इनाम चाहता है, उसे पता होना चाहिए कि दुनिया और आख़िरत का इनाम अल्लाह के पास है और अल्लाह सब कुछ सुनता, देखता है।	**134**
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْا قَوّٰمِيْنَ بِالْقِسْطِ شُهَدَاءَ لِلّٰهِ وَلَوْ عَلٰٓى اَنْفُسِكُمْ اَوِ الْوَالِدَيْنِ وَالْاَقْرَبِيْنَ اِنْ يَّكُنْ غَنِيًّا اَوْ فَقِيْرًا فَاللّٰهُ اَوْلٰى بِهِمَا فَلَا تَتَّبِعُوا الْهَوٰٓى اَنْ تَعْدِلُوْا وَاِنْ تَلْوٗٓا اَوْ تُعْرِضُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا	हे ईमान वालो! न्याय के पक्षधर बनो, अल्लाह के लिए गवाह बनो, भले ही यह तुम्हारे ख़िलाफ़ हो या तुम्हारे माता-पिता और रिश्तेदारों के ख़िलाफ़ हो। यदि वह अमीर हो या गरीब, तो अल्लाह उसकी भलाई को बेहतर जानता है। इसलिए सत्य से भटकने के लिए अपनी इच्छाओं का पालन न करो। और यदि तुम शब्दों को तोड़-मरोड़ करते हो या गवाही देने से इनकार करते हो, तो जान लो कि अल्लाह तुम्हारे कार्यों का सूक्ष्म निरीक्षक है।	**135**
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَالْكِتٰبِ الَّذِيْ نَزَّلَ عَلٰى رَسُوْلِهٖ وَالْكِتٰبِ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ مِنْ قَبْلُ وَمَنْ يَّكْفُرْ بِاللّٰهِ وَمَلٰٓئِكَتِهٖ وَكُتُبِهٖ وَرُسُلِهٖ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ فَقَدْ ضَلَّ ضَلٰلًا بَعِيْدًا	हे ईमान वालो! अल्लाह और उसके रसूल, और उस किताब पर दृढ़ विश्वास रखो जो उसके रसूल को उतारी गई, और उस किताब पर जो पहले उतारी गई थी। जो कोई अल्लाह, उसके फरिश्तों, उसकी किताबों, उसके रसूलों, और आख़िरी दिन को नकारता है, वह वास्तव में बहुत दूर भटक गया है।	**136**
اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ثُمَّ كَفَرُوْا ثُمَّ اٰمَنُوْا ثُمَّ كَفَرُوْا ثُمَّ ازْدَادُوْا كُفْرًا لَّمْ يَكُنِ اللّٰهُ لِيَغْفِرَ لَهُمْ وَلَا لِيَهْدِيَهُمْ سَبِيْلًا	निश्चय ही, जो लोग विश्वास करते है फिर काफिर हो जाते है, फिर विश्वास करते है, फिर काफिर हो जाते है, और फिर अपनी काफिरी को बढ़ाते है, अल्लाह उन्हें माफ नहीं करेगा, और न ही उन्हें सीधा रास्ता दिखाएगा।	**137**
بَشِّرِ الْمُنٰفِقِيْنَ بِاَنَّ لَهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا	मुनाफिकों को सूचित करो कि उनके लिए दर्दनाक सजा है।	**138**

139	वे लोग जो विश्वासियों को छोड़कर काफ़िरों को अपना नेता बनाते हैं क्या वे काफ़िरों के पास ताकत ढूँढ़ते हैं? जान लो कि सारी ताकत अल्लाह की है।	الَّذِيْنَ يَتَّخِذُوْنَ الْكٰفِرِيْنَ اَوْلِيَاءَ مِنْ دُوْنِ الْمُؤْمِنِيْنَ اَيَبْتَغُوْنَ عِنْدَهُمُ الْعِزَّةَ فَاِنَّ الْعِزَّةَ لِلّٰهِ جَمِيْعًا
140	और निश्चय ही, अल्लाह ने तुम्हारे लिए किताब में यह आदेश उतारा है कि जब तुम सुनो कि अल्लाह की आयतों को नकारा जा रहा है और उनका मज़ाक उड़ाया जा रहा है, तो उनके साथ न बैठो, जब तक कि वे किसी अन्य बात में न लग जाएँ क्योंकि यदि तुम उनके साथ बैठे रहते हो, तो तुम उनके समान हो जाओगे। निश्चय ही, अल्लाह सभी मुनाफिकों और काफ़िरों को नरक की आग में इकट्ठा करेगा।	وَقَدْ نَزَّلَ عَلَيْكُمْ فِى الْكِتٰبِ اَنْ اِذَا سَمِعْتُمْ اٰيٰتِ اللّٰهِ يُكْفَرُ بِهَا وَيُسْتَهْزَاُ بِهَا فَلَا تَقْعُدُوْا مَعَهُمْ حَتّٰى يَخُوْضُوْا فِيْ حَدِيْثٍ غَيْرِهٖ اِنَّكُمْ اِذًا مِّثْلُهُمْ اِنَّ اللّٰهَ جَامِعُ الْمُنٰفِقِيْنَ وَالْكٰفِرِيْنَ فِيْ جَهَنَّمَ جَمِيْعًا
141	वे लोग जो तुम पर होने वाली घटनाओं का इंतज़ार करते हैं यदि तुम्हें अल्लाह से जीत मिलती है, तो वे कहते हैं, 'क्या हम तुम्हारे साथ नहीं थे?' और यदि काफ़िरों को हिस्सा मिलता है, तो वे कहते हैं, 'क्या हमने तुम्हें जीत नहीं दिलाई, और तुम्हें विश्वासियों से बचाया?' अल्लाह क़यामत के दिन तुम्हारे बीच फ़ैसला करेगा। अल्लाह काफ़िरों को विश्वासियों पर हावी होने का कोई रास्ता नहीं देगा।	الَّذِيْنَ يَتَرَبَّصُوْنَ بِكُمْ فَاِنْ كَانَ لَكُمْ فَتْحٌ مِّنَ اللّٰهِ قَالُوْٓا اَلَمْ نَكُنْ مَّعَكُمْ وَاِنْ كَانَ لِلْكٰفِرِيْنَ نَصِيْبٌ قَالُوْٓا اَلَمْ نَسْتَحْوِذْ عَلَيْكُمْ وَنَمْنَعْكُمْ مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ فَاللّٰهُ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَلَنْ يَّجْعَلَ اللّٰهُ لِلْكٰفِرِيْنَ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ سَبِيْلًا
142	निश्चय ही, मुनाफिक अल्लाह को धोखा देना चाहते हैं, लेकिन अल्लाह ही उन्हें धोखा देता है जब वे नमाज़ के लिए खड़े होते हैं, तो आलस्य के साथ करते हैं और वे केवल लोगों के सामने दिखावा करना चाहते हैं और वे अल्लाह को बहुत कम याद करते हैं।	اِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ يُخٰدِعُوْنَ اللّٰهَ وَهُوَ خَادِعُهُمْ وَاِذَا قَامُوْٓا اِلَى الصَّلٰوةِ قَامُوْا كُسَالٰى يُرَاۤءُوْنَ النَّاسَ وَلَا يَذْكُرُوْنَ اللّٰهَ اِلَّا قَلِيْلًا
143	वे (ईमान और कुफ़्र) के बीच में लटके हुए हैं, न यहाँ के हैं और न वहाँ के। और जिसे अल्लाह भटका देता है, उसके लिए तुम कोई रास्ता नहीं पाओगे।	مُّذَبْذَبِيْنَ بَيْنَ ذٰلِكَ لَآ اِلٰى هٰٓؤُلَآءِ وَلَآ اِلٰى هٰٓؤُلَآءِ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ سَبِيْلًا
144	हे ईमान वालो! विश्वासियों को छोड़कर काफ़िरों को अपने दोस्त न बनाओ। क्या तुम अल्लाह को अपने खिलाफ स्पष्ट कारण देना चाहते हो?	يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوا الْكٰفِرِيْنَ اَوْلِيَاءَ مِنْ دُوْنِ الْمُؤْمِنِيْنَ اَتُرِيْدُوْنَ اَنْ تَجْعَلُوْا لِلّٰهِ عَلَيْكُمْ سُلْطٰنًا مُّبِيْنًا
145	निश्चय ही, मुनाफिक नरक की सबसे निचली गहराई में होंगे। और तुम उनके लिए कोई सहायक नहीं पाओगे।	اِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ فِى الدَّرْكِ الْاَسْفَلِ مِنَ النَّارِ وَلَنْ تَجِدَ لَهُمْ نَصِيْرًا
146	सिवाय उन लोगों के जो पश्चाताप करते हैं और सुधार करते हैं और अल्लाह पर दृढ़ता से टिके रहते हैं और अपनी आस्था को पूरी तरह अल्लाह के लिए समर्पित करते हैं वे विश्वासियों के साथ होंगे और अल्लाह विश्वासियों को बड़ा इनाम देगा।	اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا وَاَصْلَحُوْا وَاعْتَصَمُوْا بِاللّٰهِ وَاَخْلَصُوْا دِيْنَهُمْ لِلّٰهِ فَاُولٰٓئِكَ مَعَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَسَوْفَ يُؤْتِ اللّٰهُ الْمُؤْمِنِيْنَ اَجْرًا عَظِيْمًا
147	अल्लाह तुम्हें सजा क्यों देगा, यदि तुम आभार प्रकट करते हो और विश्वास करते हो? और अल्लाह आभार मानने वाला, सर्वज्ञ है।	مَا يَفْعَلُ اللّٰهُ بِعَذَابِكُمْ اِنْ شَكَرْتُمْ وَاٰمَنْتُمْ وَكَانَ اللّٰهُ شَاكِرًا عَلِيْمًا

148	अल्लाह बुरी बात को खुलेआम कहना पसंद नहीं करता, सिवाय इसके कि वह किसी पर अत्याचार किया गया हो। और अल्लाह सब कुछ सुनता, जानता है।	لَا يُحِبُّ اللّٰهُ الْجَهْرَ بِالسُّوْٓءِ مِنَ الْقَوْلِ اِلَّا مَنْ ظُلِمَ ۗ وَكَانَ اللّٰهُ سَمِيْعًا عَلِيْمًا
149	यदि तुम कोई अच्छाई प्रकट करते हो, उसे छिपाते हो, या किसी की गलती को माफ करते हो, तो निश्चय ही, अल्लाह अति माफ करने वाला, सर्वशक्तिमान है।	اِنْ تُبْدُوْا خَيْرًا اَوْ تُخْفُوْهُ اَوْ تَعْفُوْا عَنْ سُوْۤءٍ فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَفُوًّا قَدِيْرًا
150	निश्चय ही, जो लोग अल्लाह और उसके रसूलों को नकारते हैं, और अल्लाह और उसके रसूलों के बीच अंतर करना चाहते हैं, यह कहकर, 'हम कुछ पर विश्वास करते हैं और कुछ को नकारते हैं,' और बीच का रास्ता अपनाना चाहते हैं।	اِنَّ الَّذِيْنَ يَكْفُرُوْنَ بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ وَيُرِيْدُوْنَ اَنْ يُّفَرِّقُوْا بَيْنَ اللّٰهِ وَرُسُلِهٖ وَيَقُوْلُوْنَ نُؤْمِنُ بِبَعْضٍ وَّنَكْفُرُ بِبَعْضٍ ۙ وَّيُرِيْدُوْنَ اَنْ يَّتَّخِذُوْا بَيْنَ ذٰلِكَ سَبِيْلًا
151	वे वास्तव में काफिर हैं और हमने काफिरों के लिए अपमानजनक सजा तैयार की है।	اُولٰٓئِكَ هُمُ الْكٰفِرُوْنَ حَقًّا ۚ وَاَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابًا مُّهِيْنًا
152	और जो लोग अल्लाह और उसके रसूलों पर विश्वास करते हैं और उनके बीच कोई अंतर नहीं करते, उन्हें अल्लाह उनके इनाम देगा। और अल्लाह अति क्षमाशील, दयालु है।	وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ وَلَمْ يُفَرِّقُوْا بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْهُمْ اُولٰٓئِكَ سَوْفَ يُؤْتِيْهِمْ اُجُوْرَهُمْ ۗ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا
153	अहले किताब तुमसे माँग करते हैं कि तुम उनके लिए आकाश से एक किताब उतारो। निश्चय ही, उन्होंने मूसा से इससे भी बड़ी माँग की थी। उन्होंने कहा, 'हमें अल्लाह को प्रत्यक्ष दिखाओ।' तो उनकी ज़ालिमाना हरकत के कारण उन पर बिजली गिरी। फिर उन्होंने बछड़े की पूजा की, जबकि उन्हें स्पष्ट प्रमाण मिल चुके थे, फिर भी हमने उन्हें माफ किया, और हमने मूसा को स्पष्ट अधिकार दिया था।	يَسْـَٔلُكَ اَهْلُ الْكِتٰبِ اَنْ تُنَزِّلَ عَلَيْهِمْ كِتٰبًا مِّنَ السَّمَآءِ ۚ فَقَدْ سَاَلُوْا مُوْسٰٓى اَكْبَرَ مِنْ ذٰلِكَ فَقَالُوْٓا اَرِنَا اللّٰهَ جَهْرَةً فَاَخَذَتْهُمُ الصّٰعِقَةُ بِظُلْمِهِمْ ۚ ثُمَّ اتَّخَذُوا الْعِجْلَ مِنْ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُمُ الْبَيِّنٰتُ فَعَفَوْنَا عَنْ ذٰلِكَ ۚ وَاٰتَيْنَا مُوْسٰى سُلْطٰنًا مُّبِيْنًا
154	और हमने उनकी संधि को मजबूत करने के लिए उनके ऊपर पहाड़ उठाया। और हमने उन्हें आदेश दिया, 'बैतुलमकदिस के दरवाज़े में सजदा करते हुए प्रवेश करो,' और हमने उन्हें आदेश दिया, 'शनिवार के नियमों का उल्लंघन न करो।' और हमने उनसे मजबूत संधि ली थी।	وَرَفَعْنَا فَوْقَهُمُ الطُّوْرَ بِمِيْثَاقِهِمْ وَقُلْنَا لَهُمُ ادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا وَّقُلْنَا لَهُمْ لَا تَعْدُوْا فِى السَّبْتِ وَاَخَذْنَا مِنْهُمْ مِّيْثَاقًا غَلِيْظًا
155	तो उनकी संधि तोड़ने, अल्लाह के संदेशों को नकारने, और नबियों को बिना हक के मारने, और उनके इस कथन के कारण कि 'हमारे दिल बंद हैं' वास्तव में, अल्लाह ने उनकी काफिरी के कारण उनके दिलों पर मुहर लगा दी, इसलिए उनमें से बहुत कम ही विश्वास करते हैं।	فَبِمَا نَقْضِهِمْ مِّيْثَاقَهُمْ وَكُفْرِهِمْ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَقَتْلِهِمُ الْاَنْۢبِيَآءَ بِغَيْرِ حَقٍّ وَّقَوْلِهِمْ قُلُوْبُنَا غُلْفٌ ۭ بَلْ طَبَعَ اللّٰهُ عَلَيْهَا بِكُفْرِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُوْنَ اِلَّا قَلِيْلًا
156	और उनकी काफिरी और मरियम के खिलाफ उनके बहुत ही घृणित आरोप के कारण।	وَّبِكُفْرِهِمْ وَقَوْلِهِمْ عَلٰى مَرْيَمَ بُهْتَانًا عَظِيْمًا

وَّقَوْلِهِمْ اِنَّا قَتَلْنَا الْمَسِيْحَ عِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ رَسُوْلَ اللّٰهِ وَمَا قَتَلُوْهُ وَمَا صَلَبُوْهُ وَلٰكِنْ شُبِّهَ لَهُمْ وَاِنَّ الَّذِيْنَ اخْتَلَفُوْا فِيْهِ لَفِيْ شَكٍّ مِّنْهُ مَا لَهُمْ بِهٖ مِنْ عِلْمٍ اِلَّا اتِّبَاعَ الظَّنِّ وَمَا قَتَلُوْهُ يَقِيْنًا	और उनके इस कथन के कारण, 'हमने अल-मसीह, ईसा पुत्र मरियम, अल्लाह के रसूल को मार डाला,' जबकि उन्होंने उसे ने तो मारा और न ही सूली पर चढ़ाया, बल्कि वह उनके लिए ईसा के समान बनाया गया था। निश्चय ही, जो लोग ईसा की हत्या के बारे में मतभेद करते हैं, वे संदेह में हैं। उन्हें वास्तव में कोई जानकारी नहीं है, बल्कि वे केवल अनुमान का पालन करते हैं, इसलिए वे निश्चित नहीं हैं कि उन्होंने उसे मार डाला।	**157**
بَلْ رَّفَعَهُ اللّٰهُ اِلَيْهِ وَكَانَ اللّٰهُ عَزِيْزًا حَكِيْمًا	बल्कि अल्लाह ने ईसा को अपनी ओर उठा लिया। अल्लाह सर्वशक्तिमान, सर्वबुद्धिमान है।	**158**
وَاِنْ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ اِلَّا لَيُؤْمِنَنَّ بِهٖ قَبْلَ مَوْتِهٖ وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ يَكُوْنُ عَلَيْهِمْ شَهِيْدًا	और अहले किताब में से कोई भी ऐसा नहीं है जो अपनी मृत्यु से पहले उस पर विश्वास न करे। और कयामत के दिन, वह उनके खिलाफ गवाह होगा।	**159**
فَبِظُلْمٍ مِّنَ الَّذِيْنَ هَادُوْا حَرَّمْنَا عَلَيْهِمْ طَيِّبٰتٍ اُحِلَّتْ لَهُمْ وَبِصَدِّهِمْ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ كَثِيْرًا	यहूदियों की जालिमाना हरकतों के कारण, हमने उनके लिए उन अच्छी चीजों को हराम कर दिया जो पहले उनके लिए हलाल थीं; और क्योंकि वे अक्सर दूसरों को अल्लाह के रास्ते से रोकते थे।	**160**
وَّاَخْذِهِمُ الرِّبٰوا وَقَدْ نُهُوْا عَنْهُ وَاَكْلِهِمْ اَمْوَالَ النَّاسِ بِالْبَاطِلِ وَاَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ مِنْهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا	और क्योंकि उन्होंने सूद लिया, जबकि उन्हें इससे मना किया गया था, और क्योंकि उन्होंने लोगों की संपत्ति को गलत तरीके से खाया। और हमने उनके बीच के काफिरों के लिए दर्दनाक सजा तैयार की है।	**161**
لٰكِنِ الرّٰسِخُوْنَ فِي الْعِلْمِ مِنْهُمْ وَالْمُؤْمِنُوْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ وَمَآ اُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ وَالْمُقِيْمِيْنَ الصَّلٰوةَ وَالْمُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَالْمُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ اُولٰٓئِكَ سَنُؤْتِيْهِمْ اَجْرًا عَظِيْمًا	लेकिन उनके बीच जिनके पास गहरा ज्ञान है, और जो विश्वासी हैं, वे उस पर विश्वास करते हैं जो तुम्हारे लिए उतारा गया, और उस पर जो तुम से पहले उतारी गई, और वे जो नमाज़ कायम करते हैं और ज़कात देते हैं और अल्लाह और आखिरी दिन पर विश्वास करते हैं। उन्हें हम बड़ा इनाम देंगे।	**162**
اِنَّآ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ كَمَآ اَوْحَيْنَآ اِلٰى نُوْحٍ وَّالنَّبِيّٖنَ مِنْ بَعْدِهٖ وَاَوْحَيْنَآ اِلٰٓى اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ وَالْاَسْبَاطِ وَعِيْسٰى وَاَيُّوْبَ وَيُوْنُسَ وَهٰرُوْنَ وَسُلَيْمٰنَ وَاٰتَيْنَا دَاوٗدَ زَبُوْرًا	निश्चय ही, हमने तुम्हें वही के माध्यम से प्रेरणा दी है जैसा कि हमने नूह और उसके बाद के नबियों को दी थी, और हमने इब्राहिम, इस्माइल, इसहाक, याकूब और उनकी संतानों को; ईसा, अय्यूब, यूनुस, हारून और सुलैमान को प्रेरणा दी थी। और हमने दाऊद को ज़बूर दी थी।	**163**
وَرُسُلًا قَدْ قَصَصْنٰهُمْ عَلَيْكَ مِنْ قَبْلُ وَرُسُلًا لَّمْ نَقْصُصْهُمْ عَلَيْكَ وَكَلَّمَ اللّٰهُ مُوْسٰى تَكْلِيْمًا	और कुछ रसूलों की हमने तुम्हें पहले ही कहानी सुना दी थी और कुछ रसूलों के बारे में हमने तुम्हें नहीं बताया। और मूसा से अल्लाह ने प्रत्यक्ष बात की थी।	**164**
رُسُلًا مُّبَشِّرِيْنَ وَمُنْذِرِيْنَ لِئَلَّا يَكُوْنَ لِلنَّاسِ عَلَى اللّٰهِ حُجَّةٌ بَعْدَ الرُّسُلِ وَكَانَ اللّٰهُ عَزِيْزًا حَكِيْمًا	रसूल खुशखबरी देने वाले और चेतावनी देने वाले के रूप में हैं, ताकि रसूलों के आने के बाद लोगों के पास अल्लाह के खिलाफ कोई बहाना न रहे। और अल्लाह सर्वशक्तिमान, सर्वबुद्धिमान है।	**165**

166	लेकिन अल्लाह इस बात का गवाह है कि उसने तुम्हारे लिए जो उतारा है उसने इस अपने ज्ञान के साथ उतारा, और फरिश्ते भी गवाही देते हैं और अल्लाह गवाह के रूप में पर्याप्त है	لٰكِنِ اللّٰهُ يَشْهَدُ بِمَآ اَنْزَلَ اِلَيْكَ اَنْزَلَه بِعِلْمِه وَالْمَلٰٓئِكَةُ يَشْهَدُوْنَ وَكَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا
167	निश्चय ही, जो लोग काफिर हैं और दूसरों को अल्लाह के रास्ते से रोकते हैं, वे वास्तव में बहुत दूर भटक गए हैं	اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ قَدْ ضَلُّوْا ضَلٰلًا بَعِيْدًا
168	निश्चय ही, जो लोग काफिर हैं और अन्याय करते हैं, अल्लाह उन्हें माफ नहीं करेगा, और न ही उन्हें सीधा रास्ता दिखाएगा।	اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَظَلَمُوْا لَمْ يَكُنِ اللّٰهُ لِيَغْفِرَ لَهُمْ وَلَا لِيَهْدِيَهُمْ طَرِيْقًا
169	सिवाय नरक की आग के रास्ते के, जहाँ वे हमेशा रहेंगे। और यह अल्लाह के लिए बहुत आसान है	اِلَّا طَرِيْقَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا وَكَانَ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرًا
170	हे मानवो! निश्चय ही, तुम्हारे पास तुम्हारे प्रभु की ओर से सत्य लेकर रसूल आया है, इसलिए उस पर विश्वास करो, यह तुम्हारे लिए बेहतर है और यदि तुम काफिर हो, तो जान लो कि आकाश और धरती में जो कुछ है, वह अल्लाह का है अल्लाह सर्वज्ञ, सर्वबुद्धिमान है	يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاۤءَكُمُ الرَّسُوْلُ بِالْحَقِّ مِنْ رَّبِّكُمْ فَاٰمِنُوْا خَيْرًا لَّكُمْ وَاِنْ تَكْفُرُوْا فَاِنَّ لِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا
171	हे अहले किताब! अपने धर्म में हद से आगे न जाओ, और अल्लाह के बारे में सिवाय सत्य के कुछ न कहो। निश्चय ही, अल-मसीह ईसा पुत्र मरियम अल्लाह का रसूल है और उसका कलमा है जो उसने मरियम को दिया, और उसकी ओर से एक रूह है इसलिए अल्लाह और उसके रसूलों पर विश्वास करो और यह न कहो, '(ईश्वर) तीन हैं' इस कथन को छोड़ दो। यह तुम्हारे लिए बेहतर है निश्चय ही, अल्लाह एकमात्र ईश्वर है, वह इससे बहुत पवित्र है कि उसका कोई पुत्र हो। जो कुछ आकाश और धरती में है, वह उसी का है और अल्लाह रक्षक के रूप में पर्याप्त है	يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ لَا تَغْلُوْا فِيْ دِيْنِكُمْ وَلَا تَقُوْلُوْا عَلَى اللّٰهِ اِلَّا الْحَقَّ اِنَّمَا الْمَسِيْحُ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ رَسُوْلُ اللّٰهِ وَكَلِمَتُه اَلْقٰىهَآ اِلٰى مَرْيَمَ وَرُوْحٌ مِّنْهُ فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِه وَلَا تَقُوْلُوْا ثَلٰثَةٌ اِنْتَهُوْا خَيْرًا لَّكُمْ اِنَّمَا اللّٰهُ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ سُبْحٰنَه اَنْ يَّكُوْنَ لَه وَلَدٌ لَه مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا
172	अल-मसीह अल्लाह का दास होने में बिल्कुल संकोच नहीं करता, और न ही वे फरिश्ते जो उसके निकट हैं और जो कोई उसकी इबादत से इनकार करता है और घमंड करता है, अल्लाह उन्हें सबको अपनी ओर इकट्ठा करेगा।	لَنْ يَّسْتَنْكِفَ الْمَسِيْحُ اَنْ يَّكُوْنَ عَبْدًا لِّلّٰهِ وَلَا الْمَلٰٓئِكَةُ الْمُقَرَّبُوْنَ وَمَنْ يَّسْتَنْكِفْ عَنْ عِبَادَتِه وَيَسْتَكْبِرْ فَسَيَحْشُرُهُمْ اِلَيْهِ جَمِيْعًا
173	जो लोग विश्वास करते हैं और अच्छे कर्म करते हैं, अल्लाह उन्हें उनका पूरा इनाम देगा और अपनी कृपा से और बढ़ाएगा। और जो लोग इनकार करते हैं और घमंड करते हैं, उन्हें वह दर्दनाक सजा देगा। और उन्हें अल्लाह के अलावा कोई रक्षक या सहायक नहीं मिलेगा।	فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَيُوَفِّيْهِمْ اُجُوْرَهُمْ وَيَزِيْدُهُمْ مِّنْ فَضْلِه وَاَمَّا الَّذِيْنَ اسْتَنْكَفُوْا وَاسْتَكْبَرُوْا فَيُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا وَّلَا يَجِدُوْنَ لَهُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا
174	हे मानवो! निश्चय ही, तुम्हारे पास तुम्हारे प्रभु की ओर से सत्य का प्रमाण आ चुका है, और हमने तुम्हारे लिए एक उज्ज्वल प्रकाश उतारा है	يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاۤءَكُمْ بُرْهَانٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَاَنْزَلْنَآ اِلَيْكُمْ نُوْرًا مُّبِيْنًا

فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَاعْتَصَمُوْا بِهٖ فَسَيُدْخِلُهُمْ فِيْ رَحْمَةٍ مِّنْهُ وَفَضْلٍ وَّيَهْدِيْهِمْ اِلَيْهِ صِرَاطًا مُّسْتَقِيْمًا	**175**	और जो लोग अल्लाह पर विश्वास करते है और उस पर दृढ़ता से टिके रहते है, अल्लाह उन्हे अपनी दया और कृपा मे प्रवेश कराएगा, और उन्हे अपनी ओर सीधा रास्ता दिखाएगा।
يَسْتَفْتُوْنَكَ قُلِ اللّٰهُ يُفْتِيْكُمْ فِى الْكَلٰلَةِ اِنِ امْرُؤٌا هَلَكَ لَيْسَ لَه وَلَدٌ وَّلَه اُخْتٌ فَلَهَا نِصْفُ مَا تَرَكَ وَهُوَ يَرِثُهَآ اِنْ لَّمْ يَكُنْ لَّهَا وَلَدٌ فَاِنْ كَانَتَا اثْنَتَيْنِ فَلَهُمَا الثُّلُثٰنِ مِمَّا تَرَكَ وَاِنْ كَانُوْٓا اِخْوَةً رِّجَالًا وَّنِسَاءً فَلِلذَّكَرِ مِثْلُ حَظِّ الْاُنْثَيَيْنِ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ اَنْ تَضِلُّوْا وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ	**176**	वे तुमसे कलाला के बारे मे फतवा माँगते हो कहो, 'अल्लाह तुमहे कलाला के बारे मे फतवा देता है: यदि कोई व्यक्ति मर जाता है और उसका कोई बच्चा नहीं है, लेकिन उसकी एक बहन है, तो उस छोड़ी गई संपत्ति का आधा हिस्सा मिलेगा, और उसका भाई उसकी सारी संपत्ति का वारिस होगा, यदि उसका कोई बच्चा नहीं हो लेकिन यदि बहनें दो हों, तो उन्हे छोड़ी गई संपत्ति का दो-तिहाई हिस्सा मिलेगा। और यदि वारिसों मे भाई और बहनें हों, तो एक भाई का हिस्सा दो बहनों के हिस्से के बराबर होगा।' अल्लाह तुमहे यह नियम स्पष्ट करता है, ताकि तुम भटक न जाओ। अल्लाह हर चीज को जानता हो

छंदों की संख़्या	اَلْمَائِدَة	مدنية
१२०	अल-मदौह - 5	मदनी

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल-मदौह (दावत)

1	ऐ ईमान वालो! अपनी प्रतिज्ञाओं को पूरा करो। तुम्हारे लिए चौपाया जानवर हलाल किए गए हैं, सिवाय उनके जो तुम्हें बताए जाएँगे, लेकिन इहराम (हज या उमराह) की हालत में शिकार करना हलाल नहीं है। निश्चय ही, अल्लाह जो चाहता है, वही हुक्म देता है।	يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَوْفُوْا بِالْعُقُوْدِ اُحِلَّتْ لَكُمْ بَهِيْمَةُ الْاَنْعَامِ اِلَّا مَا يُتْلٰى عَلَيْكُمْ غَيْرَ مُحِلِّى الصَّيْدِ وَاَنْتُمْ حُرُمٌ اِنَّ اللّٰهَ يَحْكُمُ مَا يُرِيْدُ
2	ऐ ईमान वालो! अल्लाह की पवित्र निशानियों का उल्लंघन न करो, और न हराम महीनों का, न क़ुरबानी के जानवरों (हदय), का, और न उन जानवरों का जो निशानियों से सजाए गए हों (क़लायद), और न उन लोगों का जो बैतुलहराम की ओर जा रहे हैं, जो अपने रब की कृपा और ख़ुशी की तलाश में हैं। लेकिन जब तुम इहराम से बाहर आ जाओ, तो तुम शिकार कर सकते हो। और किसी क़ौम से तुम्हारी दुश्मनी, जो तुम्हें मस्जिदुल हराम से रोकती थी, तुम्हें हद से गुज़रने के लिए न उकसाए। और नेकी और तक़वा में एक-दूसरे की मदद करो, और गुनाह और दुश्मनी में मदद न करो। अल्लाह से डरो, निश्चय ही, अल्लाह की सजा बहुत सख़्त है।	يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُحِلُّوْا شَعَاۤىِٕرَ اللّٰهِ وَلَا الشَّهْرَ الْحَرَامَ وَلَا الْهَدْيَ وَلَا الْقَلَاۤىِٕدَ وَلَآ اٰۤمِّيْنَ الْبَيْتَ الْحَرَامَ يَبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنْ رَّبِّهِمْ وَرِضْوَانًا وَاِذَا حَلَلْتُمْ فَاصْطَادُوْا وَلَا يَجْرِمَنَّكُمْ شَنَاٰنُ قَوْمٍ اَنْ صَدُّوْكُمْ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ اَنْ تَعْتَدُوْا وَتَعَاوَنُوْا عَلَى الْبِرِّ وَالتَّقْوٰى وَلَا تَعَاوَنُوْا عَلَى الْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ وَاتَّقُوا اللّٰهَ اِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ
3	तुम्हारे लिए हराम किया गया है मुरदा (बंगकाई), ख़ून, सुअर का मांस, और वह (जानवर) जो अल्लाह के नाम पर ज़बह न किया गया हो, जो गला घोंटकर मारा गया हो, जो मारकर मारा गया हो, जो गिरकर मारा गया हो, जो सींग मारकर मारा गया हो, और जो जंगली जानवर ने फाड़ खाया हो, सिवाय इसके कि तुम उसे ज़बह कर लो। और वह जो बुतों के लिए ज़बह किया गया हो। और (हराम है) आज़लाम (तीरों) से नसीब आज़माना, यह तो फ़िस्क़ (पाप) है। आज काफ़िर लोग तुम्हारे दीन को हराने से निराश हो चुके हैं, इसलिए उनसे न डरो, बल्कि मुझसे डरो। आज मैंने तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन पूरा कर दिया, और तुम पर अपनी नेअमत पूरी कर दी, और तुम्हारे लिए इस्लाम को दीन के रूप में पसंद किया। लेकिन जो कोई भूख से मजबूर हो, बिना गुनाह की इच्छा के, तो निश्चय ही, अल्लाह बड़ा माफ़ करने वाला, बड़ा मेहरबान है।	حُرِّمَتْ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةُ وَالدَّمُ وَلَحْمُ الْخِنْزِيْرِ وَمَآ اُهِلَّ لِغَيْرِ اللّٰهِ بِهٖ وَالْمُنْخَنِقَةُ وَالْمَوْقُوْذَةُ وَالْمُتَرَدِّيَةُ وَالنَّطِيْحَةُ وَمَآ اَكَلَ السَّبُعُ اِلَّا مَا ذَكَّيْتُمْ وَمَا ذُبِحَ عَلَى النُّصُبِ وَاَنْ تَسْتَقْسِمُوْا بِالْاَزْلَامِ ذٰلِكُمْ فِسْقٌ اَلْيَوْمَ يَىِٕسَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ دِيْنِكُمْ فَلَا تَخْشَوْهُمْ وَاخْشَوْنِ اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ وَاَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِيْ وَرَضِيْتُ لَكُمُ الْاِسْلَامَ دِيْنًا فَمَنِ اضْطُرَّ فِيْ مَخْمَصَةٍ غَيْرَ مُتَجَانِفٍ لِّاِثْمٍ فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ

4	व॓तमुस॓(मुहम्मद) पछुत॓ह,ै 'उनक॓लिए क्या हलाल कयिा गया ह?ै' कहो, 'तमुहार॓लिए वह सब हलाल कयिा गया जो अच्छा ह,ै और (वह शकिार) जो तमुन॓अपन॓शकिारी जानवरों को सखिाया, जसै॓ा कि अल्लाह न॓तमुह॓सखिाया। तो जो कछु उनहोंन॓तमुहार॓लिए पकड़ा, उस॓खाओ, और (उस॓छोड़त॓वक्त) अल्लाह का नाम लो। और अल्लाह स॓डरो, नश्चिय ही, अल्लाह बहत्त जल्द हसिाब करन॓वाला ह।ै	يَسْـَٔلُوْنَكَ مَاذَآ اُحِلَّ لَهُمْ قُلْ اُحِلَّ لَكُمُ الطَّيِّبٰتُ وَمَا عَلَّمْتُمْ مِّنَ الْجَوَارِحِ مُكَلِّبِيْنَ تُعَلِّمُوْنَهُنَّ مِمَّا عَلَّمَكُمُ اللّٰهُ فَكُلُوْا مِمَّآ اَمْسَكْنَ عَلَيْكُمْ وَاذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ عَلَيْهِ وَاتَّقُوا اللّٰهَ اِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ
5	आज तमुहार॓लिए वह सब हलाल कयिा गया जो अच्छा ह।ै और अहल-ए-कताि॓ब (यहद्दी और नसारा) क॓ज॓बीह॓(मांस) तमुहार॓लिए हलाल ह,ै और तमुहारा खाना उनक॓लिए हलाल ह।ै और (हलाल ह)ै ईमान वाली औरत॓जो अपनी इज्ज़त की हफि़ाज़त करती ह,ै और उन लोगों की औरत॓जो तमुस॓पहल॓कताि॓ब दी गई थीं और अपनी इज्ज़त की हफि़ाज़त करती ह,ै बशरत॓तमु उनह॓उनका महेर द॓दो और शादी करो, न कि ज़नि॓ा करन॓या गपुत पर्मेकिा बनान॓क॓लिए। और जो कोई ईमान लान॓क॓बाद काफ़रि हो जाए, तो उसका अमल बकेार हो जाएगा, और वह आख़रित म॓नकु़सान उठान॓वालों म॓होगा।	اَلْيَوْمَ اُحِلَّ لَكُمُ الطَّيِّبٰتُ وَطَعَامُ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ حِلٌّ لَّكُمْ وَطَعَامُكُمْ حِلٌّ لَّهُمْ وَالْمُحْصَنٰتُ مِنَ الْمُؤْمِنٰتِ وَالْمُحْصَنٰتُ مِنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ اِذَآ اٰتَيْتُمُوْهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ مُحْصِنِيْنَ غَيْرَ مُسٰفِحِيْنَ وَلَا مُتَّخِذِيْٓ اَخْدَانٍ وَمَنْ يَّكْفُرْ بِالْاِيْمَانِ فَقَدْ حَبِطَ عَمَلُه وَهُوَ فِى الْاٰخِرَةِ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ
6	ऐ ईमान वालो! जब तमु नमाज़ क॓लिए खड़॓हो, तो अपन॓चेहरों और अपन॓हाथों को कोहनयिों तक धो लो, और अपन॓सरि पर मसह करो, और अपन॓दोनों परैों को टखनों तक धो लो (वज़ू॒ करो)। और अगर तमु जनुबु (नापाक) हो, तो गस़ुल (नहा) लो। और अगर तमु बीमार हो, या सफ़र म॓हो, या शौच स॓आए हो, या औरतों को छआु हो, और तमुह॓पानी न मलि,े तो पाक मटिट़ी स॓तयमम्मु करो; अपन॓चेहरों और हाथों पर उसस॓मसह करो। अल्लाह तमुह॓मश़क़लि म॓डालना नहीं चाहता, बलक़ि वह तमुह॓पाक करना चाहता ह॓और अपनी नअेमत को तमु पर पूरा करना चाहता ह,ै ताकि तमु शक्रु़यिा अदा करो।	يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا قُمْتُمْ اِلَى الصَّلٰوةِ فَاغْسِلُوْا وُجُوْهَكُمْ وَاَيْدِيَكُمْ اِلَى الْمَرَافِقِ وَامْسَحُوْا بِرُءُوْسِكُمْ وَاَرْجُلَكُمْ اِلَى الْكَعْبَيْنِ وَاِنْ كُنْتُمْ جُنُبًا فَاطَّهَّرُوْا وَاِنْ كُنْتُمْ مَّرْضٰٓى اَوْ عَلٰى سَفَرٍ اَوْ جَاءَ اَحَدٌ مِّنْكُمْ مِّنَ الْغَآئِطِ اَوْ لٰمَسْتُمُ النِّسَاءَ فَلَمْ تَجِدُوْا مَاءً فَتَيَمَّمُوْا صَعِيْدًا طَيِّبًا فَامْسَحُوْا بِوُجُوْهِكُمْ وَاَيْدِيْكُمْ مِّنْهُ مَا يُرِيْدُ اللّٰهُ لِيَجْعَلَ عَلَيْكُمْ مِّنْ حَرَجٍ وَّلٰكِنْ يُّرِيْدُ لِيُطَهِّرَكُمْ وَلِيُتِمَّ نِعْمَتَه عَلَيْكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ
7	और अल्लाह की नअेमत को याद करो जो तमु पर हई,ु और उसकी पर्तजिज्ञा को जो उसन॓तमुस॓बाधँी, जब तमुन॓कहा, 'हमन॓सन्ुा और हमन॓माना।' और अल्लाह स॓डरो, नश्चिय ही, अल्लाह दलिों की बातों को जानन॓वाला ह।ै	وَاذْكُرُوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَمِيْثَاقَهُ الَّذِيْ وَاثَقَكُمْ بِهٖٓ اِذْ قُلْتُمْ سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا وَاتَّقُوا اللّٰهَ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ
8	ऐ ईमान वालो! अल्लाह क॓लिए इंसाफ़ क॓साथ खड़॓होन॓वाल॓बनो, और गवाही म॓इंसाफ़ करो। और कसिी क़ौम स॓तमुहारी दश्मुनी तमुह॓नाइंसाफ़ी करन॓क॓लिए न उकसाए। इंसाफ़ करो, यह तक़वा क॓ज़्यादा क़रीब ह।ै और अल्लाह स॓डरो, नश्चिय ही, अल्लाह तमुहार॓कामों स॓पूरी तरह वाक़फ़ि ह।ै	يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْا قَوَّامِيْنَ لِلّٰهِ شُهَدَاءَ بِالْقِسْطِ وَلَا يَجْرِمَنَّكُمْ شَنَاٰنُ قَوْمٍ عَلٰٓى اَلَّا تَعْدِلُوْا اِعْدِلُوْا هُوَ اَقْرَبُ لِلتَّقْوٰى وَاتَّقُوا اللّٰهَ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌ بِمَا تَعْمَلُوْنَ
9	अल्लाह न॓उन लोगों स॓वादा कयिा ह॓जो ईमान लाए और नके अमल कए, कि उनक॓लिए माफ़ी और बड़ा सवाब ह।ै	وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ عَظِيْمٌ

وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَآ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ	और जो लोग काफ़िर हुए और हमारी आयतों को झठ्लाया, वे ही जहन्नम के बाशदि हैं।	**10**
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اذْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ اِذْ هَمَّ قَوْمٌ اَنْ يَّبْسُطُوْٓا اِلَيْكُمْ اَيْدِيَهُمْ فَكَفَّ اَيْدِيَهُمْ عَنْكُمْ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ	ऐ ईमान वालो! अल्लाह की उस नअेमत को याद करो जो तुम पर हुई, जब एक क़ौम ने तुम पर अपने हाथों से हमला करने का इरादा किया, तो अल्लाह ने उनके हाथों को तुमसे रोक लिया। और अल्लाह से डरो, और ईमान वालों को चाहिए कि वे बस अल्लाह पर भरोसा करें।	**11**
وَلَقَدْ اَخَذَ اللّٰهُ مِيْثَاقَ بَنِيْٓ اِسْرَاۤءِيْلَ وَبَعَثْنَا مِنْهُمُ اثْنَيْ عَشَرَ نَقِيْبًا وَقَالَ اللّٰهُ اِنِّيْ مَعَكُمْ ۗ لَىِٕنْ اَقَمْتُمُ الصَّلٰوةَ وَاٰتَيْتُمُ الزَّكٰوةَ وَاٰمَنْتُمْ بِرُسُلِيْ وَعَزَّرْتُمُوْهُمْ وَاَقْرَضْتُمُ اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا لَّاُكَفِّرَنَّ عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ وَلَاُدْخِلَنَّكُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۚ فَمَنْ كَفَرَ بَعْدَ ذٰلِكَ مِنْكُمْ فَقَدْ ضَلَّ سَوَاۤءَ السَّبِيْلِ	और निश्चय ही, अल्लाह ने बनी इसराइल से प्रतिज्ञा ली थी, और हमने उनके बीच बारह सरदार नियुक्त किए थे। और अल्लाह ने कहा, 'मैं तुम्हारे साथ हूँ अगर तुम नमाज़ क़ायम करो, ज़कात अदा करो, मेरे रसूलों पर ईमान लाओ, उनकी मदद करो, और अल्लाह को अच्छा क़र्ज़ दो, तो मैं तुम्हारे गुनाह माफ़ कर दूँगा और तुम्हें उन जन्नतों में दाख़िल करूँगा जिनके नीचे नहरें बहती हैं। लेकिन तुममें से जो कोई इसके बाद काफ़िर हो जाए, वह सीधे रास्ते से भटक गया।'	**12**
فَبِمَا نَقْضِهِمْ مِّيْثَاقَهُمْ لَعَنّٰهُمْ وَجَعَلْنَا قُلُوْبَهُمْ قٰسِيَةً ۚ يُحَرِّفُوْنَ الْكَلِمَ عَنْ مَّوَاضِعِهٖ ۙ وَنَسُوْا حَظًّا مِّمَّا ذُكِّرُوْا بِهٖ ۚ وَلَا تَزَالُ تَطَّلِعُ عَلٰى خَاۤئِنَةٍ مِّنْهُمْ اِلَّا قَلِيْلًا مِّنْهُمْ ۗ فَاعْفُ عَنْهُمْ وَاصْفَحْ ۗ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ	लेकिन चूँकि उन्होंने अपनी प्रतिज्ञा तोड़ी, हमने उन्हें लानत दी और उनके दिलों को सख़्त कर दिया। वे (अल्लाह के) कलाम को उसकी जगह से बदल देते हैं, और जो नसीहत उन्हें दी गई थी, उसका एक हिस्सा भूल गए। तुम (मुहम्मद) हमेशा उनकी ख़ियानत देखते रहोगे, सिवाय उनके कुछ लोगों के जो (ख़ियानत नहीं करते)। फिर भी उन्हें माफ़ कर दो और दरगुज़र करो। निश्चय ही, अल्लाह नेकी करने वालों को पसंद करता है।	**13**
وَمِنَ الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّا نَصٰرٰٓى اَخَذْنَا مِيْثَاقَهُمْ فَنَسُوْا حَظًّا مِّمَّا ذُكِّرُوْا بِهٖ ۠ فَاَغْرَيْنَا بَيْنَهُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَاۤءَ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ ۭ وَسَوْفَ يُنَبِّئُهُمُ اللّٰهُ بِمَا كَانُوْا يَصْنَعُوْنَ	और जिन लोगों ने कहा, 'हम नसारा (ईसाई) हैं,' हमने उनसे उनकी प्रतिज्ञा ली थी, लेकिन उन्होंने उस नसीहत का एक हिस्सा भूल गए जो उन्हें दी गई थी। इसलिए हमने उनके बीच क़ियामत के दिन तक दुश्मनी और नफ़रत पैदा कर दी। और जल्द ही अल्लाह उन्हें बताएगा कि उन्होंने क्या किया।	**14**
يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ قَدْ جَاۤءَكُمْ رَسُوْلُنَا يُبَيِّنُ لَكُمْ كَثِيْرًا مِّمَّا كُنْتُمْ تُخْفُوْنَ مِنَ الْكِتٰبِ وَيَعْفُوْا عَنْ كَثِيْرٍ ۭ قَدْ جَاۤءَكُمْ مِّنَ اللّٰهِ نُوْرٌ وَّكِتٰبٌ مُّبِيْنٌ	ऐ अहल-ए-किताब! हमारे रसूल तुम्हारे पास आए हैं, जो तुम्हारे लिए बहुत सी चीज़ें साफ़ करते हैं जो तुम किताब में छिपाते थे, और बहुत सी चीज़ें छोड़ देते हैं। तुम्हारे पास अल्लाह की ओर से नूर और एक साफ़ किताब आई है।	**15**
يَّهْدِيْ بِهِ اللّٰهُ مَنِ اتَّبَعَ رِضْوَانَهٗ سُبُلَ السَّلٰمِ وَيُخْرِجُهُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ بِاِذْنِهٖ وَيَهْدِيْهِمْ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ	उस किताब के ज़रिए अल्लाह उस शख़्स को सलामती के रास्ते की हिदायत देता है जो उसकी ख़ुशी की तलाश करता है, और उसे अपनी इजाज़त से अंधेरों से नूर की ओर निकालता है, और उसे सीधे रास्ते की हिदायत देता है।	**16**

لَقَدْ كَفَرَ الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْمَسِيْحُ ابْنُ مَرْيَمَ قُلْ فَمَنْ يَّمْلِكُ مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا اِنْ اَرَادَ اَنْ يُّهْلِكَ الْمَسِيْحَ ابْنَ مَرْيَمَ وَاُمَّه وَمَنْ فِى الْاَرْضِ جَمِيْعًا وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا يَخْلُقُ مَا يَشَاۤءُ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ	नश्चिय ही, व॑लोग काफ़िर हो गए जो कहत॑है॑, 'अल्लाह वही अल-मसीह इब्न मरयम हो॑' कहो (मुहम्मद), 'अगर अल्लाह अल-मसीह इब्न मरयम, उसकी मा॑, और धरती पर मौजूद सभी को नष्ट करना चाह॑, तो कौन उस॑रोक सकता ह?' और अल्लाह ही क॑लिए ह॑आकाशों और धरती की बादशाही और जो कछ उनक॑बीच ह॑वह जो चाहता ह॑, पैदा करता ह॑ और अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर ह॑	17
وَقَالَتِ الْيَهُوْدُ وَالنَّصٰرٰى نَحْنُ اَبْنٰٓؤُا اللّٰهِ وَاَحِبَّاۤؤُه قُلْ فَلِمَ يُعَذِّبُكُمْ بِذُنُوْبِكُمْ بَلْ اَنْتُمْ بَشَرٌ مِّمَّنْ خَلَقَ يَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَاۤءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَاۤءُ وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَاِلَيْهِ الْمَصِيْرُ	यहद्दी और नसारा कहत॑है॑, 'हम अल्लाह क॑बटे॑और उसक॑ प्यारे॑ह॑' कहो, 'तो वह तमुह॑तमुहारे॑गनाहों की वजह स॑सजा क्यों दता ह? नहीं, तमु बस इंसान हो उन लोगों म॑स॑जनिह॑ उसन॑बनाया। वह जसि॑चाहता ह॑माफ़ करता ह॑और जसि॑ चाहता ह॑सजा दता ह॑ और अल्लाह ही क॑लिए ह॑आकाशों और धरती की बादशाही और जो कछ उनक॑बीच ह॑ और उसी की ओर सबको लौटना ह॑'	18
يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ قَدْ جَاۤءَكُمْ رَسُوْلُنَا يُبَيِّنُ لَكُمْ عَلٰى فَتْرَةٍ مِّنَ الرُّسُلِ اَنْ تَقُوْلُوْا مَا جَاۤءَنَا مِنْۢ بَشِيْرٍ وَّلَا نَذِيْرٍ فَقَدْ جَاۤءَكُمْ بَشِيْرٌ وَّنَذِيْرٌ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ	ऐ अहल-ए-कताब! हमार॑रसूल तमुहार॑पास आए ह॑, जो तमुह॑ (हमारा शरीयत) समझात॑ह॑, जब रसूलों का सलिसिला रक गया था, ताक॑तमु न कहो, 'हमार॑पास न कोई खशखबरी दने॑वाला आया और न चेतावनी दने॑वाला।' नश्चिय ही, तमुहार॑पास खशखबरी दने॑वाला और चेतावनी दने॑वाला आ चका ह॑ और अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर ह॑	19
وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِه يٰقَوْمِ اذْكُرُوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ اِذْ جَعَلَ فِيْكُمْ اَنْۢبِيَاۤءَ وَجَعَلَكُمْ مُّلُوْكًا وَّاٰتٰىكُمْ مَّا لَمْ يُؤْتِ اَحَدًا مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ	और (याद करो) जब मसा न॑अपनी कौम स॑कहा, 'ऐ मरी कौम! अल्लाह की उस नअमत को याद करो जो तमु पर हई, जब उसन॑तमु म॑नबी बनाए, और तमुह॑आज़ाद लोग बनाया, और तमुह॑वह दयि जो पहल॑कसी कौम को नहीं दयि गया।'	20
يٰقَوْمِ ادْخُلُوا الْاَرْضَ الْمُقَدَّسَةَ الَّتِيْ كَتَبَ اللّٰهُ لَكُمْ وَلَا تَرْتَدُّوْا عَلٰٓى اَدْبَارِكُمْ فَتَنْقَلِبُوْا خٰسِرِيْنَ	ऐ मरी कौम! उस पवित्र ज़मीन (फ़लिसितीन) म॑दाख़ि हो जो अल्लाह न॑तमुहार॑लिए मक़र्रर की, और पीछ॑न हटो (मश्क़लिों स॑डरकर), वरना तमु नक़सान उठान॑वालों म॑हो जाओग॑	21
قَالُوْا يٰمُوْسٰٓى اِنَّ فِيْهَا قَوْمًا جَبَّارِيْنَ وَاِنَّا لَنْ نَّدْخُلَهَا حَتّٰى يَخْرُجُوْا مِنْهَا فَاِنْ يَّخْرُجُوْا مِنْهَا فَاِنَّا دٰخِلُوْنَ	उनह॑न॑कहा, 'ऐ मसा! उस ज़मीन म॑बहत ताक़तवर और ज़ालमि लोग ह॑, हम वहा॑कभी नहीं जाएँगे॑जब तक व॑वहा॑स॑न निकल जाएँ॑ अगर व॑वहा॑स॑निकल जाए॑, तो हम ज़रूर जाएँगे॑'	22
قَالَ رَجُلٰنِ مِنَ الَّذِيْنَ يَخَافُوْنَ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِمَا ادْخُلُوْا عَلَيْهِمُ الْبَابَ فَاِذَا دَخَلْتُمُوْهُ فَاِنَّكُمْ غٰلِبُوْنَ وَعَلَى اللّٰهِ فَتَوَكَّلُوْٓا اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ	उनम॑स॑दो लोगों न॑, जनिह॑अल्लाह न॑नअमत दी थी और जो तक़वा रखत॑थ॑, कहा, 'उन पर (शहर क॑) दरवाज़े॑स॑हमला करो। अगर तमु वहा॑दाख़ि हो गए, तो तमु ज़रूर जीत जाओग॑ और अल्लाह पर भरोसा करो, अगर तमु ईमान वाल॑हो।'	23

24	उनहोंने कहा, 'ऐ मूसा! हम कभी भी वहाँ नहीं जाएँगे जब तक वे वहाँ हैं तुम और तुम्हारा रब जाओ और उनसे लड़ो। हम तो यहीं बैठे रहेंगे।'	قَالُوْا يٰمُوْسٰٓى اِنَّا لَنْ نَّدْخُلَهَآ اَبَدًا مَّا دَامُوْا فِيْهَا فَاذْهَبْ اَنْتَ وَرَبُّكَ فَقَاتِلَآ اِنَّا هٰهُنَا قٰعِدُوْنَ
25	उसने (मूसा ने) कहा, 'ऐ मेरे रब! मेरे बस में सिर्फ़ मेरा और मेरे भाई का ज़ोर है तो हमारे और इन फ़ासिक़ लोगों के बीच फ़ासला कर दे।'	قَالَ رَبِّ اِنِّيْ لَآ اَمْلِكُ اِلَّا نَفْسِيْ وَاَخِيْ فَافْرُقْ بَيْنَنَا وَبَيْنَ الْقَوْمِ الْفٰسِقِيْنَ
26	(अल्लाह ने) कहा, 'तो वह (ज़मीन) उनके लिए चालीस साल तक हराम कर दी गई है, इस दौरान वे ज़मीन पर भटकते रहेंगे। तो तू (मूसा) इन फ़ासिक़ लोगों के लिए अफ़सोस न कर।'	قَالَ فَاِنَّهَا مُحَرَّمَةٌ عَلَيْهِمْ اَرْبَعِيْنَ سَنَةً يَتِيْهُوْنَ فِى الْاَرْضِ فَلَا تَاْسَ عَلَى الْقَوْمِ الْفٰسِقِيْنَ
27	और (मुहम्मद) उनहें आदम के दो बेटों की सच्ची कहानी सुनाओ, जब दोनों ने क़ुरबानी पेश की, तो एक (हाबील) की क़ुरबानी क़बूल हुई और दूसरे (क़ाबील) की नहीं। उसने (क़ाबील ने) कहा, 'मैं तुझे ज़रूर क़त्ल कर दूँगा!' उसने (हाबील ने) कहा, 'अल्लाह तो बस तक़वा वालों की (क़ुरबानी) क़बूल करता है।'	وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَاَ ابْنَيْ اٰدَمَ بِالْحَقِّ اِذْ قَرَّبَا قُرْبَانًا فَتُقُبِّلَ مِنْ اَحَدِهِمَا وَلَمْ يُتَقَبَّلْ مِنَ الْاٰخَرِ قَالَ لَاَقْتُلَنَّكَ قَالَ اِنَّمَا يَتَقَبَّلُ اللّٰهُ مِنَ الْمُتَّقِيْنَ
28	'अगर तू मुझ पर क़त्ल करने के लिए हाथ उठाएगा, तो मैं तुझ पर क़त्ल करने के लिए हाथ नहीं उठाऊँगा। मैं तो अल्लाह से डरता हूँ जो सारे जहानों का रब है।'	لَئِنْۢ بَسَطْتَّ اِلَيَّ يَدَكَ لِتَقْتُلَنِيْ مَآ اَنَا بِبَاسِطٍ يَّدِيَ اِلَيْكَ لِاَقْتُلَكَ اِنِّيْٓ اَخَافُ اللّٰهَ رَبَّ الْعٰلَمِيْنَ
29	'मैं चाहता हूँ कि तू मेरे क़त्ल का गुनाह और अपने गुनाहों को लेकर लौटे, फिर तू जहन्नम का बाशिंदा होगा। और यही ज़ालिमों की सज़ा है।'	اِنِّيْٓ اُرِيْدُ اَنْ تَبُوْاَ بِاِثْمِيْ وَاِثْمِكَ فَتَكُوْنَ مِنْ اَصْحٰبِ النَّارِ وَذٰلِكَ جَزٰٓؤُا الظّٰلِمِيْنَ
30	तो उसकी (क़ाबील की) नफ़्स ने उसे अपने भाई के क़त्ल के लिए उकसाया, फिर उसने उसे क़त्ल कर दिया, और वह नुक़सान उठाने वालों में शामिल हो गया।	فَطَوَّعَتْ لَه نَفْسُه قَتْلَ اَخِيْهِ فَقَتَلَه فَاَصْبَحَ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ
31	फिर अल्लाह ने एक कौआ भेजा जो ज़मीन खोद रहा था, ताकि उसे (क़ाबील को) दिखाए कि उसे अपने भाई की लाश कैसे दफ़नानी चाहिए। उसने (क़ाबील ने) कहा, 'हाय, मेरी नुक़सान! मैं इस कौए की तरह क्यों नहीं कर सका कि अपने भाई की लाश को दफ़ना सकूँ।' तो वह पछताने वालों में शामिल हो गया।	فَبَعَثَ اللّٰهُ غُرَابًا يَّبْحَثُ فِى الْاَرْضِ لِيُرِيَه كَيْفَ يُوَارِيْ سَوْءَةَ اَخِيْهِ قَالَ يٰوَيْلَتٰٓى اَعَجَزْتُ اَنْ اَكُوْنَ مِثْلَ هٰذَا الْغُرَابِ فَاُوَارِيَ سَوْءَةَ اَخِيْ فَاَصْبَحَ مِنَ النّٰدِمِيْنَ
32	इसलिए हमने बनी इसराइल के लिए हुक्म दिया कि जो कोई किसी की जान ले, बिना इसके कि उसने किसी की जान ली हो या ज़मीन पर फ़साद फैलाया हो, तो वह ऐसा है जैसे उसने सारे इंसानों की जान ले ली। और जो कोई किसी की जान बचाए, तो वह ऐसा है जैसे उसने सारे इंसानों की जान बचाई। और निश्चय ही, हमारे रसूल उनके पास साफ़ दलीलें लेकर आए, लेकिन इसके बाद भी उनमें से बहुत से लोग ज़मीन पर हद से गुज़र गए।	مِنْ اَجْلِ ذٰلِكَ كَتَبْنَا عَلٰى بَنِيْٓ اِسْرَاۤءِيْلَ اَنَّه مَنْ قَتَلَ نَفْسًا بِغَيْرِ نَفْسٍ اَوْ فَسَادٍ فِى الْاَرْضِ فَكَاَنَّمَا قَتَلَ النَّاسَ جَمِيْعًا وَمَنْ اَحْيَاهَا فَكَاَنَّمَآ اَحْيَا النَّاسَ جَمِيْعًا وَلَقَدْ جَاۤءَتْهُمْ رُسُلُنَا بِالْبَيِّنٰتِ ثُمَّ اِنَّ كَثِيْرًا مِّنْهُمْ بَعْدَ ذٰلِكَ فِى الْاَرْضِ لَمُسْرِفُوْنَ

33	जो लोग अल्लाह और उसके रसूल से जंग करते है और ज़मीन पर फ़साद फैलाते है, उनकी सजा यही है कि वे क़त्ल किए जाएँ, या सूली पर चढ़ाए जाएँ, या उनके हाथ और पैर उलट-सीधे काटे जाएँ, या उन्हे उनके ठिकाने से निकाल दिया जाए। यह उनके लिए दुनिया में ज़िल्लत है, और आख़िरत में उनके लिए बड़ा अज़ाब है	اِنَّمَا جَزٰٓؤُا الَّذِيْنَ يُحَارِبُوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَه وَيَسْعَوْنَ فِى الْاَرْضِ فَسَادًا اَنْ يُّقَتَّلُوْٓا اَوْ يُصَلَّبُوْٓا اَوْ تُقَطَّعَ اَيْدِيْهِمْ وَاَرْجُلُهُمْ مِّنْ خِلَافٍ اَوْ يُنْفَوْا مِنَ الْاَرْضِ ذٰلِكَ لَهُمْ خِزْيٌ فِى الدُّنْيَا وَلَهُمْ فِى الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيْمٌ
34	सिवाय उन लोगों के जो तुम्हारे क़ब्ज़े में आने से पहले तौबा कर लें; तो जान लो कि अल्लाह बड़ा माफ़ करने वाला, बड़ा महेरबान है	اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا مِنْ قَبْلِ اَنْ تَقْدِرُوْا عَلَيْهِمْ فَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ
35	ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरो और उसकी क़ुरबत (नज़दीकी) की तलाश करो, और उसके रास्ते में जिहाद करो, ताकि तुम कामयाब हो।	يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَابْتَغُوْٓا اِلَيْهِ الْوَسِيْلَةَ وَجَاهِدُوْا فِىْ سَبِيْلِه لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ
36	निश्चय ही, जो लोग काफ़िर है, अगर उनके पास वह सब हो जो ज़मीन पर है और उतना ही और, ताकि वे क़ियामत के दिन के अज़ाब से अपनी जान छुड़ाएँ, तो भी वह उनसे क़बूल नहीं होगा। उनके लिए दर्दनाक अज़ाब है	اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْ اَنَّ لَهُمْ مَّا فِى الْاَرْضِ جَمِيْعًا وَّمِثْلَه مَعَه لِيَفْتَدُوْا بِه مِنْ عَذَابِ يَوْمِ الْقِيٰمَةِ مَا تُقُبِّلَ مِنْهُمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ
37	वे जहन्नम से निकलना चाहेंगे, लेकिन वे उससे नहीं निकल सकेंगे और उनके लिए हमेशा रहने वाला अज़ाब है	يُرِيْدُوْنَ اَنْ يَّخْرُجُوْا مِنَ النَّارِ وَمَا هُمْ بِخٰرِجِيْنَ مِنْهَا وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّقِيْمٌ
38	और जो मर्द या औरत चोरी करे, उनके दोनों हाथ काट दो, उनके किए की सजा के रूप में और अल्लाह की ओर से सजा के तौर पर। और अल्लाह महाशक्तिशाली, महाबुद्धिमान है	وَالسَّارِقُ وَالسَّارِقَةُ فَاقْطَعُوْٓا اَيْدِيَهُمَا جَزَاءً بِمَا كَسَبَا نَكَالًا مِّنَ اللّٰهِ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ
39	लेकिन जो कोई अपनी जुल्म की हरकत के बाद तौबा कर ले और सुधार कर ले, तो निश्चय ही, अल्लाह उसकी तौबा क़बूल करता है निश्चय ही, अल्लाह बड़ा माफ़ करने वाला, बड़ा महेरबान है	فَمَنْ تَابَ مِنْ بَعْدِ ظُلْمِه وَاَصْلَحَ فَاِنَّ اللّٰهَ يَتُوْبُ عَلَيْهِ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ
40	क्या तुम नहीं जानते कि आकाशों और धरती की बादशाही अल्लाह की है? वह जिसे चाहता है सजा देता है और जिसे चाहता है माफ़ करता है और अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है	اَلَمْ تَعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ لَه مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ يُعَذِّبُ مَنْ يَّشَاءُ وَيَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَاءُ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ

يٰٓاَيُّهَا الرَّسُوْلُ لَا يَحْزُنْكَ الَّذِيْنَ يُسَارِعُوْنَ فِى الْكُفْرِ مِنَ الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِاَفْوَاهِهِمْ وَلَمْ تُؤْمِنْ قُلُوْبُهُمْ ۛ وَمِنَ الَّذِيْنَ هَادُوْا ۛ سَمّٰعُوْنَ لِلْكَذِبِ سَمّٰعُوْنَ لِقَوْمٍ اٰخَرِيْنَ ۙ لَمْ يَاْتُوْكَ ۛ يُحَرِّفُوْنَ الْكَلِمَ مِنْۢ بَعْدِ مَوَاضِعِهٖ ۚ يَقُوْلُوْنَ اِنْ اُوْتِيْتُمْ هٰذَا فَخُذُوْهُ وَاِنْ لَّمْ تُؤْتَوْهُ فَاحْذَرُوْا ۚ وَمَنْ يُّرِدِ اللّٰهُ فِتْنَتَهٗ فَلَنْ تَمْلِكَ لَهٗ مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا ۚ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ لَمْ يُرِدِ اللّٰهُ اَنْ يُّطَهِّرَ قُلُوْبَهُمْ ۚ لَهُمْ فِى الدُّنْيَا خِزْيٌ ۚ وَّلَهُمْ فِى الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيْمٌ	ऐ रसूल (मुहम्मद)! उन लोगों की वजह से दुखी न हो जो कुफ़्र में जलदबाज़ी करते हैं, जो (मुनाफ़िक़) अपने मुँह से कहते हैं, 'हम ईमान लाए,' जबकि उनके दिल ईमान नहीं लाए, और यहूदी जो बहुत ज़्यादा झूठ सुनना पसंद करते हैं और उन लोगों की बात सुनना पसंद करते हैं जो तुम्हारे पास नहीं आए। वे (तौरात के) अल्फ़ाज़ को उनकी जगह से बदल देते हैं। वे कहते हैं, 'अगर तुम्हें यह (बदला हुआ) दिया जाए तो उसे क़बूल करो, और अगर तुम्हें यह न दिया जाए, तो सावधान रहो।' जिसे अल्लाह गुमराह करना चाहता है, उसके लिए तुम अल्लाह से कुछ भी नहीं कर सकते। ये वे लोग हैं जिनके दिलों को अल्लाह ने साफ़ करना नहीं चाहा। उनके लिए दुनिया में ज़िल्लत है और आख़िरत में बड़ा अज़ाब है।	41
سَمّٰعُوْنَ لِلْكَذِبِ اَكّٰلُوْنَ لِلسُّحْتِ ۚ فَاِنْ جَاۤءُوْكَ فَاحْكُمْ بَيْنَهُمْ اَوْ اَعْرِضْ عَنْهُمْ ۚ وَاِنْ تُعْرِضْ عَنْهُمْ فَلَنْ يَّضُرُّوْكَ شَيْـًٔا ۚ وَاِنْ حَكَمْتَ فَاحْكُمْ بَيْنَهُمْ بِالْقِسْطِ ۚ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِيْنَ	वे बहुत ज़्यादा झूठ सुनना पसंद करते हैं और बहुत ज़्यादा हराम खाते हैं। अगर वे (यहूदी) तुम्हारे पास (फ़ैसला माँगने) आएँ, तो उनके बीच फ़ैसला करो या उनसे मुँह फेर लो। और अगर तुम उनसे मुँह फेर लो, तो वे तुम्हारा कुछ भी बिगाड़ नहीं सकते। लेकिन अगर तुम फ़ैसला करो, तो इंसाफ़ से करो। निश्चय ही, अल्लाह इंसाफ़ करनेवालों को पसंद करता है।	42
وَكَيْفَ يُحَكِّمُوْنَكَ وَعِنْدَهُمُ التَّوْرٰىةُ فِيْهَا حُكْمُ اللّٰهِ ثُمَّ يَتَوَلَّوْنَ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ ۚ وَمَآ اُولٰٓئِكَ بِالْمُؤْمِنِيْنَ	और वे तुम्हें अपना हाकिम कैसे बनाएँ, जबकि उनके पास तौरात है जिसमें अल्लाह का हुक्म है, फिर भी वे इसके बाद मुँह फेर लेते हैं? निश्चय ही, वे ईमान वाले नहीं हैं।	43
اِنَّآ اَنْزَلْنَا التَّوْرٰىةَ فِيْهَا هُدًى وَّنُوْرٌ ۚ يَحْكُمُ بِهَا النَّبِيُّوْنَ الَّذِيْنَ اَسْلَمُوْا لِلَّذِيْنَ هَادُوْا وَالرَّبّٰنِيُّوْنَ وَالْاَحْبَارُ بِمَا اسْتُحْفِظُوْا مِنْ كِتٰبِ اللّٰهِ وَكَانُوْا عَلَيْهِ شُهَدَاۤءَ ۚ فَلَا تَخْشَوُا النَّاسَ وَاخْشَوْنِ وَلَا تَشْتَرُوْا بِاٰيٰتِىْ ثَمَنًا قَلِيْلًا ۚ وَمَنْ لَّمْ يَحْكُمْ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْكٰفِرُوْنَ	निश्चय ही, हमने तौरात उतारी, जिसमें हिदायत और नूर है। इसके ज़रिए नबी, जो अल्लाह के सामने सर झुकाते थे, यहूदियों के लिए फ़ैसला करते थे, और उनके उलमा और पादरी भी, क्योंकि उन्हें अल्लाह की किताबों की हिफ़ाज़त का हुक्म दिया गया था और वे इसकी गवाही देते थे। इसलिए तुम इंसानों से न डरो, बल्कि मुझसे डरो। और मेरी आयतों को सस्ते दामों में न बेचो। जो कोई अल्लाह के उतारे हुए के मुताबिक़ फ़ैसला न करे, वही लोग काफ़िर हैं।	44
وَكَتَبْنَا عَلَيْهِمْ فِيْهَآ اَنَّ النَّفْسَ بِالنَّفْسِ ۙ وَالْعَيْنَ بِالْعَيْنِ وَالْاَنْفَ بِالْاَنْفِ وَالْاُذُنَ بِالْاُذُنِ وَالسِّنَّ بِالسِّنِّ ۙ وَالْجُرُوْحَ قِصَاصٌ ۚ فَمَنْ تَصَدَّقَ بِهٖ فَهُوَ كَفَّارَةٌ لَّهٗ ۚ وَمَنْ لَّمْ يَحْكُمْ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ	और हमने उनके लिए (तौरात में) हुक्म दिया कि जान के बदले जान, आँख के बदले आँख, नाक के बदले नाक, कान के बदले कान, दाँत के बदले दाँत, और ज़ख़्मों के लिए क़िसास (बराबर का बदला) है। लेकिन जो कोई अपने क़िसास का हक़ छोड़ दे, तो यह उसके लिए गुनाहों का कफ़्फ़ारा है। और जो कोई अल्लाह के उतारे हुए के मुताबिक़ फ़ैसला न करे, वही लोग ज़ालिम हैं।	45

وَقَفَّيْنَا عَلٰٓى اٰثَارِهِمْ بِعِيْسَى ابْنِ مَرْيَمَ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ التَّوْرٰىةِ وَاٰتَيْنٰهُ الْاِنْجِيْلَ فِيْهِ هُدًى وَّنُوْرٌ وَّمُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ التَّوْرٰىةِ وَهُدًى وَّمَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِيْنَ	**46**	और हमने उनके पदचिन्हों पर चलते हुए मरियम के बेटे ईसा को भेजा, जो उस तौरात की पुष्टि करते हुए जो उनसे पहले थी। और हमने उन पर इंजील उतारी, जिसमें मार्गदर्शन और प्रकाश था, जो उस तौरात की पुष्टि करता हुआ जो उनसे पहले थी, और जो परहेज़गारों के लिए मार्गदर्शन और नसीहत हो
وَلْيَحْكُمْ اَهْلُ الْاِنْجِيْلِ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ فِيْهِ وَمَنْ لَّمْ يَحْكُمْ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ	**47**	और इंजील के अनुयायियों को चाहिए कि वे अल्लाह की नाज़िल के अनुसार निर्णय करें। जो व्यक्ति अल्लाह की नाज़िल के अनुसार निर्णय न करे, वही लोग दुष्ट हैं
وَاَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ الْكِتٰبِ وَمُهَيْمِنًا عَلَيْهِ فَاحْكُمْ بَيْنَهُمْ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ وَلَا تَتَّبِعْ اَهْوَآءَهُمْ عَمَّا جَآءَكَ مِنَ الْحَقِّ لِكُلٍّ جَعَلْنَا مِنْكُمْ شِرْعَةً وَّمِنْهَاجًا وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَجَعَلَكُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّلٰكِنْ لِّيَبْلُوَكُمْ فِيْ مَآ اٰتٰىكُمْ فَاسْتَبِقُوا الْخَيْرٰتِ اِلَى اللّٰهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيْعًا فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ	**48**	और हमने तुम्हारे लिए (मुहम्मद) क़ुरआन को हक़ के साथ उतारा, जो पहले की किताबों की तस्दीक़ करता है और उनकी हिफ़ाज़त करता है तो उनके बीच अल्लाह के उतारे हुए के मुताबिक़ फ़ैसला करो, और उनकी ख़्वाहिशों का पालन न करो, जो हक़ को छोड़ देती हैं हमने हर एक के लिए एक शरीयत और एक साफ़ रास्ता दिया। अगर अल्लाह चाहता, तो तुम्हें एक ही उम्मत बना देता, लेकिन वह तुम्हें उस नेअमत से आज़माना चाहता है जो उसने तुम्हें दी। तो नेकी में एक-दूसरे से आगे बढ़ो। तुम सबको अल्लाह की ओर लौटना है, फिर वह तुम्हें बताएगा जिसमें तुम इख़्तिलाफ़ करते थे।
وَاَنِ احْكُمْ بَيْنَهُمْ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ وَلَا تَتَّبِعْ اَهْوَآءَهُمْ وَاحْذَرْهُمْ اَنْ يَّفْتِنُوْكَ عَنْ بَعْضِ مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ اِلَيْكَ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاعْلَمْ اَنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ اَنْ يُّصِيْبَهُمْ بِبَعْضِ ذُنُوْبِهِمْ وَاِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ لَفٰسِقُوْنَ	**49**	और उनके बीच अल्लाह के उतारे हुए के मुताबिक़ फ़ैसला करो, और उनकी ख़्वाहिशों का पालन न करो। और उनसे सावधान रहो, कहीं वे तुम्हें उससे भटका न दें जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए उतारा है। अगर वे मुँह फेरें, तो जान लो कि अल्लाह उनके कुछ गुनाहों की वजह से उन्हें मुसीबत में डालना चाहता है और निश्चय ही, बहुत से लोग फ़ासिक़ हैं
اَفَحُكْمَ الْجَاهِلِيَّةِ يَبْغُوْنَ وَمَنْ اَحْسَنُ مِنَ اللّٰهِ حُكْمًا لِّقَوْمٍ يُّوْقِنُوْنَ	**50**	क्या वे जाहलियत का हुक्म चाहते हैं? और यक़ीन करने वालों के लिए अल्लाह से बेहतर हुक्म देने वाला कौन हो सकता है?
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوا الْيَهُوْدَ وَالنَّصٰرٰٓى اَوْلِيَآءَ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ وَمَنْ يَّتَوَلَّهُمْ مِّنْكُمْ فَاِنَّهٗ مِنْهُمْ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ	**51**	ऐ ईमान वालो! यहूदी और नसारा को अपना दोस्त (वली) न बनाओ; वे एक-दूसरे के दोस्त हैं तुममें से जो कोई उन्हें दोस्त बनाएगा, वह उनमें से होगा। निश्चय ही, अल्लाह ज़ालिम लोगों को हिदायत नहीं देता।
فَتَرَى الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ يُّسَارِعُوْنَ فِيْهِمْ يَقُوْلُوْنَ نَخْشٰٓى اَنْ تُصِيْبَنَا دَآئِرَةٌ فَعَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّاْتِيَ بِالْفَتْحِ اَوْ اَمْرٍ مِّنْ عِنْدِهٖ فَيُصْبِحُوْا عَلٰى مَآ اَسَرُّوْا فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ نٰدِمِيْنَ	**52**	तो तुम उन लोगों को देखोगे जिनके दिलों में बीमारी है, जो जल्दी से उनके (यहूदी और नसारा) पास जाते हैं, और कहते हैं, 'हमें डर है कि कहीं कोई मुसीबत न आ जाए।' हो सकता है कि अल्लाह (अपने रसूल को) जीत दे, या अपनी ओर से कोई फ़ैसला लाए, फिर वे अपने दिलों में छिपाए हुए पर पछताएँ।

53	और ईमान वाले कहेंगे, 'क्या ये वही लोग हैं जो अल्लाह की क़सम खाकर पूरी गंभीरता से कहते थे कि वे तुम्हारे साथ हैं?' उनके सारे अमल बेकार हो गए, और वे नुक़सान उठाने वालों में शामिल हो गए।	وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَهٰٓؤُلَاۤءِ الَّذِيْنَ اَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ اِنَّهُمْ لَمَعَكُمْ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ فَاَصْبَحُوْا خٰسِرِيْنَ
54	ऐ ईमान वालो! तुममें से जो कोई अपने दीन से फिर जाए (मुरतद हो जाए), तो अल्लाह जल्द ही एक ऐसी क़ौम लाएगा जिसे वह प्यार करता है और जो उससे प्यार करती है, जो ईमान वालों के साथ नरमी से पेश आती है, लेकिन काफ़िरों के साथ सख़्ती करती है, जो अल्लाह के रास्ते में जिहाद करती है, और किसी की निंदा से नहीं डरती। यह अल्लाह की नेअमत है, जिसे वह जिसे चाहता है देता है और अल्लाह बहुत ज़्यादा देने वाला, सब कुछ जानने वाला है।	يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَنْ يَّرْتَدَّ مِنْكُمْ عَنْ دِيْنِهٖ فَسَوْفَ يَأْتِى اللّٰهُ بِقَوْمٍ يُّحِبُّهُمْ وَيُحِبُّوْنَهٗٓ اَذِلَّةٍ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ اَعِزَّةٍ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ يُجَاهِدُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَلَا يَخَافُوْنَ لَوْمَةَ لَاۤئِمٍ ذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَاۤءُ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ
55	निश्चय ही, तुम्हारा वली (दोस्त और मददगार) सिर्फ़ अल्लाह है, उसका रसूल, और वे लोग जो ईमान लाए, जो नमाज़ क़ायम करते हैं और ज़कात अदा करते हैं, और अल्लाह के सामने झुकते हैं।	اِنَّمَا وَلِيُّكُمُ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوا الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَهُمْ رٰكِعُوْنَ
56	और जो कोई अल्लाह, उसके रसूल, और ईमान वालों को अपना वली बनाए, तो निश्चय ही, अल्लाह की हिज़्ब (जमात) ही ग़ालिब है।	وَمَنْ يَّتَوَلَّ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فَاِنَّ حِزْبَ اللّٰهِ هُمُ الْغٰلِبُوْنَ
57	ऐ ईमान वालो! उन लोगों को अपना सरदार न बनाओ जो तुम्हारे दीन को मज़ाक़ और खेल बनाते हैं, जो तुमसे पहले किताब दिए गए थे और काफ़िर (मुश्रिक) हैं और अल्लाह से डरो अगर तुम ईमान वाले हो।	يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوا الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا دِيْنَكُمْ هُزُوًا وَّلَعِبًا مِّنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَالْكُفَّارَ اَوْلِيَاۤءَ وَاتَّقُوا اللّٰهَ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ
58	और जब तुम (उन्हें) नमाज़ के लिए बुलाते हो, तो वे उसे मज़ाक़ और खेल बनाते हैं। ऐसा इसलिए क्योंकि वे लोग हैं जो समझ नहीं रखते।	وَاِذَا نَادَيْتُمْ اِلَى الصَّلٰوةِ اتَّخَذُوْهَا هُزُوًا وَّلَعِبًا ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَعْقِلُوْنَ
59	कहो (मुहम्मद), 'ऐ अहल-ए-किताब! क्या तुम हमें सिर्फ़ इसलिए ग़लत समझते हो क्योंकि हम अल्लाह पर, और जो कुछ हम पर उतारा गया और जो पहले उतारा गया, उस पर ईमान लाते हैं? निश्चय ही, तुममें से ज़्यादातर लोग फ़ासिक़ हैं।'	قُلْ يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ هَلْ تَنْقِمُوْنَ مِنَّاۤ اِلَّآ اَنْ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَمَآ اُنْزِلَ اِلَيْنَا وَمَآ اُنْزِلَ مِنْ قَبْلُ وَاَنَّ اَكْثَرَكُمْ فٰسِقُوْنَ
60	कह दो, "क्या मैं तुम्हें उन लोगों के बारे में बताऊँ जिनका बदला अल्लाह के निकट दुष्टों से भी बुरा है? अर्थात् वे लोग जो अल्लाह से नाराज़ और क्रोधित हैं, उनमें से कुछ ऐसे भी हैं जो बन्दर और सूअर बन गए हैं और कुछ ऐसे भी हैं जो तग़ूत की पूजा करते हैं।" वे लोग बदतर जगह पर हैं और सीधे मार्ग से अधिक भटके हुए हैं।	قُلْ هَلْ اُنَبِّئُكُمْ بِشَرٍّ مِّنْ ذٰلِكَ مَثُوْبَةً عِنْدَ اللّٰهِ مَنْ لَّعَنَهُ اللّٰهُ وَغَضِبَ عَلَيْهِ وَجَعَلَ مِنْهُمُ الْقِرَدَةَ وَالْخَنَازِيْرَ وَعَبَدَ الطَّاغُوْتَ اُولٰٓئِكَ شَرٌّ مَّكَانًا وَّاَضَلُّ عَنْ سَوَاۤءِ السَّبِيْلِ
61	और जब वे (यहूदी या मुनाफ़िक़) तुम्हारे पास आते हैं, तो कहते हैं, 'हम ईमान लाए,' जबकि वे कुफ़्र के साथ आए और कुफ़्र के साथ ही गए। और अल्लाह ज़्यादा जानता है कि वे क्या छुपाते हैं।	وَاِذَا جَاۤءُوْكُمْ قَالُوْٓا اٰمَنَّا وَقَدْ دَّخَلُوْا بِالْكُفْرِ وَهُمْ قَدْ خَرَجُوْا بِهٖ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا كَانُوْا يَكْتُمُوْنَ

وَتَرٰى كَثِيْرًا مِّنْهُمْ يُسَارِعُوْنَ فِى الْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ وَاَكْلِهِمُ السُّحْتَ لَبِئْسَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ	**62**	और तमु उनम`से`बहतु स`लोगों को दखे`ोग`जो गनु्ाह, दशु्मनी और हराम खान`े म`जलद़बाज़ी करत`े हौ कतिना बरु ह`ै जो व`े करत`े हौ
لَوْلَا يَنْهٰىهُمُ الرَّبّٰنِيُّوْنَ وَالْاَحْبَارُ عَنْ قَوْلِهِمُ الْاِثْمَ وَاَكْلِهِمُ السُّحْتَ لَبِئْسَ مَا كَانُوْا يَصْنَعُوْنَ	**63**	उनक`े उलमा और पादरयिों को चाहए था कि व`े उनह`ै झठूी बात`े कहन`े और हराम खान`े स`े रोकत।े कतिना बरु ह`ै जो व`े करत`े हौ
وَقَالَتِ الْيَهُوْدُ يَدُ اللّٰهِ مَغْلُوْلَةٌ غُلَّتْ اَيْدِيْهِمْ وَلُعِنُوْا بِمَا قَالُوْا بَلْ يَدٰهُ مَبْسُوْطَتٰنِ يُنْفِقُ كَيْفَ يَشَاءُ وَلَيَزِيْدَنَّ كَثِيْرًا مِّنْهُمْ مَّآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ طُغْيَانًا وَّكُفْرًا وَاَلْقَيْنَا بَيْنَهُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَاءَ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ كُلَّمَآ اَوْقَدُوْا نَارًا لِّلْحَرْبِ اَطْفَاَهَا اللّٰهُ وَيَسْعَوْنَ فِى الْاَرْضِ فَسَادًا وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ الْمُفْسِدِيْنَ	**64**	और यहद्ी कहत`े ह,ै 'अलल़ाह क`े हाथ बधँ`े हुए ह।ै' असल म`ै उनक`े ही हाथ बधँ`े हुए ह`ै और उनकी कही बातों की वजह स`े उन पर लानत ह।ै बलक़ि, अलल़ाह क`े दोनों हाथ खलु`े ह;ै वह जसै`ा चाहता ह`ै रज़िक़ दतेा ह।ै और (क़ुरआन) जो तमु्हार`े रब की ओर स`े तमु पर उतारा गया, वह उनक`े ज़्यादातर लोगों की नाफ़रमानी और कफ़ुर को और बढ़ाएगा। और हमन`े उनक`े बीच क़यिामत क`े दनि तक दशु्मनी और नफ़रत डाल दी। जब भी व`े जगं की आग जलात`े ह,ै अलल़ाह उस`े बझुा दतेा ह।ै और व`े ज़मीन पर फ़साद फलैान`े की कोशशि करत`े ह।ै और अलल़ाह फ़साद करन`े वालों को पसदं नहीं करता।
وَلَوْ اَنَّ اَهْلَ الْكِتٰبِ اٰمَنُوْا وَاتَّقَوْا لَكَفَّرْنَا عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ وَلَاَدْخَلْنٰهُمْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ	**65**	और अगर अहल-ए-कताब ईमान लात`े और तक़वा अपनात,`े तो हम उनक`े गनु्ाह माफ़ कर दते`े और उनह`ै नअेमतों स`े भरी जननतों म`े दाख़लि करत।े
وَلَوْ اَنَّهُمْ اَقَامُوا التَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ وَمَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِمْ مِّنْ رَّبِّهِمْ لَاَكَلُوْا مِنْ فَوْقِهِمْ وَمِنْ تَحْتِ اَرْجُلِهِمْ مِنْهُمْ اُمَّةٌ مُّقْتَصِدَةٌ وَكَثِيْرٌ مِّنْهُمْ سَاءَ مَا يَعْمَلُوْنَ	**66**	और अगर व`े तौरात, इजंील और (क़ुरआन) को, जो उनक`े रब की ओर स`े उतारा गया, पूरी तरह अमल म`े लात,`े तो उनक`े ऊपर स`े और उनक`े पावँों क`े नीच`े स`े रज़िक़ मलिता। उनम`े स`े कछु लोग सच्च`े और आज़्ाकारी ह।ै लकेनि उनम`े स`े बहतु स`े लोग बहतु बरु काम करत`े ह।ै
يٰٓاَيُّهَا الرَّسُوْلُ بَلِّغْ مَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ وَاِنْ لَّمْ تَفْعَلْ فَمَا بَلَّغْتَ رِسٰلَتَهُ وَاللّٰهُ يَعْصِمُكَ مِنَ النَّاسِ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الْكٰفِرِيْنَ	**67**	ऐ रसलू! जो कछु तमु्हार`े रब न`े तमु पर उतारा, उस`े पहचुँा दो। अगर तमुन`े ऐसा नहीं कयिा, तो तमुन`े उसका पगैाम नहीं पहचुँाया। और अलल़ाह तमु्ह`ै इसानों (क`े शर) स`े बचाएगा। नशि्चय ही, अलल़ाह काफ़रि लोगों को हदिायत नहीं दतेा।
قُلْ يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ لَسْتُمْ عَلٰى شَيْءٍ حَتّٰى تُقِيْمُوا التَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ وَمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَلَيَزِيْدَنَّ كَثِيْرًا مِّنْهُمْ مَّآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ طُغْيَانًا وَّكُفْرًا فَلَا تَاْسَ عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ	**68**	कहो (महुम्मद), 'ऐ अहल-ए-कताब! तमु तब तक कोई दीन नहीं रखत`े जब तक तौरात, इजंील और (क़ुरआन) को, जो तमु्हार`े रब की ओर स`े उतारा गया, क़ायम न करो।' और जो कछु तमु्हार`े रब न`े तमु पर उतारा, वह उनक`े बहतु स`े लोगों की नाफ़रमानी और कफ़ुर को और बढ़ाएगा। तो काफ़रि लोगों क`े लएि अफ़सोस न करो।

69	नशि्चय ही, जो लोग ईमान लाए, यहद्दी, साबिईन और नसारा, जो कोई अल्लाह पर, आख़रित क`दिन पर ईमान लाए और नके अमल कर`, उस`ने कोई डर होगा और न वह दख़ी होगा।	اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَالَّذِيْنَ هَادُوْا وَالصَّابِـُٔوْنَ وَالنَّصٰرٰى مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ
70	नशि्चय ही, हमन`बनी इसराइल स`प्रतजि़्ञा ली थी, और उनक`पास रसूल भज`थ`ो लकेनि जब भी कोई रसूल उनक`पास वह लाया जो उनकी ख़्वाहशिों क`ख़लिाफ़ था, तो कछु को उनहों`न झठुलाया और कछु को क़त्ल कर दयिा।	لَقَدْ اَخَذْنَا مِيْثَاقَ بَنِيْٓ اِسْرَاۤءِيْلَ وَاَرْسَلْنَآ اِلَيْهِمْ رُسُلًا ۗ كُلَّمَا جَاۤءَهُمْ رَسُوْلٌۢ بِمَا لَا تَهْوٰٓى اَنْفُسُهُمْ فَرِيْقًا كَذَّبُوْا وَفَرِيْقًا يَّقْتُلُوْنَ
71	और व`समझत`थ`े कि कोई मसु्ीबत नहीं आएगी (नबयिों को क़त्ल करन`े स`े), इसलएि व`े अंध`े और बहर`े हो गए। फरि अल्लाह न`उनकी तौबा कबू्ल की, फरि भी उनम`े स`े बहत्त स`े लोग अंध`े और बहर`े हो गए। और अल्लाह उनक`े कामों को दखे़न`े वाला ह।ै	وَحَسِبُوْٓا اَلَّا تَكُوْنَ فِتْنَةٌ فَعَمُوْا وَصَمُّوْا ثُمَّ تَابَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ ثُمَّ عَمُوْا وَصَمُّوْا كَثِيْرٌ مِّنْهُمْ ۗ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌۢ بِمَا يَعْمَلُوْنَ
72	नशि्चय ही, व`े लोग काफ़रि हो गए जो कहत`े ह,ै 'अल्लाह वही अल-मसीह इबन् मरयम ह'ै जबकि अल-मसीह (ख़ुद) न`े कहा, 'ऐ बनी इसराइल! अल्लाह की इबादत करो, जो मरेा और तमु्हारा रब ह'ै नशि्चय ही, जो कोई अल्लाह क`े साथ साझी ठहराए, उसक`े लएि अल्लाह न`े जन्नत हराम कर दी, और उसका ठकिाना जहन्नम ह।ै और ज़ालमिों क`े लएि कोई मददगार नहीं होगा।	لَقَدْ كَفَرَ الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْمَسِيْحُ ابْنُ مَرْيَمَ ۗ وَقَالَ الْمَسِيْحُ يٰبَنِيْٓ اِسْرَاۤءِيْلَ اعْبُدُوا اللّٰهَ رَبِّيْ وَرَبَّكُمْ ۗ اِنَّهٗ مَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَقَدْ حَرَّمَ اللّٰهُ عَلَيْهِ الْجَنَّةَ وَمَاْوٰىهُ النَّارُ ۗ وَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ اَنْصَارٍ
73	नशि्चय ही, व`े लोग काफ़रि हो गए जो कहत`े ह,ै 'अल्लाह तीन म`े स`े एक ह,ै' जबकि एक माबदू क`े सवि कोई माबदू नहीं। अगर व`े अपनी इस बात स`े बाज़ न आएँ, तो उनम`े स`े जो काफ़रि ह,ै उनह`ै दर्दनाक अज़ाब मलिगेा।	لَقَدْ كَفَرَ الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّ اللّٰهَ ثَالِثُ ثَلٰثَةٍ ۘ وَمَا مِنْ اِلٰهٍ اِلَّآ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۗ وَاِنْ لَّمْ يَنْتَهُوْا عَمَّا يَقُوْلُوْنَ لَيَمَسَّنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ
74	क्या व`े अल्लाह की ओर तौबा नहीं करत`े और उससे`माफ़ी नहीं माँगत?े और अल्लाह बड़ा माफ़ करन`े वाला, बड़ा महेरबान ह।ै	اَفَلَا يَتُوْبُوْنَ اِلَى اللّٰهِ وَيَسْتَغْفِرُوْنَهٗ ۗ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ
75	अल-मसीह इबन् मरयम सरिफ़ एक रसूल थ`ो उनस`े पहल`े भी कई रसूल गज़ुर चक`ु े ह।ै और उनकी माँ सच्ची औरत थी। दोनों खाना खात`े थ`ो दखे़ो, हम उनक`े लएि अपनी आयतों को कसै`े साफ़ करत`े ह,ै फरि दखे़ो, व`े कसै`े (ख़्वाहशिों की वजह स`े) भटकाए जात`े ह।ै	مَا الْمَسِيْحُ ابْنُ مَرْيَمَ اِلَّا رَسُوْلٌ ۚ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ ۗ وَاُمُّهٗ صِدِّيْقَةٌ ۗ كَانَا يَاْكُلٰنِ الطَّعَامَ ۗ اُنْظُرْ كَيْفَ نُبَيِّنُ لَهُمُ الْاٰيٰتِ ثُمَّ انْظُرْ اَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ
76	कहो (महुम्मद), 'क्या तमु अल्लाह क`े सवि उसकी इबादत करत`े हो जो न तमु्ह`े नकु़सान द`े सकता ह`ै और न फ़ायदा?' और अल्लाह सब कछु सनु`न े वाला, सब कछु जानन`े वाला ह।ै	قُلْ اَتَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَمْلِكُ لَكُمْ ضَرًّا وَّلَا نَفْعًا ۗ وَاللّٰهُ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ

قُلْ يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ لَا تَغْلُوْا فِيْ دِيْنِكُمْ غَيْرَ الْحَقِّ وَلَا تَتَّبِعُوْٓا اَهْوَاۤءَ قَوْمٍ قَدْ ضَلُّوْا مِنْ قَبْلُ وَاَضَلُّوْا كَثِيْرًا وَّضَلُّوْا عَنْ سَوَاۤءِ السَّبِيْلِ	**77**	कहो (मुहम्मद), 'ऐ अहल-ए-कताब! अपने दीन में ग़लत तरीक़े से हद से न गुज़रो। और उन लोगों की ख़्वाहिशों का पालन न करो जो पहले गुमराह हो चुके हैं और बहुतों को गुमराह कर चुके हैं, और ख़ुद सीधे रास्ते से भटक गए हैं'
لُعِنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ بَنِيْٓ اِسْرَاۤءِيْلَ عَلٰى لِسَانِ دَاوٗدَ وَعِيْسَى ابْنِ مَرْيَمَ ذٰلِكَ بِمَا عَصَوْا وَّكَانُوْا يَعْتَدُوْنَ	**78**	बनी इसराइल के काफ़िरों को दाऊद और ईसा इब्न मरयम की ज़बान से लानत दी गई। यह इसलिए कि वे नाफ़रमानी करते थे और हमेशा हद से गुज़रते थे।
كَانُوْا لَا يَتَنَاهَوْنَ عَنْ مُّنْكَرٍ فَعَلُوْهُ لَبِئْسَ مَا كَانُوْا يَفْعَلُوْنَ	**79**	वे एक-दूसरे को मनुकर (बुरी) कामों से नहीं रोकते थे जो वे करते थे। कितना बुरा है जो वे करते थे।
تَرٰى كَثِيْرًا مِّنْهُمْ يَتَوَلَّوْنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَبِئْسَ مَا قَدَّمَتْ لَهُمْ اَنْفُسُهُمْ اَنْ سَخِطَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ وَفِى الْعَذَابِ هُمْ خٰلِدُوْنَ	**80**	तुम उनमें से बहुत से लोगों को देखते हो जो काफ़िरों (मुशरिकों) से दोस्ती करते हैं। कितना बुरा है जो उन्होंने अपने लिए किया, कि अल्लाह का ग़ज़ब उन पर हुआ, और वे अज़ाब में हमेशा रहेंगे।
وَلَوْ كَانُوْا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالنَّبِيِّ وَمَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِ مَا اتَّخَذُوْهُمْ اَوْلِيَاۤءَ وَلٰكِنَّ كَثِيْرًا مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ	**81**	और अगर वे अल्लाह पर, नबी (मुहम्मद) पर, और जो कुछ उस पर उतारा गया, ईमान लाते, तो वे मुशरिकों को दोस्त न बनाते। लेकिन उनमें से बहुत से लोग फ़ासिक़ हैं।
لَتَجِدَنَّ اَشَدَّ النَّاسِ عَدَاوَةً لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوا الْيَهُوْدَ وَالَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا وَلَتَجِدَنَّ اَقْرَبَهُمْ مَّوَدَّةً لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوا الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّا نَصٰرٰى ذٰلِكَ بِاَنَّ مِنْهُمْ قِسِّيْسِيْنَ وَرُهْبَانًا وَّاَنَّهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ	**82**	तुम ज़रूर पाओगे कि ईमान वालों से सबसे ज़्यादा दुश्मनी करने वाले यहूदी और मुशरिक हैं और तुम ज़रूर पाओगे कि ईमान वालों से सबसे ज़्यादा दोस्ती करने वाले वे हैं जो कहते हैं, 'हम नसारा (ईसाई) हैं' ऐसा इसलिए क्योंकि उनमें पादरी और राहिब हैं, और वे घमंड नहीं करते।
وَاِذَا سَمِعُوْا مَآ اُنْزِلَ اِلَى الرَّسُوْلِ تَرٰٓى اَعْيُنَهُمْ تَفِيْضُ مِنَ الدَّمْعِ مِمَّا عَرَفُوْا مِنَ الْحَقِّ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَآ اٰمَنَّا فَاكْتُبْنَا مَعَ الشّٰهِدِيْنَ	**83**	और जब वे (क़ुरआन) सुनते हैं जो रसूल पर उतारा गया, तो तुम उनकी आँखों को आँसुओं से भरा देखते हो, क्योंकि उन्होंने सच्चाई को पहचान लिया (अपनी किताबों से), और वे कहते हैं, 'ऐ हमारे रब! हम ईमान लाए, तो हमें उन लोगों में लिख दे जो (क़ुरआन और नबुव्वत की) गवाही देते हैं'
وَمَا لَنَا لَا نُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَمَا جَاۤءَنَا مِنَ الْحَقِّ وَنَطْمَعُ اَنْ يُّدْخِلَنَا رَبُّنَا مَعَ الْقَوْمِ الصّٰلِحِيْنَ	**84**	और हम अल्लाह और उस सच्चाई पर क्यों न ईमान लाएँ जो हमारे पास आई, जबकि हम चाहते हैं कि हमारा रब हमें सालेह लोगों की जमात में शामिल कर?
فَاَثَابَهُمُ اللّٰهُ بِمَا قَالُوْا جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا وَذٰلِكَ جَزَاۤءُ الْمُحْسِنِيْنَ	**85**	तो अल्लाह ने उनकी इस बात का सवाब दिया, कि (उन्हें) जन्नतें दीं जिनके नीचे नहरें बहती हैं, जिनमें वे हमेशा रहेंगे। और यही नेकी करने वालों का बदला है।

وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَآ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ	और जो लोग काफ़िर हुए और हमारी आयतों को झठ्लाया, वे ही जहन्नम के बाशदि हैं।	**86**
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُحَرِّمُوْا طَيِّبٰتِ مَآ اَحَلَّ اللّٰهُ لَكُمْ وَلَا تَعْتَدُوْا اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِيْنَ	ऐ ईमान वालो! उन अच्छी चीज़ों को हराम न करो जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए हलाल कीं, और हद से न गुज़रो। निश्चय ही, अल्लाह हद से गुज़रने वालों को पसंद नहीं करता।	**87**
وَكُلُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ حَلٰلًا طَيِّبًا وَّاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِيْٓ اَنْتُمْ بِهٖ مُؤْمِنُوْنَ	और उस रज़िक़ को खाओ जो अल्लाह ने तुम्हें हलाल और अच्छा दिया, और उस अल्लाह से डरो जिस पर तुम ईमान लाते हो।	**88**
لَا يُؤَاخِذُكُمُ اللّٰهُ بِاللَّغْوِ فِيْٓ اَيْمَانِكُمْ وَلٰكِنْ يُّؤَاخِذُكُمْ بِمَا عَقَّدْتُّمُ الْاَيْمَانَ فَكَفَّارَتُهٗٓ اِطْعَامُ عَشَرَةِ مَسٰكِيْنَ مِنْ اَوْسَطِ مَا تُطْعِمُوْنَ اَهْلِيْكُمْ اَوْ كِسْوَتُهُمْ اَوْ تَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ ثَلٰثَةِ اَيَّامٍ ذٰلِكَ كَفَّارَةُ اَيْمَانِكُمْ اِذَا حَلَفْتُمْ وَاحْفَظُوْٓا اَيْمَانَكُمْ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ اٰيٰتِهٖ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ	अल्लाह तुम्हें तुम्हारी बेकार की क़समों की वजह से सजा नहीं देता, लेकिन तुम्हें उन क़समों की वजह से सजा देता है जो तुम जानबूझकर खाते हो। तो उसका कफ़ारा दस ग़रीबों को खाना खिलाना है, जैसा खाना तुम अपने घरवालों को खिलाते हो, या उन्हें कपड़े देना, या एक गुलाम को आज़ाद करना। और जो कोई यह न कर सके, उसे तीन दिन रोज़ा रखना है। यही तुम्हारी क़समों का कफ़ारा है जब तुम क़सम खाओ। और अपनी क़समों की हफ़िाज़त करो। इस तरह अल्लाह अपनी आयतों को तुम्हारे लिए साफ़ करता है ताकि तुम शुक्रिया अदा करो।	**89**
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنَّمَا الْخَمْرُ وَالْمَيْسِرُ وَالْاَنْصَابُ وَالْاَزْلَامُ رِجْسٌ مِّنْ عَمَلِ الشَّيْطٰنِ فَاجْتَنِبُوْهُ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ	ऐ ईमान वालो! निश्चय ही, शराब, जुआ, बुतों के लिए क़ुरबानी, और तीरों से नसीब आज़माना, ये सब गंदे काम हैं और शैतान के कामों में से हैं तो इनसे बचो ताकि तुम कामयाब हो।	**90**
اِنَّمَا يُرِيْدُ الشَّيْطٰنُ اَنْ يُّوْقِعَ بَيْنَكُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَاۤءَ فِى الْخَمْرِ وَالْمَيْسِرِ وَيَصُدَّكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ وَعَنِ الصَّلٰوةِ فَهَلْ اَنْتُمْ مُّنْتَهُوْنَ	शराब और जुए के ज़रिए शैतान सिर्फ़ तुम्हारे बीच दुश्मनी और नफ़रत डालना चाहता है, और तुम्हें अल्लाह की याद और नमाज़ से रोकना चाहता है तो क्या तुम अब भी नहीं रुकोगे?	**91**
وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ وَاحْذَرُوْا فَاِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَاعْلَمُوْٓا اَنَّمَا عَلٰى رَسُوْلِنَا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ	और अल्लाह का हुक्म मानो और रसूल का हुक्म मानो, और सावधान रहो। अगर तुम मुँह फेरे लो, तो जान लो कि हमारे रसूल का काम सिर्फ़ साफ़ तौर पर पैग़ाम पहुँचाना है।	**92**
لَيْسَ عَلَى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جُنَاحٌ فِيْمَا طَعِمُوْٓا اِذَا مَا اتَّقَوْا وَّاٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ثُمَّ اتَّقَوْا وَّاٰمَنُوْا ثُمَّ اتَّقَوْا وَّاَحْسَنُوْا وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ	जो लोग ईमान लाए और नेक अमल किए, उनके लिए कोई गुनाह नहीं है कि उन्होंने (पहले) क्या खाया, बशर्ते वे तक़वा अपनाएँ, ईमान लाएँ और नेक अमल करें, फिर तक़वा और ईमान को बरक़रार रखें, और फिर तक़वा और नेकी करें। और अल्लाह नेकी करने वालों को पसंद करता है।	**93**

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَيَبْلُوَنَّكُمُ اللّٰهُ بِشَيْءٍ مِّنَ الصَّيْدِ تَنَالُهٗٓ اَيْدِيْكُمْ وَرِمَاحُكُمْ لِيَعْلَمَ اللّٰهُ مَنْ يَّخَافُهٗ بِالْغَيْبِ فَمَنِ اعْتَدٰى بَعْدَ ذٰلِكَ فَلَهٗ عَذَابٌ اَلِيْمٌ	ऐ ईमान वालो! अल़्लाह तमुह़ै शकिार क॓ जानवरों स॓ आज़माएगा जो तमुहार॓ हाथों और भालो॓ स॓ आसानी स॓ मलि जात॓ ह॓ै, ताकि अल़्लाह जान ल॓ कि कौन उसस॓ डरता ह॓ै, हालाकँि वह उस॓ दखे॓ नहीं रहा। जो कोई इसक॓ बाद हद स॓ गज़ुरेगा, उसक॓ लएि दर्दनाक अज़ाब ह॓ै	**94**
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَقْتُلُوا الصَّيْدَ وَاَنْتُمْ حُرُمٌ وَمَنْ قَتَلَهٗ مِنْكُمْ مُّتَعَمِّدًا فَجَزَاۤءٌ مِّثْلُ مَا قَتَلَ مِنَ النَّعَمِ يَحْكُمُ بِهٖ ذَوَا عَدْلٍ مِّنْكُمْ هَدْيًا بٰلِغَ الْكَعْبَةِ اَوْ كَفَّارَةٌ طَعَامُ مَسٰكِيْنَ اَوْ عَدْلُ ذٰلِكَ صِيَامًا لِّيَذُوْقَ وَبَالَ اَمْرِهٖ عَفَا اللّٰهُ عَمَّا سَلَفَ وَمَنْ عَادَ فَيَنْتَقِمُ اللّٰهُ مِنْهُ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ ذُو انْتِقَامٍ	ऐ ईमान वालो! इहराम (हज या उमराह) की हालत म॓ शकिार न मारो। तमुम॓ स॓ जो कोई उस॓ जानबझूकर मार॓, तो उसकी सजा यह ह॓ै कि वह उस शकिार क॓ बराबर का चौपाया जानवर द॓, जसै॓ कि तमु म॓ स॓ दो इंसाफ़ करन॓ वाल॓ तय कर॓, जो काबा तक पहचुँाया जाए, या कफ़ारा द॓, यानी ग़रीबो॓ को खाना खलिाए, या उसक॓ बराबर रोज़े रख॓, ताकि वह अपन॓ कएि की बरुाई का मज़ा चख॓। अल़्लाह न॓ जो कछु बीत गया उस॓ माफ़ कर दयिा। और जो कोई फरि ऐसा कर॓, तो अल़्लाह उस॓ सजा दगेा। और अल़्लाह महाशक्तशिाली ह॓ै, सजा दने॓ की ताक़त रखता ह॓ै	**95**
اُحِلَّ لَكُمْ صَيْدُ الْبَحْرِ وَطَعَامُهٗ مَتَاعًا لَّكُمْ وَلِلسَّيَّارَةِ وَحُرِّمَ عَلَيْكُمْ صَيْدُ الْبَرِّ مَا دُمْتُمْ حُرُمًا وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِيْٓ اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ	तमुहार॓ लएि समदुर का शकिार और उसका खाना हलाल कयिा गया, जो तमुहार॓ लएि और सफ़र करन॓ वालो॓ क॓ लएि लज़ीज़ खाना ह॓ै लकेनि ज़मीन का शकिार तमुहार॓ लएि हराम ह॓ै जब तक तमु इहराम म॓ ह॓ो। और उस अल़्लाह स॓ डरो जसिकी ओर तमु सब इकटठ़ा कएि जाओगे॓	**96**
جَعَلَ اللّٰهُ الْكَعْبَةَ الْبَيْتَ الْحَرَامَ قِيٰمًا لِّلنَّاسِ وَالشَّهْرَ الْحَرَامَ وَالْهَدْيَ وَالْقَلَاۤىِٕدَ ذٰلِكَ لِتَعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ وَاَنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ	अल़्लाह न॓ काबा को, जो पवत्रि घर ह॓ै, लोगो॓ क॓ लएि क़ायम रहन॓ का ठकिाना बनाया। और हराम महीन॓, हद्य और क़लायद को भी। यह इसलएि ताकि तमु जान लो कि अल़्लाह को वह सब मालमू ह॓ै जो आकाशो॓ और धरती म॓ ह॓ै, और अल़्लाह हर चीज़ को जानन॓ वाला ह॓ै	**97**
اِعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ وَاَنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ	जान लो कि अल़्लाह की सजा बहतु सख़्त ह॓ै, और यह कि अल़्लाह बड़ा माफ़ करन॓ वाला, बड़ा महेरबान ह॓ै	**98**
مَا عَلَى الرَّسُوْلِ اِلَّا الْبَلٰغُ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَا تُبْدُوْنَ وَمَا تَكْتُمُوْنَ	रसलू का काम सरि़्फ़ (अल़्लाह का) पग़ैाम पहचुँाना ह॓ै, और अल़्लाह जानता ह॓ै जो तमु ज़ाहरि करत॓ हो और जो तमु छपात॓ हो।	**99**
قُلْ لَّا يَسْتَوِي الْخَبِيْثُ وَالطَّيِّبُ وَلَوْ اَعْجَبَكَ كَثْرَةُ الْخَبِيْثِ فَاتَّقُوا اللّٰهَ يٰٓاُولِي الْاَلْبَابِ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ	कहो (मह़म्मद), 'बरु और अच्छा बराबर नहीं ह॓ै, भल॓ ही बरुाई की बहतु़ायत तमुह॓ै आकर्षति करो तो ये बदु्धमिान लोगो, अल़्लाह स॓ डरो, ताकि तमु कामयाब हो।'	**100**
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَسْـَٔلُوْا عَنْ اَشْيَاۤءَ اِنْ تُبْدَ لَكُمْ تَسُؤْكُمْ وَاِنْ تَسْـَٔلُوْا عَنْهَا حِيْنَ يُنَزَّلُ الْقُرْاٰنُ تُبْدَ لَكُمْ عَفَا اللّٰهُ عَنْهَا وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ حَلِيْمٌ	ऐ ईमान वालो! ऐसी चीज़ो॓ क॓ बार॓ म॓ (अपन॓ नबी स॓) सवाल न करो जो अगर तमुह॓ै समझा दी जाएँ तो तमुह॓ै तकलीफ़ द॓ी अगर तमु क़ुरआन क॓ उतरन॓ क॓ दौरान सवाल करो, तो व॓ तमुह॓ै समझा दी जाएँगी। अल़्लाह न॓ तमुह॓ै इस बार॓ म॓ माफ़ कर दयिा। और अल़्लाह बड़ा माफ़ करन॓ वाला, बड़ा सहनशील ह॓ै	**101**

قَدْ سَاَلَهَا قَوْمٌ مِّنْ قَبْلِكُمْ ثُمَّ اَصْبَحُوْا بِهَا كٰفِرِيْنَ	तमुस॑पहल॑कछु लोगों॑न॑ऐसी ही चीज़ों॑क॑बार॑मे॑सवाल कए, फरि व॑काफ़रि हो गए।	**102**
مَا جَعَلَ اللّٰهُ مِنْ بَحِيْرَةٍ وَّلَا سَآئِبَةٍ وَّلَا وَصِيْلَةٍ وَّلَا حَامٍ وَّلٰكِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ وَاَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ	अल्लाह न॑न॑बहीरा, न साइबा, न वसीला, और न हाम को शरीयत बनाया। लकेनि काफ़रि लोग अल्लाह क॑ख़लिाफ़ झठू गढ़त॑ह॑ै और उनम॑स॑ज़्यादातर लोग समझ नहीं॑रखत॑ो	**103**
وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ تَعَالَوْا اِلٰى مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ وَاِلَى الرَّسُوْلِ قَالُوْا حَسْبُنَا مَا وَجَدْنَا عَلَيْهِ اٰبَآءَنَا اَوَلَوْ كَانَ اٰبَآؤُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ شَيْـًٔا وَّلَا يَهْتَدُوْنَ	और जब उनस॑कहा जाता ह॑ै 'आओ उसकी ओर जो अल्लाह न॑ उतारा और रसूल की ओर,' तो व॑कहत॑ह॑ै, 'हमार॑लिए वही काफ़ी ह॑ै जो हमन॑अपन॑बाप-दादा को करत॑हुए पाया।' क़या तब भी, जब उनक॑बाप-दादा कछु नहीं॑जानत॑थ॑े और न हदिायत पर थ?	**104**
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا عَلَيْكُمْ اَنْفُسَكُمْ لَا يَضُرُّكُمْ مَّنْ ضَلَّ اِذَا اهْتَدَيْتُمْ اِلَى اللّٰهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيْعًا فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ	ऐ ईमान वालो! अपनी ज़िम्मदेारी खद्ु सभँालो; अगर तमु हदिायत पर हो, तो गमुराह लोग तमुहारा कछु बगिाड़ नहीं॑ सकत॑ो तमु सबको अल्लाह की ओर लौटना ह॑ै, फरि वह तमु॑ह॑ै बताएगा जो तमु करत॑थ॑े।	**105**
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا شَهَادَةُ بَيْنِكُمْ اِذَا حَضَرَ اَحَدَكُمُ الْمَوْتُ حِيْنَ الْوَصِيَّةِ اثْنٰنِ ذَوَا عَدْلٍ مِّنْكُمْ اَوْ اٰخَرٰنِ مِنْ غَيْرِكُمْ اِنْ اَنْتُمْ ضَرَبْتُمْ فِى الْاَرْضِ فَاَصَابَتْكُمْ مُّصِيْبَةُ الْمَوْتِ تَحْبِسُوْنَهُمَا مِنْ بَعْدِ الصَّلٰوةِ فَيُقْسِمٰنِ بِاللّٰهِ اِنِ ارْتَبْتُمْ لَا نَشْتَرِيْ بِهٖ ثَمَنًا وَّلَوْ كَانَ ذَا قُرْبٰى وَلَا نَكْتُمُ شَهَادَةَ اللّٰهِ اِنَّآ اِذًا لَّمِنَ الْاٰثِمِيْنَ	ऐ ईमान वालो! जब तमु॑म॑े॑स॑े कसिी को मौत आए और वह वसीयत कर॑े, तो तमु॑ म॑े॑स॑े दो इंसाफ़ करन॑वालों॑ को गवाह बनाओ, या अगर तमु ज़मीन पर सफ़र कर रह॑े हो और तमु॑ह॑ै मौत का ख़तरा हो, तो तमु॑हार॑े अलावा दो लोगों॑ को। अगर तमु॑ह॑ै शक हो, तो नमाज़ क॑े बाद दोनों॑ गवाहों॑ को रोक लो, ताकि व॑े अल्लाह की क़सम खाए,ँ "हम इस क़सम स॑े कोई फ़ायदा नहीं॑ लगे॑, चाह॑े वह नज़दीकी रश्तिदेार हो, और हम अल्लाह की गवाही नहीं॑ छपिाएँगे॑। अगर हम ऐसा कर॑े, तो हम गनु॑हगारों॑ म॑े॑ होंग॑े।'	**106**
فَاِنْ عُثِرَ عَلٰٓى اَنَّهُمَا اسْتَحَقَّآ اِثْمًا فَاٰخَرٰنِ يَقُوْمٰنِ مَقَامَهُمَا مِنَ الَّذِيْنَ اسْتَحَقَّ عَلَيْهِمُ الْاَوْلَيٰنِ فَيُقْسِمٰنِ بِاللّٰهِ لَشَهَادَتُنَآ اَحَقُّ مِنْ شَهَادَتِهِمَا وَمَا اعْتَدَيْنَآ اِنَّآ اِذًا لَّمِنَ الظّٰلِمِيْنَ	अगर यह साबति हो जाए कि दोनों॑ गवाहों॑ न॑े गनु॑ाह कयिा, तो दो दसू॑र॑े लोग उनकी जगह ल॑ें, जो मरन॑वाल॑े क॑े ज़्यादा क़रीबी और हक़दार हों॑, फरि व॑े अल्लाह की क़सम खाए,ँ "हमारी गवाही उन दोनों॑ गवाहों॑ की गवाही स॑े ज़्यादा हकदार ह॑ै, और हमन॑े हद स॑े नहीं॑ गज़ुरा। अगर हम ऐसा कर॑े, तो हम ज़ालमिों॑ म॑े होंग॑े।'	**107**
ذٰلِكَ اَدْنٰٓى اَنْ يَّاْتُوْا بِالشَّهَادَةِ عَلٰى وَجْهِهَآ اَوْ يَخَافُوْٓا اَنْ تُرَدَّ اَيْمَانٌ بَعْدَ اَيْمَانِهِمْ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاسْمَعُوْا وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ	इस तरह व॑े अपनी गवाही को सचाई क॑े साथ दने॑े क॑े ज़्यादा हकदार होंग॑े, और उनह॑ें डर होगा कि उनकी क़सम को (वारसिों॑ क॑े पास) वापस कर दयिा जाए। अल्लाह स॑े डरो और (उसक॑े हक़म॑ को) सनु॑ो। और अल्लाह फ़ासकि॑ लोगों॑ को हदिायत नहीं॑ दते॑ा।	**108**

يَوْمَ يَجْمَعُ اللّٰهُ الرُّسُلَ فَيَقُوْلُ مَاذَآ اُجِبْتُمْ قَالُوْا لَا عِلْمَ لَنَا اِنَّكَ اَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ	**109**	(याद करो) उस दिन को जब अल्लाह तमाम रसूलों को इकट्ठा करेगा, और पूछेगा, 'तुम्हें (तुम्हारी क़ौम से) क्या जवाब मिला?' वे कहेंगे, 'हमें कुछ नहीं मालूम। निश्चय ही, तू ही ग़ैब का जानने वाला है।'
اِذْ قَالَ اللّٰهُ يٰعِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ اذْكُرْ نِعْمَتِيْ عَلَيْكَ وَعَلٰى وَالِدَتِكَ اِذْ اَيَّدْتُّكَ بِرُوْحِ الْقُدُسِ تُكَلِّمُ النَّاسَ فِي الْمَهْدِ وَكَهْلًا وَاِذْ عَلَّمْتُكَ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَالتَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ وَاِذْ تَخْلُقُ مِنَ الطِّيْنِ كَهَيْـَٔةِ الطَّيْرِ بِاِذْنِيْ فَتَنْفُخُ فِيْهَا فَتَكُوْنُ طَيْرًا بِاِذْنِيْ وَتُبْرِئُ الْاَكْمَهَ وَالْاَبْرَصَ بِاِذْنِيْ وَاِذْ تُخْرِجُ الْمَوْتٰى بِاِذْنِيْ وَاِذْ كَفَفْتُ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ عَنْكَ اِذْ جِئْتَهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْهُمْ اِنْ هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ	**110**	और (याद करो) जब अल्लाह ने कहा, 'ऐ ईसा इब्न मरयम! मेरी उस नेअमत को याद कर जो तुझ पर और तेरी माँ पर हुई, जब मैंने तुझे रूहुल क़ुदुस से ताक़त दी। तू लोगों से पालने में और बड़े होने पर बात करता था। और (याद कर) जब मैंने तुझे लिखना, हिकमत, तौरात और इंजील सिखाई। और (याद कर) जब तू मेरी इजाज़त से मिट्टी से परिंदे की शक्ल बनाता था, फिर उसमें फूँक मारता था, तो वह मेरी इजाज़त से परिंदा बन जाता था। और (याद कर) जब तू मेरी इजाज़त से जन्म के अंधे और कोढ़ी को ठीक करता था। और (याद कर) जब तू मेरी इजाज़त से मुर्दों को (क़ब्र से ज़िंदा) निकालता था। और (याद कर) जब मैंने बनी इसराइल को तुझ पर हमला करने से रोका, जब तू उनके पास साफ़ दलीलें लेकर आया, तो उनमें से काफ़िरों ने कहा, 'यह तो बस साफ़ जादू है।'
وَاِذْ اَوْحَيْتُ اِلَى الْحَوَارِيّٖنَ اَنْ اٰمِنُوْا بِيْ وَبِرَسُوْلِيْ قَالُوْٓا اٰمَنَّا وَاشْهَدْ بِاَنَّنَا مُسْلِمُوْنَ	**111**	और (याद कर) जब मैंने ईसा के हवारियों (सच्चे अनुयायियों) को इलहाम किया, 'मुझ पर और मेरे रसूल पर ईमान लाओ।' उन्होंने कहा, 'हम ईमान लाए, और (ऐ रसूल) गवाही दे कि हम मुसलिम (आज्ञाकारी) हैं।'
اِذْ قَالَ الْحَوَارِيُّوْنَ يٰعِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ هَلْ يَسْتَطِيْعُ رَبُّكَ اَنْ يُّنَزِّلَ عَلَيْنَا مَآئِدَةً مِّنَ السَّمَآءِ قَالَ اتَّقُوا اللّٰهَ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ	**112**	(याद कर) जब ईसा के हवारी (सच्चे अनुयायी) बोले, 'ऐ ईसा इब्न मरयम! क्या तेरा रब हमारे लिए आकाश से खान की मेज़ (हदिंगन) उतार सकता है?' ईसा ने जवाब दिया, 'अल्लाह से डरो अगर तुम ईमान वाले हो।'
قَالُوْا نُرِيْدُ اَنْ نَّاْكُلَ مِنْهَا وَتَطْمَئِنَّ قُلُوْبُنَا وَنَعْلَمَ اَنْ قَدْ صَدَقْتَنَا وَنَكُوْنَ عَلَيْهَا مِنَ الشّٰهِدِيْنَ	**113**	उन्होंने कहा, 'हम उससे खाना चाहते हैं ताकि हमारे दिलों को सकून मिले और हमें यक़ीन हो जाए कि तूने हमसे सच कहा, और हम उस (हदिंगन) के गवाह बनें।'
قَالَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ اللّٰهُمَّ رَبَّنَآ اَنْزِلْ عَلَيْنَا مَآئِدَةً مِّنَ السَّمَآءِ تَكُوْنُ لَنَا عِيْدًا لِّاَوَّلِنَا وَاٰخِرِنَا وَاٰيَةً مِّنْكَ وَارْزُقْنَا وَاَنْتَ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ	**114**	ईसा इब्न मरयम ने दुआ की, 'ऐ हमारे रब! हमारे लिए आकाश से एक ख़ान की मेज़ उतार दे, जो हमारे लिए और हमारे बाद वालों के लिए एक ईद (त्योहार) बने, और तेरी क़ुदरत की निशानी हो। और हमें रिज़्क़ दे, और तू सबसे अच्छा रिज़्क़ देने वाला है।'
قَالَ اللّٰهُ اِنِّيْ مُنَزِّلُهَا عَلَيْكُمْ فَمَنْ يَّكْفُرْ بَعْدُ مِنْكُمْ فَاِنِّيْٓ اُعَذِّبُهٗ عَذَابًا لَّآ اُعَذِّبُهٗٓ اَحَدًا مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ	**115**	अल्लाह ने कहा, 'निश्चय ही, मैं तुम्हारे लिए वह मेज़ उतारूँगा, लेकिन तुममें से जो कोई इसके बाद काफ़िर हो जाए, उसमें ऐसी सज़ा दूँगा जो मैंने किसी और को सारे जहानों में नहीं दी।'

وَاِذْ قَالَ اللّٰهُ يٰعِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ ءَاَنْتَ قُلْتَ لِلنَّاسِ اتَّخِذُوْنِيْ وَاُمِّيَ اِلٰهَيْنِ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ قَالَ سُبْحٰنَكَ مَا يَكُوْنُ لِيْٓ اَنْ اَقُوْلَ مَا لَيْسَ لِيْ بِحَقٍّ اِنْ كُنْتُ قُلْتُه فَقَدْ عَلِمْتَه تَعْلَمُ مَا فِيْ نَفْسِيْ وَلَآ اَعْلَمُ مَا فِيْ نَفْسِكَ اِنَّكَ اَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ	**116**	और (याद कर) जब अल्लाह न`कहा, 'ऐ ईसा इब्न मरयम! क्या तून`लोगों स`कहा कि मुझ`और मरी माँ`को अल्लाह क`सिवा दो माबूद बना लो?' उसन`जवाब दिया, 'तरी तस्बीह (पवित्रता) हू,ै मरे`लिए यह कहना मुनासिब नहीं जो मरो हक़ नहीं। अगर मनै`ऐसा कहा होता, तो तुझ`मालूम होता। तू मरे` दलि की बात जानता हू,ै और म`तरे`ग़ैब को नहीं जानता। निश्चय ही, तू ही ग़ैब का जानन`वाला हो'।
مَا قُلْتُ لَهُمْ اِلَّا مَآ اَمَرْتَنِيْ بِهٖٓ اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ رَبِّيْ وَرَبَّكُمْ وَكُنْتُ عَلَيْهِمْ شَهِيْدًا مَّا دُمْتُ فِيْهِمْ فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِيْ كُنْتَ اَنْتَ الرَّقِيْبَ عَلَيْهِمْ وَاَنْتَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ	**117**	मनै`उनस`कछु नहीं कहा सिवाय इसक`जो तून`मुझ`हुक्म दिया, कि 'अल्लाह की इबादत करो, जो मरो और तुम्हारा रब हो' और म`उनकी गवाही दतेा था जब तक म`उनक`बीच था। जब तून` मुझ`वफ़ात दी, तो तू ही उनका नगिरान था। और तू हर चीज़ का गवाह हो।
اِنْ تُعَذِّبْهُمْ فَاِنَّهُمْ عِبَادُكَ وَاِنْ تَغْفِرْ لَهُمْ فَاِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ	**118**	अगर तू उनह`सजा द,े तो व`तरे`बन्द ह,ै और अगर तू उनह`माफ़ कर द,े तो निश्चय ही, तू महाशक्तशिाली, महाबुद्धमिान हो।
قَالَ اللّٰهُ هٰذَا يَوْمُ يَنْفَعُ الصّٰدِقِيْنَ صِدْقُهُمْ لَهُمْ جَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ	**119**	अल्लाह न`कहा, 'यह वह वक़्त ह`जब सच्च`लोग अपनी सच्चाई का फ़ायदा पाएँगे। उनक`लिए जन्नत`ह`जनिक`नीच` नहर`बहती ह,ै जनिम`व`हमशेा रहगे। अल्लाह उनस`रेज़ी ह`और व`उसस`रेज़ी हो। यही सबस`बड़ी कामयाबी हो'।
لِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا فِيْهِنَّ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ	**120**	अल्लाह ही क`लिए ह`आकाशों और धरती की बादशाही और जो कुछ उनम`हो और वह हर चीज़ पर क़ादरि हो।

छंदों की संख्या	اَلْأَنْعَام	مكية
१६५	अल-अनआम - 6	मक्की

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल-अनआम (पशु)

1	सारी प्रशंसा अल्लाह के लिए है जिसने आकाश और धरती को बनाया, और अंधेरे और उजाला बनाया, फिर भी काफ़िर लोग अपने रब को किसी और के साथ साझी ठहराते हैं।	اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَجَعَلَ الظُّلُمٰتِ وَالنُّوْرَ ثُمَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ يَعْدِلُوْنَ
2	वही है जिसने तुम्हें मिट्टी से बनाया, फिर उसने तुम्हारी मृत्यु का समय निर्धारित किया, और एक निश्चित समय जो केवल उसी को मालूम है। फिर भी तुम संदेह करते हो।	هُوَ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ مِّنْ طِيْنٍ ثُمَّ قَضٰٓى اَجَلًا وَاَجَلٌ مُّسَمًّى عِنْدَهٗ ثُمَّ اَنْتُمْ تَمْتَرُوْنَ
3	और वही अल्लाह है (जो पूज्य है), आकाश में और धरती पर; वह जानता है जो तुम छिपाते हो और जो तुम ज़ाहिर करते हो, और वह जानता है जो तुम करते हो।	وَهُوَ اللّٰهُ فِى السَّمٰوٰتِ وَفِى الْاَرْضِ يَعْلَمُ سِرَّكُمْ وَجَهْرَكُمْ وَيَعْلَمُ مَا تَكْسِبُوْنَ
4	और उनके पास उनके रब की आयतों में से कोई आयत नहीं आती, मगर वे उससे ठुकरा देते हैं।	وَمَا تَأْتِيْهِمْ مِّنْ اٰيَةٍ مِّنْ اٰيٰتِ رَبِّهِمْ اِلَّا كَانُوْا عَنْهَا مُعْرِضِيْنَ
5	निश्चय ही, उन्होंने सत्य (क़ुरआन) को झुठलाया जब वह उनके पास आया, तो जल्द ही उनके पास उन ख़बरों की हक़ीक़त आएगी जिनका वे मज़ाक़ उड़ाते थे।	فَقَدْ كَذَّبُوْا بِالْحَقِّ لَمَّا جَاءَهُمْ فَسَوْفَ يَأْتِيْهِمْ اَنْۢبٰٓؤُا مَا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ
6	क्या उन्होंने नहीं देखा कि उनसे पहले कितनी नस्लों को हमने नष्ट कर दिया, जिन्हें हमने धरती पर ऐसी मज़बूती दी थी जो तुम्हें कभी नहीं दी। हमने उनके लिए भारी बारिश भेजी और उनके नीचे नदियाँ बहाईं, फिर हमने उनके पापों के कारण उन्हें नष्ट कर दिया, और उनके बाद दूसरी नस्ल पैदा की।	اَلَمْ يَرَوْا كَمْ اَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنْ قَرْنٍ مَّكَّنّٰهُمْ فِى الْاَرْضِ مَا لَمْ نُمَكِّنْ لَّكُمْ وَاَرْسَلْنَا السَّمَاۤءَ عَلَيْهِمْ مِّدْرَارًا وَّجَعَلْنَا الْاَنْهٰرَ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهِمْ فَاَهْلَكْنٰهُمْ بِذُنُوْبِهِمْ وَاَنْشَاْنَا مِنْ بَعْدِهِمْ قَرْنًا اٰخَرِيْنَ
7	और अगर हम तुम्हारे (मुहम्मद) पास काग़ज़ पर लिखी हुई कोई चीज़ उतारते, जिसे वे अपने हाथों से छू सकते, तब भी काफ़िर लोग कहते, 'यह तो बस एक स्पष्ट जादू है।'	وَلَوْ نَزَّلْنَا عَلَيْكَ كِتٰبًا فِيْ قِرْطَاسٍ فَلَمَسُوْهُ بِاَيْدِيْهِمْ لَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ
8	और वे कहते हैं, 'उसके पास कोई फ़रिश्ता क्यों नहीं उतारा गया?' अगर हम कोई फ़रिश्ता उतारते, तो बात ख़त्म हो जाती, और उन्हें ज़रा भी मोहलत न दी जाती।	وَقَالُوْا لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْهِ مَلَكٌ وَلَوْ اَنْزَلْنَا مَلَكًا لَّقُضِيَ الْاَمْرُ ثُمَّ لَا يُنْظَرُوْنَ
9	और अगर हम रसूल को फ़रिश्ता बनाते, तो उसे मर्द के रूप में ही बनाते, और फिर भी वे उसी संदेह में रहते जिसमें अब हैं।	وَلَوْ جَعَلْنٰهُ مَلَكًا لَّجَعَلْنٰهُ رَجُلًا وَّلَلَبَسْنَا عَلَيْهِمْ مَّا يَلْبِسُوْنَ

وَلَقَدِ اسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَحَاقَ بِالَّذِيْنَ سَخِرُوْا مِنْهُمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ	और निश्चय ही, तुमसे पहले के रसूलों का मज़ाक़ उड़ाया गया, तो उन लोगों पर अज़ाब उतरा जो उनका मज़ाक़ उड़ाते थे, उनके मज़ाक़ की सजा के रूप में।	**10**
قُلْ سِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ ثُمَّ انْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِيْنَ	कहो (मुहम्मद), 'धरती पर घूमो, फिर देखो कि उन लोगों का अंजाम कैसा हुआ जो (सत्य को) झुठलाते थे।'	**11**
قُلْ لِّمَنْ مَّا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ قُلْ لِّلّٰهِ كَتَبَ عَلٰى نَفْسِهِ الرَّحْمَةَ لَيَجْمَعَنَّكُمْ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ لَا رَيْبَ فِيْهِ اَلَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ	कहो (मुहम्मद), 'आकाशों और धरती में जो कुछ है, वह किसका है?' कहो, 'अल्लाह का।' उसने अपने ऊपर रहमत को अनिवार्य कर लिया है वह तुम सबको क़ियामत के दिन इकट्ठा करेगा, इसमें कोई संदेह नहीं। जिन लोगों ने अपने आप को नुक़सान पहुँचाया, वे ही ईमान नहीं लाते।	**12**
وَلَهٗ مَا سَكَنَ فِي الَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ	और जो कुछ रात और दिन में है, वह उसी का है, और वह सब कुछ सुनने वाला, सब कुछ जानने वाला है।	**13**
قُلْ اَغَيْرَ اللّٰهِ اَتَّخِذُ وَلِيًّا فَاطِرِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَهُوَ يُطْعِمُ وَلَا يُطْعَمُ قُلْ اِنِّيْٓ اُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ اَوَّلَ مَنْ اَسْلَمَ وَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ	कहो (मुहम्मद), 'क्या मैं अल्लाह के सिवा किसी और को रब बनाऊँ, जो आकाशों और धरती का रचयिता है, जो खिलाता है और उसे कोई नहीं खिलाता?' कहो, 'मुझे तो पहले मुसलिम होने का हुक्म दिया गया है,' और (यह भी कहा गया कि) 'मुशरिकों में से न होना।'	**14**
قُلْ اِنِّيْٓ اَخَافُ اِنْ عَصَيْتُ رَبِّيْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ	कहो (मुहम्मद), 'मैं अपने रब की नाफ़रमानी से डरता हूँ क्योंकि उस दिन का अज़ाब बड़ा है।'	**15**
مَنْ يُّصْرَفْ عَنْهُ يَوْمَىِٕذٍ فَقَدْ رَحِمَهٗ وَذٰلِكَ الْفَوْزُ الْمُبِيْنُ	जिसे उस दिन अज़ाब से बचाया गया, उस पर अल्लाह ने रहमत की। और यही वह सपष्ट जीत है।	**16**
وَاِنْ يَّمْسَسْكَ اللّٰهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهٗٓ اِلَّا هُوَ وَاِنْ يَّمْسَسْكَ بِخَيْرٍ فَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ	और अगर अल्लाह तुम पर कोई मुसीबत लाए, तो उसके कोई नहीं हटा सकता सिवाय उसके और अगर वह तुमहें कोई भलाई दे, तो वह हर चीज़ पर क़ादिर है।	**17**
وَهُوَ الْقَاهِرُ فَوْقَ عِبَادِهٖ وَهُوَ الْحَكِيْمُ الْخَبِيْرُ	और वही अपने बन्दों पर पूरा अधिकार रखता है और वह महाबुद्धिमान, सब कुछ जानने वाला है।	**18**
قُلْ اَيُّ شَيْءٍ اَكْبَرُ شَهَادَةً قُلِ اللّٰهُ شَهِيْدٌۢ بَيْنِيْ وَبَيْنَكُمْ وَاُوْحِيَ اِلَيَّ هٰذَا الْقُرْاٰنُ لِاُنْذِرَكُمْ بِهٖ وَمَنْۢ بَلَغَ اَىِٕنَّكُمْ لَتَشْهَدُوْنَ اَنَّ مَعَ اللّٰهِ اٰلِهَةً اُخْرٰى قُلْ لَّآ اَشْهَدُ قُلْ اِنَّمَا هُوَ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ وَّاِنَّنِيْ بَرِيْٓءٌ مِّمَّا تُشْرِكُوْنَ	कहो (मुहम्मद), 'कौन सबसे मज़बूत गवाही दे सकता है?' कहो, 'अल्लाह, वह मेरे और तुमहारे बीच गवाह है यह क़ुरआन मुझे वहय किया गया ताकि इसके ज़रिए मैं तुमहें और जिन तक यह पहुँचे, उनहें चेतावनी दूँ क्या तुम सचमुच गवाही दे सकते हो कि अल्लाह के साथ कोई और माबूद है?' कहो, 'मैं ऐसी गवाही नहीं दे सकता।' कहो, 'वह तो बस एकमात्र माबूद है, और मैं उससे बेरी हूँ जो तुम साझी ठहराते हो।'	**19**

20	जिन लोगों को हमने किताब दी, वे उस (मुहम्मद को) उसी तरह पहचानते हैं जैसे वे अपने बेटों को पहचानते हैं। जिन्होंने अपने आप को नुक़सान पहुँचाया, वे ही ईमान नहीं लाते।	اَلَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَعْرِفُوْنَهٗ كَمَا يَعْرِفُوْنَ اَبْنَآءَهُمْ اَلَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ
21	और उससे ज़्यादा ज़ालिम कौन हो सकता है जो अल्लाह के ख़िलाफ़ झूठ गढ़े, या उसकी आयतों को झुठलाए? निश्चय ही, ज़ालिम लोग कामयाब नहीं होते।	وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ كَذَّبَ بِاٰيٰتِهٖ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ
22	और (याद करो) उस दिन को जब हम उन सबको इकट्ठा करेंगे, फिर हम उन लोगों से कहेंगे जो अल्लाह के साथ साझी ठहराते थे, 'वे तुम्हारे साझीदार कहाँ हैं जिन्हें तुम साझी ठहराते थे?'	وَيَوْمَ نَحْشُرُهُمْ جَمِيْعًا ثُمَّ نَقُوْلُ لِلَّذِيْنَ اَشْرَكُوْٓا اَيْنَ شُرَكَآؤُكُمُ الَّذِيْنَ كُنْتُمْ تَزْعُمُوْنَ
23	फिर उनकी झूठी बात के सिवा कोई जवाब न होगा, सिवाय इसके कि वे कहेंगे, 'अल्लाह की क़सम, हमारे रब, हम मुशरिक नहीं थे।'	ثُمَّ لَمْ تَكُنْ فِتْنَتُهُمْ اِلَّآ اَنْ قَالُوْا وَاللّٰهِ رَبِّنَا مَا كُنَّا مُشْرِكِيْنَ
24	देखो, कैसे उन्होंने अपने ख़िलाफ़ झूठ बोला। और जो कुछ वे गढ़ते थे, वह उनसे ग़ायब हो जाएगा।	اُنْظُرْ كَيْفَ كَذَبُوْا عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ
25	और उनमें से कुछ लोग तुम्हारी बात सुनते हैं (मुहम्मद), लेकिन हमने उनके दिलों पर परदा डाल दिया है ताकि वे उसे न समझें, और उनके कानों में बोझ डाल दिया है। और अगर वे हर निशानी देख लें, तब भी उस पर ईमान नहीं लाएँगे। यहाँ तक कि जब वे तुम्हारे पास बहस करने आते हैं, तो काफ़िर लोग कहते हैं, 'यह (क़ुरआन) तो बस पुराने लोगों की कहानियाँ हैं।'	وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّسْتَمِعُ اِلَيْكَ وَجَعَلْنَا عَلٰى قُلُوْبِهِمْ اَكِنَّةً اَنْ يَّفْقَهُوْهُ وَفِيْٓ اٰذَانِهِمْ وَقْرًا وَاِنْ يَّرَوْا كُلَّ اٰيَةٍ لَّا يُؤْمِنُوْا بِهَا حَتّٰٓى اِذَا جَآءُوْكَ يُجَادِلُوْنَكَ يَقُوْلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ هٰذَآ اِلَّآ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ
26	और वे (दूसरों को) इस सुनने से रोकते हैं और ख़ुद भी इससे दूर रहते हैं, और वे बस अपने आप को नष्ट करते हैं, जबकि उन्हें इसका अहसास नहीं हो।	وَهُمْ يَنْهَوْنَ عَنْهُ وَيَنْـَٔوْنَ عَنْهُ وَاِنْ يُّهْلِكُوْنَ اِلَّآ اَنْفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُوْنَ
27	और अगर तुम (मुहम्मद) देखो जब उन्हें आग के सामने लाया जाएगा, तो वे कहेंगे, 'काश, हमें (दुनिया में) वापस भेजा जाता, तो हम अपने रब की आयतों को न झुठलाते, और ईमान वालों में शामिल हो जाते।'	وَلَوْ تَرٰٓى اِذْ وُقِفُوْا عَلَى النَّارِ فَقَالُوْا يٰلَيْتَنَا نُرَدُّ وَلَا نُكَذِّبَ بِاٰيٰتِ رَبِّنَا وَنَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ
28	लेकिन जो कुछ उन्होंने पहले छिपाया था, वह उनके लिए ज़ाहिर हो चुका है। अगर उन्हें (दुनिया में) वापस भेजा जाए, तो वे फिर वही करेंगे जो उन्हें मना किया गया था। निश्चय ही, वे झूठे हैं।	بَلْ بَدَا لَهُمْ مَّا كَانُوْا يُخْفُوْنَ مِنْ قَبْلُ وَلَوْ رُدُّوْا لَعَادُوْا لِمَا نُهُوْا عَنْهُ وَاِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ
29	और वे कहते हैं, 'बस यही दुनिया की ज़िंदगी है, और हम दोबारा नहीं उठाया जाएगा।'	وَقَالُوْٓا اِنْ هِيَ اِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا وَمَا نَحْنُ بِمَبْعُوْثِيْنَ
30	और अगर तुम (मुहम्मद) देखो जब उन्हें उनके रब के सामने खड़ा किया जाएगा (तो वह दृश्य दिल दहलाने वाला होगा)। वह (अल्लाह) कहेगा, 'क्या यह (बठैना) सच नहीं है?' वे जवाब देंगे, 'हाँ, हमारे रब की क़सम, यह सच है।' वह कहेगा, 'तो इस अज़ाब को चखो, क्योंकि तुम इसे झुठलाते थे।'	وَلَوْ تَرٰٓى اِذْ وُقِفُوْا عَلٰى رَبِّهِمْ قَالَ اَلَيْسَ هٰذَا بِالْحَقِّ قَالُوْا بَلٰى وَرَبِّنَا قَالَ فَذُوْقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ

31	निश्चय ही, वे लोग हार गए जिन्होंने अल्लाह से मुलाक़ात को झुठलाया; यहाँ तक कि जब क़ियामत अचानक उनके पास आई, तो वे बोले, 'हाय, हमारी लापरवाही पर कितना बड़ा अफ़सोस है,' जबकि वे अपने पापों को अपनी पीठ पर लादे होंगे। कितना बुरा है जो वे ढो रहे हैं	قَدْ خَسِرَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِلِقَاءِ اللّٰهِ حَتّٰٓى اِذَا جَاۤءَتْهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً قَالُوْا يٰحَسْرَتَنَا عَلٰى مَا فَرَّطْنَا فِيْهَا وَهُمْ يَحْمِلُوْنَ اَوْزَارَهُمْ عَلٰى ظُهُوْرِهِمْ اَلَا سَاۤءَ مَا يَزِرُوْنَ
32	और यह दुनिया की ज़िंदगी बस खेल और तमाशा है और आख़िरत का घर उन लोगों के लिए कहीं बेहतर है जो तक़वा अपनाते हैं। क्या तुम नहीं समझते?	وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا لَعِبٌ وَّلَهْوٌ وَلَلدَّارُ الْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ
33	हम जानते हैं कि उनकी बात तुम्हें (मुहम्मद) दुखी करती है, (लेकिन दुखी न हो) क्योंकि वे वास्तव में तुम्हें नहीं झुठलाते, बल्कि ज़ालिम लोग अल्लाह की आयतों को ठुकराते हैं।	قَدْ نَعْلَمُ اِنَّهٗ لَيَحْزُنُكَ الَّذِيْ يَقُوْلُوْنَ فَاِنَّهُمْ لَا يُكَذِّبُوْنَكَ وَلٰكِنَّ الظّٰلِمِيْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ يَجْحَدُوْنَ
34	और निश्चय ही, तुमसे पहले के रसूलों को भी झुठलाया गया, लेकिन उन्होंने झुठलाए जाने और सताए जाने पर सब्र किया, यहाँ तक कि हमारी मदद उन तक पहुँची। और अल्लाह के फ़ैसलों को कोई नहीं बदल सकता। और तुम तक कुछ रसूलों की ख़बर पहुँच चुकी है।	وَلَقَدْ كُذِّبَتْ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِكَ فَصَبَرُوْا عَلٰى مَا كُذِّبُوْا وَاُوْذُوْا حَتّٰٓى اَتٰىهُمْ نَصْرُنَا وَلَا مُبَدِّلَ لِكَلِمٰتِ اللّٰهِ وَلَقَدْ جَاۤءَكَ مِنْ نَّبَاِى الْمُرْسَلِيْنَ
35	और अगर उनका मुँह फेरना तुम्हें (मुहम्मद) भारी लगता है, तो अगर तुम धरती में कोई सुरंग बना सको या आकाश में कोई सीढ़ी, और उनके लिए कोई निशानी ला सको, (तो लाओ)। और अगर अल्लाह चाहता, तो वह सबको हिदायत दे देता, इसलिए तुम हरगिज़ नादानों में से न बनो।	وَاِنْ كَانَ كَبُرَ عَلَيْكَ اِعْرَاضُهُمْ فَاِنِ اسْتَطَعْتَ اَنْ تَبْتَغِيَ نَفَقًا فِى الْاَرْضِ اَوْ سُلَّمًا فِى السَّمَاۤءِ فَتَاْتِيَهُمْ بِاٰيَةٍ وَلَوْ شَاۤءَ اللّٰهُ لَجَمَعَهُمْ عَلَى الْهُدٰى فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْجٰهِلِيْنَ
36	बस वही लोग (अल्लाह की पुकार को) मानते हैं जो सुनते हैं, और जो मर चुके हैं, उन्हें अल्लाह दोबारा ज़िंदा करेगा, फिर उसी की ओर लौटाएगा।	اِنَّمَا يَسْتَجِيْبُ الَّذِيْنَ يَسْمَعُوْنَ وَالْمَوْتٰى يَبْعَثُهُمُ اللّٰهُ ثُمَّ اِلَيْهِ يُرْجَعُوْنَ
37	और वे (मुशरिक) कहते हैं, 'उसके पास उसके रब की ओर से कोई निशानी क्यों नहीं उतारी गई?' कहो, 'निश्चय ही, अल्लाह निशानी उतारने की ताक़त रखता है, लेकिन उनमें से ज़्यादातर नहीं जानते।'	وَقَالُوْا لَوْلَا نُزِّلَ عَلَيْهِ اٰيَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ قُلْ اِنَّ اللّٰهَ قَادِرٌ عَلٰٓى اَنْ يُّنَزِّلَ اٰيَةً وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ
38	और धरती पर कोई जानवर या पक्षी जो अपने पंखों से उड़ता हो, ऐसा नहीं है जो तुम्हारे जैसे समुदाय न हों। हमने किताब में कोई चीज़ नहीं छोड़ी। फिर वे अपने रब की ओर इकट्ठा किए जाएँगे।	وَمَا مِنْ دَآبَّةٍ فِى الْاَرْضِ وَلَا طٰٓئِرٍ يَّطِيْرُ بِجَنَاحَيْهِ اِلَّآ اُمَمٌ اَمْثَالُكُمْ مَا فَرَّطْنَا فِى الْكِتٰبِ مِنْ شَيْءٍ ثُمَّ اِلٰى رَبِّهِمْ يُحْشَرُوْنَ
39	और जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया, वे बहरे और गूँगे हैं, अँधेरों में भटक रहे हैं। अल्लाह जिसे चाहता है, उसे गुमराह करता है, और जिसे चाहता है, उसे सीधे रास्ते पर रखता है।	وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا صُمٌّ وَّبُكْمٌ فِى الظُّلُمٰتِ مَنْ يَّشَاِ اللّٰهُ يُضْلِلْهُ وَمَنْ يَّشَاْ يَجْعَلْهُ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ

40	कहो (मुहम्मद), 'ज़रा सोचो, अगर अल्लाह का अज़ाब तुम पर आ जाए या क़ियामत की घड़ी आ जाए, तो क्या तुम अल्लाह के सिवा किसी और को पुकारोग, अगर तुम सच्चे हो?'	قُلْ اَرَءَيْتَكُمْ اِنْ اَتٰىكُمْ عَذَابُ اللّٰهِ اَوْ اَتَتْكُمُ السَّاعَةُ اَغَيْرَ اللّٰهِ تَدْعُوْنَ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ
41	नहीं, तुम तो बस उसी को पुकारोग, और अगर वह चाहेगा तो जिसके लिए तुमने पुकारा, उसे दूर कर देगा, और तुम भूल जाओगे जिन्हें तुम साझी ठहराते थे।	بَلْ اِيَّاهُ تَدْعُوْنَ فَيَكْشِفُ مَا تَدْعُوْنَ اِلَيْهِ اِنْ شَاۤءَ وَتَنْسَوْنَ مَا تُشْرِكُوْنَ
42	और हमने तुमसे पहले की क़ौमों के पास (रसूल) भेजे, फिर हमने उन्हें तंगी और मुसीबत में डाला ताकि वे नम्रता दिखाएँ।	وَلَقَدْ اَرْسَلْنَاۤ اِلٰٓى اُمَمٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَاَخَذْنٰهُمْ بِالْبَاْسَاۤءِ وَالضَّرَّاۤءِ لَعَلَّهُمْ يَتَضَرَّعُوْنَ
43	फिर जब हमारा अज़ाब उन पर आया, तो उन्हें नम्रता क्यों नहीं दिखानी चाहिए थी? लेकिन उनके दिल सख़्त हो गए, और शैतान ने उनके लिए उनके कामों को सुहाना बना दिया।	فَلَوْلَاۤ اِذْ جَاۤءَهُمْ بَاْسُنَا تَضَرَّعُوْا وَلٰكِنْ قَسَتْ قُلُوْبُهُمْ وَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ
44	तो जब वे उस चेतावनी को भूल गए जो उन्हें दी गई थी, हमने उनके लिए हर तरह के सुख के दरवाज़े खोल दिए। यहाँ तक कि जब वे उससे ख़ुश होने लगे जो उन्हें दिया गया था, हमने उन्हें अचानक पकड़ लिया, और वे निराश होकर रह गए।	فَلَمَّا نَسُوْا مَا ذُكِّرُوْا بِهٖ فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ اَبْوَابَ كُلِّ شَيْءٍ حَتّٰٓى اِذَا فَرِحُوْا بِمَاۤ اُوْتُوْۤا اَخَذْنٰهُمْ بَغْتَةً فَاِذَا هُمْ مُّبْلِسُوْنَ
45	इस तरह ज़ालिम लोगों को जड़ से उखाड़ दिया गया। और सारी प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जो सारे जहानों का रब है।	فَقُطِعَ دَابِرُ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ
46	कहो (मुहम्मद), 'ज़रा सोचो, अगर अल्लाह तुम्हारी सुनने और देखने की शक्ति छीन ले और तुम्हारे दिलों पर मुहर लगा दे, तो अल्लाह के सिवा कौन माबूद है जो उसे तुम्हें लौटा सकता है?' देखो, हम अपनी निशानियों को बार-बार कैसे समझाते हैं, फिर भी वे मुँह फेरे लेते हैं।	قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ اَخَذَ اللّٰهُ سَمْعَكُمْ وَاَبْصَارَكُمْ وَخَتَمَ عَلٰى قُلُوْبِكُمْ مَّنْ اِلٰهٌ غَيْرُ اللّٰهِ يَاْتِيْكُمْ بِهٖ اُنْظُرْ كَيْفَ نُصَرِّفُ الْاٰيٰتِ ثُمَّ هُمْ يَصْدِفُوْنَ
47	कहो (मुहम्मद), 'ज़रा सोचो, अगर अल्लाह का अज़ाब तुम पर अचानक या ख़ुल्लम-ख़ुल्ला आ जाए, तो क्या ज़ालिम लोगों के सिवा कोई और नष्ट किया जाएगा?'	قُلْ اَرَءَيْتَكُمْ اِنْ اَتٰىكُمْ عَذَابُ اللّٰهِ بَغْتَةً اَوْ جَهْرَةً هَلْ يُهْلَكُ اِلَّا الْقَوْمُ الظّٰلِمُوْنَ
48	हमने रसूलों को बस ख़ुशख़बरी देने और चेतावनी देने के लिए भेजा। जो कोई ईमान लाए और सुधार कर ले, उसे न तो कोई डर होगा और न वह दुखी होगा।	وَمَا نُرْسِلُ الْمُرْسَلِيْنَ اِلَّا مُبَشِّرِيْنَ وَمُنْذِرِيْنَ فَمَنْ اٰمَنَ وَاَصْلَحَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ
49	और जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया, उन्हें उनके पापों की वजह से अज़ाब भुगतना होगा।	وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا يَمَسُّهُمُ الْعَذَابُ بِمَا كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ

50	कहो (मुहम्मद), 'मैं तुमसे नहीं कहता कि मेरे पास अल्लाह के ख़ज़ाने हैं और न मैं ग़ैब (छिपी बात) जानता हूँ और न मैं तुमसे कहता हूँ कि मैं फ़रिश्ता हूँ मैं तो बस उसी का अनुसरण करता हूँ जो मुझे वह्य किया गया है' कहो, 'क्या अंधा और देखने वाला बराबर है? क्या तुम नहीं सोचते?'	قُلْ لَّآ اَقُوْلُ لَكُمْ عِنْدِيْ خَزَآئِنُ اللّٰهِ وَلَآ اَعْلَمُ الْغَيْبَ وَلَآ اَقُوْلُ لَكُمْ اِنِّيْ مَلَكٌ اِنْ اَتَّبِعُ اِلَّا مَا يُوْحٰٓى اِلَيَّ قُلْ هَلْ يَسْتَوِى الْاَعْمٰى وَالْبَصِيْرُ اَفَلَا تَتَفَكَّرُوْنَ
51	इस (क़ुरआन) के ज़रिए उन लोगों को चेतावनी दो जो डरते हैं कि उन्हें उनके रब के सामने इकट्ठा किया जाएगा, उनके लिए अल्लाह के सिवा कोई मददगार या सिफ़ारिशी नहीं होगा, ताकि वे तक़वा अपनाएँ	وَاَنْذِرْ بِهِ الَّذِيْنَ يَخَافُوْنَ اَنْ يُّحْشَرُوْٓا اِلٰى رَبِّهِمْ لَيْسَ لَهُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ وَلِيٌّ وَّلَا شَفِيْعٌ لَّعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ
52	और उन लोगों को न निकालो जो सुबह और शाम अपने रब को पुकारते हैं, उसकी ख़ुशी की तमन्ना रखते हैं न तुम उनके कामों के लिए ज़िम्मेदार हो, और न वे तुम्हारे कामों के लिए ज़िम्मेदार हैं, कि तुम उन्हें निकाल दो और ज़ालिमों में शामिल हो जाओ।	وَلَا تَطْرُدِ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَدٰوةِ وَالْعَشِيِّ يُرِيْدُوْنَ وَجْهَهٗ مَا عَلَيْكَ مِنْ حِسَابِهِمْ مِّنْ شَيْءٍ وَّمَا مِنْ حِسَابِكَ عَلَيْهِمْ مِّنْ شَيْءٍ فَتَطْرُدَهُمْ فَتَكُوْنَ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ
53	और इस तरह हमने कुछ लोगों (अमीरों) को कुछ (ग़रीबों) के ज़रिए आज़माया, ताकि वे (अमीर) कहें, 'क्या यही लोग हैं जिनपर हम में से अल्लाह ने अनुग्रह किया?' (अल्लाह फ़रमाता है), 'क्या अल्लाह उन लोगों को नहीं जानता जो शुक्रगुज़ार हैं?'	وَكَذٰلِكَ فَتَنَّا بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ لِّيَقُوْلُوْٓا اَهٰٓؤُلَآءِ مَنَّ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ مِّنْ بَيْنِنَا اَلَيْسَ اللّٰهُ بِاَعْلَمَ بِالشّٰكِرِيْنَ
54	और जब वे लोग जो हमारी आयतों पर ईमान लाते हैं, तुम्हारे पास आएँ, तो कहो, 'सलामुन अलैकुम (तुम पर सलामती हो)।' तुम्हारे रब ने अपने ऊपर रहमत को अनिवार्य कर लिया है, कि जो कोई तुममें से नादानी में बुराई करे, फिर इसके बाद तौबा कर ले और सुधार कर ले, तो वह बड़ा माफ़ करने वाला, बड़ा मेहरबान है'	وَاِذَا جَآءَكَ الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِاٰيٰتِنَا فَقُلْ سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ كَتَبَ رَبُّكُمْ عَلٰى نَفْسِهِ الرَّحْمَةَ اَنَّهٗ مَنْ عَمِلَ مِنْكُمْ سُوْٓءًا بِجَهَالَةٍ ثُمَّ تَابَ مِنْ بَعْدِهٖ وَاَصْلَحَ فَاَنَّهٗ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ
55	और इस तरह हम क़ुरआन की आयतों को विस्तार से बयान करते हैं, ताकि सालेह लोगों का रास्ता और पापियों का रास्ता साफ़ हो जाए।	وَكَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ وَلِتَسْتَبِيْنَ سَبِيْلُ الْمُجْرِمِيْنَ
56	कहो (मुहम्मद), 'मुझे उन माबूदों की इबादत करने से मना किया गया है जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो।' कहो, 'मैं तुम्हारी ख़्वाहिशों का पालन नहीं करूँगा। अगर ऐसा किया, तो मैं गुमराह हो जाऊँगा, और मैं हिदायत पाने वालों में से नहीं रहूँगा।'	قُلْ اِنِّيْ نُهِيْتُ اَنْ اَعْبُدَ الَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ قُلْ لَّآ اَتَّبِعُ اَهْوَآءَكُمْ قَدْ ضَلَلْتُ اِذًا وَّمَآ اَنَا مِنَ الْمُهْتَدِيْنَ
57	कहो (मुहम्मद), 'मैं अपने रब की ओर से स्पष्ट दलील पर हूँ और तुमने उसे झुठलाया। मेरे पास वह (अज़ाब) नहीं है जिसे तुम जल्दी लाने की माँग करते हो। फ़ैसला करना तो बस अल्लाह का हक़ है वह सत्य को बयान करता है और वह सबसे अच्छा फ़ैसला करने वाला है'	قُلْ اِنِّيْ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّيْ وَكَذَّبْتُمْ بِهٖ مَا عِنْدِيْ مَا تَسْتَعْجِلُوْنَ بِهٖ اِنِ الْحُكْمُ اِلَّا لِلّٰهِ يَقُصُّ الْحَقَّ وَهُوَ خَيْرُ الْفٰصِلِيْنَ
58	कहो (मुहम्मद), 'अगर मेरे पास वह (अज़ाब) होता जिसे तुम जल्दी लाने की माँग करते हो, तो मेरे और तुम्हारे बीच की बात ख़त्म हो जाती।' और अल्लाह ज़ालिम लोगों को ज़्यादा अच्छी तरह जानता है	قُلْ لَّوْ اَنَّ عِنْدِيْ مَا تَسْتَعْجِلُوْنَ بِهٖ لَقُضِيَ الْاَمْرُ بَيْنِيْ وَبَيْنَكُمْ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِالظّٰلِمِيْنَ

59	और ग़ैब की कुंजियाँ उसके पास हैं, कोई नहीं जानता सिवाय उसके। वह जानता है जो कुछ धरती और समुद्र में है। कोई पत्ता नहीं गिरता जिसे वह न जानता हो। और न कोई दाना धरती के अँधेरों में है, और न कोई गीली या सूखी चीज, जो स्पष्ट किताब (लौह महफ़ूज़) में न लिखी हो।	وَعِنْدَه مَفَاتِحُ الْغَيْبِ لَا يَعْلَمُهَآ اِلَّا هُوَ وَيَعْلَمُ مَا فِى الْبَرِّ وَالْبَحْرِ وَمَا تَسْقُطُ مِنْ وَّرَقَةٍ اِلَّا يَعْلَمُهَا وَلَا حَبَّةٍ فِيْ ظُلُمٰتِ الْاَرْضِ وَلَا رَطْبٍ وَّلَا يَابِسٍ اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ
60	और वही है जो तुम्हें रात में सुलाता है और जानता है जो तुम दिन में करते हो। फिर वह तुम्हें दिन में जगाता है ताकि तुम्हारी निर्धारित उम्र पूरी हो। फिर उसी की ओर तुम्हारा लौटना है, फिर वह तुम्हें बताएगा जो तुम करते थे।	وَهُوَ الَّذِيْ يَتَوَفّٰكُمْ بِالَّيْلِ وَيَعْلَمُ مَا جَرَحْتُمْ بِالنَّهَارِ ثُمَّ يَبْعَثُكُمْ فِيْهِ لِيُقْضٰٓى اَجَلٌ مُّسَمًّى ثُمَّ اِلَيْهِ مَرْجِعُكُمْ ثُمَّ يُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ
61	और वही अपने बन्दों पर पूर्ण अधिकार रखता है, और तुम्हारे लिए रखवाले फ़रिश्ते भेजता है, यहाँ तक कि जब तुम में से किसी की मृत्यु का समय आता है, तो हमारे फ़रिश्ते उसकी जान निकाल लेते हैं, और वे अपने कर्तव्य में कोताही नहीं करते।	وَهُوَ الْقَاهِرُ فَوْقَ عِبَادِه وَيُرْسِلُ عَلَيْكُمْ حَفَظَةً حَتّٰٓى اِذَا جَاءَ اَحَدَكُمُ الْمَوْتُ تَوَفَّتْهُ رُسُلُنَا وَهُمْ لَا يُفَرِّطُوْنَ
62	फिर वे (अल्लाह के बन्दे) अपने असली मालिक अल्लाह की ओर लौटाए जाते हैं। जान लो कि उस दिन सारा फ़ैसला उसी का है और वह सबसे तेज़ हिसाब करने वाला है।	ثُمَّ رُدُّوْٓا اِلَى اللّٰهِ مَوْلٰىهُمُ الْحَقِّ اَلَا لَهُ الْحُكْمُ وَهُوَ اَسْرَعُ الْحٰسِبِيْنَ
63	कहो (मुहम्मद), 'कौन तुम्हें धरती और समुद्र की मुसीबतों से बचाता है, जब तुम उसे नम्रता और धीमी आवाज़ में पुकारते हो?' (कहते हो), 'अगर वह हमें इस (मुसीबत) से बचा ले, तो हम निश्चय ही शुक्रगुज़ार होंगे।'	قُلْ مَنْ يُّنَجِّيْكُمْ مِّنْ ظُلُمٰتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ تَدْعُوْنَه تَضَرُّعًا وَّخُفْيَةً لَئِنْ اَنْجٰنَا مِنْ هٰذِه لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الشّٰكِرِيْنَ
64	कहो (मुहम्मद), 'अल्लाह ही तुम्हें उस मुसीबत और हर तरह की परेशानी से बचाता है, फिर भी तुम (उसके साथ) साझी ठहराते हो।'	قُلِ اللّٰهُ يُنَجِّيْكُمْ مِّنْهَا وَمِنْ كُلِّ كَرْبٍ ثُمَّ اَنْتُمْ تُشْرِكُوْنَ
65	कहो (मुहम्मद), 'वही है जो तुम पर ऊपर से या तुम्हारे पाँवों के नीचे से अज़ाब भेज सकता है, या तुम्हें परस्पर विरोधी गिरोहों में बाँट दे, और तुममें से कुछ को कुछ की हिंसा का मज़ा चखा दे।' देखो, हम अपनी निशानियों को बार-बार कैसे समझाते हैं ताकि वे समझें।	قُلْ هُوَ الْقَادِرُ عَلٰٓى اَنْ يَّبْعَثَ عَلَيْكُمْ عَذَابًا مِّنْ فَوْقِكُمْ اَوْ مِنْ تَحْتِ اَرْجُلِكُمْ اَوْ يَلْبِسَكُمْ شِيَعًا وَّيُذِيْقَ بَعْضَكُمْ بَأْسَ بَعْضٍ اُنْظُرْ كَيْفَ نُصَرِّفُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّهُمْ يَفْقَهُوْنَ
66	और तुम्हारी क़ौम ने इसे (अज़ाब) झुठलाया, हालाँकि यह सच है। कहो (मुहम्मद), 'मैं तुम्हारा ज़िम्मेदार नहीं हूँ।'	وَكَذَّبَ بِه قَوْمُكَ وَهُوَ الْحَقُّ قُلْ لَّسْتُ عَلَيْكُمْ بِوَكِيْلٍ
67	हर ख़बर का एक वक़्त मुक़र्रर है, और तुम जल्द ही जान लोगे।	لِكُلِّ نَبَاٍ مُّسْتَقَرٌّ وَّسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ

68	और जब तमु उन लोगों को देखो जो हमारी आयतों का मज़ाक़ उड़ात हैं, तो उनह छोड़ दो, जब तक कि वे किसी दूसरी बात म न लग जाएँ और अगर शैतान तमुह (इस हिदायत को) भुला द, तो याद आने के बाद ज़ालिम लोगों के साथ न बैठो।	وَاِذَا رَاَيْتَ الَّذِيْنَ يَخُوْضُوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِنَا فَاَعْرِضْ عَنْهُمْ حَتّٰى يَخُوْضُوْا فِيْ حَدِيْثٍ غَيْرِهٖ وَاِمَّا يُنْسِيَنَّكَ الشَّيْطٰنُ فَلَا تَقْعُدْ بَعْدَ الذِّكْرٰى مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ
69	और तक़वा अपनाने वालों पर उनके (पापो) की कोई ज़िम्मेदारी नहीं ह; लेकिन (उनका कर्तव्य) उनह याद दिलाना ह ताकि वे तक़वा अपनाएँ।	وَمَا عَلَى الَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ مِنْ حِسَابِهِمْ مِّنْ شَيْءٍ وَّلٰكِنْ ذِكْرٰى لَعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ
70	उन लोगों को छोड़ दो जो अपनी दीन को खेल और तमाशा बनाते ह, और दुनिया की ज़िंदगी ने उनह धोखा दिया ह और (उनह) क़ुरआन के ज़रिए चेतावनी दो ताकि कोई अपनी करनी के कारण (जहन्नम म) न गिरे। उनके लिए अल्लाह के सिवा कोई मददगार या सिफ़ारिशी नहीं होगा। और अगर वह हर तरह का बदला देना चाहे, तो वह क़बूल नहीं होगा। यही वे लोग ह जो अपनी करनी के कारण (जहन्नम म) गिराए गए। उनके लिए उबलता हुआ पानी और दर्दनाक अज़ाब ह, क्योंकि वे काफ़िर थे।	وَذَرِ الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا دِيْنَهُمْ لَعِبًا وَّلَهْوًا وَّغَرَّتْهُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا وَذَكِّرْ بِهٖٓ اَنْ تُبْسَلَ نَفْسٌۢ بِمَا كَسَبَتْ لَيْسَ لَهَا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلِيٌّ وَّلَا شَفِيْعٌ وَاِنْ تَعْدِلْ كُلَّ عَدْلٍ لَّا يُؤْخَذْ مِنْهَا اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اُبْسِلُوْا بِمَا كَسَبُوْا لَهُمْ شَرَابٌ مِّنْ حَمِيْمٍ وَّعَذَابٌ اَلِيْمٌۢ بِمَا كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ
71	कहो (मुहम्मद), 'क्या हम अल्लाह के सिवा किसी ऐसी चीज़ को पुकारें जो न हमें फ़ायदा दे सकती है और न नुक़सान? और क्या हम वापस लौटाए जाएँ, जबकि अल्लाह ने हमें हिदायत दी, जैसे वह शख़्स जो शैतान ने धरती पर गुमराह कर दिया, और वह हैरानी म हो' उसके साथी उसे सीधे रास्त की ओर बुलाते ह, (कहते ह), 'हमारे पास आ।' कहो, 'निश्चय ही, अल्लाह की हिदायत ही असली हिदायत ह; और हमें हुक्म दिया गया ह कि हम सारे जहानों के रब के सामने सर झुकाएँ।'	قُلْ اَنَدْعُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَنْفَعُنَا وَلَا يَضُرُّنَا وَنُرَدُّ عَلٰٓى اَعْقَابِنَا بَعْدَ اِذْ هَدٰىنَا اللّٰهُ كَالَّذِى اسْتَهْوَتْهُ الشَّيٰطِيْنُ فِى الْاَرْضِ حَيْرَانَ لَهٗٓ اَصْحٰبٌ يَّدْعُوْنَهٗٓ اِلَى الْهُدَى ائْتِنَا قُلْ اِنَّ هُدَى اللّٰهِ هُوَ الْهُدٰى وَاُمِرْنَا لِنُسْلِمَ لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ
72	और यह कि नमाज़ क़ायम करो और उससे डरो।' और वही ह जिसकी ओर तमु सब इकट्ठा किए जाओगे।	وَاَنْ اَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاتَّقُوْهُ وَهُوَ الَّذِيْٓ اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ
73	और वही ह जिसने आकाश और धरती को हक़ के साथ बनाया। जब वह कहता ह, 'हो जा!' तो वह हो जाता ह। उसका फ़रमान सत्य ह, और सूर (नफ़ीरी) फूँके जाने के दिन सारी सत्ता उसी की होगी। वह ग़ैब और ज़ाहिर को जानता ह और वह महाबुद्धिमान, महा सूक्ष्मज्ञ ह।	وَهُوَ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ وَيَوْمَ يَقُوْلُ كُنْ فَيَكُوْنُ قَوْلُهُ الْحَقُّ وَلَهُ الْمُلْكُ يَوْمَ يُنْفَخُ فِى الصُّوْرِ عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ وَهُوَ الْحَكِيْمُ الْخَبِيْرُ
74	और (याद करो) जब इब्राहीम ने अपने बाप आज़र से कहा, 'क्या तमु इन मूर्तियों को माबूद बनाते हो? मैं तमुह और तमुहारी क़ौम को स्पष्ट गुमराही म देखता हूँ।'	وَاِذْ قَالَ اِبْرٰهِيْمُ لِاَبِيْهِ اٰزَرَ اَتَتَّخِذُ اَصْنَامًا اٰلِهَةً اِنِّيْٓ اَرٰىكَ وَقَوْمَكَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ
75	और इस तरह हमने इब्राहीम को आकाशों और धरती की बादशाही दिखाई, ताकि वह यक़ीन करने वालों म से हो।	وَكَذٰلِكَ نُرِيْٓ اِبْرٰهِيْمَ مَلَكُوْتَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَلِيَكُوْنَ مِنَ الْمُوْقِنِيْنَ
76	जब रात ने उसे ढक लिया, तो उसने एक तारा देखा और कहा, 'यही मेरा रब ह।' लेकिन जब वह डूब गया, तो उसने कहा, 'मुझे डूबने वाले पसंद नहीं।'	فَلَمَّا جَنَّ عَلَيْهِ الَّيْلُ رَاٰ كَوْكَبًا قَالَ هٰذَا رَبِّيْ فَلَمَّآ اَفَلَ قَالَ لَآ اُحِبُّ الْاٰفِلِيْنَ

77	फिर जब उसने चाँद को चमकते देखा, तो कहा, 'यही मेरा रब है' लेकिन जब वह डूब गया, तो उसने कहा, 'अगर मेरा रब मुझे हिदायत न दे, तो मैं ज़रूर गुमराह लोगों में शामिल हो जाऊँगा।'	فَلَمَّا رَاَ الْقَمَرَ بَازِغًا قَالَ هٰذَا رَبِّيْ فَلَمَّآ اَفَلَ قَالَ لَئِنْ لَّمْ يَهْدِنِيْ رَبِّيْ لَاَكُوْنَنَّ مِنَ الْقَوْمِ الضَّآلِّيْنَ
78	फिर जब उसने सूरज को चमकते देखा, तो कहा, 'यही मेरा रब है, यह तो सबसे बड़ा है' लेकिन जब वह डूब गया, तो उसने कहा, 'ऐ मेरी क़ौम! मैं उससे बेरी हूँ जो तुम साझी ठहराते हो।'	فَلَمَّا رَاَ الشَّمْسَ بَازِغَةً قَالَ هٰذَا رَبِّيْ هٰذَآ اَكْبَرُ فَلَمَّآ اَفَلَتْ قَالَ يٰقَوْمِ اِنِّيْ بَرِيْٓءٌ مِّمَّا تُشْرِكُوْنَ
79	मैंने अपना चेहरा उस (अल्लाह) की ओर कर लिया जिसने आकाश और धरती को बनाया, पूरी तरह सर झुकाकर (सच्ची) दीन पर, और मैं मुशरिकों में से नहीं हूँ	اِنِّيْ وَجَّهْتُ وَجْهِيَ لِلَّذِيْ فَطَرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ حَنِيْفًا وَّمَآ اَنَا مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ
80	और उसकी क़ौम ने उससे बहस की। उसने (इब्राहीम ने) कहा, 'क्या तुम मुझसे अल्लाह के बारे में बहस करते हो, जबकि उसने मुझे हिदायत दी है? मैं उससे नहीं डरता जिसे तुम (उसके साथ) साझी ठहराते हो, सिवाय इसके कि मेरा रब कुछ चाहे। मेरे रब का इल्म हर चीज़ को घेरे लेता है। क्या तुम नसीहत नहीं लेते?'	وَحَآجَّهٗ قَوْمُهٗ قَالَ اَتُحَآجُّوْٓنِّيْ فِي اللّٰهِ وَقَدْ هَدٰىنِ وَلَآ اَخَافُ مَا تُشْرِكُوْنَ بِهٖٓ اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ رَبِّيْ شَيْـًٔا وَسِعَ رَبِّيْ كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا اَفَلَا تَتَذَكَّرُوْنَ
81	और मैं उससे कैसे डरूँ जिसे तुम (अल्लाह के साथ) साझी ठहराते हो, जबकि तुम उससे नहीं डरते जिसके लिए अल्लाह ने तुम्हारे पास कोई दलील नहीं उतारी कि उसे साझी ठहराया जाए। तो दोनों में से कौन सी जमात ज़्यादा हक़दार है अमन की, अगर तुम जानते हो?'	وَكَيْفَ اَخَافُ مَآ اَشْرَكْتُمْ وَلَا تَخَافُوْنَ اَنَّكُمْ اَشْرَكْتُمْ بِاللّٰهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهٖ عَلَيْكُمْ سُلْطٰنًا فَاَيُّ الْفَرِيْقَيْنِ اَحَقُّ بِالْاَمْنِ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ
82	जो लोग ईमान लाए और अपने ईमान को शिर्क के साथ नहीं मिलाया, वही लोग हैं जो अमन पाते हैं और वही हिदायत पाने वाले हैं	اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَلَمْ يَلْبِسُوْٓا اِيْمَانَهُمْ بِظُلْمٍ اُولٰٓئِكَ لَهُمُ الْاَمْنُ وَهُمْ مُّهْتَدُوْنَ
83	और यही वह दलील है जो हमने इब्राहीम को उसकी क़ौम के सामने दी। हम जिसे चाहते हैं, उसका दरजा बुलंद करते हैं। निश्चय ही, तुम्हारा रब महाबुद्धिमान, सब कुछ जानने वाला है	وَتِلْكَ حُجَّتُنَآ اٰتَيْنٰهَآ اِبْرٰهِيْمَ عَلٰى قَوْمِهٖ نَرْفَعُ دَرَجٰتٍ مَّنْ نَّشَآءُ اِنَّ رَبَّكَ حَكِيْمٌ عَلِيْمٌ
84	और हमने उसे (इब्राहीम को) इसहाक़ और याक़ूब दिए। सबको हमने हिदायत दी; और उससे पहले हमने नूह को हिदायत दी, और उसकी संतान में से दाऊद, सुलैमान, अय्यूब, यूसुफ़, मूसा और हारून को। और इस तरह हम नेकी करने वालों को बदला देते हैं	وَوَهَبْنَا لَهٗٓ اِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ كُلًّا هَدَيْنَا وَنُوْحًا هَدَيْنَا مِنْ قَبْلُ وَمِنْ ذُرِّيَّتِهٖ دَاوٗدَ وَسُلَيْمٰنَ وَاَيُّوْبَ وَيُوْسُفَ وَمُوْسٰى وَهٰرُوْنَ وَكَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ
85	और ज़कारिया, यहया, ईसा और इल्यास को। ये सब सालेह लोगों में से थे।	وَزَكَرِيَّا وَيَحْيٰى وَعِيْسٰى وَاِلْيَاسَ كُلٌّ مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ
86	और इस्माइल, अल्यासा, यूनुस और लूत को। और हर एक को हमने उसकी क़ौम पर बरतरी दी।	وَاِسْمٰعِيْلَ وَالْيَسَعَ وَيُوْنُسَ وَلُوْطًا وَكُلًّا فَضَّلْنَا عَلَى الْعٰلَمِيْنَ

وَمِنْ اٰبَاۤىِٕهِمْ وَذُرِّيّٰتِهِمْ وَاِخْوَانِهِمْ وَاجْتَبَيْنٰهُمْ وَهَدَيْنٰهُمْ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ	और उनक॓ बाप-दादा, उनकी संतान और उनक॓ भाइयों म॓स॓ (कछु को)। हमन॓ उनह॑ (नबी और रसूल क॓लिए) चना और उनह॑ सीध॓रास्त॓की हदिायत दी।	**87**
ذٰلِكَ هُدَى اللّٰهِ يَهْدِيْ بِهٖ مَنْ يَّشَاۤءُ مِنْ عِبَادِهٖ وَلَوْ اَشْرَكُوْا لَحَبِطَ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ	यही अल्लाह की हदिायत ह॑, जसिक॓ज़रि वह अपन॓ बन्दों म॑स॓ जसि॓ चाहता ह॑, हदिायत दता॓ ह॑। अगर व॓ शरि़क करत॓, तो उनक॓ सार॓ कि॓ए-धर॓ अमल बकेार हो जात॓।	**88**
اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحُكْمَ وَالنُّبُوَّةَ فَاِنْ يَّكْفُرْ بِهَا هٰٓؤُلَاۤءِ فَقَدْ وَكَّلْنَا بِهَا قَوْمًا لَّيْسُوْا بِهَا بِكٰفِرِيْنَ	यही व॓ लोग ह॑ जनिह॑ हमन॓ कताब, हकिमत और नबुव्वत दी। अगर य॓ (कुरैश) इस॓ ठकुरात॓ ह॑, तो हम इस॓ उस कौ़म को सौप दगे॓ जो इस॓ नहीं ठकुराएगी।	**89**
اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ هَدَى اللّٰهُ فَبِهُدٰىهُمُ اقْتَدِهْ قُلْ لَّآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْرًا اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٰى لِلْعٰلَمِيْنَ	य॓व॓ (नबी) ह॑ जनिह॑ अल्लाह न॓ हदिायत दी, तो तमु उनकी हदिायत का अनसुरण करो। कहो (महुम्मद), 'म॑इसक॓ (कुरआन क॓) लिए तमुस॓ कोई बदला नहीं माँगता।' यह तो बस सार॓ जहानों क॓ लिए एक नसीहत ह॑।	**90**
وَمَا قَدَرُوا اللّٰهَ حَقَّ قَدْرِهٖٓ اِذْ قَالُوْا مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ عَلٰى بَشَرٍ مِّنْ شَيْءٍ قُلْ مَنْ اَنْزَلَ الْكِتٰبَ الَّذِيْ جَاۤءَ بِهٖ مُوْسٰى نُوْرًا وَّهُدًى لِّلنَّاسِ تَجْعَلُوْنَهٗ قَرَاطِيْسَ تُبْدُوْنَهَا وَتُخْفُوْنَ كَثِيْرًا وَعُلِّمْتُمْ مَّا لَمْ تَعْلَمُوْٓا اَنْتُمْ وَلَآ اٰبَاۤؤُكُمْ قُلِ اللّٰهُ ثُمَّ ذَرْهُمْ فِيْ خَوْضِهِمْ يَلْعَبُوْنَ	और उनहों॓न अल्लाह का सही सम्मान नहीं कयिा जब उनहों॓न॓ कहा, 'अल्लाह न॓ कसिी इंसान पर कछु भी नहीं उतारा।' कहो (महुम्मद), 'वह कताब (तौरात) कसिन॓ उतारी जो मूसा लकेर आया, जो लोगों क॓ लिए नूर और हदिायत थी, जसि॓ तमु कागज़ क॓ टकुड़ों म॓ बाटँ दते॓ हो, कछु दखिात॓ हो और बहतु कछु छपात॓ हो, जबकि तमुह॑ वह सखिाया गया जो न तमु जानत॓ थ॓ और न तमुहार॓ बाप-दादा।' कहो, 'अल्लाह न॓ (उतारा), फरि उनह॑ उनकी गमुराही म॓ खलेन॓ दो।'	**91**
وَهٰذَا كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ مُبٰرَكٌ مُّصَدِّقُ الَّذِيْ بَيْنَ يَدَيْهِ وَلِتُنْذِرَ اُمَّ الْقُرٰى وَمَنْ حَوْلَهَا وَالَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ وَهُمْ عَلٰى صَلَاتِهِمْ يُحَافِظُوْنَ	और यह (कुरआन) वह कताब ह॑ जो हमन॓ बरकत क॓ साथ उतारी, जो पहल॓ की कतिाबों की तसदीक़ करती ह॑, ताकि तमु (महुम्मद) उम्मलु कुरा (मक्का) और इसक॓ आसपास क॓ लोगों को चतेावनी दो। जो लोग आख़रित पर ईमान लात॓ ह॑, व॓ इस पर ईमान लात॓ ह॑, और व॓ अपनी नमाज़ों की हफ़ाज़त करत॓ ह॑।	**92**
وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ قَالَ اُوْحِيَ اِلَيَّ وَلَمْ يُوْحَ اِلَيْهِ شَيْءٌ وَّمَنْ قَالَ سَاُنْزِلُ مِثْلَ مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ وَلَوْ تَرٰٓى اِذِ الظّٰلِمُوْنَ فِيْ غَمَرٰتِ الْمَوْتِ وَالْمَلٰٓئِكَةُ بَاسِطُوْٓا اَيْدِيْهِمْ اَخْرِجُوْٓا اَنْفُسَكُمْ اَلْيَوْمَ تُجْزَوْنَ عَذَابَ الْهُوْنِ بِمَا كُنْتُمْ تَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ غَيْرَ الْحَقِّ وَكُنْتُمْ عَنْ اٰيٰتِهٖ تَسْتَكْبِرُوْنَ	और उससे ज़्यादा ज़ालमि कौन हो सकता ह॑ जो अल्लाह क॓ ख़लिाफ़ झठू गढ॓, या कह॓, 'मझु पर वह्य की गई,' जबकि उस पर कछु भी वह्य नहीं की गई, और जो कह॓, 'म॑ वैसा ही उतारूँगा जसैा अल्लाह न॓ उतारा।' (कतिना भयानक होगा) अगर तमु उन ज़ालमिों को उस वक़्त दखेो जब व॓ मौत की सख़्ती म॑ होंग॓, और फ़रि़श्त॓ उनक॓ चहेरों और पीठ पर मार रह॓ होंग॓, (कहत॓ होंग॓), 'अपनी जान नकिालो।' आज तमुह॑ उस अपमानजनक अज़ाब स॓ सजा दी जाएगी, क्योंकि तमु अल्लाह क॓ ख़लिाफ़ ग़लत बात॑ कहत॓ थ॓ और उसकी आयतों क॓ प्रति घमंड करत॓ थ॓।	**93**

وَلَقَدْ جِئْتُمُوْنَا فُرَادٰى كَمَا خَلَقْنٰكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍ وَّتَرَكْتُمْ مَّا خَوَّلْنٰكُمْ وَرَاۤءَ ظُهُوْرِكُمْ وَمَا نَرٰى مَعَكُمْ شُفَعَاۤءَكُمُ الَّذِيْنَ زَعَمْتُمْ اَنَّهُمْ فِيْكُمْ شُرَكٰٓؤُا لَقَدْ تَّقَطَّعَ بَيْنَكُمْ وَضَلَّ عَنْكُمْ مَّا كُنْتُمْ تَزْعُمُوْنَ	और तुम हमारे पास अकेले-अकेले आए, जैसे हमने तुम्हें पहले बनाया था, और जो कुछ हमने तुम्हें दिया था, उसे तुमने पीछे छोड़ दिया। हम तुम्हारे साथ उन सिफ़ारिशियों को नहीं देखते जिन्हें तुम अल्लाह का साझीदार मानते थे। निश्चय ही, तुम्हारे बीच का रिश्ता टूट गया, और जो कुछ तुम मानते थे, वह तुमसे ग़ायब हो गया।	**94**
اِنَّ اللّٰهَ فَالِقُ الْحَبِّ وَالنَّوٰى يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَمُخْرِجُ الْمَيِّتِ مِنَ الْحَيِّ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ فَاَنّٰى تُؤْفَكُوْنَ	निश्चय ही, अल्लाह ही अनाज और गुठली को उगाता है। वह ज़िंदा को मुर्दा से निकालता है और मुर्दा को ज़िंदा से। यही अल्लाह है, तो तुम कहाँ भटक रहे हो?	**95**
فَالِقُ الْاِصْبَاحِ وَجَعَلَ الَّيْلَ سَكَنًا وَّالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ حُسْبَانًا ذٰلِكَ تَقْدِيْرُ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ	वह सुबह को उजाला करता है और रात को सुकून के लिए बनाता है, और सूरज और चाँद को हिसाब के लिए। यह उस अल्लाह का फ़ैसला है जो महाशक्तिशाली, सब कुछ जानने वाला है।	**96**
وَهُوَ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ النُّجُوْمَ لِتَهْتَدُوْا بِهَا فِيْ ظُلُمٰتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ قَدْ فَصَّلْنَا الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ	और वही है जिसने तुम्हारे लिए तारे बनाए, ताकि तुम उनसे धरती और समुद्र के अँधेरों में रास्ता दिखाने वाला बनाओ। हमने अपनी निशानियों को उन लोगों के लिए विस्तार से बयान किया जो जानते हैं।	**97**
وَهُوَ الَّذِيْٓ اَنْشَاَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ فَمُسْتَقَرٌّ وَّمُسْتَوْدَعٌ قَدْ فَصَّلْنَا الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّفْقَهُوْنَ	और वही है जिसने तुम्हें एक जान (आदम) से बनाया, तो तुम्हारे लिए ठहरने की जगह और रखने की जगह है। हमने अपनी निशानियों को उन लोगों के लिए विस्तार से बयान किया जो समझते हैं।	**98**
وَهُوَ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَاۤءِ مَاۤءً فَاَخْرَجْنَا بِهٖ نَبَاتَ كُلِّ شَيْءٍ فَاَخْرَجْنَا مِنْهُ خَضِرًا نُّخْرِجُ مِنْهُ حَبًّا مُّتَرَاكِبًا وَمِنَ النَّخْلِ مِنْ طَلْعِهَا قِنْوَانٌ دَانِيَةٌ وَّجَنّٰتٍ مِّنْ اَعْنَابٍ وَّالزَّيْتُوْنَ وَالرُّمَّانَ مُشْتَبِهًا وَّغَيْرَ مُتَشَابِهٍ اُنْظُرُوْٓا اِلٰى ثَمَرِهٖٓ اِذَآ اَثْمَرَ وَيَنْعِهٖ اِنَّ فِيْ ذٰلِكُمْ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ	और वही है जिसने आकाश से पानी उतारा, फिर हमने उसके ज़रिए हर तरह की वनस्पति उगाई, फिर हमने उससे हरी-भरी शाखाएँ निकालीं, जिनसे हमने बहुत सारे दाने निकाले; और खजूर के गुच्छों से लटकती डालियाँ, और अंगूर के बाग, और ज़ैतून और अनार, जो शक्ल और रंग में एक जैसे और अलग-अलग हैं। इसके फल को देखो जब वह फलता है और पकता है। निश्चय ही, इसमें उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो ईमान लाते हैं।	**99**
وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ شُرَكَاۤءَ الْجِنَّ وَخَلَقَهُمْ وَخَرَقُوْا لَهٗ بَنِيْنَ وَبَنٰتٍۢ بِغَيْرِ عِلْمٍ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يَصِفُوْنَ	और उन्होंने (मुशरिकों ने) जिनों को अल्लाह का साझीदार बनाया, हालाँकि उसी ने उन्हें बनाया, और बिना इल्म के (कहा), 'अल्लाह के बेटे और बेटियाँ हैं।' अल्लाह महान और उससे ऊँचा है जो वे बयान करते हैं।	**100**
بَدِيْعُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ اَنّٰى يَكُوْنُ لَهٗ وَلَدٌ وَّلَمْ تَكُنْ لَّهٗ صَاحِبَةٌ وَخَلَقَ كُلَّ شَيْءٍ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ	वह (अल्लाह) आकाश और धरती का रचयिता है। उसके लिए संतान कैसे हो सकती है, जबकि उसकी कोई पत्नी नहीं। उसने हर चीज़ को बनाया; और वह हर चीज़ को जानता है।	**101**

102	यही अल्लाह, तुम्हारा रब है; उसके सिवा कोई माबूद नहीं; हर चीज़ का रचयिता, तो उसी की इबादत करो; और वही हर चीज़ का रखवाला है।	ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ فَاعْبُدُوْهُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ وَّكِيْلٌ
103	वह नज़रों से नहीं देखा जा सकता, जबकि वह हर नज़र को देखता है, और वह महा सूक्ष्मज्ञ, महा जागरूक है।	لَا تُدْرِكُهُ الْاَبْصَارُ وَهُوَ يُدْرِكُ الْاَبْصَارَ وَهُوَ اللَّطِيْفُ الْخَبِيْرُ
104	निश्चय ही, तुम्हारे रब की ओर से स्पष्ट दलीलें आ चुकी हैं। जो कोई इसे देखेगा, वह अपने लिए (फ़ायदा) करेगा; और जो कोई अंधा हो जाएगा, वह अपने नुक़सान के लिए। और मैं (मुहम्मद) तुम्हारा रखवाला नहीं हूँ।	قَدْ جَاءَكُمْ بَصَاۤئِرُ مِنْ رَّبِّكُمْ فَمَنْ اَبْصَرَ فَلِنَفْسِهٖ وَمَنْ عَمِيَ فَعَلَيْهَا وَمَآ اَنَا عَلَيْكُمْ بِحَفِيْظٍ
105	और इस तरह हम अपनी आयतों को बार-बार बयान करते हैं ताकि मुशरिक कहें, 'तुमने इसे (अहल-ए-किताब से) सीखा है,' और ताकि हम इसे उन लोगों के लिए साफ़ करें जो जानते हैं।	وَكَذٰلِكَ نُصَرِّفُ الْاٰيٰتِ وَلِيَقُوْلُوْا دَرَسْتَ وَلِنُبَيِّنَهٗ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ
106	जो कुछ तुम्हारे रब ने तुम्हारे लिए वह्य किया है, उसका अनुसरण करो (मुहम्मद); उसके सिवा कोई माबूद नहीं; और मुशरिकों से मुँह फेर लो।	اِتَّبِعْ مَآ اُوْحِيَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ وَاَعْرِضْ عَنِ الْمُشْرِكِيْنَ
107	और अगर अल्लाह चाहता, तो वे शिर्क न करते। और हमने तुम्हें उनका रखवाला नहीं बनाया; और न तुम उनके ज़िम्मेदार हो।	وَلَوْ شَاۤءَ اللّٰهُ مَآ اَشْرَكُوْا وَمَا جَعَلْنٰكَ عَلَيْهِمْ حَفِيْظًا وَمَآ اَنْتَ عَلَيْهِمْ بِوَكِيْلٍ
108	और उन माबूदों को गाली न दो जिन्हें वे अल्लाह के सिवा पुकारते हैं, वरना वे नादानी में अल्लाह को गाली देंगे बिना किसी इल्म के। इस तरह हमने हर क़ौम के लिए उनके कामों को सुहाना बना दिया। फिर उनके रब की ओर उनका लौटना है, फिर वह उन्हें बताएगा जो वे करते थे।	وَلَا تَسُبُّوا الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ فَيَسُبُّوا اللّٰهَ عَدْوًاۢ بِغَيْرِ عِلْمٍ كَذٰلِكَ زَيَّنَّا لِكُلِّ اُمَّةٍ عَمَلَهُمْ ثُمَّ اِلٰى رَبِّهِمْ مَّرْجِعُهُمْ فَيُنَبِّئُهُمْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ
109	और वे अल्लाह की क़सम खाते हैं पूरी गंभीरता से, कि अगर उनके पास कोई निशानी आए, तो वे उस पर ईमान लाएँगे। कहो, 'निशानियाँ तो बस अल्लाह के पास हैं।' और तुम्हें क्या मालूम, कि अगर निशानियाँ आ भी जाएँ, तो वे ईमान नहीं लाएँगे।	وَاَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ لَئِنْ جَاۤءَتْهُمْ اٰيَةٌ لَّيُؤْمِنُنَّ بِهَا قُلْ اِنَّمَا الْاٰيٰتُ عِنْدَ اللّٰهِ وَمَا يُشْعِرُكُمْ اَنَّهَآ اِذَا جَاۤءَتْ لَا يُؤْمِنُوْنَ
110	और हम उनके दिलों और नज़रों को उलट देते हैं जैसे पहले वे इस पर ईमान नहीं लाए, और हम उन्हें उनकी गुमराही में भटकने देते हैं।	وَنُقَلِّبُ اَفْـِٕدَتَهُمْ وَاَبْصَارَهُمْ كَمَا لَمْ يُؤْمِنُوْا بِهٖٓ اَوَّلَ مَرَّةٍ وَّنَذَرُهُمْ فِيْ طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ
111	और अगर हम उनके पास फ़रिश्ते उतार दें, और मुर्दे उनसे बात करें, और हम उनके सामने हर चीज़ इकट्ठा कर दें, तब भी वे ईमान नहीं लाएँगे, सिवाय इसके कि अल्लाह चाहे। लेकिन उनमें से ज़्यादातर नहीं जानते।	وَلَوْ اَنَّنَا نَزَّلْنَآ اِلَيْهِمُ الْمَلٰۤئِكَةَ وَكَلَّمَهُمُ الْمَوْتٰى وَحَشَرْنَا عَلَيْهِمْ كُلَّ شَيْءٍ قُبُلًا مَّا كَانُوْا لِيُؤْمِنُوْٓا اِلَّآ اَنْ يَّشَاۤءَ اللّٰهُ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ يَجْهَلُوْنَ

وَكَذٰلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِيٍّ عَدُوًّا شَيٰطِيْنَ الْاِنْسِ وَالْجِنِّ يُوْحِيْ بَعْضُهُمْ اِلٰى بَعْضٍ زُخْرُفَ الْقَوْلِ غُرُوْرًا وَلَوْ شَاۤءَ رَبُّكَ مَا فَعَلُوْهُ فَذَرْهُمْ وَمَا يَفْتَرُوْنَ	और इस तरह हमने हर नबी के लिए दश्मन बनाए, इंसानों और जिन्नों में से शैतान, जो एक-दूसरे को धोखे की सुंदर बात सिखाते हैं और अगर तुम्हारा रब चाहता, तो वे ऐसा न करते, तो उन्हें छोड़ दो और जो कुछ वे गढ़ते हैं	**112**
وَلِتَصْغٰٓى اِلَيْهِ اَفْـِٕدَةُ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ وَلِيَرْضَوْهُ وَلِيَقْتَرِفُوْا مَا هُمْ مُّقْتَرِفُوْنَ	और ताकि उन लोगों के दिल जो आख़िरत पर ईमान नहीं लाते, उस (धोखे) की ओर झुक जाएँ और वे उसे पसंद करें और वही करें जो वे करते हैं	**113**
اَفَغَيْرَ اللّٰهِ اَبْتَغِيْ حَكَمًا وَّهُوَ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ اِلَيْكُمُ الْكِتٰبَ مُفَصَّلًا وَالَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَعْلَمُوْنَ اَنَّهٗ مُنَزَّلٌ مِّنْ رَّبِّكَ بِالْحَقِّ فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِيْنَ	क्या मैं अल्लाह के सिवा किसी और को हाकिम बनाऊँ, जबकि उसी ने तुम्हारे लिए किताब (क़ुरआन) को विस्तार से उतारा है? जिन लोगों को हमने किताब दी, वे जानते हैं कि यह तुम्हारे रब की ओर से हक़ के साथ उतारा गया है तो तुम शक करने वालों में से न बनो।	**114**
وَتَمَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ صِدْقًا وَّعَدْلًا لَا مُبَدِّلَ لِكَلِمٰتِهٖ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ	और तुम्हारे रब का फ़रमान (क़ुरआन) सत्य और इंसाफ़ के साथ पूरा हो चुका है उसके फ़रमान को कोई नहीं बदल सकता। और वह सब कुछ सुनने वाला, सब कुछ जानने वाला है	**115**
وَاِنْ تُطِعْ اَكْثَرَ مَنْ فِى الْاَرْضِ يُضِلُّوْكَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اِنْ يَّتَّبِعُوْنَ اِلَّا الظَّنَّ وَاِنْ هُمْ اِلَّا يَخْرُصُوْنَ	और अगर तुम धरती के ज़्यादातर लोगों की बात मानो, तो वे तुम्हें अल्लाह के रास्ते से भटका देंगे। वे तो बस अंदाज़े का अनुसरण करते हैं और बस झूठ गढ़ते हैं	**116**
اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ مَنْ يَّضِلُّ عَنْ سَبِيْلِهٖ وَهُوَ اَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِيْنَ	निश्चय ही, तुम्हारा रब वही ज़्यादा जानता है कि कौन उसके रास्ते से भटकता है, और वही हिदायत पाने वालों को ज़्यादा जानता है	**117**
فَكُلُوْا مِمَّا ذُكِرَ اسْمُ اللّٰهِ عَلَيْهِ اِنْ كُنْتُمْ بِاٰيٰتِهٖ مُؤْمِنِيْنَ	तो उस (मांस) को खाओ जिस पर (ज़बह के वक़्त) अल्लाह का नाम लिया गया, अगर तुम उसकी आयतों पर ईमान लाते हो।	**118**
وَمَا لَكُمْ اَلَّا تَاْكُلُوْا مِمَّا ذُكِرَ اسْمُ اللّٰهِ عَلَيْهِ وَقَدْ فَصَّلَ لَكُمْ مَّا حَرَّمَ عَلَيْكُمْ اِلَّا مَا اضْطُرِرْتُمْ اِلَيْهِ وَاِنَّ كَثِيْرًا لَّيُضِلُّوْنَ بِاَهْوَاۤىِٕهِمْ بِغَيْرِ عِلْمٍ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ بِالْمُعْتَدِيْنَ	और तुम उस (मांस) को क्यों न खाओ जिस पर (ज़बह के वक़्त) अल्लाह का नाम लिया गया, जबकि उसने तुम्हारे लिए साफ़ कर दिया है कि तुम्हारे लिए क्या हराम किया गया है, सिवाय इसके कि तुम मजबूरी में हो। और निश्चय ही, बहुत से लोग अपनी ख़्वाहिशों के कारण बिना इल्म के (दूसरों को) गुमराह करते हैं तुम्हारा रब उन लोगों को ज़्यादा जानता है जो हद से गुज़रते हैं	**119**
وَذَرُوْا ظَاهِرَ الْاِثْمِ وَبَاطِنَهٗ اِنَّ الَّذِيْنَ يَكْسِبُوْنَ الْاِثْمَ سَيُجْزَوْنَ بِمَا كَانُوْا يَقْتَرِفُوْنَ	और ज़ाहिर और छिपे हुए गुनाह को छोड़ दो। निश्चय ही, जो लोग गुनाह करते हैं, उन्हें जल्द ही उनके किए का बदला दिया जाएगा।	**120**

وَلَا تَأْكُلُوْا مِمَّا لَمْ يُذْكَرِ اسْمُ اللّٰهِ عَلَيْهِ وَاِنَّه لَفِسْقٌ وَاِنَّ الشَّيٰطِيْنَ لَيُوْحُوْنَ اِلٰٓى اَوْلِيَآئِهِمْ لِيُجَادِلُوْكُمْ وَاِنْ اَطَعْتُمُوْهُمْ اِنَّكُمْ لَمُشْرِكُوْنَ	**121**	और उस (मांस) को न खाओ जिस पर (ज़बह क॓वक़्त) अल्लाह का नाम नहीं लिया गया, यह तो निश्चय ही फ़िस्क़ (पाप) है। निश्चय ही, शैतान अपन॓दोस्तों को सिखात॓ह॓कि व॓तुमस॓ बहस करो और अगर तुम उनकी बात मानो, तो तुम मुशरिक हो जाओगे।
اَوَمَنْ كَانَ مَيْتًا فَاَحْيَيْنٰهُ وَجَعَلْنَا لَه نُوْرًا يَّمْشِيْ بِه فِى النَّاسِ كَمَنْ مَّثَلُه فِى الظُّلُمٰتِ لَيْسَ بِخَارِجٍ مِّنْهَا كَذٰلِكَ زُيِّنَ لِلْكٰفِرِيْنَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ	**122**	क्या वह शख़्स जो मर चुका था, फिर हमन॓उस॓ज़िंदगी दी और उस॓एक नूर दिया जिसक॓साथ वह लोगों क॓बीच चलता है, उस शख़्स जैसा ह॓जो अंधेरों म॓ह॓और उससे॓निकल नहीं सकता? इस तरह काफ़िरों क॓लिए उनक॓काम सह्मान॓बनाए गए हैं।
وَكَذٰلِكَ جَعَلْنَا فِىْ كُلِّ قَرْيَةٍ اَكٰبِرَ مُجْرِمِيْهَا لِيَمْكُرُوْا فِيْهَا وَمَا يَمْكُرُوْنَ اِلَّا بِاَنْفُسِهِمْ وَمَا يَشْعُرُوْنَ	**123**	और इस तरह हमन॓हर बस्ती म॓बड़॓-बड़॓ज़ालिम लोग बनाए ताकि व॓वहा॓धोखा दो लेकिन व॓बस अपन॓आप को धोखा देते॓ ह॓और उन॓ह॓इसका अहसास नहीं है।
وَاِذَا جَآءَتْهُمْ اٰيَةٌ قَالُوْا لَنْ نُّؤْمِنَ حَتّٰى نُؤْتٰى مِثْلَ مَآ اُوْتِىَ رُسُلُ اللّٰهِ اَللّٰهُ اَعْلَمُ حَيْثُ يَجْعَلُ رِسٰلَتَه سَيُصِيْبُ الَّذِيْنَ اَجْرَمُوْا صَغَارٌ عِنْدَ اللّٰهِ وَعَذَابٌ شَدِيْدٌ بِمَا كَانُوْا يَمْكُرُوْنَ	**124**	और जब उनक॓पास कोई आयत आती ह॓, तो व॓कहत॓ह॓, 'हम ईमान नहीं लाएँगे॓जब तक हम॓वैसा ही न दिया जाए जैसा अल्लाह क॓रसूलों को दिया गया।' अल्लाह ज़्यादा जानता ह॓कि अपनी रिसालत कहा॓रखनी है। जो लोग पाप करत॓ह॓, उन॓ह॓ अल्लाह क॓पास ज़िल्लत और उनक॓धोख॓की वजह स॓सख़्त अज़ाब मिलेगा।
فَمَنْ يُّرِدِ اللّٰهُ اَنْ يَّهْدِيَه يَشْرَحْ صَدْرَه لِلْاِسْلَامِ وَمَنْ يُّرِدْ اَنْ يُّضِلَّه يَجْعَلْ صَدْرَه ضَيِّقًا حَرَجًا كَاَنَّمَا يَصَّعَّدُ فِى السَّمَآءِ كَذٰلِكَ يَجْعَلُ اللّٰهُ الرِّجْسَ عَلَى الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ	**125**	जिस॓अल्लाह हिदायत देना चाहता ह॓, वह उसक॓सीन॓को इस्लाम क॓लिए खोल देता है और जिस॓वह गुमराह करना चाहता ह॓, वह उसक॓सीन॓को तंग और सख़्त कर देता ह॓, जैसे॓ वह आकाश पर चढ़ रहा हो। इस तरह अल्लाह उन लोगों पर अज़ाब डालता ह॓जो ईमान नहीं लात॓।
وَهٰذَا صِرَاطُ رَبِّكَ مُسْتَقِيْمًا قَدْ فَصَّلْنَا الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّذَّكَّرُوْنَ	**126**	और यही तुम्हार॓रब का सीधा रास्ता है। हमन॓अपनी आयतों को उन लोगों क॓लिए विस्तार स॓बयान किया जो नसीहत लते॓ हैं।
لَهُمْ دَارُ السَّلٰمِ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَهُوَ وَلِيُّهُمْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ	**127**	उनक॓लिए उनक॓रब क॓पास सलामती का घर (जन्नत) है और वह उनका दोस्त ह॓उनक॓नेक अमलों की वजह स॓।
وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ جَمِيْعًا يٰمَعْشَرَ الْجِنِّ قَدِ اسْتَكْثَرْتُمْ مِّنَ الْاِنْسِ وَقَالَ اَوْلِيٰٓؤُهُمْ مِّنَ الْاِنْسِ رَبَّنَا اسْتَمْتَعَ بَعْضُنَا بِبَعْضٍ وَّبَلَغْنَآ اَجَلَنَا الَّذِىْٓ اَجَّلْتَ لَنَا قَالَ النَّارُ مَثْوٰىكُمْ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اِلَّا مَا شَآءَ اللّٰهُ اِنَّ رَبَّكَ حَكِيْمٌ عَلِيْمٌ	**128**	और (याद करो) उस दिन को जब वह (अल्लाह) उन॓ह॓सबको इकट्ठा करेगा (और कहेगा), 'ऐ जिन्नों और इंसानों की जमात! क्या तुम्हार॓पास तुम म॓स॓रसूल नहीं आए, जो तुम॓ह॓मेरी आयत॓सुनात॓थे॓और तुम॓ह॓इस दिन की मुलाक़ात की चेतावनी देते॓थे?' व॓जवाब देंगे, '(हाँ), हम अपन॓ख़िलाफ़ गवाही देते हैं।' लेकिन दुनिया की ज़िंदगी न॓उन॓ह॓धोखा दिया और उन्होंने॓ अपन॓ख़िलाफ़ गवाही दी कि व॓काफ़िर थे।

129	और इस तरह हमन`कछु ज़ालिमों को उनक`कर्इ की वजह स` एक-दूसर`का साथी बनाया।	وَكَذٰلِكَ نُوَلِّيْ بَعْضَ الظّٰلِمِيْنَ بَعْضًا بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ
130	ऐ जिन्नों और इंसानों की जमात! क्या तुम म`स`रसूल नहीं आए, जो तुमह`मरी आयत`सुनात`थ`और तुमह`इस दिन की मुलाक़ात की चेतावनी दते`थ? व`कहगे, '(हाँ, हम अपन`ख़िलाफ़ गवाही दते`हैं' और दुनिया की ज़िंदगी न`उनह`धोखा दिया और उन्होंन`अपन`ख़िलाफ़ गवाही दी कि व`काफ़िर थ।	يٰمَعْشَرَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ اَلَمْ يَأْتِكُمْ رُسُلٌ مِّنْكُمْ يَقُصُّوْنَ عَلَيْكُمْ اٰيٰتِيْ وَيُنْذِرُوْنَكُمْ لِقَاءَ يَوْمِكُمْ هٰذَا قَالُوْا شَهِدْنَا عَلٰٓى اَنْفُسِنَا وَغَرَّتْهُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا وَشَهِدُوْا عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ اَنَّهُمْ كَانُوْا كٰفِرِيْنَ
131	ऐसा इसलिए कि तुमह़ारा रब किसी बस्ती को तबाह नहीं करता जब उसक`लोग अनजान हों।	ذٰلِكَ اَنْ لَّمْ يَكُنْ رَّبُّكَ مُهْلِكَ الْقُرٰى بِظُلْمٍ وَّاَهْلُهَا غٰفِلُوْنَ
132	और हर किसी का एक दरजा ह,ै उनक`कर्इ क`मुताबकि। और तुमह़ारा रब उनक`कामों स`ग़ाफ़िल नहीं ह।ै	وَلِكُلٍّ دَرَجٰتٌ مِّمَّا عَمِلُوْا وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا يَعْمَلُوْنَ
133	और तुमह़ारा रब बनेयाज़ और रहमत वाला ह।ै अगर वह चाह`, तो तुमह`मटिा द`और तुमह़ार`बाद जसि`चाह`, उसकी जगह ल` आए, जसै`उसन`तुमह`दूसरी क़ौम की संतान स`बनाया।	وَرَبُّكَ الْغَنِيُّ ذُو الرَّحْمَةِ اِنْ يَّشَأْ يُذْهِبْكُمْ وَيَسْتَخْلِفْ مِنْ بَعْدِكُمْ مَّا يَشَاءُ كَمَآ اَنْشَاَكُمْ مِّنْ ذُرِّيَّةِ قَوْمٍ اٰخَرِيْنَ
134	निश्चय ही, जो कछु तुमह`वादा किया गया ह,ै वह ज़रू आएगा, और तुम उस`रोक नहीं सकत।	اِنَّ مَا تُوْعَدُوْنَ لَاٰتٍ وَّمَآ اَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ
135	कहो (मुह़म्मद), 'ऐ मरी क़ौम! अपनी जगह पर काम करो, म`भी (अपनी जगह पर) काम करता हूँ, तुम जलद जान लोग`कि आख़िरत म`सबस`अच्छा घर किसका होगा। निश्चय ही, ज़ालिम लोग कामयाब नहीं होंगे।'	قُلْ يٰقَوْمِ اعْمَلُوْا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ اِنِّيْ عَامِلٌ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ مَنْ تَكُوْنُ لَهٗ عَاقِبَةُ الدَّارِ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ
136	और उन्होंन`फसलों और जानवरों का कछु हसि़्सा अल्लाह क`लिए रखा और अपन`ख़याल स`कहा, 'यह अल्लाह क`लिए ह,ै और यह हमार`साझीदारों (मूर्तियों) क`लिए।' लकेनि जो उनक`साझीदारों क`लिए ह,ै वह अल्लाह तक नहीं पहुँचता, और जो अल्लाह क`लिए ह,ै वह उनक`साझीदारों तक पहुँच जाता ह।ै कतिना बुरा ह`उनका फ़सैला।	وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ مِمَّا ذَرَاَ مِنَ الْحَرْثِ وَالْاَنْعَامِ نَصِيْبًا فَقَالُوْا هٰذَا لِلّٰهِ بِزَعْمِهِمْ وَهٰذَا لِشُرَكَآئِنَا فَمَا كَانَ لِشُرَكَآئِهِمْ فَلَا يَصِلُ اِلَى اللّٰهِ وَمَا كَانَ لِلّٰهِ فَهُوَ يَصِلُ اِلٰى شُرَكَآئِهِمْ سَاءَ مَا يَحْكُمُوْنَ
137	और इस तरह उनक`साझीदारों (शैतानों) न`बहुत स`मुश्रिकों क`लिए उनकी औलाद को क़त्ल करना सुह़ाना बना दिया, ताकि उनह`नष्ट कर`और उनकी दीन को गड़बड़ करो और अगर अल्लाह चाहता, तो व`ऐसा न करत। तो उनह`छोड़ दो और जो कछु व`गढ़त`हैं।	وَكَذٰلِكَ زَيَّنَ لِكَثِيْرٍ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ قَتْلَ اَوْلَادِهِمْ شُرَكَآؤُهُمْ لِيُرْدُوْهُمْ وَلِيَلْبِسُوْا عَلَيْهِمْ دِيْنَهُمْ وَلَوْ شَاءَ اللّٰهُ مَا فَعَلُوْهُ فَذَرْهُمْ وَمَا يَفْتَرُوْنَ

وَقَالُوْا هٰذِهٖٓ اَنْعَامٌ وَّحَرْثٌ حِجْرٌ لَّا يَطْعَمُهَآ اِلَّا مَنْ نَّشَاۤءُ بِزَعْمِهِمْ وَاَنْعَامٌ حُرِّمَتْ ظُهُوْرُهَا وَاَنْعَامٌ لَّا يَذْكُرُوْنَ اسْمَ اللّٰهِ عَلَيْهَا افْتِرَاۤءً عَلَيْهِ سَيَجْزِيْهِمْ بِمَا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ	और उनहोंन (अपन ख़याल स) कहा, 'य जानवर और फसल मना ह, इनह कोई नहीं खा सकता सिवाय उनक जिनह हम चाहत ह' और कछ जानवरों को सवारी क लिए मना कयि गया, और कछ जानवरों पर (ज़बह क वकत) अलल़ाह का नाम नहीं लयि जाता, यह अलल़ाह क ख़लिाफ़ झठू गढ़कर। जलद ही वह उनह उनक गढ़ हए का बदला दगे।	**138**
وَقَالُوْا مَا فِيْ بُطُوْنِ هٰذِهِ الْاَنْعَامِ خَالِصَةٌ لِّذُكُوْرِنَا وَمُحَرَّمٌ عَلٰٓى اَزْوَاجِنَا وَاِنْ يَّكُنْ مَّيْتَةً فَهُمْ فِيْهِ شُرَكَاۤءُ سَيَجْزِيْهِمْ وَصْفَهُمْ اِنَّهٗ حَكِيْمٌ عَلِيْمٌ	और उनहोंन कहा, 'इन जानवरों क पटे म जो ह, वह हमार मरदों क लिए ख़ास ह, और हमारी औरतों क लिए हराम ह' और अगर वह (बचचा) मरा हआ पदै हो, तो सब (उस) खा सकत ह' जलद ही अलल़ाह उनह उनक फ़सैलों का बदला दगे। नशि़चय ही, वह महाबद्धिमान, सब कछ जानन वाला ह'	**139**
قَدْ خَسِرَ الَّذِيْنَ قَتَلُوْٓا اَوْلَادَهُمْ سَفَهًا بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّحَرَّمُوْا مَا رَزَقَهُمُ اللّٰهُ افْتِرَاۤءً عَلَى اللّٰهِ قَدْ ضَلُّوْا وَمَا كَانُوْا مُهْتَدِيْنَ	नशि़चय ही, व हार गए जनिहोंन नादानी और बनिा इलम क अपनी औलाद को कतल़ कयि, और जो रजिक़ अलल़ाह न उनह दयि, उस अलल़ाह क ख़लिाफ़ झठू गढ़कर हराम कर लयि। नशि़चय ही, व गमुराह हो गए और हदिायत नहीं पाई।	**140**
وَهُوَ الَّذِيْٓ اَنْشَاَ جَنّٰتٍ مَّعْرُوْشٰتٍ وَّغَيْرَ مَعْرُوْشٰتٍ وَّالنَّخْلَ وَالزَّرْعَ مُخْتَلِفًا اُكُلُهٗ وَالزَّيْتُوْنَ وَالرُّمَّانَ مُتَشَابِهًا وَّغَيْرَ مُتَشَابِهٍ كُلُوْا مِنْ ثَمَرِهٖٓ اِذَآ اَثْمَرَ وَاٰتُوْا حَقَّهٗ يَوْمَ حَصَادِهٖ وَلَا تُسْرِفُوْا اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِيْنَ	और वही ह जसिन बलेों वाली और बनिा बलेों वाली वनसपतयिाँ बनाई, और ख़जूर क पडे, और अलग-अलग सवाद वाली फसल, और ज़तै्तून और अनार, जो शकल़ और रंग म एक जसै और अलग-अलग ह' इसक फल खाओ जब यह फलता ह और इसक हक़ (ज़कात) को इसक कटाई क दनि अदा करो, लकेनि हद स ज़यादा न करो। नशि़चय ही, अलल़ाह हद स गज़ुरन वालों को पसंद नहीं करता।	**141**
وَمِنَ الْاَنْعَامِ حَمُوْلَةً وَّفَرْشًا كُلُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ وَلَا تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ	और जानवरों म स कछ बोझ ढोन क लिए और कछ ज़बह करन क लिए। जो रज़िक़ अलल़ाह न तमुह दयिा, उस खाओ, और शतैान क क़दमों का अनसुरण न करो। नशि़चय ही, वह तमुहारा खलुा दश्मन ह'	**142**
ثَمٰنِيَةَ اَزْوَاجٍ مِنَ الضَّاْنِ اثْنَيْنِ وَمِنَ الْمَعْزِ اثْنَيْنِ قُلْ ءٰۤالذَّكَرَيْنِ حَرَّمَ اَمِ الْاُنْثَيَيْنِ اَمَّا اشْتَمَلَتْ عَلَيْهِ اَرْحَامُ الْاُنْثَيَيْنِ نَبِّـُٔوْنِيْ بِعِلْمٍ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ	आठ जानवर जोड़े-जोड़े म ह; भड़े का एक जोड़ा और बकरी का एक जोड़ा। कहो, 'कया अलल़ाह न दो नर हराम कए या दो मादा, या जो कछ दो मादाओं क पटे म ह? अगर तमु सचच हो, तो मझु इलम क साथ बताओ।'	**143**
وَمِنَ الْاِبِلِ اثْنَيْنِ وَمِنَ الْبَقَرِ اثْنَيْنِ قُلْ ءٰۤالذَّكَرَيْنِ حَرَّمَ اَمِ الْاُنْثَيَيْنِ اَمَّا اشْتَمَلَتْ عَلَيْهِ اَرْحَامُ الْاُنْثَيَيْنِ اَمْ كُنْتُمْ شُهَدَاۤءَ اِذْ وَصّٰىكُمُ اللّٰهُ بِهٰذَا فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا لِّيُضِلَّ النَّاسَ بِغَيْرِ عِلْمٍ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ	और ऊटँ का एक जोड़ा और गाय का एक जोड़ा। कहो, 'कया उसन दो नर हराम कए या दो मादा, या जो कछ दो मादाओं क पटे म ह? कया तमु मौजद्ध थ जब अलल़ाह न तमुह यह हकुम दयिा? उससे ज़यादा ज़ालमि कौन हो सकता ह जो अलल़ाह क ख़लिाफ़ झठू गढ़कर बनिा इलम क लोगों को गमुराह करता ह?' नशि़चय ही, अलल़ाह ज़ालमि लोगों को हदिायत नहीं दता।	**144**

قُلْ لَّآ اَجِدُ فِيْ مَآ اُوْحِيَ اِلَيَّ مُحَرَّمًا عَلٰى طَاعِمٍ يَّطْعَمُهٗٓ اِلَّآ اَنْ يَّكُوْنَ مَيْتَةً اَوْ دَمًا مَّسْفُوْحًا اَوْ لَحْمَ خِنْزِيْرٍ فَاِنَّهٗ رِجْسٌ اَوْ فِسْقًا اُهِلَّ لِغَيْرِ اللّٰهِ بِهٖ فَمَنِ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَّلَا عَادٍ فَاِنَّ رَبَّكَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ	**145**	कहो (मुहम्मद), 'मुझे उसमें जो मुझ पर वह्य किया गया, कुछ भी हराम नहीं मिला जो खाने वाला खाए, सिवाय इसके कि वह मुर्दा (बंगकाई) हो, या बहता हुआ खून, या सुअर का मांस - क्योंकि यह सब नापाक है- या वह जानवर जो (ज़बह के वक़्त) अल्लाह के नाम पर न हो। लेकिन जो कोई मजबूरी में हो, बिना चाहत और हद से गुज़रे, तो निश्चय ही, तुम्हारा रब बड़ा माफ़ करने वाला, बड़ा मेहरबान है।'
وَعَلَى الَّذِيْنَ هَادُوْا حَرَّمْنَا كُلَّ ذِيْ ظُفُرٍ وَمِنَ الْبَقَرِ وَالْغَنَمِ حَرَّمْنَا عَلَيْهِمْ شُحُوْمَهُمَآ اِلَّا مَا حَمَلَتْ ظُهُوْرُهُمَآ اَوِ الْحَوَايَآ اَوْ مَا اخْتَلَطَ بِعَظْمٍ ذٰلِكَ جَزَيْنٰهُمْ بِبَغْيِهِمْ وَاِنَّا لَصٰدِقُوْنَ	**146**	और यहूदियों के लिए हमने हर उस जानवर को हराम कर दिया जिसके खुर हों, और गाय और भेड़ की चरबी को उनके लिए हराम कर दिया, सिवाय इसके जो उनकी पीठ पर हो, या जो उनके पेट में हो, या जो हड्डी के साथ मिली हो। यही सजा हमने उनकी नाफ़रमानी की वजह से दी। और निश्चय ही, हम सच्चे हैं।
فَاِنْ كَذَّبُوْكَ فَقُلْ رَّبُّكُمْ ذُوْ رَحْمَةٍ وَّاسِعَةٍ وَلَا يُرَدُّ بَأْسُهٗ عَنِ الْقَوْمِ الْمُجْرِمِيْنَ	**147**	तो अगर वे तुम्हें झुठलाएँ, तो कहो (मुहम्मद), 'तुम्हारा रब बड़ी रहमत वाला है, और उसका अज़ाब ज़ालिम लोगों से टाला नहीं जा सकता।'
سَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا لَوْ شَاۤءَ اللّٰهُ مَآ اَشْرَكْنَا وَلَآ اٰبَاۤؤُنَا وَلَا حَرَّمْنَا مِنْ شَيْءٍ كَذٰلِكَ كَذَّبَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ حَتّٰى ذَاقُوْا بَأْسَنَا قُلْ هَلْ عِنْدَكُمْ مِّنْ عِلْمٍ فَتُخْرِجُوْهُ لَنَا اِنْ تَتَّبِعُوْنَ اِلَّا الظَّنَّ وَاِنْ اَنْتُمْ اِلَّا تَخْرُصُوْنَ	**148**	मुशरिक लोग कहेंगे, 'अगर अल्लाह चाहता, तो न हम शरिक करते, और न हमारे बाप-दादा, और न हमने कुछ हराम किया होता।' इसी तरह उनसे पहले के लोगों ने (रसूलों को) झुठलाया यहाँ तक कि उन्होंने हमारा अज़ाब चखा। कहो (मुहम्मद), 'क्या तुम्हारे पास कोई इल्म है जो तुम हमें दिखा सको? तुम तो बस अंदाज़ों का अनुसरण करते हो और बस अनुमान लगाते हो।'
قُلْ فَلِلّٰهِ الْحُجَّةُ الْبَالِغَةُ فَلَوْ شَاۤءَ لَهَدٰىكُمْ اَجْمَعِيْنَ	**149**	कहो (मुहम्मद), 'मज़बूत दलील तो बस अल्लाह के पास है। अगर वह चाहता, तो तुम सबको हिदायत दे देता।'
قُلْ هَلُمَّ شُهَدَاۤءَكُمُ الَّذِيْنَ يَشْهَدُوْنَ اَنَّ اللّٰهَ حَرَّمَ هٰذَا فَاِنْ شَهِدُوْا فَلَا تَشْهَدْ مَعَهُمْ وَلَا تَتَّبِعْ اَهْوَاۤءَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَالَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ وَهُمْ بِرَبِّهِمْ يَعْدِلُوْنَ	**150**	कहो (मुहम्मद), 'अपने गवाहों को लाओ जो यह गवाही दें कि अल्लाह ने इसे हराम किया।' अगर वे गवाही दें, तो तुम उनके साथ गवाही न देना। और उन लोगों की ख़्वाहिशों का अनुसरण न करो जो हमारी आयतों को झुठलाते हैं और जो आख़िरत पर ईमान नहीं लाते, और अपने रब के साथ साझी ठहराते हैं।
قُلْ تَعَالَوْا اَتْلُ مَا حَرَّمَ رَبُّكُمْ عَلَيْكُمْ اَلَّا تُشْرِكُوْا بِهٖ شَيْـًٔا وَّبِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا وَلَا تَقْتُلُوْٓا اَوْلَادَكُمْ مِّنْ اِمْلَاقٍ نَحْنُ نَرْزُقُكُمْ وَاِيَّاهُمْ وَلَا تَقْرَبُوا الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ وَلَا تَقْتُلُوا النَّفْسَ الَّتِيْ حَرَّمَ اللّٰهُ اِلَّا بِالْحَقِّ ذٰلِكُمْ وَصّٰىكُمْ بِهٖ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ	**151**	कहो (मुहम्मद), 'आओ, मैं तुम्हें वह सुनाऊँ जो तुम्हारे रब ने तुम्हारे लिए हराम किया। उसके साथ कुछ भी साझी न ठहराओ, माँ-बाप के साथ अच्छा व्यवहार करो, ग़रीबी की वजह से अपनी औलाद को न मारो। हम ही तुम्हें और उन्हें रिज़्क़ देते हैं; ज़ाहिर और छिपी हुई बुराइयों के पास न जाओ, और उस जान को न मारो जिसे अल्लाह ने हराम किया, सिवाय हक़ के। यही वह है जो उसने तुम्हें हुक्म दिया ताकि तुम समझो।'

وَلَا تَقْرَبُوْا مَالَ الْيَتِيْمِ اِلَّا بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ حَتّٰى يَبْلُغَ اَشُدَّه وَاَوْفُوا الْكَيْلَ وَالْمِيْزَانَ بِالْقِسْطِ لَا نُكَلِّفُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا وَاِذَا قُلْتُمْ فَاعْدِلُوْا وَلَوْ كَانَ ذَا قُرْبٰى وَبِعَهْدِ اللّٰهِ اَوْفُوْا ذٰلِكُمْ وَصّٰىكُمْ بِه لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ	और अनाथ की संपत्ति के पास न जाओ, सिवाय इसके कि बहेतर तरीक़े से, जब तक वह अपनी जवानी तक न पहुँचे और नाप और तौल को इंसाफ़ के साथ पूरा करो। हम किसी को उसकी ताक़त से ज़्यादा बोझ नहीं देते। और जब तुम बोलो, तो इंसाफ़ से बोलो, चाहे वह रिश्तेदार ही हो, और अल्लाह के वादे को पूरा करो। यही वह है जो उसने तुम्हें हुक्म दिया ताकि तुम याद रखो।	152
وَاَنَّ هٰذَا صِرَاطِيْ مُسْتَقِيْمًا فَاتَّبِعُوْهُ وَلَا تَتَّبِعُوا السُّبُلَ فَتَفَرَّقَ بِكُمْ عَنْ سَبِيْلِه ذٰلِكُمْ وَصّٰىكُمْ بِه لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ	और निश्चय ही, यही मेरा रास्ता है, जो सीधा है तो इसका अनुसरण करो! और दूसरी राहों का अनुसरण न करो जो तुम्हें उसके रास्ते से भटका दें। यही वह है जो उसने तुम्हें हुक्म दिया ताकि तुम तक़वा अपनाओ।	153
ثُمَّ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ تَمَامًا عَلَى الَّذِيْٓ اَحْسَنَ وَتَفْصِيْلًا لِّكُلِّ شَيْءٍ وَّهُدًى وَّرَحْمَةً لَّعَلَّهُمْ بِلِقَاءِ رَبِّهِمْ يُؤْمِنُوْنَ	फिर हमने मूसा को किताब (तौरात) दी ताकि नेकी करनेवालों के लिए (हमारा इनाम) पूरा हो, और हर चीज़ को विस्तार से समझाने के लिए, और हिदायत और रहमत के लिए, ताकि वे अपने रब से मुलाक़ात पर ईमान लाएँ।	154
وَهٰذَا كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ مُبٰرَكٌ فَاتَّبِعُوْهُ وَاتَّقُوْا لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ	और यह (क़ुरआन) वह किताब है जो हमने बरकत के साथ उतारी। इसका अनुसरण करो, और तक़वा अपनाओ ताकि तुम पर रहमत हो।	155
اَنْ تَقُوْلُوْٓا اِنَّمَآ اُنْزِلَ الْكِتٰبُ عَلٰى طَآئِفَتَيْنِ مِنْ قَبْلِنَا وَاِنْ كُنَّا عَنْ دِرَاسَتِهِمْ لَغٰفِلِيْنَ	(हमने क़ुरआन उतारा) ताकि तुम न कहो, 'किताब तो बस हमसे पहले की दो जमातों (यहूदी और नसारा) पर उतारी गई थी, और हम उनके पढ़ने से बेख़बर थे।'	156
اَوْ تَقُوْلُوْا لَوْ اَنَّآ اُنْزِلَ عَلَيْنَا الْكِتٰبُ لَكُنَّآ اَهْدٰى مِنْهُمْ فَقَدْ جَاءَكُمْ بَيِّنَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَهُدًى وَّرَحْمَةٌ فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ كَذَّبَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَصَدَفَ عَنْهَا سَنَجْزِى الَّذِيْنَ يَصْدِفُوْنَ عَنْ اٰيٰتِنَا سُوْٓءَ الْعَذَابِ بِمَا كَانُوْا يَصْدِفُوْنَ	या ताकि तुम न कहो, 'अगर हमारे पास किताब उतारी जाती, तो हम उनसे ज़्यादा हिदायत पर होते।' अब तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से सुस्पष्ट दलील, हिदायत और रहमत आ चुकी है। उससे ज़्यादा ज़ालिम कौन हो सकता है जो अल्लाह की आयतों को झुठलाए और उनसे मुँह फेरे? जो लोग हमारी आयतों से मुँह फेरते हैं, उन्हें उनके मुँह फेरने की वजह से बहुत बुरा अज़ाब मिलेगा।	157
هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّآ اَنْ تَاْتِيَهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ اَوْ يَاْتِيَ رَبُّكَ اَوْ يَاْتِيَ بَعْضُ اٰيٰتِ رَبِّكَ يَوْمَ يَاْتِيْ بَعْضُ اٰيٰتِ رَبِّكَ لَا يَنْفَعُ نَفْسًا اِيْمَانُهَا لَمْ تَكُنْ اٰمَنَتْ مِنْ قَبْلُ اَوْ كَسَبَتْ فِيْٓ اِيْمَانِهَا خَيْرًا قُلِ انْتَظِرُوْٓا اِنَّا مُنْتَظِرُوْنَ	वे बस इसका इंतज़ार कर रहे हैं कि उनके पास फ़रिश्ते आएँ, या तुम्हारा रब आए, या तुम्हारे रब की कुछ निशानियाँ आएँ। जिस दिन तुम्हारे रब की कुछ निशानियाँ आएँगी, उस दिन किसी का ईमान लाना फ़ायदा नहीं देगा जो पहले ईमान नहीं लाया, या जिसने अपने ईमान के साथ कोई नेकी नहीं कमाई। कहो, 'इंतज़ार करो! हम भी इंतज़ार कर रहे हैं।'	158
اِنَّ الَّذِيْنَ فَرَّقُوْا دِيْنَهُمْ وَكَانُوْا شِيَعًا لَّسْتَ مِنْهُمْ فِيْ شَيْءٍ اِنَّمَآ اَمْرُهُمْ اِلَى اللّٰهِ ثُمَّ يُنَبِّئُهُمْ بِمَا كَانُوْا يَفْعَلُوْنَ	निश्चय ही, जो लोग अपनी दीन को बाँट लेते हैं और टुकड़ों में बट जाते हैं, तुम (मुहम्मद) उनके लिए ज़रा भी ज़िम्मेदार नहीं हो। उनका मामला तो बस अल्लाह के हवाले है फिर वह उन्हें बताएगा जो वे करते थे।	159

مَنْ جَاءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَه عَشْرُ اَمْثَالِهَا وَمَنْ جَاءَ بِالسَّيِّئَةِ فَلَا يُجْزٰٓى اِلَّا مِثْلَهَا وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ	जो कोई नकी करता ह,ै उस`उसक`अमल का दस गन्ना बदला मलिगेा। और जो कोई बरुाई करता ह,ै उस`उसी क`बराबर सजा मलिगेी। और उन पर ज़रा भी जलु्म नहीं होगा।	**160**
قُلْ اِنَّنِيْ هَدٰىنِيْ رَبِّيْٓ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ دِيْنًا قِيَمًا مِّلَّةَ اِبْرٰهِيْمَ حَنِيْفًا وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ	कहो (मह्ुमम्द), 'नशि्चय ही, मरे`रब न`मझु`सीध`रास्त`की हदिायत दी, एक सच्ची दीन, इब्राहीम की दीन जो सीधी थी। और वह (इब्राहीम) मशु्रकि`म`से`नहीं था।'	**161**
قُلْ اِنَّ صَلَاتِيْ وَنُسُكِيْ وَمَحْيَايَ وَمَمَاتِيْ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ	कहो (मह्ुमम्द), 'नशि्चय ही, मरी नमाज, मरी इबादत, मरो जीना और मरो मरना, सब सार`जहानों क`रब अल्लाह क`लिए ह'ै	**162**
لَا شَرِيْكَ لَه وَبِذٰلِكَ اُمِرْتُ وَاَنَا اَوَّلُ الْمُسْلِمِيْنَ	उसका कोई साझीदार नहीं; और मझु`यही हक़ुम दयिा गया ह,ै और म`पैहला मसु्लमि ह'ूँ	**163**
قُلْ اَغَيْرَ اللّٰهِ اَبْغِيْ رَبًّا وَّهُوَ رَبُّ كُلِّ شَيْءٍ وَلَا تَكْسِبُ كُلُّ نَفْسٍ اِلَّا عَلَيْهَا وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰى ثُمَّ اِلٰى رَبِّكُمْ مَّرْجِعُكُمْ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ	कहो (मह्ुमम्द), 'क्या म`अल्लाह क`सवि कसिी और को रब बनाऊ,ँ जबकि वह हर चीज़ का रब ह?ै हर शख़्स का गन्ुाह उसी क`लिए ह'ै और कोई कसिी दसू्र`क`गन्ुाह का बोझ नहीं उठाएगा। फरि तमु्हारा लौटना तमु्हार`रेब की ओर ह,ै और वह तमु्ह`बताएगा जसिम`तमु इख़्तलिाफ़ करत`थे।'	**164**
وَهُوَ الَّذِيْ جَعَلَكُمْ خَلٰٓئِفَ الْاَرْضِ وَرَفَعَ بَعْضَكُمْ فَوْقَ بَعْضٍ دَرَجٰتٍ لِّيَبْلُوَكُمْ فِيْ مَآ اٰتٰىكُمْ اِنَّ رَبَّكَ سَرِيْعُ الْعِقَابِ وَاِنَّه لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ	और वही ह`जसिन`ेतमु्ह`धरती पर ख़लीफ़ा बनाया और कछु को कछु क`ऊपर दरज`दए, ताकि तमु्ह`उस (नअेमत) स`आज़माए जो उसन`ेतमु्ह`दी। नशि्चय ही, तमु्हारा रब जलद सजा दने`वाला ह,ै और नशि्चय ही, वह बड़ा माफ़ करन`वाला, बड़ा महेरबान ह'ै	**165**

छंदों की संख्या	اَلْأَعْرَاف	مكية
२०६	अल-आराफ़ - 7	मक्की

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल-आराफ़ (ऊँची दीवार)

1	अलीफ लाम मीम साद।	المّص
2	(यह) कताब तुम्हारे (मुहम्मद) पास उतारी गई है; इसलिए इसके कारण तुम्हारा दिल तंग न हो, ताकि तुम इसके द्वारा (लोगों को) चेतावनी दे सको और यह ईमान वालों के लिए एक सबक बने।	كِتٰبٌ اُنْزِلَ اِلَيْكَ فَلَا يَكُنْ فِيْ صَدْرِكَ حَرَجٌ مِّنْهُ لِتُنْذِرَ بِهٖ وَذِكْرٰى لِلْمُؤْمِنِيْنَ
3	उसका पालन करो जो तुम्हारे रब की ओर से तुम्हारे पास उतारा गया है, और उसके अलावा किसी और को अपना नेता न बनाओ। तुम बहुत कम ही सबक लेते हो।	اِتَّبِعُوْا مَآ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَلَا تَتَّبِعُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَآءَ قَلِيْلًا مَّا تَذَكَّرُوْنَ
4	कितने ही नगरों को हमने नष्ट कर दिया, हमारा अज़ाब (उनके) निवासियों पर) रात के समय आया, या जब वे दोपहर में आराम कर रहे थे।	وَكَمْ مِّنْ قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَا فَجَآءَهَا بَأْسُنَا بَيَاتًا اَوْ هُمْ قَآئِلُوْنَ
5	जब हमारा अज़ाब उन पर आया, तो उनकी पुकार बस यही थी, 'निश्चय ही हम ज़ालिम थे।'	فَمَا كَانَ دَعْوٰىهُمْ اِذْ جَآءَهُمْ بَأْسُنَآ اِلَّآ اَنْ قَالُوْٓا اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ
6	तो हम निश्चित रूप से उन लोगों से पूछेंगे जिनके (रसूलों से) संदेश मिला था, और हम रसूलों से भी पूछेंगे।	فَلَنَسْـَٔلَنَّ الَّذِيْنَ اُرْسِلَ اِلَيْهِمْ وَلَنَسْـَٔلَنَّ الْمُرْسَلِيْنَ
7	फिर हम उनके कर्मों का हिसाब पूरी तरह से लेंगे और हम उनके साथ कोई अन्याय नहीं करेंगे।	فَلَنَقُصَّنَّ عَلَيْهِمْ بِعِلْمٍ وَّمَا كُنَّا غَآئِبِيْنَ
8	और उस दिन वज़न (न्याय) सत्य के साथ होगा। जिनके कर्म भारी होंगे, वही लोग सफल होंगे।	وَالْوَزْنُ يَوْمَئِذِ الْحَقُّ فَمَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِيْنُهٗ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ
9	और जिनके कर्म हलके होंगे, वे वही लोग हैं जिन्होंने अपनी आत्माओं को नुकसान पहुँचाया, क्योंकि वे हमारी आयतों के साथ जुल्म करते थे।	وَمَنْ خَفَّتْ مَوَازِيْنُهٗ فَاُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ بِمَا كَانُوْا بِاٰيٰتِنَا يَظْلِمُوْنَ
10	और निश्चय ही, हमने तुम्हें धरती पर स्थापित किया और वहाँ तुम्हारे लिए जीविका के साधन प्रदान किए। (लेकिन) तुम बहुत कम ही शुक्र गुज़ार करते हो।	وَلَقَدْ مَكَّنّٰكُمْ فِي الْاَرْضِ وَجَعَلْنَا لَكُمْ فِيْهَا مَعَايِشَ قَلِيْلًا مَّا تَشْكُرُوْنَ
11	और निश्चय ही, हमने तुम्हें बनाया, फिर तुम्हारी शारीरिक रचना बनाई, फिर हमने फ़रिश्तों से कहा, 'आदम को सजदा करो,' तो वे सब सजदा करने लगे सिवाय इबलीस के वह उन लोगों में शामिल नहीं था जो सजदा करते थे।	وَلَقَدْ خَلَقْنٰكُمْ ثُمَّ صَوَّرْنٰكُمْ ثُمَّ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِيْسَ لَمْ يَكُنْ مِّنَ السّٰجِدِيْنَ

12	(अल्लाह ने) पूछा, 'क्या चीज़ ने तुम्हें रोक दिया कि तुमने सजदा नहीं किया जब मैंने तुम्हें हुक्म दिया?' (इब्लीस ने) जवाब दिया, 'मैं उससे बेहतर हूँ तूने मुझे आग से बनाया, जबकि उसे तूने मिट्टी से बनाया।'	قَالَ مَا مَنَعَكَ اَلَّا تَسْجُدَ اِذْ اَمَرْتُكَ قَالَ اَنَا خَيْرٌ مِّنْهُ خَلَقْتَنِيْ مِنْ نَّارٍ وَّخَلَقْتَه مِنْ طِيْنٍ
13	(अल्लाह ने) कहा, 'तो उस (जन्नत) से उतर जाओ; क्योंकि तुम्हें इसमें घमंड करने का हक़ नहीं है। निकल जाओ! निश्चय ही तुम नीच लोगों में से हो।'	قَالَ فَاهْبِطْ مِنْهَا فَمَا يَكُوْنُ لَكَ اَنْ تَتَكَبَّرَ فِيْهَا فَاخْرُجْ اِنَّكَ مِنَ الصّٰغِرِيْنَ
14	(इब्लीस ने) कहा, 'मुझे उस दिन तक मोहलत दे जब तक वे (लोग) दोबारा उठाए जाएँगे।'	قَالَ اَنْظِرْنِيْٓ اِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ
15	(अल्लाह ने) कहा, 'निश्चय ही, तुम उन लोगों में से हो जिन्हें मोहलत दी गई है।'	قَالَ اِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِيْنَ
16	(इब्लीस ने) जवाब दिया, 'क्योंकि तूने मुझे गुमराह किया, मैं निश्चित रूप से उनके लिए तेरे सीधे रास्ते पर रुकावट बनूँगा।'	قَالَ فَبِمَآ اَغْوَيْتَنِيْ لَاَقْعُدَنَّ لَهُمْ صِرَاطَكَ الْمُسْتَقِيْمَ
17	फिर मैं उनके सामने से, उनके पीछे से, उनके दाएँ और बाएँ से उनके पास आऊँगा। और तू अधिकांश लोगों को शुक्र गुज़ार नहीं पाएगा।'	ثُمَّ لَاٰتِيَنَّهُمْ مِّنْۢ بَيْنِ اَيْدِيْهِمْ وَمِنْ خَلْفِهِمْ وَعَنْ اَيْمَانِهِمْ وَعَنْ شَمَاۤئِلِهِمْ وَلَا تَجِدُ اَكْثَرَهُمْ شٰكِرِيْنَ
18	(अल्लाह ने) कहा, 'यहाँ से निकल जाओ, अपमानित और निष्कासित होकर! जो भी उनमें से तेरा अनुसरण करेगा, मैं निश्चित रूप से तुम सबके साथ जहन्नम को भर दूँगा।'	قَالَ اخْرُجْ مِنْهَا مَذْءُوْمًا مَّدْحُوْرًا لَمَنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ لَاَمْلَـَٔنَّ جَهَنَّمَ مِنْكُمْ اَجْمَعِيْنَ
19	और (अल्लाह ने कहा), 'ऐ आदम! तुम अपनी पत्नी के साथ जन्नत में रहो और जो चाहो खाओ। लेकिन इस एक पेड़ के पास न जाना। (अगर गए) तो तुम दोनों ज़ालिमों में से हो जाओगे।'	وَيٰٓاٰدَمُ اسْكُنْ اَنْتَ وَزَوْجُكَ الْجَنَّةَ فَكُلَا مِنْ حَيْثُ شِئْتُمَا وَلَا تَقْرَبَا هٰذِهِ الشَّجَرَةَ فَتَكُوْنَا مِنَ الظّٰلِمِيْنَ
20	फिर शैतान ने उनके मन में बुरे विचार डाले ताकि उनकी शर्म, जो अब तक ढकी थी, खुल जाए। और (शैतान) ने कहा, 'तुम्हारे रब ने तुम्हें इस पेड़ के पास जाने से केवल इसलिए मना किया है ताकि तुम दोनों फ़रिश्ते न बन जाओ या अमर न हो जाओ।'	فَوَسْوَسَ لَهُمَا الشَّيْطٰنُ لِيُبْدِيَ لَهُمَا مَا وٗرِيَ عَنْهُمَا مِنْ سَوْاٰتِهِمَا وَقَالَ مَا نَهٰىكُمَا رَبُّكُمَا عَنْ هٰذِهِ الشَّجَرَةِ اِلَّآ اَنْ تَكُوْنَا مَلَكَيْنِ اَوْ تَكُوْنَا مِنَ الْخٰلِدِيْنَ
21	और उसने (शैतान ने) उन दोनों से क़सम खाकर कहा, 'निश्चय ही मैं तुम्हारा सच्चा सलाहकार हूँ।'	وَقَاسَمَهُمَآ اِنِّيْ لَكُمَا لَمِنَ النّٰصِحِيْنَ
22	उसने (शैतान ने) उन्हें छल से फुसलाया। जब उन्होंने उस पेड़ का फल चखा, तो उनकी शर्म खुल गई, और वे जन्नत के पत्तों से उसे ढकने लगे। उनके रब ने उन्हें पुकारा, 'क्या मैंने तुम्हें उस पेड़ से मना नहीं किया था और क्या मैंने तुमसे नहीं कहा था कि शैतान तुम्हारा खुला दुश्मन है?'	فَدَلّٰىهُمَا بِغُرُوْرٍ فَلَمَّا ذَاقَا الشَّجَرَةَ بَدَتْ لَهُمَا سَوْاٰتُهُمَا وَطَفِقَا يَخْصِفٰنِ عَلَيْهِمَا مِنْ وَّرَقِ الْجَنَّةِ وَنَادٰىهُمَا رَبُّهُمَآ اَلَمْ اَنْهَكُمَا عَنْ تِلْكُمَا الشَّجَرَةِ وَاَقُلْ لَّكُمَآ اِنَّ الشَّيْطٰنَ لَكُمَا عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ

قَالَا رَبَّنَا ظَلَمْنَآ اَنْفُسَنَا وَاِنْ لَّمْ تَغْفِرْ لَنَا وَتَرْحَمْنَا لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ	**23**	दोनों ने कहा, 'ऐ हमारे रब! हमने अपनी आत्माओं पर जुल्म किया। यदि तू हमें माफ़ न करेगा और हम पर रहम न करेगा, तो हम निश्चित रूप से घाटे में रहेंगे।'
قَالَ اهْبِطُوْا بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ وَلَكُمْ فِى الْاَرْضِ مُسْتَقَرٌّ وَّمَتَاعٌ اِلٰى حِيْنٍ	**24**	(अल्लाह ने) कहा, 'नीचे उतरो! तुम एक-दूसरे के दुश्मन होगे। धरती तुम्हारा निवास और एक निश्चित समय तक सुख-सुविधा का स्थान होगा।'
قَالَ فِيْهَا تَحْيَوْنَ وَفِيْهَا تَمُوْتُوْنَ وَمِنْهَا تُخْرَجُوْنَ	**25**	(अल्लाह ने) कहा, 'वहाँ तुम जियो, वहाँ तुम मरो, और वहाँ से ही तुम्हें दोबारा उठाया जाएगा।'
يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ قَدْ اَنْزَلْنَا عَلَيْكُمْ لِبَاسًا يُّوَارِيْ سَوْاٰتِكُمْ وَرِيْشًا وَلِبَاسُ التَّقْوٰى ذٰلِكَ خَيْرٌ ذٰلِكَ مِنْ اٰيٰتِ اللّٰهِ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُوْنَ	**26**	ऐ आदम के वंशजो! हमने तुम्हारी शर्म को ढकने और तुम्हारे लिए सजावट के लिए वस्त्र प्रदान किए हैं लेकिन तक़वा का वस्त्र, वही सबसे अच्छा है यह अल्लाह की निशानियों में से एक है, ताकि वे याद रखें।
يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ لَا يَفْتِنَنَّكُمُ الشَّيْطٰنُ كَمَآ اَخْرَجَ اَبَوَيْكُمْ مِّنَ الْجَنَّةِ يَنْزِعُ عَنْهُمَا لِبَاسَهُمَا لِيُرِيَهُمَا سَوْاٰتِهِمَا اِنَّهٗ يَرٰىكُمْ هُوَ وَقَبِيْلُهٗ مِنْ حَيْثُ لَا تَرَوْنَهُمْ اِنَّا جَعَلْنَا الشَّيٰطِيْنَ اَوْلِيَاۤءَ لِلَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ	**27**	ऐ आदम के वंशजो! शैतान तुम्हें धोखा न दे, जैसे उसने तुम्हारे माता-पिता को जन्नत से निकाला, उनके वस्त्र उतारकर उनकी शर्म को उजागर किया। निश्चय ही वह और उसका समूह तुम्हें ऐसी जगह से देखता है जहाँ तुम उसे नहीं देख सकते। हमने शैतानों को उन लोगों का सरदार बनाया जो ईमान नहीं लाते।
وَاِذَا فَعَلُوْا فَاحِشَةً قَالُوْا وَجَدْنَا عَلَيْهَآ اٰبَاۤءَنَا وَاللّٰهُ اَمَرَنَا بِهَا قُلْ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَاْمُرُ بِالْفَحْشَاۤءِ اَتَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ	**28**	और जब वे कोई घिनौना काम करते हैं, तो कहते हैं, "हमने अपने पुरखों को ऐसा करते देखा, और अल्लाह ने हमें ऐसा करने का हुक्म दिया।' कहो, 'निश्चय ही अल्लाह कभी घिनौने काम करने का हुक्म नहीं देता। तुम अल्लाह के बारे में वह क्यों कहते हो जो तुम नहीं जानते?'
قُلْ اَمَرَ رَبِّيْ بِالْقِسْطِ وَاَقِيْمُوْا وُجُوْهَكُمْ عِنْدَ كُلِّ مَسْجِدٍ وَّادْعُوْهُ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ كَمَا بَدَاَكُمْ تَعُوْدُوْنَ	**29**	कहो, 'मेरे रब ने मुझे न्याय करने का हुक्म दिया है। हर नमाज़ में (अल्लाह की ओर) अपने चेहरों को स्थिर करो, और केवल उसी की इबादत करो, अपनी नीयत को ख़ालिस करके। जैसा उसने तुम्हें पहले बनाया था, उसी तरह तुम उसकी ओर लौटाए जाओगे।'
فَرِيْقًا هَدٰى وَفَرِيْقًا حَقَّ عَلَيْهِمُ الضَّلٰلَةُ اِنَّهُمُ اتَّخَذُوا الشَّيٰطِيْنَ اَوْلِيَاۤءَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَيَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ مُّهْتَدُوْنَ	**30**	कुछ लोगों को उसने हिदायत दी और कुछ लोग गुमराही के हक़दार बन गए। उन्होंने अल्लाह के अलावा शैतानों को अपना संरक्षक बनाया। वे समझते हैं कि वे हिदायत पर हैं।
يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ خُذُوْا زِيْنَتَكُمْ عِنْدَ كُلِّ مَسْجِدٍ وَّكُلُوْا وَاشْرَبُوْا وَلَا تُسْرِفُوْا اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِيْنَ	**31**	ऐ आदम के वंशजो! हर मस्जिद में अपने सुंदर वस्त्र पहनो, खाओ और पियो, लेकिन हद से ज़्यादा न करो। निश्चय ही, अल्लाह हद से ज़्यादा करने वालों को पसंद नहीं करता।

32	कहो (मुहम्मद), 'कौन है जिसने अल्लाह की दी हुई सजावट और अच्छी रोज़ी को हराम कर दिया?' कहो, 'यह सब दुनिया की ज़िंदगी में ईमान वालों के लिए है, और क़ियामत के दिन ख़ास तौर पर (उनके लिए ही)।' इस तरह हम उन लोगों के लिए आयतों को स्पष्ट करते हैं जो जानते हैं।	قُلْ مَنْ حَرَّمَ زِيْنَةَ اللّٰهِ الَّتِيْٓ اَخْرَجَ لِعِبَادِهٖ وَالطَّيِّبٰتِ مِنَ الرِّزْقِ قُلْ هِيَ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا خَالِصَةً يَّوْمَ الْقِيٰمَةِ كَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ
33	कहो (मुहम्मद), 'मेरे रब ने केवल घिनौने कामों को हराम किया है, चाहे वे खुले हों या छिपे, और पाप, और बिना हक़ के ज़ुल्म, और यह कि तुम अल्लाह के साथ किसी को शरीक करो जिसके लिए उसने कोई प्रमाण नहीं उतारा, और यह कि तुम अल्लाह के बारे में वह कहो जो तुम नहीं जानते।'	قُلْ اِنَّمَا حَرَّمَ رَبِّيَ الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ وَالْاِثْمَ وَالْبَغْيَ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَاَنْ تُشْرِكُوْا بِاللّٰهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهٖ سُلْطٰنًا وَّاَنْ تَقُوْلُوْا عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ
34	और हर उम्मत के लिए एक निश्चित समय है। जब उनका समय आ जाता है, तो वे न तो एक पल पीछे हट सकते हैं और न ही आगे बढ़ सकते हैं।	وَلِكُلِّ اُمَّةٍ اَجَلٌ فَاِذَا جَاۤءَ اَجَلُهُمْ لَا يَسْتَاْخِرُوْنَ سَاعَةً وَّلَا يَسْتَقْدِمُوْنَ
35	ऐ आदम के वंशजो! यदि तुम्हारे पास तुम्हीं से ही रसूल आएँ, जो मेरी आयतें तुम्हें सुनाएँ, तो जो कोई तक़वा अपनाए और सुधार करे, उसे न तो कोई डर होगा और न ही वह उदास होगा।	يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ اِمَّا يَاْتِيَنَّكُمْ رُسُلٌ مِّنْكُمْ يَقُصُّوْنَ عَلَيْكُمْ اٰيٰتِيْ فَمَنِ اتَّقٰى وَاَصْلَحَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ
36	लेकिन जो लोग हमारी आयतों को झुठलाते हैं और उनके प्रति घमंड करते हैं, वही लोग जहन्नम के बाशिंदे होंगे; वे उसमें हमेशा रहेंगे।	وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَاسْتَكْبَرُوْا عَنْهَآ اُولٰۤىِٕكَ اَصْحٰبُ النَّارِ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ
37	उससे बड़ा ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह के ख़िलाफ़ झूठ गढ़े या उसकी आयतों को झुठलाए? ऐसे लोगों को किताब में निर्धारित उनका हिस्सा मिलेगा, यहाँ तक कि जब हमारे दूत (फ़रिश्ते) उनकी जान लेने आएँगे।	فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ كَذَّبَ بِاٰيٰتِهٖ اُولٰۤىِٕكَ يَنَالُهُمْ نَصِيْبُهُمْ مِّنَ الْكِتٰبِ حَتّٰٓى اِذَا جَاۤءَتْهُمْ رُسُلُنَا يَتَوَفَّوْنَهُمْ قَالُوْٓا اَيْنَ مَا كُنْتُمْ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ قَالُوْا ضَلُّوْا عَنَّا وَشَهِدُوْا عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ اَنَّهُمْ كَانُوْا كٰفِرِيْنَ
38	जो पहले (नरक में) गए, उनहोंने बाद में आने वालों से कहा, 'तुम्हें हम पर कोई श्रेष्ठता नहीं है तो अपने किए हुए कर्मों की सजा भोगो।'	قَالَ ادْخُلُوْا فِيْٓ اُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِكُمْ مِّنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ فِى النَّارِ كُلَّمَا دَخَلَتْ اُمَّةٌ لَّعَنَتْ اُخْتَهَا حَتّٰٓى اِذَا ادَّارَكُوْا فِيْهَا جَمِيْعًا قَالَتْ اُخْرٰىهُمْ لِاُوْلٰىهُمْ رَبَّنَا هٰٓؤُلَاۤءِ اَضَلُّوْنَا فَاٰتِهِمْ عَذَابًا ضِعْفًا مِّنَ النَّارِ قَالَ لِكُلٍّ ضِعْفٌ وَّلٰكِنْ لَّا تَعْلَمُوْنَ
39	और जो पहले (नरक में) गए, उनहोंने बाद में आने वालों से कहा, 'तुम्हें हम पर कोई श्रेष्ठता नहीं है तो अपने किए हुए कर्मों की सजा भोगो।'	وَقَالَتْ اُوْلٰىهُمْ لِاُخْرٰىهُمْ فَمَا كَانَ لَكُمْ عَلَيْنَا مِنْ فَضْلٍ فَذُوْقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْسِبُوْنَ

40	निश्चय ही, जो लोग हमारी आयतों को झुठलाते हैं और उनके प्रति घमंड करते हैं, उनके लिए आकाश के द्वार नहीं खोले जाएँगे, और वे जन्नत में नहीं जाएँगे, जब तक कि ऊँट सुई के छेद में से न निकल जाए। इस तरह हम अपराधियों को बदला देते हैं।	إِنَّ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَاسْتَكْبَرُوْا عَنْهَا لَا تُفَتَّحُ لَهُمْ اَبْوَابُ السَّمَاۤءِ وَلَا يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ حَتّٰى يَلِجَ الْجَمَلُ فِيْ سَمِّ الْخِيَاطِ وَكَذٰلِكَ نَجْزِى الْمُجْرِمِيْنَ
41	उनके लिए नरक की आग से बिछौना होगा और उनके ऊपर आग की चादर होगी। इस तरह हम ज़ालिमों को बदला देते हैं।	لَهُمْ مِّنْ جَهَنَّمَ مِهَادٌ وَّمِنْ فَوْقِهِمْ غَوَاشٍ وَكَذٰلِكَ نَجْزِى الظّٰلِمِيْنَ
42	और जो लोग ईमान लाए और अच्छे कर्म किए, हम किसी को उसकी ताक़त से ज़्यादा बोझ नहीं देते। वही लोग जन्नत के बाशिंदे होंगे; वे उसमें हमेशा रहेंगे।	وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَا نُكَلِّفُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَاۤ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ
43	और हम उनके सीनों से हर तरह की रंजिश निकाल देंगे, उनके नीचे नदियाँ बहेंगी। वे कहेंगे, 'सब तारीफ़ अल्लाह की है जिसने हमें इस (जन्नत) की राह दिखाई। यदि अल्लाह हमें हिदायत न देता, तो हम रास्ता न पाते। निश्चय ही हमारे रब के रसूल सत्य लेकर आए थे।' और उन्हें पुकारा जाएगा, 'यह जन्नत तुम्हें तुम्हारे कर्मों के बदले में दी गई है।'	وَنَزَعْنَا مَا فِيْ صُدُوْرِهِمْ مِّنْ غِلٍّ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهِمُ الْاَنْهٰرُ وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ هَدٰىنَا لِهٰذَا وَمَا كُنَّا لِنَهْتَدِيَ لَوْلَاۤ اَنْ هَدٰىنَا اللّٰهُ لَقَدْ جَاۤءَتْ رُسُلُ رَبِّنَا بِالْحَقِّ وَنُوْدُوْۤا اَنْ تِلْكُمُ الْجَنَّةُ اُوْرِثْتُمُوْهَا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ
44	और जन्नत के बाशिंदे नरक के बाशिंदों को पुकारेंगे, 'हमने वह पाया जो हमारे रब ने हमसे वादा किया था, वह सत्य था। क्या तुमने भी अपने रब का वादा सत्य पाया?' वे जवाब देंगे, 'हाँ।' फिर उनके बीच एक पुकारने वाला (फ़रिश्ता) ऐलान करेगा, 'अल्लाह की लानत ज़ालिमों पर हो।'	وَنَادٰٓى اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ اَصْحٰبَ النَّارِ اَنْ قَدْ وَجَدْنَا مَا وَعَدَنَا رَبُّنَا حَقًّا فَهَلْ وَجَدْتُّمْ مَّا وَعَدَ رَبُّكُمْ حَقًّا قَالُوْا نَعَمْ فَاَذَّنَ مُؤَذِّنٌۢ بَيْنَهُمْ اَنْ لَّعْنَةُ اللّٰهِ عَلَى الظّٰلِمِيْنَ
45	(यानी) उन लोगों पर जो अल्लाह के रास्ते से रोकते हैं और उसे टेढ़ा-मेढ़ा करना चाहते हैं। वे लोग आख़िरत को नहीं मानते।	اَلَّذِيْنَ يَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَيَبْغُوْنَهَا عِوَجًا وَّهُمْ بِالْاٰخِرَةِ كٰفِرُوْنَ
46	और दोनों (जन्नत और नरक के बाशिंदों) के बीच एक परदा होगा, और अ'राफ़ (ऊँचे स्थान) पर कुछ लोग होंगे जो अपने निशानों से एक-दूसरे को पहचान लेंगे। वे जन्नत के बाशिंदों को पुकारेंगे, 'तुम पर सलाम हो।' वे अभी जन्नत में नहीं गए, लेकिन उसकी आशा रखते हैं।	وَبَيْنَهُمَا حِجَابٌ وَعَلَى الْاَعْرَافِ رِجَالٌ يَّعْرِفُوْنَ كُلًّا بِسِيْمٰهُمْ وَنَادَوْا اَصْحٰبَ الْجَنَّةِ اَنْ سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ لَمْ يَدْخُلُوْهَا وَهُمْ يَطْمَعُوْنَ
47	और जब उनकी नज़र नरक के बाशिंदों की ओर मुड़ेगी, तो वे कहेंगे, 'ऐ हमारे रब! हमें ज़ालिमों के साथ न रख।'	وَاِذَا صُرِفَتْ اَبْصَارُهُمْ تِلْقَاۤءَ اَصْحٰبِ النَّارِ قَالُوْا رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ
48	और अ'राफ़ (ऊँचे स्थान) पर लोग उन लोगों को, जिन्हें वे उनके निशानों से पहचानते हैं, पुकारेंगे और कहेंगे, 'तुम्हारा जमा किया हुआ धन और तुम्हारा घमंड तुम्हारे लिए कुछ काम न आया।'	وَنَادٰٓى اَصْحٰبُ الْاَعْرَافِ رِجَالًا يَّعْرِفُوْنَهُمْ بِسِيْمٰهُمْ قَالُوْا مَاۤ اَغْنٰى عَنْكُمْ جَمْعُكُمْ وَمَا كُنْتُمْ تَسْتَكْبِرُوْنَ

49	क्या ये वही लोग नहीं जिनके बारे में तुम क़सम खाई थी कि वे अल्लाह की रहमत नहीं पाएँगे? (अल्लाह ने कहा), 'जन्नत में जाओ! तुम्हें न कोई डर होगा और न तुम उदास होगे।'	اَهٰٓؤُلَاءِ الَّذِيْنَ اَقْسَمْتُمْ لَا يَنَالُهُمُ اللّٰهُ بِرَحْمَةٍ اُدْخُلُوا الْجَنَّةَ لَا خَوْفٌ عَلَيْكُمْ وَلَآ اَنْتُمْ تَحْزَنُوْنَ
50	नरक के बाशिंदे जन्नत के बाशिंदों को पुकारेंगे, 'हम पर (थोड़ा) पानी डाल दो या जो कुछ अल्लाह ने तुम्हें दिया है, उसमें से कुछ दे दो।' वे जवाब देंगे, 'निश्चय ही, अल्लाह ने इन दोनों को काफ़िरों के लिए हराम कर दिया है'	وَنَادٰٓى اَصْحٰبُ النَّارِ اَصْحٰبَ الْجَنَّةِ اَنْ اَفِيْضُوْا عَلَيْنَا مِنَ الْمَاۤءِ اَوْ مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ قَالُوْٓا اِنَّ اللّٰهَ حَرَّمَهُمَا عَلَى الْكٰفِرِيْنَ
51	(यानी) उन लोगों ने जिन्होंने अपने धर्म को खेल और तमाशा बनाया, और दुनिया की ज़िंदगी ने उन्हें धोखा दिया। तो आज (क़ियामत के दिन) हम उन्हें भूल जाएँगे, जैसे उन्होंने इस दिन की मुलाक़ात को भुला दिया था, और क्योंकि वे हमारी आयतों को झुठलाते थे।	الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا دِيْنَهُمْ لَهْوًا وَّلَعِبًا وَّغَرَّتْهُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا فَالْيَوْمَ نَنْسٰىهُمْ كَمَا نَسُوْا لِقَاۤءَ يَوْمِهِمْ هٰذَا وَمَا كَانُوْا بِاٰيٰتِنَا يَجْحَدُوْنَ
52	निश्चय ही, हम उनके पास एक किताब (अल-क़ुरआन) लाए, जिसे हमने ज्ञान के आधार पर स्पष्ट किया, जो ईमान वालों के लिए हिदायत और रहमत है।	وَلَقَدْ جِئْنٰهُمْ بِكِتٰبٍ فَصَّلْنٰهُ عَلٰى عِلْمٍ هُدًى وَّرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ
53	क्या वे केवल इस (अल-क़ुरआन) की सत्यता के सबूत का इंतज़ार कर रहे हैं? जिस दिन उसकी सत्यता का सबूत आ जाएगा, वे लोग जो पहले इसे नज़रअंदाज़ करते थे, कहेंगे, 'निश्चय ही हमारे रब के रसूल सत्य लेकर आए थे। क्या हमारे लिए कोई सिफ़ारिश करने वाला है जो हमारी मदद करे, या क्या हम (दुनिया में) वापस भेजे जा सकते हैं ताकि हम पहले की तरह करम न करें?' उन्होंने अपनी आत्माओं को नुक़सान पहुँचाया और जो कुछ उन्होंने गढ़ लिया था, वह उनसे गायब हो गया।	هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّا تَاْوِيْلَهٗ يَوْمَ يَاْتِيْ تَاْوِيْلُهٗ يَقُوْلُ الَّذِيْنَ نَسُوْهُ مِنْ قَبْلُ قَدْ جَاۤءَتْ رُسُلُ رَبِّنَا بِالْحَقِّ فَهَلْ لَّنَا مِنْ شُفَعَاۤءَ فَيَشْفَعُوْا لَنَآ اَوْ نُرَدُّ فَنَعْمَلَ غَيْرَ الَّذِيْ كُنَّا نَعْمَلُ قَدْ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ
54	निश्चय ही, तुम्हारा रब वह अल्लाह है जिसने छह दिनों में आकाश और धरती को बनाया, फिर वह अर्श पर विराजमान हुआ। वह रात को दिन पर ढक देता है, जो तेज़ी से उसका पीछा करता है। (उसने) सूरज, चाँद और तारों को बनाया, जो उसके हुक्म के अधीन हैं। सावधान! सारी सृष्टि और सारा प्रबंधन उसी का है। महिमावान है अल्लाह, जो सारे जहान का रब है।	اِنَّ رَبَّكُمُ اللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ يُغْشِي الَّيْلَ النَّهَارَ يَطْلُبُهٗ حَثِيْثًا وَّالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ وَالنُّجُوْمَ مُسَخَّرٰتٍ بِاَمْرِهٖ اَلَا لَهُ الْخَلْقُ وَالْاَمْرُ تَبٰرَكَ اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ
55	अपने रब से नम्रता और धीमी आवाज़ में दुआ करो। निश्चय ही, वह हद से ज़्यादा करने वालों को पसंद नहीं करता।	اُدْعُوْا رَبَّكُمْ تَضَرُّعًا وَّخُفْيَةً اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِيْنَ
56	और धरती पर तबाही न फैलाओ, जब वह ठीक कर दी गई हो। उससे डर और उम्मीद के साथ दुआ करो। निश्चय ही, अल्लाह की रहमत अच्छे करम करने वालों के बहुत करीब है।	وَلَا تُفْسِدُوْا فِى الْاَرْضِ بَعْدَ اِصْلَاحِهَا وَادْعُوْهُ خَوْفًا وَّطَمَعًا اِنَّ رَحْمَتَ اللّٰهِ قَرِيْبٌ مِّنَ الْمُحْسِنِيْنَ

57	वही ह जो अपनी रहमत (बारिश) क आन से पहल शुभ समाचार दने वाली हवा को भजेता ह, यहा तक कि जब वह भारी बादलो को उठाती ह, तो हम उस एक बजर ज़मीन की ओर ल जात ह, फरि हम वहा बारिश उतारत ह फरि हम उस बारिश स तरह-तरह क फल उगात ह इसी तरह हम मृतको को ज़िदा करगे, ताकि तुम सबक लो।	وَهُوَ الَّذِيْ يُرْسِلُ الرِّيٰحَ بُشْرًا بَيْنَ يَدَيْ رَحْمَتِهٖ حَتّٰٓى اِذَآ اَقَلَّتْ سَحَابًا ثِقَالًا سُقْنٰهُ لِبَلَدٍ مَّيِّتٍ فَاَنْزَلْنَا بِهِ الْمَاۤءَ فَاَخْرَجْنَا بِهٖ مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ كَذٰلِكَ نُخْرِجُ الْمَوْتٰى لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ
58	और अच्छी ज़मीन पर, उसक रब की इजाज़त स पौध अच्छ उगत ह, और खराब ज़मीन पर, पौध खराब ही उगत ह। इस तरह हम शुक्र गुज़ार लोगो क लए अपनी नशानयो को बार-बार स्पष्ट करत ह।	وَالْبَلَدُ الطَّيِّبُ يَخْرُجُ نَبَاتُهٗ بِاِذْنِ رَبِّهٖ وَالَّذِيْ خَبُثَ لَا يَخْرُجُ اِلَّا نَكِدًا كَذٰلِكَ نُصَرِّفُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّشْكُرُوْنَ
59	नश्चय ही, हमन नूह को उनकी क़ौम क पास भजा, तो उनहोन कहा, 'ऐ मरी क़ौम! अल्लाह की इबादत करो! तुमहारा उसक सवा कोई माबद्ध नही ह। मुझ डर ह कि तुम पर एक बड़ दनि (क़यामत) का अज़ाब आएगा।'	لَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا اِلٰى قَوْمِهٖ فَقَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ اِنِّيْٓ اَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ
60	उनकी क़ौम क सरदारो न कहा, 'नश्चय ही हम तुमह साफ़ गुमराही म देखत ह।'	قَالَ الْمَلَاُ مِنْ قَوْمِهٖٓ اِنَّا لَنَرٰىكَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ
61	उनहोन (नूह न) जवाब दयि, 'ऐ मरी क़ौम! मुझम कोई गुमराही नही ह; बलक़ मै सार जहान क रब का रसूल हूँ।'	قَالَ يٰقَوْمِ لَيْسَ بِيْ ضَلٰلَةٌ وَّلٰكِنِّيْ رَسُوْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ
62	म तुमह अपन रब का पैग़ाम पहुँचाता हूँ, तुमह नसीहत दता हूँ और म अल्लाह स वह जानता हूँ जो तुम नही जानत।'	اُبَلِّغُكُمْ رِسٰلٰتِ رَبِّيْ وَاَنْصَحُ لَكُمْ وَاَعْلَمُ مِنَ اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ
63	क्या तुमह इस बात पर ताज्जुब ह कि तुमहार रब की ओर स तुम म स ही एक आदमी क ज़रए तुमह चतावनी दी जाए ताकि तुम तक़वा अपनाओ और तुमह रहमत मलि?'	اَوَعَجِبْتُمْ اَنْ جَاۤءَكُمْ ذِكْرٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ عَلٰى رَجُلٍ مِّنْكُمْ لِيُنْذِرَكُمْ وَلِتَتَّقُوْا وَلَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ
64	तो उनहोन उस (नूह को) झठुलाया। फरि हमन उस और उसक साथियो को नाव म बचा लयि। और जनि लोगो न हमारी आयतो को झठुलाया, उनह हमन डुबो दयि। नश्चय ही व अध लोग थ।	فَكَذَّبُوْهُ فَاَنْجَيْنٰهُ وَالَّذِيْنَ مَعَهٗ فِي الْفُلْكِ وَاَغْرَقْنَا الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا عَمِيْنَ
65	और आद क़ौम क पास (हमन) उनक भाई हूद को भजा। उनहोन कहा, 'ऐ मरी क़ौम! अल्लाह की इबादत करो! तुमहारा उसक सवा कोई माबद्ध नही ह। तो क्या तुम तक़वा नही अपनाओगे?'	وَاِلٰى عَادٍ اَخَاهُمْ هُوْدًا قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ
66	उनकी क़ौम क काफ़रि सरदारो न कहा, 'नश्चय ही हम तुमह नासमझी म देखत ह और हम लगता ह कि तुम झठू बोलन वालो म स हो।'	قَالَ الْمَلَاُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖٓ اِنَّا لَنَرٰىكَ فِيْ سَفَاهَةٍ وَّاِنَّا لَنَظُنُّكَ مِنَ الْكٰذِبِيْنَ
67	उनहोन (हूद न) जवाब दयि, 'ऐ मरी क़ौम! मुझम कोई नासमझी नही ह, बलक़ मै सार जहान क रब का रसूल हूँ।'	قَالَ يٰقَوْمِ لَيْسَ بِيْ سَفَاهَةٌ وَّلٰكِنِّيْ رَسُوْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ

أُبَلِّغُكُمْ رِسٰلٰتِ رَبِّيْ وَاَنَا لَكُمْ نَاصِحٌ اَمِيْنٌ	मैं तुम्हें अपने रब का पैग़ाम पहुँचाता हूँ और तुम्हारा भरोसेमंद नसीहत देने वाला हूँ।	**68**
اَوَعَجِبْتُمْ اَنْ جَاءَكُمْ ذِكْرٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ عَلٰى رَجُلٍ مِّنْكُمْ لِيُنْذِرَكُمْ وَاذْكُرُوْٓا اِذْ جَعَلَكُمْ خُلَفَاءَ مِنْ بَعْدِ قَوْمِ نُوْحٍ وَّزَادَكُمْ فِي الْخَلْقِ بَصْطَةً فَاذْكُرُوْٓا اٰلَاۤءَ اللّٰهِ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ	क्या तुम्हें इस बात पर ताज्जुब है कि तुम्हारे रब की ओर से तुम्हीं में से ही एक आदमी के ज़रिए तुम्हें चेतावनी दी जाए? याद करो जब उसने तुम्हें नूह की क़ौम के बाद ख़लीफ़ा बनाया और तुम्हें शारीरिक शक्ति और क़द में बढ़ाया। तो अल्लाह की नेमतों को याद करो ताकि तुम कामयाब हो।'	**69**
قَالُوْٓا اَجِئْتَنَا لِنَعْبُدَ اللّٰهَ وَحْدَهٗ وَنَذَرَ مَا كَانَ يَعْبُدُ اٰبَاؤُنَا فَاْتِنَا بِمَا تَعِدُنَاۤ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ	वे बोले, 'क्या तुम हमारे पास इसलिए आए हो कि हम केवल अल्लाह की इबादत करें और अपने पुरखों के पूजे हुए (मूर्तियों) को छोड़ दें? तो अपनी धमकी को साबित करो, अगर तुम सच्चे हो!'	**70**
قَالَ قَدْ وَقَعَ عَلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ رِجْسٌ وَّغَضَبٌ اَتُجَادِلُوْنَنِيْ فِيْٓ اَسْمَاۤءٍ سَمَّيْتُمُوْهَاۤ اَنْتُمْ وَاٰبَاؤُكُمْ مَّا نَزَّلَ اللّٰهُ بِهَا مِنْ سُلْطٰنٍ فَانْتَظِرُوْٓا اِنِّيْ مَعَكُمْ مِّنَ الْمُنْتَظِرِيْنَ	उन्होंने (हूद ने) जवाब दिया, 'निश्चय ही तुम पर तुम्हारे रब की नाराज़गी और ग़ज़ब आ पड़ेगा। क्या तुम मुझसे उन नामों (मूर्तियों) के बारे में बहस करना चाहते हो जो तुमने और तुम्हारे पुरखों ने गढ़ लिए, जिनके लिए अल्लाह ने कोई प्रमाण नहीं उतारा? तो इंतज़ार करो! मैं भी तुम्हारे साथ इंतज़ार करने वालों में हूँ।'	**71**
فَاَنْجَيْنٰهُ وَالَّذِيْنَ مَعَهٗ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا وَقَطَعْنَا دَابِرَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَمَا كَانُوْا مُؤْمِنِيْنَ	फिर हमने उसे (हूद को) और उसके साथियों को अपनी रहमत से बचा लिया और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया, उनकी जड़ काट दी। वे ईमान वाले नहीं थे।	**72**
وَاِلٰى ثَمُوْدَ اَخَاهُمْ صٰلِحًا قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ قَدْ جَاءَتْكُمْ بَيِّنَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ هٰذِهٖ نَاقَةُ اللّٰهِ لَكُمْ اٰيَةً فَذَرُوْهَا تَاْكُلْ فِيْٓ اَرْضِ اللّٰهِ وَلَا تَمَسُّوْهَا بِسُوْٓءٍ فَيَاْخُذَكُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ	और समूद क़ौम के पास उनके भाई सालेह को (हमने भेजा)। उन्होंने कहा, 'ऐ मेरी क़ौम! अल्लाह की इबादत करो! तुम्हारा उसके सिवा कोई माबूद नहीं है। तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से एक साफ़ निशानी आई है। यह अल्लाह की ऊँटनी तुम्हारे लिए एक निशान है। इसे अल्लाह की धरती पर खाने दो, इसे तकलीफ़ न दो, नहीं तो तुम्हें दरदनाक सजा मिलेगी।'	**73**
وَاذْكُرُوْٓا اِذْ جَعَلَكُمْ خُلَفَاءَ مِنْ بَعْدِ عَادٍ وَّبَوَّاَكُمْ فِي الْاَرْضِ تَتَّخِذُوْنَ مِنْ سُهُوْلِهَا قُصُوْرًا وَّتَنْحِتُوْنَ الْجِبَالَ بُيُوْتًا فَاذْكُرُوْٓا اٰلَاۤءَ اللّٰهِ وَلَا تَعْثَوْا فِي الْاَرْضِ مُفْسِدِيْنَ	और याद करो जब उसने तुम्हें आद क़ौम के बाद ख़लीफ़ा बनाया और तुम्हें धरती पर बसाया। तुम मैदानों में महल बनाते हो और पहाड़ों को तराशकर घर बनाते हो। तो अल्लाह की नेमतों को याद करो और धरती पर तबाही न फैलाओ।'	**74**
قَالَ الْمَلَاُ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ لِلَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْا لِمَنْ اٰمَنَ مِنْهُمْ اَتَعْلَمُوْنَ اَنَّ صٰلِحًا مُّرْسَلٌ مِّنْ رَّبِّهٖ قَالُوْٓا اِنَّا بِمَآ اُرْسِلَ بِهٖ مُؤْمِنُوْنَ	उनकी क़ौम के घमंडी सरदारों ने उन लोगों से, जिन्हें कमज़ोर समझा जाता था, यानी जो ईमान लाए थे, कहा, 'क्या तुम जानते हो कि सालेह अपने रब का रसूल है?' उन्होंने जवाब दिया, 'निश्चय ही हम उस (पैग़ाम) पर ईमान लाए जो उसके ज़रिए भेजा गया है।'	**75**
قَالَ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْٓا اِنَّا بِالَّذِيْٓ اٰمَنْتُمْ بِهٖ كٰفِرُوْنَ	घमंड करने वालों ने कहा, 'निश्चय ही हम उस चीज़ को नहीं मानते जिसे तुम मानते हो।'	**76**

77	फिर उन्होंने उस ऊँटनी को मार डाला और अपने रब के हुक्म के ख़िलाफ़ अकड़ गए। उन्होंने कहा, 'ऐ सालेह! अपनी धमकी को साबित करो, अगर तुम रसूलों में से हो।'	فَعَقَرُوا النَّاقَةَ وَعَتَوْا عَنْ اَمْرِ رَبِّهِمْ وَقَالُوْا يٰصٰلِحُ ائْتِنَا بِمَا تَعِدُنَآ اِنْ كُنْتَ مِنَ الْمُرْسَلِيْنَ
78	तो उन पर भूकंप आया, और वे अपने घरों में मृत पड़े रह गए।	فَاَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَاَصْبَحُوْا فِيْ دَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ
79	फिर वह (सालेह) उनसे अलग हो गए और बोले, 'ऐ मेरी क़ौम! मैंने तुम्हें अपने रब का पैग़ाम पहुँचाया और तुम्हें नसीहत दी, लेकिन तुम नसीहत देने वालों को पसंद नहीं करते।'	فَتَوَلّٰى عَنْهُمْ وَقَالَ يٰقَوْمِ لَقَدْ اَبْلَغْتُكُمْ رِسَالَةَ رَبِّيْ وَنَصَحْتُ لَكُمْ وَلٰكِنْ لَّا تُحِبُّوْنَ النّٰصِحِيْنَ
80	और (हमने) लूत को (भेजा), जब उन्होंने अपनी क़ौम से कहा, 'क्या तुम वह घिनौना काम करते हो जो तुमसे पहले किसी ने नहीं किया?'	وَلُوْطًا اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖٓ اَتَاْتُوْنَ الْفَاحِشَةَ مَا سَبَقَكُمْ بِهَا مِنْ اَحَدٍ مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ
81	निश्चय ही तुम औरतों को छोड़कर मर्दों के पास शहवत के लिए जाते हो। बल्कि तुम हद से ज़्यादा करने वाले लोग हो।'	اِنَّكُمْ لَتَاْتُوْنَ الرِّجَالَ شَهْوَةً مِّنْ دُوْنِ النِّسَاۤءِ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ مُّسْرِفُوْنَ
82	और उनकी क़ौम का जवाब बस यही था कि उन्होंने कहा, 'इन्हें (लूत और उनके साथियों को) अपने नगर से निकाल दो, ये लोग अपने आपको बहुत पाक-साफ़ समझते हैं।'	وَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهٖٓ اِلَّآ اَنْ قَالُوْٓا اَخْرِجُوْهُمْ مِّنْ قَرْيَتِكُمْ اِنَّهُمْ اُنَاسٌ يَّتَطَهَّرُوْنَ
83	फिर हमने उस (लूत को) और उसके साथियों को बचा लिया, सिवाय उसकी बीवी के वह उन लोगों में थी जो पीछे रह गए।	فَاَنْجَيْنٰهُ وَاَهْلَهٗٓ اِلَّا امْرَاَتَهٗ كَانَتْ مِنَ الْغٰبِرِيْنَ
84	और हमने उन पर (पत्थरों की) बारिश की। तो देखो, उन गुनहगारों का अंजाम क्या हुआ।	وَاَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَّطَرًا فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُجْرِمِيْنَ
85	और मादयान के लोगों के पास उनके भाई शुऐब को (हमने भेजा)। उन्होंने कहा, 'ऐ मेरी क़ौम! अल्लाह की इबादत करो। तुम्हारा उसके सिवा कोई माबूद नहीं है। तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से साफ़ निशानी आई है। नाप और तौल को पूरा करो, और लोगों को उनकी चीज़ों में कोई कमी न दो। धरती को ठीक करने के बाद उसमें तबाही न फैलाओ। यह तुम्हारे लिए बेहतर है, अगर तुम ईमान वाले हो।'	وَاِلٰى مَدْيَنَ اَخَاهُمْ شُعَيْبًا قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ قَدْ جَاۤءَتْكُمْ بَيِّنَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ فَاَوْفُوا الْكَيْلَ وَالْمِيْزَانَ وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ اَشْيَاۤءَهُمْ وَلَا تُفْسِدُوْا فِى الْاَرْضِ بَعْدَ اِصْلَاحِهَا ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ
86	और हर रास्ते पर न बैठो, ताकि ईमान वालों को अल्लाह के रास्ते से डराकर और उसे टेढ़ा-मेढ़ा करके रोक सको। याद करो जब तुम कम थे, तो अल्लाह ने तुम्हें बहुत कर दिया। और देखो, तबाही फैलाने वालों का अंजाम क्या हुआ।'	وَلَا تَقْعُدُوْا بِكُلِّ صِرَاطٍ تُوْعِدُوْنَ وَتَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ مَنْ اٰمَنَ بِهٖ وَتَبْغُوْنَهَا عِوَجًا وَاذْكُرُوْٓا اِذْ كُنْتُمْ قَلِيْلًا فَكَثَّرَكُمْ وَانْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِيْنَ

وَاِنْ كَانَ طَآئِفَةٌ مِّنْكُمْ اٰمَنُوْا بِالَّذِيْٓ اُرْسِلْتُ بِهٖ وَطَآئِفَةٌ لَّمْ يُؤْمِنُوْا فَاصْبِرُوْا حَتّٰى يَحْكُمَ اللّٰهُ بَيْنَنَا وَهُوَ خَيْرُ الْحٰكِمِيْنَ	और अगर तुम्हारे से एक समूह उस (पैग़ाम) पर ईमान लाए, जिसके साथ मैं भेजा गया हूँ और एक समूह ईमान न लाए, तो सब्र करो जब तक कि अल्लाह हमारे बीच फ़ैसला न कर दे। वही सबसे अच्छा फ़ैसला करने वाला है।'	**87**
قَالَ الْمَلَاُ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ لَنُخْرِجَنَّكَ يٰشُعَيْبُ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَكَ مِنْ قَرْيَتِنَآ اَوْ لَتَعُوْدُنَّ فِيْ مِلَّتِنَا قَالَ اَوَلَوْ كُنَّا كٰرِهِيْنَ	शुऐब की क़ौम के घमंडी सरदारों ने कहा, 'ऐ शुऐब! हम निश्चित रूप से तुम्हें और तुम्हारे साथ ईमान लाने वालों को अपने नगर से निकाल देंगे, सिवाय इसके कि तुम हमारे धर्म में वापस आ जाओ।' शुऐब ने कहा, 'क्या (तुम हमें निकालोगे) भले ही हम इसे नापसंद करें?'	**88**
قَدِ افْتَرَيْنَا عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اِنْ عُدْنَا فِيْ مِلَّتِكُمْ بَعْدَ اِذْ نَجّٰىنَا اللّٰهُ مِنْهَا وَمَا يَكُوْنُ لَنَآ اَنْ نَّعُوْدَ فِيْهَآ اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ رَبُّنَا وَسِعَ رَبُّنَا كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا عَلَى اللّٰهِ تَوَكَّلْنَا رَبَّنَا افْتَحْ بَيْنَنَا وَبَيْنَ قَوْمِنَا بِالْحَقِّ وَاَنْتَ خَيْرُ الْفٰتِحِيْنَ	हमने अल्लाह के ख़िलाफ़ बड़ा झूठ गढ़ लिया होगा, अगर हम तुम्हारे धर्म में वापस आएँ, जबकि अल्लाह ने हमें उससे बचा लिया है और हमारे लिए उसमें वापस जाना ठीक नहीं है, सिवाय इसके कि अल्लाह, हमारा रब, चाहे। हमारे रब का ज्ञान हर चीज़ को घेरे हुए है। हम केवल अल्लाह पर भरोसा करते हैं। ऐ हमारे रब! हमारे और हमारी क़ौम के बीच सत्य के साथ फ़ैसला कर। तू सबसे अच्छा फ़ैसला करने वाला है।'	**89**
وَقَالَ الْمَلَاُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ لَئِنِ اتَّبَعْتُمْ شُعَيْبًا اِنَّكُمْ اِذًا لَّخٰسِرُوْنَ	और उनकी क़ौम के काफ़िर सरदारों ने (आपस में) कहा, 'अगर तुम शुऐब का अनुसरण करोगे, तो निश्चित रूप से तुम घाटे में रहोगे।'	**90**
فَاَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَاَصْبَحُوْا فِيْ دَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ	तो उन पर भूकंप आया, और वे अपने घरों में मृत पड़े रह गए।	**91**
اَلَّذِيْنَ كَذَّبُوْا شُعَيْبًا كَاَنْ لَّمْ يَغْنَوْا فِيْهَا اَلَّذِيْنَ كَذَّبُوْا شُعَيْبًا كَانُوْا هُمُ الْخٰسِرِيْنَ	जिन लोगों ने शुऐब को झुठलाया, वे ऐसे हो गए जैसे वे वहाँ कभी रहे ही न हों। जिन्होंने शुऐब को झुठलाया, वही लोग घाटे में रहे।	**92**
فَتَوَلّٰى عَنْهُمْ وَقَالَ يٰقَوْمِ لَقَدْ اَبْلَغْتُكُمْ رِسٰلٰتِ رَبِّيْ وَنَصَحْتُ لَكُمْ فَكَيْفَ اٰسٰى عَلٰى قَوْمٍ كٰفِرِيْنَ	तो शुऐब उनसे अलग हो गए और बोले, 'ऐ मेरी क़ौम! मैंने तुम्हें अपने रब का पैग़ाम पहुँचाया और तुम्हें नसीहत दी। तो मैं काफ़िरों के लिए क्यों उदास होऊँ?'	**93**
وَمَآ اَرْسَلْنَا فِيْ قَرْيَةٍ مِّنْ نَّبِيٍّ اِلَّآ اَخَذْنَآ اَهْلَهَا بِالْبَاْسَآءِ وَالضَّرَّآءِ لَعَلَّهُمْ يَضَّرَّعُوْنَ	और हमने किसी नबी को किसी नगर में नहीं भेजा (और वहाँ के लोगों ने उस झुठलाया), सिवाय इसके कि हमने उसके निवासियों पर तंगी और मुसीबत डाली ताकि वे (नम्र होकर) झुक जाएँ।	**94**
ثُمَّ بَدَّلْنَا مَكَانَ السَّيِّئَةِ الْحَسَنَةَ حَتّٰى عَفَوْا وَّقَالُوْا قَدْ مَسَّ اٰبَآءَنَا الضَّرَّآءُ وَالسَّرَّآءُ فَاَخَذْنٰهُمْ بَغْتَةً وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ	फिर हमने उस मुसीबत को सुख-सुविधा से बदल दिया, यहाँ तक कि उनकी संतानें और धन बढ़ गया, तो वे बोले, 'हमारे पुरखों ने भी मुसीबत और सुख दोनों देखे थे।' तो हमने उन्हें अचानक सजा दी, बिना उनके होश में आए।	**95**

وَلَوْ اَنَّ اَهْلَ الْقُرٰٓى اٰمَنُوْا وَاتَّقَوْا لَفَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَرَكٰتٍ مِّنَ السَّمَاۤءِ وَالْاَرْضِ وَلٰكِنْ كَذَّبُوْا فَاَخَذْنٰهُمْ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ	**96**	और अगर नगर के लोग ईमान लाते और तक़वा अपनाते, तो हम निश्चित रूप से उनके लिए आकाश और धरती से बरकत खोल देते, लेकिन उन्होंने (हमारी आयतों को) झठलाया, तो हमने उन्हें उनके किए कर्मों के अनुसार सजा दी।
اَفَاَمِنَ اَهْلُ الْقُرٰٓى اَنْ يَّاْتِيَهُمْ بَاْسُنَا بَيَاتًا وَّهُمْ نَاۤىِٕمُوْنَ	**97**	क्या नगर के लोग हमारे अज़ाब से सुरक्षित महसूस करते हैं, जो रात में आए जब वे सो रहे हों?
اَوَاَمِنَ اَهْلُ الْقُرٰٓى اَنْ يَّاْتِيَهُمْ بَاْسُنَا ضُحًى وَّهُمْ يَلْعَبُوْنَ	**98**	या क्या नगर के लोग हमारे अज़ाब से सुरक्षित महसूस करते हैं, जो सुबह आए जब वे खेल रहे हों?
اَفَاَمِنُوْا مَكْرَ اللّٰهِ فَلَا يَاْمَنُ مَكْرَ اللّٰهِ اِلَّا الْقَوْمُ الْخٰسِرُوْنَ	**99**	क्या वे अल्लाह की सजा से सुरक्षित महसूस करते हैं (जो अपरत्याशित हो)? अल्लाह की सजा से कोई सुरक्षित नहीं महसूस करता सिवाय उन लोगों के जो घाटे में हैं।
اَوَلَمْ يَهْدِ لِلَّذِيْنَ يَرِثُوْنَ الْاَرْضَ مِنْۢ بَعْدِ اَهْلِهَاۤ اَنْ لَّوْ نَشَاۤءُ اَصَبْنٰهُمْ بِذُنُوْبِهِمْ وَنَطْبَعُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَهُمْ لَا يَسْمَعُوْنَ	**100**	क्या यह उन लोगों के लिए स्पष्ट नहीं है जो किसी नगर को उसके निवासियों के नष्ट होने के बाद विरासत में पाते हैं? कि अगर हम चाहें, तो हम उन्हें उनके गुनाहों की वजह से सजा दे सकते हैं; और हम उनके दिलों पर मुहर लगा देते हैं ताकि वे (सबक) न सुन सकें।
تِلْكَ الْقُرٰى نَقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ اَنْۢبَاۤىِٕهَا وَلَقَدْ جَاۤءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَمَا كَانُوْا لِيُؤْمِنُوْا بِمَا كَذَّبُوْا مِنْ قَبْلُ كَذٰلِكَ يَطْبَعُ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِ الْكٰفِرِيْنَ	**101**	ये वे नगर हैं जिनके कुछ किस्से हम तुम्हें सुनाते हैं। उनके रसूल उनके पास साफ़ निशानियाँ लेकर आए थे। लेकिन वे उस पर ईमान नहीं लाए जिसे उन्होंने पहले झठलाया था। इस तरह अल्लाह काफ़िरों के दिलों पर मुहर लगा देता है।
وَمَا وَجَدْنَا لِاَكْثَرِهِمْ مِّنْ عَهْدٍ وَاِنْ وَّجَدْنَاۤ اَكْثَرَهُمْ لَفٰسِقِيْنَ	**102**	और हमने उनमें से ज़्यादातर को अपनी वचनबद्धता निभाते हुए नहीं पाया। बल्कि हमने उनमें से ज़्यादातर को सख़्त अवज्ञाकारी पाया।
ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْۢ بَعْدِهِمْ مُّوْسٰى بِاٰيٰتِنَاۤ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهٖ فَظَلَمُوْا بِهَا فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِيْنَ	**103**	उनके बाद हमने मूसा को अपनी निशानियों के साथ फ़िरऔन और उसके सरदारों के पास भेजा, तो उन्होंने उन निशानियों को झठलाया। तो देखो, तबाही फैलाने वालों का अंजाम क्या हुआ।
وَقَالَ مُوْسٰى يٰفِرْعَوْنُ اِنِّيْ رَسُوْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ	**104**	और मूसा ने कहा, 'ऐ फ़िरऔन! निश्चय ही मैं सारे जहान के रब का दूत हूँ'
حَقِيْقٌ عَلٰٓى اَنْ لَّاۤ اَقُوْلَ عَلَى اللّٰهِ اِلَّا الْحَقَّ قَدْ جِئْتُكُمْ بِبَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ فَاَرْسِلْ مَعِيَ بَنِيْۤ اِسْرَاۤءِيْلَ	**105**	मुझे अल्लाह के बारे में सच्चाई कहने का हुक्म है। मैं तुम्हारे पास तुम्हारे रब की साफ़ निशानी लेकर आया हूँ तो बनी इसराइल को मेरे साथ जाने दो।'
قَالَ اِنْ كُنْتَ جِئْتَ بِاٰيَةٍ فَاْتِ بِهَاۤ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ	**106**	उसने (फ़िरऔन ने) जवाब दिया, 'अगर तुम सचमुच कोई निशानी लेकर आए हो, तो उसे दिखाओ, अगर तुम सच्चों में से हो।'

107	तो (मूसा ने) अपनी लाठी फेंकी, और वह तुरंत एक बड़ा साँप बन गया।	فَاَلْقٰى عَصَاهُ فَاِذَا هِيَ ثُعْبَانٌ مُّبِيْنٌ
108	और उसने अपना हाथ निकाला, तो वह देखने वालों के लिए सफ़ेद (चमकता हुआ) हो गया।	وَّنَزَعَ يَدَه فَاِذَا هِيَ بَيْضَاءُ لِلنّٰظِرِيْنَ
109	फ़िरऔन की क़ौम के सरदारों ने कहा, 'यह तो एक कुशल जादूगर है'	قَالَ الْمَلَاُ مِنْ قَوْمِ فِرْعَوْنَ اِنَّ هٰذَا لَسٰحِرٌ عَلِيْمٌ
110	जो तुम्हें तुम्हारे देश से निकालना चाहता है' (फ़िरऔन ने कहा), 'तो तुम्हारी क्या सलाह है?'	يُّرِيْدُ اَنْ يُّخْرِجَكُمْ مِّنْ اَرْضِكُمْ فَمَاذَا تَاْمُرُوْنَ
111	(सरदारों ने) जवाब दिया, 'उसे और उसके भाई को (कुछ समय के लिए) रोक लो और शहरों में कुछ लोगों को भेजो ताकि (जादूगरों को) इकट्ठा करें'	قَالُوْٓا اَرْجِهْ وَاَخَاهُ وَاَرْسِلْ فِي الْمَدَاۤىِٕنِ حٰشِرِيْنَ
112	ताकि वे तुम्हारे पास हर कुशल जादूगर को लाएँ'	يَاْتُوْكَ بِكُلِّ سَحّٰرٍ عَلِيْمٍ
113	और जादूगर फ़िरऔन के पास आए। उन्होंने कहा, '(क्या) हमें इनाम मिलेगा, अगर हम जीत गए?'	وَجَاۤءَ السَّحَرَةُ فِرْعَوْنَ قَالُوْٓا اِنَّ لَنَا لَاَجْرًا اِنْ كُنَّا نَحْنُ الْغٰلِبِيْنَ
114	उसने (फ़िरऔन ने) जवाब दिया, 'हाँ, बल्कि तुम मेरे करीबी लोगों में शामिल हो जाओगे'	قَالَ نَعَمْ وَاِنَّكُمْ لَمِنَ الْمُقَرَّبِيْنَ
115	उन्होंने (जादूगरों ने) कहा, 'ऐ मूसा! तुम पहले फेंकोगे, या हम फेंकें?'	قَالُوْا يٰمُوْسٰٓى اِمَّآ اَنْ تُلْقِيَ وَاِمَّآ اَنْ نَّكُوْنَ نَحْنُ الْمُلْقِيْنَ
116	उसने (मूसा ने) जवाब दिया, 'तुम पहले फेंको!' तो जब उन्होंने फेंका, तो उन्होंने लोगों की आँखों पर जादू कर दिया और उन्हें डरा दिया, क्योंकि उन्होंने बहुत बड़ा जादू दिखाया।	قَالَ اَلْقُوْا فَلَمَّآ اَلْقَوْا سَحَرُوْٓا اَعْيُنَ النَّاسِ وَاسْتَرْهَبُوْهُمْ وَجَاۤءُوْ بِسِحْرٍ عَظِيْمٍ
117	और हमने मूसा को वह्य दी, 'अपनी लाठी फेंक!' तो वह तुरंत उनकी सारी बनावटी चीज़ों को निगल गई।	وَاَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰٓى اَنْ اَلْقِ عَصَاكَ فَاِذَا هِيَ تَلْقَفُ مَا يَاْفِكُوْنَ
118	तो सत्य साबित हो गया, और जो कुछ उन्होंने किया, वह बेकार हो गया।	فَوَقَعَ الْحَقُّ وَبَطَلَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ
119	तो वे वहाँ हार गए और अपमानित होकर लौटे।	فَغُلِبُوْا هُنَالِكَ وَانْقَلَبُوْا صٰغِرِيْنَ
120	और जादूगर तुरंत सजदा करने के लिए गिर पड़े।	وَاُلْقِيَ السَّحَرَةُ سٰجِدِيْنَ
121	उन्होंने कहा, 'हम सारे जहान के रब पर ईमान लाए।'	قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ
122	(यानी) मूसा और हारून के रब पर।'	رَبِّ مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ

قَالَ فِرْعَوْنُ اٰمَنْتُمْ بِهٖ قَبْلَ اَنْ اٰذَنَ لَكُمْ اِنَّ هٰذَا لَمَكْرٌ مَّكَرْتُمُوْهُ فِى الْمَدِيْنَةِ لِتُخْرِجُوْا مِنْهَآ اَهْلَهَا فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ	फ़िरऔन न`कहा, 'तुमन`मेरी इजाज़त क`बिना उस पर ईमान क़्यों`लाया? निश्चय ही यह एक साज़िश ह`जो तुमन`इस शहर म`रची ह`ताकि इसक`निवासियों`को निकाल दो। तुम जलद ही (इसका नतीजा) जान लोगे।'	**123**
لَاُقَطِّعَنَّ اَيْدِيَكُمْ وَاَرْجُلَكُمْ مِّنْ خِلَافٍ ثُمَّ لَاُصَلِّبَنَّكُمْ اَجْمَعِيْنَ	म`निश्चिति रूप स`तुमहार`हाथ और पैर विपरीत दिशाओं म`काट दूँगा, फिर तुम सबको सलीब पर चढ़ा दूँगा।'	**124**
قَالُوْٓا اِنَّآ اِلٰى رَبِّنَا مُنْقَلِبُوْنَ	उनहोंन`(जादूगरों न) जवाब दिया, 'निश्चय ही हम अपन`रब की ओर लौटगे।'	**125**
وَمَا تَنْقِمُ مِنَّآ اِلَّآ اَنْ اٰمَنَّا بِاٰيٰتِ رَبِّنَا لَمَّا جَاءَتْنَا رَبَّنَآ اَفْرِغْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَّتَوَفَّنَا مُسْلِمِيْنَ	और तुम हमस`बदला कवेल इसलिए ल`रह`हो क्योंकि हमन`अपन`रब की आयतों पर ईमान लाया जब व`हमार`पास आईं।' (व`दुआ करन`लग), 'ऐ हमार`रब! हम`सबर द`और हम`मुसलिम (तह्न पर समरपति) की हालत म`मृत्यु द्ध।'	**126**
وَقَالَ الْمَلَاُ مِنْ قَوْمِ فِرْعَوْنَ اَتَذَرُ مُوْسٰى وَقَوْمَه لِيُفْسِدُوْا فِى الْاَرْضِ وَيَذَرَكَ وَاٰلِهَتَكَ قَالَ سَنُقَتِّلُ اَبْنَاءَهُمْ وَنَسْتَحْيٖ نِسَاءَهُمْ وَاِنَّا فَوْقَهُمْ قٰهِرُوْنَ	और फ़िरऔन की क़ौम क`सरदारों न`कहा, 'क्या तुम मूसा और उसकी क़ौम को इस दशे (मसिर) म`तबाही फलैान`और तुमह`और तुमहार`भाबद्धों को छोड़न`दोग?' (फ़िरऔन न) जवाब दिया, 'हम उनक`बटों को मार डालगे`और उनकी बटेियों को जीवति रख़गे, और निश्चय ही हम उन पर पूरी तरह हावी ह।'	**127**
قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهِ اسْتَعِيْنُوْا بِاللّٰهِ وَاصْبِرُوْا اِنَّ الْاَرْضَ لِلّٰهِ يُوْرِثُهَا مَنْ يَّشَاءُ مِنْ عِبَادِهٖ وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِيْنَ	मूसा न`अपनी क़ौम स`कहा, 'अल्लाह स`मदद माँगो और सबर करो। निश्चय ही यह धरती अल्लाह की ह; वह इस`अपन`बनद्रों म`स`जिस`चाहता ह, वारिस बनाता ह और अच्छा अंजाम तक़वा वालों क`लिए ह।'	**128**
قَالُوْٓا اُوْذِيْنَا مِنْ قَبْلِ اَنْ تَاْتِيَنَا وَمِنْ بَعْدِ مَا جِئْتَنَا قَالَ عَسٰى رَبُّكُمْ اَنْ يُّهْلِكَ عَدُوَّكُمْ وَيَسْتَخْلِفَكُمْ فِى الْاَرْضِ فَيَنْظُرَ كَيْفَ تَعْمَلُوْنَ	उनहोंन`(मूसा की क़ौम न) कहा, 'हम`तुमहार`आन`स`पहल`और तुमहार`आन`क`बाद सताया गया।' (मूसा न) जवाब दिया, 'हो सकता ह`तुमहारा रब तुमहार`दशु्मन को नषट कर द`और तुमह`धरती पर ख़लीफ़ा बनाए; फिर वह देखेगा कि तुम क्या करत`हो।'	**129**
وَلَقَدْ اَخَذْنَآ اٰلَ فِرْعَوْنَ بِالسِّنِيْنَ وَنَقْصٍ مِّنَ الثَّمَرٰتِ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُوْنَ	और निश्चय ही, हमन`फ़िरऔन और उसकी क़ौम को कई सालों तक (सूख़ा) और फलों की कमी स`सजा दी, ताकि व`सबक ल।	**130**
فَاِذَا جَاءَتْهُمُ الْحَسَنَةُ قَالُوْا لَنَا هٰذِه وَاِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ يَّطَّيَّرُوْا بِمُوْسٰى وَمَنْ مَّعَه اَلَآ اِنَّمَا طٰٓئِرُهُمْ عِنْدَ اللّٰهِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ	फिर जब उनक`पास अच्छाई (ख़शुहाली) आई, तो व`बोल, 'यह हमार`(करमो) की वजह स`ह' और अगर उनह`कोई मसीबत पहुँची, तो व`मूसा और उसक`साथियों को बदनसीब मानत`थ। जान लो, उनकी तक़दीर अल्लाह क`हाथ म`ह, लेकिन उनम`स`ज़्यादातर लोग नहीं जानत।	**131**
وَقَالُوْا مَهْمَا تَاْتِنَا بِه مِنْ اٰيَةٍ لِّتَسْحَرَنَا بِهَا فَمَا نَحْنُ لَكَ بِمُؤْمِنِيْنَ	और उनहोंन`(मूसा स) कहा, 'तुम हमार`पास जो भी निशानी लाओ ताकि हम`जादू`स`बहकाओ, हम तुम पर ईमान नहीं लाएँगे।'	**132**

133	तो हमने उन पर तूफ़ान, टिड्डियाँ, जूँ, मेंढक और ख़ून (पानी का ख़ून बन जाना) साफ़ निशानियों के रूप में भेजा, लेकिन वे घमंड करते रहे और वे गुनहगार लोग थे।	فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمُ الطُّوْفَانَ وَالْجَرَادَ وَالْقُمَّلَ وَالضَّفَادِعَ وَالدَّمَ اٰيٰتٍ مُّفَصَّلٰتٍ فَاسْتَكْبَرُوْا وَكَانُوْا قَوْمًا مُّجْرِمِيْنَ
134	और जब उन पर अज़ाब (जो बताया गया था) आया, तो वे बोले, 'ऐ मूसा! हमारे लिए अपने रब से उस वादे के मुताबिक़ दुआ कर जो उसने तुमसे किया है। अगर तुम हमसे यह अज़ाब हटा दोगे, तो हम निश्चित रूप से तुम पर ईमान लाएँगे और बनी इसराइल को तुम्हारे साथ जाने देंगे।'	وَلَمَّا وَقَعَ عَلَيْهِمُ الرِّجْزُ قَالُوْا يٰمُوْسَى ادْعُ لَنَا رَبَّكَ بِمَا عَهِدَ عِنْدَكَ لَئِنْ كَشَفْتَ عَنَّا الرِّجْزَ لَنُؤْمِنَنَّ لَكَ وَلَنُرْسِلَنَّ مَعَكَ بَنِيْٓ اِسْرَاۤءِيْلَ
135	लेकिन जब हमने उस अज़ाब को उनसे एक निश्चित समय तक के लिए हटा लिया, जो उन्हें पूरा करना था, तो उन्होंने वादा तोड़ दिया।	فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُمُ الرِّجْزَ اِلٰٓى اَجَلٍ هُمْ بَالِغُوْهُ اِذَا هُمْ يَنْكُثُوْنَ
136	तो हमने उनमें से कुछ को सज़ा दी, और हमने उन्हें समुद्र में डुबो दिया क्योंकि उन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया और उनसे बेपरवाह रहे।	فَانْتَقَمْنَا مِنْهُمْ فَاَغْرَقْنٰهُمْ فِى الْيَمِّ بِاَنَّهُمْ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَكَانُوْا عَنْهَا غٰفِلِيْنَ
137	और हमने उस क़ौम को, जो सताई गई थी, धरती के पूर्वी और पश्चिमी हिस्सों का, जिसे हमने बरकत दी थी, वारिस बनाया। और तुम्हारे रब का अच्छा वचन बनी इसराइल के लिए उनकी सब्र की वजह से पूरा हुआ। और हमने वह सब नष्ट कर दिया जो फ़िरऔन और उसकी क़ौम ने बनाया था और जो कुछ उन्होंने खड़ा किया था।	وَاَوْرَثْنَا الْقَوْمَ الَّذِيْنَ كَانُوْا يُسْتَضْعَفُوْنَ مَشَارِقَ الْاَرْضِ وَمَغَارِبَهَا الَّتِيْ بٰرَكْنَا فِيْهَا وَتَمَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ الْحُسْنٰى عَلٰى بَنِيْٓ اِسْرَاۤءِيْلَ بِمَا صَبَرُوْا وَدَمَّرْنَا مَا كَانَ يَصْنَعُ فِرْعَوْنُ وَقَوْمُه وَمَا كَانُوْا يَعْرِشُوْنَ
138	और हमने बनी इसराइल को समुद्र (लाल सागर के उत्तरी हिस्से) के पार उतारा। जब वे एक ऐसी क़ौम के पास पहुँचे जो अपनी मूर्तियों की पूजा में लगी थी, तो उन्होंने (बनी इसराइल ने) कहा, 'ऐ मूसा! हमारे लिए भी एक माबूद (मूर्ति) बना दे जैसे उनके पास कई माबूद (मूर्तियाँ) हैं।' (मूसा ने) जवाब दिया, 'निश्चय ही तुम लोग नासमझ हो।'	وَجٰوَزْنَا بِبَنِيْٓ اِسْرَاۤءِيْلَ الْبَحْرَ فَاَتَوْا عَلٰى قَوْمٍ يَّعْكُفُوْنَ عَلٰٓى اَصْنَامٍ لَّهُمْ قَالُوْا يٰمُوْسَى اجْعَلْ لَّنَآ اِلٰهًا كَمَا لَهُمْ اٰلِهَةٌ قَالَ اِنَّكُمْ قَوْمٌ تَجْهَلُوْنَ
139	निश्चय ही, वे जिस (विश्वास) पर हैं, वह नष्ट हो जाएगा और जो कुछ वे करते हैं, वह बेकार है।'	اِنَّ هٰٓؤُلَاۤءِ مُتَبَّرٌ مَّا هُمْ فِيْهِ وَبٰطِلٌ مَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ
140	उन्होंने (मूसा ने) कहा, 'क्या मैं तुम्हारे लिए अल्लाह के सिवा कोई और माबूद ढूँढूँ जबकि उसने तुम्हें उस समय के सारे लोगों पर श्रेष्ठता दी है?'	قَالَ اَغَيْرَ اللّٰهِ اَبْغِيْكُمْ اِلٰهًا وَّهُوَ فَضَّلَكُمْ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ
141	और (ऐ बनी इसराइल, याद करो) जब हमने तुम्हें फ़िरऔन और उसकी क़ौम से बचा लिया, जो तुम्हें बहुत सख़्त सज़ा देते थे, वे तुम्हारे बेटों को मार डालते थे और तुम्हारी बेटियों को जीवित रखते थे। और इसमें तुम्हारे रब की ओर से एक बड़ी परीक्षा थी।	وَاِذْ اَنْجَيْنٰكُمْ مِّنْ اٰلِ فِرْعَوْنَ يَسُوْمُوْنَكُمْ سُوْٓءَ الْعَذَابِ يُقَتِّلُوْنَ اَبْنَاۤءَكُمْ وَيَسْتَحْيُوْنَ نِسَاۤءَكُمْ وَفِيْ ذٰلِكُمْ بَلَاۤءٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ عَظِيْمٌ

وَوٰعَدْنَا مُوْسٰى ثَلٰثِيْنَ لَيْلَةً وَّاَتْمَمْنٰهَا بِعَشْرٍ فَتَمَّ مِيْقَاتُ رَبِّهٖٓ اَرْبَعِيْنَ لَيْلَةً ۚ وَقَالَ مُوْسٰى لِاَخِيْهِ هٰرُوْنَ اخْلُفْنِيْ فِيْ قَوْمِيْ وَاَصْلِحْ وَلَا تَتَّبِعْ سَبِيْلَ الْمُفْسِدِيْنَ	और हमन॓ मूसा स॓ (तौरात दने॓ का) तीस रातों॑ का वादा कयि, और हमन॓ उस॓ दस (रातो) क॓ साथ पूरा कयि, तो तमुहार॓ रब का नरि॑धारति समय चालीस रात॑ हो गया। और मूसा न॓ अपन॓ भाई हारून स॓ कहा, 'मरी॑ कौ॑म म॑ मरी॑ जगह लो, और (खद्द और कौ॑म को) सधुारो, और तबाही फलैान॓ वालों॑ का रासत़ा न अपनाओ।'	142
وَلَمَّا جَاءَ مُوْسٰى لِمِيْقَاتِنَا وَكَلَّمَهٗ رَبُّهٗ ۙ قَالَ رَبِّ اَرِنِيْٓ اَنْظُرْ اِلَيْكَ ۭ قَالَ لَنْ تَرٰىنِيْ وَلٰكِنِ انْظُرْ اِلَى الْجَبَلِ فَاِنِ اسْتَقَرَّ مَكَانَهٗ فَسَوْفَ تَرٰىنِيْ ۚ فَلَمَّا تَجَلّٰى رَبُّهٗ لِلْجَبَلِ جَعَلَهٗ دَكًّا وَّخَرَّ مُوْسٰى صَعِقًا ۚ فَلَمَّآ اَفَاقَ قَالَ سُبْحٰنَكَ تُبْتُ اِلَيْكَ وَاَنَا اَوَّلُ الْمُؤْمِنِيْنَ	और जब मूसा हमार॓ नरि॑धारति समय पर (मनुाजात क॓ लएि) आया और उसक॓ रब न॓ उसस॓ (सीध) बात की, तो (मूसा न) कहा, 'ऐ मरे॓ रब! मझु॓ (अपना दीदार) दखिा ताकि॑ म॑ तझु॓ देख सकूँ।' (अल़लाह न) कहा, 'त॑ मझु॓ (सामरथ्य स) नहीं॑ देख पाएगा, लकेनि उस पहाड़ को देख, अगर वह अपनी जगह सथि॑र रहता ह॑ै तो त॑ मझु॓ देख पाएगा।' तो जब उसक॓ रब न॓ उस पहाड़ पर (अपनी शान) ज़ाहरि की, तो वह पहाड़ चूर-चूर हो गया और मूसा बहेोश होकर गरि पड़ा। जब वह होश म॑ आया, तो उसन॓ कहा, 'त॑ महमिावान ह॑ै म॑ तझु॓ स॓ तौबा करता हू॑ँ और म॑ सबस॓ पहल॓ ईमान लान॓ वालों॑ म॑ स॓ हू॑ँ।'	143
قَالَ يٰمُوْسٰٓى اِنِّى اصْطَفَيْتُكَ عَلَى النَّاسِ بِرِسٰلٰتِيْ وَبِكَلَامِيْ ۡ فَخُذْ مَآ اٰتَيْتُكَ وَكُنْ مِّنَ الشّٰكِرِيْنَ	(अल़लाह न) कहा, 'ऐ मूसा! मन॑ै तझु॓ अपन॓ पगै़ाम और अपन॓ कलाम क॓ लएि बाकी इंसानों॑ स॓ चनु लयि ह॑ै, तो जो मन॑ै तझु॓ दयि ह॑ै उस॓ मज़बतू स॓ थाम और शक्र करन॓ वालों॑ म॑ शामलि हो।'	144
وَكَتَبْنَا لَهٗ فِي الْاَلْوَاحِ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ مَّوْعِظَةً وَّتَفْصِيْلًا لِّكُلِّ شَيْءٍ فَخُذْهَا بِقُوَّةٍ وَّاْمُرْ قَوْمَكَ يَاْخُذُوْا بِاَحْسَنِهَا سَاُورِيْكُمْ دَارَ الْفٰسِقِيْنَ	और हमन॓ मूसा क॓ लएि लौहों॑ (तौरात) पर हर चीज़ को सबक और हर चीज़ की व्याख्या क॓ रूप म॑ लखि दयि; तो (हमन॓ कहा), 'इस॓ मज़बतू स॓ थाम और अपनी कौ॑म को हक्म द॓ कि॑ व॓ इस॓ सबस॓ अचछ॓ तरीक॓ स॓ अपनाएँ। म॑ तमुह॑ अवज्ञाकारियों॑ का ठकिाना दखिाऊँगा।'	145
سَاَصْرِفُ عَنْ اٰيٰتِيَ الَّذِيْنَ يَتَكَبَّرُوْنَ فِي الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ ۭ وَاِنْ يَّرَوْا كُلَّ اٰيَةٍ لَّا يُؤْمِنُوْا بِهَا ۚ وَاِنْ يَّرَوْا سَبِيْلَ الرُّشْدِ لَا يَتَّخِذُوْهُ سَبِيْلًا ۚ وَاِنْ يَّرَوْا سَبِيْلَ الْغَيِّ يَتَّخِذُوْهُ سَبِيْلًا ۭ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَكَانُوْا عَنْهَا غٰفِلِيْنَ	म॑ अपनी नशिानयिों॑ स॓ उन लोगों॑ को भटकाऊँगा जो धरती पर बनिा हक॓ क॓ घमंड करत॓ हों॑ भल॓ ही व॓ हर नशिानी देख ल॑ै, व॓ उस पर ईमान नहीं॑ लाएँगे। और अगर व॓ हदिायत का रासत़ा देख॑ै, तो उस॓ नहीं॑ अपनाएँगे, लकेनि अगर व॓ गमुराही का रासत़ा देख॑ै, तो उस॓ अपनाएँगे। ऐसा इसलएि ह॑ै कय॓ोंकि उनहो॑न॓ हमारी आयतों॑ को झठुलाया और उनस॓ बेपरवाह रह॓।	146
وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَلِقَاۗءِ الْاٰخِرَةِ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ ۭ هَلْ يُجْزَوْنَ اِلَّا مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ	और जनि लोगों॑ न॓ हमारी नशिानयिों॑ और आख़रि॑त की मलुाक़ात को झठुलाया, उनक॓ कर्म बकेार हो गए। उनह॑ उनक॓ कएि कर्मों॑ क॓ सवि और क्या बदला दयि जाएगा?	147
وَاتَّخَذَ قَوْمُ مُوْسٰى مِنْۢ بَعْدِهٖ مِنْ حُلِيِّهِمْ عِجْلًا جَسَدًا لَّهٗ خُوَارٌ ۭ اَلَمْ يَرَوْا اَنَّهٗ لَا يُكَلِّمُهُمْ وَلَا يَهْدِيْهِمْ سَبِيْلًا ۘ اِتَّخَذُوْهُ وَكَانُوْا ظٰلِمِيْنَ	और मूसा की कौ॑म न॑, उनक॓ (सनिाई पर्वत पर) जान॓ क॓ बाद, अपन॓ गहनों॑ स॓ एक बछड़े की मूर्त बनाई जो आवाज़ करती थी। क्या उनह॑ नहीं॑ पता था कि॑ वह (बछड़ा) न तो उनस॓ बात कर सकता था और न उनह॑ कोई रासत़ा दखिा सकता था? उनहो॑न॓ उस॓ (माबद्द) बनाया। व॓ ज़ालमि लोग थ॓।	148

وَلَمَّا سُقِطَ فِيْٓ اَيْدِيْهِمْ وَرَاَوْا اَنَّهُمْ قَدْ ضَلُّوْا قَالُوْا لَىِٕنْ لَّمْ يَرْحَمْنَا رَبُّنَا وَيَغْفِرْ لَنَا لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ	**149**	और जब उनह॒ अपनी करतूत पर पछतावा हुआ और उनहोंन॑े जाना कि वे भटक गए, तो वे बोल,े 'अगर हमारा रब हम पर रहम न करेगा और हम॑े माफ़ न करेगा, तो हम निश्चित रू॒प स॑े घाट॑े म॑े रहेंगे।'
وَلَمَّا رَجَعَ مُوْسٰٓى اِلٰى قَوْمِهٖ غَضْبَانَ اَسِفًا قَالَ بِئْسَمَا خَلَفْتُمُوْنِيْ مِنْ بَعْدِيْ اَعَجِلْتُمْ اَمْرَ رَبِّكُمْ وَاَلْقَى الْاَلْوَاحَ وَاَخَذَ بِرَأْسِ اَخِيْهِ يَجُرُّهٗٓ اِلَيْهِ قَالَ ابْنَ اُمَّ اِنَّ الْقَوْمَ اسْتَضْعَفُوْنِيْ وَكَادُوْا يَقْتُلُوْنَنِيْ فَلَا تُشْمِتْ بِيَ الْاَعْدَاۤءَ وَلَا تَجْعَلْنِيْ مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ	**150**	और जब मूसा अपनी क़ौम क॑े पास गुस्स॑े और दुख़ी मन स॑े लौटा, तो उसन॑े कहा, 'मेर॑े जान॑े क॑े बाद तुम॑ने कितना बुरा काम किया! क्या तुम अपन॑े रब क॑े वाद॑े को जलदबाज़ी म॑े लाना चाहत॑े हो?' मूसा न॑े लौहों (तौरात) को फेंक दिया और अपन॑े भाई (हारून) का सिर पकड़कर अपनी ओर खींचा। (हारून न॑े) कहा, 'ऐ मेरी मा॑ँ क॑े बेटे! इस क़ौम न॑े मुझ॑े कमज़ोर समझा और मुझ॑े लगभग मार डाला, तो मेर॑े दुश्मनों को मेरी बदक़िस्मती पर हँसन॑े का मौक़ा न द॑े और मुझ॑े ज़ालिमों म॑े शामिल न कर।'
قَالَ رَبِّ اغْفِرْ لِيْ وَلِاَخِيْ وَاَدْخِلْنَا فِيْ رَحْمَتِكَ وَاَنْتَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ	**151**	उसन॑े (मूसा न॑े) दुआ की, 'ऐ मेर॑े रब! मुझ॑े और मेर॑े भाई को माफ़ कर और हम॑े अपनी रहमत म॑े शामिल कर। तू॒ सबस॑े ज़्यादा रहम करन॑े वाला है॒'
اِنَّ الَّذِيْنَ اتَّخَذُوا الْعِجْلَ سَيَنَالُهُمْ غَضَبٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ وَذِلَّةٌ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَكَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُفْتَرِيْنَ	**152**	निश्चय ही, जिन लोगों न॑े (मूर्ति) बछड़ॅ को (माबूद) बनाया, उनह॒ उनक॑े रब की नाराज़गी और दुनिया की ज़िंदगी म॑े अपमान मिलेगा। इस तरह हम झूठ गढ़न॑े वालों को बदला देत॑े है॒
وَالَّذِيْنَ عَمِلُوا السَّيِّاٰتِ ثُمَّ تَابُوْا مِنْ بَعْدِهَا وَاٰمَنُوْٓا اِنَّ رَبَّكَ مِنْ بَعْدِهَا لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ	**153**	और जो लोग बुर॑े कर्म करत॑े ह॒ै फिर तौबा करत॑े ह॒ै और ईमान लात॑े ह॒ै, निश्चय ही उसक॑े बाद तुम्हारा रब बहुत माफ़ करन॑े वाला, बहुत दयालु ह॒ै
وَلَمَّا سَكَتَ عَنْ مُّوْسَى الْغَضَبُ اَخَذَ الْاَلْوَاحَ وَفِيْ نُسْخَتِهَا هُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّلَّذِيْنَ هُمْ لِرَبِّهِمْ يَرْهَبُوْنَ	**154**	और जब मूसा का गुस्सा ठंडा हुआ, तो उसन॑े (फिर स॒े) लौहों (तौरात) को उठाया; उसकी तहरीर म॑े उन लोगों क॑े लिए हिदायत और रहमत थी जो अपन॑े रब स॑े डरत॑े थ॑े
وَاخْتَارَ مُوْسٰى قَوْمَهٗ سَبْعِيْنَ رَجُلًا لِّمِيْقَاتِنَا فَلَمَّآ اَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ قَالَ رَبِّ لَوْ شِئْتَ اَهْلَكْتَهُمْ مِّنْ قَبْلُ وَاِيَّايَ اَتُهْلِكُنَا بِمَا فَعَلَ السُّفَهَاۤءُ مِنَّا اِنْ هِيَ اِلَّا فِتْنَتُكَ تُضِلُّ بِهَا مَنْ تَشَاۤءُ وَتَهْدِيْ مَنْ تَشَاۤءُ اَنْتَ وَلِيُّنَا فَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا وَاَنْتَ خَيْرُ الْغٰفِرِيْنَ	**155**	और मूसा न॑े अपनी क़ौम म॑े स॑े सत्तर लोगों को (हमस॑े तौबा माँगन॑े क॑े लिए) हमार॑े निर्धारित समय पर चुना। जब उनह॒ भूकंप न॑े पकड़ा, तो मूसा न॑े कहा, 'ऐ मेर॑े रब! अगर तू॒ चाहता, तो इसस॑े पहल॑े उनह॒ और मुझ॑े नष्ट कर देता। क्या तू॒ हम॑े हम म॑े स॑े कुछ नासमझ लोगों की करतूत की वजह स॑े नष्ट करेगा? यह तेरी ओर स॑े एक आज़माइश ह॒ै, तू॒ इसस॑े जिस॑े चाहता ह॒ै गुमराह करता ह॒ै और जिस॑े चाहता ह॒ै हिदायत देता ह॒ै तू॒ हमारा सरपरस्त ह॒ै, तो हम॑े माफ़ कर और हम पर रहम कर। तू॒ सबस॑े अच्छा माफ़ करन॑े वाला ह॒ै'
وَاكْتُبْ لَنَا فِيْ هٰذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِي الْاٰخِرَةِ اِنَّا هُدْنَآ اِلَيْكَ قَالَ عَذَابِيْٓ اُصِيْبُ بِهٖ مَنْ اَشَاۤءُ وَرَحْمَتِيْ وَسِعَتْ كُلَّ شَيْءٍ فَسَاَكْتُبُهَا لِلَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَالَّذِيْنَ هُمْ بِاٰيٰتِنَا يُؤْمِنُوْنَ	**156**	और हमार॑े लिए इस दुनिया और आख़िरत म॑े भलाई लिख दे। निश्चय ही, हम (तौबा करक॑े) तेरी ओर लौट आए ह॒ैं' (अल्लाह न॑े) कहा, 'मेरा अज़ाब जिस॑े म॑ै चाहता हू॒ँ उस पर डालता हू॒ँ और मेरी रहमत हर चीज़ को घेरे हुए ह॒ै तो म॑ै अपनी रहमत उन लोगों क॑े लिए लिख्गूँ॒ा जो तक़वा अपनात॑े ह॒ैं, ज़कात देत॑े ह॒ैं और हमारी आयतों पर ईमान लात॑े ह॒ैं'

157	(यानी) वे लोग जो उस रसूल, नबी-ए-उम्मी (जो पढ़ना-लिखना नहीं जानता) का अनुसरण करते हैं, जिसका ज़िक्र उनहें उनके पास मौजूद तौरात और इंजील में लिखा हुआ मिलता है, जो उनहें नेके काम करने का हुक्म देता है और बुरे कामों से रोकता है, और उनके लिए अच्छी चीज़ों को हलाल करता है और बुरी चीज़ों को हराम करता है, और उन पर से बोझ और जंजीरें हटाता है जो उन पर थीं। जो लोग उस पर ईमान लाए, उसका सम्मान करते हैं, उसकी मदद करते हैं और उस नूर (अल-क़ुरआन) का अनुसरण करते हैं जो उसके साथ उतारा गया है, वही लोग कामयाब हैं।	اَلَّذِيْنَ يَتَّبِعُوْنَ الرَّسُوْلَ النَّبِيَّ الْاُمِّيَّ الَّذِيْ يَجِدُوْنَه مَكْتُوْبًا عِنْدَهُمْ فِى التَّوْرٰىةِ وَالْاِنْجِيْلِ يَأْمُرُهُمْ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهٰهُمْ عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُحِلُّ لَهُمُ الطَّيِّبٰتِ وَيُحَرِّمُ عَلَيْهِمُ الْخَبٰٓئِثَ وَيَضَعُ عَنْهُمْ اِصْرَهُمْ وَالْاَغْلٰلَ الَّتِيْ كَانَتْ عَلَيْهِمْ فَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِه وَعَزَّرُوْهُ وَنَصَرُوْهُ وَاتَّبَعُوا النُّوْرَ الَّذِيْٓ اُنْزِلَ مَعَه اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ
158	कहो (मुहम्मद), 'ऐ लोगो! मैं तुम सबके लिए अल्लाह का रसूल हूँ जिसका आकाश और धरती का राज्य है; उसके सिवा कोई माबूद नहीं है, वही ज़िंदगी देता है और वही मारता है, तो अल्लाह और उसके रसूल, नबी-ए-उम्मी पर ईमान लाओ, जो अल्लाह और उसके कलिमों (उसकी किताबों) पर ईमान रखता है उसका अनुसरण करो, ताकि तुम हिदायत पाओ।'	قُلْ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنِّيْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَيْكُمْ جَمِيْعًا الَّذِيْ لَه مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ الَّذِيْ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَكَلِمٰتِه وَاتَّبِعُوْهُ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ
159	और मूसा की क़ौम में एक समूह ऐसा था जो सत्य के आधार पर (लोगों को) हिदायत देता था और उसी के आधार पर इंसाफ़ करता था।	وَمِنْ قَوْمِ مُوْسٰٓى اُمَّةٌ يَّهْدُوْنَ بِالْحَقِّ وَبِه يَعْدِلُوْنَ
160	और हमने उनहें बारह क़बीलों में बाँट दिया, जो हर एक बड़ा समूह था, और हमने मूसा को वह्य दी जब उनकी क़ौम ने उससे पानी माँगा, 'अपनी लाठी से चट्टान पर मारो!' तो उस (चट्टान) से बारह चश्मे फूट पड़े हर क़बीले ने अपने पीने का स्थान जान लिया। और हमने उन पर बादल की छाया की और उनके लिए मन्न और सलवा उतारा। (हमने कहा), 'जो अच्छी रोज़ी हमने तुम्हें दी है, उसे खाओ।' उनहोंने हम पर ज़ुल्म नहीं किया, बल्कि वे अपनी आत्माओं पर ज़ुल्म करते थे।	وَقَطَّعْنٰهُمُ اثْنَتَيْ عَشْرَةَ اَسْبَاطًا اُمَمًا وَاَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰٓى اِذِ اسْتَسْقٰىهُ قَوْمُه اَنِ اضْرِبْ بِّعَصَاكَ الْحَجَرَ فَانْۢبَجَسَتْ مِنْهُ اثْنَتَا عَشْرَةَ عَيْنًا قَدْ عَلِمَ كُلُّ اُنَاسٍ مَّشْرَبَهُمْ وَظَلَّلْنَا عَلَيْهِمُ الْغَمَامَ وَاَنْزَلْنَا عَلَيْهِمُ الْمَنَّ وَالسَّلْوٰى كُلُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ وَمَا ظَلَمُوْنَا وَلٰكِنْ كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ
161	और (याद करो) जब उनसे (बनी इसराइल से) कहा गया, 'इस नगर (बैतुलमक़दिस) में रहो और इसके (उपज) से जहाँ चाहो खाओ।' और कहो, 'हम हमारे गुनाहों से मुक्त करो और इसके दरवाज़े में सिर झुकाकर जाओ, तो हम तुम्हारे गुनाह माफ़ कर देंगे।' हम नेकी करने वालों को और ज़्यादा (इनाम) देंगे।	وَاِذْ قِيْلَ لَهُمُ اسْكُنُوْا هٰذِهِ الْقَرْيَةَ وَكُلُوْا مِنْهَا حَيْثُ شِئْتُمْ وَقُوْلُوْا حِطَّةٌ وَّادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا نَّغْفِرْ لَكُمْ خَطِيْٓـٰٔتِكُمْ سَنَزِيْدُ الْمُحْسِنِيْنَ
162	तो उनमें से ज़ालिमों ने उस बात को बदल दिया जो उनसे कही गई थी, तो हमने उनकी ज़ालिमी की वजह से उन पर आकाश से अज़ाब भेजा।	فَبَدَّلَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْهُمْ قَوْلًا غَيْرَ الَّذِيْ قِيْلَ لَهُمْ فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِجْزًا مِّنَ السَّمَاۤءِ بِمَا كَانُوْا يَظْلِمُوْنَ

وَسْـَٔلْهُمْ عَنِ الْقَرْيَةِ الَّتِيْ كَانَتْ حَاضِرَةَ الْبَحْرِ ۘاِذْ يَعْدُوْنَ فِي السَّبْتِ اِذْ تَأْتِيْهِمْ حِيْتَانُهُمْ يَوْمَ سَبْتِهِمْ شُرَّعًا وَّيَوْمَ لَا يَسْبِتُوْنَ ۙلَا تَأْتِيْهِمْ ۛكَذٰلِكَ نَبْلُوْهُمْ بِمَا كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ	**163**	और बनी इसराइल स॓उस नगर क॓बार॓ म॓पछो जो समद्र क॓ कनिार॓ बसा था, जब उनहों॓न॓ सबत (शनविार) क॓ दनि नयिम तोड़ा, (यानी) जब उनक॓ पास मछलयिाँ पानी की सतह पर तरैती हुई आती थीं, जबकि गरै-सबत क॓ दनिों॓ म॓ मछलयिाँ उनक॓ पास नहीं॓ आती थीं। इस तरह हम उनकी अवज्ञा की वजह स॓ उनकी आज़माइश करत॓ थ॓।
وَاِذْ قَالَتْ اُمَّةٌ مِّنْهُمْ لِمَ تَعِظُوْنَ قَوْمًا ۙاللّٰهُ مُهْلِكُهُمْ اَوْ مُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا شَدِيْدًا ۭقَالُوْا مَعْذِرَةً اِلٰى رَبِّكُمْ وَلَعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ	**164**	और (याद करो) जब उनम॓स॓ एक समहू न॓ कहा, 'तमु उन लोगों॓ को क्यों॓ नसीहत दते॓ हो जनि॓हं॓ अल्लाह नष्ट करन॓ वाला ह॓ै या बहतु सख़्त अज़ाब दने॓ वाला ह॓ै?' उनहों॓न॓ जवाब दयिा, 'ताकि हम॓ अपन॓ रब क॓ सामन॓ जवाबदहेी स॓ छुटकारा मलि॓, और ताकि व॓ तक़वा अपनाएँ।'
فَلَمَّا نَسُوْا مَا ذُكِّرُوْا بِهٖٓ اَنْجَيْنَا الَّذِيْنَ يَنْهَوْنَ عَنِ السُّوْۗءِ وَاَخَذْنَا الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا بِعَذَابٍۢ بَـِٕيْسٍۢ بِمَا كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ	**165**	तो जब उनहों॓न॓ उस चतेावनी को भलुा दयिा जो उनह॓ं दी गई थी, तो हमन॓ उन लोगों॓ को बचा लयिा जो बरुाई स॓ रोकत॓ थ॓ और ज़ालमिों॓ पर उनकी अवज्ञा की वजह स॓ सख़्त अज़ाब डाला।
فَلَمَّا عَتَوْا عَنْ مَّا نُهُوْا عَنْهُ قُلْنَا لَهُمْ كُوْنُوْا قِرَدَةً خٰسِـِٕيْنَ	**166**	तो जब उनहों॓न॓ उस चीज़ क॓ प्रति अकड़ दखिाई जो उनह॓ं मना की गई थी, तो हमन॓ उनस॓ कहा, 'बंदर बन जाओ, जो नीच हों।'
وَاِذْ تَاَذَّنَ رَبُّكَ لَيَبْعَثَنَّ عَلَيْهِمْ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ مَنْ يَّسُوْمُهُمْ سُوْۗءَ الْعَذَابِ ۭاِنَّ رَبَّكَ لَسَرِيْعُ الْعِقَابِ ۚوَاِنَّهٗ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ	**167**	और (याद करो) जब तमुहार॓ रब न॓ ऐलान कयिा कि वह नश्चिति रूप स॓ (यहद्दुयिों॓ पर) ऐस॓ लोगों॓ को भजेगेा जो क़यिामत क॓ दनि तक उन पर बहतु बरुी सजा डालगेा। नश्चिय ही तमुहारा रब सजा दने॓ म॓ बहतु तज़े ह॓ै, और नश्चिय ही वह बहतु माफ़ करन॓ वाला, बहतु दयाल ह॓ै।
وَقَطَّعْنٰهُمْ فِي الْاَرْضِ اُمَمًا ۚمِنْهُمُ الصّٰلِحُوْنَ وَمِنْهُمْ دُوْنَ ذٰلِكَ ۚوَبَلَوْنٰهُمْ بِالْحَسَنٰتِ وَالسَّيِّاٰتِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ	**168**	और हमन॓ उनह॓ं इस दनुयिा म॓ कई समहूों॓ म॓ बाँट दयिा; उनम॓ कछु नके लोग थ॓ और कछु ऐस॓ नहीं॓ थ॓। और हमन॓ उनकी अच्छी और बरुी (नमेतों॓ और मसुीबतों॓) स॓ आज़माइश की, ताकि व॓ (सत्य की ओर) लौट आएँ।
فَخَلَفَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ خَلْفٌ وَّرِثُوا الْكِتٰبَ يَاْخُذُوْنَ عَرَضَ هٰذَا الْاَدْنٰى وَيَقُوْلُوْنَ سَيُغْفَرُ لَنَا ۚوَاِنْ يَّاْتِهِمْ عَرَضٌ مِّثْلُهٗ يَاْخُذُوْهُ ۭاَلَمْ يُؤْخَذْ عَلَيْهِمْ مِّيْثَاقُ الْكِتٰبِ اَنْ لَّا يَقُوْلُوْا عَلَى اللّٰهِ اِلَّا الْحَقَّ وَدَرَسُوْا مَا فِيْهِ ۭوَالدَّارُ الْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ ۭاَفَلَا تَعْقِلُوْنَ	**169**	उनक॓ बाद (बरुी) लोग आए जनिहों॓न॓ तौरात को वरिासत म॓ पाया, जो इस दनुयिा की तचु्छ चीज़ों॓ को लते॓ थ॓। फरि व॓ कहत॓ थ॓, 'हम॓ माफ़ कर दयिा जाएगा।' और अगर उनक॓ पास फरि स॓ वैसी ही दनुयिा की चीज़ आतीं, तो व॓ उस॓ भी ल॓ लते॓। क्या उनक॓ साथ कतिाब (तौरात) म॓ यह वचन नहीं॓ लयिा गया था कि व॓ अल्लाह क॓ बार॓ म॓ सवािय सत्य क॓ कछु न कहगे॓, जबकि उनहों॓न॓ उसका अध्ययन कयिा था? आख़रित का घर तक़वा वालों॓ क॓ लएि बहेतर ह॓ै तो क्या तम॓ नहीं॓ समझत?
وَالَّذِيْنَ يُمَسِّكُوْنَ بِالْكِتٰبِ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ ۭاِنَّا لَا نُضِيْعُ اَجْرَ الْمُصْلِحِيْنَ	**170**	और जो लोग कतिाब (तौरात) को मज़बतूी स॓ थामत॓ ह॓ैं और नमाज़ क़ायम करत॓ ह॓ैं, (उनह॓ं इनाम मलिगेा)। नश्चिय ही, हम नके लोगों॓ का इनाम जाया नहीं॓ करत॓।

171	और (याद करो) जब हमने उनके ऊपर पहाड़ को इस तरह उठाया जैसे वह बादल की छाया हो और उनहें यक़ीन हो गया कि वह उन पर गिरि पड़ेगा। (और हमने उनसे कहा), 'जो कछु हमने तुमहें दिया है उसे मज़बूती से थामो, और उसमें जो कछु है उसे हमेशा याद रखो (और अमल करो) ताकि तुम तक़वा वाले बन जाओ।'	وَاِذْ نَتَقْنَا الْجَبَلَ فَوْقَهُمْ كَاَنَّهٗ ظُلَّةٌ وَّظَنُّوْٓا اَنَّهٗ وَاقِعٌۢ بِهِمْ ۚ خُذُوْا مَآ اٰتَيْنٰكُمْ بِقُوَّةٍ وَّاذْكُرُوْا مَا فِيْهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ
172	और (याद करो) जब तुमहारे रब ने आदम की संतानों की कमर से उनकी औलाद को निकाला और उनकी आतमाओं से गवाही ली (यह कहकर), 'क्या मैं तुमहारा रब नहीं हूँ?' उनहोंने जवाब दिया, 'हाँ, (तू हमारा रब है), हम गवाही देते हैं।' (हमने ऐसा किया) ताकि क़ियामत के दिन तुम न कहो, 'हम तो इस बात से बेपरवाह थे।'	وَاِذْ اَخَذَ رَبُّكَ مِنْۢ بَنِيْٓ اٰدَمَ مِنْ ظُهُوْرِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ وَاَشْهَدَهُمْ عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ ۚ اَلَسْتُ بِرَبِّكُمْ ۭ قَالُوْا بَلٰى ۚ شَهِدْنَا ۚ اَنْ تَقُوْلُوْا يَوْمَ الْقِيٰمَةِ اِنَّا كُنَّا عَنْ هٰذَا غٰفِلِيْنَ
173	या ताकि तुम न कहो, 'हमारे पुरखों ने पहले ही शरिक़ किया था, और हम तो उनके बाद की नसल थीं। तो क्या तू हमें उन लोगों की करतूत की वजह से नष्ट करेगा जो गुमराह थे?'	اَوْ تَقُوْلُوْٓا اِنَّمَآ اَشْرَكَ اٰبَاۗؤُنَا مِنْ قَبْلُ وَكُنَّا ذُرِّيَّةً مِّنْۢ بَعْدِهِمْ ۚ اَفَتُهْلِكُنَا بِمَا فَعَلَ الْمُبْطِلُوْنَ
174	और इस तरह हम आयतों को सपष्ट करते हैं, ताकि वे (सतय की ओर) लौट आएँ	وَكَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ وَلَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ
175	और उनहें (मुहममद) उस शख़स की ख़बर सुनाओ जिसे हमने अपनी आयतें दी थीं, फिर वह उनसे अलग हो गया, तो शैतान ने उसका पीछा किया (यहाँ तक कि वह बहक गया), और वह गुमराहों में से हो गया।	وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَاَ الَّذِيْٓ اٰتَيْنٰهُ اٰيٰتِنَا فَانْسَلَخَ مِنْهَا فَاَتْبَعَهُ الشَّيْطٰنُ فَكَانَ مِنَ الْغٰوِيْنَ
176	और अगर हम चाहते तो हम उसे (उन आयतों के ज़रिए) बुलंदी दे देते, लेकिन वह दुनिया की ओर झुक गया और अपनी ख़वाहिशों (नीच) का अनुसरण किया, तो उसकी मिसाल उस कुत्ते की तरह है, अगर तुम उसे भगाओ तो वह अपनी जीभ लटकाए रहता है और अगर तुम उसे छोड़ दो तो भी वह अपनी जीभ लटकाए रहता है। यही उन लोगों की मिसाल है जो हमारी आयतों को झुठलाते हैं। तो इन किससों को बयान करो ताकि वे सोचें।	وَلَوْ شِئْنَا لَرَفَعْنٰهُ بِهَا وَلٰكِنَّهٗٓ اَخْلَدَ اِلَى الْاَرْضِ وَاتَّبَعَ هَوٰىهُ ۚ فَمَثَلُهٗ كَمَثَلِ الْكَلْبِ ۚ اِنْ تَحْمِلْ عَلَيْهِ يَلْهَثْ اَوْ تَتْرُكْهُ يَلْهَثْ ۭ ذٰلِكَ مَثَلُ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ۚ فَاقْصُصِ الْقَصَصَ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُوْنَ
177	उन लोगों की मिसाल बहुत बुरी है जो हमारी आयतों को झुठलाते हैं; वे अपनी आतमाओं पर ज़ुलम करते हैं।	سَاۗءَ مَثَلًا ۨ الْقَوْمُ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَاَنْفُسَهُمْ كَانُوْا يَظْلِمُوْنَ
178	जिसे अल्लाह हिदायत दे वही हिदायत पाता है; और जिसे अल्लाह गुमराह कर दे वही लोग घाटे में रहते हैं।	مَنْ يَّهْدِ اللّٰهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِيْ ۚ وَمَنْ يُّضْلِلْ فَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ
179	और निशचय ही, हम जहनम को जिनों और इंसानों से बहुत ज़यादा भर देंगे। उनके पास दिल हैं, लेकिन वे (अल्लाह की आयतों को) समझने के लिए इसतेमाल नहीं करते, और उनके पास आँखें हैं, (लेकिन) वे (अल्लाह की निशानियों को) देखने के लिए इसतेमाल नहीं करते, और उनके पास कान हैं, (लेकिन) वे (अल्लाह की आयतों को) सुनने के लिए इसतेमाल नहीं करते। वे पशुओं की तरह हैं, बलकि उससे भी ज़यादा गुमराह हैं। यही लोग बेपरवाह हैं।	وَلَقَدْ ذَرَاْنَا لِجَهَنَّمَ كَثِيْرًا مِّنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ ۡ لَهُمْ قُلُوْبٌ لَّا يَفْقَهُوْنَ بِهَا ۡ وَلَهُمْ اَعْيُنٌ لَّا يُبْصِرُوْنَ بِهَا ۡ وَلَهُمْ اٰذَانٌ لَّا يَسْمَعُوْنَ بِهَا ۭ اُولٰۗىِٕكَ كَالْاَنْعَامِ بَلْ هُمْ اَضَلُّ ۭ اُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْغٰفِلُوْنَ

وَلِلّٰهِ الْاَسْمَاءُ الْحُسْنٰى فَادْعُوْهُ بِهَا وَذَرُوا الَّذِيْنَ يُلْحِدُوْنَ فِيْٓ اَسْمَآئِهٖ سَيُجْزَوْنَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ	और अल्लाह क॓ सबस॓ सुंदर नाम (असमा-उल-हुस्ना) ह॑, तो इनक॓ ज़रिए उसस॓ दुआ करो और उन लोगों को छोड़ दो जो उसक॓ नामों को तोड़-मरोड़ करत॓ ह॑ै उनह॑ उनक॓ किए कर्मों का बदला मलिगेा।	**180**
وَمِمَّنْ خَلَقْنَآ اُمَّةٌ يَّهْدُوْنَ بِالْحَقِّ وَبِهٖ يَعْدِلُوْنَ	और जिन लोगों को हमन॓ बनाया, उनम॓ एक समूह ऐसा ह॑ै जो सत्य क॓ आधार पर हिदायत दता ह॑, और उसी क॓ आधार पर इंसाफ़ करता ह॑ै	**181**
وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا سَنَسْتَدْرِجُهُمْ مِّنْ حَيْثُ لَا يَعْلَمُوْنَ	और जो लोग हमारी आयतों को झठुलात॓ ह॑, हम उनह॑ धीर-॓धीर॓ (विनाश की ओर) ल॓ जाएँगे, जिस तरह स॓ उनह॑ पता नहीं चलगेा।	**182**
وَاُمْلِيْ لَهُمْ اِنَّ كَيْدِيْ مَتِيْنٌ	और म॑ उनह॑ मोहलत दूँगा। निश्चय ही, मरी योजना बहुत मज़बूत ह॑ै	**183**
اَوَلَمْ يَتَفَكَّرُوْا مَا بِصَاحِبِهِمْ مِّنْ جِنَّةٍ اِنْ هُوَ اِلَّا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ	क्या उनह॓ोंन॓ यह नहीं सोचा कि उनक॓ साथी (मुहम्मद) म॓ कोई पागलपन नहीं ह॑ै वह (मुहम्मद) तो बस एक साफ़ चेतावनी दने॓ वाला ह॑ै	**184**
اَوَلَمْ يَنْظُرُوْا فِيْ مَلَكُوْتِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا خَلَقَ اللّٰهُ مِنْ شَيْءٍ وَّاَنْ عَسٰٓى اَنْ يَّكُوْنَ قَدِ اقْتَرَبَ اَجَلُهُمْ فَبِاَيِّ حَدِيْثٍ بَعْدَهٗ يُؤْمِنُوْنَ	क्या उनह॓ोंन॓ आकाश और धरती क॓ राज्य और अल्लाह की बनाई हर चीज़ पर गौर नहीं किया, और यह कि शायद उनका समय (विनाश) करीब आ गया ह॑? तो इसक॓ बाद व॓ और किस ख़बर पर यकीन करगे॑?	**185**
مَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَيَذَرُهُمْ فِيْ طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ	जिस॓ अल्लाह गुमराह कर द॓, उसक॓ लिए कोई हिदायत दने॓ वाला नहीं ह॑ै अल्लाह उस उसकी गुमराही म॑ भटकन॓ दता ह॑ै	**186**
يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ السَّاعَةِ اَيَّانَ مُرْسٰىهَا قُلْ اِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ رَبِّيْ لَا يُجَلِّيْهَا لِوَقْتِهَآ اِلَّا هُوَ ثَقُلَتْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ لَا تَأْتِيْكُمْ اِلَّا بَغْتَةً يَسْـَٔلُوْنَكَ كَاَنَّكَ حَفِيٌّ عَنْهَا قُلْ اِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ اللّٰهِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ	व॓ तुमस॓ (मुहम्मद) क़यामत क॓ बार॓ म॑ पूछत॓ ह॑, 'वह कब आएगी?' कहो, 'निश्चय ही क़यामत का ज्ञान मर॓ रब क॓ पास ह॑; उसक॓ सिवा कोई उसका समय नहीं बता सकता। (क़यामत) आकाश और धरती म॑ (मख़लूक़ क॓ लिए) बहुत भारी होगी, वह तुम्हार॓ पास अचानक आएगी।' व॓ तुमस॓ पूछत॓ ह॑ जैस॓ तुमह॑ इसका इल्म हो। कहो (मुहम्मद), 'निश्चय ही (क़यामत का) ज्ञान अल्लाह क॓ पास ह॑, लकेिन ज़्यादातर लोग नहीं जानत॓।'	**187**
قُلْ لَّآ اَمْلِكُ لِنَفْسِيْ نَفْعًا وَّلَا ضَرًّا اِلَّا مَا شَاۤءَ اللّٰهُ وَلَوْ كُنْتُ اَعْلَمُ الْغَيْبَ لَاسْتَكْثَرْتُ مِنَ الْخَيْرِ وَمَا مَسَّنِيَ السُّوْۤءُ اِنْ اَنَا اِلَّا نَذِيْرٌ وَّبَشِيْرٌ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ	कहो (मुहम्मद), 'म॑ अपनी ख़ुद की भलाई या नुकसान का इख़्तियार नहीं रखता, सिवाय इसक॓ जो अल्लाह चाह॓। अगर मुझ॓ ग़ैब का इल्म होता, तो म॑ बहुत ज़्यादा भलाई कर लता॓ और मुझ॓ कोई नुकसान न पहुँचता। म॑ तो बस एक चेतावनी दने॓ वाला और ईमान वालों क॓ लिए ख़ुशख़बरी दने॓ वाला हूँ'	**188**

189	वही ह जिसने तुम्हें एक जान (आदम) से बनाया और उससे उसकी जोड़ी बनाई, ताकि वह उससे सकून पाए। फिर जब उसने (उसकी बीवी से) संगति की, तो (उसकी बीवी ने) हल्का गरभ धारण किया, और वह (कुछ समय तक) हल्का ही रहा। फिर जब वह भारी हुआ, तो दोनों (पति-पत्नी) ने अपने रब अल्लाह से दुआ की, 'अगर तू हमें नेके बच्चा देगा, तो हम निश्चित रूप से शुक्र गुज़ार होंगे।'	هُوَ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ وَّجَعَلَ مِنْهَا زَوْجَهَا لِيَسْكُنَ اِلَيْهَا فَلَمَّا تَغَشّٰىهَا حَمَلَتْ حَمْلًا خَفِيْفًا فَمَرَّتْ بِهٖ فَلَمَّآ اَثْقَلَتْ دَّعَوَا اللّٰهَ رَبَّهُمَا لَىِٕنْ اٰتَيْتَنَا صَالِحًا لَّنَكُوْنَنَّ مِنَ الشّٰكِرِيْنَ
190	तो जब उसने दोनों को एक नेके बच्चा दिया, तो उनहोंने उस बच्चे के बारे में अल्लाह के साथ शरीक ठहराए। तो अल्लाह उससे बहुत ऊँचा है जो वे शरीक करते हैं।	فَلَمَّآ اٰتٰىهُمَا صَالِحًا جَعَلَا لَهٗ شُرَكَاۤءَ فِيْمَآ اٰتٰىهُمَا فَتَعٰلَى اللّٰهُ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ
191	क्या वे (अल्लाह के साथ) ऐसी चीज़ (मूरतियों) को शरीक करते हैं जो कुछ भी नहीं बना सकती? जबकि वे (मूरतियाँ) खुद बनाई गई हैं।	اَيُشْرِكُوْنَ مَا لَا يَخْلُقُ شَيْـًٔا وَّهُمْ يُخْلَقُوْنَ
192	और (मूरतियाँ) अपने पूजने वालों को कोई मदद नहीं दे सकतीं, और न ही वे खुद अपनी मदद कर सकती हैं।	وَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ لَهُمْ نَصْرًا وَّلَآ اَنْفُسَهُمْ يَنْصُرُوْنَ
193	और अगर तुम (ऐ मुशरिकों) उनहें (मूरतियों को) हदायत के लिए पुकारो, तो वे तुमहारी पुकार का जवाब नहीं दे सकतीं; तुमहारे लिए उनके पुकारने और चुप रहने का नतीजा एक जैसा है।	وَاِنْ تَدْعُوْهُمْ اِلَى الْهُدٰى لَا يَتَّبِعُوْكُمْ سَوَاۤءٌ عَلَيْكُمْ اَدَعَوْتُمُوْهُمْ اَمْ اَنْتُمْ صٰمِتُوْنَ
194	निश्चय ही, वे (मूरतियाँ) जिनहें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो, वे तुमहारे जैसे ही (कमज़ोर) मख़लूक़ हैं तो उनहें पुकारो, फिर उनहें तुमहारी माँग पूरी करने दे, अगर तुम सचचे हो।	اِنَّ الَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ عِبَادٌ اَمْثَالُكُمْ فَادْعُوْهُمْ فَلْيَسْتَجِيْبُوْا لَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ
195	क्या उनके (मूरतियों के) पास पैर हैं कि वे चल सकें, या उनके पास हाथ हैं कि वे मज़बूती से पकड़ सकें, या उनके पास आँखें हैं कि वे देख सकें, या उनके पास कान हैं कि वे सुन सकें? कहो (मुहममद), 'अपने (मूरतियों को) जो तुम अल्लाह का शरीक मानते हो, पुकारो, फिर मेरे ख़िलाफ़ साज़िश करो, और मुझे ज़रा भी मोहलत न दो।'	اَلَهُمْ اَرْجُلٌ يَّمْشُوْنَ بِهَآ اَمْ لَهُمْ اَيْدٍ يَّبْطِشُوْنَ بِهَآ اَمْ لَهُمْ اَعْيُنٌ يُّبْصِرُوْنَ بِهَآ اَمْ لَهُمْ اٰذَانٌ يَّسْمَعُوْنَ بِهَا قُلِ ادْعُوْا شُرَكَاۤءَكُمْ ثُمَّ كِيْدُوْنِ فَلَا تُنْظِرُوْنِ
196	निश्चय ही मेरा सरपरसत वह अल्लाह है जिसने किताब (अल-क़ुरआन) उतारी। वह नेके लोगों की हफ़ाज़त करता	اِنَّ وَلِيِّ اللّٰهُ الَّذِيْ نَزَّلَ الْكِتٰبَ وَهُوَ يَتَوَلَّى الصّٰلِحِيْنَ
197	और जिनहें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो, वे न तो तुमहारी मदद कर सकते हैं और न ही अपनी खुद की मदद कर सकते हैं।	وَالَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ نَصْرَكُمْ وَلَآ اَنْفُسَهُمْ يَنْصُرُوْنَ
198	और अगर तुम उनहें हदायत के लिए पुकारो, तो वे तुमहारी पुकार नहीं सुनते। तुम उनहें देखते हो कि वे (बस) देखते रहते हैं, (लेकिन) कुछ नहीं देख सकते।	وَاِنْ تَدْعُوْهُمْ اِلَى الْهُدٰى لَا يَسْمَعُوْا وَتَرٰىهُمْ يَنْظُرُوْنَ اِلَيْكَ وَهُمْ لَا يُبْصِرُوْنَ
199	तुम (मुहममद) क्षमा करने का रासता अपनाओ, और भलाई का हुकुम दो, और अज्ञानियों से मुँह फेर लो।	خُذِ الْعَفْوَ وَأْمُرْ بِالْعُرْفِ وَاَعْرِضْ عَنِ الْجٰهِلِيْنَ

وَاِمَّا يَنْزَغَنَّكَ مِنَ الشَّيْطٰنِ نَزْغٌ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ اِنَّه سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ	और अगर शैतान की ओर स॓ तमुह॓ कोई बरु वचिार आए, तो अल्लाह की पनाह माँगो। नश्चिय ही वह सब कछु सनु॓वाला, सब कछु जानन॓वाला ह॓	**200**
اِنَّ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا اِذَا مَسَّهُمْ طٰٓئِفٌ مِّنَ الشَّيْطٰنِ تَذَكَّرُوْا فَاِذَا هُمْ مُّبْصِرُوْنَ	नश्चिय ही, जो लोग तक़वा अपनात॓ ह॓, जब उनह॓ शैतान की ओर स॓ कोई बरु वचिार छ्वा ह॓, तो व॓ (अल्लाह को) याद करत॓ ह॓, फरि व॓ (सच्चाई को) दखे॓न॓ लगत॓ ह॓	**201**
وَاِخْوَانُهُمْ يَمُدُّوْنَهُمْ فِى الْغَيِّ ثُمَّ لَا يُقْصِرُوْنَ	और उनक॓ (काफ़रि॓ क॓) भाई (शैतान) उनह॓ गमुराही म॓ और ज़्यादा डब्बोत॓ रेहत॓ ह॓, और व॓ रेक़ुत॓ नहीं ह॓	**202**
وَاِذَا لَمْ تَأْتِهِمْ بِاٰيَةٍ قَالُوْا لَوْلَا اجْتَبَيْتَهَا قُلْ اِنَّمَآ اَتَّبِعُ مَا يُوْحٰٓى اِلَيَّ مِنْ رَّبِّيْ هٰذَا بَصَآئِرُ مِنْ رَّبِّكُمْ وَهُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ	और जब तमु उनक॓ पास कोई (नई) आयत नहीं लात॓, तो व॓ कहत॓ ह॓, 'तमु॓न इस॓ (ख़ुद) क्यों॓ नहीं॓ बनाया?' कहो (मुहम्मद), 'म॓ तो बस उसी का अनसुरण करता हूँ॓ जो मरे॓ रेब की ओर स॓ मझु पर वह्य की जाती ह॓। यह तमुहार॓ रेब की ओर स॓ (सच्चाई की) बसीरत ह॓, और ईमान वालों॓ क॓ लिए हदिायत और रहमत ह॓'	**203**
وَاِذَا قُرِئَ الْقُرْاٰنُ فَاسْتَمِعُوْا لَه وَاَنْصِتُوْا لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ	और जब क़ुरआन पढ़ा जाए, तो उस॓ ध्यान स॓ सनु॓ो और ख़ामोश रहो, ताक॓ तमु पर रहमत हो।	**204**
وَاذْكُرْ رَّبَّكَ فِيْ نَفْسِكَ تَضَرُّعًا وَّخِيْفَةً وَّدُوْنَ الْجَهْرِ مِنَ الْقَوْلِ بِالْغُدُوِّ وَالْاٰصَالِ وَلَا تَكُنْ مِّنَ الْغٰفِلِيْنَ	और अपन॓ रेब को अपन॓ दलि म॓ नम्रता और डर क॓ साथ, और धीमी आवाज़ म॓, सबुह और शाम याद करो, और उन लोगों म॓ स॓ न बन जो बपेरवाह ह॓	**205**
اِنَّ الَّذِيْنَ عِنْدَ رَبِّكَ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ عِبَادَتِه وَيُسَبِّحُوْنَه وَلَه يَسْجُدُوْنَ	नश्चिय ही, जो लोग तमुहार॓ रेब क॓ करीब ह॓, व॓ उसकी इबादत म॓ घमंड नहीं करत॓। व॓ उसकी तस्बीह करत॓ ह॓ और उस॓ सजदा करत॓ ह॓	**206**

छंदों की संख़्या	اَلْأَنْفَال	मदनी
७५	अल Anfal - 8	मदनी

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल Anfal (यद्ध की लूट)

1	व तुमसे (मुहम्मद) यद्ध क माल (लूट) क बार मे पछत हो कहो, 'यद्ध का माल अल्लाह और उनक रसूल का ह (अल्लाह और उनक रसूल क नयिम क अनसार)। इसलिए अल्लाह स डरो, और आपस म अपन संबंध सधारो, और अल्लाह और उनक रसूल की आज्ञा मानो, यदि तम ईमान वाल हो।'	يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْاَنْفَالِ قُلِ الْاَنْفَالُ لِلّٰهِ وَالرَّسُوْلِ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَصْلِحُوْا ذَاتَ بَيْنِكُمْ وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗٓ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ
2	नशि्चय ही, ईमान वाल व लोग ह जनिक दिल, जब अल्लाह का नाम लया जाता ह, काप उठत ह, और जब उनकी आयत उनह पढ़कर सनाई जाती ह, तो उनका ईमान और बढ़ जाता ह, और व केवल अपन रब पर भरोसा करत ह	اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِيْنَ اِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَجِلَتْ قُلُوْبُهُمْ وَاِذَا تُلِيَتْ عَلَيْهِمْ اٰيٰتُهٗ زَادَتْهُمْ اِيْمَانًا وَّعَلٰى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ
3	जो लोग नमाज़ क़ायम करत ह और जो कछ हमन उनह दया ह, उसम स (अल्लाह क रास्त म) खरच करत ह	الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ
4	वही लोग सचच ईमान वाल ह उनक लए उनक रब क पास उचच दरज़, क्षमा और सम्मानजनक आजीवका ह	اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُؤْمِنُوْنَ حَقًّا لَهُمْ دَرَجٰتٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَمَغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ كَرِيْمٌ
5	जसा क तमहारा रब तमह (मुहम्मद) सत्य क साथ अपन घर स नकाल लाया, जबक मसलमानों का एक समह इसस नाराज़ था।	كَمَآ اَخْرَجَكَ رَبُّكَ مِنْۢ بَيْتِكَ بِالْحَقِّ وَاِنَّ فَرِيْقًا مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ لَكٰرِهُوْنَ
6	व सत्य क बार म तमस ववाद करत थ, जब वह सपष्ट हो चका था, मानो उनह मौत की ओर ल जाया जा रहा हो और व उस दखे रह हों।	يُجَادِلُوْنَكَ فِى الْحَقِّ بَعْدَمَا تَبَيَّنَ كَاَنَّمَا يُسَاقُوْنَ اِلَى الْمَوْتِ وَهُمْ يَنْظُرُوْنَ
7	और (याद करो) जब अल्लाह न तमस वादा कया क दो समहों म स एक नशि्चय ही तमहारा होगा, और तम चाहत थ क वह (समह) जो कमज़ोर ह, तमहारा हो, लकन अल्लाह का इरादा था क वह सत्य को स्थापति कर और काफ़रि की जड़ काट द	وَاِذْ يَعِدُكُمُ اللّٰهُ اِحْدَى الطَّآئِفَتَيْنِ اَنَّهَا لَكُمْ وَتَوَدُّوْنَ اَنَّ غَيْرَ ذَاتِ الشَّوْكَةِ تَكُوْنُ لَكُمْ وَيُرِيْدُ اللّٰهُ اَنْ يُّحِقَّ الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهٖ وَيَقْطَعَ دَابِرَ الْكٰفِرِيْنَ
8	ताक वह सत्य को स्थापति कर और असत्य को मटा द, भल ही अपराधी (मशरकि) इस नापसद कर	لِيُحِقَّ الْحَقَّ وَيُبْطِلَ الْبَاطِلَ وَلَوْ كَرِهَ الْمُجْرِمُوْنَ
9	(याद करो) जब तम अपन रब स सहायता माग रह थ, तो उसन तमहारी प्रार्थना स्वीकार की, 'नशि्चय ही, म तमहारी सहायता क लए एक हज़ार फ़रशि्त भजेूगा जो एक क बाद एक आएँगे।'	اِذْ تَسْتَغِيْثُوْنَ رَبَّكُمْ فَاسْتَجَابَ لَكُمْ اَنِّيْ مُمِدُّكُمْ بِاَلْفٍ مِّنَ الْمَلٰٓئِكَةِ مُرْدِفِيْنَ

وَمَا جَعَلَهُ اللّٰهُ اِلَّا بُشْرٰى وَلِتَطْمَئِنَّ بِهٖ قُلُوْبُكُمْ وَمَا النَّصْرُ اِلَّا مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ	और अल्लाह न`ऐसा कवेल इसलिए किया ताकि यह तुम्हार` लिए खुशख़बरी हो और तुम्हार`दिलि इसस`शांति पाएँ और जीत कवेल अल्लाह की ओर स`हो नशि्चय ही, अल्लाह बहतु शकि़तशाली, बहतु बुद्धिमान हो	**10**
اِذْ يُغَشِّيْكُمُ النُّعَاسَ اَمَنَةً مِّنْهُ وَيُنَزِّلُ عَلَيْكُمْ مِّنَ السَّمَاۤءِ مَاۤءً لِّيُطَهِّرَكُمْ بِهٖ وَيُذْهِبَ عَنْكُمْ رِجْزَ الشَّيْطٰنِ وَلِيَرْبِطَ عَلٰى قُلُوْبِكُمْ وَيُثَبِّتَ بِهِ الْاَقْدَامَ	(याद करो) जब अल्लाह न`तुम्हे`नींद स`ढक दिया ताकि`तुम्हे` उसकी ओर स`शांति मलि,े और उसन`तुम पर आकाश स`पानी (बारशि) उतारा ताकि`वह तुम्हे`इसस`शुद्ध कर`और तुमस` शैतान की गंदगी को दूर कर,े और तुम्हार`दलिो को मज़बूत कर` और इसस`तुम्हार`कदमो को स्थरि कर।े	**11**
اِذْ يُوْحِيْ رَبُّكَ اِلَى الْمَلٰٓئِكَةِ اَنِّيْ مَعَكُمْ فَثَبِّتُوا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۗسَاُلْقِيْ فِيْ قُلُوْبِ الَّذِيْنَ كَفَرُوا الرُّعْبَ فَاضْرِبُوْا فَوْقَ الْاَعْنَاقِ وَاضْرِبُوْا مِنْهُمْ كُلَّ بَنَانٍ	(याद करो) जब तुम्हारा रब फ़रि्शतो को वह्य भजे रहा था, 'नशि्चय ही म`तुम्हार`साथ हू,ँ तो ईमान वालो को मज़बूत करो। म`काफ़रिो क`दलिो म`डर डालूँगा। तो उनक`गल`क`ऊपर प्रहार करो और उनक`हर उँगली क`सरि पर प्रहार करो।'	**12**
ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ شَاۤقُّوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَمَنْ يُّشَاقِقِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَاِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ	यह इसलिए कि उन्होंन`अल्लाह और उनक`रसूल का वरिोध किया। और जो कोई अल्लाह और उनक`रसूल का वरिोध करता ह,ै नशि्चय ही अल्लाह की सजा बहतु कठोर हो	**13**
ذٰلِكُمْ فَذُوْقُوْهُ وَاَنَّ لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابَ النَّارِ	तो यह (दुनयिावी सजा) तुम्हार`लिए ह,ै इस`चखो। और नशि्चय ही काफ़रिो क`लिए जहन्नम की यातना हो	**14**
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا لَقِيْتُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا زَحْفًا فَلَا تُوَلُّوْهُمُ الْاَدْبَارَ	ह`ईमान वालो! जब तुम काफ़रिो की सनेा स`मलिो, जो (लड़न`क`लिए) आग`बढ़ रही हो, तो उनस`पीठ न फरे।ो	**15**
وَمَنْ يُّوَلِّهِمْ يَوْمَىِٕذٍ دُبُرَهٗٓ اِلَّا مُتَحَرِّفًا لِّقِتَالٍ اَوْ مُتَحَيِّزًا اِلٰى فِئَةٍ فَقَدْ بَاۤءَ بِغَضَبٍ مِّنَ اللّٰهِ وَمَاْوٰىهُ جَهَنَّمُ ۗوَبِئْسَ الْمَصِيْرُ	और जो कोई उस समय पीछ`हटगेा, सवािय इसक`कि वह युद्ध की रणनीति क`लिए मड़ु`या किसी दूसरी सनेा क`साथ मलिन`क`लिए जाए, तो वह अल्लाह की नाराज़गी क`साथ लौटगेा, और उसका ठकिाना जहन्नम ह,ै और वह बहतु बुरा ठकिाना हो	**16**
فَلَمْ تَقْتُلُوْهُمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ قَتَلَهُمْ ۚوَمَا رَمَيْتَ اِذْ رَمَيْتَ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ رَمٰى ۚوَلِيُبْلِيَ الْمُؤْمِنِيْنَ مِنْهُ بَلَاۤءً حَسَنًا ۗاِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ	तो (वास्तव म)ंे तुमन`उनह`नहीं मारा, बल्कि अल्लाह न`उनह` मारा। और जब तुमन`(रते) फकेी, तो तुमन`नहीं फकेी, बल्कि अल्लाह न`फकेी। (अल्लाह न`ऐसा इसलिए किया) ताकि वह उनह`नष्ट कर`और ईमान वालो को अच्छी जीत द।े नशि्चय ही, अल्लाह सब कछु सनु`वाला, सब कछु जानन`वाला हो	**17**
ذٰلِكُمْ وَاَنَّ اللّٰهَ مُوْهِنُ كَيْدِ الْكٰفِرِيْنَ	यह (अल्लाह की कृपा) तुम्हार`लिए ह,ै और नशि्चय ही अल्लाह काफ़रिो की चाल को कमज़ोर करता हो	**18**
اِنْ تَسْتَفْتِحُوْا فَقَدْ جَاۤءَكُمُ الْفَتْحُ ۚوَاِنْ تَنْتَهُوْا فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۚوَاِنْ تَعُوْدُوْا نَعُدْ ۚوَلَنْ تُغْنِيَ عَنْكُمْ فِئَتُكُمْ شَيْـًٔا وَّلَوْ كَثُرَتْ ۙوَاَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُؤْمِنِيْنَ	यदि तुम (काफ़रिो) न`फ़ैसला माँगा, तो नशि्चय ही फ़ैसला तुम्हार`पास आ गया हो और यदि तुम (रसूल का वरिोध) बंद कर दो, तो यह तुम्हार`लिए बहेतर हो और यदि तुम फरि स` (वरिोध) शुरू करो, तो हम (सहायता क`साथ) फरि स`आएँगे। और तुम्हारी सनेा, चाह`वह कतिनी भी बड़ी हो, तुम्हे`कोई फ़ायदा नहीं दगेी। नशि्चय ही, अल्लाह ईमान वालो क`साथ हो	**19**

20	ह॓ईमान वालो! अल्लाह और उनक॓रसूल की आज्ञा मानो, और उससे॓मुँह न फेरो, जबकि तुम (उसक॓आदेश) सुन रह॓हो।	يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَلَا تَوَلَّوْا عَنْهُ وَاَنْتُمْ تَسْمَعُوْنَ
21	और उन (मुनाफ़िक़ों) की तरह न बनो जो कहत॓हैं, 'हमन॓सुना,' जबकि व॓(दरअसल) नहीं सुनत॓।	وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ قَالُوْا سَمِعْنَا وَهُمْ لَا يَسْمَعُوْنَ
22	निश्चय ही, अल्लाह की नज़र म॓सबस॓बुरे जीव व॓ह॓जो बहर॓ और गूँग॓ह॓(सत्य को न सुनत॓ह॓और न समझत॓ह॓), यानी व॓ लोग जो समझ नहीं रखत॓।	اِنَّ شَرَّ الدَّوَاۤبِّ عِنْدَ اللّٰهِ الصُّمُّ الْبُكْمُ الَّذِيْنَ لَا يَعْقِلُوْنَ
23	और यदि अल्लाह को उनम॓कोई भलाई दिखती, तो वह उनह॓ सुनन॓की शक्ति देता। और यदि अल्लाह उनह॓ सुनन॓की शक्ति भी देता, तो व॓मुँह फेरे लते॓, क्योंकि व॓मुँह फेरन॓वाल॓ ह॓।	وَلَوْ عَلِمَ اللّٰهُ فِيْهِمْ خَيْرًا لَّاَسْمَعَهُمْ وَلَوْ اَسْمَعَهُمْ لَتَوَلَّوْا وَّهُمْ مُّعْرِضُوْنَ
24	ह॓ईमान वालो! अल्लाह और उनक॓रसूल की पुकार का जवाब दो, जब वह तुमह॓उस चीज़ की ओर बुलाए जो तुमह॓जीवन देती ह॓। और जान लो कि अल्लाह इंसान और उसक॓दिल क॓बीच आड़॓आता ह॓, और निश्चय ही तुमह॓उसी की ओर लौटना ह॓।	يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اسْتَجِيْبُوْا لِلّٰهِ وَلِلرَّسُوْلِ اِذَا دَعَاكُمْ لِمَا يُحْيِيْكُمْ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ يَحُوْلُ بَيْنَ الْمَرْءِ وَقَلْبِهٖ وَاَنَّهٗٓ اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ
25	और उस यातना स॓बचो जो केवल तुमम॓से ज़ालिमों को ही नहीं, बल्कि (सबको) प्रभावित करेगी। और जान लो कि अल्लाह की सजा बहुत कठोर ह॓।	وَاتَّقُوْا فِتْنَةً لَّا تُصِيْبَنَّ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْكُمْ خَاۤصَّةً وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ
26	और (याद करो) जब तुम (मह्ाजिरो) थोड़॓स॓थ॓और धरती (मक्का) म॓कमज़ोर थ॓, और तुमह॓डर था कि लोग तुमह॓उठा ल॓ जाएँगे। तो अल्लाह न॓तुमह॓(मदीना म॓) ठिकाना दिया और अपनी सहायता स॓तुमह॓मज़बूत किया और तुमह॓अच्छी रोज़ी दी ताकि तुम कृतज्ञता दिखाओ।	وَاذْكُرُوْٓا اِذْ اَنْتُمْ قَلِيْلٌ مُّسْتَضْعَفُوْنَ فِى الْاَرْضِ تَخَافُوْنَ اَنْ يَّتَخَطَّفَكُمُ النَّاسُ فَاٰوٰىكُمْ وَاَيَّدَكُمْ بِنَصْرِهٖ وَرَزَقَكُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ
27	ह॓ईमान वालो! अल्लाह और उनक॓रसूल क॓साथ विश्वासघात न करो और न ही अपनी अमानतों क॓साथ विश्वासघात करो, जबकि तुम जानत॓हो।	يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَخُوْنُوا اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ وَتَخُوْنُوْٓا اَمٰنٰتِكُمْ وَاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ
28	और जान लो कि तुमह॓ारी संपत्ति और तुमह॓ारे बच्च॓केवल एक परीक्षा ह॓, और निश्चय ही अल्लाह क॓पास बहुत बड़ा पुरस्कार ह॓।	وَاعْلَمُوْٓا اَنَّمَآ اَمْوَالُكُمْ وَاَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ وَّاَنَّ اللّٰهَ عِنْدَهٗٓ اَجْرٌ عَظِيْمٌ
29	ह॓ईमान वालो! यदि तुम अल्लाह स॓डरत॓हो, तो वह तुमह॓ फ़ुरक़ान (सत्य और असत्य क॓बीच अंतर करन॓की क्षमता) देगा, और तुमह॓ारे पापों को मिटाएगा और तुमह॓क्षमा करेगा। और अल्लाह बहुत बड़ी कृपा का मालिक ह॓।	يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنْ تَتَّقُوا اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّكُمْ فُرْقَانًا وَّيُكَفِّرْ عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ
30	और (याद करो) जब काफ़िर (क़ुरैश) तुमह॓ारे ख़िलाफ़ चाल चल रह॓थ॓ताकि तुमह॓क़ैद कर॓, या तुमह॓मार डाल॓, या तुमह॓निकाल दें। व॓चाल चलत॓थ॓, और अल्लाह उनकी चाल को नाकाम करता था। और अल्लाह सबस॓अच्छा चाल नाकाम करन॓वाला ह॓।	وَاِذْ يَمْكُرُ بِكَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِيُثْبِتُوْكَ اَوْ يَقْتُلُوْكَ اَوْ يُخْرِجُوْكَ وَيَمْكُرُوْنَ وَيَمْكُرُ اللّٰهُ وَاللّٰهُ خَيْرُ الْمٰكِرِيْنَ

31	और जब हमारी आयत उनह पढ़कर सनाई जाती ह, तो व कहत ह, 'हमन (ऐसी आयत) सन लयिा ह। यदि हम चाह, तो हम भी ऐसी ही आयत बना सकत ह। यह (कुरआन) तो बस पराने लोगो की कहानयिा ँह।'	وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا قَالُوْا قَدْ سَمِعْنَا لَوْ نَشَاۤءُ لَقُلْنَا مِثْلَ هٰذَآ اِنْ هٰذَآ اِلَّآ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ
32	और (याद करो) जब व (मुशरिक) कहत थ, 'ऐ अल्लाह! यदि यह (कुरआन) तमुहारी ओर स सत्य ह, तो हम पर आकाश स पत्थर बरसा, या हम दुखदायी यातना दो।'	وَاِذْ قَالُوا اللّٰهُمَّ اِنْ كَانَ هٰذَا هُوَ الْحَقَّ مِنْ عِنْدِكَ فَاَمْطِرْ عَلَيْنَا حِجَارَةً مِّنَ السَّمَاۤءِ اَوِ ائْتِنَا بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ
33	लकेनि अल्लाह उनह सजा नहीं दगेा, जबकि तमु (मुहम्मद) उनक बीच मौजद्ध हो। और अल्लाह उनह सजा नहीं दगेा, जबकि व कषमा माँगत ह।	وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُعَذِّبَهُمْ وَاَنْتَ فِيْهِمْ وَمَا كَانَ اللّٰهُ مُعَذِّبَهُمْ وَهُمْ يَسْتَغْفِرُوْنَ
34	और अल्लाह उनह कयों नही सजा दगेा, जबकि व (लोगो को) मसजदि हराम (काबा) म जान स रोकत ह, और व इसक हकदार नहीं ह? इसक हकदार तो कवेल व लोग ह जो तकवा रखत ह, लकेनि उनम स अधकिांश लोग नहीं जानत।	وَمَا لَهُمْ اَلَّا يُعَذِّبَهُمُ اللّٰهُ وَهُمْ يَصُدُّوْنَ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَمَا كَانُوْٓا اَوْلِيَاۤءَهٗ اِنْ اَوْلِيَاۤؤُهٗٓ اِلَّا الْمُتَّقُوْنَ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ
35	और उनकी नमाज़ बतैलुल्लाह (काबा) क पास कवेल सीटयिा ँबजाना और तालयिा ँबजाना ह। तो अपनी कफ्र की वजह स यातना का सवाद चखो।	وَمَا كَانَ صَلَاتُهُمْ عِنْدَ الْبَيْتِ اِلَّا مُكَاۤءً وَّتَصْدِيَةً فَذُوْقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ
36	नशि्चय ही, काफ्रि लोग अपनी सपत्ति को (लोगो को) अल्लाह क रासत स रोकन क लिए खरच करत ह। व इस (खरच करना) जारी रखगे, फरि व सवय पछताएँगे, और अंत म व हार जाएँगे। और काफ्रिों को जहनन्म म इकटठा कयिा जाएगा।	اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ لِيَصُدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَسَيُنْفِقُوْنَهَا ثُمَّ تَكُوْنُ عَلَيْهِمْ حَسْرَةً ثُمَّ يُغْلَبُوْنَ ۭ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِلٰى جَهَنَّمَ يُحْشَرُوْنَ
37	ताकि अल्लाह बर को अचछ स अलग कर द और बर को एक क ऊपर एक ढरे कर द, और उनह जहनन्म म डाल दो। वही लोग ह जो घाट म ह।	لِيَمِيْزَ اللّٰهُ الْخَبِيْثَ مِنَ الطَّيِّبِ وَيَجْعَلَ الْخَبِيْثَ بَعْضَهٗ عَلٰى بَعْضٍ فَيَرْكُمَهٗ جَمِيْعًا فَيَجْعَلَهٗ فِيْ جَهَنَّمَ ۭ اُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ
38	काफ्रिों (अबूसफ्यान और उनक साथयिो) स कहो, 'यदि व (कफ्र स) रक जाए, तो अल्लाह उनक पछिल गनाहों को माफ कर दगेा। और यदि व फरि स (वरिोध) शरू कर, तो पहल क लोगो क साथ जो हआ, वह (उनक लिए भी) लागू होगा।'	قُلْ لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ يَّنْتَهُوْا يُغْفَرْ لَهُمْ مَّا قَدْ سَلَفَ ۚ وَاِنْ يَّعُوْدُوْا فَقَدْ مَضَتْ سُنَّتُ الْاَوَّلِيْنَ
39	और उनस युद्ध करो जब तक कि फ्तिना (अशांति) खतम न हो जाए, और धरम पूरी तरह अल्लाह क लिए हो जाए। यदि व (कफ्र स) रक जाए, तो नशि्चय ही अल्लाह उनक करमो को दखे रहा ह।	وَقَاتِلُوْهُمْ حَتّٰى لَا تَكُوْنَ فِتْنَةٌ وَّيَكُوْنَ الدِّيْنُ كُلُّهٗ لِلّٰهِ ۚ فَاِنِ انْتَهَوْا فَاِنَّ اللّٰهَ بِمَا يَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ
40	और यदि व महँु फरे ल, तो जान लो कि अल्लाह तमुहारा सरंकषक ह। वह सबस अचछा सरंकषक और सबस अचछा सहायक ह।	وَاِنْ تَوَلَّوْا فَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ مَوْلٰىكُمْ ۭ نِعْمَ الْمَوْلٰى وَنِعْمَ النَّصِيْرُ

41	और जान लो कि जो कछु भी तमु यद्ध क माल क रेप म पराप्त करत हो, उसका पाचँवा हँसिसा अलल्लाह, उनक रेसलू, रसलू क रशि़तदेारो, अनाथो, मसि़कीनो और मसाफ़रि क लिए ह, यदि तमु अलल्लाह और उस (वह्य) पर ईमान रखत हो जो हमन अपन बनद (महुममद) पर फ़रुक़ान क दिनि उतारी, यानी उस दिनि जब दो सनेाए मिलीं। और अलल्लाह हर चीज़ पर क़ादरि ह।	وَاعْلَمُوْٓا اَنَّمَا غَنِمْتُمْ مِّنْ شَيْءٍ فَاَنَّ لِلّٰهِ خُمُسَه وَلِلرَّسُوْلِ وَلِذِى الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ وَابْنِ السَّبِيْلِ اِنْ كُنْتُمْ اٰمَنْتُمْ بِاللّٰهِ وَمَآ اَنْزَلْنَا عَلٰى عَبْدِنَا يَوْمَ الْفُرْقَانِ يَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعٰنِ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ
42	(याद करो) जब तमु (मसुलमान) घाटी क नजद़ीकी कनिार पर थ और व (काफ़रि) घाटी क दूर क कनिार पर थ, और क़ाफ़िला तमुस नीच था। यदि तमुन (यद्ध क लिए) कोई समय तय कयि होता, तो तमु उस समय क बार म असहमत हो जात, लकेनि अलल्लाह का इरादा था कि वह एक ऐस मामल को पूरा कर जो होना था, ताकि जो नषट होन वाला हो, वह सपषट परमाण क साथ नषट हो, और जो जीवति रहन वाला हो, वह सपषट परमाण क साथ जीवति रह। नशि़चय ही, अलल्लाह सब कछु सनुन वाला, सब कछु जानन वाला ह।	اِذْ اَنْتُمْ بِالْعُدْوَةِ الدُّنْيَا وَهُمْ بِالْعُدْوَةِ الْقُصْوٰى وَالرَّكْبُ اَسْفَلَ مِنْكُمْ وَلَوْ تَوَاعَدْتُّمْ لَاخْتَلَفْتُمْ فِى الْمِيْعٰدِ وَلٰكِنْ لِّيَقْضِيَ اللّٰهُ اَمْرًا كَانَ مَفْعُوْلًا لِّيَهْلِكَ مَنْ هَلَكَ عَنْ بَيِّنَةٍ وَّيَحْيٰى مَنْ حَيَّ عَنْ بَيِّنَةٍ وَاِنَّ اللّٰهَ لَسَمِيْعٌ عَلِيْمٌ
43	(याद करो) जब अलल्लाह न तमुह (महुममद) तमुहार सपन म उनकी सखं़या को कम दखिाया। यदि उसन तमुह उनकी सखं़या अधकि दखिाई होती, तो तमु डर जात और उस मामल म तमु ववािद करन लगत, लकेनि अलल्लाह न तमुह बचा लयि। नशि़चय ही, अलल्लाह तमुहार दलिो म जो कछु ह, उस अचछी तरह जानता ह।	اِذْ يُرِيْكَهُمُ اللّٰهُ فِيْ مَنَامِكَ قَلِيْلًا وَلَوْ اَرٰىكَهُمْ كَثِيْرًا لَّفَشِلْتُمْ وَلَتَنَازَعْتُمْ فِى الْاَمْرِ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ سَلَّمَ اِنَّه عَلِيْمٌ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ
44	और जब तमु उनस (काफ़रि स) मलि, तो अलल्लाह न तमुहारी नज़रो म उनकी सखं़या को कम दखिाया और उनकी नज़रो म तमुहारी सखं़या को कम दखिाया, कयोकि अलल्लाह का इरादा था कि वह एक ऐस मामल को पूरा कर जो होना था। और सार मामल अलल्लाह की ओर लौटाए जात ह।	وَاِذْ يُرِيْكُمُوْهُمْ اِذِ الْتَقَيْتُمْ فِيْٓ اَعْيُنِكُمْ قَلِيْلًا وَّيُقَلِّلُكُمْ فِيْٓ اَعْيُنِهِمْ لِيَقْضِيَ اللّٰهُ اَمْرًا كَانَ مَفْعُوْلًا وَاِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ
45	ह ईमान वालो! जब तमु कसिी (दशु़मन की) सनेा स मलिो, तो मजबतू रहो और अलल्लाह का नाम बहतु-बहतु याद करो (जि़क्र और दआु करो) ताकि तमु सफल हो।	يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا لَقِيْتُمْ فِئَةً فَاثْبُتُوْا وَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَثِيْرًا لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ
46	और अलल्लाह और उनक रेसलू की आजञा मानो, और आपस म ववािद न करो, कयोकि इसस तमु डर जाओग और तमुहारी ताकत चली जाएगी। और सबर करो। नशि़चय ही, अलल्लाह सबर करन वालो क साथ ह।	وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَه وَلَا تَنَازَعُوْا فَتَفْشَلُوْا وَتَذْهَبَ رِيْحُكُمْ وَاصْبِرُوْا اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ
47	और उन लोगो की तरह न बनो जो अपन घरो स घमडं और लोगो को दखिान (रयिा) क लिए नकिल और (लोगो को) अलल्लाह क रासत स रोकत ह। और अलल्लाह उनक करमो को पूरी तरह घरे हुए ह।	وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ خَرَجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ بَطَرًا وَّرِئَاءَ النَّاسِ وَيَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَاللّٰهُ بِمَا يَعْمَلُوْنَ مُحِيْطٌ

وَاِذْ زَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ اَعْمَالَهُمْ وَقَالَ لَا غَالِبَ لَكُمُ الْيَوْمَ مِنَ النَّاسِ وَاِنِّيْ جَارٌ لَّكُمْ فَلَمَّا تَرَاۤءَتِ الْفِئَتٰنِ نَكَصَ عَلٰى عَقِبَيْهِ وَقَالَ اِنِّيْ بَرِيْۤءٌ مِّنْكُمْ اِنِّيْٓ اَرٰى مَا لَا تَرَوْنَ اِنِّيْٓ اَخَافُ اللّٰهَ وَاللّٰهُ شَدِيْدُ الْعِقَابِ	और (याद करो) जब शैतान ने उनके (काफ़िरों के) करमों को उनके लिए सुंदर बना दिया और कहा, 'आज कोई भी तुमपर हरा नहीं सकता, और मैं तुम्हारा सहायक हूँ' लेकिन जब दोनों सेनाएँ आमने-सामने हुईं, तो वह पीछे हट गया और बोला, 'मैं तुमसे बरी हूँ, मैं वह देख रहा हूँ जो तुम नहीं देख सकते। मुझे अल्लाह से डर लगता है' और अल्लाह की सजा बहुत कठोर है।	**48**
اِذْ يَقُوْلُ الْمُنٰفِقُوْنَ وَالَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ غَرَّ هٰٓؤُلَاۤءِ دِيْنُهُمْ وَمَنْ يَّتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ فَاِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ	(याद करो) जब मुनाफ़िक़ और जिनके दिलों में रोग था, वे कहते थे, 'इन (मुसलमानों) को उनके धरम ने धोखा दिया है' (अल्लाह ने कहा), 'जो कोई अल्लाह पर भरोसा करता है, जान लो कि अल्लाह बहुत शक्तिशाली, बहुत बुद्धिमान है'	**49**
وَلَوْ تَرٰٓى اِذْ يَتَوَفَّى الَّذِيْنَ كَفَرُوا الْمَلٰٓئِكَةُ يَضْرِبُوْنَ وُجُوْهَهُمْ وَاَدْبَارَهُمْ وَذُوْقُوْا عَذَابَ الْحَرِيْقِ	और यदि तुम देखते जब फ़रिश्ते काफ़िरों की जान निकाल रहे थे, उनके चेहरों और उनकी पीठ पर प्रहार करते हुए (और कहते थे), 'जलाने वाली जहन्नम की यातना का स्वाद चखो।'	**50**
ذٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْكُمْ وَاَنَّ اللّٰهَ لَيْسَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ	यह तुम्हारे अपने हाथों के करमों की वजह से है और निश्चय ही, अल्लाह अपने बन्दों पर जुल्म नहीं करता।	**51**
كَدَاْبِ اٰلِ فِرْعَوْنَ وَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ فَاَخَذَهُمُ اللّٰهُ بِذُنُوْبِهِمْ اِنَّ اللّٰهَ قَوِيٌّ شَدِيْدُ الْعِقَابِ	(उनकी हालत) फ़िरऔन के अनुयायियों और उनसे पहले वालों की तरह है उन्होंने अल्लाह की आयतों को झुठलाया, तो अल्लाह ने उनके गुनाहों की वजह से उन्हें सजा दी। निश्चय ही, अल्लाह बहुत शक्तिशाली है और उसकी सजा बहुत कठोर है	**52**
ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ لَمْ يَكُ مُغَيِّرًا نِّعْمَةً اَنْعَمَهَا عَلٰى قَوْمٍ حَتّٰى يُغَيِّرُوْا مَا بِاَنْفُسِهِمْ وَاَنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ	यह इसलिए कि अल्लाह किसी कौम को दी गई अपनी नेमत को तब तक नहीं बदलता, जब तक कि वे स्वयं अपने आप में बदलाव न लाएँ और निश्चय ही, अल्लाह सब कुछ सुनने वाला, सब कुछ जानने वाला है।	**53**
كَدَاْبِ اٰلِ فِرْعَوْنَ وَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ فَاَهْلَكْنٰهُمْ بِذُنُوْبِهِمْ وَاَغْرَقْنَآ اٰلَ فِرْعَوْنَ وَكُلٌّ كَانُوْا ظٰلِمِيْنَ	(उनकी हालत) फ़िरऔन के अनुयायियों और उनसे पहले वालों की तरह है उन्होंने अपने रब की आयतों को झुठलाया, तो हमने उनके गुनाहों की वजह से उन्हें नष्ट कर दिया और फ़िरऔन और उसके अनुयायियों को डुबो दिया, क्योंकि वे ज़ालिम थे।	**54**
اِنَّ شَرَّ الدَّوَآبِّ عِنْدَ اللّٰهِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ	निश्चय ही, अल्लाह की नज़र में सबसे बुरे जीव वे हैं जो काफ़िर हैं, क्योंकि वे ईमान नहीं लाते।	**55**
الَّذِيْنَ عَاهَدْتَّ مِنْهُمْ ثُمَّ يَنْقُضُوْنَ عَهْدَهُمْ فِيْ كُلِّ مَرَّةٍ وَّهُمْ لَا يَتَّقُوْنَ	(यानी) वे लोग जिनके साथ तुमने संधि की थी, फिर भी वे हर बार अपनी संधि को तोड़ते हैं और (अल्लाह से) नहीं डरते।	**56**
فَاِمَّا تَثْقَفَنَّهُمْ فِي الْحَرْبِ فَشَرِّدْ بِهِمْ مَّنْ خَلْفَهُمْ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُوْنَ	तो यदि तुम (मुहम्मद) युद्ध में उन पर विजय प्राप्त कर लो, तो उनके द्वारा उन लोगों को तितर-बितर कर दो जो उनके पीछे हैं, ताकि वे सबक लें।	**57**

وَاِمَّا تَخَافَنَّ مِنْ قَوْمٍ خِيَانَةً فَانْبِذْ اِلَيْهِمْ عَلٰى سَوَاءٍ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْخَآئِنِيْنَ	और यदि तुम्हें किसी समूह से विश्वासघात का डर हो, तो उनकी संधि को निष्पक्ष रूप से लौटा दो। निश्चय ही, अल्लाह विश्वासघात करने वालों को पसंद नहीं करता।	**58**
وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا سَبَقُوْا اِنَّهُمْ لَا يُعْجِزُوْنَ	और काफ़िर यह न समझें कि वे (अल्लाह की पकड़ से) बच निकलेंगे। निश्चय ही, वे अल्लाह को कमज़ोर नहीं कर सकते।	**59**
وَاَعِدُّوْا لَهُمْ مَّا اسْتَطَعْتُمْ مِّنْ قُوَّةٍ وَّمِنْ رِّبَاطِ الْخَيْلِ تُرْهِبُوْنَ بِهٖ عَدُوَّ اللّٰهِ وَعَدُوَّكُمْ وَاٰخَرِيْنَ مِنْ دُوْنِهِمْ لَا تَعْلَمُوْنَهُمْ اَللّٰهُ يَعْلَمُهُمْ وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ شَيْءٍ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ يُوَفَّ اِلَيْكُمْ وَاَنْتُمْ لَا تُظْلَمُوْنَ	और उनकी (काफ़िरों की) सेना के मुक़ाबले के लिए जितनी शक्ति और घुड़सवार सेना तुम जुटा सको, तैयार करो, ताकि तुम अल्लाह के दुश्मन, अपने दुश्मन और उन लोगों को डरा सको जिन्हें तुम नहीं जानते, लेकिन अल्लाह जानता है। और जो कुछ तुम अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करोगे, वह तुम्हें पूरी तरह लौटाया जाएगा, और तुम्हारा कोई नुक़सान नहीं होगा।	**60**
وَاِنْ جَنَحُوْا لِلسَّلْمِ فَاجْنَحْ لَهَا وَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ	लेकिन यदि वे (काफ़िर) शांति की ओर झुकें, तो तुम भी उसे स्वीकार करो और अल्लाह पर भरोसा रखो। निश्चय ही, वह सब कुछ सुनने वाला, सब कुछ जानने वाला है।	**61**
وَاِنْ يُّرِيْدُوْٓا اَنْ يَّخْدَعُوْكَ فَاِنَّ حَسْبَكَ اللّٰهُ هُوَ الَّذِيْٓ اَيَّدَكَ بِنَصْرِهٖ وَبِالْمُؤْمِنِيْنَ	और यदि वे तुम्हें धोखा देना चाहें, तो निश्चय ही अल्लाह तुम्हारे लिए काफ़ी है। वही है जिसने अपनी सहायता और ईमान वालों के (समर्थन) से तुम्हें मज़बूत किया।	**62**
وَاَلَّفَ بَيْنَ قُلُوْبِهِمْ لَوْ اَنْفَقْتَ مَا فِى الْاَرْضِ جَمِيْعًا مَّآ اَلَّفْتَ بَيْنَ قُلُوْبِهِمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ اَلَّفَ بَيْنَهُمْ اِنَّهٗ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ	और उसने (अल्लाह ने) उनके (ईमान वालों के) दिलों को एकजुट किया। यदि तुम धरती की सारी संपत्ति ख़र्च कर देते, तो भी तुम उनके दिलों को एकजुट नहीं कर सकते थे, लेकिन अल्लाह ने उनके दिलों को एकजुट किया। निश्चय ही, वह बहुत शक्तिशाली, बहुत बुद्धिमान है।	**63**
يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ حَسْبُكَ اللّٰهُ وَمَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ	हे नबी (मुहम्मद)! तुम्हारे लिए और उन ईमान वालों के लिए जो तुम्हारा अनुसरण करते हैं, अल्लाह (संरक्षक के रूप में) काफ़ी है।	**64**
يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ حَرِّضِ الْمُؤْمِنِيْنَ عَلَى الْقِتَالِ اِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ عِشْرُوْنَ صٰبِرُوْنَ يَغْلِبُوْا مِائَتَيْنِ وَاِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ مِّائَةٌ يَّغْلِبُوْٓا اَلْفًا مِّنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَفْقَهُوْنَ	हे नबी (मुहम्मद)! ईमान वालों को युद्ध के लिए प्रेरित करो। यदि तुममें से बीस सब्र करने वाले हों, तो वे दो सौ (दुश्मनों) को हरा सकते हैं और यदि तुममें से सौ (सब्र करने वाले) हों, तो वे एक हज़ार काफ़िरों को हरा सकते हैं, क्योंकि वे (काफ़िर) ऐसे लोग हैं जो समझ नहीं रखते।	**65**
اَلْـٰٔنَ خَفَّفَ اللّٰهُ عَنْكُمْ وَعَلِمَ اَنَّ فِيْكُمْ ضَعْفًا فَاِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ مِّائَةٌ صَابِرَةٌ يَّغْلِبُوْا مِائَتَيْنِ وَاِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ اَلْفٌ يَّغْلِبُوْٓا اَلْفَيْنِ بِاِذْنِ اللّٰهِ وَاللّٰهُ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ	अब अल्लाह ने तुम्हारे लिए (यह नियम) हल्का कर दिया है, क्योंकि वह जानता है कि तुममें कमज़ोरी है। तो यदि तुममें से सौ सब्र करने वाले हों, तो वे दो सौ (दुश्मनों) को हरा सकते हैं और यदि तुममें से एक हज़ार (सब्र करने वाले) हों, तो वे अल्लाह की इजाज़त से दो हज़ार को हरा सकते हैं और अल्लाह सब्र करने वालों के साथ है।	**66**

مَا كَانَ لِنَبِيٍّ اَنْ يَّكُوْنَ لَه اَسْرٰى حَتّٰى يُثْخِنَ فِى الْاَرْضِ تُرِيْدُوْنَ عَرَضَ الدُّنْيَا وَاللّٰهُ يُرِيْدُ الْاٰخِرَةَ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ	67	कसिी नबी क॓लिए यह उचति नहीं ह॓कि वह (यद्ध म॑) कद़ैयिों को रख॓, जब तक कि वह धरती पर दश्मन॑ को पूरी तरह कच॒ल न दे॓ तम॒ दन॒यिा की संपतत॑ा चाहत॓ हो, जबकि अल॒लाह (तम॒हार॓ लिए) आख़िरत (का प॒रतफिल) चाहता ह॑ै और अल॒लाह बहत॒ शकत॑शिाली, बहत॒ बद्धमिान ह॑ै
لَوْلَا كِتٰبٌ مِّنَ اللّٰهِ سَبَقَ لَمَسَّكُمْ فِيْمَآ اَخَذْتُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ	68	यदि अल॒लाह की ओर स॓ पहल॓ स॓ कोई हक़म॒ न होता, तो तम॒ह॑ उस (फ़िदया) क॓ कारण, जो तम॒न॓ लिया, बहत॒ बड़ी सजा मलिती।
فَكُلُوْا مِمَّا غَنِمْتُمْ حَلٰلًا طَيِّبًا وَّاتَّقُوا اللّٰهَ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ	69	तो जो यद्ध का माल तम॒न॓ प॒रापत॒ कयिा, उस॓ खाओ, वह हलाल और अचछा ह॑ै और अल॒लाह स॓ डरो। नशि॒चय ही, अल॒लाह बहत॒ क॒षमाशील, बहत॒ दयाल॒ ह॑ै
يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِّمَنْ فِيْٓ اَيْدِيْكُمْ مِّنَ الْاَسْرٰٓى اِنْ يَّعْلَمِ اللّٰهُ فِيْ قُلُوْبِكُمْ خَيْرًا يُّؤْتِكُمْ خَيْرًا مِّمَّآ اُخِذَ مِنْكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ	70	ह॓ नबी (मह॒मम॒द)! उन यद्धबंदयिों स॓, जो तम॒हार॓ हाथ म॑ ह॑ै, कहो, 'यदि अल॒लाह को तम॒हार॓ दलिों म॑ कोई भलाई दखिती ह॑ै, तो वह तम॒ह॑ उसस॓ बहेतर दगे॓गा जो तम॒स॓ लयिा गया और तम॒ह॑ माफ़ करे॓गा।' और अल॒लाह बहत॒ क॒षमाशील, बहत॒ दयाल॒ ह॑ै
وَاِنْ يُّرِيْدُوْا خِيَانَتَكَ فَقَدْ خَانُوا اللّٰهَ مِنْ قَبْلُ فَاَمْكَنَ مِنْهُمْ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ	71	लकेनि यदि व॓ (यद्धबंदी) तम॒हार॓ साथ वशि॒वासघात करना चाह॑ै, तो उनहों॑ इसस॓ पहल॓ भी अल॒लाह क॓ साथ वशि॒वासघात कयिा था, इसलिए अल॒लाह न॓ तम॒ह॑ उन पर क़ाब॒ दयिा। और अल॒लाह सब कछ॒ जानन॓वाला, बहत॒ बद्धमिान ह॑ै
اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَهَاجَرُوْا وَجٰهَدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَالَّذِيْنَ اٰوَوْا وَّنَصَرُوْٓا اُولٰٓئِكَ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَاءُ بَعْضٍ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَلَمْ يُهَاجِرُوْا مَا لَكُمْ مِّنْ وَّلَايَتِهِمْ مِّنْ شَيْءٍ حَتّٰى يُهَاجِرُوْا وَاِنِ اسْتَنْصَرُوْكُمْ فِى الدِّيْنِ فَعَلَيْكُمُ النَّصْرُ اِلَّا عَلٰى قَوْمٍ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ مِّيْثَاقٌ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ	72	नशि॒चय ही, जो लोग ईमान लाए और हजिरत की और अल॒लाह क॓ रास॒त॓ म॑ अपनी संपतत॑ा और अपनी जान स॓ जहिाद कयिा, और जनि लोगों॑ न॓ (मह॒ाजरिों को) ठकिाना दयिा और उनकी सहायता की, व॓ एक-दस॒र॓ क॓ रक॒षक ह॑ै और जो लोग ईमान लाए, लकेनि हजिरत नहीं॑ की, उनक॓ लिए तम॒ह॑ कोई ज़मि॒मेदारी नहीं॑ ह॑ै जब तक कि व॓ हजिरत न कर॑ लकेनि यदि व॓ तम॒स॓ धरम॒ (क॓ रास॒त॓ म॑) सहायता माग॑ँ, तो तम॒ह॑ उनकी सहायता करना अनविार॒य ह॑ै, सविाय इसक॓ कि व॓ उन लोगों क॓ ख़लिाफ़ हों जनिक॓ साथ तम॒हारी संधि हो। और अल॒लाह तम॒हार॓ कर॒मों को दख॓ रहा ह॑ै
وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا بَعْضُهُمْ اَوْلِيَاءُ بَعْضٍ اِلَّا تَفْعَلُوْهُ تَكُنْ فِتْنَةٌ فِى الْاَرْضِ وَفَسَادٌ كَبِيْرٌ	73	और जो लोग काफ़िर ह॑ै, व॓ एक-दस॒र॓ क॓ रक॒षक ह॑ै यदि तम॒ (मस॒लमान) अल॒लाह क॓ आदश॓ (एक-दस॒र॓ की रक॒षा करन॓) का पालन नहीं॑ करत॓, तो धरती पर फ़ति॓ना (अशां॑ति) और बड़ा भ्र॒ष्टाचार फल॓ जाएगा।
وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَهَاجَرُوْا وَجٰهَدُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَالَّذِيْنَ اٰوَوْا وَّنَصَرُوْٓا اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُؤْمِنُوْنَ حَقًّا لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ كَرِيْمٌ	74	और जो लोग ईमान लाए और हजिरत की और अल॒लाह क॓ रास॒त॓ म॑ जहिाद कयिा, और जनि लोगों॑ न॓ (मह॒ाजरिों॑ को) ठकिाना दयिा और उनकी सहायता की, वही सचच॓ ईमान वाल॓ ह॑ै उनक॓ लिए क॒षमा और सम॒मानजनक आजीवकिा ह॑ै

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْۢ بَعْدُ وَهَاجَرُوْا وَجٰهَدُوْا مَعَكُمْ فَاُولٰٓئِكَ مِنْكُمْ وَاُولُوا الْاَرْحَامِ بَعْضُهُمْ اَوْلٰى بِبَعْضٍ فِيْ كِتٰبِ اللّٰهِ اِنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ	और जो लोग बाद म॓ईमान लाए और हजिरत की और तमु॒हार॓ साथ जहिाद कयि, व॓तमु॒म॑स॓है और रशि॒तदेार (खन॒ क॓रेशि॒त॓ वाल) अल॒लाह की कतिाब म॓एक-दसू॒र॓क॓अधकि हकद॒ार है नशि॒चय ही, अल॒लाह हर चीज॒ को जानन॓वाला है	75

छदों की संख़्या	اَلتَّوْبَة	मदनी
१२९	एट-तौबाह - 9	मदनी

एट-तौबाह (तौबा)

1	(यह घोषणा है) अल्लाह और उनके रसूल की ओर से उन मुश्रिकों (मूर्तिपूजकों) के साथ संबंध विच्छेद की, जिनके साथ तुमने संधि की थी।	بَرَاءَةٌ مِّنَ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖٓ اِلَى الَّذِيْنَ عَاهَدْتُّمْ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ
2	तो तुम (मुश्रिको) चार महीने तक धरती पर स्वतंत्र रूप से घूमो और जान लो कि तुम अल्लाह को कमजोर नहीं कर सकते, और निश्चय ही अल्लाह काफ़िरों को अपमानित करता है।	فَسِيْحُوْا فِى الْاَرْضِ اَرْبَعَةَ اَشْهُرٍ وَّاعْلَمُوْٓا اَنَّكُمْ غَيْرُ مُعْجِزِى اللّٰهِ وَاَنَّ اللّٰهَ مُخْزِى الْكٰفِرِيْنَ
3	और अल्लाह और उनके रसूल की ओर से हज्ज़े अकबर (महान हज) के दिन मनुष्यों के लिए एक घोषणा है कि अल्लाह और उनका रसूल मुश्रिकों से बरी है। फिर यदि तुम (मुश्रिको) तौबा कर लो, तो यह तुम्हारे लिए बेहतर है, और यदि तुम मुँह फेरे लो, तो जान लो कि तुम अल्लाह को कमजोर नहीं कर सकते। और काफ़िरों को (यह) ख़ुशख़बरी दो कि (उन्हें) दुखदायी यातना मिलेगी।	وَاَذَانٌ مِّنَ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖٓ اِلَى النَّاسِ يَوْمَ الْحَجِّ الْاَكْبَرِ اَنَّ اللّٰهَ بَرِيْٓءٌ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ وَرَسُوْلُهٗ فَاِنْ تُبْتُمْ فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ وَاِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَاعْلَمُوْٓا اَنَّكُمْ غَيْرُ مُعْجِزِى اللّٰهِ وَبَشِّرِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ
4	सिवाय उन मुश्रिकों के जिनके साथ तुमने संधि की थी और उन्होंने (संधि की) किसी भी हिस्से को कम नहीं किया और न ही तुम्हारे ख़िलाफ़ किसी की सहायता की, तो उनके साथ उनकी संधि को उसके निर्धारित समय तक पूरा करो। निश्चय ही अल्लाह तक़्वा रखनेवालों से प्रेम करता है।	اِلَّا الَّذِيْنَ عَاهَدْتُّمْ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ ثُمَّ لَمْ يَنْقُصُوْكُمْ شَيْـًٔا وَّلَمْ يُظَاهِرُوْا عَلَيْكُمْ اَحَدًا فَاَتِمُّوْٓا اِلَيْهِمْ عَهْدَهُمْ اِلٰى مُدَّتِهِمْ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِيْنَ
5	जब हराम महीने बीत जाएँ, तो मुश्रिकों से जहाँ कहीं तुम उन्हें पाओ, उनसे युद्ध करो, उन्हें पकड़ो और उन्हें घेरे लो, और हर घात की जगह पर उनकी प्रतीक्षा करो। यदि वे तौबा कर लें, नमाज़ क़ायम करें और ज़कात दें, तो उन्हें स्वतंत्र छोड़ दो। निश्चय ही अल्लाह बहुत क्षमाशील, बहुत दयालु है।	فَاِذَا انْسَلَخَ الْاَشْهُرُ الْحُرُمُ فَاقْتُلُوا الْمُشْرِكِيْنَ حَيْثُ وَجَدْتُّمُوْهُمْ وَخُذُوْهُمْ وَاحْصُرُوْهُمْ وَاقْعُدُوْا لَهُمْ كُلَّ مَرْصَدٍ فَاِنْ تَابُوْا وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ فَخَلُّوْا سَبِيْلَهُمْ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ
6	और यदि कोई मुश्रिक तुमसे शरण माँगे, तो उसे शरण दो ताकि वह अल्लाह के वचन को सुन सके, फिर उसे उसके सुरक्षित स्थान तक पहुँचा दो। (ऐसा इसलिए) क्योंकि वे ऐसे लोग हैं जो नहीं जानते।	وَاِنْ اَحَدٌ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ اسْتَجَارَكَ فَاَجِرْهُ حَتّٰى يَسْمَعَ كَلٰمَ اللّٰهِ ثُمَّ اَبْلِغْهُ مَاْمَنَهٗ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَعْلَمُوْنَ
7	अल्लाह और उनके रसूल के पास मुश्रिकों के साथ कोई संधि कैसे हो सकती है, सिवाय उन लोगों के जिनके साथ तुमने मस्जिदे हराम (हुदैबिया) के पास संधि की थी? तो जब तक वे तुम्हारे प्रति ईमानदार रहें, तुम भी उनके प्रति ईमानदार रहो। निश्चय ही अल्लाह तक़्वा रखनेवालों से प्रेम करता है।	كَيْفَ يَكُوْنُ لِلْمُشْرِكِيْنَ عَهْدٌ عِنْدَ اللّٰهِ وَعِنْدَ رَسُوْلِهٖٓ اِلَّا الَّذِيْنَ عَاهَدْتُّمْ عِنْدَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ فَمَا اسْتَقَامُوْا لَكُمْ فَاسْتَقِيْمُوْا لَهُمْ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِيْنَ

كَيْفَ وَاِنْ يَّظْهَرُوْا عَلَيْكُمْ لَا يَرْقُبُوْا فِيْكُمْ اِلًّا وَّلَا ذِمَّةً يُرْضُوْنَكُمْ بِاَفْوَاهِهِمْ وَتَاْبٰى قُلُوْبُهُمْ وَاَكْثَرُهُمْ فٰسِقُوْنَ	(संधि कैसे हो सकती है) जबकि यदि वे तुम पर विजय प्राप्त कर लें, तो वे न तो तुम्हारे साथ रिश्तेदारी का ध्यान रखते हैं और न ही संधि का। वे अपने मुँह से तुम्हें प्रसन्न करते हैं, लेकिन उनके दिल इनकार करते हैं और उनमें से अधिकांश लोग फ़ासिक़ (वचन तोड़ने वाले) हैं	8
اِشْتَرَوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ثَمَنًا قَلِيْلًا فَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِهٖ اِنَّهُمْ سَاۤءَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ	वे अल्लाह की आयतों को सस्ते दामों में बेच देते हैं, फिर (लोगों को) अल्लाह के रास्ते से रोकते हैं। निश्चय ही, जो कुछ वे करते हैं, वह बहुत बुरा है।	9
لَا يَرْقُبُوْنَ فِيْ مُؤْمِنٍ اِلًّا وَّلَا ذِمَّةً وَاُولٰۤىِٕكَ هُمُ الْمُعْتَدُوْنَ	वे न तो मुसलमानों के साथ रिश्तेदारी का ध्यान रखते हैं और न ही संधि का। और वही लोग हैं जो हद से आगे बढ़ते हैं।	10
فَاِنْ تَابُوْا وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ فَاِخْوَانُكُمْ فِى الدِّيْنِ وَنُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ	और यदि वे तौबा कर लें, नमाज़ क़ायम करें और ज़कात दें, तो (वे) तुम्हारे धर्म के भाई हैं। हम इन आयतों को उन लोगों के लिए स्पष्ट करते हैं जो जानते हैं।	11
وَاِنْ نَّكَثُوْۤا اَيْمَانَهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ عَهْدِهِمْ وَطَعَنُوْا فِىْ دِيْنِكُمْ فَقَاتِلُوْۤا اَىِٕمَّةَ الْكُفْرِ اِنَّهُمْ لَاۤ اَيْمَانَ لَهُمْ لَعَلَّهُمْ يَنْتَهُوْنَ	और यदि वे संधि के बाद अपनी कसम तोड़ दें और तुम्हारे धर्म की निंदा करें, तो काफ़िरों के नेताओं से युद्ध करो। निश्चय ही, वे ऐसे लोग हैं जिनके वचन का कोई मूल्य नहीं है, ताकि वे (अपने कृत्य से) रुक जाएँ।	12
اَلَا تُقَاتِلُوْنَ قَوْمًا نَّكَثُوْۤا اَيْمَانَهُمْ وَهَمُّوْا بِاِخْرَاجِ الرَّسُوْلِ وَهُمْ بَدَءُوْكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍ اَتَخْشَوْنَهُمْ فَاللّٰهُ اَحَقُّ اَنْ تَخْشَوْهُ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ	क्या तुम उन लोगों से युद्ध नहीं करोगे जिन्होंने अपनी कसमें तोड़ीं और रसूल को निकालने की योजना बनाई, और उन्होंने तुम्हारे ख़िलाफ़ सबसे पहल युद्ध शुरू किया? क्या तुम उनसे डरते हो, जबकि अल्लाह ही वह है जिससे तुम्हें डरना चाहिए, यदि तुम ईमान वाले हो।	13
قَاتِلُوْهُمْ يُعَذِّبْهُمُ اللّٰهُ بِاَيْدِيْكُمْ وَيُخْزِهِمْ وَيَنْصُرْكُمْ عَلَيْهِمْ وَيَشْفِ صُدُوْرَ قَوْمٍ مُّؤْمِنِيْنَ	उनसे युद्ध करो, निश्चय ही अल्लाह तुम्हारे हाथों से उन्हें यातना देगा और उन्हें अपमानित करेगा, और तुम्हें उन पर विजय देगा, और ईमान वालों के दिलों को शांत देगा।	14
وَيُذْهِبْ غَيْظَ قُلُوْبِهِمْ وَيَتُوْبُ اللّٰهُ عَلٰى مَنْ يَّشَاۤءُ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ	और वह (अल्लाह) उनके (ईमान वालों के) दिलों का गुस्सा दूर करेगा। और अल्लाह जिसकी तौबा चाहता है, उस स्वीकार करता है। अल्लाह सब कुछ जानने वाला, बहुत बुद्धिमान है।	15
اَمْ حَسِبْتُمْ اَنْ تُتْرَكُوْا وَلَمَّا يَعْلَمِ اللّٰهُ الَّذِيْنَ جَاهَدُوْا مِنْكُمْ وَلَمْ يَتَّخِذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلَا رَسُوْلِهٖ وَلَا الْمُؤْمِنِيْنَ وَلِيْجَةً وَاللّٰهُ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ	क्या तुम सोचते हो कि तुम्हें (बिना परीक्षा के) छोड़ दिया जाएगा, जबकि अल्लाह ने अभी उन लोगों को नहीं जाना जो तुममें से जिहाद करते हैं और अल्लाह, उनके रसूल और ईमान वालों के सिवा किसी को अपना घनिष्ठ मित्र नहीं बनाते? अल्लाह तुम्हारे कर्मों से अच्छी तरह वाकिफ़ है।	16
مَا كَانَ لِلْمُشْرِكِيْنَ اَنْ يَّعْمُرُوْا مَسٰجِدَ اللّٰهِ شٰهِدِيْنَ عَلٰۤى اَنْفُسِهِمْ بِالْكُفْرِ اُولٰۤىِٕكَ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ وَفِى النَّارِ هُمْ خٰلِدُوْنَ	मुशरिकों के लिए यह उचित नहीं है कि वे अल्लाह की मस्जिदों को आबाद करें, जबकि वे स्वयं अपनी कुफ़्र (अवशिष्ट) की गवाही देते हैं। उनके कर्म व्यर्थ हैं, और वे जहन्नम में हमेशा रहेंगे।	17

18	अल्लाह की मस्ज़िदों को कवेल वही लोग आबाद करत`े ह`ैं जो अल्लाह और आख़िरत क`े दनि पर ईमान रखत`े ह`ैं, नमाज़ क़ायम करत`े ह`ैं, ज़कात दते`े ह`ैं और अल्लाह क`े सवि कसिी स`े नहीं डरत।े यही लोग ह`ैं जो मार्गदर्शन प्रापत करन`े वालों म`ें स`े हो सकत`े ह`ैं।	اِنَّمَا يَعْمُرُ مَسٰجِدَ اللّٰهِ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَاَقَامَ الصَّلٰوةَ وَاٰتَى الزَّكٰوةَ وَلَمْ يَخْشَ اِلَّا اللّٰهَ فَعَسٰٓى اُولٰٓئِكَ اَنْ يَّكُوْنُوْا مِنَ الْمُهْتَدِيْنَ
19	क्या तम्ु उन लोगों को, जो हज करन`े वालों को पानी पलात`े ह`ैं और मस्ज़दि हराम की दखे़भाल करत`े ह`ैं, उनक`े बराबर समझत`े हो जो अल्लाह और आख़िरत क`े दनि पर ईमान रखत`े ह`ैं और अल्लाह क`े रास्त`े म`ें जहिाद करत`े ह?ैं व`े अल्लाह की नज़र म`ें बराबर नहीं ह।ैं अल्लाह ज़ालमि लोगों को मार्गदर्शन नहीं दते।ा	اَجَعَلْتُمْ سِقَايَةَ الْحَاۤجِّ وَعِمَارَةَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ كَمَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَجَاهَدَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۗ لَا يَسْتَوٗنَ عِنْدَ اللّٰهِ ۗ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ
20	जो लोग ईमान लाए, हजिरत की और अल्लाह क`े रास्त`े म`ें अपनी सपंत्त आिैर अपनी जान स`े जहिाद कयिा, व`े अल्लाह की नज़र म`ें उच्च दरज़ क`े ह`ैं। वही लोग ह`ैं जो वजियी ह।ैं	اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَهَاجَرُوْا وَجَاهَدُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ اَعْظَمُ دَرَجَةً عِنْدَ اللّٰهِ ۗ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفَاۤئِزُوْنَ
21	उनका रब उन्ह`ें अपनी रहमत, अपनी प्रसन्नता और जन्नत की खशु़खबरी दतेा ह,ै जसिम`ें व`े हमशेा क`े लिए सख़ु प्रापत करग।े	يُبَشِّرُهُمْ رَبُّهُمْ بِرَحْمَةٍ مِّنْهُ وَرِضْوَانٍ وَّجَنّٰتٍ لَّهُمْ فِيْهَا نَعِيْمٌ مُّقِيْمٌ
22	व`े उसम`ें हमशेा रहग।े नशि्चय ही अल्लाह क`े पास बहत्त बड़ा प्रतफिल ह।ै	خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ۗ اِنَّ اللّٰهَ عِنْدَهٗٓ اَجْرٌ عَظِيْمٌ
23	ह`े ईमान वालो! अपन`े बापों और भाइयों को अपना संरक्षक न बनाओ, यदि व`े ईमान क`े बजाय कफ़्र को अधकि पसंद करत`े ह।ैं और तम्ुम`ें स`े जो कोई उन्ह`ें अपना संरक्षक बनाएगा, वही लोग ज़ालमि ह।ैं	يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوْٓا اٰبَاۤءَكُمْ وَاِخْوَانَكُمْ اَوْلِيَاۤءَ اِنِ اسْتَحَبُّوا الْكُفْرَ عَلَى الْاِيْمَانِ ۗ وَمَنْ يَّتَوَلَّهُمْ مِّنْكُمْ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ
24	कहो (मुहम्मद), 'यदि तम्ुहार`े बाप, तम्ुहार`े बटे,े तम्ुहार`े भाई, तम्ुहारी पत्नियाँ, तम्ुहारा कटुंब, तम्ुहारी कमाई हई्ु सपंत्त, तम्ुहारा व्यापार जसिक`े नक़ुसान स`े तम्ु डरत`े हो, और तम्ुहार`े मनपसंद मकान, तम्ुह`ें अल्लाह और उनक`े रसूल[7][7] अल्लाह क`े रास्त`े म`ें जहिाद स`े अधकि प्रयि ह,ै तो प्रतीक्षा करो जब तक कि अल्लाह अपना फ़ैसला न द'ो और अल्लाह फ़ासकि लोगों को मार्गदर्शन नहीं दते।ा	قُلْ اِنْ كَانَ اٰبَاۤؤُكُمْ وَاَبْنَاۤؤُكُمْ وَاِخْوَانُكُمْ وَاَزْوَاجُكُمْ وَعَشِيْرَتُكُمْ وَاَمْوَالُ ِۨاقْتَرَفْتُمُوْهَا وَتِجَارَةٌ تَخْشَوْنَ كَسَادَهَا وَمَسٰكِنُ تَرْضَوْنَهَآ اَحَبَّ اِلَيْكُمْ مِّنَ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَجِهَادٍ فِيْ سَبِيْلِهٖ فَتَرَبَّصُوْا حَتّٰى يَاْتِيَ اللّٰهُ بِاَمْرِهٖ ۗ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ
25	नशि्चय ही अल्लाह न`े तम्ु (मसुलमानो) को कई यद्धक्षेत्रों म`ें सहायता दी, और (याद करो) हनुनै क`े यद्ध को, जब तम्ुहारी बड़ी सखं्या न`े तम्ुह`ें घमंडी बना दिया, लकेनि वह (सखं्या) तम्ुहार`े लिए बलि्कुल भी उपयोगी नहीं हई्ु, और धरती, जो बहत्त वसित्त थी, तम्ुहार`े लिए तंग हो गई, फरि तम्ु पीठ फरेकर भाग खड़`े हए।ु	لَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ فِيْ مَوَاطِنَ كَثِيْرَةٍ ۙ وَّيَوْمَ حُنَيْنٍ ۙ اِذْ اَعْجَبَتْكُمْ كَثْرَتُكُمْ فَلَمْ تُغْنِ عَنْكُمْ شَيْـًٔا وَّضَاقَتْ عَلَيْكُمُ الْاَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ ثُمَّ وَلَّيْتُمْ مُّدْبِرِيْنَ

ثُمَّ اَنْزَلَ اللّٰهُ سَكِيْنَتَه عَلٰى رَسُوْلِه وَعَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَاَنْزَلَ جُنُوْدًا لَّمْ تَرَوْهَا وَعَذَّبَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَذٰلِكَ جَزَاۤءُ الْكٰفِرِيْنَ	**26**	फिर अल्लाह ने अपने रसूल और ईमान वालों पर शांति उतारी और ऐसी सेनाएँ (फ़रिश्तों की) भेजीं जो तुमने दिखाई नहीं दीं, और उसने काफ़िरों को यातना दी। यही काफ़िरों का बदला है।
ثُمَّ يَتُوْبُ اللّٰهُ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ عَلٰى مَنْ يَّشَاۤءُ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ	**27**	इसके बाद अल्लाह जिसकी तौबा चाहता है, उसे स्वीकार करता है। अल्लाह बहुत क्षमाशील, बहुत दयालु है।
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنَّمَا الْمُشْرِكُوْنَ نَجَسٌ فَلَا يَقْرَبُوا الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ بَعْدَ عَامِهِمْ هٰذَا وَاِنْ خِفْتُمْ عَيْلَةً فَسَوْفَ يُغْنِيْكُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖٓ اِنْ شَاۤءَ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ	**28**	हे ईमान वालो! निश्चय ही मुशरिक आत्मा से नापाक हैं, इसलिए इस वर्ष के बाद वे मस्जिदे हराम के पास न आएँ और यदि तुम्हें निर्धनता का डर है (क्योंकि काफ़िर नहीं आएँगे), तो अल्लाह, यदि चाहे, तो अपनी कृपा से तुम्हें धनवान बनाएगा। निश्चय ही अल्लाह सब कुछ जानने वाला, बहुत बुद्धिमान है।
قَاتِلُوا الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَلَا بِالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَلَا يُحَرِّمُوْنَ مَا حَرَّمَ اللّٰهُ وَرَسُوْلُه وَلَا يَدِيْنُوْنَ دِيْنَ الْحَقِّ مِنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ حَتّٰى يُعْطُوا الْجِزْيَةَ عَنْ يَّدٍ وَّهُمْ صٰغِرُوْنَ	**29**	उन लोगों से युद्ध करो जो न तो अल्लाह पर और न ही आख़िरत के दिन पर ईमान रखते हैं, और न ही वे उस चीज़ को हराम ठहराते हैं जिसे अल्लाह और उनके रसूल ने हराम किया, और न ही वे सत्य धर्म (अल्लाह के धर्म) को अपनाते हैं, (यानी) उन लोगों में से जिन्हें किताब दी गई थी, जब तक कि वे जज़िया (कर) न दें, पूरी तरह आज्ञाकारी और अधीन रहते हुए।
وَقَالَتِ الْيَهُوْدُ عُزَيْرُ ِابْنُ اللّٰهِ وَقَالَتِ النَّصٰرَى الْمَسِيْحُ ابْنُ اللّٰهِ ذٰلِكَ قَوْلُهُمْ بِاَفْوَاهِهِمْ يُضَاهِـُٔوْنَ قَوْلَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَبْلُ قَاتَلَهُمُ اللّٰهُ اَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ	**30**	और यहूदी कहते हैं, 'उज़ैर अल्लाह का बेटा है,' और ईसाई कहते हैं, 'मसीह अल्लाह का बेटा है।' यह उनके मुँह से निकली बात है। वे उन काफ़िरों की नकल करते हैं जो उनसे पहले थे। अल्लाह उन्हें लानत दे; वे कैसे (सत्य से) भटक गए?
اِتَّخَذُوْٓا اَحْبَارَهُمْ وَرُهْبَانَهُمْ اَرْبَابًا مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَالْمَسِيْحَ ابْنَ مَرْيَمَ وَمَآ اُمِرُوْٓا اِلَّا لِيَعْبُدُوْٓا اِلٰهًا وَّاحِدًا لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ سُبْحٰنَه عَمَّا يُشْرِكُوْنَ	**31**	वे अपने विद्वानों (यहूदी) और अपने साधुओं (ईसाई) को और मरयम के बेटे मसीह को अल्लाह के सिवा भगवान बनाते हैं, जबकि उन्हें केवल एकमात्र ईश्वर की पूजा करने का आदेश दिया गया था; उनके सिवा कोई ईश्वर नहीं है। वह उससे बहुत उच्च और पवित्र है जिसे वे साझी ठहराते हैं।
يُرِيْدُوْنَ اَنْ يُّطْفِـُٔوْا نُوْرَ اللّٰهِ بِاَفْوَاهِهِمْ وَيَاْبَى اللّٰهُ اِلَّآ اَنْ يُّتِمَّ نُوْرَه وَلَوْ كَرِهَ الْكٰفِرُوْنَ	**32**	वे अपने मुँह (बातों) से अल्लाह की नूर (धर्म) को बुझाना चाहते हैं, लेकिन अल्लाह ऐसा होने से इनकार करता है, बल्कि वह अपनी नूर को पूर्ण करना चाहता है, भले ही काफ़िर इसे नापसंद करें।
هُوَ الَّذِيْٓ اَرْسَلَ رَسُوْلَه بِالْهُدٰى وَدِيْنِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَه عَلَى الدِّيْنِ كُلِّه وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُوْنَ	**33**	वही है जिसने अपने रसूल को मार्गदर्शन (क़ुरआन) और सत्य धर्म के साथ भेजा ताकि वह इसे हर धर्म पर श्रेष्ठ कर दे, भले ही मुशरिक इसे नापसंद करें।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ الْاَحْبَارِ وَالرُّهْبَانِ لَيَأْكُلُوْنَ اَمْوَالَ النَّاسِ بِالْبَاطِلِ وَيَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَالَّذِيْنَ يَكْنِزُوْنَ الذَّهَبَ وَالْفِضَّةَ وَلَا يُنْفِقُوْنَهَا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ	ह ईमान वालो! नशि्चय ही उनक (अहल कताि ब क) कई वदि्वान और साध लोग दूसरों की सपतत को गलत तरीक स खात ह और (लोगो को) अलल्लाह क रासत स रोकत ह और जो लोग सोना और चादी जमा करत ह और उस अलल्लाह क रासत म खरच नहीं करत, उनह (यह) खशुखबरी दो कि (उनह) दखुदायी यातना मलिगेी।	**34**
يَّوْمَ يُحْمٰى عَلَيْهَا فِيْ نَارِ جَهَنَّمَ فَتُكْوٰى بِهَا جِبَاهُهُمْ وَجُنُوْبُهُمْ وَظُهُوْرُهُمْ هٰذَا مَا كَنَزْتُمْ لِاَنْفُسِكُمْ فَذُوْقُوْا مَا كُنْتُمْ تَكْنِزُوْنَ	(याद करो) उस दनि जब उनक सोन और चादी को जहनन्म की आग म गरम कयि जाएगा, फरि उसस उनक माथ, उनकी पसलयिा और उनकी पीठ को दागा जाएगा (और कहा जाएगा), 'यह वही सपतत ह जो तमुन अपन लएि जमा की थी, तो अब उसका सवाद चखो जो तमु जमा करत थो'	**35**
اِنَّ عِدَّةَ الشُّهُوْرِ عِنْدَ اللّٰهِ اثْنَا عَشَرَ شَهْرًا فِيْ كِتٰبِ اللّٰهِ يَوْمَ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ مِنْهَآ اَرْبَعَةٌ حُرُمٌ ذٰلِكَ الدِّيْنُ الْقَيِّمُ فَلَا تَظْلِمُوْا فِيْهِنَّ اَنْفُسَكُمْ وَقَاتِلُوا الْمُشْرِكِيْنَ كَاۤفَّةً كَمَا يُقَاتِلُوْنَكُمْ كَاۤفَّةً وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُتَّقِيْنَ	नशि्चय ही अलल्लाह क पास महीनो की सखं्या बारह ह, जसैा कि अलल्लाह न आकाश और धरती की रचना क समय नरि्धारति कयि था, जनिम स चार हराम महीन ह। यही सही धरम ह, इसलएि तमु इन (चार महीनो) म अपन आप पर जलु्म न करो, और सभी मशु्रकिो स यदु्ध करो जसै व तमुस पूरी तरह यदु्ध करत ह और जान लो कि अलल्लाह तकवा रखन वालो क साथ ह	**36**
اِنَّمَا النَّسِيْۤءُ زِيَادَةٌ فِى الْكُفْرِ يُضَلُّ بِهِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يُحِلُّوْنَهٗ عَامًا وَّيُحَرِّمُوْنَهٗ عَامًا لِّيُوَاطِـُٔوْا عِدَّةَ مَا حَرَّمَ اللّٰهُ فَيُحِلُّوْا مَا حَرَّمَ اللّٰهُ زُيِّنَ لَهُمْ سُوْٓءُ اَعْمَالِهِمْ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الْكٰفِرِيْنَ	नशि्चय ही (हराम महीनो का) उलट-फरे करना कफ्र को बढ़ाता ह इसस काफरि भटक जात ह, व एक साल म इस (कछु महीनो को) हलाल करत ह और दूसर साल म हराम करत ह, ताकि व अलल्लाह दवारा हराम कए गए महीनो की सखं्या को पूरा कर ल, और साथ ही व उस चीज को हलाल कर द जसि अलल्लाह न हराम कयि था। उनक बरु करम उनक लएि सदंर बना दए गए ह और अलल्लाह काफरि लोगो को मारग्दरशन नहीं दता।	**37**
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَا لَكُمْ اِذَا قِيْلَ لَكُمُ انْفِرُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اثَّاقَلْتُمْ اِلَى الْاَرْضِ اَرَضِيْتُمْ بِالْحَيٰوةِ الدُّنْيَا مِنَ الْاٰخِرَةِ فَمَا مَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا فِى الْاٰخِرَةِ اِلَّا قَلِيْلٌ	ह ईमान वालो! जब तमुस कहा जाता ह, 'अलल्लाह क रासत म नकिलो (यदु्ध क लएि),' तो तमु कय भारीपन महसूस करत हो और अपनी जगह पर रहना चाहत हो? कया तमु दनुयिा की जदिगी को आखरित क मकुाबल अधकि पसद करत हो? जबकि दनुयिा की जदिगी का सख आखरित क मकुाबल बहत कम ह	**38**
اِلَّا تَنْفِرُوْا يُعَذِّبْكُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا وَّيَسْتَبْدِلْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ وَلَا تَضُرُّوْهُ شَيْـًٔا وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ	यदि तमु (यदु्ध क लएि) नहीं नकिलत, तो अलल्लाह तमुह दखुदायी यातना दगेा और तमुहारी जगह कसिी और कौम को लाएगा, और तमु उस जरा भी नकुसान नहीं पहुचँा सकोग। और अलल्लाह हर चीज पर कादरि ह	**39**

40	यदि तुम (मुहम्मद) की सहायता नहीं करते, तो निश्चय ही अल्लाह ने उनकी सहायता की थी जब काफ़िरों ने उन्हें (मक्का से) निकाल दिया था; जब वे (मुहम्मद और अबूबकर) दो लोग गुफ़ा में थे, तब उन्होंने अपने साथी से कहा, 'उदास न हो, निश्चय ही अल्लाह हमारे साथ है' तो अल्लाह ने उन पर शांति उतारी और ऐसी सेनाएँ (फ़रिश्तों की) भेजीं जो तुम्हें दिखाई नहीं दीं, और उसने काफ़िरों की बात को नीचा किया। और अल्लाह का वचन ही उच्च है। अल्लाह बहुत शक्तिशाली, बहुत बुद्धिमान है।	اِلَّا تَنْصُرُوْهُ فَقَدْ نَصَرَهُ اللّٰهُ اِذْ اَخْرَجَهُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ثَانِيَ اثْنَيْنِ اِذْ هُمَا فِى الْغَارِ اِذْ يَقُوْلُ لِصَاحِبِهٖ لَا تَحْزَنْ اِنَّ اللّٰهَ مَعَنَا فَاَنْزَلَ اللّٰهُ سَكِيْنَتَهٗ عَلَيْهِ وَاَيَّدَهٗ بِجُنُوْدٍ لَّمْ تَرَوْهَا وَجَعَلَ كَلِمَةَ الَّذِيْنَ كَفَرُوا السُّفْلٰى وَكَلِمَةُ اللّٰهِ هِيَ الْعُلْيَا وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ
41	तुम (युद्ध के लिए) निकलो, चाहे हलके हाल में हो या भारी हाल में, और अल्लाह के रास्ते में अपनी संपत्ति और अपनी जान से जिहाद करो। यह तुम्हारे लिए बेहतर है यदि तुम जानते हो।	اِنْفِرُوْا خِفَافًا وَّثِقَالًا وَّجَاهِدُوْا بِاَمْوَالِكُمْ وَاَنْفُسِكُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ
42	यदि (तुम्हारे बुलाने का उद्देश्य) कोई आसानी से मिलने वाला लाभ और छोटी यात्रा होती, तो वे निश्चय ही तुम्हारे साथ चल पड़ते, लेकिन उनके लिए वह मंज़िल बहुत दूर मालूम पड़ती है। वे (नाम) अल्लाह की कसम खाएँगे, 'यदि हम सक्षम होते, तो निश्चय ही तुम्हारे साथ निकलते।' वे अपने आप को नष्ट करते हैं और अल्लाह जानता है कि वे निश्चय ही झूठे हैं।	لَوْ كَانَ عَرَضًا قَرِيْبًا وَّسَفَرًا قَاصِدًا لَّاتَّبَعُوْكَ وَلٰكِنْۢ بَعُدَتْ عَلَيْهِمُ الشُّقَّةُ وَسَيَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ لَوِ اسْتَطَعْنَا لَخَرَجْنَا مَعَكُمْ يُهْلِكُوْنَ اَنْفُسَهُمْ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ
43	अल्लाह तुम्हें (मुहम्मद) माफ़ करे। तुमने उन्हें (युद्ध में न जाने की) इजाज़त क्यों दी, इससे पहले कि तुम्हें उन लोगों का पता चलता जो वास्तव में (न जाने के लिए) सच्चे थे और तुम्हें उन लोगों का पता चलता जो झूठे थे?	عَفَا اللّٰهُ عَنْكَ لِمَ اَذِنْتَ لَهُمْ حَتّٰى يَتَبَيَّنَ لَكَ الَّذِيْنَ صَدَقُوْا وَتَعْلَمَ الْكٰذِبِيْنَ
44	जो लोग अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखते हैं वे तुमसे अपनी संपत्ति और अपनी जान से जिहाद करने के लिए (न जाने की) इजाज़त नहीं माँगते। अल्लाह तक़वा रखने वालों को अच्छी तरह जानता है।	لَا يَسْتَأْذِنُكَ الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ اَنْ يُّجَاهِدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالْمُتَّقِيْنَ
45	वास्तव में, केवल वही लोग तुमसे (युद्ध में न जाने की) इजाज़त माँगते हैं जो अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान नहीं रखते, और उनके दिल संदेह में हैं, इसलिए वे अपनी शंकाओं में भटकते रहते हैं।	اِنَّمَا يَسْتَأْذِنُكَ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَارْتَابَتْ قُلُوْبُهُمْ فَهُمْ فِيْ رَيْبِهِمْ يَتَرَدَّدُوْنَ
46	और यदि वे (युद्ध के लिए) निकलना चाहते, तो उन्होंने इसके लिए तैयारी की होती, लेकिन अल्लाह को उनका निकलना पसंद नहीं था, इसलिए उसने उन्हें कमजोर कर दिया, और (उनसे) कहा गया, 'उन लोगों के साथ रहो जो (युद्ध में नहीं गए)।'	وَلَوْ اَرَادُوا الْخُرُوْجَ لَاَعَدُّوْا لَهٗ عُدَّةً وَّلٰكِنْ كَرِهَ اللّٰهُ انْۢبِعَاثَهُمْ فَثَبَّطَهُمْ وَقِيْلَ اقْعُدُوْا مَعَ الْقٰعِدِيْنَ
47	यदि वे तुम्हारे साथ निकलते, तो वे तुम्हारी ताकत में कोई इज़ाफ़ा नहीं करते, बल्कि केवल तुम्हारे बीच में अव्यवस्था पैदा करते, और वे तुम्हारी सेना के बीच में तेज़ी से घूमते फिरते, तुममें अव्यवस्था फैलाने के लिए; और तुममें कुछ लोग हैं जो उनकी बात बहुत ध्यान से सुनते हैं। अल्लाह ज़ालिमों को अच्छी तरह जानता है।	لَوْ خَرَجُوْا فِيْكُمْ مَّا زَادُوْكُمْ اِلَّا خَبَالًا وَّلَاَوْضَعُوْا خِلٰلَكُمْ يَبْغُوْنَكُمُ الْفِتْنَةَ وَفِيْكُمْ سَمّٰعُوْنَ لَهُمْ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالظّٰلِمِيْنَ

لَقَدِ ابْتَغَوُا الْفِتْنَةَ مِنْ قَبْلُ وَقَلَّبُوْا لَكَ الْاُمُوْرَ حَتّٰى جَاءَ الْحَقُّ وَظَهَرَ اَمْرُ اللّٰهِ وَهُمْ كٰرِهُوْنَ	**48**	नश्चिय ही, इससे पहले भी वे अव्यवस्था पैदा करने की कोशिश कर चुके थे और तुम्हारे लिए तरह-तरह की चालें चीं, यहाँ तक कि सत्य (अल्लाह की सहायता) आ गया, और अल्लाह का धर्म विजयी हुआ, भले ही वे इसे नापसंद करते थे।
وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّقُوْلُ ائْذَنْ لِّيْ وَلَا تَفْتِنِّيْ اَلَا فِى الْفِتْنَةِ سَقَطُوْا وَاِنَّ جَهَنَّمَ لَمُحِيْطَةٌ بِالْكٰفِرِيْنَ	**49**	और उनमें से कुछ लोग कहते हैं, 'मुझे (युद्ध में न जाने की) इजाज़त दे दो और मुझे फ़ितने (परीक्षा) में न डालो।' जान लो, वे पहले ही फ़ितने में पड़ चुके हैं और नश्चिय ही जहन्नम काफ़िरों को घेरे हुए है
اِنْ تُصِبْكَ حَسَنَةٌ تَسُؤْهُمْ وَاِنْ تُصِبْكَ مُصِيْبَةٌ يَّقُوْلُوْا قَدْ اَخَذْنَآ اَمْرَنَا مِنْ قَبْلُ وَيَتَوَلَّوْا وَّهُمْ فَرِحُوْنَ	**50**	यदि तुम्हें (मुहम्मद) कोई अच्छाई मिलती है, तो वे प्रसन्न नहीं होते; लेकिन यदि तुम पर कोई मुसीबत आती है, तो वे कहते हैं, 'हमने तो पहले ही सावधानी बरत ली थी (युद्ध में नहीं गए),' और वे (इसके साथ) ख़ुशी-ख़ुशी मुँह फेरे लेते हैं।
قُلْ لَّنْ يُّصِيْبَنَآ اِلَّا مَا كَتَبَ اللّٰهُ لَنَا هُوَ مَوْلٰىنَا وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ	**51**	कहो (मुहम्मद), 'हम पर वही आएगा जो अल्लाह ने हमारे लिए निर्धारित किया है। वही हमारा संरक्षक है, और केवल अल्लाह पर ही ईमान वालों को भरोसा करना चाहिए।'
قُلْ هَلْ تَرَبَّصُوْنَ بِنَآ اِلَّآ اِحْدَى الْحُسْنَيَيْنِ وَنَحْنُ نَتَرَبَّصُ بِكُمْ اَنْ يُّصِيْبَكُمُ اللّٰهُ بِعَذَابٍ مِّنْ عِنْدِهٖٓ اَوْ بِاَيْدِيْنَا فَتَرَبَّصُوْٓا اِنَّا مَعَكُمْ مُّتَرَبِّصُوْنَ	**52**	कहो (मुहम्मद), 'तुम हमारे लिए केवल दो अच्छी चीज़ों में से एक की प्रतीक्षा करते हो (विजय या शहादत)। और हम तुम्हारे लिए प्रतीक्षा करते हैं कि अल्लाह तुम पर अपनी ओर से यातना देगा, या हमारे हाथों से (यातना देगा)। तो प्रतीक्षा करो, हम भी तुम्हारे साथ प्रतीक्षा कर रहे हैं।'
قُلْ اَنْفِقُوْا طَوْعًا اَوْ كَرْهًا لَّنْ يُّتَقَبَّلَ مِنْكُمْ اِنَّكُمْ كُنْتُمْ قَوْمًا فٰسِقِيْنَ	**53**	कहो (मुहम्मद), 'अपनी संपत्ति को चाहे स्वेच्छा से ख़र्च करो या मजबूरी में, वह (ख़र्च) स्वीकार नहीं किया जाएगा। नश्चिय ही तुम फ़ासिक लोग हो।'
وَمَا مَنَعَهُمْ اَنْ تُقْبَلَ مِنْهُمْ نَفَقٰتُهُمْ اِلَّآ اَنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاللّٰهِ وَبِرَسُوْلِهٖ وَلَا يَاْتُوْنَ الصَّلٰوةَ اِلَّا وَهُمْ كُسَالٰى وَلَا يُنْفِقُوْنَ اِلَّا وَهُمْ كٰرِهُوْنَ	**54**	और उनके ख़र्च को स्वीकार न किए जाने का कारण यह है कि वे अल्लाह और उनके रसूल के प्रति काफ़िर (इनकारी) हैं, और वे नमाज़ को आलस्य के साथ अदा करते हैं, और अपनी संपत्ति को अनिच्छा (मजबूरी) के साथ ख़र्च करते हैं।
فَلَا تُعْجِبْكَ اَمْوَالُهُمْ وَلَآ اَوْلَادُهُمْ اِنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ لِيُعَذِّبَهُمْ بِهَا فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَتَزْهَقَ اَنْفُسُهُمْ وَهُمْ كٰفِرُوْنَ	**55**	तो उनकी संपत्ति और उनके बच्चे तुम्हें प्रभावित न करें। अल्लाह का उद्देश्य इससे केवल यह है कि उन्हें दुनिया की ज़िंदगी में यातना दे और वे काफ़िर की हालत में मर जाएँ।
وَيَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ اِنَّهُمْ لَمِنْكُمْ وَمَا هُمْ مِّنْكُمْ وَلٰكِنَّهُمْ قَوْمٌ يَّفْرَقُوْنَ	**56**	और वे (मुनाफ़िक़) अल्लाह के नाम पर कसम खाते हैं कि वे नश्चिय ही तुम्हारे समूह में से हैं; लेकिन वे तुम्हारे समूह में से नहीं हैं, बल्कि वे ऐसे लोग हैं जो बहुत डरते हैं (तुमसे)।
لَوْ يَجِدُوْنَ مَلْجَاً اَوْ مَغٰرٰتٍ اَوْ مُدَّخَلًا لَّوَلَّوْا اِلَيْهِ وَهُمْ يَجْمَحُوْنَ	**57**	यदि उन्हें कोई शरणस्थल, गुफ़ाएँ या ज़मीन में छिपने की जगह मिल जाए, तो वे तेज़ी से वहाँ भाग जाएँगे।

وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّلْمِزُكَ فِي الصَّدَقٰتِ فَاِنْ اُعْطُوْا مِنْهَا رَضُوْا وَاِنْ لَّمْ يُعْطَوْا مِنْهَآ اِذَا هُمْ يَسْخَطُوْنَ	**58**	और उनम॑से कुछ लोग ज़कात के॑बटँवारे॑ के॑बारे॑ म॑ तमुह॑ताने॑ दते॑ हे॑; यदि उनह॑ हिसि॑सा दयिा जाए, तो वे॑ प॑रसन॑न हो जात॑े हे॑, और यदि उनह॑ हिसि॑सा न दयिा जाए, तो वे॑ तरुंत नाराज॑ हो जात॑े हे॑।
وَلَوْ اَنَّهُمْ رَضُوْا مَآ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ وَقَالُوْا حَسْبُنَا اللّٰهُ سَيُؤْتِيْنَا اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ وَرَسُوْلُهٗٓ اِنَّآ اِلَى اللّٰهِ رٰغِبُوْنَ	**59**	और यदि वे॑ उसस॑े संतषुट होत॑े जो अलल॑ाह और उनक॑े रसलू न॑े उनह॑ दयिा, और कहत॑े, 'हमार॑े लिए॑ अलल॑ाह काफ़ी ह॑े, अलल॑ाह और उनका रसलू हम॑े अपनी कप॑ा स॑े दगे॑ा। नशि॑चय ही हम अलल॑ाह की ओर रझु ान रखन॑े वाल॑े ह॑ै।'
اِنَّمَا الصَّدَقٰتُ لِلْفُقَرَاۤءِ وَالْمَسٰكِيْنِ وَالْعٰمِلِيْنَ عَلَيْهَا وَالْمُؤَلَّفَةِ قُلُوْبُهُمْ وَفِي الرِّقَابِ وَالْغٰرِمِيْنَ وَفِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَابْنِ السَّبِيْلِ فَرِيْضَةً مِّنَ اللّٰهِ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ	**60**	नशि॑चय ही ज़कात कवेल फ़क़ी॑रों, मसि॑क़ीनों, ज़कात सगं॑रह करन॑े वालों, उन लोगों क॑े लिए॑ ह॑ै जनिक॑े दलिों को (इसलाम की ओर) आकरष॑ति करना हो (मह॑ालल॑फ), गलु ामों को आज़ाद करन॑े क॑े लिए॑, करज़॑दारों क॑े लिए॑, अलल॑ाह क॑े रास॑त॑े म॑ (जहिाद क॑े लिए॑), और मसु॑ाफ़ि॑रों क॑े लिए॑ ह॑ै, यह अलल॑ाह की ओर स॑े एक फ़रज़॑ ह॑ै। अलल॑ाह सब कछु जानन॑े वाला, बहत॑ु बदु॑धमिान ह॑ै।
وَمِنْهُمُ الَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ النَّبِيَّ وَيَقُوْلُوْنَ هُوَ اُذُنٌ قُلْ اُذُنُ خَيْرٍ لَّكُمْ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَيُؤْمِنُ لِلْمُؤْمِنِيْنَ وَرَحْمَةٌ لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَالَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ رَسُوْلَ اللّٰهِ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ	**61**	और उनम॑े स॑े कछु लोग (मनु॑ाफ़ि॑क़) नबी (मह॑ममद॑) को दखु॑ी करत॑े ह॑ै और कहत॑े ह॑ै, 'वह तो हर बात पर वशि॑वास करन॑े वाला ह॑ै।' कहो, 'वह तमु॑हार॑े लिए॑ अचछा॑ई पर वशि॑वास करता ह॑ै, वह अलल॑ाह पर ईमान रखता ह॑ै, ईमान वालों पर भरोसा करता ह॑ै, और तमु॑म॑े स॑े जो लोग ईमान वाल॑े ह॑ै, उनक॑े लिए॑ रहमत ह॑ै।' और जो लोग रसलूलल॑ाह को दखु॑ी करत॑े ह॑ै, उनक॑े लिए॑ दखु॑दायी यातना ह॑ै।
يَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ لَكُمْ لِيُرْضُوْكُمْ وَاللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗٓ اَحَقُّ اَنْ يُّرْضُوْهُ اِنْ كَانُوْا مُؤْمِنِيْنَ	**62**	व॑े तमु॑ह॑ प॑रसन॑न करन॑े क॑े लिए॑ अलल॑ाह क॑े नाम पर कसम खात॑े ह॑ै, जबकि यदि वे॑ ईमान वाल॑े होत॑े, तो अलल॑ाह और उनक॑े रसलू को प॑रसन॑न करना उनक॑े लिए॑ अधकि उचति था।
اَلَمْ يَعْلَمُوْٓا اَنَّهٗ مَنْ يُّحَادِدِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَاَنَّ لَهٗ نَارَ جَهَنَّمَ خَالِدًا فِيْهَا ذٰلِكَ الْخِزْيُ الْعَظِيْمُ	**63**	कय॑ा व॑े (मनु॑ाफ़ि॑क़) नहीं जानत॑े कि॑ जो कोई अलल॑ाह और उनक॑े रसलू का वरिोध करता ह॑ै, उसक॑े लिए॑ जहन॑नम की आग ह॑ै, जसिम॑े वह हमशे॑ा रहगे॑ा। यही बहत॑ु बड़ी॑ अपमानजनक सजा ह॑ै।
يَحْذَرُ الْمُنٰفِقُوْنَ اَنْ تُنَزَّلَ عَلَيْهِمْ سُوْرَةٌ تُنَبِّئُهُمْ بِمَا فِيْ قُلُوْبِهِمْ قُلِ اسْتَهْزِءُوْٓا اِنَّ اللّٰهَ مُخْرِجٌ مَّا تَحْذَرُوْنَ	**64**	मनु॑ाफ़ि॑क़ डरत॑े ह॑ै कि॑ कहीं कोई सूरह न उतर आए जो उनक॑े दलिों म॑े छपिी॑ बातों को प॑रकट कर दो कहो (उनस॑े), 'तमु॑ (अलल॑ाह और उनक॑े रसलू का) मज़ाक़ उड़ात॑े रहो।' नशि॑चय ही अलल॑ाह वह सब प॑रकट करगे॑ा जसिस॑े तमु॑ डरत॑े हो॑।
وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ لَيَقُوْلُنَّ اِنَّمَا كُنَّا نَخُوْضُ وَنَلْعَبُ قُلْ اَبِاللّٰهِ وَاٰيٰتِهٖ وَرَسُوْلِهٖ كُنْتُمْ تَسْتَهْزِءُوْنَ	**65**	और यदि तमु॑ उनस॑े पछो॑, तो वे॑ नशि॑चय ही कहगे॑, 'हम तो कवेल मज़ाक़ और खले॑ कर रह॑े थे।' कहो, 'कय॑ा तमु॑ अलल॑ाह, उनकी॑ आयतों और उनक॑े रसलू का मज़ाक़ उड़ात॑े हो?'
لَا تَعْتَذِرُوْا قَدْ كَفَرْتُمْ بَعْدَ اِيْمَانِكُمْ اِنْ نَّعْفُ عَنْ طَآئِفَةٍ مِّنْكُمْ نُعَذِّبْ طَآئِفَةً بِاَنَّهُمْ كَانُوْا مُجْرِمِيْنَ	**66**	तमु॑ माफ़ी॑ न मागँो॑, कय॑ोंकि॑ तमु॑न॑े ईमान लान॑े क॑े बाद कफ़ु॑र कय॑ा। यदि हम तमु॑म॑े स॑े कछु लोगों को (उनकी॑ तौबा क॑े कारण) माफ़॑ कर द॑ें, तो हम दसू॑रों को (उनक॑े पापों क॑े कारण) यातना दगे॑ं, कय॑ोंकि॑ वे॑ नशि॑चय ही अपराधी ह॑ै।

اَلْمُنٰفِقُوْنَ وَالْمُنٰفِقٰتُ بَعْضُهُمْ مِّنْ بَعْضٍ يَأْمُرُوْنَ بِالْمُنْكَرِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمَعْرُوْفِ وَيَقْبِضُوْنَ اَيْدِيَهُمْ نَسُوا اللّٰهَ فَنَسِيَهُمْ اِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ	67	मुनाफ़िक़ पुरुष और मुनाफ़िक़ महिलाएँ, एक-दूसरे के समान हैं, वे बुराई को प्रोत्साहित करते हैं और नेकी को रोकते हैं और अपने हाथों को बंद रखते हैं (कंजूसी करते हैं)। उन्होंने अल्लाह को भुला दिया, तो अल्लाह ने भी उन्हें भुला दिया। निश्चय ही मुनाफ़िक़ फ़ासिक़ लोग हैं
وَعَدَ اللّٰهُ الْمُنٰفِقِيْنَ وَالْمُنٰفِقٰتِ وَالْكُفَّارَ نَارَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا هِيَ حَسْبُهُمْ وَلَعَنَهُمُ اللّٰهُ وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّقِيْمٌ	68	अल्लाह ने मुनाफ़िक़ पुरुषों और महिलाओं और काफ़िरों को जहन्नम की आग का वादा किया है वे उसमें हमेशा रहेंगे। वह (आग) उनके लिए काफ़ी है अल्लाह ने उन्हें लानत दी, और उनके लिए स्थायी यातना है
كَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ كَانُوْٓا اَشَدَّ مِنْكُمْ قُوَّةً وَّاَكْثَرَ اَمْوَالًا وَّاَوْلَادًا فَاسْتَمْتَعُوْا بِخَلَاقِهِمْ فَاسْتَمْتَعْتُمْ بِخَلَاقِكُمْ كَمَا اسْتَمْتَعَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ بِخَلَاقِهِمْ وَخُضْتُمْ كَالَّذِيْ خَاضُوْٓا اُولٰٓئِكَ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ	69	(तुम मुनाफ़िक़ों और मुश्रिकों की हालत) उन लोगों जैसी है जो तुमसे पहले थे, वे तुमसे अधिक शक्तिशाली थे, और उनकी संपत्ति और बच्चे अधिक थे तो उन्होंने अपनी हिस्सेदारी का आनंद लिया, और तुमने अपनी हिस्सेदारी का आनंद लिया जैसे तुमसे पहले वालों ने अपनी हिस्सेदारी का आनंद लिया, और तुमने (बातिल) बातों की जैसे उन्होंने की थीं। उनके कर्म दुनिया और आख़िरत में व्यर्थ हैं वही लोग हैं जो घाटे में हैं
اَلَمْ يَأْتِهِمْ نَبَاُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ قَوْمِ نُوْحٍ وَّعَادٍ وَّثَمُوْدَ وَقَوْمِ اِبْرٰهِيْمَ وَاَصْحٰبِ مَدْيَنَ وَالْمُؤْتَفِكٰتِ اَتَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيَظْلِمَهُمْ وَلٰكِنْ كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ	70	क्या उनके पास उन लोगों की ख़बर नहीं पहुँची जो उनसे पहले थे, नूह की क़ौम, आद और समूद, और इब्राहिम की क़ौम, और मादयन के निवासी, और उन नगरों की जो उलट दिए गए? उनके रसूल उनके पास सुस्पष्ट प्रमाण लेकर आए थे तो यह नहीं कि अल्लाह ने उन पर ज़ुल्म किया, बल्कि उन्होंने अपने आप पर ज़ुल्म किया।
وَالْمُؤْمِنُوْنَ وَالْمُؤْمِنٰتُ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَاۤءُ بَعْضٍ يَأْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَيُطِيْعُوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ اُولٰٓئِكَ سَيَرْحَمُهُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ	71	और ईमान वाले पुरुष और महिलाएँ, एक-दूसरे के सहायक हैं वे नेकी को प्रोत्साहित करते हैं और बुराई को रोकते हैं, नमाज़ क़ायम करते हैं, ज़कात देते हैं, और अल्लाह और उनके रसूल की आज्ञा मानते हैं अल्लाह उन पर रहमत करेगा। निश्चय ही अल्लाह बहुत शक्तिशाली, बहुत बुद्धिमान है
وَعَدَ اللّٰهُ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا وَمَسٰكِنَ طَيِّبَةً فِيْ جَنّٰتِ عَدْنٍ وَرِضْوَانٌ مِّنَ اللّٰهِ اَكْبَرُ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ	72	अल्लाह ने ईमान वाले पुरुषों और महिलाओं को जन्नत का वादा किया है, जिसके नीचे नदियाँ बहती हैं, वे उसमें हमेशा रहेंगे, और (उन्हीं) अदन की जन्नतों में अच्छे स्थान मिलेंगे। और अल्लाह की प्रसन्नता इससे भी बड़ी है यही बहुत बड़ी सफलता है
يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ جَاهِدِ الْكُفَّارَ وَالْمُنٰفِقِيْنَ وَاغْلُظْ عَلَيْهِمْ وَمَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ	73	हे नबी! काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों से जिहाद करो, और उनके प्रति सख़्ती बरतो। उनका ठिकाना जहन्नम है और यह बहुत बुरा ठिकाना है

يَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ مَا قَالُوْا وَلَقَدْ قَالُوْا كَلِمَةَ الْكُفْرِ وَكَفَرُوْا بَعْدَ اِسْلَامِهِمْ وَهَمُّوْا بِمَا لَمْ يَنَالُوْا وَمَا نَقَمُوْٓا اِلَّآ اَنْ اَغْنٰىهُمُ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ مِنْ فَضْلِهٖ فَاِنْ يَّتُوْبُوْا يَكُ خَيْرًا لَّهُمْ وَاِنْ يَّتَوَلَّوْا يُعَذِّبْهُمُ اللّٰهُ عَذَابًا اَلِيْمًا فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ وَمَا لَهُمْ فِى الْاَرْضِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ	74	व (मुनाफ़िक़) अल्लाह क नाम पर कसम ख़ात है कि उन्होंने (मुहम्मद को दुख़ देने वाली) कोई बात नहीं कही। निश्चय ही उन्होंने कुफ़्र की बात कही, और इस्लाम स्वीकार करने के बाद काफ़िर हो गए, और उन्होंने वह चाहा जो व हासिल नहीं कर सके, और व (अल्लाह और उनके रसूल को) दोष देते है, सिवाय इसके कि अल्लाह और उनके रसूल ने उन्हें अपनी कृपा स दे दिया। तो यदि वे तौबा कर ल, तो यह उनके लिए बेहतर है, और यदि वे मुँह फेर ल, तो अल्लाह उन्हें दुनिया और आख़िरत म दुखदायी यातना देगा, और धरती पर उनका कोई संरक्षक या सहायक नहीं होगा।
وَمِنْهُمْ مَّنْ عٰهَدَ اللّٰهَ لَئِنْ اٰتٰنَا مِنْ فَضْلِهٖ لَنَصَّدَّقَنَّ وَلَنَكُوْنَنَّ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ	75	और उनम स कुछ लोग है जिन्होंने अल्लाह स वादा किया था, 'यदि वह हम अपनी कृपा स देगा, तो हम निश्चय ही सदक़ा दगे और निश्चय ही हम नेक लोगों म स होंगे'
فَلَمَّآ اٰتٰىهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ بَخِلُوْا بِهٖ وَتَوَلَّوْا وَّهُمْ مُّعْرِضُوْنَ	76	जब अल्लाह न उन्हें अपनी कृपा स दिया, तो व कंजूस हो गए और मुँह फेर लिया, और हमेशा (सत्य का) विरोध करने लगे।
فَاَعْقَبَهُمْ نِفَاقًا فِىْ قُلُوْبِهِمْ اِلٰى يَوْمِ يَلْقَوْنَهٗ بِمَآ اَخْلَفُوا اللّٰهَ مَا وَعَدُوْهُ وَبِمَا كَانُوْا يَكْذِبُوْنَ	77	तो अल्लाह न उनके दिलों म निफ़ाक़ (मुनाफ़िक़ी) डाल दिया, जब तक कि वे उससे मिलें, क्योंकि उन्होंने अल्लाह स किया हुआ वादा तोड़ा और क्योंकि वे हमेशा झूठ बोलते थे।
اَلَمْ يَعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ سِرَّهُمْ وَنَجْوٰىهُمْ وَاَنَّ اللّٰهَ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ	78	क्या वे नहीं जानते कि अल्लाह उनके रहस्य और उनकी गुप्त बातों को जानता है, और अल्लाह ग़ैब (अदृश्य) को बहुत अच्छी तरह जानने वाला है?
اَلَّذِيْنَ يَلْمِزُوْنَ الْمُطَّوِّعِيْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ فِى الصَّدَقٰتِ وَالَّذِيْنَ لَا يَجِدُوْنَ اِلَّا جُهْدَهُمْ فَيَسْخَرُوْنَ مِنْهُمْ سَخِرَ اللّٰهُ مِنْهُمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ	79	(मुनाफ़िक़) वे लोग है जो उन ईमान वालों को ताने देते है जो स्वेच्छा स सदक़ा देते है और उन लोगों को (ताने देते है) जो केवल अपनी क्षमता के अनुसार (सदक़ा) दे सकते है, तो वे उनका मज़ाक़ उड़ाते है। अल्लाह उनकी इस तानाकशी का बदला देगा, और उनके लिए दुखदायी यातना है।
اِسْتَغْفِرْ لَهُمْ اَوْ لَا تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ اِنْ تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ سَبْعِيْنَ مَرَّةً فَلَنْ يَّغْفِرَ اللّٰهُ لَهُمْ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ	80	(चाहे) तुम (मुहम्मद) उनके लिए माफ़ी माँगो या न माँगो। यदि तुम उनके लिए सत्तर बार भी माफ़ी माँगो, तो भी अल्लाह उन्हें माफ़ नहीं करेगा। यह इसलिए कि वे अल्लाह और उनके रसूल के प्रति काफ़िर (इनकारी) हैं और अल्लाह फ़ासिक़ लोगों को मार्गदर्शन नहीं देता।
فَرِحَ الْمُخَلَّفُوْنَ بِمَقْعَدِهِمْ خِلٰفَ رَسُوْلِ اللّٰهِ وَكَرِهُوْٓا اَنْ يُّجَاهِدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَقَالُوْا لَا تَنْفِرُوْا فِى الْحَرِّ قُلْ نَارُ جَهَنَّمَ اَشَدُّ حَرًّا لَوْ كَانُوْا يَفْقَهُوْنَ	81	जो लोग (युद्ध म न जाकर) पीछे रह गए, वे रसूलुल्लाह के पीछे रहकर बैठे रहने से ख़ुश थे। उन्हें अपनी संपत्ति और अपनी जान स अल्लाह के रास्ते म जिहाद करना पसंद नहीं था और उन्होंने कहा, 'इस गरमी म (युद्ध के लिए) न निकलो।' कहो (मुहम्मद), 'जहन्नम की आग इससे कहीं अधिक गरम है, यदि वे जानते।
فَلْيَضْحَكُوْا قَلِيْلًا وَّلْيَبْكُوْا كَثِيْرًا جَزَآءً بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ	82	तो उन्हें थोड़ा हँसने दो और बहुत रोने दो, उनके करमों के बदले म।

فَاِنْ رَّجَعَكَ اللّٰهُ اِلٰى طَآئِفَةٍ مِّنْهُمْ فَاسْتَاْذَنُوْكَ لِلْخُرُوْجِ فَقُلْ لَّنْ تَخْرُجُوْا مَعِيَ اَبَدًا وَّلَنْ تُقَاتِلُوْا مَعِيَ عَدُوًّا اِنَّكُمْ رَضِيْتُمْ بِالْقُعُوْدِ اَوَّلَ مَرَّةٍ فَاقْعُدُوْا مَعَ الْخٰلِفِيْنَ	तो यदि अल्लाह तुम्हें (मुहम्मद) उनमें से किसी समूह के पास वापस लाए, और वे तुमसे (युद्ध में) निकलने की इजाज़त माँगें, तो कहो, 'तुम मेरे साथ कभी नहीं निकल सकते और मेरे साथ किसी दुश्मन से युद्ध नहीं कर सकते। निश्चय ही तुम शुरू में ही (युद्ध में न जाने के लिए) बैठे रहने से संतुष्ट थे। इसलिए उन लोगों के साथ बैठे रहो जो (युद्ध में) नहीं गए।'	**83**
وَلَا تُصَلِّ عَلٰٓى اَحَدٍ مِّنْهُمْ مَّاتَ اَبَدًا وَّلَا تَقُمْ عَلٰى قَبْرِهٖ اِنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَمَاتُوْا وَهُمْ فٰسِقُوْنَ	और तुम (मुहम्मद) उनमें से किसी मुनाफ़िक़ के लिए, जो मर जाए, कभी भी नमाज़ न पढ़ो और न ही उनकी कब्र पर खड़े होकर (दुआ करो)। निश्चय ही वे अल्लाह और उनके रसूल के प्रति काफ़िर थे और वे फ़ासिक़ हालत में मरे।	**84**
وَلَا تُعْجِبْكَ اَمْوَالُهُمْ وَاَوْلَادُهُمْ اِنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ اَنْ يُّعَذِّبَهُمْ بِهَا فِي الدُّنْيَا وَتَزْهَقَ اَنْفُسُهُمْ وَهُمْ كٰفِرُوْنَ	और उनकी संपत्ति और उनके बच्चे तुम्हें प्रभावित न करें। अल्लाह का उद्देश्य इससे केवल यह है कि उन्हें दुनिया की ज़िंदगी में यातना दे और वे काफ़िर की हालत में मर जाएँ।	**85**
وَاِذَآ اُنْزِلَتْ سُوْرَةٌ اَنْ اٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَجَاهِدُوْا مَعَ رَسُوْلِهِ اسْتَاْذَنَكَ اُولُوا الطَّوْلِ مِنْهُمْ وَقَالُوْا ذَرْنَا نَكُنْ مَّعَ الْقٰعِدِيْنَ	और जब कोई सूरह उतरती है जिसमें यह आदेश होता है कि अल्लाह पर ईमान लाओ और उनके रसूल के साथ जिहाद करो, तो उनमें से कुछ धनवान लोग (युद्ध में न जाने की) इजाज़त माँगते हैं और कहते हैं, 'हमें उन लोगों के साथ रहने दो जो (युद्ध में) नहीं गए।'	**86**
رَضُوْا بِاَنْ يَّكُوْنُوْا مَعَ الْخَوَالِفِ وَطُبِعَ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَهُمْ لَا يَفْقَهُوْنَ	वे उन लोगों के साथ रहने से संतुष्ट हैं जो पीछे रह गए, और उनके दिलों पर मुहर लगा दी गई है, इसलिए वे समझते नहीं।	**87**
لٰكِنِ الرَّسُوْلُ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ جَاهَدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ وَاُولٰٓئِكَ لَهُمُ الْخَيْرٰتُ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ	लेकिन रसूल और उनके साथ जो लोग ईमान लाए, उन्होंने अपनी संपत्ति और अपनी जान से जिहाद किया। उनके लिए ही सारी नेकियाँ हैं, और वही लोग हैं जो सफल हैं।	**88**
اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ	अल्लाह ने उनके लिए जन्नतें तैयार की हैं जिनके नीचे नदियाँ बहती हैं, वे उसमें हमेशा रहेंगे। यही बहुत बड़ी सफलता है।	**89**
وَجَآءَ الْمُعَذِّرُوْنَ مِنَ الْاَعْرَابِ لِيُؤْذَنَ لَهُمْ وَقَعَدَ الَّذِيْنَ كَذَبُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ سَيُصِيْبُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ	और कुछ अरब बदेई लोग (नबी के पास) बहाने बनाने आए ताकि उन्हें (युद्ध में न जाने की) इजाज़त दी जाए, और जो लोग अल्लाह और उनके रसूल को झुठलाते थे, वे बैठे रहे। जल्द ही उनमें से जो काफ़िर हैं, उन्हें दर्दनाक यातना मिलेगी।	**90**
لَيْسَ عَلَى الضُّعَفَآءِ وَلَا عَلَى الْمَرْضٰى وَلَا عَلَى الَّذِيْنَ لَا يَجِدُوْنَ مَا يُنْفِقُوْنَ حَرَجٌ اِذَا نَصَحُوْا لِلّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ مَا عَلَى الْمُحْسِنِيْنَ مِنْ سَبِيْلٍ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ	(युद्ध में न जाने का) कोई गुनाह नहीं है उन कमजोरों, बीमारों और उन लोगों पर जो कुछ भी खर्च करने के लिए नहीं पाते, बशर्ते वे अल्लाह और उनके रसूल के प्रति ईमानदार हों। नेकी करने वालों पर कोई दोष नहीं है और अल्लाह बहुत क्षमाशील, बहुत दयालु है।	**91**

92	और न ही उन लोगों पर (कोई दोष है) जो तमुहारे पास आए ताकि तमु उनहें सवारी द सको, और तमुन कहा, 'मझु तमुहें ले जाने के लिए कोई सवारी नहीं मिली,' तो वे लौट गए, उनकी आँखों से आँसू बह रहे थे, दख़ु के कारण, क्योंकि उनहें (जिहाद के लिए) खरच करने के लिए कछु नहीं मिला।	وَّلَا عَلَى الَّذِيْنَ اِذَا مَآ اَتَوْكَ لِتَحْمِلَهُمْ قُلْتَ لَآ اَجِدُ مَآ اَحْمِلُكُمْ عَلَيْهِ تَوَلَّوْا وَّاَعْيُنُهُمْ تَفِيْضُ مِنَ الدَّمْعِ حَزَنًا اَلَّا يَجِدُوْا مَا يُنْفِقُوْنَ
93	दोष तो उन लोगों पर है जो धनवान होने के बावजदू तमुस (यदुध म न जाने की) इजाज़त माँगते हैं वे उन लोगों के साथ रहने से संतषुट हैं जो पीछे रह गए, और अलल़ाह ने उनके दिलों पर महुर लगा दी है, इसलिए वे समझते नहीं।	اِنَّمَا السَّبِيْلُ عَلَى الَّذِيْنَ يَسْتَأْذِنُوْنَكَ وَهُمْ اَغْنِيَاءُ رَضُوْا بِاَنْ يَّكُوْنُوْا مَعَ الْخَوَالِفِ وَطَبَعَ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ
94	वे तमुस बहाने बनाएँगे जब तमु उनके पास लौटोगे। कहो, 'कोई बहाना न बनाओ, हम तमुहारी बात पर कभी वशि़वास नहीं करेंगे। अलल़ाह ने हमें तमुहारी ख़बर दे दी है और अलल़ाह और उनके रसलू तमुहारे करमों को देखेंगे, फिर तमुहें उस (अलल़ाह) की ओर लौटाया जाएगा जो ग़ैब और प्रत्यक्ष को जानता है, फिर वह तमुहें बताएगा जो तमु करते थे।'	يَعْتَذِرُوْنَ اِلَيْكُمْ اِذَا رَجَعْتُمْ اِلَيْهِمْ قُلْ لَّا تَعْتَذِرُوْا لَنْ نُّؤْمِنَ لَكُمْ قَدْ نَبَّاَنَا اللّٰهُ مِنْ اَخْبَارِكُمْ وَسَيَرَى اللّٰهُ عَمَلَكُمْ وَرَسُوْلُهٗ ثُمَّ تُرَدُّوْنَ اِلٰى عٰلِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ
95	वे तमुस अलल़ाह के नाम पर कसम खाएँगे, जब तमु उनके पास लौटोगे, ताकि तमु उनस मंहु फेरे लो। तो उनस मंहु फेरे लो; क्योंकि वे निशि़चय ही आतमा से नापाक हैं और उनका ठिकाना जहन्नम है, उनके करमों के बदले में।	سَيَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ لَكُمْ اِذَا انْقَلَبْتُمْ اِلَيْهِمْ لِتُعْرِضُوْا عَنْهُمْ فَاَعْرِضُوْا عَنْهُمْ اِنَّهُمْ رِجْسٌ وَّمَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ جَزَآءً بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ
96	वे तमुस कसम खाएँगे ताकि तमु उनहें सवीकार कर लो। लकेनि यदि तमु उनहें सवीकार भी कर लो, तो अलल़ाह फ़ासकि लोगों को सवीकार नहीं करता।	يَحْلِفُوْنَ لَكُمْ لِتَرْضَوْا عَنْهُمْ فَاِنْ تَرْضَوْا عَنْهُمْ فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يَرْضٰى عَنِ الْقَوْمِ الْفٰسِقِيْنَ
97	अरब बदेई लोग कफ़ु्र और नफि़ाक़ में अधकि गहरे हैं और यह सवाभावकि है कि वे उन नयिमों को नहीं जानते जो अलल़ाह ने अपने रसलू पर उतारे। अलल़ाह सब कछु जानने वाला, बहतु बदु्धमिान है।	اَلْاَعْرَابُ اَشَدُّ كُفْرًا وَّنِفَاقًا وَّاَجْدَرُ اَلَّا يَعْلَمُوْا حُدُوْدَ مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ عَلٰى رَسُوْلِهٖ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ
98	और कछु अरब बदेई लोग जो कछु (अलल़ाह के रासत़े में) खरच करते हैं, उसे नकुसान समझते हैं; वे तमु पर मसुीबत आने की प्रतीकष़ा करते हैं, उन पर ही मसुीबत आएगी। अलल़ाह सब कछु सनुने वाला, सब कछु जानने वाला है।	وَمِنَ الْاَعْرَابِ مَنْ يَّتَّخِذُ مَا يُنْفِقُ مَغْرَمًا وَّيَتَرَبَّصُ بِكُمُ الدَّوَآئِرَ عَلَيْهِمْ دَآئِرَةُ السَّوْءِ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ
99	और कछु अरब बदेई लोग जो कछु (अलल़ाह के रासत़े में) खरच करते हैं, उसे अलल़ाह और रसलू की दआु प्राप्त करने का साधन समझते हैं। जान लो, नशि़चय ही उनका खरच उनके लिए (अलल़ाह के करीब आने का) साधन है। अलल़ाह उनहें अपनी रहमत (जन्नत) में दाखलि करेगा; नशि़चय ही अलल़ाह बहतु कष़माशील, बहतु दयाल है।	وَمِنَ الْاَعْرَابِ مَنْ يُّؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَيَتَّخِذُ مَا يُنْفِقُ قُرُبٰتٍ عِنْدَ اللّٰهِ وَصَلَوٰتِ الرَّسُوْلِ اَلَآ اِنَّهَا قُرْبَةٌ لَّهُمْ سَيُدْخِلُهُمُ اللّٰهُ فِيْ رَحْمَتِهٖ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ

وَالسّٰبِقُوْنَ الْاَوَّلُوْنَ مِنَ الْمُهٰجِرِيْنَ وَالْاَنْصَارِ وَالَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُمْ بِاِحْسَانٍ رَّضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ وَاَعَدَّ لَهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ تَحْتَهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ	और जो लोग सबस॓ पहल॓ (इस्लाम म॑) आए, मुहाजिरों और अंसारों म॑स॓, और जो लोग अच्छाई क॓ साथ उनक॓ पीछ॓ आए, अल्लाह उनस॓ प्रसन्न ह॑ और व॓ अल्लाह स॓ प्रसन्न ह॑। अल्लाह न॓ उनक॓ लिए जन्नत॑ तय्यार की ह॑ जिनक॓ नीच॓ नदियाँ॓ बहती ह॑। व॓ उसम॑ हमेशा रहेंगे। यही बहुत बड़ी सफलता ह॑	**100**
وَمِمَّنْ حَوْلَكُمْ مِّنَ الْاَعْرَابِ مُنٰفِقُوْنَ وَمِنْ اَهْلِ الْمَدِيْنَةِ مَرَدُوْا عَلَي النِّفَاقِ لَا تَعْلَمُهُمْ نَحْنُ نَعْلَمُهُمْ سَنُعَذِّبُهُمْ مَّرَّتَيْنِ ثُمَّ يُرَدُّوْنَ اِلٰى عَذَابٍ عَظِيْمٍ	और तुम्हार॓ आसपास क॓ कुछ अरब बदेर्इ लोगों म॑ मुनाफ़िक़ ह॑। और मदीना क॓ निवासियों म॑ भी (मुनाफ़िक़ ह॑), व॓ निफ़ाक़ म॑ बहुत गहर॓ ह॑। तुम (मुहम्मद) उनह॓ नहीं जानत॓, लेकिन हम उनह॓ जानत॓ ह॑। हम उनह॓ दो बार यातना देंगे, फिर उनह॓ बहुत बड़ी यातना की ओर लौटाया जाएगा।	**101**
وَاٰخَرُوْنَ اعْتَرَفُوْا بِذُنُوْبِهِمْ خَلَطُوْا عَمَلًا صَالِحًا وَّاٰخَرَ سَيِّئًا عَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّتُوْبَ عَلَيْهِمْ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ	और कुछ अन्य लोग ह॑ जिनह॓ंने अपन॓ गुनाहों को स्वीकार किया, उनह॓ंने अच्छ॓ कर्मों को बुर॓ कर्मों क॓ साथ मिलाया। शायद अल्लाह उनकी तौबा स्वीकार कर ल॓ निश्चय ही अल्लाह बहुत क्षमाशील, बहुत दयाल॒ ह॑	**102**
خُذْ مِنْ اَمْوَالِهِمْ صَدَقَةً تُطَهِّرُهُمْ وَتُزَكِّيْهِمْ بِهَا وَصَلِّ عَلَيْهِمْ اِنَّ صَلٰوتَكَ سَكَنٌ لَّهُمْ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ	उनकी संपत्ति स॓ ज़कात ल॓, ताकि तुम उनह॓ पाक और पवित्र कर सको, और उनक॓ लिए दुआ करो। निश्चय ही तुम्हारी दुआ उनक॓ लिए आत्मिक शांति का साधन ह॑। अल्लाह सब कुछ सुन॓वाला, सब कुछ जान॓वाला ह॑	**103**
اَلَمْ يَعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ هُوَ يَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهٖ وَيَاْخُذُ الصَّدَقٰتِ وَاَنَّ اللّٰهَ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ	क्या व॓ नहीं जानत॓ कि अल्लाह अपन॓ बन्दों की तौबा स्वीकार करता ह॑ और उनकी ज़कात स्वीकार करता ह॑, और अल्लाह बहुत तौबा स्वीकार कर॓वाला, बहुत दयाल॒ ह॑?	**104**
وَقُلِ اعْمَلُوْا فَسَيَرَى اللّٰهُ عَمَلَكُمْ وَرَسُوْلُهٗ وَالْمُؤْمِنُوْنَ وَسَتُرَدُّوْنَ اِلٰى عٰلِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ	और कहो, 'काम करो, तो अल्लाह तुम्हार॓ कर्मों को द॓खेगा, और उनका रसूल और ईमान वाल॓ भी, और तुम॒ उस (अल्लाह) की ओर लौटाया जाएगा जो ग़ैब और प्रत्यक्ष को जानता ह॑, फिर वह तुम॒ह॓ बताएगा जो तुम करत॓ थ॓।'	**105**
وَاٰخَرُوْنَ مُرْجَوْنَ لِاَمْرِ اللّٰهِ اِمَّا يُعَذِّبُهُمْ وَاِمَّا يَتُوْبُ عَلَيْهِمْ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ	और कुछ लोग ह॑ जिनका (फ़ैसला) अल्लाह क॓ आदेश की प्रतीक्षा म॓ ह॑; वह या तो उनह॓ यातना देगा या उनकी तौबा स्वीकार करेगा। और अल्लाह सब कुछ जान॓वाला, बहुत बुद्धिमान ह॑	**106**
وَالَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مَسْجِدًا ضِرَارًا وَّكُفْرًا وَّتَفْرِيْقًا بَيْنَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَاِرْصَادًا لِّمَنْ حَارَبَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ مِنْ قَبْلُ وَلَيَحْلِفُنَّ اِنْ اَرَدْنَآ اِلَّا الْحُسْنٰى وَاللّٰهُ يَشْهَدُ اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ	और कुछ लोग ह॑ जिनह॓ंने मस्ज़िद बनाई ताकि (ईमान वालों को) नुक़सान पहुँचाएँ, कुफ़्र क॓ लिए और (मुसलमानो) क॓ बीच फूट डालन॓ क॓ लिए, और उस व्यक्ति की प्रतीक्षा म॑ जो पहल॓ अल्लाह और उनक॓ रसूल स॓ युद्ध कर चुका था। व॓ निश्चय ही कसम खाएँगे, 'हमारा उद्देश्य कव॓ल भलाई था,' लेकिन अल्लाह गवाही दत॓ा ह॑ कि व॓ निश्चय ही झूठ॓ ह॑	**107**

لَا تَقُمْ فِيْهِ اَبَدًا لَمَسْجِدٌ اُسِّسَ عَلَى التَّقْوٰى مِنْ اَوَّلِ يَوْمٍ اَحَقُّ اَنْ تَقُوْمَ فِيْهِ فِيْهِ رِجَالٌ يُّحِبُّوْنَ اَنْ يَّتَطَهَّرُوْا وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُطَّهِّرِيْنَ	**108**	तमु उस मसज़दि म कभी नमाज न पढ़ो। नशि्चय ही वह मसज़दि जो पहल दनि स तकव़ा पर बनाई गई थी, अधकि योग्य ह कि तमु उसम नमाज पढ़ो। उसम ऐस लोग ह जो खद़ु को पाक करना चाहत ह और अल़लाह उन लोगो स पय़ार करता ह जो पाक होत ह
اَفَمَنْ اَسَّسَ بُنْيَانَه عَلٰى تَقْوٰى مِنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانٍ خَيْرٌ اَمْ مَّنْ اَسَّسَ بُنْيَانَه عَلٰى شَفَا جُرُفٍ هَارٍ فَانْهَارَ بِه فِيْ نَارِ جَهَنَّمَ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ	**109**	तो क्या वह व्यक्त बहेतर ह जसिन अपनी इमारत (मसज़दि) को अल़लाह क तकव़ा और उनकी प्रसन्नता पर बनाया, या वह जो अपनी इमारत को ढहन वाल कगार पर बनाता ह, तो वह उसक साथ जहन्नम की आग म गरि पड़ता ह? और अल़लाह ज़ालमि लोगो को मार्गदर्शन नही दता।
لَا يَزَالُ بُنْيَانُهُمُ الَّذِيْ بَنَوْا رِيْبَةً فِيْ قُلُوْبِهِمْ اِلَّآ اَنْ تَقَطَّعَ قُلُوْبُهُمْ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ	**110**	जो इमारत उनहो बनाई, वह उनक दलिो म हमशेा शक पदैा करती रहगेी, जब तक कि उनक दलि टकुड़े-टकुड़े न हो जाएँ और अल़लाह सब कछु जानन वाला, बहत्त बद्धमिान ह
اِنَّ اللّٰهَ اشْتَرٰى مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ اَنْفُسَهُمْ وَاَمْوَالَهُمْ بِاَنَّ لَهُمُ الْجَنَّةَ يُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَيَقْتُلُوْنَ وَيُقْتَلُوْنَ وَعْدًا عَلَيْهِ حَقًّا فِى التَّوْرٰىةِ وَالْاِنْجِيْلِ وَالْقُرْاٰنِ وَمَنْ اَوْفٰى بِعَهْدِه مِنَ اللّٰهِ فَاسْتَبْشِرُوْا بِبَيْعِكُمُ الَّذِيْ بَايَعْتُمْ بِه وَذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ	**111**	नशि्चय ही अल़लाह न ईमान वालो स उनकी जान और उनकी सपत्त को जन्नत क बदल खरीद लयिा ह व अल़लाह क रास्त म यद्धु करत ह; तो व मारत ह या मार जात ह यह तौरात, इंजील और कुरआन म अल़लाह का सच्चा वादा ह और अल़लाह स अधकि अपन वाद को पूरा करन वाला कौन ह? तो उस सौद पर खशु हो जाओ जो तमुन कयिा, और यही बहत्त बड़ी सफलता ह
اَلتَّآئِبُوْنَ الْعٰبِدُوْنَ الْحٰمِدُوْنَ السَّآئِحُوْنَ الرّٰكِعُوْنَ السّٰجِدُوْنَ الْاٰمِرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَالنَّاهُوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَالْحٰفِظُوْنَ لِحُدُوْدِ اللّٰهِ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ	**112**	व लोग ह जो तौबा करत ह, इबादत करत ह, (अल़लाह की) प्रशंसा करत ह, (ज्ञान और धरम क लए) यात्रा करत ह, रकु ूकरत ह, सजदा करत ह, नकेी को प्रोत्साहति करत ह और बरुाई को रोकत ह, और अल़लाह क नयिमो की रक्षा करत ह और ईमान वालो को खशुखबरी दो।
مَا كَانَ لِلنَّبِيِّ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنْ يَّسْتَغْفِرُوْا لِلْمُشْرِكِيْنَ وَلَوْ كَانُوْٓا اُولِيْ قُرْبٰى مِنْ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمْ اَنَّهُمْ اَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ	**113**	नबी और ईमान वालो क लए यह उचति नही ह कि व मशुरकिो क लए माफ़ी माँगें, भल ही व उनक रशि्तदेार हो, जब यह सपष्ट हो गया हो कि व जहन्नम क नविासी ह
وَمَا كَانَ اسْتِغْفَارُ اِبْرٰهِيْمَ لِاَبِيْهِ اِلَّا عَنْ مَّوْعِدَةٍ وَّعَدَهَآ اِيَّاهُ فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَه اَنَّه عَدُوٌّ لِّلّٰهِ تَبَرَّاَ مِنْهُ اِنَّ اِبْرٰهِيْمَ لَاَوَّاهٌ حَلِيْمٌ	**114**	और इब्राहमि का अपन पता क लए माफ़ी माँगना कवेल उस वाद के कारण था जो उनहो अपन पता स कयिा था। लकेनि जब उनक लए सपष्ट हो गया कि उनका पता अल़लाह का दशु्मन ह, तो उनहो उससे सबंध तोड़ लयिा। नशि्चय ही इब्राहमि बहत्त नरम दलि और सहनशील थ।
وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُضِلَّ قَوْمًا بَعْدَ اِذْ هَدٰىهُمْ حَتّٰى يُبَيِّنَ لَهُمْ مَّا يَتَّقُوْنَ اِنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ	**115**	और अल़लाह कसिी कौम को, जसि उसन मार्गदर्शन दयिा हो, कभी गमुराह नही करता, जब तक कि वह उनह सपष्ट न कर द कि उनह कनि चीजो स बचना ह। नशि्चय ही अल़लाह हर चीज़ को जानन वाला ह

116	निश्चय ही आकाश और धरती की सत्ता अल्लाह के पास है। वही जीवन देता है और वही मृत्यु देता है। तुम्हारा कोई संरक्षक और सहायक नहीं है सिवाय अल्लाह के।	اِنَّ اللّٰهَ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ
117	निश्चय ही अल्लाह ने नबी, मुहाजिरों और अंसारों की तौबा स्वीकार की, जिन्होंने मुश्किल समय में नबी का साथ दिया, जब उनमें से कुछ लोगों के दिल लगभग भटक गए थे, फिर उसने उनकी तौबा स्वीकार की। निश्चय ही अल्लाह उनके प्रति बहुत दयालु, बहुत मेहरबान है।	لَقَدْ تَّابَ اللّٰهُ عَلَى النَّبِيِّ وَالْمُهٰجِرِيْنَ وَالْاَنْصَارِ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُ فِيْ سَاعَةِ الْعُسْرَةِ مِنْ بَعْدِ مَا كَادَ يَزِيْغُ قُلُوْبُ فَرِيْقٍ مِّنْهُمْ ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ اِنَّهٗ بِهِمْ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ
118	और उन तीन लोगों के प्रति (भी तौबा स्वीकार की) जो पीछे छोड़ दिए गए थे। यहाँ तक कि जब धरती, जो बहुत विस्तृत थी, उनके लिए तंग हो गई, और उनकी आत्माएँ भी उनके लिए तंग हो गईं, और उन्हें पता चल गया कि अल्लाह (की यातना) से बचने की कोई जगह नहीं है सिवाय उसकी ओर लौटने के, फिर अल्लाह ने उनकी तौबा स्वीकार की ताकि वे अपनी तौबा पर कायम रहें। निश्चय ही अल्लाह बहुत तौबा स्वीकार करने वाला, बहुत दयालु है।	وَّعَلَى الثَّلٰثَةِ الَّذِيْنَ خُلِّفُوْا حَتّٰٓى اِذَا ضَاقَتْ عَلَيْهِمُ الْاَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ وَضَاقَتْ عَلَيْهِمْ اَنْفُسُهُمْ وَظَنُّوْٓا اَنْ لَّا مَلْجَاَ مِنَ اللّٰهِ اِلَّآ اِلَيْهِ ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ لِيَتُوْبُوْا اِنَّ اللّٰهَ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ
119	हे ईमान वालो! अल्लाह से डरो और सच्चे लोगों के साथ रहो।	يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَكُوْنُوْا مَعَ الصّٰدِقِيْنَ
120	मदीना के निवासियों और उनके आसपास के अरब बदेई लोगों के लिए यह उचित नहीं है कि वे रसूलुल्लाह का साथ छोड़ दें (युद्ध में न जाएँ) और न ही यह कि वे अपनी जान को रसूल की जान से अधिक प्यार करें। यह इसलिए कि उन्हें अल्लाह के रास्ते में न तो प्यास, न थकान, और न ही भूख का सामना करना पड़ता है, और न ही वे ऐसी जगह पर कदम रखते हैं जो काफ़िरों के गुस्से को भड़काए, और न ही वे दुश्मन को कोई नुकसान पहुँचाते हैं, सिवाय इसके कि यह उनके लिए एक नेक करम के रूप में लिखा जाएगा। निश्चय ही अल्लाह नेकी करने वालों का प्रतिफल बेकार नहीं करता।	مَا كَانَ لِاَهْلِ الْمَدِيْنَةِ وَمَنْ حَوْلَهُمْ مِّنَ الْاَعْرَابِ اَنْ يَّتَخَلَّفُوْا عَنْ رَّسُوْلِ اللّٰهِ وَلَا يَرْغَبُوْا بِاَنْفُسِهِمْ عَنْ نَّفْسِهٖ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ لَا يُصِيْبُهُمْ ظَمَاٌ وَّلَا نَصَبٌ وَّلَا مَخْمَصَةٌ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَلَا يَطَـُٔوْنَ مَوْطِئًا يَّغِيْظُ الْكُفَّارَ وَلَا يَنَالُوْنَ مِنْ عَدُوٍّ نَّيْلًا اِلَّا كُتِبَ لَهُمْ بِهٖ عَمَلٌ صَالِحٌ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيْعُ اَجْرَ الْمُحْسِنِيْنَ
121	और वे कोई खर्च, चाहे छोटा हो या बड़ा, और न ही कोई घाटी पार करते हैं (जिहाद के लिए), सिवाय इसके कि यह उनके लिए (नेक करम के रूप में) लिखा जाएगा, ताकि अल्लाह उन्हें उनके करमों से बेहतर प्रतिफल दे।	وَلَا يُنْفِقُوْنَ نَفَقَةً صَغِيْرَةً وَّلَا كَبِيْرَةً وَّلَا يَقْطَعُوْنَ وَادِيًا اِلَّا كُتِبَ لَهُمْ لِيَجْزِيَهُمُ اللّٰهُ اَحْسَنَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ
122	और यह उचित नहीं है कि सभी ईमान वाले (युद्ध के लिए) एक साथ निकल जाएँ। तो क्यों न हर समूह से कुछ लोग निकलें ताकि वे धरम का गहरा ज्ञान प्राप्त करें और अपनी कौम को, जब वे लौटें, चेतावनी दे सकें, ताकि वे सावधान रहें।	وَمَا كَانَ الْمُؤْمِنُوْنَ لِيَنْفِرُوْا كَاۤفَّةً فَلَوْلَا نَفَرَ مِنْ كُلِّ فِرْقَةٍ مِّنْهُمْ طَاۤئِفَةٌ لِّيَتَفَقَّهُوْا فِي الدِّيْنِ وَلِيُنْذِرُوْا قَوْمَهُمْ اِذَا رَجَعُوْٓا اِلَيْهِمْ لَعَلَّهُمْ يَحْذَرُوْنَ

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قَاتِلُوا الَّذِيْنَ يَلُوْنَكُمْ مِّنَ الْكُفَّارِ وَلْيَجِدُوْا فِيْكُمْ غِلْظَةً وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُتَّقِيْنَ	**123**	ह`ईमान वालो! अपन`आसपास क`काफ़रि`स`यद्ध करो, और उनह`तमुहारी सख़्ती महसूस हो। और जान लो कि अल्लाह तक़्वा रख़न`वालो`क`साथ ह`।
وَاِذَا مَآ اُنْزِلَتْ سُوْرَةٌ فَمِنْهُمْ مَّنْ يَّقُوْلُ اَيُّكُمْ زَادَتْهُ هٰذِهٖٓ اِيْمَانًا فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فَزَادَتْهُمْ اِيْمَانًا وَّهُمْ يَسْتَبْشِرُوْنَ	**124**	और जब कोई सूरह उतरती ह`, तो उनम`स`कछु (मन्नाफ़क़ि) कहत`ह`, 'तमुम`स`कसिका ईमान इस सूरह स`बढ़ा?' जो लोग ईमान वाल`ह`, उनक`लिए यह उनक`ईमान को बढ़ाता ह`, और व`ख़श्ु होत`ह`।
وَاَمَّا الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ فَزَادَتْهُمْ رِجْسًا اِلٰى رِجْسِهِمْ وَمَاتُوْا وَهُمْ كٰفِرُوْنَ	**125**	और जनिक`दलिो`म`रोग ह`, उनक`लिए यह उनकी कफ़्र को और बढ़ाता ह`जो पहल`स`थी, और व`काफ़रि की हालत म`मर जात`ह`।
اَوَلَا يَرَوْنَ اَنَّهُمْ يُفْتَنُوْنَ فِيْ كُلِّ عَامٍ مَّرَّةً اَوْ مَرَّتَيْنِ ثُمَّ لَا يَتُوْبُوْنَ وَلَا هُمْ يَذَّكَّرُوْنَ	**126**	और क्या व`(मन्नाफ़क़ि) नहीं दखेत`कि व`हर साल एक या दो बार परीक्षा म`डाल`जात`ह`, फरि भी व`न तो तौबा करत`ह`और न ही सबक लते`ह`?
وَاِذَا مَآ اُنْزِلَتْ سُوْرَةٌ نَّظَرَ بَعْضُهُمْ اِلٰى بَعْضٍ هَلْ يَرٰىكُمْ مِّنْ اَحَدٍ ثُمَّ انْصَرَفُوْا صَرَفَ اللّٰهُ قُلُوْبَهُمْ بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَفْقَهُوْنَ	**127**	और जब कोई सूरह उतरती ह`, तो व`एक-दूसर`की ओर दखेत`ह`(और कहत`ह`), 'क्या कोई (मुसलमान) तमुह`दखे रहा ह`?' फरि व`चल`जात`ह`। अल्लाह न`उनक`दलिो`को फरे दयिा क्योंकि व`ऐस`लोग ह`जो समझत`नहीं।
لَقَدْ جَاۤءَكُمْ رَسُوْلٌ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ عَزِيْزٌ عَلَيْهِ مَا عَنِتُّمْ حَرِيْصٌ عَلَيْكُمْ بِالْمُؤْمِنِيْنَ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ	**128**	निश्चय ही तमुहार`पास तमुहारी अपनी कौम स`एक रसूल आया ह`, तमुहारी तकलीफ़`उस`भारी लगती ह`, वह तमुहार`(ईमान और सलामती) क`लिए बहुत इच्छुक ह`, और ईमान वालो`क`प्रति बहुत दयाल`और महेरबान ह`।
فَاِنْ تَوَلَّوْا فَقُلْ حَسْبِيَ اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ	**129**	तो यदि व`(ईमान स`) मुंह फरे ल`, तो कहो (मुहम्मद), 'मर`लिए अल्लाह काफ़ी ह`; उनक`सवि कोई ईश्वर नहीं ह`। मनै`उसी पर भरोसा कयिा, और वही अर्श (सिंहासन) का मालकि ह`जो महान ह`।'

छंदों की संख्या	يُونُس	مكية
१०९	जोनाह - 10	मक्की

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

जोनाह (यूनुस)

1	अलफ़. लाम रा। ये अल-क़ुरआन की आयतें हैं जो बुद्धिमत्ता से भरी हुई हैं।	الٓرٰ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْحَكِيْمِ
2	क्या यह आश्चर्यजनक है कि हमने उनके बीच एक पुरुष को वह्य दी, 'लोगों को चेतावनी दो और ईमान वालों को शुभ समाचार दो कि उनके रब के पास उनकी उच्च स्थिति है।' काफ़िरों ने कहा, 'यह व्यक्ति (मुहम्मद) निश्चय ही एक जादूगर है।'	اَكَانَ لِلنَّاسِ عَجَبًا اَنْ اَوْحَيْنَآ اِلٰى رَجُلٍ مِّنْهُمْ اَنْ اَنْذِرِ النَّاسَ وَبَشِّرِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنَّ لَهُمْ قَدَمَ صِدْقٍ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۗ قَالَ الْكٰفِرُوْنَ اِنَّ هٰذَا لَسٰحِرٌ مُّبِيْنٌ
3	निश्चय ही तुम्हारा रब वही अल्लाह है जिसने आकाश और धरती को छह दिनों में बनाया, फिर वह अर्श (सिंहासन) पर विराजमान हुआ ताकि सभी मामलों का प्रबंधन करे। कोई भी सिफ़ारिश नहीं कर सकता सिवाय इसके कि उसकी अनुमति हो। वही अल्लाह तुम्हारा रब है, इसलिए उसकी पूजा करो। क्या तुम सबक नहीं लेते?	اِنَّ رَبَّكُمُ اللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ يُدَبِّرُ الْاَمْرَ ۗ مَا مِنْ شَفِيْعٍ اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ اِذْنِهٖ ۗ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْهُ ۗ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ
4	उसी की ओर तुम सबकी वापसी होगी। यह अल्लाह का सच्चा और निश्चित वादा है। निश्चय ही वही प्राणियों की रचना शुरू करता है, फिर उसे दोहराता है (पुनरुज्जीवन करता है), ताकि वह ईमान वालों और नेक कार्य करने वालों को न्याय के साथ प्रतिफल दे। और काफ़िरों के लिए (तैयार है) उबलता हुआ पानी और दुखदायी यातना, क्योंकि वे काफ़िर थे।	اِلَيْهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيْعًا ۗ وَعْدَ اللّٰهِ حَقًّا ۗ اِنَّهٗ يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ لِيَجْزِيَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ بِالْقِسْطِ ۗ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَهُمْ شَرَابٌ مِّنْ حَمِيْمٍ وَّعَذَابٌ اَلِيْمٌۢ بِمَا كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ
5	वही है जिसने सूरज को चमकदार बनाया और चंद्रमा को प्रकाशमान, और उसने इसके कक्षा-स्थानों को निर्धारित किया, ताकि तुम वर्षों की गणना और समय का हिसाब जान सको। अल्लाह ने यह सब सत्य के साथ बनाया। वह उन लोगों के लिए अपनी निशानियाँ स्पष्ट करता है जो जानते हैं।	هُوَ الَّذِيْ جَعَلَ الشَّمْسَ ضِيَاۤءً وَّالْقَمَرَ نُوْرًا وَّقَدَّرَهٗ مَنَازِلَ لِتَعْلَمُوْا عَدَدَ السِّنِيْنَ وَالْحِسَابَ ۗ مَا خَلَقَ اللّٰهُ ذٰلِكَ اِلَّا بِالْحَقِّ ۚ يُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ
6	निश्चय ही रात और दिन के बदलाव में और जो कुछ अल्लाह ने आकाश और धरती में बनाया, निश्चय ही उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो तक़वा रखते हैं।	اِنَّ فِى اخْتِلَافِ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَمَا خَلَقَ اللّٰهُ فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَّقُوْنَ
7	निश्चय ही जो लोग हमसे मिलने की आशा नहीं रखते (विश्वास नहीं करते) और दुनिया की ज़िंदगी से संतुष्ट हैं और उसमें निश्चित हैं, और जो लोग हमारी आयतों की उपेक्षा करते हैं,	اِنَّ الَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ لِقَاۤءَنَا وَرَضُوْا بِالْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَاطْمَاَنُّوْا بِهَا وَالَّذِيْنَ هُمْ عَنْ اٰيٰتِنَا غٰفِلُوْنَ

8	उनका ठिकाना जहन्नम है, उनके कर्मों के कारण।	اُولٰٓئِكَ مَأْوٰىهُمُ النَّارُ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ
9	निश्चय ही जो लोग ईमान लाए और नेक कार्य किए, उनका रब उनकी ईमान की वजह से उन्हें मार्गदर्शन देगा। वे जन्नत में होंगे, जिसके नीचे नदियाँ बहती हैं।	اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ يَهْدِيْهِمْ رَبُّهُمْ بِاِيْمَانِهِمْ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهِمُ الْاَنْهٰرُ فِيْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ
10	उनकी दुआ वहाँ होगी, 'सुब्हानकल्लाहुम्मा' (महासुथरा है आप, हे हमारे रब), और उनका अभिवादन होगा, 'सला' (शांति), और उनकी दुआ का अंत होगा, 'अल-हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन' (सारी प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जो सारे जहान का रब है)।	دَعْوٰىهُمْ فِيْهَا سُبْحٰنَكَ اللّٰهُمَّ وَتَحِيَّتُهُمْ فِيْهَا سَلٰمٌ وَاٰخِرُ دَعْوٰىهُمْ اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ
11	और यदि अल्लाह मनुष्यों के लिए बुराई को जल्दी लाता जैसे वे अच्छाई की जल्दी माँगते हैं, तो उनकी उम्र समाप्त हो जाती। लेकिन हम उन लोगों को उनके भटकाव में भटकने देते हैं जो हमसे मिलने की आशा नहीं रखते।	وَلَوْ يُعَجِّلُ اللّٰهُ لِلنَّاسِ الشَّرَّ اسْتِعْجَالَهُمْ بِالْخَيْرِ لَقُضِيَ اِلَيْهِمْ اَجَلُهُمْ فَنَذَرُ الَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ لِقَاۤءَنَا فِيْ طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ
12	और जब इंसान पर कोई मुसीबत आती है, तो वह लेटे हुए, बैठे हुए या खड़े होकर हमें पुकारता है, लेकिन जब हम उसकी मुसीबत को दूर कर देते हैं, तो वह फिर से (गलत रास्ते पर) चल पड़ता है, मानो उसने हमें उस मुसीबत के लिए कभी नहीं पुकारा जो उस पर आई थी। इस तरह अतिचारी लोगों के लिए उनके कर्म सुंदर प्रतीत होते हैं।	وَاِذَا مَسَّ الْاِنْسَانَ الضُّرُّ دَعَانَا لِجَنْۢبِهٖٓ اَوْ قَاعِدًا اَوْ قَاۤىِٕمًا فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُ ضُرَّهٗ مَرَّ كَاَنْ لَّمْ يَدْعُنَاۤ اِلٰى ضُرٍّ مَّسَّهٗ كَذٰلِكَ زُيِّنَ لِلْمُسْرِفِيْنَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ
13	और निश्चय ही, हमने तुमसे पहले की उम्मतों को नष्ट कर दिया, जब उन्होंने जुल्म किया, हालाँकि उनके रसूल उनके पास सुस्पष्ट प्रमाण लेकर आए थे, लेकिन उन्होंने बिलकुल भी ईमान नहीं लाया। इस तरह हम पापी लोगों को बदला देते हैं।	وَلَقَدْ اَهْلَكْنَا الْقُرُوْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَمَّا ظَلَمُوْا وَجَاۤءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ وَمَا كَانُوْا لِيُؤْمِنُوْا كَذٰلِكَ نَجْزِي الْقَوْمَ الْمُجْرِمِيْنَ
14	फिर हमने तुम्हें उनके बाद धरती पर उनका उत्तराधिकारी बनाया, ताकि हम देखें कि तुम क्या करते हो।	ثُمَّ جَعَلْنٰكُمْ خَلٰۤئِفَ فِي الْاَرْضِ مِنْۢ بَعْدِهِمْ لِنَنْظُرَ كَيْفَ تَعْمَلُوْنَ
15	और जब हमारी आयतें उनके सामने सुस्पष्ट रूप से पढ़ी जाती हैं, तो जो लोग हमसे मिलने की आशा नहीं रखते, वे कहते हैं, 'इस कुरआन के अलावा कोई और किताब लाओ या इसे बदल दो।' कहो (मुहम्मद), 'मेरे लिए अपनी मर्ज़ी से इसे बदलना उचित नहीं है। मैं केवल उसी का पालन करता हूँ जो मुझ पर वह्य की जाती है। मुझे डर है कि यदि मैं अपने रब की अवज्ञा करूँ तो मुझे बड़े दिन (क़ियामत) की यातना का सामना करना पड़ेगा।'	وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيَاتُنَا بَيِّنٰتٍ قَالَ الَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ لِقَاۤءَنَا ائْتِ بِقُرْاٰنٍ غَيْرِ هٰذَاۤ اَوْ بَدِّلْهُ قُلْ مَا يَكُوْنُ لِيْٓ اَنْ اُبَدِّلَهٗ مِنْ تِلْقَاۤئِ نَفْسِيْ اِنْ اَتَّبِعُ اِلَّا مَا يُوْحٰٓى اِلَيَّ اِنِّيْٓ اَخَافُ اِنْ عَصَيْتُ رَبِّيْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ
16	कहो (मुहम्मद), 'यदि अल्लाह चाहता, तो मैं इस तुम्हें नहीं पढ़ता और न ही अल्लाह तुम्हें इसके बारे में बताता।' मैं तुम्हारे बीच पहले से कई समय तक रहा हूँ (कुरआन के उतरने से पहले)। क्या तुम समझ नहीं रखते?	قُلْ لَّوْ شَاۤءَ اللّٰهُ مَا تَلَوْتُهٗ عَلَيْكُمْ وَلَآ اَدْرٰىكُمْ بِهٖ فَقَدْ لَبِثْتُ فِيْكُمْ عُمُرًا مِّنْ قَبْلِهٖ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ
17	तो उससे बड़ा ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह के खिलाफ झूठ गढ़े या उसकी आयतों को झुठलाए? निश्चय ही पापी लोग सफल नहीं होंगे।	فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ كَذَّبَ بِاٰيٰتِهٖ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الْمُجْرِمُوْنَ

وَيَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَضُرُّهُمْ وَلَا يَنْفَعُهُمْ وَيَقُوْلُوْنَ هٰٓؤُلَآءِ شُفَعَاؤُنَا عِنْدَ اللّٰهِ قُلْ اَتُنَبِّـُٔوْنَ اللّٰهَ بِمَا لَا يَعْلَمُ فِي السَّمٰوٰتِ وَلَا فِي الْاَرْضِ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ	और व`अल़्लाह क`सिवा उसकी पूजा करत`े ह`ैं जो न तो उनह`ें नुक़सान पहुँचा सकता ह`ै और न ही लाभ द`े सकता ह`ै, और व`े कहत`े ह`ैं, 'य`ह हमार`े लिए अल़्लाह क`े सामन`े सिफ़ारिश करन`े वाल`े ह`ैं।' कहो, 'क्य़ा तुम अल़्लाह को वह बताओग`े जो वह नहीं जानता, जो आकाश म`ें ह`ै और जो धरती म`ें ह`ै?' अल़्लाह महासर्व़ और बहुत उच्च ह`ै उसस`े जो व`े साझी ठहरात`े ह`ैं।	18
وَمَا كَانَ النَّاسُ اِلَّآ اُمَّةً وَّاحِدَةً فَاخْتَلَفُوْا وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ فِيْمَا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ	और मनुष्य पहल`े एक ही उम्मत थ, फिर व`े मतभेद करन`े लग`े। यदि तुम्हार`े रब की ओर स`े पहल`े स`े कोई निर्णय न होता, तो उनक`े बीच जो कुछ व`े विवाद करत`े ह`ैं, उसका फ़ैसला (दुनिया म`ें) हो चुका होता।	19
وَيَقُوْلُوْنَ لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْهِ اٰيَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ فَقُلْ اِنَّمَا الْغَيْبُ لِلّٰهِ فَانْتَظِرُوْا اِنِّيْ مَعَكُمْ مِّنَ الْمُنْتَظِرِيْنَ	और व`े कहत`े ह`ैं, 'उसक`े पास उसक`े रब की ओर स`े कोई चमत्कार (मुज़िज़ा) क्य़ों नहीं उतारा गया?' कहो, 'निश्चय ही ग़ैब (अदृश्य) केवल अल़्लाह क`े पास ह`ै; इसलिए तुम इंतज़ार करो, म`ैं भी तुम्हार`े साथ इंतज़ार करन`े वालों म`ें हूँ।'	20
وَاِذَآ اَذَقْنَا النَّاسَ رَحْمَةً مِّنْ بَعْدِ ضَرَّآءَ مَسَّتْهُمْ اِذَا لَهُمْ مَّكْرٌ فِيْٓ اٰيَاتِنَا قُلِ اللّٰهُ اَسْرَعُ مَكْرًا اِنَّ رُسُلَنَا يَكْتُبُوْنَ مَا تَمْكُرُوْنَ	और जब हम मनुष्यों को कोई रहमत द`ेते ह`ैं, जब उनह`ें कोई मुसीबत झ`ेलनी पड़ती ह`ै, तो व`े तुरंत हमारी आयतों क`े ख़िलाफ़ चाल`े चलन`े लगत`े ह`ैं। कहो, 'अल़्लाह तुम्हारी चालों का जवाब द`ेने म`ें अधिक तेज़ ह`ै।' निश्चय ही हमार`े फ़रिश्त`े तुम्हारी चालों को लिखत`े ह`ैं।	21
هُوَ الَّذِيْ يُسَيِّرُكُمْ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ حَتّٰٓى اِذَا كُنْتُمْ فِي الْفُلْكِ وَجَرَيْنَ بِهِمْ بِرِيْحٍ طَيِّبَةٍ وَّفَرِحُوْا بِهَا جَآءَتْهَا رِيْحٌ عَاصِفٌ وَّجَآءَهُمُ الْمَوْجُ مِنْ كُلِّ مَكَانٍ وَّظَنُّوْٓا اَنَّهُمْ اُحِيْطَ بِهِمْ دَعَوُا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ لَئِنْ اَنْجَيْتَنَا مِنْ هٰذِهٖ لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الشّٰكِرِيْنَ	वही रब ह`ै जो सिन`े तुम्ह`ें धरती पर चलन`े और समुद्र म`ें (जहाज़ स`े) यात्रा करन`े की सुविधा दी। जब तुम जहाज़ म`ें होत`े हो, और वह (जहाज) उनह`ें (यात्रियों को) अच्छी हवा क`े साथ ल`े जाता ह`ै और व`े इससे प्रसन्न होत`े ह`ैं, तभी अचानक तूफ़ान आता ह`ै और लहर`ें हर तरफ़ स`े उन पर टकराती ह`ैं, और व`े सोचत`े ह`ैं कि व`े घिर गए ह`ैं (ख़तर`े म`ें), तो व`े पूरी निष्ठा क`े साथ केवल अल़्लाह को पुकारत`े ह`ैं (व`े कहत`े ह`ैं), 'यदि तू हम`ें इस (ख़तर`े) स`े बचा ल`े, तो हम निश्चय ही शुक्रगुज़ारों म`ें स`े होंग`े।'	22
فَلَمَّآ اَنْجٰىهُمْ اِذَا هُمْ يَبْغُوْنَ فِي الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّمَا بَغْيُكُمْ عَلٰٓى اَنْفُسِكُمْ مَّتَاعَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ثُمَّ اِلَيْنَا مَرْجِعُكُمْ فَنُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ	लेकिन जब अल़्लाह उनह`ें बचा लेता ह`ै, तो व`े धरती पर बिना किसी कारण क`े ज़ुल्म करत`े ह`ैं। ह`े मनुष्यो! तुम्हारा ज़ुल्म तुम्हार`े ही लिए हानिकारक ह`ै; यह केवल दुनिया की ज़िंदगी का सुख ह`ै, फिर तुम्हारी वापसी हमारी ओर ह`ै, और हम तुम्ह`ें बताएँग`े कि तुम न`े क्या किया।	23
اِنَّمَا مَثَلُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا كَمَآءٍ اَنْزَلْنٰهُ مِنَ السَّمَآءِ فَاخْتَلَطَ بِهٖ نَبَاتُ الْاَرْضِ مِمَّا يَاْكُلُ النَّاسُ وَالْاَنْعَامُ حَتّٰٓى اِذَآ اَخَذَتِ الْاَرْضُ زُخْرُفَهَا وَازَّيَّنَتْ وَظَنَّ اَهْلُهَآ اَنَّهُمْ قٰدِرُوْنَ عَلَيْهَآ اَتٰىهَآ اَمْرُنَا لَيْلًا اَوْ نَهَارًا فَجَعَلْنٰهَا حَصِيْدًا كَاَنْ لَّمْ تَغْنَ بِالْاَمْسِ كَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ	निश्चय ही दुनिया की ज़िंदगी की मिसाल ऐसी ह`ै जैसे व`ह पानी जो हमन`े आकाश स`े उतारा, जिसक`े कारण धरती की वनस्पतियाँ बहुतायत स`े उगीं, जिनम`ें स`े कुछ मनुष्य और पशु खात`े ह`ैं। जब तक धरती अपनी पूरी सुंदरता को प्राप्त नहीं कर लेती और सज नहीं जाती, और इसक`े मालिकों को लगता ह`ै कि व`े इस`े पूरी तरह नियंत्रित कर लेंग`े (उसकी फसल काट लेंग`े), तब हमारा आदेश रात या दिन म`ें आता ह`ै और हम इस`े (फसल को) ऐसा कर द`ेत`े ह`ैं जैसे व`ह कल कभी उगी ही न थी। इस तरह हम उन लोगों क`े लिए अपनी निशानियाँ स्पष्ट करत`े ह`ैं जो सोचत`े ह`ैं।	24

25	और अल्लाह (मनुष्यों को) दारुस्सलाम (जन्नत) की ओर बुलाता है, और जिसे वह चाहता है, उसे सीधे रास्ते (इस्लाम) की ओर मार्गदर्शन देता है।	وَاللّٰهُ يَدْعُوْٓا اِلٰى دَارِ السَّلٰمِ وَيَهْدِيْ مَنْ يَّشَاۤءُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ
26	जो लोग नेकी कार्य करते हैं, उनके लिए सबसे अच्छा प्रतिफल (जन्नत) है और उससे अतिरिक्त (अल्लाह को देखने का सुख)। उनके चेहरों पर न तो धूल होगी और न ही अपमान। वे जन्नत के निवासी हैं, वे उसमें हमेशा रहेंगे।	لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوا الْحُسْنٰى وَزِيَادَةٌ ۗوَلَا يَرْهَقُ وُجُوْهَهُمْ قَتَرٌ وَّلَا ذِلَّةٌ ۗاُولٰۤىِٕكَ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ۚهُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ
27	और जो लोग बुराई करते हैं, उन्हें उनकी बुराई के बराबर सजा मिलेगी और वे अपमान से ढँके जाएँगे। उनके लिए अल्लाह (की सजा) से कोई बचाने वाला नहीं होगा, मानो उनके चेहरों को रात की गहरी अँधेरी परतों से ढँके दिया गया हो। वे जहन्नम के निवासी हैं, वे उसमें हमेशा रहेंगे।	وَالَّذِيْنَ كَسَبُوا السَّيِّاٰتِ جَزَاۤءُ سَيِّئَةٍ بِمِثْلِهَا ۙوَتَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ ۗمَا لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ عَاصِمٍ ۚكَاَنَّمَآ اُغْشِيَتْ وُجُوْهُهُمْ قِطَعًا مِّنَ الَّيْلِ مُظْلِمًا ۗاُولٰۤىِٕكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚهُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ
28	और (याद रखो) उस दिन जब हम उन सबको इकट्ठा करेंगे, फिर हम उन लोगों से कहेंगे जो (अल्लाह के साथ) साझी ठहराते थे, 'अपनी जगह पर रहो, तुम और तुम्हारे साझी।' फिर हम उन्हें अलग कर देंगे और उनके साझी कहेंगे, 'तुम नेकी हमारी पूजा नहीं की।'	وَيَوْمَ نَحْشُرُهُمْ جَمِيْعًا ثُمَّ نَقُوْلُ لِلَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا مَكَانَكُمْ اَنْتُمْ وَشُرَكَاۤؤُكُمْ ۚفَزَيَّلْنَا بَيْنَهُمْ وَقَالَ شُرَكَاۤؤُهُمْ مَّا كُنْتُمْ اِيَّانَا تَعْبُدُوْنَ
29	तो अल्लाह हमारे और तुम्हारे बीच साक्षी के रूप में काफ़ी है, क्योंकि हमें तुम्हारी पूजा के बारे में कुछ भी पता नहीं था।	فَكَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ اِنْ كُنَّا عَنْ عِبَادَتِكُمْ لَغٰفِلِيْنَ
30	उस स्थान (महशर के मैदान) पर, हर जीव को अपने किए हुए कर्मों का बदला महसूस होगा और वे अल्लाह की ओर लौटाए जाएँगे, जो उनका असली संरक्षक है, और उनके द्वारा गढ़े गए (झूठे संरक्षक) उनसे गायब हो जाएँगे।	هُنَالِكَ تَبْلُوْا كُلُّ نَفْسٍ مَّآ اَسْلَفَتْ ۚوَرُدُّوْٓا اِلَى اللّٰهِ مَوْلٰىهُمُ الْحَقِّ ۚوَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ
31	कहो (मुहम्मद), 'कौन तुम्हें आकाश और धरती से रोज़ी देता है, या कौन सुनने और देखने की शक्ति (सृजन) करता है, और कौन जीवित को मृत से निकालता है और मृत को जीवित से निकालता है, और कौन सभी मामलों का प्रबंधन करता है?' वे जवाब देंगे, 'अल्लाह।' तो कहो, 'फिर तुम (उससे) क्यों नहीं डरते?'	قُلْ مَنْ يَّرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمَاۤءِ وَالْاَرْضِ اَمَّنْ يَّمْلِكُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَمَنْ يُّخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَمَنْ يُّدَبِّرُ الْاَمْرَ ۗفَسَيَقُوْلُوْنَ اللّٰهُ ۚفَقُلْ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ
32	तो वही अल्लाह तुम्हारा सच्चा रब है; तो सत्य के बाद केवल भटकाव है। फिर तुम (सत्य से) क्यों मुँह फेरते हो?	فَذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمُ الْحَقُّ ۚفَمَاذَا بَعْدَ الْحَقِّ اِلَّا الضَّلٰلُ ۚفَاَنّٰى تُصْرَفُوْنَ
33	इस तरह तुम्हारे रब का फ़ैसला उन लोगों के ख़िलाफ़ तय हो गया जो फासिक (पापी) हैं, क्योंकि वे निश्चय ही ईमान नहीं लाते।	كَذٰلِكَ حَقَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ عَلَى الَّذِيْنَ فَسَقُوْٓا اَنَّهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ
34	कहो, 'क्या तुम्हारे साझियों में कोई है जो प्राणियों की रचना शुरू कर सके, फिर उसे दोहराए (पुनरुज्जीवन करे)?' कहो, 'अल्लाह ही प्राणियों की रचना शुरू करता है, फिर उसे दोहराता है। तो तुम (अल्लाह के सिवा पूजा में) कैसे भटक जाते हो?'	قُلْ هَلْ مِنْ شُرَكَاۤىِٕكُمْ مَّنْ يَّبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ ۗقُلِ اللّٰهُ يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ فَاَنّٰى تُؤْفَكُوْنَ

قُلْ هَلْ مِنْ شُرَكَآئِكُمْ مَّنْ يَّهْدِيْٓ اِلَى الْحَقِّ قُلِ اللّٰهُ يَهْدِيْ لِلْحَقِّ اَفَمَنْ يَّهْدِيْٓ اِلَى الْحَقِّ اَحَقُّ اَنْ يُّتَّبَعَ اَمَّنْ لَّا يَهِدِّيْٓ اِلَّآ اَنْ يُّهْدٰى فَمَا لَكُمْ كَيْفَ تَحْكُمُوْنَ	**35**	कहो, 'क्या तुम्हारे साझियों में कोई है जो सत्य की ओर मार्गदर्शन कर सके?' कहो, 'अल्लाह ही सत्य की ओर मार्गदर्शन करता है' तो क्या वह जो सत्य की ओर मार्गदर्शन करता है, उसे मानना अधिक उचित है, या वह जो स्वयं मार्गदर्शन नहीं कर सकता जब तक कि उसे मार्गदर्शन न दिया जाए? तो तुम (इस तरह) कैसे निर्णय लेते हो?
وَمَا يَتَّبِعُ اَكْثَرُهُمْ اِلَّا ظَنًّا اِنَّ الظَّنَّ لَا يُغْنِيْ مِنَ الْحَقِّ شَيْـًٔا اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِمَا يَفْعَلُوْنَ	**36**	और उनमें से अधिकांश केवल अनुमान का पालन करते हैं। निश्चय ही अनुमान सत्य के ख़िलाफ़ कुछ भी काम नहीं आता। निश्चय ही अल्लाह जानता है कि वे क्या करते हैं।
وَمَا كَانَ هٰذَا الْقُرْاٰنُ اَنْ يُّفْتَرٰى مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلٰكِنْ تَصْدِيْقَ الَّذِيْ بَيْنَ يَدَيْهِ وَتَفْصِيْلَ الْكِتٰبِ لَا رَيْبَ فِيْهِ مِنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ	**37**	और यह क़ुरआन किसी ऐसे द्वारा गढ़ा नहीं जा सकता जो अल्लाह के सिवा हो; बल्कि यह (पहले की किताबों को) सत्यापित करता है और उन नियमों को स्पष्ट करता है जो निर्धारित किए गए हैं, इसमें कोई संदेह नहीं है, (यह उतारा गया है) सारे जहान के रब की ओर से।
اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتٰرٰىهُ قُلْ فَأْتُوْا بِسُوْرَةٍ مِّثْلِهٖ وَادْعُوْا مَنِ اسْتَطَعْتُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ	**38**	क्या वे कहते हैं कि उसने (मुहम्मद ने) इसे गढ़ लिया है? कहो, 'तो क़ुरआन की तरह एक सूरह बनाकर लाओ, और अल्लाह के सिवा जिसे तुम बुला सको, उसे बुलाओ, यदि तुम सच्चे हो।'
بَلْ كَذَّبُوْا بِمَا لَمْ يُحِيْطُوْا بِعِلْمِهٖ وَلَمَّا يَأْتِهِمْ تَأْوِيْلُهٗ كَذٰلِكَ كَذَّبَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الظّٰلِمِيْنَ	**39**	बल्कि (सच्चाई यह है कि) उन्होंने उसका इनकार किया जिसे वे पूरी तरह नहीं समझ सके और जिसकी व्याख्या उनके अभी तक नहीं मिली। इसी तरह उनके पहले की उम्मतों ने (रसूलों को) झुठलाया था। तो देखो कि ज़ालिमों का अंजाम कैसा हुआ।
وَمِنْهُمْ مَّنْ يُّؤْمِنُ بِهٖ وَمِنْهُمْ مَّنْ لَّا يُؤْمِنُ بِهٖ وَرَبُّكَ اَعْلَمُ بِالْمُفْسِدِيْنَ	**40**	और उनमें से कुछ लोग हैं जो इस (क़ुरआन) पर ईमान लाते हैं, और उनमें से कुछ लोग हैं जो इस पर ईमान नहीं लाते। और तुम्हारा रब उन लोगों को बेहतर जानता है जो नुक़सान पहुँचाते हैं।
وَاِنْ كَذَّبُوْكَ فَقُلْ لِّيْ عَمَلِيْ وَلَكُمْ عَمَلُكُمْ اَنْتُمْ بَرِيْٓـُٔوْنَ مِمَّآ اَعْمَلُ وَاَنَا بَرِيْٓءٌ مِّمَّا تَعْمَلُوْنَ	**41**	और यदि वे तुम्हें (मुहम्मद) झुठलाते हैं, तो कहो, 'मेरे लिए मेरे कर्म हैं और तुम्हारे लिए तुम्हारे कर्म। तुम मेरे किए हुए के लिए ज़िम्मेदार नहीं हो और मैं तुम्हारे किए हुए के लिए ज़िम्मेदार नहीं हूँ।'
وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّسْتَمِعُوْنَ اِلَيْكَ اَفَاَنْتَ تُسْمِعُ الصُّمَّ وَلَوْ كَانُوْا لَا يَعْقِلُوْنَ	**42**	और उनमें से कुछ लोग हैं जो तुम्हारी बात सुनते हैं लेकिन क्या तुम बहरों को सुनने वाला बना सकते हो, भले ही वे समझ न रखते हों?
وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّنْظُرُ اِلَيْكَ اَفَاَنْتَ تَهْدِى الْعُمْيَ وَلَوْ كَانُوْا لَا يُبْصِرُوْنَ	**43**	और उनमें से कुछ लोग हैं जो तुम्हारी ओर देखते हैं लेकिन क्या तुम अंधों को मार्गदर्शन दे सकते हो, भले ही वे देख न सकें?
اِنَّ اللّٰهَ لَا يَظْلِمُ النَّاسَ شَيْـًٔا وَّلٰكِنَّ النَّاسَ اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ	**44**	निश्चय ही अल्लाह मनुष्यों पर ज़रा भी ज़ुल्म नहीं करता, बल्कि मनुष्य ही अपने आप पर ज़ुल्म करते हैं।

45	और (याद रखो) उस दिन जब अल्लाह उन्हें इकट्ठा करेगा, (वे महसूस करेंगे) जैसे वे (दुनिया में) केवल एक पल के लिए ठहरे थे दिन के समय, (जब) वे एक-दूसरे को पहचान रहे होंगे। निश्चय ही वे लोग घाटे में रहेंगे जिन्होंने अल्लाह से मिलने को झुठलाया और उन्हें मार्गदर्शन नहीं मिला।	وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ كَاَنْ لَّمْ يَلْبَثُوْٓا اِلَّا سَاعَةً مِّنَ النَّهَارِ يَتَعَارَفُوْنَ بَيْنَهُمْ قَدْ خَسِرَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِلِقَاۤءِ اللّٰهِ وَمَا كَانُوْا مُهْتَدِيْنَ
46	और यदि हम तुम्हें (मुहम्मद) उस (सजा) का कुछ हिस्सा दिखाएँ जो हमने उनके लिए वादा किया है, (तो निश्चय ही तुम इसे देख लोगे) या (यदि) हम तुम्हें (इससे पहले) मृत्यु दे दें, तो हमारी ओर ही उनकी वापसी है, और अल्लाह उनके कर्मों का साक्षी है।	وَاِمَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ الَّذِيْ نَعِدُهُمْ اَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَاِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ ثُمَّ اللّٰهُ شَهِيْدٌ عَلٰى مَا يَفْعَلُوْنَ
47	और प्रत्येक उम्मत के लिए एक रसूल है जब उनका रसूल उनके पास आता है, तो उनके बीच न्याय के साथ फ़ैसला किया जाता है और (ज़रा भी) जुल्म नहीं किया जाता।	وَلِكُلِّ اُمَّةٍ رَّسُوْلٌ فَاِذَا جَاۤءَ رَسُوْلُهُمْ قُضِيَ بَيْنَهُمْ بِالْقِسْطِ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ
48	और वे कहते हैं, 'यह धमकी (सजा) कब आएगी, यदि तुम सच्चे हो?'	وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ
49	कहो (मुहम्मद), 'मैं अपने लिए न तो नुकसान को रोक सकता हूँ और न ही लाभ ला सकता हूँ सिवाय इसके जो अल्लाह चाहता है।' प्रत्येक उम्मत के लिए एक निश्चित समय (अजल) है। जब उनका समय आता है, तो वे न तो एक पल की देरी कर सकते हैं और न ही जल्दी।	قُلْ لَّآ اَمْلِكُ لِنَفْسِيْ ضَرًّا وَّلَا نَفْعًا اِلَّا مَا شَاۤءَ اللّٰهُ لِكُلِّ اُمَّةٍ اَجَلٌ اِذَا جَاۤءَ اَجَلُهُمْ فَلَا يَسْتَاْخِرُوْنَ سَاعَةً وَّلَا يَسْتَقْدِمُوْنَ
50	कहो, 'क्या तुमने सोचा कि यदि उसकी सजा रात में या दिन में तुम पर आ जाए, तो पापी लोग उसमें से क्या जल्दी चाहेंगे?'	قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ اَتٰىكُمْ عَذَابُهٗ بَيَاتًا اَوْ نَهَارًا مَّاذَا يَسْتَعْجِلُ مِنْهُ الْمُجْرِمُوْنَ
51	क्या फिर जब वह (सजा) हो जाएगी, तब तुम उस पर ईमान लाओगे? अब? जबकि तुम इसे जल्दी माँग रहे थे।	اَثُمَّ اِذَا مَا وَقَعَ اٰمَنْتُمْ بِهٖ ۭ اٰلْـٰٔنَ وَقَدْ كُنْتُمْ بِهٖ تَسْتَعْجِلُوْنَ
52	फिर उन लोगों से जो जुल्म करते हैं, कहा जाएगा, 'अब उस अनंत यातना को चखो। क्या तुम्हें उसका बदला नहीं दिया जाएगा जो तुमने किया?'	ثُمَّ قِيْلَ لِلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ذُوْقُوْا عَذَابَ الْخُلْدِ هَلْ تُجْزَوْنَ اِلَّا بِمَا كُنْتُمْ تَكْسِبُوْنَ
53	और वे तुमसे पूछते हैं, 'क्या यह (सजा) सच है?' कहो, 'हाँ, मेरे रब की सौगंध, यह निश्चय ही सच है, और तुम बच नहीं सकोगे।'	وَيَسْتَنْۢبِـُٔوْنَكَ اَحَقٌّ هُوَ ۭ قُلْ اِيْ وَرَبِّيْٓ اِنَّهٗ لَحَقٌّ ۭ وَمَآ اَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ
54	और यदि प्रत्येक ज़ालिम के पास वह सब कुछ हो जो धरती पर है, तो वह निश्चय ही उसे (अपने छुटकारे के लिए) दे देगा, और जब वे उस सजा को देखेंगे, तो वे अपने पश्चाताप को छिपाएँगे। फिर उनके बीच न्याय के साथ फ़ैसला किया जाएगा, और उन पर जुल्म नहीं किया जाएगा।	وَلَوْ اَنَّ لِكُلِّ نَفْسٍ ظَلَمَتْ مَا فِي الْاَرْضِ لَافْتَدَتْ بِهٖ ۭ وَاَسَرُّوا النَّدَامَةَ لَمَّا رَاَوُا الْعَذَابَ ۚ وَقُضِيَ بَيْنَهُمْ بِالْقِسْطِ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ
55	जान लो, निश्चय ही जो कुछ आकाश और धरती में है, वह अल्लाह का है। क्या अल्लाह का वादा सत्य नहीं है? लेकिन उनमें से अधिकांश लोग नहीं जानते।	اَلَآ اِنَّ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ اَلَآ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ

56	वही ह जो जीवन दता ह और मृत्यु द्वता ह और उसी की ओर तम लौटाए जाओगे।	هُوَ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ
57	ह मनष्यो! तमहार पास तमहार रब की ओर स एक उपदश (कर्आन) आया ह, जो तमहार दिलों की बीमारी क लिए shifa ह और ईमान वालों क लिए मार्गदर्शन और रहमत ह।	يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاۤءَتْكُمْ مَّوْعِظَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَشِفَاۤءٌ لِّمَا فِى الصُّدُوْرِ وَهُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ
58	कहो (महम्मद), 'अल्लाह की कपा और उसकी रहमत क साथ, उनह इसक लिए परसन्न होना चाहिए। यह उससे बहेतर ह जो व इकट्ठा करते ह।'	قُلْ بِفَضْلِ اللّٰهِ وَبِرَحْمَتِهٖ فَبِذٰلِكَ فَلْيَفْرَحُوْا هُوَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُوْنَ
59	कहो (महम्मद), 'मझे बताओ उस रोज़ी क बार म जो अल्लाह न तमहार लिए उतारी, फिर तमन उसका कछ हिस्सा हराम और कछ हिस्सा हलाल कर लिया।' कहो, 'क्या अल्लाह न तमह इसकी अनमति दी थी, या तम अल्लाह क नाम पर झठ गढ़त हो?'	قُلْ اَرَءَيْتُمْ مَّآ اَنْزَلَ اللّٰهُ لَكُمْ مِّنْ رِّزْقٍ فَجَعَلْتُمْ مِّنْهُ حَرَامًا وَّحَلٰلًا قُلْ ءٰٓاللّٰهُ اَذِنَ لَكُمْ اَمْ عَلَى اللّٰهِ تَفْتَرُوْنَ
60	और उन लोगों का क्या अनमान ह जो क़ियामत क दिन अल्लाह क खिलाफ़ झठ गढ़त ह? निश्चय ही अल्लाह मनष्यों पर बहत कपाल ह, लेकिन उनम स अधिकांश लोग शक्रगज़ार नहीं ह।	وَمَا ظَنُّ الَّذِيْنَ يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ اِنَّ اللّٰهَ لَذُوْ فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَشْكُرُوْنَ
61	और तम (महम्मद) किसी भी हालत म हो, या कर्आन का कोई हिस्सा पढ़त हो, या तम जो भी करम करत हो, हम तमहार करमों क साक्षी होत ह जब तम उसम लग होत हो। तमहार रब स धरती म एक कण क बराबर और न ही आकाश म कछ छपा ह, और न ही उससे छोटा या बड़ा कछ ह, जो एक सपष्ट किताब (लौह महफ़ज़) म दर्ज न हो।	وَمَا تَكُوْنُ فِيْ شَاْنٍ وَّمَا تَتْلُوْا مِنْهُ مِنْ قُرْاٰنٍ وَّلَا تَعْمَلُوْنَ مِنْ عَمَلٍ اِلَّا كُنَّا عَلَيْكُمْ شُهُوْدًا اِذْ تُفِيْضُوْنَ فِيْهِ وَمَا يَعْزُبُ عَنْ رَّبِّكَ مِنْ مِّثْقَالِ ذَرَّةٍ فِى الْاَرْضِ وَلَا فِى السَّمَاۤءِ وَلَآ اَصْغَرَ مِنْ ذٰلِكَ وَلَآ اَكْبَرَ اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ
62	जान लो, अल्लाह क वली (दोसतो) को न तो कोई डर ह और न ही व दखी होंगे।	اَلَآ اِنَّ اَوْلِيَاۤءَ اللّٰهِ لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ
63	(व) जो लोग ईमान लाए और हमेशा तकवा रखत ह।	اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَكَانُوْا يَتَّقُوْنَ
64	उनक लिए दनिया की ज़िंदगी म और आखिरत म शभ समाचार ह। अल्लाह क वादों म कोई बदलाव नहीं होता। यही वह महान सफलता ह।	لَهُمُ الْبُشْرٰى فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَفِى الْاٰخِرَةِ لَا تَبْدِيْلَ لِكَلِمٰتِ اللّٰهِ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ
65	और उनकी बातों स तम (महम्मद) दखी न हो। निश्चय ही सारी शक्ति अल्लाह की ह। वह सब कछ सनने वाला, सब कछ जानने वाला ह।	وَلَا يَحْزُنْكَ قَوْلُهُمْ اِنَّ الْعِزَّةَ لِلّٰهِ جَمِيْعًا هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ

66	जान लो, जो कोई आकाश म॑ह॒ै और जो कोई धरती म॑ह॒, वह अल्लाह का ह॒ै और जो लोग अल्लाह क॑सिवा साझियों को पुकारत॑ह॒ै, व॑ (किसी यकीन का) पालन नहीं करत॑े व॑केवल अनुमान का पालन करत॑ह॒ै और व॑केवल अटकल॑लगात॑ह॒ै।	اَلَآ اِنَّ لِلّٰهِ مَنْ فِى السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِى الْاَرْضِ وَمَا يَتَّبِعُ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ شُرَكَآءَ اِنْ يَّتَّبِعُوْنَ اِلَّا الظَّنَّ وَاِنْ هُمْ اِلَّا يَخْرُصُوْنَ
67	वही ह॒ै जिसन॑े तुम्हार॑े लिए रात को बनाया ताकि तुम उसम॑ै आराम करो और दिन को उज्ज़्वल बनाया। निश्चय ही इसम॑ै उन लोगों क॑े लिए निशानिया॑ँ ह॒ैं जो सुनत॑े ह॒ैं।	هُوَ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الَّيْلَ لِتَسْكُنُوْا فِيْهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّسْمَعُوْنَ
68	व॑े (यहूद्दी और ईसाई) कहत॑े ह॒ैं, 'अल्लाह का एक बेटा ह॒ै।' वह महासच्चा ह॒ै, वह महा-समृद्ध ह॒ै; जो कुछ आकाश और धरती म॑ै ह॒ै, वह उसी का ह॒ै। तुम्हार॑े पास इसका कोई पक्का सबूत नहीं ह॒ै। क्या तुम अल्लाह क॑े बार॑े म॑ें वह कहत॑े हो जो तुम नहीं जानत॑े?	قَالُوا اتَّخَذَ اللّٰهُ وَلَدًا سُبْحٰنَه هُوَ الْغَنِيُّ لَه مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ اِنْ عِنْدَكُمْ مِّنْ سُلْطٰنٍ بِهٰذَا اَتَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ
69	कहो, 'निश्चय ही जो लोग अल्लाह क॑े ख़िलाफ़ झूठ गढ़त॑े ह॒ैं, व॑े सफल नहीं होंगे।'	قُلْ اِنَّ الَّذِيْنَ يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ لَا يُفْلِحُوْنَ
70	(उनक॑े लिए) दुनिया म॑ें क्षणिक सुख ह॒ै, फिर उनकी वापसी हमारी ओर ह॒ै, फिर हम उनह॑ें उनकी कुफ़्र की वजह स॑े कठोर यातना का स्वाद चखाएँगे।	مَتَاعٌ فِى الدُّنْيَا ثُمَّ اِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ ثُمَّ نُذِيْقُهُمُ الْعَذَابَ الشَّدِيْدَ بِمَا كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ
71	और उनह॑ें नूह की महत्वपूर्ण ख़बर सुनाओ जब उनहोंन॑े अपनी कौम स॑े कहा, 'ह॑े मेरी कौम! यदि मेरा तुम्हार॑े बीच रहना और अल्लाह की आयतों स॑े चेतावनी देना तुमह॑ें भारी लगता ह॒ै, तो म॑ै अल्लाह पर भरोसा करता हूँ। इसलिए अपनी और अपन॑े साझियों की योजना को एकजुट करो (मुझ॑े नष्ट करन॑े क॑े लिए), और अपनी योजना को गुप्त न रखो। फिर मेर॑े ख़िलाफ़ कार्रवाई करो, और मुझ॑े ज़रा भी मोहलत न दो।'	وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَاَ نُوْحٍ اِذْ قَالَ لِقَوْمِه يٰقَوْمِ اِنْ كَانَ كَبُرَ عَلَيْكُمْ مَّقَامِيْ وَتَذْكِيْرِيْ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ فَعَلَى اللّٰهِ تَوَكَّلْتُ فَاَجْمِعُوْٓا اَمْرَكُمْ وَشُرَكَآءَكُمْ ثُمَّ لَا يَكُنْ اَمْرُكُمْ عَلَيْكُمْ غُمَّةً ثُمَّ اقْضُوْٓا اِلَيَّ وَلَا تُنْظِرُوْنِ
72	तो यदि तुम (मेरी चेतावनी स॑े) मुह॑ फेरत॑े हो, तो मैन॑े तुमस॑े कोई पुरस्कार नहीं माँगा। मेरा पुरस्कार केवल अल्लाह स॑े ह॒ै, और मुझ॑े आदेश दिया गया ह॒ै कि म॑ै मुसलमों (आत्मसमर्पण करन॑े वालों) म॑ें शामिल होऊँ।'	فَاِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَمَا سَاَلْتُكُمْ مِّنْ اَجْرٍ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ وَاُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ
73	फिर उनहोंन॑े उस॑े (नूह को) झुठलाया, तो हमन॑े उस॑े और उसक॑े साथियों को जहाज़ म॑ें बचा लिया, और हमन॑े उनह॑ें ख़लीफा (उत्तराधिकारी) बनाया और हमन॑े उन लोगों को डुबो दिया जिनहोंन॑े हमारी आयतों को झुठलाया। तो देखो कि उन लोगों का अंजाम कैसा हुआ जिनह॑ें चेतावनी दी गई थी।	فَكَذَّبُوْهُ فَنَجَّيْنٰهُ وَمَنْ مَّعَه فِى الْفُلْكِ وَجَعَلْنٰهُمْ خَلٰٓئِفَ وَاَغْرَقْنَا الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُنْذَرِيْنَ

ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْ بَعْدِهٖ رُسُلًا اِلٰى قَوْمِهِمْ فَجَاءُوْهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَمَا كَانُوْا لِيُؤْمِنُوْا بِمَا كَذَّبُوْا بِهٖ مِنْ قَبْلُ كَذٰلِكَ نَطْبَعُ عَلٰى قُلُوْبِ الْمُعْتَدِيْنَ	**74**	फिर उसके (नूह) बाद, हमने कई रसूलों को उनकी कौमों के पास भेजा, तो वे उनके पास सुपष्ट प्रमाण लेकर आए, लेकिन वे उसका विश्वास नहीं करने वाले थे जिसे उनहोंने पहले झुठलाया था। इस तरह हम उन लोगों के दिलों को बंद कर देते है जो हद से आगे बढ़ते है।
ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْ بَعْدِهِمْ مُّوْسٰى وَهٰرُوْنَ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهٖ بِاٰيٰتِنَا فَاسْتَكْبَرُوْا وَكَانُوْا قَوْمًا مُّجْرِمِيْنَ	**75**	फिर उनके बाद, हमने मूसा और हारून को फ़िरऔन और उसकी कौम के सरदारों के पास हमारी निशानियों (चमत्कारों) के साथ भेजा। लेकिन वे घमंड करने लगे और वे पापी लोग थे।
فَلَمَّا جَآءَهُمُ الْحَقُّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوْٓا اِنَّ هٰذَا لَسِحْرٌ مُّبِيْنٌ	**76**	तो जब हमारे पास से सत्य उनके पास आया, तो उनहोंने कहा, 'यह निश्चय ही सुपष्ट जादू है।'
قَالَ مُوْسٰٓى اَتَقُوْلُوْنَ لِلْحَقِّ لَمَّا جَآءَكُمْ اَسِحْرٌ هٰذَا وَلَا يُفْلِحُ السّٰحِرُوْنَ	**77**	मूसा ने कहा, 'क्या तुम सत्य के बारे में, जब वह तुमहारे पास आया, कहते हो, 'क्या यह जादू है?' जबकि जादूगर कभी सफल नहीं होते।'
قَالُوْٓا اَجِئْتَنَا لِتَلْفِتَنَا عَمَّا وَجَدْنَا عَلَيْهِ اٰبَآءَنَا وَتَكُوْنَ لَكُمَا الْكِبْرِيَآءُ فِى الْاَرْضِ وَمَا نَحْنُ لَكُمَا بِمُؤْمِنِيْنَ	**78**	उनहोंने कहा, 'क्या तुम हमारे पास इसलिए आए हो कि हम उस (विश्वास) से हटा दो जिसे हमने अपने पूर्वजों को करते हुए पाया (मूर्तिपूजा), और तुम दोनों को धरती (मिस्र की भूमि) पर सत्ता मिले? हम तुम दोनों पर विश्वास नहीं करेंगे।'
وَقَالَ فِرْعَوْنُ ائْتُوْنِىْ بِكُلِّ سٰحِرٍ عَلِيْمٍ	**79**	और फ़िरऔन ने (अपने सरदारों से) कहा, 'मेरे पास हर कुशल जादूगर को लाओ!'
فَلَمَّا جَآءَ السَّحَرَةُ قَالَ لَهُمْ مُّوْسٰٓى اَلْقُوْا مَآ اَنْتُمْ مُّلْقُوْنَ	**80**	तो जब जादूगर आए, मूसा ने उनसे कहा, 'जो कुछ तुम फेंकना चाहते हो, उसे फेंको!'
فَلَمَّآ اَلْقَوْا قَالَ مُوْسٰى مَا جِئْتُمْ بِهِ السِّحْرُ اِنَّ اللّٰهَ سَيُبْطِلُهٗ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُصْلِحُ عَمَلَ الْمُفْسِدِيْنَ	**81**	जब उनहोंने (अपना जादू) फेंका, मूसा ने कहा, 'जो तुमने किया, वह जादू है, निश्चय ही अल्लाह इस जादू की असत्यता को प्रकट करेगा। निश्चय ही अल्लाह नुकसान पहुँचाने वालों के कर्मों को चलने नहीं देता।'
وَيُحِقُّ اللّٰهُ الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهٖ وَلَوْ كَرِهَ الْمُجْرِمُوْنَ	**82**	और अल्लाह अपने फ़ैसले से सत्य को स्थापित करेगा, भले ही पापी लोग इसे पसंद न करें।
فَمَآ اٰمَنَ لِمُوْسٰٓى اِلَّا ذُرِّيَّةٌ مِّنْ قَوْمِهٖ عَلٰى خَوْفٍ مِّنْ فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهِمْ اَنْ يَّفْتِنَهُمْ وَاِنَّ فِرْعَوْنَ لَعَالٍ فِى الْاَرْضِ وَاِنَّهٗ لَمِنَ الْمُسْرِفِيْنَ	**83**	तो मूसा पर कोई भी ईमान नहीं लाया, सिवाय उनकी कौम के कुछ संतानों के, इस डर से कि फ़िरऔन और उनके सरदार उनहें यातना देंगे। और निश्चय ही फ़िरऔन धरती पर बहुत अत्याचारी था, और वह निश्चय ही हद से आगे बढ़ने वालों में से था।
وَقَالَ مُوْسٰى يٰقَوْمِ اِنْ كُنْتُمْ اٰمَنْتُمْ بِاللّٰهِ فَعَلَيْهِ تَوَكَّلُوْٓا اِنْ كُنْتُمْ مُّسْلِمِيْنَ	**84**	और मूसा ने कहा, 'हे मेरी कौम! यदि तुम अल्लाह पर ईमान रखते हो, तो उस पर भरोसा करो, यदि तुम वास्तव में मुसलिम (आत्मसमर्पण करने वाले) हो।'

85	तो उन्होंने कहा, 'हम अल्लाह पर भरोसा करते हैं। हे हमारे रब, हमें ज़ालिम कौम के लिए फ़ितना (परीक्षा) का साधन न बना,	فَقَالُوْا عَلَى اللّٰهِ تَوَكَّلْنَا رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِّلْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ
86	और हमें अपनी रहमत से काफ़िरों से बचा ले।'	وَنَجِّنَا بِرَحْمَتِكَ مِنَ الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ
87	और हमने मूसा और उनके भाई को वह्य की, 'मिस्र में अपनी कौम के लिए कुछ घर लो और अपने घरों को इबादत की जगह बनाओ और नमाज़ क़ायम करो और ईमान वालों को शुभ समाचार दो।'	وَاَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰى وَاَخِيْهِ اَنْ تَبَوَّاٰ لِقَوْمِكُمَا بِمِصْرَ بُيُوْتًا وَّاجْعَلُوْا بُيُوْتَكُمْ قِبْلَةً وَّاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ
88	और मूसा ने कहा, 'हे हमारे रब, तूने फ़िरऔन और उसकी कौम के सरदारों को दुनिया की ज़िंदगी में आभूषण और धन-संपत्ति दी। हे हमारे रब, (नतीजतन) वे (लोगों को) तेरे रास्ते से भटकाते हैं। हे रब, उनकी संपत्ति को नष्ट कर दे, और उनके दिलों को बंद कर दे, ताकि वे तब तक ईमान न लाएँ जब तक कि वे दुखदायी यातना न देख लें।'	وَقَالَ مُوْسٰى رَبَّنَآ اِنَّكَ اٰتَيْتَ فِرْعَوْنَ وَمَلَاَهٗ زِيْنَةً وَّاَمْوَالًا فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا رَبَّنَا لِيُضِلُّوْا عَنْ سَبِيْلِكَ رَبَّنَا اطْمِسْ عَلٰٓى اَمْوَالِهِمْ وَاشْدُدْ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُوْا حَتّٰى يَرَوُا الْعَذَابَ الْاَلِيْمَ
89	उसने (अल्लाह ने) कहा, 'तुम दोनों की दुआ निश्चय ही स्वीकार की गई है, इसलिए तुम दोनों सीधे रास्ते पर बने रहो और उन लोगों के रास्ते का पालन न करो जो नहीं जानते।'	قَالَ قَدْ اُجِيْبَتْ دَّعْوَتُكُمَا فَاسْتَقِيْمَا وَلَا تَتَّبِعٰٓنِّ سَبِيْلَ الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ
90	और हमने बनी इसराइल को समुद्र पार कराया, फिर फ़िरऔन और उसकी सेना ने उनका पीछा किया, ज़ुल्म और अत्याचार के लिए। यहाँ तक कि जब फ़िरऔन डूबने वाला था, उसने कहा, 'मैं विश्वास करता हूँ कि कोई ईश्वर नहीं है सिवाय उस ईश्वर के जिस पर बनी इसराइल ने विश्वास किया, और मैं मुसलमानों (आत्मसमर्पण करने वालों) में से हूँ।'	وَجَاوَزْنَا بِبَنِيْٓ اِسْرَاۤءِيْلَ الْبَحْرَ فَاَتْبَعَهُمْ فِرْعَوْنُ وَجُنُوْدُهٗ بَغْيًا وَّعَدْوًا حَتّٰٓى اِذَآ اَدْرَكَهُ الْغَرَقُ قَالَ اٰمَنْتُ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّا الَّذِيْٓ اٰمَنَتْ بِهٖ بَنُوْٓا اِسْرَاۤءِيْلَ وَاَنَا مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ
91	(कहा गया), 'क्या अब (तुम ईमान लाते हो), जबकि तुम इसके पहले से अवज्ञा की थी, और तुम नुक़सान पहुँचाने वालों में से थे?'	اٰۤلْـٰٔنَ وَقَدْ عَصَيْتَ قَبْلُ وَكُنْتَ مِنَ الْمُفْسِدِيْنَ
92	तो आज हम तुम्हारी देह को बचा लेंगे ताकि तुम उन लोगों के लिए एक निशानी बनो जो तुम्हारे बाद आएँगे, लेकिन अधिकांश लोग हमारी निशानियों की उपेक्षा करते हैं।	فَالْيَوْمَ نُنَجِّيْكَ بِبَدَنِكَ لِتَكُوْنَ لِمَنْ خَلْفَكَ اٰيَةً وَاِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ عَنْ اٰيٰتِنَا لَغٰفِلُوْنَ
93	और निश्चय ही, हमने बनी इसराइल को एक अच्छे निवास स्थान में बसाया और उन्हें अच्छी रोज़ी दी। फिर वे आपस में मतभेद करने लगे, सिवाय इसके कि उनके पास (तौरात में) ज्ञान आया। निश्चय ही तुम्हारा रब क़ियामत के दिन उनके बीच उसका फ़ैसला करेगा जिसमें वे मतभेद करते थे।	وَلَقَدْ بَوَّاْنَا بَنِيْٓ اِسْرَاۤءِيْلَ مُبَوَّاَ صِدْقٍ وَّرَزَقْنٰهُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ فَمَا اخْتَلَفُوْا حَتّٰى جَاۤءَهُمُ الْعِلْمُ اِنَّ رَبَّكَ يَقْضِيْ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ
94	तो यदि तुम (मुहम्मद) उस चीज़ के बारे में संदेह में हो जो हमने तुम पर उतारी है, तो उन लोगों से पूछो जो तुमसे पहले की किताब पढ़ते हैं। निश्चय ही तुम्हारे पास तुम्हारे रब से सत्य आया है, इसलिए तुम संदेह करने वालों में से न हो।	فَاِنْ كُنْتَ فِيْ شَكٍّ مِّمَّآ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ فَسْـَٔلِ الَّذِيْنَ يَقْرَءُوْنَ الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكَ لَقَدْ جَاۤءَكَ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِيْنَ

95	और तमु उन लोगों मे॑स॑े न हो जो अल॒लाह की आयतों को झठुलात॑े है,ै नहीं तो तमु घाट॑े मे॑ रहन॑े वालों मे॑स॑े हो जाओगे।	وَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ فَتَكُوْنَ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ
96	नशि॒चय ही, जनि लोगों क॑े लिए तमु॒हार॑े रब का फ़॒सैला तय हो चक॒ा ह,ै व॑े ईमान नहीं लाएँगे,	اِنَّ الَّذِيْنَ حَقَّتْ عَلَيْهِمْ كَلِمَةُ رَبِّكَ لَا يُؤْمِنُوْنَ
97	भल॑े ही उनक॑े सामन॑े हर नशिानी (अल॒लाह की महानता की) आ जाए, जब तक कि व॑े दख़॒दायी यातना न दख़े ल॑ें।	وَلَوْ جَاۤءَتْهُمْ كُلُّ اٰيَةٍ حَتّٰى يَرَوُا الْعَذَابَ الْاَلِيْمَ
98	तो कोई ऐसा नगर क॒यों नहीं था जो ईमान लाता, फरि उसका ईमान उसक॑े लिए लाभकारी होता, सविाय यनू॒सु की कौम क? जब उनहों॑न॑े (यनू॒सु की कौम न॑े) ईमान लाया, तो हमन॑े उनस॑े दनु॒यिा की ज़॒दिगी म॑े अपमानजनक यातना को हटा लयिा, और हमन॑े उनह॒ें एक नशि॒चति समय तक सख़॒ दयिा।	فَلَوْلَا كَانَتْ قَرْيَةٌ اٰمَنَتْ فَنَفَعَهَآ اِيْمَانُهَآ اِلَّا قَوْمَ يُوْنُسَ لَمَّآ اٰمَنُوْا كَشَفْنَا عَنْهُمْ عَذَابَ الْخِزْيِ فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَمَتَّعْنٰهُمْ اِلٰى حِيْنٍ
99	और यदि तमु॒हारा रब चाहता, तो धरती पर सभी लोग पूरी तरह ईमान ला लते॑े तो क॒या तमु (लोगों को) जबरदस॒ती ईमान लान॑े क॑े लिए मजबरू करोग?	وَلَوْ شَاۤءَ رَبُّكَ لَاٰمَنَ مَنْ فِى الْاَرْضِ كُلُّهُمْ جَمِيْعًا اَفَاَنْتَ تُكْرِهُ النَّاسَ حَتّٰى يَكُوْنُوْا مُؤْمِنِيْنَ
100	और कोई भी व॒यक॒ति अल॒लाह की अनमु॒ति क॑े बनिा ईमान नहीं ला सकता, और अल॒लाह उन लोगों पर सजा दत॑ेा ह॑ै जो समझ नहीं॑ रख॒त॑े।	وَمَا كَانَ لِنَفْسٍ اَنْ تُؤْمِنَ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ وَيَجْعَلُ الرِّجْسَ عَلَى الَّذِيْنَ لَا يَعْقِلُوْنَ
101	कहो, 'दखे॑ो जो कछु आकाश और धरती म॑े ह॑ै! लकेनि जो लोग ईमान नहीं॑ लात॑े, उनक॑े लिए नशिानयिा॑ँ (अल॒लाह की महानता की) और चत॑ेावनयिा॑ँ दने॑े वाल॑े रेसल॒ कछु भी लाभकारी नहीं॑ ह॑ैं।	قُلِ انْظُرُوْا مَاذَا فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا تُغْنِى الْاٰيٰتُ وَالنُّذُرُ عَنْ قَوْمٍ لَّا يُؤْمِنُوْنَ
102	तो व॑े कवेल उसी (घटनाओं) का इ॑तज़ार करत॑े ह॑ैं जो उनक॑े पहल॑े की उम॒मतों पर आई थीं। कहो, 'तो इ॑तज़ार करो, म॑ैं भी तमु॒हार॑े साथ इ॑तज़ार करन॑े वालों मे॑ ह॑ूँ।'	فَهَلْ يَنْتَظِرُوْنَ اِلَّا مِثْلَ اَيَّامِ الَّذِيْنَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِهِمْ قُلْ فَانْتَظِرُوْٓا اِنِّىْ مَعَكُمْ مِّنَ الْمُنْتَظِرِيْنَ
103	फरि हम अपन॑े रेसलूों और ईमान लान॑े वालों को बचा लत॑े ह॑ैं, इस तरह हमारा कर॒तव॒य ह॑ै कि हम ईमान वालों को बचाएँ।	ثُمَّ نُنَجِّيْ رُسُلَنَا وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كَذٰلِكَ حَقًّا عَلَيْنَا نُنْجِ الْمُؤْمِنِيْنَ
104	कहो (मह॒मम॒द), 'ह॑े मनषु॒यो! यदि तमु मरे॑े धरम॑ क॑े बार॑े मे॑ संदहे म॑े हो, तो (जान लो) म॑ैं उसकी पज॒ा नहीं करता जसिकी तमु अल॒लाह क॑े सवि॑ा पज॒ा करत॑े हो, बल्॑कि म॑ैं उस अल॒लाह की पज॒ा करता ह॑ूँ जो तमु॒ह॑े मृत॒यु द॒गे॑ा और मझु॒े आदश॑े दयिा गया ह॑ै कि म॑ैं ईमान वालों म॑े शामलि होऊ,ँ'	قُلْ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنْ كُنْتُمْ فِىْ شَكٍّ مِّنْ دِيْنِىْ فَلَآ اَعْبُدُ الَّذِيْنَ تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلٰكِنْ اَعْبُدُ اللّٰهَ الَّذِىْ يَتَوَفّٰىكُمْ وَاُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ
105	और (मझु॒े आदश॑े दयिा गया ह॑ै), 'अपना चहेरा धरम॑ की ओर पूरी नषि॒ठा और इख़॒लास क॑े साथ करो और कभी भी मशु॒रकि॑ों (साझी ठहरान॑े वालों) म॑े शामलि न हो।'	وَاَنْ اَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّيْنِ حَنِيْفًا وَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ

وَلَا تَدْعُ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَنْفَعُكَ وَلَا يَضُرُّكَ فَاِنْ فَعَلْتَ فَاِنَّكَ اِذًا مِّنَ الظّٰلِمِيْنَ	और अल्लाह के सिवा उसकी पूजा न करो जो न तो तुम्हें लाभ दे सकता है और न ही नुक़सान। क्योंकि यदि तुम ऐसा करोगे, तो निश्चय ही तुम ज़ालिमों में से हो जाओगे।	**106**
وَاِنْ يَّمْسَسْكَ اللّٰهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهٗٓ اِلَّا هُوَ وَاِنْ يُّرِدْكَ بِخَيْرٍ فَلَا رَادَّ لِفَضْلِهٖ يُصِيْبُ بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ وَهُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ	और यदि अल्लाह तुम पर कोई मुसीबत लाए, तो उसे कोई नहीं हटा सकता सिवाय उसके। और यदि वह तुम्हारे लिए कोई भलाई चाहता है, तो उसकी कृपा को कोई नहीं रोक सकता। वह अपनी कृपा अपने उन बन्दों में से जिसे चाहता है, देता है। वह बहुत क्षमाशील, बहुत दयालु है।	**107**
قُلْ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَكُمُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكُمْ فَمَنِ اهْتَدٰى فَاِنَّمَا يَهْتَدِيْ لِنَفْسِهٖ وَمَنْ ضَلَّ فَاِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا وَمَآ اَنَا عَلَيْكُمْ بِوَكِيْلٍ	कहो (मुहम्मद), 'हे मनुष्यो! तुम्हारे पास तुम्हारे रब से सत्य (क़ुरआन) आ चुका है, इसलिए जो कोई मार्गदर्शन प्राप्त करता है, वह अपने लिए मार्गदर्शन प्राप्त करता है और जो कोई भटक जाता है, वह अपने लिए भटक जाता है और मैं तुम्हारा रखवाला नहीं हूँ।'	**108**
وَاتَّبِعْ مَا يُوْحٰٓى اِلَيْكَ وَاصْبِرْ حَتّٰى يَحْكُمَ اللّٰهُ وَهُوَ خَيْرُ الْحٰكِمِيْنَ	और जो कुछ तुम पर वह्य की जाती है, उसका पालन करो, और धैर्य रखो जब तक कि अल्लाह फ़ैसला न करे। वह सबसे अच्छा फ़ैसला करने वाला है।	**109**

छंदों की संख़्या	هُود	मकी
१२३	कनटोप - 11	مكية

بسم الله الرحمن الرحيم

कनटोप (हूद)

الٓرٰ كِتٰبٌ اُحْكِمَتْ اٰيٰتُه ثُمَّ فُصِّلَتْ مِنْ لَّدُنْ حَكِيْمٍ خَبِيْرٍ	अलफ़ि लाम रा। (यह) कताब ह जिसक आयत व्यवस्थति रूप स संरचति ह और फरि वसि्तार स समझाई गई ह, (जो उतारी गई) अल्लाह की ओर स, जो महाबद्धमिान, सर्वज्ञ ह	1
اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّا اللّٰهَ اِنَّنِيْ لَكُمْ مِّنْهُ نَذِيْرٌ وَّبَشِيْرٌ	ताकि तमु अल्लाह क सवि कसिी की पूजा न करो। नशि्चय ही म (मुह्मम्द) तमुह्ार लिए उसकी ओर स चेतावनी दने वाला और शभु समाचार लान वाला हूँ	2
وَّاَنِ اسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوْبُوْٓا اِلَيْهِ يُمَتِّعْكُمْ مَّتَاعًا حَسَنًا اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى وَّيُؤْتِ كُلَّ ذِيْ فَضْلٍ فَضْلَه وَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنِّيْٓ اَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ كَبِيْرٍ	और तमु अपन रब स क्षमा माँगो और उसकी ओर तौबा करो, नशि्चय ही वह तमुह् एक नशि्चति समय तक अच्छी जीवकिा दगे। और वह प्रत्यके अच्छा कार्य करन वाल को अपनी कृपा दगे। और यदि तमु मुंह फरे लो, तो मझु डर ह कि तमु पर बड़े दनि (क़यिामत) की यातना आएगी।	3
اِلَى اللّٰهِ مَرْجِعُكُمْ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ	अल्लाह की ओर ही तमुह्ारी वापसी ह वह हर चीज़ पर सर्वशक्तमिान ह	4
اَلَآ اِنَّهُمْ يَثْنُوْنَ صُدُوْرَهُمْ لِيَسْتَخْفُوْا مِنْهُ اَلَا حِيْنَ يَسْتَغْشُوْنَ ثِيَابَهُمْ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّوْنَ وَمَا يُعْلِنُوْنَ اِنَّه عَلِيْمٌ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ	सावधान रहो, नशि्चय ही व (मुनाफ़कि) अपन सीन को मोड़त ह ताकि उस (मुह्मम्द) स छपि सकं। सावधान रहो, जब व अपन कपड़ों स ख़दु को ढकँत ह, अल्लाह जानता ह कि व क्या छपिात ह और क्या प्रकट करत ह, नशि्चय ही अल्लाह दलिों की बातों को जानन वाला ह	5
وَمَا مِنْ دَآبَّةٍ فِى الْاَرْضِ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ رِزْقُهَا وَيَعْلَمُ مُسْتَقَرَّهَا وَمُسْتَوْدَعَهَا كُلٌّ فِيْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ	और धरती पर कोई भी जीवति प्राणी ऐसा नहीं ह जिसकी जीवकिा की गारंटी अल्लाह न न ली हो। वह उसका नविास स्थान और उसका अंतमि स्थान जानता ह। सब कछु (लखिा हुआ ह) एक स्पष्ट कताब (लौह महफ़ूज़) म	6
وَهُوَ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ وَّكَانَ عَرْشُه عَلَى الْمَاءِ لِيَبْلُوَكُمْ اَيُّكُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا وَلَئِنْ قُلْتَ اِنَّكُمْ مَّبْعُوْثُوْنَ مِنْ بَعْدِ الْمَوْتِ لَيَقُوْلَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ	और वही ह जिसन आकाशों और धरती को छः यगुों म पदैा कयि और अपना अर्श जल पर भी बनाया, ताकि वह तमुम स बहेतर कर्मों की परीक्षा लो यदि तमु कहो कि "नशि्चय ही तमु मरन के पश्चात् पनुः जीवति कयि जाओग," तो नशि्चय ही इनकार करनवेाल कहेंगे, "यह तो बस जादू ह"	7

8	और यदि हम उनके लिए यातना को एक निश्चित समय तक स्थगित करते है, तो वे निश्चय ही कहेगे, 'क्या चीज़ इसे रोक रही है?' जान लो, जब वह यातना उन पर आएगी, तो वे इसे टाल नहीं सकेगे। और वे उस (यातना) से घिरि जाएँगे जिसका वे मज़ाक उड़ाते थे।	وَلَئِنْ اَخَّرْنَا عَنْهُمُ الْعَذَابَ اِلٰٓى اُمَّةٍ مَّعْدُوْدَةٍ لَّيَقُوْلُنَّ مَا يَحْبِسُه اَلَا يَوْمَ يَأْتِيْهِمْ لَيْسَ مَصْرُوْفًا عَنْهُمْ وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِه يَسْتَهْزِءُوْنَ
9	और यदि हम इंसान को अपनी रहमत प्रदान करते है, फिरि उसे वापस ले लेते है, तो वह निराश हो जाता है और कृतघ्न हो जाता है।	وَلَئِنْ اَذَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنَّا رَحْمَةً ثُمَّ نَزَعْنٰهَا مِنْهُ اِنَّه لَيَـُٔوْسٌ كَفُوْرٌ
10	और यदि हम उसे किसी विपत्ति के बाद सुख प्रदान करते है, तो वह कहेगा, 'मुझसे विपत्ति दूर हो गई।' निश्चय ही वह बहुत प्रसन्न और घमंडी हो जाता है।	وَلَئِنْ اَذَقْنٰهُ نَعْمَاءَ بَعْدَ ضَرَّاءَ مَسَّتْهُ لَيَقُوْلَنَّ ذَهَبَ السَّيِّاٰتُ عَنِّيْ اِنَّه لَفَرِحٌ فَخُوْرٌ
11	सिवाय उन लोगों के जो धैर्य रखते है और नेके कार्य करते है, उनके लिए क्षमा और बड़ा प्रतिफल है।	اِلَّا الَّذِيْنَ صَبَرُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ كَبِيْرٌ
12	तो हो सकता है कि तुम (मुहम्मद) उसमे से कुछ को छोड़ देना चाहो जो तुम पर वह्य किया गया है और तुम्हारा सीना इसके कारण तंग हो, क्योंकि वे कहेगे, 'उसके पास धन (संपत्ति) क्यों नहीं उतारी गई या उसके साथ कोई फ़रिश्ता क्यों नहीं आया?' निश्चय ही तुम केवल एक चेतावनी देने वाले हो और अल्लाह हर चीज़ का संरक्षक है।	فَلَعَلَّكَ تَارِكٌ بَعْضَ مَا يُوْحٰٓى اِلَيْكَ وَضَآئِقٌ بِه صَدْرُكَ اَنْ يَّقُوْلُوْا لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْهِ كَنْزٌ اَوْ جَاءَ مَعَه مَلَكٌ اِنَّمَآ اَنْتَ نَذِيْرٌ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ وَّكِيْلٌ
13	बल्कि वे कहते है, 'उसने (मुहम्मद ने) कुरआन को गढ़ लिया है।' कहो, '(यदि ऐसा है), तो इसके समान दस सूरह गढ़कर लाओ, और अल्लाह के सिवा जिसे तुम बुला सको, उसे बुलाओ, यदि तुम सच्चे हो।'	اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ قُلْ فَأْتُوْا بِعَشْرِ سُوَرٍ مِّثْلِه مُفْتَرَيٰتٍ وَّادْعُوْا مَنِ اسْتَطَعْتُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ
14	फिरि यदि वे तुम्हारी चुनौती को पूरा नहीं करते, तो (कहो), 'जान लो, कि (कुरआन) अल्लाह के ज्ञान के साथ उतारा गया है, और यह कि उसके सिवा कोई ईश्वर नहीं है, तो क्या तुम आत्मसमर्पण (इस्लाम स्वीकार) करोगे?'	فَاِلَّمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَكُمْ فَاعْلَمُوْٓا اَنَّمَآ اُنْزِلَ بِعِلْمِ اللّٰهِ وَاَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ فَهَلْ اَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ
15	जो कोई दुनिया की ज़िंदगी और उसकी सजावट चाहता है, हम निश्चय ही उनके कार्यों का पूरा प्रतिफल उन्हे दुनिया में दे देगे और उन्हे दुनिया में कोई नुकसान नहीं होगा।	مَنْ كَانَ يُرِيْدُ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا وَزِيْنَتَهَا نُوَفِّ اِلَيْهِمْ اَعْمَالَهُمْ فِيْهَا وَهُمْ فِيْهَا لَا يُبْخَسُوْنَ
16	वही लोग है जिनके आख़िरत में आग (जहन्नम) के सिवा कुछ नहीं मिलेगा, और जो कुछ उन्होंने (दुनिया में) किया, वह वहाँ व्यर्थ हो जाएगा और जो कुछ उन्होंने किया, वह मिटि जाएगा।	اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ لَيْسَ لَهُمْ فِى الْاٰخِرَةِ اِلَّا النَّارُ وَحَبِطَ مَا صَنَعُوْا فِيْهَا وَبٰطِلٌ مَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ

17	तो क्या (काफ़िर लोग वही हैं) जो अपने रब से स्पष्ट प्रमाण (क़ुरआन) पर हैं, और जिसके पीछे उसकी ओर से एक गवाह है, और उससे पहले मूसा की किताब थी जो मार्गदर्शन और रहमत थी? वे उस (क़ुरआन) पर ईमान लाते हैं जो कोई उसका इनकार करता है, विभिन्न समूहों (क़ुरैश) में से, तो जहन्नम उसका वादा किया हुआ स्थान है, इसलिए तुम क़ुरआन के बारे में संदेह में न रहो। निश्चय ही, यह तुम्हारे रब से सत्य है, परन्तु अधिकांश लोग ईमान नहीं लाते।	اَفَمَنْ كَانَ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّهٖ وَيَتْلُوْهُ شَاهِدٌ مِّنْهُ وَمِنْ قَبْلِهٖ كِتٰبُ مُوْسٰٓى اِمَامًا وَّرَحْمَةً اُولٰٓئِكَ يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ وَمَنْ يَّكْفُرْ بِهٖ مِنَ الْاَحْزَابِ فَالنَّارُ مَوْعِدُهٗ فَلَا تَكُ فِيْ مِرْيَةٍ مِّنْهُ اِنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُوْنَ
18	और उससे बड़ा ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह के खिलाफ़ झूठ गढ़े? वे अपने रब के सामने पेश किए जाएँगे, और गवाह कहेंगे, 'ये वही लोग हैं जिन्होंने अपने रब के खिलाफ़ झूठ बोला।' सावधान रहो, ज़ालिमों पर अल्लाह की लानत है।	وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اُولٰٓئِكَ يُعْرَضُوْنَ عَلٰى رَبِّهِمْ وَيَقُوْلُ الْاَشْهَادُ هٰٓؤُلَآءِ الَّذِيْنَ كَذَبُوْا عَلٰى رَبِّهِمْ اَلَا لَعْنَةُ اللّٰهِ عَلَى الظّٰلِمِيْنَ
19	(वही) जो अल्लाह के मार्ग से रोकते हैं और उसे टेढ़ा करना चाहते हैं और वही लोग हैं जो आख़िरत पर विश्वास नहीं करते।	الَّذِيْنَ يَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَيَبْغُوْنَهَا عِوَجًا وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ كٰفِرُوْنَ
20	वे धरती पर (अल्लाह की सजा को) रोक नहीं सकते, और उनके लिए अल्लाह के सिवा कोई सहायक नहीं होगा। उनकी यातना को दोगुना किया जाएगा। वे (सत्य को) सुनने में असमर्थ थे और उसे देख नहीं सकते थे।	اُولٰٓئِكَ لَمْ يَكُوْنُوْا مُعْجِزِيْنَ فِي الْاَرْضِ وَمَا كَانَ لَهُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ اَوْلِيَآءَ يُضٰعَفُ لَهُمُ الْعَذَابُ مَا كَانُوْا يَسْتَطِيْعُوْنَ السَّمْعَ وَمَا كَانُوْا يُبْصِرُوْنَ
21	वही लोग हैं जिन्होंने अपने आप को नुकसान पहुँचाया, और जो कुछ वे गढ़ते थे, वह उनसे गायब हो गया।	اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ
22	निश्चय ही वे आख़िरत में सबसे अधिक नुकसान उठाने वाले होंगे।	لَا جَرَمَ اَنَّهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ هُمُ الْاَخْسَرُوْنَ
23	निश्चय ही जो लोग ईमान लाए और नेक कार्य किए और अपने रब के सामने नम्र हुए, वे जन्नत के निवासी हैं, वे उसमें हमेशा रहेंगे।	اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَاَخْبَتُوْٓا اِلٰى رَبِّهِمْ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ
24	काफ़िर और मोमिन दो समूहों की मिसाल ऐसी है जैसे अंधा और बहरा व्यक्ति और वह जो देख सकता है और सुन सकता है। क्या दोनों समूह समान है? तो क्या तुम सबक नहीं लेते?	مَثَلُ الْفَرِيْقَيْنِ كَالْاَعْمٰى وَالْاَصَمِّ وَالْبَصِيْرِ وَالسَّمِيْعِ هَلْ يَسْتَوِيٰنِ مَثَلًا اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ
25	और निश्चय ही, हमने नूह को उनकी कौम के पास भेजा, (उन्होंने कहा), 'निश्चय ही, मैं तुम्हारे लिए एक स्पष्ट चेतावनी देने वाला हूँ'	وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا اِلٰى قَوْمِهٖٓ اِنِّيْ لَكُمْ نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ
26	ताकि तुम अल्लाह के सिवा किसी की पूजा न करो। मुझे डर है कि तुम पर एक बहुत दुखदायी दिन की यातना आएगी।	اَنْ لَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّا اللّٰهَ اِنِّيْٓ اَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ اَلِيْمٍ

27	तो उनकी कौम के काफ़िर सरदारों ने कहा, 'हम तुम्हें अपने जैसा ही एक इंसान देखते हैं, और हम नहीं देखते कि तुम्हें कोई और अनुसरण करता है सिवाय हमारे बीच के उन नीच लोगों के जो जल्दी विश्वास कर लेते हैं। हम तुममें हमसे कोई श्रेष्ठता नहीं देखते, बल्कि हम तुम्हें झूठा समझते हैं।'	فَقَالَ الْمَلَاُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ مَا نَرٰىكَ اِلَّا بَشَرًا مِّثْلَنَا وَمَا نَرٰىكَ اتَّبَعَكَ اِلَّا الَّذِيْنَ هُمْ اَرَاذِلُنَا بَادِيَ الرَّاْيِ وَمَا نَرٰى لَكُمْ عَلَيْنَا مِنْ فَضْلٍ بَلْ نَظُنُّكُمْ كٰذِبِيْنَ
28	उन्होंने (नूह ने) कहा, 'हे मेरी कौम! तुम्हारा क्या विचार है यदि मेरे पास मेरे रब से स्पष्ट प्रमाण हो, और मुझे उसकी ओर से रहमत दी गई हो, जो तुम्हें दिखाई नहीं देती। क्या हम तुम्हें उस स्वीकार करने के लिए मजबूर करेंगे, जबकि तुम उस पसंद नहीं करते?'	قَالَ يٰقَوْمِ اَرَءَيْتُمْ اِنْ كُنْتُ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّيْ وَاٰتٰنِيْ رَحْمَةً مِّنْ عِنْدِهٖ فَعُمِّيَتْ عَلَيْكُمْ اَنُلْزِمُكُمُوْهَا وَاَنْتُمْ لَهَا كٰرِهُوْنَ
29	और हे मेरी कौम! मैं तुमसे अपनी दावत के लिए कोई धन नहीं माँगता। मेरा पुरतफिल केवल अल्लाह से है और मैं उन लोगों को कभी नहीं निकालूँगा जो ईमान लाए हैं। निश्चय ही, वे अपने रब से मिलेंगे, लेकिन मैं तुम्हें एक अज्ञानी कौम के रूप में देखता हूँ	وَيٰقَوْمِ لَآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مَالًا اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ وَمَآ اَنَا بِطَارِدِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا اِنَّهُمْ مُّلٰقُوْا رَبِّهِمْ وَلٰكِنِّيْٓ اَرٰىكُمْ قَوْمًا تَجْهَلُوْنَ
30	और हे मेरी कौम! यदि मैं उनहें निकाल दूँ तो अल्लाह (की सजा) से मुझे कौन बचाएगा? क्या तुम सबक नहीं लेते?	وَيٰقَوْمِ مَنْ يَّنْصُرُنِيْ مِنَ اللّٰهِ اِنْ طَرَدْتُّهُمْ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ
31	और मैं तुमसे यह नहीं कहता कि मेरे पास अल्लाह के ख़ज़ाने और संपत्ति है, और न ही मैं ग़ैब (अदृश्य) को जानता हूँ और न ही कहता हूँ कि मैं कोई फ़रिश्ता हूँ और न ही मैं उन लोगों के बारे में कहता हूँ जिन्हें तुम्हारी नज़रों में नीच समझा जाता है, कि 'अल्लाह उन्हें कोई भलाई नहीं देगा।' अल्लाह बेहतर जानता है कि उनके भीतर क्या है। यदि ऐसा करूँ तो मैं निश्चय ही ज़ालिमों में से हो जाऊँगा।	وَلَآ اَقُوْلُ لَكُمْ عِنْدِيْ خَزَآئِنُ اللّٰهِ وَلَآ اَعْلَمُ الْغَيْبَ وَلَآ اَقُوْلُ اِنِّيْ مَلَكٌ وَّلَآ اَقُوْلُ لِلَّذِيْنَ تَزْدَرِيْٓ اَعْيُنُكُمْ لَنْ يُّؤْتِيَهُمُ اللّٰهُ خَيْرًا اَللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ اِنِّيْٓ اِذًا لَّمِنَ الظّٰلِمِيْنَ
32	वे बोले, 'हे नूह! तुमने हमसे बहस की और हमसे अपनी बहस को बहुत लंबा किया, तो हमारे पास वह यातना लाओ जिसका तुम हमें धमकी दे रहे हो, यदि तुम सच्चे हो।'	قَالُوْا يٰنُوْحُ قَدْ جَادَلْتَنَا فَاَكْثَرْتَ جِدَالَنَا فَاْتِنَا بِمَا تَعِدُنَآ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ
33	उन्होंने (नूह ने) जवाब दिया, 'केवल अल्लाह ही तुम पर यातना लाएगा यदि वह चाहेगा, और तुम बच नहीं सकोगे।'	قَالَ اِنَّمَا يَاْتِيْكُمْ بِهِ اللّٰهُ اِنْ شَاۤءَ وَمَآ اَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ
34	और मेरी सलाह तुम्हारे लिए लाभकारी नहीं होगी, भले ही मैं तुम्हें सलाह देना चाहूँ यदि अल्लाह तुम्हें भटकाना चाहता है। वह तुम्हारा रब है, और उसी की ओर तुम्हारी वापसी है।	وَلَا يَنْفَعُكُمْ نُصْحِيْٓ اِنْ اَرَدْتُّ اَنْ اَنْصَحَ لَكُمْ اِنْ كَانَ اللّٰهُ يُرِيْدُ اَنْ يُّغْوِيَكُمْ هُوَ رَبُّكُمْ وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ
35	वे कहते हैं, 'उसने (मुहम्मद ने) इसे (क़ुरआन) गढ़ लिया है।' कहो, 'यदि मैंने इसे गढ़ा है, तो मेरा अपराध मुझ पर है, और मैं तुम्हारे अपराधों से बरी हूँ।'	اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ قُلْ اِنِ افْتَرَيْتُهٗ فَعَلَيَّ اِجْرَامِيْ وَاَنَا بَرِيْٓءٌ مِّمَّا تُجْرِمُوْنَ
36	और नूह को वह्य हुआ कि 'तेरी कौम में से अब कोई और ईमान नहीं लाएगा, सिवाय उनके जो पहले ही ईमान ला चुके हैं, इसलिए उनके कार्यों से दुखी न हो।'	وَاُوْحِيَ اِلٰى نُوْحٍ اَنَّهٗ لَنْ يُّؤْمِنَ مِنْ قَوْمِكَ اِلَّا مَنْ قَدْ اٰمَنَ فَلَا تَبْتَىِٕسْ بِمَا كَانُوْا يَفْعَلُوْنَ

وَاصْنَعِ الْفُلْكَ بِاَعْيُنِنَا وَوَحْيِنَا وَلَا تُخَاطِبْنِيْ فِى الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا اِنَّهُمْ مُّغْرَقُوْنَ	और हमारी निगरानी म॑और हमारी वह्य क॑अनुसार एक जहाज़ बनाओ, और उन लोगों क॑लिए सिफ़ारिश न करो जो ज़ालिम हैं, क्योंकि व॑डूब जाएँगे।	**37**
وَيَصْنَعُ الْفُلْكَ وَكُلَّمَا مَرَّ عَلَيْهِ مَلَاٌ مِّنْ قَوْمِهٖ سَخِرُوْا مِنْهُ قَالَ اِنْ تَسْخَرُوْا مِنَّا فَاِنَّا نَسْخَرُ مِنْكُمْ كَمَا تَسْخَرُوْنَ	और उनहोंन॑(नूह न॑) जहाज़ बनाना शुरू कयिा। हर बार जब उनकी कौम क॑सरदार उनक॑पास स॑गुज़रत, व॑उनका मज़ाक उड़ात॑। उनहोंन॑(नूह न॑) कहा, 'यदि तमु हमारा मज़ाक उड़ात॑हो, तो हम भी तमुहारा मज़ाक उड़ाएँगे जसै॑तमु मज़ाक उड़ात॑हो।'	**38**
فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ مَنْ يَّأْتِيْهِ عَذَابٌ يُّخْزِيْهِ وَيَحِلُّ عَلَيْهِ عَذَابٌ مُّقِيْمٌ	तो तमु जलद ही जान लोग॑क॑कसि पर अपमानजनक यातना आएगी और कसि पर स्थायी यातना आएगी।	**39**
حَتّٰٓى اِذَا جَاۤءَ اَمْرُنَا وَفَارَ التَّنُّوْرُ قُلْنَا احْمِلْ فِيْهَا مِنْ كُلٍّ زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ وَاَهْلَكَ اِلَّا مَنْ سَبَقَ عَلَيْهِ الْقَوْلُ وَمَنْ اٰمَنَ وَمَآ اٰمَنَ مَعَهٗٓ اِلَّا قَلِيْلٌ	यहा॑तक क॑जब हमारा आदेश आया और तनूर (चूलहा) न॑पानी उगलना शुरू कयिा, हमन॑कहा, 'इसम॑(जहाज़ म॑) प्रत्यके (जानवर) की एक जोड़ी (नर और मादा) और अपन॑परविार को लादो, सविाय उसक॑जसिक॑बार॑म॑पहल॑स॑फ़सैला हो चुका ह॑, और (उन) लोगों को भी जो ईमान लाए ह॑' लकेनि नूह क॑साथ ईमान लान॑वाल॑बहुत कम थ॑।	**40**
وَقَالَ ارْكَبُوْا فِيْهَا بِسْمِ اللّٰهِ مَجْرٖىهَا وَمُرْسٰىهَا اِنَّ رَبِّيْ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ	और उनहोंन॑कहा, 'तमु सब इसम॑(जहाज़ म॑) चढ़ जाओ, अल्लाह क॑नाम क॑साथ, इसक॑चलन॑और रुकन॑क॑समय। नश्चिय ही मरेा रब बहुत क्षमाशील, बहुत दयाल॑ह॑'	**41**
وَهِيَ تَجْرِيْ بِهِمْ فِيْ مَوْجٍ كَالْجِبَالِ وَنَادٰى نُوْحُ ابْنَهٗ وَكَانَ فِيْ مَعْزِلٍ يّٰبُنَيَّ ارْكَبْ مَّعَنَا وَلَا تَكُنْ مَّعَ الْكٰفِرِيْنَ	और वह जहाज़ उनह॑पहाड़ों जसै॑लहरों म॑ल॑गया। और नूह न॑ अपन॑बेटे को पुकारा, जब वह एक दूरस्थ स्थान पर था, 'ह॑मरे॑ बटे॑! हमार॑साथ (जहाज़ म॑) चढ़ जा और काफ़िरों क॑साथ न रह॑।'	**42**
قَالَ سَاٰوِيْٓ اِلٰى جَبَلٍ يَّعْصِمُنِيْ مِنَ الْمَاۤءِ قَالَ لَا عَاصِمَ الْيَوْمَ مِنْ اَمْرِ اللّٰهِ اِلَّا مَنْ رَّحِمَ وَحَالَ بَيْنَهُمَا الْمَوْجُ فَكَانَ مِنَ الْمُغْرَقِيْنَ	उसन॑(बटे॑न॑) जवाब दयिा, 'म॑कसिी पहाड़ पर शरण लूँगा जो मुझ॑पानी स॑बचाएगा!' (नूह न॑) कहा, 'आज अल्लाह की सजा स॑कोई नहीं बचा सकता सविाय उसक॑जो बहुत दयाल॑ह॑' और लहर॑उनक॑बीच आ गई; तो वह (बटेा) डूबन॑वालों म॑शामलि हो गया।	**43**
وَقِيْلَ يٰٓاَرْضُ ابْلَعِيْ مَاۤءَكِ وَيٰسَمَاۤءُ اَقْلِعِيْ وَغِيْضَ الْمَاۤءُ وَقُضِيَ الْاَمْرُ وَاسْتَوَتْ عَلَى الْجُوْدِيِّ وَقِيْلَ بُعْدًا لِّلْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ	और कहा गया, 'ह॑धरती! अपना पानी नगिल ल॑और ह॑आकाश (बारशि)! रुक जा।' और पानी कम हो गया, और आदेश पूरा हुआ और जहाज़ जूदी पहाड़ पर रुक गया, और कहा गया, 'ज़ालिम लोग नष्ट हो जाएँ'	**44**
وَنَادٰى نُوْحٌ رَّبَّهٗ فَقَالَ رَبِّ اِنَّ ابْنِيْ مِنْ اَهْلِيْ وَاِنَّ وَعْدَكَ الْحَقُّ وَاَنْتَ اَحْكَمُ الْحٰكِمِيْنَ	और नूह न॑अपन॑रब को पुकारा और कहा, 'ह॑मरे॑रब, नश्चिय ही मरेा बटेा मरे॑परविार म॑स॑ह॑, और तरेा वादा नश्चिय ही सत्य ह॑। तू सबस॑अच्छा न्यायाधीश ह॑'	**45**
قَالَ يٰنُوْحُ اِنَّهٗ لَيْسَ مِنْ اَهْلِكَ اِنَّهٗ عَمَلٌ غَيْرُ صَالِحٍ فَلَا تَسْـَٔلْنِ مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ اِنِّيْٓ اَعِظُكَ اَنْ تَكُوْنَ مِنَ الْجٰهِلِيْنَ	उसन॑(अल्लाह न॑) कहा, 'ह॑नूह! नश्चिय ही वह तरेा परविार नहीं ह॑, क्योंकि उसका करम बहुत बुरा था, इसलिए मुझस॑वह चीज़ न माँग जसिका तुझ॑(वास्तवकिता का) ज़्ञान नहीं ह॑। म॑तुझ॑सलाह दतेा हूँकि तू अज्ञानयिों म॑शामलि न हो।'	**46**

47	उनहोंने (नूह ने) कहा, 'हे मेरे रब, मैं तेरी शरण माँगता हूँकि मैं तुझसे वह माँगूजिसका मुझे (वास्तविकता का) ज्ञान नहीं हैं यदि तू मुझे क्षमा न करेगा, और मुझ पर दया न करेगा, तो मैं निश्चय ही नुकसान उठानेवालों में से हो जाऊँगा।'	قَالَ رَبِّ اِنِّيْٓ اَعُوْذُ بِكَ اَنْ اَسْـَٔلَكَ مَا لَيْسَ لِيْ بِهٖ عِلْمٌ وَاِلَّا تَغْفِرْ لِيْ وَتَرْحَمْنِيْٓ اَكُنْ مِّنَ الْخٰسِرِيْنَ
48	कहा गया, 'हे नूह! हमारी ओर से शांति और आशीर्वाद के साथ उतर, तुझ पर और उन सभी उम्मतों (मोमिनों) पर जो तेरे साथ हैं और कुछ उम्मतें ऐसी हैं जिन्हें हम (दुनिया में) सुख देंगे, फिर उन्हें हमारी दुखदायी यातना का सामना करना पड़ेगा।'	قِيْلَ يٰنُوْحُ اهْبِطْ بِسَلٰمٍ مِّنَّا وَبَرَكٰتٍ عَلَيْكَ وَعَلٰٓى اُمَمٍ مِّمَّنْ مَّعَكَ وَاُمَمٌ سَنُمَتِّعُهُمْ ثُمَّ يَمَسُّهُمْ مِّنَّا عَذَابٌ اَلِيْمٌ
49	ये कुछ खबरें हैं जिन्हें हम तुझ पर वह्य करते हैं, जिन्हें न तू पहले जानता था और न तेरी कौम। तो धैर्य रख, निश्चय ही अच्छा परिणाम तक़्वा करनेवालों के लिए है	تِلْكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الْغَيْبِ نُوْحِيْهَآ اِلَيْكَ مَا كُنْتَ تَعْلَمُهَآ اَنْتَ وَلَا قَوْمُكَ مِنْ قَبْلِ هٰذَا فَاصْبِرْ اِنَّ الْعَاقِبَةَ لِلْمُتَّقِيْنَ
50	और आद की कौम के पास उनके भाई हूद को (भेजा गया)। उनहोंने कहा, 'हे मेरी कौम! अल्लाह की पूजा करो, तुम्हारे लिए उसके सिवा कोई ईश्वर नहीं है तुम कवेल झूठ गढ़नेवाले हो।'	وَاِلٰى عَادٍ اَخَاهُمْ هُوْدًا قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا مُفْتَرُوْنَ
51	हे मेरी कौम! मैं तुमसे इस (दावत) के लिए कोई प्रतिफल नहीं माँगता। मेरा प्रतिफल कवेल उससे है जिसने मुझे बनाया। तो क्या तुम समझ नहीं रखते?	يٰقَوْمِ لَآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْرًا اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلَى الَّذِيْ فَطَرَنِيْ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ
52	और हे मेरी कौम! अपने रब से क्षमा माँगो और उसकी ओर तौबा करो, निश्चय ही वह तुम पर बहुत तेज़ बारिश बरसाएगा, और वह तुम्हारी शक्ति को और बढ़ाएगा, और पापी बनकर मुँह न फेरो।	وَيٰقَوْمِ اسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوْبُوْٓا اِلَيْهِ يُرْسِلِ السَّمَآءَ عَلَيْكُمْ مِّدْرَارًا وَّيَزِدْكُمْ قُوَّةً اِلٰى قُوَّتِكُمْ وَلَا تَتَوَلَّوْا مُجْرِمِيْنَ
53	उनहोंने (आद ने) कहा, 'हे हूद! तू हमारे पास कोई सपष्ट प्रमाण नहीं लाया, और हम तेरे कहने पर अपने देवताओं को नहीं छोड़ेंगे और हम तुझ पर विश्वास नहीं करेंगे।'	قَالُوْا يٰهُوْدُ مَا جِئْتَنَا بِبَيِّنَةٍ وَّمَا نَحْنُ بِتَارِكِيْٓ اٰلِهَتِنَا عَنْ قَوْلِكَ وَمَا نَحْنُ لَكَ بِمُؤْمِنِيْنَ
54	हम कवेल यह कहते हैं कि हमारे कुछ देवताओं ने तुझ पर पागलपन की बीमारी डाल दी है' उनहोंने (हूद ने) जवाब दिया, 'मैं अल्लाह को साक्षी मानता हूँऔर तुम गवाह रहो कि मैं उससे बरी हूँजिसे तुम (अल्लाह के साथ) साझी ठहराते हो।'	اِنْ نَّقُوْلُ اِلَّا اعْتَرٰىكَ بَعْضُ اٰلِهَتِنَا بِسُوْٓءٍ قَالَ اِنِّيْٓ اُشْهِدُ اللّٰهَ وَاشْهَدُوْٓا اَنِّيْ بَرِيْٓءٌ مِّمَّا تُشْرِكُوْنَ
55	उसके सिवा (जो तुम साझी ठहराते हो), इसलिए मेरे खिलाफ़ अपनी सारी चाल चलो और मुझे कोई मोहलत न दो।	مِنْ دُوْنِهٖ فَكِيْدُوْنِيْ جَمِيْعًا ثُمَّ لَا تُنْظِرُوْنِ
56	निश्चय ही मैं अल्लाह पर भरोसा करता हूँ जो मेरा रब और तुम्हारा रब है कोई भी जीवित प्राणी ऐसा नहीं है जिसका माथा (नियंत्रण) उसके हाथ में न हो। निश्चय ही मेरा रब सीधे रास्ते पर है (न्याय करता है)।	اِنِّيْ تَوَكَّلْتُ عَلَى اللّٰهِ رَبِّيْ وَرَبِّكُمْ مَا مِنْ دَآبَّةٍ اِلَّا هُوَ اٰخِذٌ بِنَاصِيَتِهَا اِنَّ رَبِّيْ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ
57	तो यदि तुम मुँह फेर लो, तो मैंने तुम्हें वह संदेश पहुँचा दिया जिसके लिए मुझे तुम्हारे पास रसूल बनाकर भेजा गया था। और मेरा रब तुम्हें किसी दूसरी कौम से बदल देगा, और तुम उसे कोई नुकसान नहीं पहुँचा सकोगे। निश्चय ही मेरा रब हर चीज़ का संरक्षक है	فَاِنْ تَوَلَّوْا فَقَدْ اَبْلَغْتُكُمْ مَّآ اُرْسِلْتُ بِهٖٓ اِلَيْكُمْ وَيَسْتَخْلِفُ رَبِّيْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ وَلَا تَضُرُّوْنَهٗ شَيْـًٔا اِنَّ رَبِّيْ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ حَفِيْظٌ

58	और जब हमारी सजा आई, तो हमन`हद्द और उनक`साथ ईमान लान`वालों` को अपनी रहमत स` बचा लयिा। हमन` उनह` (आख़रित म) कठोर यातना स` भी बचा लयिा।	وَلَمَّا جَاءَ اَمْرُنَا نَجَّيْنَا هُوْدًا وَّالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَه بِرَحْمَةٍ مِّنَّا وَنَجَّيْنٰهُمْ مِّنْ عَذَابٍ غَلِيْظٍ
59	और यही (कहानी) आद की कौम की ह`जनिहोंन`अपन`रब की नशिानयिों`का इनक़ार कयिा। उनहोंन`उसक`रसूलों`की अवज्ञा की और हर अतय़ाचारी, वदि्रोही शासक क`आदेश का पालन कयिा।	وَتِلْكَ عَادٌ جَحَدُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ وَعَصَوْا رُسُلَه وَاتَّبَعُوْٓا اَمْرَ كُلِّ جَبَّارٍ عَنِيْدٍ
60	और उनह`इस दनुयिा म`और क़यिामत क`दनि भी लानत का पीछा करना पड़ा। सावधान रहो, आद की कौम न`अपन`रब का इनक़ार कयिा। सावधान रहो, हद्द की कौम आद नषट हो गई।	وَاُتْبِعُوْا فِيْ هٰذِهِ الدُّنْيَا لَعْنَةً وَّيَوْمَ الْقِيٰمَةِ اَلَآ اِنَّ عَادًا كَفَرُوْا رَبَّهُمْ اَلَا بُعْدًا لِّعَادٍ قَوْمِ هُوْدٍ
61	और समद्द की कौम क`पास उनक`भाई सालहे को (भजेा गया)। उनहोंन`कहा, 'ह`मरेी कौम! अलल़ाह की पज़ूा करो, तमु्हार`लयि उसक`सवि कोई ईशव़र नहीं ह। उसन`तमु्ह`धरती (मटिट़ी) स` बनाया और तमु्ह`उसका उतत़राधकिारी बनाया, इसलयि उसस` क़षमा माँगो, फरि उसकी ओर तौबा करो। नशिच़य ही मरेा रब बहत्त नकिट ह`(अपनी रहमत स) और (ह`बों की दआु) कबलू करन`वाला ह।'	وَاِلٰى ثَمُوْدَ اَخَاهُمْ صٰلِحًا قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُه هُوَ اَنْشَاَكُمْ مِّنَ الْاَرْضِ وَاسْتَعْمَرَكُمْ فِيْهَا فَاسْتَغْفِرُوْهُ ثُمَّ تُوْبُوْٓا اِلَيْهِ اِنَّ رَبِّيْ قَرِيْبٌ مُّجِيْبٌ
62	उनहोंन`(समद्द न) कहा, 'ह`सालहे! इसस`पहल`तमु हमार`बीच एक आशा क`रूप म`थ, क्या तमु हम`उसकी पज़ूा करन`स` रोकत`हो जसिकी हमार`पूरवज पज़ूा करत`थ? नशिच़य ही, हम उस (धरम्) क`बार`म`सदंहे और बचेनैी म`ह`जसिकी ओर तमु हम`बलुात`हो।'	قَالُوْا يٰصٰلِحُ قَدْ كُنْتَ فِيْنَا مَرْجُوًّا قَبْلَ هٰذَآ اَتَنْهٰنَآ اَنْ نَّعْبُدَ مَا يَعْبُدُ اٰبَاؤُنَا وَاِنَّنَا لَفِيْ شَكٍّ مِّمَّا تَدْعُوْنَآ اِلَيْهِ مُرِيْبٍ
63	उनहोंन`(सालहे न) कहा, 'ह`मरेी कौम! मझु`बताओ, यदि मरे`पास मरे`रब स`सपषट पर्माण हो और उसन`मझु`अपनी रहमत (नबव्वत) दी हो, तो यदि म`उसकी अवज्ञा करूँतो अलल़ाह (की सजा) स` मझु` कौन बचाएगा? तमु कवेल मरेा नक़ुसान बढ़ाओगे।'	قَالَ يٰقَوْمِ اَرَءَيْتُمْ اِنْ كُنْتُ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّيْ وَاٰتٰنِيْ مِنْهُ رَحْمَةً فَمَنْ يَّنْصُرُنِيْ مِنَ اللّٰهِ اِنْ عَصَيْتُه فَمَا تَزِيْدُوْنَنِيْ غَيْرَ تَخْسِيْرٍ
64	और ह`मरेी कौम! यह अलल़ाह की ऊँटनी ह,ै तमु्हार`लयि एक चमतक़ार, इसलयि इस`अलल़ाह की धरती पर ख़ान`दो, और इस`कसिी भी तरह की हान`न पहचुँाओ, नहीं तो तमु पर जलद़ ही (सजा) आ जाएगी।'	وَيٰقَوْمِ هٰذِه نَاقَةُ اللّٰهِ لَكُمْ اٰيَةً فَذَرُوْهَا تَاْكُلْ فِيْٓ اَرْضِ اللّٰهِ وَلَا تَمَسُّوْهَا بِسُوْٓءٍ فَيَاْخُذَكُمْ عَذَابٌ قَرِيْبٌ
65	फरि उनहोंन`उस ऊँटनी को मार डाला, तो उनहोंन`(सालहे न) कहा, 'अपन`घरों`म`तीन दनि तक सख़ भोग लो। यह एक ऐसा वादा ह`जसिे झठुलाया नहीं`जा सकता।'	فَعَقَرُوْهَا فَقَالَ تَمَتَّعُوْا فِيْ دَارِكُمْ ثَلٰثَةَ اَيَّامٍ ذٰلِكَ وَعْدٌ غَيْرُ مَكْذُوْبٍ
66	तो जब हमारा आदेश आया, हमन`सालहे और उनक`साथ ईमान लान`वालों` को अपनी रहमत स` बचा लयिा और उस दनि की अपमानजनक सजा स` (बचाया)। नशिच़य ही, तरेा रब बहत्त शकत़शिाली, बहत्त पर्बल ह।ै	فَلَمَّا جَاءَ اَمْرُنَا نَجَّيْنَا صٰلِحًا وَّالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَه بِرَحْمَةٍ مِّنَّا وَمِنْ خِزْيِ يَوْمِئِذٍ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ الْقَوِيُّ الْعَزِيْزُ
67	और ज़ालमि लोगों`पर एक गरज़न वाली आवाज़ आई, जसिस`वे` अपन`घरों`म`मतृ पड़`रह गए।	وَاَخَذَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوا الصَّيْحَةُ فَاَصْبَحُوْا فِيْ دِيَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ

كَاَنْ لَّمْ يَغْنَوْا فِيْهَا ۗ اَلَآ اِنَّ ثَمُوْدَا كَفَرُوْا رَبَّهُمْ ۗ اَلَا بُعْدًا لِّثَمُوْدَ	मानो व॑वहा॑कभी रह॑ही न हो॑। सावधान रहो, समद्ध न॑अपन॑रेब का इनक़ार कयि। सावधान रहो, समद्ध नषट॒ हो गई।	**68**
وَلَقَدْ جَاۤءَتْ رُسُلُنَاۤ اِبْرٰهِيْمَ بِالْبُشْرٰى قَالُوْا سَلٰمًا ۗ قَالَ سَلٰمٌ فَمَا لَبِثَ اَنْ جَاۤءَ بِعِجْلٍ حَنِيْذٍ	और हमार॑दत॒ (फ़रिशि॒तो॑) न॑इब्राहीम क॑पास शभ॒ समाचार लकेर आए, उनहो॑न॑कहा, 'शा॑ति॑।' उनहो॑न॑(इब्राहीम न॑) जवाब दयि, 'शा॑ति॑ (तम॒ पर)।' फरि जलद॒ ही इब्राहीम न॑भना हआ॒ बछड़ा॒ पशे॑ कयि।	**69**
فَلَمَّا رَاٰۤ اَيْدِيَهُمْ لَا تَصِلُ اِلَيْهِ نَكِرَهُمْ وَاَوْجَسَ مِنْهُمْ خِيْفَةً ۗ قَالُوْا لَا تَخَفْ اِنَّاۤ اُرْسِلْنَاۤ اِلٰى قَوْمِ لُوْطٍ	फरि जब उनहो॑न॑दखेा क॑उनक॑हाथ उसकी ओर नहीं बढ़॒ रह॒, तो व॑उनस॑संदहे करन॑लग॒, और उनह॒ं डर लगा। उनहो॑न॑ (फ़रिशि॒तो॑न॑) कहा, 'डरो मत, हम लत॒ की कौम क॑पास भजे॑गए हैं।'	**70**
وَامْرَاَتُهٗ قَاۤىِٕمَةٌ فَضَحِكَتْ فَبَشَّرْنٰهَا بِاِسْحٰقَ ۙ وَمِنْ وَّرَاۤءِ اِسْحٰقَ يَعْقُوْبَ	और उनकी पतन॒ी ख़ड़ी॒ थी, फरि वह मस॒क़रा॒ई। तो हमन॑उनह॒ं इसहाक़॒ क॑जनम॒ की और इसहाक़॒ क॑बाद याकब॒ की शभ॒ सचू॒ना दी।	**71**
قَالَتْ يٰوَيْلَتٰٓى ءَاَلِدُ وَاَنَا عَجُوْزٌ وَّهٰذَا بَعْلِيْ شَيْخًا ۗ اِنَّ هٰذَا لَشَيْءٌ عَجِيْبٌ	उसन॑(पतन॒ी न॑) कहा, 'अफ़सोस, कय॒ म॑बचच॒ा जनगूँ॒ी जबकि म॑बढ़॒ी॒ ह॒ूँऔर मरे॒ यह पत॑बहत॒ बढ़॒ा ह?॒ यह नशि॒चय ही बहत॒ आशच॒रय॒जनक बात ह॑।'	**72**
قَالُوْۤا اَتَعْجَبِيْنَ مِنْ اَمْرِ اللّٰهِ ۖ رَحْمَتُ اللّٰهِ وَبَرَكٰتُهٗ عَلَيْكُمْ اَهْلَ الْبَيْتِ ۗ اِنَّهٗ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ	उनहो॑न॑(फ़रिशि॒तो॑न॑) कहा, 'कय॒ तम॒ अलल॒ाह क॑आदशे॒ पर आशच॒रय॒ करती हो? यह अलल॒ाह की रहमत और आशीरवाद ह॑ै जो तम॒ पर, ह॑ अहलबेतै, बरसाया गया ह॑ै नशि॒चय ही अलल॒ाह बहत॒ पर॒शंसनीय, बहत॒ दयाल॒ ह॑ै।'	**73**
فَلَمَّا ذَهَبَ عَنْ اِبْرٰهِيْمَ الرَّوْعُ وَجَاۤءَتْهُ الْبُشْرٰى يُجَادِلُنَا فِيْ قَوْمِ لُوْطٍ	तो जब इब्राहीम स॑डर दूर॒ हो गया और शभ॒ समाचार उनक॑ पास आया, तो उनहो॑न॑लत॒ की कौम क॑बार॑मे॑हमार॑(फ़रिशि॒तो॑) स॑बहस शर॒ू की।	**74**
اِنَّ اِبْرٰهِيْمَ لَحَلِيْمٌ اَوَّاهٌ مُّنِيْبٌ	इब्राहीम नशि॒चय ही बहत॒ सहनशील, कोमल हद॒य और (अलल॒ाह की ओर) बार-बार लौटन॑वाला था।	**75**
يٰٓاِبْرٰهِيْمُ اَعْرِضْ عَنْ هٰذَا ۚ اِنَّهٗ قَدْ جَاۤءَ اَمْرُ رَبِّكَ ۚ وَاِنَّهُمْ اٰتِيْهِمْ عَذَابٌ غَيْرُ مَرْدُوْدٍ	(कहा गया), 'ह॑इब्राहीम! इस (चरच॒ा) को छोड़॒ दो, नशि॒चय ही तर॑रेब का आदशे॒ आ चक॒ा ह॑ै और उनह॒ं वह यातना मलिगी॑ जसि॑टाला नहीं॑जा सकता।'	**76**
وَلَمَّا جَاۤءَتْ رُسُلُنَا لُوْطًا سِيْٓءَ بِهِمْ وَضَاقَ بِهِمْ ذَرْعًا وَّقَالَ هٰذَا يَوْمٌ عَصِيْبٌ	और जब हमार॑दत॒ (फ़रिशि॒त॑) लत॒ क॑पास आए, तो वह उनकी (आकसम॒कि उपसथ॒ति॑) क॑कारण चतिति॑ हो गया और उसका सीना तंग हो गया। उनहो॑न॑(लत॒ न॑) कहा, 'यह बहत॒ कठनि॑ दनि॑ ह॑ै।'	**77**
وَجَاۤءَهٗ قَوْمُهٗ يُهْرَعُوْنَ اِلَيْهِ ۗ وَمِنْ قَبْلُ كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ السَّيِّاٰتِ ۗ قَالَ يٰقَوْمِ هٰٓؤُلَاۤءِ بَنَاتِيْ هُنَّ اَطْهَرُ لَكُمْ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَلَا تُخْزُوْنِ فِيْ ضَيْفِيْ ۗ اَلَيْسَ مِنْكُمْ رَجُلٌ رَّشِيْدٌ	और उनकी कौम उनक॑पास जलद॒ी स॑आ गई। और व॑पहल॑से॑ ही घण॒ति कारय॒ करत॑थी॑ लत॒ न॑कहा, 'ह॑मरी कौम! य॑मरी बटेयिा॑ँ(शहर की लड़कयिा॑ँ) ह॑ै, व॑तमह॒ार॑लएि अधकि पवति॒र ह॑ै, इसलएि अलल॒ाह स॑डरो और मरे॑महेमानों॑ क॑सामन॑मझ॒े॑ अपमानति॑ न करो। कय॒ तम॒म॑कोई समझदार वय॒कत॒ि नहीं॑ ह?॒'	**78**

قَالُوْا لَقَدْ عَلِمْتَ مَا لَنَا فِيْ بَنٰتِكَ مِنْ حَقٍّ وَاِنَّكَ لَتَعْلَمُ مَا نُرِيْدُ	उनहोंने जवाब दिया, 'तुम निश्चय ही जानते हो कि हमें तुम्हारी बेटियों के प्रति कोई इच्छा (कामुकता) नहीं है; और तुम निश्चित रूप से जानते हो कि हम क्या चाहते हैं'	**79**
قَالَ لَوْ اَنَّ لِيْ بِكُمْ قُوَّةً اَوْ اٰوِيْٓ اِلٰى رُكْنٍ شَدِيْدٍ	उनहोंने (लूत ने) कहा, 'काश मेरे पास तुम्हारा विरोध करने की शक्ति होती या मैं किसी मजबूत परिवार की शरण ले सकता (तो मैं ऐसा करता)।'	**80**
قَالُوْا يٰلُوْطُ اِنَّا رُسُلُ رَبِّكَ لَنْ يَّصِلُوْٓا اِلَيْكَ فَاَسْرِ بِاَهْلِكَ بِقِطْعٍ مِّنَ الَّيْلِ وَلَا يَلْتَفِتْ مِنْكُمْ اَحَدٌ اِلَّا امْرَاَتَكَ اِنَّهٗ مُصِيْبُهَا مَآ اَصَابَهُمْ اِنَّ مَوْعِدَهُمُ الصُّبْحُ اَلَيْسَ الصُّبْحُ بِقَرِيْبٍ	उनहोंने (फ़रिश्तों ने) कहा, 'हे लूत! हम तेरे रब के दूत हैं, वे तुझे नहीं छू सकेंगे, इसलिए अपनी पत्नी को छोड़कर अपने परिवार के साथ रात के अंत में चले जाओ और तुममें से कोई पीछे मुड़कर न देखे। निश्चय ही, उसे (पत्नी को) वही (सजा) भुगतनी पड़ेगी जो उन्हें भुगतनी पड़ेगी। उनकी सजा का समय सुबह है। क्या सुबह करीब नहीं है?'	**81**
فَلَمَّا جَاۤءَ اَمْرُنَا جَعَلْنَا عَالِيَهَا سَافِلَهَا وَاَمْطَرْنَا عَلَيْهَا حِجَارَةً مِّنْ سِجِّيْلٍ مَّنْضُوْدٍ	तो जब हमारा आदेश आया, हमने लूत की कौम के शहर को उलट-पुलट कर दिया, और हमने उन पर जली हुई मिट्टी के पत्थरों की वर्षा की।	**82**
مُسَوَّمَةً عِنْدَ رَبِّكَ وَمَا هِيَ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ بِبَعِيْدٍ	जिन्हें तुम्हारे रब ने चिह्नित किया था। और वह सजा ज़ालिमों से कभी दूर नहीं है।	**83**
وَاِلٰى مَدْيَنَ اَخَاهُمْ شُعَيْبًا قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ وَلَا تَنْقُصُوا الْمِكْيَالَ وَالْمِيْزَانَ اِنِّيْٓ اَرٰىكُمْ بِخَيْرٍ وَّاِنِّيْٓ اَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ مُّحِيْطٍ	और मादयन (के लोगों) के पास उनके भाई शुऐब को (भेजा गया)। उनहोंने कहा, 'हे मेरी कौम! अल्लाह की पूजा करो, तुम्हारे लिए उसके सिवा कोई ईश्वर नहीं है और नाप और तौल में कमी न करो। मैं तुम्हें समृद्ध अवस्था में देखता हूँ और मुझे डर है कि तुम पर वह दिन आएगा जो सब कुछ नष्ट कर देगा (क़ियामत)।'	**84**
وَيٰقَوْمِ اَوْفُوا الْمِكْيَالَ وَالْمِيْزَانَ بِالْقِسْطِ وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ اَشْيَاۤءَهُمْ وَلَا تَعْثَوْا فِى الْاَرْضِ مُفْسِدِيْنَ	और हे मेरी कौम! नाप और तौल को न्याय के साथ पूरा करो, और लोगों के हकों में कमी न करो और धरती पर बिगाड़ फैलाकर शरारत न करो।	**85**
بَقِيَّتُ اللّٰهِ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ وَمَآ اَنَا عَلَيْكُمْ بِحَفِيْظٍ	अल्लाह का बचा हुआ (हलाल) तुम्हारे लिए बेहतर है यदि तुम ईमान वाले हो। और मैं तुम्हारा रखवाला नहीं हूँ	**86**
قَالُوْا يٰشُعَيْبُ اَصَلٰوتُكَ تَاْمُرُكَ اَنْ نَّتْرُكَ مَا يَعْبُدُ اٰبَاۤؤُنَآ اَوْ اَنْ نَّفْعَلَ فِيْٓ اَمْوَالِنَا مَا نَشٰٓؤُا اِنَّكَ لَاَنْتَ الْحَلِيْمُ الرَّشِيْدُ	उनहोंने कहा, 'हे शुऐब! क्या तेरी धर्म हमें आदेश देता है कि हम उसकी पूजा छोड़ दें जिसकी हमारे पूर्वज पूजा करते थे या हम अपनी संपत्ति का प्रबंधन अपनी इच्छा के अनुसार न करें? निश्चय ही तू बहुत सहनशील और समझदार व्यक्ति है'	**87**

88	उन्होंने (शुऐब ने) कहा, 'ह मेरी कौम! मुझे बताओ, यदि मेरे पास मेरे रब से सुपष्ट प्रमाण हो और उसने मुझे अपनी ओर से अच्छी जीविका दी हो (तो क्या मुझे उसके आदेश की अवज्ञा करनी चाहिए)? मैं तुम्हें उस चीज़ का उल्लंघन करने का इरादा नहीं रखता जिसमें तुम्हें मना करता हूँ मैं केवल सुधार लाना चाहता हूँजितना मेरी सामर्थ्य है और मेरा मार्गदर्शन केवल अल्लाह से है उसी पर मैं भरोसा करता हूँऔर उसी की ओर मैं लौटता हूँ'	قَالَ يٰقَوْمِ اَرَءَيْتُمْ اِنْ كُنْتُ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّيْ وَرَزَقَنِيْ مِنْهُ رِزْقًا حَسَنًا وَّمَآ اُرِيْدُ اَنْ اُخَالِفَكُمْ اِلٰى مَآ اَنْهٰىكُمْ عَنْهُ اِنْ اُرِيْدُ اِلَّا الْاِصْلَاحَ مَا اسْتَطَعْتُ وَمَا تَوْفِيْقِيْٓ اِلَّا بِاللّٰهِ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَاِلَيْهِ اُنِيْبُ
89	और ह मेरी कौम! मेरे और तुम्हारे बीच का विरोध तुम्हें पाप करने के लिए प्रेरित न करे, जिससे तुम पर वही सजा आए जो नूह की कौम, हूद की कौम या सालेह की कौम पर आई, और लूत की कौम तुमसे बहुत दूर नहीं है	وَيٰقَوْمِ لَا يَجْرِمَنَّكُمْ شِقَاقِيْٓ اَنْ يُّصِيْبَكُمْ مِّثْلُ مَآ اَصَابَ قَوْمَ نُوْحٍ اَوْ قَوْمَ هُوْدٍ اَوْ قَوْمَ صٰلِحٍ وَمَا قَوْمُ لُوْطٍ مِّنْكُمْ بِبَعِيْدٍ
90	और अपने रब से क्षमा माँगो, फिर उसकी ओर तौबा करो। निश्चय ही मेरा रब बहुत दयालु, बहुत प्रेम करने वाला है	وَاسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوْبُوْٓا اِلَيْهِ اِنَّ رَبِّيْ رَحِيْمٌ وَّدُوْدٌ
91	उन्होंने कहा, 'ह शुऐब! हम तेरी बातों को ज़्यादा समझ नहीं पाते, और वास्तव में हम तुझे अपने बीच कमज़ोर देखते हैं यदि तेरे परिवार का कारण न होता, तो हम तुझे पत्थर मारकर मार डालते, और तू हमारे बीच कोई प्रभावशाली व्यक्ति नहीं है'	قَالُوْا يٰشُعَيْبُ مَا نَفْقَهُ كَثِيْرًا مِّمَّا تَقُوْلُ وَاِنَّا لَنَرٰىكَ فِيْنَا ضَعِيْفًا وَلَوْلَا رَهْطُكَ لَرَجَمْنٰكَ وَمَآ اَنْتَ عَلَيْنَا بِعَزِيْزٍ
92	उन्होंने (शुऐब ने) जवाब दिया, 'ह मेरी कौम! क्या मेरे परिवार को तुम अल्लाह से अधिक सम्मानित मानते हो, बल्कि उसे तुमने पीछे (नज़रअंदाज) कर दिया? जान लो, मेरे रब का ज्ञान उस हर चीज़ को घेरे लेता है जो तुम करते हो।'	قَالَ يٰقَوْمِ اَرَهْطِيْٓ اَعَزُّ عَلَيْكُمْ مِّنَ اللّٰهِ وَاتَّخَذْتُمُوْهُ وَرَاءَكُمْ ظِهْرِيًّا اِنَّ رَبِّيْ بِمَا تَعْمَلُوْنَ مُحِيْطٌ
93	और ह मेरी कौम! अपनी सामर्थ्य के अनुसार काम करो, निश्चय ही मैं भी (अपना काम) करता हूँ तुम जल्द ही जान लोगे कि किस पर अपमानजनक सजा आएगी और कौन झूठा है और इंतज़ार करो! मैं भी तुम्हारे साथ इंतज़ार करने वालों में हूँ'	وَيٰقَوْمِ اعْمَلُوْا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ اِنِّيْ عَامِلٌ سَوْفَ تَعْلَمُوْنَ مَنْ يَّأْتِيْهِ عَذَابٌ يُّخْزِيْهِ وَمَنْ هُوَ كَاذِبٌ وَارْتَقِبُوْٓا اِنِّيْ مَعَكُمْ رَقِيْبٌ
94	तो जब हमारा आदेश आया, हमने शुऐब और उनके साथ ईमान लाने वालों को अपनी रहमत से बचा लिया। और ज़ालिमों को एक गरज़न वाली आवाज़ ने नष्ट कर दिया, जिससे वे अपने घरों में मृत पड़े रह गए।	وَلَمَّا جَاءَ اَمْرُنَا نَجَّيْنَا شُعَيْبًا وَّالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَه بِرَحْمَةٍ مِّنَّا وَاَخَذَتِ الَّذِيْنَ ظَلَمُوا الصَّيْحَةُ فَاَصْبَحُوْا فِيْ دِيَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ
95	मानो वे वहाँ कभी रहे ही न हों। सावधान रहो, मादयन के लोग नष्ट हो गए जैसे समूद नष्ट हो गई थी।	كَاَنْ لَّمْ يَغْنَوْا فِيْهَا اَلَا بُعْدًا لِّمَدْيَنَ كَمَا بَعِدَتْ ثَمُوْدُ
96	और निश्चय ही, हमने मूसा को हमारी निशानियों (चमत्कारों) और सुपष्ट प्रमाण के साथ भेजा।	وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى بِاٰيٰتِنَا وَسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ
97	फ़िरऔन और उसकी कौम के सरदारों के पास, लेकिन उन्होंने फ़िरऔन के आदेश का पालन किया, जबकि फ़िरऔन का आदेश सही नहीं था।	اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِه فَاتَّبَعُوْٓا اَمْرَ فِرْعَوْنَ وَمَآ اَمْرُ فِرْعَوْنَ بِرَشِيْدٍ

يَقْدُمُ قَوْمَه يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فَاَوْرَدَهُمُ النَّارَ وَبِئْسَ الْوِرْدُ الْمَوْرُوْدُ	वह (फ़िरऔन) क़ियामत क॓दिन अपनी कौम क॓आग॓चलगेा, और उनह॓जहन्नम म॓ल॓जाएगा। जहन्नम सबस॓ख़राब जगह ह॓जिसम॓प॓रवेश कयिा जाता ह॓।	**98**
وَاُتْبِعُوْا فِيْ هٰذِه لَعْنَةً وَّيَوْمَ الْقِيٰمَةِ بِئْسَ الرِّفْدُ الْمَرْفُوْدُ	और उनह॓यहा॓ँ(दुन्यिा म॓) और क़ियामत क॓दिन भी लानत का पीछा करना पड़ा। यह सबस॓ख़राब उपहार ह॓जो दयिा गया।	**99**
ذٰلِكَ مِنْ اَنْبَاءِ الْقُرٰى نَقُصُّه عَلَيْكَ مِنْهَا قَاۤئِمٌ وَّحَصِيْدٌ	य॓कछु नगरो॓की ख़बर॓ह॓ँ(जो नष्ट कए गए) जनिह॓हम तमु्ह॓ (मह्मम्द) सनु्ात॓ह॓ँ उनम॓स॓कछु क॓अवशषे अभी भी ह॓ँऔर कछु प॓री तरह मटि गए।	**100**
وَمَا ظَلَمْنٰهُمْ وَلٰكِنْ ظَلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ فَمَآ اَغْنَتْ عَنْهُمْ اٰلِهَتُهُمُ الَّتِيْ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ لَّمَّا جَاۤءَ اَمْرُ رَبِّكَ وَمَا زَادُوْهُمْ غَيْرَ تَتْبِيْبٍ	और हमन॓उनक॓साथ कोई जलु्म नहीं कयिा, बलक॓उनहो॓न॓ अपन॓आप को जलु्म कयिा, इसलए उनक॓लए व॓दवेता जनिकी व॓अल्लाह क॓सवि पजू्ा करत॓थ,े कछु भी लाभकारी नहीं हुए जब तमु्हार॓रब की सजा आई। उन दवेताओं न॓उनकी तबाही को और बढ़ा दयिा।	**101**
وَكَذٰلِكَ اَخْذُ رَبِّكَ اِذَآ اَخَذَ الْقُرٰى وَهِيَ ظَالِمَةٌ اِنَّ اَخْذَه اَلِيْمٌ شَدِيْدٌ	और ऐसी ह॓तमु्हार॓रब की सजा जब वह ज़ालमि नगरो॓को दंड दते॓ह॓ँ नशि्चय ही, उसकी सजा बहतु दखु़दायी, बहतु भारी ह॓ँ	**102**
اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّمَنْ خَافَ عَذَابَ الْاٰخِرَةِ ذٰلِكَ يَوْمٌ مَّجْمُوْعٌ لَّهُ النَّاسُ وَذٰلِكَ يَوْمٌ مَّشْهُوْدٌ	नशि्चय ही इसम॓उन लोगो॓क॓लए एक नशिानी ह॓जो आख़रित की सजा स॓डरत॓ह॓ँ वह एक ऐसा दनि ह॓जसिम॓सभी लोग एकत्र कए जाएँगे, और वह एक गवाही वाला दनि ह॓ँ	**103**
وَمَا نُؤَخِّرُه اِلَّا لِاَجَلٍ مَّعْدُوْدٍ	और हम इस॓केवल एक नशि्चति समय तक स्थगति करत॓ह॓ँ।	**104**
يَوْمَ يَأْتِ لَا تَكَلَّمُ نَفْسٌ اِلَّا بِاِذْنِه فَمِنْهُمْ شَقِيٌّ وَّسَعِيْدٌ	जब वह दनि आएगा, कोई भी उसकी अनमुत॓ि क॓बनिा नहीं बोलगेा; उनम॓स॓कछु दखु़ी होंग॓और कछु सखु़ी होंग॓।	**105**
فَاَمَّا الَّذِيْنَ شَقُوْا فَفِي النَّارِ لَهُمْ فِيْهَا زَفِيْرٌ وَّشَهِيْقٌ	तो जो लोग दखु़ी ह॓ँ, उनका स्थान जहन्नम म॓होगा, जहा॓ँ व॓ कराहत॓और सासँ लते॓हुए रहेंग॓।	**106**
خٰلِدِيْنَ فِيْهَا مَا دَامَتِ السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ اِلَّا مَا شَاۤءَ رَبُّكَ اِنَّ رَبَّكَ فَعَّالٌ لِّمَا يُرِيْدُ	व॓उसम॓हमशेा रहेंग॓, जब तक क॓आकाश और धरती ह॓ँ, सवि॓य इसक॓क॓ तमु्हारा रब कछु और चाह॓ नशि्चय ही, तमु्हारा रब जो चाहता ह॓ँ, उस॓प॓रा करन॓वाला ह॓ँ	**107**
وَاَمَّا الَّذِيْنَ سُعِدُوْا فَفِي الْجَنَّةِ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا مَا دَامَتِ السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ اِلَّا مَا شَاۤءَ رَبُّكَ عَطَاۤءً غَيْرَ مَجْذُوْذٍ	और जो लोग सखु़ी ह॓ँ, उनका स्थान जनन्त म॓होगा; व॓उसम॓ हमशेा रहेंग॓, जब तक क॓आकाश और धरती ह॓ँ, सवि॓य इसक॓क॓ तमु्हारा रब कछु और चाह; यह एक ऐसी दने ह॓जो कभी रकु॓ती नहीं।	**108**
فَلَا تَكُ فِيْ مِرْيَةٍ مِّمَّا يَعْبُدُ هٰٓؤُلَاۤءِ مَا يَعْبُدُوْنَ اِلَّا كَمَا يَعْبُدُ اٰبَاۤؤُهُمْ مِّنْ قَبْلُ وَاِنَّا لَمُوَفُّوْهُمْ نَصِيْبَهُمْ غَيْرَ مَنْقُوْصٍ	तो तमु (मह्मम्द) उस चीज़ क॓बार॓म॓स॓ंदहे म॓न रहो जसिकी व॓ पजू्ा करत॓ह॓ँ व॓उसी तरह पजू्ा करत॓ह॓ँजैस॓उनक॓पूवज पहल॓ पजू्ा करत॓थ।े हम नशि्चय ही उनका प्रतफिल प॓री तरह दग॓े बनिा कसिी कमी क॓।	**109**

110	और निश्चय ही, हमने मूसा को किताब (तौरात) दी, फिर उसमें मतभेद किया गया। और यदि तुम्हारे रब की ओर से पहले से कोई निर्णय न होता, तो उनके बीच फैसला हो चुका होता। निश्चय ही, वे (मक्का के काफ़िर) इसके बारे में गहरे संदेह और अनिश्चितता में हैं।	وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ فَاخْتُلِفَ فِيْهِ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ وَاِنَّهُمْ لَفِيْ شَكٍّ مِّنْهُ مُرِيْبٍ
111	और निश्चय ही, तुम्हारा रब प्रत्येक (विवाद करने वाले) को उनके कर्मों का पूरा प्रतिफल देगा। निश्चय ही, वह उनके कार्यों से पूरी तरह अवगत है।	وَاِنَّ كُلًّا لَّمَّا لَيُوَفِّيَنَّهُمْ رَبُّكَ اَعْمَالَهُمْ اِنَّه بِمَا يَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ
112	तो तुम (मुहम्मद) उसी तरह (सीधे रास्ते पर) बने रहो जैसा तुम्हें आदेश दिया गया है और (उन) लोगों के साथ जो तुम्हारे साथ तौबा करते हैं, और हद से आगे न जाओ। निश्चय ही, वह तुम्हारे कार्यों को देखने वाला है।	فَاسْتَقِمْ كَمَآ اُمِرْتَ وَمَنْ تَابَ مَعَكَ وَلَا تَطْغَوْا اِنَّه بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ
113	और ज़ालिमों की ओर न झुको, जिससे तुम्हें जहन्नम की आग छू ले, और तुम्हारे लिए अल्लाह के सिवा कोई सहायक नहीं होगा, इसलिए तुम्हें कोई सहायता नहीं मिलेगी।	وَلَا تَرْكَنُوْٓا اِلَى الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا فَتَمَسَّكُمُ النَّارُ وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ اَوْلِيَاءَ ثُمَّ لَا تُنْصَرُوْنَ
114	और दिन के दोनों सिरों (सुबह और शाम) और रात के शुरुआती हिस्सों में नमाज़ क़ायम करो। नेकें कार्य गलतियों को मिटा देते हैं। यह उन लोगों के लिए एक स्मरण है जो हमेशा (अल्लाह को) याद करते हैं।	وَاَقِمِ الصَّلٰوةَ طَرَفَيِ النَّهَارِ وَزُلَفًا مِّنَ الَّيْلِ اِنَّ الْحَسَنٰتِ يُذْهِبْنَ السَّيِّاٰتِ ذٰلِكَ ذِكْرٰى لِلذّٰكِرِيْنَ
115	और धैर्य रखो, क्योंकि निश्चय ही अल्लाह नेकें कार्य करने वालों का प्रतिफल व्यर्थ नहीं करता।	وَاصْبِرْ فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيْعُ اَجْرَ الْمُحْسِنِيْنَ
116	तो तुमसे पहले की उम्मतों में ऐसे लोग क्यों नहीं थे जिनमें श्रेष्ठता थी और जो धरती पर बिगाड़ को रोकते, सिवाय उन कुछ लोगों के जो हमने बचा लिए। और ज़ालिमों ने केवल सुख और विलासिता को प्राथमिकता दी। और वे पापी थे।	فَلَوْلَا كَانَ مِنَ الْقُرُوْنِ مِنْ قَبْلِكُمْ اُولُوْا بَقِيَّةٍ يَّنْهَوْنَ عَنِ الْفَسَادِ فِي الْاَرْضِ اِلَّا قَلِيْلًا مِّمَّنْ اَنْجَيْنَا مِنْهُمْ وَاتَّبَعَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مَآ اُتْرِفُوْا فِيْهِ وَكَانُوْا مُجْرِمِيْنَ
117	और तुम्हारा रब उन नगरों को जुल्म के साथ नष्ट नहीं करेगा, जबकि उनके निवासी नेकें कार्य करने वाले हों।	وَمَا كَانَ رَبُّكَ لِيُهْلِكَ الْقُرٰى بِظُلْمٍ وَّاَهْلُهَا مُصْلِحُوْنَ
118	और यदि तुम्हारा रब चाहता, तो वह इंसानों को एक ही उम्मत बना देता, लेकिन वे हमेशा मतभेद करते रहते हैं।	وَلَوْ شَاءَ رَبُّكَ لَجَعَلَ النَّاسَ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّلَا يَزَالُوْنَ مُخْتَلِفِيْنَ
119	सिवाय उनके जिन पर तुम्हारे रब की रहमत हुई। और इसके लिए ही अल्लाह ने उन्हें बनाया। तुम्हारे रब का निर्णय पूरा हो चुका है, 'मैं निश्चय ही जहन्नम को जिन्न और इंसानों (जो अवज्ञाकारी हों) से भर दूँगा।'	اِلَّا مَنْ رَّحِمَ رَبُّكَ وَلِذٰلِكَ خَلَقَهُمْ وَتَمَّتْ كَلِمَةُ رَبِّكَ لَاَمْلَئَنَّ جَهَنَّمَ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ
120	और सभी रसूलों की कहानियाँ हम तुम्हें (मुहम्मद) सुनाते हैं, ताकि इन कहानियों से हम तुम्हारा दिल मज़बूत करें; और इनमें तुम्हें सत्य, नसीहत और ईमान वालों के लिए स्मरण दिया गया है।	وَكُلًّا نَّقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ اَنْبَاءِ الرُّسُلِ مَا نُثَبِّتُ بِه فُؤَادَكَ وَجَاءَكَ فِيْ هٰذِهِ الْحَقُّ وَمَوْعِظَةٌ وَّذِكْرٰى لِلْمُؤْمِنِيْنَ

وَقُلْ لِّلَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ اعْمَلُوْا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ اِنَّا عٰمِلُوْنَ	और उन लोगों से कहो जो ईमान नहीं लाते, 'अपनी स्थिति के अनुसार काम करो; हम भी निश्चय ही (अपना) काम करेंगे।'	**121**
وَانْتَظِرُوْا اِنَّا مُنْتَظِرُوْنَ	और इंतज़ार करो, निश्चय ही हम भी इंतज़ार करनेवालों में हैं।	**122**
وَلِلّٰهِ غَيْبُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاِلَيْهِ يُرْجَعُ الْاَمْرُ كُلُّه فَاعْبُدْهُ وَتَوَكَّلْ عَلَيْهِ وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ	और आकाश और धरती के रहस्य अल्लाह के हैं और उसी की ओर सभी मामले लौटाए जाते हैं। तो उसकी पूजा करो और उस पर भरोसा करो। और तुम्हारा रब तुम्हारे कार्यों से बेखबर नहीं है।	**123**

छंदों की संख्या	يُوسُف	مكية
١١١	यूसुफ़ - 12	मक्की

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

यूसुफ़ (यूसुफ़)

1	अलिफ़ लाम रा। ये किताब (अल-क़ुरआन) की स्पष्ट आयतें हैं।	الٓرٰ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ
2	निश्चित रूप से हमने इसे अरबी भाषा में क़ुरआन के रूप में उतारा, ताकि तुम समझ सको।	اِنَّآ اَنْزَلْنٰهُ قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا لَّعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ
3	हम तुम्हें (मुहम्मद) इस क़ुरआन को वह्य के ज़रिए सबसे अच्छी कहानी सुनाते हैं, और निश्चित रूप से इससे पहले तुम उन लोगों में से थे जो नहीं जानते थे।	نَحْنُ نَقُصُّ عَلَيْكَ اَحْسَنَ الْقَصَصِ بِمَآ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ هٰذَا الْقُرْاٰنَ وَاِنْ كُنْتَ مِنْ قَبْلِهٖ لَمِنَ الْغٰفِلِيْنَ
4	(याद करो), जब यूसुफ़ ने अपने पिता से कहा, 'ऐ मेरे पिता! मैंने (सपने में) ग्यारह तारे, सूरज और चाँद को देखा; मैंने देखा कि वे सब मेरे सामने सजदा कर रहे थे।'	اِذْ قَالَ يُوْسُفُ لِاَبِيْهِ يٰٓاَبَتِ اِنِّيْ رَاَيْتُ اَحَدَ عَشَرَ كَوْكَبًا وَّالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ رَاَيْتُهُمْ لِيْ سٰجِدِيْنَ
5	उन्होंने (पिता ने) कहा, 'ऐ मेरे बेटे! अपने सपने को अपने भाइयों को मत बताना, वे तुम्हारे ख़िलाफ़ कोई साज़िश करेंगे। निश्चित रूप से शैतान इंसान का खुला दुश्मन है।'	قَالَ يٰبُنَيَّ لَا تَقْصُصْ رُءْيَاكَ عَلٰٓى اِخْوَتِكَ فَيَكِيْدُوْا لَكَ كَيْدًا اِنَّ الشَّيْطٰنَ لِلْاِنْسَانِ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ
6	और इस तरह तुम्हारा रब तुम्हें (नबी के रूप में) चुनेगा और तुम्हें सपनों की ताबीर का कुछ हिस्सा सिखाएगा और तुम पर और याक़ूब के परिवार पर अपनी नेमत को पूरा करेगा, जैसा कि उसने इससे पहले तुम्हारे दो पूर्वजों, इब्राहीम और इसहाक़ पर अपनी नेमत को पूरा किया था। निश्चित रूप से तुम्हारा रब सर्वज्ञ, सर्वज्ञानी है।	وَكَذٰلِكَ يَجْتَبِيْكَ رَبُّكَ وَيُعَلِّمُكَ مِنْ تَاْوِيْلِ الْاَحَادِيْثِ وَيُتِمُّ نِعْمَتَهٗ عَلَيْكَ وَعَلٰٓى اٰلِ يَعْقُوْبَ كَمَآ اَتَمَّهَا عَلٰٓى اَبَوَيْكَ مِنْ قَبْلُ اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْحٰقَ اِنَّ رَبَّكَ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ
7	निश्चित रूप से यूसुफ़ और उनके भाइयों की कहानी में सवाल पूछने वालों के लिए (अल्लाह की क़ुदरत की) निशानियाँ हैं।	لَقَدْ كَانَ فِيْ يُوْسُفَ وَاِخْوَتِهٖٓ اٰيٰتٌ لِّلسَّآئِلِيْنَ
8	जब उन्होंने कहा, 'निश्चित रूप से यूसुफ़ और उनका भाई (बिन्यामीन) हमारे पिता को हमसे ज़्यादा प्यारा है, हालाँकि हम एक मज़बूत समूह हैं। निश्चित रूप से हमारे पिता साफ़ ग़लती में हैं।'	اِذْ قَالُوْا لَيُوْسُفُ وَاَخُوْهُ اَحَبُّ اِلٰٓى اَبِيْنَا مِنَّا وَنَحْنُ عُصْبَةٌ اِنَّ اَبَانَا لَفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ
9	यूसुफ़ को मार डालो या उसे किसी जगह फेंक दो ताकि तुम्हारे पिता का ध्यान तुम पर केंद्रित हो, और इसके बाद तुम नेक लोग बन जाओ।	اقْتُلُوْا يُوْسُفَ اَوِ اطْرَحُوْهُ اَرْضًا يَّخْلُ لَكُمْ وَجْهُ اَبِيْكُمْ وَتَكُوْنُوْا مِنْ بَعْدِهٖ قَوْمًا صٰلِحِيْنَ

10	उनमे से एक ने कहा, 'यूसुफ़ को मत मारो, बल्कि उसे किसी कएँ के तल में डाल दो ताकि कोई मुसाफ़िर उसे उठा ले, अगर तुम कुछ करना चाहते हो।'	قَالَ قَآئِلٌ مِّنْهُمْ لَا تَقْتُلُوْا يُوْسُفَ وَاَلْقُوْهُ فِيْ غَيٰبَتِ الْجُبِّ يَلْتَقِطْهُ بَعْضُ السَّيَّارَةِ اِنْ كُنْتُمْ فٰعِلِيْنَ
11	उन्होंने कहा, 'ऐ हमारे पिता! तुम हम पर यूसुफ़ के बारे में भरोसा क्यों नहीं करते, हालाँकि हम सब उसके लिए भलाई चाहते हैं'	قَالُوْا يٰٓاَبَانَا مَا لَكَ لَا تَأْمَنَّا عَلٰى يُوْسُفَ وَاِنَّا لَه لَنٰصِحُوْنَ
12	उसे कल सुबह हमारे साथ जाने दो, ताकि वह मज़े करे और खेले, और हम निश्चित रूप से उसकी हफ़िाज़त करेंगे।'	اَرْسِلْهُ مَعَنَا غَدًا يَّرْتَعْ وَيَلْعَبْ وَاِنَّا لَه لَحٰفِظُوْنَ
13	उन्होंने (याकूब ने) कहा, 'निश्चित रूप से तुम्हारा उसके साथ जाना मुझे बहुत दुखी करता है और मुझे डर है कि कहीं भेड़िया उसे खा ले, जबकि तुम उससे बेपरवाह हो।'	قَالَ اِنِّيْ لَيَحْزُنُنِيْٓ اَنْ تَذْهَبُوْا بِه وَاَخَافُ اَنْ يَّأْكُلَهُ الذِّئْبُ وَاَنْتُمْ عَنْهُ غٰفِلُوْنَ
14	निश्चित रूप से उन्होंने कहा, 'अगर उसे भेड़िया खा गया, जबकि हम एक मज़बूत समूह हैं, तो निश्चित रूप से हम नुक़सान उठाने वाले होंगे।'	قَالُوْا لَئِنْ اَكَلَهُ الذِّئْبُ وَنَحْنُ عُصْبَةٌ اِنَّآ اِذًا لَّخٰسِرُوْنَ
15	तो जब वे उसे ले गए और कएँ के तल में डालने पर सहमत हुए, हमने उसकी तरफ़ वह्य की, 'तुम ज़रूर उन्हें इस हरकत के बारे में बाद में बताओगे, जबकि वे नहीं जानेंगे।'	فَلَمَّا ذَهَبُوْا بِه وَاَجْمَعُوْٓا اَنْ يَّجْعَلُوْهُ فِيْ غَيٰبَتِ الْجُبِّ وَاَوْحَيْنَآ اِلَيْهِ لَتُنَبِّئَنَّهُمْ بِاَمْرِهِمْ هٰذَا وَهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ
16	फिर वे शाम को अपने पिता के पास रोते हुए आए।	وَجَاءُوْٓ اَبَاهُمْ عِشَاءً يَّبْكُوْنَ
17	उन्होंने कहा, 'ऐ हमारे पिता! हम दौड़ लगाने गए थे और यूसुफ़ को हमारे सामान के पास छोड़ दिया, फिर उसे भेड़िए ने खा लिया; और तुम हम पर यक़ीन नहीं करोगे, भले ही हम सच बोल रहे हों।'	قَالُوْا يٰٓاَبَانَآ اِنَّا ذَهَبْنَا نَسْتَبِقُ وَتَرَكْنَا يُوْسُفَ عِنْدَ مَتَاعِنَا فَاَكَلَهُ الذِّئْبُ وَمَآ اَنْتَ بِمُؤْمِنٍ لَّنَا وَلَوْ كُنَّا صٰدِقِيْنَ
18	और वे उसकी क़मीस पर झूठा ख़ून लगाकर लाए। उन्होंने (याकूब ने) कहा, 'बल्कि तुमने अपने आप को इस बुरे काम को अच्छा समझ लिया है; तो मेरे लिए सबसे अच्छा सब्र करना है और अल्लाह ही से मदद माँगता हूँ उस चीज़ के ख़िलाफ़ जो तुम बयान करते हो।'	وَجَاءُوْ عَلٰى قَمِيْصِه بِدَمٍ كَذِبٍ قَالَ بَلْ سَوَّلَتْ لَكُمْ اَنْفُسُكُمْ اَمْرًا فَصَبْرٌ جَمِيْلٌ وَاللّٰهُ الْمُسْتَعَانُ عَلٰى مَا تَصِفُوْنَ
19	और एक क़ाफ़िला आया, उन्होंने अपने पानी लाने वाले को भेजा। फिर उसने अपनी बाल्टी उतारी। उसने कहा, 'अहा, यह तो एक जवान लड़का है!' फिर उन्होंने उसे माल के तौर पर छुपा लिया। और अल्लाह अच्छी तरह जानता था कि वे क्या कर रहे थे।	وَجَاءَتْ سَيَّارَةٌ فَاَرْسَلُوْا وَارِدَهُمْ فَاَدْلٰى دَلْوَه قَالَ يٰبُشْرٰى هٰذَا غُلٰمٌ وَاَسَرُّوْهُ بِضَاعَةً وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ بِمَا يَعْمَلُوْنَ
20	और उन्होंने उसे (यूसुफ़) को ससते दाम में, यानी कुछ दरिहम में बेचे दिया, क्योंकि वे उसमें दिलचस्पी नहीं रखते थे।	وَشَرَوْهُ بِثَمَنٍ بَخْسٍ دَرَاهِمَ مَعْدُوْدَةٍ وَكَانُوْا فِيْهِ مِنَ الزّٰهِدِيْنَ

وَقَالَ الَّذِى اشْتَرٰىهُ مِنْ مِّصْرَ لِامْرَاَتِهٖٓ اَكْرِمِيْ مَثْوٰىهُ عَسٰٓى اَنْ يَّنْفَعَنَآ اَوْ نَتَّخِذَهٗ وَلَدًا وَكَذٰلِكَ مَكَّنَّا لِيُوْسُفَ فِى الْاَرْضِ وَلِنُعَلِّمَهٗ مِنْ تَأْوِيْلِ الْاَحَادِيْثِ وَاللّٰهُ غَالِبٌ عَلٰٓى اَمْرِهٖ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ	और मिस्र क॓उस शख़्स न॓, जिसन॓उस॓ख़रीदा, अपनी बीवी स॓ कहा, 'उस॓अच्छी जगह और सवे दो, शायद वह हमार॓लिए फ़ायदमेंद हो या हम उस॓अपन॓बेटे॓की तरह अपनाएँ' और इस तरह हमन॓यूसुफ़ को मिस्र की ज़मीन म॓एक अच्छा मक़ाम दिया, और ताकि हम उस॓सपनों की ताबीर सिखाएँ और अल्लाह अपन॓मामल॓म॓कद्रत रखता ह॓, लेकिन ज़्यादातर लोग नहीं समझत॓।	**21**
وَلَمَّا بَلَغَ اَشُدَّهٗٓ اٰتَيْنٰهُ حُكْمًا وَّعِلْمًا وَكَذٰلِكَ نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ	और जब वह (यूसुफ़) पूरी तरह जवान हो गया, हमन॓उस॓ हुकूमत और इल्म दिया। इस तरह हम नके काम करन॓वालों को जज़ा दते॓ ह॓।	**22**
وَرَاوَدَتْهُ الَّتِيْ هُوَ فِيْ بَيْتِهَا عَنْ نَّفْسِهٖ وَغَلَّقَتِ الْاَبْوَابَ وَقَالَتْ هَيْتَ لَكَ قَالَ مَعَاذَ اللّٰهِ اِنَّهٗ رَبِّيْٓ اَحْسَنَ مَثْوَايَ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ	और वह औरत, जसिक॓घर म॓वह (यूसुफ़) रहता था, न॓उस॓ अपनी तरफ़ माइल करन॓की कोशशि की। और उसन॓दरवाज़॓ बंद कर दिए, फरि कहा, 'आ मरे॓पास।' यूसुफ़ न॓कहा, 'म॓ अल्लाह की पनाह माँगता ह॓ूं, नशि्चति रूप स॓मरे॓मालकि न॓ मझु॓अच्छी तरह रखा ह॓। नशि्चति रूप स॓ ज़ालमि लोग कामयाब नहीं होत॓।	**23**
وَلَقَدْ هَمَّتْ بِهٖ وَهَمَّ بِهَا لَوْلَآ اَنْ رَّاٰ بُرْهَانَ رَبِّهٖ كَذٰلِكَ لِنَصْرِفَ عَنْهُ السُّوْٓءَ وَالْفَحْشَآءَ اِنَّهٗ مِنْ عِبَادِنَا الْمُخْلَصِيْنَ	और नशि्चति रूप स॓वह औरत उसकी (यूसुफ़ की) तरफ़ माइल हो गई थी। और यूसुफ़ भी उसकी तरफ़ माइल हो गया होता, अगर उसन॓अपन॓रब की नशिानी न दखे॓ी होती। इस तरह हमन॓ उसस॓बरुाई और फाहशिा को दरू किया। नशि्चति रूप स॓ वह हमार॓चनु॓हए बंदों म॓स॓ था।	**24**
وَاسْتَبَقَا الْبَابَ وَقَدَّتْ قَمِيْصَهٗ مِنْ دُبُرٍ وَّاَلْفَيَا سَيِّدَهَا لَدَا الْبَابِ قَالَتْ مَا جَزَآءُ مَنْ اَرَادَ بِاَهْلِكَ سُوْٓءًا اِلَّآ اَنْ يُّسْجَنَ اَوْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ	और दोनों दरवाज़॓की तरफ़ दौड़॓और उस औरत न॓उसकी (यूसुफ़ की) क़मीस को पीछ॓स॓ खींचा तो वह फट गई और दोनों न॓उस औरत क॓शौहर को दरवाज़॓के॓पास पाया। उसन॓(औरत न॓) कहा, 'जो शख़्स तमुहारी बीवी क॓साथ बरु इरादा रखता ह॓, उसकी सजा क्या होनी चाहिए, सवाय इसक॓कि उस॓कदै किया जाए या दरदनाक अज़ाब दिया जाए?'	**25**
قَالَ هِيَ رَاوَدَتْنِيْ عَنْ نَّفْسِيْ وَشَهِدَ شَاهِدٌ مِّنْ اَهْلِهَا اِنْ كَانَ قَمِيْصُهٗ قُدَّ مِنْ قُبُلٍ فَصَدَقَتْ وَهُوَ مِنَ الْكٰذِبِيْنَ	उसन॓(यूसुफ़ न॓) कहा, 'वह थी जसिन॓मझु॓अपनी तरफ़ माइल करन॓की कोशशि की और मझु॓बहकाया।' और उस औरत क॓ घरान॓स॓ एक गवाह न॓गवाही दी, 'अगर उसकी क़मीस सामन॓स॓ फटी ह॓, तो औरत सच्ची ह॓, और वह (यूसुफ़) झठूों म॓स॓ ह॓।	**26**
وَاِنْ كَانَ قَمِيْصُهٗ قُدَّ مِنْ دُبُرٍ فَكَذَبَتْ وَهُوَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ	और अगर उसकी क़मीस पीछ॓स॓ फटी ह॓, तो औरत झठूी ह॓, और वह (यूसुफ़) सच्चों म॓स॓ ह॓।	**27**
فَلَمَّا رَاٰ قَمِيْصَهٗ قُدَّ مِنْ دُبُرٍ قَالَ اِنَّهٗ مِنْ كَيْدِكُنَّ اِنَّ كَيْدَكُنَّ عَظِيْمٌ	तो जब उसन॓(उस औरत क॓शौहर न॓) उसकी (यूसुफ़ की) क़मीस को पीछ॓स॓ फटा हुआ दखे॓ा, उसन॓कहा, 'नशि्चति रूप स॓ यह तमुहारी (औरतों की) चाल ह॓। तमुहारी चाल॓ वाकई बहतु ज़बरदस्त ह॓।'	**28**
يُوْسُفُ اَعْرِضْ عَنْ هٰذَا وَاسْتَغْفِرِيْ لِذَنْۢبِكِ اِنَّكِ كُنْتِ مِنَ الْخٰطِـِٕيْنَ	ऐ यूसुफ़! इस बात को भलू जाओ, और (मरी बीवी) अपन॓गनुाह की माफ़ी माँग, क्योंकि तमु गनुहगारों म॓स॓ हो।'	**29**

وَقَالَ نِسْوَةٌ فِي الْمَدِيْنَةِ امْرَاَتُ الْعَزِيْزِ تُرَاوِدُ فَتٰىهَا عَنْ نَّفْسِهٖ قَدْ شَغَفَهَا حُبًّا اِنَّا لَنَرٰىهَا فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ	और शहर की औरतों न`कहा, 'अल-अज़ीज़ की बीवी अपन` नौकर को अपनी तरफ़ माइल करन`की कोशशि कर रही ह`और उस`अपन`अधीन करन`की कोशशि कर रही ह,`वह नौकर उस` पय़ार म`दीवाना बना रहा ह`। हम नशि़ति रूप स`उस`साफ़ ग़लती म`देखत`ह`।'	**30**
فَلَمَّا سَمِعَتْ بِمَكْرِهِنَّ اَرْسَلَتْ اِلَيْهِنَّ وَاَعْتَدَتْ لَهُنَّ مُتَّكَـاً وَّاٰتَتْ كُلَّ وَاحِدَةٍ مِّنْهُنَّ سِكِّيْنًا وَّقَالَتِ اخْرُجْ عَلَيْهِنَّ فَلَمَّا رَاَيْنَهٗ اَكْبَرْنَهٗ وَقَطَّعْنَ اَيْدِيَهُنَّ وَقُلْنَ حَاشَ لِلّٰهِ مَا هٰذَا بَشَرًا اِنْ هٰذَآ اِلَّا مَلَكٌ كَرِيْمٌ	तो जब उस औरत न`उनकी नदिा सन्ी, उसन`उन औरतों को बलुाया और उनक`लिए बठैन`की जगह तयैार की, और पर्तय़के को एक चाक़ूदयिा (जमावड़`क`लिए काटन`को), फरि उसन` (यूसुफ़ स) कहा, 'उनक`सामन`(ख़द्ु को) ज़ाहरि कर।' जब उन औरतों न`उस`दखेा, व`उसकी (ख़ूबसूरती) पर मोहति हो गईं, और उनहोंन`(बनिा होश क) अपन`हाथों को ज़ख़्मी कर लयिा। व`बोलीं, 'अल्लाह महान ह,`यह इंसान नहीं ह`। यह तो वाक़ई एक शानदार फ़रि़श्ता ह`।'	**31**
قَالَتْ فَذٰلِكُنَّ الَّذِيْ لُمْتُنَّنِيْ فِيْهِ وَلَقَدْ رَاوَدْتُّهٗ عَنْ نَّفْسِهٖ فَاسْتَعْصَمَ وَلَئِنْ لَّمْ يَفْعَلْ مَآ اٰمُرُهٗ لَيُسْجَنَنَّ وَلَيَكُوْنًا مِّنَ الصّٰغِرِيْنَ	उसन`(औरत न) कहा, 'यही वह ह`जसिक`बार`म`तुमन`मझु`तान` दयि। मनै`उस`अपनी तरफ़ माइल करन`की कोशशि की, लकेनि वह मज़बूत रहा। और अगर उसन`वह नहीं कयिा जो मनै`उसस` कहा, तो उस`ज़रूर क़ैद कयिा जाएगा और वह ज़लील होगा।'	**32**
قَالَ رَبِّ السِّجْنُ اَحَبُّ اِلَيَّ مِمَّا يَدْعُوْنَنِيْٓ اِلَيْهِ وَاِلَّا تَصْرِفْ عَنِّيْ كَيْدَهُنَّ اَصْبُ اِلَيْهِنَّ وَاَكُنْ مِّنَ الْجٰهِلِيْنَ	उसन`(यूसुफ़ न) कहा, 'ऐ मरे`रब! क़ैद मझु`उस चीज़ स`ज़यादा पसंद ह`जसिकी तरफ़ व`मझु`बलुा रही ह`। और अगर तू`उनकी चाल को मझुस`दरू न कयिा, तो म`उनकी तरफ़ माइल हो जाऊँगा और जाहलिों म`स`हो जाऊँगा।'	**33**
فَاسْتَجَابَ لَهٗ رَبُّهٗ فَصَرَفَ عَنْهُ كَيْدَهُنَّ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ	तो उसक`रब न`उसकी दआु क़बूल की और उनकी चाल को उसस` दरू कयिा। नशि़ति रूप स`वह सनु`नवेाला, जानन`वेाला ह`।	**34**
ثُمَّ بَدَا لَهُمْ مِّنْ بَعْدِ مَا رَاَوُا الْاٰيٰتِ لَيَسْجُنُنَّهٗ حَتّٰى حِيْنٍ	फरि उनह`ं(अल-अज़ीज़ और उसक`लोगों को) यह उचति लगा, उस सबूत को दखेन`क`बाद, क`उस`कछु समय क`लिए क़ैद कर द`।	**35**
وَدَخَلَ مَعَهُ السِّجْنَ فَتَيٰنِ قَالَ اَحَدُهُمَآ اِنِّيْٓ اَرٰىنِيْٓ اَعْصِرُ خَمْرًا وَقَالَ الْاٰخَرُ اِنِّيْٓ اَرٰىنِيْٓ اَحْمِلُ فَوْقَ رَاْسِيْ خُبْزًا تَاْكُلُ الطَّيْرُ مِنْهُ نَبِّئْنَا بِتَاْوِيْلِهٖ اِنَّا نَرٰىكَ مِنَ الْمُحْسِنِيْنَ	और उसक`साथ दो जवान क़ैदख़ान`म`दाख़लि हुए। उनम`स`एक न`कहा, 'मनै`(सपन`म) ख़द्ु को शराब नचिोड़त`दखेा।' और दसूर` न`कहा, 'मनै`ख़द्ु को अपन`सरि पर रोटी लए हुए दखेा, जसि` परदि`खे रह`थ। हम`इसका ताबीर बता, क`योंक`हम तमु`ह`नके लोगों म`स`दखेत`ह`।'	**36**
قَالَ لَا يَاْتِيْكُمَا طَعَامٌ تُرْزَقٰنِهٖٓ اِلَّا نَبَّاْتُكُمَا بِتَاْوِيْلِهٖ قَبْلَ اَنْ يَّاْتِيَكُمَا ذٰلِكُمَا مِمَّا عَلَّمَنِيْ رَبِّيْ اِنِّيْ تَرَكْتُ مِلَّةَ قَوْمٍ لَّا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ كٰفِرُوْنَ	उसन`(यूसुफ़ न) कहा, 'तमु दोनों को जो खाना दयिा जाएगा, उसका ताबीर म`तमु`ह`बता सकता ह`ूँइसस`पहल`क`वह तमु तक पहचुँ। यह वह चीज़ ह`जो मरे`रब न`मझु`सखिाई ह`। नशि़ति रूप स`मनै`उन लोगों का मज़हब छोड़ दयिा जो अल्लाह पर ईमान नहीं लात,े बल्क`व`आख़रित को भी नहीं मानत।े'	**37**

38	और मनै॑ अपन॑ पूर्वजों इब्राहीम, इसहाक़ और याकूब क॑ मज़हब की परैवी की। हमार॑ लएि (नबयिों क॑ लएि) यह मनुासबि नहीं कि हम अल्लाह क॑ साथ कसिी चीज़ को शरीक करैं यह अल्लाह की महेरबानी ह॑ै हम पर और तमाम इंसानों पर; लकेनि ज़्यादातर लोग शक्र॒ नहीं करत॑े।	وَاتَّبَعْتُ مِلَّةَ اٰبَاۤءِيْۤ اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ مَا كَانَ لَنَاۤ اَنْ نُّشْرِكَ بِاللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ ذٰلِكَ مِنْ فَضْلِ اللّٰهِ عَلَيْنَا وَعَلَى النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَشْكُرُوْنَ
39	ऐ कदै॒ख़ान॑ क॑ दोनों साथयिो! क्या अलग-अलग कई खद्वा बहेतर ह॑ैया अल्लाह जो एकमात्र॒, महाशक्त॒शिाली ह॑ै?	يٰصَاحِبَيِ السِّجْنِ ءَاَرْبَابٌ مُّتَفَرِّقُوْنَ خَيْرٌ اَمِ اللّٰهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ
40	जो तमु॒ उसक॑े सवािा पूज॒त॑े हो, व॑े सरि॒फ़ नाम ह॑ैं जो तमु॒न॑े और तमु॒हार॑े पूर्वजों न॑े गढ़ लएि ह॑ैं अल्लाह न॑े उनक॑े बार॑े म॑ें कोई दलील नहीं उतारी। हक़ुम सरि॒फ़ अल्लाह का ह॑ै उसन॑े हक़ुम दयिा कि तमु॒ उसक॑े सवािा कसिी की इबादत न करो। यही सीधा मज़हब ह॑ै, लकेनि ज़्यादातर लोग नहीं जानत॑े।	مَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖۤ اِلَّاۤ اَسْمَاۤءً سَمَّيْتُمُوْهَاۤ اَنْتُمْ وَاٰبَاۤؤُكُمْ مَّاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ بِهَا مِنْ سُلْطٰنٍ اِنِ الْحُكْمُ اِلَّا لِلّٰهِ اَمَرَ اَلَّا تَعْبُدُوْۤا اِلَّاۤ اِيَّاهُ ذٰلِكَ الدِّيْنُ الْقَيِّمُ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ
41	ऐ कदै॒ख़ान॑ क॑े दोनों साथयिो! तमु॒म॑ स॑े एक अपन॑े मालकि को शराब पलिान॑े का काम करेगा। और दूसरा सलीब पर लटकाया जाएगा, फरि परदि॑े उसक॑े सरि का कछु हसि॒सा खाएँगे। वह मामला जसिक॑े बार॑े म॑ें तमु॒न॑े पूछा, तय हो चक्का ह॑ै।	يٰصَاحِبَيِ السِّجْنِ اَمَّاۤ اَحَدُكُمَا فَيَسْقِيْ رَبَّهٗ خَمْرًا وَاَمَّا الْاٰخَرُ فَيُصْلَبُ فَتَاْكُلُ الطَّيْرُ مِنْ رَّاْسِهٖ قُضِيَ الْاَمْرُ الَّذِيْ فِيْهِ تَسْتَفْتِيٰنِ
42	और उसन॑े उस शख़्स स॑े कहा जसि॑े वह जानता था कि वह दोनों म॑ें स॑े बच जाएगा, 'अपन॑े मालकि को मरी हालत बता।' लकेनि शैतान न॑े उस॑े अपन॑े मालकि को (यूसुफ़ की हालत) बतान॑े स॑े भलुा दयिा। इसलएि वह (यूसुफ़) कछु साल तक कदै॒ म॑ें रहा।	وَقَالَ لِلَّذِيْ ظَنَّ اَنَّهٗ نَاجٍ مِّنْهُمَا اذْكُرْنِيْ عِنْدَ رَبِّكَ فَاَنْسٰىهُ الشَّيْطٰنُ ذِكْرَ رَبِّهٖ فَلَبِثَ فِي السِّجْنِ بِضْعَ سِنِيْنَ
43	और बादशाह न॑े (अपन॑े क़ौम क॑े सरदारों स॑े) कहा, 'मनै॑े (सपन॑े म॑ें) सात मोटी गायों को दखे॑ा जनि॑ह॑ें सात दबुली गाय॑े खा रही थीं; और सात हरी बालयिाँ और सात सूख़ी बालयिाँ। ऐ सरदारो! मर॑े इस सपन॑े की ताबीर बताओ अगर तमु॒ सपनों की ताबीर कर सकत॑े हो।'	وَقَالَ الْمَلِكُ اِنِّيْۤ اَرٰى سَبْعَ بَقَرٰتٍ سِمَانٍ يَّاْكُلُهُنَّ سَبْعٌ عِجَافٌ وَّسَبْعَ سُنْۢبُلٰتٍ خُضْرٍ وَّاُخَرَ يٰبِسٰتٍ يٰۤاَيُّهَا الْمَلَاُ اَفْتُوْنِيْ فِيْ رُءْيَايَ اِنْ كُنْتُمْ لِلرُّءْيَا تَعْبُرُوْنَ
44	उनहों॑न॑े जवाब दयिा, '(यह) ख़ाली सपन॑े ह॑ैं और हम इन सपनों की ताबीर नहीं कर सकत॑े।'	قَالُوْۤا اَضْغَاثُ اَحْلَامٍ وَمَا نَحْنُ بِتَاْوِيْلِ الْاَحْلَامِ بِعٰلِمِيْنَ
45	और उन दोनों म॑ें स॑े जो बच गया था और कछु समय बाद (यूसुफ़ को) याद आया, उसन॑े कहा, 'म॑ैं तमु॒ह॑ें (उस शख़्स क॑े बार॑े म॑ें) बताऊँगा जो सपनों की ताबीर कर सकता ह॑ै, तो मझु॑े (उसक॑े पास) भजेो।'	وَقَالَ الَّذِيْ نَجَا مِنْهُمَا وَادَّكَرَ بَعْدَ اُمَّةٍ اَنَا اُنَبِّئُكُمْ بِتَاْوِيْلِهٖ فَاَرْسِلُوْنِ
46	यूसुफ़, ऐ सच्च॑े इंसान! हम॑ें (सपन॑े की) ताबीर बता सात मोटी गायों की जो सात दबुली गायों न॑े खाईं, और सात हरी बालयिों और सात सूख़ी बालयिों की, ताकि म॑ैं उन लोगों क॑े पास वापस जाऊँ, ताकि व॑े जान लें।	يُوْسُفُ اَيُّهَا الصِّدِّيْقُ اَفْتِنَا فِيْ سَبْعِ بَقَرٰتٍ سِمَانٍ يَّاْكُلُهُنَّ سَبْعٌ عِجَافٌ وَّسَبْعِ سُنْۢبُلٰتٍ خُضْرٍ وَّاُخَرَ يٰبِسٰتٍ لَّعَلِّيْۤ اَرْجِعُ اِلَى النَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَعْلَمُوْنَ

47	उसन`े (यूसुफ़ न) कहा, 'तमु सात साल तक हमशेा की तरह ख़ती करो; फरि जो तमु काटो उस`ेउसकी बालयिों म`ेरहन`ेदो, सविाय थोड़े`सेजो तमु खाओ।'	قَالَ تَزْرَعُوْنَ سَبْعَ سِنِيْنَ دَاَبًا فَمَا حَصَدْتُّمْ فَذَرُوْهُ فِيْ سُنْۢبُلِهٖٓ اِلَّا قَلِيْلًا مِّمَّا تَاْكُلُوْنَ
48	फरि इसक`ेबाद सात मशुक़लि साल आएँगे, जो तमुन`ेउनक`े लएि बचाकर रखा था उस`ेखा लगे, सविाय थोड़े`स े(बीज क`े गहे)ूँ जो तमु बचाकर रखो।	ثُمَّ يَاْتِيْ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ سَبْعٌ شِدَادٌ يَّاْكُلْنَ مَا قَدَّمْتُمْ لَهُنَّ اِلَّا قَلِيْلًا مِّمَّا تُحْصِنُوْنَ
49	इसक`ेबाद एक साल आएगा, जसिम`ेलोगो`ं को (काफ़ी) बारशि मलिगेी और उस वक़्त व`े(अंगूर) नचिोड़ेंगे।	ثُمَّ يَاْتِيْ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ عَامٌ فِيْهِ يُغَاثُ النَّاسُ وَفِيْهِ يَعْصِرُوْنَ
50	और बादशाह न`ेकहा, 'उस`ेमरे`ेपास लाओ।' जब उसका दूत उसक`ेपास आया, उसन`े(यूसुफ़ न) कहा, 'अपन`ेमालकि क`ेपास वापस जाओ और उससे`पछूो कि उन औरतों का क्या हाल था जनि्होंन`ेअपन`ेहाथ ज़ख़्मी कएि। नशि्चति रूप स`ेमरेा रब उनकी चाल को अच्छी तरह जानता ह।ै'	وَقَالَ الْمَلِكُ ائْتُوْنِيْ بِهٖ فَلَمَّا جَاۤءَهُ الرَّسُوْلُ قَالَ ارْجِعْ اِلٰى رَبِّكَ فَسْـَٔلْهُ مَا بَالُ النِّسْوَةِ الّٰتِيْ قَطَّعْنَ اَيْدِيَهُنَّ اِنَّ رَبِّيْ بِكَيْدِهِنَّ عَلِيْمٌ
51	उसन`े(बादशाह न)ै (उन औरतों स)ै कहा, 'तमुहारा क्या हाल था जब तमुन`ेयूसुफ़ को अपनी तरफ़ माइल करन`ेकी कोशशि की?' उनहोंन`ेकहा, 'अल्लाह महान ह,ै हम`ेउसम`ेकोई बरुाई नहीं दखिी।' अल-अज़ीज़ की बीवी न`ेकहा, 'अब हक़ ज़ाहरि हो गया, मनै`ेही उस`ेअपनी तरफ़ माइल करन`ेकी कोशशि की और वह नशि्चति रूप स`ेसच्चों म`ेस`ेह।ै'	قَالَ مَا خَطْبُكُنَّ اِذْ رَاوَدْتُّنَّ يُوْسُفَ عَنْ نَّفْسِهٖ قُلْنَ حَاشَ لِلّٰهِ مَا عَلِمْنَا عَلَيْهِ مِنْ سُوْۤءٍ قَالَتِ امْرَاَتُ الْعَزِيْزِ الْـٰٔنَ حَصْحَصَ الْحَقُّ اَنَا رَاوَدْتُّهٗ عَنْ نَّفْسِهٖ وَاِنَّهٗ لَمِنَ الصّٰدِقِيْنَ
52	(यूसुफ़ न`ेकहा), 'यह इसलएि कि वह (अल-अज़ीज़) जान`ेकि मनै`ेउसकी ग़रैमौजद्गी म`ेउसक`ेसाथ ख़यिानत नहीं की, और यह कि अल्लाह ख़यिानत करन`ेवालों की चाल को पसंद नहीं करता।'	ذٰلِكَ لِيَعْلَمَ اَنِّيْ لَمْ اَخُنْهُ بِالْغَيْبِ وَاَنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِيْ كَيْدَ الْخَاۤىِٕنِيْنَ
53	और म`ैअपन`ेआप को (गन्नाह स)ै बरी नहीं करता, क्योंकि नफ़्स हमशेा बरुाई की तरफ़ उकसाता ह,ै सविाय इसक`ेकि मरे`ेरब न`े उस पर रहम कयिा हो। नशि्चति रूप स`ेमरेा रब माफ़ करन`ेवाला, महेरबान ह।ै	وَمَاۤ اُبَرِّئُ نَفْسِيْ اِنَّ النَّفْسَ لَاَمَّارَةٌۢ بِالسُّوْۤءِ اِلَّا مَا رَحِمَ رَبِّيْ اِنَّ رَبِّيْ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ
54	और बादशाह न`ेकहा, 'उस`े(यूसुफ़ को) मरे`ेपास लाओ, ताकि म`ै उस`ेअपन`ेक़रीब रख)ूँ' जब उसन`ेउससे`बात की, तो उसन`े (बादशाह न)ै कहा, 'नशि्चति रूप स`ेतमु आज स`ेहमार`ेयहा ँऊँच`े मक़ाम पर और भरोसमेंद हो।'	وَقَالَ الْمَلِكُ ائْتُوْنِيْ بِهٖٓ اَسْتَخْلِصْهُ لِنَفْسِيْ فَلَمَّا كَلَّمَهٗ قَالَ اِنَّكَ الْيَوْمَ لَدَيْنَا مَكِيْنٌ اَمِيْنٌ
55	उसन`े(यूसुफ़ न)ै कहा, 'मझु`ेमसिर क`े ख़ज़ान`ेका इंचारज़ बना दो; क्योंकि म`ैवाकई हफ़ि़ाज़त करन`ेवाला और जानकार ह)ूँ'	قَالَ اجْعَلْنِيْ عَلٰى خَزَاۤىِٕنِ الْاَرْضِ اِنِّيْ حَفِيْظٌ عَلِيْمٌ
56	और इस तरह हमन`ेयूसुफ़ को इस ज़मीन (मसिर) म`ेमक़ाम दयिा; वह जहा ँचाहता वहा ँरह सकता था। हम अपनी रहमत जसि`े चाहत`े ह`ैउस पर नाज़लि करत`े ह`ैऔर हम नके काम करन`ेवालों का सवाब ज़ाया नहीं करत।े	وَكَذٰلِكَ مَكَّنَّا لِيُوْسُفَ فِى الْاَرْضِ يَتَبَوَّاُ مِنْهَا حَيْثُ يَشَاۤءُ نُصِيْبُ بِرَحْمَتِنَا مَنْ نَّشَاۤءُ وَلَا نُضِيْعُ اَجْرَ الْمُحْسِنِيْنَ

57	और निश्चिति रूप से आख़िरत का सवाब उन लोगों के लिए बेहतर है जो ईमान लाए और हमेशा तक़वा रखते हैं।	وَلَاَجْرُ الْاٰخِرَةِ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَكَانُوْا يَتَّقُوْنَ
58	और यूसुफ़ के भाई (मिस्र) आए, फिर वे उसके (पास) दाख़िल हुए। उसने उन्हें पहचान लिया, लेकिन वे उसे (फिर से) नहीं पहचानते थे।	وَجَاءَ اِخْوَةُ يُوْسُفَ فَدَخَلُوْا عَلَيْهِ فَعَرَفَهُمْ وَهُمْ لَه مُنْكِرُوْنَ
59	और जब उसने (यूसुफ़ ने) उनके लिए खान-पीन का सामान तैयार किया, उसने कहा, 'अपने उस भाई को मेरे पास लाओ जो तुम्हारा हमपिता है (बिन्यामीन), क्या तुम नहीं देखते कि मैं पूरा नाप देता हूँ और मैं सबसे अच्छा महेमाननवाज़ हूँ'	وَلَمَّا جَهَّزَهُمْ بِجَهَازِهِمْ قَالَ ائْتُوْنِيْ بِاَخٍ لَّكُمْ مِّنْ اَبِيْكُمْ اَلَا تَرَوْنَ اَنِّيْٓ اُوْفِي الْكَيْلَ وَاَنَا خَيْرُ الْمُنْزِلِيْنَ
60	तो अगर तुम उसे मेरे पास नहीं लाए, तो मेरे यहाँ से तुम्हें कोई जत्था (गेहूँ नहीं मिलेगा और तुम मेरे क़रीब न आना।	فَاِنْ لَّمْ تَأْتُوْنِيْ بِه فَلَا كَيْلَ لَكُمْ عِنْدِيْ وَلَا تَقْرَبُوْنِ
61	उन्होंने कहा, 'हम उसके पिता को उस (लाने के लिए) मनाएँगे और हम निश्चिति रूप से ऐसा करेंगे।'	قَالُوْا سَنُرَاوِدُ عَنْهُ اَبَاهُ وَاِنَّا لَفٰعِلُوْنَ
62	और उसने (यूसुफ़ ने) अपने नौकरों से कहा, 'उनके (बदले के) सामान को उनके थैलों में डाल दो, ताकि जब वे अपने परिवार के पास वापस जाएँ तो इस जान लें, शायद वे फिर वापस आएँ।'	وَقَالَ لِفِتْيٰنِهِ اجْعَلُوْا بِضَاعَتَهُمْ فِيْ رِحَالِهِمْ لَعَلَّهُمْ يَعْرِفُوْنَهَآ اِذَا انْقَلَبُوْٓا اِلٰٓى اَهْلِهِمْ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ
63	तो जब वे अपने पिता (याक़ूब) के पास वापस आए, उन्होंने कहा, 'ऐ हमारे पिता! हमें (गेहूँ का) जत्था नहीं मिलेगा (अगर हम अपने भाई को न लाएँ), इसलिए हमारे भाई को हमारे साथ जाने दो ताकि हमें जत्था मिले, और हम निश्चिति रूप से उसकी हिफ़ाज़त करेंगे।'	فَلَمَّا رَجَعُوْٓا اِلٰٓى اَبِيْهِمْ قَالُوْا يٰٓاَبَانَا مُنِعَ مِنَّا الْكَيْلُ فَاَرْسِلْ مَعَنَآ اَخَانَا نَكْتَلْ وَاِنَّا لَه لَحٰفِظُوْنَ
64	उन्होंने (याक़ूब ने) कहा, 'मैं उसे तुम्हारे हवाले कैसे कर सकता हूँ जैसे मैंने पहले उसके भाई (यूसुफ़) को तुम्हारे हवाले किया था?' तो अल्लाह सबसे अच्छा हिफ़ाज़त करने वाला है और वह सबसे ज़्यादा महेरबान है।	قَالَ هَلْ اٰمَنُكُمْ عَلَيْهِ اِلَّا كَمَآ اَمِنْتُكُمْ عَلٰٓى اَخِيْهِ مِنْ قَبْلُ فَاللّٰهُ خَيْرٌ حٰفِظًا وَّهُوَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ
65	और जब उन्होंने अपना सामान खोला, तो पाया कि उनका (बदले का) सामान उन्हें वापस कर दिया गया है। उन्होंने कहा, 'ऐ हमारे पिता! हमें और क्या चाहिए। यह हमारा सामान हमें वापस कर दिया गया है, और हम अपने परिवार को खाना दे सकेंगे, और हम अपने भाई की हिफ़ाज़त करेंगे, और हम एक ऊँट के बोझ जितना अतिरिक्त जत्था (गेहूँ) मिलेगा। यह (बादशाह मिस्र के लिए) आसान बात है।'	وَلَمَّا فَتَحُوْا مَتَاعَهُمْ وَجَدُوْا بِضَاعَتَهُمْ رُدَّتْ اِلَيْهِمْ قَالُوْا يٰٓاَبَانَا مَا نَبْغِيْ هٰذِه بِضَاعَتُنَا رُدَّتْ اِلَيْنَا وَنَمِيْرُ اَهْلَنَا وَنَحْفَظُ اَخَانَا وَنَزْدَادُ كَيْلَ بَعِيْرٍ ذٰلِكَ كَيْلٌ يَّسِيْرٌ
66	उन्होंने (याक़ूब ने) कहा, 'मैं उसे तुम्हारे साथ नहीं भेजूँगा, जब तक कि तुम अल्लाह के नाम पर मज़बूत वादा न करो कि तुम उसे ज़रूर मेरे पास वापस लाओगे, सिवाय इसके कि तुम (दुश्मनों से) घिर जाओ।' जब उन्होंने क़सम खा ली, तो उन्होंने (याक़ूब ने) कहा, 'अल्लाह उस बात का गवाह है जो हम कह रहे हैं।'	قَالَ لَنْ اُرْسِلَه مَعَكُمْ حَتّٰى تُؤْتُوْنِ مَوْثِقًا مِّنَ اللّٰهِ لَتَأْتُنَّنِيْ بِهٖٓ اِلَّآ اَنْ يُّحَاطَ بِكُمْ فَلَمَّآ اٰتَوْهُ مَوْثِقَهُمْ قَالَ اللّٰهُ عَلٰى مَا نَقُوْلُ وَكِيْلٌ

وَقَالَ يٰبَنِيَّ لَا تَدْخُلُوْا مِنْ بَابٍ وَّاحِدٍ وَّادْخُلُوْا مِنْ اَبْوَابٍ مُّتَفَرِّقَةٍ وَمَآ اُغْنِيْ عَنْكُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ اِنِ الْحُكْمُ اِلَّا لِلّٰهِ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَعَلَيْهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُتَوَكِّلُوْنَ	और उनहोंने (याक़ूब ने) कहा, 'ऐ मेरे बेटो! एक ही दरवाज़े से दाख़िल न होना, बल्कि अलग-अलग दरवाज़ों से दाख़िल होना; फिर भी मैं तुमहें अल्लाह के (क़दर) से कछ भी बचा नहीं सकता। हुक्म सिर्फ़ अल्लाह का है उसी पर मैं भरोसा करता हूँ और उसी पर भरोसा करने वालों को भरोसा करना चाहिए।'	67
وَلَمَّا دَخَلُوْا مِنْ حَيْثُ اَمَرَهُمْ اَبُوْهُمْ مَا كَانَ يُغْنِيْ عَنْهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ اِلَّا حَاجَةً فِيْ نَفْسِ يَعْقُوْبَ قَضٰىهَا وَاِنَّه لَذُوْ عِلْمٍ لِّمَا عَلَّمْنٰهُ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ	और जब वे अपने पिता के हुक्म के मुताबिक़ दाख़िल हुए, (उनका ऐसा दाख़िल होना) अल्लाह के फ़ैसले को ज़रा भी नहीं टाल सका, (बल्कि यह) सिर्फ़ याक़ूब की ख़्वाहिश थी जिसे उनहोंने पूरा किया। और निश्चित रूप से उनके पास इल्म था, क्योंकि हमने उनहें सिखाया था। लेकिन ज़्यादातर लोग नहीं जानते।	68
وَلَمَّا دَخَلُوْا عَلٰى يُوْسُفَ اٰوٰٓى اِلَيْهِ اَخَاهُ قَالَ اِنِّيْٓ اَنَا اَخُوْكَ فَلَا تَبْتَئِسْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ	और जब वे यूसुफ़ के (पास) दाख़िल हुए, उसने अपने भाई (बिनयामीन) को अपने पास जगह दी, उसने (यूसुफ़ ने) कहा, 'निश्चित रूप से मैं तेरा भाई हूँ उनके किए पर दुखी न हो।'	69
فَلَمَّا جَهَّزَهُمْ بِجَهَازِهِمْ جَعَلَ السِّقَايَةَ فِيْ رَحْلِ اَخِيْهِ ثُمَّ اَذَّنَ مُؤَذِّنٌ اَيَّتُهَا الْعِيْرُ اِنَّكُمْ لَسٰرِقُوْنَ	तो जब उसने उनके लिए खान-पीन का सामान तैयार किया, उसने (यूसुफ़ ने) प्याला अपने भाई के थैले में डाल दिया। फिर एक पुकारने वाले ने पुकारा, 'ऐ क़ाफ़िला! निश्चित रूप से तुम चोर हो।'	70
قَالُوْا وَاَقْبَلُوْا عَلَيْهِمْ مَّاذَا تَفْقِدُوْنَ	उनहोंने (उनकी तरफ़ मुड़कर) पूछा, 'तुमने क्या खोया है?'	71
قَالُوْا نَفْقِدُ صُوَاعَ الْمَلِكِ وَلِمَنْ جَاءَ بِه حِمْلُ بَعِيْرٍ وَّاَنَا بِه زَعِيْمٌ	उनहोंने जवाब दिया, 'हमने बादशाह का प्याला खोया है, और जो उसे वापस लाएगा उसे (गेहूँ का) एक ऊँट का बोझ मिलेगा, और मैं इसकी ज़मानत देता हूँ।'	72
قَالُوْا تَاللّٰهِ لَقَدْ عَلِمْتُمْ مَّا جِئْنَا لِنُفْسِدَ فِى الْاَرْضِ وَمَا كُنَّا سٰرِقِيْنَ	उनहोंने (यूसुफ़ के भाइयों ने) जवाब दिया, 'अल्लाह की क़सम, तुम जानते हो कि हम इस ज़मीन पर फ़साद करने नहीं आए और हम चोर नहीं हैं।'	73
قَالُوْا فَمَا جَزَاؤُه اِنْ كُنْتُمْ كٰذِبِيْنَ	उनहोंने कहा, 'लेकिन अगर तुम झूठे हो तो इसकी सजा क्या है?'	74
قَالُوْا جَزَاؤُه مَنْ وُّجِدَ فِيْ رَحْلِه فَهُوَ جَزَاؤُه كَذٰلِكَ نَجْزِى الظّٰلِمِيْنَ	उनहोंने जवाब दिया, 'इसकी सजा यह है कि जिसके थैले में (वह चीज) मिले, वही उसकी सजा पाए। इस तरह हम ज़ालिमों को सजा देते हैं।'	75
فَبَدَاَ بِاَوْعِيَتِهِمْ قَبْلَ وِعَاءِ اَخِيْهِ ثُمَّ اسْتَخْرَجَهَا مِنْ وِّعَاءِ اَخِيْهِ كَذٰلِكَ كِدْنَا لِيُوْسُفَ مَا كَانَ لِيَاْخُذَ اَخَاهُ فِيْ دِيْنِ الْمَلِكِ اِلَّآ اَنْ يَّشَاءَ اللّٰهُ نَرْفَعُ دَرَجٰتٍ مَّنْ نَّشَاءُ وَفَوْقَ كُلِّ ذِيْ عِلْمٍ عَلِيْمٌ	तो उसने (यूसुफ़ ने) अपने भाई के थैले से पहले उनके थैलों की तलाशी शुरू की, फिर उसने (बादशाह का प्याला) अपने भाई के थैले से निकाला। इस तरह हमने यूसुफ़ के लिए (यह) तदबीर की। वह बादशाह के क़ानून के मुताबिक़ अपने भाई को सजा नहीं दे सकता था, सिवाय इसके कि अल्लाह चाहे। हम जिसे चाहते हैं उसकी मरतबा बुलंद करते हैं; और हर जानने वाले के ऊपर एक और ज़्यादा जानने वाला है।	76

77	उनहोंने कहा, 'अगर उसने चोरी की, तो इससे पहले उसका भाई भी चोरी कर चुका था।' तो यूसुफ़ ने (अपनी नाराज़गी) अपने दिल में छिपा ली और उन्हें ज़ाहिर नहीं की। उसने (अपने दिल में) कहा, 'तुम्हारी हालत तो उससे भी बदतर है और अल्लाह अच्छी तरह जानता है कि तुम क्या बयान करते हो।'	قَالُوْٓا اِنْ يَّسْرِقْ فَقَدْ سَرَقَ اَخٌ لَّه مِنْ قَبْلُ فَاَسَرَّهَا يُوْسُفُ فِيْ نَفْسِه وَلَمْ يُبْدِهَا لَهُمْ قَالَ اَنْتُمْ شَرٌّ مَّكَانًا وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا تَصِفُوْنَ
78	उनहोंने कहा, 'ऐ अल-अज़ीज़! इसके एक बूढ़े पिता हैं, इसलिए हमारे में से किसी एक को इसके बदले ले लो, हम निश्चित रूप से तुम्हें नेके लोगों में से देखते हैं।'	قَالُوْا يٰٓاَيُّهَا الْعَزِيْزُ اِنَّ لَه اَبًا شَيْخًا كَبِيْرًا فَخُذْ اَحَدَنَا مَكَانَه اِنَّا نَرٰىكَ مِنَ الْمُحْسِنِيْنَ
79	उसने (यूसुफ़ ने) कहा, 'मैं अल्लाह की पनाह माँगता हूँ कि मैं किसी को कैद करूँ सिवाय उस शख़्स के जिसके पास हमारा माल मिला, अगर हम (ऐसा) करें, तो हम ज़ालिम होंगे।'	قَالَ مَعَاذَ اللّٰهِ اَنْ نَّاْخُذَ اِلَّا مَنْ وَّجَدْنَا مَتَاعَنَا عِنْدَه اِنَّآ اِذًا لَّظٰلِمُوْنَ
80	तो जब वे उससे (यूसुफ़ के फ़ैसले से) मायूस हो गए, वे एकांत में (आपस में सलाह करने के लिए) फुसफुसाने लगे। उनके सबसे बड़े भाई ने कहा, 'क्या तुम नहीं जानते कि तुम्हारे पिता ने तुमसे अल्लाह के नाम पर वादा लिया था और इससे पहले तुमने यूसुफ़ को जाया किया था? इसलिए मैं इस ज़मीन (मिस्र) को नहीं छोड़ूँगा, जब तक कि मेरे पिता मुझे इजाज़त न दें, या अल्लाह मेरे लिए कोई फ़ैसला न कर दे। और वह सबसे अच्छा हाकिम है।'	فَلَمَّا اسْتَيْـَٔسُوْا مِنْهُ خَلَصُوْا نَجِيًّا قَالَ كَبِيْرُهُمْ اَلَمْ تَعْلَمُوْٓا اَنَّ اَبَاكُمْ قَدْ اَخَذَ عَلَيْكُمْ مَّوْثِقًا مِّنَ اللّٰهِ وَمِنْ قَبْلُ مَا فَرَّطْتُّمْ فِيْ يُوْسُفَ فَلَنْ اَبْرَحَ الْاَرْضَ حَتّٰى يَاْذَنَ لِيْٓ اَبِيْٓ اَوْ يَحْكُمَ اللّٰهُ لِيْ وَهُوَ خَيْرُ الْحٰكِمِيْنَ
81	अपने पिता के पास वापस जाओ और कहो, 'ऐ हमारे पिता! निश्चित रूप से तेरे बेटे चोरी कर गया और हमने सिर्फ़ वही गवाही दी जो हम जानते थे और हम उस चीज़ को नहीं जानते थे जो छिपी थी।'	اِرْجِعُوْٓا اِلٰٓى اَبِيْكُمْ فَقُوْلُوْا يٰٓاَبَانَآ اِنَّ ابْنَكَ سَرَقَ وَمَا شَهِدْنَآ اِلَّا بِمَا عَلِمْنَا وَمَا كُنَّا لِلْغَيْبِ حٰفِظِيْنَ
82	और उस शहर (के लोगों) से पूछो जहाँ हम थे, और उस क़ाफ़िले से जो हमारे साथ आया था। और हम सच्चे हैं।'	وَسْـَٔلِ الْقَرْيَةَ الَّتِيْ كُنَّا فِيْهَا وَالْعِيْرَ الَّتِيْٓ اَقْبَلْنَا فِيْهَا وَاِنَّا لَصٰدِقُوْنَ
83	उनहोंने (याक़ूब ने) कहा, 'बल्कि तुमने अपने आप को इस (बुरे) काम को अच्छा समझ लिया है तो (मेरा) सब्र अच्छा सब्र है। शायद अल्लाह उन्हें सबको मेरे पास लाए। निश्चित रूप से वही सर्वज्ञ, सर्वज्ञानी है।'	قَالَ بَلْ سَوَّلَتْ لَكُمْ اَنْفُسُكُمْ اَمْرًا فَصَبْرٌ جَمِيْلٌ عَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّاْتِيَنِيْ بِهِمْ جَمِيْعًا اِنَّه هُوَ الْعَلِيْمُ الْحَكِيْمُ
84	और वह (याक़ूब) उनसे (अपने बेटों से) मुँह फेरकर बोले, 'हाय, यूसुफ़ के लिए मेरी उदासी,' और उनकी आँखें ग़म से सफ़ेद हो गईं। वह ख़ामोश रहकर अपने ग़ुस्से को दबा रहे थे।	وَتَوَلّٰى عَنْهُمْ وَقَالَ يٰٓاَسَفٰى عَلٰى يُوْسُفَ وَابْيَضَّتْ عَيْنٰهُ مِنَ الْحُزْنِ فَهُوَ كَظِيْمٌ
85	उनहोंने कहा, 'अल्लाह की क़सम, तुम यूसुफ़ को याद करते-करते या तो बीमार पड़ जाओगे या मरने वालों में शामिल हो जाओगे।'	قَالُوْا تَاللّٰهِ تَفْتَؤُا تَذْكُرُ يُوْسُفَ حَتّٰى تَكُوْنَ حَرَضًا اَوْ تَكُوْنَ مِنَ الْهٰلِكِيْنَ
86	उनहोंने (याक़ूब ने) जवाब दिया, 'मैं अपनी तकलीफ़ और ग़म को सिर्फ़ अल्लाह से बयान करता हूँ और मैं अल्लाह से वह जानता हूँ जो तुम नहीं जानते।'	قَالَ اِنَّمَآ اَشْكُوْا بَثِّيْ وَحُزْنِيْٓ اِلَى اللّٰهِ وَاَعْلَمُ مِنَ اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ

يٰبَنِيَّ اذْهَبُوْا فَتَحَسَّسُوْا مِنْ يُّوْسُفَ وَاَخِيْهِ وَلَا تَايْـَٔسُوْا مِنْ رَّوْحِ اللّٰهِ اِنَّه لَا يَايْـَٔسُ مِنْ رَّوْحِ اللّٰهِ اِلَّا الْقَوْمُ الْكٰفِرُوْنَ	ऐ मरे॒बटो॑! जाओ, यूसुफ़॒ और उसक॑भाई की खोज करो और अल्लाह की रहमत स॑मायूस न हो। नशि॒चति रू॒प स॑अल्लाह की रहमत स॑सरि॑फ़॒काफ़ि॒र लोग ही मायूस होत॑हैं॑	**87**
فَلَمَّا دَخَلُوْا عَلَيْهِ قَالُوْا يٰٓاَيُّهَا الْعَزِيْزُ مَسَّنَا وَاَهْلَنَا الضُّرُّ وَجِئْنَا بِبِضَاعَةٍ مُّزْجٰىةٍ فَاَوْفِ لَنَا الْكَيْلَ وَتَصَدَّقْ عَلَيْنَا اِنَّ اللّٰهَ يَجْزِى الْمُتَصَدِّقِيْنَ	तो जब व॑यूसुफ़॒क॑(पास) दाख़ि॒ल हुए, उनहों॑कहा, 'ऐ अल-अज़ी॒ज़! हम॑और हमार॑परिवार को तकलीफ़॒पहुँची ह॒और हम कम की॒मत का सामान लाए ह॒, तो हमार॑लिए (गेहूँ॒का) पूरा जत॒था द॑और हम॑ख़ै॒रात दो॑ नशि॒चति रू॒प स॑अल्लाह ख़ै॒रात करन॑वालों॑को जज़ा॒ दे॒ता ह॒ै॑	**88**
قَالَ هَلْ عَلِمْتُمْ مَّا فَعَلْتُمْ بِيُوْسُفَ وَاَخِيْهِ اِذْ اَنْتُمْ جٰهِلُوْنَ	उसन॑(यूसुफ़॒न॑) कहा, 'क॒या तमु॒ह॑मालूम ह॒ै कि॒ तमु॒न॑यूसुफ़॒ और उसक॑भाई क॑साथ क॒या कि॒या जब तमु॒ जाहलि॒ थ?'	**89**
قَالُوْٓا ءَاِنَّكَ لَاَنْتَ يُوْسُفُ قَالَ اَنَا يُوْسُفُ وَهٰذَآ اَخِيْ قَدْ مَنَّ اللّٰهُ عَلَيْنَا اِنَّه مَنْ يَّتَّقِ وَيَصْبِرْ فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيْعُ اَجْرَ الْمُحْسِنِيْنَ	उनहों॑कहा, 'क॒या तमु॒ वाकई॒ यूसुफ़॒ हो?' उसन॑कहा, 'म॑ै यूसुफ़॒ हूँ॒और यह मरो॑ भाई ह॒ै॑ अल्लाह न॑हम पर एहसान कि॒या। नशि॒चति रू॒प स॑जो तक॒वा रखता ह॒ै और सबर॒ करता ह॒, ै तो अल्लाह नके॑काम करन॑वालों॑का सवाब॑ ज़ाया॒ नहीं॑करता।'	**90**
قَالُوْا تَاللّٰهِ لَقَدْ اٰثَرَكَ اللّٰهُ عَلَيْنَا وَاِنْ كُنَّا لَخٰطِـِٕيْنَ	उनहों॑कहा, 'अल्लाह की क॒सम, नशि॒चति रू॒प स॑अल्लाह न॑तमु॒ह॑हम पर तरजीह दी और हम गनु॒हगार थो॑'	**91**
قَالَ لَا تَثْرِيْبَ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ يَغْفِرُ اللّٰهُ لَكُمْ وَهُوَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ	उसन॑(यूसुफ़॒न॑) कहा, 'आज तमु॒ पर कोई इलज़ा॒म नहीं॑ ह॒ै॑ अल्लाह तमु॒ह॑माफ़॒ कर॑ो और वह सबस॑ज़ि॒यादा महेरबान ह॒ै॑	**92**
اِذْهَبُوْا بِقَمِيْصِيْ هٰذَا فَاَلْقُوْهُ عَلٰى وَجْهِ اَبِيْ يَاْتِ بَصِيْرًا وَاْتُوْنِيْ بِاَهْلِكُمْ اَجْمَعِيْنَ	मरी॑ यह क॒मीस ल॑जाओ और इस॑मरे॑पिता क॑चेहरे॑पर डाल दो, वह (फिरि स॑) देखन॑लगेंगे॑ और अपन॑सार॑घरवालों॑को मरे॑पास ल॑आओ।'	**93**
وَلَمَّا فَصَلَتِ الْعِيْرُ قَالَ اَبُوْهُمْ اِنِّيْ لَاَجِدُ رِيْحَ يُوْسُفَ لَوْلَآ اَنْ تُفَنِّدُوْنِ	और जब काफ़ि॒ला (मिसि॒र स॑) रवाना हुआ, उनक॑पिता (याकूब॒) न॑कहा, 'मझु॒ यूसुफ़॒ की ख़ुशबू॒आ रही ह॒, ै अगर तमु॒ मझु॒ पागल न समझो॑।'	**94**
قَالُوْا تَاللّٰهِ اِنَّكَ لَفِيْ ضَلٰلِكَ الْقَدِيْمِ	उनहों॑कहा, 'अल्लाह की क॒सम, तमु॒ अपनी पुरानी ग़ल॒ती म॑ें ही हो॑।'	**95**
فَلَمَّآ اَنْ جَاءَ الْبَشِيْرُ اَلْقٰىهُ عَلٰى وَجْهِه فَارْتَدَّ بَصِيْرًا قَالَ اَلَمْ اَقُلْ لَّكُمْ اِنِّيْٓ اَعْلَمُ مِنَ اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ	फरि॒ जब ख़ुशख़॒बरी दने॑वाला आया, उसन॑वह क॒मीस उनक॑ (याकूब॒ क॑) चेहरे॑पर डाल दी, तो वह फरि॒ स॑देखन॑लगा॑ उनहों॑न॑ कहा, 'क॒या मनै॑ तमु॒स॑ नहीं॑ कहा था कि॒ म॑ैअल्लाह स॑वह जानता हूँ॒जो तमु॒ नहीं॑जानत?'	**96**
قَالُوْا يٰٓاَبَانَا اسْتَغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَآ اِنَّا كُنَّا خٰطِـِٕيْنَ	उनहों॑कहा, 'ऐ हमार॑पिता! हमार॑गनु॒हों॑की माफ़ी॒ माँगो॑, हम नशि॒चति रू॒प स॑गनु॒हगार थो॑'	**97**
قَالَ سَوْفَ اَسْتَغْفِرُ لَكُمْ رَبِّيْ اِنَّه هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ	उनहों॑न॑(याकूब॒ न॑) कहा, 'म॑ैअपन॑रब स॑तमु॒हार॑लिए माफ़ी॒ माँगूँ॒गा। नशि॒चति रू॒प स॑वह माफ़॒करन॑वाला, महेरबान ह॒ै॑	**98**

99	तो जब वे यूसुफ़ के (पास) दाख़िल हुए, उसने अपने माता-पिता को गले लगाया और (उनके लिए) जगह तैयार की और कहा, 'मिस्र में दाख़िल हो, इंशा अल्लाह अमन के साथ।'	فَلَمَّا دَخَلُوْا عَلٰى يُوْسُفَ اٰوٰٓى اِلَيْهِ اَبَوَيْهِ وَقَالَ ادْخُلُوْا مِصْرَ اِنْ شَاۤءَ اللّٰهُ اٰمِنِيْنَ
100	और उसने अपने माता-पिता को तख़्त पर बिठाया। और वे सब उसके सामने सजदा करने को झुक गए। और उसने (यूसुफ़ ने) कहा, 'ऐ मेरे पिता! यह मेरे उस पुराने सपने की ताबीर है और निश्चित रूप से मेरे रब ने इसे हक़ीक़त कर दिया। और निश्चित रूप से उसने मेरे साथ अच्छा किया, जब उसने मुझे क़ैद से आज़ाद किया और जब तुम्हें गाँव से लाया, इसके बाद कि शैतान ने मेरे और मेरे भाइयों के बीच (रिश्ते) को ख़राब कर दिया था। निश्चित रूप से मेरा रब जो चाहता है उसके लिए बहुत लतीफ़ है। निश्चित रूप से वह सर्वज्ञ, सर्वज्ञानी है।'	وَرَفَعَ اَبَوَيْهِ عَلَى الْعَرْشِ وَخَرُّوْا لَهٗ سُجَّدًا وَقَالَ يٰٓاَبَتِ هٰذَا تَأْوِيْلُ رُءْيَايَ مِنْ قَبْلُ قَدْ جَعَلَهَا رَبِّيْ حَقًّا وَقَدْ اَحْسَنَ بِيْٓ اِذْ اَخْرَجَنِيْ مِنَ السِّجْنِ وَجَاۤءَ بِكُمْ مِّنَ الْبَدْوِ مِنْۢ بَعْدِ اَنْ نَّزَغَ الشَّيْطٰنُ بَيْنِيْ وَبَيْنَ اِخْوَتِيْ اِنَّ رَبِّيْ لَطِيْفٌ لِّمَا يَشَاۤءُ اِنَّهٗ هُوَ الْعَلِيْمُ الْحَكِيْمُ
101	ऐ मेरे रब! तूने मुझे कुछ हुकूमत दी और मुझे सपनों की ताबीर का कुछ हिस्सा सिखाया। (ऐ रब) आसमानों और ज़मीन का पैदा करने वाला, तू मेरा वली है दुनिया और आख़िरत में, मुझे मुसलमान की हालत में वफ़ात दे और मुझे नेकों के साथ शामिल कर।'	رَبِّ قَدْ اٰتَيْتَنِيْ مِنَ الْمُلْكِ وَعَلَّمْتَنِيْ مِنْ تَأْوِيْلِ الْاَحَادِيْثِ فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ اَنْتَ وَلِيّٖ فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ تَوَفَّنِيْ مُسْلِمًا وَّاَلْحِقْنِيْ بِالصّٰلِحِيْنَ
102	यह उन ग़ैब की ख़बरों में से है जो हमने तुम पर (मुहम्मद) वह्य की; हालाँकि तुम उनके पास नहीं थे, जब उन्होंने अपनी चाल को पक्का करने के लिए इत्तफ़ाक़ किया (यूसुफ़ को कुएँ में डालने के लिए)।	ذٰلِكَ مِنْ اَنْۢبَاۤءِ الْغَيْبِ نُوْحِيْهِ اِلَيْكَ وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ اِذْ اَجْمَعُوْٓا اَمْرَهُمْ وَهُمْ يَمْكُرُوْنَ
103	और ज़्यादातर लोग ईमान नहीं लाएँगे, भले ही तुम कितना चाहो।	وَمَآ اَكْثَرُ النَّاسِ وَلَوْ حَرَصْتَ بِمُؤْمِنِيْنَ
104	और तुम उनसे इसके लिए कोई जज़िया नहीं माँगते। यह तो बस सारी दुनिया के लिए एक नसीहत है।	وَمَا تَسْـَٔلُهُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعٰلَمِيْنَ
105	और आसमानों और ज़मीन में कितनी निशानियाँ (अल्लाह की क़ुदरत की) हैं जिनके पास से वे गुज़रते हैं, फिर भी वे उनसे मुँह फेरे लेते हैं।	وَكَاَيِّنْ مِّنْ اٰيَةٍ فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ يَمُرُّوْنَ عَلَيْهَا وَهُمْ عَنْهَا مُعْرِضُوْنَ
106	और उनमें से ज़्यादातर लोग अल्लाह पर ईमान नहीं लाते, बल्कि वे (उसके साथ) शरीक करते हैं।	وَمَا يُؤْمِنُ اَكْثَرُهُمْ بِاللّٰهِ اِلَّا وَهُمْ مُّشْرِكُوْنَ
107	क्या वे इस बात से बेपरवाह हैं कि अल्लाह का अज़ाब उन्हें घेरे लेगा, या क़ियामत अचानक उनके पास आ जाएगी, जबकि वे नहीं जानते?	اَفَاَمِنُوْٓا اَنْ تَأْتِيَهُمْ غَاشِيَةٌ مِّنْ عَذَابِ اللّٰهِ اَوْ تَأْتِيَهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ
108	कह दो (मुहम्मद), 'यह मेरा रास्ता है, मैं और मेरे साथी यक़ीन के साथ अल्लाह की तरफ़ बुलाते हैं, अल्लाह पाक है, और मैं मुशरिकों में से नहीं हूँ।'	قُلْ هٰذِهٖ سَبِيْلِيْٓ اَدْعُوْٓا اِلَى اللّٰهِ عَلٰى بَصِيْرَةٍ اَنَا وَمَنِ اتَّبَعَنِيْ وَسُبْحٰنَ اللّٰهِ وَمَآ اَنَا مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ

وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ اِلَّا رِجَالًا نُّوْحِيْٓ اِلَيْهِمْ مِّنْ اَهْلِ الْقُرٰى اَفَلَمْ يَسِيْرُوْا فِى الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَلَدَارُ الْاٰخِرَةِ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ اتَّقَوْا اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ	और हमने तुमसे पहले सिर्फ़ मर्दों को ही रसूल बनाकर भेजा, जिन्हें हमने शहरों के लोगों में से वह्य दी। क्या उन्होंने ज़मीन पर सैर नहीं की कि देखें कि उनके पहले वालों का अंजाम कैसा हुआ (जिन्होंने रसूलों को झुठलाया)। और निश्चित रूप से आख़िरत का घर उन लोगों के लिए बेहतर है जो तक़वा रखते हैं। क्या तुम नहीं समझते?	**109**
حَتّٰٓى اِذَا اسْتَيْـَٔسَ الرُّسُلُ وَظَنُّوْٓا اَنَّهُمْ قَدْ كُذِبُوْا جَاءَهُمْ نَصْرُنَا فَنُجِّيَ مَنْ نَّشَاءُ وَلَا يُرَدُّ بَأْسُنَا عَنِ الْقَوْمِ الْمُجْرِمِيْنَ	यहाँ तक कि जब रसूलों ने (अपनी क़ौम के ईमान लाने की) उम्मीद छोड़ दी और यक़ीन कर लिया कि उन्हें झुठलाया गया है, तब हमारी मदद उनके पास आई, फिर जिसे हमने चाहा उसे बचा लिया गया। और हमारा अज़ाब गुनहगार लोगों से टाला नहीं जा सकता।	**110**
لَقَدْ كَانَ فِيْ قَصَصِهِمْ عِبْرَةٌ لِّاُولِى الْاَلْبَابِ مَا كَانَ حَدِيْثًا يُّفْتَرٰى وَلٰكِنْ تَصْدِيْقَ الَّذِيْ بَيْنَ يَدَيْهِ وَتَفْصِيْلَ كُلِّ شَيْءٍ وَّهُدًى وَّرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ	निश्चित रूप से उनकी कहानियों में अक़्ल वालों के लिए इबरत है (अल-क़ुरआन) कोई बनाई हुई कहानी नहीं है, बल्कि इससे पहले की किताबों की तस्दीक़ करता है, हर चीज़ को वाज़ेह करता है, और ईमान लाने वालों के लिए हिदायत और रहमत है।	**111**

छंदों की संख़्या	اَلرَّعْد	मदनी
४३	अर-रअद - 13	मदनी

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अर-रअद (गरज़ना)

1	अलफ़ि लाम मीम रा ये कताब (क़ुरान) की आयतें है और तमुहार परवरदगार की तरफ स जो कछु तमुहार पास नाज़लि कयि गया ह बलिक़ुल ठीक ह मगर बहतुरे लोग ईमान नहीं लाते	الٓمّٓرٰ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ وَالَّذِيْٓ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ الْحَقُّ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُوْنَ
2	ख़ुदा वही तो ह जसिन आसमानों को जनिह तमु दखेत हो बग़रै सतुनू (खमबो) क उठाकर खड़ा कर दयि फरि अरश (क बनान) पर आमादा हुआ और सरूज और चादँ को (अपना) ताबदेार बनाया कि हर एक वकत मक़ुररा तक चला करत ह वही (दनुयि क) हर एक काम का इनतज़ाम करता ह और इसी ग़रज़ स कि तमु लोग अपन परवरदगार क सामन हाज़रि होन का यक़ीन करो	اَللّٰهُ الَّذِيْ رَفَعَ السَّمٰوٰتِ بِغَيْرِ عَمَدٍ تَرَوْنَهَا ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ كُلٌّ يَّجْرِيْ لِاَجَلٍ مُّسَمًّى يُدَبِّرُ الْاَمْرَ يُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ بِلِقَاۤءِ رَبِّكُمْ تُوْقِنُوْنَ
3	(अपनी) आयत तफसीलदार बयान करता ह और वह वही ह जसिन ज़मीन को बछिाया और उसम (बड़ बड़) अटल पहाड़ और दरयि बनाए और उसन हर तरह क मवेों की दो दो कसिम पदैा की (जसै खटट मीठ) वही रात (क परद) स दनि को ढाक दता ह इसम शक नहीं कि जो लोग और ग़ौर व फकि़र करत ह उनक लिए इसम (कदुरत खदुा की) बहतुरी नशिानयिा ँह	وَهُوَ الَّذِيْ مَدَّ الْاَرْضَ وَجَعَلَ فِيْهَا رَوَاسِيَ وَاَنْهٰرًا وَمِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ جَعَلَ فِيْهَا زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ يُغْشِي الَّيْلَ النَّهَارَ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ
4	और खतुमों (खजतू) क दरखत की एक जड़ और दो याख और बाज़ अकेला (एक ही याख़ का) हालाँकि सब एक ही पानी स सीच जात ह और फलों म बाज़ को बाज़ पर हम तरजीह दते ह बशेक जो लोग अक़ल वाल ह उनक लिए इसम (कदुरत खदुा की) बहतुरी नशिानयिा ँह	وَفِي الْاَرْضِ قِطَعٌ مُّتَجٰوِرٰتٌ وَّجَنّٰتٌ مِّنْ اَعْنَابٍ وَّزَرْعٌ وَّنَخِيْلٌ صِنْوَانٌ وَّغَيْرُ صِنْوَانٍ يُّسْقٰى بِمَاۤءٍ وَّاحِدٍ وَنُفَضِّلُ بَعْضَهَا عَلٰى بَعْضٍ فِى الْاُكُلِ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ
5	और अगर तमुह (कसिी बात पर) ताजज़बु होता ह तो उन कफ़ुफ़ारों को य क़ौल ताजज़बु की बात ह कि जब हम (सड़गल कर) मटिटी हो जाएंग तो कया हम (फरि दोबारा) एक नई जहननमु म आएँग य वही लोग ह जनिहोंन अपन परवरदगार क साथ कफ़ुर कयि और यही वह लोग ह जनिकी गरदनों म (क़यामत क दनि) तौक़ पड़ होग और यही लोग जहननमी ह कि य इसम हमशेा रहेग	وَاِنْ تَعْجَبْ فَعَجَبٌ قَوْلُهُمْ ءَاِذَا كُنَّا تُرٰبًا ءَاِنَّا لَفِيْ خَلْقٍ جَدِيْدٍ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ وَاُولٰٓئِكَ الْاَغْلٰلُ فِيْٓ اَعْنَاقِهِمْ وَاُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ

وَيَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالسَّيِّئَةِ قَبْلَ الْحَسَنَةِ وَقَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمُ الْمَثُلٰتُ وَاِنَّ رَبَّكَ لَذُوْ مَغْفِرَةٍ لِّلنَّاسِ عَلٰى ظُلْمِهِمْ وَاِنَّ رَبَّكَ لَشَدِيْدُ الْعِقَابِ	और (ऐ रसूल) य॒लोग तमु॒ स॒भलाई क॒क़बल॒ ही बरु॒ाई (अज़ाब) की जल॒दी मचा रह॒े ह॒ैहालाँकि॒ उनक॒े पहल॒े (बहतु स॒े लोगों की) सजाएं हो चकु॒ी ह॒ैऔर इसम॒ें शक॒ नहीं की तमु॒हारा परवरदगिार बावजदू॒ उनकी शरारत क॒े लोगों पर बड़ा बख़शि॒श (करम) वाला ह॒ैऔर इसम॒ें भी शक॒ नहीं कि॒ तमु॒हारा परवरदगिार यक़ीनन सख़त॒ अज़ाब वाला ह॒ै	**6**
وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْهِ اٰيَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ اِنَّمَآ اَنْتَ مُنْذِرٌ وَّلِكُلِّ قَوْمٍ هَادٍ	और वो लोग काफरि ह॒ैकहत॒ े ह॒ैकि॒ इस शख़श॒ (मोहम॒मद) पर उसक॒े परवरदगिार की तरफ स॒े कोई नशिानी (हमारी मरज़ी क॒े मतुाबकि॒) क॒यों नहीं नाज़लि की जाती ऐ रसूल तमु॒ तो सरि॒फ़ (ख़ौफ॒ खद॒ा स॒े) डरान॒े वाल॒े हो	**7**
اَللّٰهُ يَعْلَمُ مَا تَحْمِلُ كُلُّ اُنْثٰى وَمَا تَغِيْضُ الْاَرْحَامُ وَمَا تَزْدَادُ وَكُلُّ شَيْءٍ عِنْدَهٗ بِمِقْدَارٍ	और हर क़ौम क॒े लएि एक हदिायत करन॒े वाला ह॒ैहर मादा जो कि॒ पटे म॒ें लएि हए॒ ह॒ैऔर उसको खद॒ा ही जानता ह॒ैव बचच॒ा दानयिों॒ का घटना बढ़ना (भी वही जानता ह॒ै) और हर चीज़ उसक॒े नज़दीक॒ एक अनदा॒ज स॒े ह॒ै	**8**
عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْكَبِيْرُ الْمُتَعَالِ	(वही) बातनि (छपु॒ े हवु॒े) व ज़ाहरि का जानन॒े वाला (सब स॒े) बड़ा और आलीशान ह॒ै	**9**
سَوَاءٌ مِّنْكُمْ مَّنْ اَسَرَّ الْقَوْلَ وَمَنْ جَهَرَ بِهٖ وَمَنْ هُوَ مُسْتَخْفٍ بِالَّيْلِ وَسَارِبٌ بِالنَّهَارِ	तमु॒ लोगों म॒ें जो कोई चपु॒क॒े स॒े बात कह॒े और जो शख़श॒ ज़ोर स॒े पकु॒ार क॒े बोल॒े और जो शख़श॒ रात की तारीक़ी (अधेरे॒) म॒ें छपु॒ा बठै॒ा हो और जो शख़श॒ दनि॒ दहाड॒े चला जा रहा हो	**10**
لَهٗ مُعَقِّبٰتٌ مِّنْۢ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهٖ يَحْفَظُوْنَهٗ مِنْ اَمْرِ اللّٰهِ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُغَيِّرُ مَا بِقَوْمٍ حَتّٰى يُغَيِّرُوْا مَا بِاَنْفُسِهِمْ وَاِذَآ اَرَادَ اللّٰهُ بِقَوْمٍ سُوْٓءًا فَلَا مَرَدَّ لَهٗ وَمَا لَهُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ مِنْ وَّالٍ	(उसक॒े नज़दीक) सब बराबर ह॒ै (आदमी कसिी हालत म॒ें हो मगर) उस अकले॒ क॒े लएि उसक॒े आग॒े उसक॒े पीछ॒े उसक॒े नगिहेबान (फरशि॒त॒े) मक़ुररर ह॒ैकि॒ उसको हक़मु ख़द॒ा स॒े हफिाज़त करत॒े ह॒ैजो (नअेमत) कसिी क़ौम को हासलि हो बशेक वह लोग खद॒ अपनी नफ़सानी हालत म॒ें तग़यय॒रु न डाल॒े ख़द॒ा हरगज़ि तग़यय॒रु नहीं डाला करता और जब ख़द॒ा कसिी क़ौम पर बरु॒ाई का इरादा करता ह॒ैतो फरि॒ उसका कोई टालन॒े वाला नहीं और न उसका उसक॒े सवि॒ा कोई वाली और (सरपरसत॒) ह॒ै	**11**
هُوَ الَّذِيْ يُرِيْكُمُ الْبَرْقَ خَوْفًا وَّطَمَعًا وَّيُنْشِئُ السَّحَابَ الثِّقَالَ	वह वही तो ह॒ैजो तमु॒ह॒े डरान॒े और लालच दने॒े क॒े वासत॒े बजिली की चमक दखि॒ाता ह॒ैऔर पानी स॒े भर॒े बोझल बादलों॒ को पदै॒ा करता ह॒ै	**12**
وَيُسَبِّحُ الرَّعْدُ بِحَمْدِهٖ وَالْمَلٰٓئِكَةُ مِنْ خِيْفَتِهٖ وَيُرْسِلُ الصَّوَاعِقَ فَيُصِيْبُ بِهَا مَنْ يَّشَآءُ وَهُمْ يُجَادِلُوْنَ فِى اللّٰهِ وَهُوَ شَدِيْدُ الْمِحَالِ	और ग़रज़ और फरशि॒त॒े उसक॒े ख़ौफ स॒े उसकी हमद॒ो सना की तसबी॒ह कयि॒ा करत॒े ह॒ैवही (आसमान स॒े) बजिलयिों॒ को भजेता ह॒ैफरि॒ उस॒ जसि पर चाहता ह॒ैगरि॒ भी दत॒ेा ह॒ैऔर य॒े लोग ख़द॒ा क॒े बार॒े म॒ें (ख़वामाख़वाह) झगड़॒ करत॒े ह॒ैहालाँकि॒ वह बड़ा सख़त॒ क़ूवत॒ वाला ह॒ै	**13**
لَهٗ دَعْوَةُ الْحَقِّ وَالَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ لَا يَسْتَجِيْبُوْنَ لَهُمْ بِشَيْءٍ اِلَّا كَبَاسِطِ كَفَّيْهِ اِلَى الْمَآءِ لِيَبْلُغَ فَاهُ وَمَا هُوَ بِبَالِغِهٖ وَمَا دُعَآءُ الْكٰفِرِيْنَ اِلَّا فِيْ ضَلٰلٍ	(मसु॒ीबत क॒े वक़त॒) उसी का (पकु॒ारना) ठीक पकु॒ारना ह॒ैऔर जो लोग उस॒ छोड़कर (दसू॒रों को) पकु॒ारत॒े ह॒ैवह तो उनकी कछु॒ सनु॒त॒े तक नहीं मगर जसि तरह कोई शख़श॒ (बग़ैर उँगलयिाँ मलिाए) अपनी दोनों॒ हथलेयिाँ॒ पानी की तरफ फलैाए ताकि॒ पानी उसक॒े महुँ॒ म॒ें पहचुँ॒ जाए हालाँकि॒ वह कसिी तरह पहचुँ॒न॒े वाला नहीं और (इसी तरह) काफरिों॒ की दआु॒ गमु॒राही म॒ें (पड़ी बहकी फरि॒ा करती ह॒ै)	**14**

وَلِلّٰهِ يَسْجُدُ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ طَوْعًا وَّكَرْهًا وَّظِلٰلُهُمْ بِالْغُدُوِّ وَالْاٰصَالِ	**15**	और आसमानों और ज़मीन में (मख़लक़ात से) जो कोई भी है ख़ुशी से या ज़बरदस्ती सब (अल्लाह के आगे सर बसजद्द है और (इसी तरह) उनके साए भी सुबह व शाम (सजदा करते हैं) (15) (सजदा)
قُلْ مَنْ رَّبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ قُلِ اللّٰهُ قُلْ اَفَاتَّخَذْتُمْ مِّنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَآءَ لَا يَمْلِكُوْنَ لِاَنْفُسِهِمْ نَفْعًا وَّلَا ضَرًّا قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الْاَعْمٰى وَالْبَصِيْرُ اَمْ هَلْ تَسْتَوِي الظُّلُمٰتُ وَالنُّوْرُ اَمْ جَعَلُوْا لِلّٰهِ شُرَكَآءَ خَلَقُوْا كَخَلْقِهٖ فَتَشَابَهَ الْخَلْقُ عَلَيْهِمْ قُلِ اللّٰهُ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ وَّهُوَ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ	**16**	(ऐ रसूल) तुम पूछो कि (आख़िर) आसमान और ज़मीन का परवरदिगार कौन है (ये कया जवाब दोगे) तुम कह दो कि अल्लाह है (ये भी कह दो कि कया तुमने उसके सिवा दूसरे कारसाज़ बना रखे हैं जो अपने लिए आप न तो नफ़ पर क़ाबू रखते हैं न ज़रर (नुकसान) पर (ये भी तो) पूछो कि भला (कहीं) अनधा और आँखों वाला बराबर हो सकता है (हरगज़ि नही) (या कही) अंधेरे और उजाला बराबर हो सकता है (हरगज़ि नही) इन लोगों ने ख़ुदा के कुछ शरीक ठहरा रखे हैं कया उनहोंने ख़ुदा ही की सी मख़लक़ पैदा कर रखी है जिनके सबब मख़लक़ात उन पर मशुतबा हो गई है (और उनकी ख़ुदाई के क़ायल हो गए) तुम कह दो कि ख़ुदा ही हर चीज़ का पैदा करने वाला और वही यकता और सपिर (सब पर) ग़ालबि है
اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَسَالَتْ اَوْدِيَةٌۢ بِقَدَرِهَا فَاحْتَمَلَ السَّيْلُ زَبَدًا رَّابِيًا وَمِمَّا يُوْقِدُوْنَ عَلَيْهِ فِي النَّارِ ابْتِغَآءَ حِلْيَةٍ اَوْ مَتَاعٍ زَبَدٌ مِّثْلُهٗ كَذٰلِكَ يَضْرِبُ اللّٰهُ الْحَقَّ وَالْبَاطِلَ فَاَمَّا الزَّبَدُ فَيَذْهَبُ جُفَآءً وَاَمَّا مَا يَنْفَعُ النَّاسَ فَيَمْكُثُ فِي الْاَرْضِ كَذٰلِكَ يَضْرِبُ اللّٰهُ الْاَمْثَالَ	**17**	उसी ने आसमान से पानी बरसाया फरि अपने अपने अनदाज़ से नाले बह नकिले फरि पानी के रेले पर (जोश खाकर) फूला हुआ झाग (फने) आ गया और उस चीज़ (धात) से भी जसि ये लोग ज़ेवर या कोई असबाब बनाने की ग़रज़ से आग में तपाते हैं ईसी तरह फने आ जाता है (फरि अलग हो जाता है) ये ख़ुदा हक़ व बातलि की मसल बयान फरमाता है (कि पानी हक़ की मसिाल और फने बातलि की) ग़रज़ फने तो ख़ुशक होकर ग़ायब हो जाता है जसिसे लोगों को नफा पहचुँता है (पानी) वह ज़मीन में ठहरा रहता है ये ख़ुदा (लोगों के समझाने के वास्ते) मसल बयान फरमाता है
لِلَّذِيْنَ اسْتَجَابُوْا لِرَبِّهِمُ الْحُسْنٰى وَالَّذِيْنَ لَمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَهٗ لَوْ اَنَّ لَهُمْ مَّا فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا وَّمِثْلَهٗ مَعَهٗ لَافْتَدَوْا بِهٖ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ سُوْٓءُ الْحِسَابِ وَمَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ وَبِئْسَ الْمِهَادُ	**18**	जनि लोगों ने अपने परवरदिगार का कहना माना उनके लिए बहतु बहेतरी है और जनि लोगों ने उसका कहा न माना (क़यामत में उनकी ये हालत होगी) कि अगर उनहें रुए ज़मीन के सब ख़ज़ाने बलक़ि उसके साथ इतना और मलि जाए तो ये लोग अपनी नजात के बदले उसको (ये ख़ुशी) दे डालें (मगर फरि भी कोई फायदा नही) यही लोग हैं जनिसे बरुी तरह हसिाब लयिा जाएगा और आख़रि उन का ठकिाना जहनन्मु है और वह कया बरुी जगह है
اَفَمَنْ يَّعْلَمُ اَنَّمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ الْحَقُّ كَمَنْ هُوَ اَعْمٰى اِنَّمَا يَتَذَكَّرُ اُولُوا الْاَلْبَابِ	**19**	(ऐ रसूल) भला वह शख़श जो ये जानता है कि जो कछु तुमहार परवरदिगार की तरफ से तुम पर नाज़लि हुआ है बलिकुल ठीक है कभी उस शख़श के बराबर हो सकता है जो मतुलकि (पूरा) अंधा है (हरगज़ि नही)
الَّذِيْنَ يُوْفُوْنَ بِعَهْدِ اللّٰهِ وَلَا يَنْقُضُوْنَ الْمِيْثَاقَ	**20**	इससे तो बस कछु समझदार लोग ही नसीहत हासलि करते हैं वह लोग हैं कि ख़ुदा से जो एहद कयिा उसे पूरा करते हैं और अपने पैमान को नहीं तोड़ते
وَالَّذِيْنَ يَصِلُوْنَ مَآ اَمَرَ اللّٰهُ بِهٖٓ اَنْ يُّوْصَلَ وَيَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ وَيَخَافُوْنَ سُوْٓءَ الْحِسَابِ	**21**	(या) वह लोग हैं कि जनि (ताल्लक़ात) के क़ायम रखने का ख़ुदा ने हुकम दयिा उनहें क़ायम रखते हैं और अपने परवरदिगार से डरते हैं और (क़यामत के दनि) बरुी तरह हसिाब लेि जाने से ख़ौफ खाते हैं

وَالَّذِيْنَ صَبَرُوا ابْتِغَاءَ وَجْهِ رَبِّهِمْ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاَنْفَقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا وَّعَلَانِيَةً وَّيَدْرَءُوْنَ بِالْحَسَنَةِ السَّيِّئَةَ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عُقْبَى الدَّارِ	**22**	और (य) वह लोग ह जो अपन परवरदगार की ख़शनद्ी हासलि करन की ग़रज़ स (जो मसीबत उन पर पड़ी ह) झले गए और पाबनद्ी स नमाज़ अदा की और जो कछ हमन उनह रोज़ी दी थी उसम स छपाकर और ख़ल कर ख़द्दा की राह म ख़रच कयि और य लोग बय़ई को भी भलाई स दफा करत ह -यही लोग ह जनिक लिए आख़रित की ख़बी मख़सस ह
جَنّٰتُ عَدْنٍ يَّدْخُلُوْنَهَا وَمَنْ صَلَحَ مِنْ اٰبَآئِهِمْ وَاَزْوَاجِهِمْ وَذُرِّيّٰتِهِمْ وَالْمَلٰٓئِكَةُ يَدْخُلُوْنَ عَلَيْهِمْ مِّنْ كُلِّ بَابٍ	**23**	(यानी) हमशेा रहन क बाग़ जनिम वह आप जाएगे और उनक बाप, दादाओं, बीवयिो और उनकी औलाद म स जो लोग नकेो कार ह (वह सब भी) और फरशित बहेशत क हर दरवाज स उनक पास आएग
سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ بِمَا صَبَرْتُمْ فَنِعْمَ عُقْبَى الدَّارِ	**24**	और सलाम अलकैम (क बाद कहगे) कि (दनयिा म) तमन सबर कयि (य उसी का सलि ह दखेो) तो आख़रित का घर कसैा अचछा ह
وَالَّذِيْنَ يَنْقُضُوْنَ عَهْدَ اللّٰهِ مِنْ بَعْدِ مِيْثَاقِهٖ وَيَقْطَعُوْنَ مَآ اَمَرَ اللّٰهُ بِهٖٓ اَنْ يُّوْصَلَ وَيُفْسِدُوْنَ فِى الْاَرْضِ اُولٰٓئِكَ لَهُمُ اللَّعْنَةُ وَلَهُمْ سُوْٓءُ الدَّارِ	**25**	और जो लोग ख़द्दा स एहद व पमैान को पकका करन क बाद तोड़ डालत ह और जनि (तालकुात बाहमी) क क़ायम रखन का ख़द्दा न हकुम दयि ह उनह क़तआ (तोड़त) करत ह और रए ज़मीन पर फ़साद फलैात फरित ह ऐस ही लोग ह जनिक लिए लानत ह और ऐस ही लोगो क वासत बड़ा घर (जहनन्म) ह
اَللّٰهُ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ وَفَرِحُوْا بِالْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا فِى الْاٰخِرَةِ اِلَّا مَتَاعٌ	**26**	और ख़द्दा ही जसिक लिए चाहता ह रोज़ी को बढ़ा दता ह और जसिक लिए चाहता ह तग करता ह और य लोग दनयिा की (चनद रोज़ा) ज़निदगी पर बहत नहिाल ह हालाकि दनयिावी ज़निदगी (नईम) आख़रित क मक़ाबलि म बलिक़ल बहेकीक़त चीज़ ह
وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْهِ اٰيَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ قُلْ اِنَّ اللّٰهَ يُضِلُّ مَنْ يَّشَآءُ وَيَهْدِيْٓ اِلَيْهِ مَنْ اَنَابَ	**27**	और जनि लोगो न कफ़ुर एख़तयिार कयि वह कहत ह कि उस (शख़स यानि तम) पर हमारी ख़वाहशि क मताबफ़कि कोई मोजज़िा उसक परवरदगार की तरफ स क्यो नहीं नाज़लि होता तम उनस कह दो कि इसम शक नहीं कि ख़द्दा जसि चाहता ह गमराही म छोड़ दता ह
اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَتَطْمَئِنُّ قُلُوْبُهُمْ بِذِكْرِ اللّٰهِ اَلَا بِذِكْرِ اللّٰهِ تَطْمَئِنُّ الْقُلُوْبُ	**28**	और जसिन उसकी तरफ रज़ू की उस अपनी तरफ पहचँन की राह दखिाता ह (य) वह लोग ह जनिहोन ईमान कबलू कयि और उनक दलिो को ख़द्दा की चाह स तसलली हआ करती ह
اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ طُوْبٰى لَهُمْ وَحُسْنُ مَاٰبٍ	**29**	जनि लोगो न ईमान क़बलू कयि और अचछ अचछ काम कएि उनक वासत (बहेशत म) तबूा (दरख़त) और ख़शहाली और अचछा अनज़ाम ह
كَذٰلِكَ اَرْسَلْنٰكَ فِىْٓ اُمَّةٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهَآ اُمَمٌ لِّتَتْلُوَا عَلَيْهِمُ الَّذِيْٓ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ وَهُمْ يَكْفُرُوْنَ بِالرَّحْمٰنِ قُلْ هُوَ رَبِّيْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَاِلَيْهِ مَتَابِ	**30**	(ऐ रसलू जसि तरह हमन और पैामबर भजे थ) उसी तरह हमन तमको उस उममत म भजेा ह जसिस पहल और भी बहत सी उममत गज़र चकुी ह -ताकि तम उनक सामन जो क़रान हमन वही क ज़रए स तमहार पास भजेा ह उनह पढ़ कर सना दो और य लोग (कछ तमहार ही नहीं बलक़ सरि स) ख़द्दा ही क मनुकरि ह तम कह दो कि वही मरेा परवरदगार ह उसक सवा कोई माबदू नहीं म उसी पर भरोसा रखता हूँ और उसी तरफ रज़ू करता हूँ

وَلَوْ اَنَّ قُرْاٰنًا سُيِّرَتْ بِهِ الْجِبَالُ اَوْ قُطِّعَتْ بِهِ الْاَرْضُ اَوْ كُلِّمَ بِهِ الْمَوْتٰى بَلْ لِّلّٰهِ الْاَمْرُ جَمِيْعًا اَفَلَمْ يَايْـَٔسِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنْ لَّوْ يَشَاۤءُ اللّٰهُ لَهَدَى النَّاسَ جَمِيْعًا وَلَا يَزَالُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا تُصِيْبُهُمْ بِمَا صَنَعُوْا قَارِعَةٌ اَوْ تَحُلُّ قَرِيْبًا مِّنْ دَارِهِمْ حَتّٰى يَأْتِيَ وَعْدُ اللّٰهِ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُخْلِفُ الْمِيْعَادَ	**31**	और अगर कोई ऐसा क़ुरान (भी नाज़िल होता) जिसकी बरकत से पहाड़ (अपनी जगह) चल खड़े होते या उसकी वजह से ज़मीन (की मसाफ़त (दूरी)) तय की जाती और उसकी बरकत से मुर्दे बोल उठते (तो भी ये लोग मानने वाले न थे) बल्कि सच यूँ है कि सब काम का एख़्तेयार ख़ुदा ही को है तो क्या अभी तक ईमानदारों को चैन नहीं आया कि अगर ख़ुदा चाहता तो सब लोगों की हिदायत कर देता और जिन लोगों ने कुफ़्र एख़्तेयार किया उन पर उनकी करतूत की सज़ा में कोई (न कोई) मुसीबत पड़ती ही रहेगी या (उन पर पड़ी) तो उनके घरों के आस पास (ग़रज़) नाज़िल होगी (ज़रूर) यहाँ तक कि ख़ुदा का वायदा (फतहे मक्का) पूरा हो कर रहे और इसमें शक नहीं कि ख़ुदा हरगिज़ ख़िलाफ़े वायदा नहीं करता
وَلَقَدِ اسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَاَمْلَيْتُ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا ثُمَّ اَخَذْتُهُمْ فَكَيْفَ كَانَ عِقَابِ	**32**	और (ऐ रसूल) तुमसे पहले भी बहुतेरे पैग़म्बरों की हँसी उड़ाई जा चुकी है तो मैंने (चन्द रोज़) काफ़िरों को मोहलत दी फिर (आख़िर कार) हमने उनको ले डाला फिर (तू क्या पूछता है कि) हमारा अज़ाब कैसा था
اَفَمَنْ هُوَ قَاۤىِٕمٌ عَلٰى كُلِّ نَفْسٍۢ بِمَا كَسَبَتْ وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ شُرَكَاۤءَ قُلْ سَمُّوْهُمْ اَمْ تُنَبِّـُٔوْنَهٗ بِمَا لَا يَعْلَمُ فِى الْاَرْضِ اَمْ بِظَاهِرٍ مِّنَ الْقَوْلِ بَلْ زُيِّنَ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا مَكْرُهُمْ وَصُدُّوْا عَنِ السَّبِيْلِ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ هَادٍ	**33**	क्या जो (ख़ुदा) हर एक शख़्श के आमाल की ख़बर रखता है (उनको यूँ ही छोड़ देगा हरगिज़ नही) और उन लोगों ने ख़ुदा के (दूसर दूसर) शरीक ठहराए (ऐ रसूल तुम उनसे कह दो कि तुम आख़िर उनके नाम तो बताओ या तुम ख़ुदा को ऐसे शरीको की ख़बर देते हो जिनको वह जानता तक नहीं कि वह ज़मीन में (किधर बसते) है या (निरी ऊपर से बात बनाते हे बल्कि (असल ये है कि) काफ़िरों को उनकी मक्कारियाँ भली दिखाई गई है और वह (गोया) राहे रासत से रोक दिए गए है और जिसे शख़्श को ख़ुदा गुमराही में छोड़ दे तो उसका कोई हिदायत करने वाला नहीं
لَهُمْ عَذَابٌ فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَشَقُّ وَمَا لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ وَّاقٍ	**34**	इन लोगों के वास्ते दुनियावी ज़िन्दगी में (भी) अज़ाब है और आख़िरत का अज़ाब तो यक़ीनी और बहुत सख़्त खुलने वाला है (और) (फिर) ख़ुदा (के ग़ज़ब) से उनको कोई बचाने वाला (भी) नहीं
مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِيْ وُعِدَ الْمُتَّقُوْنَ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ اُكُلُهَا دَاۤىِٕمٌ وَّظِلُّهَا تِلْكَ عُقْبَى الَّذِيْنَ اتَّقَوْا وَّعُقْبَى الْكٰفِرِيْنَ النَّارُ	**35**	जिस बाग़ (बहेश्त) का परहेज़गारों से वायदा किया गया है उसकी सिफत ये है कि उसके नीचे नहरें जारी होगी उसके मेवे सदाबहार और ऐसे ही उसकी छाँव भी ये अनजाम है उन लोगों को जो (दुनिया में) परहेज़गार थे और काफ़िरों का अनजाम (जहन्नुम की) आग है
وَالَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَفْرَحُوْنَ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ وَمِنَ الْاَحْزَابِ مَنْ يُّنْكِرُ بَعْضَهٗ قُلْ اِنَّمَآ اُمِرْتُ اَنْ اَعْبُدَ اللّٰهَ وَلَآ اُشْرِكَ بِهٖ اِلَيْهِ اَدْعُوْا وَاِلَيْهِ مَاٰبِ	**36**	और (ए रसूल) जिन लोगों को हमने किताब दी है वह तो जो (एहकाम) तुम्हारे पास नाज़िल किए गए है सब ही से ख़ुश होते है और बाज़ फ़िरक़े उसकी बातों से इनकार करते है तुम (उनसे) कह दो कि (तुम मानो या न मानो) मुझे तो ये हुक्म दिया गया है कि मैं ख़ुदा ही की इबादत करूँ और किसी को उसका शरीक न बनाऊ मैं (सब को) उसी की तरफ बुलाता हूँ और हर शख़्श को हरि फिर कर उसकी तरफ जाना है

وَكَذٰلِكَ اَنْزَلْنٰهُ حُكْمًا عَرَبِيًّا وَلَئِنِ اتَّبَعْتَ اَهْوَاءَهُمْ بَعْدَمَا جَاءَكَ مِنَ الْعِلْمِ مَا لَكَ مِنَ اللّٰهِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا وَاقٍ	**37**	और यूँहमन`उस क़ुरान को अरबी (ज़बान) का फरमान नाज़लि फरमाया और (ऐ रसूल) अगर कहीं तमुन`इसक`बाद को तमुहार` पास इलम़ (क़ुरान) आ चुका उन की नफसयिानी ख़वाहशिों की परैवी कर ली तो (याद रखो कि) फरि ख़ुदा की तरफ स`ेन कोई तमुहारा सरपरसत़ होगा न कोई बचान`वाला
وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا رُسُلًا مِّنْ قَبْلِكَ وَجَعَلْنَا لَهُمْ اَزْوَاجًا وَّذُرِّيَّةً وَمَا كَانَ لِرَسُوْلٍ اَنْ يَّاْتِيَ بِاٰيَةٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ لِكُلِّ اَجَلٍ كِتَابٌ	**38**	और हमन`ेतमुस`पहल`ेऔर (भी) बहतुर`ेपऱैामब़र भज`ेऔर हमन` उनको बीवयिाँ भी दी और औलाद (भी अता की) और कसिी पऱैामब़र की य`ेमजाल न थी कि कोई मौजज़ा ख़ुदा की इजाज़त क`ेबगरै ला दखिाए हर एक वकत़ (मौऊद) क`ेलएि (हमार`ेयहाँ) एक (क़ुसिम़ की) तहरीर (होती) ह`ै
يَمْحُوا اللّٰهُ مَا يَشَاءُ وَيُثْبِتُ وَعِنْدَه اُمُّ الْكِتٰبِ	**39**	फरि इसम`ेस`ेख़ुदा जसिको चाहता ह`ैमटिा दतेा ह`ैऔर (जसिको चाहता ह`ैबाक़ी रखता ह`ैऔर उसक`ेपास असल कताब (लौह` महफ़ूज़) मौजदू ह`ै
وَاِنْ مَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ الَّذِيْ نَعِدُهُمْ اَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَاِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلٰغُ وَعَلَيْنَا الْحِسَابُ	**40**	और (ए रसूल) जो जो वायद` (अज़ाब वगरैह क) हम उन कफ़ुफ़ारों स`ेकरत`ेह`ैचाह, उनम`ेस`ेबाज़ तमुहार`ेसामन`ेपूर`ेकर दखिाएँ`या तमुह`ैउसस`ेपहल`ेउठा ल`ेबहर हाल तमु पर तो सरिफ़ एहकाम का पहचुा दनेा फरज़ ह`ै
اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّا نَاْتِي الْاَرْضَ نَنْقُصُهَا مِنْ اَطْرَافِهَا وَاللّٰهُ يَحْكُمُ لَا مُعَقِّبَ لِحُكْمِه وَهُوَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ	**41**	और उनस`ेहसिाब लनेा हमारा काम ह`ैक्या उन लोगों न`ेय`ेबात न दखेी कि हम ज़मीन को (फ़तुहूात`ेइसलाम स) उसक`ेतमाम एतराफ (चारो ओर) स`े(सवाह कफ़ुर म) घटात`ेचल`ेआत`ेह`ैऔर ख़ुदा जो चाहता ह`ैहुकम़ दतेा ह`ैउसक`ेहुकम़ का कोई टालन` वाला नहीं और बहतु जलद़ हसिाब लने`ेवाला ह`ै
وَقَدْ مَكَرَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَلِلّٰهِ الْمَكْرُ جَمِيْعًا يَعْلَمُ مَا تَكْسِبُ كُلُّ نَفْسٍ وَسَيَعْلَمُ الْكُفّٰرُ لِمَنْ عُقْبَى الدَّارِ	**42**	और जो लोग उन (कफ़ुफ़ार मकक़) स`ेपहल`ेहो गज़र`ेह`ैउन लोगों न`ेभी पऱैामब़रों की मख़ुालफत म`ेबड़ी बड़ी तदबीर`ेकी तो (ख़ाक न हो सका क़योंकि) सब तदबीर`ेतो ख़ुदा ही क`ेहाथ म`ेह`ै जो शख़श जो कछु करता ह`ैवह उस`ेख़ूब जानता ह`ैऔर अनक़रीब कफ़ुफ़ार को भी मालमू हो जाएगा कि आख़रित की ख़ूबी कसि क`ेलएि ह`ै
وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَسْتَ مُرْسَلًا قُلْ كَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا بَيْنِيْ وَبَيْنَكُمْ وَمَنْ عِنْدَه عِلْمُ الْكِتٰبِ	**43**	और (ऐ रसूल) काफरि लोग कहत`ेह`ैकि तमु पऱैामब़र नही हो तो तमु (उनस) कह दो कि मर`ेऔर तमुहार`ेदरमयिान मरी रसिालत की गवाही क`ेवास`ेत`ेख़ुदा और वह शख़श जसिक`ेपास (आसमानी) कताब का इलम़ ह`ैकाफी ह`ै

छंदों की संख्या	إِبْرَاهِيم	मक्की
५२	इब्राहिमि - 14	مكية

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

इब्राहिमि (इब्राहीम)

الٓرٰ ۗ كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ اِلَيْكَ لِتُخْرِجَ النَّاسَ مِنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ۙ بِاِذْنِ رَبِّهِمْ اِلٰى صِرَاطِ الْعَزِيْزِ الْحَمِيْدِ	अलफ़ि॰ लाम रा। (यह) कताब ह॰ै जो हमन॰े तमु॒ पर (मुहम्मद) उतारी ताकि॰ तमु॒ इंसानों॰ को अंधरों॰ स॰े उजाल॰े की ओर निकालो, अपन॰े रब की इजाज़त स॰े, (यानी) उस रास्त॰े की ओर जो महाशक्तशिाली, सरव॒प्रशंसति रब का ह॰ै	1
اللّٰهِ الَّذِيْ لَهٗ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ ۗ وَوَيْلٌ لِّلْكٰفِرِيْنَ مِنْ عَذَابٍ شَدِيْدِ	अल॒लाह, जसिका ह॰ै जो कछु आसमानों॰ म॰ें ह॰ै और जो कछु ज़मीन पर ह॰ै और काफ़रिों॰ क॰े लएि हाय (वनिाश) ह॰ै, क॰ोंकि (उनक॰े लएि) बहत॒ सख़्त अज़ाब ह॰ै	2
الَّذِيْنَ يَسْتَحِبُّوْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا عَلَى الْاٰخِرَةِ وَيَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَيَبْغُوْنَهَا عِوَجًا ۗ اُولٰٓئِكَ فِىْ ضَلٰلٍۢ بَعِيْدٍ	(यानी) व॰े लोग जो दन॒यिा की ज़िंदगी को आख़रित स॰े ज़्यादा पसंद करत॰े ह॰ैं और (लोगों॰ को) अल॒लाह क॰े रास्त॰े स॰े रोकत॰े ह॰ैं और उसम॰ें टेढ़ापन चाहत॰े ह॰ों व॰े लोग बहत॒ दू॒र की गमु॒राही म॰ें ह॰ैं	3
وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا بِلِسَانِ قَوْمِهٖ لِيُبَيِّنَ لَهُمْ ۖ فَيُضِلُّ اللّٰهُ مَنْ يَّشَآءُ وَيَهْدِىْ مَنْ يَّشَآءُ ۗ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ	और हमन॰े कोई रसूल नहीं भजेा, सवािय इसक॰े कि॰ वह अपनी कौम की ज़बान म॰ें (बात कर), ताकि॰ वह उनक॰े लएि (हक़ को) साफ़-साफ़ बयान कर द॰े तो अल॒लाह जसि॰े चाहता ह॰ै गमु॒राह करता ह॰ै, और जसि॰े चाहता ह॰ै हदिायत दते॰ा ह॰ै वह महाशक्तशिाली, बहत॒ हकिमत वाला ह॰ै	4
وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى بِاٰيٰتِنَآ اَنْ اَخْرِجْ قَوْمَكَ مِنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ۙ وَذَكِّرْهُمْ بِاَيّٰىمِ اللّٰهِ ۗ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُوْرٍ	और नशि॰ानि॰यों॰ क॰े साथ हमन॰े मूसा को अपनी नशिानयिों॰ क॰े साथ भजेा, (और हमन॰े उससे॰ कहा,) 'अपनी कौम को अंधरों॰ स॰े उजाल॰े की ओर निकाल और उन॒हें॰ अल॒लाह क॰े दनिों॰ की याद दलिा।' नशि॰ानि॰यों॰ स॰े इसम॰ें हर सब्र॰ करन॰े वाल॰े और बहत॒ शक्र॒ करन॰े वाल॰े क॰े लएि नशिानयिाँ ह॰ैं	5
وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهِ اذْكُرُوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ اِذْ اَنْجٰىكُمْ مِّنْ اٰلِ فِرْعَوْنَ يَسُوْمُوْنَكُمْ سُوْٓءَ الْعَذَابِ وَيُذَبِّحُوْنَ اَبْنَآءَكُمْ وَيَسْتَحْيُوْنَ نِسَآءَكُمْ ۗ وَفِىْ ذٰلِكُمْ بَلَآءٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ عَظِيْمٌ	और (याद करो) जब मूसा न॰े अपनी कौम स॰े कहा, 'अल॒लाह की नमेत को याद करो जब उसन॰े तमु॒ह॰ें फ़रिऔन क॰े लोगों॰ स॰े बचाया; व॰े तमु॒ह॰ें बहत॒ सख़्त अज़ाब दते॰े थ॰े, और तमु॒हार॰े बटेों॰ को क़त॒ल करत॰े थ॰े, और तमु॒हारी बटेयिों॰ को ज़िंदा छोड़त॰े थ॰े; और इसम॰ें तमु॒हार॰े रब की तरफ़ स॰े बहत॒ बड़ी आज़माइश थी।'	6
وَاِذْ تَاَذَّنَ رَبُّكُمْ لَئِنْ شَكَرْتُمْ لَاَزِيْدَنَّكُمْ وَلَئِنْ كَفَرْتُمْ اِنَّ عَذَابِىْ لَشَدِيْدٌ	और (याद करो) जब तमु॒हार॰े रब न॰े ऐलान कयिा, 'अगर तमु॒ शक्र॒ करोग॰े, तो म॰ैं नशि॰ति रू॒प स॰े तमु॒हारी नमेतों॰ को और बढ़ाऊँगा, लकेनि अगर तमु॒न॰े मेरी नमेतों॰ को नकारा, तो नशि॰ति रू॒प स॰े मेरा अज़ाब बहत॒ सख़्त ह॰ै'	7

وَقَالَ مُوْسٰٓى اِنْ تَكْفُرُوْٓا اَنْتُمْ وَمَنْ فِى الْاَرْضِ جَمِيْعًا فَاِنَّ اللّٰهَ لَغَنِيٌّ حَمِيْدٌ	और मूसा ने कहा, 'अगर तुम और ज़मीन पर मौजूद सारे लोग (अल्लाह की नेमतों को) नकारें, तो निश्चित रूप से अल्लाह बहुत बेनियाज, बहुत प्रशंसित हैं'	**8**
اَلَمْ يَأْتِكُمْ نَبَؤُا الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ قَوْمِ نُوْحٍ وَّعَادٍ وَّثَمُوْدَ وَالَّذِيْنَ مِنْ بَعْدِهِمْ لَا يَعْلَمُهُمْ اِلَّا اللّٰهُ جَاۤءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَرَدُّوْٓا اَيْدِيَهُمْ فِيْٓ اَفْوَاهِهِمْ وَقَالُوْٓا اِنَّا كَفَرْنَا بِمَآ اُرْسِلْتُمْ بِهٖ وَاِنَّا لَفِيْ شَكٍّ مِّمَّا تَدْعُوْنَنَآ اِلَيْهِ مُرِيْبٍ	क्या तुम तक उन लोगों की ख़बर नहीं पहुँची जो तुमसे पहले थे, (यानी) नूह की कौम, आद, समूद और उनके बाद के लोग? उन्हें कोई नहीं जानता सिवाय अल्लाह के। उनके पास उनके रसूल साफ़ निशानियाँ लेकर आए, लेकिन उन्होंने अपने मुँह पर हाथ रख लिया (नफ़रत की वजह से), और कहा, 'हम उस पर यक़ीन नहीं करते जो तुम लेकर आए हो, और हम उस चीज़ के बारे में बहुत शक में हैं जिसकी तरफ़ तुम हमें बुलाते हो।'	**9**
قَالَتْ رُسُلُهُمْ اَفِى اللّٰهِ شَكٌّ فَاطِرِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ يَدْعُوْكُمْ لِيَغْفِرَ لَكُمْ مِّنْ ذُنُوْبِكُمْ وَيُؤَخِّرَكُمْ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى قَالُوْٓا اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا تُرِيْدُوْنَ اَنْ تَصُدُّوْنَا عَمَّا كَانَ يَعْبُدُ اٰبَاۤؤُنَا فَاْتُوْنَا بِسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ	उनके रसूलों ने कहा, 'क्या अल्लाह, आसमानों और ज़मीन के पैदा करने वाले, के बारे में कोई शक है? वह तुम्हें बुलाता है ताकि तुम्हारे कुछ गुनाहों को माफ़ कर दे और तुम्हें एक तय वक़्त तक मोहलत दे।' उनहोंने कहा, 'तुम तो बस हमारे जैसे इंसान हो। तुम हमें उस चीज़ से रोकना चाहते हो जिसे हमारे बाप-दादा पूजते थे, तो हमारे पास साफ़ सबूत लाओ।'	**10**
قَالَتْ لَهُمْ رُسُلُهُمْ اِنْ نَّحْنُ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَمُنُّ عَلٰى مَنْ يَّشَاۤءُ مِنْ عِبَادِهٖ وَمَا كَانَ لَنَآ اَنْ نَّاْتِيَكُمْ بِسُلْطٰنٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ	उनके रसूलों ने उनसे कहा, 'हम तुम्हारे जैसे ही इंसान हैं, लेकिन अल्लाह अपने बंदों में से जिसे चाहता है उसे अपनी नेमत देता है। हमारे लिए यह मुनासिब नहीं कि हम तुम्हारे पास कोई सबूत लाएँ सिवाय अल्लाह की इजाज़त के। और ईमान वालों को सिर्फ़ अल्लाह पर ही भरोसा करना चाहिए।'	**11**
وَمَا لَنَآ اَلَّا نَتَوَكَّلَ عَلَى اللّٰهِ وَقَدْ هَدٰىنَا سُبُلَنَا وَلَنَصْبِرَنَّ عَلٰى مَآ اٰذَيْتُمُوْنَا وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُتَوَكِّلُوْنَ	'और हम अल्लाह पर भरोसा क्यों न करें, जब उसने हमें रास्ता दिखाया है, और हम निश्चित रूप से उस तकलीफ़ पर सब्र करेंगे जो तुम हमें देते हो। और भरोसा करने वालों को सिर्फ़ अल्लाह पर ही भरोसा करना चाहिए।'	**12**
وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِرُسُلِهِمْ لَنُخْرِجَنَّكُمْ مِّنْ اَرْضِنَآ اَوْ لَتَعُوْدُنَّ فِيْ مِلَّتِنَا فَاَوْحٰٓى اِلَيْهِمْ رَبُّهُمْ لَنُهْلِكَنَّ الظّٰلِمِيْنَ	और काफ़िरों ने अपने रसूलों से कहा, 'हम तुम्हें अपनी ज़मीन से ज़रूर निकाल देंगे, या तुम्हें हमारे दीन में वापस आना होगा।' तो उनके रब ने उनकी तरफ़ वह्य की, 'हम निश्चित रूप से ज़ालिमों को नष्ट कर देंगे।'	**13**
وَلَنُسْكِنَنَّكُمُ الْاَرْضَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ ذٰلِكَ لِمَنْ خَافَ مَقَامِيْ وَخَافَ وَعِيْدِ	'और हम निश्चित रूप से तुम्हें उनके बाद उन ज़मीनों में बसाएँगे। यह (इनाम) उनके लिए है जो मेरे सामने (हाज़िरी) से डरते हैं और मेरी धमकी से डरते हैं'	**14**
وَاسْتَفْتَحُوْا وَخَابَ كُلُّ جَبَّارٍ عَنِيْدٍ	और उन्होंने (रसूलों ने) फ़तह की दुआ माँगी, और हर ज़िद्दी ज़ालिम नाकाम हो गया।	**15**
مِّنْ وَّرَاۤىِٕهٖ جَهَنَّمُ وَيُسْقٰى مِنْ مَّاۤءٍ صَدِيْدٍ	उसके सामने जहन्नम है, और उसे पीने के लिए पीप का पानी दिया जाएगा।	**16**

يَّتَجَرَّعُه وَلَا يَكَادُ يُسِيْغُه وَيَأْتِيْهِ الْمَوْتُ مِنْ كُلِّ مَكَانٍ وَّمَا هُوَ بِمَيِّتٍ وَمِنْ وَّرَآئِه عَذَابٌ غَلِيْظٌ	वह उस`घूँट-घूँट पिएगा और उस`निगलन`म`मुश्क़लि होगी, और मौत हर तरफ़ स`उसक`पास आएगी, लकेनि वह मरगेा नहीं, और उसक`सामन`(और) सख़्त अज़ाब होगा।	**17**
مَثَلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ اَعْمَالُهُمْ كَرَمَادِ اشْتَدَّتْ بِهِ الرِّيْحُ فِيْ يَوْمٍ عَاصِفٍ لَا يَقْدِرُوْنَ مِمَّا كَسَبُوْا عَلٰى شَيْءٍ ذٰلِكَ هُوَ الضَّلٰلُ الْبَعِيْدُ	उन लोगों की मसिाल जो अपन`रब को नकारत`ह,ै उनक`काम उस राख की तरह ह`ैजसि`तजे़ हवा वाल`दनि हवा उड़ा ल`जाती ह।ै उनहोंन`जो कछु कमाया, उसस`वे`कछु भी हासलि नहीं कर सकत।ो यही बहत्त दूर की गमुराही ह।ै	**18**
اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ اِنْ يَّشَاْ يُذْهِبْكُمْ وَيَاْتِ بِخَلْقٍ جَدِيْدٍ	क़या तमुन`नहीं दखेा कि अल़लाह न`आसमानों और ज़मीन को हक़`क`साथ बनाया? अगर वह चाह,े तो तमुह`नषट़ कर द`और नई मख़लक़ लाए।	**19**
وَّمَا ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ بِعَزِيْزٍ	और यह अल़लाह क`लएि मशु्क़लि नहीं ह।ै	**20**
وَبَرَزُوْا لِلّٰهِ جَمِيْعًا فَقَالَ الضُّعَفٰٓؤُا لِلَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْٓا اِنَّا كُنَّا لَكُمْ تَبَعًا فَهَلْ اَنْتُمْ مُّغْنُوْنَ عَنَّا مِنْ عَذَابِ اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ قَالُوْا لَوْ هَدٰىنَا اللّٰهُ لَهَدَيْنٰكُمْ سَوَآءٌ عَلَيْنَآ اَجَزِعْنَآ اَمْ صَبَرْنَا مَا لَنَا مِنْ مَّحِيْصٍ	और व`सब (पदैल मदैान म)ै अल़लाह क`सामन`हाज़रि होंग,े फरि कमज़ोर लोग घमंडी लोगों स`कहेंग,े 'हम तो तमुह़ार`पीछ`चलन`वाल`थ,े तो क़या तमु हम`अल़लाह क`अज़ाब स`कछु बचा सकत`हो?' व`जवाब दगे,ें 'अगर अल़लाह न`हम`हदिायत दी होती, तो हम तमुह`हदिायत द`सकत`थ।े अब हमार`लएि बराबर ह,ै चाह`हम शकिायत कर`या सबऱ कर।ें हमार`लएि कोई बचन`की जगह नहीं ह।ै'	**21**
وَقَالَ الشَّيْطٰنُ لَمَّا قُضِيَ الْاَمْرُ اِنَّ اللّٰهَ وَعَدَكُمْ وَعْدَ الْحَقِّ وَوَعَدْتُّكُمْ فَاَخْلَفْتُكُمْ وَمَا كَانَ لِيَ عَلَيْكُمْ مِّنْ سُلْطٰنٍ اِلَّآ اَنْ دَعَوْتُكُمْ فَاسْتَجَبْتُمْ لِيْ فَلَا تَلُوْمُوْنِيْ وَلُوْمُوْٓا اَنْفُسَكُمْ مَآ اَنَا بِمُصْرِخِكُمْ وَمَآ اَنْتُمْ بِمُصْرِخِيَّ اِنِّيْ كَفَرْتُ بِمَآ اَشْرَكْتُمُوْنِ مِنْ قَبْلُ اِنَّ الظّٰلِمِيْنَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ	और जब हसिाब का काम पूरा हो जाएगा, तो शतैान कहगेा, 'नशि़चति रूप स`अल़लाह न`तमुस`सचचा वादा कयिा था, और मनै`भी तमुस`वादा कयिा था लकेनि मनै`उस`तोड़ दयिा। मरे`पास तमु पर कोई ज़ोर नहीं था, सवािय इसक`कि मनै`तमुह`ै बलुाया और तमुन`मरी बात मान ली। तो मझु`गाली मत दो, बलक़ि अपन`आप को गाली दो। म`तैमुहारी मदद नहीं कर सकता, और न ही तमु मरी मदद कर सकत`हो। मनै`तो पहल`ही तमुहार`मझु`(अल़लाह क`साथ) शरीक करन`को नकार दयिा था।' नशि़चति रूप स`ज़ालमिों क`लएि दरदनाक अज़ाब ह।ै	**22**
وَاُدْخِلَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا بِاِذْنِ رَبِّهِمْ تَحِيَّتُهُمْ فِيْهَا سَلٰمٌ	और जो लोग ईमान लाए और नके काम कए, उनह`ैउन जन्नतों म`दाख़लि कयिा जाएगा जनिक`नीच`नहर`बहती ह।ै व`वहाँ अपन`रब की इजाज़त स`हमशेा रहगेा। वहाँ उनका तहयि़या (अभविादन) सलाम होगा।	**23**
اَلَمْ تَرَ كَيْفَ ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا كَلِمَةً طَيِّبَةً كَشَجَرَةٍ طَيِّبَةٍ اَصْلُهَا ثَابِتٌ وَّفَرْعُهَا فِي السَّمَآءِ	क़या तमुन`नहीं दखेा कि अल़लाह न`अचछ`कलाम की मसिाल कसै`दी, जसै`एक अचछा पड़े जसिकी जड़`मज़बतू ह`ैऔर उसकी शाख़ाएँ आसमान की तरफ़ जाती ह।ै	**24**
تُؤْتِيْٓ اُكُلَهَا كُلَّ حِيْنٍ بِاِذْنِ رَبِّهَا وَيَضْرِبُ اللّٰهُ الْاَمْثَالَ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ	वह (पड़े) अपन`रब की इजाज़त स`हर वक़्त फल दतेा ह।ै और अल़लाह इंसानों क`लएि मसिाल`दतेा ह`ैताकि व`याद रख।ें	**25**

وَمَثَلُ كَلِمَةٍ خَبِيْثَةٍ كَشَجَرَةٍ خَبِيْثَةِ ِاجْتُثَّتْ مِنْ فَوْقِ الْاَرْضِ مَا لَهَا مِنْ قَرَارٍ	**26**	और बुरे कलाम की मिसाल एक बुरे पेड़ की तरह है, जिसकी जड़ ज़मीन की सतह से उखड़ गई है; वह ज़रा भी (मज़बूती से) खड़ा नहीं रह सकता।
يُثَبِّتُ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِالْقَوْلِ الثَّابِتِ فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَفِى الْاٰخِرَةِ وَيُضِلُّ اللّٰهُ الظّٰلِمِيْنَ وَيَفْعَلُ اللّٰهُ مَا يَشَاءُ	**27**	अल्लाह ईमान वालों को मज़बूत कलाम के साथ दुनिया और आख़िरत में मज़बूत करता है; और अल्लाह ज़ालिमों को गुमराह करता है, और अल्लाह जो चाहता है वह करता है।
اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ بَدَّلُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ كُفْرًا وَّاَحَلُّوْا قَوْمَهُمْ دَارَ الْبَوَارِ	**28**	क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जिन्होंने अल्लाह की नेमत को कुफ़्र से बदल दिया और अपनी क़ौम को हलाकत की घाटी में ले गए?
جَهَنَّمَ يَصْلَوْنَهَا وَبِئْسَ الْقَرَارُ	**29**	यानी जहन्नम; वे उसमें दाख़िल होंगे; और यह बहुत बुरा ठिकाना है।
وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ اَنْدَادًا لِّيُضِلُّوْا عَنْ سَبِيْلِه قُلْ تَمَتَّعُوْا فَاِنَّ مَصِيْرَكُمْ اِلَى النَّارِ	**30**	और उन्होंने (काफ़िरों ने) अल्लाह के लिए शरीक बनाए ताकि (लोगों को) उसके रास्ते से भटकाएँ (मुहम्मद) कह दो, 'मज़े करो, क्योंकि निश्चित रूप से तुम्हारा ठिकाना आग है।'
قُلْ لِّعِبَادِيَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يُقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَيُنْفِقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا وَّعَلَانِيَةً مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ يَوْمٌ لَّا بَيْعٌ فِيْهِ وَلَا خِلٰلٌ	**31**	मेरे उन बंदों से कह दो जो ईमान लाए हैं, 'वे नमाज़ क़ायम करें, और उस रिज़्क़ में से जो हमने उन्हें दिया, छिपकर और खुलकर ख़र्च करें, उस दिन से पहले जब न कोई ख़रीद-फ़रोख़्त होगी और न दोस्ती।'
اَللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَاَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَاَخْرَجَ بِه مِنَ الثَّمَرٰتِ رِزْقًا لَّكُمْ وَسَخَّرَ لَكُمُ الْفُلْكَ لِتَجْرِيَ فِى الْبَحْرِ بِاَمْرِه وَسَخَّرَ لَكُمُ الْاَنْهٰرَ	**32**	अल्लाह ही ने आसमानों और ज़मीन को बनाया और आसमान से पानी उतारा, फिर उससे तुम्हारे लिए रिज़्क़ के तौर पर तरह-तरह के फल निकाले; और उसने तुम्हारे लिए जहाज़ को वश में किया ताकि वह उसके हुक्म से समुद्र में चले, और उसने तुम्हारे लिए नदियों को वश में किया।
وَسَخَّرَ لَكُمُ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ دَاۤئِبَيْنِ وَسَخَّرَ لَكُمُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ	**33**	और उसने तुम्हारे लिए सूरज और चाँद को वश में किया, जो लगातार (अपने रास्ते पर) चलते हैं; और उसने तुम्हारे लिए रात और दिन को वश में किया।
وَاٰتٰىكُمْ مِّنْ كُلِّ مَا سَاَلْتُمُوْهُ وَاِنْ تَعُدُّوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ لَا تُحْصُوْهَا اِنَّ الْاِنْسَانَ لَظَلُوْمٌ كَفَّارٌ	**34**	और उसने तुम्हें वह सब कुछ दिया जो तुमने उससे माँगा। और अगर तुम अल्लाह की नेमतों को गिनने लगो, तो तुम उन्हें गिन नहीं सकते। निश्चित रूप से इंसान बहुत ज़ालिम और बहुत नाशुक्रा है।
وَاِذْ قَالَ اِبْرٰهِيْمُ رَبِّ اجْعَلْ هٰذَا الْبَلَدَ اٰمِنًا وَّاجْنُبْنِيْ وَبَنِيَّ اَنْ نَّعْبُدَ الْاَصْنَامَ	**35**	और (याद करो) जब इब्राहीम ने दुआ की, 'ऐ मेरे रब, इस शहर (मक्का) को अमन का शहर बना, और मुझे और मेरी औलाद को बुतों की पूजा से दूर रख।'
رَبِّ اِنَّهُنَّ اَضْلَلْنَ كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ فَمَنْ تَبِعَنِيْ فَاِنَّه مِنِّيْ وَمَنْ عَصَانِيْ فَاِنَّكَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ	**36**	'ऐ मेरे रब, इन बुतों ने बहुत सारे इंसानों को गुमराह किया है। जो कोई मेरा साथ दे, वह मेरे लोगों में से है, और जो मेरी नाफ़रमानी करे, तो तू बहुत माफ़ करने वाला, बहुत मेहरबान है।'

رَبَّنَآ اِنِّيْٓ اَسْكَنْتُ مِنْ ذُرِّيَّتِيْ بِوَادٍ غَيْرِ ذِيْ زَرْعٍ عِنْدَ بَيْتِكَ الْمُحَرَّمِ رَبَّنَا لِيُقِيْمُوا الصَّلٰوةَ فَاجْعَلْ اَفْـِٕدَةً مِّنَ النَّاسِ تَهْوِيْٓ اِلَيْهِمْ وَارْزُقْهُمْ مِّنَ الثَّمَرٰتِ لَعَلَّهُمْ يَشْكُرُوْنَ	'ऐ मरे रेब, मनै अपनी कछु औलाद को एक ऐसी घाटी म बसाया जो बंजर ह, तरे मकुद्दस घर (बतैल्लाह) क पास, ऐ मरे रेब, ताकि व नमाज़ क़ायम करी तो कछु लोगों क दिलों को उनकी तरफ़ मायल कर द और उन्ह फलों स रेज़िक़ द, ताकि व शुक्र करी'	37
رَبَّنَآ اِنَّكَ تَعْلَمُ مَا نُخْفِيْ وَمَا نُعْلِنُ وَمَا يَخْفٰى عَلَى اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ فِى الْاَرْضِ وَلَا فِى السَّمَآءِ	'ऐ हमार रेब, त जानता ह जो हम छपात ह और जो हम ज़ाहिर करत ह; और अल्लाह स कोई चीज़ छपी नहीं, न ज़मीन पर और न आसमान मी'	38
اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ وَهَبَ لِيْ عَلَى الْكِبَرِ اِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ اِنَّ رَبِّيْ لَسَمِيْعُ الدُّعَاءِ	'सारी तारीफ़ अल्लाह क लिए, जसिन मझु बढ़ापे म इसमाइल और इशाक़ अता किए। नश्चिति रूप स मेरो रब दआु को सनुने वाला ह'	39
رَبِّ اجْعَلْنِيْ مُقِيْمَ الصَّلٰوةِ وَمِنْ ذُرِّيَّتِيْ رَبَّنَا وَتَقَبَّلْ دُعَاءِ	'ऐ मरे रेब, मझु और मरी औलाद को नमाज़ क़ायम करन वाला बना, ऐ हमार रेब, मरी दआु क़बूल कर।'	40
رَبَّنَا اغْفِرْ لِيْ وَلِوَالِدَيَّ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ يَوْمَ يَقُوْمُ الْحِسَابُ	'ऐ हमार रेब, मझु और मरे माँ-बाप और सार ईमान वालों को उस दनि माफ़ कर द जब हसिाब होगा (क़यिामत का दनि)।'	41
وَلَا تَحْسَبَنَّ اللّٰهَ غَافِلًا عَمَّا يَعْمَلُ الظّٰلِمُوْنَ اِنَّمَا يُؤَخِّرُهُمْ لِيَوْمٍ تَشْخَصُ فِيْهِ الْاَبْصَارُ	और यह मत समझ क अल्लाह ज़ालमिों क कएि स ग़ाफ़लि ह वह उन्ह उस दनि तक मोहलत दता ह जब उनकी आँख खलुी रह जाएँगी।	42
مُهْطِعِيْنَ مُقْنِعِيْ رُءُوْسِهِمْ لَا يَرْتَدُّ اِلَيْهِمْ طَرْفُهُمْ وَاَفْـِٕدَتُهُمْ هَوَآءٌ	व (उस दनि) सरि उठाए जलद्ी-जलद्ी (पकुार को पूरा करन) आएँगे, उनकी आँख झपकेंगी नहीं और उनक दलि ख़ाली होंगे।	43
وَاَنْذِرِ النَّاسَ يَوْمَ يَأْتِيْهِمُ الْعَذَابُ فَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا رَبَّنَآ اَخِّرْنَآ اِلٰٓى اَجَلٍ قَرِيْبٍ نُّجِبْ دَعْوَتَكَ وَنَتَّبِعِ الرُّسُلَ اَوَلَمْ تَكُوْنُوْٓا اَقْسَمْتُمْ مِّنْ قَبْلُ مَا لَكُمْ مِّنْ زَوَالٍ	और (महुम्मद) लोगों को उस दनि की चतेावनी द, जब उनक पास अज़ाब आएगा, तो ज़ालमि लोग कहगे, 'ऐ हमार रेब, हम थोड़ा वक़्त और द (दनुयिा म वापस), ताकि हम तरी पकुार का जवाब द और रसलूों की परैवी करी' (उनस कहा जाएगा,) 'क्या तमुन पहल (दनुयिा म) क़सम नहीं खाई थीं कि तमुह कभी ज़वाल नहीं आएगा?'	44
وَّسَكَنْتُمْ فِيْ مَسٰكِنِ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ وَتَبَيَّنَ لَكُمْ كَيْفَ فَعَلْنَا بِهِمْ وَضَرَبْنَا لَكُمُ الْاَمْثَالَ	'और तमु उन लोगों क ठकिानों म रह जो अपन आप पर ज़ुल्म करत थ, और तमुहार लिए साफ़ हो गया था कि हमन उनक साथ क्या कयिा, और हमन तमुहार लिए मसिाल दी थीं।'	45
وَقَدْ مَكَرُوْا مَكْرَهُمْ وَعِنْدَ اللّٰهِ مَكْرُهُمْ وَاِنْ كَانَ مَكْرُهُمْ لِتَزُوْلَ مِنْهُ الْجِبَالُ	और नश्चिति रूप स उनहोंन चाल चली, लकेनि अल्लाह (उनकी चालों को जानता ह और) उनकी चालों का जवाब दगेा। और नश्चिति रूप स उनकी चाल पहाड़ों को हटान म काबलि नहीं थी।	46

فَلَا تَحْسَبَنَّ اللّٰهَ مُخْلِفَ وَعْدِهٖ رُسُلَهٗ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ ذُو انْتِقَامٍ	तो यह कभी न समझ कि अल्लाह अपने रसूलों से किए वादे को तोड़ देगा। निश्चित रूप से अल्लाह महाशक्तिशाली है और बदला लेने वाला है।	**47**
يَوْمَ تُبَدَّلُ الْاَرْضُ غَيْرَ الْاَرْضِ وَالسَّمٰوٰتُ وَبَرَزُوْا لِلّٰهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ	उस दिन (जब) ज़मीन को दूसरी ज़मीन से बदल दिया जाएगा और (इसी तरह) आसमानों को, और वे (इंसान) अल्लाह के सामने इकट्ठा होंगे, जो एकमात्र, महाशक्तिशाली है।	**48**
وَتَرَى الْمُجْرِمِيْنَ يَوْمَئِذٍ مُّقَرَّنِيْنَ فِى الْاَصْفَادِ	और उस दिन तू गुनहगारों को देखेगा, जो एक साथ बेड़ियों में जकड़े होंगे।	**49**
سَرَابِيْلُهُمْ مِّنْ قَطِرَانٍ وَّتَغْشٰى وُجُوْهَهُمُ النَّارُ	उनके कपड़े तारकोल के होंगे, और उनके चेहरों को आग ढक लेगी।	**50**
لِيَجْزِيَ اللّٰهُ كُلَّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ اِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ	ताकि अल्लाह हर शख़्स को उसका किया हुआ बदला दे। निश्चित रूप से अल्लाह बहुत तेज़ी से हिसाब करने वाला है।	**51**
هٰذَا بَلٰغٌ لِّلنَّاسِ وَلِيُنْذَرُوْا بِهٖ وَلِيَعْلَمُوْٓا اَنَّمَا هُوَ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ وَّلِيَذَّكَّرَ اُولُوا الْاَلْبَابِ	और (यह क़ुरआन) इंसानों के लिए एक साफ़ बयान है, ताकि इसके ज़रिए उन्हें चेतावनी दी जाए, ताकि वे जान लें कि वह एकमात्र रब है और ताकि अक़्लमंद लोग सबक़ लें।	**52**

छंदों की संख्या	اَلْحِجْر	مكية
९९	अल-हिज्र - 15	मक्की

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल-हिज्र (हिज्र)

1	अलफ़ि॰ लाम रा। (यह सूरह) कताब की आयतों का हिस्सा है, यानी क़ुरआन की आयत जो स्पष्टीकरण देती है।	الٓرٰ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ وَقُرْاٰنٍ مُّبِيْنٍ
2	काफ़िर लोग कभी-कभी (आख़िरत में) चाहेंगे, काश वे दुनिया में मुसलमि होते।	رُبَمَا يَوَدُّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْ كَانُوْا مُسْلِمِيْنَ
3	उन्हें (दुनिया में) खाने और मज़े करने दो और उनकी ख़ाली आशाएँ उन्हें ग़ाफ़िल रखें, जल्द ही वे (अपने किए का) अंजाम जान लेंगे।	ذَرْهُمْ يَأْكُلُوْا وَيَتَمَتَّعُوْا وَيُلْهِهِمُ الْاَمَلُ فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ
4	और हमने कोई बस्ती नष्ट नहीं की, सिवाय इसके कि उसके लिए पहले से तय समय था।	وَمَآ اَهْلَكْنَا مِنْ قَرْيَةٍ اِلَّا وَلَهَا كِتَابٌ مَّعْلُوْمٌ
5	कोई उम्मत अपने अजल को न आगे बढ़ा सकती है, न ही उसे टाल सकती है।	مَا تَسْبِقُ مِنْ اُمَّةٍ اَجَلَهَا وَمَا يَسْتَأْخِرُوْنَ
6	और उन्होंने कहा, 'ऐ वह व्यक्ति जिस पर क़ुरआन उतारा गया, निश्चित रूप से तुम पागल हो।'	وَقَالُوْا يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْ نُزِّلَ عَلَيْهِ الذِّكْرُ اِنَّكَ لَمَجْنُوْنٌ
7	'तुम हमारे पास फ़रिश्ते क्यों नहीं लाए, अगर तुम सच्चों में से हो?'	لَوْمَا تَأْتِيْنَا بِالْمَلٰٓئِكَةِ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ
8	हम फ़रिश्तों को सिवाय हक़ (अज़ाब लाने) के लिए नहीं उतारते, और उस वक़्त उन्हें मोहलत नहीं दी जाती।	مَا نُنَزِّلُ الْمَلٰٓئِكَةَ اِلَّا بِالْحَقِّ وَمَا كَانُوْٓا اِذًا مُّنْظَرِيْنَ
9	निश्चित रूप से हम ही ने क़ुरआन उतारा, और निश्चित रूप से हम ही उसकी हिफ़ाज़त करेंगे।	اِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَاِنَّا لَه لَحٰفِظُوْنَ
10	और निश्चित रूप से हमने तुमसे (मुहम्मद) पहले पिछली उम्मतों में (कई रसूल) भेजे।	وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ فِيْ شِيَعِ الْاَوَّلِيْنَ
11	और जब भी उनके पास कोई रसूल आया, वे हमेशा उसका मज़ाक उड़ाते थे।	وَمَا يَأْتِيْهِمْ مِّنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا كَانُوْا بِه يَسْتَهْزِءُوْنَ
12	इसी तरह, हम उस (मज़ाक) को गुनहगारों के दिलों में डाल देते हैं।	كَذٰلِكَ نَسْلُكُه فِيْ قُلُوْبِ الْمُجْرِمِيْنَ

13	व उस (क़ुरआन) पर ईमान नहीं लाते, हालाँकि पहले के लोगों के साथ सुन्नतुल्लाह (अल्लाह का तरीक़ा) गुज़र चुका है।	لَا يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ وَقَدْ خَلَتْ سُنَّةُ الْاَوَّلِيْنَ
14	और अगर हम उनके लिए आसमान का कोई दरवाज़ा खोल दें, और वे उसमें लगातार चढ़ते रहें।	وَلَوْ فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَابًا مِّنَ السَّمَاۤءِ فَظَلُّوْا فِيْهِ يَعْرُجُوْنَ
15	तो भी वे कहेंगे, 'निश्चिति रूप से हमारी नज़र धुंधली कर दी गई है, बल्कि हम जादू में फँस गए हैं।'	لَقَالُوْٓا اِنَّمَا سُكِّرَتْ اَبْصَارُنَا بَلْ نَحْنُ قَوْمٌ مَّسْحُوْرُوْنَ
16	और निश्चिति रूप से हमने आसमान में नक्षत्रों के समूह बनाए और उन्हें देखने वालों के लिए ख़ूबसूरत बनाया।	وَلَقَدْ جَعَلْنَا فِى السَّمَاۤءِ بُرُوْجًا وَّزَيَّنّٰهَا لِلنّٰظِرِيْنَ
17	और हमने उसे हर लानत किए हुए शैतान से महफ़ूज़ रखा।	وَحَفِظْنٰهَا مِنْ كُلِّ شَيْطٰنٍ رَّجِيْمٍ
18	सिवाय उस (शैतान) के जो चोरी-छिपे (फ़रिश्तों से) ख़बर सुनता है, फिर उसके चमकती हुई आग का गोला पीछा करता है।	اِلَّا مَنِ اسْتَرَقَ السَّمْعَ فَاَتْبَعَهٗ شِهَابٌ مُّبِيْنٌ
19	और हमने ज़मीन को फैलाया और उसमें पहाड़ गाड़े, और उसमें हर चीज़ को मिक़दार के मुताबिक़ उगाया।	وَالْاَرْضَ مَدَدْنٰهَا وَاَلْقَيْنَا فِيْهَا رَوَاسِيَ وَاَنْۢبَتْنَا فِيْهَا مِنْ كُلِّ شَيْءٍ مَّوْزُوْنٍ
20	और हमने उसमें तुम्हारी ज़रूरतों के लिए ज़िंदगी के साधन बनाए, और (ऐसे) मख़लूक़ात भी बनाए जिनके रिज़्क़ के तुम ज़िम्मेदार नहीं हो।	وَجَعَلْنَا لَكُمْ فِيْهَا مَعَايِشَ وَمَنْ لَّسْتُمْ لَهٗ بِرٰزِقِيْنَ
21	और कोई चीज़ ऐसी नहीं जिसके ख़ज़ाने हमारे पास न हों; हम उसे सिर्फ़ तय मिक़दार के साथ उतारते हैं।	وَاِنْ مِّنْ شَيْءٍ اِلَّا عِنْدَنَا خَزَاۤئِنُهٗ وَمَا نُنَزِّلُهٗٓ اِلَّا بِقَدَرٍ مَّعْلُوْمٍ
22	और हमने हवाएँ भेजीं जो गर्भवती बादलों को ले जाती हैं, फिर हमने आसमान से पानी उतारा, और उसे तुम्हारे पीने के लिए दिया, और तुम उसके ख़ज़ाने के मालिक नहीं हो।	وَاَرْسَلْنَا الرِّيٰحَ لَوَاقِحَ فَاَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَاۤءِ مَاۤءً فَاَسْقَيْنٰكُمُوْهُ وَمَآ اَنْتُمْ لَهٗ بِخٰزِنِيْنَ
23	और निश्चिति रूप से हम ही ज़िंदगी देते हैं और हम ही मौत देते हैं, और हम ही वारिस हैं।	وَاِنَّا لَنَحْنُ نُحْيٖ وَنُمِيْتُ وَنَحْنُ الْوٰرِثُوْنَ
24	और निश्चिति रूप से हम उन लोगों को जानते हैं जो तुमसे पहले थे और उन लोगों को भी जो बाद में आए।	وَلَقَدْ عَلِمْنَا الْمُسْتَقْدِمِيْنَ مِنْكُمْ وَلَقَدْ عَلِمْنَا الْمُسْتَاْخِرِيْنَ
25	और निश्चिति रूप से तुम्हारा रब ही उन्हें इकट्ठा करेगा। निश्चिति रूप से वह हिकमत वाला, सब कुछ जानने वाला है।	وَاِنَّ رَبَّكَ هُوَ يَحْشُرُهُمْ اِنَّهٗ حَكِيْمٌ عَلِيْمٌ
26	और निश्चिति रूप से हमने इंसान को सूखी मिट्टी से बनाया, जो काले कीचड़ से बनी थी, जिसे आकार दिया गया।	وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنْ صَلْصَالٍ مِّنْ حَمَاٍ مَّسْنُوْنٍ
27	और जिन्न को हमने उससे पहले बिना धुएँ वाली आग से बनाया।	وَالْجَاۤنَّ خَلَقْنٰهُ مِنْ قَبْلُ مِنْ نَّارِ السَّمُوْمِ

28	और (याद करो) जब तमुहार रेब न फ़रिश्तों स कहा, 'म सड़ी मटिट्ी स, काल कीचड़ स, जिस आकार दिया गया, एक इंसान बनान वाला हूँ'	وَاِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلٰٓئِكَةِ اِنِّيْ خَالِقٌۢ بَشَرًا مِّنْ صَلْصَالٍ مِّنْ حَمَاٍ مَّسْنُوْنٍ
29	'फिर जब म उस पूरा आकार द दूँ और उसम अपनी रूह फूँक दूँ तो तमु उसक लिए सजदा करो।'	فَاِذَا سَوَّيْتُه وَنَفَخْتُ فِيْهِ مِنْ رُّوْحِيْ فَقَعُوْا لَه سٰجِدِيْنَ
30	तो सार फ़रिश्तों न एक साथ सजदा किया।	فَسَجَدَ الْمَلٰٓئِكَةُ كُلُّهُمْ اَجْمَعُوْنَ
31	सिवाय इबलीस क; उसन फ़रिश्तों क साथ सजदा करन स इनकार कर दिया।	اِلَّآ اِبْلِيْسَ اَبٰٓى اَنْ يَّكُوْنَ مَعَ السّٰجِدِيْنَ
32	(अल्लाह न) कहा, 'ऐ इबलीस, तमुह क्या हआ कि तमुन सजदा नहीं किया?'	قَالَ يٰٓاِبْلِيْسُ مَا لَكَ اَلَّا تَكُوْنَ مَعَ السّٰجِدِيْنَ
33	उसन (इबलीस न) कहा, 'म कभी उस इंसान को सजदा नहीं करूँगा जिस तून सड़ी मटिट्ी स, काल कीचड़ स, जिस आकार दिया गया, बनाया।'	قَالَ لَمْ اَكُنْ لِّاَسْجُدَ لِبَشَرٍ خَلَقْتَه مِنْ صَلْصَالٍ مِّنْ حَمَاٍ مَّسْنُوْنٍ
34	उसन (अल्लाह न) कहा, '(अगर ऐसा ह) तो जन्नत स निकिल जा, क्योंकि निश्चिति रूप स तमु लानत किया गया ह'	قَالَ فَاخْرُجْ مِنْهَا فَاِنَّكَ رَجِيْمٌ
35	'और निश्चिति रूप स यह लानत तझ पर क़ियामत क दिन तक रहेगी।'	وَّاِنَّ عَلَيْكَ اللَّعْنَةَ اِلٰى يَوْمِ الدِّيْنِ
36	उसन (इबलीस न) कहा, 'ऐ मरे रेब, (अगर ऐसा ह) तो मझ उस दिन तक मोहलत द जब (इंसान) उठाए जाएँ'	قَالَ رَبِّ فَاَنْظِرْنِيْٓ اِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ
37	अल्लाह न कहा, '(ठीक ह) तो निश्चिति रूप स तमु उन लोगों म स हो जिह मोहलत दी गई ह'	قَالَ فَاِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِيْنَ
38	'उस दिन तक जो तय किया गया ह (क़ियामत)।'	اِلٰى يَوْمِ الْوَقْتِ الْمَعْلُوْمِ
39	उसन (इबलीस न) कहा, 'मरे रेब, चूँकि तून मझ गमुराह ठहराया, म निश्चिति रूप स उनक लिए ज़मीन पर (बुराई) को खूबसूरत बनाऊँगा, और म उन सबको गमुराह करूँगा।'	قَالَ رَبِّ بِمَآ اَغْوَيْتَنِيْ لَاُزَيِّنَنَّ لَهُمْ فِي الْاَرْضِ وَلَاُغْوِيَنَّهُمْ اَجْمَعِيْنَ
40	'सिवाय उनक जो तरे चुन हुए बंदो म स हों'	اِلَّا عِبَادَكَ مِنْهُمُ الْمُخْلَصِيْنَ
41	उसन (अल्लाह न) कहा, 'यह मझ तक का सीधा रास्ता ह'	قَالَ هٰذَا صِرَاطٌ عَلَيَّ مُسْتَقِيْمٌ
42	'निश्चिति रूप स तू (इबलीस) मरे बंदों पर कोई ज़ोर नहीं रखता, सिवाय उनक जो तरे पीछ चलत ह, यानी जो गमुराह हों'	اِنَّ عِبَادِيْ لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ سُلْطٰنٌ اِلَّا مَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْغَاوِيْنَ
43	और निश्चिति रूप स जहन्नम ही वह जगह ह जो उनक (शैतान क पक्क अनयायियों) सबक लिए वादा की गई ह	وَاِنَّ جَهَنَّمَ لَمَوْعِدُهُمْ اَجْمَعِيْنَ

44	(जहन्नम) क॓सात दरवाज़े॓हैं॰ हर दरवाज़ा उनक॓एक ख़ास गरिह क॓लिए (तय किया गया) है॰	لَهَا سَبْعَةُ اَبْوَابٍ لِكُلِّ بَابٍ مِّنْهُمْ جُزْءٌ مَّقْسُوْمٌ
45	निश्चिति रूप स॓मत्तक़ी लोग जन्नतों (बागों) म॓और पानी क॓ चश्मों क॓पास होंगे॰	اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِيْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ
46	(अल्लाह न॓कहा,) 'उसम॓अमन और सलामती क॓साथ दाख़िल हो जाओ॰'	اُدْخُلُوْهَا بِسَلٰمٍ اٰمِنِيْنَ
47	और हम उनक॓दिलों स॓हर तरह की रंजिश निकाल दगे॓; व॓ भाईचार॓की तरह, तख़्तों पर आमने-सामन॓बैठे॓होंगे॰	وَنَزَعْنَا مَا فِيْ صُدُوْرِهِمْ مِّنْ غِلٍّ اِخْوَانًا عَلٰى سُرُرٍ مُّتَقٰبِلِيْنَ
48	व॓वहा॓ँन थकान महसूस करगे॓और न ही उनह॓वहा॓ँस॓निकाला जाएगा॰	لَا يَمَسُّهُمْ فِيْهَا نَصَبٌ وَّمَا هُمْ مِّنْهَا بِمُخْرَجِيْنَ
49	मरे॓बंदों को ख़बर द॓कि मै॓ही बहुत माफ़ करन॓वाला, बहुत महेरबान हूँ॰	نَبِّئْ عِبَادِيْٓ اَنِّيْٓ اَنَا الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ
50	और निश्चिति रूप स॓मेरा अज़ाब बहुत दरदनाक अज़ाब है॰	وَاَنَّ عَذَابِيْ هُوَ الْعَذَابُ الْاَلِيْمُ
51	और (मुहम्मद) उनह॓इब्राहीम क॓मेहमानों (फ़रिश्तों) की ख़बर दो॰	وَنَبِّئْهُمْ عَنْ ضَيْفِ اِبْرٰهِيْمَ
52	जब व॓उनक॓पास आए, तो उनहों॓न॓कहा, 'सलाम॰' उसन॓ (इब्राहीम न॰) कहा, 'हम तुमस॓सचमुच डर रह॓हैं॰'	اِذْ دَخَلُوْا عَلَيْهِ فَقَالُوْا سَلٰمًا قَالَ اِنَّا مِنْكُمْ وَجِلُوْنَ
53	उनहों॓न॓कहा, 'डरो मत, हम तुमह॓एक बुद्धिमान बटे॓ (इशाक) की ख़ुशख़बरी द॓रह॓हैं॰'	قَالُوْا لَا تَوْجَلْ اِنَّا نُبَشِّرُكَ بِغُلٰمٍ عَلِيْمٍ
54	उसन॓(इब्राहीम न॰) कहा, 'क्या तुम मुझ॓बुढ़ापे म॓ख़ुशख़बरी द॓रह॓हो, तो यह ख़ुशख़बरी किस तरह है?'	قَالَ اَبَشَّرْتُمُوْنِيْ عَلٰٓى اَنْ مَّسَّنِيَ الْكِبَرُ فَبِمَ تُبَشِّرُوْنَ
55	उनहों॓न॓जवाब दिया, 'हम तुमह॓हक़ क॓साथ ख़ुशख़बरी द॓रह॓ह॓ैं, तो तुम निराश होन॓वालों म॓स॓न बनो॰'	قَالُوْا بَشَّرْنٰكَ بِالْحَقِّ فَلَا تَكُنْ مِّنَ الْقٰنِطِيْنَ
56	उसन॓(इब्राहीम न॰) कहा, 'अपन॓रब की रहमत स॓कोई निराश नहीं होता, सिवाय गुमराह लोगों क॓॰'	قَالَ وَمَنْ يَّقْنَطُ مِنْ رَّحْمَةِ رَبِّهٖٓ اِلَّا الضَّآلُّوْنَ
57	उसन॓(इब्राहीम न॰) कहा, 'ऐ दूतो, तुमहारा अहम मक़सद क्या है?'	قَالَ فَمَا خَطْبُكُمْ اَيُّهَا الْمُرْسَلُوْنَ
58	उनहों॓न॓जवाब दिया, 'निश्चिति रूप स॓हम एक गुनहगार कौम क॓ पास भेजे॓गए हैं॰'	قَالُوْٓا اِنَّآ اُرْسِلْنَآ اِلٰى قَوْمٍ مُّجْرِمِيْنَ
59	'सिवाय लूत क॓अनुयायियों क॓॰ निश्चिति रूप स॓हम उनह॓ सबको बचा लगे॓॰'	اِلَّآ اٰلَ لُوْطٍ اِنَّا لَمُنَجُّوْهُمْ اَجْمَعِيْنَ

60	'सिवाय उसकी बीवी के, हमने तय किया है कि वह (काफ़िरों के साथ) पीछे रहने वालों में से है।'	اِلَّا امْرَاَتَه قَدَّرْنَآ اِنَّهَا لَمِنَ الْغٰبِرِيْنَ
61	तो जब वह दूत लूत के अनुयायियों के पास आए।	فَلَمَّا جَاءَ اٰلَ لُوْطِ ِالْمُرْسَلُوْنَ
62	उसने (लूत ने) कहा, 'निश्चित रूप से तुम लोग अनजान हो।'	قَالَ اِنَّكُمْ قَوْمٌ مُّنْكَرُوْنَ
63	उन्होंने जवाब दिया, 'बल्कि हम तुम्हारे पास वह अज़ाब लेकर आए हैं जिसे वे हमेशा झुठलाते थे।'	قَالُوْا بَلْ جِئْنٰكَ بِمَا كَانُوْا فِيْهِ يَمْتَرُوْنَ
64	और हम तुम्हारे पास हक़ लेकर आए हैं और निश्चित रूप से हम सच्चे हैं।	وَاَتَيْنٰكَ بِالْحَقِّ وَاِنَّا لَصٰدِقُوْنَ
65	तो तुम रात के आख़िरी हिस्से में अपने परिवार के साथ निकल जाओ, और उनके पीछे-पीछे चलो। तुम में से कोई पीछे मुड़कर न देखे और वहाँ जाओ जहाँ तुम्हें हुक्म दिया गया है।	فَاَسْرِ بِاَهْلِكَ بِقِطْعٍ مِّنَ الَّيْلِ وَاتَّبِعْ اَدْبَارَهُمْ وَلَا يَلْتَفِتْ مِنْكُمْ اَحَدٌ وَّامْضُوْا حَيْثُ تُؤْمَرُوْنَ
66	और हमने उस (लूत) के लिए यह फ़ैसला सुनाया कि उनकी जड़ सुबह के वक़्त काट दी जाएँगी।	وَقَضَيْنَآ اِلَيْهِ ذٰلِكَ الْاَمْرَ اَنَّ دَابِرَ هٰٓؤُلَاءِ مَقْطُوْعٌ مُّصْبِحِيْنَ
67	और उस शहर के लोग (लूत के घर) ख़ुशी-ख़ुशी (मेहमानों के आने की वजह से) आए।	وَجَاءَ اَهْلُ الْمَدِيْنَةِ يَسْتَبْشِرُوْنَ
68	उसने (लूत ने) कहा, 'ये मेरे मेहमान हैं, तो मुझे रुसवा न करो।'	قَالَ اِنَّ هٰٓؤُلَاءِ ضَيْفِيْ فَلَا تَفْضَحُوْنِ
69	'और अल्लाह से डरो और मुझे ज़लील न करो।'	وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَلَا تُخْزُوْنِ
70	उन्होंने कहा, 'क्या हमने तुझे बेगानों (से मिलने) से मना नहीं किया था?'	قَالُوْٓا اَوَلَمْ نَنْهَكَ عَنِ الْعٰلَمِيْنَ
71	उसने कहा, 'ये मेरी बेटियाँ हैं, अगर तुम्हें (कुछ) करना है'	قَالَ هٰٓؤُلَاءِ بَنٰتِيْٓ اِنْ كُنْتُمْ فٰعِلِيْنَ
72	तेरी क़सम, ऐ (मुहम्मद), वे अपनी मस्ती में भटक रहे थे।	لَعَمْرُكَ اِنَّهُمْ لَفِيْ سَكْرَتِهِمْ يَعْمَهُوْنَ
73	तो सुबह के वक़्त उन पर सख़्त चीख़ ने पकड़ लिया।	فَاَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ مُشْرِقِيْنَ
74	और हमने उनके ऊपर को नीचे और नीचे को ऊपर कर दिया, और उन पर पके हुए पत्थरों की बारिश की।	فَجَعَلْنَا عَالِيَهَا سَافِلَهَا وَاَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ حِجَارَةً مِّنْ سِجِّيْلٍ
75	निश्चित रूप से इसमें समझने वालों के लिए निशानियाँ हैं।	اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّلْمُتَوَسِّمِيْنَ
76	और वह (शहर) एक रास्ते पर था जो अब भी मौजूद है।	وَاِنَّهَا لَبِسَبِيْلٍ مُّقِيْمٍ
77	निश्चित रूप से इसमें ईमान वालों के लिए निशानी है।	اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّلْمُؤْمِنِيْنَ

78	और 'ऐका' क लोग भी ज़ालिम थे।	وَاِنْ كَانَ اَصْحٰبُ الْاَيْكَةِ لَظٰلِمِيْنَ
79	तो हमने उनसे बदला लिया, और वे दोनों (शहर) साफ़ ज़ाहिर रास्ते पर हैं।	فَانْتَقَمْنَا مِنْهُمْ وَاِنَّهُمَا لَبِاِمَامٍ مُّبِيْنٍ
80	और हिज्र के लोगों ने रसूलों को झुठलाया।	وَلَقَدْ كَذَّبَ اَصْحٰبُ الْحِجْرِ الْمُرْسَلِيْنَ
81	और हमने उन्हें अपनी निशानियाँ दीं, लेकिन वे उनसे मुँह फेरते रहे।	وَاٰتَيْنٰهُمْ اٰيٰتِنَا فَكَانُوْا عَنْهَا مُعْرِضِيْنَ
82	और वे पहाड़ों में घर बनाते थे, ताकि अमन में रहें।	وَكَانُوْا يَنْحِتُوْنَ مِنَ الْجِبَالِ بُيُوْتًا اٰمِنِيْنَ
83	लेकिन सुबह के वक़्त सख़्त चीख़ ने उन्हें पकड़ लिया।	فَاَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ مُصْبِحِيْنَ
84	तो जो कुछ उन्होंने कमाया, वह उनके किसी काम न आया।	فَمَآ اَغْنٰى عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ
85	और हमने आसमानों और ज़मीन को और जो कुछ उनके बीच है, हक़ के साथ बनाया। और निश्चित रूप से क़ियामत आने वाली है, तो (उनके साथ) नरमी से पेश आ।	وَمَا خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَآ اِلَّا بِالْحَقِّ وَاِنَّ السَّاعَةَ لَاٰتِيَةٌ فَاصْفَحِ الصَّفْحَ الْجَمِيْلَ
86	निश्चित रूप से तुम्हारा रब ही पैदा करने वाला, सब कुछ जानने वाला है।	اِنَّ رَبَّكَ هُوَ الْخَلّٰقُ الْعَلِيْمُ
87	और निश्चित रूप से हमने तुम्हें सात बार-बार पढ़ी जाने वाली (आयतें) और महान क़ुरआन दिया।	وَلَقَدْ اٰتَيْنٰكَ سَبْعًا مِّنَ الْمَثَانِيْ وَالْقُرْاٰنَ الْعَظِيْمَ
88	उन चीज़ों की तरफ़ अपनी नज़र न फैलाओ जो हमने कुछ लोगों को दीं, और न ही उनके लिए ग़म करो, और मोमिनों के लिए अपनी बाज़ू झुकाओ।	لَا تَمُدَّنَّ عَيْنَيْكَ اِلٰى مَا مَتَّعْنَا بِهٖٓ اَزْوَاجًا مِّنْهُمْ وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَاخْفِضْ جَنَاحَكَ لِلْمُؤْمِنِيْنَ
89	और कहो, 'निश्चित रूप से मैं साफ़ चेतावनी देने वाला हूँ'	وَقُلْ اِنِّيْٓ اَنَا النَّذِيْرُ الْمُبِيْنُ
90	जैसे कि हमने उन लोगों पर (अज़ाब) उतारा जो (क़ुरआन को) टुकड़ों में बाँटते थे।	كَمَآ اَنْزَلْنَا عَلَى الْمُقْتَسِمِيْنَ
91	(यानी) वे लोग जिन्होंने क़ुरआन को टुकड़े-टुकड़े कर दिया।	الَّذِيْنَ جَعَلُوا الْقُرْاٰنَ عِضِيْنَ
92	तो तेरे रब की क़सम, हम उन सब से ज़रूर पूछेंगे।	فَوَرَبِّكَ لَنَسْـَٔلَنَّهُمْ اَجْمَعِيْنَ
93	उसके बारे में जो उन्होंने पहले किया।	عَمَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ
94	तो (मुहम्मद) जो तुम्हें हुक्म दिया गया है, उसे खुलकर बयान करो और मुशरिकों से मुँह फेर लो।	فَاصْدَعْ بِمَا تُؤْمَرُ وَاَعْرِضْ عَنِ الْمُشْرِكِيْنَ

95	निश्चिति रूप से हम तुझ उन लोगों से बचाएँगे जो मज़ाक उड़ाते हैं।	اِنَّا كَفَيْنٰكَ الْمُسْتَهْزِءِيْنَ
96	(यानी) वे लोग जो अल्लाह के साथ दूसरा ख़ुदा ठहराते हैं; वे जल्द ही (अंजाम) जान लेंगे।	الَّذِيْنَ يَجْعَلُوْنَ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ
97	और निश्चिति रूप से हम जानते हैं कि जो कुछ वे कहते हैं, उससे तेरा सीना तंग होता है।	وَلَقَدْ نَعْلَمُ اَنَّكَ يَضِيْقُ صَدْرُكَ بِمَا يَقُوْلُوْنَ
98	तो अपने रब की तारीफ़ के साथ तसबीह कर और सजदा करने वालों में शामिल हो।	فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَكُنْ مِّنَ السّٰجِدِيْنَ
99	और अपने रब की इबादत कर जब तक यक़ीन (मौत) तुझ तक न आए।	وَاعْبُدْ رَبَّكَ حَتّٰى يَأْتِيَكَ الْيَقِيْنُ

छंदों की संख्या	اَلنَّحْل	مكية
१२८	एक Nahl - 16	मक्की

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

एक Nahl (मधुमक्खियाँ)

1	अल्लाह का हुक्म निश्चित रूप से आएगा, इसलिए तुम उसकी जल्दी न माँगो। अल्लाह महान और उच्च है उससे जो वे शरिक करते हैं।	اَتٰٓى اَمْرُ اللّٰهِ فَلَا تَسْتَعْجِلُوْهُ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ
2	वह अपने बंदों में से जिसे चाहता है, उसके पास फरिश्तों को वह्य लेकर भेजता है, अपने हुक्म के साथ, (यह कहते हुए) कि, 'लोगों को चेतावनी दो कि मेरे सिवा कोई खुदा नहीं, इसलिए तुम मुझसे डरो।'	يُنَزِّلُ الْمَلٰٓئِكَةَ بِالرُّوْحِ مِنْ اَمْرِهٖ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖٓ اَنْ اَنْذِرُوْٓا اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنَا فَاتَّقُوْنِ
3	उसने आसमानों और ज़मीन को हक़ के साथ बनाया। अल्लाह उससे बहुत उच्च है जो वे शरिक करते हैं।	خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ تَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ
4	उसने इंसान को नुत्फ़े (वीर्य) से बनाया, फिर भी वह खुलकर विरोध करने वाला बन गया।	خَلَقَ الْاِنْسَانَ مِنْ نُّطْفَةٍ فَاِذَا هُوَ خَصِيْمٌ مُّبِيْنٌ
5	और उसने तुम्हारे लिए मवेशी बनाए, जिनमें तुम्हारे लिए (ऊन) जो गर्मी देती है और कई फायदे हैं, और उनमें से कुछ को तुम खाते हो।	وَالْاَنْعَامَ خَلَقَهَا لَكُمْ فِيْهَا دِفْءٌ وَّمَنَافِعُ وَمِنْهَا تَاْكُلُوْنَ
6	और तुम्हें उनमें खूबसूरती मिलती है, जब तुम उन्हें (शाम को) घर लाते हो और जब तुम उन्हें (चराने के लिए) छोड़ते हो।	وَلَكُمْ فِيْهَا جَمَالٌ حِيْنَ تُرِيْحُوْنَ وَحِيْنَ تَسْرَحُوْنَ
7	और वे तुम्हारे बोझ को उस शहर तक ले जाते हैं, जहाँ तुम बिना मेहनत के नहीं पहुँच सकते। निश्चित रूप से तुम्हारा रब बहुत दयालु, बहुत मेहरबान है।	وَتَحْمِلُ اَثْقَالَكُمْ اِلٰى بَلَدٍ لَّمْ تَكُوْنُوْا بٰلِغِيْهِ اِلَّا بِشِقِّ الْاَنْفُسِ اِنَّ رَبَّكُمْ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ
8	और उसने घोड़े, खच्चर और गधे बनाए, ताकि तुम उन पर सवारी करो और (वो) ज़ीनत का काम दे। और अल्लाह वह बनाता है जो तुम नहीं जानते।	وَّالْخَيْلَ وَالْبِغَالَ وَالْحَمِيْرَ لِتَرْكَبُوْهَا وَزِيْنَةً وَيَخْلُقُ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ
9	और अल्लाह का काम है सीधा रास्ता दिखाना, और उनमें से कुछ (रास्ते) टेढ़े-मेढ़े हैं। और अगर वह चाहता, तो तुम सबको सीधा रास्ता दिखा देता।	وَعَلَى اللّٰهِ قَصْدُ السَّبِيْلِ وَمِنْهَا جَآئِرٌ وَلَوْ شَآءَ لَهَدٰىكُمْ اَجْمَعِيْنَ
10	वही है जिसने आसमान से तुम्हारे लिए पानी उतारा, उसका कुछ हिस्सा तुम्हारे पीने के लिए है और कुछ हिस्सा (पेड़-पौधों को) हरा-भरा करता है, जिनमें तुम अपने मवेशियों को चराते हो।	هُوَ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً لَّكُمْ مِّنْهُ شَرَابٌ وَّمِنْهُ شَجَرٌ فِيْهِ تُسِيْمُوْنَ

11	उस (पानी) स`वह तमुहार`लिए खेती, ज़ैतून, खजूर, अंगूर और हर तरह क`फल उगाता ह` नशि़चति रूप स`इसम`उन लोगों क`लिए नशिानी ह`जो सोचत`ह`।	يُنْبِتُ لَكُمْ بِهِ الزَّرْعَ وَالزَّيْتُوْنَ وَالنَّخِيْلَ وَالْاَعْنَابَ وَمِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ
12	उसन`तमुहार`लिए रात और दनि, सूरज और चाँद को वश म`कयिा, और तार`उसक`हुक्म स`चलत`ह`। नशि़चति रूप स`इसम`उन लोगों क`लिए नशिानयिाँ ह`जो समझत`ह`।	وَسَخَّرَ لَكُمُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ وَالنُّجُوْمُ مُسَخَّرٰتٌ بِاَمْرِهٖ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ
13	और उसन`तमुहार`लिए ज़मीन पर जो कछु बनाया, वह अलग-अलग रंगों का ह` नशि़चति रूप स`इसम`उन लोगों क`लिए नशिानी ह`जो सबक लते`ह`।	وَمَا ذَرَاَ لَكُمْ فِى الْاَرْضِ مُخْتَلِفًا اَلْوَانُه اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّذَّكَّرُوْنَ
14	और वही ह`जसिन`समद्रु को तमुहार`लिए वश म`कयिा, ताकि तमु उसस`ताज़ा मांस (मछली) खा सको, और उसस`ज़ेवर नकिाल सको जो तमु पहनत`हो। और तमु दखेत`हो कि`उसम`जहाज़ चलत`ह`, ताकि तमु उसकी कृपा तलाश करो और ताकि तमु शक्र करो।	وَهُوَ الَّذِيْ سَخَّرَ الْبَحْرَ لِتَاْكُلُوْا مِنْهُ لَحْمًا طَرِيًّا وَّتَسْتَخْرِجُوْا مِنْهُ حِلْيَةً تَلْبَسُوْنَهَا وَتَرَى الْفُلْكَ مَوَاخِرَ فِيْهِ وَلِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِه وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ
15	और उसन`ज़मीन म`पहाड़ों को गाड़ दयिा ताकि वह तमुह`लकेर न हलि`, और (बनाए) नदयिाँ और रास्त`ताकि तमु राह पा सको।	وَاَلْقٰى فِى الْاَرْضِ رَوَاسِيَ اَنْ تَمِيْدَ بِكُمْ وَاَنْهٰرًا وَّسُبُلًا لَّعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ
16	और (उसन`बनाए) नशिानयिाँ (रास्तों क`लिए)। और तारों स`व`रास्ता पात`ह`।	وَعَلٰمٰتٍ وَبِالنَّجْمِ هُمْ يَهْتَدُوْنَ
17	तो क्या वह जो पदैा करता ह`, उसकी तरह ह`जो कछु भी नहीं पदैा कर सकता? क्या तमु सबक नहीं लते?	اَفَمَنْ يَّخْلُقُ كَمَنْ لَّا يَخْلُقُ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ
18	और अगर तमु अल्लाह की नमेतों को गनिन`लगो, तो तमु उनह`गनि नहीं सकतो नशि़चति रूप स`अल्लाह बहुत माफ करन`वाला, बहुत महेरबान ह`।	وَاِنْ تَعُدُّوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ لَا تُحْصُوْهَا اِنَّ اللّٰهَ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ
19	और अल्लाह जानता ह`जो तमु छपिात`हो और जो तमु ज़ाहरि करत`हो।	وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَا تُسِرُّوْنَ وَمَا تُعْلِنُوْنَ
20	और व`जो अल्लाह क`सवि पकुारत`ह`, व`कछु भी पदैा नहीं कर सकत`, बल्कि व`खुद बनाए गए ह`।	وَالَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ لَا يَخْلُقُوْنَ شَيْـًٔا وَّهُمْ يُخْلَقُوْنَ
21	(व`मूरतयिाँ) मुर्दा ह`, ज़दिा नहीं, और व`नहीं जानत`कि (उनक`पूजन`वाले) कब उठाए जाएँगे।	اَمْوَاتٌ غَيْرُ اَحْيَاءٍ وَمَا يَشْعُرُوْنَ اَيَّانَ يُبْعَثُوْنَ
22	तमुहारा खुदा एकमात्र खुदा ह` तो जो लोग आख़रित पर ईमान नहीं लात`, उनक`दलि (अल्लाह की एकता को) झठुलात`ह`, और व`घमंडी ह`।	اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ فَالَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ قُلُوْبُهُمْ مُّنْكِرَةٌ وَّهُمْ مُّسْتَكْبِرُوْنَ

لَا جَرَمَ اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّوْنَ وَمَا يُعْلِنُوْنَ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُسْتَكْبِرِيْنَ	इसमे कोई शक नहीं कि अल्लाह जानता है जो वे छपाते है और जो वे ज़ाहिर करते हैं निश्चित रूप से वह घमंडियों को पसंद नहीं करता।	**23**
وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ مَّاذَآ اَنْزَلَ رَبُّكُمْ قَالُوْٓا اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ	और जब उनसे कहा जाता है, 'तुम्हारे रब ने क्या उतारा?' वे जवाब देते है, 'पुराने लोगों की कहानियाँ'	**24**
لِيَحْمِلُوْٓا اَوْزَارَهُمْ كَامِلَةً يَّوْمَ الْقِيٰمَةِ وَمِنْ اَوْزَارِ الَّذِيْنَ يُضِلُّوْنَهُمْ بِغَيْرِ عِلْمٍ اَلَا سَاۤءَ مَا يَزِرُوْنَ	(उनके इस कहने से) कियामत के दिन वे अपने गुनाहों को पूरी तरह उठाएँगे, और उन लोगों के कुछ गुनाहों को भी जिन्हें उन्होंने बिना जानबूझे गुमराह किया। सावधान! कितना बुरा है वह (बोझ) जो वे उठाते हैं	**25**
قَدْ مَكَرَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَاَتَى اللّٰهُ بُنْيَانَهُمْ مِّنَ الْقَوَاعِدِ فَخَرَّ عَلَيْهِمُ السَّقْفُ مِنْ فَوْقِهِمْ وَاَتٰىهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُوْنَ	निश्चित रूप से उन लोगों ने जो उनसे पहले थे, उन्होंने चालबाज़ी की, तो अल्लाह ने उनके घरों को उनकी नींव से उखाड़ दिया, फिर उनकी छत ऊपर से उन पर गिर पड़ी, और अज़ाब उनके पास उस तरफ से आया जिसका उन्हें गुमान भी नहीं था।	**26**
ثُمَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ يُخْزِيْهِمْ وَيَقُوْلُ اَيْنَ شُرَكَاۤءِيَ الَّذِيْنَ كُنْتُمْ تُشَاۤقُّوْنَ فِيْهِمْ قَالَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ اِنَّ الْخِزْيَ الْيَوْمَ وَالسُّوْۤءَ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ	फिर अल्लाह ने उन्हें कियामत के दिन ज़लील किया, और फ़रमाया, 'कहाँ है मेरे वे शरीक जिनके लिए तुम (नबियों और मोमिनों से) दुश्मनी करते थे?' जिन्हें इल्म दिया गया था, उन्होंने कहा, 'निश्चित रूप से आज ज़िल्लत और अज़ाब काफ़िरों पर है'	**27**
الَّذِيْنَ تَتَوَفّٰىهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ ظَالِمِيْٓ اَنْفُسِهِمْ فَاَلْقَوُا السَّلَمَ مَا كُنَّا نَعْمَلُ مِنْ سُوْۤءٍ بَلٰٓى اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ	(यानी) वे लोग जिनकी जान फरिश्तों ने तब निकाली जब वे खुद पर जुल्म कर रहे थे, फिर उन्होंने (कहकर) सरेंडर कर दिया, 'हमने कोई बुराई नहीं की।' (फरिश्तों ने जवाब दिया,) 'हाँ, की! निश्चित रूप से अल्लाह जानता है जो तुमने किया।'	**28**
فَادْخُلُوْٓا اَبْوَابَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا فَلَبِئْسَ مَثْوَى الْمُتَكَبِّرِيْنَ	तो जहन्नम के दरवाज़ों में दाखिल हो जाओ, तुम हमेशा उसमें रहोगे। निश्चित रूप से यह घमंडियों के लिए बहुत बुरा ठिकाना है	**29**
وَقِيْلَ لِلَّذِيْنَ اتَّقَوْا مَاذَآ اَنْزَلَ رَبُّكُمْ قَالُوْا خَيْرًا لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوْا فِيْ هٰذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةٌ وَلَدَارُ الْاٰخِرَةِ خَيْرٌ وَلَنِعْمَ دَارُ الْمُتَّقِيْنَ	और फिर उन लोगों से जो मुत्तक़ी है, कहा गया, 'तुम्हारे रब ने क्या उतारा?' उन्होंने जवाब दिया, 'ख़ैर।' जो लोग इस दुनिया में नेके काम करते है, उनके लिए (बलसन में) ख़ैर है और निश्चित रूप से आख़िरत का घर बहुत बेहतर है और यह मुत्तक़ियों के लिए सबसे अच्छा ठिकाना है	**30**
جَنّٰتُ عَدْنٍ يَّدْخُلُوْنَهَا تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ لَهُمْ فِيْهَا مَا يَشَاۤءُوْنَ كَذٰلِكَ يَجْزِى اللّٰهُ الْمُتَّقِيْنَ	(यानी) जन्नत जिनमें वे दाखिल होंगे, जिनके नीचे नहरें बहती है, वहाँ उन्हें वह सब मिलेगा जो वे चाहते है। इस तरह अल्लाह मुत्तक़ियों को जज़ा देता है	**31**
الَّذِيْنَ تَتَوَفّٰىهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ طَيِّبِيْنَ يَقُوْلُوْنَ سَلٰمٌ عَلَيْكُمُ ادْخُلُوا الْجَنَّةَ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ	(यानी) वे लोग जिनकी जान फरिश्तों ने अच्छी हालत में निकाली, वे (फरिश्ते) उनसे कहते है, 'सलामुन अलैकुम, तुम जन्नत में दाखिल हो जाओ, उसकी वजह से जो तुमने किया।'	**32**

33	क्या वे सिर्फ़ इसकी राह देखते हैं कि फ़रिश्ते उनके पास आएँ, या तुम्हारे रब का हुक्म आ जाए? ऐसा ही उन लोगों ने किया जो उनसे पहले थे। और अल्लाह ने उन पर जुल्म नहीं किया, बल्कि वे ख़ुद अपने आप पर जुल्म करते थे।	هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّآ اَنْ تَأْتِيَهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ اَوْ يَأْتِيَ اَمْرُ رَبِّكَ كَذٰلِكَ فَعَلَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَمَا ظَلَمَهُمُ اللّٰهُ وَلٰكِنْ كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ
34	तो उनके किए की सजा उन्हें मिली और वह अज़ाब जिसका वे मज़ाक उड़ाते थे, उसने उन्हें घेर लिया।	فَاَصَابَهُمْ سَيِّاٰتُ مَا عَمِلُوْا وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ
35	और मुशरिकों ने कहा, 'अगर अल्लाह चाहता, तो न हम और न हमारे बाप-दादा उसके सिवा किसी की इबादत करते, और न ही हम उसके हुक्म के बिना कुछ हराम करते।' ऐसा ही उन लोगों ने किया जो उनसे पहले थे। क्या रसूलों का काम सिर्फ़ साफ़-साफ़ पैग़ाम पहुँचाना नहीं है?	وَقَالَ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا لَوْ شَاۤءَ اللّٰهُ مَا عَبَدْنَا مِنْ دُوْنِهٖ مِنْ شَيْءٍ نَّحْنُ وَلَآ اٰبَاۤؤُنَا وَلَا حَرَّمْنَا مِنْ دُوْنِهٖ مِنْ شَيْءٍ كَذٰلِكَ فَعَلَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَهَلْ عَلَى الرُّسُلِ اِلَّا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ
36	और निश्चित रूप से हमने हर उम्मत के लिए एक रसूल भेजा (यह कहने के लिए), 'अल्लाह की इबादत करो, और ताग़ूत से बचो।' फिर उनमें से कुछ को अल्लाह ने हिदायत दी और कुछ पर गुमराही क़ायम रही। तो ज़मीन पर चलो और देखो कि झुठलाने वालों का अंजाम कैसा हुआ।	وَلَقَدْ بَعَثْنَا فِيْ كُلِّ اُمَّةٍ رَّسُوْلًا اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَاجْتَنِبُوا الطَّاغُوْتَ فَمِنْهُمْ مَّنْ هَدَى اللّٰهُ وَمِنْهُمْ مَّنْ حَقَّتْ عَلَيْهِ الضَّلٰلَةُ فَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَانْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِيْنَ
37	अगर तुम (मुहम्मद) बहुत चाहते हो कि उनके हिदायत मिले, तो निश्चित रूप से अल्लाह उसको हिदायत नहीं देता जिसे वह गुमराह करता है, और उनके लिए कोई मददगार नहीं होता।	اِنْ تَحْرِصْ عَلٰى هُدٰىهُمْ فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِيْ مَنْ يُّضِلُّ وَمَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ
38	और उन्होंने अल्लाह के नाम पर सख़्त क़सम खाई, 'अल्लाह मरने वालों को नहीं उठाएगा।' ऐसा नहीं (निश्चित रूप से अल्लाह उन्हें उठाएगा), यह उसका सच्चा वादा है, लेकिन ज़्यादातर लोग नहीं जानते।	وَاَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ لَا يَبْعَثُ اللّٰهُ مَنْ يَّمُوْتُ بَلٰى وَعْدًا عَلَيْهِ حَقًّا وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ
39	ताकि वह उनके लिए वह साफ़ कर दे जिसमें वे इख़्तिलाफ़ करते थे, और ताकि काफ़िर लोग जान लें कि वे झूठे थे।	لِيُبَيِّنَ لَهُمُ الَّذِيْ يَخْتَلِفُوْنَ فِيْهِ وَلِيَعْلَمَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَنَّهُمْ كَانُوْا كٰذِبِيْنَ
40	निश्चित रूप से हमारा हुक्म किसी चीज़ के लिए, जब हम उसे चाहते हैं, बस इतना है कि हम कहते हैं, 'हो जा!' तो वह हो जाती है।	اِنَّمَا قَوْلُنَا لِشَيْءٍ اِذَآ اَرَدْنٰهُ اَنْ نَّقُوْلَ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ
41	और जो लोग अल्लाह के लिए हिजरत करते हैं, उनके बाद कि उन पर जुल्म किया गया, हम निश्चित रूप से उन्हें दुनिया में अच्छा ठिकाना देंगे। और आख़िरत का सवाब निश्चित रूप से ज़्यादा बड़ा है, काश वे जानते।	وَالَّذِيْنَ هَاجَرُوْا فِي اللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ مَا ظُلِمُوْا لَنُبَوِّئَنَّهُمْ فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَلَاَجْرُ الْاٰخِرَةِ اَكْبَرُ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ
42	(यानी) वे लोग जो सब्र करते हैं और सिर्फ़ अपने रब पर भरोसा करते हैं।	الَّذِيْنَ صَبَرُوْا وَعَلٰى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ

وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ اِلَّا رِجَالًا نُّوْحِيْٓ اِلَيْهِمْ فَسْـَٔلُوْٓا اَهْلَ الذِّكْرِ اِنْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ	**43**	और हमन`े तुमस`े (मुहम्मद) पहल`े सिर्फ़ मर्दों को ही भेजा, जिन्हें हमन`े वह्य दी; तो अगर तुम नहीं जानत`े तो अहल-ए-इल्म स`े पूछो।
بِالْبَيِّنٰتِ وَالزُّبُرِ وَاَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ الذِّكْرَ لِتُبَيِّنَ لِلنَّاسِ مَا نُزِّلَ اِلَيْهِمْ وَلَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُوْنَ	**44**	(हमन`े उन्हें) बय्यिनात (मुज्ज़िो) और किताबों क`े साथ भेजा। और हमन`े तुमहार`े पास अज़्-ज़िक्र (अल-कुरआन) उतारा, ताकि तुम लोगों को वह समझाओ जो उनक`े लिए उतारा गया और ताकि व`े सोचें।
اَفَاَمِنَ الَّذِيْنَ مَكَرُوا السَّيِّاٰتِ اَنْ يَّخْسِفَ اللّٰهُ بِهِمُ الْاَرْضَ اَوْ يَاْتِيَهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُوْنَ	**45**	तो क्या व`े लोग जो बुरी चालबाज़ी करत`े हैं इस बात स`े बेख़ौफ़ हैं कि अल्लाह ज़मीन को उनक`े साथ धँसा द`े या अज़ाब उनक`े पास उस तरफ स`े आए जिसका उन्हें गुमान भी नहीं।
اَوْ يَاْخُذَهُمْ فِيْ تَقَلُّبِهِمْ فَمَا هُمْ بِمُعْجِزِيْنَ	**46**	या अल्लाह उन्हें उनकी यात्रा क`े दौरान अज़ाब द`े, ताकि व`े उस अज़ाब को रोक न सकें।
اَوْ يَاْخُذَهُمْ عَلٰى تَخَوُّفٍ فَاِنَّ رَبَّكُمْ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ	**47**	या अल्लाह उन्हें धीर-`े धीर`े (नष्ट होन`े तक) अज़ाब द`े। निश्चित रूप स`े तुमहारा रब बहुत दयालु, बहुत मेहरबान है।
اَوَلَمْ يَرَوْا اِلٰى مَا خَلَقَ اللّٰهُ مِنْ شَيْءٍ يَّتَفَيَّؤُا ظِلٰلُهٗ عَنِ الْيَمِيْنِ وَالشَّمَاۤئِلِ سُجَّدًا لِّلّٰهِ وَهُمْ دَاخِرُوْنَ	**48**	क्या उनहोंन`े उस चीज़ को नहीं देखा जिस`े अल्लाह न`े बनाया, उसकी परछाईं दाएँ और बाएँ घूमती हैं, अल्लाह क`े सामन`े सजदा करत`े हुए, और व`े नम्र हैं।
وَلِلّٰهِ يَسْجُدُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ مِنْ دَآبَّةٍ وَّالْمَلٰٓئِكَةُ وَهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ	**49**	और जो कुछ आसमानों और ज़मीन म`े है, हर ज़िंदा प्राणी और फरिश्त`े, सिर्फ़ अल्लाह को सजदा करत`े हैं, और व`े (फरिश्त`े) घमंड नहीं करत`े।
يَخَافُوْنَ رَبَّهُمْ مِّنْ فَوْقِهِمْ وَيَفْعَلُوْنَ مَا يُؤْمَرُوْنَ	**50**	व`े अपन`े ऊपर क`े रब स`े डरत`े हैं और वही करत`े हैं जो उन्हें हुक्म दिया जाता है।
وَقَالَ اللّٰهُ لَا تَتَّخِذُوْٓا اِلٰهَيْنِ اثْنَيْنِ اِنَّمَا هُوَ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ فَاِيَّايَ فَارْهَبُوْنِ	**51**	और अल्लाह न`े कहा, 'दो ख़ुदाओं की इबादत न करो; वह सिर्फ़ एकमात्र ख़ुदा है तो सिर्फ़ मुझस`े डरो।'
وَلَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَلَهُ الدِّيْنُ وَاصِبًا اَفَغَيْرَ اللّٰهِ تَتَّقُوْنَ	**52**	और उसका है जो कुछ आसमानों और ज़मीन म`े है, और उसी क`े लिए हमेशा इबादत और आज्ञाकारिता है। तो क्या तुम अल्लाह क`े सिवा किसी और स`े डरत`े हो?
وَمَا بِكُمْ مِّنْ نِّعْمَةٍ فَمِنَ اللّٰهِ ثُمَّ اِذَا مَسَّكُمُ الضُّرُّ فَاِلَيْهِ تَجْـَٔرُوْنَ	**53**	और तुमहार`े पास जो भी नेमत है, वह अल्लाह की तरफ़ स`े है, फिर जब तुमह`ें कोई तकलीफ़ पहुँचती है, तो उसी स`े मदद माँगत`े हो।
ثُمَّ اِذَا كَشَفَ الضُّرَّ عَنْكُمْ اِذَا فَرِيْقٌ مِّنْكُمْ بِرَبِّهِمْ يُشْرِكُوْنَ	**54**	फिर जब वह तुमस`े उस तकलीफ़ को हटा देता है, तो तुममे`ं स`े कुछ लोग अपन`े रब को शरीक करत`े हैं।

55	उनहूँ उस नमेत को झठुलान दो जो हमन उनहूँ दी; मज़ करो। जलद ही तमु (अंजाम) जान लोगो	لِيَكْفُرُوْا بِمَآ اٰتَيْنٰهُمْ فَتَمَتَّعُوْا فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ
56	और व उस रज़िक़ का कछु हसि्सा, जो हमन उनहूँ दयिा, उन (मूरतयिो) क लएि रखत हैं जनिक बार म व कछु नहीं जानतो अल्लाह की क़सम, तमुस जरूर पछा जाएगा कि तमुन क्या-क्या बनाया।	وَيَجْعَلُوْنَ لِمَا لَا يَعْلَمُوْنَ نَصِيْبًا مِّمَّا رَزَقْنٰهُمْ تَاللّٰهِ لَتُسْـَٔلُنَّ عَمَّا كُنْتُمْ تَفْتَرُوْنَ
57	और व अल्लाह क लएि बटेयिा ठहरात हैं वह बहतु पवतिर हैं, और अपन लएि वह (बटे) जो उनहूँ पसंद हैं	وَيَجْعَلُوْنَ لِلّٰهِ الْبَنٰتِ سُبْحٰنَه وَلَهُمْ مَّا يَشْتَهُوْنَ
58	जबकि जब उनम स कसिी को बटेी की ख़बर दी जाती ह,ै तो उसका चहेरा काला (लाल) पड़ जाता ह,ै और वह बहतु गसु्सा होता हैं	وَاِذَا بُشِّرَ اَحَدُهُمْ بِالْاُنْثٰى ظَلَّ وَجْهُه مُسْوَدًّا وَّهُوَ كَظِيْمٌ
59	वह लोगों स छपिता ह,ै उस बरुी ख़बर की वजह स जो उस दी गई। क्या वह उस (ज़लि़त क साथ) रखगेा या उस ज़मीन म (ज़दि़ा) दफ़न कर दगेा? सावधान! कतिना बरुा ह वैह फ़सै़ला जो व करत हैं	يَتَوٰرٰى مِنَ الْقَوْمِ مِنْ سُوْٓءِ مَا بُشِّرَ بِه اَيُمْسِكُه عَلٰى هُوْنٍ اَمْ يَدُسُّه فِى التُّرَابِ اَلَا سَاۤءَ مَا يَحْكُمُوْنَ
60	जो लोग आख़रित पर ईमान नहीं लात,े उनक लएि बरुी सफ़ित ह;ै और अल्लाह क लएि सबस ऊँची सफ़ित हैं और वह बहतु ज़बरदसत, बहतु हकिमत वाला हैं	لِلَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ مَثَلُ السَّوْءِ وَلِلّٰهِ الْمَثَلُ الْاَعْلٰى وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ
61	और अगर अल्लाह लोगों को उनक जलु्म की वजह स सजा दतेा, तो वह ज़मीन पर कोई रगैन वाला पाणी भी न छोड़ता, लकेनि अल्लाह उनहूँ एक तय वक़त तक मोहलत दतेा हैं फरि जब उनका वक़त आता ह,ै तो व न एक पल पीछ हट सकत हैं और न आग बढ़ सकत हैं	وَلَوْ يُؤَاخِذُ اللّٰهُ النَّاسَ بِظُلْمِهِمْ مَّا تَرَكَ عَلَيْهَا مِنْ دَاۤبَّةٍ وَّلٰكِنْ يُّؤَخِّرُهُمْ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى فَاِذَا جَاۤءَ اَجَلُهُمْ لَا يَسْتَاْخِرُوْنَ سَاعَةً وَّلَا يَسْتَقْدِمُوْنَ
62	और व अल्लाह क लएि वह ठहरात हैं जसि व खदु नापसंद करत हैं, और उनकी ज़बान झठू बोलती ह कैि उनक लएि हर अचछी चीज़ हैं इसम कोई शक नहीं कि उनक लएि आग ह,ै और नशि़चति रूप स व जलदी ही उसम डाल जाएँगो	وَيَجْعَلُوْنَ لِلّٰهِ مَا يَكْرَهُوْنَ وَتَصِفُ اَلْسِنَتُهُمُ الْكَذِبَ اَنَّ لَهُمُ الْحُسْنٰى لَا جَرَمَ اَنَّ لَهُمُ النَّارَ وَاَنَّهُمْ مُّفْرَطُوْنَ
63	अल्लाह की क़सम, हमन तमुस (महुम्मद) पहल उम्मतों म रसलू भजे, लकेनि शतैान न उनक लएि उनक (बरुे) कामों को ख़बूसरूत बनाया, तो वह (शतैान) आज उनका सरपरस्त हैं और उनक लएि बहतु दरद़नाक अज़ाब हैं	تَاللّٰهِ لَقَدْ اَرْسَلْنَآ اِلٰٓى اُمَمٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ اَعْمَالَهُمْ فَهُوَ وَلِيُّهُمُ الْيَوْمَ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ
64	और हमन यह कताब (अल-क़ुरआन) तमु पर सरि़फ़ इसलएि उतारी, ताकि तमु उनक लएि वह साफ़ कर दो जसिम व इख़तलिाफ़ करत हैं, और यह ईमान वालों क लएि हदिायत और रहमत हैं	وَمَآ اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ اِلَّا لِتُبَيِّنَ لَهُمُ الَّذِى اخْتَلَفُوْا فِيْهِ وَهُدًى وَّرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ

وَاللّٰهُ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَاۤءِ مَاۤءً فَاَحْيَا بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّسْمَعُوْنَ	65	और अल्लाह न`आसमान स`पानी उतारा और उसक`साथ ज़मीन को ज़िंदगी दी जो पहल`मरी हुई थी। निश्चित रूप स`इसम`उन लोगों क`लिए निशानियाँ ह`जो सनुत`हैं।
وَاِنَّ لَكُمْ فِى الْاَنْعَامِ لَعِبْرَةً نُسْقِيْكُمْ مِّمَّا فِيْ بُطُوْنِهٖ مِنْۢ بَيْنِ فَرْثٍ وَّدَمٍ لَّبَنًا خَالِصًا سَاۤئِغًا لِّلشّٰرِبِيْنَ	66	और निश्चित रूप स`मवेशियों म`तुम्हार`लिए सबक है। हम तुम्हें उनक`पेट म`स`(दूध) पलात`ह`, जो खून और गोबर क` बीच स`शुद्ध निकलता ह`, जो पीन`वालों क`लिए आसान है।
وَمِنْ ثَمَرٰتِ النَّخِيْلِ وَالْاَعْنَابِ تَتَّخِذُوْنَ مِنْهُ سَكَرًا وَّرِزْقًا حَسَنًا اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ	67	और खजूर और अंगूर स`तुम नशा करन`वाली शराब और अच्छा रिज़्क़ बनात`हो। निश्चित रूप स`इसम`उन लोगों क`लिए निशानी ह`जो समझत`हैं।
وَاَوْحٰى رَبُّكَ اِلَى النَّحْلِ اَنِ اتَّخِذِيْ مِنَ الْجِبَالِ بُيُوْتًا وَّمِنَ الشَّجَرِ وَمِمَّا يَعْرِشُوْنَ	68	और तुम्हार`रब न`मधुमक्खी को इलहाम किया, 'पहाड़ों म`, पेड़ों म`और लोगों क`बनाए हुए स्थानों म`छत्त`बनाओ।'
ثُمَّ كُلِيْ مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ فَاسْلُكِيْ سُبُلَ رَبِّكِ ذُلُلًا يَخْرُجُ مِنْۢ بُطُوْنِهَا شَرَابٌ مُّخْتَلِفٌ اَلْوَانُهٗ فِيْهِ شِفَاۤءٌ لِّلنَّاسِ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ	69	फिर हर तरह क`फलों स`खाओ और अपन`रब क`रास्तों पर चलो जो तुम्हार`लिए आसान किए गए हैं। उनक`पेट स`अलग-अलग रंगों का पेय (शहद) निकलता ह`, जिसम`इंसानों क`लिए शफ़ा है। निश्चित रूप स`इसम`उन लोगों क`लिए निशानी ह`जो सोचत`हैं।
وَاللّٰهُ خَلَقَكُمْ ثُمَّ يَتَوَفّٰىكُمْ وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّرَدُّ اِلٰٓى اَرْذَلِ الْعُمُرِ لِكَيْ لَا يَعْلَمَ بَعْدَ عِلْمٍ شَيْـًٔا اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ قَدِيْرٌ	70	और अल्लाह न`तुम्ह`पैदा किया, फिर वह तुम्ह`मृत्यु द्`ता ह`, और तुम म`स`कुछ को बहुत बूढ़ी उम्र तक पहुँचाया जाता ह`, ताकि वह कुछ भी न जान सक`जो पहल`जानता था। निश्चित रूप स`अल्लाह सब कुछ जानन`वाला, कुदरत वाला है।
وَاللّٰهُ فَضَّلَ بَعْضَكُمْ عَلٰى بَعْضٍ فِى الرِّزْقِ فَمَا الَّذِيْنَ فُضِّلُوْا بِرَاۤدِّيْ رِزْقِهِمْ عَلٰى مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُمْ فَهُمْ فِيْهِ سَوَاۤءٌ اَفَبِنِعْمَةِ اللّٰهِ يَجْحَدُوْنَ	71	और अल्लाह न`तुम म`स`कुछ को दूसरों पर रिज़्क़ म`बढ़त दी, लेकिन जिन्ह`बढ़त दी गई, व`अपन`रिज़्क़ को अपन`गुलामों को नहीं दते, ताकि व`उसम`बराबर हो जाएँ। तो क्या व`अल्लाह की नमेत को झुठलात`है?
وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمْ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ اَزْوَاجًا وَّجَعَلَ لَكُمْ مِّنْ اَزْوَاجِكُمْ بَنِيْنَ وَحَفَدَةً وَّرَزَقَكُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ اَفَبِالْبَاطِلِ يُؤْمِنُوْنَ وَبِنِعْمَتِ اللّٰهِ هُمْ يَكْفُرُوْنَ	72	और अल्लाह न`तुम्हार`लिए तुम्हारी ही तरह स`जोड़े (पत्नियाँ या पत्नी) बनाए और तुम्हार`जोड़ों स`तुम्हार`लिए बच्च`और पोत` बनाए, और तुम्ह`अच्छा रिज़्क़ दिया। तो क्या व`बातिल पर ईमान लात`ह`और अल्लाह की नमेत को झुठलात`हैं?
وَيَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَمْلِكُ لَهُمْ رِزْقًا مِّنَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ شَيْـًٔا وَّلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ	73	और व`अल्लाह क`सिवा उसकी इबादत करत`ह`जो उनक`लिए आसमानों और ज़मीन स`कोई रिज़्क़ नहीं द`सकता, और न ही कुछ कर सकता है।

فَلَا تَضْرِبُوْا لِلّٰهِ الْاَمْثَالَ اِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ	तो अल्लाह क॓ लिए शरीक न ठहराओ। निश्चिति रूप स॓ अल्लाह जानता ह॓, और तमु नहीं जानत॓।	**74**
ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا عَبْدًا مَّمْلُوْكًا لَّا يَقْدِرُ عَلٰى شَيْءٍ وَّمَنْ رَّزَقْنٰهُ مِنَّا رِزْقًا حَسَنًا فَهُوَ يُنْفِقُ مِنْهُ سِرًّا وَّجَهْرًا هَلْ يَسْتَوٗنَ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ	अल्लाह न॓ एक मसिाल दी, एक गुलाम जो कसिी क॓ कब्ज़े म॓ ह॓, जो कछु भी करन॓ म॓ असमरथ ह॓, और एक व्यक्ति जसि॓ हमन॓ अच्छा रज़िक़ दयिा, फरि वह उस रज़िक़ को छपिकर और खलुकर खर्च करता ह॓ क्या य॓ बराबर ह॓? सारी तारीफ़ अल्लाह क॓ लिए ह॓, लकेनि ज़्यादातर लोग नहीं जानत॓।	**75**
وَضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا رَّجُلَيْنِ اَحَدُهُمَآ اَبْكَمُ لَا يَقْدِرُ عَلٰى شَيْءٍ وَّهُوَ كَلٌّ عَلٰى مَوْلٰىهُ اَيْنَمَا يُوَجِّهْهُّ لَا يَاْتِ بِخَيْرٍ هَلْ يَسْتَوِيْ هُوَ وَمَنْ يَّاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَهُوَ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ	और अल्लाह न॓ एक और मसिाल दी, दो आदमी, जनिम॓ स॓ एक गूंगा ह॓, कछु भी करन॓ म॓ असमरथ ह॓ और अपन॓ मालकि पर बोझ ह॓, वह उस॓ जहाँ भी भजेता ह॓, वह कोई भलाई नहीं लाता। क्या वह उस व्यक्ति क॓ बराबर ह॓ जो इंसाफ़ का हुक्म दतेा ह॓ और वह सीध॓ रास्त॓ पर ह॓?	**76**
وَلِلّٰهِ غَيْبُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَآ اَمْرُ السَّاعَةِ اِلَّا كَلَمْحِ الْبَصَرِ اَوْ هُوَ اَقْرَبُ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ	और अल्लाह क॓ पास आसमानों और ज़मीन की ग़ब॓ की बात ह॓ और क़यिामत का मामला बस एक आँख झपकन॓ जतिना ह॓, या उसस॓ भी ज़्यादा क़रीब। निश्चिति रूप स॓ अल्लाह हर चीज़ पर कद्रुत रखता ह॓।	**77**
وَاللّٰهُ اَخْرَجَكُمْ مِّنْۢ بُطُوْنِ اُمَّهٰتِكُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ شَيْـًٔا وَّجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَالْاَفْـِٕدَةَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ	और अल्लाह न॓ तमु्ह॓ तमु्हारी माओं क॓ पेट स॓ नकिाला जब तमु कछु नहीं जानत॓ थ॓, और उसन॓ तमु्ह॓ सनुन॓, दखेन॓ और समझन॓ की शक्ति दी, ताकि तमु शक्रु करो।	**78**
اَلَمْ يَرَوْا اِلَى الطَّيْرِ مُسَخَّرٰتٍ فِيْ جَوِّ السَّمَآءِ مَا يُمْسِكُهُنَّ اِلَّا اللّٰهُ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ	क्या उनहोंन॓ उन परदिों को नहीं दखेा जो आसमान म॓ उड़त॓ ह॓? उनह॓ कोई नहीं थामता सवािय अल्लाह क॓ निश्चिति रूप स॓ इसम॓ ईमान वालों क॓ लिए नशिानयिाँ ह॓।	**79**
وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمْ مِّنْۢ بُيُوْتِكُمْ سَكَنًا وَّجَعَلَ لَكُمْ مِّنْ جُلُوْدِ الْاَنْعَامِ بُيُوْتًا تَسْتَخِفُّوْنَهَا يَوْمَ ظَعْنِكُمْ وَيَوْمَ اِقَامَتِكُمْ وَمِنْ اَصْوَافِهَا وَاَوْبَارِهَا وَاَشْعَارِهَآ اَثَاثًا وَّمَتَاعًا اِلٰى حِيْنٍ	और अल्लाह न॓ तमु्हार॓ लिए तमु्हार॓ घरों को सकून का ठकिाना बनाया और तमु्हार॓ लिए मवशेियों की खालों स॓ घर (ख़मै॓) बनाए, जो तमु्ह॓ हलक़ लगत॓ ह॓ जब तमु सफ़र करत॓ हो और जब तमु ठहरत॓ हो, और भड़ें, ऊँटों और बकरयिों की ऊन स॓ सामान और मज़ा (दयिा) एक मद्दुत तक।	**80**
وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمْ مِّمَّا خَلَقَ ظِلٰلًا وَّجَعَلَ لَكُمْ مِّنَ الْجِبَالِ اَكْنَانًا وَّجَعَلَ لَكُمْ سَرَابِيْلَ تَقِيْكُمُ الْحَرَّ وَسَرَابِيْلَ تَقِيْكُمْ بَاْسَكُمْ كَذٰلِكَ يُتِمُّ نِعْمَتَهٗ عَلَيْكُمْ لَعَلَّكُمْ تُسْلِمُوْنَ	और अल्लाह न॓ तमु्हार॓ लिए अपनी बनाई हई चीज़ों स॓ साय॓ बनाए, और तमु्हार॓ लिए पहाड़ों म॓ ठकिान॓ बनाए, और तमु्हार॓ लिए कपड़े बनाए जो तमु्ह॓ गरमी स॓ बचात॓ ह॓ और कपड़े (ज़रिह) जो तमु्ह॓ जंग म॓ बचात॓ ह॓। इस तरह अल्लाह अपनी नमेत को तमु पर पूरा करता ह॓ ताकि तमु (उसक॓ सामन॓) झकु़ो।	**81**
فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ	फरि अगर व॓ महुँ फर॓ें, तो (मुहम्मद) तमु पर सरिफ़ साफ़-साफ़ पगैाम पहुँचान॓ की ज़मि्मदेारी ह॓।	**82**

83	व॒अल्लाह की नमेत को जानत॒े ह॑ै फरि उस॒े झठुलात॒े ह॑ै और उनम॑े स॒े ज़्यादातर काफ़रि ह॑ै।	يَعْرِفُوْنَ نِعْمَتَ اللّٰهِ ثُمَّ يُنْكِرُوْنَهَا وَاَكْثَرُهُمُ الْكٰفِرُوْنَ
84	और (याद करो) उस दनि जब हम हर उम्मत स॒े एक गवाह (रसूल) खड़ा करग॑े, फरि काफरि॑ों को न तो (बचाव की) इजाज़त दी जाएगी और न ही उनह॒ें माफ़ी माग॑ँन॒े की मोहलत दी जाएगी।	وَيَوْمَ نَبْعَثُ مِنْ كُلِّ اُمَّةٍ شَهِيْدًا ثُمَّ لَا يُؤْذَنُ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُوْنَ
85	और जब ज़ालमि लोग अज़ाब दख॒ लग॑ै, तो उनह॒ें न कोई रयिायत मलिग॑ी और न ही मोहलत दी जाएगी।	وَاِذَا رَاَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوا الْعَذَابَ فَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمْ وَلَا هُمْ يُنْظَرُوْنَ
86	और जब व॒े लोग जो शरिक़ करत॒े ह॑ै अपन॒े शरीकों को दखे॒ग॑ै, तो कहग॑ै, 'ऐ हमार॒े रब, य॒े वही शरीक ह॑ै जनिह॒ें हम तर॒े सवि पक़ारत॒े थ॑े।' फरि उनक॒े शरीक उनस॒े कहग॑ै, 'तम॒ सचमच॒ झठू॒े हो।'	وَاِذَا رَاَ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا شُرَكَاءَهُمْ قَالُوْا رَبَّنَا هٰٓؤُلَاۤءِ شُرَكَاۤؤُنَا الَّذِيْنَ كُنَّا نَدْعُوْا مِنْ دُوْنِكَ فَاَلْقَوْا اِلَيْهِمُ الْقَوْلَ اِنَّكُمْ لَكٰذِبُوْنَ
87	और उस दनि व॒े अल्लाह क॒े सामन॒े सरडैर करग॑ै और वह सब जो उनह॒ोंन॒े बनाया था, ग़ायब हो जाएगा।	وَاَلْقَوْا اِلَى اللّٰهِ يَوْمَىِٕذِ السَّلَمَ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ
88	जो लोग काफ़रि ह॑ै और (लोगों को) अल्लाह क॒े रास्त॒े स॒े रोकत॒े ह॑ै, हम उनक॒े लएि अज़ाब पर अज़ाब बढ़ाएँग॑े, क्योंकि व॒े हमश॒ा फ़साद करत॒े थ॑े।	اَلَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ زِدْنٰهُمْ عَذَابًا فَوْقَ الْعَذَابِ بِمَا كَانُوْا يُفْسِدُوْنَ
89	और (याद करो) उस दनि जब हम हर उम्मत म॑े स॒े उनक॒े अपन॒े बीच स॒े एक गवाह खड़ा करग॑े, और हम तमु॒ह॑े (मह॒म्मद) उनक॒े ऊपर गवाह बनाएँग॑े। और हमन॒े तम॒ पर कतिाब (अल-कर॒ुआन) उतारी ताकि॑ वह हर चीज़ को साफ़ कर द॒े, और यह हदिायत, रहमत और मस॒ुलमिों क॒े लएि ख़श॒ुख़बरी ह॑ै।	وَيَوْمَ نَبْعَثُ فِيْ كُلِّ اُمَّةٍ شَهِيْدًا عَلَيْهِمْ مِّنْ اَنْفُسِهِمْ وَجِئْنَا بِكَ شَهِيْدًا عَلٰى هٰٓؤُلَاۤءِ وَنَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ تِبْيَانًا لِّكُلِّ شَيْءٍ وَّهُدًى وَّرَحْمَةً وَّبُشْرٰى لِلْمُسْلِمِيْنَ
90	नशि॑चति रूप॒ स॒े अल्लाह इंसाफ़ करन॒े, नकेी करन॒े और रशि॑तेदारों को दन॒े का हक़ुम दतेा ह॑ै, और वह बर॒ाई, ना-इंसाफी और जल॒ुम स॒े मना करता ह॑ै। वह तमु॒ह॑े नसीहत दतेा ह॑ै ताकि॑ तम॒ सबक लो।	اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَاۤئِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَاۤءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ
91	और जब तम॒ अल्लाह क॒े साथ वादा करो, तो उस॒े पूरा करो और अपनी क़स॒म॑ें तोड़ो मत, जब तम॒न॒े उनह॒ें पक़का कर लयिा और अल्लाह को गवाह बनाया। नशि॑चति रूप॒ स॒े अल्लाह जानता ह॑ै जो तम॒ करत॒े हो।	وَاَوْفُوْا بِعَهْدِ اللّٰهِ اِذَا عٰهَدْتُّمْ وَلَا تَنْقُضُوا الْاَيْمَانَ بَعْدَ تَوْكِيْدِهَا وَقَدْ جَعَلْتُمُ اللّٰهَ عَلَيْكُمْ كَفِيْلًا اِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا تَفْعَلُوْنَ
92	और उस औरत की तरह न बनो जो अपनी मज़बूत काती हई॒ रस्॒सी को तोड़कर टक॒ुड़े-टक॒ुड़े कर दतेी ह॑ै तम॒ अपनी क़स॒म॑ें आपस म॑े धोख॒े का ज़रयि बनात॒े हो, क्योंकि एक गरिोह दस॒ूर॒े स॒े ज़्यादा ह॑ै अल्लाह सरिफ़ तम॒ुहारी आज़म॒ाइश करता ह॑ै, और कयिामत क॒े दनि वह ज़रू॒र तम॒ुहार॒े लएि वह साफ़ कर दग॑ा जसिम॑े तम॒ इख़्तलिाफ़ करत॒े थ॑े।	وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّتِيْ نَقَضَتْ غَزْلَهَا مِنْ بَعْدِ قُوَّةٍ اَنْكَاثًا تَتَّخِذُوْنَ اَيْمَانَكُمْ دَخَلًا بَيْنَكُمْ اَنْ تَكُوْنَ اُمَّةٌ هِيَ اَرْبٰى مِنْ اُمَّةٍ اِنَّمَا يَبْلُوْكُمُ اللّٰهُ بِهٖ وَلَيُبَيِّنَنَّ لَكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ مَا كُنْتُمْ فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ

93	और अगर अल्लाह चाहता, तो तुम्हे एक ही उम्मत बना देता, लेकिन वह जिसे चाहता है गुमराह करता है और जिसे चाहता है हिदायत देता है लेकिन तुमसे ज़रूर पूछा जाएगा कि तुमने क्या किया।	وَلَوْ شَاءَ اللّٰهُ لَجَعَلَكُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّلٰكِنْ يُّضِلُّ مَنْ يَّشَاءُ وَيَهْدِيْ مَنْ يَّشَاءُ وَلَتُسْـَٔلُنَّ عَمَّا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ
94	और अपनी क़सम आपस में धोख़े का ज़रिया न बनाओ, जिससे तुम्हारा पाँव मज़बूत होने के बाद फिसल जाए, और तुम्हे (दुनिया में) बुराई का मज़ा चखना पड़े क्योंकि तुमने (लोगों को) अल्लाह के रास्ते से रोका, और तुम्हारे लिए बड़ा अज़ाब होगा।	وَلَا تَتَّخِذُوْٓا اَيْمَانَكُمْ دَخَلًا بَيْنَكُمْ فَتَزِلَّ قَدَمٌ بَعْدَ ثُبُوْتِهَا وَتَذُوْقُوا السُّوْٓءَ بِمَا صَدَدْتُّمْ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَلَكُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ
95	और अल्लाह के वादे को सस्ते दामों में न बेचो, क्योंकि जो कुछ अल्लाह के पास है वह तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम जानते हो।	وَلَا تَشْتَرُوْا بِعَهْدِ اللّٰهِ ثَمَنًا قَلِيْلًا اِنَّمَا عِنْدَ اللّٰهِ هُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ
96	जो कुछ तुम्हारे पास है वह ख़त्म हो जाएगा, और जो अल्लाह के पास है वह हमेशा रहेगा। और हम निश्चित रूप से उन लोगों को बेहतर जज़ा देंगे जो सब्र करते हैं, उससे जो उन्होंने किया।	مَا عِنْدَكُمْ يَنْفَدُ وَمَا عِنْدَ اللّٰهِ بَاقٍ وَلَنَجْزِيَنَّ الَّذِيْنَ صَبَرُوْٓا اَجْرَهُمْ بِاَحْسَنِ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ
97	जो कोई नेक काम करता है, चाहे मर्द हो या औरत, और वह मोमिन हो, तो हम निश्चित रूप से उसे अच्छी ज़िंदगी देंगे और हम उन्हें उनके किए से बेहतर जज़ा देंगे।	مَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِّنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَنُحْيِيَنَّهٗ حَيٰوةً طَيِّبَةً وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ اَجْرَهُمْ بِاَحْسَنِ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ
98	तो जब तुम (मुहम्मद) क़ुरआन पढ़ने लगो, तो लानत किए हुए शैतान से अल्लाह की पनाह माँगो।	فَاِذَا قَرَاْتَ الْقُرْاٰنَ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ
99	निश्चित रूप से शैतान का उन लोगों पर कोई ज़ोर नहीं जो ईमान लाते हैं और अपने रब पर भरोसा करते हैं।	اِنَّهٗ لَيْسَ لَهٗ سُلْطٰنٌ عَلَى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَلٰى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ
100	उसका ज़ोर सिर्फ़ उन पर है जो उसे अपना सरपरस्त बनाते हैं और जो उसे अल्लाह के साथ शरीक करते हैं।	اِنَّمَا سُلْطٰنُهٗ عَلَى الَّذِيْنَ يَتَوَلَّوْنَهٗ وَالَّذِيْنَ هُمْ بِهٖ مُشْرِكُوْنَ
101	और जब हम एक आयत को दूसरी आयत से बदलते हैं, और अल्लाह बेहतर जानता है जो वह उतारता है, वे कहते हैं, 'निश्चित रूप से तुम (मुहम्मद) सिर्फ़ बनावटी हो।' असल में उनमें से ज़्यादातर नहीं जानते।	وَاِذَا بَدَّلْنَآ اٰيَةً مَّكَانَ اٰيَةٍ وَّاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا يُنَزِّلُ قَالُوْٓا اِنَّمَآ اَنْتَ مُفْتَرٍ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ
102	कह दो, 'रूहुल-क़ुदुस (जिब्रील) ने इसे तुम्हारे रब की तरफ़ से हक़ के साथ उतारा, ताकि उन लोगों के दिलों मज़बूत हों जो ईमान लाए हैं, और यह उन लोगों के लिए हिदायत और ख़ुशख़बरी है जो (अल्लाह के सामने) झुकते हैं।'	قُلْ نَزَّلَهٗ رُوْحُ الْقُدُسِ مِنْ رَّبِّكَ بِالْحَقِّ لِيُثَبِّتَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَهُدًى وَّبُشْرٰى لِلْمُسْلِمِيْنَ
103	और हम निश्चित रूप से जानते हैं कि वे कहते हैं, 'निश्चित रूप से इस (मुहम्मद को) एक इंसान ने सिखाया।' जिसकी व्यक्ति की तरफ़ वे इशारा करते हैं, उसकी ज़बान अजमी है, जबकि यह (क़ुरआन) साफ़ अरबी ज़बान में है।	وَلَقَدْ نَعْلَمُ اَنَّهُمْ يَقُوْلُوْنَ اِنَّمَا يُعَلِّمُهٗ بَشَرٌ لِسَانُ الَّذِيْ يُلْحِدُوْنَ اِلَيْهِ اَعْجَمِيٌّ وَّهٰذَا لِسَانٌ عَرَبِيٌّ مُّبِيْنٌ

104	निश्चिति रूप से जो लोग अल्लाह की आयतों (क़ुरआन) पर ईमान नहीं लाते, अल्लाह उन्हें हिदायत नहीं देता और उनके लिए दरदनाक अज़ाब है।	اِنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ لَا يَهْدِيْهِمُ اللّٰهُ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ
105	निश्चिति रूप से वही लोग झूठ गढ़ते हैं जो अल्लाह की आयतों पर ईमान नहीं लाते, और वही लोग झूठे हैं।	اِنَّمَا يَفْتَرِى الْكَذِبَ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْكٰذِبُوْنَ
106	जो कोई अल्लाह को नकारता है उसके बाद कि वह ईमान लाया (उस पर अल्लाह की नाराज़गी है), सिवाय उस व्यक्ति के जो मजबूर किया गया हो और उसका दिल ईमान में सकुन्न में हो (वह बेगुनाह है), लेकिन जो व्यक्ति कुफ़्र के लिए अपना सीना खोल दे, तो उस पर अल्लाह की नाराज़गी है और उनके लिए बड़ा अज़ाब है।	مَنْ كَفَرَ بِاللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ اِيْمَانِهٖٓ اِلَّا مَنْ اُكْرِهَ وَقَلْبُهٗ مُطْمَئِنٌّۢ بِالْاِيْمَانِ وَلٰكِنْ مَّنْ شَرَحَ بِالْكُفْرِ صَدْرًا فَعَلَيْهِمْ غَضَبٌ مِّنَ اللّٰهِ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ
107	यह इसलिए कि उन्होंने दुनिया की ज़िंदगी को आख़िरत से ज़्यादा पसंद किया, और अल्लाह काफ़िर कौम को हिदायत नहीं देता।	ذٰلِكَ بِاَنَّهُمُ اسْتَحَبُّوا الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا عَلَى الْاٰخِرَةِ وَاَنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الْكٰفِرِيْنَ
108	वे वही लोग हैं जिनके दिलों, कानों और आँखों पर अल्लाह ने मुहर लगा दी। वे वही लोग हैं जो ग़ाफ़िल हैं।	اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ طَبَعَ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ وَسَمْعِهِمْ وَاَبْصَارِهِمْ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْغٰفِلُوْنَ
109	निश्चिति रूप से वे आख़िरत में नुकसान उठाने वाले हैं।	لَا جَرَمَ اَنَّهُمْ فِى الْاٰخِرَةِ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ
110	फिर तुम्हारा रब उन लोगों के लिए (रक्षक है) जो आज़माइश झेलने के बाद हिजरत करते हैं, फिर जिहाद करते हैं और सब्र करते हैं, निश्चिति रूप से तुम्हारा रब उसके बाद बहुत माफ करने वाला, बहुत मेहरबान है।	ثُمَّ اِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِيْنَ هَاجَرُوْا مِنْۢ بَعْدِ مَا فُتِنُوْا ثُمَّ جٰهَدُوْا وَصَبَرُوْٓا اِنَّ رَبَّكَ مِنْۢ بَعْدِهَا لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ
111	(याद करो) उस दिन जब हर शख़्स अपनी हिमायत के लिए आएगा और हर शख़्स को उसके किए का पूरा बदला दिया जाएगा, और उन पर जुल्म नहीं होगा।	يَوْمَ تَاْتِىْ كُلُّ نَفْسٍ تُجَادِلُ عَنْ نَّفْسِهَا وَتُوَفّٰى كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ
112	और अल्लाह ने एक बस्ती की मिसाल दी जो पहले अमन और सकुन्न में थी, उसका रिज़्क़ हर तरफ़ से बहुतायत में आता था, लेकिन (उसके बाशिंदों ने) अल्लाह की नेमतों को झुठलाया, इसलिए अल्लाह ने उनके किए की वजह से उन पर भूख और ख़ौफ़ की आफ़त डाल दी।	وَضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا قَرْيَةً كَانَتْ اٰمِنَةً مُّطْمَئِنَّةً يَّاْتِيْهَا رِزْقُهَا رَغَدًا مِّنْ كُلِّ مَكَانٍ فَكَفَرَتْ بِاَنْعُمِ اللّٰهِ فَاَذَاقَهَا اللّٰهُ لِبَاسَ الْجُوْعِ وَالْخَوْفِ بِمَا كَانُوْا يَصْنَعُوْنَ
113	और निश्चिति रूप से उनके पास उनके अपने बीच से एक रसूल आया, लेकिन उन्होंने उसे झुठलाया, इसलिए अज़ाब ने उन्हें घेर लिया और वे ज़ालिम थे।	وَلَقَدْ جَاۤءَهُمْ رَسُوْلٌ مِّنْهُمْ فَكَذَّبُوْهُ فَاَخَذَهُمُ الْعَذَابُ وَهُمْ ظٰلِمُوْنَ
114	तो वह खाओ जो हलाल और अच्छा है, जो अल्लाह ने तुम्हें रिज़्क़ के तौर पर दिया; और अल्लाह की नेमत का शुक्र करो, अगर तुम सिर्फ़ उसी की इबादत करते हो।	فَكُلُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ حَلٰلًا طَيِّبًا وَّاشْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ اِيَّاهُ تَعْبُدُوْنَ

115	नशि्चति रप्र स`अल्लाह न`तमु पर सरि्फ़ मर्दार, ख़ून, सअुर का गोशत और वह (जानवर) जो अल्लाह क`सवि क`नाम पर ज़बह कयि गया, हराम कयि, लकेनि जो व्यक्त मजबूर हो (उस`ख़ान`क`लएि) न चाहत`हुए और न हद स`बढ़कर, तो नशि्चति रप्र स`अल्लाह बहत्त माफ करन`वाला, बहत्त महेरबान ह।	اِنَّمَا حَرَّمَ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةَ وَالدَّمَ وَلَحْمَ الْخِنْزِيْرِ وَمَآ اُهِلَّ لِغَيْرِ اللّٰهِ بِهٖ فَمَنِ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَّلَا عَادٍ فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ
116	और अपनी ज़बानों`स`झूठ बोलकर यह न कहो क`यह हलाल ह`और यह हराम ह,` ताक अल्लाह क`ख़लिाफ़ झूठ गढ़ो। नशि्चति रप्र स`जो लोग अल्लाह क`ख़लिाफ़ झूठ गढ़त`ह,` व`कामयाब नहीं होंगे।	وَلَا تَقُوْلُوْا لِمَا تَصِفُ اَلْسِنَتُكُمُ الْكَذِبَ هٰذَا حَلٰلٌ وَّهٰذَا حَرَامٌ لِّتَفْتَرُوْا عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ اِنَّ الَّذِيْنَ يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ لَا يُفْلِحُوْنَ
117	(यह) थोड़ा मजा ह,` और उनक`लएि दरद्नाक अजा़ब ह।	مَتَاعٌ قَلِيْلٌ وَّلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ
118	और यहद्वयिों क`लएि हमन`वह हराम कयि जो हमन`तमुह` (मह्मम्द) पहल`बताया। हमन`उन पर जल्लम नहीं कयि, बलक व`ख़द्द अपन`आप पर जल्लम करत`थे।	وَعَلَى الَّذِيْنَ هَادُوْا حَرَّمْنَا مَا قَصَصْنَا عَلَيْكَ مِنْ قَبْلُ وَمَا ظَلَمْنٰهُمْ وَلٰكِنْ كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ
119	फरि नशि्चति रप्र स`तमुहारा रब उन लोगों क`लएि (माफ करन`वाला ह) जो नादानी म`गलती करत`ह,` फरि उसक`बाद तौबा करत`ह`और अपन`आप को सधुारत`ह,` नशि्चति रप्र स`तमुहारा रब उसक`बाद बहत्त माफ करन`वाला, बहत्त महेरबान ह।	ثُمَّ اِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِيْنَ عَمِلُوا السُّوْٓءَ بِجَهَالَةٍ ثُمَّ تَابُوْا مِنْ بَعْدِ ذٰلِكَ وَاَصْلَحُوْٓا اِنَّ رَبَّكَ مِنْ بَعْدِهَا لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ
120	नशि्चति रप्र स`इब्राहीम एक इमाम (नमून्ना) थ,` अल्लाह क`आज्ञाकारी और हनीफ़। और वह मशुरकिों`म`स`नहीं थे।	اِنَّ اِبْرٰهِيْمَ كَانَ اُمَّةً قَانِتًا لِّلّٰهِ حَنِيْفًا وَلَمْ يَكُ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ
121	वह उसकी नमेतों का शक्र करता था। अल्लाह न`उस`चन्ना और उस`सीध`रास्त`की हदिायत दी।	شَاكِرًا لِّاَنْعُمِهِ اجْتَبٰىهُ وَهَدٰىهُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ
122	और हमन`उस`दनुयिा म`ख़रै दी, और नशि्चति रप्र स`आख़रित म`वह नके लोगों`म`स`होगा।	وَاٰتَيْنٰهُ فِى الدُّنْيَا حَسَنَةً وَاِنَّهٗ فِى الْاٰخِرَةِ لَمِنَ الصّٰلِحِيْنَ
123	फरि हमन`तमुह`(मह्मम्द) वह्य की, 'इब्राहीम की सच्ची दीन की परैवी करो, और वह मशुरकिों`म`स`नहीं था।'	ثُمَّ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ اَنِ اتَّبِعْ مِلَّةَ اِبْرٰهِيْمَ حَنِيْفًا وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ
124	नशि्चति रप्र स`(सबत का सम्मान) सरि्फ़ उन (यहद्वयिों) पर फ़र्ज़ कयि गया जो उसम`इख़्तलिाफ़ करत`थे। और नशि्चति रप्र स`तमुहारा रब कयिामत क`दनि उनक`बीच वह फ़सैला कर दगेा जसिम`व`इख़्तलिाफ़ करत`थे।	اِنَّمَا جُعِلَ السَّبْتُ عَلَى الَّذِيْنَ اخْتَلَفُوْا فِيْهِ وَاِنَّ رَبَّكَ لَيَحْكُمُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ

125	(लोगों को) अपने रब के रास्त की तरफ़ हिकमत और अच्छी नसीहत के साथ बुलाओ, और उनके साथ अच्छे तरीक़े से बहस करो। निश्चित रूप से तुम्हारा रब, वही बेहतर जानता है कि कौन उसके रास्त से भटका और वही बेहतर जानता है कि कौन हिदायत पाने वाला है।	اُدْعُ اِلٰى سَبِيْلِ رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ وَجَادِلْهُمْ بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيْلِه وَهُوَ اَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِيْنَ
126	और अगर तुम सजा देते हो, तो वैसी ही सजा दो जैसी तुम्हें दी गई, लेकिन अगर तुम सब्र करो, तो यह सब्र करने वालों के लिए बेहतर है।	وَاِنْ عَاقَبْتُمْ فَعَاقِبُوْا بِمِثْلِ مَا عُوْقِبْتُمْ بِه وَلَئِنْ صَبَرْتُمْ لَهُوَ خَيْرٌ لِّلصّٰبِرِيْنَ
127	और (मुहम्मद) सब्र करो और तुम्हारा सब्र सिर्फ़ अल्लाह की मदद से है, और उनके (कुफ़्र) की वजह से ग़म न करो और न ही उनकी चालबाज़ियों से तंगदिल हो।	وَاصْبِرْ وَمَا صَبْرُكَ اِلَّا بِاللّٰهِ وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَلَا تَكُ فِيْ ضَيْقٍ مِّمَّا يَمْكُرُوْنَ
128	निश्चित रूप से अल्लाह उनके साथ है जो मुत्तक़ी है और जो नेकी करते हैं।	اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا وَّالَّذِيْنَ هُمْ مُّحْسِنُوْنَ

छंदों की संख्या	اَلْإِسْرَاء	مكية
١١١	अल-इसरा - 17	मक्की

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल-इसरा (रात्रि यात्रा)

1	महान और पवित्र है वह (अल्लाह), जिसने अपने बन्दे (मुहम्मद) को रात के समय मस्जिद-ए-हराम से मस्जिद-ए-अक्सा तक, जिसके आसपास हमने बरकत दी है, यात्रा कराई ताकि हम उसे अपनी कुछ निशानियाँ दिखाएँ। निश्चित रूप से वह सब कुछ सुनने वाला, सब कुछ देखने वाला है।	سُبْحٰنَ الَّذِيْٓ اَسْرٰى بِعَبْدِهٖ لَيْلًا مِّنَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ اِلَى الْمَسْجِدِ الْاَقْصَا الَّذِيْ بٰرَكْنَا حَوْلَهٗ لِنُرِيَهٗ مِنْ اٰيٰتِنَا اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْبَصِيْرُ
2	और हमने मूसा को किताब (तौरात) दी और उसे बनी इसराइल के लिए हिदायत बनाया, (यह कहकर), 'मेरे सिवा किसी को रक्षक न बनाना।'	وَاٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ وَجَعَلْنٰهُ هُدًى لِّبَنِيْٓ اِسْرَاۤءِيْلَ اَلَّا تَتَّخِذُوْا مِنْ دُوْنِيْ وَكِيْلًا
3	(ऐ) उन लोगों की संतान, जिन्हें हमने नूह के साथ (सदक़ा में) ले गए थे। निश्चित रूप से वह (नूह) एक बहुत शुक्रगुज़ार बन्दा था।	ذُرِّيَّةَ مَنْ حَمَلْنَا مَعَ نُوْحٍ اِنَّهٗ كَانَ عَبْدًا شَكُوْرًا
4	और हमने बनी इसराइल के लिए उस किताब में यह तय किया कि, 'तुम निश्चित रूप से इस ज़मीन पर दो बार फ़साद फैलाओगे और बहुत घमंड के साथ अपनी बड़ाई करोगे।'	وَقَضَيْنَآ اِلٰى بَنِيْٓ اِسْرَاۤءِيْلَ فِى الْكِتٰبِ لَتُفْسِدُنَّ فِى الْاَرْضِ مَرَّتَيْنِ وَلَتَعْلُنَّ عُلُوًّا كَبِيْرًا
5	जब पहली बार की सजा का समय आया, तो हमने तुम्हारे पास अपने ताकतवर बन्दों को भेजा, और उन्होंने गाँवों में घुसकर तबाही मचाई। और यह वह हुक्म था जो निश्चित रूप से पूरा हुआ।	فَاِذَا جَاۤءَ وَعْدُ اُوْلٰىهُمَا بَعَثْنَا عَلَيْكُمْ عِبَادًا لَّنَآ اُولِيْ بَاْسٍ شَدِيْدٍ فَجَاسُوْا خِلٰلَ الدِّيَارِ وَكَانَ وَعْدًا مَّفْعُوْلًا
6	फिर हमने तुम्हें उनके खिलाफ जीत का मौका दिया, और हमने तुम्हारी मदद धन-दौलत और औलाद से की और तुम्हें एक बड़ी जमात बनाया।	ثُمَّ رَدَدْنَا لَكُمُ الْكَرَّةَ عَلَيْهِمْ وَاَمْدَدْنٰكُمْ بِاَمْوَالٍ وَّبَنِيْنَ وَجَعَلْنٰكُمْ اَكْثَرَ نَفِيْرًا
7	अगर तुमने अच्छा किया, तो वह तुम्हारे लिए ही अच्छा है और अगर तुमने बुरा किया, तो वह तुम्हारे लिए ही है। जब दूसरी सजा का समय आया, (हमने तुम्हारे दुश्मनों को खड़ा किया) ताकि वे तुम्हारे चेहरों को उदास करें और मस्जिद (मस्जिद-ए-अक्सा) में उसी तरह दाखिल हों जैसे वे पहली बार दाखिल हुए थे, और जो कुछ भी उनके कब्ज़े में आया, उसे पूरी तरह तबाह कर दें।	اِنْ اَحْسَنْتُمْ اَحْسَنْتُمْ لِاَنْفُسِكُمْ وَاِنْ اَسَاْتُمْ فَلَهَا فَاِذَا جَاۤءَ وَعْدُ الْاٰخِرَةِ لِيَسُۤوْا وُجُوْهَكُمْ وَلِيَدْخُلُوا الْمَسْجِدَ كَمَا دَخَلُوْهُ اَوَّلَ مَرَّةٍ وَّلِيُتَبِّرُوْا مَا عَلَوْا تَتْبِيْرًا
8	हो सकता है कि तुम्हारा रब तुम पर रहम करे; लेकिन अगर तुम फिर से (बुराई) करोगे, तो हम फिर से (सजा देंगे)। और हमने जहन्नम को काफिरों के लिए जेल बनाया है।	عَسٰى رَبُّكُمْ اَنْ يَّرْحَمَكُمْ وَاِنْ عُدْتُّمْ عُدْنَا وَجَعَلْنَا جَهَنَّمَ لِلْكٰفِرِيْنَ حَصِيْرًا

9	नश्‍चिति रूप स`ेयह क़ुआन सबस`ेसीध`ेरास्त`ेकी हदिायत दत`ेा ह`ैऔर उन मोमनि`ों को ख़ुशख़बरी दत`ेा ह`ैजो नक`े काम करत`े ह`ैं कि उनक`ेलिए बहत़ बड़ा इनाम ह`ै,	اِنَّ هٰذَا الْقُرْاٰنَ يَهْدِيْ لِلَّتِيْ هِيَ اَقْوَمُ وَيُبَشِّرُ الْمُؤْمِنِيْنَ الَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ الصّٰلِحٰتِ اَنَّ لَهُمْ اَجْرًا كَبِيْرًا
10	और यह कि जो लोग आख़रित पर ईमान नहीं लात`े, उनक`ेलिए हमन`ेदरद़नाक अज़ाब तय़ार कयि`ा ह`ै	وَّاَنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ اَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا
11	और इंसान अक़्सर बर्‌ाई क`ेलिए दआ़ करता ह`ैजैस`ेवह भलाई क`ेलिए दआ़ करता ह`ै और नश्‍चिति रूप स`ेइंसान बहत़ जलद़बाज़ी करन`ेवाला ह`ै	وَيَدْعُ الْاِنْسَانُ بِالشَّرِّ دُعَاءَه بِالْخَيْرِ وَكَانَ الْاِنْسَانُ عَجُوْلًا
12	और हमन`ेरात और दनि को दो नशिानयि`ाँ बनाया; फरि हमन`े रात की नशिानी को मटिा दयि`ा और दनि की नशिानी को रौशन कर दयि`ा ताकि तमु अपन`ेरब की कप़ा तलाश कर सको और सालो`ं की गनिती और हसिाब जान सको। और हर चीज़ को हमन`े साफ़-साफ़ बयान कर दयि`ा ह`ै	وَجَعَلْنَا الَّيْلَ وَالنَّهَارَ اٰيَتَيْنِ فَمَحَوْنَآ اٰيَةَ الَّيْلِ وَجَعَلْنَآ اٰيَةَ النَّهَارِ مُبْصِرَةً لِّتَبْتَغُوْا فَضْلًا مِّنْ رَّبِّكُمْ وَلِتَعْلَمُوْا عَدَدَ السِّنِيْنَ وَالْحِسَابَ وَكُلَّ شَيْءٍ فَصَّلْنٰهُ تَفْصِيْلًا
13	और हर इंसान क`ेकर्मो का लखेा हमन`ेउसक`ेगल`े म`ेलटका दयि`ा ह`ै और कयिामत क`ेदनि हम उसक`ेलिए एक कताि ब नकिालेग`े जो खल़ी हई़ होगी।	وَكُلَّ اِنْسَانٍ اَلْزَمْنٰهُ طٰٓئِرَه فِيْ عُنُقِه وَنُخْرِجُ لَه يَوْمَ الْقِيٰمَةِ كِتٰبًا يَّلْقٰهُ مَنْشُوْرًا
14	(कहा जाएगा,) 'अपनी कताि ब पढ़ो, आज तमु्हारा ख़द का हसिाब करन`ेवाला तमु ही काफी हो।'	اِقْرَأْ كِتٰبَكَ كَفٰى بِنَفْسِكَ الْيَوْمَ عَلَيْكَ حَسِيْبًا
15	जो कोई हदिायत क`ेमत़ाबकि काम करता ह`ै, वह अपन`ेलिए करता ह`ै; और जो कोई गमु्राह होता ह`ै, वह अपन`ेलिए ही गमु्राह होता ह`ै और कोई गनु्हगार कसिी दूसर`े क`े गनु्ाह का बोझ नहीं उठाएगा, और हम कसिी को सजा नहीं द`ेग`े जब तक कि हम एक रसूल न भज द`ें	مَنِ اهْتَدٰى فَاِنَّمَا يَهْتَدِيْ لِنَفْسِه وَمَنْ ضَلَّ فَاِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰى وَمَا كُنَّا مُعَذِّبِيْنَ حَتّٰى نَبْعَثَ رَسُوْلًا
16	और जब हम कसिी बसत़ी को तबाह करना चाहत`े ह`ैं, तो हम वहा`ँ के अमीर लोगो`ं को (अल़लाह की इताअत का) हक़ुम दत`े ह`ैं, लकेनि जब व`े वहा`ँ नाफरमानी करत`े ह`ैं, तो वहा`ँ हमारा हक़ुम लाग़ू हो जाता ह`ै, फरि हम उस बसत़ी को पूरी तरह तबाह कर दत`े ह`ैं	وَاِذَآ اَرَدْنَآ اَنْ نُّهْلِكَ قَرْيَةً اَمَرْنَا مُتْرَفِيْهَا فَفَسَقُوْا فِيْهَا فَحَقَّ عَلَيْهَا الْقَوْلُ فَدَمَّرْنٰهَا تَدْمِيْرًا
17	और नूह क`ेबाद हमन`ेकतिनी ही कौमो`ं को हलाक कयि। और तमु्हारा रब अपन`े बनद़ो`ं क`े गनु्ाहो`ं को जानन`ेऔर दखेन`े क`ेलिए काफी ह`ै	وَكَمْ اَهْلَكْنَا مِنَ الْقُرُوْنِ مِنْ بَعْدِ نُوْحٍ وَكَفٰى بِرَبِّكَ بِذُنُوْبِ عِبَادِه خَبِيْرًا بَصِيْرًا
18	जो कोई इस दनु्या की ज़िंदगी चाहता ह`ै, हम उस`ेयहा`ँ वही द`ेत`े ह`ैं जो हम चाहत`े ह`ैं और जसिक`ेलिए चाहत`े ह`ैं फरि हमन`ेउसक`े लिए जहनन्म तय़ार की ह`ै; वह उसम`ेदाखलि होगा, नदिति और ठकुराया हआ़।	مَنْ كَانَ يُرِيْدُ الْعَاجِلَةَ عَجَّلْنَا لَه فِيْهَا مَا نَشَاءُ لِمَنْ نُّرِيْدُ ثُمَّ جَعَلْنَا لَه جَهَنَّمَ يَصْلٰهَا مَذْمُوْمًا مَّدْحُوْرًا
19	और जो कोई आख़रित चाहता ह`ै और उसकी कोशशि पूरी महेनत स`ेकरता ह`ै, जबकि वह ईमान वाला ह`ै, तो ऐस`ेलोगो`ं की कोशशि का अच्छा बदला दयि`ा जाएगा।	وَمَنْ اَرَادَ الْاٰخِرَةَ وَسَعٰى لَهَا سَعْيَهَا وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَاُولٰٓئِكَ كَانَ سَعْيُهُمْ مَّشْكُوْرًا

20	हर एक को, चाहे वह (दुनिया चाहने वाला) हो या वह (आख़िरत चाहने वाला), हम अपने रब की कृपा से मदद देते हैं और तुम्हारे रब की कृपा को कोई रोक नहीं सकता।	كُلًّا نُّمِدُّ هٰٓؤُلَاءِ وَهٰٓؤُلَاءِ مِنْ عَطَاءِ رَبِّكَ وَمَا كَانَ عَطَاءُ رَبِّكَ مَحْظُوْرًا
21	देखो, हमने कुछ लोगों को दूसरों पर कैसे फ़ज़ीलत दी। और आख़िरत की ज़िंदगी दरजों में ज़्यादा ऊँची और बड़ाई में ज़्यादा बड़ी है।	اُنْظُرْ كَيْفَ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلٰى بَعْضٍ وَلَلْاٰخِرَةُ اَكْبَرُ دَرَجٰتٍ وَّاَكْبَرُ تَفْضِيْلًا
22	अल्लाह के साथ किसी और को ख़ुदा न बनाओ, वरना तुम निंदित और अपमानित हो जाओगे।	لَا تَجْعَلْ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ فَتَقْعُدَ مَذْمُوْمًا مَّخْذُوْلًا
23	और तुम्हारे रब ने हुक्म दिया है कि तुम उसके सिवा किसी की इबादत न करो और अपने माँ-बाप के साथ अच्छा व्यवहार करो। अगर उनमें से एक या दोनों तुम्हारे सामने बुढ़ापे को पहुँच जाएँ, तो उनके साथ नरमी से पेश आओ।	وَقَضٰى رَبُّكَ اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّآ اِيَّاهُ وَبِالْوَالِدَيْنِ اِحْسٰنًا اِمَّا يَبْلُغَنَّ عِنْدَكَ الْكِبَرَ اَحَدُهُمَآ اَوْ كِلٰهُمَا فَلَا تَقُلْ لَّهُمَآ اُفٍّ وَّلَا تَنْهَرْهُمَا وَقُلْ لَّهُمَا قَوْلًا كَرِيْمًا
24	और उनके सामने नम्रता के साथ झुक जाओ और कहो, 'ऐ मेरे रब! उन पर रहम कर जैसे उन्होंने मुझे बचपन में पाला।'	وَاخْفِضْ لَهُمَا جَنَاحَ الذُّلِّ مِنَ الرَّحْمَةِ وَقُلْ رَّبِّ ارْحَمْهُمَا كَمَا رَبَّيٰنِيْ صَغِيْرًا
25	तुम्हारा रब बेहतर जानता है कि तुम्हारे दिलों में क्या है; अगर तुम नेक हो, तो निश्चित रूप से वह तौबा करने वालों को बहुत माफ करने वाला है।	رَبُّكُمْ اَعْلَمُ بِمَا فِيْ نُفُوْسِكُمْ اِنْ تَكُوْنُوْا صٰلِحِيْنَ فَاِنَّهٗ كَانَ لِلْاَوَّابِيْنَ غَفُوْرًا
26	और अपने रिश्तेदारों, ग़रीबों और मुसाफ़िरों को उनका हक़ दो; और अपनी दौलत को बेकार में बरबाद न करो।	وَاٰتِ ذَا الْقُرْبٰى حَقَّهٗ وَالْمِسْكِيْنَ وَابْنَ السَّبِيْلِ وَلَا تُبَذِّرْ تَبْذِيْرًا
27	निश्चित रूप से बरबाद करने वाले शैतान के भाई हैं, और शैतान अपने रब के प्रति बहुत नाशुक्रा है।	اِنَّ الْمُبَذِّرِيْنَ كَانُوْٓا اِخْوَانَ الشَّيٰطِيْنِ وَكَانَ الشَّيْطٰنُ لِرَبِّهٖ كَفُوْرًا
28	और अगर तुम्हें उनसे मुँह फेरना पड़े ताकि तुम अपने रब की रहमत की तलाश कर सको जिसकी तुम उम्मीद करते हो, तो उनके साथ नरमी से बात करो।	وَاِمَّا تُعْرِضَنَّ عَنْهُمُ ابْتِغَاءَ رَحْمَةٍ مِّنْ رَّبِّكَ تَرْجُوْهَا فَقُلْ لَّهُمْ قَوْلًا مَّيْسُوْرًا
29	और अपने हाथ को अपनी गरदन से बाँधे न रखो (कंजूसी न करो) और न ही उसे बहुत ज़्यादा खोल दो (फ़िज़ूलख़र्ची न करो), वरना तुम निंदित और पछतावे में रह जाओगे।	وَلَا تَجْعَلْ يَدَكَ مَغْلُوْلَةً اِلٰى عُنُقِكَ وَلَا تَبْسُطْهَا كُلَّ الْبَسْطِ فَتَقْعُدَ مَلُوْمًا مَّحْسُوْرًا
30	निश्चित रूप से तुम्हारा रब जिसके लिए चाहता है, रिज़्क़ को बढ़ाता और घटाता है। वह अपने बन्दों को देखने वाला और जानने वाला है।	اِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَاءُ وَيَقْدِرُ اِنَّهٗ كَانَ بِعِبَادِهٖ خَبِيْرًا بَصِيْرًا
31	और अपनी औलाद को ग़रीबी के डर से न मारो। हम उन्हें और तुम्हें रिज़्क़ देते हैं। निश्चित रूप से उनकी हत्या बड़ा गुनाह है।	وَلَا تَقْتُلُوْٓا اَوْلَادَكُمْ خَشْيَةَ اِمْلَاقٍ نَحْنُ نَرْزُقُهُمْ وَاِيَّاكُمْ اِنَّ قَتْلَهُمْ كَانَ خِطْـًٔا كَبِيْرًا

32	और ज़िना के पास भी न जाओ; निश्चित रूप से यह बहुत बुरा काम है और बहुत खराब रास्ता है।	وَلَا تَقْرَبُوا الزِّنٰٓى اِنَّه كَانَ فَاحِشَةً وَسَاءَ سَبِيْلًا
33	और उस जान को न मारो जिसे अल्लाह ने हराम किया है, सिवाय इसके कि कोई सही वजह हो। और जो कोई ज़ुल्म से मारा जाए, हमने उसके वारिस को इक़्तियार दिया है, लेकिन उसे हत्या में हद से आगे नहीं जाना चाहिए। निश्चित रूप से उसे मदद दी जाएगी।	وَلَا تَقْتُلُوا النَّفْسَ الَّتِيْ حَرَّمَ اللّٰهُ اِلَّا بِالْحَقِّ وَمَنْ قُتِلَ مَظْلُوْمًا فَقَدْ جَعَلْنَا لِوَلِيِّه سُلْطٰنًا فَلَا يُسْرِفْ فِّي الْقَتْلِ اِنَّه كَانَ مَنْصُوْرًا
34	और यतीम के माल के पास न जाओ, सिवाय इसके कि उसे बेहतर तरीके से (संभालो) जब तक वह बड़ा न हो जाए, और अपने वादे को पूरा करो, क्योंकि वादे की ज़िम्मेदारी ज़रूर पूछी जाएगी।	وَلَا تَقْرَبُوْا مَالَ الْيَتِيْمِ اِلَّا بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ حَتّٰى يَبْلُغَ اَشُدَّه وَاَوْفُوْا بِالْعَهْدِ اِنَّ الْعَهْدَ كَانَ مَسْـُٔوْلًا
35	और जब तुम नापो, तो पूरा-पूरा नापो, और सही तराज़ू से तौलो। यह बेहतर है और इसका अंजाम भी अच्छा है।	وَاَوْفُوا الْكَيْلَ اِذَا كِلْتُمْ وَزِنُوْا بِالْقِسْطَاسِ الْمُسْتَقِيْمِ ذٰلِكَ خَيْرٌ وَّاَحْسَنُ تَأْوِيْلًا
36	और उस चीज़ का पीछा न करो जिसके बारे में तुम्हें कोई इल्म नहीं है। निश्चित रूप से कान, आँख और दिल, इन सब की ज़िम्मेदारी पूछी जाएगी।	وَلَا تَقْفُ مَا لَيْسَ لَكَ بِه عِلْمٌ اِنَّ السَّمْعَ وَالْبَصَرَ وَالْفُؤَادَ كُلُّ اُولٰٓئِكَ كَانَ عَنْهُ مَسْـُٔوْلًا
37	और ज़मीन पर घमंड से न चलो; न तो तुम ज़मीन को चीर सकते हो और न ही पहाड़ों की ऊँचाई तक पहुँच सकते हो।	وَلَا تَمْشِ فِي الْاَرْضِ مَرَحًا اِنَّكَ لَنْ تَخْرِقَ الْاَرْضَ وَلَنْ تَبْلُغَ الْجِبَالَ طُوْلًا
38	ये सारी चीज़ें, जिनका बुरा होना तुम्हारे रब के पास नापसंद है।	كُلُّ ذٰلِكَ كَانَ سَيِّئُه عِنْدَ رَبِّكَ مَكْرُوْهًا
39	यह उस हिकमत का हिस्सा है जो तुम्हारे रब ने तुम्हारी तरफ वह्य की है। और अल्लाह के साथ किसी और को खुदा न बनाओ, वरना तुम जहन्नम में डाल जाओगे, निंदित और ठुकराए हुए।	ذٰلِكَ مِمَّآ اَوْحٰٓى اِلَيْكَ رَبُّكَ مِنَ الْحِكْمَةِ وَلَا تَجْعَلْ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ فَتُلْقٰى فِيْ جَهَنَّمَ مَلُوْمًا مَّدْحُوْرًا
40	क्या तुम्हारा रब तुम्हें बेटों से खास करता है और खुद फरिश्तों को बेटियाँ लेता है? निश्चित रूप से तुम बहुत बड़ी बात कहते हो।	اَفَاَصْفٰىكُمْ رَبُّكُمْ بِالْبَنِيْنَ وَاتَّخَذَ مِنَ الْمَلٰٓئِكَةِ اِنَاثًا اِنَّكُمْ لَتَقُوْلُوْنَ قَوْلًا عَظِيْمًا
41	और निश्चित रूप से हमने इस कुरआन में बार-बार (चेतावनी) बयान की है ताकि वे याद रखें लेकिन यह उनकी नाफरमानी को और बढ़ा देता है।	وَلَقَدْ صَرَّفْنَا فِيْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ لِيَذَّكَّرُوْا وَمَا يَزِيْدُهُمْ اِلَّا نُفُوْرًا
42	कह दो (मुहम्मद), 'अगर उसके साथ और खुदा होते, जैसा कि वे कहते हैं, तो वे अर्श के मालिक तक पहुँचने की राह तलाश करते।'	قُلْ لَّوْ كَانَ مَعَه اٰلِهَةٌ كَمَا يَقُوْلُوْنَ اِذًا لَّابْتَغَوْا اِلٰى ذِى الْعَرْشِ سَبِيْلًا
43	वह (अल्लाह) उससे बहुत ऊँचा और महान है जो वे कहते हैं, बहुत ऊँचा और बहुत बड़ा।	سُبْحٰنَه وَتَعٰلٰى عَمَّا يَقُوْلُوْنَ عُلُوًّا كَبِيْرًا

44	सातों आसमान, ज़मीन और जो कछु उनम`ह`ै सब अल्लाह की तसबीह करत`ह`ी और कोई चीज़ ऐसी नह`ी जो उसकी तारीफ क` साथ तसबीह न कर`, लेकिन तम उनकी तसबीह को समझत` नह`ी। नश्चित रप स`वह बहत सहनशील और बहत माफ करन` वाला ह`ै	تُسَبِّحُ لَهُ السَّمٰوٰتُ السَّبْعُ وَالْاَرْضُ وَمَنْ فِيْهِنَّ وَاِنْ مِّنْ شَيْءٍ اِلَّا يُسَبِّحُ بِحَمْدِهٖ وَلٰكِنْ لَّا تَفْقَهُوْنَ تَسْبِيْحَهُمْ اِنَّه كَانَ حَلِيْمًا غَفُوْرًا
45	और जब तम (महम्मद) कुआन पढत`हो, तो हम तमहार`और उन लोगों क`बीच जो आख़रित पर ईमान नह`ी लात`, एक अनदेखा परदा डाल दते`ह`ै	وَاِذَا قَرَأْتَ الْقُرْاٰنَ جَعَلْنَا بَيْنَكَ وَبَيْنَ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ حِجَابًا مَّسْتُوْرًا
46	और हमन`उनक`दलिों पर परदा डाल दयिा ह`ैताकि व`इस`न समझ सक`, और उनक`कानों म`बोझ डाल दयिा ह`ै और जब तम कुआन म`अपन`रब का अकले`ज़िक्र करत`हो, तो व`नफरत क` मार`पीठ फरेकर भाग जात`ह`ै	وَّجَعَلْنَا عَلٰى قُلُوْبِهِمْ اَكِنَّةً اَنْ يَّفْقَهُوْهُ وَفِيْٓ اٰذَانِهِمْ وَقْرًا وَاِذَا ذَكَرْتَ رَبَّكَ فِى الْقُرْاٰنِ وَحْدَه وَلَّوْا عَلٰٓى اَدْبَارِهِمْ نُفُوْرًا
47	हम बहेतर जानत`ह`ैकि व`कसि तरह सनुत`ह`ैजब व`तमहारी बात सनुत`ह`ै(महम्मद), और जब व`आपस म`फसुफसुात`ह`ै, जब ज़ालमि लोग कहत`ह`ै, 'तम तो बस एक जादूग्रसत आदमी की परैवी कर रह`हो।'	نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَا يَسْتَمِعُوْنَ بِهٖٓ اِذْ يَسْتَمِعُوْنَ اِلَيْكَ وَاِذْ هُمْ نَجْوٰٓى اِذْ يَقُوْلُ الظّٰلِمُوْنَ اِنْ تَتَّبِعُوْنَ اِلَّا رَجُلًا مَّسْحُوْرًا
48	दखेो, व`तमहार`लएि (महम्मद) कसैी-कसैी मसिाल`लात`ह`ै; इस वजह स`व`गमराह हो गए और अब सही रासता नह`ी पा सकत`।	اُنْظُرْ كَيْفَ ضَرَبُوْا لَكَ الْاَمْثَالَ فَضَلُّوْا فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ سَبِيْلًا
49	और व`कहत`ह`ै, 'जब हम हड्डयिाँ और टकुड़े-टकुड़े हो जाएँग`, तो कया हम वाकई नई सषृ्टि क`रप म`दोबारा उठाए जाएँग`?'	وَقَالُوْٓا ءَاِذَا كُنَّا عِظَامًا وَّرُفَاتًا ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ خَلْقًا جَدِيْدًا
50	कह दो (महम्मद), 'तम पत्थर बन जाओ या लोहा,	قُلْ كُوْنُوْا حِجَارَةً اَوْ حَدِيْدًا
51	या कोई ऐसी चीज़ बन जाओ जो तमहार`ख़याल म`सबस`बड़ी हो।' फरि व`पछूग`, 'हम`दोबारा कौन ज़निदा करगेा?' कह दो, 'वही जसिन`तमह`पहली बार बनाया।' फरि व`तमहारी तरफ अपन`सरि हलिाएँग`और कहग`, 'यह कब होगा?' कह दो, 'शायद यह बहत करीब ह`ै'	اَوْ خَلْقًا مِّمَّا يَكْبُرُ فِيْ صُدُوْرِكُمْ فَسَيَقُوْلُوْنَ مَنْ يُّعِيْدُنَا قُلِ الَّذِيْ فَطَرَكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍ فَسَيُنْغِضُوْنَ اِلَيْكَ رُءُوْسَهُمْ وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هُوَ قُلْ عَسٰٓى اَنْ يَّكُوْنَ قَرِيْبًا
52	वह दनि जब वह तमह`बलाएगा, और तम उसकी तारीफ क` साथ उसका जवाब दोग`और तमह`लगगेा कि तम (कबर म`) बस थोड़ी दरे रह`।	يَوْمَ يَدْعُوْكُمْ فَتَسْتَجِيْبُوْنَ بِحَمْدِهٖ وَتَظُنُّوْنَ اِنْ لَّبِثْتُمْ اِلَّا قَلِيْلًا
53	और मरे`बनदों`स`कह दो, 'व`ऐसी बात कह`जो सबस`अचछी हो। नश्चित रप स`शैतान उनक`बीच फट डालता ह`ै नश्चित रप स`शैतान इंसान का खलुा दशमन ह`ै'	وَقُلْ لِّعِبَادِيْ يَقُوْلُوا الَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ اِنَّ الشَّيْطٰنَ يَنْزَغُ بَيْنَهُمْ اِنَّ الشَّيْطٰنَ كَانَ لِلْاِنْسَانِ عَدُوًّا مُّبِيْنًا
54	तमहारा रब तमह`बहेतर जानता ह`ै अगर वह चाह`, तो तम पर रहम करगेा, और अगर चाह`, तो तमह`अज़ाब दगेा। और हमन` तमह`(महम्मद) उनक`लएि ज़मि्मदेार नह`ी बनाया।	رَبُّكُمْ اَعْلَمُ بِكُمْ اِنْ يَّشَاْ يَرْحَمْكُمْ اَوْ اِنْ يَّشَاْ يُعَذِّبْكُمْ وَمَآ اَرْسَلْنٰكَ عَلَيْهِمْ وَكِيْلًا

وَرَبُّكَ اَعْلَمُ بِمَنْ فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَلَقَدْ فَضَّلْنَا بَعْضَ النَّبِيّٖنَ عَلٰى بَعْضٍ وَّاٰتَيْنَا دَاوٗدَ زَبُوْرًا	55	और तुम्हारा रब बहेतर जानता ह कि आसमानों और ज़मीन म कौन ह और नशि्चति रूप स हमन कछु नबयिों को दूसरों पर फज़ीलत दी, और हमन दाऊद को ज़बूर दी।
قُلِ ادْعُوا الَّذِيْنَ زَعَمْتُمْ مِّنْ دُوْنِه فَلَا يَمْلِكُوْنَ كَشْفَ الضُّرِّ عَنْكُمْ وَلَا تَحْوِيْلًا	56	कह दो (मुहम्मद), 'उन लोगों को बुलाओ जनि्ह तुम अल्लाह क सवि (खुद्ा) समझत हो, व न तो तुम्हारा नुकसान दूर कर सकत ह और न ही उस बदल सकत ह।'
اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ يَبْتَغُوْنَ اِلٰى رَبِّهِمُ الْوَسِيْلَةَ اَيُّهُمْ اَقْرَبُ وَيَرْجُوْنَ رَحْمَتَه وَيَخَافُوْنَ عَذَابَه اِنَّ عَذَابَ رَبِّكَ كَانَ مَحْذُوْرًا	57	व लोग जनि्ह व पुकारत ह, व खुद अपन रब क करीब होन की राह तलाश करत ह, कि उनम स कौन सबस ज़्यादा करीब ह और व उसकी रहमत की उम्मीद करत ह और उसक अज़ाब स डरत ह। नशि्चति रूप स तुम्हार रेब का अज़ाब डरन की चीज़ ह।
وَاِنْ مِّنْ قَرْيَةٍ اِلَّا نَحْنُ مُهْلِكُوْهَا قَبْلَ يَوْمِ الْقِيٰمَةِ اَوْ مُعَذِّبُوْهَا عَذَابًا شَدِيْدًا كَانَ ذٰلِكَ فِى الْكِتٰبِ مَسْطُوْرًا	58	और कोई ऐसी बसती नहीं जसिक लोग नाफरमान हों, जसि हम कयिामत क दनि स पहल हलाक न कर या उस सख़्त अज़ाब न द। यह कताि (लौह महफ़ूज़) म लखिा हुआ ह।
وَمَا مَنَعَنَآ اَنْ نُّرْسِلَ بِالْاٰيٰتِ اِلَّآ اَنْ كَذَّبَ بِهَا الْاَوَّلُوْنَ وَاٰتَيْنَا ثَمُوْدَ النَّاقَةَ مُبْصِرَةً فَظَلَمُوْا بِهَا وَمَا نُرْسِلُ بِالْاٰيٰتِ اِلَّا تَخْوِيْفًا	59	और हम तझु पर (मुहम्मद) नशिानयिाँ भजेन स कछु नहीं रोका, सवाय इसक कि पहल क लोगों न उन नशिानयिों को झठुलाया। और हमन समदू को ऊटँनी दी, जो साफ़ नशिानी थी, लकेनि उनहोंन उसका जुल्म कयिा। और हम नशिानयिाँ सरि्फ़ डरान के लएि भजेत ह।
وَاِذْ قُلْنَا لَكَ اِنَّ رَبَّكَ اَحَاطَ بِالنَّاسِ وَمَا جَعَلْنَا الرُّءْيَا الَّتِيْٓ اَرَيْنٰكَ اِلَّا فِتْنَةً لِّلنَّاسِ وَالشَّجَرَةَ الْمَلْعُوْنَةَ فِى الْقُرْاٰنِ وَنُخَوِّفُهُمْ فَمَا يَزِيْدُهُمْ اِلَّا طُغْيَانًا كَبِيْرًا	60	और (याद करो) जब हमन तुम्हारी तरफ वह्य की, 'नशि्चति रूप स तुम्हार रेब का इल्म सार इंसानों को घरे हुए ह।' और हमन वह ख़्वाब जो तुम्ह दखिाया, उस और कुरआन म लानत कए हुए पड़े (ज़क़्कूम) को इंसानों क लएि इम्तहिान बनाया। और हम उनह डरात ह, लकेनि यह उनकी नाफरमानी को और बढ़ा दतेा ह।
وَاِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِيْسَ قَالَ ءَاَسْجُدُ لِمَنْ خَلَقْتَ طِيْنًا	61	और (याद करो) जब हमन फरशि्तों स कहा, 'आदम को सजदा करो,' तो उनहोंन सजदा कयिा, सवाय इबलीस क। उसन कहा, 'कया म उसको सजदा कर जिसे तनू मटि्टी स बनाया?'
قَالَ اَرَاَيْتَكَ هٰذَا الَّذِيْ كَرَّمْتَ عَلَيَّ لَئِنْ اَخَّرْتَنِ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ لَاَحْتَنِكَنَّ ذُرِّيَّتَه اِلَّا قَلِيْلًا	62	उसन (इबलीस न) कहा, 'मुझ बता, कया यह वह ह जसि तनू मुझस ज़्यादा इज़्ज़त दी? अगर तू मुझ कयिामत क दनि तक मोहलत द, तो म उसकी औलाद को, कछु को छोड़कर, ज़रू गुमराह कर दूँगा।'
قَالَ اذْهَبْ فَمَنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ فَاِنَّ جَهَنَّمَ جَزَاؤُكُمْ جَزَاءً مَّوْفُوْرًا	63	(अल्लाह न) कहा, 'जा, लकेनि जो कोई उनम स तरेी परैवी करगेा, तो नशि्चति रूप स जहन्नम तुम सब का बदला होगी, एक पूरा बदला।'

64	और उनमे॑ से॑ जिसि॑ त॒ू अपनी आवाज़ स॑े बहका सक॑े, बहका ल॑े और अपनी सवारियों॑ और पदैल सनेाओं॑ को उनक॑े ख़लिाफ भजे द॑े, और उनक॑े माल और औलाद म॑ शरीक हो जा, और उनह॑ वाद॑े द॑ो' लकेनि शतैान उनह॑ सरिफ़ धोख॑े क॑े वाद॑े दतेा ह॑ै	وَاسْتَفْزِزْ مَنِ اسْتَطَعْتَ مِنْهُمْ بِصَوْتِكَ وَاَجْلِبْ عَلَيْهِمْ بِخَيْلِكَ وَرَجِلِكَ وَشَارِكْهُمْ فِي الْاَمْوَالِ وَالْاَوْلَادِ وَعِدْهُمْ وَمَا يَعِدُهُمُ الشَّيْطٰنُ اِلَّا غُرُوْرًا
65	'मरे॑ बनद॒ों पर तरे॑ कोई ज़ोर नहीं चलगेा।' और तमु॒हारा रब हफिाज़त करन॑े क॑े लएि काफी ह॑ै	اِنَّ عِبَادِيْ لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ سُلْطٰنٌ وَكَفٰى بِرَبِّكَ وَكِيْلًا
66	तमु॒हारा रब वही ह॑ै जो तमु॒हार॑े लएि समंदर म॑े जहाज़ चलाता ह॑ै ताकि तमु॒ उसकी कृपा तलाश कर सको। नश्चिति रूप॒ स॑े वह तमु॒ पर बहत॒ महेरबान ह॑ै	رَبُّكُمُ الَّذِيْ يُزْجِيْ لَكُمُ الْفُلْكَ فِي الْبَحْرِ لِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ اِنَّهٗ كَانَ بِكُمْ رَحِيْمًا
67	और जब तमु॒ह॑े समंदर म॑े कोई मसु॒ीबत छ॒ू लतेी ह॑ै, तो व॑े सब जनि॑ह॑े तमु॒ पक॒ारत॑े हो, गायब हो जात॑े ह॑ै, सवाय उसक॑ो लकेनि जब वह तमु॒ह॑े ज़मीन पर बचा लतेा ह॑ै, तो तमु॒ मह॒ुँ फरे लत॑े हो। और इंसान तो बहत॒ नाशक॒ुरा ह॑ै	وَاِذَا مَسَّكُمُ الضُّرُّ فِي الْبَحْرِ ضَلَّ مَنْ تَدْعُوْنَ اِلَّآ اِيَّاهُ فَلَمَّا نَجّٰىكُمْ اِلَى الْبَرِّ اَعْرَضْتُمْ وَكَانَ الْاِنْسَانُ كَفُوْرًا
68	क्या तमु॒ह॑े यह अमान ह॑ै कि॑ वह तमु॒ह॑े ज़मीन क॑े कसिी हसि॑स॑े म॑े न धसँा द॑े या तमु॒ पर पत्थरों॑ वाला तफ़ूान न भजे द? फरि॑ तमु॒ कोई मददगार नहीं॑ पाओग॑े,	اَفَاَمِنْتُمْ اَنْ يَّخْسِفَ بِكُمْ جَانِبَ الْبَرِّ اَوْ يُرْسِلَ عَلَيْكُمْ حَاصِبًا ثُمَّ لَا تَجِدُوْا لَكُمْ وَكِيْلًا
69	या क्या तमु॒ह॑े यह अमान ह॑ै कि॑ वह तमु॒ह॑े फरि॑ स॑े समंदर म॑े न ल॑े जाए, और तमु॒ पर तफ़ूान भजेकर तमु॒ह॑े तमु॒हार॑े कफ़ु॒र की वजह स॑े डबु॒ो न द? फरि॑ तमु॒ हमार॑े ख़लिाफ कोई मददगार नहीं॑ पाओग॑े।	اَمْ اَمِنْتُمْ اَنْ يُّعِيْدَكُمْ فِيْهِ تَارَةً اُخْرٰى فَيُرْسِلَ عَلَيْكُمْ قَاصِفًا مِّنَ الرِّيْحِ فَيُغْرِقَكُمْ بِمَا كَفَرْتُمْ ثُمَّ لَا تَجِدُوْا لَكُمْ عَلَيْنَا بِهٖ تَبِيْعًا
70	और नश्चिति रूप॒ स॑े हमन॑े आदम की औलाद को इज़्ज़त दी, और हम उनह॑ ज़मीन और समंदर म॑े सवारी दी, और उनह॑ अच्छी-अच्छी चीज़ों॑ स॑े रज़िक़ दयिा, और उनह॑ अपनी बहत॒ सी मख़लक़ात पर पूरी फज़ीलत दी।	وَلَقَدْ كَرَّمْنَا بَنِيْٓ اٰدَمَ وَحَمَلْنٰهُمْ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ وَرَزَقْنٰهُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ وَفَضَّلْنٰهُمْ عَلٰى كَثِيْرٍ مِّمَّنْ خَلَقْنَا تَفْضِيْلًا
71	(याद करो) उस दनि॑ को जब हम हर उम्मत को उनक॑े इमाम क॑े साथ बलाएगँ॑े; और जसि॑ उसका अमलनामा दाईं॑ तरफ दयिा जाएगा, व॑े अपनी कतिाब को (खश॒ी स॑े) पढ़ेग॑े, और उनक॑े साथ ज़रा भी जल॒ुम नहीं॑ होगा।	يَوْمَ نَدْعُوْا كُلَّ اُنَاسٍۢ بِاِمَامِهِمْ فَمَنْ اُوْتِيَ كِتٰبَهٗ بِيَمِيْنِهٖ فَاُولٰٓئِكَ يَقْرَءُوْنَ كِتٰبَهُمْ وَلَا يُظْلَمُوْنَ فَتِيْلًا
72	और जो कोई इस दन॒ुयिा म॑े (दलि स॑े) अंधा ह॑ै, वह आखरित म॑े भी अंधा और रास्त॑े स॑े बहत॒ दर॒ू भटका हआ॒ होगा।	وَمَنْ كَانَ فِيْ هٰذِهٖٓ اَعْمٰى فَهُوَ فِي الْاٰخِرَةِ اَعْمٰى وَاَضَلُّ سَبِيْلًا
73	और व॑े लोग तमु॒ह॑े (मह॒म्मद) उस वह्य स॑े हटान॑े क॑े करीब थ॑े जो हमन॑े तमु॒हारी तरफ की, ताकि तमु॒ हमार॑े ख़लिाफ कछ॒ और गढ़ लो; और अगर ऐसा होता, तो व॑े तमु॒ह॑े अपना दोस्त॑ बना लत॑े।	وَاِنْ كَادُوْا لَيَفْتِنُوْنَكَ عَنِ الَّذِيْٓ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ لِتَفْتَرِيَ عَلَيْنَا غَيْرَهٗ وَاِذًا لَّاتَّخَذُوْكَ خَلِيْلًا

وَلَوْلَآ اَنْ ثَبَّتْنٰكَ لَقَدْ كِدْتَّ تَرْكَنُ اِلَيْهِمْ شَيْـًٔا قَلِيْلًا	और अगर हमने तुम्हारा दिल मज़बूत न किया होता, तो शायद तुम उनकी तरफ थोड़ा झुक जाते।	**74**
اِذًا لَّاَذَقْنٰكَ ضِعْفَ الْحَيٰوةِ وَضِعْفَ الْمَمَاتِ ثُمَّ لَا تَجِدُ لَكَ عَلَيْنَا نَصِيْرًا	अगर ऐसा होता, तो हम तुम्हें इस दुनिया में दोगुनी सजा और मरने के बाद दोगुनी सजा का मज़ा चखाते, और तुम हमारे ख़िलाफ कोई मददगार न पाते।	**75**
وَاِنْ كَادُوْا لَيَسْتَفِزُّوْنَكَ مِنَ الْاَرْضِ لِيُخْرِجُوْكَ مِنْهَا وَاِذًا لَّا يَلْبَثُوْنَ خِلٰفَكَ اِلَّا قَلِيْلًا	और निश्चित रूप से वे तुम्हें (मुहम्मद) उस ज़मीन (मक्का) से बेचैन करने के करीब थे ताकि तुम्हें वहाँ से निकाल दें, और अगर ऐसा होता, तो तुम्हारे बाद वे ज़्यादा देर न ठहरते।	**76**
سُنَّةَ مَنْ قَدْ اَرْسَلْنَا قَبْلَكَ مِنْ رُّسُلِنَا وَلَا تَجِدُ لِسُنَّتِنَا تَحْوِيْلًا	यह उन रसूलों का तरीका है जिन्हें हमने तुमसे पहले भेजा, और तुम हमारे तरीके में कोई बदलाव नहीं पाओगे।	**77**
اَقِمِ الصَّلٰوةَ لِدُلُوْكِ الشَّمْسِ اِلٰى غَسَقِ الَّيْلِ وَقُرْاٰنَ الْفَجْرِ اِنَّ قُرْاٰنَ الْفَجْرِ كَانَ مَشْهُوْدًا	सूरज ढलने से लेकर रात की गहराई तक नमाज़ कायम करो और सुबह की नमाज़ भी। निश्चित रूप से सुबह की नमाज़ (फरिश्तों द्वारा) देखी जाती है।	**78**
وَمِنَ الَّيْلِ فَتَهَجَّدْ بِهٖ نَافِلَةً لَّكَ عَسٰٓى اَنْ يَّبْعَثَكَ رَبُّكَ مَقَامًا مَّحْمُوْدًا	और रात के कुछ हिस्से में तहज्जुद की नमाज़ पढ़ो, जो तुम्हारे लिए एक अतिरिक्त इबादत है; शायद तुम्हारा रब तुम्हें मक़ाम-ए-महमूद (प्रशंसित स्थान) पर उठाए।	**79**
وَقُلْ رَّبِّ اَدْخِلْنِيْ مُدْخَلَ صِدْقٍ وَّاَخْرِجْنِيْ مُخْرَجَ صِدْقٍ وَّاجْعَلْ لِّيْ مِنْ لَّدُنْكَ سُلْطٰنًا نَّصِيْرًا	और कहो (मुहम्मद), 'ऐ मेरे रब! मुझे सच्चाई के साथ दाखिल कर और सच्चाई के साथ निकाल, और मुझे अपनी तरफ से ऐसी ताकत दे जो मेरी मदद करे।'	**80**
وَقُلْ جَاءَ الْحَقُّ وَزَهَقَ الْبَاطِلُ اِنَّ الْبَاطِلَ كَانَ زَهُوْقًا	और कहो, 'हक़ आ गया और बातिल मिट गया।' निश्चित रूप से बातिल मिटने वाला ही है।	**81**
وَنُنَزِّلُ مِنَ الْقُرْاٰنِ مَا هُوَ شِفَآءٌ وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ وَلَا يَزِيْدُ الظّٰلِمِيْنَ اِلَّا خَسَارًا	और हम क़ुरआन में से वह चीज़ नाज़िल करते हैं जो ईमान वालों के लिए शिफा और रहमत है, जबकि ज़ालिमों के लिए यह सिर्फ़ नुकसान को बढ़ाता है।	**82**
وَاِذَآ اَنْعَمْنَا عَلَى الْاِنْسَانِ اَعْرَضَ وَنَاٰ بِجَانِبِهٖ وَاِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ كَانَ يَـُٔوْسًا	और जब हम इंसान को नेमत देते हैं, तो वह मुँह फेर लेता है और घमंड में दूर चला जाता है; और जब उसे कोई मुसीबत छू लेती है, तो वह मायूस हो जाता है।	**83**
قُلْ كُلٌّ يَّعْمَلُ عَلٰى شَاكِلَتِهٖ فَرَبُّكُمْ اَعْلَمُ بِمَنْ هُوَ اَهْدٰى سَبِيْلًا	कह दो (मुहम्मद), 'हर कोई अपनी फितरत के मुताबिक काम करता है' तो तुम्हारा रब बेहतर जानता है कि कौन सही रास्ते पर है।	**84**
وَيَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الرُّوْحِ قُلِ الرُّوْحُ مِنْ اَمْرِ رَبِّيْ وَمَآ اُوْتِيْتُمْ مِّنَ الْعِلْمِ اِلَّا قَلِيْلًا	और वे तुमसे (मुहम्मद) रूह के बारे में पूछते हैं। कह दो, 'रूह मेरे रब के मामलों में से है, और तुम्हें बहुत कम इल्म दिया गया है।'	**85**

وَلَئِنْ شِئْنَا لَنَذْهَبَنَّ بِالَّذِيْٓ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ ثُمَّ لَا تَجِدُ لَكَ بِهٖ عَلَيْنَا وَكِيْلًا	**86**	और अगर हम चाहे, तो वह वह्य जो हमने तुम्हारी तरफ की, उसे उठा लें, और तुम हमारे ख़िलाफ कोई मददगार न पाओ,
اِلَّا رَحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ اِنَّ فَضْلَهٗ كَانَ عَلَيْكَ كَبِيْرًا	**87**	सिवाय इसके कि यह तुम्हारे रब की रहमत हो। निश्चित रूप से उसकी तुम पर बहुत बड़ी मेहरबानी हो।
قُلْ لَّئِنِ اجْتَمَعَتِ الْاِنْسُ وَالْجِنُّ عَلٰٓى اَنْ يَّأْتُوْا بِمِثْلِ هٰذَا الْقُرْاٰنِ لَا يَأْتُوْنَ بِمِثْلِهٖ وَلَوْ كَانَ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ ظَهِيْرًا	**88**	कह दो (मुहम्मद), 'अगर इंसान और जिन्न इकट्ठे होकर इस क़ुरआन जैसा कुछ लाने की कोशिश करें, तो वे ऐसा नहीं ला सकते, भले ही वे एक-दूसरे की मदद करें।'
وَلَقَدْ صَرَّفْنَا لِلنَّاسِ فِيْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ فَاَبٰٓى اَكْثَرُ النَّاسِ اِلَّا كُفُوْرًا	**89**	और निश्चित रूप से हमने इस क़ुरआन में इंसानों के लिए हर तरह की मिसाल बार-बार बयान की है, लेकिन ज़्यादातर लोग इंकार करने के सिवा कुछ नहीं करते।
وَقَالُوْا لَنْ نُّؤْمِنَ لَكَ حَتّٰى تَفْجُرَ لَنَا مِنَ الْاَرْضِ يَنْۢبُوْعًا	**90**	और वे कहते हैं, 'हम तुम पर यक़ीन नहीं करेंगे (मुहम्मद) जब तक कि तुम ज़मीन से हमारे लिए एक चश्मा न निकाल दो,
اَوْ تَكُوْنَ لَكَ جَنَّةٌ مِّنْ نَّخِيْلٍ وَّعِنَبٍ فَتُفَجِّرَ الْاَنْهٰرَ خِلٰلَهَا تَفْجِيْرًا	**91**	या तुम्हारे पास खजूर और अंगूर का एक बाग़ न हो, और तुम उसमें से नहरें न बहा दो,
اَوْ تُسْقِطَ السَّمَآءَ كَمَا زَعَمْتَ عَلَيْنَا كِسَفًا اَوْ تَاْتِيَ بِاللّٰهِ وَالْمَلٰٓئِكَةِ قَبِيْلًا	**92**	या तुम आसमान को टुकड़े-टुकड़े करके हम पर न गिरा दो, जैसा तुम कहते हो, या तुम अल्लाह और फ़रिश्तों को हमारे सामने ले आओ,
اَوْ يَكُوْنَ لَكَ بَيْتٌ مِّنْ زُخْرُفٍ اَوْ تَرْقٰى فِي السَّمَآءِ وَلَنْ نُّؤْمِنَ لِرُقِيِّكَ حَتّٰى تُنَزِّلَ عَلَيْنَا كِتٰبًا نَّقْرَؤُهٗ قُلْ سُبْحَانَ رَبِّيْ هَلْ كُنْتُ اِلَّا بَشَرًا رَّسُوْلًا	**93**	या तुम्हारे पास सोने का एक मकान न हो, या तुम आसमान पर न चढ़ जाओ। और हम तुम्हारे आसमान पर चढ़ने पर यक़ीन नहीं करेंगे जब तक कि तुम हमारे लिए एक किताब न उतार लाओ जिसे हम पढ़ सकें।' कह दो (मुहम्मद), 'मेरा रब महान और पवित्र है, क्या मैं बस एक इंसान रसूल नहीं हूँ?'
وَمَا مَنَعَ النَّاسَ اَنْ يُّؤْمِنُوْٓا اِذْ جَآءَهُمُ الْهُدٰٓى اِلَّآ اَنْ قَالُوْٓا اَبَعَثَ اللّٰهُ بَشَرًا رَّسُوْلًا	**94**	और इंसानों को जब हिदायत आई, तो उन्हें ईमान लाने से सिर्फ़ यह बात रोकती थी कि वे कहते थे, 'क्या अल्लाह ने एक इंसान को रसूल बनाकर भेजा?'
قُلْ لَّوْ كَانَ فِي الْاَرْضِ مَلٰٓئِكَةٌ يَّمْشُوْنَ مُطْمَئِنِّيْنَ لَنَزَّلْنَا عَلَيْهِمْ مِّنَ السَّمَآءِ مَلَكًا رَّسُوْلًا	**95**	कह दो (मुहम्मद), 'अगर ज़मीन पर फ़रिश्ते सुकून से चलते-फिरते होते, तो हम उनके लिए आसमान से एक फ़रिश्ता रसूल बनाकर भेजते।'
قُلْ كَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا بَيْنِيْ وَبَيْنَكُمْ اِنَّهٗ كَانَ بِعِبَادِهٖ خَبِيْرًا بَصِيْرًا	**96**	कह दो (मुहम्मद), 'अल्लाह मेरे और तुम्हारे बीच गवाह के लिए काफ़ी है। निश्चित रूप से वह अपने बन्दों को जानने वाला और देखने वाला है।'

97	और जिसे अल्लाह हिदायत दे, वही हिदायत पाता है, और जिसे वह गुमराह कर दे, तो तुम उसके लिए उसके सिवा कोई मददगार नहीं पाओगे। और हम उन्हें क़ियामत के दिन मुँह के बल, अंधा, गूँगा और बहरा करके इकट्ठा करेंगे। उनका ठिकाना जहन्नम है। जब भी उसकी आग कम होगी, हम उनके लिए उसकी लपट और बढ़ा देंगे।	وَمَنْ يَّهْدِ اللّٰهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِ وَمَنْ يُّضْلِلْ فَلَنْ تَجِدَ لَهُمْ اَوْلِيَاءَ مِنْ دُوْنِهٖ وَنَحْشُرُهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ عَلٰى وُجُوْهِهِمْ عُمْيًا وَّبُكْمًا وَّصُمًّا مَأْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ كُلَّمَا خَبَتْ زِدْنٰهُمْ سَعِيْرًا
98	यह उनका बदला है, क्योंकि उन्होंने हमारी आयतों का इंकार किया और कहा, 'जब हम हड्डियाँ और टुकड़े-टुकड़े हो जाएँगे, तो क्या हम वाक़ई नई सृष्टि के रूप में दोबारा उठाए जाएँगे?'	ذٰلِكَ جَزَاؤُهُمْ بِاَنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِنَا وَقَالُوْٓا ءَاِذَا كُنَّا عِظَامًا وَّرُفَاتًا ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ خَلْقًا جَدِيْدًا
99	क्या उन्होंने नहीं देखा कि अल्लाह, जिसने आसमानों और ज़मीन को बनाया, उनके जैसे और बनाने की ताक़त रखता है, और उसने उनके लिए एक मुक़र्रर वक़्त तय किया है, जिसमें कोई शक नहीं? फिर भी ज़ालिम लोग कुफ़्र के सिवा कुछ नहीं करते।	اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ قَادِرٌ عَلٰٓى اَنْ يَّخْلُقَ مِثْلَهُمْ وَجَعَلَ لَهُمْ اَجَلًا لَّا رَيْبَ فِيْهِ فَاَبَى الظّٰلِمُوْنَ اِلَّا كُفُوْرًا
100	कह दो (मुहम्मद), 'अगर तुम मेरे रब की रहमत के ख़ज़ानों पर कब़्ज़ा कर लो, तो तुम डर के मारे उस ख़र्च करने से बचोगे।' और इंसान तो बहुत कंजूस है।	قُلْ لَّوْ اَنْتُمْ تَمْلِكُوْنَ خَزَاۤئِنَ رَحْمَةِ رَبِّيْٓ اِذًا لَّاَمْسَكْتُمْ خَشْيَةَ الْاِنْفَاقِ وَكَانَ الْاِنْسَانُ قَتُوْرًا
101	और निश्चित रूप से हमने मूसा को नौ साफ़-साफ़ निशानियाँ दीं, तो बनी इसराइल से पूछो, जब वह उनके पास आया और फ़िरऔन ने उससे कहा, 'ऐ मूसा! मुझे तो लगता है कि तुम जादूग्रस्त हो।'	وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسٰى تِسْعَ اٰيٰتٍۢ بَيِّنٰتٍ فَسْـَٔلْ بَنِيْٓ اِسْرَاۤءِيْلَ اِذْ جَاۤءَهُمْ فَقَالَ لَهٗ فِرْعَوْنُ اِنِّيْ لَاَظُنُّكَ يٰمُوْسٰى مَسْحُوْرًا
102	उसने (मूसा ने) कहा, 'तुम अच्छी तरह जानते हो कि ये (निशानियाँ) आसमानों और ज़मीन के रब ने ही साफ़ सबूत के तौर पर उतारी हैं; और मुझे तो लगता है, ऐ फ़िरऔन, कि तुम हलाक हो जाओगे।'	قَالَ لَقَدْ عَلِمْتَ مَآ اَنْزَلَ هٰٓؤُلَاۤءِ اِلَّا رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ بَصَاۤئِرَ وَاِنِّيْ لَاَظُنُّكَ يٰفِرْعَوْنُ مَثْبُوْرًا
103	फिर उसने (फ़िरऔन ने) उन्हें (मूसा और उनके साथियों को) ज़मीन (मिस्र) से निकाल देना चाहा, तो हमने उसे और उसके साथ वालों को सबको डुबो दिया।	فَاَرَادَ اَنْ يَّسْتَفِزَّهُمْ مِّنَ الْاَرْضِ فَاَغْرَقْنٰهُ وَمَنْ مَّعَهٗ جَمِيْعًا
104	और उसके बाद हमने बनी इसराइल से कहा, 'इस ज़मीन में रहो, लेकिन जब दोबारा उठने का समय आएगा, तो हम तुम्हें मिला-जुला करके इकट्ठा करेंगे।'	وَّقُلْنَا مِنْۢ بَعْدِهٖ لِبَنِيْٓ اِسْرَاۤءِيْلَ اسْكُنُوا الْاَرْضَ فَاِذَا جَاۤءَ وَعْدُ الْاٰخِرَةِ جِئْنَا بِكُمْ لَفِيْفًا
105	और हमने (क़ुरआन को) हक़ के साथ उतारा और वह हक़ के साथ ही उतरा। और हमने तुम्हें (मुहम्मद) सिर्फ़ ख़ुशख़बरी देने वाला और डराने वाला बनाकर भेजा।	وَبِالْحَقِّ اَنْزَلْنٰهُ وَبِالْحَقِّ نَزَلَ وَمَآ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا مُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا
106	और क़ुरआन को हमने टुकड़ों-टुकड़ों में उतारा ताकि तुम (मुहम्मद) इसे लोगों को धीरे-धीरे पढ़ाओ, और हमने इसे बारी-बारी से उतारा।	وَقُرْاٰنًا فَرَقْنٰهُ لِتَقْرَاَهٗ عَلَى النَّاسِ عَلٰى مُكْثٍ وَّنَزَّلْنٰهُ تَنْزِيْلًا

قُلْ اٰمِنُوْا بِهٖٓ اَوْ لَا تُؤْمِنُوْا اِنَّ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ مِنْ قَبْلِهٖٓ اِذَا يُتْلٰى عَلَيْهِمْ يَخِرُّوْنَ لِلْاَذْقَانِ سُجَّدًا	**107**	कह दो (मुहम्मद), 'इस पर ईमान लाओ या न लाओ (अल्लाह के लिए बराबर है)। निश्चित रूप से जिन्हें पहले से इल्म दिया गया था, जब यह (क़ुरआन) उनके सामने पढ़ा जाता है, तो वे मुँह के बल सजदा करते हैं,
وَّيَقُوْلُوْنَ سُبْحٰنَ رَبِّنَآ اِنْ كَانَ وَعْدُ رَبِّنَا لَمَفْعُوْلًا	**108**	और वे कहते हैं, 'हमारा रब महान और पवित्र है; निश्चित रूप से हमारे रब का वादा पूरा होगा।'
وَيَخِرُّوْنَ لِلْاَذْقَانِ يَبْكُوْنَ وَيَزِيْدُهُمْ خُشُوْعًا	**109**	और वे रोते हुए मुँह के बल गिरते हैं और उनकी ख़ुशूअ (विनम्रता) और बढ़ जाती है।
قُلِ ادْعُوا اللّٰهَ اَوِ ادْعُوا الرَّحْمٰنَ اَيًّا مَّا تَدْعُوْا فَلَهُ الْاَسْمَاۤءُ الْحُسْنٰى وَلَا تَجْهَرْ بِصَلَاتِكَ وَلَا تُخَافِتْ بِهَا وَابْتَغِ بَيْنَ ذٰلِكَ سَبِيْلًا	**110**	कह दो (मुहम्मद), 'अल्लाह को पुकारो या रहमान को पुकारो। तुम जिस नाम से भी पुकारो, उसके लिए सबसे अच्छे नाम हैं' और अपनी नमाज़ में न तो बहुत ज़ोर से पढ़ो और न बहुत धीमे, बल्कि इन दोनों के बीच का रास्ता अपनाओ।
وَقُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ لَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا وَّلَمْ يَكُنْ لَّهٗ شَرِيْكٌ فِى الْمُلْكِ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ وَلِيٌّ مِّنَ الذُّلِّ وَكَبِّرْهُ تَكْبِيْرًا	**111**	और कहो, 'सारी तारीफ अल्लाह के लिए है, जिसने कोई औलाद रखी और न उसके मुल्क में कोई शरीक है, और न उसे किसी कमज़ोरी की वजह से किसी मददगार की ज़रूरत है, और उसकी बहुत ज़्यादा बड़ाई करो।'

छंदों की संख्या	اَلْكَهْف	مكية
११०	अल Kahf - 18	मक्की

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल Kahf (गुफ़ा)

1	सब प्रशंसा अल्लाह के लिए है जिसने अपने बन्दे पर किताब (क़ुरआन) उतारी और उसमें कोई टेढ़ापन नहीं रखा;	اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ عَلٰى عَبْدِهِ الْكِتٰبَ وَلَمْ يَجْعَلْ لَّهٗ عِوَجًا
2	सीधी राह दिखाने वाली, ताकि वह अपनी ओर से बहुत दर्दनाक सजा की चेतावनी दे और उन मोमिनों को ख़ुशख़बरी दे जो नेक काम करते हैं कि उनके लिए अच्छा बदला है,	قَيِّمًا لِّيُنْذِرَ بَأْسًا شَدِيْدًا مِّنْ لَّدُنْهُ وَيُبَشِّرَ الْمُؤْمِنِيْنَ الَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ الصّٰلِحٰتِ اَنَّ لَهُمْ اَجْرًا حَسَنًا
3	जिसमें वे हमेशा-हमेशा रहेंगे।	مّٰكِثِيْنَ فِيْهِ اَبَدًا
4	और ताकि उन लोगों को चेतावनी दे जो कहते हैं, 'अल्लाह ने एक बेटा लिया।'	وَّيُنْذِرَ الَّذِيْنَ قَالُوا اتَّخَذَ اللّٰهُ وَلَدًا
5	उनके पास इस बारे में कोई इल्म नहीं है, और न ही उनके बाप-दादों के पास था। कितनी बुरी बात है जो उनके मुँह से निकलती है; वे तो बस झूठ बोलते हैं।	مَّا لَهُمْ بِهٖ مِنْ عِلْمٍ وَّلَا لِاٰبَآئِهِمْ كَبُرَتْ كَلِمَةً تَخْرُجُ مِنْ اَفْوَاهِهِمْ اِنْ يَّقُوْلُوْنَ اِلَّا كَذِبًا
6	(ऐ रसूल) शायद तुम इस बात पर अपनी जान दे दोगे कि वे ईमान नहीं लाते, अगर वे इस बयान (क़ुरआन) पर यक़ीन न करें।	فَلَعَلَّكَ بَاخِعٌ نَّفْسَكَ عَلٰٓى اٰثَارِهِمْ اِنْ لَّمْ يُؤْمِنُوْا بِهٰذَا الْحَدِيْثِ اَسَفًا
7	निश्चित रूप से हमने जो कुछ ज़मीन पर है उसे उसकी ज़ीनत बनाया ताकि हम उनकी आज़माइश करें कि उनमें से कौन सबसे अच्छा अमल करता है।	اِنَّا جَعَلْنَا مَا عَلَى الْاَرْضِ زِيْنَةً لَّهَا لِنَبْلُوَهُمْ اَيُّهُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا
8	और निश्चित रूप से हम जो कुछ उस (ज़मीन) पर है उसे बंजर मैदान बना देंगे।	وَاِنَّا لَجٰعِلُوْنَ مَا عَلَيْهَا صَعِيْدًا جُرُزًا
9	क्या तुम समझते हो कि असहाबे कहफ़ और रक़ीम (गुहा के लोग और शिलालेख) हमारी निशानियों में से कोई अजीब निशानी थे?	اَمْ حَسِبْتَ اَنَّ اَصْحٰبَ الْكَهْفِ وَالرَّقِيْمِ كَانُوْا مِنْ اٰيٰتِنَا عَجَبًا
10	(याद करो) जब उन जवान लड़कों ने गुहा में पनाह ली, तो उन्होंने कहा, 'ऐ हमारे रब! हमें अपनी ओर से रहम अता कर और हमारे मामले में सीधी राह की तदबीर कर।'	اِذْ اَوَى الْفِتْيَةُ اِلَى الْكَهْفِ فَقَالُوْا رَبَّنَآ اٰتِنَا مِنْ لَّدُنْكَ رَحْمَةً وَّهَيِّئْ لَنَا مِنْ اَمْرِنَا رَشَدًا
11	तो हमने उस गुहा में उनके कानों पर कई सालों तक परदा डाल दिया।	فَضَرَبْنَا عَلٰٓى اٰذَانِهِمْ فِى الْكَهْفِ سِنِيْنَ عَدَدًا

12	फरि हमन॓उनह॒जगाया ताकि॒हम जान॓कि॒उन दो गरिहों॑म॓से॓ कौन सा उस समय को बहेतर गनिता ह॒जो व॓(गह्वा म॑) रहो।	ثُمَّ بَعَثْنٰهُمْ لِنَعْلَمَ اَيُّ الْحِزْبَيْنِ اَحْصٰى لِمَا لَبِثُوْٓا اَمَدًا
13	हम तमुह॒(महॖम्मद) उनकी कहानी सच क॓साथ बयान करत॓ ह॑। नशि॒चति रप॒ स॓व॓ कछु जवान थ॓जो अपन॓रब पर ईमान लाए, और हमन॓उनकी हदिायत को और बढ़ा दयिा।	نَحْنُ نَقُصُّ عَلَيْكَ نَبَاَهُمْ بِالْحَقِّ اِنَّهُمْ فِتْيَةٌ اٰمَنُوْا بِرَبِّهِمْ وَزِدْنٰهُمْ هُدًى
14	और हमन॓उनक॓दलिों को मजबू॒त कयिा जब व॓खड़॒हुए और उनहों॑न॓कहा, 'हमारा रब आसमानों और ज़मीन का रब ह॒; हम उसक॓सविा कसिी और खद्वा को नहीं॑ पक॒ारगे॓। अगर हम ऐसा कर॒, तो नशि॒चति रप॒ स॓हम बहतु॒ बड़ी॒ गलत बात कहगे॓।'	وَّرَبَطْنَا عَلٰى قُلُوْبِهِمْ اِذْ قَامُوْا فَقَالُوْا رَبُّنَا رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ لَنْ نَّدْعُوَا مِنْ دُوْنِهٖٓ اِلٰهًا لَّقَدْ قُلْنَآ اِذًا شَطَطًا
15	य॓हमारी कौम क॓लोग ह॒जनिहों॑न॓उसक॓सविा और खद्वाओं॑ को अपना लयिा। व॓उनक॓बार॓म॑ कोई साफ॒ दलील क॒यों॑ नहीं॑ लात? तो उसस॓ज़॒यादा ज़ालमि कौन होगा जो अल॒लाह पर झठू॒ गढ़?॒	هٰٓؤُلَاۗءِ قَوْمُنَا اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اٰلِهَةً ۭ لَوْلَا يَاْتُوْنَ عَلَيْهِمْ بِسُلْطٰنٍۢ بَيِّنٍ ۭ فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَي اللّٰهِ كَذِبًا
16	और जब तमु॒ उनह॒ॖ और उनकी अल॒लाह क॓सविा पज़ूी जान॓ वाली चीज़ों॒ को छोड़॒ दो, तो उस गह्वा म॑ पनाह लो, ताकि॒ तमुह॒ारा रब तमु॒ पर अपनी रहमत बरसाए और तमुह॒ार॓मामल॓म॑ कछु॒ फायदमेंद॒ चीज़॒ मह्वुैया कर॓।	وَاِذِ اعْتَزَلْتُمُوْهُمْ وَمَا يَعْبُدُوْنَ اِلَّا اللّٰهَ فَاْوٗٓا اِلَى الْكَهْفِ يَنْشُرْ لَكُمْ رَبُّكُمْ مِّنْ رَّحْمَتِهٖ وَيُهَيِّئْ لَكُمْ مِّنْ اَمْرِكُمْ مِّرْفَقًا
17	और तमु॒ दखे॓ोग॓कि॒सूरज जब उगता ह॒, तो उनकी गह्वा स॓दाई॑ तरफ झकु॒ता ह॒, और जब डबू॒ता ह॒, तो उनह॒ॖ बाई॑ तरफ छोड़॒ दते॓ा ह॒, जबकि॒ व॓उस (गह्वा) क॓खल॒े हसिस॓म॑ थ॓। यह अल॒लाह की नशिानयिों॑ म॓से॓ एक नशिानी थी। जसि॓अल॒लाह हदिायत द॒, वही हदिायत पाता ह॒; और जसि॓वह गमु॒राह कर द॒, तो तमु॒ उसक॓लएि कोई मददगार नहीं॑ पाओग॓जो उस॓रास॒ता दखिाए।	وَتَرَى الشَّمْسَ اِذَا طَلَعَتْ تَّزٰوَرُ عَنْ كَهْفِهِمْ ذَاتَ الْيَمِيْنِ وَاِذَا غَرَبَتْ تَّقْرِضُهُمْ ذَاتَ الشِّمَالِ وَهُمْ فِيْ فَجْوَةٍ مِّنْهُ ۭ ذٰلِكَ مِنْ اٰيٰتِ اللّٰهِ ۭ مَنْ يَّهْدِ اللّٰهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِ ۚ وَمَنْ يُّضْلِلْ فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ وَلِيًّا مُّرْشِدًا
18	और तमु॒ समझत॓कि॒व॓जाग रह॓े ह॒, जबकि॒व॓सो रह॓े थ॒; और हम उनह॒ॖ दाई॑ और बाई॑ तरफ उलट-पलट करत॓े थ॒, और उनका कतु॒ता अपनी दोनों॑ टाग॑ँ गह्वा क॓दरवाज॒े पर फलैाए हुए था। अगर तमु॒ उनह॒ॖ दखे॓ लते॓े, तो नशि॒चति रप॒ स॓तमु॒ उनस॓भाग खड़॒े होत॓और तमु॒ उनक॓डर स॓भर जात॓।	وَتَحْسَبُهُمْ اَيْقَاظًا وَّهُمْ رُقُوْدٌ ۚ وَّنُقَلِّبُهُمْ ذَاتَ الْيَمِيْنِ وَذَاتَ الشِّمَالِ ۚ وَكَلْبُهُمْ بَاسِطٌ ذِرَاعَيْهِ بِالْوَصِيْدِ ۭ لَوِ اطَّلَعْتَ عَلَيْهِمْ لَوَلَّيْتَ مِنْهُمْ فِرَارًا وَّلَمُلِئْتَ مِنْهُمْ رُعْبًا
19	और इसी तरह हमन॓उनह॒ॖ जगाया ताकि॒व॓आपस म॑ सवाल कर॓। उनम॑ स॓एक न॓कहा, 'तमु॒ यहा॑ँ कतिन॓दनि रहे?' उनहों॑न॓जवाब दयिा, 'हम यहा॑ँ एक दनि या उसका कछु॒ हसिसा॒ रहो॓' (दसूरों॑ न॑) कहा, 'तमुह॒ारा रब बहेतर जानता ह॒ कि॒तमु॒ कतिन॓दनि रहो॓। अब तमु॒ म॑ स॓कसिी एक को यह चादँी॑ का सकि॒का लकेर शहर भजेो, और वह दखे॓ कि॒कौन सा खाना सबस॓अच॒छा ह॒, और उसम॑ स॓कछु॒ खाना तमुह॒ार॓लएि लाए, और उस॓नरमी स॓पशे आना चाहए॓ और कसिी को भी तमुह॒ारी खबर नहीं॑ दनेी चाहए॓।'	وَكَذٰلِكَ بَعَثْنٰهُمْ لِيَتَسَاۗءَلُوْا بَيْنَهُمْ ۭ قَالَ قَاۗىِٕلٌ مِّنْهُمْ كَمْ لَبِثْتُمْ ۭ قَالُوْا لَبِثْنَا يَوْمًا اَوْ بَعْضَ يَوْمٍ ۭ قَالُوْا رَبُّكُمْ اَعْلَمُ بِمَا لَبِثْتُمْ ۚ فَابْعَثُوْٓا اَحَدَكُمْ بِوَرِقِكُمْ هٰذِهٖٓ اِلَى الْمَدِيْنَةِ فَلْيَنْظُرْ اَيُّهَآ اَزْكٰى طَعَامًا فَلْيَاْتِكُمْ بِرِزْقٍ مِّنْهُ وَلْيَتَلَطَّفْ وَلَا يُشْعِرَنَّ بِكُمْ اَحَدًا
20	क॒योंकि॒ अगर व॓तमुह॒ॖ पकड़॒ ल॑, तो व॓तमुह॒ॖ पत॒थर मार दगे॓ या तमुह॒ॖ अपन॓मजहब म॑ वापस लान॓की कोशशि करगे॓, और अगर ऐसा हआु, तो तमु॒ कभी कामयाब नहीं॑ होग॓।	اِنَّهُمْ اِنْ يَّظْهَرُوْا عَلَيْكُمْ يَرْجُمُوْكُمْ اَوْ يُعِيْدُوْكُمْ فِيْ مِلَّتِهِمْ وَلَنْ تُفْلِحُوْٓا اِذًا اَبَدًا

21	और इस तरह हमने (लोगों को) उनके बारे में बता दिया ताकि वे जानें कि अल्लाह का वादा सच है, और कियामत के दिन में कोई शक नहीं। जब वे आपस में उनके बारे में बहस कर रहे थे, तो कछ न कहा, 'उनके ऊपर एक इमारत बना दो, उनका रब उनके बारे में बेहतर जानता है।' जिन लोगों का उस मामले पर कब्ज़ा था, उन्होंने कहा, 'हम ज़रूर उनके ऊपर एक मस्ज़िद बनाएँगे।'	وَكَذٰلِكَ اَعْثَرْنَا عَلَيْهِمْ لِيَعْلَمُوْٓا اَنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّاَنَّ السَّاعَةَ لَا رَيْبَ فِيْهَا اِذْ يَتَنَازَعُوْنَ بَيْنَهُمْ اَمْرَهُمْ فَقَالُوا ابْنُوْا عَلَيْهِمْ بُنْيَانًا رَبُّهُمْ اَعْلَمُ بِهِمْ قَالَ الَّذِيْنَ غَلَبُوْا عَلٰٓى اَمْرِهِمْ لَنَتَّخِذَنَّ عَلَيْهِمْ مَّسْجِدًا
22	(कछ लोग) कहेंगे, '(उनकी संख़्या) तीन थी, चौथा उनका कत्ता था,' और (दूसरे) कहेंगे, '(उनकी संख़्या) पाँच थी, छठा उनका कत्ता था,' यह गबे की बात को अनमान लगाना है; और (कछ और) कहेंगे, '(उनकी संख़्या) सात थी, आठवाँ उनका कत्ता था।' कह दो (महम्मद), 'मेरा रब उनकी संख़्या को बेहतर जानता है; उनके बारे में बहत कम लोग जानते हैं' इसलिए उनके बारे में ज़ाहिरी बहस के सिवा और कोई बहस न करो और उनके बारे में किसी से कोई राय न माँगो।	سَيَقُوْلُوْنَ ثَلٰثَةٌ رَّابِعُهُمْ كَلْبُهُمْ وَيَقُوْلُوْنَ خَمْسَةٌ سَادِسُهُمْ كَلْبُهُمْ رَجْمًاۢ بِالْغَيْبِ وَيَقُوْلُوْنَ سَبْعَةٌ وَّثَامِنُهُمْ كَلْبُهُمْ قُلْ رَّبِّيْٓ اَعْلَمُ بِعِدَّتِهِمْ مَّا يَعْلَمُهُمْ اِلَّا قَلِيْلٌ فَلَا تُمَارِ فِيْهِمْ اِلَّا مِرَاۤءً ظَاهِرًا وَّلَا تَسْتَفْتِ فِيْهِمْ مِّنْهُمْ اَحَدًا
23	और किसी चीज़ के बारे में कभी न कहो, 'मैं इस कल ज़रूर करूँगा,'	وَلَا تَقُوْلَنَّ لِشَايْءٍ اِنِّيْ فَاعِلٌ ذٰلِكَ غَدًا
24	सिवाय इसके कि (कहो), 'इंशा अल्लाह।' और अपने रब को याद करो जब तम भूल जाओ और कहो, 'शायद मेरा रब मझे इससे भी ज़्यादा करीब की हिदायत दे।'	اِلَّآ اَنْ يَّشَاۤءَ اللّٰهُ وَاذْكُرْ رَّبَّكَ اِذَا نَسِيْتَ وَقُلْ عَسٰٓى اَنْ يَّهْدِيَنِ رَبِّيْ لِاَقْرَبَ مِنْ هٰذَا رَشَدًا
25	और वे अपनी गह्वा में तीन सौ साल रहे और नौ साल और जोड़े गए।	وَلَبِثُوْا فِيْ كَهْفِهِمْ ثَلٰثَ مِاۤئَةٍ سِنِيْنَ وَازْدَادُوْا تِسْعًا
26	कह दो, 'अल्लाह बेहतर जानता है कि वे कितने समय रहे; उसी के पास आसमानों और ज़मीन का गबे है। उसकी नज़र कितनी तेज़ है और उसका सनना कितना साफ़ है; उनके लिए उसके सिवा कोई मददगार नहीं है; और वह अपने फैसले में किसी को शरीक नहीं करता।'	قُلِ اللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا لَبِثُوْا لَهٗ غَيْبُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ اَبْصِرْ بِهٖ وَاَسْمِعْ مَا لَهُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا يُشْرِكُ فِيْ حُكْمِهٖٓ اَحَدًا
27	और (महम्मद) जो कछ तमहारे रब की किताब (कर्आन) में तमहारी तरफ वह्य किया गया है, उसे पढ़ो। उसकी बातों को कोई बदल नहीं सकता। और तम उसके सिवा कोई पनाह की जगह नहीं पाओगे।	وَاتْلُ مَآ اُوْحِيَ اِلَيْكَ مِنْ كِتَابِ رَبِّكَ لَا مُبَدِّلَ لِكَلِمٰتِهٖ وَلَنْ تَجِدَ مِنْ دُوْنِهٖ مُلْتَحَدًا
28	और (महम्मद) तम उन लोगों के साथ सब्र करो जो अपने रब को सबह और शाम पकारते हैं, उसकी रज़ा की तमन्ना में; और अपनी आँखों को उनसे न फेरो, दनिया की ज़ीनत की चाहत में; और उस शख़्स की परवी न करो जिसके दिल को हमने अपनी याद से गाफिल कर दिया, और वह अपनी ख़्वाहिशों की परवी करता है और उसका हाल हद से गज़र चका है।	وَاصْبِرْ نَفْسَكَ مَعَ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَدٰوةِ وَالْعَشِيِّ يُرِيْدُوْنَ وَجْهَهٗ وَلَا تَعْدُ عَيْنٰكَ عَنْهُمْ تُرِيْدُ زِيْنَةَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَلَا تُطِعْ مَنْ اَغْفَلْنَا قَلْبَهٗ عَنْ ذِكْرِنَا وَاتَّبَعَ هَوٰىهُ وَكَانَ اَمْرُهٗ فُرُطًا

وَقُلِ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكُمْ فَمَنْ شَاءَ فَلْيُؤْمِنْ وَّمَنْ شَاءَ فَلْيَكْفُرْ اِنَّآ اَعْتَدْنَا لِلظّٰلِمِيْنَ نَارًا اَحَاطَ بِهِمْ سُرَادِقُهَا وَاِنْ يَّسْتَغِيْثُوْا يُغَاثُوْا بِمَاءٍ كَالْمُهْلِ يَشْوِى الْوُجُوْهَ بِئْسَ الشَّرَابُ وَسَاءَتْ مُرْتَفَقًا	29	और कह दो (महम्मद), 'हक़ तुम्हारे रब की तरफ से है; जो चाहे ईमान लाए और जो चाहे काफिर हो जाए।' निश्चित रूप से हमने ज़ालिमों के लिए आग तयैार की है, जिसकी लपटें उन्हें घेरे लगेंगी। अगर वे (पानी) माँगेंगे, तो उन्हें ऐसा पानी दिया जाएगा जो पिघले हुए धातु की तरह होगा जो उनके चेहरों को जला देगा। कितना बुरा पेय है और कितनी बुरी जगह है
اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ اِنَّا لَا نُضِيْعُ اَجْرَ مَنْ اَحْسَنَ عَمَلًا	30	निश्चित रूप से जो लोग ईमान लाए और नेके काम किए, हम ऐसे लोगों के अच्छे अमल का बदला जाया नहीं करेंगे।
اُولٰٓئِكَ لَهُمْ جَنّٰتُ عَدْنٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهِمُ الْاَنْهٰرُ يُحَلَّوْنَ فِيْهَا مِنْ اَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَّيَلْبَسُوْنَ ثِيَابًا خُضْرًا مِّنْ سُنْدُسٍ وَّاِسْتَبْرَقٍ مُّتَّكِـِٕيْنَ فِيْهَا عَلَى الْاَرَآئِكِ نِعْمَ الثَّوَابُ وَحَسُنَتْ مُرْتَفَقًا	31	ऐसे लोग हैं जिनके लिए 'अदन' की जन्नतें हैं, जिनके नीचे नहरें बहती हैं; (उसमें) उन्हें सोने के कंगन पहनाए जाएँगे और वे हरी रेशम और मोटे रेशम के कपड़े पहनेंगे, और वे वहाँ ख़ूबसूरत तख़्तों पर टिके होंगे। कितना अच्छा बदला और कितनी ख़ूबसूरत जगह है
وَاضْرِبْ لَهُمْ مَّثَلًا رَّجُلَيْنِ جَعَلْنَا لِاَحَدِهِمَا جَنَّتَيْنِ مِنْ اَعْنَابٍ وَّحَفَفْنٰهُمَا بِنَخْلٍ وَّجَعَلْنَا بَيْنَهُمَا زَرْعًا	32	और (महम्मद) उनके लिए दो आदमियों की मसिाल बयान करो, जिनमें से एक (काफिर) को हमने दो अंगूर के बाग दिए और हमने उन्हें खजूर के पेड़ों से घेरे दिया और उनके बीच में खेते बनाया।
كِلْتَا الْجَنَّتَيْنِ اٰتَتْ اُكُلَهَا وَلَمْ تَظْلِمْ مِّنْهُ شَيْـًٔا وَّفَجَّرْنَا خِلٰلَهُمَا نَهَرًا	33	दोनों बागों ने अपने फल दिए, और कछु भी कम नहीं हुआ, और हमने उनके बीच में एक नहर बहाई,
وَّكَانَ لَهٗ ثَمَرٌ فَقَالَ لِصَاحِبِهٖ وَهُوَ يُحَاوِرُهٗٓ اَنَا اَكْثَرُ مِنْكَ مَالًا وَّاَعَزُّ نَفَرًا	34	और उसके पास बहुत सारी दौलत थी, तो उसने अपने साथी (जो मोमनि था) से बातचीत करते हुए कहा, 'मेरी दौलत तुझसे ज़्यादा है और मेरे साथी ज़्यादा ताकतवर हैं'
وَدَخَلَ جَنَّتَهٗ وَهُوَ ظَالِمٌ لِّنَفْسِهٖ قَالَ مَآ اَظُنُّ اَنْ تَبِيْدَ هٰذِهٖٓ اَبَدًا	35	और वह अपने बाग में दाखिल हुआ, अपने आप को नकुसान पहुँचाते हुए (घमंड और कफ़्र के साथ); उसने कहा, 'मुझे नहीं लगता कि यह बाग कभी खराब होगा,
وَّمَآ اَظُنُّ السَّاعَةَ قَآئِمَةً وَّلَئِنْ رُّدِدْتُّ اِلٰى رَبِّيْ لَاَجِدَنَّ خَيْرًا مِّنْهَا مُنْقَلَبًا	36	और मुझे नहीं लगता कि कियामत आएगी, और अगर मैं अपने रब की तरफ लौटाया गया, तो मुझे इससे बेहतर जगह ज़रूर मलिेगी।'
قَالَ لَهٗ صَاحِبُهٗ وَهُوَ يُحَاوِرُهٗٓ اَكَفَرْتَ بِالَّذِيْ خَلَقَكَ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ سَوّٰىكَ رَجُلًا	37	उसके साथी (जो मोमनि था) ने उससे बातचीत करते हुए कहा, 'क्या तू उस (रब) का इंकार करता है जिसने तुझे मिट्टी से बनाया, फिर एक बूंद से, फिर तुझे एक पूरा मरद बनाया?
لٰكِنَّا۠ هُوَ اللّٰهُ رَبِّيْ وَلَآ اُشْرِكُ بِرَبِّيْٓ اَحَدًا	38	लेकिन मैं (यकीन करता हूँ कि), वही अल्लाह मेरा रब है, और मैं अपने रब के साथ किसी को शरीक नहीं करता।

وَلَوْلَآ اِذْ دَخَلْتَ جَنَّتَكَ قُلْتَ مَا شَاۤءَ اللّٰهُ لَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ اِنْ تَرَنِ اَنَا اَقَلَّ مِنْكَ مَالًا وَّوَلَدًا	**39**	और जब तू अपने बाग में दाख़िल हुआ, तो तूने क्यों नहीं कहा, 'माशा अल्लाह, ला क़ुव्वता इल्ला बिल्लाह' (यह सब अल्लाह की मरज़ी से हुआ), कोई ताकत नहीं सिवाय अल्लाह के (मदद के); भले ही तू मुझे अपनी दौलत और औलाद में कम समझता हो।
فَعَسٰى رَبِّيْٓ اَنْ يُّؤْتِيَنِ خَيْرًا مِّنْ جَنَّتِكَ وَيُرْسِلَ عَلَيْهَا حُسْبَانًا مِّنَ السَّمَاۤءِ فَتُصْبِحَ صَعِيْدًا زَلَقًا	**40**	शायद मेरा रब मुझे तेरे इस बाग से बेहतर (बाग) दे; और वह तेरे बाग पर आसमान से बिजली भेज दे, जिससे वह चिकनी ज़मीन बन जाए,
اَوْ يُصْبِحَ مَاۤؤُهَا غَوْرًا فَلَنْ تَسْتَطِيْعَ لَهٗ طَلَبًا	**41**	या उसका पानी ज़मीन में धंस जाए, तो तू उसे दोबारा कभी न पा सके।'
وَاُحِيْطَ بِثَمَرِهٖ فَاَصْبَحَ يُقَلِّبُ كَفَّيْهِ عَلٰى مَآ اَنْفَقَ فِيْهَا وَهِيَ خَاوِيَةٌ عَلٰى عُرُوْشِهَا وَيَقُوْلُ يٰلَيْتَنِيْ لَمْ اُشْرِكْ بِرَبِّيْٓ اَحَدًا	**42**	और उसकी दौलत तबाह हो गई, फिर वह अपनी दोनों हथेलियों को मलने लगा (पछतावे में) उस चीज़ के लिए जो उसने उस पर ख़र्च की थी, जबकि उसके अंगूर के पेड़ अपने सहारों समेत गिर गए थे, और वह कहने लगा, 'काश! मैंने अपने रब के साथ किसी को शरीक न किया होता।'
وَلَمْ تَكُنْ لَّهٗ فِئَةٌ يَّنْصُرُوْنَهٗ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَمَا كَانَ مُنْتَصِرًا	**43**	और उसके लिए कोई जमात नहीं थी जो अल्लाह के सिवा उसकी मदद कर सके; और वह ख़ुद अपनी मदद नहीं कर सका।
هُنَالِكَ الْوَلَايَةُ لِلّٰهِ الْحَقِّ هُوَ خَيْرٌ ثَوَابًا وَّخَيْرٌ عُقْبًا	**44**	वहाँ (ऐसी हालत में) मदद सिर्फ़ अल्लाह की तरफ से आती है, जो सच्चा है। वह बदले में सबसे बेहतर है और अंजाम में सबसे अच्छा है।
وَاضْرِبْ لَهُمْ مَّثَلَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا كَمَاۤءٍ اَنْزَلْنٰهُ مِنَ السَّمَاۤءِ فَاخْتَلَطَ بِهٖ نَبَاتُ الْاَرْضِ فَاَصْبَحَ هَشِيْمًا تَذْرُوْهُ الرِّيٰحُ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ مُّقْتَدِرًا	**45**	और दुनिया की ज़िंदगी की मिसाल ऐसी है जैसे पानी जो हमने आसमान से उतारा, फिर उससे ज़मीन की [illegible]ात (पौधे) आपस में मिल गए, फिर वह सूखा घास बन गया जिसे हवाएँ उड़ा ले जाती हैं और अल्लाह हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है।
اَلْمَالُ وَالْبَنُوْنَ زِيْنَةُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَالْبٰقِيٰتُ الصّٰلِحٰتُ خَيْرٌ عِنْدَ رَبِّكَ ثَوَابًا وَّخَيْرٌ اَمَلًا	**46**	दौलत और औलाद दुनिया की ज़िंदगी की ज़ीनत हैं; और नेक अमल जो बाक़ी रहने वाले हैं, वे तेरे रब के पास बदले में बेहतर हैं और उम्मीद में सबसे अच्छे हैं।
وَيَوْمَ نُسَيِّرُ الْجِبَالَ وَتَرَى الْاَرْضَ بَارِزَةً وَّحَشَرْنٰهُمْ فَلَمْ نُغَادِرْ مِنْهُمْ اَحَدًا	**47**	और (वह दिन याद करो) जब हम पहाड़ों को हटाएँगे, और तुम ज़मीन को साफ़ देखोगे, और हम उन्हें (सब लोगों को) इकट्ठा करेंगे, और हम किसी को नहीं छोड़ेंगे।
وَعُرِضُوْا عَلٰى رَبِّكَ صَفًّا لَقَدْ جِئْتُمُوْنَا كَمَا خَلَقْنٰكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍ بَلْ زَعَمْتُمْ اَلَّنْ نَّجْعَلَ لَكُمْ مَّوْعِدًا	**48**	और वे तेरे रब के सामने कतारों में पेश किए जाएँगे, (और कहा जाएगा,) 'तुम हमारे पास वैसे ही आए जैसे हमने तुम्हें पहली बार बनाया था; बल्कि तुम कहते थे कि हम तुम्हारे लिए कोई वक़्त मुक़र्रर नहीं करेंगे।'

49	और (उस दिन) किताब (अमलनामा) रख दी जाएगी, तो तुम उन गुनहगारों को देखोगे जो उसमें लिखी हुई चीज़ों से डर रहे होंगे, और वे कहेंगे, 'हाय हमारी बदकिस्मती, यह कैसी किताब है, जो न छोटी और न बड़ी कोई चीज़ छोड़े, बल्कि सब कुछ गिन लिया।' और वे वह सब कुछ पाएँगे जो उन्होंने किया था। और तेरा रब किसी पर ज़ुल्म नहीं करता।	وَوُضِعَ الْكِتٰبُ فَتَرَى الْمُجْرِمِيْنَ مُشْفِقِيْنَ مِمَّا فِيْهِ وَيَقُوْلُوْنَ يٰوَيْلَتَنَا مَالِ هٰذَا الْكِتٰبِ لَا يُغَادِرُ صَغِيْرَةً وَّلَا كَبِيْرَةً اِلَّآ اَحْصٰىهَا وَوَجَدُوْا مَا عَمِلُوْا حَاضِرًا وَلَا يَظْلِمُ رَبُّكَ اَحَدًا
50	और (याद करो) जब हमने फ़रिश्तों से कहा, 'आदम को सजदा करो!' तो उन्होंने सजदा किया, सिवाय इबलीस के। वह जिन्नों में से था, तो उसने अपने रब के हुक्म की नाफ़रमानी की। तो क्या तुम उसे और उसकी औलाद को मेरे सिवा मददगार बनाओगे, जबकि वे तुम्हारे दुश्मन हैं? कितना बुरा बदल है ज़ालिमों के लिए।	وَاِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِيْسَ كَانَ مِنَ الْجِنِّ فَفَسَقَ عَنْ اَمْرِ رَبِّهٖ اَفَتَتَّخِذُوْنَهٗ وَذُرِّيَّتَهٗٓ اَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِيْ وَهُمْ لَكُمْ عَدُوٌّ بِئْسَ لِلظّٰلِمِيْنَ بَدَلًا
51	मैंने उन्हें (इबलीस और उसकी औलाद को) न आसमानों और ज़मीन की पैदाइश में गवाह बनाया और न उनकी अपनी पैदाइश में; और मैं गुमराह करने वालों को मददगार नहीं बनाता।	مَآ اَشْهَدْتُّهُمْ خَلْقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَلَا خَلْقَ اَنْفُسِهِمْ وَمَا كُنْتُ مُتَّخِذَ الْمُضِلِّيْنَ عَضُدًا
52	और (याद करो) उस दिन को जब वह (अल्लाह) कहेगा, 'उन शरीकों को बुलाओ जिन्हें तुम मेरा शरीक समझते थे।' तो वे उन्हें पुकारेंगे, लेकिन वे (शरीक) उन्हें जवाब नहीं देंगे, और हम उनके लिए एक हलाकत की जगह बनाएँगे।	وَيَوْمَ يَقُوْلُ نَادُوْا شُرَكَاۤءِيَ الَّذِيْنَ زَعَمْتُمْ فَدَعَوْهُمْ فَلَمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَهُمْ وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمْ مَّوْبِقًا
53	और गुनहगार लोग आग (जहन्नम) को देखेंगे, तो उन्हें लगेगा कि वे उसमें गिरने वाले हैं, और वे उससे बचने की कोई जगह नहीं पाएँगे।	وَرَاَ الْمُجْرِمُوْنَ النَّارَ فَظَنُّوْٓا اَنَّهُمْ مُّوَاقِعُوْهَا وَلَمْ يَجِدُوْا عَنْهَا مَصْرِفًا
54	और निश्चित रूप से हमने इस क़ुरआन में इंसानों के लिए हर तरह की मिसाल बयान की है लेकिन इंसान सबसे ज़्यादा बहस करने वाला है।	وَلَقَدْ صَرَّفْنَا فِيْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ لِلنَّاسِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ وَكَانَ الْاِنْسَانُ اَكْثَرَ شَيْءٍ جَدَلًا
55	और लोगों को जब हिदायत आ चुकी थी, तो उन्हें ईमान लाने और अपने रब से माफ़ी माँगने से क्या चीज़ न रोका, सिवाय इसके कि उनके पास भी वही सज़ा आए जो पहले की उम्मतों पर आई थी, या उनके सामने सज़ा साफ़ तौर पर आ जाए।	وَمَا مَنَعَ النَّاسَ اَنْ يُّؤْمِنُوْٓا اِذْ جَاۤءَهُمُ الْهُدٰى وَيَسْتَغْفِرُوْا رَبَّهُمْ اِلَّآ اَنْ تَاْتِيَهُمْ سُنَّةُ الْاَوَّلِيْنَ اَوْ يَاْتِيَهُمُ الْعَذَابُ قُبُلًا
56	और हम रसूलों को सिर्फ़ ख़ुशख़बरी देने वाले और डराने वाले बनाकर भेजते हैं; लेकिन काफ़िर लोग झूठी बातों से बहस करते हैं ताकि वे हक़ को मिटा दें, और उन्होंने मेरी आयतों और जिन चीज़ों की चेतावनी दी गई थी, उन्हें मज़ाक़ बना लिया।	وَمَا نُرْسِلُ الْمُرْسَلِيْنَ اِلَّا مُبَشِّرِيْنَ وَمُنْذِرِيْنَ وَيُجَادِلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِالْبَاطِلِ لِيُدْحِضُوْا بِهِ الْحَقَّ وَاتَّخَذُوْٓا اٰيٰتِيْ وَمَآ اُنْذِرُوْا هُزُوًا

57	और उससे ज़्यादा ज़ालिम कौन होगा जिसे अपने रब की आयतों से नसीहत दी गई, फिर वह उनसे मुँह फेरे ले और भूल जाए जो कुछ उसकी दोनों हथेलियों ने किया? निश्चित रूप से हमने उनके दिलों पर परदा डाल दिया है, ताकि वे उसे न समझें, और उनके कानों में बोझ डाल दिया है और अगर तुम उन्हें हिदायत की तरफ बुलाओ, तो वे कभी हिदायत न पाएँगे।	وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ ذُكِّرَ بِاٰيٰتِ رَبِّه فَاَعْرَضَ عَنْهَا وَنَسِيَ مَا قَدَّمَتْ يَدَاهُ اِنَّا جَعَلْنَا عَلٰى قُلُوْبِهِمْ اَكِنَّةً اَنْ يَّفْقَهُوْهُ وَفِيْٓ اٰذَانِهِمْ وَقْرًا وَاِنْ تَدْعُهُمْ اِلَى الْهُدٰى فَلَنْ يَّهْتَدُوْٓا اِذًا اَبَدًا
58	और तेरा रब बहुत बख़्शने वाला, रहम करने वाला है। अगर वह उनके किए की सजा देना चाहता, तो उनके लिए जल्दी अज़ाब भेज देता। लेकिन उनके लिए एक मुक़र्रर वक़्त है, जिससे वे कोई पनाह की जगह नहीं पाएँगे।	وَرَبُّكَ الْغَفُوْرُ ذُو الرَّحْمَةِ لَوْ يُؤَاخِذُهُمْ بِمَا كَسَبُوْا لَعَجَّلَ لَهُمُ الْعَذَابَ بَلْ لَّهُمْ مَّوْعِدٌ لَّنْ يَّجِدُوْا مِنْ دُوْنِه مَوْئِلًا
59	और उन बस्तियों को हमने हलाक कर दिया जब उन्होंने जुल्म किया, और हमने उनकी हलाकत के लिए एक मुक़र्रर वक़्त ठहराया था।	وَتِلْكَ الْقُرٰٓى اَهْلَكْنٰهُمْ لَمَّا ظَلَمُوْا وَجَعَلْنَا لِمَهْلِكِهِمْ مَّوْعِدًا
60	और (याद करो) जब मूसा ने अपने नौजवान (साथी) से कहा, 'मैं तब तक नहीं रुकूँगा जब तक मैं दो समंदरों के मिलने की जगह तक न पहुँच जाऊँ, या मैं सालों तक चलता रहूँ।'	وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى لِفَتٰىهُ لَآ اَبْرَحُ حَتّٰٓى اَبْلُغَ مَجْمَعَ الْبَحْرَيْنِ اَوْ اَمْضِيَ حُقُبًا
61	फिर जब वे दोनों दो समंदरों के मिलने की जगह पर पहुँचे, तो वे अपनी मछली भूल गए, और वह (मछली) समंदर में अपनी राह लेगई।	فَلَمَّا بَلَغَا مَجْمَعَ بَيْنِهِمَا نَسِيَا حُوْتَهُمَا فَاتَّخَذَ سَبِيْلَه فِي الْبَحْرِ سَرَبًا
62	फिर जब वे (उस जगह से) आगे बढ़ गए, तो मूसा ने अपने नौजवान (साथी) से कहा, 'हमारा खाना लाओ; निश्चित रूप से हम इस सफर से बहुत थक गए हैं।'	فَلَمَّا جَاوَزَا قَالَ لِفَتٰىهُ اٰتِنَا غَدَاءَنَا لَقَدْ لَقِيْنَا مِنْ سَفَرِنَا هٰذَا نَصَبًا
63	उसने (नौजवान ने) कहा, 'क्या तुम्हें याद है जब हम उस चट्टान के पास रुके थे, तो मैं मछली के बारे में बताना भूल गया, और मुझे सरिफ़ शैतान ने इसे याद करने से रोका, और वह (मछली) समंदर में अपनी राह लेगई, एक अजीब तरीके से।'	قَالَ اَرَاَيْتَ اِذْ اَوَيْنَآ اِلَى الصَّخْرَةِ فَاِنِّيْ نَسِيْتُ الْحُوْتَ وَمَآ اَنْسٰنِيْهُ اِلَّا الشَّيْطٰنُ اَنْ اَذْكُرَه وَاتَّخَذَ سَبِيْلَه فِي الْبَحْرِ عَجَبًا
64	उसने (मूसा ने) कहा, 'यही वह (जगह) थी जिसकी हम तलाश कर रहे थे।' तो वे दोनों अपने नक़्श-ए-कदम पर वापस लौटे।	قَالَ ذٰلِكَ مَا كُنَّا نَبْغِ فَارْتَدَّا عَلٰٓى اٰثَارِهِمَا قَصَصًا
65	फिर उन्होंने हमारे एक बन्दे को पाया, जिसे हमने अपनी ओर से रहम दिया था, और जिसे हमने अपनी तरफ से इल्म सिखाया था।	فَوَجَدَا عَبْدًا مِّنْ عِبَادِنَآ اٰتَيْنٰهُ رَحْمَةً مِّنْ عِنْدِنَا وَعَلَّمْنٰهُ مِنْ لَّدُنَّا عِلْمًا
66	मूसा ने उससे कहा, 'क्या मैं तुम्हारे साथ चल सकता हूँ ताकि तुम मुझे वह इल्म सिखाओ जो तुम्हें (हिदायत के लिए) सिखाया गया है?'	قَالَ لَه مُوْسٰى هَلْ اَتَّبِعُكَ عَلٰٓى اَنْ تُعَلِّمَنِ مِمَّا عُلِّمْتَ رُشْدًا
67	उसने कहा, 'निश्चित रूप से तुम मेरे साथ सब्र नहीं कर पाओगे।'	قَالَ اِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيْعَ مَعِيَ صَبْرًا
68	और तुम उस चीज़ पर सब्र कैसे कर सकते हो जिसके बारे में तुम्हें पूरी जानकारी नहीं है?'	وَكَيْفَ تَصْبِرُ عَلٰى مَا لَمْ تُحِطْ بِه خُبْرًا

69	मूसा ने कहा, 'तुम मुझे इंशा अल्लाह सब्र करने वाला पाओगे, और मैं तुम्हारे किसी हुक्म की नाफरमानी नहीं करूँगा।'	قَالَ سَتَجِدُنِيْٓ اِنْ شَاۤءَ اللّٰهُ صَابِرًا وَّلَآ اَعْصِيْ لَكَ اَمْرًا
70	उसने कहा, 'अगर तुम मेरे साथ चलना चाहते हो, तो मुझसे किसी चीज़ के बारे में कुछ न पूछो जब तक मैं खुद उसका ज़िक्र न करूँ'	قَالَ فَاِنِ اتَّبَعْتَنِيْ فَلَا تَسْـَٔلْنِيْ عَنْ شَيْءٍ حَتّٰٓى اُحْدِثَ لَكَ مِنْهُ ذِكْرًا
71	तो वे दोनों चले, यहाँ तक कि जब वे एक नाव में सवार हुए, तो उसने (उस बन्दे ने) उसमें छेद कर दिया। मूसा ने कहा, 'क्या तुमने उसमें छेद कर दिया ताकि उसमें सवार लोगों को डुबो दो? निश्चित रूप से तुमने बहुत बड़ी बात की।'	فَانْطَلَقَا حَتّٰٓى اِذَا رَكِبَا فِى السَّفِيْنَةِ خَرَقَهَا قَالَ اَخَرَقْتَهَا لِتُغْرِقَ اَهْلَهَا لَقَدْ جِئْتَ شَيْـًٔا اِمْرًا
72	उसने कहा, 'क्या मैंने नहीं कहा था कि तुम मेरे साथ सब्र नहीं कर पाओगे?'	قَالَ اَلَمْ اَقُلْ اِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيْعَ مَعِيَ صَبْرًا
73	मूसा ने कहा, 'मुझे मेरी भूल की सजा न दो और मेरे मामले में मुझ पर सख़्ती न करो।'	قَالَ لَا تُؤَاخِذْنِيْ بِمَا نَسِيْتُ وَلَا تُرْهِقْنِيْ مِنْ اَمْرِيْ عُسْرًا
74	तो वे दोनों चले, यहाँ तक कि जब वे एक नौजवान से मिले, तो उसने उसे मार डाला। मूसा ने कहा, 'क्या तुमने एक बेगुनाह जान को मार डाला, जो किसी की हत्या के बदले नहीं थी? निश्चित रूप से तुमने बहुत नापसंदीदा काम किया।'	فَانْطَلَقَا حَتّٰٓى اِذَا لَقِيَا غُلٰمًا فَقَتَلَه قَالَ اَقَتَلْتَ نَفْسًا زَكِيَّةًۢ بِغَيْرِ نَفْسٍ لَقَدْ جِئْتَ شَيْـًٔا نُّكْرًا
75	उसने कहा, 'क्या मैंने तुमसे नहीं कहा था कि तुम मेरे साथ सब्र नहीं कर पाओगे?'	قَالَ اَلَمْ اَقُلْ لَّكَ اِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيْعَ مَعِيَ صَبْرًا
76	मूसा ने कहा, 'अगर मैं इसके बाद तुमसे किसी चीज़ के बारे में पूछूँ तो मुझे अपने साथ न रखो; निश्चित रूप से तुम मेरी तरफ से पूरी माफी पा चुके हो।'	قَالَ اِنْ سَاَلْتُكَ عَنْ شَيْءٍ بَعْدَهَا فَلَا تُصٰحِبْنِيْ قَدْ بَلَغْتَ مِنْ لَّدُنِّيْ عُذْرًا
77	तो वे दोनों चले, यहाँ तक कि जब वे एक बस्ती के लोगों के पास पहुँचे, तो उन्होंने उनसे मेहमाननवाज़ी माँगी, लेकिन उन्होंने उन्हें मेहमान बनाने से इंकार कर दिया। फिर उन्होंने वहाँ एक दीवार पाई जो गिरने वाली थी, तो उसने उसे ठीक कर दिया। मूसा ने कहा, 'अगर तुम चाहते, तो इसके लिए कुछ मज़दूरी ले सकते थे।'	فَانْطَلَقَا حَتّٰٓى اِذَآ اَتَيَآ اَهْلَ قَرْيَةِ اِسْتَطْعَمَآ اَهْلَهَا فَاَبَوْا اَنْ يُّضَيِّفُوْهُمَا فَوَجَدَا فِيْهَا جِدَارًا يُّرِيْدُ اَنْ يَّنْقَضَّ فَاَقَامَه قَالَ لَوْ شِئْتَ لَتَّخَذْتَ عَلَيْهِ اَجْرًا
78	उसने कहा, 'यह मेरे और तुम्हारे बीच जुदाई का वक़्त है; अब मैं तुम्हें उन चीज़ों की तफसील बताऊँगा जिन पर तुम सब्र नहीं कर सके।'	قَالَ هٰذَا فِرَاقُ بَيْنِيْ وَبَيْنِكَ سَاُنَبِّئُكَ بِتَاْوِيْلِ مَا لَمْ تَسْتَطِعْ عَّلَيْهِ صَبْرًا
79	जहाँ तक उस नाव की बात है, वह कुछ गरीब लोगों की थी जो समंदर में काम करते थे; मैंने उसे खराब करना चाहा, क्योंकि उनके सामने एक बादशाह था जो हर नाव को ज़बरदस्ती छीन लेता था।	اَمَّا السَّفِيْنَةُ فَكَانَتْ لِمَسٰكِيْنَ يَعْمَلُوْنَ فِى الْبَحْرِ فَاَرَدْتُّ اَنْ اَعِيْبَهَا وَكَانَ وَرَاۤءَهُمْ مَّلِكٌ يَّاْخُذُ كُلَّ سَفِيْنَةٍ غَصْبًا
80	और जहाँ तक उस नौजवान की बात है, उसके माँ-बाप मोमिन थे, और हमें डर था कि वह उन्हें गुमराही और कुफ़्र की तरफ खींच लेगा।	وَاَمَّا الْغُلٰمُ فَكَانَ اَبَوَاهُ مُؤْمِنَيْنِ فَخَشِيْنَآ اَنْ يُّرْهِقَهُمَا طُغْيَانًا وَّكُفْرًا

81	तो हमने चाहा कि उनका रब उनको उसकी जगह एक ऐसा (बेटा) दे जो उससे ज़्यादा पाकीज़ा हो और अपने माँ-बाप से ज़्यादा मोहब्बत करने वाला हो।	فَاَرَدْنَآ اَنْ يُّبْدِلَهُمَا رَبُّهُمَا خَيْرًا مِّنْهُ زَكٰوةً وَّاَقْرَبَ رُحْمًا
82	और जहाँ तक उस दीवार की बात है, वह उस शहर के दो यतीम बच्चों की थी, जिसके नीचे उनके लिए एक ख़ज़ाना था, और उनका बाप एक नेक इंसान था। तो तुम्हारे रब ने चाहा कि वे अपनी जवानी तक पहुँचें और अपना ख़ज़ाना निकालें, यह तुम्हारे रब की रहम थी। मैंने यह सब अपनी मरज़ी से नहीं किया। यह उन चीज़ों की तफसील है जिन पर तुम सब्र नहीं कर सके।'	وَاَمَّا الْجِدَارُ فَكَانَ لِغُلٰمَيْنِ يَتِيْمَيْنِ فِى الْمَدِيْنَةِ وَكَانَ تَحْتَه كَنْزٌ لَّهُمَا وَكَانَ اَبُوْهُمَا صَالِحًا فَاَرَادَ رَبُّكَ اَنْ يَّبْلُغَآ اَشُدَّهُمَا وَيَسْتَخْرِجَا كَنْزَهُمَا رَحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ وَمَا فَعَلْتُه عَنْ اَمْرِيْ ذٰلِكَ تَاْوِيْلُ مَا لَمْ تَسْطِعْ عَّلَيْهِ صَبْرًا
83	और वे तुमसे (मुहम्मद) ज़ुलक़रनैन के बारे में पूछते हैं। कह दो, 'मैं तुम्हें उसकी कुछ बात बताऊँगा।'	وَيَسْـَٔلُوْنَكَ عَنْ ذِى الْقَرْنَيْنِ قُلْ سَاَتْلُوْا عَلَيْكُمْ مِّنْهُ ذِكْرًا
84	निश्चित रूप से हमने उसे ज़मीन में इकतियार दिया और उसे हर चीज़ की राह दी,	اِنَّا مَكَّنَّا لَه فِى الْاَرْضِ وَاٰتَيْنٰهُ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ سَبَبًا
85	तो उसने एक रास्ता इख़्तियार किया।	فَاَتْبَعَ سَبَبًا
86	यहाँ तक कि जब वह सूरज डूबने की जगह पर पहुँचा, तो उसने उसे एक काले कीचड़ वाले समंदर में डूबते देखा, और वहाँ उसे एक कौम मिली (जो मज़हब नहीं मानती थी)। हमने कहा, 'ऐ ज़ुलक़रनैन! तुम चाहो तो उन्हें सज़ा दो या उनके साथ नेकी करो (और उन्हें ईमान की दावत दो)।'	حَتّٰٓى اِذَا بَلَغَ مَغْرِبَ الشَّمْسِ وَجَدَهَا تَغْرُبُ فِىْ عَيْنٍ حَمِئَةٍ وَّوَجَدَ عِنْدَهَا قَوْمًا قُلْنَا يٰذَا الْقَرْنَيْنِ اِمَّآ اَنْ تُعَذِّبَ وَاِمَّآ اَنْ تَتَّخِذَ فِيْهِمْ حُسْنًا
87	उसने (ज़ुलक़रनैन ने) कहा, 'जो कोई ज़ुल्म करेगा, हम उसे सज़ा देंगे, फिर उसे उसके रब की तरफ लौटाया जाएगा, और वह उसे बेहद सख़्त अज़ाब देगा।'	قَالَ اَمَّا مَنْ ظَلَمَ فَسَوْفَ نُعَذِّبُه ثُمَّ يُرَدُّ اِلٰى رَبِّه فَيُعَذِّبُه عَذَابًا نُّكْرًا
88	लेकिन जो कोई ईमान लाए और नेक काम करे, उसके लिए सबसे अच्छा बदला होगा, और हम उसे अपने आसान हुक्मों का आदेश देंगे।'	وَاَمَّا مَنْ اٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَه جَزَآءً الْحُسْنٰى وَسَنَقُوْلُ لَه مِنْ اَمْرِنَا يُسْرًا
89	फिर उसने एक और रास्ता इख़्तियार किया।	ثُمَّ اَتْبَعَ سَبَبًا
90	यहाँ तक कि जब वह सूरज उगने की जगह पर पहुँचा, तो उसने उसे एक ऐसी कौम पर चमकते देखा जिसके लिए हमने सूरज की रोशनी से कोई परदा नहीं बनाया था,	حَتّٰٓى اِذَا بَلَغَ مَطْلِعَ الشَّمْسِ وَجَدَهَا تَطْلُعُ عَلٰى قَوْمٍ لَّمْ نَجْعَلْ لَّهُمْ مِّنْ دُوْنِهَا سِتْرًا
91	ऐसा ही था, और निश्चित रूप से हम ज़ुलक़रनैन के पास जो कुछ था, उसकी पूरी ख़बर रखते थे।	كَذٰلِكَ وَقَدْ اَحَطْنَا بِمَا لَدَيْهِ خُبْرًا
92	फिर उसने एक और रास्ता इख़्तियार किया।	ثُمَّ اَتْبَعَ سَبَبًا

93	यहा ँतक कि जब वह दो पहाड़ों क बीच पहुँचा, तो उसन उनक पीछ एक ऐसी कौम पाई जो बातचीत को मुश्क़लि स समझती थी।	حَتّٰٓى اِذَا بَلَغَ بَيْنَ السَّدَّيْنِ وَجَدَ مِنْ دُوْنِهِمَا قَوْمًا لَّا يَكَادُوْنَ يَفْقَهُوْنَ قَوْلًا
94	उनहोंन कहा, 'ऐ जुल्क़रनैन! नश्चिति रूप स याजूज और माजूज ज़मीन म फसाद फलैात ह, तो क्या हम तमुह कछु माल द ताकि तमु हमार और उनक बीच एक दीवार बना दो?'	قَالُوْا يٰذَا الْقَرْنَيْنِ اِنَّ يَأْجُوْجَ وَمَأْجُوْجَ مُفْسِدُوْنَ فِى الْاَرْضِ فَهَلْ نَجْعَلُ لَكَ خَرْجًا عَلٰٓى اَنْ تَجْعَلَ بَيْنَنَا وَبَيْنَهُمْ سَدًّا
95	उसन (जुल्क़रनैन न) कहा, 'जो कछु मरे रब न मझु दयिा, वह तमुहार माल स बहेतर ह, बस तमु अपनी ताकत स मरी मदद करो, ताकि म तमुहार और उनक बीच एक दीवार बना दूँ'	قَالَ مَا مَكَّنِّىْ فِيْهِ رَبِّىْ خَيْرٌ فَاَعِيْنُوْنِىْ بِقُوَّةٍ اَجْعَلْ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ رَدْمًا
96	मझु लोह क टकुड़ लाकर दो!' जब उसन (लोह क टकुड़ों को) दोनों पहाड़ों की चोटयिों क बराबर कर लयिा, तो उसन कहा, 'आग जलाओ!' जब (लोहा) आग की तरह लाल हो गया, तो उसन कहा, 'मझु पघिला हुआ ताँबा लाओ ताकि म इस (लोह) पर डाल दूँ'	اٰتُوْنِىْ زُبَرَ الْحَدِيْدِ حَتّٰٓى اِذَا سَاوٰى بَيْنَ الصَّدَفَيْنِ قَالَ انْفُخُوْا حَتّٰٓى اِذَا جَعَلَه نَارًا قَالَ اٰتُوْنِىْٓ اُفْرِغْ عَلَيْهِ قِطْرًا
97	तो व (याजूज और माजूज) न तो इस चढ़ सक और न ही इस छेद सकी	فَمَا اسْطَاعُوْٓا اَنْ يَّظْهَرُوْهُ وَمَا اسْتَطَاعُوْا لَه نَقْبًا
98	उसन (जुल्क़रनैन न) कहा, 'यह मरे रब की रहम ह, लकेनि जब मरे रब का वादा आएगा, तो वह इस ज़मीन क साथ मलिा दगेा; और मरे रब का वादा सच ह'	قَالَ هٰذَا رَحْمَةٌ مِّنْ رَّبِّىْ فَاِذَا جَاءَ وَعْدُ رَبِّىْ جَعَلَه دَكَّاءَ وَكَانَ وَعْدُ رَبِّىْ حَقًّا
99	और उस दनि हम उनह (याजूज और माजूज को) एक-दूसर म मलिन दगे, और जब नफख़ सूर (सगंनाद) फूँका जाएगा, तो हम उनह सबको इकट्ठा करगे।	وَتَرَكْنَا بَعْضَهُمْ يَوْمَئِذٍ يَّمُوْجُ فِىْ بَعْضٍ وَّنُفِخَ فِى الصُّوْرِ فَجَمَعْنٰهُمْ جَمْعًا
100	और उस दनि हम जहन्नम को काफरिों क सामन साफ़-साफ़ पशे करगे,	وَّعَرَضْنَا جَهَنَّمَ يَوْمَئِذٍ لِّلْكٰفِرِيْنَ عَرْضًا
101	जनिकी आखँ मरी नशिानयिों स पर्द म थी, और व सुन क काबलि नहीं थी।	الَّذِيْنَ كَانَتْ اَعْيُنُهُمْ فِىْ غِطَاءٍ عَنْ ذِكْرِىْ وَكَانُوْا لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ سَمْعًا
102	क्या काफरि लोग समझत ह कि व मरे बन्दों को मरे सवा मददगार बना सकत ह? नश्चिति रूप स हमन काफरिों क लएि जहन्नम को ठकिाना बनाया ह।	اَفَحَسِبَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَنْ يَّتَّخِذُوْا عِبَادِىْ مِنْ دُوْنِىْٓ اَوْلِيَاءَ اِنَّآ اَعْتَدْنَا جَهَنَّمَ لِلْكٰفِرِيْنَ نُزُلًا
103	कह दो, 'क्या म तमुह उन लोगों क बार म बताऊँ जो अपन अमलों म सबस ज़्यादा नकुसान म ह?'	قُلْ هَلْ نُنَبِّئُكُمْ بِالْاَخْسَرِيْنَ اَعْمَالًا
104	व जनिक अमल दनुयिा की ज़िंदगी म गमुराह हो गए, जबकि व समझत थे कि व बहतु अच्छा काम कर रह ह।	اَلَّذِيْنَ ضَلَّ سَعْيُهُمْ فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَهُمْ يَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ يُحْسِنُوْنَ صُنْعًا

105	वे वही लोग हैं जिन्होंने अपने रब की आयतों और उससे मुलाकात का इंकार किया, तो उनके अमल बेकार हो गए, और हम कियामत के दिन उनके लिए कोई वज़न नहीं रखेंगे।	اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ وَلِقَآئِهٖ فَحَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ فَلَا نُقِيْمُ لَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَزْنًا
106	उनका बदला जहन्नम है, क्योंकि उन्होंने कुफ़्र किया और मेरी आयतों और मेरे रसूलों का मज़ाक उड़ाया।	ذٰلِكَ جَزَآؤُهُمْ جَهَنَّمُ بِمَا كَفَرُوْا وَاتَّخَذُوْٓا اٰيٰتِيْ وَرُسُلِيْ هُزُوًا
107	निश्चित रूप से जो लोग ईमान लाए और नेक काम किए, उनके लिए फिरदौस की जन्नतें ठिकाना है,	اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ كَانَتْ لَهُمْ جَنّٰتُ الْفِرْدَوْسِ نُزُلًا
108	जिनमें वे हमेशा रहेंगे, और वहाँ से कहीं और जाना नहीं चाहेंगे।	خٰلِدِيْنَ فِيْهَا لَا يَبْغُوْنَ عَنْهَا حِوَلًا
109	कह दो (मुहम्मद), 'अगर समंदर मेरे रब की बातों को लिखने के लिए स्याही बन जाए, तो मेरे रब की बातें ख़त्म होने से पहले समंदर ख़त्म हो जाएगा, भले ही हम उतना ही और लाएँ।'	قُلْ لَّوْ كَانَ الْبَحْرُ مِدَادًا لِّكَلِمٰتِ رَبِّيْ لَنَفِدَ الْبَحْرُ قَبْلَ اَنْ تَنْفَدَ كَلِمٰتُ رَبِّيْ وَلَوْ جِئْنَا بِمِثْلِهٖ مَدَدًا
110	कह दो (मुहम्मद), 'मैं तो बस तुम्हारी तरह एक इंसान हूँ जिसे वह्य मिली है कि तुम्हारा रब एकमात्र रब है।' तो जो कोई अपने रब से मुलाकात की उम्मीद रखता है, उसे चाहिए कि वह नेक काम करे और अपने रब की इबादत में किसी को शरीक न करे।'	قُلْ اِنَّمَآ اَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُوْحٰٓى اِلَيَّ اَنَّمَآ اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ فَمَنْ كَانَ يَرْجُوْا لِقَآءَ رَبِّهٖ فَلْيَعْمَلْ عَمَلًا صَالِحًا وَّلَا يُشْرِكْ بِعِبَادَةِ رَبِّهٖٓ اَحَدًا

छंदों की संख्या	مَرْيَم	مكية
९८	मरयम - 19	मक्की

بسم الله الرحمن الرحيم

मरयम (मरयम)

1	काफ हा या ऐन साद।	كٓهٰيٰعٓصٓ
2	यह तरे रेब की रहमत का ज़िक्र ह जो उसक बनद ज़करिया पर हई।	ذِكْرُ رَحْمَتِ رَبِّكَ عَبْدَه زَكَرِيَّا
3	जब उसन अपन रेब को पुकारा, धीमी आवाज़ म।	اِذْ نَادٰى رَبَّه نِدَاءً خَفِيًّا
4	उसन कहा, 'ऐ मरे रेब! मरी हड्डियाँ कमज़ोर हो चुकी ह और मरो सरि उबान स भर गया ह, और म तझस दआ करन म कभी नराश नहीं हआ, ऐ मरे रेब।'	قَالَ رَبِّ اِنِّيْ وَهَنَ الْعَظْمُ مِنِّيْ وَاشْتَعَلَ الرَّأْسُ شَيْبًا وَّلَمْ اَكُنْ بِدُعَاۤىِٕكَ رَبِّ شَقِيًّا
5	और म अपनी रशि्तदेारी क बार म डरता हूँ मरे बाद, और मरी बीवी बांझ ह, तो तू मझु अपनी तरफ स एक बटेा अता कर।'	وَاِنِّيْ خِفْتُ الْمَوَالِيَ مِنْ وَّرَاۤءِيْ وَكَانَتِ امْرَاَتِيْ عَاقِرًا فَهَبْ لِيْ مِنْ لَّدُنْكَ وَلِيًّا
6	जो मरो और याकूब की औलाद का वारसि बन, और ऐ मरे रेब, उस रेज़ी (पसंदीदा) बना दो।'	يَّرِثُنِيْ وَيَرِثُ مِنْ اٰلِ يَعْقُوْبَ وَاجْعَلْهُ رَبِّ رَضِيًّا
7	(अल्लाह न फरमाया), 'ऐ ज़करिया! हम तझु एक बटे की खशुखबरी दते ह, जसिका नाम यहया होगा, जसि हमन पहल कभी ऐसा नाम नहीं दया।'	يٰزَكَرِيَّآ اِنَّا نُبَشِّرُكَ بِغُلٰمِ اسْمُه يَحْيٰى لَمْ نَجْعَلْ لَّه مِنْ قَبْلُ سَمِيًّا
8	उसन कहा, 'ऐ मरे रेब! मरो बटेा कसै होगा, जबकि मरी बीवी बांझ ह और म खदु बहतु बढ़ा हो चुका हूँ।'	قَالَ رَبِّ اَنّٰى يَكُوْنُ لِيْ غُلٰمٌ وَّكَانَتِ امْرَاَتِيْ عَاقِرًا وَّقَدْ بَلَغْتُ مِنَ الْكِبَرِ عِتِيًّا
9	(अल्लाह न) फरमाया, 'ऐसा ही होगा।' तरो रब फरमाता ह, 'यह मरे लिए आसान ह; मनै तझु इसस पहल बनाया था, जबकि तू कछु भी नहीं था।'	قَالَ كَذٰلِكَ قَالَ رَبُّكَ هُوَ عَلَيَّ هَيِّنٌ وَّقَدْ خَلَقْتُكَ مِنْ قَبْلُ وَلَمْ تَكُ شَيْـًٔا
10	उसन कहा, 'ऐ मरे रब! मझु कोई नशिानी दो।' (अल्लाह न) फरमाया, 'तरी नशिानी यह ह कि तू तीन रातो तक लोगो स बात नहीं कर सकेगा, हालाँकि तू सवस्थ होगा।'	قَالَ رَبِّ اجْعَلْ لِّيْٓ اٰيَةً قَالَ اٰيَتُكَ اَلَّا تُكَلِّمَ النَّاسَ ثَلٰثَ لَيَالٍ سَوِيًّا
11	फरि वह अपन महिराब स अपनी कौम की तरफ नकिला, और उसन उनह इशारा कयि, 'सबुह और शाम तसबीह करो।'	فَخَرَجَ عَلٰى قَوْمِه مِنَ الْمِحْرَابِ فَاَوْحٰٓى اِلَيْهِمْ اَنْ سَبِّحُوْا بُكْرَةً وَّعَشِيًّا
12	'ऐ यहया! कताब (तौरात) को मज़बूती स पकड़!' और हमन उस बचपन म ही हकिमत (बदु्धि) दी।	يٰيَحْيٰى خُذِ الْكِتٰبَ بِقُوَّةٍ وَاٰتَيْنٰهُ الْحُكْمَ صَبِيًّا

13	और (हमन॓उस॒) हमारी तरफ स॓रहमदलि और पाकीज़गी दी। और वह बहतु तकवा वाला था।	وَّحَنَانًا مِّنْ لَّدُنَّا وَزَكٰوةً وَكَانَ تَقِيًّا
14	और अपन॓माता-पिता क॓साथ बहतु नके था, और वह न घमंडी था और न नाफरमान।	وَّبَرًّا بِوَالِدَيْهِ وَلَمْ يَكُنْ جَبَّارًا عَصِيًّا
15	और उस पर सलामती हो जसि दनि वह पदैा हआु, जसि दनि वह मरगेा, और जसि दनि वह दोबारा जनि्दा कयिा जाएगा।	وَسَلٰمٌ عَلَيْهِ يَوْمَ وُلِدَ وَيَوْمَ يَمُوْتُ وَيَوْمَ يُبْعَثُ حَيًّا
16	और (ऐ महुम्मद) कतिाब (कुरआन) म॓मरयम का ज़कि्र कर, जब वह अपन॓परविार स॓अलग होकर पूरब की तरफ एक जगह चली गई।	وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ مَرْيَمَ اِذِ انْتَبَذَتْ مِنْ اَهْلِهَا مَكَانًا شَرْقِيًّا
17	फरि उसन॓अपन॓और उनक॓बीच एक परदा डाल लयिा। तो हमन॓ अपनी रहू (जबि्रील) को उसक॓पास भजेा, और वह उसक॓सामन॓ एक पूरा इंसान बनकर आया।	فَاتَّخَذَتْ مِنْ دُوْنِهِمْ حِجَابًا فَاَرْسَلْنَآ اِلَيْهَا رُوْحَنَا فَتَمَثَّلَ لَهَا بَشَرًا سَوِيًّا
18	उसन॓(मरयम न॑) कहा, 'म॑तझु॒स॓रहमान की पनाह माँगती हू॑ँ अगर त॑ूपरहज़गार हो॑'	قَالَتْ اِنِّيْٓ اَعُوْذُ بِالرَّحْمٰنِ مِنْكَ اِنْ كُنْتَ تَقِيًّا
19	उसन॓(जबि्रील न॑) कहा, 'म॑तो बस तरे॓रब का दतू हू॑ँताकि तझु॓ एक पाक लड़का अता करू॑ँ'	قَالَ اِنَّمَآ اَنَا رَسُوْلُ رَبِّكِ لِاَهَبَ لَكِ غُلٰمًا زَكِيًّا
20	उसन॓(मरयम न॑) कहा, 'मरेा बटेा कसै॓हो सकता ह॑ै जबकि मझु॓ कसिी मरद॒ न॓छआु नहीं॑ और म॑बैदकारी वाली नहीं॑ हू॑ँ'	قَالَتْ اَنّٰى يَكُوْنُ لِيْ غُلٰمٌ وَّلَمْ يَمْسَسْنِيْ بَشَرٌ وَّلَمْ اَكُ بَغِيًّا
21	उसन॓(जबि्रील न॑) कहा, 'ऐसा ही होगा।' तरेा रब फरमाता ह॑ै 'यह मरे॓लएि आसान ह॑ै और ताकि॑हम उस॓लोगों॑ क॓लएि एक नशिानी और हमारी तरफ स॓रहमत बनाए॑ँ; और यह एक फसैला हआु मामला हो॑'	قَالَ كَذٰلِكِ قَالَ رَبُّكِ هُوَ عَلَيَّ هَيِّنٌ وَلِنَجْعَلَهٗٓ اٰيَةً لِّلنَّاسِ وَرَحْمَةً مِّنَّا وَكَانَ اَمْرًا مَّقْضِيًّا
22	तो वह गरभ॑वती हो गई, फरि वह अपन॓गरभ॑ क॓साथ एक दरू की जगह पर चली गई।	فَحَمَلَتْهُ فَانْتَبَذَتْ بِهٖ مَكَانًا قَصِيًّا
23	फरि पर॑सव की पीड़ा न॓उस॓खजरू क॓पड़े॑क॓तन॓क॓पास ला खड़ा कयिा। उसन॓कहा, 'काश! म॑ैइस॓पहल॓मर गई होती और पूरी तरह भलु॓ा दी गई होती।'	فَاَجَاءَهَا الْمَخَاضُ اِلٰى جِذْعِ النَّخْلَةِ قَالَتْ يٰلَيْتَنِيْ مِتُّ قَبْلَ هٰذَا وَكُنْتُ نَسْيًا مَّنْسِيًّا
24	तो उसन॓(जबि्रील न॑) नीच॓स॓उस॓पकु॓ारा, 'त॑ूउदास न हो, तरे॓ रब न॓तरे॓नीच॓एक नहर बना दी हो॑'	فَنَادٰىهَا مِنْ تَحْتِهَآ اَلَّا تَحْزَنِيْ قَدْ جَعَلَ رَبُّكِ تَحْتَكِ سَرِيًّا
25	और खजरू क॓पड़े॑का तना अपनी तरफ हलिा, तो वह तझु॓ पर पक॓हुए खजरू गरिाएगा।	وَهُزِّيْٓ اِلَيْكِ بِجِذْعِ النَّخْلَةِ تُسٰقِطْ عَلَيْكِ رُطَبًا جَنِيًّا

26	तो खा और पी और अपनी आँख ठंडी कर। और अगर तू किसी इंसान को देख, तो कह द, 'मने रहमान के लिए रोज़ा (चुप रहने का) का नज़्र माना है, तो मै आज किसी से बात नहीं करूँगी।'	فَكُلِيْ وَاشْرَبِيْ وَقَرِّيْ عَيْنًا فَاِمَّا تَرَيِنَّ مِنَ الْبَشَرِ اَحَدًا فَقُوْلِيْٓ اِنِّيْ نَذَرْتُ لِلرَّحْمٰنِ صَوْمًا فَلَنْ اُكَلِّمَ الْيَوْمَ اِنْسِيًّا
27	फिर वह उस (बच्चे को) गोद में लेकर अपनी कौम के पास आई। उनहोंने कहा, 'ऐ मरयम! तू तो बहुत बड़ी बात ले आई।'	فَاَتَتْ بِهٖ قَوْمَهَا تَحْمِلُهٗ قَالُوْا يٰمَرْيَمُ لَقَدْ جِئْتِ شَيْـًٔا فَرِيًّا
28	'ऐ हारून की बहन! तेरा बाप कोई बुरा इंसान नहीं था और न तेरी माँ बदकारी वाली थी।'	يٰٓاُخْتَ هٰرُوْنَ مَا كَانَ اَبُوْكِ امْرَاَ سَوْءٍ وَّمَا كَانَتْ اُمُّكِ بَغِيًّا
29	तो उसने (मरयम ने) अपने बेटे की तरफ इशारा किया। उनहोंने कहा, 'हम उस बच्चे से कैसे बात करें जो अभी पालने में है?'	فَاَشَارَتْ اِلَيْهِ قَالُوْا كَيْفَ نُكَلِّمُ مَنْ كَانَ فِي الْمَهْدِ صَبِيًّا
30	उसने (ईसा ने) कहा, 'मै अल्लाह का बन्दा हूँ उसने मुझे किताब (इंजील) दी और मुझे नबी बनाया।'	قَالَ اِنِّيْ عَبْدُ اللّٰهِ اٰتٰنِيَ الْكِتٰبَ وَجَعَلَنِيْ نَبِيًّا
31	और उसने मुझे बरकत वाला बनाया, चाहे मै कहीं भी रहूँ और उसने मुझे नमाज़ और ज़कात का हुक्म दिया जब तक मै ज़िन्दा हूँ	وَّجَعَلَنِيْ مُبٰرَكًا اَيْنَ مَا كُنْتُ وَاَوْصٰنِيْ بِالصَّلٰوةِ وَالزَّكٰوةِ مَا دُمْتُ حَيًّا
32	और अपने माता-पिता के साथ नेकी करने वाला (बनाया), और मुझे न घमंडी बनाया और न नाफरमान।	وَّبَرًّا بِوَالِدَتِيْ وَلَمْ يَجْعَلْنِيْ جَبَّارًا شَقِيًّا
33	और मुझ पर सलामती हो जिस दिन मै पैदा हुआ, जिस दिन मै मरूँगा, और जिस दिन मै दोबारा ज़िन्दा किया जाऊँगा।	وَالسَّلٰمُ عَلَيَّ يَوْمَ وُلِدْتُّ وَيَوْمَ اَمُوْتُ وَيَوْمَ اُبْعَثُ حَيًّا
34	यह है ईसा, मरयम का बेटा, जिसके बारे में सच्चा बयान है, जिसके बारे में वे शक करते हैं।	ذٰلِكَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ قَوْلَ الْحَقِّ الَّذِيْ فِيْهِ يَمْتَرُوْنَ
35	अल्लाह के लिए यह मुनासिब नहीं कि वह कोई औलाद बनाए। वह पाक है। जब वह कोई काम ठान लेता है, तो बस कहता है, 'हो जा,' तो वह हो जाता है।	مَا كَانَ لِلّٰهِ اَنْ يَّتَّخِذَ مِنْ وَّلَدٍ سُبْحٰنَهٗ اِذَا قَضٰٓى اَمْرًا فَاِنَّمَا يَقُوْلُ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ
36	और (ईसा ने कहा,) 'निश्चित रूप से अल्लाह मेरा रब है और तुम्हारा रब है, तो उसी की इबादत करो। यही सीधा रास्ता है।'	وَاِنَّ اللّٰهَ رَبِّيْ وَرَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْهُ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ
37	फिर (उनके) गिरोहों ने आपस में इख़्तिलाफ किया। तो उन लोगों पर अफसोस है जो काफिर हैं, उस दिन की मुलाकात से जब वह हमारे पास आएँगे।	فَاخْتَلَفَ الْاَحْزَابُ مِنْ بَيْنِهِمْ فَوَيْلٌ لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ مَّشْهَدِ يَوْمٍ عَظِيْمٍ
38	उनका सुनना कितना तेज़ होगा और उनकी नज़र कितनी साफ होगी जिस दिन वे हमारे पास आएँगे। लेकिन आज (दुनिया में) ज़ालिम लोग साफ गुमराही में हैं।	اَسْمِعْ بِهِمْ وَاَبْصِرْ يَوْمَ يَاْتُوْنَنَا لٰكِنِ الظّٰلِمُوْنَ الْيَوْمَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ

39	और (ऐ मुहम्मद) उनहे उस पछताव के दिन की ख़बरदार कर, जब सारा मामला तय हो चुका होगा, जबकि वे ग़फलत मे हैं और वे ईमान नहीं लाते।	وَاَنْذِرْهُمْ يَوْمَ الْحَسْرَةِ اِذْ قُضِيَ الْاَمْرُ وَهُمْ فِيْ غَفْلَةٍ وَّهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ
40	निश्चित रूप से हम ही ज़मीन और उस पर मौजूद हर चीज़ के वारिस है और हमारे पास ही वे लौटाए जाएँगे।	اِنَّا نَحْنُ نَرِثُ الْاَرْضَ وَمَنْ عَلَيْهَا وَاِلَيْنَا يُرْجَعُوْنَ
41	और (ऐ मुहम्मद) किताब (क़ुरआन) मे इब्राहीम का ज़िक्र कर। निश्चित रूप से वह बहुत सच्चा और एक नबी था।	وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ اِبْرٰهِيْمَ اِنَّه كَانَ صِدِّيْقًا نَّبِيًّا
42	जब उसने अपने बाप से कहा, 'ऐ मेरे बाप! तू ऐसी चीज़ की पूजा क्यों करता है जो न सुनती है, न देखती है, और न तुझे किसी तरह फायदा दे सकती है?'	اِذْ قَالَ لِاَبِيْهِ يٰٓاَبَتِ لِمَ تَعْبُدُ مَا لَا يَسْمَعُ وَلَا يُبْصِرُ وَلَا يُغْنِيْ عَنْكَ شَيْـًٔا
43	'ऐ मेरे बाप! मेरे पास वह इल्म आया है जो तुझ तक नहीं पहुँचा, तो मेरी पैरवी कर, मै तुझे सीधा रास्ता दिखाऊँगा।'	يٰٓاَبَتِ اِنِّيْ قَدْ جَاءَنِيْ مِنَ الْعِلْمِ مَا لَمْ يَأْتِكَ فَاتَّبِعْنِيْٓ اَهْدِكَ صِرَاطًا سَوِيًّا
44	'ऐ मेरे बाप! शैतान की पूजा न कर, क्योंकि शैतान रहमान का नाफरमान है।'	يٰٓاَبَتِ لَا تَعْبُدِ الشَّيْطٰنَ اِنَّ الشَّيْطٰنَ كَانَ لِلرَّحْمٰنِ عَصِيًّا
45	'ऐ मेरे बाप! मुझे डर है कि तुझ पर रहमान की तरफ से अज़ाब आएगा, फिर तू शैतान का साथी बन जाएगा।'	يٰٓاَبَتِ اِنِّيْٓ اَخَافُ اَنْ يَّمَسَّكَ عَذَابٌ مِّنَ الرَّحْمٰنِ فَتَكُوْنَ لِلشَّيْطٰنِ وَلِيًّا
46	उसने (बाप ने) कहा, 'ऐ इब्राहीम! क्या तू मेरे ख़ुदाओं से नफरत करता है? अगर तू रुका नहीं, तो मै तुझे पत्थर मारूँगा। मुझसे दूर हो जा, लंबे वक़्त के लिए।'	قَالَ اَرَاغِبٌ اَنْتَ عَنْ اٰلِهَتِيْ يٰٓاِبْرٰهِيْمُ لَئِنْ لَّمْ تَنْتَهِ لَاَرْجُمَنَّكَ وَاهْجُرْنِيْ مَلِيًّا
47	उसने (इब्राहीम ने) कहा, 'तुझ पर सलाम हो, मै तेरे लिए अपने रब से मगफरित माँगूँगा। निश्चित रूप से वह मेरे साथ बहुत मेहरबान है।'	قَالَ سَلٰمٌ عَلَيْكَ سَاَسْتَغْفِرُ لَكَ رَبِّيْ اِنَّه كَانَ بِيْ حَفِيًّا
48	और मै तुझसे और उन चीज़ों से अलग हो जाऊँगा जिनकी तू अल्लाह के सिवा पूजा करता है, और मै अपने रब से दुआ करूँगा, उम्मीद है कि मै अपने रब से दुआ करने मे निराश नहीं होऊँगा।'	وَاَعْتَزِلُكُمْ وَمَا تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَاَدْعُوْا رَبِّيْ عَسٰٓى اَلَّآ اَكُوْنَ بِدُعَاءِ رَبِّيْ شَقِيًّا
49	तो जब वह उनसे और उनकी अल्लाह के सिवा पूजी जाने वाली चीज़ों से अलग हो गया, हमने उसे इसहाक और याकूब अता किए, और हर एक को हमने नबी बनाया।	فَلَمَّا اعْتَزَلَهُمْ وَمَا يَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَهَبْنَا لَه اِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ وَكُلًّا جَعَلْنَا نَبِيًّا
50	और हमने उन्हे अपनी रहमत का हिस्सा दिया और उनकी ज़बान को सच्चाई और बुलंदी दी।	وَوَهَبْنَا لَهُمْ مِّنْ رَّحْمَتِنَا وَجَعَلْنَا لَهُمْ لِسَانَ صِدْقٍ عَلِيًّا
51	और (ऐ मुहम्मद) किताब (क़ुरआन) मे मूसा का ज़िक्र कर। निश्चित रूप से वह ख़ालिस (चुना हुआ) था, और एक रसूल और नबी था।	وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ مُوْسٰٓى اِنَّه كَانَ مُخْلَصًا وَّكَانَ رَسُوْلًا نَّبِيًّا

وَنَادَيْنٰهُ مِنْ جَانِبِ الطُّوْرِ الْاَيْمَنِ وَقَرَّبْنٰهُ نَجِيًّا	और हमने उसे सीनाई पहाड़ की दाईं तरफ से पुकारा और उसे बातचीत के लिए करीब लाए।	**52**
وَوَهَبْنَا لَهٗ مِنْ رَّحْمَتِنَآ اَخَاهُ هٰرُوْنَ نَبِيًّا	और हमने अपनी रहमत से उसे उसका भाई हारून दिया, जो एक नबी था।	**53**
وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ اِسْمٰعِيْلَ اِنَّهٗ كَانَ صَادِقَ الْوَعْدِ وَكَانَ رَسُوْلًا نَّبِيًّا	और (ऐ मुहम्मद) किताब (क़ुरआन) में इस्माईल का ज़िक्र कर। निश्चित रूप से वह अपने वादे का सच्चा था, और एक रसूल और नबी था।	**54**
وَكَانَ يَأْمُرُ اَهْلَهٗ بِالصَّلٰوةِ وَالزَّكٰوةِ وَكَانَ عِنْدَ رَبِّهٖ مَرْضِيًّا	और वह अपनी कौम को नमाज़ और ज़कात का हुक्म देता था, और अपने रब के पास पसंदीदा था।	**55**
وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ اِدْرِيْسَ اِنَّهٗ كَانَ صِدِّيْقًا نَّبِيًّا	और (ऐ मुहम्मद) किताब (क़ुरआन) में इदरीस का ज़िक्र कर। निश्चित रूप से वह बहुत सच्चा और एक नबी था।	**56**
وَّرَفَعْنٰهُ مَكَانًا عَلِيًّا	और हमने उसे बुलंद मरतबे पर उठाया।	**57**
اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ مِّنَ النَّبِيّٖنَ مِنْ ذُرِّيَّةِ اٰدَمَ وَمِمَّنْ حَمَلْنَا مَعَ نُوْحٍ وَّمِنْ ذُرِّيَّةِ اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْرَآءِيْلَ وَمِمَّنْ هَدَيْنَا وَاجْتَبَيْنَا اِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُ الرَّحْمٰنِ خَرُّوْا سُجَّدًا وَّبُكِيًّا	ये वे लोग हैं जिन पर अल्लाह ने इनाम किया, जो नबियों में से हैं, आदम की औलाद से, और उन लोगों से जिन्हें हमने नूह के साथ (कश्ती में) सवार किया, और इब्राहीम और इस्राईल (याकूब) की औलाद से, और उन लोगों से जिन्हें हमने हिदायत दी और चुना। जब उनके सामने रहमान की आयतें पढ़ी जाती थीं, तो वे सजदे में गिर पड़ते थे और रोते थे।	**58**
فَخَلَفَ مِنْ بَعْدِهِمْ خَلْفٌ اَضَاعُوا الصَّلٰوةَ وَاتَّبَعُوا الشَّهَوٰتِ فَسَوْفَ يَلْقَوْنَ غَيًّا	फिर उनके बाद ऐसे लोग आए जिन्होंने नमाज़ को छोड़ दिया और अपनी ख़्वाहिशों की परैवी की, तो वे जल्द ही गुमराही में पड़ेंगे।	**59**
اِلَّا مَنْ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَاُولٰٓئِكَ يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ وَلَا يُظْلَمُوْنَ شَيْـًٔا	सिवाय उनके जो तौबा करें, ईमान लाएँ और नेक काम करें, तो वे जन्नत में दाख़िल होंगे और उन पर ज़रा भी ज़ुल्म नहीं होगा।	**60**
جَنّٰتِ عَدْنِ ِالَّتِيْ وَعَدَ الرَّحْمٰنُ عِبَادَهٗ بِالْغَيْبِ اِنَّهٗ كَانَ وَعْدُهٗ مَأْتِيًّا	वह 'अदन' की जन्नत है, जिनका वादा रहमान ने अपने बन्दों से किया, हालाँकि वह (जन्नत) नज़र नहीं आती। निश्चित रूप से उसका वादा पूरा होने वाला है।	**61**
لَا يَسْمَعُوْنَ فِيْهَا لَغْوًا اِلَّا سَلٰمًا وَلَهُمْ رِزْقُهُمْ فِيْهَا بُكْرَةً وَّعَشِيًّا	वहाँ वे कोई बेकार बात नहीं सुनेंगे, सिवाय सलाम के। और उनके लिए वहाँ सुबह और शाम का रिज़्क़ होगा।	**62**
تِلْكَ الْجَنَّةُ الَّتِيْ نُوْرِثُ مِنْ عِبَادِنَا مَنْ كَانَ تَقِيًّا	यही वह जन्नत है जिसे हम अपने बन्दों में से उस शख़्स को वारिस करेंगे जो तक़वा वाला है।	**63**

وَمَا نَتَنَزَّلُ اِلَّا بِاَمْرِ رَبِّكَ لَه مَا بَيْنَ اَيْدِيْنَا وَمَا خَلْفَنَا وَمَا بَيْنَ ذٰلِكَ وَمَا كَانَ رَبُّكَ نَسِيًّا	**64**	और (जबिरील न कहा,) 'हम तो बस तरे रब क हुक्म स उतरत ह। उसी क लिए ह जो हमार सामन ह, जो हमार पीछ ह, और जो इन दोनों क बीच ह। और तरो रब भूलन वाला नहीं ह।'
رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا فَاعْبُدْهُ وَاصْطَبِرْ لِعِبَادَتِه هَلْ تَعْلَمُ لَه سَمِيًّا	**65**	वह आसमानों और ज़मीन का और जो कछ उनक बीच ह, उसका रब ह, तो उसी की इबादत कर और उसकी इबादत म सबर कर। कया तू उसक बराबर का कोई नाम जानता ह?
وَيَقُوْلُ الْاِنْسَانُ ءَاِذَا مَا مِتُّ لَسَوْفَ اُخْرَجُ حَيًّا	**66**	और इंसान कहता ह, 'कया जब म मर जाऊँगा, तो कया म सचमच दोबारा ज़िंदा कयि जाऊँगा?'
اَوَلَا يَذْكُرُ الْاِنْسَانُ اَنَّا خَلَقْنٰهُ مِنْ قَبْلُ وَلَمْ يَكُ شَيْـًٔا	**67**	कया वह इंसान नहीं सोचता कि हमन उस पहल बनाया था, जबकि वह कछ भी नहीं था?
فَوَرَبِّكَ لَنَحْشُرَنَّهُمْ وَالشَّيٰطِيْنَ ثُمَّ لَنُحْضِرَنَّهُمْ حَوْلَ جَهَنَّمَ جِثِيًّا	**68**	तो तरे रब की कसम, हम जरूर उनह और शतानों को इकटठा करेंगे, फिर हम उनह जहनम क आसपास घटनों क बल लाएँगे।
ثُمَّ لَنَنْزِعَنَّ مِنْ كُلِّ شِيْعَةٍ اَيُّهُمْ اَشَدُّ عَلَى الرَّحْمٰنِ عِتِيًّا	**69**	फिर हम हर गरिह स उस शख़स को जरूर खींच लेंगे जो रहमान क खिलाफ सबस ज़यादा सरकश था।
ثُمَّ لَنَحْنُ اَعْلَمُ بِالَّذِيْنَ هُمْ اَوْلٰى بِهَا صِلِيًّا	**70**	और हम ज़यादा अचछी तरह जानत ह कि कौन लोग जहनम म डाल जान क हकदार ह।
وَاِنْ مِّنْكُمْ اِلَّا وَارِدُهَا كَانَ عَلٰى رَبِّكَ حَتْمًا مَّقْضِيًّا	**71**	और तम म स कोई भी ऐसा नहीं जो उस (जहनम) क पास स न गज़रे। यह तरे रब क लिए एक तय कयि हआ फसैला ह।
ثُمَّ نُنَجِّى الَّذِيْنَ اتَّقَوْا وَّنَذَرُ الظّٰلِمِيْنَ فِيْهَا جِثِيًّا	**72**	फिर हम उन लोगों को बचा लेंगे जो तकवा वाल ह, और ज़ालिमों को उसी म घटनों क बल छोड़ देंगे।
وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ قَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَيُّ الْفَرِيْقَيْنِ خَيْرٌ مَّقَامًا وَّاَحْسَنُ نَدِيًّا	**73**	और जब हमारी साफ़ आयत उनक सामन पढ़ी जाती ह, तो काफिर लोग ईमान वालों स कहत ह, 'इन दोनों गरिहों म स कसिका मकाम बहेतर ह और कसिकी मजलसि ज़यादा खबसूरत ह?'
وَكَمْ اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْنٍ هُمْ اَحْسَنُ اَثَاثًا وَّرِءْيًا	**74**	और हमन उनस पहल कतिनी ही कौमों को हलाक कयि, जो उनक सामान और नज़र आन म बहेतर थीं।
قُلْ مَنْ كَانَ فِى الضَّلٰلَةِ فَلْيَمْدُدْ لَهُ الرَّحْمٰنُ مَدًّا حَتّٰٓى اِذَا رَاَوْا مَا يُوْعَدُوْنَ اِمَّا الْعَذَابَ وَاِمَّا السَّاعَةَ فَسَيَعْلَمُوْنَ مَنْ هُوَ شَرٌّ مَّكَانًا وَّاَضْعَفُ جُنْدًا	**75**	कह द (ऐ महममद), 'जो कोई गमराही म ह, रहमान उस ढील देगा, यहाँ तक कि जब व वह देख लेंगे जिसका उनह वादा कयि गया था, चाह वह अज़ाब हो या कयामत। फिर उनह मालूम होगा कि किसिका मकाम ज़यादा खराब ह और कसिकी फौज ज़यादा कमज़ोर ह।'

76	और अल्लाह उनकी हदिायत बढ़ाएगा जो हदिायत पा चुके हैं और नके अमल जो बाकी रहने वाले हैं, वे तेरे रब के पास बेहतर बदला और बेहतर अंजाम रखते हैं।	وَيَزِيْدُ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اهْتَدَوْا هُدًى وَالْبٰقِيٰتُ الصّٰلِحٰتُ خَيْرٌ عِنْدَ رَبِّكَ ثَوَابًا وَّخَيْرٌ مَّرَدًّا
77	क्या तूने उस शख़्स को देखा जसिने हमारी आयतों को झुठलाया और कहा, 'मुझे ज़रूर माल और औलाद दी जाएगी।'	اَفَرَاَيْتَ الَّذِيْ كَفَرَ بِاٰيٰتِنَا وَقَالَ لَاُوْتَيَنَّ مَالًا وَّوَلَدًا
78	क्या उसने ग़ैब देख लयिा है या उसने रहमान के पास कोई अहद लयिा है?	اَطَّلَعَ الْغَيْبَ اَمِ اتَّخَذَ عِنْدَ الرَّحْمٰنِ عَهْدًا
79	हरगज़ि नहीं! हम वह सब लखि लगे जो वह कहता है और हम उसके लयि अज़ाब को पूरी तरह बढ़ा देंगे।	كَلَّا سَنَكْتُبُ مَا يَقُوْلُ وَنَمُدُّ لَه مِنَ الْعَذَابِ مَدًّا
80	और जो कुछ वह कहता है, हम उसका वारसि होंगे, और वह हमारे पास अकेला आएगा।	وَّنَرِثُه مَا يَقُوْلُ وَيَاْتِيْنَا فَرْدًا
81	और उन्होंने अल्लाह के सवि ा खुदाओं को चुना ताकि वे उनके लयि इज़्ज़त का ज़रयि ा बनें।	وَاتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اٰلِهَةً لِّيَكُوْنُوْا لَهُمْ عِزًّا
82	हरगज़ि नहीं! वे (ख़ुदा) उनकी इबादत को नकार देंगे और उनके ख़लिाफ़ हो जाएँगे।	كَلَّا سَيَكْفُرُوْنَ بِعِبَادَتِهِمْ وَيَكُوْنُوْنَ عَلَيْهِمْ ضِدًّا
83	क्या तूने नहीं देखा कि हमने काफ़रिों के लयि शैतानों को भेजा है जो उन्हें (गुनाह की तरफ़) उकसाते हैं?	اَلَمْ تَرَ اَنَّآ اَرْسَلْنَا الشَّيٰطِيْنَ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ تَؤُزُّهُمْ اَزًّا
84	तो (ऐ मुहम्मद) उनके लयि जल्दी न कर, क्योंकि हम उनके लयि गनिती पूरी कर रहे हैं।	فَلَا تَعْجَلْ عَلَيْهِمْ اِنَّمَا نَعُدُّ لَهُمْ عَدًّا
85	जसि दनि हम तकवा वालों को रहमान की तरफ़ महेमानों की तरह इकट्ठा करेंगे।	يَوْمَ نَحْشُرُ الْمُتَّقِيْنَ اِلَى الرَّحْمٰنِ وَفْدًا
86	और हम नाफ़रमानों को जहन्नम की तरफ़ प्यास की हालत में हाँक कर लाएँगे।	وَنَسُوْقُ الْمُجْرِمِيْنَ اِلٰى جَهَنَّمَ وِرْدًا
87	उनके पास सफ़िारशि का कोई हक़ नहीं होगा, सवि ाय उसके जसिने रहमान के पास अहद लयि ा हो।	لَا يَمْلِكُوْنَ الشَّفَاعَةَ اِلَّا مَنِ اتَّخَذَ عِنْدَ الرَّحْمٰنِ عَهْدًا
88	और उन्होंने कहा, 'रहमान ने औलाद बनाई।'	وَقَالُوا اتَّخَذَ الرَّحْمٰنُ وَلَدًا
89	नश्चिति रूप से तुम बहुत बुरी बात ले आए।	لَقَدْ جِئْتُمْ شَيْـًٔا اِدًّا
90	करीब था कि आसमान फट जाएँ, और ज़मीन चरि जाए, और पहाड़ ढह जाएँ।	تَكَادُ السَّمٰوٰتُ يَتَفَطَّرْنَ مِنْهُ وَتَنْشَقُّ الْاَرْضُ وَتَخِرُّ الْجِبَالُ هَدًّا
91	इसलिए कि उन्होंने रहमान के लिए औलाद ठहराई।	اَنْ دَعَوْا لِلرَّحْمٰنِ وَلَدًا

وَمَا يَنْۢبَغِيْ لِلرَّحْمٰنِ اَنْ يَّتَّخِذَ وَلَدًا	और रहमान क॓लिए यह मनासबि नहीं कि॑वह औलाद बनाए।	**92**
اِنْ كُلُّ مَنْ فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ اِلَّآ اٰتِى الرَّحْمٰنِ عَبْدًا	आसमानों॑और ज़मीन म॑कोई भी ऐसा नहीं॑जो रहमान क॓सामन॓ बनद॒की हसैयित स॓न आए।	**93**
لَقَدْ اَحْصٰىهُمْ وَعَدَّهُمْ عَدًّا	नशि॒चति रप॒स॓उसन॓उनकी गनिती की ह॑और उनह॑पूरी तरह गनि लयिा ह॑।	**94**
وَكُلُّهُمْ اٰتِيْهِ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فَرْدًا	और उनम॑स॓हर एक कयिामत क॓दनि उसक॓पास अकेला आएगा।	**95**
اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ سَيَجْعَلُ لَهُمُ الرَّحْمٰنُ وُدًّا	नशि॒चति रप॒स॓जो लोग ईमान लाए और नके काम कए, रहमान उनक॓लिए (लोगों॑क॓दलिों॑म॑) मोहबब॒त पदैा करेगा।	**96**
فَاِنَّمَا يَسَّرْنٰهُ بِلِسَانِكَ لِتُبَشِّرَ بِهِ الْمُتَّقِيْنَ وَتُنْذِرَ بِهٖ قَوْمًا لُّدًّا	तो (ऐ मह॒मम॒द) हमन॓इस॓(कु॒आन को) तरी ज़॒बान म॑आसान कर दयिा, ताकि॑त॒इसक॓ज़॒रए॑तकवा वालों॑को ख़॒शुख़॒बरी द॓और ज़॒द्दी॒ कौम को खबरदार कर॓।	**97**
وَكَمْ اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْنٍ هَلْ تُحِسُّ مِنْهُمْ مِّنْ اَحَدٍ اَوْ تَسْمَعُ لَهُمْ رِكْزًا	और हमन॓उनस॓पहल॓कतिनी कौमों॑को हलाक कयिा। क॒या त॒ उनम॑स॓कसिी को दखे॒ता ह॑या उनकी कोई सरगोशी सन॒ता ह॑?	**98**

छंदों की संख्या १३५	طه टा-हा - 20	مكية मक्की

بسم الله الرحمن الرحيم

टा-हा (ताहा)

1	ताहा।	طٰهٰ
2	हमने इस क़ुरआन को तुम पर इसलिए नहीं उतारा कि तुम परेशान हो जाओ।	مَآ اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْقُرْاٰنَ لِتَشْقٰٓى
3	बल्कि यह उन लोगों के लिए एक नसीहत है जो (अल्लाह से) डरते हैं।	اِلَّا تَذْكِرَةً لِّمَنْ يَّخْشٰى
4	यह उस (अल्लाह) की ओर से उतारा गया है जिसने ज़मीन और ऊँचे आसमानों को बनाया।	تَنْزِيْلًا مِّمَّنْ خَلَقَ الْاَرْضَ وَالسَّمٰوٰتِ الْعُلٰى
5	वह रहमान है, जो अर्श पर विराजमान है।	اَلرَّحْمٰنُ عَلَى الْعَرْشِ اسْتَوٰى
6	उसी का है जो कुछ आसमानों में है, जो कुछ ज़मीन पर है, जो कुछ इन दोनों के बीच है और जो कुछ ज़मीन के नीचे है।	لَه مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَمَا تَحْتَ الثَّرٰى
7	और अगर तुम अपनी बात को ज़ोर से कहो, तो वह तो रहस्य और उससे भी छिपी हुई बात को जानता है।	وَاِنْ تَجْهَرْ بِالْقَوْلِ فَاِنَّه يَعْلَمُ السِّرَّ وَاَخْفَى
8	वह अल्लाह है, जिसके सिवा कोई ख़ुदा नहीं, उसी के लिए सबसे अच्छे नाम हैं।	اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ لَهُ الْاَسْمَاءُ الْحُسْنٰى
9	और क्या तुम्हें मूसा की ख़बर पहुँची है?	وَهَلْ اَتٰىكَ حَدِيْثُ مُوْسٰى
10	जब उसने एक आग देखी, तो उसने अपने परिवार से कहा, 'तुम यहीं ठहरो, मैंने एक आग देखी है, शायद मैं तुम्हारे लिए उससे थोड़ा अंगारा ला सकूँ या उस आग के पास कोई रास्ता पा सकूँ।'	اِذْ رَاٰ نَارًا فَقَالَ لِاَهْلِهِ امْكُثُوْٓا اِنِّٓىْ اٰنَسْتُ نَارًا لَّعَلِّٓىْ اٰتِيْكُمْ مِّنْهَا بِقَبَسٍ اَوْ اَجِدُ عَلَى النَّارِ هُدًى
11	फिर जब वह उस (आग) के पास पहुँचा, तो उसे पुकारा गया, 'ऐ मूसा!'	فَلَمَّآ اَتٰىهَا نُوْدِيَ يٰمُوْسٰٓى
12	'निश्चित रूप से मैं तेरा रब हूँ, तो अपनी दोनों जूतियाँ उतार दे, क्योंकि तू पवित्र वादी तुवा में है।	اِنِّٓىْ اَنَا رَبُّكَ فَاخْلَعْ نَعْلَيْكَ اِنَّكَ بِالْوَادِ الْمُقَدَّسِ طُوًى
13	और मैंने तुझे चुन लिया है, तो सुन ले जो कुछ तुझ पर वह्य की जा रही है।	وَاَنَا اخْتَرْتُكَ فَاسْتَمِعْ لِمَا يُوْحٰى

14	नश्‍चिति रूप स मैं ही अल्लाह हूँ मेरे सिवा कोई ख़ुदा नहीं, तो मेरी इबादत कर और मेरी याद के लिए नमाज़ क़ायम कर।	اِنَّنِيْٓ اَنَا اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنَا فَاعْبُدْنِيْ وَاَقِمِ الصَّلٰوةَ لِذِكْرِيْ
15	नश्‍चिति रूप से क़ियामत की घड़ी आने वाली है, मैं उसे छिपाए रखता हूँ ताकि हर शख़्स को उसके कर्मों का बदला दिया जाए।	اِنَّ السَّاعَةَ اٰتِيَةٌ اَكَادُ اُخْفِيْهَا لِتُجْزٰى كُلُّ نَفْسٍ بِمَا تَسْعٰى
16	तो जो कोई उस पर ईमान न लाए और अपनी ख़्वाहिशों की पैरवी करे, वह तुझे उससे रोक न दे, वरना तू तबाह हो जाएगा।	فَلَا يَصُدَّنَّكَ عَنْهَا مَنْ لَّا يُؤْمِنُ بِهَا وَاتَّبَعَ هَوٰىهُ فَتَرْدٰى
17	और यह क्या है जो तेरे दाएँ हाथ में है, ऐ मूसा?	وَمَا تِلْكَ بِيَمِيْنِكَ يٰمُوْسٰى
18	उसने कहा, 'यह मेरी असा (लाठी) है, मैं इस पर टेक लगाता हूँ और इसके साथ अपनी भेड़ों के लिए पत्तियाँ झाड़ता हूँ और मेरे लिए इसमें और भी बहुत से फ़ायदे हैं।'	قَالَ هِيَ عَصَايَ اَتَوَكَّؤُا عَلَيْهَا وَاَهُشُّ بِهَا عَلٰى غَنَمِيْ وَلِيَ فِيْهَا مَاٰرِبُ اُخْرٰى
19	उसने (अल्लाह ने) कहा, 'इसे फेंक दे, ऐ मूसा!'	قَالَ اَلْقِهَا يٰمُوْسٰى
20	तो उसने उसे फेंक दिया, तो वह एक साँप बन गया जो दौड़ रहा था।	فَاَلْقٰىهَا فَاِذَا هِيَ حَيَّةٌ تَسْعٰى
21	उसने (अल्लाह ने) कहा, 'इसे पकड़ ले और डर मत, हम इसे फिर से उसकी पहली हालत में कर देंगे।'	قَالَ خُذْهَا وَلَا تَخَفْ سَنُعِيْدُهَا سِيْرَتَهَا الْاُوْلٰى
22	और अपने हाथ को अपनी बग़ल में दबा ले, वह बिना किसी बीमारी के सफ़ेद चमकता हुआ निकलेगा, यह एक और निशानी है।	وَاضْمُمْ يَدَكَ اِلٰى جَنَاحِكَ تَخْرُجْ بَيْضَاءَ مِنْ غَيْرِ سُوْٓءٍ اٰيَةً اُخْرٰى
23	ताकि हम तुझे अपनी बड़ी-बड़ी निशानियाँ दिखाएँ।	لِنُرِيَكَ مِنْ اٰيٰتِنَا الْكُبْرٰى
24	फ़िरऔन के पास जा, क्योंकि वह हद से गुज़र चुका है।'	اِذْهَبْ اِلٰى فِرْعَوْنَ اِنَّه طَغٰى
25	उसने (मूसा ने) कहा, 'ऐ मेरे रब! मेरे सीने को मेरे लिए खोल दे।'	قَالَ رَبِّ اشْرَحْ لِيْ صَدْرِيْ
26	'और मेरे लिए मेरे काम को आसान कर दे।'	وَيَسِّرْ لِيْٓ اَمْرِيْ
27	'और मेरी ज़बान से गाँठ को खोल दे।'	وَاحْلُلْ عُقْدَةً مِّنْ لِّسَانِيْ
28	'ताकि लोग मेरी बात को समझ सकें।'	يَفْقَهُوْا قَوْلِيْ
29	'और मेरे लिए मेरे ख़ानदान में से एक वज़ीर (सहायक) बना दे।'	وَاجْعَلْ لِّيْ وَزِيْرًا مِّنْ اَهْلِيْ
30	'यानी हारून, मेरे भाई को।'	هٰرُوْنَ اَخِي
31	'उसके ज़रिए मेरी ताक़त को मज़बूत कर दे।'	اشْدُدْ بِهٖٓ اَزْرِيْ

32	'और उसे मेरे काम में शरीक कर दो'	وَاَشْرِكْهُ فِيْٓ اَمْرِيْ
33	'ताकि हम तेरी बहुत ज़्यादा तसबीह करें'	كَيْ نُسَبِّحَكَ كَثِيْرًا
34	'और तुझे बहुत ज़्यादा याद करें'	وَّنَذْكُرَكَ كَثِيْرًا
35	'निश्चित रूप से तू हमें देख रहा है'	اِنَّكَ كُنْتَ بِنَا بَصِيْرًا
36	उसने (अल्लाह ने) कहा, 'ऐ मूसा! तेरी माँग पूरी कर दी गई।'	قَالَ قَدْ اُوْتِيْتَ سُؤْلَكَ يٰمُوْسٰى
37	और हमने तुझ पर एक और बार पहले भी एहसान किया था।	وَلَقَدْ مَنَنَّا عَلَيْكَ مَرَّةً اُخْرٰٓى
38	जब हमने तेरी माँ को वह्य के ज़रिए बताया जो वह्य की गई थी।	اِذْ اَوْحَيْنَآ اِلٰٓى اُمِّكَ مَا يُوْحٰٓى
39	'उसे (मूसा को) एक संदूक़ में रख दे, फिर उसे नदी में डाल दे, तो नदी उसे किनारे पर ले आएगी। उसे मेरा और उसका दुश्मन (फिरऔन) उठा लेगा। और मैंने तुझ पर अपनी तरफ से मोहब्बत डाल दी, ताकि तू मेरी निगरानी में पाला जाए।'	اَنِ اقْذِفِيْهِ فِى التَّابُوْتِ فَاقْذِفِيْهِ فِى الْيَمِّ فَلْيُلْقِهِ الْيَمُّ بِالسَّاحِلِ يَاْخُذْهُ عَدُوٌّ لِّيْ وَعَدُوٌّ لَّهٗ وَاَلْقَيْتُ عَلَيْكَ مَحَبَّةً مِّنِّيْ وَلِتُصْنَعَ عَلٰى عَيْنِيْٓ
40	जब तेरी बहन चली और उसने (फिरऔन के लोगों से) कहा, 'क्या मैं तुम्हें ऐसा शख़्स दिखाऊँ जो इसकी परवरिश करे?' तो हमने तुझे तेरी माँ के पास वापस पहुँचा दिया, ताकि उसकी आँख ठंडी हो और वह ग़म न करे और तूने एक शख़्स को क़त्ल कर दिया था, तो हमने तुझे उस मुसीबत से नजात दी, और हमने तुझे कई तरह से आज़माया। फिर तू कई साल मध्यन के लोगों के बीच रहा, फिर तू ऐ मूसा, तय वक़्त पर आया।	اِذْ تَمْشِيْٓ اُخْتُكَ فَتَقُوْلُ هَلْ اَدُلُّكُمْ عَلٰى مَنْ يَّكْفُلُهٗ فَرَجَعْنٰكَ اِلٰٓى اُمِّكَ كَيْ تَقَرَّ عَيْنُهَا وَلَا تَحْزَنَ وَقَتَلْتَ نَفْسًا فَنَجَّيْنٰكَ مِنَ الْغَمِّ وَفَتَنّٰكَ فُتُوْنًا فَلَبِثْتَ سِنِيْنَ فِيْٓ اَهْلِ مَدْيَنَ ثُمَّ جِئْتَ عَلٰى قَدَرٍ يّٰمُوْسٰى
41	और मैंने तुझे अपने लिए चुन लिया।	وَاصْطَنَعْتُكَ لِنَفْسِيْ
42	तू और तेरा भाई मेरी निशानियों के साथ जाओ, और मेरी याद में सुस्ती न करो।	اِذْهَبْ اَنْتَ وَاَخُوْكَ بِاٰيٰتِيْ وَلَا تَنِيَا فِيْ ذِكْرِيْ
43	तुम दोनों फिरऔन के पास जाओ, क्योंकि वह हद से गुज़र चुका है	اِذْهَبَآ اِلٰى فِرْعَوْنَ اِنَّهٗ طَغٰى
44	और तुम दोनों उससे नरम लहजे में बात करो, शायद वह नसीहत हासिल कर ले या डर जाए।	فَقُوْلَا لَهٗ قَوْلًا لَّيِّنًا لَّعَلَّهٗ يَتَذَكَّرُ اَوْ يَخْشٰى
45	उन्होंने (मूसा और हारून ने) कहा, 'ऐ हमारे रब! हमें डर है कि वह हम पर जल्दी जुल्म करेगा या और ज़्यादा सरकशी करेगा।'	قَالَا رَبَّنَآ اِنَّنَا نَخَافُ اَنْ يَّفْرُطَ عَلَيْنَآ اَوْ اَنْ يَّطْغٰى
46	उसने (अल्लाह ने) कहा, 'तुम दोनों डरो मत, मैं तुम दोनों के साथ हूँ सुनता हूँ और देखता हूँ'	قَالَ لَا تَخَافَآ اِنَّنِيْ مَعَكُمَآ اَسْمَعُ وَاَرٰى

47	तो तुम दोनों उसके पास जाओ और कहो, 'हम दोनों तेरे रब के रसूल हैं, तो बनी इसराईल को हमारे साथ भेज दे और उनहें अज़ाब न दो हम तेरे पास तेरे रब की निशानी लेकर आए हैं और सलामती उस पर है जो हदायत की परैवी करता है'	فَأْتِيٰهُ فَقُوْلَآ اِنَّا رَسُوْلَا رَبِّكَ فَاَرْسِلْ مَعَنَا بَنِيْٓ اِسْرَاۤءِيْلَ وَلَا تُعَذِّبْهُمْ قَدْ جِئْنٰكَ بِاٰيَةٍ مِّنْ رَّبِّكَ وَالسَّلٰمُ عَلٰى مَنِ اتَّبَعَ الْهُدٰى
48	'निश्चित रूप से हमें वह्य की गई है कि अज़ाब उस पर है जो (हमारी बात को) झुठलाए और मुँह मोड़े'	اِنَّا قَدْ اُوْحِيَ اِلَيْنَآ اَنَّ الْعَذَابَ عَلٰى مَنْ كَذَّبَ وَتَوَلّٰى
49	उसने (फ़िरऔन ने) कहा, 'ऐ मूसा! तुम दोनों का रब कौन है?'	قَالَ فَمَنْ رَّبُّكُمَا يٰمُوْسٰى
50	उसने (मूसा ने) कहा, 'हमारा रब वह है जिसने हर चीज़ को उसकी बनावट दी, फिर उसे हिदायत दी।'	قَالَ رَبُّنَا الَّذِيْٓ اَعْطٰى كُلَّ شَيْءٍ خَلْقَه ثُمَّ هَدٰى
51	उसने (फ़िरऔन ने) कहा, 'तो पहले की कौमों का क्या हाल हुआ?'	قَالَ فَمَا بَالُ الْقُرُوْنِ الْاُوْلٰى
52	उसने (मूसा ने) कहा, 'उसका इल्म मेरे रब के पास एक किताब (लौह-ए-महफ़ूज़) में है। मेरा रब न ग़लती करता है और न भूलता है'	قَالَ عِلْمُهَا عِنْدَ رَبِّيْ فِيْ كِتٰبٍ لَا يَضِلُّ رَبِّيْ وَلَا يَنْسَى
53	'वह जिसने तुम्हारे लिए ज़मीन को बिछौना बनाया और उसमें तुम्हारे लिए रास्ते बनाए, और आसमान से पानी उतारा।' फिर हमने उस (पानी) के ज़रिए तरह-तरह की जोड़ीदार न[illegible]ात उगाई।	الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ مَهْدًا وَّسَلَكَ لَكُمْ فِيْهَا سُبُلًا وَّاَنْزَلَ مِنَ السَّمَاۤءِ مَاۤءً فَاَخْرَجْنَا بِهٖٓ اَزْوَاجًا مِّنْ نَّبَاتٍ شَتّٰى
54	खाओ और अपने मवेशियों को चराओ। निश्चित रूप से इसमें अक़्ल वालों के लिए निशानियाँ हैं	كُلُوْا وَارْعَوْا اَنْعَامَكُمْ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّاُولِي النُّهٰى
55	उसी (ज़मीन) से हमने तुम्हें पैदा किया, और उसी में हम तुम्हें लौटाएँगे, और उसी से हम तुम्हें दोबारा निकालेंगे।	مِنْهَا خَلَقْنٰكُمْ وَفِيْهَا نُعِيْدُكُمْ وَمِنْهَا نُخْرِجُكُمْ تَارَةً اُخْرٰى
56	और हमने उसे (फ़िरऔन को) अपनी सारी निशानियाँ दिखाईं, फिर भी उसने झुठलाया और इंकार किया।	وَلَقَدْ اَرَيْنٰهُ اٰيٰتِنَا كُلَّهَا فَكَذَّبَ وَاَبٰى
57	उसने (फ़िरऔन ने) कहा, 'ऐ मूसा! क्या तू हमारे पास अपनी जादूगरी के ज़रिए हमें हमारी ज़मीन से निकालने आया है?'	قَالَ اَجِئْتَنَا لِتُخْرِجَنَا مِنْ اَرْضِنَا بِسِحْرِكَ يٰمُوْسٰى
58	'तो हम भी तेरे सामने वैसा ही जादू लाएँगे। तो हमारे और अपने बीच एक वक़्त मुक़र्रर कर दे, जिसे न हम तोड़ें और न तू एक खुले मैदान में'	فَلَنَاْتِيَنَّكَ بِسِحْرٍ مِّثْلِهٖ فَاجْعَلْ بَيْنَنَا وَبَيْنَكَ مَوْعِدًا لَّا نُخْلِفُه نَحْنُ وَلَآ اَنْتَ مَكَانًا سُوًى
59	उसने (मूसा ने) कहा, 'तुम्हारा वक़्त ईद के दिन का है, और लोग सुबह के वक़्त जमा किए जाएँ'	قَالَ مَوْعِدُكُمْ يَوْمُ الزِّيْنَةِ وَاَنْ يُّحْشَرَ النَّاسُ ضُحًى
60	तो फ़िरऔन चला गया, उसने अपनी चाल इकट्ठी की, फिर (मुक़र्रर वक़्त पर) वापस आया।	فَتَوَلّٰى فِرْعَوْنُ فَجَمَعَ كَيْدَه ثُمَّ اَتٰى

61	मूसा न उनस (जादूगरों स) कहा, 'तमु पर अफ़सोस! अल्लाह पर झूठ न गढ़ो, वरना वह तमुह अपन अज़ाब स हलाक कर दगेा। और जो शख़स झूठ गढ़ता ह, वह नाकाम हो जाता ह'	قَالَ لَهُمْ مُّوْسٰى وَيْلَكُمْ لَا تَفْتَرُوْا عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا فَيُسْحِتَكُمْ بِعَذَابٍ وَقَدْ خَابَ مَنِ افْتَرٰى
62	तो व अपन मामल म आपस म बहस करन लग और अपनी बात को छपा लिया।	فَتَنَازَعُوْٓا اَمْرَهُمْ بَيْنَهُمْ وَاَسَرُّوا النَّجْوٰى
63	उनहोंन (जादूगरों न) कहा, 'नशि्चति रूप स ये दोनों जादूगर ह, जो अपन जादू क ज़रए तमुह तमुहारी ज़मीन स नकिालना चाहत ह और तमुहारी बहेतरीन रवायतों को मटिाना चाहत हो'	قَالُوْٓا اِنْ هٰذٰنِ لَسٰحِرٰنِ يُرِيْدٰنِ اَنْ يُّخْرِجٰكُمْ مِّنْ اَرْضِكُمْ بِسِحْرِهِمَا وَيَذْهَبَا بِطَرِيْقَتِكُمُ الْمُثْلٰى
64	'तो अपनी सारी चाल इकट्ठी करो, फरि कतारबंदी करक आओ, और आज जो जीतगेा, वही कामयाब होगा।'	فَاَجْمِعُوْا كَيْدَكُمْ ثُمَّ ائْتُوْا صَفًّا وَقَدْ اَفْلَحَ الْيَوْمَ مَنِ اسْتَعْلٰى
65	उनहोंन (जादूगरों न) कहा, 'ऐ मूसा! या तो तू पहल फके, या हम पहल फकें?'	قَالُوْا يٰمُوْسٰٓى اِمَّآ اَنْ تُلْقِيَ وَاِمَّآ اَنْ نَّكُوْنَ اَوَّلَ مَنْ اَلْقٰى
66	उसन (मूसा न) कहा, 'नहीं, तमु ही पहल फकेो!' तो अचानक उनकी रस्सयिाँ और लाठयिाँ उनक जादू क असर स उस ऐसी लगीं जसै व रेंगे रही हों।	قَالَ بَلْ اَلْقُوْا فَاِذَا حِبَالُهُمْ وَعِصِيُّهُمْ يُخَيَّلُ اِلَيْهِ مِنْ سِحْرِهِمْ اَنَّهَا تَسْعٰى
67	तो मूसा क दलि म खौफ पदैा हुआ।	فَاَوْجَسَ فِيْ نَفْسِهٖ خِيْفَةً مُّوْسٰى
68	हमन (अल्लाह न) कहा, 'डर मत! नशि्चति रूप स तू ही ग़ालबि हो'	قُلْنَا لَا تَخَفْ اِنَّكَ اَنْتَ الْاَعْلٰى
69	'और जो कछु तरे दाएँ हाथ म ह, उस फके द, वह उस चीज़ को नगिल लगेा जो उनहोंन बनाया। उनहोंन जो कछु बनाया, वह तो बस जादूगर की चाल ह और जादूगर कामयाब नहीं होता, चाह वह कहीं स भी आए।'	وَاَلْقِ مَا فِيْ يَمِيْنِكَ تَلْقَفْ مَا صَنَعُوْا اِنَّمَا صَنَعُوْا كَيْدُ سٰحِرٍ وَلَا يُفْلِحُ السّٰحِرُ حَيْثُ اَتٰى
70	तो जादूगर सजद म गरि पड़ और बोल, 'हम हारून और मूसा क रब पर ईमान लाए।'	فَاُلْقِيَ السَّحَرَةُ سُجَّدًا قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِرَبِّ هٰرُوْنَ وَمُوْسٰى
71	उसन (फरिऔन न) कहा, 'क्या तमुन उस पर मरी इजाज़त स पहल ईमान ल लिया? नशि्चति रूप स वह तमुहारा बड़ा ह, जसिन तमुह जादू सखिाया। तो म तमुहार हाथ और पाँव उलट तरफ स काट दूँगा, और म तमुह खजूर क तनों पर सूली पर चढ़ा दूँगा। और तमु ज़रूर जान पड़ोग कि हम म स कसि का अज़ाब ज़्यादा सख़्त और ज़्यादा टकिाऊ ह'	قَالَ اٰمَنْتُمْ لَهٗ قَبْلَ اَنْ اٰذَنَ لَكُمْ اِنَّهٗ لَكَبِيْرُكُمُ الَّذِيْ عَلَّمَكُمُ السِّحْرَ فَلَاُقَطِّعَنَّ اَيْدِيَكُمْ وَاَرْجُلَكُمْ مِّنْ خِلَافٍ وَّلَاُصَلِّبَنَّكُمْ فِيْ جُذُوْعِ النَّخْلِ وَلَتَعْلَمُنَّ اَيُّنَآ اَشَدُّ عَذَابًا وَّاَبْقٰى

72	उनहोंने (जादूगरों ने) कहा, 'हम उन साफ़-साफ़ निशानियों के मुक़ाबले में तुझे तरजीह नहीं देंगे, जो हमारे पास आई, और न ही उस (अल्लाह) को, जिसने हमें पैदा किया। तो जो तू करना चाहता है, कर ले। तू तो बस इस दुनिया की ज़िंदगी का फ़ैसला कर सकता है'	قَالُوْا لَنْ نُّؤْثِرَكَ عَلٰى مَا جَاءَنَا مِنَ الْبَيِّنٰتِ وَالَّذِيْ فَطَرَنَا فَاقْضِ مَآ اَنْتَ قَاضٍ اِنَّمَا تَقْضِيْ هٰذِهِ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا
73	'निश्चित रूप से हम अपने रब पर ईमान लाए, ताकि वह हमारी ख़ताओं और उस जादू को माफ़ कर दे, जिसे तूने हम पर थोपा। और अल्लाह बेहतर और ज़्यादा बाक़ी रहने वाला है'	اِنَّآ اٰمَنَّا بِرَبِّنَا لِيَغْفِرَ لَنَا خَطٰيٰنَا وَمَآ اَكْرَهْتَنَا عَلَيْهِ مِنَ السِّحْرِ وَاللّٰهُ خَيْرٌ وَّاَبْقٰى
74	निश्चित रूप से जो कोई अपने रब के पास गुनहगार होकर आएगा, उसके लिए जहन्नम है, जिसमें वह न मरेगा और न जिएगा।	اِنَّه مَنْ يَّأْتِ رَبَّه مُجْرِمًا فَاِنَّ لَه جَهَنَّمَ لَا يَمُوْتُ فِيْهَا وَلَا يَحْيٰى
75	लेकिन जो कोई उसके पास ईमान की हालत में आएगा और उसने नेक काम किए हों, तो उनके लिए ऊँचे दरजे हैं	وَمَنْ يَّأْتِه مُؤْمِنًا قَدْ عَمِلَ الصّٰلِحٰتِ فَاُولٰٓئِكَ لَهُمُ الدَّرَجٰتُ الْعُلٰى
76	'अदन' के बाग़ात, जिनके नीचे नहरें बहती हैं, वे उसमें हमेशा रहेंगे। और यह उस शख़्स का बदला है जो (अपने आपको) पाक रखता है	جَنّٰتُ عَدْنٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا وَذٰلِكَ جَزَآءُ مَنْ تَزَكّٰى
77	और हमने मूसा पर वह्य की, 'मेरे बन्दों (बनी इसराईल) को लेकर रात में निकल जा, और उनके लिए समंदर में एक सूखा रास्ता बना दे, तुझे न डर होगा कि (फ़िरऔन) तुझे पकड़ लेगा और न तुझे डूबने का ख़ौफ़ होगा।'	وَلَقَدْ اَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسّٰٓى اَنْ اَسْرِ بِعِبَادِيْ فَاضْرِبْ لَهُمْ طَرِيْقًا فِي الْبَحْرِ يَبَسًا لَّا تَخٰفُ دَرَكًا وَّلَا تَخْشٰى
78	फिर फ़िरऔन ने अपनी फ़ौजों के साथ उनका पीछा किया, तो समंदर की लहरों ने उन्हें ढक लिया, जैसा कि ढक लेना था।	فَاَتْبَعَهُمْ فِرْعَوْنُ بِجُنُوْدِه فَغَشِيَهُمْ مِّنَ الْيَمِّ مَا غَشِيَهُمْ
79	और फ़िरऔन ने अपनी क़ौम को गुमराह किया और उन्हें हिदायत न दी।	وَاَضَلَّ فِرْعَوْنُ قَوْمَه وَمَا هَدٰى
80	ऐ बनी इसराईल! हमने तुम्हें तुम्हारे दुश्मन से नजात दी, और हमने तुम्से पहाड़ (सीनाई) के दाएँ तरफ़ वादा किया, और हमने तुम पर मन्न और सलवा उतारा।	يٰبَنِيْٓ اِسْرَاۤءِيْلَ قَدْ اَنْجَيْنٰكُمْ مِّنْ عَدُوِّكُمْ وَوٰعَدْنٰكُمْ جَانِبَ الطُّوْرِ الْاَيْمَنَ وَنَزَّلْنَا عَلَيْكُمُ الْمَنَّ وَالسَّلْوٰى
81	उन अच्छी चीज़ों में से खाओ जो हमने तुम्हें दीं, और हद से आगे न बढ़ो, वरना मेरी नाराज़गी तुम पर उतरेगी। और जिस पर मेरी नाराज़गी उतरती है, वह तबाह हो जाता है	كُلُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ وَلَا تَطْغَوْا فِيْهِ فَيَحِلَّ عَلَيْكُمْ غَضَبِيْ وَمَنْ يَّحْلِلْ عَلَيْهِ غَضَبِيْ فَقَدْ هَوٰى
82	और निश्चित रूप से मैं बहुत बख़्शने वाला हूँ उस के लिए जो तौबा करे, ईमान लाए और नेक काम करे, फिर हिदायत पर क़ायम रहे	وَاِنِّيْ لَغَفَّارٌ لِّمَنْ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا ثُمَّ اهْتَدٰى
83	'और ऐ मूसा! तू अपनी क़ौम से पहले क्यों जल्दी आ गया?'	وَمَآ اَعْجَلَكَ عَنْ قَوْمِكَ يٰمُوْسٰى

84	उसने (मूसा ने) कहा, 'वे लोग मेरे पीछे-पीछे आ रहे हैं, और मैं तेरे पास जल्दी आया, ऐ मेरे रब, ताकि तू मुझसे राज़ी हो।'	قَالَ هُمْ اُولَاۤءِ عَلٰۤى اَثَرِيْ وَعَجِلْتُ اِلَيْكَ رَبِّ لِتَرْضٰى
85	उसने (अल्लाह ने) कहा, 'निश्चित रूप से हमने तेरे जाने के बाद तेरी कौम को आज़माया, और सामरी ने उनहें गुमराह कर दिया।'	قَالَ فَاِنَّا قَدْ فَتَنَّا قَوْمَكَ مِنْ بَعْدِكَ وَاَضَلَّهُمُ السَّامِرِيُّ
86	तो मूसा अपनी कौम की ओर गुस्से और गम की हालत में लौटा। उसने कहा, 'ऐ मेरी कौम! क्या तुमहारे रब ने तुमसे एक अच्छा वादा नहीं किया था? तो क्या तुमहें वह वादा बहुत लंबा लगा, या तुम चाहते थे कि तुमहारे रब की नाराज़गी तुम पर उतरे, इसीलिए तुमने मुझसे किया वादा तोड़ दिया?'	فَرَجَعَ مُوْسٰۤى اِلٰى قَوْمِهٖ غَضْبَانَ اَسِفًا قَالَ يٰقَوْمِ اَلَمْ يَعِدْكُمْ رَبُّكُمْ وَعْدًا حَسَنًا اَفَطَالَ عَلَيْكُمُ الْعَهْدُ اَمْ اَرَدْتُّمْ اَنْ يَّحِلَّ عَلَيْكُمْ غَضَبٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ فَاَخْلَفْتُمْ مَّوْعِدِيْ
87	उनहोंने कहा, 'हमने अपनी मरज़ी से तुझसे किया वादा नहीं तोड़ा, लेकिन हम उस कौम (फ़िरऔन) के ज़ेवरों का बोझ उठाना पड़ा, तो हमने उसे (आग में) डाल दिया, और सामरी ने भी ऐसा ही किया।'	قَالُوْا مَاۤ اَخْلَفْنَا مَوْعِدَكَ بِمَلْكِنَا وَلٰكِنَّا حُمِّلْنَاۤ اَوْزَارًا مِّنْ زِيْنَةِ الْقَوْمِ فَقَذَفْنٰهَا فَكَذٰلِكَ اَلْقَى السَّامِرِيُّ
88	फिर उसने (सामरी ने) उनके लिए एक बछड़े का पुतला निकाला, जिसमें आवाज़ थी, तो उनहोंने कहा, 'यह तुमहारा खुदा है और मूसा का खुदा है, लेकिन वह (मूसा) भूल गया।'	فَاَخْرَجَ لَهُمْ عِجْلًا جَسَدًا لَّهٗ خُوَارٌ فَقَالُوْا هٰذَاۤ اِلٰهُكُمْ وَاِلٰهُ مُوْسٰى فَنَسِيَ
89	क्या उनहोंने नहीं देखा कि वह (पुतला) उनकी बात का जवाब नहीं देता, और न उनके लिए कोई नुकसान टाल सकता है और न फायदा पहुँचा सकता है?	اَفَلَا يَرَوْنَ اَلَّا يَرْجِعُ اِلَيْهِمْ قَوْلًا ۙ وَّلَا يَمْلِكُ لَهُمْ ضَرًّا وَّلَا نَفْعًا
90	और इससे पहले हारून ने उनसे कहा था, 'ऐ मेरी कौम! तुमहें इस (बछड़े) के ज़रिए बस आज़माया गया है, और निश्चित रूप से तुमहारा रब रहमान है, तो मेरी पैरवी करो और मेरे हुक्म की तामील करो।'	وَلَقَدْ قَالَ لَهُمْ هٰرُوْنُ مِنْ قَبْلُ يٰقَوْمِ اِنَّمَا فُتِنْتُمْ بِهٖ وَاِنَّ رَبَّكُمُ الرَّحْمٰنُ فَاتَّبِعُوْنِيْ وَاَطِيْعُوْۤا اَمْرِيْ
91	उनहोंने कहा, 'हम इस (बछड़े को) पूजते रहेंगे जब तक मूसा हमारे पास वापस न आए।'	قَالُوْا لَنْ نَّبْرَحَ عَلَيْهِ عٰكِفِيْنَ حَتّٰى يَرْجِعَ اِلَيْنَا مُوْسٰى
92	उसने (मूसा ने) कहा, 'ऐ हारून! जब तुमने देखा कि वे गुमराह हो गए, तो तुझे किस चीज़ ने रोका?'	قَالَ يٰهٰرُوْنُ مَا مَنَعَكَ اِذْ رَاَيْتَهُمْ ضَلُّوْۤا
93	'क्या तू मेरी पैरवी नहीं कर सका? क्या तुने मेरे हुक्म तोड़ा?'	اَلَّا تَتَّبِعَنِ اَفَعَصَيْتَ اَمْرِيْ
94	उसने (हारून ने) कहा, 'ऐ मेरी माँ के बेटे! मेरी दाढ़ी और सिर को न पकड़। मुझे डर था कि तू कहेगा, 'तुने बनी इसराईल में फूट डाल दी और मेरी बात की हिफाज़त नहीं की।'	قَالَ يَبْنَؤُمَّ لَا تَاْخُذْ بِلِحْيَتِيْ وَلَا بِرَاْسِيْ اِنِّيْ خَشِيْتُ اَنْ تَقُوْلَ فَرَّقْتَ بَيْنَ بَنِيْۤ اِسْرَآءِيْلَ وَلَمْ تَرْقُبْ قَوْلِيْ
95	उसने (मूसा ने) कहा, 'ऐ सामरी! तुझे ऐसा करने की क्या वजह थी?'	قَالَ فَمَا خَطْبُكَ يٰسَامِرِيُّ

96	उसन`(सामरी न) कहा, 'मनै`वह दखेा जो उनहोंन`नहीं दखेा। मनै` उस रसूल क`नक़श-ेकदम स`एक मट्ठी (मिट्टी) उठा ली, फरि उस`फकेि दयिा, और मरे`दलि न`मझु`ऐसा करन`को उकसाया।'	قَالَ بَصُرْتُ بِمَا لَمْ يَبْصُرُوْا بِه فَقَبَضْتُ قَبْضَةً مِّنْ اَثَرِ الرَّسُوْلِ فَنَبَذْتُهَا وَكَذٰلِكَ سَوَّلَتْ لِيْ نَفْسِيْ
97	उसन`(मूसा न) कहा, 'तो जा! तझु पर दनुयिा की ज़िंदगी म`यही (हकुम) ह`कि त`ू कह,` 'मझु`न छओु,' और तझु पर वह (अज़ाब) भी ह`जसि`त`ू टाल नहीं सकता। और अपन`उस खद्दा को दखे, जसि`त`ू पूज्ञता रहा। हम उस`ज़रू जला दगे,` फरि उस`समंदर म`ै बखिरे दगे।'	قَالَ فَاذْهَبْ فَاِنَّ لَكَ فِي الْحَيٰوةِ اَنْ تَقُوْلَ لَا مِسَاسَ وَاِنَّ لَكَ مَوْعِدًا لَّنْ تُخْلَفَه وَانْظُرْ اِلٰى اِلٰهِكَ الَّذِيْ ظَلْتَ عَلَيْهِ عَاكِفًا لَنُحَرِّقَنَّه ثُمَّ لَنَنْسِفَنَّه فِي الْيَمِّ نَسْفًا
98	'नश्चिति रूप स`तमु्हारा रब वही अल्लाह ह,ै जसिक`सवि कोई खद्दा नहीं। उसका इलम हर चीज़ को घरे`हुए ह।ै'	اِنَّمَآ اِلٰهُكُمُ اللّٰهُ الَّذِيْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ وَسِعَ كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا
99	इस तरह हम तझु पर पहल`की खबर`बयान करत`े ह,ै और हमन` तझु`अपनी तरफ स`एक नसीहत (कुरआन) दी ह।ै	كَذٰلِكَ نَقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ اَنْبَاءِ مَا قَدْ سَبَقَ وَقَدْ اٰتَيْنٰكَ مِنْ لَّدُنَّا ذِكْرًا
100	जो कोई इसस`महँु मोड़गेा, वह कयिामत क`दनि एक भारी बोझ उठाएगा।	مَنْ اَعْرَضَ عَنْهُ فَاِنَّه يَحْمِلُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وِزْرًا
101	व`उसम`हमशेा रहगेे। और कयिामत क`दनि उनक`लएि वह बोझ कतिना बरु होगा।	خٰلِدِيْنَ فِيْهِ وَسَاءَ لَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ حِمْلًا
102	उस दनि जब सूर फूँका जाएगा (दूसरी बार), और उस दनि हम गनुहगारों`को नीली आँखों`की हालत म`जमा करगे।ं	يَّوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّوْرِ وَنَحْشُرُ الْمُجْرِمِيْنَ يَوْمَئِذٍ زُرْقًا
103	व`आपस म`चपुक-`चपुक`कहगे,ं 'तमु (दनुयिा म)ं दस (दनिों) स`ज़यादा नहीं रह।ो'	يَّتَخَافَتُوْنَ بَيْنَهُمْ اِنْ لَّبِثْتُمْ اِلَّا عَشْرًا
104	हम ज़यादा अचछी तरह जानत`े ह`कि व`कया कहगे,ं जब उनम`स`सबस`सही रासत`वाला कहगेा, 'तमु (दनुयिा म)ं बस एक दनि रह।ो'	نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَا يَقُوْلُوْنَ اِذْ يَقُوْلُ اَمْثَلُهُمْ طَرِيْقَةً اِنْ لَّبِثْتُمْ اِلَّا يَوْمًا
105	और व`तझु`स`(महुम्मद) पहाड़ों`क`बार`म`पछूत`ह,ै तो कह द,` 'मरेा रब उनह`कैयिामत क`दनि चूर-चूर कर दगेा।'	وَيَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْجِبَالِ فَقُلْ يَنْسِفُهَا رَبِّيْ نَسْفًا
106	'फरि वह उस`एक खलुा मदैान बना दगेा।'	فَيَذَرُهَا قَاعًا صَفْصَفًا
107	'त`ू उसम`नै कोई टढ़ापन दखेगेा और न कोई ऊँच-नीच।'	لَّا تَرٰى فِيْهَا عِوَجًا وَّلَآ اَمْتًا
108	उस दनि लोग पकुारन`वाल`की परैवी करगे,ं जसिम`कोई टढ़ापन नहीं होगा। और रहमान क`सामन`आवाज़ें दब जाएँगी, तो त`ू सरि़्फ सरसराहट सनुाई दगेी।	يَوْمَئِذٍ يَّتَّبِعُوْنَ الدَّاعِيَ لَا عِوَجَ لَه وَخَشَعَتِ الْاَصْوَاتُ لِلرَّحْمٰنِ فَلَا تَسْمَعُ اِلَّا هَمْسًا

109	उस दिन सिफ़ारिश किसी के लिए फ़ायदा न देगी, सिवाय इसके कि रहमान ने उस इजाज़त दी हो और वह उससे राज़ी हो।	يَوْمَئِذٍ لَّا تَنْفَعُ الشَّفَاعَةُ اِلَّا مَنْ اَذِنَ لَهُ الرَّحْمٰنُ وَرَضِيَ لَه قَوْلًا
110	वह जानता है जो कुछ उनके सामने है और जो कुछ उनके पीछे है, और उनका इल्म उसकी पूरी जानकारी नहीं पा सकता।	يَعْلَمُ مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يُحِيْطُوْنَ بِه عِلْمًا
111	और सारे चेहरे उस ज़िन्दा और क़ायम रहने वाले (अल्लाह) के सामने झुक जाएँगे और वह नाकाम हो गया जो ज़ुल्म का बोझ उठाए।	وَعَنَتِ الْوُجُوْهُ لِلْحَيِّ الْقَيُّوْمِ وَقَدْ خَابَ مَنْ حَمَلَ ظُلْمًا
112	और जो कोई नेक काम करेगा और वह ईमान की हालत में होगा, तो उसे न ज़ुल्म का डर होगा और न उसके हक़ की कमी होगी।	وَمَنْ يَّعْمَلْ مِنَ الصّٰلِحٰتِ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَا يَخٰفُ ظُلْمًا وَّلَا هَضْمًا
113	और इस तरह हमने इसे अरबी क़ुरआन के रूप में उतारा, और इसमें हमने कई तरह की ताकीद को बार-बार बयान किया, ताकि वे तक़वा इख़्तियार करें, या यह उनके लिए एक नसीहत पैदा करे।	وَكَذٰلِكَ اَنْزَلْنٰهُ قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا وَّصَرَّفْنَا فِيْهِ مِنَ الْوَعِيْدِ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ اَوْ يُحْدِثُ لَهُمْ ذِكْرًا
114	तो अल्लाह बहुत बुलंद है, जो हक़ीक़ी बादशाह है और (ऐ मुहम्मद!) क़ुरआन को जल्दी-जल्दी (पढ़ने) में हड़बड़ी न कर, इससे पहले कि तुझ पर वह्य पूरी हो जाए, और कह, 'ऐ मेरे रब! मेरे इल्म में इज़ाफ़ा कर।'	فَتَعٰلَى اللّٰهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ وَلَا تَعْجَلْ بِالْقُرْاٰنِ مِنْ قَبْلِ اَنْ يُّقْضٰٓى اِلَيْكَ وَحْيُه وَقُلْ رَّبِّ زِدْنِيْ عِلْمًا
115	और हमने पहले आदम को वसीयत की थी, लेकिन वह भूल गया, और हमने उसमें कोई मज़बूत इरादा नहीं पाया।	وَلَقَدْ عَهِدْنَآ اِلٰٓى اٰدَمَ مِنْ قَبْلُ فَنَسِيَ وَلَمْ نَجِدْ لَه عَزْمًا
116	और (याद कर) जब हमने फ़रिश्तों से कहा, 'आदम को सजदा करो!' तो उन्होंने सजदा किया, सिवाय इबलीस के; उसने इंकार कर दिया।	وَاِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِيْسَ اَبٰى
117	तो हमने कहा, 'ऐ आदम! यह (इबलीस) तेरे और तेरी बीवी का दुश्मन है, तो कहीं ऐसा न हो कि वह तुम दोनों को जन्नत से निकाल दे, फिर तू मुसीबत में पड़ जाए।'	فَقُلْنَا يٰٓاٰدَمُ اِنَّ هٰذَا عَدُوٌّ لَّكَ وَلِزَوْجِكَ فَلَا يُخْرِجَنَّكُمَا مِنَ الْجَنَّةِ فَتَشْقٰى
118	'निश्चित रूप से तुझे वहाँ (जन्नत में) यह (गारंटी) है कि तू न भूखा रहेगा और न नंगा।'	اِنَّ لَكَ اَلَّا تَجُوْعَ فِيْهَا وَلَا تَعْرٰى
119	'और न तू वहाँ प्यासा रहेगा और न धूप की गर्मी तुझे सताएगी।'	وَاَنَّكَ لَا تَظْمَؤُا فِيْهَا وَلَا تَضْحٰى
120	फिर शैतान ने उसे (आदम से) वसवसा किया, और कहा, 'ऐ आदम! क्या मैं तुझे हमेशा की ज़िंदगी का दरख़्त और कभी न ख़त्म होने वाली सल्तनत दिखाऊँ?'	فَوَسْوَسَ اِلَيْهِ الشَّيْطٰنُ قَالَ يٰٓاٰدَمُ هَلْ اَدُلُّكَ عَلٰى شَجَرَةِ الْخُلْدِ وَمُلْكٍ لَّا يَبْلٰى
121	तो दोनों ने उस (दरख़्त) से खाया, फिर उनकी शर्मगाहें उनके सामने ज़ाहिर हो गईं, और वे जन्नत के पत्तों से उन्हें ढकने लगे। और आदम ने अपने रब की नाफ़रमानी की और गुमराह हो गया।	فَاَكَلَا مِنْهَا فَبَدَتْ لَهُمَا سَوْاٰتُهُمَا وَطَفِقَا يَخْصِفٰنِ عَلَيْهِمَا مِنْ وَّرَقِ الْجَنَّةِ وَعَصٰٓى اٰدَمُ رَبَّه فَغَوٰى

122	फिर उसके रब ने उसे चुन लिया, तो उसकी तौबा कबूल की और उसे हिदायत दी।	ثُمَّ اجْتَبٰهُ رَبُّه فَتَابَ عَلَيْهِ وَهَدٰى
123	उसने (अल्लाह ने) कहा, 'तुम दोनों यहाँ (जन्नत) से एक साथ उतर जाओ, तुम में से कुछ कुछ के दुश्मन होंगे। फिर अगर मेरी तरफ से तुम्हारे पास हिदायत आए, तो जो कोई मेरी हिदायत की पैरवी करेगा, वह न गुमराह होगा और न मुसीबत में पड़ेगा।'	قَالَ اهْبِطَا مِنْهَا جَمِيْعًا بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ فَاِمَّا يَأْتِيَنَّكُمْ مِّنِّيْ هُدًى فَمَنِ اتَّبَعَ هُدَايَ فَلَا يَضِلُّ وَلَا يَشْقٰى
124	'और जो कोई मेरी नसीहत से मुँह मोड़ेगा, तो निश्चित रूप से उसकी ज़िंदगी तंग होगी, और हम उसे कियामत के दिन अंधा करके उठाएँगे।'	وَمَنْ اَعْرَضَ عَنْ ذِكْرِيْ فَاِنَّ لَه مَعِيْشَةً ضَنْكًا وَّنَحْشُرُه يَوْمَ الْقِيٰمَةِ اَعْمٰى
125	वह कहेगा, 'ऐ मेरे रब! तूने मुझे अंधा क्यों उठाया, जबकि मैं पहले देखता था?'	قَالَ رَبِّ لِمَ حَشَرْتَنِيْٓ اَعْمٰى وَقَدْ كُنْتُ بَصِيْرًا
126	वह (अल्लाह) कहेगा, 'इसी तरह, हमारी आयतें तेरे पास आई थीं, और तूने उन्हें भुला दिया, उसी तरह आज तू भुला दिया जाएगा।'	قَالَ كَذٰلِكَ اَتَتْكَ اٰيٰتُنَا فَنَسِيْتَهَا وَكَذٰلِكَ الْيَوْمَ تُنْسٰى
127	और इस तरह हम उस शख़्स को सजा देते हैं जो हद से गुज़रता है और अपने रब की आयतों पर ईमान नहीं लाता। और आख़िरत का अज़ाब ज़्यादा सख़्त और ज़्यादा बाकी रहने वाला है।	وَكَذٰلِكَ نَجْزِيْ مَنْ اَسْرَفَ وَلَمْ يُؤْمِنْ بِاٰيٰتِ رَبِّه وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَشَدُّ وَاَبْقٰى
128	क्या उनके लिए यह हिदायत नहीं कि हमने उनसे पहले कितनी नस्लों को हलाक किया, जिनके ठिकानों से वे गुज़रते हैं? निश्चित रूप से इसमें अक्ल वालों के लिए निशानियाँ हैं।	اَفَلَمْ يَهْدِ لَهُمْ كَمْ اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنَ الْقُرُوْنِ يَمْشُوْنَ فِيْ مَسٰكِنِهِمْ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّاُولِي النُّهٰى
129	और अगर तेरे रब की तरफ से पहले से एक बात तय न होती और एक मुक़र्रर वक़्त न होता, तो (उनका अज़ाब) ज़रूर आ जाता।	وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ لَكَانَ لِزَامًا وَّاَجَلٌ مُّسَمًّى
130	तो (ऐ मुहम्मद!) जो कुछ वे कहते हैं, उस पर सब्र कर, और अपने रब की तारीफ के साथ तसबीह कर, सूरज निकलने से पहले और डूबने से पहले; और रात के कुछ हिस्सों में और दिन के किनारों पर, ताकि तू राज़ी हो।	فَاصْبِرْ عَلٰى مَا يَقُوْلُوْنَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوْعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ غُرُوْبِهَا وَمِنْ اٰنَائِ الَّيْلِ فَسَبِّحْ وَاَطْرَافَ النَّهَارِ لَعَلَّكَ تَرْضٰى
131	और अपनी नज़रें उन चीज़ों की तरफ न उठा जो हमने उनकी कुछ जमातों को दीं, दुनिया की ज़िंदगी का ज़ीनत (फूल) ताकि हम उन्हें उसमें आज़माएँ और तेरे रब की रोज़ी बेहतर और ज़्यादा बाकी रहने वाली है।	وَلَا تَمُدَّنَّ عَيْنَيْكَ اِلٰى مَا مَتَّعْنَا بِه اَزْوَاجًا مِّنْهُمْ زَهْرَةَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا لِنَفْتِنَهُمْ فِيْهِ وَرِزْقُ رَبِّكَ خَيْرٌ وَّاَبْقٰى
132	और अपने घरवालों को नमाज़ का हुक्म दे और उस पर सब्र कर। हम तुझसे रोज़ी नहीं माँगते, हम ही तुझे रोज़ी देते हैं। और अच्छा अंजाम तकवा वालों के लिए है।	وَأْمُرْ اَهْلَكَ بِالصَّلٰوةِ وَاصْطَبِرْ عَلَيْهَا لَا نَسْـَٔلُكَ رِزْقًا نَحْنُ نَرْزُقُكَ وَالْعَاقِبَةُ لِلتَّقْوٰى
133	और उन्होंने कहा, 'उसने अपने रब की तरफ से हमारे पास कोई निशानी क्यों नहीं लाई?' क्या उनके पास वह साफ़ बयान नहीं आया जो पहले की किताबों में था?	وَقَالُوْا لَوْلَا يَأْتِيْنَا بِاٰيَةٍ مِّنْ رَّبِّه اَوَلَمْ تَأْتِهِمْ بَيِّنَةُ مَا فِي الصُّحُفِ الْاُوْلٰى

وَلَوْ اَنَّآ اَهْلَكْنٰهُمْ بِعَذَابٍ مِّنْ قَبْلِهٖ لَقَالُوْا رَبَّنَا لَوْلَآ اَرْسَلْتَ اِلَيْنَا رَسُوْلًا فَنَتَّبِعَ اٰيٰتِكَ مِنْ قَبْلِ اَنْ نَّذِلَّ وَنَخْزٰى	**134**	और अगर हम उन्हें इससे (क़ुरआन) पहले किसी अज़ाब से हलाक कर देते, तो वे कहते, 'ऐ हमारे रब! तूने हमारे पास कोई रसूल क्यों नहीं भेजा, ताकि हम तेरी आयतों की परवी करते, इससे पहले कि हम ज़लील और रुसवा होते?'
قُلْ كُلٌّ مُّتَرَبِّصٌ فَتَرَبَّصُوْا فَسَتَعْلَمُوْنَ مَنْ اَصْحٰبُ الصِّرَاطِ السَّوِيِّ وَمَنِ اهْتَدٰى	**135**	कह दे (ऐ मुहम्मद!), 'हर कोई इंतज़ार कर रहा है, तो तुम भी इंतज़ार करो! फिर तुम्हें मालूम हो जाएगा कि सही रास्त पर कौन है और हिदायत किसे मिली।'

छंदों की संख्या	اَلْأَنْبِيَاء	مكية
११२	अल Anbiya - 21	मक्की

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल Anbiya (पैगंबर)

1	इंसानों का हिसाब उनके क़रीब आ गया है, फिर भी वे दुनिया में लापरवाही की हालत में हैं और (आख़िरत से) मुँह मोड़े हुए हैं।	اِقْتَرَبَ لِلنَّاسِ حِسَابُهُمْ وَهُمْ فِيْ غَفْلَةٍ مُّعْرِضُوْنَ
2	हर बार जब उनके रब की ओर से नई आयत उतरती है, वे उनहें सुनते हैं, लेकिन खेल-तमाशे में मस्त रहते हैं।	مَا يَأْتِيْهِمْ مِّنْ ذِكْرٍ مِّنْ رَّبِّهِمْ مُّحْدَثٍ اِلَّا اسْتَمَعُوْهُ وَهُمْ يَلْعَبُوْنَ
3	उनके दिल लापरवाह हैं और ज़ालिम लोग चुपके-चुपके बात करते हैं, '(यह) मुहम्मद तो बस तुम्हारे जैसा एक इंसान है तो क्या तुम जादू को स्वीकार करोगे, जबकि तुम इसे देख रहे हो?'	لَاهِيَةً قُلُوْبُهُمْ وَاَسَرُّوا النَّجْوَى الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا هَلْ هٰذَآ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ اَفَتَأْتُوْنَ السِّحْرَ وَاَنْتُمْ تُبْصِرُوْنَ
4	उसने (मुहम्मद ने) कहा, 'मेरा रब आसमान और ज़मीन में कही गई हर बात को जानता है, और वह बहुत सुनने वाला, बहुत जानने वाला है।'	قٰلَ رَبِّيْ يَعْلَمُ الْقَوْلَ فِى السَّمَاءِ وَالْاَرْضِ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ
5	बल्कि उनहोंने कहा, '(यह क़ुरआन) तो बस बेतरतीब सपने हैं, या फिर उसने (मुहम्मद ने) इसे गढ़ लिया है, या वह तो बस एक शायर है। उसे चाहिए कि वह हमारे पास कोई निशानी लाए, जैसे पहले के रसूलों को भेजा गया था।'	بَلْ قَالُوْٓا اَضْغَاثُ اَحْلَامٍ بَلِ افْتَرٰىهُ بَلْ هُوَ شَاعِرٌ فَلْيَأْتِنَا بِاٰيَةٍ كَمَآ اُرْسِلَ الْاَوَّلُوْنَ
6	उनसे पहले जिन बस्तियों को हमने नष्ट किया, उनके लोग ईमान नहीं लाए (हालाँकि हमने निशानियाँ भेजी थीं)। तो क्या ये लोग ईमान लाएँगे?	مَآ اٰمَنَتْ قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَا اَفَهُمْ يُؤْمِنُوْنَ
7	और हमने तुमसे (मुहम्मद) पहले जो रसूल भेजे, वे सब इंसान ही थे, जिनहें हमने वह्य (प्रकाशना) दी थी। तो अगर तुमहें नहीं पता, तो अहल-इलम (ज़ानी लोगों) से पूछो।	وَمَآ اَرْسَلْنَا قَبْلَكَ اِلَّا رِجَالًا نُّوْحِيْٓ اِلَيْهِمْ فَسْـَٔلُوْٓا اَهْلَ الذِّكْرِ اِنْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ
8	और हमने उनहें (रसूलों को) ऐसा शरीर नहीं दिया था कि वे खाना न खाएँ, और न ही वे हमेशा जीवित रहने वाले थे।	وَمَا جَعَلْنٰهُمْ جَسَدًا لَّا يَأْكُلُوْنَ الطَّعَامَ وَمَا كَانُوْا خٰلِدِيْنَ
9	फिर हमने उनके साथ किया हुआ वादा पूरा किया। तो हमने उनहें और जिनहें हमने चाहा, बचा लिया, और हमने हद से गुज़रने वालों को नष्ट कर दिया।	ثُمَّ صَدَقْنٰهُمُ الْوَعْدَ فَاَنْجَيْنٰهُمْ وَمَنْ نَّشَاءُ وَاَهْلَكْنَا الْمُسْرِفِيْنَ
10	निश्चित रूप से, हमने तुमहारे लिए एक किताब (क़ुरआन) उतारी है, जिसमें तुमहारे लिए नसीहत है। तो क्या तुम नहीं समझते?	لَقَدْ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكُمْ كِتٰبًا فِيْهِ ذِكْرُكُمْ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ

11	और हमन`कितनी ही ज़ालिम बस्तियों को नष्ट किया, और उनक`बाद दूसरी कौमों`को पैदा किया।	وَكَمْ قَصَمْنَا مِنْ قَرْيَةٍ كَانَتْ ظَالِمَةً وَّاَنْشَاْنَا بَعْدَهَا قَوْمًا اٰخَرِيْنَ
12	जब उनहोंन`हमारा अज़ाब महसूस किया, तो व`तुरंत अपनी बस्ती स`भागन`लगे।	فَلَمَّآ اَحَسُّوْا بَاْسَنَآ اِذَا هُمْ مِّنْهَا يَرْكُضُوْنَ
13	'तुम जलदी-जलदी मत भागो; अपनी सुख-सुविधाओं और अपन`अच्छ`घरों की ओर लौट आओ, ताकि तुमस`(तुमहार`करमों`क`बार`में) पूछा जाए।'	لَا تَرْكُضُوْا وَارْجِعُوْٓا اِلٰى مَآ اُتْرِفْتُمْ فِيْهِ وَمَسٰكِنِكُمْ لَعَلَّكُمْ تُسْـَٔلُوْنَ
14	व`बोल,`'हाय हमारी खराबी! हम वाकई ज़ालिम लोग थे।'	قَالُوْا يٰوَيْلَنَآ اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ
15	उनकी यही पुकार चलती रही, यहाँ`तक कि`हमन`उनह`कटी हुई खेती की तरह कर दिया, जो बिलकुल बेजान हो चुकी थी।	فَمَا زَالَتْ تِّلْكَ دَعْوٰىهُمْ حَتّٰى جَعَلْنٰهُمْ حَصِيْدًا خٰمِدِيْنَ
16	और हमन`आसमान और ज़मीन और उनक`बीच की हर चीज़ को खेल-तमाश`क`लिए नहीं`बनाया।	وَمَا خَلَقْنَا السَّمَاۤءَ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا لٰعِبِيْنَ
17	अगर हम कोई खेल (पत्नी या बच्च`) बनाना चाहत,`तो हम उस`अपन`पास स`बनात,`अगर हम वाकई ऐसा करना चाहत।	لَوْ اَرَدْنَآ اَنْ نَّتَّخِذَ لَهْوًا لَّاتَّخَذْنٰهُ مِنْ لَّدُنَّآ اِنْ كُنَّا فٰعِلِيْنَ
18	बल्कि`हम हक (सच) को बातिल (झूठ) पर फेंकत`हैं,`तो वह उस`चकनाचूर कर देता है,`और वह (बातिल) तुरंत गायब हो जाता है।`और तुमहार`लिए तबाही है,`क्योंकि`तुम (अल्लाह क`लिए) ऐसी बात`कहत`हो जो उस`शोभा नहीं`देतीं।	بَلْ نَقْذِفُ بِالْحَقِّ عَلَى الْبَاطِلِ فَيَدْمَغُهٗ فَاِذَا هُوَ زَاهِقٌ وَلَكُمُ الْوَيْلُ مِمَّا تَصِفُوْنَ
19	और उसका ह`जो कोई आसमानों`म`ह`और जो कोई ज़मीन पर ह`और जो (फरिशते) उसक`पास ह`,व`न तो उसकी इबादत करन`म`घमंड करत`ह`और न ही थकत`ह`।	وَلَهٗ مَنْ فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَنْ عِنْدَهٗ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ عِبَادَتِهٖ وَلَا يَسْتَحْسِرُوْنَ
20	व`(फरिशते) रात-दिन बिना रुक`तसबीह (अल्लाह की तारीफ) करत`ह`।	يُسَبِّحُوْنَ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ لَا يَفْتُرُوْنَ
21	क्या उनहोंन`ज़मीन स`ऐस`खुदा बना लिए ह,`जो (मुर्दों को) ज़िंदा कर सक?	اَمِ اتَّخَذُوْٓا اٰلِهَةً مِّنَ الْاَرْضِ هُمْ يُنْشِرُوْنَ
22	अगर आसमान और ज़मीन म`अल्लाह क`सिवा और खुदा होत,`तो दोनों`बरबाद हो जात। अल्लाह, जो अर्श का मालिक ह,`उन बातों`स`पाक ह`जो व`उसक`लिए गढ़त`ह`।	لَوْ كَانَ فِيْهِمَآ اٰلِهَةٌ اِلَّا اللّٰهُ لَفَسَدَتَا فَسُبْحٰنَ اللّٰهِ رَبِّ الْعَرْشِ عَمَّا يَصِفُوْنَ
23	उसस`(अल्लाह स`) उसक`किए क`बार`म`सवाल नहीं किया जाता, लेकिन उनस`(लोगों स`) सवाल होगा।	لَا يُسْـَٔلُ عَمَّا يَفْعَلُ وَهُمْ يُسْـَٔلُوْنَ
24	क्या उनहोंन`उसक`सिवा और खुदा बना लिए ह? कहो (मुहम्मद), 'अपन`सबूत लाओ! यह (कुरआन) मेरे`साथ वालों`क`लिए नसीहत ह,`और मुझस`पहल`वालों`क`लिए भी नसीहत थी।' लेकिन उनम`स`ज़्यादातर हक को नहीं`जानत,`इसलिए व`मुँह मोड़`लेत`ह`।	اَمِ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اٰلِهَةً قُلْ هَاتُوْا بُرْهَانَكُمْ هٰذَا ذِكْرُ مَنْ مَّعِيَ وَذِكْرُ مَنْ قَبْلِيْ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ الْحَقَّ فَهُمْ مُّعْرِضُوْنَ

وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا نُوْحِيْٓ اِلَيْهِ اَنَّه لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنَا فَاعْبُدُوْنِ	**25**	और हमन`े तुमस`े (मुहम्मद) पहल`े जो रसूल भेजा, उस`े यही वह्य दी कि मेर`े सिवा कोई ख़ुदा नहीं, तो मेरी ही इबादत करो।
وَقَالُوا اتَّخَذَ الرَّحْمٰنُ وَلَدًا سُبْحٰنَه بَلْ عِبَادٌ مُّكْرَمُوْنَ	**26**	और उनहोंन`े कहा, 'रहमान न`े (फ़रिश्तों को) अपनी औलाद बना लिया।' वह (अल्लाह) इससे`े पाक है। बल्कि व`े (फ़रिश्ते) तो इज़्ज़त वाल`े बन्द`े हैं।
لَا يَسْبِقُوْنَه بِالْقَوْلِ وَهُمْ بِاَمْرِه يَعْمَلُوْنَ	**27**	व`े (फ़रिश्ते) उससे`े पहल`े बोलत`े नहीं और उसक`े हुक्म पर ही अमल करत`े हैं।
يَعْلَمُ مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يَشْفَعُوْنَ اِلَّا لِمَنِ ارْتَضٰى وَهُمْ مِّنْ خَشْيَتِه مُشْفِقُوْنَ	**28**	वह (अल्लाह) जानता ह`ै जो उनक`े सामन`े ह`ै और जो उनक`े पीछ`े ह`ै, और व`े सिर्फ़ उसी क`े लिए सिफ़ारिश करत`े ह`ैं जिससे व`ह राज़ी हो, और व`े उसक`े डर स`े हमेशा सावधान रहत`े ह`ैं।
وَمَنْ يَّقُلْ مِنْهُمْ اِنِّيْٓ اِلٰهٌ مِّنْ دُوْنِه فَذٰلِكَ نَجْزِيْهِ جَهَنَّمَ كَذٰلِكَ نَجْزِى الظّٰلِمِيْنَ	**29**	और उनमे`ं से जो कोई कह`े 'म`ैं अल्लाह क`े सिवा ख़ुदा ह`ूँ' तो हम उस`े जहन्नम की सज़ा दें`गे। हम ज़ालिमों को इसी तरह सज़ा दते`े ह`ैं।
اَوَلَمْ يَرَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَنَّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ كَانَتَا رَتْقًا فَفَتَقْنٰهُمَا وَجَعَلْنَا مِنَ الْمَاۤءِ كُلَّ شَيْءٍ حَيٍّ اَفَلَا يُؤْمِنُوْنَ	**30**	क्या काफ़िर लोग नहीं जानत`े कि आसमान और ज़मीन पहल`े एक साथ जुड़`े हुए थ`े, फिर हमन`े उन्ह`ें अलग किया? और हमन`े हर ज़िंदगी को पानी स`े बनाया। तो क्या व`े ईमान नहीं लाएँगे?
وَجَعَلْنَا فِى الْاَرْضِ رَوَاسِيَ اَنْ تَمِيْدَ بِهِمْ وَجَعَلْنَا فِيْهَا فِجَاجًا سُبُلًا لَّعَلَّهُمْ يَهْتَدُوْنَ	**31**	और हमन`े ज़मीन पर मज़बूत पहाड़ बनाए ताकि वह (ज़मीन) उनक`े साथ हिल न सक`े, और हमन`े उसमे`ं चौड़े रास्त`े बनाए ताकि व`े रास्ता पा सकें।
وَجَعَلْنَا السَّمَاۤءَ سَقْفًا مَّحْفُوْظًا وَهُمْ عَنْ اٰيٰتِهَا مُعْرِضُوْنَ	**32**	और हमन`े आसमान को एक सुरक्षित छत बनाया, फिर भी व`े उसकी निशानियों (सूरज, चाँद, हवा, बादल वग़ैरह) स`े मुँह मोड़त`े ह`ैं।
وَهُوَ الَّذِيْ خَلَقَ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ كُلٌّ فِيْ فَلَكٍ يَّسْبَحُوْنَ	**33**	और वही ह`ै जिसन`े रात और दिन बनाए, और सूरज और चाँद को, जो अपन-`े अपन`े दायर`े मे`ं तैर रह`े ह`ैं।
وَمَا جَعَلْنَا لِبَشَرٍ مِّنْ قَبْلِكَ الْخُلْدَ اَفَاۡئِنْ مِّتَّ فَهُمُ الْخٰلِدُوْنَ	**34**	और हमन`े तुमस`े पहल`े किसी इंसान को हमेशा जीवित रहन`े वाला नहीं बनाया। तो क्या अगर तुम मर गए, तो व`े हमेशा जीवित रहेंगे?
كُلُّ نَفْسٍ ذَاۤئِقَةُ الْمَوْتِ وَنَبْلُوْكُمْ بِالشَّرِّ وَالْخَيْرِ فِتْنَةً وَاِلَيْنَا تُرْجَعُوْنَ	**35**	हर जान को मौत का मज़ा चखना ह`ै और हम तुम्ह`ें अच्छाई और बुराई क`े साथ आज़मात`े ह`ैं और तुम्ह`ें हमारी ही ओर लौटना ह`ै।
وَاِذَا رَاٰكَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ يَّتَّخِذُوْنَكَ اِلَّا هُزُوًا اَهٰذَا الَّذِيْ يَذْكُرُ اٰلِهَتَكُمْ وَهُمْ بِذِكْرِ الرَّحْمٰنِ هُمْ كٰفِرُوْنَ	**36**	और जब काफ़िर लोग तुम्ह`ें (मुहम्मद) देखत`े ह`ैं, तो व`े तुम्हारा मज़ाक उड़ात`े ह`ैं, (कहत`े ह`ैं), 'क्या यही वह ह`ै जो तुम्हार`े ख़ुदाओं की बुराई करता है?' और व`े ख़ुद रहमान की नसीहत को नकारत`े ह`ैं।

خُلِقَ الْاِنْسَانُ مِنْ عَجَلٍ سَاُورِيْكُمْ اٰيٰتِيْ فَلَا تَسْتَعْجِلُوْنِ	इंसान को जल्दबाज़ी की फितरत दी गई है। मैं तुम्हें अपनी निशानियाँ दिखाऊँगा, तो मुझसे जल्दी न माँगो।	**37**
وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ	और वे कहते हैं, 'यह वादा कब आएगा, अगर तुम सच्चे हो?'	**38**
لَوْ يَعْلَمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا حِيْنَ لَا يَكُفُّوْنَ عَنْ وُّجُوْهِهِمُ النَّارَ وَلَا عَنْ ظُهُوْرِهِمْ وَلَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ	काश काफ़िर लोग उस वक़्त को जानते, जब वे अपने चेहरों और अपनी पीठों से आग को नहीं रोक सकेंगे, और न ही उनकी कोई मदद होगी।	**39**
بَلْ تَأْتِيْهِمْ بَغْتَةً فَتَبْهَتُهُمْ فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ رَدَّهَا وَلَا هُمْ يُنْظَرُوْنَ	बल्कि (क़ियामत का दिन) उनके ऊपर अचानक आएगा, और वे घबरा जाएँगे। फिर न वे उसे रोक सकेंगे, और न उन्हें कोई मोहलत दी जाएगी।	**40**
وَلَقَدِ اسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَحَاقَ بِالَّذِيْنَ سَخِرُوْا مِنْهُمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ	और तुमसे पहले भी रसूलों का मज़ाक उड़ाया गया, तो जिन लोगों ने उनका मज़ाक उड़ाया, उन पर वही (अज़ाब) आया जिसका वे मज़ाक उड़ा रहे थे।	**41**
قُلْ مَنْ يَّكْلَؤُكُمْ بِالَّيْلِ وَالنَّهَارِ مِنَ الرَّحْمٰنِ بَلْ هُمْ عَنْ ذِكْرِ رَبِّهِمْ مُّعْرِضُوْنَ	कहो (मुहम्मद), 'कौन है जो तुम्हें रात और दिन रहमान के (अज़ाब) से बचा सकता है?' फिर भी वे अपने रब की याद से मुँह मोड़ते हैं।	**42**
اَمْ لَهُمْ اٰلِهَةٌ تَمْنَعُهُمْ مِّنْ دُوْنِنَا لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ نَصْرَ اَنْفُسِهِمْ وَلَا هُمْ مِّنَّا يُصْحَبُوْنَ	क्या उनके पास ऐसे ख़ुदा हैं जो उन्हें हमारे (अज़ाब) से बचा सकें? वे अपने आप को भी नहीं बचा सकते, और न ही वे हमसे बचाए जा सकते हैं।	**43**
بَلْ مَتَّعْنَا هٰٓؤُلَاۤءِ وَاٰبَاۤءَهُمْ حَتّٰى طَالَ عَلَيْهِمُ الْعُمُرُ اَفَلَا يَرَوْنَ اَنَّا نَاْتِي الْاَرْضَ نَنْقُصُهَا مِنْ اَطْرَافِهَا اَفَهُمُ الْغٰلِبُوْنَ	बल्कि हमने उन्हें और उनके बाप-दादों को (दुनिया में) सुख दिया, यहाँ तक कि उनकी उम्र लंबी हो गई। तो क्या वे नहीं देखते कि हम (काफ़िरों की) ज़मीन को चारों तरफ से कम करते जा रहे हैं? तो क्या वे जीतने वाले हैं?	**44**
قُلْ اِنَّمَاۤ اُنْذِرُكُمْ بِالْوَحْيِ وَلَا يَسْمَعُ الصُّمُّ الدُّعَاۤءَ اِذَا مَا يُنْذَرُوْنَ	कहो (मुहम्मद), 'मैं तो बस वह्य के ज़रिए तुम्हें ख़बरदार करता हूँ,' लेकिन बहरा आदमी पुकार सुनता ही नहीं, जब उसे ख़बरदार किया जाता है।	**45**
وَلَئِنْ مَّسَّتْهُمْ نَفْحَةٌ مِّنْ عَذَابِ رَبِّكَ لَيَقُوْلُنَّ يٰوَيْلَنَاۤ اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ	और अगर तुम्हारे रब का ज़रा सा अज़ाब भी उन पर पड़ जाए, तो वे कहेंगे, 'हाय हमारी तबाही! हम वाक़ई ज़ालिम थे।'	**46**
وَنَضَعُ الْمَوَازِيْنَ الْقِسْطَ لِيَوْمِ الْقِيٰمَةِ فَلَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْـًٔا وَاِنْ كَانَ مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِّنْ خَرْدَلٍ اَتَيْنَا بِهَا وَكَفٰى بِنَا حٰسِبِيْنَ	और हम क़ियामत के दिन इंसाफ का तराज़ू रखेंगे, तो किसी पर ज़रा भी ज़ुल्म नहीं होगा। और अगर राई के दाने के बराबर भी कोई अमल होगा, तो हम उसे लाएँगे। और हिसाब लेने के लिए हम काफ़ी हैं।	**47**
وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ الْفُرْقَانَ وَضِيَاۤءً وَّذِكْرًا لِّلْمُتَّقِيْنَ	और हमने मूसा और हारून को (सच और झूठ को) अलग करने वाली (किताब) दी, और रोशनी दी, और तक़वा वालों के लिए नसीहत दी।	**48**

49	व`जो अपन`रब स`परद`म`डरत`ह,ै और कयामत की घड़ी स` काँपत`ह।ै	الَّذِيْنَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَيْبِ وَهُمْ مِّنَ السَّاعَةِ مُشْفِقُوْنَ
50	और यह (कुरआन) एक मबारक नसीहत ह,ै जिस`हमन`उतारा। तो क`या तम इस`नकारत`हो?	وَهٰذَا ذِكْرٌ مُّبٰرَكٌ اَنْزَلْنٰهُ اَفَاَنْتُمْ لَه مُنْكِرُوْنَ
51	और हमन`पहल`ही इबराहीम को उनकी हदायत दी थी, और हम उनक`हाल को अचछी तरह जानत`थे।	وَلَقَدْ اٰتَيْنَآ اِبْرٰهِيْمَ رُشْدَه مِنْ قَبْلُ وَكُنَّا بِه عٰلِمِيْنَ
52	जब उनहोंन`अपन`बाप और अपनी कौम स`कहा, 'य`मूरतयाँ क`या ह,ै जनिकी तम इबादत करत`हो?'	اِذْ قَالَ لِاَبِيْهِ وَقَوْمِه مَا هٰذِهِ التَّمَاثِيْلُ الَّتِيْٓ اَنْتُمْ لَهَا عٰكِفُوْنَ
53	व`बोल,`'हमन`अपन`बाप-दादों`को इनकी इबादत करत`पाया।'	قَالُوْا وَجَدْنَآ اٰبَاءَنَا لَهَا عٰبِدِيْنَ
54	उनहोंन`(इबराहीम न) कहा, 'तम और तमहार`बाप-दादा साफ़ गमराही म`हो।'	قَالَ لَقَدْ كُنْتُمْ اَنْتُمْ وَاٰبَاؤُكُمْ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ
55	व`बोल,`'क`या तम हमार`पास हक लकेर आए हो, या तम मज़ाक कर रह`हो?'	قَالُوْٓا اَجِئْتَنَا بِالْحَقِّ اَمْ اَنْتَ مِنَ اللّٰعِبِيْنَ
56	उनहोंन`(इबराहीम न) कहा, 'नहीं, तमहारा रब तो आसमानों और ज़मीन का रब ह,ै जसिन`इनह`बनाया, और म`इस बात का गवाह हूँ।	قَالَ بَلْ رَّبُّكُمْ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ الَّذِيْ فَطَرَهُنَّ وَاَنَا عَلٰى ذٰلِكُمْ مِّنَ الشّٰهِدِيْنَ
57	और अलाह की कसम, म`तमहार`इन बतों क`साथ चाल चलूँगा, जब तम पीठ फरेकर चल`जाओगे।'	وَتَاللّٰهِ لَاَكِيْدَنَّ اَصْنَامَكُمْ بَعْدَ اَنْ تُوَلُّوْا مُدْبِرِيْنَ
58	तो उनहोंन`(इबराहीम न) उन (मूरतयों) को टकुड़-टकुड़`कर दया, सवाय उनक`सबस`बड़`बतु क,`ताकि व`उसकी ओर रजू कर।	فَجَعَلَهُمْ جُذٰذًا اِلَّا كَبِيْرًا لَّهُمْ لَعَلَّهُمْ اِلَيْهِ يَرْجِعُوْنَ
59	व`बोल,`'यह हमार`खुदाओं क`साथ कसिन`कया? वह ज़रू ज़ालमि ह।ै'	قَالُوْا مَنْ فَعَلَ هٰذَا بِاٰلِهَتِنَآ اِنَّه لَمِنَ الظّٰلِمِيْنَ
60	व`बोल,`'हमन`एक जवान को सना था जो इनकी बराई करता था, उसका नाम इबराहीम ह।ै'	قَالُوْا سَمِعْنَا فَتًى يَّذْكُرُهُمْ يُقَالُ لَه اِبْرٰهِيْمُ
61	व`बोल,`'तो उस`लोगों क`सामन`लाओ, ताकि व`गवाही द।ै'	قَالُوْا فَأْتُوْا بِه عَلٰٓى اَعْيُنِ النَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَشْهَدُوْنَ
62	व`बोल,`'इबराहीम! क`या तमन`हमार`खुदाओं क`साथ यह कया?'	قَالُوْٓا ءَاَنْتَ فَعَلْتَ هٰذَا بِاٰلِهَتِنَا يٰٓاِبْرٰهِيْمُ
63	उनहोंन`(इबराहीम न) कहा, 'बलक़ि इस`उनक`सबस`बड़`(बतु) न` कया होगा। उनस`पछो, अगर व`बोल सकत`ह।ै'	قَالَ بَلْ فَعَلَه كَبِيْرُهُمْ هٰذَا فَسْـَٔلُوْهُمْ اِنْ كَانُوْا يَنْطِقُوْنَ

64	तो व॒अपन॒दिलों॑ म॒लौट॒और (आपस म॑) बोल॒, 'वाकई तमु॒ ही ज़ालमि हो।'	فَرَجَعُوْٓا اِلٰٓى اَنْفُسِهِمْ فَقَالُوْٓا اِنَّكُمْ اَنْتُمُ الظّٰلِمُوْنَ
65	फरि व॒(शरमिंदगी स॑) सरि झुका कर बोल॒, 'तमु॒ (इब्राहीम) तो जानत॒हो कि॒य॒(बतु॒) बोलत॒नहीं।'	ثُمَّ نُكِسُوْا عَلٰى رُءُوْسِهِمْ لَقَدْ عَلِمْتَ مَا هٰٓؤُلَاۤءِ يَنْطِقُوْنَ
66	उनहों॒॑(इब्राहीम न॑) कहा, 'तो कया॒ तमु॒ अल॒लाह क॒सिवा उसकी इबादत करत॒हो, जो न तमु॒हे॒कोई फायदा द॒सकता है॒ और न तमु॒हे॒कोई नकुसान पहुँचा सकता है?'	قَالَ اَفَتَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَنْفَعُكُمْ شَيْـًٔا وَّلَا يَضُرُّكُمْ
67	'हाय तमु॒ पर और उस पर जो तमु॒ अल॒लाह क॒सिवा पूजत॒हो! कया॒ तमु॒ नहीं॑समझत?'	اُفٍّ لَّكُمْ وَلِمَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ
68	व॒बोल॒, 'इस॒जला दो और अपन॒खुदाओं॑ की मदद करो, अगर तमु॒ कछु करना चाहत॒हो।'	قَالُوْا حَرِّقُوْهُ وَانْصُرُوْٓا اٰلِهَتَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ فٰعِلِيْنَ
69	हम (अल॒लाह) न॒कहा, 'ऐ आग! ठंडी हो जा और इब्राहीम क॒लिए सलामती बन जा!'	قُلْنَا يٰنَارُ كُوْنِيْ بَرْدًا وَّسَلٰمًا عَلٰٓى اِبْرٰهِيْمَ
70	और व॒इब्राहीम क॒खलिाफ़ साज़शि करना चाहत॒थ॒, लकेनि हमन॒उनहे॒सबस॒ज़्यादा नकुसान म॑डाल दयिा।	وَاَرَادُوْا بِهٖ كَيْدًا فَجَعَلْنٰهُمُ الْاَخْسَرِيْنَ
71	और हमन॒उस॒(इब्राहीम) और लतू को उस ज़मीन की ओर बचा लयिा, जसि॒हमन॒सार॒जहान क॒लिए बरकत दी थी।	وَنَجَّيْنٰهُ وَلُوْطًا اِلَى الْاَرْضِ الَّتِيْ بٰرَكْنَا فِيْهَا لِلْعٰلَمِيْنَ
72	और हमन॒इब्राहीम को इसहाक़ और (उसक॒बाद) याकबू की नअेमत दी, और हमन॒दोनों॑को नके बनाया।	وَوَهَبْنَا لَهٗٓ اِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ نَافِلَةً وَكُلًّا جَعَلْنَا صٰلِحِيْنَ
73	और हमन॒उनहे॒(इब्राहीम, इसहाक, याकबू) को इमाम बनाया, जो हमार॒हुक़्म स॒हदिायत दते॒थ॒, और हमन॒उनहे॒नके काम करन॒, नमाज़ कायम करन॒और ज़कात दने॒की वह्य दी, और व॒सरिफ़ हमारी इबादत करत॒थ॒।	وَجَعَلْنٰهُمْ اَىِٕمَّةً يَّهْدُوْنَ بِاَمْرِنَا وَاَوْحَيْنَآ اِلَيْهِمْ فِعْلَ الْخَيْرٰتِ وَاِقَامَ الصَّلٰوةِ وَاِيْتَاۤءَ الزَّكٰوةِ وَكَانُوْا لَنَا عٰبِدِيْنَ
74	और लतू को हमन॒हकिमत और इलम़ दयिा, और उस॒उस बसत॒ी स॒बचा लयिा, जो गद॒काम करती थी। वाकई व॒बरु॒और नाफ़रमान लोग थ॒।	وَلُوْطًا اٰتَيْنٰهُ حُكْمًا وَّعِلْمًا وَّنَجَّيْنٰهُ مِنَ الْقَرْيَةِ الَّتِيْ كَانَتْ تَّعْمَلُ الْخَبٰٓئِثَ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمَ سَوْءٍ فٰسِقِيْنَ
75	और हमन॒उस॒(लतू) को अपनी रहमत म॒दाखलि कयिा। नशि्चति रूप स॒, वह नके लोगों॑म॒स॒था।	وَاَدْخَلْنٰهُ فِيْ رَحْمَتِنَا اِنَّهٗ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ
76	और (याद करो) नहू को, जब उसन॒उसस॒पहल॒पुकारा था। तो हमन॒उसकी दआु कबूल की और उस॒और उसक॒साथयिों॑को बड़॒ दुख स॒बचा लयिा।	وَنُوْحًا اِذْ نَادٰى مِنْ قَبْلُ فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ فَنَجَّيْنٰهُ وَاَهْلَهٗ مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيْمِ

وَنَصَرْنٰهُ مِنَ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمَ سَوْءٍ فَاَغْرَقْنٰهُمْ اَجْمَعِيْنَ	77	और हमने उस उन लोगों से बचा लिया, जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया। वाकई वे बुरे लोग थे, तो हमने उन्हें सबको डुबो दिया।
وَدَاوٗدَ وَسُلَيْمٰنَ اِذْ يَحْكُمٰنِ فِى الْحَرْثِ اِذْ نَفَشَتْ فِيْهِ غَنَمُ الْقَوْمِ وَكُنَّا لِحُكْمِهِمْ شٰهِدِيْنَ	78	और (याद करो) दाउद और सुलैमान को, जब उन्होंने उस खेत के बारे में फैसला दिया, जिसे कुछ लोगों की भेड़ें ने रात में चर लिया था। और हम उनके फैसले को देख रहे थे।
فَفَهَّمْنٰهَا سُلَيْمٰنَ وَكُلًّا اٰتَيْنَا حُكْمًا وَّعِلْمًا وَّسَخَّرْنَا مَعَ دَاوٗدَ الْجِبَالَ يُسَبِّحْنَ وَالطَّيْرَ وَكُنَّا فٰعِلِيْنَ	79	और हमने सुलैमान को (सही फैसले की) समझ दी, और दोनों को हमने हिकमत और इल्म दिया। और हमने दाउद के साथ पहाड़ों और परिंदों को तस्बीह करने वाला बनाया। और यह सब हमने किया।
وَعَلَّمْنٰهُ صَنْعَةَ لَبُوْسٍ لَّكُمْ لِتُحْصِنَكُمْ مِّنْۢ بَاْسِكُمْ فَهَلْ اَنْتُمْ شٰكِرُوْنَ	80	और हमने दाउद को तुम्हारे लिए ज़िरह (बख़्तरबंद) बनाने की कला सिखाई, ताकि वह तुम्हें जंग में बचाए। तो क्या तुम शुक्र करते हो?
وَلِسُلَيْمٰنَ الرِّيْحَ عَاصِفَةً تَجْرِيْ بِاَمْرِهٖٓ اِلَى الْاَرْضِ الَّتِيْ بٰرَكْنَا فِيْهَا وَكُنَّا بِكُلِّ شَيْءٍ عٰلِمِيْنَ	81	और सुलैमान के लिए हमने तेज़ हवा को ताबेदार किया, जो उसके हुक्म से उस ज़मीन की ओर चलती थी, जिसे हमने बरकत दी थी। और हम हर चीज़ को जानने वाले हैं।
وَمِنَ الشَّيٰطِيْنِ مَنْ يَّغُوْصُوْنَ لَهٗ وَيَعْمَلُوْنَ عَمَلًا دُوْنَ ذٰلِكَ وَكُنَّا لَهُمْ حٰفِظِيْنَ	82	और (हमने सुलैमान के लिए) कुछ शैतानों को ताबेदार किया, जो उसके लिए समंदर में गोता लगाते थे और इसके अलावा दूसरे काम करते थे। और हम ही उनकी हिफाज़त करते थे।
وَاَيُّوْبَ اِذْ نَادٰى رَبَّهٗٓ اَنِّيْ مَسَّنِيَ الضُّرُّ وَاَنْتَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ	83	और (याद करो) अय्यूब को, जब उसने अपने रब को पुकारा, '(ऐ मेरे रब), मुझे बीमारी ने घेर लिया है, और तू सबसे ज़्यादा रहम करने वाला है।'
فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ فَكَشَفْنَا مَا بِهٖ مِنْ ضُرٍّ وَّاٰتَيْنٰهُ اَهْلَهٗ وَمِثْلَهُمْ مَّعَهُمْ رَحْمَةً مِّنْ عِنْدِنَا وَذِكْرٰى لِلْعٰبِدِيْنَ	84	तो हमने उसकी दुआ कबूल की, और हमने उसकी बीमारी को दूर किया, और हमने उसे उसका ख़ानदान वापस दिया, और उनके साथ उतने ही और दिए, हमारी रहमत के तौर पर, और इबादत करने वालों के लिए एक नसीहत के तौर पर।
وَاِسْمٰعِيْلَ وَاِدْرِيْسَ وَذَا الْكِفْلِ كُلٌّ مِّنَ الصّٰبِرِيْنَ	85	और (याद करो) इस्माइल, इदरीस और ज़ुल्कफ़िल को। ये सब सब्र करने वाले थे।
وَاَدْخَلْنٰهُمْ فِيْ رَحْمَتِنَا اِنَّهُمْ مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ	86	और हमने उन्हें अपनी रहमत में दाख़िल किया। निश्चित रूप से, वे नेक लोगों में से थे।
وَذَا النُّوْنِ اِذْ ذَّهَبَ مُغَاضِبًا فَظَنَّ اَنْ لَّنْ نَّقْدِرَ عَلَيْهِ فَنَادٰى فِى الظُّلُمٰتِ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ سُبْحٰنَكَ اِنِّيْ كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ	87	और (याद करो) जुन्नून (यूनुस) को, जब वह गुस्से में चला गया था, और उसने सोचा कि हम उस पर सख़्ती नहीं करेंगे। फिर उसने बहुत अंधेरे में पुकारा, 'तेरे सिवा कोई ख़ुदा नहीं, तू पाक है। वाकई मैं ज़ालिमों में से था।'
فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ وَنَجَّيْنٰهُ مِنَ الْغَمِّ وَكَذٰلِكَ نُـْۨجِى الْمُؤْمِنِيْنَ	88	तो हमने उसकी दुआ कबूल की और उसे उस दुख से बचा लिया। और हम ईमान वालों को इसी तरह बचा लेते हैं।

وَزَكَرِيَّآ اِذْ نَادٰى رَبَّهٗ رَبِّ لَا تَذَرْنِيْ فَرْدًا وَّاَنْتَ خَيْرُ الْوٰرِثِيْنَ	और (याद करो) ज़कारिया को, जब उसने अपने रब को पुकारा, 'ऐ मेरे रब, मुझे अकेला (बिना औलाद) न छोड, और तू सबसे अच्छा वारिस है'	**89**
فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ وَوَهَبْنَا لَهٗ يَحْيٰى وَاَصْلَحْنَا لَهٗ زَوْجَهٗ اِنَّهُمْ كَانُوْا يُسٰرِعُوْنَ فِى الْخَيْرٰتِ وَيَدْعُوْنَنَا رَغَبًا وَّرَهَبًا وَكَانُوْا لَنَا خٰشِعِيْنَ	तो हमने उसकी दुआ कबूल की, और हमने उसे यह्या की नअमत दी, और उसकी बीवी को (क़ाबलि-ए-हमल) बनाया। निश्चिति रूप से, वे नेकी में जल्दी करते थे, और वे हमसे उम्मीद और डर के साथ दुआ करते थे, और वे हमारे सामने बहुत ख़ुशूअ (विनम्रता) रखते थे।	**90**
وَالَّتِيْٓ اَحْصَنَتْ فَرْجَهَا فَنَفَخْنَا فِيْهَا مِنْ رُّوْحِنَا وَجَعَلْنٰهَا وَابْنَهَآ اٰيَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ	और (याद करो) उस (मरयिम) को, जिसने अपनी इज़्ज़त की हिफाज़त की, तो हमने उसमें अपनी रूह फूंकी, और हमने उसे और उसके बेटे को सारे जहान के लिए निशानी बनाया।	**91**
اِنَّ هٰذِهٖٓ اُمَّتُكُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّاَنَا رَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْنِ	निश्चिति रूप से, यह तुम्हारा दीन है, एक ही दीन, और मैं तुम्हारा रब हूँ, तो मेरी इबादत करो।	**92**
وَتَقَطَّعُوْٓا اَمْرَهُمْ بَيْنَهُمْ كُلٌّ اِلَيْنَا رٰجِعُوْنَ	लेकिन उन्होंने अपने दीन के मामले में आपस में टुकड़े-टुकड़े कर लिया। (आख़िर में) सबको हमारी ही ओर लौटना है।	**93**
فَمَنْ يَّعْمَلْ مِنَ الصّٰلِحٰتِ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَا كُفْرَانَ لِسَعْيِهٖ وَاِنَّا لَهٗ كٰتِبُوْنَ	जो कोई नेक काम करेगा और वह ईमान वाला होगा, तो उसकी महेनत जाया नहीं होगी, और हम उसके लिए (उसके अमल) लिख रहे हैं।	**94**
وَحَرٰمٌ عَلٰى قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَآ اَنَّهُمْ لَا يَرْجِعُوْنَ	और जिन बस्तियों को हमने नष्ट कर दिया, उनके लिए (हमारी ओर) लौटना मुमकिन नहीं।	**95**
حَتّٰٓى اِذَا فُتِحَتْ يَاْجُوْجُ وَمَاْجُوْجُ وَهُمْ مِّنْ كُلِّ حَدَبٍ يَّنْسِلُوْنَ	यहाँ तक कि जब याजूज और माजूज की दीवार खोल दी जाएगी, और वे हर ऊँची जगह से तेज़ी से उतरते लगेंगे।	**96**
وَاقْتَرَبَ الْوَعْدُ الْحَقُّ فَاِذَا هِيَ شَاخِصَةٌ اَبْصَارُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يٰوَيْلَنَا قَدْ كُنَّا فِيْ غَفْلَةٍ مِّنْ هٰذَا بَلْ كُنَّا ظٰلِمِيْنَ	और जब हक़ का वादा (कयामत का दिन) करीब आएगा, तो काफ़िरों की आँखें अचानक फट जाएँगी। (वे कहेंगे), 'हाय हमारी तबाही! हम वाकई इस बारे में लापरवाह थे, बल्कि हम ज़ालिम थे।'	**97**
اِنَّكُمْ وَمَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ حَصَبُ جَهَنَّمَ اَنْتُمْ لَهَا وٰرِدُوْنَ	निश्चिति रूप से, तुम (काफ़िरों) और वह जो तुम अल्लाह के सिवा पूजते हो, जहन्नम का ईंधन हो, तुम ज़रूर उसमें दाख़िल होगे।	**98**
لَوْ كَانَ هٰٓؤُلَآءِ اٰلِهَةً مَّا وَرَدُوْهَا وَكُلٌّ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ	अगर ये (जिन्हें तुम पूजते हो) ख़ुदा होते, तो वे जहन्नम में न जाते और सब उसमें हमेशा रहेंगे।	**99**
لَهُمْ فِيْهَا زَفِيْرٌ وَّهُمْ فِيْهَا لَا يَسْمَعُوْنَ	वहाँ उनके लिए चीख़-पुकार होगी, और वे वहाँ कुछ भी नहीं सुन सकेंगे।	**100**
اِنَّ الَّذِيْنَ سَبَقَتْ لَهُمْ مِّنَّا الْحُسْنٰٓى اُولٰٓئِكَ عَنْهَا مُبْعَدُوْنَ	निश्चिति रूप से, जिन लोगों के लिए हमारी ओर से पहले ही अच्छाई तय हो चुकी है, वे उस (जहन्नम) से दूर रखे जाएँगे।	**101**

102	व॒उसकी (जहन्नम की) सिसकी भी नहीं सनुगे॒, और व॒हमेशा उसम॑ रहगे॒ जो उनकी ख़्वाहशि थी।	لَا يَسْمَعُوْنَ حَسِيْسَهَا وَهُمْ فِيْ مَا اشْتَهَتْ اَنْفُسُهُمْ خٰلِدُوْنَ
103	वह बड़ा हादसा (कयिामत) उनह॒ उदास नहीं करेगा, और फरशि॑त॒ उनकी मलाकाि॑त करगे॒ (और कहगे॒), 'यह वह दनि ह॒ै जो तमुस॒ वादा कयिा गया था।'	لَا يَحْزُنُهُمُ الْفَزَعُ الْاَكْبَرُ وَتَتَلَقّٰىهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ هٰذَا يَوْمُكُمُ الَّذِيْ كُنْتُمْ تُوْعَدُوْنَ
104	(याद करो) उस दनि को जब हम आसमान को उसी तरह लपटे लगे॒ जसै॒े कागज़॑ की तह लपटी जाती ह॒ै जसै॒ा हमन॒े पहली बार खलक़॑ (सृष्टि॑) शरू॒ की थी, वसै॒े ही हम उस॒े दोबारा करगे॒। यह हमारा पक॑का वादा ह॒ै, और हम इस॒े जऱ॑रू पूरा करगे॒।	يَوْمَ نَطْوِى السَّمَاۤءَ كَطَيِّ السِّجِلِّ لِلْكُتُبِ كَمَا بَدَاْنَآ اَوَّلَ خَلْقٍ نُّعِيْدُهٗ وَعْدًا عَلَيْنَا اِنَّا كُنَّا فٰعِلِيْنَ
105	और हमन॒े ज़बूर म॑, अज़॑-ज़कि़र (लौह-ए-महफ़ूज़) क॒े बाद लखि दयिा कि॑ यह ज़मीन मरे॒ नेक बनद़॒ों को वारसि होगी।	وَلَقَدْ كَتَبْنَا فِى الزَّبُوْرِ مِنْۢ بَعْدِ الذِّكْرِ اَنَّ الْاَرْضَ يَرِثُهَا عِبَادِيَ الصّٰلِحُوْنَ
106	नशि॑चति रूप॒ स॒े, इस (कुरआन) म॒ इबादत करन॒े वालों क॒े लएि पूरी हदिायत ह॒ै	اِنَّ فِيْ هٰذَا لَبَلٰغًا لِّقَوْمٍ عٰبِدِيْنَ
107	और हमन॒े तमुह॒ें (मुहम्मद) सार॒े जहान क॒े लएि रहमत बनाकर भजेा ह॒ै	وَمَآ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا رَحْمَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ
108	कहो (मुहम्मद), 'मुझ पर तो यही वह्य हुई ह॒ै कि॑ तमुह॒ारा रब एक ही रब ह॒ै, तो क्या तमु (उसक॒े सामन॒े) सरडैर करोग?'	قُلْ اِنَّمَا يُوْحٰٓى اِلَيَّ اَنَّمَآ اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ فَهَلْ اَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ
109	अगर व॒े मुहँ मोड़॑त॒े ह॒ै, तो कहो (मुहम्मद), 'मनै॒े तमुह॒ें एक जसैी नसीहत दी ह॒ै, और मुझ॒े नहीं पता कि॑ जो तमुस॒ वादा कयिा गया ह॒ै, वह करीब ह॒ै या दूर।'	فَاِنْ تَوَلَّوْا فَقُلْ اٰذَنْتُكُمْ عَلٰى سَوَاۤءٍ وَاِنْ اَدْرِيْٓ اَقَرِيْبٌ اَمْ بَعِيْدٌ مَّا تُوْعَدُوْنَ
110	नशि॑चति रूप॒ स॒े, वह (अल्लाह) जानता ह॒ै जो कछु तमु ज़ाहरि म॑ कहत॒े हो, और वह जानता ह॒ै जो कछु तमु छपुात॒े हो।	اِنَّهٗ يَعْلَمُ الْجَهْرَ مِنَ الْقَوْلِ وَيَعْلَمُ مَا تَكْتُمُوْنَ
111	और मुझ॒े नहीं पता, शायद यह तमुह॒ार॒े लएि एक आज़माइश ह॒ै और एक तय वकत॑ तक का मजा़ ह॒ै	وَاِنْ اَدْرِيْ لَعَلَّهٗ فِتْنَةٌ لَّكُمْ وَمَتَاعٌ اِلٰى حِيْنٍ
112	उसन॒े (मुहम्मद न॒े) कहा, 'ऐ मरे॒े रब! इंसाफ क॒े साथ फसैला कर। और हमारा रब रहमान ह॒ै, जसिस॒े हर उस चीज़॑ क॒े लएि मदद मागँी जाती ह॒ै जो तमु कहत॒े हो।'	قٰلَ رَبِّ احْكُمْ بِالْحَقِّ وَرَبُّنَا الرَّحْمٰنُ الْمُسْتَعَانُ عَلٰى مَا تَصِفُوْنَ

छंदों की संख्या	اَلْحَجّ	मदनी
७८	अल हज - 22	मदनी

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल हज (हज)

1	ऐ इंसानो! अपने रब से डरो; निश्चिति रूप से, कयामत का गहरा हलिना एक बहुत बड़ी बात है।	يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمْ اِنَّ زَلْزَلَةَ السَّاعَةِ شَيْءٌ عَظِيْمٌ
2	(याद करो) उस दिन जब तुम इसे देखोगे, हर दूध पिलाने वाली माँ अपने दूध पीते बच्चे से बेपरवाह हो जाएगी, और हर गर्भवती औरत का गर्भ गिर जाएगा, और तुम इंसानों को नशे में देखोगे, हालाँकि वे नशे में नहीं होंगे, लेकिन अल्लाह का अज़ाब बहुत सख़्त है।	يَوْمَ تَرَوْنَهَا تَذْهَلُ كُلُّ مُرْضِعَةٍ عَمَّآ اَرْضَعَتْ وَتَضَعُ كُلُّ ذَاتِ حَمْلٍ حَمْلَهَا وَتَرَى النَّاسَ سُكٰرٰى وَمَا هُمْ بِسُكٰرٰى وَلٰكِنَّ عَذَابَ اللّٰهِ شَدِيْدٌ
3	और इंसानों में से कुछ ऐसे हैं जो बिना इल्म के अल्लाह के बारे में बहस करते हैं और बहुत ही बुरे शैतानों की परवी करते हैं।	وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُّجَادِلُ فِى اللّٰهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّيَتَّبِعُ كُلَّ شَيْطٰنٍ مَّرِيْدٍ
4	(शैतान के बारे में) तय किया गया है कि जो कोई उसका दोस्त बनेगा, वह उसे गुमराह करेगा, और उसे जहन्नम के अज़ाब की ओर ले जाएगा।	كُتِبَ عَلَيْهِ اَنَّهٗ مَنْ تَوَلَّاهُ فَاَنَّهٗ يُضِلُّهٗ وَيَهْدِيْهِ اِلٰى عَذَابِ السَّعِيْرِ
5	ऐ इंसानो! अगर तुम्हें (कयामत के दिन) दोबारा जीवित होने में शक है, तो निश्चिति रूप से, हमने तुम्हें मिट्टी से बनाया, फिर एक बूँद वीर्य से, फिर एक जमे हुए खून के लोथड़े से, फिर मांस के टुकड़े से, जो पूरी तरह बना हुआ हो या न बना हो, ताकि हम तुम्हारे लिए (यह) साफ कर; और हम उसे रहम में अपनी मर्ज़ी के मुताबिक एक तय समय तक रखते हैं, फिर हम तुम्हें एक बच्चे के रूप में निकालते हैं, फिर (धीरे-धीरे) तुम अपनी जवानी तक पहुँचते हो, और तुममें से कुछ को (जवानी से पहले) मौत दी जाती है और तुममें से कुछ को बहुत बुढ़ापे तक ले जाया जाता है, ताकि वह वह कुछ भी न जान जो पहले जानता था। और तुम ज़मीन को सूखा देखते हो, फिर जब हम उस पर पानी (बारिश) उतारते हैं, तो वह ज़मीन जिंदा हो जाती है और हरी-भरी हो जाती है और हर तरह की खूबसूरत जोड़ियाँ (पौधे) उगाती है।	يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنْ كُنْتُمْ فِىْ رَيْبٍ مِّنَ الْبَعْثِ فَاِنَّا خَلَقْنٰكُمْ مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ مِنْ عَلَقَةٍ ثُمَّ مِنْ مُّضْغَةٍ مُّخَلَّقَةٍ وَّغَيْرِ مُخَلَّقَةٍ لِّنُبَيِّنَ لَكُمْ وَنُقِرُّ فِى الْاَرْحَامِ مَا نَشَآءُ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى ثُمَّ نُخْرِجُكُمْ طِفْلًا ثُمَّ لِتَبْلُغُوْٓا اَشُدَّكُمْ وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّتَوَفّٰى وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّرَدُّ اِلٰٓى اَرْذَلِ الْعُمُرِ لِكَيْلَا يَعْلَمَ مِنْ بَعْدِ عِلْمٍ شَيْـًٔا وَتَرَى الْاَرْضَ هَامِدَةً فَاِذَآ اَنْزَلْنَا عَلَيْهَا الْمَآءَ اهْتَزَّتْ وَرَبَتْ وَاَنْۢبَتَتْ مِنْ كُلِّ زَوْجٍۭ بَهِيْجٍ
6	यह इसलिए है क्योंकि निश्चिति रूप से, अल्लाह ही हक है, और निश्चिति रूप से, वही मरे हुओं को जिंदा करता है, और निश्चिति रूप से, वह हर चीज़ पर कुदरत रखता है।	ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْحَقُّ وَاَنَّهٗ يُحْىِ الْمَوْتٰى وَاَنَّهٗ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ
7	और निश्चिति रूप से, कयामत का दिन ज़रूर आएगा, इसमें कोई शक नहीं; और निश्चिति रूप से, अल्लाह कब्रों में जो कोई है, उसे दोबारा उठाएगा।	وَّاَنَّ السَّاعَةَ اٰتِيَةٌ لَّا رَيْبَ فِيْهَا وَاَنَّ اللّٰهَ يَبْعَثُ مَنْ فِى الْقُبُوْرِ

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُّجَادِلُ فِى اللّٰهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّلَا هُدًى وَّلَا كِتٰبٍ مُّنِيْرٍ	और इंसानों में से कुछ ऐसे हैं जो बिना इल्म, बिना हिदायत और बिना रोशनी देने वाली किताब (वह्य) के अल्लाह के बारे में बहस करते हैं।	**8**
ثَانِيَ عِطْفِهٖ لِيُضِلَّ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ لَهٗ فِى الدُّنْيَا خِزْيٌ وَّنُذِيْقُهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ عَذَابَ الْحَرِيْقِ	अपनी गरदन को घमंड में टेढ़ा करके ताकि इंसानों को अल्लाह के रास्ते से भटका दे। उसके लिए दुनिया में ज़िल्लत है, और कियामत के दिन हम उसे जहन्नम के जलते हुए अज़ाब का मज़ा चखाएँगे।	**9**
ذٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ يَدٰكَ وَاَنَّ اللّٰهَ لَيْسَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ	(उससे कहा जाएगा), 'यह उसकी वजह से है जो तुम्हारे दोनों हाथों ने पहले किया, और अल्लाह अपने बंदों पर जुल्म नहीं करता।'	**10**
وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّعْبُدُ اللّٰهَ عَلٰى حَرْفٍ فَاِنْ اَصَابَهٗ خَيْرُ ِاطْمَاَنَّ بِهٖ وَاِنْ اَصَابَتْهُ فِتْنَةُ ِانْقَلَبَ عَلٰى وَجْهِهٖ خَسِرَ الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةَ ذٰلِكَ هُوَ الْخُسْرَانُ الْمُبِيْنُ	और इंसानों में से कुछ ऐसे हैं जो अल्लाह की इबादत किनारे पर रहकर करते हैं; अगर उसे कोई नेकी मिलती है, तो वह संतुष्ट हो जाता है, और अगर उसे कोई आज़माइश मिलती है, तो वह पीछे हट जाता है। वह दुनिया और आख़िरत में नुकसान में रहा। यही वह साफ़ नुकसान है।	**11**
يَدْعُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَضُرُّهٗ وَمَا لَا يَنْفَعُهٗ ذٰلِكَ هُوَ الضَّلٰلُ الْبَعِيْدُ	वह अल्लाह के सिवा उसकी इबादत करता है जो न नुकसान पहुँचा सकता है और न ही उसे कोई फायदा दे सकता है। यही वह गुमराही है जो बहुत दूर है।	**12**
يَدْعُوْا لَمَنْ ضَرُّهٗ اَقْرَبُ مِنْ نَّفْعِهٖ لَبِئْسَ الْمَوْلٰى وَلَبِئْسَ الْعَشِيْرُ	वह उसकी इबादत करता है जिसका नुकसान उसके फायदे से ज़्यादा नज़दीक है। निश्चित रूप से, वह सबसे बुरा मददगार और सबसे खराब साथी है।	**13**
اِنَّ اللّٰهَ يُدْخِلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ اِنَّ اللّٰهَ يَفْعَلُ مَا يُرِيْدُ	निश्चित रूप से, अल्लाह उन लोगों को, जो ईमान लाए और नेक काम किए, जन्नतों में दाखिल करेगा जिनके नीचे नहरें बहती हैं। निश्चित रूप से, अल्लाह वही करता है जो वह चाहता है।	**14**
مَنْ كَانَ يَظُنُّ اَنْ لَّنْ يَّنْصُرَهُ اللّٰهُ فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ فَلْيَمْدُدْ بِسَبَبٍ اِلَى السَّمَاۤءِ ثُمَّ لْيَقْطَعْ فَلْيَنْظُرْ هَلْ يُذْهِبَنَّ كَيْدُهٗ مَا يَغِيْظُ	जो कोई यह समझता है कि अल्लाह (मुहम्मद) की दुनिया और आख़िरत में मदद नहीं करेगा, तो उसे चाहिए कि वह एक रस्सी को आसमान तक फैलाए, फिर (खुद को) लटकाए, फिर सोचे कि क्या उसकी यह चाल उस चीज़ को दूर कर सकती है जो उसके दिल को तकलीफ दे रही है।	**15**
وَكَذٰلِكَ اَنْزَلْنٰهُ اٰيٰتٍۭ بَيِّنٰتٍ وَّاَنَّ اللّٰهَ يَهْدِيْ مَنْ يُّرِيْدُ	और इस तरह हमने इसे (कुरआन) साफ़ आयतों के रूप में उतारा; निश्चित रूप से, अल्लाह जिसे चाहता है, उसे हिदायत देता है।	**16**
اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَالَّذِيْنَ هَادُوْا وَالصّٰبِـُٔوْنَ وَالنَّصٰرٰى وَالْمَجُوْسَ وَالَّذِيْنَ اَشْرَكُوْٓا اِنَّ اللّٰهَ يَفْصِلُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ	निश्चित रूप से, जो लोग ईमान लाए, और यहूदी, और साबई, और नसारा (ईसाई), और माजूसी, और मुशरिक, अल्लाह ज़रूर उनके बीच कियामत के दिन फैसला करेगा। निश्चित रूप से, अल्लाह हर चीज़ का गवाह है।	**17**

18	क्या तुम नहीं जानते कि जो कोई आसमानों में है और जो कोई ज़मीन पर है, वह अल्लाह को सजदा करता है, और सूरज, चाँद, तारे, पहाड़, पेड़, जानवर जो रेंगते हैं और इंसानों में से बहुत से लोग? लेकिन बहुत से (इंसान) ऐसे हैं जिन पर अज़ाब वाजिब हो गया है और जिसे अल्लाह ज़लील करता है, उसे कोई इज़्ज़त देने वाला नहीं। निश्चित रूप से, अल्लाह जो चाहता है, करता है।	اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ يَسْجُدُ لَهٗ مَنْ فِى السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِى الْاَرْضِ وَالشَّمْسُ وَالْقَمَرُ وَالنُّجُوْمُ وَالْجِبَالُ وَالشَّجَرُ وَالدَّوَآبُّ وَكَثِيْرٌ مِّنَ النَّاسِ وَكَثِيْرٌ حَقَّ عَلَيْهِ الْعَذَابُ وَمَنْ يُّهِنِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ مُّكْرِمٍ اِنَّ اللّٰهَ يَفْعَلُ مَا يَشَآءُ
19	ये दो गरिह (मोमिन और काफिर) हैं जो आपस में अपने रब के बारे में झगड़ते हैं तो काफिरों के लिए आग (जहन्नम) के कपड़े बनाए जाएँगे। उनके सिरों पर खौलता हुआ पानी उंडेला जाएगा।	هٰذَانِ خَصْمٰنِ اخْتَصَمُوْا فِىْ رَبِّهِمْ فَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا قُطِّعَتْ لَهُمْ ثِيَابٌ مِّنْ نَّارٍ يُصَبُّ مِنْ فَوْقِ رُءُوْسِهِمُ الْحَمِيْمُ
20	उस (खौलते पानी) से उनके पेट और उनकी खाल में जो कुछ है, वह गल जाएगा।	يُصْهَرُ بِهٖ مَا فِىْ بُطُوْنِهِمْ وَالْجُلُوْدُ
21	और उनके लिए लोहे के कोड़े (अज़ाब) होंगे।	وَلَهُمْ مَّقَامِعُ مِنْ حَدِيْدٍ
22	हर बार जब वे तकलीफ की वजह से उस (जहन्नम) से निकलना चाहेंगे, उन्हें उसमें वापस डाल दिया जाएगा। (उनसे कहा जाएगा), 'इस जलते हुए अज़ाब का मज़ा चखो!'	كُلَّمَآ اَرَادُوْٓا اَنْ يَّخْرُجُوْا مِنْهَا مِنْ غَمٍّ اُعِيْدُوْا فِيْهَا وَذُوْقُوْا عَذَابَ الْحَرِيْقِ
23	निश्चित रूप से, अल्लाह उन लोगों को, जो ईमान लाए और नेक काम किए, जन्नतों में दाखिल करेगा जिनके नीचे नहरें बहती हैं। वहाँ उन्हें सोने के कंगन और मोतियों से सजाया जाएगा, और उनके कपड़े रेशम के होंगे।	اِنَّ اللّٰهَ يُدْخِلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ يُحَلَّوْنَ فِيْهَا مِنْ اَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَّلُؤْلُؤًا وَلِبَاسُهُمْ فِيْهَا حَرِيْرٌ
24	और उन्हें अच्छी बातों की हिदायत दी गई और उन्हें (अल्लाह की) तारीफ़ वाले रास्ते की हिदायत दी गई।	وَهُدُوْٓا اِلَى الطَّيِّبِ مِنَ الْقَوْلِ وَهُدُوْٓا اِلٰى صِرَاطِ الْحَمِيْدِ
25	निश्चित रूप से, जो लोग काफिर हैं और अल्लाह के रास्ते और मस्ज़िद-ए-हराम से, जिसे हमने सभी इंसानों के लिए खुला बनाया, चाहे वह वहाँ का रहने वाला हो या बाहर से आए, (लोगों को) रोकते हैं, और जो कोई वहाँ ज़ुल्म के साथ बुराई का इरादा करता है, हम उसे दर्दनाक अज़ाब का मज़ा चखाएँगे।	اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَيَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَالْمَسْجِدِ الْحَرَامِ الَّذِيْ جَعَلْنٰهُ لِلنَّاسِ سَوَاءً الْعَاكِفُ فِيْهِ وَالْبَادِ وَمَنْ يُّرِدْ فِيْهِ بِاِلْحَادٍ بِظُلْمٍ نُّذِقْهُ مِنْ عَذَابٍ اَلِيْمٍ
26	और (याद करो) जब हमने इब्राहीम को बैतुल्लाह की जगह दी (और कहा), 'मेरे साथ किसी को शरीक न करो।'	وَاِذْ بَوَّأْنَا لِاِبْرٰهِيْمَ مَكَانَ الْبَيْتِ اَنْ لَّا تُشْرِكْ بِيْ شَيْـًٔا وَّطَهِّرْ بَيْتِيَ لِلطَّآئِفِيْنَ وَالْقَآئِمِيْنَ وَالرُّكَّعِ السُّجُوْدِ
27	और लोगों में हज का एलान करो, वे पैदल और हर तरह की दुबली ऊँटनी पर तुम्हारे पास आएँगे, जो दूर-दूर के रास्तों से थककर आएँगी।	وَاَذِّنْ فِى النَّاسِ بِالْحَجِّ يَأْتُوْكَ رِجَالًا وَّعَلٰى كُلِّ ضَامِرٍ يَّأْتِيْنَ مِنْ كُلِّ فَجٍّ عَمِيْقٍ

لِّيَشْهَدُوْا مَنَافِعَ لَهُمْ وَيَذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ فِيْٓ اَيَّامٍ مَّعْلُوْمٰتٍ عَلٰى مَا رَزَقَهُمْ مِّنْۢ بَهِيْمَةِ الْاَنْعَامِ فَكُلُوْا مِنْهَا وَاَطْعِمُوا الْبَاۤىِٕسَ الْفَقِيْرَ	**28**	ताकि वे अपने फ़ायदे की चीज़ों का गवाह बनें और उन दिनों में अल्लाह का नाम लें, जो उन्हें मवेशियों के रूप में रिज़्क़ के तौर पर दिए गए हैं तो उनमें से खाओ और तंगदस्त, मोहताज को खिलाओ।
ثُمَّ لْيَقْضُوْا تَفَثَهُمْ وَلْيُوْفُوْا نُذُوْرَهُمْ وَلْيَطَّوَّفُوْا بِالْبَيْتِ الْعَتِيْقِ	**29**	फिर उन्हें अपनी गंदगी दूर करनी चाहिए, और अपनी नज़्र पूरी करनी चाहिए, और बैतुल्लाह का तवाफ़ करना चाहिए।
ذٰلِكَ وَمَنْ يُّعَظِّمْ حُرُمٰتِ اللّٰهِ فَهُوَ خَيْرٌ لَّهٗ عِنْدَ رَبِّهٖ وَاُحِلَّتْ لَكُمُ الْاَنْعَامُ اِلَّا مَا يُتْلٰى عَلَيْكُمْ فَاجْتَنِبُوا الرِّجْسَ مِنَ الْاَوْثَانِ وَاجْتَنِبُوْا قَوْلَ الزُّوْرِ	**30**	ऐसा ही है (अल्लाह का हुक्म)। और जो कोई अल्लाह की इज़्ज़त वाली चीज़ों को बड़ा समझता है, तो यह उसके लिए उसके रब के पास बेहतर है और तुम्हारे लिए मवेशी हलाल किए गए हैं, सिवाय उनके जो तुम्हें (हराम होने के बारे में) बताया गया है, तो तुम नापाक बुतों से बचो और झूठी बातों से परहेज़ करो।
حُنَفَاۤءَ لِلّٰهِ غَيْرَ مُشْرِكِيْنَ بِهٖ وَمَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَكَاَنَّمَا خَرَّ مِنَ السَّمَاۤءِ فَتَخْطَفُهُ الطَّيْرُ اَوْ تَهْوِيْ بِهِ الرِّيْحُ فِيْ مَكَانٍ سَحِيْقٍ	**31**	(इबादत करो) अल्लाह के लिए इख़्लास के साथ, बिना उसके साथ किसी को शरीक किए। और जो कोई अल्लाह के साथ शरिक़ करता है, तो वह ऐसा है जैसे वह आसमान से गिरा, फिर उसे चिड़ियों ने छीन लिया, या हवा उसे दूर की जगह ले गई।
ذٰلِكَ وَمَنْ يُّعَظِّمْ شَعَاۤىِٕرَ اللّٰهِ فَاِنَّهَا مِنْ تَقْوَى الْقُلُوْبِ	**32**	ऐसा ही है (अल्लाह का हुक्म)। और जो कोई अल्लाह की निशानियों को बड़ा समझता है, तो निश्चित रूप से यह दिल की तक़वा से पैदा होता है।
لَكُمْ فِيْهَا مَنَافِعُ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى ثُمَّ مَحِلُّهَآ اِلَى الْبَيْتِ الْعَتِيْقِ	**33**	तुम्हारे लिए उन (हदय के जानवरों) में कुछ फ़ायदे हैं, एक तय समय तक, फिर उनकी क़ुरबानी की जगह बैतुल अतीक (बैतुल्लाह) के पास है।
وَلِكُلِّ اُمَّةٍ جَعَلْنَا مَنْسَكًا لِّيَذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ عَلٰى مَا رَزَقَهُمْ مِّنْۢ بَهِيْمَةِ الْاَنْعَامِ فَاِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ فَلَهٗٓ اَسْلِمُوْا وَبَشِّرِ الْمُخْبِتِيْنَ	**34**	और हर उम्मत के लिए हमने क़ुरबानी का हुक्म दिया, ताकि वे अल्लाह का नाम लें उस रिज़्क़ पर जो अल्लाह ने उन्हें मवेशियों के रूप में दिया। तो तुम्हारा रब एक ही रब है, इसलिए उसी के सामने सरेंडर करो। और (मुहम्मद) उन लोगों को ख़ुशख़बरी दो जो (अल्लाह के सामने) झुकते हैं,
الَّذِيْنَ اِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَجِلَتْ قُلُوْبُهُمْ وَالصّٰبِرِيْنَ عَلٰى مَآ اَصَابَهُمْ وَالْمُقِيْمِى الصَّلٰوةِ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ	**35**	(यानी) वे लोग जिनके दिल अल्लाह का नाम सुनकर काँप उठते हैं, जो लोग अपनी मुसीबतों पर सब्र करते हैं, और जो नमाज़ क़ायम करते हैं और जो कुछ हमने उन्हें रिज़्क़ दिया, उसमें से ख़र्च करते हैं।
وَالْبُدْنَ جَعَلْنٰهَا لَكُمْ مِّنْ شَعَاۤىِٕرِ اللّٰهِ لَكُمْ فِيْهَا خَيْرٌ فَاذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ عَلَيْهَا صَوَاۤفَّ فَاِذَا وَجَبَتْ جُنُوْبُهَا فَكُلُوْا مِنْهَا وَاَطْعِمُوا الْقَانِعَ وَالْمُعْتَرَّ كَذٰلِكَ سَخَّرْنٰهَا لَكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ	**36**	और ऊँटों को हमने तुम्हारे लिए अल्लाह की निशानियों में से बनाया; तुम्हारे लिए उनमें भलाई है तो अल्लाह का नाम लो (जब तुम उन्हें क़ुरबानी के लिए) खड़ा करो (और उनके पाँव बाँध दो)। फिर जब वे गिर जाएँ (मर जाएँ), तो उनमें से खाओ और उस व्यक़्ति को खिलाओ जो अपने पास जो है उससे संतुष्ट है (माँगता नही) और उस व्यक़्ति को जो माँगता है इस तरह हमने (ऊँटों को) तुम्हारे लिए ताबेदार किया, ताकि तुम शुक्र करो।

37	(क़ुरबानी क॓ जानवरों का) गोश्त और ख़ून कभी अल्लाह तक नहीं पहुँचता, लेकिन तुम्हारा तक़वा उस तक पहुँचता है। इस तरह उसन॓ उन्ह॓ तुम्हार॓ लिए ताबदार किया ताकि तुम अल्लाह की बड़ाई करो उस हिदायत क॓ लिए जो उसन॓ तुम्ह॓ दी। और नेक काम करन॓वालों को ख़ुशख़बरी दो।	لَنْ يَّنَالَ اللّٰهَ لُحُوْمُهَا وَلَا دِمَاؤُهَا وَلٰكِنْ يَّنَالُهُ التَّقْوٰى مِنْكُمْ كَذٰلِكَ سَخَّرَهَا لَكُمْ لِتُكَبِّرُوا اللّٰهَ عَلٰى مَا هَدٰىكُمْ وَبَشِّرِ الْمُحْسِنِيْنَ
38	निश्चित रूप स॓, अल्लाह उन लोगों की हिफ़ाज़त करता ह॓ जो ईमान लाए। निश्चित रूप स॓, अल्लाह हर उस व्यक्ति को नापसंद करता ह॓ जो ख़ियानत करता ह॓ और नाशुक्रा ह॓।	اِنَّ اللّٰهَ يُدٰفِعُ عَنِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ كُلَّ خَوَّانٍ كَفُوْرٍ
39	(लड़न॓ की) इजाज़त दी गई उन लोगों को जिनक॓ ख़िलाफ़ जंग की जा रही ह॓, क्योंकि उनक॓ साथ ज़ुल्म हुआ ह॓ और निश्चित रूप स॓, अल्लाह उनकी मदद करन॓ की पूरी ताकत रखता ह॓,	اُذِنَ لِلَّذِيْنَ يُقَاتَلُوْنَ بِاَنَّهُمْ ظُلِمُوْا وَاِنَّ اللّٰهَ عَلٰى نَصْرِهِمْ لَقَدِيْرٌ
40	(यानी) उन लोगों को जो बिना किसी सही वजह क॓ अपन॓ घरों स॓ निकाल॓ गए, सिर्फ़ इसलिए कि उन्होंन॓ कहा, 'हमारा रब अल्लाह ह॓।' अगर अल्लाह कुछ लोगों को दूसरों क॓ ज़रिए न रोकता, तो नसारा क॓ मठ, गिरिजाघर, यहूदियों क॓ इबादतख़ान॓ और मस्ज़िद॓, जिनम॓ अल्लाह का नाम बहुत लिया जाता ह॓, ज़रूर ढहा दिए जात॓। अल्लाह ज़रूर उनकी मदद करेगा जो उसक॓ (दीन) की मदद करत॓ ह॓। निश्चित रूप स॓, अल्लाह बहुत ताकतवर, इज़्ज़त वाला ह॓।	الَّذِيْنَ اُخْرِجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ بِغَيْرِ حَقٍّ اِلَّآ اَنْ يَّقُوْلُوْا رَبُّنَا اللّٰهُ وَلَوْلَا دَفْعُ اللّٰهِ النَّاسَ بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ لَّهُدِّمَتْ صَوَامِعُ وَبِيَعٌ وَّصَلَوٰتٌ وَّمَسٰجِدُ يُذْكَرُ فِيْهَا اسْمُ اللّٰهِ كَثِيْرًا وَلَيَنْصُرَنَّ اللّٰهُ مَنْ يَّنْصُرُهٗ اِنَّ اللّٰهَ لَقَوِيٌّ عَزِيْزٌ
41	(यानी) व॓ लोग जो अगर हम उन्ह॓ ज़मीन पर सत्ता द॓, तो व॓ नमाज़ क़ायम करत॓ ह॓, ज़कात अदा करत॓ ह॓, और नेकी का हुक्म देते ह॓ और बुराई स॓ रोकत॓ ह॓, और सार॓ मामल॓ अल्लाह क॓ पास लौटत॓ ह॓।	اَلَّذِيْنَ اِنْ مَّكَّنّٰهُمْ فِى الْاَرْضِ اَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ وَاَمَرُوْا بِالْمَعْرُوْفِ وَنَهَوْا عَنِ الْمُنْكَرِ وَلِلّٰهِ عَاقِبَةُ الْاُمُوْرِ
42	और अगर व॓ (मुशरिक) तुम्ह॓ (मुहम्मद) झुठलात॓ ह॓, तो उनक॓ पहल॓ भी नूह की कौम, आद और समूद (न॓ अपन॓ रसूलों को झुठलाया),	وَاِنْ يُّكَذِّبُوْكَ فَقَدْ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ وَّعَادٌ وَّثَمُوْدُ
43	और इब्राहीम की कौम और लूत की कौम,	وَقَوْمُ اِبْرٰهِيْمَ وَقَوْمُ لُوْطٍ
44	और मादयान क॓ लोग। और मूसा को भी झुठलाया गया, फिर मैन॓ काफ़िरों को कुछ वक़्त दिया, फिर मैन॓ उन्ह॓ पकड़ लिया, तो मेरा अज़ाब कैसा था?	وَّاَصْحٰبُ مَدْيَنَ وَكُذِّبَ مُوْسٰى فَاَمْلَيْتُ لِلْكٰفِرِيْنَ ثُمَّ اَخَذْتُهُمْ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيْرِ
45	तो कितन॓ ही शहरों को हमन॓ नाश किया क्योंकि उनक॓ लोग ज़ालिम थ॓, इसलिए उनकी इमारत॓ ढह गईं और कितन॓ ही कुएँ छोड़ दिए गए और ऊँच॓ महल (बिना रहन॓वालों क॓)।	فَكَاَيِّنْ مِّنْ قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَا وَهِيَ ظَالِمَةٌ فَهِيَ خَاوِيَةٌ عَلٰى عُرُوْشِهَا وَبِئْرٍ مُّعَطَّلَةٍ وَّقَصْرٍ مَّشِيْدٍ
46	तो क्या उन्होंन॓ कभी ज़मीन पर सफ़र नहीं किया, ताकि उनक॓ दिल (अक़्ल) समझ सक॓, और उनक॓ कान सुन सक॓? असल म॓ आँख॓ अंधी नहीं होतीं, बल्कि दिल अंध॓ होत॓ ह॓ जो सीन॓ म॓ ह॓।	اَفَلَمْ يَسِيْرُوْا فِى الْاَرْضِ فَتَكُوْنَ لَهُمْ قُلُوْبٌ يَّعْقِلُوْنَ بِهَآ اَوْ اٰذَانٌ يَّسْمَعُوْنَ بِهَا فَاِنَّهَا لَا تَعْمَى الْاَبْصَارُ وَلٰكِنْ تَعْمَى الْقُلُوْبُ الَّتِيْ فِى الصُّدُوْرِ

وَيَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالْعَذَابِ وَلَنْ يُّخْلِفَ اللّٰهُ وَعْدَه وَاِنَّ يَوْمًا عِنْدَ رَبِّكَ كَاَلْفِ سَنَةٍ مِّمَّا تَعُدُّوْنَ	**47**	और वे (मुहम्मद) तुमसे अज़ाब को जल्दी लाने की माँग करते हैं, हालाँकि अल्लाह अपने वादे के ख़िलाफ़ नहीं जाता। और निश्चित रूप से, तुम्हारे रब के पास एक दिन तुम्हारी गिनती के हज़ार साल के बराबर है।
وَكَاَيِّنْ مِّنْ قَرْيَةٍ اَمْلَيْتُ لَهَا وَهِيَ ظَالِمَةٌ ثُمَّ اَخَذْتُهَا وَاِلَيَّ الْمَصِيْرُ	**48**	और कितने ही शहरों को मैंने कुछ वक़्त दिया, हालाँकि वे ज़ालिम थे, फिर मैंने उन्हें पकड़ लिया। और मेरी ओर लौटना है।
قُلْ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّمَآ اَنَا لَكُمْ نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ	**49**	कहो, 'ऐ इंसानो! मैं तो बस तुम्हारे लिए एक साफ़ चेतावनी देने वाला हूँ।'
فَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ كَرِيْمٌ	**50**	तो जो लोग ईमान लाए और नेके काम किए, उनके लिए माफ़ी और इज़्ज़त वाला रिज़्क़ है।
وَالَّذِيْنَ سَعَوْا فِيْٓ اٰيٰتِنَا مُعٰجِزِيْنَ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ	**51**	और जो लोग हमारी आयतों को झठ्लाने की कोशिश करते हैं, वही लोग जहन्नम वाले हैं।
وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رَّسُوْلٍ وَّلَا نَبِيٍّ اِلَّآ اِذَا تَمَنّٰٓى اَلْقَى الشَّيْطٰنُ فِيْٓ اُمْنِيَّتِه فَيَنْسَخُ اللّٰهُ مَا يُلْقِي الشَّيْطٰنُ ثُمَّ يُحْكِمُ اللّٰهُ اٰيٰتِه وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ	**52**	और हमने तुमसे (मुहम्मद) पहले कोई रसूल या नबी नहीं भेजा, सिवाय इसके कि जब उसने कोई ख़्वाहिश की, तो शैतान ने उसकी ख़्वाहिश में कुछ डाल दिया। लेकिन अल्लाह उस चीज़ को मिटा देता है जो शैतान डालता है, और अल्लाह अपनी आयतों को मज़बूत करता है और अल्लाह बहुत जानने वाला, हिकमत वाला है,
لِّيَجْعَلَ مَا يُلْقِي الشَّيْطٰنُ فِتْنَةً لِّلَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ وَّالْقَاسِيَةِ قُلُوْبُهُمْ وَاِنَّ الظّٰلِمِيْنَ لَفِيْ شِقَاقٍ بَعِيْدٍ	**53**	ताकि वह (अल्लाह) उस चीज़ को, जो शैतान डालता है, उन लोगों के लिए एक आज़माइश बनाए जिनके दिलों में बीमारी है और जिनके दिल सख़्त हैं और ज़ालिम लोग वाक़ई बहुत दूर की दुश्मनी में हैं,
وَّلِيَعْلَمَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ اَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ فَيُؤْمِنُوْا بِه فَتُخْبِتَ لَه قُلُوْبُهُمْ وَاِنَّ اللّٰهَ لَهَادِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ	**54**	और ताकि वे लोग जिन्हें इल्म दिया गया है, यक़ीन करें कि यह (क़ुरआन) तुम्हारे रब की ओर से हक़ है, फिर वे उस पर ईमान लाएँ और उनके दिल उसकी ओर झुक जाएँ। और निश्चित रूप से, अल्लाह ईमान वालों को सीधे रास्ते की हिदायत देता है।
وَلَا يَزَالُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِيْ مِرْيَةٍ مِّنْهُ حَتّٰى تَاْتِيَهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً اَوْ يَاْتِيَهُمْ عَذَابُ يَوْمٍ عَقِيْمٍ	**55**	और काफ़िर लोग हमेशा इस (क़ुरआन) के बारे में शक में रहेंगे, यहाँ तक कि उनकी मौत अचानक आ जाए, या क़यामत का अज़ाब उन पर आ जाए।
اَلْمُلْكُ يَوْمَئِذٍ لِّلّٰهِ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ فَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فِيْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ	**56**	उस दिन सारी हुकूमत अल्लाह के लिए होगी, वह उनके बीच फ़ैसला करेगा। तो जो लोग ईमान लाए और नेके काम किए, वे नेअमतों भरी जन्नतों में होंगे।
وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا فَاُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ	**57**	और जो लोग काफ़िर हुए और हमारी आयतों को झठ्लाया, उनके लिए ज़लील्त वाला अज़ाब होगा।

58	और जो लोग अल्लाह क रास्त मे हिजरत करत हे, फरि व मार जात हे या मर जात हे, नश्चिति रूप स, अल्लाह उनह अच्छा रज़िक़ (जन्नत) दगेा। और नश्चिति रूप स, अल्लाह सबस अच्छा रज़िक़ दने वाला हो	وَالَّذِيْنَ هَاجَرُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ثُمَّ قُتِلُوْٓا اَوْ مَاتُوْا لَيَرْزُقَنَّهُمُ اللّٰهُ رِزْقًا حَسَنًا وَاِنَّ اللّٰهَ لَهُوَ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ
59	नश्चिति रूप स, वह (अल्लाह) उनह ऐसी जगह दाखलि करगेा जो उनह पसंद आएगी। और नश्चिति रूप स, अल्लाह बहत्त जानन वाला, बहत्त सबर करन वाला हो	لَيُدْخِلَنَّهُمْ مُّدْخَلًا يَّرْضَوْنَه وَاِنَّ اللّٰهَ لَعَلِيْمٌ حَلِيْمٌ
60	ऐसा ही ह, और जो कोई उस जल्म क बराबर बदला लता ह जो उसन सहा, फरि उस पर फरि जल्म कयिा जाता ह, तो नश्चिति रूप स अल्लाह उसकी मदद करगेा। नश्चिति रूप स, अल्लाह बहत्त माफ करन वाला, बहत्त बख़्शन वाला हो	ذٰلِكَ وَمَنْ عَاقَبَ بِمِثْلِ مَا عُوْقِبَ بِه ثُمَّ بُغِيَ عَلَيْهِ لَيَنْصُرَنَّهُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ لَعَفُوٌّ غَفُوْرٌ
61	ऐसा इसलएि ह कय्योंकि अल्लाह रात को दनि म दाखलि करता ह और दनि को रात म दाखलि करता ह, और नश्चिति रूप स, अल्लाह बहत्त सनुन वाला, बहत्त दखेन वाला हो	ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ يُوْلِجُ الَّيْلَ فِى النَّهَارِ وَيُوْلِجُ النَّهَارَ فِى الَّيْلِ وَاَنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ بَصِيْرٌ
62	ऐसा इसलएि ह कय्योंकि अल्लाह ही हक हो और जो कछु व उसक सवि पक्कारत हे, वह बातलि ह, और नश्चिति रूप स, अल्लाह बहत्त बल्द, बहत्त बड़ा हो	ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْحَقُّ وَاَنَّ مَا يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِه هُوَ الْبَاطِلُ وَاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيْرُ
63	क्या तमु नहीं दखेत कि अल्लाह आसमान स पानी (बारशि) उतारता ह, तो ज़मीन हरी-भरी हो जाती ह? नश्चिति रूप स, अल्लाह बहत्त बारीक, बहत्त जानन वाला हो	اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَتُصْبِحُ الْاَرْضُ مُخْضَرَّةً اِنَّ اللّٰهَ لَطِيْفٌ خَبِيْرٌ
64	उसका ह जो कछु आसमानों म ह और जो कछु ज़मीन पर हो और अल्लाह वाकई बहत्त बनेयिाज, बहत्त तारीफ़ वाला हो	لَه مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ وَاِنَّ اللّٰهَ لَهُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ
65	क्या तमु नहीं दखेत कि अल्लाह न तमुहार लएि ज़मीन पर जो कछु ह उस ताबदेार कयिा और जहाज़ को जो समंदर म उसक हक़ुम स चलता हो और वह आसमान को रोकता ह कि वह ज़मीन पर न गरि, सवािय उसक इजाज़त क? नश्चिति रूप स, अल्लाह इंसानों क लएि बहत्त महेरबान, बहत्त रहम करन वाला हो	اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ سَخَّرَ لَكُمْ مَّا فِى الْاَرْضِ وَالْفُلْكَ تَجْرِيْ فِى الْبَحْرِ بِاَمْرِه وَيُمْسِكُ السَّمَاءَ اَنْ تَقَعَ عَلَى الْاَرْضِ اِلَّا بِاِذْنِه اِنَّ اللّٰهَ بِالنَّاسِ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ
66	और वही ह जसिन तमुह जदिगी दी, फरि तमुह मौत दगेा, फरि तमुह (कयिामत क दनि) दोबारा जदिगी दगेा। नश्चिति रूप स, इंसान बहत्त नाशक़ुरा हो	وَهُوَ الَّذِيْٓ اَحْيَاكُمْ ثُمَّ يُمِيْتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيْكُمْ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَكَفُوْرٌ
67	हर उम्मत क लएि हमन एक खास शरीअत तय की ह जसि उनह अमल करना चाहएि, तो उनह इस मामल म तमुस बहस नहीं करनी चाहएि और तमु (उनह) अपन रब की ओर बलुाओ। नश्चिति रूप स, तमु (मुहम्मद) सीध रास्त पर हो।	لِكُلِّ اُمَّةٍ جَعَلْنَا مَنْسَكًا هُمْ نَاسِكُوْهُ فَلَا يُنَازِعُنَّكَ فِى الْاَمْرِ وَادْعُ اِلٰى رَبِّكَ اِنَّكَ لَعَلٰى هُدًى مُّسْتَقِيْمٍ
68	और अगर व तमुस बहस करत हे, तो कहो, 'अल्लाह तमुहार कएि हए को बहेतर जानता हो'	وَاِنْ جَادَلُوْكَ فَقُلِ اللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ
69	अल्लाह कयिामत क दनि तमुहार बीच उस चीज़ का फसैला करगेा जसि म तमु इख़्तलिाफ़ करत थे।	اَللّٰهُ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا كُنْتُمْ فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ

70	क्या तुम नहीं जानते कि अल्लाह जानता है जो कुछ आसमानों में और ज़मीन पर है? निश्चित रूप से, यह सब एक किताब (लौह-ए-महफ़ूज़) में मौजूद है। निश्चित रूप से, यह अल्लाह के लिए बहुत आसान है।	اَلَمْ تَعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا فِى السَّمَاۤءِ وَالْاَرْضِ اِنَّ ذٰلِكَ فِيْ كِتٰبٍ اِنَّ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرٌ
71	और वे अल्लाह के सिवा उसकी इबादत करते हैं जिसके बारे में कोई साफ़ दलील नहीं, और उनके पास इसके बारे में कोई इल्म नहीं। और ज़ालिमों के लिए कोई मददगार नहीं है।	وَيَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهٖ سُلْطٰنًا وَّمَا لَيْسَ لَهُمْ بِهٖ عِلْمٌ وَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ نَّصِيْرٍ
72	और जब हमारी साफ़ आयतें उनके सामने पढ़ी जाती हैं, तो तुम काफ़िरों के चेहरों पर इंकार के निशान देखोगे। वे उन लोगों पर हमला करने को तैयार हो जाते हैं जो हमारी आयतें उन्हें पढ़कर सुनाते हैं। कहो (मुहम्मद), 'क्या मैं तुम्हें उससे भी बदतर चीज़ की ख़बर दूँ (वह है) जहन्नम?' अल्लाह ने काफ़िरों के लिए उसकी धमकी दी है और (जहन्नम) सबसे ख़राब ठिकाना है।	وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ تَعْرِفُ فِيْ وُجُوْهِ الَّذِيْنَ كَفَرُوا الْمُنْكَرَ يَكَادُوْنَ يَسْطُوْنَ بِالَّذِيْنَ يَتْلُوْنَ عَلَيْهِمْ اٰيٰتِنَا قُلْ اَفَاُنَبِّئُكُمْ بِشَرٍّ مِّنْ ذٰلِكُمْ اَلنَّارُ وَعَدَهَا اللّٰهُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ
73	ऐ इंसानो! एक मिसाल दी गई है तो इसे सुनो! निश्चित रूप से, जो कुछ तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो, वे एक मक्खी भी नहीं बना सकते, भले ही वे सब इसके लिए इकट्ठा हो जाएँ। और अगर वह मक्खी उनसे कुछ छीन ले, तो वे उस से उस मक्खी से वापस नहीं ले सकते। पूजने वाला और पूजा जाने वाला, दोनों ही कमज़ोर हैं।	يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ ضُرِبَ مَثَلٌ فَاسْتَمِعُوْا لَهٗ اِنَّ الَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ لَنْ يَّخْلُقُوْا ذُبَابًا وَّلَوِ اجْتَمَعُوْا لَهٗ وَاِنْ يَّسْلُبْهُمُ الذُّبَابُ شَيْـًٔا لَّا يَسْتَنْقِذُوْهُ مِنْهُ ضَعُفَ الطَّالِبُ وَالْمَطْلُوْبُ
74	वे अल्लाह को उसकी सही बड़ाई के साथ नहीं मानते। निश्चित रूप से, अल्लाह बहुत ताकतवर, बहुत इज़्ज़त वाला है।	مَا قَدَرُوا اللّٰهَ حَقَّ قَدْرِهٖ اِنَّ اللّٰهَ لَقَوِيٌّ عَزِيْزٌ
75	अल्लाह फ़रिश्तों और इंसानों में से रसूल चुनता है। निश्चित रूप से, अल्लाह बहुत सुनने वाला, बहुत देखने वाला है।	اَللّٰهُ يَصْطَفِيْ مِنَ الْمَلٰٓئِكَةِ رُسُلًا وَّمِنَ النَّاسِ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌۢ بَصِيْرٌ
76	वह (अल्लाह) जानता है जो उनके सामने है और जो उनके पीछे है। और सारे मामले अल्लाह की ओर लौटाए जाते हैं।	يَعْلَمُ مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَاِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ
77	ऐ ईमान वालो! रुकू करो, सजदा करो, और अपने रब की इबादत करो; और नेके काम करो, ताकि तुम कामयाब हो।	يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا ارْكَعُوْا وَاسْجُدُوْا وَاعْبُدُوْا رَبَّكُمْ وَافْعَلُوا الْخَيْرَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ

وَجَاهِدُوْا فِى اللّٰهِ حَقَّ جِهَادِهٖ هُوَ اجْتَبٰىكُمْ وَمَا جَعَلَ عَلَيْكُمْ فِى الدِّيْنِ مِنْ حَرَجٍ مِلَّةَ اَبِيْكُمْ اِبْرٰهِيْمَ هُوَ سَمّٰىكُمُ الْمُسْلِمِيْنَ مِنْ قَبْلُ وَفِيْ هٰذَا لِيَكُوْنَ الرَّسُوْلُ شَهِيْدًا عَلَيْكُمْ وَتَكُوْنُوْا شُهَدَاءَ عَلَى النَّاسِ فَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَاعْتَصِمُوْا بِاللّٰهِ هُوَ مَوْلٰىكُمْ فَنِعْمَ الْمَوْلٰى وَنِعْمَ النَّصِيْرُ	और अल्लाह क॓ रास्त॓ मे॑ सच्ची जहिाद करो। उसन॓ तमु्ह॑ चना ह॑ै और उसन॓ तमु्हार॓ लएि दीन म॑ कोई मशु्कलि नहीं डाली। (अमल करो) अपन॓ बाप-दादा इब्राहीम क॓ दीन पर। उस (अल्लाह) न॓ तमु्ह॑ पहल॓ स॓ मसु्लमान नाम दयिा, और (इसी तरह) इस (कर्आन) म॑, ताकि रसलू (महम्मद) तमु पर गवाह हो और तमु सार॓ इंसानों पर गवाह हो। तो नमाज़ कायम करो, ज़कात अदा करो, और अल्लाह को मज़बतूी स॓ पकड़ो। वही तमु्हारा सरपरस्त ह॑ै, वह सबस॓ अच्छा सरपरस्त और सबस॓ अच्छा मददगार ह॑ै	**78**

छंदों की संख्या	اَلْمُؤْمِنُون	مكية
११८	अल-Mu'minun - 23	मक्की

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल-Mu'minun (मोमनि)

1	निश्चिति रूप स,े ईमान वालों न`े कामयाबी हासलि की ह,ै	قَدْ اَفْلَحَ الْمُؤْمِنُوْنَ
2	जो अपनी नमाज़ म`ें ख़ुशू (एकाग्रता) रखत`े ह,ैं	الَّذِيْنَ هُمْ فِيْ صَلَاتِهِمْ خٰشِعُوْنَ
3	और जो बकेार की बातों और कामों स`े दूर रहत`े ह,ैं	وَالَّذِيْنَ هُمْ عَنِ اللَّغْوِ مُعْرِضُوْنَ
4	और जो ज़कात अदा करत`े ह,ैं	وَالَّذِيْنَ هُمْ لِلزَّكٰوةِ فٰعِلُوْنَ
5	और जो अपनी शरमगाह की हफिाज़त करत`े ह,ैं	وَالَّذِيْنَ هُمْ لِفُرُوْجِهِمْ حٰفِظُوْنَ
6	सविाय अपनी पत्नियों या अपनी दासयिों क,े क्योंकि इसम`ें व`े नदिनीय नहीं ह।ैं	اِلَّا عَلٰٓى اَزْوَاجِهِمْ اَوْ مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُمْ فَاِنَّهُمْ غَيْرُ مَلُوْمِيْنَ
7	लकेनि जो कोई इसक`े अलावा (ज़नि आदी) की तलाश करता ह,ै वही लोग ह`ैं जो हद स`े आग`े बढ़त`े ह।ैं	فَمَنِ ابْتَغٰى وَرَاءَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْعَادُوْنَ
8	और (कामयाब ह)ैं व`े लोग जो अपनी अमानतों और वादों की हफिाज़त करत`े ह,ैं	وَالَّذِيْنَ هُمْ لِاَمٰنٰتِهِمْ وَعَهْدِهِمْ رَاعُوْنَ
9	और जो अपनी नमाज़ों की पाबंदी करत`े ह।ैं	وَالَّذِيْنَ هُمْ عَلٰى صَلَوٰتِهِمْ يُحَافِظُوْنَ
10	यही लोग ह`ैं जो वारसि होंग,े	اُولٰٓئِكَ هُمُ الْوٰرِثُوْنَ
11	(अर्थात) जो फरिदौस (जन्नत) क`े वारसि होंग।े व`े उसम`ें हमशेा रहेंगे।	الَّذِيْنَ يَرِثُوْنَ الْفِرْدَوْسَ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ
12	और नश्चिति रूप स,े हमन`े इंसान को मट्टिी क`े सत (सार) स`े बनाया।	وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنْ سُلٰلَةٍ مِّنْ طِيْنٍ
13	फरि हमन`े उस`े नुक़्स (वीर्य) बनाया, जो एक मज़बूत जगह (रहम) म`ें रखा गया।	ثُمَّ جَعَلْنٰهُ نُطْفَةً فِيْ قَرَارٍ مَّكِيْنٍ
14	फरि उस नुक़्स को हमन`े एक जम`े हुए ख़ून का लोथड़ा बनाया, फरि उस लोथड़े को हमन`े मांस का टुकड़ा बनाया, और उस मांस क`े टुकड़े को हमन`े हड्डियों म`ें बदला, फरि उन हड्डियों को हमन`े मांस स`े ढक दयिा। फरि हमन`े उस`े एक दूसरी सृष्टि क`े रूप म`ें बनाया। महान ह`ै अल्लाह, जो सबस`े अच्छा रचनाकार ह।ै	ثُمَّ خَلَقْنَا النُّطْفَةَ عَلَقَةً فَخَلَقْنَا الْعَلَقَةَ مُضْغَةً فَخَلَقْنَا الْمُضْغَةَ عِظٰمًا فَكَسَوْنَا الْعِظٰمَ لَحْمًا ثُمَّ اَنْشَاْنٰهُ خَلْقًا اٰخَرَ فَتَبٰرَكَ اللّٰهُ اَحْسَنُ الْخٰلِقِيْنَ

15	फरि इसक॑बाद, नशि़ति रूप स, ॑तमु सब मर जाओग॑	ثُمَّ اِنَّكُمْ بَعْدَ ذٰلِكَ لَمَيِّتُوْنَ
16	फरि नशि़ति रूप स, ॑ तमु कयामत क॑दनि दोबारा उठाए जाओग॑	ثُمَّ اِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ تُبْعَثُوْنَ
17	और नशि़ति रूप स, ॑ हमन॑तमुहार॑ऊपर सात आसमान बनाए, और हम अपनी सृष़्टि स॑बेखबर नहीं ह॑	وَلَقَدْ خَلَقْنَا فَوْقَكُمْ سَبْعَ طَرَاۤئِقَ وَمَا كُنَّا عَنِ الْخَلْقِ غٰفِلِيْنَ
18	और हमन॑आसमान स॑पानी एक नशि़ति मातऱा म॑उतारा; फरि हमन॑उस॑ज़मीन म॑ठहराया, और नशि़ति रूप स, ॑ हम उस॑ गायब करन॑की भी ताकत रखत॑ह॑	وَاَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَاۤءِ مَاۤءً بِقَدَرٍ فَاَسْكَنّٰهُ فِى الْاَرْضِ وَاِنَّا عَلٰى ذَهَابٍ بِهٖ لَقٰدِرُوْنَ
19	फरि उस (पानी) स॑हमन॑तमुहार॑लिए खजूर और अंगूर क॑बाग़ उगाए; वहा ँतमुह॑बहत॒ सार॑फल मलित॑ह॑ और उनम॑स॑कछु तमु खात॑हो,	فَاَنْشَاْنَا لَكُمْ بِهٖ جَنّٰتٍ مِّنْ نَّخِيْلٍ وَّاَعْنَابٍ لَكُمْ فِيْهَا فَوَاكِهُ كَثِيْرَةٌ وَّمِنْهَا تَاْكُلُوْنَ
20	और (हमन॑उगाया) वह जतैनू का पड़ जो सनिाई पहाड़ स॑ नकिलता ह, ॑ जो तले पदैा करता ह॑और खान॑वाल॑क॑लिए सवाद बढ़ान॑वाला ह॑	وَشَجَرَةً تَخْرُجُ مِنْ طُوْرِ سَيْنَاۤءَ تَنْۢبُتُ بِالدُّهْنِ وَصِبْغٍ لِّلْاٰكِلِيْنَ
21	और नशि़ति रूप स, ॑ मवशे़यि॑म॑तमुहार॑लिए एक सबक ह॑ हम तमुह॑उनक॑पटे म॑स॑(दधू) पलित॑ह, ॑और उनम॑तमुहार॑ लिए बहत॒ सार॑फायद॑ह, ॑और उनम॑स॑कछु तमु खात॑हो,	وَاِنَّ لَكُمْ فِى الْاَنْعَامِ لَعِبْرَةً نُسْقِيْكُمْ مِّمَّا فِىْ بُطُوْنِهَا وَلَكُمْ فِيْهَا مَنَافِعُ كَثِيْرَةٌ وَّمِنْهَا تَاْكُلُوْنَ
22	और उन (मवशे़यि॑) पर और जहाज॑पर तमु सवारी करत॑हो।	وَعَلَيْهَا وَعَلَى الْفُلْكِ تُحْمَلُوْنَ
23	और नशि़ति रूप स, ॑हमन॑नहू को उनकी कौम क॑पास भजेा, तो उनहो ंन॑कहा, 'ऐ मरी॑ कौम! अल॒लाह की इबादत करो, क॒यो ंक॑ तमुहारा कोई दसूरा माबद्ध (इलाह) नहीं ह॑ तो कय॒ा तमु (उसस॑) नहीं डरत॑?'	وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا اِلٰى قَوْمِهٖ فَقَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ
24	तो उनकी कौम क॑काफरि सरदार॑न॑कहा, 'यह तो बस तमुहार॑ जसैा एक इंसान ह, ॑जो तमुस॑बढ़कर बनना चाहता ह॑ और अगर अल॒लाह चाहता, तो वह फरशि़त॑ं को भजेता। हमन॑अपन॑ पुरख॑ं क॑ज़मान॑म॑ऐसा (पगै़ाम) कभी नहीं सन॒ा।'	فَقَالَ الْمَلَؤُا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ مَا هٰذَاۤ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُرِيْدُ اَنْ يَّتَفَضَّلَ عَلَيْكُمْ وَلَوْ شَاۤءَ اللّٰهُ لَاَنْزَلَ مَلٰٓئِكَةً مَّا سَمِعْنَا بِهٰذَا فِىْۤ اٰبَاۤئِنَا الْاَوَّلِيْنَ
25	वह तो बस एक दीवाना आदमी ह, ॑तो उसक॑लिए एक मद्दत तक इंतज़ार करो।'	اِنْ هُوَ اِلَّا رَجُلٌ بِهٖ جِنَّةٌ فَتَرَبَّصُوْا بِهٖ حَتّٰى حِيْنٍ
26	उनहो ंन॑(नहू न॑) दआु की, 'ऐ मर॑े॑रब! मरी॑ मदद कर क॒यो ंक॑ उनहो ंन॑मझु॑झठूा समझा।'	قَالَ رَبِّ انْصُرْنِىْ بِمَا كَذَّبُوْنِ

27	तो हमन उनकी ओर वह्य भेजी, 'हमारी नगिरानी और हमार हुक्म क तहत एक कश्ती बनाओ, फरि जब हमारा हुक्म आए और तनू (चूल्हा) स पानी उबलन लग, तो उसम हर तरह की एक-एक जोड़ा डाल दो, और अपन घरवालों को भी, सविाय उनक जनिक बार म पहल स हुक्म हो चुका हो और उन ज़ालमिों क बार म मझुस बात न करना, क्योंकि व डुबो दिए जाएंगे।'	فَاَوْحَيْنَآ اِلَيْهِ اَنِ اصْنَعِ الْفُلْكَ بِاَعْيُنِنَا وَوَحْيِنَا فَاِذَا جَاءَ اَمْرُنَا وَفَارَ التَّنُّوْرُ فَاسْلُكْ فِيْهَا مِنْ كُلٍّ زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ وَاَهْلَكَ اِلَّا مَنْ سَبَقَ عَلَيْهِ الْقَوْلُ مِنْهُمْ وَلَا تُخَاطِبْنِيْ فِى الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا اِنَّهُمْ مُّغْرَقُوْنَ
28	और जब तमु और तमुहार साथी कश्ती पर सवार हो जाओ, तो कहो, 'सब तारीफ अल्लाह क लिए ह, जसिन हम ज़ालमिों स नजात दी।'	فَاِذَا اسْتَوَيْتَ اَنْتَ وَمَنْ مَّعَكَ عَلَى الْفُلْكِ فَقُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ نَجّٰنَا مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ
29	और दआु करो, 'ऐ मरे रेब! मझु ेएक मबुारक जगह पर उतार, और तू सबस अच्छा ठकिाना दने वाला ह।'	وَقُلْ رَّبِّ اَنْزِلْنِيْ مُنْزَلًا مُّبٰرَكًا وَّاَنْتَ خَيْرُ الْمُنْزِلِيْنَ
30	नशि्चति रूप स, इसम (नूह की कहानी म) नशिानयिाँ ह, और हम ज़रूर आज़माइश करन वाल ह।	اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ وَّاِنْ كُنَّا لَمُبْتَلِيْنَ
31	फरि उनक बाद हमन दूसरी कौम (आद) को पदैा कयिा।	ثُمَّ اَنْشَاْنَا مِنْ بَعْدِهِمْ قَرْنًا اٰخَرِيْنَ
32	तो हमन उनक पास उनक ही म स एक रसूल भेजा (जो बोला), 'अल्लाह की इबादत करो! तमुहारा कोई दूसरा माबदू (इलाह) नहीं ह तो क्या तम (उससे) नहीं डरत?'	فَاَرْسَلْنَا فِيْهِمْ رَسُوْلًا مِّنْهُمْ اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ
33	और उनकी कौम क उन काफरि सरदारों न, जनिहोंन आख़रित की मलुाकात को झठुलाया और जनि्हें हमन दनुयिा की ज़िंदगी म ऐशो-आराम दयिा था, कहा, 'यह तो बस तमुहार जसैा एक इंसान ह, वह वही खाता ह जो तम खात हो, और वही पीता ह जो तम पीत हो।'	وَقَالَ الْمَلَاُ مِنْ قَوْمِهِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِلِقَاۤءِ الْاٰخِرَةِ وَاَتْرَفْنٰهُمْ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا مَا هٰذَآ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يَاْكُلُ مِمَّا تَاْكُلُوْنَ مِنْهُ وَيَشْرَبُ مِمَّا تَشْرَبُوْنَ
34	और अगर तम अपन जसै एक इंसान की बात मानत हो, तो नशि्चति रूप स तम नकुसान म पड़ जाओगे।	وَلَئِنْ اَطَعْتُمْ بَشَرًا مِّثْلَكُمْ اِنَّكُمْ اِذًا لَّخٰسِرُوْنَ
35	क्या वह तमुस यह वादा करता ह कि जब तम मर जाओ और मटि्टी और हड्डयिाँ बन जाओ, तो तम दोबारा नकिाल जाओगे?	اَيَعِدُكُمْ اَنَّكُمْ اِذَا مِتُّمْ وَكُنْتُمْ تُرَابًا وَّعِظَامًا اَنَّكُمْ مُّخْرَجُوْنَ
36	हाय! हाय! जो तमुस वादा कयिा गया ह, वह (कसै हो सकता ह)!	هَيْهَاتَ هَيْهَاتَ لِمَا تُوْعَدُوْنَ
37	यह तो बस हमारी दनुयिा की ज़िंदगी ह, हम जीत ह और मरत ह, और हम दोबारा नहीं उठाए जाएंगे।	اِنْ هِيَ اِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا نَمُوْتُ وَنَحْيَا وَمَا نَحْنُ بِمَبْعُوْثِيْنَ
38	वह तो बस एक आदमी ह जसिन अल्लाह पर झठू गढ़ लयिा, और हम उस पर यकीन करन वाल नहीं ह।	اِنْ هُوَ اِلَّا رَجُلُ ِافْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا وَّمَا نَحْنُ لَهٗ بِمُؤْمِنِيْنَ

39	उसन`े (रसूल न`ी) दुआ की, 'ऐ मेर`े रब! मेरी मदद कर क़्योंक` उनहोंन`े मुझ`े झुठ्ला समझा।'	قَالَ رَبِّ انْصُرْنِيْ بِمَا كَذَّبُوْنِ
40	(अल्लाह न`ी) कहा, 'थोड़`ी ही समय म`ें व`े पछताएंगे।'	قَالَ عَمَّا قَلِيْلٍ لَّيُصْبِحُنَّ نٰدِمِيْنَ
41	तो एक भयानक चीख़ न`े उनह`ें सचमुच पकड़ लिया, और हमन`े उनह`ें कूड़ा-करकट बना दिया। तो उन काफ़िरों क`े लिए तबाही हो!	فَاَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ بِالْحَقِّ فَجَعَلْنٰهُمْ غُثَاۤءً فَبُعْدًا لِّلْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ
42	फ़िर उनक`े बाद हमन`े दूसरी कौमों को पैदा किया।	ثُمَّ اَنْشَاْنَا مِنْۢ بَعْدِهِمْ قُرُوْنًا اٰخَرِيْنَ
43	कोई कौम अपन`े वक़्त स`े पहल`े नहीं जा सकती, और न ही उस`े टाल सकती ह`ै	مَا تَسْبِقُ مِنْ اُمَّةٍ اَجَلَهَا وَمَا يَسْتَاْخِرُوْنَ
44	फ़िर हमन`े अपन`े रसूलों को एक क`े बाद एक भेजा। हर बार जब कोई रसूल अपनी कौम क`े पास आया, उनहोंन`े उस`े झुठ्लाया, तो हमन`े कुछ को कुछ क`े बाद (नाश म`ें) डाल दिया। और हमन`े उनह`ें कहानियों का हिस्सा बना दिया। तो उन कौमों क`े लिए तबाही हो जो ईमान नहीं लाए!	ثُمَّ اَرْسَلْنَا رُسُلَنَا تَتْرَا كُلَّمَا جَاۤءَ اُمَّةً رَّسُوْلُهَا كَذَّبُوْهُ فَاَتْبَعْنَا بَعْضَهُمْ بَعْضًا وَّجَعَلْنٰهُمْ اَحَادِيْثَ فَبُعْدًا لِّقَوْمٍ لَّا يُؤْمِنُوْنَ
45	फ़िर हमन`े मूसा और उनक`े भाई हारून को अपनी निशानियों और सुस्पष्ट दलील क`े साथ भेजा,	ثُمَّ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى وَاَخَاهُ هٰرُوْنَ بِاٰيٰتِنَا وَسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ
46	फ़िरऔन और उसकी कौम क`े सरदारों क`े पास, लेकिन व`े घमंड म`ें आ गए, और व`े वाक़ई एक बुलंदी वाली कौम थी।	اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهٖ فَاسْتَكْبَرُوْا وَكَانُوْا قَوْمًا عَالِيْنَ
47	तो उनहोंन`े कहा, 'क्या हम दो ऐस`े इंसानों पर यक़ीन कर`ें जो हमार`े जैस`े ह`ैं, जबकि उनकी कौम (बनी इस्राइल) हमार`े ग़ुलाम ह`ै?'	فَقَالُوْۤا اَنُؤْمِنُ لِبَشَرَيْنِ مِثْلِنَا وَقَوْمُهُمَا لَنَا عٰبِدُوْنَ
48	तो उनहोंन`े दोनों को झुठ्लाया, इसलिए व`े उन लोगों म`ें शामिल हो गए जिन्ह`ें नाश किया गया।	فَكَذَّبُوْهُمَا فَكَانُوْا مِنَ الْمُهْلَكِيْنَ
49	और निश्चित रूप स`े हमन`े मूसा को किताब (तौरात) दी, ताकि व`े (बनी इस्राइल) हिदायत पाएँ	وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ لَعَلَّهُمْ يَهْتَدُوْنَ
50	और हमन`े मरयम क`े बेट`े (ईसा) और उनकी माँ को एक निशानी बनाया, और हमन`े उनह`ें एक ऊँची जगह पर पनाह दी, जो शांत थी, हरी-भरी थी और जहाँ पानी क`े स्रोत बहत`े थे।	وَجَعَلْنَا ابْنَ مَرْيَمَ وَاُمَّهٗۤ اٰيَةً وَّاٰوَيْنٰهُمَاۤ اِلٰى رَبْوَةٍ ذَاتِ قَرَارٍ وَّمَعِيْنٍ
51	(अल्लाह न`ी) कहा, 'ऐ रसूलो! अच्छी और पाक चीज़`ें ख़ाओ और नेक काम करो। निश्चित रूप स`े म`ैं तुमुहार`े कामों को अच्छी तरह जानता हूँ।'	يٰۤاَيُّهَا الرُّسُلُ كُلُوْا مِنَ الطَّيِّبٰتِ وَاعْمَلُوْا صَالِحًا اِنِّيْ بِمَا تَعْمَلُوْنَ عَلِيْمٌ
52	और निश्चित रूप स`े यह तुमुहारा दीन ह`ै एक ही दीन, और म`ै तुमुहारा रब हूँ तो मुझस`े डरो।'	وَاِنَّ هٰذِهٖۤ اُمَّتُكُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّاَنَا رَبُّكُمْ فَاتَّقُوْنِ

53	फरि भी व॒अपन॒दीन क॒मामल॒म॑अलग-अलग गरिोह॑म॑बट॑ गए। हर गरिोह अपन॒पास जो था, उस पर इतरान॒लगा।	فَتَقَطَّعُوْٓا اَمْرَهُمْ بَيْنَهُمْ زُبُرًا كُلُّ حِزْبٍۢ بِمَا لَدَيْهِمْ فَرِحُوْنَ
54	तो उनह॑उनकी गमुराही म॑तब तक छोड़ दो जब तक कि नयित समय न आए।	فَذَرْهُمْ فِيْ غَمْرَتِهِمْ حَتّٰى حِيْنٍ
55	क्या व॒समझत॒हे॑कि हम॒जो माल और औलाद उनह॑दी ह॑,	اَيَحْسَبُوْنَ اَنَّمَا نُمِدُّهُمْ بِهٖ مِنْ مَّالٍ وَّبَنِيْنَ
56	वह इसलिए ह॑कि हम उनक॒लिए जलद़ी-जलद़ी नकेयिा॑ला रह॒ ह॑? (नही), बलक॑व॒समझत॒नही॑ह॑।	نُسَارِعُ لَهُمْ فِى الْخَيْرٰتِ بَلْ لَّا يَشْعُرُوْنَ
57	नश्चिति रप॒स॒, जो लोग अपन॒रब क॒अज़ाब स॒डरत॒ह॑और बहत॒ सावधान रहत॒ह॑,	اِنَّ الَّذِيْنَ هُمْ مِّنْ خَشْيَةِ رَبِّهِمْ مُّشْفِقُوْنَ
58	और जो अपन॒रब की नशिानयिो॑पर ईमान लात॒ह॑,	وَالَّذِيْنَ هُمْ بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ يُؤْمِنُوْنَ
59	और जो अपन॒रब क॒साथ कसिी को शरीक नही॑करत॒,	وَالَّذِيْنَ هُمْ بِرَبِّهِمْ لَا يُشْرِكُوْنَ
60	और जो जो कछु दते॒ह॑(ख़रैात), उस॒इस डर क॒साथ दते॒ह॑कि उनह॑अपन॒रब क॒पास लौटना ह॑,	وَالَّذِيْنَ يُؤْتُوْنَ مَآ اٰتَوْا وَّقُلُوْبُهُمْ وَجِلَةٌ اَنَّهُمْ اِلٰى رَبِّهِمْ رٰجِعُوْنَ
61	वही लोग ह॑जो नकेयिो॑म॒जलद़ी करत॒ह॑, और वही लोग ह॑जो उनम॑सबस॒आग॒ह॑।	اُولٰٓئِكَ يُسَارِعُوْنَ فِى الْخَيْرٰتِ وَهُمْ لَهَا سٰبِقُوْنَ
62	और हम कसिी को उसकी ताकत स॒ज़्यादा बोझ नही॑डालत॒, और हमार॒पास एक कताि ब ह॑जो सच बोलती ह॑, और उनह॑ जलु़्म नही॑कयिा जाएगा।	وَلَا نُكَلِّفُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا وَلَدَيْنَا كِتٰبٌ يَّنْطِقُ بِالْحَقِّ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ
63	लकेनि (काफरि॑क॑) दलि इस (कुआन) स॒गमुराही म॒ह॑, और उनक॒पास (बुरी) काम ह॑जो व॒करत॒रेहत॒ह॑।	بَلْ قُلُوْبُهُمْ فِيْ غَمْرَةٍ مِّنْ هٰذَا وَلَهُمْ اَعْمَالٌ مِّنْ دُوْنِ ذٰلِكَ هُمْ لَهَا عٰمِلُوْنَ
64	यहा॑तक कि जब हम उनम॑स॒ऐशो-आराम वालो॑पर अज़ाब डालत॒ह॑, तो व॒फौरन चीख़न॒-चलि़ान॒लगत॒ह॑।	حَتّٰٓى اِذَآ اَخَذْنَا مُتْرَفِيْهِمْ بِالْعَذَابِ اِذَا هُمْ يَجْـَٔرُوْنَ
65	आज क॒दनि चीख़ो-चलि़ाओ मत! नश्चिति रप॒स॒, तमु॒ह॑ हमस॒कोई मदद नही॑मलिेगी।	لَا تَجْـَٔرُوا الْيَوْمَ اِنَّكُمْ مِّنَّا لَا تُنْصَرُوْنَ
66	मरेी आयत॑(कुआन) तमु॒ह॑हमशेा पढ़कर सनु॒ाई जाती थी॑, लकेनि तमु॒ हमशेा पीछ॒हट जात॒थ॒,	قَدْ كَانَتْ اٰيٰتِيْ تُتْلٰى عَلَيْكُمْ فَكُنْتُمْ عَلٰٓى اَعْقَابِكُمْ تَنْكِصُوْنَ
67	जब तमु॒ रात को बातचीत करत॒हो तो उसक॒वरिुद्ध घमण्ड और बुरी बात॑बोलत॒हो।	مُسْتَكْبِرِيْنَ بِهٖ سٰمِرًا تَهْجُرُوْنَ
68	तो क्या उनहो॑न॒(अल्लाह क॑) कलाम पर गौर नही॑कयिा, या उनक॒पास वह आया जो उनक॒पुरखो॑क॒पास कभी नही॑आया?	اَفَلَمْ يَدَّبَّرُوا الْقَوْلَ اَمْ جَاءَهُمْ مَّا لَمْ يَأْتِ اٰبَاءَهُمُ الْاَوَّلِيْنَ

69	या उनहोंने अपने रसूल को नहीं पहचाना, इसलिए वे उसका इंकार करते हैं?	اَمْ لَمْ يَعْرِفُوْا رَسُوْلَهُمْ فَهُمْ لَه مُنْكِرُوْنَ
70	या वे कहते हैं, 'उसमें जुनून है'? नहीं, बल्कि वह उनके पास हक (सच) लेकर आया, लेकिन उनमें से ज़्यादातर लोग हक को नापसंद करते हैं।	اَمْ يَقُوْلُوْنَ بِه جِنَّةٌ بَلْ جَاءَهُمْ بِالْحَقِّ وَاَكْثَرُهُمْ لِلْحَقِّ كٰرِهُوْنَ
71	और अगर हक उनकी ख़्वाहिशों के मुताबिक चलता, तो आसमान और ज़मीन और जो कुछ उनमें है, सब बरबाद हो जाता। नहीं, बल्कि हम उनके पास उनकी नसीहत लेकर आए, लेकिन वे अपनी नसीहत से मुँह फेरते हैं।	وَلَوِ اتَّبَعَ الْحَقُّ اَهْوَاءَهُمْ لَفَسَدَتِ السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ وَمَنْ فِيْهِنَّ بَلْ اَتَيْنٰهُمْ بِذِكْرِهِمْ فَهُمْ عَنْ ذِكْرِهِمْ مُّعْرِضُوْنَ
72	या क्या तुम (मुहम्मद) उनसे कोई जज़िया (कर) माँगते हो? नहीं, बल्कि तुम्हारे रब का बदला सबसे बेहतर है, और वही सबसे अच्छा रज़िक़ देने वाला है।	اَمْ تَسْـَٔلُهُمْ خَرْجًا فَخَرَاجُ رَبِّكَ خَيْرٌ وَّهُوَ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ
73	और निश्चित रूप से, तुम उन्हें सीधे रास्ते की ओर बुलाते हो।	وَاِنَّكَ لَتَدْعُوْهُمْ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ
74	और निश्चित रूप से, जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं लाते, वे सीधे रास्ते से बहुत दूर भटक गए हैं।	وَاِنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ عَنِ الصِّرَاطِ لَنٰكِبُوْنَ
75	और अगर हम उन पर रहम करते और उनकी मुसीबत को दूर कर देते, तो भी वे अपनी गुमराही में भटकते रहते।	وَلَوْ رَحِمْنٰهُمْ وَكَشَفْنَا مَا بِهِمْ مِّنْ ضُرٍّ لَّلَجُّوْا فِيْ طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ
76	और निश्चित रूप से, हमने उन पर अज़ाब डाला, लेकिन वे अपने रब के सामने न झुके और न ही गिड़गिड़ाए।	وَلَقَدْ اَخَذْنٰهُمْ بِالْعَذَابِ فَمَا اسْتَكَانُوْا لِرَبِّهِمْ وَمَا يَتَضَرَّعُوْنَ
77	यहाँ तक कि जब हमने उनके लिए सख़्त अज़ाब का दरवाज़ा खोला, तो वे एकदम नाउम्मीद हो गए।	حَتّٰٓى اِذَا فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَابًا ذَا عَذَابٍ شَدِيْدٍ اِذَا هُمْ فِيْهِ مُبْلِسُوْنَ
78	और वही है जिसने तुम्हारे लिए सुनने की शक्ति, देखने की शक्ति और दिल बनाए, लेकिन तुम बहुत कम शुक्र करते हो।	وَهُوَ الَّذِيْٓ اَنْشَاَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَالْاَفْـِٕدَةَ قَلِيْلًا مَّا تَشْكُرُوْنَ
79	और वही है जिसने तुम्हें ज़मीन पर फैलाया और उसी की ओर तुम्हें इकट्ठा किया जाएगा।	وَهُوَ الَّذِيْ ذَرَاَكُمْ فِى الْاَرْضِ وَاِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ
80	और वही है जो ज़िंदा करता है और मारता है, और उसी के लिए रात और दिन का बदलना है, तो क्या तुम समझते नहीं?	وَهُوَ الَّذِيْ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ وَلَهُ اخْتِلَافُ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ
81	बल्कि उन्होंने वही बात कही जो उनके पुरखों ने कही थी।	بَلْ قَالُوْا مِثْلَ مَا قَالَ الْاَوَّلُوْنَ
82	वे बोले, 'क्या सचमुच, जब हम मर जाएँ और मिट्टी और हड्डियाँ बन जाएँ, तो हम दोबारा उठाए जाएंगे?'	قَالُوْٓا ءَاِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَّعِظَامًا ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ

83	नश्चिति रूप स, यह वादा हम और हमारे पुरखों को पहले भी किया गया था, यह तो बस पुराने लोगों की कहानियाँ हैं'	لَقَدْ وُعِدْنَا نَحْنُ وَاٰبَاؤُنَا هٰذَا مِنْ قَبْلُ اِنْ هٰذَآ اِلَّآ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ
84	कहो (मुहम्मद), 'ज़मीन और उसमें जो कुछ है, वह किसका है, अगर तुम जानते हो?'	قُلْ لِّمَنِ الْاَرْضُ وَمَنْ فِيْهَآ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ
85	वे जवाब देंगे, 'अल्लाह का।' कहो, 'तो क्या तुम याद नहीं करते?'	سَيَقُوْلُوْنَ لِلّٰهِ قُلْ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ
86	कहो, 'सात आसमानों का मालिक और बड़े अर्श का मालिक कौन है?'	قُلْ مَنْ رَّبُّ السَّمٰوٰتِ السَّبْعِ وَرَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ
87	वे जवाब देंगे, '(वह) अल्लाह (का है)।' कहो, 'तो क्या तुम (उससे) नहीं डरते?'	سَيَقُوْلُوْنَ لِلّٰهِ قُلْ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ
88	कहो, 'वह कौन है जिसके हाथ में हर चीज़ की सत्ता है, वह (सबको) पनाह देता है, और उसके (अज़ाब) से कोई पनाह नहीं पा सकता, अगर तुम जानते हो?'	قُلْ مَنْ بِيَدِهٖ مَلَكُوْتُ كُلِّ شَيْءٍ وَّهُوَ يُجِيْرُ وَلَا يُجَارُ عَلَيْهِ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ
89	वे जवाब देंगे, '(वह) अल्लाह (का है)।' कहो, 'तो तुम कैसे बहक गए?'	سَيَقُوْلُوْنَ لِلّٰهِ قُلْ فَاَنّٰى تُسْحَرُوْنَ
90	बल्कि हम उनके पास हक (सच) लेकर आए, लेकिन वे बेशक झूठे हैं	بَلْ اَتَيْنٰهُمْ بِالْحَقِّ وَاِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ
91	अल्लाह ने कोई औलाद नहीं बनाई, और न ही उसके साथ कोई दूसरा माबूद (इलाह) है (अगर ऐसा होता) तो हर माबूद अपनी बनाई सृष्टि को ले जाता, और कुछ माबूद दूसरों पर ग़लबा पा लेते। महान है अल्लाह, उससे ऊँचा जो कुछ वे बयान करते हैं,	مَا اتَّخَذَ اللّٰهُ مِنْ وَّلَدٍ وَّمَا كَانَ مَعَهٗ مِنْ اِلٰهٍ اِذًا لَّذَهَبَ كُلُّ اِلٰهٍۢ بِمَا خَلَقَ وَلَعَلَا بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يَصِفُوْنَ
92	वह जो ग़ैब (छुपा हुआ) और ज़ाहिर (प्रकट) को जानता है। वह उससे बहुत ऊँचा है जिसे वे शरीक करते हैं।	عٰلِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ
93	कहो (मुहम्मद), 'ऐ मेरे रब! अगर तू मुझे वह (अज़ाब) दिखाना चाहे जो उनसे वादा किया गया है,	قُلْ رَّبِّ اِمَّا تُرِيَنِّيْ مَا يُوْعَدُوْنَ
94	ऐ मेरे रब! मुझे उन ज़ालिमों के साथ न रख।'	رَبِّ فَلَا تَجْعَلْنِيْ فِى الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ
95	और निश्चित रूप से, हम उस (अज़ाब) को तुझे दिखाने की ताकत रखते हैं जो हमने उनसे वादा किया है।	وَاِنَّا عَلٰٓى اَنْ نُّرِيَكَ مَا نَعِدُهُمْ لَقٰدِرُوْنَ
96	उनके बुरे कामों को सबसे अच्छे तरीके से टालो, हम बेहतर जानते हैं कि वे क्या बयान करते हैं।	اِدْفَعْ بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ السَّيِّئَةَ نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَا يَصِفُوْنَ
97	और कहो, 'ऐ मेरे रब! मैं तेरी पनाह माँगता हूँ शैतानों की सुझावों से,	وَقُلْ رَّبِّ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ هَمَزٰتِ الشَّيٰطِيْنِ
98	और मैं तेरी पनाह माँगता हूँ ऐ मेरे रब, कि वे मेरे पास न आएँ।'	وَاَعُوْذُ بِكَ رَبِّ اَنْ يَّحْضُرُوْنِ

99	(काफिरों की हालत ऐसी है कि) जब तक उनमें से किसी के पास मौत न आ जाए, वह कहता है, 'ऐ मेरे रब! मुझे (दुनिया में) वापस भेज दे,	حَتّٰٓى اِذَا جَاءَ اَحَدَهُمُ الْمَوْتُ قَالَ رَبِّ ارْجِعُوْنِ
100	ताकि मैं वह नेक काम कर सकूँ जो मैंने छोड़ दिया।' हरगिज़ नहीं! यह तो बस उसकी बात है जो वह कहता है और उनके सामने एक बरज़ख़ (रुकावट) है जब तक कि वे दोबारा न उठाए जाएँ।	لَعَلِّيْٓ اَعْمَلُ صَالِحًا فِيْمَا تَرَكْتُ كَلَّا اِنَّهَا كَلِمَةٌ هُوَ قَاۤىِٕلُهَا وَمِنْ وَّرَاۤىِٕهِمْ بَرْزَخٌ اِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ
101	जब सूर (नरसिंगा) फूंका जाएगा, तो उस दिन (क़ियामत के दिन) उनके बीच कोई रिश्तेदारी नहीं रहेगी, और न ही वे एक-दूसरे से सवाल करेंगे।	فَاِذَا نُفِخَ فِى الصُّوْرِ فَلَآ اَنْسَابَ بَيْنَهُمْ يَوْمَىِٕذٍ وَّلَا يَتَسَاۤءَلُوْنَ
102	जो कोई भी अपने नेकियों का वज़न भारी पाएगा, वही लोग हैं जो कामयाब होंगे।	فَمَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِيْنُهٗ فَاُولٰۤىِٕكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ
103	और जो कोई अपनी नेकियों का वज़न हलका पाएगा, वही लोग हैं जिन्होंने अपने आप को नुक़सान पहुँचाया, वे जहन्नम में हमेशा रहेंगे।	وَمَنْ خَفَّتْ مَوَازِيْنُهٗ فَاُولٰۤىِٕكَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ فِيْ جَهَنَّمَ خٰلِدُوْنَ
104	आग उनके चेहरों को जला देगी, और वे जहन्नम में उदास और विकृत होठों के साथ होंगे।	تَلْفَحُ وُجُوْهَهُمُ النَّارُ وَهُمْ فِيْهَا كٰلِحُوْنَ
105	क्या मेरी आयतें तुम्हें नहीं पढ़ी गई थीं, लेकिन तुम उन्हें झुठलाते थे?	اَلَمْ تَكُنْ اٰيٰتِيْ تُتْلٰى عَلَيْكُمْ فَكُنْتُمْ بِهَا تُكَذِّبُوْنَ
106	वे कहेंगे, 'ऐ हमारे रब! हमारी बदकिस्मती हम पर हावी हो गई, और हम गुमराह लोग थे।'	قَالُوْا رَبَّنَا غَلَبَتْ عَلَيْنَا شِقْوَتُنَا وَكُنَّا قَوْمًا ضَاۤلِّيْنَ
107	ऐ हमारे रब! हमें इससे (आग से) निकाल दे, अगर हम फिर (गुनाह) करें, तो हम ज़ालिम होंगे।'	رَبَّنَآ اَخْرِجْنَا مِنْهَا فَاِنْ عُدْنَا فَاِنَّا ظٰلِمُوْنَ
108	वह (अल्लाह) कहेगा, 'वहीं रहो और मुझसे बात न करो।'	قَالَ اخْسَـُٔوْا فِيْهَا وَلَا تُكَلِّمُوْنِ
109	निश्चित रूप से, मेरे बंदों में से एक गरोह था जो कहता था, 'ऐ हमारे रब! हम ईमान लाए, तो हमें बख़्श दे और हम पर रहम कर, तू सबसे अच्छा रहम करने वाला है।'	اِنَّهٗ كَانَ فَرِيْقٌ مِّنْ عِبَادِيْ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَآ اٰمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا وَاَنْتَ خَيْرُ الرّٰحِمِيْنَ
110	लेकिन तुमने उनका मज़ाक उड़ाया, यहाँ तक कि उन्होंने तुम्हें मेरी याद से भुला दिया, और तुम उन पर हँसते रहे।	فَاتَّخَذْتُمُوْهُمْ سِخْرِيًّا حَتّٰٓى اَنْسَوْكُمْ ذِكْرِيْ وَكُنْتُمْ مِّنْهُمْ تَضْحَكُوْنَ
111	निश्चित रूप से, मैंने आज उन्हें उनके सब्र का बदला दिया, क्योंकि वे ही कामयाब होने वाले हैं।	اِنِّيْ جَزَيْتُهُمُ الْيَوْمَ بِمَا صَبَرُوْٓا اَنَّهُمْ هُمُ الْفَاۤىِٕزُوْنَ
112	वह (अल्लाह) कहेगा, 'तुम ज़मीन पर कितने साल रहे?'	قٰلَ كَمْ لَبِثْتُمْ فِى الْاَرْضِ عَدَدَ سِنِيْنَ

قَالُوْا لَبِثْنَا يَوْمًا اَوْ بَعْضَ يَوْمٍ فَسْـَٔلِ الْعَاۤدِّيْنَ	व॒कहगे॒, 'हम एक दनि या उसका कछ हसि़सा रह॒ तो अपन॒ गनिन॒वालो॑स॒पछ॒ल॑ो'	**113**
قٰلَ اِنْ لَّبِثْتُمْ اِلَّا قَلِيْلًا لَّوْ اَنَّكُمْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ	वह (अल़लाह) कहगेा, 'तम॒ बस थोड़ा ही वक़त रह॒ काश तम॒ जानत!'	**114**
اَفَحَسِبْتُمْ اَنَّمَا خَلَقْنٰكُمْ عَبَثًا وَّاَنَّكُمْ اِلَيْنَا لَا تُرْجَعُوْنَ	क़या तम॒न॒समझा कि॑हमन॒तम॒ह॑ बकेार बनाया और तम॒ह॑ हमार॒पास नहीं॑लौटना था?	**115**
فَتَعٰلَى اللّٰهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيْمِ	तो महान ह॑अल़लाह, सच़चा बादशाह; उसक॒सवि कोई माबद॒ (इलाह) नहीं॑, वह अरश-ए-मक़ररमा का मालकि ह॑	**116**
وَمَنْ يَّدْعُ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ لَا بُرْهَانَ لَهٗ بِهٖ فَاِنَّمَا حِسَابُهٗ عِنْدَ رَبِّهٖ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الْكٰفِرُوْنَ	और जो कोई अल़लाह क॒साथ कसी दूसर॒माबद॒ की इबादत करता ह॑, जसिक॒लएि उसक॒पास कोई दलील नहीं॑, तो उसका हसिाब उसक॒रब क॒पास ह॑ नशि़चति रप॒ स॒ काफरि कामयाब नहीं॑ होंग॑े	**117**
وَقُلْ رَّبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَاَنْتَ خَيْرُ الرّٰحِمِيْنَ	और कहो (मह॒मम॒द), 'ऐ मर॒रब! माफ कर और रहम कर, त॒ सबस॒अचछा रहम करन॒वाला ह॑'	**118**

छंदों की संख़्या	اَلنُّور	मदनी
६४	एक-नूर - 24	मदनी

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

एक-नूर (प्रकाश)

1	यह एक सूरह है जिसे हमने उतारा और इसके (हुक़्मों को) लागू करना अनिवार्य किया, और इसमें हमने स्पष्ट निशानियाँ (अल्लाह की महानता की) उतारीं, ताकि तुम याद रखो।	سُوْرَةٌ اَنْزَلْنٰهَا وَفَرَضْنٰهَا وَاَنْزَلْنَا فِيْهَآ اٰيٰتٍ بَيِّنٰتٍ لَّعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ
2	ज़िना करने वाली औरत और ज़िना करने वाला मर्द, उनमें से प्रत्येक को सौ कोड़े मारो, और अगर तुम अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखते हो, तो उन दोनों पर दया का भाव तुम्हें अल्लाह के दीन (हुक़्म) को लागू करने से न रोके; और उनके हुक़्म की तामील को कुछ ईमान वालों की मौजूदगी में देखा जाए।	اَلزَّانِيَةُ وَالزَّانِيْ فَاجْلِدُوْا كُلَّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا مِائَةَ جَلْدَةٍ وَّلَا تَأْخُذْكُمْ بِهِمَا رَأْفَةٌ فِيْ دِيْنِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَلْيَشْهَدْ عَذَابَهُمَا طَآئِفَةٌ مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ
3	ज़िना करने वाला मर्द केवल ज़िना करने वाली औरत या मुशरिक औरत से निकाह कर सकता है; और ज़िना करने वाली औरत केवल ज़िना करने वाला मर्द या मुशरिक मर्द से निकाह कर सकती है; और यह (निकाह) मोमिनों के लिए हराम किया गया है।	اَلزَّانِيْ لَا يَنْكِحُ اِلَّا زَانِيَةً اَوْ مُشْرِكَةً وَّالزَّانِيَةُ لَا يَنْكِحُهَآ اِلَّا زَانٍ اَوْ مُشْرِكٌ وَحُرِّمَ ذٰلِكَ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ
4	और जो लोग अच्छी औरतों पर (ज़िना का) इल्ज़ाम लगाते हैं और चार गवाह पेश नहीं करते, उन्हें अस्सी कोड़े मारो, और उनकी गवाही को हमेशा के लिए स्वीकार न करो। वे ही लोग हैं जो फासिक़ हैं,	وَالَّذِيْنَ يَرْمُوْنَ الْمُحْصَنٰتِ ثُمَّ لَمْ يَأْتُوْا بِاَرْبَعَةِ شُهَدَاءَ فَاجْلِدُوْهُمْ ثَمٰنِيْنَ جَلْدَةً وَّلَا تَقْبَلُوْا لَهُمْ شَهَادَةً اَبَدًا وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ
5	सिवाय उनके जो इसके बाद तौबा करें और अपनी सुधार करें, तो निश्चित रूप से अल्लाह बहुत क्षमाशील, दयालु है।	اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا مِنْ بَعْدِ ذٰلِكَ وَاَصْلَحُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ
6	और जो लोग अपनी पत्नियों पर (ज़िना का) इल्ज़ाम लगाते हैं, और उनके पास अपने सिवाय कोई गवाह नहीं है, तो उनमें से प्रत्येक की गवाही यह है कि वह चार बार अल्लाह की कसम खाए कि वह निश्चित रूप से सच्चा है।	وَالَّذِيْنَ يَرْمُوْنَ اَزْوَاجَهُمْ وَلَمْ يَكُنْ لَّهُمْ شُهَدَاءُ اِلَّآ اَنْفُسُهُمْ فَشَهَادَةُ اَحَدِهِمْ اَرْبَعُ شَهٰدٰتٍ بِاللّٰهِ اِنَّهٗ لَمِنَ الصّٰدِقِيْنَ
7	और पाँचवीं (कसम) यह कि अगर वह झूठा हुआ तो उस पर अल्लाह की लानत हो।	وَالْخَامِسَةُ اَنَّ لَعْنَتَ اللّٰهِ عَلَيْهِ اِنْ كَانَ مِنَ الْكٰذِبِيْنَ
8	और वह औरत (पत्नी) सजा से बच जाएगी अगर वह चार बार अल्लाह की कसम खाए कि वह (उसका पति) निश्चित रूप से झूठा है,	وَيَدْرَؤُا عَنْهَا الْعَذَابَ اَنْ تَشْهَدَ اَرْبَعَ شَهٰدٰتٍ بِاللّٰهِ اِنَّهٗ لَمِنَ الْكٰذِبِيْنَ

9	और पाचँवीं (कसम) यह कि अगर वह (उसका पती) सचचा हुआ तो उस पर (पतनी पर) अललाह का गुससा हो।	وَالْخَامِسَةَ اَنَّ غَضَبَ اللّٰهِ عَلَيْهَآ اِنْ كَانَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ
10	और अगर अललाह की महेरबानी और रहमत तुम पर न होती (तो तुम मुशकलि मेंपड़ जाते)। और नशिचति रूप सेअललाह बहुत तौबा कबूल करनेवाला, हकिमत वाला है।	وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُه وَاَنَّ اللّٰهَ تَوَّابٌ حَكِيْمٌ
11	नशिचति रूप से, जो लोग झठूी खबर लाए, वेतुम ही मेंसेएक गरिोह है। इसेअपनेलिए बुरा न समझो, बलकि यह तुमहारे लिए अचछा है। उनमेंसेपरतयेक को उसकेकिए हुए गुनाह का बदला मलिेगा। और उनमेंसेजसिनेइस (गुनाह) का बड़ा हसिसा लयिा, उसेबड़ा अज़ाब मलिेगा।	اِنَّ الَّذِيْنَ جَاءُوْ بِالْاِفْكِ عُصْبَةٌ مِّنْكُمْ لَا تَحْسَبُوْهُ شَرًّا لَّكُمْ بَلْ هُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ لِكُلِّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ مَّا اكْتَسَبَ مِنَ الْاِثْمِ وَالَّذِيْ تَوَلّٰى كِبْرَه مِنْهُمْ لَه عَذَابٌ عَظِيْمٌ
12	जब तुमनेवह (झठूी खबर) सुनी, तो मोमनि मरदों और औरतोंने अपनेआप पर अचछा गुमान कयों नहीं कयिा और कयों नहीं कहा, 'यह तो सपषट झठू है'	لَوْلَآ اِذْ سَمِعْتُمُوْهُ ظَنَّ الْمُؤْمِنُوْنَ وَالْمُؤْمِنٰتُ بِاَنْفُسِهِمْ خَيْرًا وَّقَالُوْا هٰذَآ اِفْكٌ مُّبِيْنٌ
13	उनहोंने (इलज़ाम लगानेवालों ने) चार गवाह कयों नहीं लाए? चूंकि वे गवाह नहीं लाए, तो अललाह की नज़र मेंवेही झठेू हैं।	لَوْلَا جَاءُوْ عَلَيْهِ بِاَرْبَعَةِ شُهَدَاءَ فَاِذْ لَمْ يَأْتُوْا بِالشُّهَدَاءِ فَاُولٰٓئِكَ عِنْدَ اللّٰهِ هُمُ الْكٰذِبُوْنَ
14	और अगर दुनयिा और आखरित मेंअललाह की महेरबानी और रहमत तुम पर न होती, तो तुमहारी उस (झठूी) बातचीत की वजह सेतुम पर बड़ा अज़ाब आ पड़ता।	وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُه فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ لَمَسَّكُمْ فِيْ مَآ اَفَضْتُمْ فِيْهِ عَذَابٌ عَظِيْمٌ
15	(याद करो) जब तुम इसे(झठूी खबर को) एक-दूसरेके मुहँ से लतेे थेऔर अपने मुहँ से वह कहत थे जसिकेबारे मेंतुमहेंजरा भी इलम नहीं था, और तुम इसे मामूली समझतेथे, जबकि अललाह की नज़र मेंयह बहुत बड़ी बात थी।	اِذْ تَلَقَّوْنَه بِاَلْسِنَتِكُمْ وَتَقُوْلُوْنَ بِاَفْوَاهِكُمْ مَّا لَيْسَ لَكُمْ بِه عِلْمٌ وَّتَحْسَبُوْنَه هَيِّنًا وَّهُوَ عِنْدَ اللّٰهِ عَظِيْمٌ
16	और जब तुमनेइस सुना, तो तुमनेकयों नहीं कहा, 'हमारेलिए इसका ज़कि्र करना उचति नहीं है। तू(अललाह) महान है, यह बहुत बड़ा झठू है'	وَلَوْلَآ اِذْ سَمِعْتُمُوْهُ قُلْتُمْ مَّا يَكُوْنُ لَنَآ اَنْ نَّتَكَلَّمَ بِهٰذَا سُبْحٰنَكَ هٰذَا بُهْتَانٌ عَظِيْمٌ
17	अललाह तुमहेंनसीहत करता है कि अगर तुम मोमनि हो तो फरि कभी ऐसा न दोहराओ,	يَعِظُكُمُ اللّٰهُ اَنْ تَعُوْدُوْا لِمِثْلِه اَبَدًا اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ
18	और अललाह तुमहारेलिए अपनी आयतों को सपषट करता है और अललाह सब कछु जाननेवाला, हकिमत वाला है।	وَيُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ
19	नशिचति रूप से, जो लोग चाहते हैं कि बहुत घनिौनी बात (झठूी खबर) ईमान वालों केबीच फलै जाए, उनहेंदुनयिा और आखरित मेंदरदनाक अज़ाब मलिेगा। और अललाह जानता है, जबकि तुम नहीं जानते।	اِنَّ الَّذِيْنَ يُحِبُّوْنَ اَنْ تَشِيْعَ الْفَاحِشَةُ فِى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ
20	और अगर अललाह की महेरबानी और रहमत तुम पर न होती (तो तुमहेंबड़ा अज़ाब भगुतना पड़ता)। नशिचति रूप से, अललाह बहुत नरमदलि, दयालु है।	وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُه وَاَنَّ اللّٰهَ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ

21	ऐ ईमान वालो! शतैान क॓ कदमों पर न चलो। जो कोई शतैान क॓ कदमों पर चलगेा, तो नशि़ति रप्र स॓ वह (शतैान) उस॓ घनिौन॓ और नाजायज़ काम करन॓ का हक़ुम दतेा ह॑ै अगर अल़लाह की महेरबानी और रहमत तमु पर न होती, तो तमु॑स॓ कोई भी कभी (इन घनिौन॓ और नाजायज़ कामों स॑े) पाक न रह पाता, लकेनि अल़लाह जसि॓ चाहता ह॑ै उस॓ पाक करता ह॑ै और अल़लाह सब कछु सनु॓नवेाला, जानन॓वेाला ह॑ै	يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ وَمَنْ يَّتَّبِعْ خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ فَاِنَّهٗ يَأْمُرُ بِالْفَحْشَاۤءِ وَالْمُنْكَرِ وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهٗ مَا زَكٰى مِنْكُمْ مِّنْ اَحَدٍ اَبَدًا وَّلٰكِنَّ اللّٰهَ يُزَكِّيْ مَنْ يَّشَاۤءُ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ
22	और तमु॑म॓ स॓ जो लोग बरकत और वसि़तार (धन) वाल॓ ह॑ै, उन॓ह॑ कसम न खानी चाहए॑ कि व॓ अपन॓ रशि़तदेारों, गरीबों और अल़लाह की राह म॑े हजिरत करन॓वालों को (मदद) न दगे॑, और उन॓ह॑ माफ करना और उदार होना चाहए॑। क॒या तमु नहीं चाहत॓ कि अल़लाह तमु॓ह॑ माफ कर? और अल़लाह बहत॒ क॒षमाशील, दयाल॒ ह॑ै	وَلَا يَأْتَلِ اُولُوا الْفَضْلِ مِنْكُمْ وَالسَّعَةِ اَنْ يُّؤْتُوْٓا اُولِى الْقُرْبٰى وَالْمَسٰكِيْنَ وَالْمُهٰجِرِيْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَلْيَعْفُوْا وَلْيَصْفَحُوْا اَلَا تُحِبُّوْنَ اَنْ يَّغْفِرَ اللّٰهُ لَكُمْ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ
23	नशि़ति रप्र स॓, जो लोग अच्छी, बपेरवाह और ईमान वाली औरतों पर (ज़नि॑ा का) इलज़ाम लगात॓ ह॑ै, व॓ दन॒यिा और आख़रि॑त म॑े लानत कए॑ गए ह॑ै, और उन॓ह॑ बड़ा अज़ाब मलिगेा,	اِنَّ الَّذِيْنَ يَرْمُوْنَ الْمُحْصَنٰتِ الْغٰفِلٰتِ الْمُؤْمِنٰتِ لُعِنُوْا فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ
24	उस दनि॑, (जब) उनकी ज़बान॑, उनक॓ हाथ और उनक॓ पर॑ै उनक॓ ख़लिाफ गवाही दग॑े कि उन॓होंन॓ क॒या कयिा था।	يَّوْمَ تَشْهَدُ عَلَيْهِمْ اَلْسِنَتُهُمْ وَاَيْدِيْهِمْ وَاَرْجُلُهُمْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ
25	उस दनि॑ अल़लाह उन॓ह॑ उनका पू॒रा बदला दग॑ा, और व॓ जान पड़ग॑े कि अल़लाह ही सच॒ा और स॒पष॒ट करन॓वाला ह॑ै	يَوْمَئِذٍ يُّوَفِّيْهِمُ اللّٰهُ دِيْنَهُمُ الْحَقَّ وَيَعْلَمُوْنَ اَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْحَقُّ الْمُبِيْنُ
26	घनिौनी औरत॑ घनिौन॓ मरद॒ों क॓ लए॑ ह॑ै, और घनिौन॓ मरद॒ घनिौनी औरतों क॓ लए॑ ह॑ै, जबकि अच्छी औरत॑ अच्छ॓ मरद॒ों क॓ लए॑ ह॑ै और अच्छ॓ मरद॒ अच्छी औरतों क॓ लए॑ ह॑ै। व॓ (अच्छ॓ लोग) उन इलज़ामों स॓ पाक ह॑ै जो लोग लगात॓ ह॑ै। उनक॓ लए॑ माफी और सम॒मानजनक रज़िक़ (जन॒नत) ह॑ै	اَلْخَبِيْثٰتُ لِلْخَبِيْثِيْنَ وَالْخَبِيْثُوْنَ لِلْخَبِيْثٰتِ وَالطَّيِّبٰتُ لِلطَّيِّبِيْنَ وَالطَّيِّبُوْنَ لِلطَّيِّبٰتِ اُولٰٓئِكَ مُبَرَّءُوْنَ مِمَّا يَقُوْلُوْنَ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ كَرِيْمٌ
27	ऐ ईमान वालो! अपन॓ घरों क॓ अलावा कसिी और क॓ घर म॑े प॒रवशे न करो जब तक कि तमु इजाज़त न माँग लो और वहाँ क॓ रहन॓वालों को सलाम न कर लो। यह तमु॒हार॓ लए॑ बहेतर ह॑ै, ताकि तमु (हमशे॒ा) याद रखो।	يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَدْخُلُوْا بُيُوْتًا غَيْرَ بُيُوْتِكُمْ حَتّٰى تَسْتَاْنِسُوْا وَتُسَلِّمُوْا عَلٰٓى اَهْلِهَا ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ
28	और अगर तमु वहाँ कसिी को न पाओ, तो इजाज़त मलिन॓ स॓ पहल॓ प॒रवशे न करो। और अगर तमु॑स॓ कहा जाए, 'वापस जाओ!' तो तमु वापस चल॓ जाओ। यह तमु॒हार॓ लए॑ ज़्यादा पाकीज़ा ह॑ै, और अल़लाह तमु॒हार॓ कए॑ को अच्छी तरह जानता ह॑ै	فَاِنْ لَّمْ تَجِدُوْا فِيْهَآ اَحَدًا فَلَا تَدْخُلُوْهَا حَتّٰى يُؤْذَنَ لَكُمْ وَاِنْ قِيْلَ لَكُمُ ارْجِعُوْا فَارْجِعُوْا هُوَ اَزْكٰى لَكُمْ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ عَلِيْمٌ
29	तमु पर कोई गन॒ाह नहीं ह॑ै कि तमु उन घरों म॑े प॒रवशे करो जो बस॓ ह॒ए नहीं ह॑ै, जनिम॑े तमु॒हारा कछु हति ह॑ै; अल़लाह जानता ह॑ै जो तमु ज़ाहरि करत॓ हो और जो तमु छपुात॓ हो।	لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ اَنْ تَدْخُلُوْا بُيُوْتًا غَيْرَ مَسْكُوْنَةٍ فِيْهَا مَتَاعٌ لَّكُمْ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَا تُبْدُوْنَ وَمَا تَكْتُمُوْنَ

قُلْ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ يَغُضُّوْا مِنْ اَبْصَارِهِمْ وَيَحْفَظُوْا فُرُوْجَهُمْ ذٰلِكَ اَزْكٰى لَهُمْ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌۢ بِمَا يَصْنَعُوْنَ	मोमनि मरदों स कहो कि व अपनी नज़र नीची रख और अपनी शरमगाह की हफिाज़त करी यह उनक लिए ज़यादा पाकीज़ा हो नशि्चति रूप स, अल्लाह उनक कृिए को अचछी तरह जानता हो	**30**
وَقُلْ لِّلْمُؤْمِنٰتِ يَغْضُضْنَ مِنْ اَبْصَارِهِنَّ وَيَحْفَظْنَ فُرُوْجَهُنَّ وَلَا يُبْدِيْنَ زِيْنَتَهُنَّ اِلَّا مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَلْيَضْرِبْنَ بِخُمُرِهِنَّ عَلٰى جُيُوْبِهِنَّ وَلَا يُبْدِيْنَ زِيْنَتَهُنَّ اِلَّا لِبُعُوْلَتِهِنَّ اَوْ اٰبَآئِهِنَّ اَوْ اٰبَآءِ بُعُوْلَتِهِنَّ اَوْ اَبْنَآئِهِنَّ اَوْ اَبْنَآءِ بُعُوْلَتِهِنَّ اَوْ اِخْوَانِهِنَّ اَوْ بَنِيْٓ اِخْوَانِهِنَّ اَوْ بَنِيْٓ اَخَوٰتِهِنَّ اَوْ نِسَآئِهِنَّ اَوْ مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُنَّ اَوِ التّٰبِعِيْنَ غَيْرِ اُولِي الْاِرْبَةِ مِنَ الرِّجَالِ اَوِ الطِّفْلِ الَّذِيْنَ لَمْ يَظْهَرُوْا عَلٰى عَوْرٰتِ النِّسَآءِ وَلَا يَضْرِبْنَ بِاَرْجُلِهِنَّ لِيُعْلَمَ مَا يُخْفِيْنَ مِنْ زِيْنَتِهِنَّ وَتُوْبُوْٓا اِلَى اللّٰهِ جَمِيْعًا اَيُّهَ الْمُؤْمِنُوْنَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ	और मोमनि औरतों स कहो कि व अपनी नज़र नीची रख और अपनी शरमगाह की हफिाज़त कर, और अपनी ज़ीनत (शारीरकि सौदरय) को न दखिाए, सविाय इसक जो (सामानय रूप स) दखिाई दतेा हो और उनह अपन दपुट को अपनी छाती पर डालना चाहिए, और अपनी ज़ीनत को न दखिाए, सविाय अपन पतयिों, या अपन बाप, या अपन ससरु, या अपन बटेों, या अपन पत कि बटेों, या अपन भाइयो, या अपन भाइयों क बटेों, या अपनी बहनों क बटेों, या (मसुलमि) औरतों, या अपनी गलुाम औरतों, या उन (बज़ुरुग) मरद नौकरों क जो (औरतों क परत) इचछा नहीं रखत, या उन बचचों क जो औरतों की शरमगाह क बार म नहीं जानत। और उनह अपन परैों को ज़मीन पर न मारना चाहिए ताकि उनकी छपुाई हई ज़ीनत का पता चल। और तम सब अल्लाह की ओर तौबा करो, ऐ ईमान वालो, ताकि तम कामयाब हो।	**31**
وَاَنْكِحُوا الْاَيَامٰى مِنْكُمْ وَالصّٰلِحِيْنَ مِنْ عِبَادِكُمْ وَاِمَآئِكُمْ اِنْ يَّكُوْنُوْا فُقَرَآءَ يُغْنِهِمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ	और तमम स जो लोग कंवार ह, उनह और तमहार गलुामों और गलुाम औरतों म स जो (नकिाह क) लायक ह, उनका नकिाह करो। अगर व गरीब ह, तो अल्लाह अपनी महेरबानी स उनह समदृध करगेा। और अल्लाह बहत वसि्तार दने वाला, सब कछ जानन वाला हो	**32**
وَلْيَسْتَعْفِفِ الَّذِيْنَ لَا يَجِدُوْنَ نِكَاحًا حَتّٰى يُغْنِيَهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ وَالَّذِيْنَ يَبْتَغُوْنَ الْكِتٰبَ مِمَّا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ فَكَاتِبُوْهُمْ اِنْ عَلِمْتُمْ فِيْهِمْ خَيْرًا وَّاٰتُوْهُمْ مِّنْ مَّالِ اللّٰهِ الَّذِيْٓ اٰتٰىكُمْ وَلَا تُكْرِهُوْا فَتَيٰتِكُمْ عَلَى الْبِغَآءِ اِنْ اَرَدْنَ تَحَصُّنًا لِّتَبْتَغُوْا عَرَضَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَمَنْ يُّكْرِهْهُّنَّ فَاِنَّ اللّٰهَ مِنْ بَعْدِ اِكْرَاهِهِنَّ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ	और जो लोग नकिाह करन की ताकत नहीं रखत, उनह चाहिए कि व अपनी पाकीज़गी की हफिाज़त कर, जब तक कि अल्लाह अपनी महेरबानी स उनह समदृध न कर द। और अगर तमहार गलुाम सवततंरता का करार चाहत ह, तो तम उनक साथ करार करो, अगर तमह उनम भलाई नज़र आए, और उनह अल्लाह क उस माल म स द जो उसन तमह दयिा हो और अपनी गलुाम औरतों को दनुयिा की ज़दिगी का फायदा उठान क लिए वशे्यावतृत कि लिए मजबूर न करो, जबकि व पाकीज़गी चाहती हों और जो कोई उनह मजबूर करता ह, तो नशि्चति रूप स, अल्लाह उनक मजबूर कृिए जान क बाद बहत कषमाशील, दयालहो	**33**
وَلَقَدْ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكُمْ اٰيٰتٍ مُّبَيِّنٰتٍ وَّمَثَلًا مِّنَ الَّذِيْنَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِكُمْ وَمَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِيْنَ	और नशि्चति रूप स, हमन तमहार लिए सपषट करन वाली आयत और तमस पहल गज़ुर हए लोगों की मसिाल और तकवा रखन वालों क लिए नसीहत उतारी हो	**34**

35	अल्लाह आकाश और धरती का नूर (प्रकाश) है। उसके नूर की मिसाल ऐसी है जैसे एक ताक (दीवार में खोखला स्थान) जिसमें एक बड़ा चिराग हो। वह चिराग एक शीशे की क़ंदील में हो, और वह क़ंदील एक चमकते हुए सितारे की तरह हो, जो एक बरकत वाले पेड़, ज़ैतून के पेड़, से जलाया जाता है, जो न पूरब में है और न पश्चिम में, जिसका तेल (खुद) लगभग चमकने लगता है, भले ही उसे आग न छुए। नूर पर नूर (लपटों पर लपट), अल्लाह जिसे चाहता है उसे अपने नूर की हिदायत देता है, और अल्लाह इंसानों के लिए मिसालें देता है और अल्लाह हर चीज़ को जानने वाला है	اَللّٰهُ نُوْرُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ مَثَلُ نُوْرِهٖ كَمِشْكٰوةٍ فِيْهَا مِصْبَاحٌ اَلْمِصْبَاحُ فِيْ زُجَاجَةٍ اَلزُّجَاجَةُ كَاَنَّهَا كَوْكَبٌ دُرِّيٌّ يُّوْقَدُ مِنْ شَجَرَةٍ مُّبٰرَكَةٍ زَيْتُوْنَةٍ لَّا شَرْقِيَّةٍ وَّلَا غَرْبِيَّةٍ يَّكَادُ زَيْتُهَا يُضِيْٓءُ وَلَوْ لَمْ تَمْسَسْهُ نَارٌ نُوْرٌ عَلٰى نُوْرٍ يَهْدِى اللّٰهُ لِنُوْرِهٖ مَنْ يَّشَاءُ وَيَضْرِبُ اللّٰهُ الْاَمْثَالَ لِلنَّاسِ وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ
36	(वह नूर) उन घरों में है जिन्हें अल्लाह ने आदर करने का हुक्म दिया है, और जिनमें उसका नाम लिया जाता है; उनमें सुबह और शाम उसकी तसबीह की जाती है,	فِيْ بُيُوْتٍ اَذِنَ اللّٰهُ اَنْ تُرْفَعَ وَيُذْكَرَ فِيْهَا اسْمُهٗ يُسَبِّحُ لَهٗ فِيْهَا بِالْغُدُوِّ وَالْاٰصَالِ
37	ऐसे लोग जो न तो व्यापार और न ख़रीद-फ़रोख़्त उन्हें अल्लाह की याद, नमाज़ क़ायम करने और ज़कात देने से रोकती है; वे उस दिन से डरते हैं जब दिल और आँखें उलट-पुलट हो जाएँगी,	رِجَالٌ لَّا تُلْهِيْهِمْ تِجَارَةٌ وَّلَا بَيْعٌ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ وَاِقَامِ الصَّلٰوةِ وَاِيْتَاءِ الزَّكٰوةِ يَخَافُوْنَ يَوْمًا تَتَقَلَّبُ فِيْهِ الْقُلُوْبُ وَالْاَبْصَارُ
38	ताकि अल्लाह उन्हें उनके सबसे अच्छे कामों का बदला दे और अपनी मेहरबानी से और बढ़ाए। और अल्लाह जिसे चाहता है उसे बेहिसाब रिज़्क़ देता है	لِيَجْزِيَهُمُ اللّٰهُ اَحْسَنَ مَا عَمِلُوْا وَيَزِيْدَهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ وَاللّٰهُ يَرْزُقُ مَنْ يَّشَاءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ
39	और जिन लोगों ने कुफ़्र किया, उनके काम उस मरीचिका की तरह हैं जो एक मैदान में प्यासे को पानी दिखाई देती है, यहाँ तक कि जब वह उसके पास आता है, तो उसे कुछ नहीं मिलता, और उसे अल्लाह मिलता है, जो उसे उसका पूरा हिसाब दे देता है और अल्लाह जल्दी हिसाब करने वाला है	وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَعْمَالُهُمْ كَسَرَابٍ بِقِيْعَةٍ يَّحْسَبُهُ الظَّمْاٰنُ مَاۤءً حَتّٰٓى اِذَا جَآءَهٗ لَمْ يَجِدْهُ شَيْـًٔا وَّوَجَدَ اللّٰهَ عِنْدَهٗ فَوَفّٰىهُ حِسَابَهٗ وَاللّٰهُ سَرِيْعُ الْحِسَابِ
40	या (काफ़िरों की हालत) ऐसी है जैसे गहरे समुद्र में अँधेरा हो, जिसे लहरों पर लहर ढक लेती है, जिसके ऊपर गहरे बादल हों। यह अँधेरे पर अँधेरे (लपटों पर लपट) है जब वह अपनी हथेली निकालता है, तो वह उसे मुश्किल से देख पाता है और जिसे अल्लाह नूर (हिदायत) न दे, उसके लिए कोई नूर नहीं है	اَوْ كَظُلُمٰتٍ فِيْ بَحْرٍ لُّجِّيٍّ يَّغْشٰىهُ مَوْجٌ مِّنْ فَوْقِهٖ مَوْجٌ مِّنْ فَوْقِهٖ سَحَابٌ ظُلُمٰتٌۢ بَعْضُهَا فَوْقَ بَعْضٍ اِذَاۤ اَخْرَجَ يَدَهٗ لَمْ يَكَدْ يَرٰىهَا وَمَنْ لَّمْ يَجْعَلِ اللّٰهُ لَهٗ نُوْرًا فَمَا لَهٗ مِنْ نُّوْرٍ
41	क्या तुम (मुहम्मद) नहीं जानते कि जो कुछ आकाश और धरती में है और परिंदे अपने पर फैलाए हुए, वे सब अल्लाह की तसबीह करते हैं। प्रत्येक ने अपनी दुआ और तसबीह का तरीका जान लिया है और अल्लाह उनके किए को अच्छी तरह जानता है	اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ يُسَبِّحُ لَهٗ مَنْ فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَالطَّيْرُ صٰٓفّٰتٍ كُلٌّ قَدْ عَلِمَ صَلَاتَهٗ وَتَسْبِيْحَهٗ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِمَا يَفْعَلُوْنَ
42	और आकाश और धरती की सत्ता अल्लाह की है, और अल्लाह ही की ओर (सब) लौटना है	وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاِلَى اللّٰهِ الْمَصِيْرُ

43	क्या तुम नहीं देखते कि अल्लाह बादलों को धीरे-धीरे चलाता है, फिर उन्हें इकट्ठा करता है, फिर उन्हें ढेर करता है, फिर तुम देखते हो कि उसकी दरारों से बारिश निकलती है, और वह आकाश से (पहाड़ जैसे बादलों से) ओले उतारता है, तो जिसे चाहता है उस पर डालता है और जिसे चाहता है उससे हटा देता है। उसकी बिजली की चमक लगभग आँखों की रोशनी छीन लेती है।	اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ يُزْجِيْ سَحَابًا ثُمَّ يُؤَلِّفُ بَيْنَهٗ ثُمَّ يَجْعَلُهٗ رُكَامًا فَتَرَى الْوَدْقَ يَخْرُجُ مِنْ خِلٰلِهٖ وَيُنَزِّلُ مِنَ السَّمَاۤءِ مِنْ جِبَالٍ فِيْهَا مِنْۢ بَرَدٍ فَيُصِيْبُ بِهٖ مَنْ يَّشَاۤءُ وَيَصْرِفُهٗ عَنْ مَّنْ يَّشَاۤءُ يَكَادُ سَنَا بَرْقِهٖ يَذْهَبُ بِالْاَبْصَارِ
44	अल्लाह रात और दिन को बदलता है। निश्चित रूप से, इसमें उन लोगों के लिए सबक है जिनके पास (गहरी) नज़र है।	يُقَلِّبُ اللّٰهُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَعِبْرَةً لِّاُولِى الْاَبْصَارِ
45	और अल्लाह ने हर तरह के जानवर को पानी से बनाया, तो उनमें से कुछ अपने पेट के बल चलते हैं, और कुछ दो पैरों पर चलते हैं, और कुछ चार पैरों पर चलते हैं। अल्लाह जो चाहता है बनाता है। निश्चित रूप से, अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है।	وَاللّٰهُ خَلَقَ كُلَّ دَاۤبَّةٍ مِّنْ مَّاۤءٍ فَمِنْهُمْ مَّنْ يَّمْشِيْ عَلٰى بَطْنِهٖ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّمْشِيْ عَلٰى رِجْلَيْنِ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّمْشِيْ عَلٰٓى اَرْبَعٍ يَخْلُقُ اللّٰهُ مَا يَشَاۤءُ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ
46	निश्चित रूप से, हमने स्पष्ट करने वाली आयतें उतारी हैं और अल्लाह जिसे चाहता है उसे सीधे रास्ते की हिदायत देता है।	لَقَدْ اَنْزَلْنَاۤ اٰيٰتٍ مُّبَيِّنٰتٍ وَاللّٰهُ يَهْدِيْ مَنْ يَّشَاۤءُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ
47	और वे (मुनाफिक) कहते हैं, "हम अल्लाह और रसूल (मुहम्मद) पर ईमान लाए और हमने आज्ञा मानी।" फिर उनमें से कुछ इसके बाद मुंह फेर लेते हैं। वे लोग मोमिन नहीं हैं।	وَيَقُوْلُوْنَ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَبِالرَّسُوْلِ وَاَطَعْنَا ثُمَّ يَتَوَلّٰى فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ وَمَاۤ اُولٰٓئِكَ بِالْمُؤْمِنِيْنَ
48	और जब उन्हें अल्लाह और उसके रसूल की ओर बुलाया जाता है ताकि (रसूल) उनके बीच फैसला करें, तो उनमें से कुछ इंकार कर देते हैं।	وَاِذَا دُعُوْۤا اِلَى اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ اِذَا فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ مُّعْرِضُوْنَ
49	लेकिन अगर हक उनके पक्ष में हो, तो वे (रसूल के पास) आज्ञाकारी होकर आते हैं।	وَاِنْ يَّكُنْ لَّهُمُ الْحَقُّ يَاْتُوْۤا اِلَيْهِ مُذْعِنِيْنَ
50	क्या (उनके न आने की वजह) उनके दिलों में बीमारी है, या वे शक में हैं, या उन्हें डर है कि अल्लाह और उसका रसूल उनके साथ जुल्म करेगा? बल्कि, वे ही लोग हैं जो ज़ालिम हैं।	اَفِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ اَمِ ارْتَابُوْۤا اَمْ يَخَافُوْنَ اَنْ يَّحِيْفَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ وَرَسُوْلُهٗ بَلْ اُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ
51	मोमिनों की बात केवल यही है कि जब उन्हें अल्लाह और उसके रसूल की ओर बुलाया जाता है ताकि रसूल उनके बीच फैसला करें, तो वे कहते हैं, "हमने सुना और हमने माना।" और वही लोग हैं जो कामयाब हैं।	اِنَّمَا كَانَ قَوْلَ الْمُؤْمِنِيْنَ اِذَا دُعُوْۤا اِلَى اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ اَنْ يَّقُوْلُوْا سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ
52	और जो कोई अल्लाह और उसके रसूल की आज्ञा माने और अल्लाह से डरे और उसका तक़वा रखे, वही लोग हैं जो विजयी हैं।	وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَيَخْشَ اللّٰهَ وَيَتَّقْهِ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفَاۤئِزُوْنَ

وَاَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ لَئِنْ اَمَرْتَهُمْ لَيَخْرُجُنَّ قُلْ لَّا تُقْسِمُوْا طَاعَةٌ مَّعْرُوْفَةٌ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌ بِمَا تَعْمَلُوْنَ	**53**	और व॓अल्लाह की कसम खात॓है॔ गंभीर कसम, कि॓अगर तमु उनह॓जंग का हुक्म दो, तो व॓ज़रू जाएंगे। कहो (मुहम्मद), 'कसम न खाओ, (जो चाहिए वह) अच्छी आज्ञाकारिता है॔ नशि्चति रूप स॓, अल्लाह तमुहार॓कि॓ए को अच्छी तरह जानता है॔'
قُلْ اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّمَا عَلَيْهِ مَا حُمِّلَ وَعَلَيْكُمْ مَّا حُمِّلْتُمْ وَاِنْ تُطِيْعُوْهُ تَهْتَدُوْا وَمَا عَلَى الرَّسُوْلِ اِلَّا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ	**54**	कहो, 'अल्लाह की आज्ञा मानो और रसूल की आज्ञा मानो; अगर तमु मंह॒ फरेत॓हो, तो रसूल (मुहम्मद) का बोझ कवेल वही ह॓जो उस पर डाला गया ह॓, और तमुहारा बोझ कवेल वही ह॓जो तमु पर डाला गया ह॓। अगर तमु उसकी आज्ञा मानत॓हो, तो तमु हदिायत पाओगे। रसूल का कर॓तव्य कवेल (अल्लाह का पगैाम) सपष्ट रूप स॓पहंचाना ह॓।'
وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِى الْاَرْضِ كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَلَيُمَكِّنَنَّ لَهُمْ دِيْنَهُمُ الَّذِى ارْتَضٰى لَهُمْ وَلَيُبَدِّلَنَّهُمْ مِّنْ بَعْدِ خَوْفِهِمْ اَمْنًا يَعْبُدُوْنَنِىْ لَا يُشْرِكُوْنَ بِىْ شَيْـًٔا وَمَنْ كَفَرَ بَعْدَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ	**55**	अल्लाह न॓तमुम॓स॓उन लोगों स॓वादा कयिा ह॓जो ईमान लाए और नके काम कए, कि॓वह नशि्चति रूप स॓उनह॓धरती पर हुकूमत दगेा, जसै॓उसन॓उनस॓पहल॓क॓लोगों को हुकूमत दी थी, और वह नशि्चति रूप स॓उनक॓लिए उस दीन को मजबूत करगेा जसि॓उसन॓उनक॓लिए पसंद कयिा ह॓। और वह नशि्चति रूप स॓उनकी हालत को, डर क॓बाद, अमन और सलामती म॓बदल दगेा। व॓मरेी इबादत करत॓रहगे॓और मरे॓साथ कसिी को शरीक नहीं करगे॓। लकेनि जो कोई इसक॓बाद (भी) कफ़्र करता ह॓, व॓ही लोग फासकि ह॓।
وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ	**56**	और नमाज़ कायम करो, ज़कात दो, और रसूल (मुहम्मद) की आज्ञा मानो, ताकि तमु पर रहमत की जाए।
لَا تَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مُعْجِزِيْنَ فِى الْاَرْضِ وَمَاْوٰىهُمُ النَّارُ وَلَبِئْسَ الْمَصِيْرُ	**57**	यह न समझो कि॓काफरि लोग धरती पर (अल्लाह की सजा स॓) बच नकिलगे॓। और उनका ठकिाना (आख़रित म॓) आग ह॓। और वह बहतु बरु ठकिाना ह॓।
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لِيَسْتَاْذِنْكُمُ الَّذِيْنَ مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ وَالَّذِيْنَ لَمْ يَبْلُغُوا الْحُلُمَ مِنْكُمْ ثَلٰثَ مَرّٰتٍ مِنْ قَبْلِ صَلٰوةِ الْفَجْرِ وَحِيْنَ تَضَعُوْنَ ثِيَابَكُمْ مِّنَ الظَّهِيْرَةِ وَمِنْ بَعْدِ صَلٰوةِ الْعِشَاءِ ثَلٰثُ عَوْرٰتٍ لَّكُمْ لَيْسَ عَلَيْكُمْ وَلَا عَلَيْهِمْ جُنَاحٌ بَعْدَهُنَّ طَوّٰفُوْنَ عَلَيْكُمْ بَعْضُكُمْ عَلٰى بَعْضٍ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ	**58**	ऐ ईमान वालो! तमुहार॓गलुाम (मरद और औरत) और तमुम॓स॓ जो लोग अभी बालगि (वयसक़) नहीं हुए ह॓, उनह॓चाहिए कि॓व॓ तमुस॓तीन वक़तों पर इजाज़त माँगें: सुबह की नमाज़ स॓पहल॓, जब तमु दोपहर म॓अपन॓(बाहरी) कपड़॓उतारत॓हो, और इशा की नमाज़ क॓बाद। य॓तमुहार॓लिए तीन परद॓(वक़त) ह॓। इसक॓अलावा न तमु पर और न उन पर कोई गनुाह ह॓, व॓तमुहार॓पास आत॓-जात॓रहत॓ह॓, तमु एक-दूसर॓क॓लिए हो। इस तरह अल्लाह तमुहार॓लिए अपनी आयतों को सपष्ट करता ह॓। और अल्लाह सब कछु जानन॓वाला, हकिमत वाला ह॓।
وَاِذَا بَلَغَ الْاَطْفَالُ مِنْكُمُ الْحُلُمَ فَلْيَسْتَاْذِنُوْا كَمَا اسْتَاْذَنَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ اٰيٰتِهٖ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ	**59**	और जब तमुहार॓बचच॓वयसक़ हो जाएँ, तो उनह॓भी इजाज़त माँगनी चाहिए, जसै॓कि॓उनस॓बड़॓लोग इजाज़त माँगत॓ह॓। इस तरह अल्लाह तमुहार॓लिए अपनी आयतों को सपष्ट करता ह॓। और अल्लाह सब कछु जानन॓वाला, हकिमत वाला ह॓।

وَالْقَوَاعِدُ مِنَ النِّسَاءِ الّٰتِيْ لَا يَرْجُوْنَ نِكَاحًا فَلَيْسَ عَلَيْهِنَّ جُنَاحٌ اَنْ يَّضَعْنَ ثِيَابَهُنَّ غَيْرَ مُتَبَرِّجٰتٍ بِزِيْنَةٍ وَاَنْ يَّسْتَعْفِفْنَ خَيْرٌ لَّهُنَّ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ	**60**	और जो बढ़ी औरत (हज़ और गरभ स) रुक गई हों और जो (फिर स) निकाह की इच्छा न रखती हों, उनके लिए अपने (बाहरी) कपड़े उतारने में कोई गुनाह नहीं है, बशरते वे अपनी ज़ीनत (शारीरिक सौंदरय) न दिखाएँ; लेकिन अपनी मरयादा रखना उनके लिए बेहतर है और अलल़ाह सब कुछ सुनने वाला, जानने वाला है
لَيْسَ عَلَى الْاَعْمٰى حَرَجٌ وَّلَا عَلَى الْاَعْرَجِ حَرَجٌ وَّلَا عَلَى الْمَرِيْضِ حَرَجٌ وَّلَا عَلٰٓى اَنْفُسِكُمْ اَنْ تَاْكُلُوْا مِنْۢ بُيُوْتِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ اٰبَآىِٕكُمْ اَوْ بُيُوْتِ اُمَّهٰتِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ اِخْوَانِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ اَخَوٰتِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ اَعْمَامِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ عَمّٰتِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ اَخْوَالِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ خٰلٰتِكُمْ اَوْ مَا مَلَكْتُمْ مَّفَاتِحَهٗٓ اَوْ صَدِيْقِكُمْ لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ اَنْ تَاْكُلُوْا جَمِيْعًا اَوْ اَشْتَاتًا فَاِذَا دَخَلْتُمْ بُيُوْتًا فَسَلِّمُوْا عَلٰٓى اَنْفُسِكُمْ تَحِيَّةً مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ مُبٰرَكَةً طَيِّبَةً كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ	**61**	न अंधे पर कोई पाबंदी है, न लंगड़े पर, न बीमार पर, और न तमु पर, कि तमु अपने घरों में या अपने बाप के घरों में, या अपनी माँ के घरों में, या अपने भाइयों के घरों में, या अपनी बहनों के घरों में, या अपने चाचाओं के घरों में, या अपनी फूफियों के घरों में, या अपने मामा के घरों में, या अपनी ख़ालाओं के घरों में, या उन (घरों) में जिनकी चाबियाँ तमुहारे पास हैं, या अपने दोसतों के (घरों में) खाना खाओ। तमु पर कोई पाबंदी नहीं कि तमु उनके साथ या अलग-अलग खाना खाओ। और जब तमु घरों में परवेश करो, तो अपने आप को (अहल-ए-बतै को) सलाम करो, जो अलल़ाह की ओर से बरकत वाला और अचछा सलाम है। इस तरह अलल़ाह तमुहारे लिए अपनी आयतों को सपषट करता है, ताकि तमु समझ सको।
اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَاِذَا كَانُوْا مَعَهٗ عَلٰٓى اَمْرٍ جَامِعٍ لَّمْ يَذْهَبُوْا حَتّٰى يَسْتَاْذِنُوْهُ اِنَّ الَّذِيْنَ يَسْتَاْذِنُوْنَكَ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ فَاِذَا اسْتَاْذَنُوْكَ لِبَعْضِ شَاْنِهِمْ فَاْذَنْ لِّمَنْ شِئْتَ مِنْهُمْ وَاسْتَغْفِرْ لَهُمُ اللّٰهَ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ	**62**	मोमिन वही है जो अलल़ाह और उसके रसूल (महममद) पर ईमान लाते हैं, और जब वे उनके (महममद) साथ किसी साझा काम में होते हैं, तो बिना उनकी इजाज़त माँगे नहीं जाते। नशिचति रूप से, जो लोग तमुसे (महममद) इजाज़त माँगते हैं, वही लोग हैं जो अलल़ाह और उसके रसूल पर (सचचे) ईमान रखते हैं। तो जब वे तमुसे अपनी किसी ज़रूरत के लिए इजाज़त माँगें, तो जिसे तमु चाहो उसे इजाज़त दो, और उनके लिए अलल़ाह से माफी माँगो। नशिचति रूप से, अलल़ाह बहत कषमाशील, दयाल हैं
لَا تَجْعَلُوْا دُعَاۤءَ الرَّسُوْلِ بَيْنَكُمْ كَدُعَاۤءِ بَعْضِكُمْ بَعْضًا قَدْ يَعْلَمُ اللّٰهُ الَّذِيْنَ يَتَسَلَّلُوْنَ مِنْكُمْ لِوَاذًا فَلْيَحْذَرِ الَّذِيْنَ يُخَالِفُوْنَ عَنْ اَمْرِهٖٓ اَنْ تُصِيْبَهُمْ فِتْنَةٌ اَوْ يُصِيْبَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ	**63**	रसूल (महममद) को तमुमें से एक-दूसरे की तरह पुकारने की आदत न डालो। नशिचति रूप से, अलल़ाह उन लोगों को जानता है जो तमुमें से छुपकर (दूसरों की आड़ में) निकल जाते हैं, तो जो लोग रसूल के हुकम की नाफरमानी करते हैं, उनहें डरना चाहिए कि उन पर कोई आज़माइश आएगी या उनहें दरदनाक अज़ाब भुगतना पड़ेगा।
اَلَآ اِنَّ لِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ قَدْ يَعْلَمُ مَآ اَنْتُمْ عَلَيْهِ وَيَوْمَ يُرْجَعُوْنَ اِلَيْهِ فَيُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوْا وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ	**64**	जान लो, नशिचति रूप से, जो कुछ आकाश और धरती में है, वह अलल़ाह का है। वह तमुहारी हालत को जानता है और (वह उस दिन को भी जानता है) जब वे उसकी ओर लौटाए जाएँगे, फिर वह उनहें उनके किए हुए कामों की खबर देगा। और अलल़ाह हर चीज़ को जानने वाला है

छंदों की संख्या	اَلْفُرْقَان	مكية
७७	अल-Furqan - 25	मक्की

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल-Furqan (मापदंड)

1	महान है वह अल्लाह जिसने अपने बंदे (मुहम्मद) पर फुरक़ान (क़ुरान) उतारा, ताकि वह समस्त विश्व (जिन्न और इंसान) के लिए चेतावनी देने वाला बने।	تَبٰرَكَ الَّذِيْ نَزَّلَ الْفُرْقَانَ عَلٰى عَبْدِهٖ لِيَكُوْنَ لِلْعٰلَمِيْنَ نَذِيْرًا
2	जिसके पास आकाश और धरती की सत्ता है, जिसकी कोई संतान नहीं है, उसकी सत्ता में कोई साझीदार नहीं है, और उसने हर चीज को बनाया, फिर उसकी माप को ठीक किया।	الَّذِيْ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَلَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا وَّلَمْ يَكُنْ لَّهٗ شَرِيْكٌ فِي الْمُلْكِ وَخَلَقَ كُلَّ شَيْءٍ فَقَدَّرَهٗ تَقْدِيْرًا
3	फिर भी उन्होंने उसके अलावा अन्य देवताओं को (पूजा के लिए) चुना, जो कुछ भी नहीं बनाते, बल्कि वे स्वयं बनाए गए हैं, और न तो अपने लिए नुकसान को रोक सकते हैं, न लाभ पहुंचा सकते हैं, और न ही मृत्यु, जीवन, और न पुनरुत्थान पर अधिकार रखते हैं।	وَاتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اٰلِهَةً لَّا يَخْلُقُوْنَ شَيْـًٔا وَّهُمْ يُخْلَقُوْنَ وَلَا يَمْلِكُوْنَ لِاَنْفُسِهِمْ ضَرًّا وَّلَا نَفْعًا وَّلَا يَمْلِكُوْنَ مَوْتًا وَّلَا حَيٰوةً وَّلَا نُشُوْرًا
4	और काफिरों ने कहा, 'यह (क़ुरान) केवल एक झूठ है जिसे उसने (मुहम्मद ने) बनाया है, और कुछ अन्य लोगों ने उसकी मदद की।' निश्चित रूप से, उन्होंने बहुत बड़ा जुल्म और झूठ किया।	وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ هٰذَآ اِلَّآ اِفْكُ ِۨافْتَرٰىهُ وَاَعَانَهٗ عَلَيْهِ قَوْمٌ اٰخَرُوْنَ فَقَدْ جَاۗءُوْ ظُلْمًا وَّزُوْرًا
5	और उन्होंने कहा, '(यह केवल) प्राचीन लोगों की कहानियां हैं, जिन्हें उसने लिखवाने के लिए कहा, फिर वे उसे हर सुबह और शाम पढ़ी जाती हैं।'	وَقَالُوْٓا اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ اكْتَتَبَهَا فَهِيَ تُمْلٰى عَلَيْهِ بُكْرَةً وَّاَصِيْلًا
6	कहो (मुहम्मद), 'इसे (क़ुरान को) उसने उतारा है जो आकाश और धरती के रहस्यों को जानता है। निश्चित रूप से, वह बहुत क्षमाशील, दयालु है।'	قُلْ اَنْزَلَهُ الَّذِيْ يَعْلَمُ السِّرَّ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ اِنَّهٗ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا
7	और उन्होंने कहा, 'यह रसूल (मुहम्मद) खाना क्यों खाता है और बाजारों में चलता-फिरता है? उसके पास कोई फरिश्ता क्यों नहीं उतारा गया जो उसके साथ चेतावनी दे?'	وَقَالُوْا مَالِ هٰذَا الرَّسُوْلِ يَأْكُلُ الطَّعَامَ وَيَمْشِيْ فِي الْاَسْوَاقِ لَوْلَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِ مَلَكٌ فَيَكُوْنَ مَعَهٗ نَذِيْرًا
8	या उसे कोई खजाना क्यों नहीं दिया गया, या उसके पास कोई बाग क्यों नहीं है, जिसमें से वह खाए?' और जालिमों ने कहा, 'तुम तो केवल एक ऐसे व्यक्ति का अनुसरण कर रहे हो जो जादू के प्रभाव में है।'	اَوْ يُلْقٰٓى اِلَيْهِ كَنْزٌ اَوْ تَكُوْنُ لَهٗ جَنَّةٌ يَّأْكُلُ مِنْهَا وَقَالَ الظّٰلِمُوْنَ اِنْ تَتَّبِعُوْنَ اِلَّا رَجُلًا مَّسْحُوْرًا

9	देखो, कैसे उनहोंने तुमहारे लिए (वभिनि़न) उपमाएं दीं, फरि वे भटक गए, और वे (तुमहारी नबूवत का वरिोध करने का) कोई रासता नहीं पा सके।	اُنْظُرْ كَيْفَ ضَرَبُوْا لَكَ الْاَمْثَالَ فَضَلُّوْا فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ سَبِيْلًا
10	महान है वह (अलला़ह) जो यदि चाहे, तो तुमहारे लिए इससे बेहतर चीज बनाए, (जैसी) जनऩत जनिके नीचे नदयिां बहती हों, और तुमहारे लिए महल बनाए।	تَبٰرَكَ الَّذِيْٓ اِنْ شَاۤءَ جَعَلَ لَكَ خَيْرًا مِّنْ ذٰلِكَ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ وَيَجْعَلْ لَّكَ قُصُوْرًا
11	बलक़ि, उनहोंने कयामत के दनि को झठुलाया। और हमने उन लोगों के लिए एक धधकती हुई आग तयैार की है जो कयामत के दनि को झठुलाते हैं।	بَلْ كَذَّبُوْا بِالسَّاعَةِ وَاَعْتَدْنَا لِمَنْ كَذَّبَ بِالسَّاعَةِ سَعِيْرًا
12	जब वह (आग) उनहें दूर से देखेगी, तो वे उसकी गुस़स़े से भरी गरज़ना सनुेंगे।	اِذَا رَاَتْهُمْ مِّنْ مَّكَانٍۢ بَعِيْدٍ سَمِعُوْا لَهَا تَغَيُّظًا وَّزَفِيْرًا
13	और जब उनहें जंजीरों में बांधकर आग के एक तंग सथान में फेंका जाएगा, तो वे वहां वनिाश की पुक़ार करेंगे।	وَاِذَآ اُلْقُوْا مِنْهَا مَكَانًا ضَيِّقًا مُّقَرَّنِيْنَ دَعَوْا هُنَالِكَ ثُبُوْرًا
14	(उनसे कहा जाएगा), 'आज तुम एक वनिाश की आशा न करो, बलक़ि कई बार वनिाश की आशा करो।'	لَا تَدْعُوا الْيَوْمَ ثُبُوْرًا وَّاحِدًا وَّادْعُوْا ثُبُوْرًا كَثِيْرًا
15	कहो (मुहममद), 'कया ऐसा (अज़ाब) बेहतर है, या वह जनऩत जो तक़वा रखने वालों के लिए वादा की गई है, जो उनके लिए बदला और ठकिाना है?'	قُلْ اَذٰلِكَ خَيْرٌ اَمْ جَنَّةُ الْخُلْدِ الَّتِيْ وُعِدَ الْمُتَّقُوْنَ كَانَتْ لَهُمْ جَزَاۤءً وَّمَصِيْرًا
16	उनके लिए वहां (जनऩत में) वह सब कुछ होगा जो वे चाहेंगे, और वे हमेशा वहां रहेंगे। यह तुमहारे रब का वह वादा है जिसे मांगा जाना चाहिए।	لَهُمْ فِيْهَا مَا يَشَاۤءُوْنَ خٰلِدِيْنَ كَانَ عَلٰى رَبِّكَ وَعْدًا مَّسْـُٔوْلًا
17	और (याद करो) उस दनि को जब अलला़ह उनहें और उनके द्वारा अलला़ह के अलावा पूज़े गए (देवताओं) को इकट्ठा करेगा, फरि (उनसे) पूछेगा, 'कया तुमने मेरे इन बंदों को गुमराह कयिा, या वे सवंय रासते से भटक गए?'	وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ وَمَا يَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ فَيَقُوْلُ ءَاَنْتُمْ اَضْلَلْتُمْ عِبَادِيْ هٰٓؤُلَاۤءِ اَمْ هُمْ ضَلُّوا السَّبِيْلَ
18	वे (पूज़े गए) जवाब देंगे, 'तू महान है, हमारे लिए तुझसे इतर कोई संरकषक चुनना उचति नहीं था, लकेनि तूने उनहें और उनके पूर्वजों को सुख-सुवधिाएं दीं, जसिसे वे चेतावनी को भूल गए; और वे नषट होने वाली कौम थे।'	قَالُوْا سُبْحٰنَكَ مَا كَانَ يَنْۢبَغِيْ لَنَآ اَنْ نَّتَّخِذَ مِنْ دُوْنِكَ مِنْ اَوْلِيَاۤءَ وَلٰكِنْ مَّتَّعْتَهُمْ وَاٰبَاۤءَهُمْ حَتّٰى نَسُوا الذِّكْرَ وَكَانُوْا قَوْمًۢا بُوْرًا
19	तो नशि़चति रूप से, उनहोंने (पूज़े गए) तुमहारी बात को झठुलाया, तो तुम न तो (अज़ाब) को रोक सकते हो और न ही (अपनी) मदद कर सकते हो, और तुममें से जो कोई जुलम़ करेगा, हम उसे बड़ा अज़ाब चखाएंगे।	فَقَدْ كَذَّبُوْكُمْ بِمَا تَقُوْلُوْنَ فَمَا تَسْتَطِيْعُوْنَ صَرْفًا وَّلَا نَصْرًا وَمَنْ يَّظْلِمْ مِّنْكُمْ نُذِقْهُ عَذَابًا كَبِيْرًا

وَمَآ اَرْسَلْنَا قَبْلَكَ مِنَ الْمُرْسَلِيْنَ اِلَّآ اِنَّهُمْ لَيَأْكُلُوْنَ الطَّعَامَ وَيَمْشُوْنَ فِى الْاَسْوَاقِ وَجَعَلْنَا بَعْضَكُمْ لِبَعْضٍ فِتْنَةً اَتَصْبِرُوْنَ وَكَانَ رَبُّكَ بَصِيْرًا	और हमने तुमसे पहले कोई रसूल नहीं भेजा, सिवाय इसके कि वे खाना खाते थे और बाजारों में चलते-फिरते थे। और हमने तुममें से कुछ को दूसरों के लिए आजमाइश बनाया। क्या तुम सब्र करोगे? और तुम्हारा रब सब कुछ देखने वाला है।	20
وَقَالَ الَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ لِقَاءَنَا لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْنَا الْمَلٰٓئِكَةُ اَوْ نَرٰى رَبَّنَا لَقَدِ اسْتَكْبَرُوْا فِىْٓ اَنْفُسِهِمْ وَعَتَوْ عُتُوًّا كَبِيْرًا	और जिन लोगों को हमसे (अंत में) मुलाकात की आशा नहीं थी, उन्होंने कहा, 'हमारे पास फरिश्ते क्यों नहीं उतारे गए, या हम अपने रब को क्यों नहीं देखते?' निश्चित रूप से, उन्होंने अपने आप में घमंड किया और बहुत बड़ा जुल्म किया।	21
يَوْمَ يَرَوْنَ الْمَلٰٓئِكَةَ لَا بُشْرٰى يَوْمَئِذٍ لِّلْمُجْرِمِيْنَ وَيَقُوْلُوْنَ حِجْرًا مَّحْجُوْرًا	(याद करो) उस दिन को जब वे फरिश्तों को देखेंगे, उस दिन पापियों के लिए कोई खुशखबरी नहीं होगी और वे कहेंगे, 'हिज्र (रोक दी गई)।'	22
وَقَدِمْنَآ اِلٰى مَا عَمِلُوْا مِنْ عَمَلٍ فَجَعَلْنٰهُ هَبَآءً مَّنْثُوْرًا	और हम उनके हर उस कर्म को देखेंगे जो उन्होंने किया, फिर हम उसे (ऐसी) धूल बना देंगे जो उड़ जाए।	23
اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ يَوْمَئِذٍ خَيْرٌ مُّسْتَقَرًّا وَّاَحْسَنُ مَقِيْلًا	उस दिन जन्नत के बाशिंदों का ठिकाना सबसे अच्छा होगा और उनका विश्राम स्थल सबसे सुंदर होगा।	24
وَيَوْمَ تَشَقَّقُ السَّمَآءُ بِالْغَمَامِ وَنُزِّلَ الْمَلٰٓئِكَةُ تَنْزِيْلًا	और (याद करो) उस दिन को जब आकाश फट जाएगा और उसमें से सफेद धुंध निकलेगी, और फरिश्ते लहरों में उतरेंगे।	25
اَلْمُلْكُ يَوْمَئِذِ الْحَقُّ لِلرَّحْمٰنِ وَكَانَ يَوْمًا عَلَى الْكٰفِرِيْنَ عَسِيْرًا	उस दिन सच्ची सत्ता दयालु (अल्लाह) की होगी। और वह काफिरों के लिए बहुत कठिन दिन होगा।	26
وَيَوْمَ يَعَضُّ الظَّالِمُ عَلٰى يَدَيْهِ يَقُوْلُ يٰلَيْتَنِى اتَّخَذْتُ مَعَ الرَّسُوْلِ سَبِيْلًا	और (याद करो) उस दिन को जब जालिम अपने दोनों हाथों को काटेंगे, (पछतावे हुए) कहेंगे, 'काश! मैंने रसूल के साथ रास्ता अपनाया होता।'	27
يٰوَيْلَتٰى لَيْتَنِىْ لَمْ اَتَّخِذْ فُلَانًا خَلِيْلًا	'हाय, मेरी तबाही! काश! मैंने फलां को अपना घनिष्ठ मित्र न बनाया होता,'	28
لَقَدْ اَضَلَّنِىْ عَنِ الذِّكْرِ بَعْدَ اِذْ جَآءَنِىْ وَكَانَ الشَّيْطٰنُ لِلْاِنْسَانِ خَذُوْلًا	'निश्चित रूप से, उसने मुझे उस चेतावनी (कुरान) से भटका दिया जो मेरे पास आई थी। और शैतान तो इंसान का धोखेबाज है।'	29
وَقَالَ الرَّسُوْلُ يٰرَبِّ اِنَّ قَوْمِى اتَّخَذُوْا هٰذَا الْقُرْاٰنَ مَهْجُوْرًا	और रसूल (मुहम्मद) ने कहा, 'ऐ मेरे रब, निश्चित रूप से मेरी कौम ने इस कुरान को नजरअंदाज कर दिया।'	30
وَكَذٰلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِىٍّ عَدُوًّا مِّنَ الْمُجْرِمِيْنَ وَكَفٰى بِرَبِّكَ هَادِيًا وَّنَصِيْرًا	इसी तरह, हर नबी के लिए हमने पापियों में से दुश्मन बनाए। लेकिन तुम्हारा रब मार्गदर्शन और मदद के लिए काफी है।	31

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْلَا نُزِّلَ عَلَيْهِ الْقُرْاٰنُ جُمْلَةً وَّاحِدَةً ۛ كَذٰلِكَ لِنُثَبِّتَ بِهٖ فُؤَادَكَ وَرَتَّلْنٰهُ تَرْتِيْلًا	**32**	और काफरिं न`कहा, 'कयुन उसक`पास एक साथ कयों नहीं उतारा गया?' ऐसा इसलए, ताकि हम तमुहार`(मह्मद) दलि को इसक`साथ मजबूत कर`और हमन`इस`तरतील (धीर-धीर` और सही ढग स) पढ़ा।
وَلَا يَأْتُوْنَكَ بِمَثَلٍ اِلَّا جِئْنٰكَ بِالْحَقِّ وَاَحْسَنَ تَفْسِيْرًا	**33**	और व`(काफरि) तमुहार`पास कोई अजीब बात लकेर नहीं आए, सवाय इसक`कि हम तमुहार`पास सतय और सबस`अचछा सपषटीकरण लकेर आए।
اَلَّذِيْنَ يُحْشَرُوْنَ عَلٰى وُجُوْهِهِمْ اِلٰى جَهَنَّمَ اُولٰٓئِكَ شَرٌّ مَّكَانًا وَّاَضَلُّ سَبِيْلًا	**34**	जो लोग अपन`चहेरों क`बल जहनन्म की ओर खींच`जाएंग, उनका ठकिाना सबस`बरु होगा और उनका रासता सबस`अधकि भटका हुआ होगा।
وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ وَجَعَلْنَا مَعَهٗٓ اَخَاهُ هٰرُوْنَ وَزِيْرًا	**35**	और नशि्चति रप स, हमन`मूसा को कतिाब (तौरात) दी और उसक`भाई हारून को उसका सहायक बनाया।
فَقُلْنَا اذْهَبَآ اِلَى الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا فَدَمَّرْنٰهُمْ تَدْمِيْرًا	**36**	फरि हमन`(उन दोनों स) कहा, 'उस कौम क`पास जाओ जसिन` हमारी आयतों को झठुलाया।' फरि हमन`उनह`पूरी तरह नषट कर दयिा।
وَقَوْمَ نُوْحٍ لَّمَّا كَذَّبُوا الرُّسُلَ اَغْرَقْنٰهُمْ وَجَعَلْنٰهُمْ لِلنَّاسِ اٰيَةً ۭ وَاَعْتَدْنَا لِلظّٰلِمِيْنَ عَذَابًا اَلِيْمًا	**37**	और नहू की कौम न`जब उनहोंन`रसलूों को झठुलाया, तो हमन` उनह`डबो दयिा और उनह`इंसानों क`लिए नशिानी बनाया। और हमन`जालमिों क`लिए दरदनाक अजाब तयैार कयिा ह`,
وَعَادًا وَّثَمُوْدَا وَاَصْحٰبَ الرَّسِّ وَقُرُوْنًۢا بَيْنَ ذٰلِكَ كَثِيْرًا	**38**	और (हमन) आद और समद्ु और रस क`नविासयिों और उनक` बीच की कई पीढ़यिों को (नषट कयिा)।
وَكُلًّا ضَرَبْنَا لَهُ الْاَمْثَالَ ۡ وَكُلًّا تَبَّرْنَا تَتْبِيْرًا	**39**	और पर्तयके क`लिए हमन`उपमाएं दीं और पर्तयके को हमन` पूरी तरह नषट कर दयिा।
وَلَقَدْ اَتَوْا عَلَى الْقَرْيَةِ الَّتِيْٓ اُمْطِرَتْ مَطَرَ السَّوْءِ ۭ اَفَلَمْ يَكُوْنُوْا يَرَوْنَهَا ۚ بَلْ كَانُوْا لَا يَرْجُوْنَ نُشُوْرًا	**40**	और नशि्चति रप स, व`(मकका क`मुशर्कि) उस बसती (सदमू) स`गज़ुर`ह`, जहां (पहल) बरी बारशि (पतथरों की बारशि) हई थी। कया उनहोंन`इस`नहीं दखेा? बलक, व`वासतव म`पुनर्ज़ननं की आशा नहीं करत।
وَاِذَا رَاَوْكَ اِنْ يَّتَّخِذُوْنَكَ اِلَّا هُزُوًا ۭ اَهٰذَا الَّذِيْ بَعَثَ اللّٰهُ رَسُوْلًا	**41**	और जब व`तमुह`(मह्मद) दखेत`ह`, तो व`तमुह`कवेल मजाक बनात`ह`(कहत`ह`), 'कया यही वह वयकति ह`जसिे अलल्ाह न` रसलू क`रप म`भजेा ह?'
اِنْ كَادَ لَيُضِلُّنَا عَنْ اٰلِهَتِنَا لَوْلَآ اَنْ صَبَرْنَا عَلَيْهَا ۭ وَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ حِيْنَ يَرَوْنَ الْعَذَابَ مَنْ اَضَلُّ سَبِيْلًا	**42**	'नशि्चति रप स, उसन`हम`हमार`पज्ूयों स`भटकान` की कोशशि की, अगर हम उन पर दढ़ न रहत।' और जब व`अजाब दखेंगे, तो व`जान पड़ेग`कि सबस`अधकि भटका हुआ रासता कसिका था।
اَرَءَيْتَ مَنِ اتَّخَذَ اِلٰهَهٗ هَوٰىهُ ۭ اَفَاَنْتَ تَكُوْنُ عَلَيْهِ وَكِيْلًا	**43**	कया तमुन`(मह्मद) उस वयकति को दखेा जसिन`अपनी इचछाओं को अपना दवेता बना लयिा? कया तम उसका संरकषक बनोग?

44	या क्या तुम समझते हो कि उनमे से अधिकांश सुनते है या समझते है? वे तो केवल पशुओं की तरह है, बल्कि उससे भी अधिक भटके हुए है।	اَمْ تَحْسَبُ اَنَّ اَكْثَرَهُمْ يَسْمَعُوْنَ اَوْ يَعْقِلُوْنَ اِنْ هُمْ اِلَّا كَالْاَنْعَامِ بَلْ هُمْ اَضَلُّ سَبِيْلًا
45	क्या तुमने अपने रब की रचना को नहीं देखा, कि उसने परछाइयों को कैसे लंबा (और छोटा) किया; और यदि वह चाहता, तो इसे स्थिर कर देता, फिर हमने सूरज को इसका संकेत बनाया,	اَلَمْ تَرَ اِلٰى رَبِّكَ كَيْفَ مَدَّ الظِّلَّ وَلَوْ شَاۤءَ لَجَعَلَهٗ سَاكِنًا ثُمَّ جَعَلْنَا الشَّمْسَ عَلَيْهِ دَلِيْلًا
46	फिर हमने उसे (परछाई को) धीरे-धीरे अपनी ओर खींच लिया।	ثُمَّ قَبَضْنٰهُ اِلَيْنَا قَبْضًا يَّسِيْرًا
47	और वही है जिसने तुम्हारे लिए रात को (जैसे) लिबास बनाया, और नींद को विश्राम के लिए, और दिन को उठकर काम करने के लिए बनाया।	وَهُوَ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الَّيْلَ لِبَاسًا وَّالنَّوْمَ سُبَاتًا وَّجَعَلَ النَّهَارَ نُشُوْرًا
48	और वही है जिसने अपनी रहमत (बारिश) से पहले खुशखबरी देने वाली हवाएं भेजीं; और हमने आकाश से बहुत शुद्ध पानी उतारा,	وَهُوَ الَّذِيْٓ اَرْسَلَ الرِّيٰحَ بُشْرًا بَيْنَ يَدَيْ رَحْمَتِهٖ وَاَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَاۤءِ مَاۤءً طَهُوْرًا
49	ताकि (उस पानी से) हम मृत (सूखी) धरती को जीवित करें, और हमारे द्वारा बनाए गए पशुओं और बहुत से इंसानों को पानी पिलाएं।	لِّنُحْيِۦَ بِهٖ بَلْدَةً مَّيْتًا وَّنُسْقِيَهٗ مِمَّا خَلَقْنَآ اَنْعَامًا وَّاَنَاسِيَّ كَثِيْرًا
50	और निश्चित रूप से, हमने इसे (बारिश को) उनके बीच बारी-बारी से भेजा ताकि वे सबक लें; लेकिन अधिकांश लोग (शुक्रगुज़ार) नहीं होना चाहते, बल्कि वे (निकमत को) नकारते हैं।	وَلَقَدْ صَرَّفْنٰهُ بَيْنَهُمْ لِيَذَّكَّرُوْا فَاَبٰٓى اَكْثَرُ النَّاسِ اِلَّا كُفُوْرًا
51	और यदि हम चाहते, तो हर बस्ती में एक चेतावनी देने वाला भेजते।	وَلَوْ شِئْنَا لَبَعَثْنَا فِيْ كُلِّ قَرْيَةٍ نَّذِيْرًا
52	तो काफिरों की बात न मानो, और उनके खिलाफ (कुरान के साथ) बड़ा जिहाद करो।	فَلَا تُطِعِ الْكٰفِرِيْنَ وَجَاهِدْهُمْ بِهٖ جِهَادًا كَبِيْرًا
53	और वही है जिसने दो समुद्रों को बहने दिया (आमने-सामने); एक मीठा और ताजा, और दूसरा बहुत खारा और कड़वा; और उनके बीच एक दीवार और अवरोध बनाया जो टूटता नहीं।	وَهُوَ الَّذِيْ مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ هٰذَا عَذْبٌ فُرَاتٌ وَّهٰذَا مِلْحٌ اُجَاجٌ وَجَعَلَ بَيْنَهُمَا بَرْزَخًا وَّحِجْرًا مَّحْجُوْرًا
54	और वही है जिसने पानी से इंसान को बनाया, फिर उसे (वंश और) ससुराल संबंध दिया, और तुम्हारा रब सर्वशक्तिमान है।	وَهُوَ الَّذِيْ خَلَقَ مِنَ الْمَاۤءِ بَشَرًا فَجَعَلَهٗ نَسَبًا وَّصِهْرًا وَكَانَ رَبُّكَ قَدِيْرًا
55	और वे अल्लाह से हटकर उसकी बन्दगी करते है जो न तो उनके लिए लाभदायक है और न उनपर कोई मुसीबत लाती है और इनकार करनेवाले तो अपने रब के सहायक है।	وَيَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَنْفَعُهُمْ وَلَا يَضُرُّهُمْ وَكَانَ الْكَافِرُ عَلٰى رَبِّهٖ ظَهِيْرًا
56	और हमने तुम्हे (मुहम्मद) केवल खुशखबरी देने वाला और चेतावनी देने वाला बनाकर भेजा।	وَمَآ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا مُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا

57	कहो, 'मैइसके लिए तुमसे कोई इनाम नहीं मांगता, सिवाय इसके कि जो चाहे वह अपने रब की ओर का रास्ता अपनाए।'	قُلْ مَآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ اِلَّا مَنْ شَاءَ اَنْ يَّتَّخِذَ اِلٰى رَبِّهٖ سَبِيْلًا
58	और उस जीवित (अल्लाह) पर भरोसा करो जो कभी नहीं मरता, और उसकी प्रशंसा के साथ उसकी तसबीह करो। और वह अपने बंदों के गुनाहों से पूरी तरह वाकिफ है।	وَتَوَكَّلْ عَلَى الْحَيِّ الَّذِيْ لَا يَمُوْتُ وَسَبِّحْ بِحَمْدِهٖ وَكَفٰى بِهٖ بِذُنُوْبِ عِبَادِهٖ خَبِيْرًا
59	वही है जिसने आकाश और धरती और जो कुछ उनके बीच है, उसे छह दिनों में बनाया, फिर वह अर्श पर स्थापित हुआ। वह रहमान (दयाल) है, तो उससे पूछो जो उसका जानकार है।	اَلَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ اَلرَّحْمٰنُ فَسْـَٔلْ بِهٖ خَبِيْرًا
60	और जब उनसे कहा जाता है, 'रहमान को सजदा करो,' तो वे कहते हैं, 'रहमान क्या है? क्या हम उसको सजदा करें जिसका तुम हमें आदेश देते हो?' और यह उनकी नफरत को और बढ़ा देता है।	وَاِذَا قِيْلَ لَهُمُ اسْجُدُوْا لِلرَّحْمٰنِ قَالُوْا وَمَا الرَّحْمٰنُ اَنَسْجُدُ لِمَا تَاْمُرُنَا وَزَادَهُمْ نُفُوْرًا
61	महान है वह जिसने आकाश में नक्षत्रों के समूह बनाए और उसमें सूरज और चमकता हुआ चंद्रमा बनाया।	تَبٰرَكَ الَّذِيْ جَعَلَ فِي السَّمَاۤءِ بُرُوْجًا وَّجَعَلَ فِيْهَا سِرٰجًا وَّقَمَرًا مُّنِيْرًا
62	और वही है जिसने रात और दिन को एक-दूसरे के बाद आने वाला बनाया, उस व्यक्ति के लिए जो सबक लेना चाहे या शुक्रगुज़ार होना चाहे।	وَهُوَ الَّذِيْ جَعَلَ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ خِلْفَةً لِّمَنْ اَرَادَ اَنْ يَّذَّكَّرَ اَوْ اَرَادَ شُكُوْرًا
63	और रहमान के बंदे वे हैं जो धरती पर नम्रता से चलते हैं, और जब अज्ञानी लोग उनसे (अपमानजनक) बात करते हैं, तो वे 'सलाम' कहते हैं,	وَعِبَادُ الرَّحْمٰنِ الَّذِيْنَ يَمْشُوْنَ عَلَى الْاَرْضِ هَوْنًا وَّاِذَا خَاطَبَهُمُ الْجٰهِلُوْنَ قَالُوْا سَلٰمًا
64	और वे जो अपनी रात अपने रब की इबादत में सजदा और खड़े होकर बिताते हैं।	وَالَّذِيْنَ يَبِيْتُوْنَ لِرَبِّهِمْ سُجَّدًا وَّقِيَامًا
65	और वे जो कहते हैं, 'ऐ हमारे रब, हमसे जहन्नम का अज़ाब दूर कर, क्योंकि निश्चित रूप से उसका अज़ाब हमेशा के लिए विनाशकारी है,'	وَالَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا اصْرِفْ عَنَّا عَذَابَ جَهَنَّمَ اِنَّ عَذَابَهَا كَانَ غَرَامًا
66	निश्चित रूप से वह (जहन्नम) बहुत बुरा ठिकाना और निवास स्थान है।	اِنَّهَا سَاۤءَتْ مُسْتَقَرًّا وَّمُقَامًا
67	और वे जो खर्च करते समय न तो फिजूलखर्ची करते हैं और न ही कंजूसी, बल्कि इसके बीच का रास्ता अपनाते हैं।	وَالَّذِيْنَ اِذَآ اَنْفَقُوْا لَمْ يُسْرِفُوْا وَلَمْ يَقْتُرُوْا وَكَانَ بَيْنَ ذٰلِكَ قَوَامًا
68	और वे जो अल्लाह के साथ किसी अन्य को नहीं पुकारते, और न ही उस प्राण को मारते हैं जिसे अल्लाह ने हराम किया है, सिवाय हक के, और न ही व्यभिचार करते हैं; और जो ऐसा करता है, वह अपने गुनाह का बदला पाएगा।	وَالَّذِيْنَ لَا يَدْعُوْنَ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ وَلَا يَقْتُلُوْنَ النَّفْسَ الَّتِيْ حَرَّمَ اللّٰهُ اِلَّا بِالْحَقِّ وَلَا يَزْنُوْنَ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ يَلْقَ اَثَامًا
69	कयामत के दिन उसका अज़ाब दोगुना होगा, और वह उसमें हमेशा अपमानित रहेगा,	يُّضٰعَفْ لَهُ الْعَذَابُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَيَخْلُدْ فِيْهٖ مُهَانًا

70	सिवाय उनके जो तौबा करते हैं और ईमान लाते हैं और नेक काम करते हैं; तो अल्लाह उनकी बुराइयों को नेकियों से बदल देगा। और अल्लाह बहुत क्षमाशील, दयालु है।	اِلَّا مَنْ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ عَمَلًا صَالِحًا فَاُولٰٓئِكَ يُبَدِّلُ اللّٰهُ سَيِّاٰتِهِمْ حَسَنٰتٍ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا
71	और जो कोई तौबा करता है और नेक काम करता है, तो वह निश्चित रूप से अल्लाह की ओर सच्ची तौबा करता है।	وَمَنْ تَابَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَاِنَّهٗ يَتُوْبُ اِلَى اللّٰهِ مَتَابًا
72	और वे जो झूठी गवाही नहीं देते, और जब वे बेकार की बातों (करने वालों) से गुज़रते हैं, तो अपनी मर्यादा बनाए रखते हुए आगे बढ़ जाते हैं,	وَالَّذِيْنَ لَا يَشْهَدُوْنَ الزُّوْرَ وَاِذَا مَرُّوْا بِاللَّغْوِ مَرُّوْا كِرَامًا
73	और वे जो जब अपने रब की आयतों से चेतावनी दी जाती है, तो न तो बहरे और न अंधे की तरह व्यवहार करते हैं,	وَالَّذِيْنَ اِذَا ذُكِّرُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ لَمْ يَخِرُّوْا عَلَيْهَا صُمًّا وَّعُمْيَانًا
74	और वे जो कहते हैं, 'ऐ हमारे रब, हमें हमारी पत्नियों और हमारी संतानों से आंखों की ठंडक दे, और हमें तक़वा रखने वालों का इमाम बना।'	وَالَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ اَزْوَاجِنَا وَذُرِّيّٰتِنَا قُرَّةَ اَعْيُنٍ وَّاجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِيْنَ اِمَامًا
75	वे लोग अपने सब्र के बदले में (जन्नत में) उच्च स्थान पाएंगे, और वहां उनकी मुलाकात सम्मान और सलाम के साथ होगी।	اُولٰٓئِكَ يُجْزَوْنَ الْغُرْفَةَ بِمَا صَبَرُوْا وَيُلَقَّوْنَ فِيْهَا تَحِيَّةً وَّسَلٰمًا
76	वे उसमें हमेशा रहेंगे। वह बहुत अच्छा ठिकाना और निवास स्थान है।	خٰلِدِيْنَ فِيْهَا حَسُنَتْ مُسْتَقَرًّا وَّمُقَامًا
77	कहो (मुहम्मद, मुशरिकों से), 'मेरे रब तुम्हारी परवाह नहीं करता, अगर तुम्हारी इबादत न हो। (लेकिन तुम उसकी इबादत कैसे करते हो), जबकि तुमने उसे झुठलाया है? इसलिए, (अज़ाब) निश्चित रूप से (तुम पर) आएगा।'	قُلْ مَا يَعْبَؤُا بِكُمْ رَبِّيْ لَوْلَا دُعَاؤُكُمْ فَقَدْ كَذَّبْتُمْ فَسَوْفَ يَكُوْنُ لِزَامًا

छंदों की संख्या	اَلشُّعَرَاء	مكية
२२७	ऐश-शुअरा - 26	मक्की

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

ऐश-शुअरा (कवी)

1	ता सीन मीम	طٰسٓمّٓ
2	ये स्पष्ट किताब (क़ुरआन) की आयतें हैं।	تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ
3	शायद तुम (मुहम्मद) ख़ुद को (दुख़ के कारण) नष्ट कर लोग, क्योंकि वे (मक्का के लोग) ईमान नहीं लाते।	لَعَلَّكَ بَاخِعٌ نَّفْسَكَ اَلَّا يَكُوْنُوْا مُؤْمِنِيْنَ
4	अगर हम चाहें, तो हम उनके लिए आकाश से एक निशानी उतारें, जिसके सामने उनकी गरदनें झुक जाएँगी।	اِنْ نَّشَاْ نُنَزِّلْ عَلَيْهِمْ مِّنَ السَّمَاۤءِ اٰيَةً فَظَلَّتْ اَعْنَاقُهُمْ لَهَا خٰضِعِيْنَ
5	और जब भी उनके पास रहमान की ओर से कोई नई नसीहत (क़ुरआन की आयत) आती है, वे उससे मुँह फेरे लेते हैं।	وَمَا يَاْتِيْهِمْ مِّنْ ذِكْرٍ مِّنَ الرَّحْمٰنِ مُحْدَثٍ اِلَّا كَانُوْا عَنْهُ مُعْرِضِيْنَ
6	निश्चय ही, उन्होंने (क़ुरआन को) झुठलाया, तो जल्द ही उनके पास उस (अज़ाब) की ख़बर आएगी जिसका वे मज़ाक़ उड़ाते थे।	فَقَدْ كَذَّبُوْا فَسَيَاْتِيْهِمْ اَنْۢبٰٓؤُا مَا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ
7	क्या उन्होंने धरती को नहीं देखा, कि हमने उसमें कितनी तरह की अच्छी जोड़ियाँ (पौधे) उगाए हैं?	اَوَلَمْ يَرَوْا اِلَى الْاَرْضِ كَمْ اَنْۢبَتْنَا فِيْهَا مِنْ كُلِّ زَوْجٍ كَرِيْمٍ
8	निश्चय ही, इसमें (अल्लाह की बड़ाई का) एक निशानी है, लेकिन उनमें से ज़्यादातर ईमान नहीं लाते।	اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ
9	और निश्चय ही, तुम्हारा रब वही है जो बहुत इज़्ज़त वाला, बहुत रहम करने वाला है।	وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ
10	और (याद करो) जब तुम्हारे रब ने मूसा को पुकारा, 'उस ज़ालिम क़ौम के पास जाओ।'	وَاِذْ نَادٰى رَبُّكَ مُوْسٰٓى اَنِ ائْتِ الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ
11	(यानी) फ़िरऔन की क़ौम। क्या वे तक़वा नहीं अपनाएँगे?	قَوْمَ فِرْعَوْنَ اَلَا يَتَّقُوْنَ
12	उसने (मूसा ने) कहा, 'ऐ मेरे रब! मुझे डर है कि वे मुझे झुठला देंगे।'	قَالَ رَبِّ اِنِّيْٓ اَخَافُ اَنْ يُّكَذِّبُوْنِ
13	जिससे मेरा सीना तंग हो जाता है और मेरी ज़बान नहीं चलती, तो हारून को (मेरे साथ) भेज दो।	وَيَضِيْقُ صَدْرِيْ وَلَا يَنْطَلِقُ لِسَانِيْ فَاَرْسِلْ اِلٰى هٰرُوْنَ

14	और मेरे ऊपर उनका एक गुनाह है, तो मुझे डर है कि वे मुझे मार डालेंगे।	وَلَهُمْ عَلَيَّ ذَنْۢبٌ فَاَخَافُ اَنْ يَّقْتُلُوْنِ
15	(अल्लाह ने) फरमाया, 'डर मत (वे तुम्हें मार नहीं सकेंगे)! तुम दोनों हमारी निशानियों (मुअ्जिज़ों) के साथ जाओ; निश्चय ही, हम तुम्हारे साथ हैं, (उनकी बातें) सुन रहे हैं।'	قَالَ كَلَّا فَاذْهَبَا بِاٰيٰتِنَآ اِنَّا مَعَكُمْ مُّسْتَمِعُوْنَ
16	तो तुम दोनों फ़िरऔन के पास जाओ और कहो, 'निश्चय ही, हम सारे जहान के रब के रसूल हैं।'	فَأْتِيَا فِرْعَوْنَ فَقُوْلَآ اِنَّا رَسُوْلُ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ
17	बनी इसराइल को हमारे साथ (आज़ाद करके) भेज दो।'	اَنْ اَرْسِلْ مَعَنَا بَنِيْٓ اِسْرَاۤءِيْلَ
18	उसने (फ़िरऔन ने) जवाब दिया, 'क्या हमने तुम्हें अपने परिवार में पाला नहीं था, जब तुम बच्चे थे, और तुम हमारे साथ अपनी उम्र के कई साल रहे।'	قَالَ اَلَمْ نُرَبِّكَ فِيْنَا وَلِيْدًا وَّلَبِثْتَ فِيْنَا مِنْ عُمُرِكَ سِنِيْنَ
19	और तुमने (वह) काम किया जो तुमने किया और तुम उन लोगों में से हो जो शुक्रगुज़ार नहीं हैं।'	وَفَعَلْتَ فَعْلَتَكَ الَّتِيْ فَعَلْتَ وَاَنْتَ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ
20	उसने (मूसा ने) कहा, 'मैंने वह काम किया, और उस वक़्त मैं ग़लती करने वालों में से था।'	قَالَ فَعَلْتُهَآ اِذًا وَّاَنَا مِنَ الضَّاۤلِّيْنَ
21	फिर मैं तुमसे डरकर भाग गया, फिर मेरे रब ने मुझे इल्म दिया और मुझे रसूलों में से एक बनाया।	فَفَرَرْتُ مِنْكُمْ لَمَّا خِفْتُكُمْ فَوَهَبَ لِيْ رَبِّيْ حُكْمًا وَّجَعَلَنِيْ مِنَ الْمُرْسَلِيْنَ
22	और यह वह एहसान है जो तुमने मुझ पर किया, (जबकि) तुमने बनी इसराइल को ग़ुलाम बनाया।'	وَتِلْكَ نِعْمَةٌ تَمُنُّهَا عَلَيَّ اَنْ عَبَّدْتَّ بَنِيْٓ اِسْرَاۤءِيْلَ
23	फ़िरऔन ने पूछा, 'यह सारे जहान का रब कौन है?'	قَالَ فِرْعَوْنُ وَمَا رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ
24	उसने (मूसा ने) जवाब दिया, 'आकाशों और धरती और उनके बीच की चीज़ों का रब (वही तुम्हारा रब है), अगर तुम यक़ीन करो।'	قَالَ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا اِنْ كُنْتُمْ مُّوْقِنِيْنَ
25	उसने (फ़िरऔन ने) अपने आसपास के लोगों से कहा, 'क्या तुम नहीं सुनते (वह क्या कह रहा है)?'	قَالَ لِمَنْ حَوْلَهٗٓ اَلَا تَسْتَمِعُوْنَ
26	उसने (मूसा ने) कहा, '(वह) तुम्हारा रब और तुम्हारे पुरखों का रब है।'	قَالَ رَبُّكُمْ وَرَبُّ اٰبَاۤىِٕكُمُ الْاَوَّلِيْنَ
27	उसने (फ़िरऔन ने) कहा, 'निश्चय ही, तुम्हारा वह रसूल जो तुम्हारे पास भेजा गया है, वह पागल है।'	قَالَ اِنَّ رَسُوْلَكُمُ الَّذِيْٓ اُرْسِلَ اِلَيْكُمْ لَمَجْنُوْنٌ
28	उसने (मूसा ने) कहा, '(वह) पूरब और पश्चिम और उनके बीच की चीज़ों का रब है, अगर तुम समझो।'	قَالَ رَبُّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ وَمَا بَيْنَهُمَا اِنْ كُنْتُمْ تَعْقِلُوْنَ

29	उसन`(फरिऔन न) कहा, 'अगर तमुन`मरे`सिवा कसी और को खद्वा बनाया, तो म`तमुह`कैदियों म`शामलि कर दूँगा।'	قَالَ لَئِنِ اتَّخَذْتَ اِلٰهًا غَيْرِيْ لَاَجْعَلَنَّكَ مِنَ الْمَسْجُوْنِيْنَ
30	उसन`(मूसा न) कहा, 'अगर म`तमुहार`पास कोई साफ़ चीज़ लाऊँ(तब भी)?'	قَالَ اَوَلَوْ جِئْتُكَ بِشَيْءٍ مُّبِيْنٍ
31	उसन`(फरिऔन न) कहा, 'तो उस`लाओ, अगर तमु सच्चों म`स` हो।'	قَالَ فَأْتِ بِهٖٓ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ
32	फरि उसन`(मूसा न) अपनी लाठी फकेी, तो वह साफ़ तौर पर एक साँप बन गया।	فَاَلْقٰى عَصَاهُ فَاِذَا هِيَ ثُعْبَانٌ مُّبِيْنٌ
33	और उसन`अपन`हाथ को बाहर नकिाला, तो वह दखेन`वालों क` लएि चमकदार हो गया।	وَنَزَعَ يَدَه فَاِذَا هِيَ بَيْضَاءُ لِلنّٰظِرِيْنَ
34	उसन`(फरिऔन न) अपन`आसपास क`सरदारों स`कहा, 'नशि्चय ही, यह एक कशुल जादूगर ह`'	قَالَ لِلْمَلَاِ حَوْلَه اِنَّ هٰذَا لَسٰحِرٌ عَلِيْمٌ
35	वह अपन`जाद ूस`तमुह`तमुहारी ज़मीन स`नकिालना चाहता ह;ै तो तमु क्या सलाह दते`हो?'	يُّرِيْدُ اَنْ يُّخْرِجَكُمْ مِّنْ اَرْضِكُمْ بِسِحْرِه فَمَاذَا تَاْمُرُوْنَ
36	उनहोंन`जवाब दयिा, 'उस`और उसक`भाई को (कछु वक़्त क` लएि) रोक दो, और सार`शहरों म`लोगों को भजे दो जो (जादूगरों को) इकट्ठा कर`	قَالُوْٓا اَرْجِهْ وَاَخَاهُ وَابْعَثْ فِى الْمَدَاۤئِنِ حٰشِرِيْنَ
37	व`तमुहार`पास हर कशुल जादूगर को लाएँगे।'	يَأْتُوْكَ بِكُلِّ سَحَّارٍ عَلِيْمٍ
38	तो जादूगरों को एक तय वक़्त पर एक तय दनि म`इकट्ठा कयिा गया।	فَجُمِعَ السَّحَرَةُ لِمِيْقَاتِ يَوْمٍ مَّعْلُوْمٍ
39	और लोगों स`कहा गया, 'क्या तमु सब इकट्ठा नहीं होगे?'	وَّقِيْلَ لِلنَّاسِ هَلْ اَنْتُمْ مُّجْتَمِعُوْنَ
40	ताकि हम उन जादूगरों का अनसुरण कर,ें अगर व`जीत जाएँ'	لَعَلَّنَا نَتَّبِعُ السَّحَرَةَ اِنْ كَانُوْا هُمُ الْغٰلِبِيْنَ
41	जब जादूगर आए, तो उनहोंन`फरिऔन स`कहा, 'क्या हम` सचमचु बड़ा इनाम मलिगेा अगर हम जीत गए?'	فَلَمَّا جَاءَ السَّحَرَةُ قَالُوْا لِفِرْعَوْنَ اَئِنَّ لَنَا لَاَجْرًا اِنْ كُنَّا نَحْنُ الْغٰلِبِيْنَ
42	उसन`(फरिऔन न) जवाब दयिा, 'हा,ँ और नशि्चय ही तमु मरे` करीबी लोगों म`शामलि हो जाओग।े'	قَالَ نَعَمْ وَاِنَّكُمْ اِذًا لَّمِنَ الْمُقَرَّبِيْنَ
43	उसन`(मूसा न) उनस`कहा, 'फकेो जो तमु फकेना चाहत`हो।'	قَالَ لَهُمْ مُّوْسٰٓى اَلْقُوْا مَآ اَنْتُمْ مُّلْقُوْنَ
44	तो उनहोंन`अपनी रस्सयिाँ और लाठयिाँ फकेी और कहा, 'फरिऔन की इज़्ज़त की कसम, नशि्चय ही हम ही जीतगे।े'	فَاَلْقَوْا حِبَالَهُمْ وَعِصِيَّهُمْ وَقَالُوْا بِعِزَّةِ فِرْعَوْنَ اِنَّا لَنَحْنُ الْغٰلِبُوْنَ

45	फरि मूसा न अपनी लाठी फकी, तो वह तुरंत उनकी बनाई हुई चीज़ों को निगल गई।	فَاَلْقٰى مُوْسٰى عَصَاهُ فَاِذَا هِيَ تَلْقَفُ مَا يَاْفِكُوْنَ
46	तो जादूगर सजदा करते हुए गिर पड़े	فَاُلْقِيَ السَّحَرَةُ سٰجِدِيْنَ
47	उन्होंने कहा, 'हम सारे जहान के रब पर ईमान लाए।'	قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ
48	(यानी) मूसा और हारून के रब पर।'	رَبِّ مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ
49	उसने (फिरऔन ने) कहा, 'तुम मुझसे पहले कि मैं तुम्हें इजाज़त दूँ? निश्चय ही, वह तुम्हारा सरदार है जिसने तुम्हें जादू सिखाया। अब तुम्हें पता चलेगा। मैं तुम्हारे हाथ और पाँव विपरीत दिशाओं में काट दूँगा और निश्चय ही, तुम सबको सलीब पर चढ़ा दूँगा।'	قَالَ اٰمَنْتُمْ لَهٗ قَبْلَ اَنْ اٰذَنَ لَكُمْ اِنَّهٗ لَكَبِيْرُكُمُ الَّذِيْ عَلَّمَكُمُ السِّحْرَ فَلَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ لَاُقَطِّعَنَّ اَيْدِيَكُمْ وَاَرْجُلَكُمْ مِّنْ خِلَافٍ وَّلَاُصَلِّبَنَّكُمْ اَجْمَعِيْنَ
50	उन्होंने कहा, 'हमें कोई डर नहीं, क्योंकि हम अपने रब की ओर लौटेंगे।'	قَالُوْا لَا ضَيْرَ اِنَّآ اِلٰى رَبِّنَا مُنْقَلِبُوْنَ
51	निश्चय ही, हम चाहते हैं कि हमारा रब हमारी गलतियों को माफ कर दे, क्योंकि हम सबसे पहले ईमान लाने वाले बने।'	اِنَّا نَطْمَعُ اَنْ يَّغْفِرَ لَنَا رَبُّنَا خَطٰيٰنَآ اَنْ كُنَّآ اَوَّلَ الْمُؤْمِنِيْنَ
52	और हमने मूसा को वह्य दी (हुक्म दिया), 'रात को अपने बन्दों (बनी इसराइल) को लेकर निकल जाओ, क्योंकि निश्चय ही तुम्हारा पीछा किया जाएगा।'	وَاَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰٓى اَنْ اَسْرِ بِعِبَادِيْٓ اِنَّكُمْ مُّتَّبَعُوْنَ
53	फिर फिरऔन ने शहरों में (लोगों को) भेजा (अपनी फौज इकट्ठा करने के लिए)।	فَاَرْسَلَ فِرْعَوْنُ فِى الْمَدَآئِنِ حٰشِرِيْنَ
54	(फिरऔन ने कहा,) 'निश्चय ही, ये (बनी इसराइल) बस एक छोटा समूह हैं'	اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ لَشِرْذِمَةٌ قَلِيْلُوْنَ
55	और निश्चय ही, उन्होंने हमें गुस्सा दिलाने वाली चीज़ की है	وَاِنَّهُمْ لَنَا لَغَآئِظُوْنَ
56	और निश्चय ही, हम सब बिना किसी अपवाद के सतर्क रहेंगे।'	وَاِنَّا لَجَمِيْعٌ حٰذِرُوْنَ
57	फिर हमने उन्हें (फिरऔन और उसकी कौम को) बागों और पानी के स्रोतों से निकाल दिया।	فَاَخْرَجْنٰهُمْ مِّنْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ
58	और (उनके) खज़ानों और सम्मानित मकाम से।	وَّكُنُوْزٍ وَّمَقَامٍ كَرِيْمٍ
59	इस तरह, और हमने यह सब बनी इसराइल को दे दिया।	كَذٰلِكَ وَاَوْرَثْنٰهَا بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ
60	फिर (फिरऔन और उसकी फौज ने) सूरज निकलने के वक़्त उनका पीछा किया।	فَاَتْبَعُوْهُمْ مُّشْرِقِيْنَ

61	जब दोनों समूह एक-दूसरे को देखने लगे, तो मूसा के साथियों ने कहा, 'हम सचमुच पकड़े जाएँगे।'	فَلَمَّا تَرٰٓاَ الْجَمْعٰنِ قَالَ اَصْحٰبُ مُوْسٰٓى اِنَّا لَمُدْرَكُوْنَ
62	उसने (मूसा ने) जवाब दिया, 'हरगिज़ नहीं (पकड़े जाएँगे); निश्चय ही, मेरा रब मेरे साथ है, वह मुझे रास्ता दिखाएगा।'	قَالَ كَلَّا اِنَّ مَعِيَ رَبِّيْ سَيَهْدِيْنِ
63	फिर हमने मूसा को वह्य दी, 'अपनी लाठी से समुद्र को मारो।' तो समुद्र दो हिस्सों में बँट गया, और हर हिस्सा एक बड़े पहाड़ जैसा था।	فَاَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰٓى اَنِ اضْرِبْ بِّعَصَاكَ الْبَحْرَ فَانْفَلَقَ فَكَانَ كُلُّ فِرْقٍ كَالطَّوْدِ الْعَظِيْمِ
64	और वहाँ हमने दूसरी कौम को करीब ला दिया।	وَاَزْلَفْنَا ثَمَّ الْاٰخَرِيْنَ
65	और हमने मूसा और उसके साथ के लोगों को बचा लिया।	وَاَنْجَيْنَا مُوْسٰى وَمَنْ مَّعَهٗٓ اَجْمَعِيْنَ
66	फिर हमने दूसरी कौम को डुबो दिया।	ثُمَّ اَغْرَقْنَا الْاٰخَرِيْنَ
67	निश्चय ही, इसमें (अल्लाह की कुदरत का) एक निशानी है, लेकिन उनमें से ज़्यादातर ईमान नहीं लाते।	اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ
68	और निश्चय ही, तुम्हारा रब वही है जो बहुत इज़्ज़त वाला, बहुत रहम करने वाला है।	وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ
69	और उनके लिए इब्राहीम की कहानी पढ़कर सुनाओ।	وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَاَ اِبْرٰهِيْمَ
70	जब उसने अपने बाप और अपनी कौम से कहा, 'तुम किसकी पूजा करते हो?'	اِذْ قَالَ لِاَبِيْهِ وَقَوْمِهٖ مَا تَعْبُدُوْنَ
71	उन्होंने जवाब दिया, 'हम मूर्तियों की पूजा करते हैं और हमेशा उनकी इबादत में लगे रहते हैं।'	قَالُوْا نَعْبُدُ اَصْنَامًا فَنَظَلُّ لَهَا عٰكِفِيْنَ
72	उसने (इब्राहीम ने) कहा, 'क्या वे तुम्हारी दुआ सुनते हैं जब तुम उनसे माँगते हो?'	قَالَ هَلْ يَسْمَعُوْنَكُمْ اِذْ تَدْعُوْنَ
73	या (क्या) वे तुम्हें फ़ायदा या नुक़सान पहुँचा सकते हैं?'	اَوْ يَنْفَعُوْنَكُمْ اَوْ يَضُرُّوْنَ
74	उन्होंने जवाब दिया, 'नहीं, लेकिन हमने अपने पुरखों को ऐसा करते पाया।'	قَالُوْا بَلْ وَجَدْنَآ اٰبَاۤءَنَا كَذٰلِكَ يَفْعَلُوْنَ
75	उसने (इब्राहीम ने) कहा, "क्या तुम उस चीज़ पर ध्यान देते हो जिसकी तुम पूजा करते हो?	قَالَ اَفَرَءَيْتُمْ مَّا كُنْتُمْ تَعْبُدُوْنَ
76	आप और आपके पूर्वज?	اَنْتُمْ وَاٰبَاؤُكُمُ الْاَقْدَمُوْنَ
77	निश्चय ही, वे (जिन्हें तुम पूजते हो) मेरे दुश्मन हैं, सिवाय सारे जहान के रब के।	فَاِنَّهُمْ عَدُوٌّ لِّيْٓ اِلَّا رَبَّ الْعٰلَمِيْنَ
78	(वही) जिसने मुझे पैदा किया, तो वही मुझे रास्ता दिखाता है।	الَّذِيْ خَلَقَنِيْ فَهُوَ يَهْدِيْنِ

79	और जो मुझे खाना और पानी देता है।	وَالَّذِيْ هُوَ يُطْعِمُنِيْ وَيَسْقِيْنِ
80	और जब मैं बीमार पड़ता हूँ, वही मुझे शफ़ा देता है।	وَاِذَا مَرِضْتُ فَهُوَ يَشْفِيْنِ
81	और जो मुझे मारेगा, फिर मुझे (दोबारा) ज़िंदा करेगा।	وَالَّذِيْ يُمِيْتُنِيْ ثُمَّ يُحْيِيْنِ
82	और जिससे मैं बहुत उम्मीद करता हूँ कि वह क़ियामत के दिन मेरी ग़लतियों को माफ़ कर देगा।'	وَالَّذِيْٓ اَطْمَعُ اَنْ يَّغْفِرَ لِيْ خَطِيْۤـَٔتِيْ يَوْمَ الدِّيْنِ
83	(इब्राहीम ने दुआ की,) 'ऐ मेरे रब! मुझे इल्म दे और मुझे सालेह लोगों में शामिल कर दे।'	رَبِّ هَبْ لِيْ حُكْمًا وَّاَلْحِقْنِيْ بِالصّٰلِحِيْنَ
84	और मेरे लिए बाद में आने वालों में अच्छी बात बनाए रख।	وَاجْعَلْ لِّيْ لِسَانَ صِدْقٍ فِى الْاٰخِرِيْنَ
85	और मुझे नेअमतों से भरी जन्नत का वारिस बना दे।	وَاجْعَلْنِيْ مِنْ وَّرَثَةِ جَنَّةِ النَّعِيْمِ
86	और मेरे बाप को माफ़ कर दे, निश्चय ही, वह गुमराहों में से था।	وَاغْفِرْ لِاَبِيْٓ اِنَّه كَانَ مِنَ الضَّاۤلِّيْنَ
87	और उस दिन मुझे रुसवा न कर जब लोग (दोबारा) उठाए जाएँगे।	وَلَا تُخْزِنِيْ يَوْمَ يُبْعَثُوْنَ
88	(वह दिन) जब न तो माल और न ही औलाद कोई फ़ायदा देगी।	يَوْمَ لَا يَنْفَعُ مَالٌ وَّلَا بَنُوْنَ
89	सिवाय उस शख़्स के जो अल्लाह के पास साफ़ दिल लेकर आए।	اِلَّا مَنْ اَتَى اللّٰهَ بِقَلْبٍ سَلِيْمٍ
90	और जन्नत को तक़वावालों के क़रीब लाया जाएगा।	وَاُزْلِفَتِ الْجَنَّةُ لِلْمُتَّقِيْنَ
91	और जहन्नम की आग को गुमराहों के लिए साफ़ तौर पर दिखाया जाएगा।	وَبُرِّزَتِ الْجَحِيْمُ لِلْغَاوِيْنَ
92	और उनसे कहा जाएगा, 'वे मूर्तियाँ कहाँ हैं जिनकी तुम पूजा करते थे।'	وَقِيْلَ لَهُمْ اَيْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْبُدُوْنَ
93	अल्लाह के सिवा? क्या वे तुम्हारी मदद कर सकती हैं या अपनी मदद कर सकती हैं?'	مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ هَلْ يَنْصُرُوْنَكُمْ اَوْ يَنْتَصِرُوْنَ
94	तो वे (मूर्तियाँ) गुमराहों के साथ जहन्नम में उलट-पुलट कर दी जाएँगी।	فَكُبْكِبُوْا فِيْهَا هُمْ وَالْغَاوٗنَ
95	और इब्लीस की सारी फ़ौज भी।	وَجُنُوْدُ اِبْلِيْسَ اَجْمَعُوْنَ
96	वे (जहन्नम में) आपस में झगड़ते हुए कहेंगे।	قَالُوْا وَهُمْ فِيْهَا يَخْتَصِمُوْنَ
97	'अल्लाह की क़सम, निश्चय ही, हम दुनिया में साफ़ गुमराही में थे।'	تَاللّٰهِ اِنْ كُنَّا لَفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ

98	जब हमन`े तुम्ह (मूरतियो) को सार`े जहान क`े रब क`े बराबर ठहराया।	اِذْ نُسَوِّيْكُمْ بِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ
99	और हम`े गुनहगारो`ं के`सिवा किसी न`े गुमराह नहीं किया।	وَمَآ اَضَلَّنَآ اِلَّا الْمُجْرِمُوْنَ
100	अब हमार`े लिए न कोई सफिारशि करन`े वाला ह`ै	فَمَا لَنَا مِنْ شٰفِعِيْنَ
101	और न ही कोई करीबी दोसत़।	وَلَا صَدِيْقٍ حَمِيْمٍ
102	काश, हम` (दुनिया म`ै) वापस लौटन`े का मौका मलि`े तो हम ईमान लान`े वालो`ं म`ै स`े हो`ं।'	فَلَوْ اَنَّ لَنَا كَرَّةً فَنَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ
103	नशि़चय ही, इसम`ै (अल़लाह की कद़रत का) एक नशिानी ह`ै, लेकनि उनम`ै स`े ज़्यादातर ईमान नहीं लात`े।	اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ
104	और नशि़चय ही, तुम्हारा रब वही ह`ै जो बहत़ इज़्ज़त़ वाला, बहत़ रहम करन`े वाला ह`ै।	وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ
105	नूह की कौम न`े रसूलो`ं को झठुलाया।	كَذَّبَتْ قَوْمُ نُوْحِ الْمُرْسَلِيْنَ
106	जब उनक`े भाई नूह न`े उनस`े कहा, 'क्या तुम तकवा नहीं अपनाओग?'	اِذْ قَالَ لَهُمْ اَخُوْهُمْ نُوْحٌ اَلَا تَتَّقُوْنَ
107	नशि़चय ही, म`ै तुम्हार`े लिए एक भरोसमेंद रसूल हूँ	اِنِّيْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِيْنٌ
108	तो अल़लाह स`े डरो और मरी बात मानो।	فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ
109	और म`ै तुमस`े इसक`े लिए कोई जज़्या नहीं माँगता; मरो अजर तो सार`े जहान क`े रब क`े पास ह`ै।	وَمَآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلٰى رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ
110	तो अल़लाह स`े डरो और मरी बात मानो।'	فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ
111	उनहो`ंने कहा, 'क्या हम तुम पर ईमान लाएँ, जबकि तुम्हार`े पीछ`े नीच लोग ह`ै?'	قَالُوْٓا اَنُؤْمِنُ لَكَ وَاتَّبَعَكَ الْاَرْذَلُوْنَ
112	उसन`े (नूह न`े) जवाब दयिा, 'मुझ`े नहीं पता कि व`े क्या करत`े ह`ैं'	قَالَ وَمَا عِلْمِيْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ
113	उनक`े आमाल का हसिाब तो मर`े रब क`े पास ह`ै, अगर तुम समझो।	اِنْ حِسَابُهُمْ اِلَّا عَلٰى رَبِّيْ لَوْ تَشْعُرُوْنَ
114	और म`ैं ईमान वालो`ं को नहीं नकिालूँगा।	وَمَآ اَنَا بِطَارِدِ الْمُؤْمِنِيْنَ
115	म`ै तो सरि़फ एक साफ़ नसीहत दने`े वाला हूँ'	اِنْ اَنَا اِلَّا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ
116	उनहो`ंने कहा, 'ऐ नूह! अगर तुम नहीं रुक`े तो नशि़चय ही तुम उन लोगो`ं म`ै स`े होग`े जनिह`ें पत़थरो`ं स`े मार दयिा जाएगा।'	قَالُوْا لَئِنْ لَّمْ تَنْتَهِ يٰنُوْحُ لَتَكُوْنَنَّ مِنَ الْمَرْجُوْمِيْنَ

117	उसने (नूह ने) कहा, 'ऐ मेरे रब! मेरी कौम ने मुझे झुठलाया।'	قَالَ رَبِّ اِنَّ قَوْمِيْ كَذَّبُوْنِ
118	तो मेरे और उनके बीच फ़ैसला कर दे, और मुझे और मेरे साथ के ईमान वालों को बचा ले।'	فَافْتَحْ بَيْنِيْ وَبَيْنَهُمْ فَتْحًا وَّنَجِّنِيْ وَمَنْ مَّعِيَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ
119	फिर हमने उसे और उसके साथ के लोगों को भरी हुई कश्ती में बचा लिया।	فَاَنْجَيْنٰهُ وَمَنْ مَّعَه فِى الْفُلْكِ الْمَشْحُوْنِ
120	फिर उसके बाद हमने बाकी लोगों को डुबो दिया।	ثُمَّ اَغْرَقْنَا بَعْدُ الْبَاقِيْنَ
121	निश्चय ही, इसमें (अल्लाह की क़ुदरत का) एक निशानी है, लेकिन उनमें से ज़्यादातर ईमान नहीं लाते।	اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ
122	और निश्चय ही, तुम्हारा रब वही है जो बहुत इज़्ज़त वाला, बहुत रहम करने वाला है।	وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ
123	आद की कौम ने रसूलों को झुठलाया।	كَذَّبَتْ عَادُ الْمُرْسَلِيْنَ
124	जब उनके भाई हूद ने उनसे कहा, 'क्या तुम तक़वा नहीं अपनाओगे?'	اِذْ قَالَ لَهُمْ اَخُوْهُمْ هُوْدٌ اَلَا تَتَّقُوْنَ
125	निश्चय ही, मैं तुम्हारे लिए एक भरोसेमंद रसूल हूँ।	اِنِّيْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِيْنٌ
126	तो अल्लाह से डरो और मेरी बात मानो।	فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ
127	और मैं तुमसे इसके लिए कोई जज़्या नहीं माँगता; मेरा अज्र तो सारे जहान के रब के पास है।	وَمَآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلٰى رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ
128	क्या तुम हर ऊँची जगह पर बेकार में शानदार इमारत बनाते हो?	اَتَبْنُوْنَ بِكُلِّ رِيْعٍ اٰيَةً تَعْبَثُوْنَ
129	और क्या तुम क़िले बनाते हो, यह सोचकर कि तुम हमेशा रहोगे?	وَتَتَّخِذُوْنَ مَصَانِعَ لَعَلَّكُمْ تَخْلُدُوْنَ
130	और जब तुम सज़ा देते हो, तो बहुत बेरहमी और सख़्ती से करते हो।	وَاِذَا بَطَشْتُمْ بَطَشْتُمْ جَبَّارِيْنَ
131	तो अल्लाह से डरो और मेरी बात मानो।	فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ
132	और उससे डरो जिसने तुम्हें वह सब कुछ दिया जो तुम जानते हो।	وَاتَّقُوا الَّذِيْٓ اَمَدَّكُمْ بِمَا تَعْلَمُوْنَ
133	उसने तुम्हें मवेशी और औलाद दी।	اَمَدَّكُمْ بِاَنْعَامٍ وَّبَنِيْنَ
134	और बाग़ और पानी के स्रोत।	وَجَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ

135	निश्चय ही, मुझे डर है कि तुम पर एक बड़े दिन का अज़ाब आएगा।'	اِنِّيْٓ اَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ
136	उन्होंने जवाब दिया, 'हमारे लिए एक जैसा है चाहे तुम नसीहत दो या न दो।'	قَالُوْا سَوَاۤءٌ عَلَيْنَآ اَوَعَظْتَ اَمْ لَمْ تَكُنْ مِّنَ الْوٰعِظِيْنَ
137	(हमारा धरम) बस पुरखों की रीत है।	اِنْ هٰذَآ اِلَّا خُلُقُ الْاَوَّلِيْنَ
138	और हम (कभी) अज़ाब में नहीं पड़ेंगे।'	وَمَا نَحْنُ بِمُعَذَّبِيْنَ
139	तो उन्होंने उस (हूद को) झुठलाया, फिर हमने उन्हें नष्ट कर दिया। निश्चय ही, इसमें (अल्लाह की कुदरत का) एक निशानी है, लेकिन उनमें से ज़्यादातर ईमान नहीं लाते।	فَكَذَّبُوْهُ فَاَهْلَكْنٰهُمْ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ
140	और निश्चय ही, तुम्हारा रब वही है जो बहुत इज़्ज़त वाला, बहुत रहम करने वाला है।	وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ
141	समूद की कौम ने रसूलों को झुठलाया।	كَذَّبَتْ ثَمُوْدُ الْمُرْسَلِيْنَ
142	जब उनके भाई सालेह ने उनसे कहा, 'क्या तुम तकवा नहीं अपनाओगे?'	اِذْ قَالَ لَهُمْ اَخُوْهُمْ صٰلِحٌ اَلَا تَتَّقُوْنَ
143	निश्चय ही, मैं तुम्हारे लिए एक भरोसेमंद रसूल हूँ	اِنِّيْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِيْنٌ
144	तो अल्लाह से डरो और मेरी बात मानो।	فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ
145	और मैं तुमसे इसके लिए कोई जज़िया नहीं माँगता; मेरा अजर तो सारे जहान के रब के पास है।	وَمَآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلٰى رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ
146	क्या तुम (सोचते हो) कि तुम यहाँ (अपनी ज़मीन पर) हमेशा सुरक्षित रहोगे।	اَتُتْرَكُوْنَ فِيْ مَا هٰهُنَآ اٰمِنِيْنَ
147	बागों और पानी के सोतों में।	فِيْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ
148	और खेतों और खजूर के पेड़ों में, जिनके फल नरम हैं।	وَّزُرُوْعٍ وَّنَخْلٍ طَلْعُهَا هَضِيْمٌ
149	और तुम कुशलता से पहाड़ों को तराशकर घर बनाते हो।	وَتَنْحِتُوْنَ مِنَ الْجِبَالِ بُيُوْتًا فٰرِهِيْنَ
150	तो अल्लाह से डरो और मेरी बात मानो।	فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ
151	और उन लोगों की बात न मानो जो हद से बढ़ जाते हैं।	وَلَا تُطِيْعُوْٓا اَمْرَ الْمُسْرِفِيْنَ
152	जो धरती पर बिगाड़ करते हैं और सुधार नहीं करते।'	الَّذِيْنَ يُفْسِدُوْنَ فِى الْاَرْضِ وَلَا يُصْلِحُوْنَ
153	उन्होंने कहा, 'निश्चय ही, तुम उन लोगों में से हो जो जादू में फँसे हैं।	قَالُوْٓا اِنَّمَآ اَنْتَ مِنَ الْمُسَحَّرِيْنَ

154	तमु बस हमार जैसे इंसान हो; तो कोई मकुजज़ा लाओ अगर तमु सच्चों मं से हो।'	مَآ اَنْتَ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا فَأْتِ بِاٰيَةٍ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ
155	उसन (सालहे न) जवाब दयिा, 'यह एक ऊटँनी ह,ै जसि (गलिरि स) पानी पीन का हक़ ह,ै और तमुह भी एक तय दनि म पानी पीन का हक़ ह।ै'	قَالَ هٰذِهٖ نَاقَةٌ لَّهَا شِرْبٌ وَّلَكُمْ شِرْبُ يَوْمٍ مَّعْلُوْمٍ
156	और इस कसिी बरुाई क साथ मत छ,ूना, वरना तमु पर एक भयानक दनि का अज़ाब आएगा।'	وَلَا تَمَسُّوْهَا بِسُوْٓءٍ فَيَأْخُذَكُمْ عَذَابُ يَوْمٍ عَظِيْمٍ
157	फरि उनहोंन उस (ऊटँनी को) मार डाला, तो व पछतान लग।	فَعَقَرُوْهَا فَاَصْبَحُوْا نٰدِمِيْنَ
158	तो उन पर अज़ाब आया। नश्चिय ही, इसम (अल्लाह की कदुरत का) एक नशिानी ह,ै लकेनि उनम स ज़्यादातर ईमान नहीं लात।	فَاَخَذَهُمُ الْعَذَابُ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ
159	और नश्चिय ही, तमुहारा रब वही ह ैजो बहतु इज़्ज़त वाला, बहतु रहम करन वाला ह।ै	وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ
160	लतू की कौम न रसलूों को झठुलाया।	كَذَّبَتْ قَوْمُ لُوْطِ ِالْمُرْسَلِيْنَ
161	जब उनक भाई लतू न उनस कहा, 'क्या तमु तकवा नहीं अपनाओग?े'	اِذْ قَالَ لَهُمْ اَخُوْهُمْ لُوْطٌ اَلَا تَتَّقُوْنَ
162	नश्चिय ही, म ैतमुहार लएि एक भरोसमेंद रसलू हूँ	اِنِّيْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِيْنٌ
163	तो अल्लाह स डेरो और मरेी बात मानो।	فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ
164	और म ैतमुस इसक लएि कोई जज़यिा नहीं माँगता; मरेा अजर तो सार जहान क रब क पास ह।ै	وَمَآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلٰى رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ
165	क्या तमु सार जहान क लोगों म स मरदों क पास जात हो?	اَتَأْتُوْنَ الذُّكْرَانَ مِنَ الْعٰلَمِيْنَ
166	और अपनी बीवयिों को छोड़ दते हो, जनिह तमुहार रब न तमुहार लएि बनाया? बल्कि तमु हद स बढ़न वाली कौम हो।'	وَتَذَرُوْنَ مَا خَلَقَ لَكُمْ رَبُّكُمْ مِّنْ اَزْوَاجِكُمْ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ عَادُوْنَ
167	उनहोंन कहा, 'ऐ लतू! अगर तमु नहीं रुक,े तो नश्चिय ही तमु नकिाल जाओगे।'	قَالُوْا لَئِنْ لَّمْ تَنْتَهِ يٰلُوْطُ لَتَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُخْرَجِيْنَ
168	उसन (लतू न) कहा, 'नश्चिय ही, म ैतमुहार इस काम स नफरत करन वालों म स हूँ'	قَالَ اِنِّيْ لِعَمَلِكُمْ مِّنَ الْقَالِيْنَ
169	(लतू न दआु की,) 'ऐ मरे रब! मझु और मरे परविार को उनक कएि हए कामों (क अंजाम) स बचा ल।'	رَبِّ نَجِّنِيْ وَاَهْلِيْ مِمَّا يَعْمَلُوْنَ

170	तो हमने उसे और उसके पूरे परिवार को बचा लिया।	فَنَجَّيْنٰهُ وَاَهْلَهٗۤ اَجْمَعِيْنَ
171	सिवाय एक बूढ़ी औरत (उसकी बीवी) के, जो पीछे रहने वालों में थी।	اِلَّا عَجُوْزًا فِى الْغٰبِرِيْنَ
172	फिर हमने बाकी लोगों को नष्ट कर दिया।	ثُمَّ دَمَّرْنَا الْاٰخَرِيْنَ
173	और हमने उन पर (पत्थरों की) बारिश की, तो उन लोगों पर कितनी बुरी बारिश हुई जिन्हें नसीहत दी गई थी।	وَاَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَّطَرًا فَسَآءَ مَطَرُ الْمُنْذَرِيْنَ
174	निश्चय ही, इसमें (अल्लाह की कुदरत का) एक निशानी है, लेकिन उनमें से ज़्यादातर ईमान नहीं लाते।	اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ
175	और निश्चय ही, तुम्हारा रब वही है जो बहुत इज़्ज़त वाला, बहुत रहम करने वाला है।	وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ
176	ऐका के बाशिंदों ने रसूलों को झुठलाया।	كَذَّبَ اَصْحٰبُ لْـَٔيْكَةِ الْمُرْسَلِيْنَ
177	जब शुएब ने उनसे कहा, 'क्या तुम तकवा नहीं अपनाओगे?'	اِذْ قَالَ لَهُمْ شُعَيْبٌ اَلَا تَتَّقُوْنَ
178	निश्चय ही, मैं तुम्हारे लिए एक भरोसेमंद रसूल हूँ	اِنِّىْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِيْنٌ
179	तो अल्लाह से डरो और मेरी बात मानो।	فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ
180	और मैं तुमसे इसके लिए कोई जज़िया नहीं माँगता; मेरा अजर तो सारे जहान के रब के पास है।	وَمَآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلٰى رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ
181	पूरा नाप दो और नाप में कमी करने वालों में से न हो।	اَوْفُوا الْكَيْلَ وَلَا تَكُوْنُوْا مِنَ الْمُخْسِرِيْنَ
182	और सही तराज़ू से तौलो।	وَزِنُوْا بِالْقِسْطَاسِ الْمُسْتَقِيْمِ
183	और लोगों को उनकी चीज़ों में नुकसान न पहुँचाओ और धरती पर बिगाड़ करने वालों में से न हो।	وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ اَشْيَآءَهُمْ وَلَا تَعْثَوْا فِى الْاَرْضِ مُفْسِدِيْنَ
184	और उससे डरो जिसने तुम्हें और पहले की उम्मतों को पैदा किया।'	وَاتَّقُوا الَّذِىْ خَلَقَكُمْ وَالْجِبِلَّةَ الْاَوَّلِيْنَ
185	उन्होंने कहा, 'निश्चय ही, तुम उन लोगों में से हो जो जादू में फँसे हैं'	قَالُوْٓا اِنَّمَآ اَنْتَ مِنَ الْمُسَحَّرِيْنَ
186	और तुम बस हमारे जैसे इंसान हो, और हमें यकीन है कि तुम झूठों में से हो।'	وَمَآ اَنْتَ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا وَاِنْ نَّظُنُّكَ لَمِنَ الْكٰذِبِيْنَ
187	तो हमारे ऊपर आकाश से एक टुकड़ा गिरा दे, अगर तुम सच्चों में से हो।'	فَاَسْقِطْ عَلَيْنَا كِسَفًا مِّنَ السَّمَآءِ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ

188	उसने (शुएब ने) कहा, 'मेरा रब तुम्हारे किए हुए को ज़्यादा जानता है।'	قَالَ رَبِّيْٓ اَعْلَمُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ
189	फिर उन्होंने उस (शुएब को) झुठलाया, तो उन पर अँधेरे दिन का अज़ाब आया। निश्चय ही, वह एक भयानक दिन का अज़ाब था।	فَكَذَّبُوْهُ فَاَخَذَهُمْ عَذَابُ يَوْمِ الظُّلَّةِ اِنَّه كَانَ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ
190	निश्चय ही, इसमें (अल्लाह की कुदरत का) एक निशानी है, लेकिन उनमें से ज़्यादातर ईमान नहीं लाते।	اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ
191	और निश्चय ही, तुम्हारा रब वही है जो बहुत इज़्ज़त वाला, बहुत रहम करने वाला है।	وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ
192	और निश्चय ही, (कुरआन) यह सारे जहान के रब की ओर से उतारा गया है।	وَاِنَّه لَتَنْزِيْلُ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ
193	जिसे रूहुल अमीन (जिब्रील) लेकर आया।	نَزَلَ بِهِ الرُّوْحُ الْاَمِيْنُ
194	तुम्हारे (मुहम्मद) दिल में, ताकि तुम नसीहत देने वालों में से हो।	عَلٰى قَلْبِكَ لِتَكُوْنَ مِنَ الْمُنْذِرِيْنَ
195	स्पष्ट अरबी ज़बान में।	بِلِسَانٍ عَرَبِيٍّ مُّبِيْنٍ
196	और निश्चय ही, यह (कुरआन) पहले वालों की किताबों में (ज़िक्र) है।	وَاِنَّه لَفِيْ زُبُرِ الْاَوَّلِيْنَ
197	क्या उनके लिए यह निशानी नहीं कि बनी इसराइल के उलमा इसे जानते हैं?	اَوَلَمْ يَكُنْ لَّهُمْ اٰيَةً اَنْ يَّعْلَمَه عُلَمٰٓؤُا بَنِيْٓ اِسْرَاۤءِيْلَ
198	और अगर हम ने (कुरआन) को गैर-अरब लोगों में से किसी पर उतारा होता।	وَلَوْ نَزَّلْنٰهُ عَلٰى بَعْضِ الْاَعْجَمِيْنَ
199	और वह इस उनके सामने पढ़ता, तो भी वे इस पर ईमान नहीं लाते।	فَقَرَاَه عَلَيْهِمْ مَّا كَانُوْا بِه مُؤْمِنِيْنَ
200	इस तरह, हम ने (झूठ और इंकार) को गुनहगारों के दिलों में डाल दिया।	كَذٰلِكَ سَلَكْنٰهُ فِيْ قُلُوْبِ الْمُجْرِمِيْنَ
201	वे इस पर ईमान नहीं लाएँगे, जब तक कि वे दरदनाक अज़ाब को न देख लें।	لَا يُؤْمِنُوْنَ بِه حَتّٰى يَرَوُا الْعَذَابَ الْاَلِيْمَ
202	तो वह अज़ाब उनके पास अचानक आएगा, जब वे इसका अंदाज़ा भी नहीं करेंगे।	فَيَاْتِيَهُمْ بَغْتَةً وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ
203	फिर वे कहेंगे, 'क्या हमें कुछ मोहलत दी जाएगी?'	فَيَقُوْلُوْا هَلْ نَحْنُ مُنْظَرُوْنَ
204	क्या वे हमारे अज़ाब को जल्दी माँगते हैं?	اَفَبِعَذَابِنَا يَسْتَعْجِلُوْنَ
205	तो तुम्हारा क्या ख़याल है, अगर हम उन्हें कुछ सालों तक मज़े करने दें।	اَفَرَءَيْتَ اِنْ مَّتَّعْنٰهُمْ سِنِيْنَ

206	फिर उनके पास वह अज़ाब आए जो उन्हें वादा किया गया था।	ثُمَّ جَاءَهُمْ مَّا كَانُوْا يُوْعَدُوْنَ
207	तो उनके लिए वह मज़े जो उन्होंने लिए, कुछ काम नहीं आएँगे।	مَآ اَغْنٰى عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يُمَتَّعُوْنَ
208	और हमने कोई बस्ती नष्ट नहीं की, सिवाय इसके कि उसमें नसीहत देने वाले थे।	وَمَآ اَهْلَكْنَا مِنْ قَرْيَةٍ اِلَّا لَهَا مُنْذِرُوْنَ
209	नसीहत के लिए। और हम ज़ुल्म करने वाले नहीं हैं।	ذِكْرٰى وَمَا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ
210	और (क़ुरआन) को शैतानों ने नहीं उतारा।	وَمَا تَنَزَّلَتْ بِهِ الشَّيٰطِيْنُ
211	और यह उनके लिए मुनासिब नहीं है, और न ही वे ऐसा कर सकते हैं।	وَمَا يَنْۢبَغِيْ لَهُمْ وَمَا يَسْتَطِيْعُوْنَ
212	निश्चय ही, इस सुनने से भी वे दूर रखे गए हैं।	اِنَّهُمْ عَنِ السَّمْعِ لَمَعْزُوْلُوْنَ
213	तो अल्लाह के सिवा किसी और ख़ुदा को न पुकारो, वरना तुम अज़ाब पाने वालों में शामिल हो जाओगे।	فَلَا تَدْعُ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ فَتَكُوْنَ مِنَ الْمُعَذَّبِيْنَ
214	और (मुहम्मद) अपने करीबी रिश्तेदारों को नसीहत दो।	وَاَنْذِرْ عَشِيْرَتَكَ الْاَقْرَبِيْنَ
215	और उन ईमान वालों के लिए नरमी दिखाओ जो तुम्हारा अनुसरण करते हैं।	وَاخْفِضْ جَنَاحَكَ لِمَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ
216	फिर अगर वे तुम्हारी नाफरमानी करें, तो कह दो (मुहम्मद), 'निश्चय ही, मैं तुम्हारे किए हुए से बरी हूँ'	فَاِنْ عَصَوْكَ فَقُلْ اِنِّيْ بَرِيْٓءٌ مِّمَّا تَعْمَلُوْنَ
217	और (अल्लाह) पर भरोसा करो, जो बहुत इज़्ज़त वाला, बहुत रहम करने वाला है।	وَتَوَكَّلْ عَلَى الْعَزِيْزِ الرَّحِيْمِ
218	जो तुम्हें देखता है जब तुम (नमाज़ के लिए) खड़े होते हो।	الَّذِيْ يَرٰىكَ حِيْنَ تَقُوْمُ
219	और तुम्हारी हलचल को उन लोगों में जो सजदा करते हैं।	وَتَقَلُّبَكَ فِى السّٰجِدِيْنَ
220	निश्चय ही, वह सब कुछ सुनने वाला, सब कुछ जानने वाला है।	اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ
221	क्या मैं तुम्हें बताऊँ कि शैतान किनके पास उतरते हैं?	هَلْ اُنَبِّئُكُمْ عَلٰى مَنْ تَنَزَّلُ الشَّيٰطِيْنُ
222	वे हर झूठे और गुनहगार के पास उतरते हैं।	تَنَزَّلُ عَلٰى كُلِّ اَفَّاكٍ اَثِيْمٍ
223	वे अपनी सुनी-सुनाई बातें पहुँचाते हैं, और उनमें से ज़्यादातर झूठे हैं।	يُّلْقُوْنَ السَّمْعَ وَاَكْثَرُهُمْ كٰذِبُوْنَ
224	और शायरों के पीछे गुमराह लोग चलते हैं।	وَالشُّعَرَاءُ يَتَّبِعُهُمُ الْغَاوٗنَ

225	क्या तुम नहीं देखते कि वे हर वादी में भटकते हैं?	اَلَمْ تَرَ اَنَّهُمْ فِيْ كُلِّ وَادٍ يَّهِيْمُوْنَ
226	और यह कि वे वह कहते हैं जो वे खुद नहीं करते?	وَاَنَّهُمْ يَقُوْلُوْنَ مَا لَا يَفْعَلُوْنَ
227	सिवाय उन (शायरों) के जो ईमान लाए और नेक काम किए और अल्लाह को बहुत याद करते हैं और जुल्म के बाद (काफिरों की शायरी का जवाब देकर) जीत हासिल करते हैं और जालिम लोग जल्द ही जान लेंगे कि वे कहाँ लौटेंगे।	اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَذَكَرُوا اللّٰهَ كَثِيْرًا وَّانْتَصَرُوْا مِنْۢ بَعْدِ مَا ظُلِمُوْا وَسَيَعْلَمُ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْٓا اَيَّ مُنْقَلَبٍ يَّنْقَلِبُوْنَ

छंदों की संख्या	اَلنَّمْل	مكية
९३	अन-नमल - 27	मक्की

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अन-नमल (चींटियाँ)

1	ता सीन। ये अल-क़ुरआन की आयतें हैं और एक स्पष्ट किताब,	طٰسٓ تِلْكَ اٰيٰتُ الْقُرْاٰنِ وَكِتَابٍ مُّبِيْنٍ
2	ईमान वालों के लिए हिदायत और ख़ुशख़बरी,	هُدًى وَّبُشْرٰى لِلْمُؤْمِنِيْنَ
3	(वे लोग) जो नमाज़ क़ायम करते हैं और ज़कात देते हैं, और वे आख़िरत पर यक़ीन रखते हैं।	الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ يُوْقِنُوْنَ
4	बशेक, जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं लाते, हमने उनके (बुरे) कामों को उनके लिए ख़ूबसूरत कर दिया, इस तरह वे गुमराही में भटकते रहते हैं।	اِنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ زَيَّنَّا لَهُمْ اَعْمَالَهُمْ فَهُمْ يَعْمَهُوْنَ
5	यही वे लोग हैं जिनके (दुनिया में) बुरा अज़ाब मिलेगा और आख़िरत में वे सबसे ज़्यादा नुक़सान उठाने वाले होंगे।	اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ لَهُمْ سُوْٓءُ الْعَذَابِ وَهُمْ فِى الْاٰخِرَةِ هُمُ الْاَخْسَرُوْنَ
6	और बशेक, तुझे पर (मुहम्मद) अल-क़ुरआन उस (अल्लाह) की तरफ़ से उतारा गया जो बहुत हिकमत वाला, बहुत जानने वाला है।	وَاِنَّكَ لَتُلَقَّى الْقُرْاٰنَ مِنْ لَّدُنْ حَكِيْمٍ عَلِيْمٍ
7	(याद करो) जब मूसा ने अपने घरवालों से कहा, 'मैंने आग देखी है। मैं तुम्हारे लिए उसकी कुछ ख़बर लाऊँगा, या मैं तुम्हारे लिए आग का एक अंगारा लाऊँगा ताकि तुम ताप सको।'	اِذْ قَالَ مُوْسٰى لِاَهْلِهٖٓ اِنِّيْٓ اٰنَسْتُ نَارًا سَاٰتِيْكُمْ مِّنْهَا بِخَبَرٍ اَوْ اٰتِيْكُمْ بِشِهَابٍ قَبَسٍ لَّعَلَّكُمْ تَصْطَلُوْنَ
8	तो जब वह वहाँ (आग के पास) पहुँचा, उसे पुकारा गया, 'बरकत दी गई उन लोगों को जो आग के पास हैं और जो इसके आसपास हैं। अल्लाह, सारे जहानों का रब, पाक है।'	فَلَمَّا جَاۤءَهَا نُوْدِيَ اَنْ بُوْرِكَ مَنْ فِى النَّارِ وَمَنْ حَوْلَهَا وَسُبْحٰنَ اللّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ
9	(अल्लाह ने फ़रमाया), 'ऐ मूसा! बशेक, मैं अल्लाह हूँ, जो बहुत ज़बरदस्त, बहुत हिकमत वाला है।'	يٰمُوْسٰٓى اِنَّهٗٓ اَنَا اللّٰهُ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ
10	और अपनी लाठी फेंके।' तो जब (मूसा ने) उसे साँप की तरह हरकत करते देखा, वह पीछे हटकर भागा और पलटकर न देखा। 'ऐ मूसा! डर मत! बशेक, मेरे सामने रसूलों को डरने की ज़रूरत नहीं,	وَاَلْقِ عَصَاكَ فَلَمَّا رَاٰهَا تَهْتَزُّ كَاَنَّهَا جَاۤنٌّ وَّلّٰى مُدْبِرًا وَّلَمْ يُعَقِّبْ يٰمُوْسٰٓى لَا تَخَفْ اِنِّيْ لَا يَخَافُ لَدَيَّ الْمُرْسَلُوْنَ
11	सिवाय उस शख़्स के जो जुल्म करता हो, फिर बुराई के बाद नेकी से बदल ले (तौबा कर ले); तो बशेक, मैं बहुत बख़्शने वाला, बहुत रहम करने वाला हूँ।'	اِلَّا مَنْ ظَلَمَ ثُمَّ بَدَّلَ حُسْنًا بَعْدَ سُوْۤءٍ فَاِنِّيْ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ

وَاَدْخِلْ يَدَكَ فِيْ جَيْبِكَ تَخْرُجْ بَيْضَاءَ مِنْ غَيْرِ سُوْۤءٍ فِيْ تِسْعِ اٰيٰتٍ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَقَوْمِهٖ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا فٰسِقِيْنَ	और अपना हाथ अपनी जबे म॑डाल, वह बनि कसिी नक़ुसान क॑ चमकता हआु नकिलगेा। (य॑दोनो) नौ मोजज़ि॑ म॑स॑ ह॑(जो तझु) फ़रि़औन और उसकी क़ौम क॑ लएि (दखिान॑ ह॑)। बशेक, व॑ फ़ासकि़ लोग ह॑'	**12**
فَلَمَّا جَاءَتْهُمْ اٰيٰتُنَا مُبْصِرَةً قَالُوْا هٰذَا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ	तो जब हमार॑ साफ़ मोजज़ि॑ उनक॑ पास पहचुँ,े उनहो॑न॑ कहा, 'यह तो साफ़ जाद॒ू ह॑'	**13**
وَجَحَدُوْا بِهَا وَاسْتَيْقَنَتْهَاۤ اَنْفُسُهُمْ ظُلْمًا وَّعُلُوًّا فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِيْنَ	और उनहो॑न॑ जलु़म और सरकशी की वजह स॑ उस॑ नकार दयिा, हालाकँि उनक॑ दलि उसकी (सचचाई की) तसदी़क़ करत॑ थ॑। तो दखे़ो कि फ़साद करन॑ वालो॑ का अ॑जाम कसैा हआु।	**14**
وَلَقَدْ اٰتَيْنَا دَاوٗدَ وَسُلَيْمٰنَ عِلْمًا وَقَالَا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ فَضَّلَنَا عَلٰى كَثِيْرٍ مِّنْ عِبَادِهِ الْمُؤْمِنِيْنَ	और बशेक, हमन॑ दाऊद और सलुमेान को इलम दयिा; और दोनो॑ न॑ कहा, 'सारी तारीफ़ अलल़ाह क॑ लएि, जसिन॑ हम॑ अपन॑ बहत॒ स॑ ईमान वाल॑ बद॑ो पर फ़ज़ी़लत दी।'	**15**
وَوَرِثَ سُلَيْمٰنُ دَاوٗدَ وَقَالَ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ عُلِّمْنَا مَنْطِقَ الطَّيْرِ وَاُوْتِيْنَا مِنْ كُلِّ شَيْءٍ اِنَّ هٰذَا لَهُوَ الْفَضْلُ الْمُبِيْنُ	और सलुमेान न॑ दाऊद का वारसि हआु, और उसन॑ कहा, 'ऐ लोगो! हम॑ परदि॑ की बोली सखिाई गई और हम॑ हर चीज़ दी गई। बशेक, यह साफ़ नअेमत ह॑'	**16**
وَحُشِرَ لِسُلَيْمٰنَ جُنُوْدُهٗ مِنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ وَالطَّيْرِ فَهُمْ يُوْزَعُوْنَ	और सलुमेान क॑ लएि उसकी फ़ौज जमा की गई, जसिम॑ जनि़न, इ॑सान और परदि॑ थ॑, फरि व॑ सव़ुयवसथति ढग स॑ क़तारबदी कएि गए।	**17**
حَتّٰۤى اِذَاۤ اَتَوْا عَلٰى وَادِ النَّمْلِ قَالَتْ نَمْلَةٌ يّٰۤاَيُّهَا النَّمْلُ ادْخُلُوْا مَسٰكِنَكُمْ لَا يَحْطِمَنَّكُمْ سُلَيْمٰنُ وَجُنُوْدُهٗ وَهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ	यहा॑ँतक कि जब व॑ चीटि॑यो की वादी म॑ पहचुँ,े एक चीटी न॑ कहा, 'ऐ चीटि॑यो! अपन॑ बलि॑ म॑ घस जाओ, ताकि सलुमेान और उसकी फ़ौज तमु॒ह॑ बनि जान॑ कचुल न दो'	**18**
فَتَبَسَّمَ ضَاحِكًا مِّنْ قَوْلِهَا وَقَالَ رَبِّ اَوْزِعْنِيْۤ اَنْ اَشْكُرَ نِعْمَتَكَ الَّتِيْۤ اَنْعَمْتَ عَلَيَّ وَعَلٰى وَالِدَيَّ وَاَنْ اَعْمَلَ صَالِحًا تَرْضٰىهُ وَاَدْخِلْنِيْ بِرَحْمَتِكَ فِيْ عِبَادِكَ الصّٰلِحِيْنَ	तो वह (सलुमेान) उस चीटी की बात पर मसु॒कराया और हसँ पड़ा। और उसन॑ दआु की, 'ऐ मर॑े रब, मझु॒े इलहाम द॑ कि म॑ तरे॑ी उस नअेमत का शक़ुर करता रह॑ूँ जो तन॒ मझु॒ पर और मर॑े मा॑-बाप पर की, और म॑ वह नके काम कर॑ूँ जो तझु॒े पसंद हो; और मझु॒े अपनी रहमत स॑ अपन॑ नके बद॑ो म॑ शामलि कर।'	**19**
وَتَفَقَّدَ الطَّيْرَ فَقَالَ مَا لِيَ لَاۤ اَرَى الْهُدْهُدَ اَمْ كَانَ مِنَ الْغَاۤئِبِيْنَ	और उसन॑ परदि॑ का मआुयना कयिा और कहा, 'मझु॒े हदुहदु कय़ो नहीं दखि रहा, कय़ा वह ग़ैरहाज़रि॑ म॑ स॑ ह॑?'	**20**
لَاُعَذِّبَنَّهٗ عَذَابًا شَدِيْدًا اَوْ لَاَاْذْبَحَنَّهٗۤ اَوْ لَيَاْتِيَنِّيْ بِسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ	म॑ उस॑ सख़त सजा दूँगा या उस॑ ज़बह कर दूँगा, सवािय इसक॑ कि वह मर॑े पास साफ़ दलील लाए।'	**21**
فَمَكَثَ غَيْرَ بَعِيْدٍ فَقَالَ اَحَطْتُّ بِمَا لَمْ تُحِطْ بِهٖ وَجِئْتُكَ مِنْ سَبَاٍ بِنَبَاٍ يَّقِيْنٍ	तो ज़यादा दरे नहीं गज़ुरी कि (हदुहदु आया), और उसन॑ कहा, 'मझु॒े वह बात मालमू हई जो तझु॒े नहीं मालमू। म॑ तरे॑ पास सबा स॑ एक यक़ीनी ख़बर लकेर आया ह॑ूँ'	**22**

23	मनै॓ एक औरत को पाया जो उन पर हुकूमत करती ह॓, और उस॓ हर चीज़ दी गई और उसक॓ पास एक बड़ा तख़्त ह॓।	اِنِّيْ وَجَدْتُّ امْرَاَةً تَمْلِكُهُمْ وَاُوْتِيَتْ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ وَّلَهَا عَرْشٌ عَظِيْمٌ
24	मनै॓ उस॓ और उसकी क़ौम को अल्लाह क॓ सिवा सूरज की इबादत करत॓ पाया; और शैतान न॓ उनक॓ (बुरे) कामों को उनक॓ लिए ख़ूबसूरत कर दिया, इस तरह उसन॓ उन्ह॓ (अल्लाह क॓) रास्त॓ स॓ रोक दिया, तो व॓ हिदायत नहीं पात॓,	وَجَدْتُّهَا وَقَوْمَهَا يَسْجُدُوْنَ لِلشَّمْسِ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ اَعْمَالَهُمْ فَصَدَّهُمْ عَنِ السَّبِيْلِ فَهُمْ لَا يَهْتَدُوْنَ
25	व॓ (यह भी) नहीं क॓ अल्लाह की इबादत कर॓ जो आसमानों और ज़मीन म॓ छिपी चीज़ों को ज़ाहिर करता ह॓ और जो कछ तुम छिपात॓ हो और जो कछ ज़ाहिर करत॓ हो, उस॓ जानता ह॓।	اَلَّا يَسْجُدُوْا لِلّٰهِ الَّذِيْ يُخْرِجُ الْخَبْءَ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَيَعْلَمُ مَا تُخْفُوْنَ وَمَا تُعْلِنُوْنَ
26	अल्लाह, उसक॓ सिवा कोई ख़ुदा नहीं, वह बड़ा अर्श वाला रब ह॓।	اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ
27	उसन॓ (सुलैमान न॓) कहा, 'हम दखेंगे क॓ तू सच कहता ह॓ या झठ बोलन॓ वालों म॓ स॓ ह॓।	قَالَ سَنَنْظُرُ اَصَدَقْتَ اَمْ كُنْتَ مِنَ الْكٰذِبِيْنَ
28	मरे॓ इस ख़त को लकेर जा, और इस॓ उनक॓ पास फक॓ द॓, फरि उनस॓ मुँह फरे ल॓, और दख़े क॓ व॓ क॓या जवाब दते॓ ह॓।'	اِذْهَبْ بِّكِتٰبِيْ هٰذَا فَاَلْقِهْ اِلَيْهِمْ ثُمَّ تَوَلَّ عَنْهُمْ فَانْظُرْ مَاذَا يَرْجِعُوْنَ
29	उसन॓ (बलक़ीस न॓) कहा, 'ऐ सरदारो! मरे॓ पास एक इज़्ज़त वाला ख़त आया ह॓।	قَالَتْ يٰٓاَيُّهَا الْمَلَؤُا اِنِّيْٓ اُلْقِيَ اِلَيَّ كِتٰبٌ كَرِيْمٌ
30	बशेक, यह सुलैमान की तरफ़ स॓ ह॓, और इसम॓ लखि ह॓, 'बसि्मलि्लाहरि्रहमानरि्रहीम,	اِنَّه مِنْ سُلَيْمٰنَ وَاِنَّه بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
31	मरे॓ ख़िलाफ़ सरकशी न करो और मरे॓ पास सर झकाकर (इस्लाम क़बूल करक॓) आओ।'	اَلَّا تَعْلُوْا عَلَيَّ وَاْتُوْنِيْ مُسْلِمِيْنَ
32	उसन॓ (बलक़ीस न॓) कहा, 'ऐ सरदारो! मरे॓ इस मामल॓ म॓ मुझ॓ राय दो। म॓ कोई फ़ैसला नहीं करती जब तक तुम मरे॓ सामन॓ न हो।'	قَالَتْ يٰٓاَيُّهَا الْمَلَؤُا اَفْتُوْنِيْ فِيْٓ اَمْرِيْ مَا كُنْتُ قَاطِعَةً اَمْرًا حَتّٰى تَشْهَدُوْنِ
33	उनहोंन॓ जवाब दिया, 'हमार॓ पास ताक़त और बड़ी शजाअत (जंग क॓ लिए) ह॓, लकेनि फ़ैसला तरे॓ हाथ म॓ ह॓; तो सोच क॓ तू क॓या हुक़्म दगी।'	قَالُوْا نَحْنُ اُولُوْا قُوَّةٍ وَّاُولُوْا بَاْسٍ شَدِيْدٍ وَّالْاَمْرُ اِلَيْكِ فَانْظُرِيْ مَاذَا تَاْمُرِيْنَ
34	उसन॓ (बलक़ीस न॓) कहा, 'बशेक, बादशाह जब कसिी मुल्क़ म॓ दाख़लि होत॓ ह॓, उस॓ तबाह कर दते॓ ह॓, और उसक॓ इज़्ज़त वालों को ज़लील कर दते॓ ह॓; और व॓ ऐसा ही करगे॓।'	قَالَتْ اِنَّ الْمُلُوْكَ اِذَا دَخَلُوْا قَرْيَةً اَفْسَدُوْهَا وَجَعَلُوْٓا اَعِزَّةَ اَهْلِهَآ اَذِلَّةً وَكَذٰلِكَ يَفْعَلُوْنَ
35	और बशेक, म॓ उनक॓ पास एक तोहफ़ा भजेूँगी, और इंतज़ार करूँगी क॓ मरे॓ दूत क॓या लकेर लौटत॓ ह॓।'	وَاِنِّيْ مُرْسِلَةٌ اِلَيْهِمْ بِهَدِيَّةٍ فَنٰظِرَةٌ بِمَ يَرْجِعُ الْمُرْسَلُوْنَ

36	तो जब (दूत) सुलैमान के पास पहुँचे, उसने कहा, 'क्या तुम मुझे माल से मदद करोगे? जो अल्लाह ने मुझे दिया वह उससे बेहतर है जो उसने तुम्हें दिया; बल्कि तुम अपने तोहफ़े पर इतराते हो।'	فَلَمَّا جَآءَ سُلَيْمٰنَ قَالَ اَتُمِدُّوْنَنِ بِمَالٍ فَمَآ اٰتٰنِۦَ اللّٰهُ خَيْرٌ مِّمَّآ اٰتٰىكُمْ بَلْ اَنْتُمْ بِهَدِيَّتِكُمْ تَفْرَحُوْنَ
37	उनके पास लौट जा! हम ज़रूर उनके पास ऐसी फ़ौज लेकर आएँगे जिसका वे मुक़ाबला नहीं कर सकेंगे, और हम उन्हें वहाँ से ज़लील करके निकाल देंगे और वे छोटे हो जाएँगे।'	اِرْجِعْ اِلَيْهِمْ فَلَنَاْتِيَنَّهُمْ بِجُنُوْدٍ لَّا قِبَلَ لَهُمْ بِهَا وَلَنُخْرِجَنَّهُمْ مِّنْهَآ اَذِلَّةً وَّهُمْ صٰغِرُوْنَ
38	उसने (सुलैमान ने) कहा, 'ऐ सरदारो! तुम में से कौन उसका तख़्त मेरे पास ला सकता है, इससे पहले कि वे मेरे पास सर झुकाकर आएँ?'	قَالَ يٰٓاَيُّهَا الْمَلَؤُا اَيُّكُمْ يَاْتِيْنِيْ بِعَرْشِهَا قَبْلَ اَنْ يَّاْتُوْنِيْ مُسْلِمِيْنَ
39	जिन्नों में से एक इफ़रीत ने कहा, 'मैं उसे तेरे पास लाऊँगा इससे पहले कि तू अपनी जगह से उठे; और बेशक, मैं इसे करने की ताक़त रखता हूँ और अमानतदार हूँ।'	قَالَ عِفْرِيْتٌ مِّنَ الْجِنِّ اَنَا اٰتِيْكَ بِهٖ قَبْلَ اَنْ تَقُوْمَ مِنْ مَّقَامِكَ وَاِنِّيْ عَلَيْهِ لَقَوِيٌّ اَمِيْنٌ
40	जिसके पास किताब का इल्म था, उसने कहा, 'मैं उसे तेरे पास लाऊँगा इससे पहले कि तू पलक झपकाए।' तो जब उसने (सुलैमान ने) तख़्त को अपने सामने रखा देखा, उसने कहा, 'यह मेरे रब की नेअमत है ताकि वह मुझे आज़माए कि मैं शुक्र करता हूँ या नाशुक्री करता हूँ और जो शुक्र करता है, वह अपने लिए शुक्र करता है, और जो नाशुक्री करता है, तो मेरा रब बेनियाज़, बहुत इज़्ज़त वाला है।'	قَالَ الَّذِيْ عِنْدَهٗ عِلْمٌ مِّنَ الْكِتٰبِ اَنَا اٰتِيْكَ بِهٖ قَبْلَ اَنْ يَّرْتَدَّ اِلَيْكَ طَرْفُكَ فَلَمَّا رَاٰهُ مُسْتَقِرًّا عِنْدَهٗ قَالَ هٰذَا مِنْ فَضْلِ رَبِّيْ لِيَبْلُوَنِيْٓ ءَاَشْكُرُ اَمْ اَكْفُرُ وَمَنْ شَكَرَ فَاِنَّمَا يَشْكُرُ لِنَفْسِهٖ وَمَنْ كَفَرَ فَاِنَّ رَبِّيْ غَنِيٌّ كَرِيْمٌ
41	उसने (सुलैमान ने) कहा, 'उसके तख़्त को उसके लिए बदल दो; हम देखेंगे कि वह इसे पहचानती है या नहीं।'	قَالَ نَكِّرُوْا لَهَا عَرْشَهَا نَنْظُرْ اَتَهْتَدِيْٓ اَمْ تَكُوْنُ مِنَ الَّذِيْنَ لَا يَهْتَدُوْنَ
42	तो जब वह (बलक़ीस) आई, उससे पूछा गया, 'क्या तेरा तख़्त ऐसा ही है?' उसने जवाब दिया, 'यह वैसा ही है।' (और बलक़ीस ने कहा), 'हमें पहले ही इल्म दिया गया था और हम सर झुकाने वाले (मुस्लिम) हैं।'	فَلَمَّا جَآءَتْ قِيْلَ اَهٰكَذَا عَرْشُكِ قَالَتْ كَاَنَّهٗ هُوَ وَاُوْتِيْنَا الْعِلْمَ مِنْ قَبْلِهَا وَكُنَّا مُسْلِمِيْنَ
43	और जो कुछ वह अल्लाह के सिवा पूजती थी, वह उसे (इस्लाम क़बूल करने से) रोक रहा था, बेशक, वह पहले काफ़िरों में से थी।	وَصَدَّهَا مَا كَانَتْ تَّعْبُدُ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اِنَّهَا كَانَتْ مِنْ قَوْمٍ كٰفِرِيْنَ
44	उससे कहा गया, 'महल में दाख़िल हो।' तो जब उसने (महल का फ़र्श) देखा, उसे बड़ा तालाब समझा, और उसने अपनी पिंडलियाँ खोल दीं। उसने (सुलैमान ने) कहा, 'यह तो बस काँच से मढ़ा हुआ महल है।' उसने (बलक़ीस ने) कहा, 'ऐ मेरे रब, मैंने अपने आप पर जुल्म किया। मैं सुलैमान के साथ अल्लाह, सारे जहानों के रब, के सामने सर झुकाती हूँ।'	قِيْلَ لَهَا ادْخُلِي الصَّرْحَ فَلَمَّا رَاَتْهُ حَسِبَتْهُ لُجَّةً وَّكَشَفَتْ عَنْ سَاقَيْهَا قَالَ اِنَّهٗ صَرْحٌ مُّمَرَّدٌ مِّنْ قَوَارِيْرَ قَالَتْ رَبِّ اِنِّيْ ظَلَمْتُ نَفْسِيْ وَاَسْلَمْتُ مَعَ سُلَيْمٰنَ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ
45	और बेशक, हमने समूद की क़ौम की तरफ़ उनके भाई सालेह को भेजा (जो कहता था), 'अल्लाह की इबादत करो!' लेकिन अचानक वे दो गुट हो गए जो आपस में लड़ने लगे।	وَلَقَدْ اَرْسَلْنَآ اِلٰى ثَمُوْدَ اَخَاهُمْ صٰلِحًا اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ فَاِذَا هُمْ فَرِيْقٰنِ يَخْتَصِمُوْنَ

46	उसने (सालेह ने) कहा, 'ऐ मेरी क़ौम! तुम बुराई को नेकी से पहले क्यों जल्दी माँगते हो? तुम अल्लाह से मग़फ़िरत क्यों नहीं माँगते, ताकि तुम पर रहम किया जाए?'	قَالَ يٰقَوْمِ لِمَ تَسْتَعْجِلُوْنَ بِالسَّيِّئَةِ قَبْلَ الْحَسَنَةِ لَوْلَا تَسْتَغْفِرُوْنَ اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ
47	उन्होंने जवाब दिया, 'हम तुझसे और तेरे साथियों से बदनसीबी मिली।' उसने (सालेह ने) कहा, 'तुम्हारी नसीब अल्लाह के पास है (हम इसका सबब नहीं), बल्कि तुम लोग आज़माए जा रहे हो।'	قَالُوا اطَّيَّرْنَا بِكَ وَبِمَنْ مَّعَكَ قَالَ طٰٓئِرُكُمْ عِنْدَ اللّٰهِ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ تُفْتَنُوْنَ
48	और उस शहर में नौ मर्द थे जो ज़मीन में फ़साद मचाते थे, वे कोई सुधार नहीं करते थे।	وَكَانَ فِي الْمَدِيْنَةِ تِسْعَةُ رَهْطٍ يُّفْسِدُوْنَ فِي الْاَرْضِ وَلَا يُصْلِحُوْنَ
49	उन्होंने कहा, 'अल्लाह की क़सम खाओ कि हम ज़रूर उस पर और उसके घरवालों पर रात को हमला करेंगे, फिर उसके वारिस से कहेंगे कि हमने उसके घरवालों की तबाही नहीं देखी, और हम सच्चे हैं।'	قَالُوْا تَقَاسَمُوْا بِاللّٰهِ لَنُبَيِّتَنَّهٗ وَاَهْلَهٗ ثُمَّ لَنَقُوْلَنَّ لِوَلِيِّهٖ مَا شَهِدْنَا مَهْلِكَ اَهْلِهٖ وَاِنَّا لَصٰدِقُوْنَ
50	और उन्होंने मक्कारी की, और हमने भी मक्कारी की, जबकि उन्हें (इसका) इल्म नहीं था।	وَمَكَرُوْا مَكْرًا وَّمَكَرْنَا مَكْرًا وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ
51	तो देखो कि उनकी मक्कारी का अंजाम कैसा हुआ, कि हमने उन्हें और उनकी क़ौम को सबको हलाक कर दिया।	فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ مَكْرِهِمْ اَنَّا دَمَّرْنٰهُمْ وَقَوْمَهُمْ اَجْمَعِيْنَ
52	तो ये उनके घर हैं जो उनके ज़ुल्म की वजह से ढह गए। बेशक, इसमें इल्म वालों के लिए निशानी है।	فَتِلْكَ بُيُوْتُهُمْ خَاوِيَةً بِمَا ظَلَمُوْا اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ
53	और हमने उन लोगों को बचा लिया जो ईमान लाए थे और जो तक़वा रखते थे।	وَاَنْجَيْنَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَكَانُوْا يَتَّقُوْنَ
54	और (याद करो) लूत को, जब उसने अपनी क़ौम से कहा, 'तुम फाहशा (घिनौना काम) क्यों करते हो, जबकि तुम इसे देखते हो?'	وَلُوْطًا اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖٓ اَتَاْتُوْنَ الْفَاحِشَةَ وَاَنْتُمْ تُبْصِرُوْنَ
55	तुम औरतों के बजाय मर्दों के पास अपनी शहवत के लिए क्यों जाते हो? बेशक, तुम लोग जाहिल हो।'	اَئِنَّكُمْ لَتَاْتُوْنَ الرِّجَالَ شَهْوَةً مِّنْ دُوْنِ النِّسَاۤءِ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ تَجْهَلُوْنَ
56	उसकी क़ौम का जवाब बस यही था कि उन्होंने कहा, 'लूत और उसके घरवालों को अपने शहर से निकाल दो; बेशक, वे लोग (ख़ुद को) पाक समझते हैं।'	فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهٖٓ اِلَّآ اَنْ قَالُوْٓا اَخْرِجُوْٓا اٰلَ لُوْطٍ مِّنْ قَرْيَتِكُمْ اِنَّهُمْ اُنَاسٌ يَّتَطَهَّرُوْنَ
57	तो हमने उसे और उसके घरवालों को बचा लिया, सिवाय उसकी बीवी को हमने उसे (हलाक होने वालों में) ठहराया।	فَاَنْجَيْنٰهُ وَاَهْلَهٗٓ اِلَّا امْرَاَتَهٗ قَدَّرْنٰهَا مِنَ الْغٰبِرِيْنَ
58	और हमने उन पर (पत्थरों की) बारिश की, तो बहुत बुरा था वह बारिश जो उन तंबीह किए गए लोगों पर (पड़ी) जो नसीहत नहीं मानते।	وَاَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَّطَرًا فَسَاۤءَ مَطَرُ الْمُنْذَرِيْنَ

59	कहो (मुहम्मद), 'सारी तारीफ़ अल्लाह के लिए और सलाम उसके चुने हुए बंदों पर। क्या अल्लाह बेहतर है या वह जो वे शरीक करते हैं?'	قُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ وَسَلٰمٌ عَلٰى عِبَادِهِ الَّذِيْنَ اصْطَفٰى ءٰاللّٰهُ خَيْرٌ اَمَّا يُشْرِكُوْنَ
60	क्या वह (अल्लाह) नहीं जिसने आसमानों और ज़मीन को बनाया और तुम्हारे लिए आसमान से पानी उतारा, फिर हमने उस पानी से ख़ूबसूरत बाग़ उगाए? तुम उनके दरख़्तों को उगा नहीं सकते थे। क्या अल्लाह के साथ कोई और ख़ुदा है? बल्कि वे लोग (हक़ से) हटने वाले हैं।	اَمَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَاَنْزَلَ لَكُمْ مِّنَ السَّمَاۤءِ مَاۤءً فَاَنْۢبَتْنَا بِهٖ حَدَاۤئِقَ ذَاتَ بَهْجَةٍ مَا كَانَ لَكُمْ اَنْ تُنْۢبِتُوْا شَجَرَهَا ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ بَلْ هُمْ قَوْمٌ يَّعْدِلُوْنَ
61	क्या वह (अल्लाह) नहीं जिसने ज़मीन को ठहरने की जगह बनाया, उसमें नदियाँ बनाईं, उसके लिए पहाड़ बनाए और दो समंदरों के बीच परदा डाला? क्या अल्लाह के साथ कोई और ख़ुदा है? बल्कि उनमें से अक़्सर नहीं जानते।	اَمَّنْ جَعَلَ الْاَرْضَ قَرَارًا وَّجَعَلَ خِلٰلَهَاۤ اَنْهٰرًا وَّجَعَلَ لَهَا رَوَاسِيَ وَجَعَلَ بَيْنَ الْبَحْرَيْنِ حَاجِزًا ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ
62	क्या वह (अल्लाह) नहीं जो मुसीबत में फँसे हुए की दुआ क़बूल करता है जब वह उसे पुकारता है, और मुसीबत को दूर करता है और तुम्हें (इंसानों को) ज़मीन का ख़लीफ़ा बनाता है? क्या अल्लाह के साथ कोई और ख़ुदा है? तुम बहुत कम याद करते हो।	اَمَّنْ يُّجِيْبُ الْمُضْطَرَّ اِذَا دَعَاهُ وَيَكْشِفُ السُّوْۤءَ وَيَجْعَلُكُمْ خُلَفَاۤءَ الْاَرْضِ ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ قَلِيْلًا مَّا تَذَكَّرُوْنَ
63	क्या वह (अल्लाह) नहीं जो तुम्हें ख़ुश्की और समंदर की तारीकियों में रास्ता दिखाता है और जो अपनी रहमत से पहले हवाओं को ख़ुशख़बरी के तौर पर भेजता है? क्या अल्लाह के साथ कोई और ख़ुदा है? अल्लाह उससे बहुत बुलंद है जो वे शरीक करते हैं।	اَمَّنْ يَّهْدِيْكُمْ فِيْ ظُلُمٰتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ وَمَنْ يُّرْسِلُ الرِّيٰحَ بُشْرًا بَيْنَ يَدَيْ رَحْمَتِهٖ ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ تَعٰلَى اللّٰهُ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ
64	क्या वह (अल्लाह) नहीं जो (मख़लूक़ को) पहली बार बनाता है, फिर उसे दोहराता है और जो तुम्हें आसमानों और ज़मीन से रिज़्क़ देता है? क्या अल्लाह के साथ कोई और ख़ुदा है? कहो, 'अपनी दलील पेश करो, अगर तुम सच्चे हो।'	اَمَّنْ يَّبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ وَمَنْ يَّرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمَاۤءِ وَالْاَرْضِ ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ قُلْ هَاتُوْا بُرْهَانَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ
65	कहो (मुहम्मद), 'आसमानों और ज़मीन में कोई भी ग़ैब की बात नहीं जानता, सिवाय अल्लाह को और उन्हें नहीं मालूम कि वे कब उठाए जाएँगे।'	قُلْ لَّا يَعْلَمُ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ الْغَيْبَ اِلَّا اللّٰهُ وَمَا يَشْعُرُوْنَ اَيَّانَ يُبْعَثُوْنَ
66	बल्कि उनकी आख़िरत की ख़बर उनके लिए पूरी नहीं हुई। बल्कि वे इस बारे में शक में हैं। बल्कि वे इसके बारे में अंधे हैं।	بَلِ ادّٰرَكَ عِلْمُهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ بَلْ هُمْ فِيْ شَكٍّ مِّنْهَا بَلْ هُمْ مِّنْهَا عَمُوْنَ
67	और काफ़िरों ने कहा, 'जब हम मिट्टी हो जाएँगे और हमारे बाप-दादा भी, क्या हम वाक़ई (क़ब्रों से) निकाले जाएँगे?'	وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْۤا ءَاِذَا كُنَّا تُرٰبًا وَّاٰبَاۤؤُنَاۤ اَىِٕنَّا لَمُخْرَجُوْنَ
68	हमसे पहले से इस (क़ियामत) की धमकी दी गई थी, हम और हमारे बाप-दादा को। यह तो बस पुराने लोगों की कहानियाँ हैं।'	لَقَدْ وُعِدْنَا هٰذَا نَحْنُ وَاٰبَاۤؤُنَا مِنْ قَبْلُ اِنْ هٰذَاۤ اِلَّاۤ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ

69	कहो (मुहम्मद), 'ज़मीन पर चलो, फिर देखो कि गुनहगारों का अंजाम कैसा हुआ।'	قُلْ سِيْرُوْا فِى الْاَرْضِ فَانْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُجْرِمِيْنَ
70	और उनके लिए ग़म न कर, और न उनकी मक्कारियों से तेरा सीना तंग हो।'	وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَلَا تَكُنْ فِيْ ضَيْقٍ مِّمَّا يَمْكُرُوْنَ
71	और वे (काफ़िर) कहते हैं, 'यह (अज़ाब का) वादा कब आएगा, अगर तुम सच्चे हो?'	وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ
72	कहो (मुहम्मद), 'शायद वह (अज़ाब) जिसकी तुम जल्दी माँगते हो, तुम्हारे क़रीब आ चुका हो'	قُلْ عَسٰٓى اَنْ يَّكُوْنَ رَدِفَ لَكُمْ بَعْضُ الَّذِيْ تَسْتَعْجِلُوْنَ
73	और बेशक, तेरा रब इंसानों पर बड़ा फ़ज़्ल करने वाला है, लेकिन उनमें से अक़्सर शुक्र नहीं करते।	وَاِنَّ رَبَّكَ لَذُوْ فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَشْكُرُوْنَ
74	और बेशक, तेरा रब जानता है जो उनके दिल छिपाते हैं और जो वे ज़ाहिर करते हैं।	وَاِنَّ رَبَّكَ لَيَعْلَمُ مَا تُكِنُّ صُدُوْرُهُمْ وَمَا يُعْلِنُوْنَ
75	और कोई चीज़ आसमानों और ज़मीन में छिपी नहीं, बल्कि (वह) एक साफ़ किताब (लौह महफ़ूज़) में है।	وَمَا مِنْ غَاۤئِبَةٍ فِى السَّمَاۤءِ وَالْاَرْضِ اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ
76	बेशक, यह अल-क़ुरआन बनी इसराइल के लिए उन ज़्यादातर बातों को बयान करता है जिनमें वे इख़्तिलाफ़ करते हैं।	اِنَّ هٰذَا الْقُرْاٰنَ يَقُصُّ عَلٰى بَنِيْٓ اِسْرَاۤءِيْلَ اَكْثَرَ الَّذِيْ هُمْ فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ
77	और बेशक, (अल-क़ुरआन) ईमान वालों के लिए हिदायत और रहमत है।	وَاِنَّه لَهُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ
78	बेशक, तेरा रब उनके बीच अपने हुक्म से फ़ैसला करेगा, और वह बहुत ज़बरदस्त, बहुत जानने वाला है।	اِنَّ رَبَّكَ يَقْضِيْ بَيْنَهُمْ بِحُكْمِه وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْعَلِيْمُ
79	तो अल्लाह पर भरोसा कर, बेशक तू (मुहम्मद) साफ़ हक़ पर है।	فَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ اِنَّكَ عَلَى الْحَقِّ الْمُبِيْنِ
80	बेशक, तू मरे हुए को सुनाने वाला नहीं और न बहरों को अपनी पुकार सुना सकता है, जब वे पीठ फेरे लेते हैं।	اِنَّكَ لَا تُسْمِعُ الْمَوْتٰى وَلَا تُسْمِعُ الصُّمَّ الدُّعَاۤءَ اِذَا وَلَّوْا مُدْبِرِيْنَ
81	और तू अंधों को उनकी गुमराही से हिदायत नहीं दे सकता। तू बस उन लोगों को सुना सकता है जो हमारी आयतों पर ईमान लाते हैं, फिर वे सर झुकाने वाले (मुस्लिम) हैं।	وَمَآ اَنْتَ بِهٰدِى الْعُمْيِ عَنْ ضَلٰلَتِهِمْ اِنْ تُسْمِعُ اِلَّا مَنْ يُّؤْمِنُ بِاٰيٰتِنَا فَهُمْ مُّسْلِمُوْنَ
82	और जब उन पर (आलम की तबाही का) हुक्म लागू हो जाएगा, हम ज़मीन से एक जानवर निकालेंगे जो उनसे कहेगा कि लोग हमारी आयतों पर यक़ीन नहीं करते थे।	وَاِذَا وَقَعَ الْقَوْلُ عَلَيْهِمْ اَخْرَجْنَا لَهُمْ دَاۤبَّةً مِّنَ الْاَرْضِ تُكَلِّمُهُمْ اَنَّ النَّاسَ كَانُوْا بِاٰيٰتِنَا لَا يُوْقِنُوْنَ

وَيَوْمَ نَحْشُرُ مِنْ كُلِّ اُمَّةٍ فَوْجًا مِّمَّنْ يُّكَذِّبُ بِاٰيٰتِنَا فَهُمْ يُوْزَعُوْنَ	और (याद करो) उस दिन जब हम हर उम्मत से एक जमात को जमा करेंगे जो हमारी आयतों को झुठलाते थे, फिर उन्हें (गुटों में) बाँट दिया जाएगा।	**83**
حَتّٰٓى اِذَا جَآءُوْ قَالَ اَكَذَّبْتُمْ بِاٰيٰتِيْ وَلَمْ تُحِيْطُوْا بِهَا عِلْمًا اَمَّاذَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ	यहाँ तक कि जब वे आएँगे, वह (अल्लाह) फ़रमाएगा, 'तुमने मेरी आयतों को क्यों झुठलाया, हालाँकि तुम्हें उनका इल्म नहीं था, या तुमने क्या किया?'	**84**
وَوَقَعَ الْقَوْلُ عَلَيْهِمْ بِمَا ظَلَمُوْا فَهُمْ لَا يَنْطِقُوْنَ	और उनके जुल्म की वजह से (अज़ाब का) हुक्म उन पर लागू हो जाएगा, तो वे कुछ न बोल सकेंगे।	**85**
اَلَمْ يَرَوْا اَنَّا جَعَلْنَا الَّيْلَ لِيَسْكُنُوْا فِيْهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ	क्या उन्होंने नहीं देखा कि हमने रात को बनाया ताकि वे उसमें आराम करें और दिन को रौशनी देने वाला बनाया? बेशक, इसमें ईमान वालों के लिए निशानियाँ हैं।	**86**
وَيَوْمَ يُنْفَخُ فِى الصُّوْرِ فَفَزِعَ مَنْ فِى السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِى الْاَرْضِ اِلَّا مَنْ شَآءَ اللّٰهُ وَكُلٌّ اَتَوْهُ دٰخِرِيْنَ	और (याद करो) उस दिन जब सूर फूँका जाएगा, तो जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है, वह डर जाएगा, सिवाय उसके जिसे अल्लाह चाहे और सब उसके सामने सर झुकाकर आएँगे।	**87**
وَتَرَى الْجِبَالَ تَحْسَبُهَا جَامِدَةً وَّهِيَ تَمُرُّ مَرَّ السَّحَابِ صُنْعَ اللّٰهِ الَّذِيْٓ اَتْقَنَ كُلَّ شَيْءٍ اِنَّه خَبِيْرٌ بِمَا تَفْعَلُوْنَ	और तू पहाड़ों को देखेगा, जो तू समझता है कि जमे हुए हैं, जबकि वे बादलों की तरह चल रहे होंगे। (यह) अल्लाह की कारीगरी है जिसने हर चीज़ को मुकम्मल बनाया। बेशक, वह तुम्हारे किए से ख़बरदार है।	**88**
مَنْ جَاءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَه خَيْرٌ مِّنْهَا وَهُمْ مِّنْ فَزَعٍ يَّوْمَئِذٍ اٰمِنُوْنَ	जो कोई नेकी लाएगा, उसे उससे बेहतर (अज़्र) मिलेगा, और वे उस दिन की दहशत से महफ़ूज़ रहेंगे।	**89**
وَمَنْ جَاءَ بِالسَّيِّئَةِ فَكُبَّتْ وُجُوْهُهُمْ فِى النَّارِ هَلْ تُجْزَوْنَ اِلَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ	और जो कोई बुराई लाएगा, उसे मुँह के बल जहन्नम में डाला जाएगा। तुम्हें वही बदला दिया जाएगा जो तुमने किया।	**90**
اِنَّمَآ اُمِرْتُ اَنْ اَعْبُدَ رَبَّ هٰذِهِ الْبَلْدَةِ الَّذِيْ حَرَّمَهَا وَلَه كُلُّ شَيْءٍ وَّاُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ	कहो (मुहम्मद), 'मुझे तो बस यही हुक्म दिया गया है कि मैं इस शहर (मक्का) के रब की इबादत करूँ जिसने इसे हरम बनाया, और हर चीज़ उसी की है, और मुझे हुक्म दिया गया कि मैं सर झुकाने वालों (मुसलमानों) में से हूँ,	**91**
وَاَنْ اَتْلُوَا الْقُرْاٰنَ فَمَنِ اهْتَدٰى فَاِنَّمَا يَهْتَدِيْ لِنَفْسِه وَمَنْ ضَلَّ فَقُلْ اِنَّمَآ اَنَا مِنَ الْمُنْذِرِيْنَ	और कि मैं अल-क़ुरआन पढ़ूँ तो जो कोई हिदायत क़बूल करे, वह अपने लिए हिदायत क़बूल करता है; और जो गुमराह हो, तो कहो, 'मैं तो बस तंबीह करने वालों में से हूँ।'	**92**
وَقُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ سَيُرِيْكُمْ اٰيٰتِه فَتَعْرِفُوْنَهَا وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ	और कहो (मुहम्मद), 'सारी तारीफ़ अल्लाह के लिए, वह तुम्हें अपनी निशानियाँ दिखाएगा, तो तुम उन्हें पहचान लोगे। और तेरा रब उससे ग़ाफ़िल नहीं जो तुम करते हो।'	**93**

छंदों की संख्या	اَلْقَصَص	مكية
‘‘	अल-क़सस - 28	मक्की

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल-क़सस (कथाएँ)

1	ता सीन मीम।	طٰسٓمّٓ
2	ये स्पष्ट किताब (अल-क़ुरआन) की आयतें हैं।	تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ
3	हम तुम्हें मूसा और फ़िरऔन की कुछ कहानी सच्चाई के साथ पढ़कर सुनाते हैं, उन लोगों के लिए जो ईमान लाते हैं।	نَتْلُوْا عَلَيْكَ مِنْ نَّبَاِ مُوْسٰى وَفِرْعَوْنَ بِالْحَقِّ لِقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ
4	बेशक, फ़िरऔन ने धरती पर सरकशी की और इसके बाशिंदों को फूट डालकर बाँट दिया, उसने उनकी एक जमात (बनी इसराइल) को सताया, उनके बेटों को क़त्ल किया और उनकी बेटियों को ज़िंदा रखा। बेशक, वह फ़साद करनेवालों में से था।	اِنَّ فِرْعَوْنَ عَلَا فِى الْاَرْضِ وَجَعَلَ اَهْلَهَا شِيَعًا يَّسْتَضْعِفُ طَآئِفَةً مِّنْهُمْ يُذَبِّحُ اَبْنَآءَهُمْ وَيَسْتَحْيٖ نِسَآءَهُمْ اِنَّهٗ كَانَ مِنَ الْمُفْسِدِيْنَ
5	और हम चाहते थे कि उन लोगों पर, जो धरती (मिस्र) में कमज़ोर किए गए थे, एहसान करें और उन्हें सरदार बनाएँ और उन्हें (धरती का) वारिस बनाएँ,	وَنُرِيْدُ اَنْ نَّمُنَّ عَلَى الَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْا فِى الْاَرْضِ وَنَجْعَلَهُمْ اَئِمَّةً وَّنَجْعَلَهُمُ الْوٰرِثِيْنَ
6	और उन्हें धरती में इक़्तदिार दें और फ़िरऔन और हामान और उनके लश्करों को वह दिखाएँ जिसका उन्हें डर था।	وَنُمَكِّنَ لَهُمْ فِى الْاَرْضِ وَنُرِيَ فِرْعَوْنَ وَهَامٰنَ وَجُنُوْدَهُمَا مِنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَحْذَرُوْنَ
7	और हमने मूसा की माँ को इलहाम किया, 'उसे दूध पिलाओ, और अगर तुम्हें उसकी फ़िक्र हो तो उसे नदी (नील) में बहा दो। और न डरो और न ग़म करो, बेशक, हम उसे तुम्हारे पास लौटाएँगे, और उसे रसूलों में से बनाएँगे।'	وَاَوْحَيْنَآ اِلٰٓى اُمِّ مُوْسٰٓى اَنْ اَرْضِعِيْهِ فَاِذَا خِفْتِ عَلَيْهِ فَاَلْقِيْهِ فِى الْيَمِّ وَلَا تَخَافِيْ وَلَا تَحْزَنِيْ اِنَّا رَآدُّوْهُ اِلَيْكِ وَجَاعِلُوْهُ مِنَ الْمُرْسَلِيْنَ
8	तो उसे फ़िरऔन के घरवालों ने उठा लिया ताकि वह (आगे चलकर) उनका दुश्मन और ग़म बने। बेशक, फ़िरऔन और हामान और उनके लश्कर गुनहगार थे।	فَالْتَقَطَهٗٓ اٰلُ فِرْعَوْنَ لِيَكُوْنَ لَهُمْ عَدُوًّا وَّحَزَنًا اِنَّ فِرْعَوْنَ وَهَامٰنَ وَجُنُوْدَهُمَا كَانُوْا خٰطِـِٕيْنَ
9	और फ़िरऔन की बीवी ने कहा, '(वह) मेरे और तुम्हारे लिए आँखों की ठंडक है। उसे मत मारो, शायद वह हमारे लिए फ़ायदा दे या हम उसे बेटा बना लें,' जबकि उन्हें (इसका) इल्म नहीं था।	وَقَالَتِ امْرَاَتُ فِرْعَوْنَ قُرَّتُ عَيْنٍ لِّيْ وَلَكَ لَا تَقْتُلُوْهُ عَسٰٓى اَنْ يَّنْفَعَنَآ اَوْ نَتَّخِذَهٗ وَلَدًا وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ

وَاَصْبَحَ فُؤَادُ اُمِّ مُوْسٰى فٰرِغًا اِنْ كَادَتْ لَتُبْدِيْ بِهٖ لَوْلَآ اَنْ رَّبَطْنَا عَلٰى قَلْبِهَا لِتَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ	और मूसा की माँ का दिल ख़ाली हो गया। वह तो उस (मूसा की बात) ज़ाहिर करने वाली थी, अगर हमने उसके दिल को मज़बूत न किया होता, ताकि वह उन लोगों में से हो जो अल्लाह के वादे पर ईमान लाते हैं।	**10**
وَقَالَتْ لِاُخْتِهٖ قُصِّيْهِ فَبَصُرَتْ بِهٖ عَنْ جُنُبٍ وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ	और उसने (मूसा की माँ ने) मूसा की बहन से कहा, 'उसका पीछा करो।' तो उसने (मूसा को) दूर से देखा, जबकि उन्हें (इसका) इल्म नहीं था।	**11**
وَحَرَّمْنَا عَلَيْهِ الْمَرَاضِعَ مِنْ قَبْلُ فَقَالَتْ هَلْ اَدُلُّكُمْ عَلٰٓى اَهْلِ بَيْتٍ يَّكْفُلُوْنَهٗ لَكُمْ وَهُمْ لَهٗ نٰصِحُوْنَ	और हमने उस (मूसा को) पहले दूध पिलाने वालियों से दूध पीने से रोक दिया; तो उसने (मूसा की बहन ने) कहा, 'क्या मैं तुम्हें ऐसा घर दिखाऊँ जो उसकी परवरिश करे और उसके लिए अच्छा हो?'	**12**
فَرَدَدْنٰهُ اِلٰٓى اُمِّهٖ كَيْ تَقَرَّ عَيْنُهَا وَلَا تَحْزَنَ وَلِتَعْلَمَ اَنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ	तो हमने उस (मूसा को) उसकी माँ के पास लौटा दिया, ताकि उसकी आँख ठंडी हो और वह ग़म न करे, और ताकि वह जाने कि अल्लाह का वादा सच्चा है, लेकिन अक़्सर लोग नहीं जानते।	**13**
وَلَمَّا بَلَغَ اَشُدَّهٗ وَاسْتَوٰٓى اٰتَيْنٰهُ حُكْمًا وَّعِلْمًا وَكَذٰلِكَ نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ	और जब वह (मूसा) जवान हुआ और उसकी अक़्ल पूरी हुई, हमने उसे हिकमत (नबुव्वत) और इल्म अता किया। और हम नेकी करने वालों को ऐसा ही बदला देते हैं।	**14**
وَدَخَلَ الْمَدِيْنَةَ عَلٰى حِيْنِ غَفْلَةٍ مِّنْ اَهْلِهَا فَوَجَدَ فِيْهَا رَجُلَيْنِ يَقْتَتِلٰنِ هٰذَا مِنْ شِيْعَتِهٖ وَهٰذَا مِنْ عَدُوِّهٖ فَاسْتَغَاثَهُ الَّذِيْ مِنْ شِيْعَتِهٖ عَلَى الَّذِيْ مِنْ عَدُوِّهٖ فَوَكَزَهٗ مُوْسٰى فَقَضٰى عَلَيْهِ قَالَ هٰذَا مِنْ عَمَلِ الشَّيْطٰنِ اِنَّهٗ عَدُوٌّ مُّضِلٌّ مُّبِيْنٌ	और वह (मूसा) शहर (ममफ़िस) में दाख़िल हुआ जब इसके बाशिंदे ग़ाफ़िल थे, तो उसने वहाँ दो मर्दों को लड़ते पाया; एक उसकी क़ौम (बनी इसराइल) से और दूसरा उसके दुश्मनों (फ़िरऔन की क़ौम) से था। उसने जो उसकी क़ौम से था, उसने उससे मदद माँगी, जो उसके दुश्मन था, उसके ख़िलाफ़, तो मूसा ने उसे मुक्का मारा, और वह मर गया। उसने (मूसा ने) कहा, 'यह शैतान का काम है। बेशक, वह साफ़ गुमराह करने वाला दुश्मन है।'	**15**
قَالَ رَبِّ اِنِّيْ ظَلَمْتُ نَفْسِيْ فَاغْفِرْ لِيْ فَغَفَرَ لَهٗ اِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ	उसने (मूसा ने) दुआ की, 'ऐ मेरे रब, मैंने अपने आप पर ज़ुल्म किया, तो मुझे माफ़ कर।' तो उसने (अल्लाह ने) उसे माफ़ कर दिया। बेशक, वह बहुत बख़्शने वाला, बहुत रहम करने वाला है।	**16**
قَالَ رَبِّ بِمَآ اَنْعَمْتَ عَلَيَّ فَلَنْ اَكُوْنَ ظَهِيْرًا لِّلْمُجْرِمِيْنَ	उसने (मूसा ने) कहा, 'ऐ मेरे रब! उस नेअमत की वजह से जो तूने मुझ पर की, मैं अब गुनहगारों का साथी नहीं बनूँगा।'	**17**
فَاَصْبَحَ فِى الْمَدِيْنَةِ خَآئِفًا يَّتَرَقَّبُ فَاِذَا الَّذِى اسْتَنْصَرَهٗ بِالْاَمْسِ يَسْتَصْرِخُهٗ قَالَ لَهٗ مُوْسٰٓى اِنَّكَ لَغَوِيٌّ مُّبِيْنٌ	तो वह (मूसा) शहर में डरते हुए रहा, नतीजा इंतज़ार करते हुए, अचानक वह शख़्स जो कल उससे मदद माँग रहा था, फिर चिल्लाकर उससे मदद माँगने लगा। मूसा ने उससे कहा, 'तू तो साफ़ गुमराह है।'	**18**

19	तो जब वह (मूसा) उस शख़्स को, जो उन दोनों का दुश्मन था, सख़्ती से पकड़ने वाला था, उसने (दुश्मन ने) कहा, 'ऐ मूसा! क्या तू मुझे मारना चाहता है, जैसे कल तूने एक शख़्स को मारा? तू तो बस इस मुल्क़ में सरकशी करना चाहता है, और तू सुधार करने वालों में से नहीं होना चाहता।'	فَلَمَّآ اَنْ اَرَادَ اَنْ يَّبْطِشَ بِالَّذِيْ هُوَ عَدُوٌّ لَّهُمَا قَالَ يٰمُوْسٰٓى اَتُرِيْدُ اَنْ تَقْتُلَنِيْ كَمَا قَتَلْتَ نَفْسًا بِالْاَمْسِ اِنْ تُرِيْدُ اِلَّآ اَنْ تَكُوْنَ جَبَّارًا فِى الْاَرْضِ وَمَا تُرِيْدُ اَنْ تَكُوْنَ مِنَ الْمُصْلِحِيْنَ
20	और एक मर्द शहर के सिरे से जल्दी से आया और बोला, 'ऐ मूसा! बड़े लोग तेरे बारे में सलाह कर रहे हैं कि तुझे मार डालें, तो (इस शहर से) निकल जा, मैं तेरा नसीहत करने वाला हूँ।'	وَجَآءَ رَجُلٌ مِّنْ اَقْصَى الْمَدِيْنَةِ يَسْعٰى قَالَ يٰمُوْسٰٓى اِنَّ الْمَلَاَ يَأْتَمِرُوْنَ بِكَ لِيَقْتُلُوْكَ فَاخْرُجْ اِنِّيْ لَكَ مِنَ النّٰصِحِيْنَ
21	तो वह (मूसा) वहाँ से डरते हुए, सावधान रहते हुए निकला, उसने दुआ की, 'ऐ मेरे रब, मुझे इन ज़ालिम लोगों से बचा।'	فَخَرَجَ مِنْهَا خَآئِفًا يَّتَرَقَّبُ قَالَ رَبِّ نَجِّنِيْ مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ
22	और जब वह मादयन की तरफ़ गया, उसने दुआ की, 'शायद मेरा रब मुझे सही रास्त की हिदायत दे।'	وَلَمَّا تَوَجَّهَ تِلْقَاءَ مَدْيَنَ قَالَ عَسٰى رَبِّيْٓ اَنْ يَّهْدِيَنِيْ سَوَآءَ السَّبِيْلِ
23	और जब वह मादयन के पानी के कुएँ पर पहुँचा, उसने वहाँ कुछ लोगों को (अपने जानवरों को) पानी पिलाते पाया, और उनके पीछे दो औरतों को (अपने जानवरों को) रोकते पाया। उसने (मूसा ने) कहा, 'तुम्हारा क्या मक़सद है?' उन्होंने जवाब दिया, 'हम (अपने जानवरों को) पानी नहीं पिला सकते, जब तक कि चरवाहे अपने (जानवरों को) वापस न ले जाएँ, और हमारा बाप बहुत बूढ़ा है।'	وَلَمَّا وَرَدَ مَآءَ مَدْيَنَ وَجَدَ عَلَيْهِ اُمَّةً مِّنَ النَّاسِ يَسْقُوْنَ وَوَجَدَ مِنْ دُوْنِهِمُ امْرَاَتَيْنِ تَذُوْدٰنِ قَالَ مَا خَطْبُكُمَا قَالَتَا لَا نَسْقِيْ حَتّٰى يُصْدِرَ الرِّعَآءُ وَاَبُوْنَا شَيْخٌ كَبِيْرٌ
24	तो उसने (मूसा ने) उन दोनों (औरतों के जानवरों को) पानी पिलाया, फिर वह साये में लौट आया और दुआ की, 'ऐ मेरे रब, मुझे उस ख़ैर की ज़रूरत है जो तू मुझ पर उतारे।'	فَسَقٰى لَهُمَا ثُمَّ تَوَلّٰٓى اِلَى الظِّلِّ فَقَالَ رَبِّ اِنِّيْ لِمَآ اَنْزَلْتَ اِلَيَّ مِنْ خَيْرٍ فَقِيْرٌ
25	फिर उन दोनों में से एक औरत उसके पास शर्माते हुए चली आई, उसने कहा, 'मेरे बाप तुझे बुलाते हैं ताकि तुझे उस (ख़ैर) का बदला दें जो तूने हमारे (जानवरों को) पानी पिलाया।' जब (मूसा) उनके बाप के पास आया और उसने उन्हें अपनी कहानी सुनाई, उसने कहा, 'डर मत! तू उन ज़ालिम लोगों से बच गया।'	فَجَآءَتْهُ اِحْدٰىهُمَا تَمْشِيْ عَلَى اسْتِحْيَآءٍ قَالَتْ اِنَّ اَبِيْ يَدْعُوْكَ لِيَجْزِيَكَ اَجْرَ مَا سَقَيْتَ لَنَا فَلَمَّا جَآءَهٗ وَقَصَّ عَلَيْهِ الْقَصَصَ قَالَ لَا تَخَفْ نَجَوْتَ مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ
26	और उन दोनों (औरतों) में से एक ने कहा, 'ऐ मेरे बाप! इसे (हमारे लिए) नौकर रख लो, बेशक, सबसे अच्छा नौकर वह है जो ताक़तवर और अमानतदार हो।'	قَالَتْ اِحْدٰىهُمَا يٰٓاَبَتِ اسْتَأْجِرْهُ اِنَّ خَيْرَ مَنِ اسْتَأْجَرْتَ الْقَوِيُّ الْاَمِيْنُ
27	उसने (मादयन के शेख़ ने) कहा, 'मैं चाहता हूँ कि तुझे अपनी इन दोनों बेटियों में से एक से निकाह कर दूँ इस शरत पर कि तू मेरे लिए आठ साल तक काम करे, और अगर तू दस साल पूरे कर ले तो यह तेरा एहसान है, और मैं तुझे तंग करना नहीं चाहता। इंशा अल्लाह तू मुझे नेक लोगों में से पाएगा।'	قَالَ اِنِّيْٓ اُرِيْدُ اَنْ اُنْكِحَكَ اِحْدَى ابْنَتَيَّ هٰتَيْنِ عَلٰٓى اَنْ تَأْجُرَنِيْ ثَمٰنِيَ حِجَجٍ فَاِنْ اَتْمَمْتَ عَشْرًا فَمِنْ عِنْدِكَ وَمَآ اُرِيْدُ اَنْ اَشُقَّ عَلَيْكَ سَتَجِدُنِيْٓ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ

28	उसने (मूसा ने) कहा, 'यह मेरे और तुम्हारे बीच (वायदा) है जो भी दो मुद्दतों में से मैं पूरी कर लूँ मुझ पर कोई इलज़ाम नहीं। और जो कुछ हम कह रहे हैं, अल्लाह उसका गवाह है'	قَالَ ذٰلِكَ بَيْنِيْ وَبَيْنَكَ اَيَّمَا الْاَجَلَيْنِ قَضَيْتُ فَلَا عُدْوَانَ عَلَيَّ وَاللّٰهُ عَلٰى مَا نَقُوْلُ وَكِيْلٌ
29	तो जब मूसा ने वह मुद्दत पूरी कर ली और अपने घरवालों के साथ रवाना हुआ, उसने पहाड़ की तरफ़ आग देखी। उसने अपने घरवालों से कहा, 'ठहरो, मैंने आग देखी है, शायद मैं वहाँ से कोई ख़बर लाऊँ या आग का एक टुकड़ा लाऊँ ताकि तुम ताप सको।'	فَلَمَّا قَضٰى مُوْسَى الْاَجَلَ وَسَارَ بِاَهْلِهٖٓ اٰنَسَ مِنْ جَانِبِ الطُّوْرِ نَارًا قَالَ لِاَهْلِهِ امْكُثُوْٓا اِنِّيْٓ اٰنَسْتُ نَارًا لَّعَلِّيْٓ اٰتِيْكُمْ مِّنْهَا بِخَبَرٍ اَوْ جَذْوَةٍ مِّنَ النَّارِ لَعَلَّكُمْ تَصْطَلُوْنَ
30	तो जब वह (मूसा) उस आग के पास पहुँचा, उसे दाहिनी तरफ़ की वादी के किनारे, एक बरकत वाली ज़मीन पर, एक दरख़्त से पुकारा गया, 'ऐ मूसा! बेशक, मैं अल्लाह हूँ सारे जहानों का रब!'	فَلَمَّآ اَتٰىهَا نُوْدِيَ مِنْ شَاطِئِ الْوَادِ الْاَيْمَنِ فِي الْبُقْعَةِ الْمُبٰرَكَةِ مِنَ الشَّجَرَةِ اَنْ يّٰمُوْسٰٓى اِنِّيْٓ اَنَا اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ
31	और (कहा गया) अपनी लाठी फेंके।' तो जब उसने (मूसा ने) उसे साँप की तरह हरकत करते देखा, वह पीछे हटकर भागा और पलटकर न देखा। (अल्लाह ने फ़रमाया), 'ऐ मूसा! पास आ और डर मत। बेशक, तू अमन वालों में से है'	وَاَنْ اَلْقِ عَصَاكَ فَلَمَّا رَاٰهَا تَهْتَزُّ كَاَنَّهَا جَانٌّ وَّلّٰى مُدْبِرًا وَّلَمْ يُعَقِّبْ يٰمُوْسٰٓى اَقْبِلْ وَلَا تَخَفْ اِنَّكَ مِنَ الْاٰمِنِيْنَ
32	अपना हाथ अपनी जेब में डाल, वह बिना किसी नुक़सान के चमकता हुआ निकलेगा, और जब डर लगे तो अपनी बाज़ू अपने सीने से लगा ले ये दो निशानियाँ हैं तेरे रब की तरफ़ से फ़िरऔन और उसके सरदारों के लिए। बेशक, वे फ़ासिक़ लोग हैं'	اُسْلُكْ يَدَكَ فِيْ جَيْبِكَ تَخْرُجْ بَيْضَاۤءَ مِنْ غَيْرِ سُوْۤءٍ وَّاضْمُمْ اِلَيْكَ جَنَاحَكَ مِنَ الرَّهْبِ فَذٰنِكَ بُرْهَانٰنِ مِنْ رَّبِّكَ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهٖ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا فٰسِقِيْنَ
33	उसने (मूसा ने) कहा, 'ऐ मेरे रब, मैंने उनके एक शख़्स को क़त्ल किया है, मुझे डर है कि वे मुझे मार डालेंगे।'	قَالَ رَبِّ اِنِّيْ قَتَلْتُ مِنْهُمْ نَفْسًا فَاَخَافُ اَنْ يَّقْتُلُوْنِ
34	और मेरा भाई हारून, उसकी ज़बान मुझसे ज़्यादा फसीह है, तो उसे मेरे साथ मददगार बनाकर भेज ताकि वह मेरी बात की तसदीक़ करे; मुझे डर है कि वे मुझे झुठलाएँगे।'	وَاَخِيْ هٰرُوْنُ هُوَ اَفْصَحُ مِنِّيْ لِسَانًا فَاَرْسِلْهُ مَعِيَ رِدْاً يُّصَدِّقُنِيْٓ اِنِّيْٓ اَخَافُ اَنْ يُّكَذِّبُوْنِ
35	उसने (अल्लाह ने) फ़रमाया, 'हम तेरे भाई के साथ तुझे ताक़त देंगे, और तुम दोनों को बड़ा इक़्तिदार देंगे, ताकि वे तुम तक न पहुँच सकें; तुम दोनों और जो तुम्हारा साथ दे, हमारे मोजिज़े के साथ जाओ, तुम ही ग़ालिब रहोगे।'	قَالَ سَنَشُدُّ عَضُدَكَ بِاَخِيْكَ وَنَجْعَلُ لَكُمَا سُلْطٰنًا فَلَا يَصِلُوْنَ اِلَيْكُمَا بِاٰيٰتِنَآ اَنْتُمَا وَمَنِ اتَّبَعَكُمَا الْغٰلِبُوْنَ
36	तो जब मूसा उनके पास हमारे साफ़ मोजिज़े के साथ आया, उन्होंने कहा, 'यह तो बस गढ़ा हुआ जादू है, और हमने अपने बाप-दादा के ज़माने में ऐसा कुछ नहीं सुना।'	فَلَمَّا جَاۤءَهُمْ مُّوْسٰى بِاٰيٰتِنَا بَيِّنٰتٍ قَالُوْا مَا هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ مُّفْتَرًى وَّمَا سَمِعْنَا بِهٰذَا فِيْٓ اٰبَاۤئِنَا الْاَوَّلِيْنَ
37	और उसने (मूसा ने) जवाब दिया, 'मेरा रब ज़्यादा जानता है कि कौन उसकी तरफ़ से हिदायत लाया और आख़िरत में किसका अंजाम अच्छा होगा। बेशक, ज़ालिम लोग कामयाब नहीं होंगे।'	وَقَالَ مُوْسٰى رَبِّيْٓ اَعْلَمُ بِمَنْ جَاۤءَ بِالْهُدٰى مِنْ عِنْدِهٖ وَمَنْ تَكُوْنُ لَهٗ عَاقِبَةُ الدَّارِ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ

وَقَالَ فِرْعَوْنُ يٰٓاَيُّهَا الْمَلَاُ مَا عَلِمْتُ لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرِيْ فَاَوْقِدْ لِيْ يٰهَامٰنُ عَلَى الطِّيْنِ فَاجْعَلْ لِّيْ صَرْحًا لَّعَلِّيْٓ اَطَّلِعُ اِلٰٓى اِلٰهِ مُوْسٰى وَاِنِّيْ لَاَظُنُّهٗ مِنَ الْكٰذِبِيْنَ	**38**	और फ़िरऔन न`कहा, 'ऐ मरे`सरदारो! मझु`तमुहार`लिए मरे`सविा कोई ख़ुदा नहीं मालमू। तो ऐ हामान, मरे`लिए मटिटी जला (ईंट`बना), फिर मरे`लिए एक ऊँचा बरुज बना ताकि मैमसा क`ख़ुदा को देख सकूँ और मझु`यकी़न ह`कि वह झठूा ह।'
وَاسْتَكْبَرَ هُوَ وَجُنُوْدُهٗ فِي الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَظَنُّوْٓا اَنَّهُمْ اِلَيْنَا لَا يُرْجَعُوْنَ	**39**	और वह (फ़िरऔन) और उसक`लशक़र बनिा हक़ क`धरती म`सरकशी करन`लग,े और उनह`गमुान था कि व`हमार`पास नहीं लौटाए जाएँगे।
فَاَخَذْنٰهُ وَجُنُوْدَهٗ فَنَبَذْنٰهُمْ فِي الْيَمِّ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الظّٰلِمِيْنَ	**40**	तो हमन`उस`(फ़िरऔन) और उसक`लशक़र को पकड़ लयिा, और उनह`समंदर म`फकै दयिा। तो देखो कि ज़ालमिों का अंजाम कसैा हआु।
وَجَعَلْنٰهُمْ اَىِٕمَّةً يَّدْعُوْنَ اِلَى النَّارِ وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ لَا يُنْصَرُوْنَ	**41**	और हमन`उनह`सरदार बनाया जो (लोगों को) जहन्नम की तरफ़ बलुात`ह,ै और क़यिामत क`दनि उनकी कोई मदद नहीं होगी।
وَاَتْبَعْنٰهُمْ فِيْ هٰذِهِ الدُّنْيَا لَعْنَةً وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ هُمْ مِّنَ الْمَقْبُوْحِيْنَ	**42**	और हमन`इस दनुयिा म`उनक`पीछ`लानत लगाई; और क़यिामत क`दनि व`नफ़रत कएि जान`वालों म`स`होंगे।
وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ مِنْۢ بَعْدِ مَآ اَهْلَكْنَا الْقُرُوْنَ الْاُوْلٰى بَصَاىِٕرَ لِلنَّاسِ وَهُدًى وَّرَحْمَةً لَّعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ	**43**	और बशेक, हमन`मसूा को कतिाब (तौरात) दी, पहल`की उम्मतों को हलाक करन`क`बाद, ताकि वह इंसानों क`लिए रौशनी, हदिायत और रहमत बन,े शायद व`नसीहत हासलि करे।
وَمَا كُنْتَ بِجَانِبِ الْغَرْبِيِّ اِذْ قَضَيْنَآ اِلٰى مُوْسَى الْاَمْرَ وَمَا كُنْتَ مِنَ الشّٰهِدِيْنَ	**44**	और त`ू(महु्मम्द) उस वक़्त पश्चमिी तरफ़ (वादी-ए-तवुा) म`नहीं था जब हमन`मसूा को हक़ुम दयिा, और न त`ूगवाहों म`स`था।
وَلٰكِنَّآ اَنْشَاْنَا قُرُوْنًا فَتَطَاوَلَ عَلَيْهِمُ الْعُمُرُ وَمَا كُنْتَ ثَاوِيًا فِيْٓ اَهْلِ مَدْيَنَ تَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِنَا وَلٰكِنَّا كُنَّا مُرْسِلِيْنَ	**45**	लकेनि हमन`कई उम्मत`पैदा कीं, और उनक`ऊपर लंबा वक़्त गज़ुर गया, और त`ू(महु्मम्द) मादय़न क`बाशदिों क`बीच रहकर हमारी आयत`उनह`पढ़कर नहीं सनुाता था, लकेनि हमन`रसलू भजे।
وَمَا كُنْتَ بِجَانِبِ الطُّوْرِ اِذْ نَادَيْنَا وَلٰكِنْ رَّحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ لِتُنْذِرَ قَوْمًا مَّآ اَتٰىهُمْ مِّنْ نَّذِيْرٍ مِّنْ قَبْلِكَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ	**46**	और त`ू(महु्मम्द) तरू (पहाड़) क`पास नहीं था जब हमन`(मसूा को) पक़ुारा, लकेनि (तझु) तरे`रब की रहमत क`तौर पर भजेा गया, ताकि त`ूउस क़ौम (क़ुरैश) को तंबीह कर`जसिक`पास तझुस`पहल`कोई तंबीह करन`वाला नहीं आया, शायद व`नसीहत हासलि करे।
وَلَوْلَآ اَنْ تُصِيْبَهُمْ مُّصِيْبَةٌۢ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ فَيَقُوْلُوْا رَبَّنَا لَوْلَآ اَرْسَلْتَ اِلَيْنَا رَسُوْلًا فَنَتَّبِعَ اٰيٰتِكَ وَنَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ	**47**	और ताकि व`यह न कह,ै जब उनक`कएि की वजह स`उन पर अज़ाब आए, 'ऐ हमार`रब, तनू`हमार`पास कोई रसलू क़यों नहीं भजेा, ताकि हम तरी आयतों की परैवी करत`और ईमान वालों म`स`होत।ो'

فَلَمَّا جَاءَهُمُ الْحَقُّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوْا لَوْلَآ اُوْتِيَ مِثْلَ مَآ اُوْتِيَ مُوْسٰى اَوَلَمْ يَكْفُرُوْا بِمَآ اُوْتِيَ مُوْسٰى مِنْ قَبْلُ قَالُوْا سِحْرٰنِ تَظٰهَرَا وَقَالُوْٓا اِنَّا بِكُلٍّ كٰفِرُوْنَ	**48**	तो जब उनके पास हमारी तरफ़ से हक़ (अल-क़ुरआन) आया, उन्होंने कहा, 'उस (मुहम्मद को) वैसा ही क्यों नहीं दिया गया जैसा मूसा को दिया गया था?' क्या उन्होंने उस (तौरात) को भी नहीं नकारा जो मूसा को पहले दी गई थी? उन्होंने कहा था, '(मूसा और हारून) दो जादूगर हैं जो एक-दूसरे की मदद करते हैं' और उन्होंने कहा, 'हम इन दोनों पर यक़ीन नहीं करते।'
قُلْ فَأْتُوْا بِكِتٰبٍ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ هُوَ اَهْدٰى مِنْهُمَآ اَتَّبِعْهُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ	**49**	कहो (मुहम्मद), 'तो अल्लाह की तरफ़ से कोई ऐसी किताब लाओ जो इन दोनों (तौरात और अल-क़ुरआन) से ज़्यादा हिदायत देने वाली हो, मैं उसकी परैवी करूँगा, अगर तुम सच्चे हो।'
فَاِنْ لَّمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَكَ فَاعْلَمْ اَنَّمَا يَتَّبِعُوْنَ اَهْوَآءَهُمْ وَمَنْ اَضَلُّ مِمَّنِ اتَّبَعَ هَوٰىهُ بِغَيْرِ هُدًى مِّنَ اللّٰهِ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ	**50**	तो अगर वे (तेरे चैलैंज का) जवाब न दें, तो जान लो कि वे सिर्फ़ अपनी ख़्वाहिशों की परैवी करते हैं और उससे ज़्यादा गुमराह कौन है जो बिना अल्लाह की हिदायत के अपनी ख़्वाहिशों की परैवी करता है? बेशक, अल्लाह ज़ालिम लोगों को हिदायत नहीं देता।
وَلَقَدْ وَصَّلْنَا لَهُمُ الْقَوْلَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ	**51**	और बेशक, हमने उनके लिए इस कलाम (अल-क़ुरआन) को पहुँचाया ताकि वे याद रखें।
اَلَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِهٖ هُمْ بِهٖ يُؤْمِنُوْنَ	**52**	जिन्हें हमने अल-क़ुरआन से पहले किताब दी थी, वे इस पर ईमान लाते हैं।
وَاِذَا يُتْلٰى عَلَيْهِمْ قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِهٖٓ اِنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّنَآ اِنَّا كُنَّا مِنْ قَبْلِهٖ مُسْلِمِيْنَ	**53**	और जब (अल-क़ुरआन) उन्हें पढ़कर सुनाया जाता है, वे कहते हैं, 'हम इस पर ईमान लाए, बेशक, यह हमारे रब की तरफ़ से हक़ है। बेशक, हम इससे पहले मुसलिम थे।'
اُولٰٓئِكَ يُؤْتَوْنَ اَجْرَهُمْ مَّرَّتَيْنِ بِمَا صَبَرُوْا وَيَدْرَءُوْنَ بِالْحَسَنَةِ السَّيِّئَةَ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ	**54**	ऐसे लोगों को उनके सब्र की वजह से दोहरा अज्र दिया जाएगा, और वे बुराई को नेकी से दूर करते हैं, और जो रिज़्क़ हमने उन्हें दिया, उसमें से ख़र्च करते हैं।
وَاِذَا سَمِعُوا اللَّغْوَ اَعْرَضُوْا عَنْهُ وَقَالُوْا لَنَآ اَعْمَالُنَا وَلَكُمْ اَعْمَالُكُمْ سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ لَا نَبْتَغِي الْجٰهِلِيْنَ	**55**	और जब वे बुरी बात सुनते हैं, तो उससे मुँह फेर लेते हैं और कहते हैं, 'हमारे लिए हमारे आमाल और तुम्हारे लिए तुम्हारे आमाल, तुम पर सलाम हो, हम जाहिलों के साथ नहीं रहना चाहते।'
اِنَّكَ لَا تَهْدِيْ مَنْ اَحْبَبْتَ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ وَهُوَ اَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِيْنَ	**56**	बेशक, तू (मुहम्मद) उस शख़्स को हिदायत नहीं दे सकता जिसे तू चाहता है, लेकिन अल्लाह जिसे चाहता है हिदायत देता है, और वह उन लोगों को ज़्यादा जानता है जो हिदायत क़बूल करते हैं।
وَقَالُوْٓا اِنْ نَّتَّبِعِ الْهُدٰى مَعَكَ نُتَخَطَّفْ مِنْ اَرْضِنَا اَوَلَمْ نُمَكِّنْ لَّهُمْ حَرَمًا اٰمِنًا يُّجْبٰٓى اِلَيْهِ ثَمَرٰتُ كُلِّ شَيْءٍ رِّزْقًا مِّنْ لَّدُنَّا وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ	**57**	और वे कहते हैं, 'अगर हम तेरे साथ हिदायत की परैवी करें, तो हमें हमारी ज़मीन से उखाड़ लिया जाएगा।' (अल्लाह फ़रमाता है) क्या हमने उनके लिए हरम को अमन वाला मक़ाम नहीं बनाया, जहाँ हर तरह के फल (उपज) हमारी तरफ़ से रिज़्क़ के तौर पर लाए जाते हैं? लेकिन उनमें से अक़्सर नहीं जानते।

وَكَمْ اَهْلَكْنَا مِنْ قَرْيَةٍۭ بَطِرَتْ مَعِيْشَتَهَا فَتِلْكَ مَسٰكِنُهُمْ لَمْ تُسْكَنْ مِّنْۢ بَعْدِهِمْ اِلَّا قَلِيْلًا وَكُنَّا نَحْنُ الْوٰرِثِيْنَ	**58**	और हमने कितने ही ऐसे शहर हलाक किए जो अपनी ज़िंदगी में मस्त थे, तो ये उनके मकान हैं जो उनके बाद बस थोड़े से बसे, और हम ही उनके वारिस हुए।
وَمَا كَانَ رَبُّكَ مُهْلِكَ الْقُرٰى حَتّٰى يَبْعَثَ فِيْٓ اُمِّهَا رَسُوْلًا يَّتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِنَا وَمَا كُنَّا مُهْلِكِي الْقُرٰٓى اِلَّا وَاَهْلُهَا ظٰلِمُوْنَ	**59**	और तेरा रब शहरों को हलाक नहीं करता, जब तक कि उनके बड़े शहर में रसूल न भेज दे जो हमारी आयतें उनको पढ़कर सुनाए; और हम शहरों को हलाक नहीं करते, सिवाय इसके कि उनके बाशिंदे ज़ुल्म करें।
وَمَآ اُوْتِيْتُمْ مِّنْ شَيْءٍ فَمَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَزِيْنَتُهَا وَمَا عِنْدَ اللّٰهِ خَيْرٌ وَّاَبْقٰى اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ	**60**	और जो कुछ तुम्हें दिया गया, वह दुनिया की ज़िंदगी का सामान और उसकी ज़ीनत है; और जो अल्लाह के पास है, वह बेहतर और बाक़ी रहने वाला है। क्या तुम नहीं समझते?
اَفَمَنْ وَّعَدْنٰهُ وَعْدًا حَسَنًا فَهُوَ لَاقِيْهِ كَمَنْ مَّتَّعْنٰهُ مَتَاعَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ثُمَّ هُوَ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ مِنَ الْمُحْضَرِيْنَ	**61**	तो क्या वह शख़्स जिसे हमने अच्छा वादा (जन्नत) दिया और वह उसे पा लेगा, उस शख़्स जैसा है जिसे हमने दुनिया की ज़िंदगी का मज़ा दिया, फिर क़ियामत के दिन वह (नरक में) घसीटे जाने वालों में से होगा?
وَيَوْمَ يُنَادِيْهِمْ فَيَقُوْلُ اَيْنَ شُرَكَاۗءِيَ الَّذِيْنَ كُنْتُمْ تَزْعُمُوْنَ	**62**	और (याद करो) उस दिन जब वह (अल्लाह) उनको पुकारेगा और फ़रमाएगा, 'वे मेरे शरीक कहाँ हैं जिनको तुम गुमान करते थे?'
قَالَ الَّذِيْنَ حَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ رَبَّنَا هٰٓؤُلَاۗءِ الَّذِيْنَ اَغْوَيْنَا اَغْوَيْنٰهُمْ كَمَا غَوَيْنَا تَبَرَّاْنَآ اِلَيْكَ مَا كَانُوْٓا اِيَّانَا يَعْبُدُوْنَ	**63**	जिन पर हुक्म लागू हो चुका है, वे कहेंगे, 'ऐ हमारे रब, यही वे लोग हैं जिनको हमने गुमराह किया; हमने उनको वैसा ही गुमराह किया जैसा हम ख़ुद गुमराह थे, हम तुझसे बेरी होकर कहते हैं, उन्होंने हमारी इबादत नहीं की थी।'
وَقِيْلَ ادْعُوْا شُرَكَاۗءَكُمْ فَدَعَوْهُمْ فَلَمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَهُمْ وَرَاَوُا الْعَذَابَ لَوْ اَنَّهُمْ كَانُوْا يَهْتَدُوْنَ	**64**	और (उनसे) कहा जाएगा, 'अपने शरीकों को पुकारो,' तो वे उनको पुकारेंगे, लेकिन वे जवाब नहीं देंगे, और वे अज़ाब देखेंगे। काश, वे पहले हिदायत क़बूल कर लेते।
وَيَوْمَ يُنَادِيْهِمْ فَيَقُوْلُ مَاذَآ اَجَبْتُمُ الْمُرْسَلِيْنَ	**65**	और (याद करो) उस दिन जब वह (अल्लाह) उनको पुकारेगा और फ़रमाएगा, 'तुमने रसूलों को क्या जवाब दिया?'
فَعَمِيَتْ عَلَيْهِمُ الْاَنْۢبَاۗءُ يَوْمَىِٕذٍ فَهُمْ لَا يَتَسَاۗءَلُوْنَ	**66**	तो उस दिन उनके लिए सारी दलीलें अंधेरी हो जाएँगी, और वे एक-दूसरे से सवाल नहीं करेंगे।
فَاَمَّا مَنْ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَعَسٰٓى اَنْ يَّكُوْنَ مِنَ الْمُفْلِحِيْنَ	**67**	तो जो शख़्स तौबा करे और ईमान लाए और नेक काम करे, शायद वह कामयाब लोगों में से हो।
وَرَبُّكَ يَخْلُقُ مَا يَشَاۗءُ وَيَخْتَارُ ۭ مَا كَانَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ ۭ سُبْحٰنَ اللّٰهِ وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ	**68**	और तेरा रब जो चाहता है बनाता और चुनता है। उनके लिए कोई इख़्तियार नहीं। अल्लाह पाक है और उससे बेरी है जो वे शरीक करते हैं।

69	और तरो रब जानता ह ै जो उनक े दिल छपिात े ह ै और जो व े ज़ाहरि करत े ह ै।	وَرَبُّكَ يَعْلَمُ مَا تُكِنُّ صُدُوْرُهُمْ وَمَا يُعْلِنُوْنَ
70	और वह अल्लाह ह ै, उसक े सवि कोई ख़ुदा नहीं, दनुयिा और आख़रित म ें सारी तारीफ़ उसी क े लिए ह ै, और उसी का हुक्म ह ै और उसी की तरफ़ तमु लौटाए जाओग े।	وَهُوَ اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ لَهُ الْحَمْدُ فِي الْاُوْلٰى وَالْاٰخِرَةِ وَلَهُ الْحُكْمُ وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ
71	कहो (मुहम्मद), 'क्या ख़याल ह ै, अगर अल्लाह तमुहार े लिए रात को क़ियामत तक दाइम रख े, तो अल्लाह क े सवि कौन ख़ुदा ह ै जो तमुहार े लिए रौशनी लाए? क्या तमु सनुत े नही?'	قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ جَعَلَ اللّٰهُ عَلَيْكُمُ الَّيْلَ سَرْمَدًا اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ مَنْ اِلٰهٌ غَيْرُ اللّٰهِ يَأْتِيْكُمْ بِضِيَاءٍ اَفَلَا تَسْمَعُوْنَ
72	कहो (मुहम्मद), 'क्या ख़याल ह ै, अगर अल्लाह तमुहार े लिए दनि को क़ियामत तक दाइम रख े, तो अल्लाह क े सवि कौन ख़ुदा ह ै जो तमुहार े लिए रात लाए जसि म ें तमु आराम करो? क्या तमु दखे़त े नही?'	قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ جَعَلَ اللّٰهُ عَلَيْكُمُ النَّهَارَ سَرْمَدًا اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ مَنْ اِلٰهٌ غَيْرُ اللّٰهِ يَأْتِيْكُمْ بِلَيْلٍ تَسْكُنُوْنَ فِيْهِ اَفَلَا تُبْصِرُوْنَ
73	और उसकी रहमत स े उसन े तमुहार े लिए रात और दनि बनाया, ताकि तमु रात म ें आराम करो और दनि म ें उसकी फ़ज़्ल की तलाश करो और ताकि तमु शुक्र करो।	وَمِنْ رَّحْمَتِه جَعَلَ لَكُمُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ لِتَسْكُنُوْا فِيْهِ وَلِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِه وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ
74	और (याद करो) उस दनि जब वह (अल्लाह) उनह ें पुकारगेा और फ़रमाएगा, 'व े मेरे शरीक कहा ँ ह ैं जनिह ें तमु गमुान करत े थ?े'	وَيَوْمَ يُنَادِيْهِمْ فَيَقُوْلُ اَيْنَ شُرَكَاءِيَ الَّذِيْنَ كُنْتُمْ تَزْعُمُوْنَ
75	और हम हर उम्मत स े एक गवाह लाएँगे, फरि कहगे े, 'अपनी दलील पशे करो,' तो उनह ें मालमू हो जाएगा कि हक़ अल्लाह का ह ै और जो कछु व े गढ़त े थ,े वह उनस े गमु हो जाएगा।	وَنَزَعْنَا مِنْ كُلِّ اُمَّةٍ شَهِيْدًا فَقُلْنَا هَاتُوْا بُرْهَانَكُمْ فَعَلِمُوْٓا اَنَّ الْحَقَّ لِلّٰهِ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ
76	बशेक, क़ारून मूसा की क़ौम म ें स े था, लकेनि उसन े उन पर जुल्म कयिा, और हमन े उस े ऐस े ख़ज़ान े दए कि उसकी चाबयिाँ मज़बूत लोगों की जमात क े लिए भारी थीं। (याद करो) जब उसकी क़ौम न े उसस े कहा, 'इतरा मत। बशेक, अल्लाह इतरान े वालों को पसंद नहीं करता।'	اِنَّ قَارُوْنَ كَانَ مِنْ قَوْمِ مُوْسٰى فَبَغٰى عَلَيْهِمْ وَاٰتَيْنٰهُ مِنَ الْكُنُوْزِ مَآ اِنَّ مَفَاتِحَه لَتَنُوْٓاُ بِالْعُصْبَةِ اُولِى الْقُوَّةِ اِذْ قَالَ لَه قَوْمُه لَا تَفْرَحْ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْفَرِحِيْنَ
77	और जो कछु अल्लाह न े तझु े दयिा, उसस े आख़रित का घर तलाश कर, लकेनि दनुयिा म ें अपना हसि्सा मत भूल और नकेी कर जसै े अल्लाह न े तझु पर नकेी की, और धरती म ें फ़साद मत मचा। बशेक, अल्लाह फ़साद करन े वालों को पसंद नहीं करता।'	وَابْتَغِ فِيْمَآ اٰتٰىكَ اللّٰهُ الدَّارَ الْاٰخِرَةَ وَلَا تَنْسَ نَصِيْبَكَ مِنَ الدُّنْيَا وَاَحْسِنْ كَمَآ اَحْسَنَ اللّٰهُ اِلَيْكَ وَلَا تَبْغِ الْفَسَادَ فِى الْاَرْضِ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْمُفْسِدِيْنَ
78	उसन े (क़ारून न े) कहा, 'मझु े यह (दौलत) मरे इल्म की वजह स े दी गई।' क्या उस न े नहीं मालमू कि अल्लाह न े उसस े पहल े ऐसी उम्मतों को हलाक कयिा जो उसस े ज़्यादा ताक़तवर थीं और ज़्यादा जमा करन े वाली थी? और गनुहगारों स े उनक े गनुाहों क े बार े म ें सवाल नहीं कयिा जाता।	قَالَ اِنَّمَآ اُوْتِيْتُه عَلٰى عِلْمٍ عِنْدِيْ اَوَلَمْ يَعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ قَدْ اَهْلَكَ مِنْ قَبْلِه مِنَ الْقُرُوْنِ مَنْ هُوَ اَشَدُّ مِنْهُ قُوَّةً وَّاَكْثَرُ جَمْعًا وَلَا يُسْـَٔلُ عَنْ ذُنُوْبِهِمُ الْمُجْرِمُوْنَ

فَخَرَجَ عَلٰى قَوْمِهٖ فِيْ زِيْنَتِهٖ قَالَ الَّذِيْنَ يُرِيْدُوْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا يٰلَيْتَ لَنَا مِثْلَ مَآ اُوْتِيَ قَارُوْنُ اِنَّهٗ لَذُوْ حَظٍّ عَظِيْمٍ	**79**	तो वह (क़ारून) अपनी क़ौम क॓सामन॓अपनी शान म॓निकला। जो लोग दुनिया की ज़िंदगी चाहत॓थ, उनहोंन॓कहा, 'काश, हमार॓पास भी वसैी दौलत होती जो क़ारून को दी गई, बशेक, वह बड़ी कामयाबी वाला ह॓'
وَقَالَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ وَيْلَكُمْ ثَوَابُ اللّٰهِ خَيْرٌ لِّمَنْ اٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا وَلَا يُلَقّٰىهَآ اِلَّا الصّٰبِرُوْنَ	**80**	लकेनि जनिह॓इलम़ दयिा गया था, उनहोंन॓कहा, 'हाय तमु! अल़लाह का अजऱ उन लोगों क॓लिए बहेतर ह॓जो ईमान लात॓ह॓ और नके काम करत॓ह॓, और इस॓सरि़फ़ सबऱ करन॓वाल॓हासलि करत॓ह॓॓'
فَخَسَفْنَا بِهٖ وَبِدَارِهِ الْاَرْضَ فَمَا كَانَ لَهٗ مِنْ فِئَةٍ يَّنْصُرُوْنَهٗ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُنْتَصِرِيْنَ	**81**	तो हमन॓उस॓(क़ारून) और उसक॓घर को ज़मीन म॓धसँा दयिा। तो उसक॓लिए कोई जमात न थी जो अल़लाह क॓सविा उसकी मदद कर॓, और न वह ख़ुद अपनी हफि़ाज़त कर सका।
وَاَصْبَحَ الَّذِيْنَ تَمَنَّوْا مَكَانَهٗ بِالْاَمْسِ يَقُوْلُوْنَ وَيْكَاَنَّ اللّٰهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ وَيَقْدِرُ لَوْلَآ اَنْ مَّنَّ اللّٰهُ عَلَيْنَا لَخَسَفَ بِنَا وَيْكَاَنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الْكٰفِرُوْنَ	**82**	और जो लोग कल उसकी जगह की तमनना कर रह॓थ, उनहोंन॓कहा, 'हाय, सचचाई यह ह॓कि अल़लाह अपन॓बंदों म॓स॓जसिक॓लिए चाहता ह॓रज़िक़ को वसुअत दतेा ह॓और जसिक॓लिए चाहता ह॓तंग करता ह॓। अगर अल़लाह न॓हम पर अपना फज़ल़ न कयिा होता, तो वह हम॓भी धसँा दतेा। हाय, सचचाई यह ह॓ कि काफ़रि कामयाब नहीं होंगे॓'
تِلْكَ الدَّارُ الْاٰخِرَةُ نَجْعَلُهَا لِلَّذِيْنَ لَا يُرِيْدُوْنَ عُلُوًّا فِي الْاَرْضِ وَلَا فَسَادًا وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِيْنَ	**83**	वह आख़रित का घर हम उन लोगों क॓लिए रखत॓ह॓जो धरती म॓ सरकशी और फ़साद नहीं चाहत॓ और अचछा अंजाम मत॒तक़यिों क॓लिए ह॓॓
مَنْ جَآءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهٗ خَيْرٌ مِّنْهَا وَمَنْ جَآءَ بِالسَّيِّئَةِ فَلَا يُجْزَى الَّذِيْنَ عَمِلُوا السَّيِّاٰتِ اِلَّا مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ	**84**	जो कोई नकेी लकेर आएगा, उस॓उसस॓बहेतर (अजऱ) मलिगेा; और जो बरुाई लकेर आएगा, तो जनिहोंन॓बरु॓काम कयि, उनह॓ बस उतना ही बदला दयिा जाएगा जतिना उनहोंन॓कयिा।
اِنَّ الَّذِيْ فَرَضَ عَلَيْكَ الْقُرْاٰنَ لَرَادُّكَ اِلٰى مَعَادٍ قُلْ رَّبِّيْٓ اَعْلَمُ مَنْ جَآءَ بِالْهُدٰى وَمَنْ هُوَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ	**85**	बशेक, जसि (अल़लाह) न॓तझु पर (अल-क़ुरआन क॓) हुक़्म को फ़ऱज़ कयिा, वह तझु॓ (मक्का) की तरफ़ लौटाएगा। कहो (महुम्मद), 'मरेा रब ज़यादा जानता ह॓कि कौन हदिायत लाया और कौन साफ़ गमुराही म॓ह॓॓'
وَمَا كُنْتَ تَرْجُوْٓا اَنْ يُّلْقٰٓى اِلَيْكَ الْكِتٰبُ اِلَّا رَحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ فَلَا تَكُوْنَنَّ ظَهِيْرًا لِّلْكٰفِرِيْنَ	**86**	और तू (महुम्मद) कभी उम्मीद नहीं करता था कि तझु पर यह कताि़ब (अल-क़ुरआन) उतारी जाएगी, लकेनि यह तरे॓रब की रहमत ह॓, इसलिए काफ़रि॓ का साथी न बन।
وَلَا يَصُدُّنَّكَ عَنْ اٰيٰتِ اللّٰهِ بَعْدَ اِذْ اُنْزِلَتْ اِلَيْكَ وَادْعُ اِلٰى رَبِّكَ وَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ	**87**	और व॓तझु॓अल़लाह की आयतों स॓, जो तझु पर उतारी गई ह॓, न रोक॓, और अपन॓रेब की तरफ़ बलुा, और मशु़रकिों म॓स॓न हो।

وَلَا تَدْعُ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ كُلُّ شَيْءٍ هَالِكٌ اِلَّا وَجْهَه لَهُ الْحُكْمُ وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ	और अल्लाह के साथ किसी और ख़ुदा को न पुकार। उसके सिवा कोई ख़ुदा नहीं। हर चीज़ फ़ानी है, सिवाय अल्लाह के। उसी का हुक्म है, और उसी की तरफ़ तुम लौटाए जाओगे।	**88**

छंदों की संख़्या	اَلْعَنْكَبُوت	مكية
६९	अल-अंकबुत - 29	मक्की

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल-अंकबुत (मकड़ी)

1	अलीफ़.लाम मीम।	الٓمّٓ
2	क्या लोग समझते हैं कि वे सरि़्फ़ यह कहकर छोड़ दिए जाएँगे कि 'हम ईमान लाए,' और उनकी आज़माइश नहीं होगी?	اَحَسِبَ النَّاسُ اَنْ يُّتْرَكُوْٓا اَنْ يَّقُوْلُوْٓا اٰمَنَّا وَهُمْ لَا يُفْتَنُوْنَ
3	और बेशक, हमने उनसे पहले वालों को आज़माया, तो अल्लाह ज़रूर जानता है कि कौन सच्चे हैं और कौन झूठे हैं।	وَلَقَدْ فَتَنَّا الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَلَيَعْلَمَنَّ اللّٰهُ الَّذِيْنَ صَدَقُوْا وَلَيَعْلَمَنَّ الْكٰذِبِيْنَ
4	क्या वे लोग जो बुराइयाँ करते हैं, समझते हैं कि वे हमारे (अज़ाब) से बच जाएँगे? बहुत बुरा है जो वे तय करते हैं।	اَمْ حَسِبَ الَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ السَّيِّاٰتِ اَنْ يَّسْبِقُوْنَا سَاۤءَ مَا يَحْكُمُوْنَ
5	जो कोई अल्लाह से मुलाक़ात की उम्मीद रखता है, तो बेशक, अल्लाह का वक़्त ज़रूर आएगा। और वह बहुत सुनने वाला, बहुत जानने वाला है।	مَنْ كَانَ يَرْجُوْا لِقَاۤءَ اللّٰهِ فَاِنَّ اَجَلَ اللّٰهِ لَاٰتٍ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ
6	और जो कोई जिहाद करता है, तो वह अपने लिए ही जिहाद करता है। बेशक, अल्लाह सारे जहानों से बेनियाज़ है।	وَمَنْ جَاهَدَ فَاِنَّمَا يُجَاهِدُ لِنَفْسِهٖ اِنَّ اللّٰهَ لَغَنِيٌّ عَنِ الْعٰلَمِيْنَ
7	और जो लोग ईमान लाए और नेक काम किए, हम ज़रूर उनकी बुराइयों को मिटा देंगे और उन्हें उनके किए से बेहतर बदला देंगे।	وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَنُكَفِّرَنَّ عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ اَحْسَنَ الَّذِيْ كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ
8	और हमने इंसान को हुक्म दिया कि वह अपने माँ-बाप के साथ नेकी करे। और अगर वे तुझे मजबूर करें कि तू मेरे साथ किसी ऐसी चीज़ को शरीक करे जिसका तुझे कोई इल्म नहीं, तो उनकी बात न मान। मेरी ही तरफ़ तुम्हारा लौटना है, और मैं तुम्हें बताऊँगा जो कुछ तुमने किया।	وَوَصَّيْنَا الْاِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ حُسْنًا وَاِنْ جَاهَدٰكَ لِتُشْرِكَ بِيْ مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ فَلَا تُطِعْهُمَا اِلَيَّ مَرْجِعُكُمْ فَاُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ
9	और जो लोग ईमान लाए और नेक काम किए, हम उन्हें ज़रूर सालेह लोगों में शामिल करेंगे।	وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَنُدْخِلَنَّهُمْ فِي الصّٰلِحِيْنَ

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّقُوْلُ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ فَاِذَآ اُوْذِيَ فِى اللّٰهِ جَعَلَ فِتْنَةَ النَّاسِ كَعَذَابِ اللّٰهِ وَلَئِنْ جَاۤءَ نَصْرٌ مِّنْ رَّبِّكَ لَيَقُوْلُنَّ اِنَّا كُنَّا مَعَكُمْ اَوَلَيْسَ اللّٰهُ بِاَعْلَمَ بِمَا فِيْ صُدُوْرِ الْعٰلَمِيْنَ	10	और कछ लोग कहत हे, 'हम अल्लाह पर ईमान लाए,' लकेनि जब उनह अल्लाह (क रास्त) म तकलीफ़ दी जाती ह, तो व इंसानों की आज़माइश को अल्लाह का अज़ाब समझत हैं और अगर तरे रब स मदद आए, तो व ज़रूर कहगे, 'हम तो तमुहार साथ थो।' क्या अल्लाह को नहीं मालूम कि सार इंसानों क दलिों म क्या ह?
وَلَيَعْلَمَنَّ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَلَيَعْلَمَنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ	11	और अल्लाह ज़रूर जानता ह कि कौन ईमान वाल हैं और कौन मनाफ़िक़ हैं।
وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّبِعُوْا سَبِيْلَنَا وَلْنَحْمِلْ خَطٰيٰكُمْ وَمَا هُمْ بِحٰمِلِيْنَ مِنْ خَطٰيٰهُمْ مِّنْ شَيْءٍ اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ	12	और काफ़िर लोग ईमान वालों स कहत ह, 'हमार रास्त पर चलो, और हम तमुहार गनाह उठाएँगे,' हालाकँि व उनक गनाहों को ज़रा भी नहीं उठा सकत। बशेक, व सचम झठू हैं।
وَلَيَحْمِلُنَّ اَثْقَالَهُمْ وَاَثْقَالًا مَّعَ اَثْقَالِهِمْ وَلَيُسْـَٔلُنَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ عَمَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ	13	और व ज़रूर अपन गनाहों का बोझ उठाएँगे, और अपन गनाहों क साथ दूसरों क गनाह भी, और क़यिामत क दनि उनस ज़रूर उस झठू क बार म पछा जाएगा जो व गढ़त रह।
وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا اِلٰى قَوْمِهٖ فَلَبِثَ فِيْهِمْ اَلْفَ سَنَةٍ اِلَّا خَمْسِيْنَ عَامًا فَاَخَذَهُمُ الطُّوْفَانُ وَهُمْ ظٰلِمُوْنَ	14	और बशेक, हमन नूह को उनकी कौम की तरफ़ भजेा, तो व उनक बीच हज़ार साल स पचास साल कम रह। फरि उनह बड़ा तफ़ान ल गया, हालाकँि व ज़ालमि थे।
فَاَنْجَيْنٰهُ وَاَصْحٰبَ السَّفِيْنَةِ وَجَعَلْنٰهَآ اٰيَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ	15	तो हमन नूह और कश्ती वालों को बचा लयिा, और हमन इस सार जहानों क लिए एक नशिानी बनाया।
وَاِبْرٰهِيْمَ اِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَاتَّقُوْهُ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ	16	और (याद करो) इबराहीम को, जब उनहोंन अपनी कौम स कहा, 'अल्लाह की इबादत करो और उसस डरो। यह तमुहार लिए बहेतर ह, अगर तमु जानत हो।
اِنَّمَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَوْثَانًا وَّتَخْلُقُوْنَ اِفْكًا اِنَّ الَّذِيْنَ تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ لَا يَمْلِكُوْنَ لَكُمْ رِزْقًا فَابْتَغُوْا عِنْدَ اللّٰهِ الرِّزْقَ وَاعْبُدُوْهُ وَاشْكُرُوْا لَهٗ اِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ	17	तमु जो अल्लाह क सवि पज़ूत हो, व तो बस मूरतयिा हैं और तमु झठू गढ़त हो। बशेक, तमु जो अल्लाह क सवि पज़ूत हो, व तमुह रिज़क़ नहीं द सकत; तो अल्लाह स रिज़क़ माँगो, और उसी की इबादत करो और उसी का शक्र करो। उसी की तरफ़ तमु लौटाए जाओगे।
وَاِنْ تُكَذِّبُوْا فَقَدْ كَذَّبَ اُمَمٌ مِّنْ قَبْلِكُمْ وَمَا عَلَى الرَّسُوْلِ اِلَّا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ	18	और अगर तमु (काफ़िर) झठुलात हो, तो तमुस पहल की उम्मतों न भी झठुलाया। और रसूल का काम तो सरिफ़ साफ़-साफ़ पगैाम पहचँुाना ह।
اَوَلَمْ يَرَوْا كَيْفَ يُبْدِئُ اللّٰهُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ اِنَّ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرٌ	19	क्या उनहोंन नहीं दखेा कि अल्लाह ख़लिक़त की शरुआत कसै करता ह, फरि उस दोहराता ह? बशेक, यह अल्लाह क लिए आसान ह।
قُلْ سِيْرُوْا فِى الْاَرْضِ فَانْظُرُوْا كَيْفَ بَدَاَ الْخَلْقَ ثُمَّ اللّٰهُ يُنْشِئُ النَّشْاَةَ الْاٰخِرَةَ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ	20	कहो, 'धरती म चलो-फरिो, फरि दखेो कि (अल्लाह) न ख़लिक़त की शरुआत कसै की, फरि अल्लाह आख़रिी ख़लिक़त पदैा करता ह। बशेक, अल्लाह हर चीज़ पर क़ादरि ह।

يُعَذِّبُ مَنْ يَّشَاۤءُ وَيَرْحَمُ مَنْ يَّشَاۤءُ وَاِلَيْهِ تُقْلَبُوْنَ	वह जिसे चाहता है अज़ाब देता है और जिसे चाहता है रहम करता है, और उसी की तरफ़ तुम लौटाए जाओगे।	**21**
وَمَآ اَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ فِى الْاَرْضِ وَلَا فِى السَّمَاۤءِ وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ	और तुम न धरती में और न आकाश में (अल्लाह के अज़ाब से) बच सकते हो, और अल्लाह के सिवा तुम्हारा कोई सरपरस्त और मददगार नहीं।	**22**
وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَلِقَاۤىِٕهٖٓ اُولٰۤىِٕكَ يَىِٕسُوْا مِنْ رَّحْمَتِيْ وَاُولٰۤىِٕكَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ	और जो लोग अल्लाह की आयतों और उससे मुलाक़ात को नकारते हैं, वे मेरी रहमत से मायूस हैं, और उनके लिए दर्दनाक अज़ाब है।	**23**
فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهٖٓ اِلَّآ اَنْ قَالُوا اقْتُلُوْهُ اَوْ حَرِّقُوْهُ فَاَنْجٰىهُ اللّٰهُ مِنَ النَّارِ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ	तो उनकी कौम (इब्राहीम) का जवाब बस यही था कि उसे मार डालो या उसे जला दो,' फिर अल्लाह ने उन्हें आग से बचा लिया। बेशक, इसमें ईमान वालों के लिए निशानियाँ हैं।	**24**
وَقَالَ اِنَّمَا اتَّخَذْتُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَوْثَانًا مَّوَدَّةَ بَيْنِكُمْ فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ثُمَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ يَكْفُرُ بَعْضُكُمْ بِبَعْضٍ وَّيَلْعَنُ بَعْضُكُمْ بَعْضًا وَّمَاْوٰىكُمُ النَّارُ وَمَا لَكُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ	और उन्होंने (इब्राहीम ने) कहा, 'तुमने जो मूर्तियाँ अल्लाह के सिवा पूजीं, वे तो बस दुनिया की ज़िंदगी में तुम्हारे बीच मोहब्बत पैदा करने के लिए हैं, फिर क़ियामत के दिन तुम एक-दूसरे को नकारोगे और एक-दूसरे को लानत दोगे; और तुम्हारा ठिकाना जहन्नम है, और तुम्हारा कोई मददगार नहीं होगा।'	**25**
فَاٰمَنَ لَهٗ لُوْطٌ وَقَالَ اِنِّيْ مُهَاجِرٌ اِلٰى رَبِّيْ اِنَّهٗ هُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ	तो लूत ने (इब्राहीम की नबुव्वत को) सच्चा माना। और उन्होंने (इब्राहीम ने) कहा, 'मैं अपने रब (के हुक्म) की तरफ़ हिजरत करता हूँ, बेशक, वह बहुत ताक़तवर, बहुत हिकमत वाला है।'	**26**
وَوَهَبْنَا لَهٗٓ اِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ وَجَعَلْنَا فِيْ ذُرِّيَّتِهِ النُّبُوَّةَ وَالْكِتٰبَ وَاٰتَيْنٰهُ اَجْرَهٗ فِى الدُّنْيَا وَاِنَّهٗ فِى الْاٰخِرَةِ لَمِنَ الصّٰلِحِيْنَ	और हमने इब्राहीम को इसहाक़ और याक़ूब अता किए, और हमने उनकी औलाद में नबुव्वत और किताब रखी, और हमने उन्हें दुनिया में उनका बदला दिया; और बेशक, वह आख़िरत में सालेह लोगों में से है।	**27**
وَلُوْطًا اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖٓ اِنَّكُمْ لَتَاْتُوْنَ الْفَاحِشَةَ مَا سَبَقَكُمْ بِهَا مِنْ اَحَدٍ مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ	और (याद करो) जब लूत ने अपनी कौम से कहा, 'तुम वह बेहयाई का काम करते हो जो तुमसे पहले किसी उम्मत ने नहीं किया।	**28**
اَىِٕنَّكُمْ لَتَاْتُوْنَ الرِّجَالَ وَتَقْطَعُوْنَ السَّبِيْلَ وَتَاْتُوْنَ فِيْ نَادِيْكُمُ الْمُنْكَرَ فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهٖٓ اِلَّآ اَنْ قَالُوا ائْتِنَا بِعَذَابِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ	क्या तुम मर्दों के पास जाते हो, रास्ता रोकते हो, और अपनी मजलिसों में बुरे काम करते हो?' तो उनकी कौम का जवाब बस यही था कि हम पर अल्लाह का अज़ाब लाओ, अगर तुम सच्चे हो।'	**29**
قَالَ رَبِّ انْصُرْنِيْ عَلَى الْقَوْمِ الْمُفْسِدِيْنَ	उन्होंने (लूत ने) दुआ की, 'ऐ मेरे रब, उन लोगों पर (अज़ाब) भेज जो फ़साद करते हैं।'	**30**

وَلَمَّا جَاءَتْ رُسُلُنَآ اِبْرٰهِيْمَ بِالْبُشْرٰى قَالُوْٓا اِنَّا مُهْلِكُوْٓا اَهْلِ هٰذِهِ الْقَرْيَةِ اِنَّ اَهْلَهَا كَانُوْا ظٰلِمِيْنَ	**31**	और जब हमारे फ़रिश्ते इब्राहीम के पास ख़ुशख़बरी लेकर आए, उन्होंने कहा, 'हम इस शहर (सदूम) के लोगों को हलाक करेंगे क्योंकि इसके लोग ज़ालिम हैं'
قَالَ اِنَّ فِيْهَا لُوْطًا قَالُوْا نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَنْ فِيْهَا لَنُنَجِّيَنَّهٗ وَاَهْلَهٗٓ اِلَّا امْرَاَتَهٗ كَانَتْ مِنَ الْغٰبِرِيْنَ	**32**	उन्होंने (इब्राहीम ने) कहा, 'इसमें तो लूत है' उन्होंने (फ़रिश्तों ने) कहा, 'हमें मालूम है कि वहाँ कौन है हम उन्हें और उनके घरवालों को बचा लेंगे, सिवाय उनकी बीवी के, जो पीछे रहने वालों में से है'
وَلَمَّآ اَنْ جَاءَتْ رُسُلُنَا لُوْطًا سِيْٓءَ بِهِمْ وَضَاقَ بِهِمْ ذَرْعًا وَّقَالُوْا لَا تَخَفْ وَلَا تَحْزَنْ اِنَّا مُنَجُّوْكَ وَاَهْلَكَ اِلَّا امْرَاَتَكَ كَانَتْ مِنَ الْغٰبِرِيْنَ	**33**	और जब हमारे फ़रिश्ते लूत के पास आए, तो वह उनके (आने से) परेशान हुए और उनके लिए (बचाव की) ताक़त न पाई, और उन्होंने कहा, 'डरो मत और ग़म न करो, हम तुम्हें और तुम्हारे घरवालों को बचा लेंगे, सिवाय तुम्हारी बीवी के, जो पीछे रहने वालों में से है'
اِنَّا مُنْزِلُوْنَ عَلٰٓى اَهْلِ هٰذِهِ الْقَرْيَةِ رِجْزًا مِّنَ السَّمَاۤءِ بِمَا كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ	**34**	बेशक, हम इस शहर के लोगों पर आकाश से अज़ाब उतारेंगे, क्योंकि वे फ़साद करते थे'
وَلَقَدْ تَّرَكْنَا مِنْهَآ اٰيَةًۢ بَيِّنَةً لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ	**35**	और हमने उस (शहर) से एक साफ़ निशानी छोड़ी उन लोगों के लिए जो अक़्ल रखते हैं
وَاِلٰى مَدْيَنَ اَخَاهُمْ شُعَيْبًا فَقَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَارْجُوا الْيَوْمَ الْاٰخِرَ وَلَا تَعْثَوْا فِى الْاَرْضِ مُفْسِدِيْنَ	**36**	और मादयन की तरफ़ उनके भाई शुऐब को (भेजा), तो उन्होंने कहा, 'ऐ मेरी कौम, अल्लाह की इबादत करो और क़यामत के दिन की उम्मीद रखो, और धरती में फ़साद मचाते न फिरो।'
فَكَذَّبُوْهُ فَاَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَاَصْبَحُوْا فِيْ دَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ	**37**	लेकिन उन्होंने उन्हें झुठलाया, तो उन्हें ज़लज़ला ने पकड़ लिया, और वे अपने घरों में मरे पड़े रह गए।
وَعَادًا وَّثَمُوْدَا وَقَدْ تَّبَيَّنَ لَكُمْ مِّنْ مَّسٰكِنِهِمْ وَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ اَعْمَالَهُمْ فَصَدَّهُمْ عَنِ السَّبِيْلِ وَكَانُوْا مُسْتَبْصِرِيْنَ	**38**	और आद और समूद (की कौमों को भी हलाक किया), और यह तुम्हें उनके मकानों से ज़ाहिर है और शैतान ने उनके कामों को उनके लिए ख़ुशनुमा कर दिखाया, और उन्हें (हक़ की) रास्त से रोक दिया, हालाँकि वे समझ रखने वाले थे।
وَقَارُوْنَ وَفِرْعَوْنَ وَهَامٰنَ وَلَقَدْ جَاۤءَهُمْ مُّوْسٰى بِالْبَيِّنٰتِ فَاسْتَكْبَرُوْا فِى الْاَرْضِ وَمَا كَانُوْا سٰبِقِيْنَ	**39**	और क़ारून और फ़िरऔन और हामान (को भी हलाक किया); और मूसा उनके पास साफ़ दलीलें लेकर आए, लेकिन उन्होंने धरती में तकब्बुर किया, और वे (हमारे अज़ाब से) बच न सके।
فَكُلًّا اَخَذْنَا بِذَنْۢبِهٖ فَمِنْهُمْ مَّنْ اَرْسَلْنَا عَلَيْهِ حَاصِبًا وَمِنْهُمْ مَّنْ اَخَذَتْهُ الصَّيْحَةُ وَمِنْهُمْ مَّنْ خَسَفْنَا بِهِ الْاَرْضَ وَمِنْهُمْ مَّنْ اَغْرَقْنَا وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيَظْلِمَهُمْ وَلٰكِنْ كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ	**40**	तो हमने हर एक को उसके गुनाह की वजह से पकड़ा, उनमें से कुछ पर हमने कंकड़ों की बारिश भेजी, कुछ को सख़्त आवाज़ ने पकड़ा, कुछ को हमने धरती में धँसा दिया, और कुछ को हमने डुबो दिया। अल्लाह उनका ज़ुल्म करने वाला नहीं था, बल्कि वे ख़ुद अपने ऊपर ज़ुल्म करते थे।

مَثَلُ الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَوْلِيَاءَ كَمَثَلِ الْعَنْكَبُوْتِ اِتَّخَذَتْ بَيْتًا وَاِنَّ اَوْهَنَ الْبُيُوْتِ لَبَيْتُ الْعَنْكَبُوْتِ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ	**41**	जो लोग अल्लाह क॓सिवा दूसरों को सरपरस्त बनात॓ हैं, उनकी मिसाल मकड़ी जैसी ह॓ जिसन॓ घर बनाया। और बेशक, सबस॓ कमज़ोर घर मकड़ी का घर ह॓, काश व॓ जानत॓।
اِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ مِنْ شَيْءٍ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ	**42**	बेशक, अल्लाह जानता ह॓ कि व॓ उसक॓ सिवा किसि॓ पुकारत॓ हों और वह बहुत ताक़तवर, बहुत हिकमत वाला ह॓।
وَتِلْكَ الْاَمْثَالُ نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ وَمَا يَعْقِلُهَآ اِلَّا الْعٰلِمُوْنَ	**43**	और य॓ मिसाल॓ हम इंसानों क॓ लिए बयान करत॓ ह॓; और उनह॓ सिर्फ़ इल्म वाल॓ ही समझत॓ हैं।
خَلَقَ اللّٰهُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّلْمُؤْمِنِيْنَ	**44**	अल्लाह न॓ आकाश और धरती को हक़ क॓ साथ बनाया। बेशक, इसम॓ ईमान वालों क॓ लिए निशानियाँ हैं।
اُتْلُ مَآ اُوْحِيَ اِلَيْكَ مِنَ الْكِتٰبِ وَاَقِمِ الصَّلٰوةَ اِنَّ الصَّلٰوةَ تَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَاۤءِ وَالْمُنْكَرِ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَا تَصْنَعُوْنَ	**45**	जो कताब (अल-क़ुरआन) तुझ पर वही की गई, उस॓ पढ़ो और नमाज़ क़ायम करो। बेशक, नमाज़ बेहयाई और बुराई स॓ रोकती ह॓ और अल्लाह का ज़िक्र (नमाज) सबस॓ बड़ा ह॓। अल्लाह जानता ह॓ जो तुम करत॓ हो।
وَلَا تُجَادِلُوْٓا اَهْلَ الْكِتٰبِ اِلَّا بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ اِلَّا الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْهُمْ وَقُوْلُوْٓا اٰمَنَّا بِالَّذِيْٓ اُنْزِلَ اِلَيْنَا وَاُنْزِلَ اِلَيْكُمْ وَاِلٰهُنَا وَاِلٰهُكُمْ وَاحِدٌ وَّنَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ	**46**	और अहल॓-कताब स॓ बहस न करो, मगर अच्छ॓ तरीक़॓ स॓, सिवाय उनक॓ जो उनम॓ ज़ालिम ह॓, और कहो, 'हम उस (कताब) पर ईमान लाए जो हम पर उतारी गई और जो तुम पर उतारी गई; हमारा और तुम्हारा ख़ुदा एक ह॓; और हम उसी क॓ ताब॓ हैं।'
وَكَذٰلِكَ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ الْكِتٰبَ فَالَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ وَمِنْ هٰٓؤُلَاۤءِ مَنْ يُّؤْمِنُ بِهٖ وَمَا يَجْحَدُ بِاٰيٰتِنَآ اِلَّا الْكٰفِرُوْنَ	**47**	और इस तरह हमन॓ तुझ पर कताब (अल-क़ुरआन) उतारी। तो जिनह॓ हमन॓ कताब (तौरात और इंजील) दी, व॓ इस पर ईमान लात॓ ह॓, और इन (काफ़िर मक्कियो) म॓स॓ भी कछ इस पर ईमान लात॓ हैं और हमारी आयतों को सिर्फ़ काफ़िर ही नकारत॓ हैं।
وَمَا كُنْتَ تَتْلُوْا مِنْ قَبْلِهٖ مِنْ كِتٰبٍ وَّلَا تَخُطُّهٗ بِيَمِيْنِكَ اِذًا لَّارْتَابَ الْمُبْطِلُوْنَ	**48**	और तू (मुहम्मद) इसस॓ पहल॓ कोई कताब नहीं पढ़ता था और न अपन॓ दाएँ हाथ स॓ कोई कताब लिखता था; अगर ऐसा होता, तो बातिल को मानन॓वाल॓ शक करत॓।
بَلْ هُوَ اٰيٰتٌۢ بَيِّنٰتٌ فِيْ صُدُوْرِ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ وَمَا يَجْحَدُ بِاٰيٰتِنَآ اِلَّا الظّٰلِمُوْنَ	**49**	बल्कि, (अल-क़ुरआन) तो साफ़ आयत॓ ह॓ उन लोगों क॓ दिलों म॓ जिनह॓ इल्म दिया गया। और हमारी आयतों को सिर्फ़ ज़ालिम ही नकारत॓ हैं।
وَقَالُوْا لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْهِ اٰيٰتٌ مِّنْ رَّبِّهٖ قُلْ اِنَّمَا الْاٰيٰتُ عِنْدَ اللّٰهِ وَاِنَّمَآ اَنَا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ	**50**	और व॓ (काफ़िर मक्की) कहत॓ ह॓, 'उसक॓ रब की तरफ़ स॓ कोई मोजिज़॓ क्यों नहीं उतार॓ गए?' कहो (मुहम्मद), 'मोजिज़॓ तो अल्लाह क॓ पास हैं म॓ तो बस एक साफ़ तंबीह करन॓वाला हूँ।'
اَوَلَمْ يَكْفِهِمْ اَنَّآ اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ يُتْلٰى عَلَيْهِمْ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَرَحْمَةً وَّذِكْرٰى لِقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ	**51**	क्या उनक॓ लिए यह काफ़ी नहीं कि हमन॓ तुझ पर कताब (अल-क़ुरआन) उतारी जो उनह॓ पढ़कर सुनाई जाती ह॓? बेशक, इसम॓ ईमान वालों क॓ लिए रहमत और नसीहत ह॓।

52	कहो (मुहम्मद), 'मेरे और तुम्हारे बीच अल्लाह गवाह के तौर पर काफ़ी है। वह जानता है जो कुछ आकाश और धरती में है। और जो लोग बातिल पर ईमान लाते हैं और अल्लाह का इंकार करते हैं, वही नुक़सान उठाने वाले हैं।'	قُلْ كَفٰى بِاللّٰهِ بَيْنِيْ وَبَيْنَكُمْ شَهِيْدًا يَعْلَمُ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِالْبَاطِلِ وَكَفَرُوْا بِاللّٰهِ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ
53	और वे तुझसे अज़ाब जल्दी लाने को कहते हैं। अगर उसका वक़्त मुक़र्रर न होता, तो अज़ाब उनके पास आ जाता, और वह ज़रूर उनके पास अचानक आएगा, जब वे ग़ाफ़िल होंगे।	وَيَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالْعَذَابِ وَلَوْلَآ اَجَلٌ مُّسَمًّى لَّجَآءَهُمُ الْعَذَابُ وَلَيَاْتِيَنَّهُمْ بَغْتَةً وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ
54	वे तुझसे अज़ाब जल्दी लाने को कहते हैं। और बेशक, जहन्नम काफ़िरों को घेरे लेगी,	يَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالْعَذَابِ وَاِنَّ جَهَنَّمَ لَمُحِيْطَةٌ بِالْكٰفِرِيْنَ
55	जिस दिन अज़ाब उन्हें ऊपर से और उनके पाँवों के नीचे से ढाँप लेगा और (अल्लाह) कहेगा, 'जो तुम करते थे, उसका मज़ा चखो!'	يَوْمَ يَغْشٰىهُمُ الْعَذَابُ مِنْ فَوْقِهِمْ وَمِنْ تَحْتِ اَرْجُلِهِمْ وَيَقُوْلُ ذُوْقُوْا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ
56	ऐ मेरे बंदो जो ईमान लाए! बेशक, मेरी धरती वसी है, तो मेरी ही इबादत करो।	يٰعِبَادِيَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنَّ اَرْضِيْ وَاسِعَةٌ فَاِيَّايَ فَاعْبُدُوْنِ
57	हर जानदार को मौत का मज़ा चखना है। फिर हमारी ही तरफ़ तुम लौटाए जाओगे।	كُلُّ نَفْسٍ ذَآئِقَةُ الْمَوْتِ ثُمَّ اِلَيْنَا تُرْجَعُوْنَ
58	और जो लोग ईमान लाए और नेक काम किए, उन्हें हम ज़रूर जन्नत में ऊँचे मक़ामों पर जगह देंगे, जिनके नीचे नहरें बहती हैं, वे उसमें हमेशा रहेंगे। यह बहुत अच्छा बदला है उन लोगों का जो नेकी करते हैं,	وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَنُبَوِّئَنَّهُمْ مِّنَ الْجَنَّةِ غُرَفًا تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا نِعْمَ اَجْرُ الْعٰمِلِيْنَ
59	जो लोग सब्र करते हैं और अपने रब पर भरोसा रखते हैं।	الَّذِيْنَ صَبَرُوْا وَعَلٰى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ
60	और कितने ही चलने-फिरने वाले जानदार हैं जो अपना रिज़्क़ (ख़ुद) नहीं उठाते। अल्लाह ही उन्हें और तुम्हें रिज़्क़ देता है। वह बहुत सुनने वाला, बहुत जानने वाला है।	وَكَاَيِّنْ مِّنْ دَآبَّةٍ لَّا تَحْمِلُ رِزْقَهَا اللّٰهُ يَرْزُقُهَا وَاِيَّاكُمْ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ
61	और अगर तू उनसे पूछे, 'किसने आकाश और धरती बनाए और सूरज और चाँद को ताबे किया?' तो वे ज़रूर कहेंगे, 'अल्लाह।' तो फिर वे (हक़ से) क्यों फेरे जाते हैं?	وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ لَيَقُوْلُنَّ اللّٰهُ فَاَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ
62	अल्लाह अपने बंदों में से जिसके लिए चाहता है, रिज़्क़ को वुसअत देता है और जिसके लिए चाहता है, तंग करता है। बेशक, अल्लाह हर चीज़ को जानने वाला है।	اَللّٰهُ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ وَيَقْدِرُ لَهٗ اِنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ
63	और अगर तू उनसे पूछे, 'किसने आकाश से पानी उतारा, फिर उससे धरती को उसकी मौत के बाद ज़िंदा किया?' तो वे ज़रूर कहेंगे, 'अल्लाह।' कहो, 'सारी तारीफ़ अल्लाह के लिए है,' लेकिन उनमें से अक़्सर समझते नहीं।	وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ نَّزَّلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَحْيَا بِهِ الْاَرْضَ مِنْ بَعْدِ مَوْتِهَا لَيَقُوْلُنَّ اللّٰهُ قُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ

وَمَا هٰذِهِ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا لَهْوٌ وَّلَعِبٌ وَاِنَّ الدَّارَ الْاٰخِرَةَ لَهِيَ الْحَيَوَانُ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ	और यह दुनिया की ज़िंदगी तो बस तमाशा और खेल है और बेशक, आख़िरत का घर ही असल ज़िंदगी है, काश वे जानते।	**64**
فَاِذَا رَكِبُوْا فِى الْفُلْكِ دَعَوُا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ فَلَمَّا نَجّٰىهُمْ اِلَى الْبَرِّ اِذَا هُمْ يُشْرِكُوْنَ	तो जब वे कश्ती में सवार होते हैं, तो अल्लाह को पूरी इख़लास के साथ पुकारते हैं, लेकिन जब वह उन्हें साहिल तक बचा लेता है, तो वे (फिर) शरिक करने लगते हैं,	**65**
لِيَكْفُرُوْا بِمَآ اٰتَيْنٰهُمْ وَلِيَتَمَتَّعُوْا فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ	ताकि वे उस नेअमत को नकारें जो हमने उन्हें दी और (दुनिया में) मज़े करें फिर उन्हें (अंजाम) मालूम हो जाएगा।	**66**
اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّا جَعَلْنَا حَرَمًا اٰمِنًا وَّيُتَخَطَّفُ النَّاسُ مِنْ حَوْلِهِمْ اَفَبِالْبَاطِلِ يُؤْمِنُوْنَ وَبِنِعْمَةِ اللّٰهِ يَكْفُرُوْنَ	क्या उन्होंने नहीं देखा कि हमने (उनके लिए) एक हरम को अमन वाला बनाया, हालाँकि उनके आसपास के लोग छीने जाते हैं फिर भी क्या वे बातिल पर ईमान लाते हैं और अल्लाह की नेअमत का इंकार करते हैं?	**67**
وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ كَذَّبَ بِالْحَقِّ لَمَّا جَاءَهٗ اَلَيْسَ فِىْ جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْكٰفِرِيْنَ	और उससे ज़्यादा ज़ालिम कौन है जो अल्लाह पर झूठ गढ़ता है या उस हक़ को झुठलाता है जो उसके पास आया? क्या जहन्नम में काफ़िरों के लिए जगह नहीं है?	**68**
وَالَّذِيْنَ جَاهَدُوْا فِيْنَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا وَاِنَّ اللّٰهَ لَمَعَ الْمُحْسِنِيْنَ	और जो लोग हमारी (ख़ुशी) के लिए जिहाद करते हैं, हम उन्हें ज़रूर अपने रास्तों की हिदायत देंगे। और बेशक, अल्लाह नेक काम करने वालों के साथ है।	**69**

छंदों की संख्या	اَلرُّوم	مكية
६०	अर-रम - 30	मक्की

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अर-रम (रोमन)

1	अलीफ़.लाम मीम।	الٓمّٓ
2	रूमी (रोमन) लोग हार गए,	غُلِبَتِ الرُّوْمُ
3	नज़दीकी मुल्क़ में, और वे अपनी हार के बाद कुछ सालों में जीत जाएँगे,	فِيْٓ اَدْنَى الْاَرْضِ وَهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ غَلَبِهِمْ سَيَغْلِبُوْنَ
4	कुछ सालों मी अल्लाह ही का है हुक़्म पहले और बाद में (उनके जीतने के)। और उस दिन (रूमियों की जीत का) ईमान वाले ख़ुश होंगे,	فِيْ بِضْعِ سِنِيْنَ ۗ لِلّٰهِ الْاَمْرُ مِنْ قَبْلُ وَمِنْۢ بَعْدُ ۗ وَيَوْمَىِٕذٍ يَّفْرَحُ الْمُؤْمِنُوْنَ
5	अल्लाह की मदद से वह जिसे चाहता है, मदद करता है वह बहुत ताक़तवर, बहुत रहम करने वाला है	بِنَصْرِ اللّٰهِ ۗ يَنْصُرُ مَنْ يَّشَاۤءُ ۗ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ
6	(यह) अल्लाह का वादा है अल्लाह अपने वादे के ख़िलाफ़ नहीं करता, लेकिन अक़्सर लोग नहीं जानते	وَعْدَ اللّٰهِ ۗ لَا يُخْلِفُ اللّٰهُ وَعْدَهٗ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ
7	वे दुनिया की ज़िंदगी का ज़ाहिरी (हिस्सा) जानते हैं, और आख़िरत के बारे में वे ग़ाफ़िल हैं	يَعْلَمُوْنَ ظَاهِرًا مِّنَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۖ وَهُمْ عَنِ الْاٰخِرَةِ هُمْ غٰفِلُوْنَ
8	और क्या उन्होंने अपने बारे में ग़ौर नहीं किया? अल्लाह ने आकाशों और धरती को और जो कुछ उनके बीच है, उसे हक़ के साथ और एक मुक़र्रर वक़्त के लिए बनाया। और बेशक, अक़्सर लोग अपने रब से मुलाक़ात को नकारते हैं	اَوَلَمْ يَتَفَكَّرُوْا فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ ۗ مَا خَلَقَ اللّٰهُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَآ اِلَّا بِالْحَقِّ وَاَجَلٍ مُّسَمًّى ۗ وَاِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ بِلِقَاۤىِٕ رَبِّهِمْ لَكٰفِرُوْنَ
9	क्या उन्होंने धरती में सैर नहीं की, फिर देखा नहीं कि उन लोगों का अंजाम कैसा हुआ जो उनसे पहले थे (जिन्होंने रसूलों को झुठलाया)? वे लोग उनसे (ख़ुद) ज़्यादा ताक़तवर थे और उन्होंने धरती को जोता और उसे उससे ज़्यादा आबाद किया जितना इन्होंने आबाद किया। और उनके पास उनके रसूल साफ़ दलीलें लेकर आए। तो अल्लाह ने उन पर ज़ुल्म नहीं किया, बल्कि उन्होंने ख़ुद अपने ऊपर ज़ुल्म किया।	اَوَلَمْ يَسِيْرُوْا فِى الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۗ كَانُوْٓا اَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً وَّاَثَارُوا الْاَرْضَ وَعَمَرُوْهَآ اَكْثَرَ مِمَّا عَمَرُوْهَا وَجَاۤءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ ۗ فَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيَظْلِمَهُمْ وَلٰكِنْ كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ

ثُمَّ كَانَ عَاقِبَةَ الَّذِيْنَ اَسَاۤءُوا السُّوْۤآٰى اَنْ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَكَانُوْا بِهَا يَسْتَهْزِءُوْنَ	फरि उन लोगों का अंजाम बहुत बुरा अज़ाब हुआ, जो बुराई करते थे। क्योंकि उनहोंने अल्लाह की आयतों को झठुलाया और उनका मज़ाक उड़ाते रहे।	**10**
اَللّٰهُ يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُه ثُمَّ اِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ	अल्लाह ही वह है जो ख़लिक़त की शुरूआत करता है, फरि उसे दोहराता है; फरि उसी की तरफ़ तुम लौटाए जाओगे।	**11**
وَيَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ يُبْلِسُ الْمُجْرِمُوْنَ	और जसि दनि क़यिामत कायम होगी, गनुहगार (मशुरकि लोग) मायूस होकर ख़ामोश रह जाएँगे।	**12**
وَلَمْ يَكُنْ لَّهُمْ مِّنْ شُرَكَاۤىِٕهِمْ شُفَعٰۤؤُا وَكَانُوْا بِشُرَكَاۤىِٕهِمْ كٰفِرِيْنَ	और उनके लिए उनके शरीकों में से कोई सफ़ारशि करने वाला न होगा, और वे अपने शरीकों को नकार दगे।	**13**
وَيَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ يَوْمَىِٕذٍ يَّتَفَرَّقُوْنَ	और जसि दनि क़यिामत कायम होगी, उस दनि वे (लोग) जुदा-जुदा हो जाएँगे।	**14**
فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَهُمْ فِيْ رَوْضَةٍ يُّحْبَرُوْنَ	तो जो लोग ईमान लाए और नके काम कए, वे जननत के बागों में ख़शुहाल होंगे।	**15**
وَاَمَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَلِقَاۤءِ الْاٰخِرَةِ فَاُولٰۤىِٕكَ فِى الْعَذَابِ مُحْضَرُوْنَ	और जो लोग कफ़ुर करे और हमारी आयतों और आख़रित की मुलाक़ात को झठुलाए, वे अज़ाब में पेश कए जाएँगे।	**16**
فَسُبْحٰنَ اللّٰهِ حِيْنَ تُمْسُوْنَ وَحِيْنَ تُصْبِحُوْنَ	तो अल्लाह की तसबीह करो जब तुम शाम को पहचुँते हो और जब तुम सुबह को उठते हो;	**17**
وَلَهُ الْحَمْدُ فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَعَشِيًّا وَّحِيْنَ تُظْهِرُوْنَ	और उसी के लिए तारीफ़ है आकाशों में और धरती में, और शाम के वक़्त और जब तुम दोपहर को पहचुँते हो।	**18**
يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَيُحْيِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا وَكَذٰلِكَ تُخْرَجُوْنَ	वह ज़िंदा को मुर्दा से निकालता है और मुर्दा को ज़िंदा से निकालता है, और वह धरती को उसकी मौत (सूखे) के बाद ज़िंदा करता है और इसी तरह तुम (भी) निकाले जाओगे।	**19**
وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ اَنْ خَلَقَكُمْ مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ اِذَآ اَنْتُمْ بَشَرٌ تَنْتَشِرُوْنَ	और उसकी निशानियों में से है कि उसने तुम्हें मिट्टी से बनाया, फरि अचानक तुम इंसान बन गए जो फैलते है।	**20**
وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ اَنْ خَلَقَ لَكُمْ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ اَزْوَاجًا لِّتَسْكُنُوْٓا اِلَيْهَا وَجَعَلَ بَيْنَكُمْ مَّوَدَّةً وَّرَحْمَةً اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ	और उसकी निशानियों में से है कि उसने तुम्हारे लिए तुम्हारी ही तरह से जोड़े बनाए, ताकि तुम उनके पास सकुन पाओ और उसने तुम्हारे बीच मोहबबत और रहम पदा कया। बेशक, इसमें उन लोगों के लिए निशानियाँ है जो गौर करते है।	**21**

وَمِنْ اٰيٰتِهٖ خَلْقُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاخْتِلَافُ اَلْسِنَتِكُمْ وَاَلْوَانِكُمْ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّلْعٰلِمِيْنَ	**22**	और उसकी निशानियों म॑ स॑ ह॑ै आकाशों और धरती की ख़लिक़त, और तमुहारी ज़बानों और तमुहारी रंगतों का इख़्तलिाफ़। बशेक, इसम॑ उन लोगों क॑ लिए निशानयिा॑ ह॑ै जो जानत॑ ह॑ै।
وَمِنْ اٰيٰتِهٖ مَنَامُكُمْ بِالَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَابْتِغَاؤُكُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّسْمَعُوْنَ	**23**	और उसकी निशानियों म॑ स॑ ह॑ै तमुहारा रात और दनि म॑ सोना और उसकी फज़्ल (रज़िक़) की तलाश म॑ तमुहारा कोशशि करना। बशेक, इसम॑ उन लोगों क॑ लिए निशानयिा॑ ह॑ै जो सनुत॑ ह॑ै।
وَمِنْ اٰيٰتِهٖ يُرِيْكُمُ الْبَرْقَ خَوْفًا وَّطَمَعًا وَّيُنَزِّلُ مِنَ السَّمَاۤءِ مَاۤءً فَيُحْيٖ بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ	**24**	और उसकी निशानियों म॑ स॑ ह॑ै कि॑ वह तमुह॑ बजिली दखिाता ह॑ै डर और उम्मीद क॑ लिए, और वह आकाश स॑ पानी उतारता ह॑, फरि उसस॑ धरती को उसकी मौत (सूख़ा) क॑ बाद ज़िंदा करता ह॑ै। बशेक, इसम॑ उन लोगों क॑ लिए निशानयिा॑ ह॑ै जो अक़्ल रखत॑ ह॑ै।
وَمِنْ اٰيٰتِهٖ اَنْ تَقُوْمَ السَّمَاۤءُ وَالْاَرْضُ بِاَمْرِهٖ ثُمَّ اِذَا دَعَاكُمْ دَعْوَةً مِّنَ الْاَرْضِ اِذَاۤ اَنْتُمْ تَخْرُجُوْنَ	**25**	और उसकी निशानियों म॑ स॑ ह॑ै कि॑ आकाश और धरती उसक॑ हुक्म स॑ कायम ह॑ै। फरि जब वह तमुह॑ धरती स॑ एक बुलावे क॑ साथ बुलाएगा, तो तमु (सब) नकिल पड़ोगे।
وَلَهٗ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ كُلٌّ لَّهٗ قٰنِتُوْنَ	**26**	और उसी का ह॑ै जो कछु आकाशों और धरती म॑ ह॑ै। सब उसी क॑ ताब॑ ह॑ै।
وَهُوَ الَّذِيْ يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ وَهُوَ اَهْوَنُ عَلَيْهِ وَلَهُ الْمَثَلُ الْاَعْلٰى فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ	**27**	और वही ह॑ै जो ख़लिक़त की शरुआत करता ह॑, फरि उस॑ दोहराता ह॑, और यह उसक॑ लिए बहतु आसान ह॑ै। और उसी क॑ लिए सबस॑ बलुंद मसिाल ह॑ै आकाशों और धरती म॑ै। और वह बहतु ताक़तवर, बहतु हकिमत वाला ह॑ै।
ضَرَبَ لَكُمْ مَّثَلًا مِّنْ اَنْفُسِكُمْ هَلْ لَّكُمْ مِّنْ مَّا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ مِّنْ شُرَكَاۤءَ فِيْ مَا رَزَقْنٰكُمْ فَاَنْتُمْ فِيْهِ سَوَاۤءٌ تَخَافُوْنَهُمْ كَخِيْفَتِكُمْ اَنْفُسَكُمْ كَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ	**28**	उसन॑ तमुह॑ारे लिए तमुहारी ही मसिाल दी। क्या तमुहार॑ ग़लुामों म॑ स॑ कोई ऐसा ह॑ै जो तमुहार॑ साथ उस रज़िक़ म॑ शरीक हो जो हमन॑ तमुह॑ दयिा, कि॑ तमु उनक॑ साथ बराबर हो जाओ, और तमु उनह॑ वैसा ही डरत॑ हो जैसा तमु अपन॑ हमजोलयिों को डरत॑ हो? इस तरह हम उन लोगों क॑ लिए आयतों को तफ़्सील स॑ बयान करत॑ ह॑ै जो अक़्ल रखत॑ ह॑ै।
بَلِ اتَّبَعَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْۤا اَهْوَاۤءَهُمْ بِغَيْرِ عِلْمٍ فَمَنْ يَّهْدِيْ مَنْ اَضَلَّ اللّٰهُ وَمَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ	**29**	बल्कि ज़ालमि लोग बनिा इल्म क॑ अपनी ख़्वाहशिों की परैवी करत॑ ह॑; तो उस शख़्स को कौन हदिायत द॑ सकता ह॑ै जसि॑ अल्लाह न॑ गमुराह कर दयिा? और उनक॑ लिए कोई मददगार नहीं।
فَاَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّيْنِ حَنِيْفًا فِطْرَتَ اللّٰهِ الَّتِيْ فَطَرَ النَّاسَ عَلَيْهَا لَا تَبْدِيْلَ لِخَلْقِ اللّٰهِ ذٰلِكَ الدِّيْنُ الْقَيِّمُ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ	**30**	तो अपन॑ चहेर॑ को मज़बूती स॑ दीन (इस्लाम) की तरफ़ करो; अल्लाह की फतिरत पर, जसि पर उसन॑ इंसानों को बनाया। अल्लाह की ख़लिक़त म॑ कोई तबदीली नहीं। यही दीन सीधा ह॑ै, लकेनि अक़्सर लोग नहीं जानत॑।

مُنِيْبِيْنَ اِلَيْهِ وَاتَّقُوْهُ وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَلَا تَكُوْنُوْا مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ	उसकी तरफ़ तौबा करके लौटते हुए और उससे डरते हुए, और नमाज़ क़ायम करो और उन लोगों में से न बनो जो शरिक़ करते हैं,	**31**
مِنَ الَّذِيْنَ فَرَّقُوْا دِيْنَهُمْ وَكَانُوْا شِيَعًا ۗ كُلُّ حِزْبٍۢ بِمَا لَدَيْهِمْ فَرِحُوْنَ	जो लोग जिन्होंने अपने दीन को टुकड़े-टुकड़े कर दिया और कई गरिह बन गए। हर गरिह उस चीज़ पर इतराता है जो उसके पास है।	**32**
وَاِذَا مَسَّ النَّاسَ ضُرٌّ دَعَوْا رَبَّهُمْ مُّنِيْبِيْنَ اِلَيْهِ ثُمَّ اِذَآ اَذَاقَهُمْ مِّنْهُ رَحْمَةً اِذَا فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ بِرَبِّهِمْ يُشْرِكُوْنَ	और जब इंसानों को कोई मुसीबत छू लेती है, तो वे अपने रब को पुकारते हैं, उसकी तरफ़ तौबा करके लौटते हुए, फिर जब वह उन्हें अपनी रहमत का मज़ा चखाता है, तो अचानक उनमें से कुछ लोग अल्लाह के साथ शरिक़ करने लगते हैं।	**33**
لِيَكْفُرُوْا بِمَآ اٰتَيْنٰهُمْ ۗ فَتَمَتَّعُوْا ۚ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ	उन्हें उस नेअमत को नकारने दे जो हमने उन्हें दी। और (दुनिया में) मज़े करो, फिर तुम्हें (अंजाम) मालूम हो जाएगा।	**34**
اَمْ اَنْزَلْنَا عَلَيْهِمْ سُلْطٰنًا فَهُوَ يَتَكَلَّمُ بِمَا كَانُوْا بِهٖ يُشْرِكُوْنَ	क्या हमने उनके पास कोई दलील उतारी जो उस (शरिक़) की ताईद करती हो जो वे (अल्लाह के साथ) करते हैं?	**35**
وَاِذَآ اَذَقْنَا النَّاسَ رَحْمَةً فَرِحُوْا بِهَا ۚ وَاِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌۢ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ اِذَا هُمْ يَقْنَطُوْنَ	और जब हम इंसानों को अपनी रहमत का मज़ा चखाते हैं, तो वे उस पर इतराते हैं, और अगर उनके किए की वजह से कोई मुसीबत उन पर आ पड़े, तो वे मायूस हो जाते हैं।	**36**
اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ ۚ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ	क्या उन्होंने नहीं देखा कि अल्लाह जिसके लिए चाहता है, रिज़्क़ को वुसअत देता है और तंग करता है? बेशक, इसमें उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो ईमान लाते हैं।	**37**
فَاٰتِ ذَا الْقُرْبٰى حَقَّهٗ وَالْمِسْكِيْنَ وَابْنَ السَّبِيْلِ ۭ ذٰلِكَ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ يُرِيْدُوْنَ وَجْهَ اللّٰهِ ۡ وَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ	तो हक़दार को उसका हक़ दे, और मोहताज और मुसाफ़िर को (भी)। यह उनके लिए बेहतर है जो अल्लाह की ख़ुशी चाहते हैं, और वही लोग कामयाब हैं।	**38**
وَمَآ اٰتَيْتُمْ مِّنْ رِّبًا لِّيَرْبُوَا۟ فِيْٓ اَمْوَالِ النَّاسِ فَلَا يَرْبُوْا عِنْدَ اللّٰهِ ۚ وَمَآ اٰتَيْتُمْ مِّنْ زَكٰوةٍ تُرِيْدُوْنَ وَجْهَ اللّٰهِ فَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْمُضْعِفُوْنَ	और जो कुछ तुम सूद (ब्याज) के तौर पर देते हो ताकि वह लोगों के माल में बढ़े, तो वह अल्लाह के नज़दीक नहीं बढ़ता। और जो कुछ तुम ज़कात के तौर पर अल्लाह की ख़ुशी चाहते हुए देते हो, तो वही लोग हैं जो (अपने माल को) दोगुना करते हैं।	**39**
اَللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ ثُمَّ رَزَقَكُمْ ثُمَّ يُمِيْتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيْكُمْ ۭ هَلْ مِنْ شُرَكَاۗىِٕكُمْ مَّنْ يَّفْعَلُ مِنْ ذٰلِكُمْ مِّنْ شَيْءٍ ۭ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ	अल्लाह ही वह है जिसने तुम्हें बनाया, फिर तुम्हें रिज़्क़ दिया, फिर वह तुम्हें मारेगा, फिर वह तुम्हें ज़िंदा करेगा। क्या तुम्हारे उन शरीकों में से कोई है जो इनमें से कुछ करता हो? वह पाक है और बहुत बुलंद है उससे जो वे शरीक करते हैं।	**40**
ظَهَرَ الْفَسَادُ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ بِمَا كَسَبَتْ اَيْدِي النَّاسِ لِيُذِيْقَهُمْ بَعْضَ الَّذِيْ عَمِلُوْا لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ	धरती और समुद्र में ख़राबी ज़ाहिर हो गई इंसानों के किए की वजह से, ताकि वह उन्हें उनके कुछ करतूतों का मज़ा चखाए, शायद कि वे (हक़ की तरफ) लौट आएँ।	**41**

قُلْ سِيْرُوْا فِى الْاَرْضِ فَانْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلُ كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّشْرِكِيْنَ	**42**	कहो (मुहम्मद), 'धरती में सैर करो, फिर देखो कि उन लोगों का अंजाम कैसा हुआ जो पहले थे। उनमें से अक़्सर मुश्रिक थे।'
فَاَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّيْنِ الْقَيِّمِ مِنْ قَبْلِ اَنْ يَّأْتِيَ يَوْمٌ لَّا مَرَدَّ لَه مِنَ اللّٰهِ يَوْمَئِذٍ يَّصَّدَّعُوْنَ	**43**	इसलिए अपने चेहरे को सीधे दीन (इस्लाम) की तरफ़ करो इससे पहले कि अल्लाह की तरफ़ से वह दिन आए जिसे टाला नहीं जा सकता। उस दिन वे (लोग) जुदा-जुदा हो जाएँगे।
مَنْ كَفَرَ فَعَلَيْهِ كُفْرُه وَمَنْ عَمِلَ صَالِحًا فَلِاَنْفُسِهِمْ يَمْهَدُوْنَ	**44**	जो कोई कुफ़्र करे, तो उसका कुफ़्र उसी पर (पड़ेगा); और जो कोई नेक काम करे, तो वे अपने लिए (ख़ुशहाल जगह) तैयार करते हैं,
لِيَجْزِيَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ مِنْ فَضْلِه اِنَّه لَا يُحِبُّ الْكٰفِرِيْنَ	**45**	ताकि अल्लाह उन लोगों को अपनी फ़ज़्ल से बदला दे जो ईमान लाए और नेक काम किए। बेशक, वह काफ़िरों को पसंद नहीं करता।
وَمِنْ اٰيٰتِه اَنْ يُّرْسِلَ الرِّيٰحَ مُبَشِّرٰتٍ وَّلِيُذِيْقَكُمْ مِّنْ رَّحْمَتِه وَلِتَجْرِيَ الْفُلْكُ بِاَمْرِه وَلِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِه وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ	**46**	और उसकी निशानियों में से है कि वह हवाएँ भेजता है ख़ुशख़बरी देने वाली, और ताकि वह तुम्हें अपनी रहमत का मज़ा चखाए, और ताकि जहाज़ उसके हुक्म से चलें, और ताकि तुम उसकी फ़ज़्ल की तलाश करो, और ताकि तुम शुक्र करो।
وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ رُسُلًا اِلٰى قَوْمِهِمْ فَجَاءُوْهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَانْتَقَمْنَا مِنَ الَّذِيْنَ اَجْرَمُوْا وَكَانَ حَقًّا عَلَيْنَا نَصْرُ الْمُؤْمِنِيْنَ	**47**	और बेशक, हमने तुझसे पहले कई रसूल अपनी क़ौमों की तरफ़ भेजे, वे उनके पास साफ़ दलीलें लेकर आए, फिर हमने गुनहगारों से बदला लिया। और हमारा हक़ था कि हम ईमान वालों की मदद करें।
اَللّٰهُ الَّذِيْ يُرْسِلُ الرِّيٰحَ فَتُثِيْرُ سَحَابًا فَيَبْسُطُه فِى السَّمَاءِ كَيْفَ يَشَاءُ وَيَجْعَلُه كِسَفًا فَتَرَى الْوَدْقَ يَخْرُجُ مِنْ خِلٰلِه فَاِذَآ اَصَابَ بِه مَنْ يَّشَاءُ مِنْ عِبَادِه اِذَا هُمْ يَسْتَبْشِرُوْنَ	**48**	अल्लाह ही वह है जो हवाएँ भेजता है, फिर वे बादल को हिलाती हैं और अल्लाह उसे आकाश में जैसा चाहता है फैलाता है, और उसे टुकड़े-टुकड़े करता है, फिर तू बारिश को उसके दरमियान से निकलते देखता है, फिर जब वह उसे अपने बंदों पर बरसाता है जो वह चाहता है, तो वे ख़ुश हो जाते हैं।
وَاِنْ كَانُوْا مِنْ قَبْلِ اَنْ يُّنَزَّلَ عَلَيْهِمْ مِّنْ قَبْلِه لَمُبْلِسِيْنَ	**49**	हालाँकि इससे पहले कि उन पर बारिश बरसाई जाए, वे पूरी तरह मायूस थे।
فَانْظُرْ اِلٰٓى اٰثٰرِ رَحْمَتِ اللّٰهِ كَيْفَ يُحْيِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا اِنَّ ذٰلِكَ لَمُحْيِ الْمَوْتٰى وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ	**50**	तो अल्लाह की रहमत के निशानों को देखो, कि वह धरती को उसकी मौत (सूखे) के बाद कैसे ज़िंदा करता है। बेशक, यही (ज़ात) मुर्दों को ज़िंदा करने वाली है और वह हर चीज़ पर क़ादिर है।
وَلَئِنْ اَرْسَلْنَا رِيْحًا فَرَاَوْهُ مُصْفَرًّا لَّظَلُّوْا مِنْ بَعْدِه يَكْفُرُوْنَ	**51**	और अगर हम कोई हवा भेजें, फिर वे (खेतों को) पीला (सूखा) देखें, तो इसके बाद भी वे कुफ़्र करते रहते हैं।
فَاِنَّكَ لَا تُسْمِعُ الْمَوْتٰى وَلَا تُسْمِعُ الصُّمَّ الدُّعَاءَ اِذَا وَلَّوْا مُدْبِرِيْنَ	**52**	तो बेशक, तू मुर्दों को नहीं सुना सकता, और न बहरों को बुलावा सुना सकता है, जब वे पीठ फेरे लेते हैं।

وَمَآ اَنْتَ بِهٰدِ الْعُمْيِ عَنْ ضَلٰلَتِهِمْ اِنْ تُسْمِعُ اِلَّا مَنْ يُّؤْمِنُ بِاٰيٰتِنَا فَهُمْ مُّسْلِمُوْنَ	और तू अंधों (दिल की) को उनकी गुमराही से हिदायत नहीं दे सकता। तू सिर्फ़ उन लोगों को सुनवा सकता है जो हमारी आयतों पर ईमान लाते हैं, तो वे ही तसलीम होने वाले हैं।	**53**
اَللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ مِّنْ ضَعْفٍ ثُمَّ جَعَلَ مِنْ بَعْدِ ضَعْفٍ قُوَّةً ثُمَّ جَعَلَ مِنْ بَعْدِ قُوَّةٍ ضَعْفًا وَّشَيْبَةً يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ وَهُوَ الْعَلِيْمُ الْقَدِيْرُ	अल्लाह ही वह है जिसने तुम्हें कमज़ोरी की हालत से बनाया, फिर उसने कमज़ोरी के बाद ताक़त दी, फिर ताक़त के बाद कमज़ोरी और बुढ़ापा बनाया। वह जो चाहता है बनाता है, और वह बहुत जानने वाला, बहुत क़ादिर है।	**54**
وَيَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ يُقْسِمُ الْمُجْرِمُوْنَ مَا لَبِثُوْا غَيْرَ سَاعَةٍ كَذٰلِكَ كَانُوْا يُؤْفَكُوْنَ	और जिस दिन क़ियामत क़ायम होगी, गुनहगार क़सम खाएँगे कि वे (क़ब्र में) बस एक पल ही रहे। इस तरह वे (हक़ से) फिरे गए थे।	**55**
وَقَالَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ وَالْاِيْمَانَ لَقَدْ لَبِثْتُمْ فِيْ كِتٰبِ اللّٰهِ اِلٰى يَوْمِ الْبَعْثِ فَهٰذَا يَوْمُ الْبَعْثِ وَلٰكِنَّكُمْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ	और जिन्हें इल्म और ईमान दिया गया, वे (काफ़िरों से) कहेंगे, 'बेशक, तुम अल्लाह के हुक्म के मुताबिक़ क़ियामत के दिन तक (क़ब्र में) रहे। तो यह क़ियामत का दिन है, लेकिन तुम (पहले) यक़ीन नहीं करते थे।'	**56**
فَيَوْمَئِذٍ لَّا يَنْفَعُ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مَعْذِرَتُهُمْ وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُوْنَ	तो उस दिन ज़ालिमों की माफ़ी माँगना उनके लिए फ़ायदेमंद नहीं होगा, और न उन्हें तौबा करने का मौक़ा दिया जाएगा।	**57**
وَلَقَدْ ضَرَبْنَا لِلنَّاسِ فِيْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ وَلَئِنْ جِئْتَهُمْ بِاٰيَةٍ لَّيَقُوْلَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا مُبْطِلُوْنَ	और बेशक, हमने इस अल-क़ुरआन में इंसानों के लिए हर तरह की मिसाल बयान की। और अगर तू उनके पास कोई आयत लाए, तो काफ़िर ज़रूर कहेंगे, 'तुम तो बस झूठ गढ़ने वाले हो।'	**58**
كَذٰلِكَ يَطْبَعُ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِ الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ	इस तरह अल्लाह उन लोगों के दिलों पर मुहर लगा देता है जो (समझना) नहीं चाहते।	**59**
فَاصْبِرْ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّلَا يَسْتَخِفَّنَّكَ الَّذِيْنَ لَا يُوْقِنُوْنَ	तो (मुहम्मद) सब्र करो, बेशक, अल्लाह का वादा सच्चा है और जो लोग (हमारी आयतों की) हक़ीक़त पर यक़ीन नहीं करते, वे तुझे बेक़रार न करें।	**60**

छंदों की संख्या	لُقْمَان	مكية
३४	लुक़मान - 31	मक्की

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

लुक़मान (लुक़मान)

1	अलीफ़.लाम मीम।	الٓمّٓ
2	य`अल-क़ुरआन की आयत`हैं`जो हिकमत स`भरी हैं,	تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْحَكِيْمِ
3	नेक काम करन`वालों`क`लिए हिदायत और रहमत क`तौर पर,	هُدًى وَّرَحْمَةً لِّلْمُحْسِنِيْنَ
4	(यानी) व`लोग जो नमाज़ क़ायम करत`हैं, ज़कात दते`हैं`और व` आख़िरत पर यक़ीन रखत`हैं।	الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ يُوْقِنُوْنَ
5	वही लोग ह`जो अपन`रब की हिदायत पर क़ायम रहत`हैं`और वही लोग कामयाब हैं।	اُولٰٓئِكَ عَلٰى هُدًى مِّنْ رَّبِّهِمْ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ
6	और इंसानों म`स`कछ लोग ऐस`हैं`जो बकार की बातों को ख़रीदत`हैं`ताकि अल्लाह क`रास्त`स`बिना इल्म क`भटकाएँ और उस`मज़ाक बनाएँ। उनक`लिए ज़लिल्त वाला अज़ाब हैं।	وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّشْتَرِيْ لَهْوَ الْحَدِيْثِ لِيُضِلَّ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّيَتَّخِذَهَا هُزُوًا اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ
7	और जब हमारी आयत`उनक`सामन`पढ़ी जाती ह`तो वह घमंड म`मुँह फरे लेता ह`जसै`कि उसन`उन्ह`सन्ना ही नहीं, जसै`कि उसक`दोनों कानों म`रुकावट हो। तो उस`दरदनाक अज़ाब की ख़ुशख़बरी दो।	وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِ اٰيٰتُنَا وَلّٰى مُسْتَكْبِرًا كَاَنْ لَّمْ يَسْمَعْهَا كَاَنَّ فِيْٓ اُذُنَيْهِ وَقْرًا فَبَشِّرْهُ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ
8	बशेक, जो लोग ईमान लाए और नेक काम कए, उनक`लिए नअमतों स`भर`जन्नत क`बाग़ ह`,	اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ جَنّٰتُ النَّعِيْمِ
9	जनिम`वे`हमशेा रहगे`, यह अल्लाह का सच्चा वादा हैं और वह बहतु ताक़तवर, बहतु हकिमत वाला हैं।	خٰلِدِيْنَ فِيْهَا وَعْدَ اللّٰهِ حَقًّا وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ
10	उसन`आकाशों को बनाया बनि कसिी खंभ`क`, जसै`कि तमु दखेत`हो, और उसन`धरती पर पहाड़ रख`ताकि वह तमु`ह`न हलिाए; और उसन`धरती म`हर तरह क`चलन-फरिन`वाल`जीव फलैाए। और हमन`आकाश स`बारशि उतारी, फरि उससे`हर तरह की अच्छी वनसपतियाँ उगाई।	خَلَقَ السَّمٰوٰتِ بِغَيْرِ عَمَدٍ تَرَوْنَهَا وَاَلْقٰى فِي الْاَرْضِ رَوَاسِيَ اَنْ تَمِيْدَ بِكُمْ وَبَثَّ فِيْهَا مِنْ كُلِّ دَابَّةٍ وَاَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَاَنْۢبَتْنَا فِيْهَا مِنْ كُلِّ زَوْجٍ كَرِيْمٍ

هٰذَا خَلْقُ اللّٰهِ فَاَرُوْنِيْ مَاذَا خَلَقَ الَّذِيْنَ مِنْ دُوْنِهٖ بَلِ الظّٰلِمُوْنَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ	यह अल़्लाह की ख़लिक़त ह,ै तो मुझ्े दिखाओ कि अल़्लाह क्े सविा (तमुह्ार्े माबद्ूो) न्े क्या बनाया? बल्कि ज़ालमि लोग साफ़् गमुराही म्ेहं ै।	11
وَلَقَدْ اٰتَيْنَا لُقْمٰنَ الْحِكْمَةَ اَنِ اشْكُرْ لِلّٰهِ وَمَنْ يَّشْكُرْ فَاِنَّمَا يَشْكُرُ لِنَفْسِهٖ وَمَنْ كَفَرَ فَاِنَّ اللّٰهَ غَنِيٌّ حَمِيْدٌ	और बशेक, हमन्े लक़ुमान को हकिमत दी, कि 'अल़्लाह का शक़ुर कर! और जो कोई अल़्लाह का शक़ुर करता ह,ै वह अपन्े लएि शक़ुर करता ह;ै और जो कफ़ुर करता ह,ै तो बशेक, अल़्लाह बनेयिाज, बहत्ु तारीफ़् वाला ह।ै'	12
وَاِذْ قَالَ لُقْمٰنُ لِابْنِهٖ وَهُوَ يَعِظُهٗ يٰبُنَيَّ لَا تُشْرِكْ بِاللّٰهِ اِنَّ الشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِيْمٌ	और (याद करो) जब लक़ुमान न्े अपन्े बटे ्से कहा, जब वह उस्े नसीहत द्े रहा था, 'ऐ मरे ्े बटे!ा अल़्लाह क्े साथ शरि़्क न कर, बशेक, शरि़्क बहत्ु बड़ा जल़ुम ह।ै'	13
وَوَصَّيْنَا الْاِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ حَمَلَتْهُ اُمُّهٗ وَهْنًا عَلٰى وَهْنٍ وَّفِصَالُهٗ فِيْ عَامَيْنِ اَنِ اشْكُرْ لِيْ وَلِوَالِدَيْكَ اِلَيَّ الْمَصِيْرُ	और हमन्े इंसान को हक़ुम दयिा कि वह अपन्े मा-ँबाप क्े साथ नकेी कर।ो उसकी मा ँन्े उस्े कमज़ोरी पर कमज़ोरी क्े साथ (गरभ म)ंे उठाया, और उसका दूध छड़ुाना दो साल म्ेहआु। मरे ्े और अपन्े मा-ँबाप का शक़ुर कर। मरी ही तरफ़् तरे ा लौटना ह।ै	14
وَاِنْ جَاهَدٰكَ عَلٰٓى اَنْ تُشْرِكَ بِيْ مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ فَلَا تُطِعْهُمَا وَصَاحِبْهُمَا فِي الدُّنْيَا مَعْرُوْفًا وَّاتَّبِعْ سَبِيْلَ مَنْ اَنَابَ اِلَيَّ ثُمَّ اِلَيَّ مَرْجِعُكُمْ فَاُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ	और अगर व्े दोनों तझु्े मजबूर कर्े कि तू मरे ्े साथ उस चीज़् को शरीक कर्े जसिक्े बार्े म्ेतझु्े कोई इलम् नहीं, तो उनकी बात न मान, लकेनि दनुयिा म्ेउनक्े साथ अचछा सलुक़ कर, और उस रास्त् पर चल जो मरी तरफ़् लौटता ह।ै फरि मरी ही तरफ़् तमुह्ारा लौटना ह,ै तो म्ैतमुह्ंे बता दूगँ ा कि तमुन्े क्या कयिा।	15
يٰبُنَيَّ اِنَّهَآ اِنْ تَكُ مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِّنْ خَرْدَلٍ فَتَكُنْ فِيْ صَخْرَةٍ اَوْ فِي السَّمٰوٰتِ اَوْ فِي الْاَرْضِ يَاْتِ بِهَا اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ لَطِيْفٌ خَبِيْرٌ	(लक़ुमान न्े कहा), 'ऐ मरे ्े बटे!ा अगर कोई (काम) राई क्े दान्े क्े बराबर हो, और वह कसिी चट्टान म्ेया आकाश म्ेया धरती म्ेहो, तो अल़्लाह उस्े (बालसन दगे ा)। बशेक, अल़्लाह बहत्ु बारीकबीन, बहत्ु ख़बर रखन्े वाला ह।ै	16
يٰبُنَيَّ اَقِمِ الصَّلٰوةَ وَأْمُرْ بِالْمَعْرُوْفِ وَانْهَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَاصْبِرْ عَلٰى مَآ اَصَابَكَ اِنَّ ذٰلِكَ مِنْ عَزْمِ الْاُمُوْرِ	ऐ मरे ्े बटे!ा नमाज़् कायम कर, नकेि काम करन्े की ताकीद कर और बरु ेकामों स्े रोक, और जो कछु तझु् पर आ पड़् उस पर सबर् कर। बशेक, य ेज़रू री कामों म्ेस ेह।ैं	17
وَلَا تُصَعِّرْ خَدَّكَ لِلنَّاسِ وَلَا تَمْشِ فِي الْاَرْضِ مَرَحًا اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُوْرٍ	और इंसानों स्े महुँ न फरे (घमडं म)ंे और धरती पर अकड़कर न चल। बशेक, अल़्लाह को न घमडी पसंद ह ैऔर न अपनी तारीफ़् करन्े वाला।	18
وَاقْصِدْ فِيْ مَشْيِكَ وَاغْضُضْ مِنْ صَوْتِكَ اِنَّ اَنْكَرَ الْاَصْوَاتِ لَصَوْتُ الْحَمِيْرِ	और अपनी चाल म्ेसंतलुन रख और अपनी आवाज़् को नरम कर। बशेक, सबस्े बरु ी आवाज़् गध्े की आवाज़् ह।ै	19
اَلَمْ تَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ سَخَّرَ لَكُمْ مَّا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ وَاَسْبَغَ عَلَيْكُمْ نِعَمَهٗ ظَاهِرَةً وَّبَاطِنَةً وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُّجَادِلُ فِي اللّٰهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّلَا هُدًى وَّلَا كِتٰبٍ مُّنِيْرٍ	क्या तमुन्े नहीं दखे ा कि अल़्लाह न्े तमुह्ारे लएि वह सब कछु जो आकाशों और धरती म्ेह,ै को मसु्ख़र्ख़र कर दयिा और तमु् पर अपनी नअेमत ेपूरी कर दी, ज़ाहरि और बातनि। लकेनि इंसानों म्ेकछु ऐस ेह ैजो अल़्लाह क्े बार्े म्ेबनिा इलम्, बनिा हदिायत और बनिा रौशनी दने ेवाली कतिाब क्े झगड़त् े ह।ैं	20

21	और जब उनस॓ कहा जाता ह,ै 'उसकी परैवी करो जो अल्लाह न॓ उतारा!' तो व॓ कहत॓ ह,ैं '(नहीं), बल्कि हम तो उसी रास्त॓ पर चलेंगे॓ जो हम॓ अपन॓ बाप-दादा स॓ मलिा।' क्या (व॓ ऐसा करेंगे॓) भल॓ ही शतैान उनह॓ सुलगती आग (जहन्नम) की तरफ़ बुला रहा हो?	وَاِذَا قِيْلَ لَهُمُ اتَّبِعُوْا مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ قَالُوْا بَلْ نَتَّبِعُ مَا وَجَدْنَا عَلَيْهِ اٰبَاۤءَنَا اَوَلَوْ كَانَ الشَّيْطٰنُ يَدْعُوْهُمْ اِلٰى عَذَابِ السَّعِيْرِ
22	और जो कोई अल्लाह क॓ सामन॓ तस्लीम हो जाए, और वह नकेकाम करन॓ वाला हो, तो उसन॓ मज़बूत रस्सी पकड़ ली। और सार॓ मआमलो॓ का अंजाम अल्लाह की तरफ़ ह॓ै	وَمَنْ يُّسْلِمْ وَجْهَهٗۤ اِلَى اللّٰهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ فَقَدِ اسْتَمْسَكَ بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقٰى وَاِلَى اللّٰهِ عَاقِبَةُ الْاُمُوْرِ
23	और जो कोई कफ़ुर कर॓, तो उसका कफ़ुर तुझ॓ उदास न कर॓ (मुहम्मद)। उनकी वापसी हमारी तरफ़ ह,ै फ़रि हम उनह॓ बता दगे॓ कि उनहो॓न॓ क्या कयिा। बशेक, अल्लाह दलिो॓ की बातो॓ को ख़ूब जानता ह॓ै	وَمَنْ كَفَرَ فَلَا يَحْزُنْكَ كُفْرُهٗ اِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ فَنُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوْا اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ
24	हम उनह॓ थोड़ा मज़ा लने॓ दते॓ ह,ैं फ़रि उनह॓ सख़्त अज़ाब की तरफ़ मजबूर करेंगे॓।	نُمَتِّعُهُمْ قَلِيْلًا ثُمَّ نَضْطَرُّهُمْ اِلٰى عَذَابٍ غَلِيْظٍ
25	और अगर तू (मुहम्मद) उनस॓ पूछ॓, 'कसिन॓ आकाशो॓ और धरती को बनाया?' तो व॓ ज़रूर कहेंगे॓, 'अल्लाह।' कहो, 'सब तारीफ़ अल्लाह क॓ लएि ह,ै लकेनि उनम॓ स॓ अक्सर नहीं जानत॓े।	وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ لَيَقُوْلُنَّ اللّٰهُ قُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ
26	अल्लाह ही का ह॓ै जो कुछ आकाशो॓ और धरती म॓ ह॓ै। बशेक, अल्लाह बनेयिाज, बहुत तारीफ़ वाला ह॓ै	لِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ
27	और अगर धरती क॓ सार॓ पड़े कलम बन जाएँ और समुद्र (स्याही बन जाए), और उसक॓ बाद सात और समुद्र (उसम॓) मलि दएि जाएँ, तो भी अल्लाह क॓ कलमात ख़त्म नहीं होंगे। बशेक, अल्लाह बहुत ताक़तवर, बहुत हकिमत वाला ह॓ै	وَلَوْ اَنَّ مَا فِى الْاَرْضِ مِنْ شَجَرَةٍ اَقْلَامٌ وَّالْبَحْرُ يَمُدُّهٗ مِنْۢ بَعْدِهٖ سَبْعَةُ اَبْحُرٍ مَّا نَفِدَتْ كَلِمٰتُ اللّٰهِ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ
28	तुम सब का बनाना और फ़रि उठाना (अल्लाह क॓ लएि) बस एक जान क॓ बनान॓ और उठान॓ जसैा ह॓ै। बशेक, अल्लाह सब कुछ सुनन॓ वाला, सब कुछ दखेन॓ वाला ह॓ै	مَا خَلْقُكُمْ وَلَا بَعْثُكُمْ اِلَّا كَنَفْسٍ وَّاحِدَةٍ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌۢ بَصِيْرٌ
29	क्या तून॓ नहीं दखेा कि अल्लाह रात को दनि म॓ दाख़लि करता ह॓ै और दनि को रात म॓ दाख़लि करता ह,ै और उसन॓ सूरज और चाँद को मुसख़्ख़र कयिा, हर एक अपनी मुक़र्रर मयिाद तक चलता ह॓ै। बशेक, अल्लाह उसकी ख़बर रखता ह॓ै जो तुम करत॓े हो।	اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ يُوْلِجُ الَّيْلَ فِى النَّهَارِ وَيُوْلِجُ النَّهَارَ فِى الَّيْلِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ كُلٌّ يَّجْرِيْۤ اِلٰۤى اَجَلٍ مُّسَمًّى وَّاَنَّ اللّٰهَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ
30	ऐसा इसलएि कि बशेक, अल्लाह ही हक़ ह॓ै और जो कुछ व॓ उसक॓ सवि पुकारत॓ ह,ैं वह बातलि ह॓ै और बशेक, अल्लाह ही बहुत बुलंद, बहुत बड़ा ह॓ै	ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْحَقُّ وَاَنَّ مَا يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهِ الْبَاطِلُ وَاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيْرُ

اَلَمْ تَرَ اَنَّ الْفُلْكَ تَجْرِيْ فِى الْبَحْرِ بِنِعْمَتِ اللّٰهِ لِيُرِيَكُمْ مِّنْ اٰيٰتِه اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُوْرٍ	**31**	क्या तूने नहीं देखा कि बेशक, जहाज़ समुद्र में अल्लाह की नेअमत से चलते हैं, ताकि वह तुम्हें अपनी निशानियाँ दिखाए। बेशक, इसमें हर उस शख़्स के लिए निशानियाँ हैं जो बहुत सब्र करने वाला और बहुत शुक्र करने वाला हो।
وَاِذَا غَشِيَهُمْ مَّوْجٌ كَالظُّلَلِ دَعَوُا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ فَلَمَّا نَجّٰىهُمْ اِلَى الْبَرِّ فَمِنْهُمْ مُّقْتَصِدٌ وَمَا يَجْحَدُ بِاٰيٰتِنَآ اِلَّا كُلُّ خَتَّارٍ كَفُوْرٍ	**32**	और जब उन्हें बड़ी-बड़ी लहरें, जैसे पहाड, ढक लेती हैं, तो वे अल्लाह को इख़्लास के साथ पुकारते हैं लेकिन जब अल्लाह उन्हें बचा कर किनारे पर ले आता है, तो उनमें से कुछ सीधे रास्ते पर चलते हैं और हमारी आयतों को वही नकारता है जो ख़ियानत करने वाला और नाशुक्रा हो।
يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمْ وَاخْشَوْا يَوْمًا لَّا يَجْزِيْ وَالِدٌ عَنْ وَّلَدِه وَلَا مَوْلُوْدٌ هُوَ جَازٍ عَنْ وَّالِدِه شَيْـًٔا اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ فَلَا تَغُرَّنَّكُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا وَلَا يَغُرَّنَّكُمْ بِاللّٰهِ الْغَرُوْرُ	**33**	ऐ इंसानो! अपने रब से डरो और उस दिन से डरो जब न कोई बाप अपने बेटे के लिए कुछ कर सकेगा, और न कोई बेटा अपने बाप के लिए कुछ कर सकेगा। बेशक, अल्लाह का वादा सच्चा है, तो दुनिया की ज़िंदगी तुम्हें धोखा न दे, और न धोखेबाज़ तुम्हें अल्लाह के (ता'अत करने में) धोखा दे।
اِنَّ اللّٰهَ عِنْدَه عِلْمُ السَّاعَةِ وَيُنَزِّلُ الْغَيْثَ وَيَعْلَمُ مَا فِى الْاَرْحَامِ وَمَا تَدْرِيْ نَفْسٌ مَّاذَا تَكْسِبُ غَدًا وَمَا تَدْرِيْ نَفْسٌ بِاَيِّ اَرْضٍ تَمُوْتُ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ خَبِيْرٌ	**34**	बेशक, क़ियामत का इल्म सिर्फ़ अल्लाह के पास है; और वही बारिश उतारता है, और वह जानता है जो कुछ रहम में है। और कोई शख़्स नहीं जानता कि वह कल क्या करेगा। और कोई शख़्स नहीं जानता कि वह किस ज़मीन पर मरेगा। बेशक, अल्लाह बहुत जानने वाला, बहुत ख़बर रखने वाला है।

छंदों की संख़्या	اَلسَّجْدَة	مكية
30	क॰रेप्र॰ म॰-Sajdah - 32	मक्की

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

क॰रेप्र॰ म॰-Sajdah (सजदा)

1	अलीफ़.लाम मीम।	الٓمّٓ
2	अल-क़ुरआन का उतरना, इसम॰कोई शक नहीं, वह सार॰जहानों क॰रेब की तरफ़.स॰है।	تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ لَا رَيْبَ فِيْهِ مِنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ
3	लकेनि व॰(काफ़िर) कहत॰ह, 'उसन॰(मुहम्मद) इस॰गढ़.लयि।' नहीं, यह हक़.ह जो तरे॰रेब की तरफ़.स॰आया, ताकि तू उस कौम को आगाह कर॰जसिक॰पास तुझस॰पहल॰कोई आगाह करन॰वाला नहीं आया, ताकि व॰हेदायत पाएँ।	اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ۚ بَلْ هُوَ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ لِتُنْذِرَ قَوْمًا مَّآ اَتٰىهُمْ مِّنْ نَّذِيْرٍ مِّنْ قَبْلِكَ لَعَلَّهُمْ يَهْتَدُوْنَ
4	अल्लाह वह ह॰जसिन॰आकाशों और धरती को और जो कछु उनक॰बीच ह, उस॰छह दनिों म॰बनाया, फरि वह अरश पर वराजमान हुआ। तुमहार॰लएि उसक॰सवि न कोई सरपरसत ह और न कोई सफ़ारशि करन॰वाला। तो क़या तुम ग़ौर नहीं करत?	اَللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ ۗ مَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا شَفِيْعٍ ۗ اَفَلَا تَتَذَكَّرُوْنَ
5	वह आकाश स॰धरती तक हर मआमल॰को तदबीर करता ह, फरि वह (मआमला) उसक॰पास एक दनि म॰चढ़ता ह, जसिकी मयिाद तुमहारी गनिती क॰मुताबकि हज़ार साल ह।	يُدَبِّرُ الْاَمْرَ مِنَ السَّمَآءِ اِلَى الْاَرْضِ ثُمَّ يَعْرُجُ اِلَيْهِ فِيْ يَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهٗٓ اَلْفَ سَنَةٍ مِّمَّا تَعُدُّوْنَ
6	वही ह॰जो ग़ैब और ज़ाहरि को जानता ह, वह बहुत ताक़तवर, बहुत रहम करन॰वाला ह।	ذٰلِكَ عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ
7	उसन॰हर चीज़.को, जो उसन॰बनाई, ख़ूबसूरत बनाया और उसन॰इंसान की ख़लिक़त की शुरुआत मटि्टी स॰की,	الَّذِيْٓ اَحْسَنَ كُلَّ شَيْءٍ خَلَقَهٗ وَبَدَاَ خَلْقَ الْاِنْسَانِ مِنْ طِيْنٍ
8	फरि उसन॰उसकी नसल को एक तुच्छ पानी (मनी) क॰सत स॰बनाया।	ثُمَّ جَعَلَ نَسْلَهٗ مِنْ سُلٰلَةٍ مِّنْ مَّآءٍ مَّهِيْنٍ
9	फरि उसन॰उस॰मुकम्मल कयि और उसम॰अपनी रूह फूँकी, और तुमहार॰लएि सुनन॰(क॰कान), देखन॰(की आँख) और दलि बनाए, (लकेनि) तुम बहुत कम शुक्र करत॰हो।	ثُمَّ سَوّٰىهُ وَنَفَخَ فِيْهِ مِنْ رُّوْحِهٖ ۗ وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَالْاَفْـِٕدَةَ ۗ قَلِيْلًا مَّا تَشْكُرُوْنَ
10	और व॰कहत॰ह, 'क़या जब हम धरती म॰गुम (मलि) जाएँगे, तो क़या हम नई ख़लिक़त म॰होंग?' बलकि व॰अपन॰रब स॰मुलाक़ात को नकारत॰ह।	وَقَالُوْٓا ءَاِذَا ضَلَلْنَا فِى الْاَرْضِ ءَاِنَّا لَفِيْ خَلْقٍ جَدِيْدٍ ۗ بَلْ هُمْ بِلِقَآءِ رَبِّهِمْ كٰفِرُوْنَ

11	कहो, 'मौत का फ़रिश्ता, जो तुम पर मुक़र्रर किया गया है, तुम्हारी रूह कब्ज़ करेगा, फिर तुम अपने रब की तरफ़ लौटाए जाओगे।'	قُلْ يَتَوَفّٰىكُمْ مَّلَكُ الْمَوْتِ الَّذِيْ وُكِّلَ بِكُمْ ثُمَّ اِلٰى رَبِّكُمْ تُرْجَعُوْنَ
12	और (कितना भयानक होगा), अगर तुम उन गुनहगारों को देखो जो अपने रब के सामने सिर झुकाए होंगे, (वे कहेंगे), 'ऐ हमारे रब! हमने देख लिया और सुन लिया, तो हमें (दुनिया में) वापस कर दे, ताकि हम नेक काम करें बेशक, हम यक़ीन करने वाले हैं।'	وَلَوْ تَرٰٓى اِذِ الْمُجْرِمُوْنَ نَاكِسُوْا رُءُوْسِهِمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ رَبَّنَآ اَبْصَرْنَا وَسَمِعْنَا فَارْجِعْنَا نَعْمَلْ صَالِحًا اِنَّا مُوْقِنُوْنَ
13	और अगर हम चाहते, तो हर शख़्स को उसकी हिदायत दे देते, लेकिन मुझसे यह बात तय हो चुकी है, 'मैं जहन्नम को जिन्न और इंसानों से, सबको मिलाकर, ज़रूर भरूँगा।'	وَلَوْ شِئْنَا لَاٰتَيْنَا كُلَّ نَفْسٍ هُدٰىهَا وَلٰكِنْ حَقَّ الْقَوْلُ مِنِّيْ لَاَمْلَـَٔنَّ جَهَنَّمَ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ
14	तो (इस अज़ाब को) चखो, क्योंकि तुमने अपने इस दिन (क़ियामत) की मुलाक़ात को भुला दिया था। बेशक, हमने भी तुमको भुला दिया और उस अज़ाब को चखो जो हमेशा रहेगा, उसकी वजह से जो तुमने किया।	فَذُوْقُوْا بِمَا نَسِيْتُمْ لِقَاۤءَ يَوْمِكُمْ هٰذَا اِنَّا نَسِيْنٰكُمْ وَذُوْقُوْا عَذَابَ الْخُلْدِ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ
15	हमारी आयतों पर वही लोग ईमान लाते हैं जो जब उनके साथ नसीहत की जाती है, तो वे सजदा करने के लिए गिर पड़ते हैं और अपने रब की तारीफ़ के साथ तसबीह करते हैं, और वे घमंड नहीं करते।	اِنَّمَا يُؤْمِنُ بِاٰيٰتِنَا الَّذِيْنَ اِذَا ذُكِّرُوْا بِهَا خَرُّوْا سُجَّدًا وَّسَبَّحُوْا بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ
16	उनके पेट उनके बिस्तरों से दूर रहते हैं, वे अपने रब को डर और उम्मीद के साथ पुकारते हैं, और जो रिज़्क़ हमने उन्हें दिया, उसमें से ख़र्च करते हैं।	تَتَجَافٰى جُنُوْبُهُمْ عَنِ الْمَضَاجِعِ يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ خَوْفًا وَّطَمَعًا وَّمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ
17	कोई शख़्स नहीं जानता कि उनके लिए क्या (नेअमत) छुपाई गई है, जो उनकी आँखों को ठंडक देगी, उनके किए के बदले में।	فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّآ اُخْفِيَ لَهُمْ مِّنْ قُرَّةِ اَعْيُنٍ جَزَاۤءً بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ
18	तो क्या वह शख़्स जो ईमान वाला है, उस शख़्स जैसा है जो फ़ासिक़ (काफ़िर) है? वे बराबर नहीं हैं।	اَفَمَنْ كَانَ مُؤْمِنًا كَمَنْ كَانَ فَاسِقًا لَا يَسْتَوٗنَ
19	रहे वे लोग जो ईमान लाए और नेक काम किए, उनके लिए जन्नत के बाग़ है, जो उनके किए के बदले में उनका ठिकाना होगा।	اَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَلَهُمْ جَنّٰتُ الْمَاْوٰى نُزُلًا بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ
20	और रहे वे लोग जो फ़ासिक़ (काफ़िर) है, उनका ठिकाना जहन्नम है। जब भी वे उससे निकलना चाहेंगे, उन्हें उसमें वापस कर दिया जाएगा और उनसे कहा जाएगा, 'उस जहन्नम के अज़ाब को चखो जिसे तुम झुठलाते थे।'	وَاَمَّا الَّذِيْنَ فَسَقُوْا فَمَاْوٰىهُمُ النَّارُ كُلَّمَآ اَرَادُوْٓا اَنْ يَّخْرُجُوْا مِنْهَآ اُعِيْدُوْا فِيْهَا وَقِيْلَ لَهُمْ ذُوْقُوْا عَذَابَ النَّارِ الَّذِيْ كُنْتُمْ بِهٖ تُكَذِّبُوْنَ
21	और हम उन्हें ज़रूर उस छोटे अज़ाब (दुनिया में) का मज़ा चखाएँगे, उस बड़े अज़ाब (आख़िरत में) से पहले, ताकि वे (हक़ की तरफ़) लौट आएँ।	وَلَنُذِيْقَنَّهُمْ مِّنَ الْعَذَابِ الْاَدْنٰى دُوْنَ الْعَذَابِ الْاَكْبَرِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ

22	और उस शख़्स स॰ज़्यादा ज़ालिम कौन होगा जिस॰उसक॰रब की आयतों॰ स॰नसीहत दी गई, फिर वह उनस॰मुँह फेरे ल? बेशक, हम गुनहगारों॰को सजा दगे।	وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ ذُكِّرَ بِاٰيٰتِ رَبِّه ثُمَّ اَعْرَضَ عَنْهَا اِنَّا مِنَ الْمُجْرِمِيْنَ مُنْتَقِمُوْنَ
23	और निश्चिति रूप स, हमन॰मूसा को किताब दी, तो इसम॰कोई शक न कर कि वह (किताब) उसस॰मिली, और हमन॰उस॰बनी इसराइल क॰लिए हिदायत बनाया।	وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ فَلَا تَكُنْ فِيْ مِرْيَةٍ مِّنْ لِّقَاۤىِٕه وَجَعَلْنٰهُ هُدًى لِّبَنِيْٓ اِسْرَاۤءِيْلَ
24	और हमन॰उनम॰स॰इमाम बनाए जो हमारी हुक़्म स॰हिदायत करत॰थे, जब व॰सब्र करत॰थे और व॰हमारी आयतों॰पर यक़ीन रखत॰थे।	وَجَعَلْنَا مِنْهُمْ اَىِٕمَّةً يَّهْدُوْنَ بِاَمْرِنَا لَمَّا صَبَرُوْا وَكَانُوْا بِاٰيٰتِنَا يُوْقِنُوْنَ
25	निश्चिति रूप स, तेरा रब उनक॰बीच फ़ैसला करेगा क़ियामत क॰दिन, उसम॰जिसक॰बार॰म॰व॰इख़्तिलाफ़ करत॰थे।	اِنَّ رَبَّكَ هُوَ يَفْصِلُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ
26	क्या उनक॰लिए यह बात ज़ाहिर नहीं हुई कि हमन॰उनस॰पहल॰कितनी नस्लों॰को हलाक कर दिया, जिनक॰मकानों॰म॰व॰चलत-फिरत॰ह? बेशक, इसम॰(कई) निशानियाँ ह तो क्या व॰सुनत॰नही?	اَوَلَمْ يَهْدِ لَهُمْ كَمْ اَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنَ الْقُرُوْنِ يَمْشُوْنَ فِيْ مَسٰكِنِهِمْ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ اَفَلَا يَسْمَعُوْنَ
27	और क्या उनहों॰ने नहीं देखा कि हम (बारिश क) पानी को बंजर ज़मीन की तरफ़ ल॰जात॰ह, फिर उसस॰खेती उगात॰ह, जिसस॰उनक॰मवेशी और व॰ख़ुद खात॰ह? तो क्या व॰देखत॰नही?	اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّا نَسُوْقُ الْمَاۤءَ اِلَى الْاَرْضِ الْجُرُزِ فَنُخْرِجُ بِه زَرْعًا تَاْكُلُ مِنْهُ اَنْعَامُهُمْ وَاَنْفُسُهُمْ اَفَلَا يُبْصِرُوْنَ
28	और व॰कहत॰ह, "यह फ़त्ह कब आएगी, अगर तुम सच्च॰हो?"	وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْفَتْحُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ
29	कहो, "फ़त्ह क॰दिन, काफ़िरों॰क॰लिए उनका ईमान लाना फ़ायदेमंद नहीं होगा और न उनह॰मोहलत दी जाएगी।"	قُلْ يَوْمَ الْفَتْحِ لَا يَنْفَعُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِيْمَانُهُمْ وَلَا هُمْ يُنْظَرُوْنَ
30	तो तू उनस॰मुँह फेरे ल॰और इंतज़ार कर, बेशक, व॰भी इंतज़ार कर रह॰ह	فَاَعْرِضْ عَنْهُمْ وَانْتَظِرْ اِنَّهُمْ مُّنْتَظِرُوْنَ

छंदों की संख्या	اَلْأَحْزَاب	मदनी
७३	अल-अहज़ाब - 33	मदनी

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल-अहज़ाब (संघ)

1	ऐ नबी! अल्लाह से डरते रहो और काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों की बात न मानो। निश्चित रूप से, अल्लाह बहुत जानने वाला, बहुत हिकमत वाला है।	يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ اتَّقِ اللّٰهَ وَلَا تُطِعِ الْكٰفِرِيْنَ وَالْمُنٰفِقِيْنَ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا حَكِيْمًا
2	और उस वह्य की पैरवी करो जो तेरे रब की तरफ़ से तुझ पर उतारी गई। निश्चित रूप से, अल्लाह बहुत ख़बर रखने वाला है जो तुम करते हो।	وَّاتَّبِعْ مَا يُوْحٰٓى اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا
3	और अल्लाह पर भरोसा करो, और अल्लाह वकील के लिए काफी है।	وَّتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا
4	अल्लाह ने किसी मर्द के सीने में दो दिल नहीं बनाए, और न उसने तुम्हारी बीवियों को, जिन्हें तुम ज़िहार करते हो, तुम्हारी माएँ बनाया, और न उसने तुम्हारे गोद लिए बेटों को तुम्हारे असली बेटे बनाया। यह तुम्हारी बात है जो तुम अपने मुँह से कहते हो, और अल्लाह हक़ कहता है और वही सीधे रास्ते की हिदायत देता है।	مَا جَعَلَ اللّٰهُ لِرَجُلٍ مِّنْ قَلْبَيْنِ فِيْ جَوْفِهٖ وَمَا جَعَلَ اَزْوَاجَكُمُ الّٰٓـِٔيْ تُظٰهِرُوْنَ مِنْهُنَّ اُمَّهٰتِكُمْ وَمَا جَعَلَ اَدْعِيَاۤءَكُمْ اَبْنَاۤءَكُمْ ذٰلِكُمْ قَوْلُكُمْ بِاَفْوَاهِكُمْ وَاللّٰهُ يَقُوْلُ الْحَقَّ وَهُوَ يَهْدِى السَّبِيْلَ
5	उन (गोद लिए बेटों) को उनके बापों के नाम से पुकारो, यह अल्लाह के नज़दीक ज़्यादा सही है और अगर तुम उनके बापों को न जानते हो, तो वे तुम्हारे भाई और दोस्त हैं दीन में और जो ग़लती तुमसे हो गई, उसमें तुम पर कोई गुनाह नहीं, लेकिन जो तुमने अपने दिलों से क़सदन किया। और अल्लाह बहुत माफ़ करने वाला, बहुत रहम करने वाला है।	اُدْعُوْهُمْ لِاٰبَاۤىِٕهِمْ هُوَ اَقْسَطُ عِنْدَ اللّٰهِ فَاِنْ لَّمْ تَعْلَمُوْٓا اٰبَاۤءَهُمْ فَاِخْوَانُكُمْ فِى الدِّيْنِ وَمَوَالِيْكُمْ وَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ فِيْمَآ اَخْطَاْتُمْ بِهٖ وَلٰكِنْ مَّا تَعَمَّدَتْ قُلُوْبُكُمْ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا
6	नबी मोमिनों के लिए उनके अपने नफ़्स से ज़्यादा क़रीब है, और उनकी बीवियाँ उनकी माएँ हैं और ख़ून के रिश्तेदार, अल्लाह की किताब में, एक-दूसरे के ज़्यादा हक़दार हैं मोमिनों और मुहाजिरों से, सिवाय इसके कि तुम अपने दोस्तों के साथ नेकी करना चाहो। यह किताब में लिखा हुआ है।	اَلنَّبِيُّ اَوْلٰى بِالْمُؤْمِنِيْنَ مِنْ اَنْفُسِهِمْ وَاَزْوَاجُهٗٓ اُمَّهٰتُهُمْ وَاُولُوا الْاَرْحَامِ بَعْضُهُمْ اَوْلٰى بِبَعْضٍ فِيْ كِتٰبِ اللّٰهِ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُهٰجِرِيْنَ اِلَّآ اَنْ تَفْعَلُوْٓا اِلٰٓى اَوْلِيَاۤىِٕكُمْ مَّعْرُوْفًا كَانَ ذٰلِكَ فِى الْكِتٰبِ مَسْطُوْرًا
7	और (याद करो) जब हमने नबियों से उनका अहद लिया, और तुझसे (मुहम्मद), और नूह, इब्राहीम, मूसा और ईसा बिन मरयम से भी और हमने उनसे बहुत पक्का अहद लिया,	وَاِذْ اَخَذْنَا مِنَ النَّبِيّٖنَ مِيْثَاقَهُمْ وَمِنْكَ وَمِنْ نُّوْحٍ وَّاِبْرٰهِيْمَ وَمُوْسٰى وَعِيْسَى ابْنِ مَرْيَمَ وَاَخَذْنَا مِنْهُمْ مِّيْثَاقًا غَلِيْظًا

لِّيَسْـَٔلَ الصّٰدِقِيْنَ عَنْ صِدْقِهِمْ وَاَعَدَّ لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابًا اَلِيْمًا	तार्कि वह (अल्लाह) सच्चों स उनकी सच्चाई क बार मे सवाल कर, और उसन काफिरों क लिए दरद्नाक अज़ाब तयैार कयिा ह।	8
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اذْكُرُوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ اِذْ جَاۤءَتْكُمْ جُنُوْدٌ فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيْحًا وَّجُنُوْدًا لَّمْ تَرَوْهَا وَكَانَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرًا	ऐ ईमान वालो! अल्लाह की उस नअेमत को याद करो जो तमु पर (उतारी गई) जब तमु पर लशक्र आए। फरि हमन उनक खलिाफ् तजे़ हवा और ऐसी फौज भजेी जो तमु ह नज़र नहीं आई, और हमन उनह आगाह कयिा। अल्लाह तमुहार कएि को खबू जानता ह।	9
اِذْ جَاۤءُوْكُمْ مِّنْ فَوْقِكُمْ وَمِنْ اَسْفَلَ مِنْكُمْ وَاِذْ زَاغَتِ الْاَبْصَارُ وَبَلَغَتِ الْقُلُوْبُ الْحَنَاجِرَ وَتَظُنُّوْنَ بِاللّٰهِ الظُّنُوْنَا	(यानी) जब व तमु पर ऊपर स और नीच स आए, और जब तमुहारी नज़र चकति हो गई और तमुहार दलिों न वह दखे लयिा जसिक बार म हमन आगाह कयिा था और तमु अल्लाह क खलिाफ् गलत गमु्मान करन लग।	10
هُنَالِكَ ابْتُلِيَ الْمُؤْمِنُوْنَ وَزُلْزِلُوْا زِلْزَالًا شَدِيْدًا	वहा मोमनिों की आज़माइश हई और उनक दलिों को ज़ोरदार गटका लगा।	11
وَاِذْ يَقُوْلُ الْمُنٰفِقُوْنَ وَالَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ مَّا وَعَدَنَا اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗٓ اِلَّا غُرُوْرًا	और (याद करो) जब मन्ाफकि लोग और जनिक दलिों म बीमारी थी, तमुहार पास आए, फरि उनहोंन कहा, 'उसन हम सरि्फ् धोखा दयिा।'	12
وَاِذْ قَالَتْ طَّاۤىِٕفَةٌ مِّنْهُمْ يٰٓاَهْلَ يَثْرِبَ لَا مُقَامَ لَكُمْ فَارْجِعُوْا وَيَسْتَاْذِنُ فَرِيْقٌ مِّنْهُمُ النَّبِيَّ يَقُوْلُوْنَ اِنَّ بُيُوْتَنَا عَوْرَةٌ وَمَا هِيَ بِعَوْرَةٍ اِنْ يُّرِيْدُوْنَ اِلَّا فِرَارًا	और (याद करो) जब उनम स एक गरिोह न कहा, 'ऐ यसरबि (मदीना) क लोगो! तमुहार लएि कोई ठकिाना नहीं, तो वहा लौट जाओ।' और व वहा गए, उनहोंन नबी स (वापस जान की) इजाज़त माँगी, यह कहत हए, 'ऐ यसरबि क लोगो! हम जा रह ह (कोई हफिाज़त नहीं ह)।' हालाकँि उनक घर खल्ु नहीं थ, व तो बस भागना चाहत थ।	13
وَلَوْ دُخِلَتْ عَلَيْهِمْ مِّنْ اَقْطَارِهَا ثُمَّ سُىِٕلُوا الْفِتْنَةَ لَاٰتَوْهَا وَمَا تَلَبَّثُوْا بِهَآ اِلَّا يَسِيْرًا	और अगर (यसरबि) पर हर तरफ् स हमला कयिा जाता, और उनस फतिना खड़ा करन को कहा जाता, तो नशि्चति रूप स व उस करत, और व बस थोड़ा ही इंतज़ार करत।	14
وَلَقَدْ كَانُوْا عَاهَدُوا اللّٰهَ مِنْ قَبْلُ لَا يُوَلُّوْنَ الْاَدْبَارَ وَكَانَ عَهْدُ اللّٰهِ مَسْـُٔوْلًا	और नशि्चति रूप स, उनहोंन इसस पहल अल्लाह स वादा कयिा था कि व पीछ नही हटग (भागग नही)। और अल्लाह क साथ कयिा गया वादा जवाबदही माँगता ह।	15
قُلْ لَّنْ يَّنْفَعَكُمُ الْفِرَارُ اِنْ فَرَرْتُمْ مِّنَ الْمَوْتِ اَوِ الْقَتْلِ وَاِذًا لَّا تُمَتَّعُوْنَ اِلَّا قَلِيْلًا	कहो (मह्मम्द), 'भागना तमुहार लएि फायदमेंद नहीं होगा। अगर तमु मौत या कतल स भाग, और अगर (इस तरह) तमु बच गए, तो तमु बस थोड़ा ही मज़ा ल सकोग।'	16
قُلْ مَنْ ذَا الَّذِيْ يَعْصِمُكُمْ مِّنَ اللّٰهِ اِنْ اَرَادَ بِكُمْ سُوْۤءًا اَوْ اَرَادَ بِكُمْ رَحْمَةً وَلَا يَجِدُوْنَ لَهُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا	कहो, 'कौन ह जो तमुह अल्लाह स बचा सकता ह अगर वह तमुहार लएि बरुाई चाह, या तमु पर रहम करना चाह?' और उनक लएि अल्लाह क सवि न कोई सरपरस्त ह और न मददगार।	17
قَدْ يَعْلَمُ اللّٰهُ الْمُعَوِّقِيْنَ مِنْكُمْ وَالْقَاۤىِٕلِيْنَ لِاِخْوَانِهِمْ هَلُمَّ اِلَيْنَا وَلَا يَاْتُوْنَ الْبَاْسَ اِلَّا قَلِيْلًا	नशि्चति रूप स, अल्लाह उन मन्ाफकिों को जानता ह जो (जहिाद म) रुकावट डालत ह और अपन भाइयों स कहत ह, 'हमार पास आओ,' और व जंग म बहत कम आत ह,	18

19	तुमहार लिए कंजूसी करत हुए। और जब डर आता ह, तो तू उनह दखता ह कि व तझ पर नज़र गड़ाए हुए ह, उनकी आँख घूम रही ह जैसे कोई मौत क डर स बेहोश हो रहा हो। फिर जब डर जाता ह, तो व तझ पर तेज़ ज़बान स हमला करत ह, नकी म बहुत कंजूस। व ईमान नहीं लाए, तो अल्लाह न उनक काम नाकारा कर दिए। और यह अल्लाह क लिए आसान ह।	اَشِحَّةً عَلَيْكُمْ فَاِذَا جَاءَ الْخَوْفُ رَاَيْتَهُمْ يَنْظُرُوْنَ اِلَيْكَ تَدُوْرُ اَعْيُنُهُمْ كَالَّذِيْ يُغْشٰى عَلَيْهِ مِنَ الْمَوْتِ فَاِذَا ذَهَبَ الْخَوْفُ سَلَقُوْكُمْ بِاَلْسِنَةٍ حِدَادٍ اَشِحَّةً عَلَى الْخَيْرِ اُولٰٓئِكَ لَمْ يُؤْمِنُوْا فَاَحْبَطَ اللّٰهُ اَعْمَالَهُمْ وَكَانَ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرًا
20	व समझत ह कि गठबंधन (दुश्मन) गए नहीं ह; और अगर गठबंधन आए, तो व चाहग कि काश व देहात म बद्दुओं क साथ होत, तुमहारी खबर माँगत हुए। और अगर व तुमम होत, तो बहुत कम ही लड़त।	يَحْسَبُوْنَ الْاَحْزَابَ لَمْ يَذْهَبُوْا وَاِنْ يَّاْتِ الْاَحْزَابُ يَوَدُّوْا لَوْ اَنَّهُمْ بَادُوْنَ فِى الْاَعْرَابِ يَسْاَلُوْنَ عَنْ اَنْۢبَآئِكُمْ وَلَوْ كَانُوْا فِيْكُمْ مَّا قٰتَلُوْٓا اِلَّا قَلِيْلًا
21	नश्चित रूप स, तुमहार लिए अल्लाह क रसूल म बहुत अच्छा नमूना ह, जो कोई अल्लाह और आख़िरत क दिन की उम्मीद रखता ह और अल्लाह को बहुत याद करता ह।	لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِيْ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ لِّمَنْ كَانَ يَرْجُوا اللّٰهَ وَالْيَوْمَ الْاٰخِرَ وَذَكَرَ اللّٰهَ كَثِيْرًا
22	और जब मोमनों न गठबंधन (दुश्मन) को दखा, तो उनहोन कहा, 'यह वही ह जो अल्लाह और उसक रसूल न हमस वादा किया था, और अल्लाह और उसका रसूल सच्चा था।' और इससे उनकी ईमान और तस्लीम म और इज़ाफ़ा हुआ।	وَلَمَّا رَاَ الْمُؤْمِنُوْنَ الْاَحْزَابَ قَالُوْا هٰذَا مَا وَعَدَنَا اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ وَصَدَقَ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ وَمَا زَادَهُمْ اِلَّآ اِيْمَانًا وَّتَسْلِيْمًا
23	मोमनों म ऐस लोग ह जिनहोन अल्लाह स अपन वाद को सच्चा किया; उनम स कुछ न अपनी मनत पूरी की (शहीद हो गए) और कुछ इंतज़ार कर रह ह; और उनहोन कोई बदलाव नहीं किया,	مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ رِجَالٌ صَدَقُوْا مَا عَاهَدُوا اللّٰهَ عَلَيْهِ فَمِنْهُمْ مَّنْ قَضٰى نَحْبَهٗ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّنْتَظِرُ وَمَا بَدَّلُوْا تَبْدِيْلًا
24	ताकि अल्लाह सचों को उनकी सच्चाई का बदला द, और मुनाफिकों को अगर वह चाह तो अज़ाब द, या उनकी तौबा कबूल कर। नश्चित रूप स, अल्लाह बहुत माफ़ करन वाला, बहुत रहम करन वाला ह।	لِّيَجْزِيَ اللّٰهُ الصّٰدِقِيْنَ بِصِدْقِهِمْ وَيُعَذِّبَ الْمُنٰفِقِيْنَ اِنْ شَاۤءَ اَوْ يَتُوْبَ عَلَيْهِمْ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا
25	और अल्लाह न उन काफिरों को उनकी नाराज़गी क साथ वापस भेजा, क्योंकि उनहोन (अल्लाह स) कुछ भी हासिल नहीं किया सिवाय बुराई को और अल्लाह न मोमनों को जंग स बचा लिया। और अल्लाह बहुत ताक़तवर, बहुत इज़्ज़त वाला ह।	وَرَدَّ اللّٰهُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِغَيْظِهِمْ لَمْ يَنَالُوْا خَيْرًا وَكَفَى اللّٰهُ الْمُؤْمِنِيْنَ الْقِتَالَ وَكَانَ اللّٰهُ قَوِيًّا عَزِيْزًا
26	और उसन अहल किताब (जो ईमान लाए) को, जो गठबंधनों की मदद करत थ, उनक किलों स उतारा, और उनक दिलों म डर डाला, और तुमन उनक कुछ लोगों को कतल किया और कुछ को क़ैदी बनाया।	وَاَنْزَلَ الَّذِيْنَ ظَاهَرُوْهُمْ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ مِنْ صَيَاصِيْهِمْ وَقَذَفَ فِيْ قُلُوْبِهِمُ الرُّعْبَ فَرِيْقًا تَقْتُلُوْنَ وَتَاْسِرُوْنَ فَرِيْقًا
27	और उसन तुमह उनकी ज़मीन, उनक घर और उनकी दौलत वारिस बनाया, और (वह) ज़मीन भी जो तुमन नहीं दखी, और जो दौलत तुमन हासिल नहीं की।	وَاَوْرَثَكُمْ اَرْضَهُمْ وَدِيَارَهُمْ وَاَمْوَالَهُمْ وَاَرْضًا لَّمْ تَطَـُٔوْهَا وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرًا

يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِّاَزْوَاجِكَ اِنْ كُنْتُنَّ تُرِدْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا وَزِيْنَتَهَا فَتَعَالَيْنَ اُمَتِّعْكُنَّ وَاُسَرِّحْكُنَّ سَرَاحًا جَمِيْلًا	**28**	ऐ नबी! अपनी बीवियों से कहो, 'अगर तुम दुनिया की ज़िंदगी और उसकी ज़ीनत चाहती हो, तो नके काम करो, और मैं तुम्हें अच्छे तरीक से रुख़सत करूँगा।'
وَاِنْ كُنْتُنَّ تُرِدْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَالدَّارَ الْاٰخِرَةَ فَاِنَّ اللّٰهَ اَعَدَّ لِلْمُحْسِنٰتِ مِنْكُنَّ اَجْرًا عَظِيْمًا	**29**	और अगर तुम अल्लाह और उसके रसूल और आख़िरत के मुल्क को चाहती हो, तो निश्चित रूप से, अल्लाह ने तुम में से नेकी करने वालों के लिए बड़ा सवाब तैयार किया है।
يٰنِسَاءَ النَّبِيِّ مَنْ يَّأْتِ مِنْكُنَّ بِفَاحِشَةٍ مُّبَيِّنَةٍ يُّضٰعَفْ لَهَا الْعَذَابُ ضِعْفَيْنِ وَكَانَ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرًا	**30**	ऐ नबी की बीवियो! तुम में से जो कोई साफ़ गंदा काम करेगी, निश्चित रूप से उसके लिए अज़ाब को दोगुना कर दिया जाएगा। और यह अल्लाह के लिए आसान है।
وَمَنْ يَّقْنُتْ مِنْكُنَّ لِلّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَتَعْمَلْ صَالِحًا نُّؤْتِهَآ اَجْرَهَا مَرَّتَيْنِ وَاَعْتَدْنَا لَهَا رِزْقًا كَرِيْمًا	**31**	और तुम में से जो कोई अल्लाह और उसके रसूल की इताअत करेगी और नके काम करेगी, निश्चित रूप से, हम उसे उसका सवाब दोगुना देंगे और उसके लिए इज़्ज़त वाला रिज़्क़ तैयार किया है।
يٰنِسَاءَ النَّبِيِّ لَسْتُنَّ كَاَحَدٍ مِّنَ النِّسَاۤءِ اِنِ اتَّقَيْتُنَّ فَلَا تَخْضَعْنَ بِالْقَوْلِ فَيَطْمَعَ الَّذِيْ فِيْ قَلْبِهٖ مَرَضٌ وَّقُلْنَ قَوْلًا مَّعْرُوْفًا	**32**	ऐ नबी की बीवियो! तुम दूसरी औरतों की तरह नहीं हो, अगर तुम तक़वा रखती हो। तो बात करने में नरमी न करो (आवाज़ को लचक न दो) ताकि वह शख़्स जिसके दिल में बीमारी है, उसमें नफ़्स जाग, और अच्छी बात कहो।
وَقَرْنَ فِيْ بُيُوْتِكُنَّ وَلَا تَبَرَّجْنَ تَبَرُّجَ الْجَاهِلِيَّةِ الْاُوْلٰى وَاَقِمْنَ الصَّلٰوةَ وَاٰتِيْنَ الزَّكٰوةَ وَاَطِعْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ اِنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ لِيُذْهِبَ عَنْكُمُ الرِّجْسَ اَهْلَ الْبَيْتِ وَيُطَهِّرَكُمْ تَطْهِيْرًا	**33**	और अपने घरों में ठहरो और बाहर अपनी ज़ीनत और (हरकत) न दिखाओ, और नमाज़ क़ायम करो, ज़कात दो और अल्लाह और उसके रसूल की इताअत करो। अल्लाह सिर्फ़ यह चाहता है कि तुम, ऐ अहलबैत, से गुनाह को दूर करे और तुम्हें पूरी तरह पाक करे।
وَاذْكُرْنَ مَا يُتْلٰى فِيْ بُيُوْتِكُنَّ مِنْ اٰيٰتِ اللّٰهِ وَالْحِكْمَةِ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ لَطِيْفًا خَبِيْرًا	**34**	और अपने घरों में जो अल्लाह की आयतें और हिकमत पढ़ी जाती हैं, उन्हें याद करो। निश्चित रूप से, अल्लाह बहुत बारीकबीन, बहुत ख़बर रखने वाला है।
اِنَّ الْمُسْلِمِيْنَ وَالْمُسْلِمٰتِ وَالْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ وَالْقٰنِتِيْنَ وَالْقٰنِتٰتِ وَالصّٰدِقِيْنَ وَالصّٰدِقٰتِ وَالصّٰبِرِيْنَ وَالصّٰبِرٰتِ وَالْخٰشِعِيْنَ وَالْخٰشِعٰتِ وَالْمُتَصَدِّقِيْنَ وَالْمُتَصَدِّقٰتِ وَالصَّاۤىِٕمِيْنَ وَالصّٰۤىِٕمٰتِ وَالْحٰفِظِيْنَ فُرُوْجَهُمْ وَالْحٰفِظٰتِ وَالذّٰكِرِيْنَ اللّٰهَ كَثِيْرًا وَّالذّٰكِرٰتِ اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ مَّغْفِرَةً وَّاَجْرًا عَظِيْمًا	**35**	निश्चित रूप से, मुसलमान मर्द और औरतें, मोमिन मर्द और औरतें, मर्द और औरतें जो ईमान में क़ायम रहते हैं, मर्द और औरतें जो सच्चे हैं, मर्द और औरतें जो सब्र करते हैं, मर्द और औरतें जो ख़ुशूअ रखते हैं, मर्द और औरतें जो सदक़ा देते हैं, मर्द और औरतें जो रोज़ा रखते हैं, मर्द और औरतें जो अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करते हैं, मर्द और औरतें जो अल्लाह को बहुत याद करते हैं, अल्लाह ने उनके लिए माफ़ी और बड़ा सवाब तैयार किया है।

وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ وَّلَا مُؤْمِنَةٍ اِذَا قَضَى اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗٓ اَمْرًا اَنْ يَّكُوْنَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ مِنْ اَمْرِهِمْ وَمَنْ يَّعْصِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَقَدْ ضَلَّ ضَلٰلًا مُّبِيْنًا	**36**	और किसी मोमिन मर्द और औरत के लिए यह मुनासिब नहीं कि जब अल्लाह और उसका रसूल कोई हुक्म दे, तो उनके पास कोई और रास्ता हो, उनके मुआमले में और जो कोई अल्लाह और उसके रसूल की नाफरमानी करेगा, निश्चित रूप से, वह साफ़ गुमराही में भटक गया।
وَاِذْ تَقُوْلُ لِلَّذِيْٓ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاَنْعَمْتَ عَلَيْهِ اَمْسِكْ عَلَيْكَ زَوْجَكَ وَاتَّقِ اللّٰهَ وَتُخْفِيْ فِيْ نَفْسِكَ مَا اللّٰهُ مُبْدِيْهِ وَتَخْشَى النَّاسَ وَاللّٰهُ اَحَقُّ اَنْ تَخْشٰىهُ فَلَمَّا قَضٰى زَيْدٌ مِّنْهَا وَطَرًا زَوَّجْنٰكَهَا لِكَيْ لَا يَكُوْنَ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ حَرَجٌ فِيْٓ اَزْوَاجِ اَدْعِيَاۤىِٕهِمْ اِذَا قَضَوْا مِنْهُنَّ وَطَرًا وَكَانَ اَمْرُ اللّٰهِ مَفْعُوْلًا	**37**	और (याद करो), जब तू (मुहम्मद) उस शख़्स से कह रहा था जिसे अल्लाह ने नेअमत दी और तूने भी उसे नेअमत दी, 'अपनी बीवी को थामे रख और अल्लाह से डर,' जबकि तू अपने दिल में वह बात छुपा रहा था जो तुझे सुनाई गई थी, तो अल्लाह उसे ज़ाहिर करेगा। तू इंसानों से डरता था, हालाँकि अल्लाह ज़्यादा हक़दार है कि तू उससे डरे। तो जब ज़ैद बनि साबति (मुहम्मद) ने अपनी बीवी को (तलाक़ दे दिया), हमने तुझे उससे निकाह कर दिया ताकि मोमिनों के लिए उनके गोद लिए हुए बेटों की बीवियों (से निकाह) में कोई रुकावट न हो, जब गोद लिए बेटे बेड़ हो जाएँ, और जब उन्होंने अपनी बीवियों से निकाह किया हो। और अल्लाह का हुक्म ज़रूर पूरा होता है
مَا كَانَ عَلَى النَّبِيِّ مِنْ حَرَجٍ فِيْمَا فَرَضَ اللّٰهُ لَهٗ سُنَّةَ اللّٰهِ فِى الَّذِيْنَ خَلَوْا مِنْ قَبْلُ وَكَانَ اَمْرُ اللّٰهِ قَدَرًا مَّقْدُوْرًا	**38**	नबी पर कोई हरज नहीं है उस चीज़ में जो अल्लाह ने उसके लिए मुक़र्रर की (अल्लाह ने ऐसा ही हुक्म दिया) जो पहले के नबियों पर अल्लाह की सुन्नत थी। और अल्लाह का हुक्म एक सच्चाई है जो ज़रूर लागू होती है
الَّذِيْنَ يُبَلِّغُوْنَ رِسٰلٰتِ اللّٰهِ وَيَخْشَوْنَهٗ وَلَا يَخْشَوْنَ اَحَدًا اِلَّا اللّٰهَ وَكَفٰى بِاللّٰهِ حَسِيْبًا	**39**	(यानी) वे लोग जो अल्लाह के पैग़ामात पहुँचाते हैं, वे उससे डरते हैं और उसके सिवा किसी से नहीं डरते। और अल्लाह हिसाब लेने के लिए काफी है
مَا كَانَ مُحَمَّدٌ اَبَآ اَحَدٍ مِّنْ رِّجَالِكُمْ وَلٰكِنْ رَّسُوْلَ اللّٰهِ وَخَاتَمَ النَّبِيّٖنَ وَكَانَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمًا	**40**	मुहम्मद तुम में से किसी के बाप नहीं हैं, बल्कि वह अल्लाह के रसूल और नबियों का ख़ातमा हैं और अल्लाह हर चीज़ को ख़ूब जानता है
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اذْكُرُوا اللّٰهَ ذِكْرًا كَثِيْرًا	**41**	ऐ ईमान वालो! अल्लाह को बहुत याद करो,
وَّسَبِّحُوْهُ بُكْرَةً وَّاَصِيْلًا	**42**	और सुबह और शाम उसकी तसबीह करो।
هُوَ الَّذِيْ يُصَلِّيْ عَلَيْكُمْ وَمَلٰٓئِكَتُهٗ لِيُخْرِجَكُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ وَكَانَ بِالْمُؤْمِنِيْنَ رَحِيْمًا	**43**	वही है जो तुम पर रहम करता है और उसके फ़रिश्ते (तुम्हारे लिए मग़फ़िरत माँगते हैं), ताकि वह तुम्हें बुराई से निकालकर रौशनी (हिदायत) की तरफ़ ले जाए। और वह मोमिनों पर बहुत मेहरबान है
تَحِيَّتُهُمْ يَوْمَ يَلْقَوْنَهٗ سَلٰمٌ وَاَعَدَّ لَهُمْ اَجْرًا كَرِيْمًا	**44**	उन (मोमिनों) का इस्तक़बाल, जब वे उससे मिलेंगे, 'सलाम' होगा, और उसने उनके लिए इज़्ज़त वाला सवाब तैयार किया है
يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ اِنَّآ اَرْسَلْنٰكَ شَاهِدًا وَّمُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا	**45**	ऐ नबी! हमने तुझे गवाह, ख़ुशख़बरी देने वाला और आगाह करने वाला बनाकर भेजा,

وَّدَاعِيًا اِلَى اللّٰهِ بِاِذْنِهٖ وَسِرَاجًا مُّنِيْرًا	और उसकी इजाज़त से अल्लाह की तरफ़ बुलाने वाला और रौशनी देने वाला चिराग़।	**46**
وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ بِاَنَّ لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ فَضْلًا كَبِيْرًا	और मोमिनों को ख़ुशख़बरी दे कि उनके लिए अल्लाह की तरफ़ से बहुत बड़ा फ़ज़्ल है।	**47**
وَلَا تُطِعِ الْكٰفِرِيْنَ وَالْمُنٰفِقِيْنَ وَدَعْ اَذٰىهُمْ وَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا	और काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों की बात न मान और उनकी सताने की परवाह न कर, और अल्लाह पर भरोसा कर। और अल्लाह वकील के लिए काफ़ी है।	**48**
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا نَكَحْتُمُ الْمُؤْمِنٰتِ ثُمَّ طَلَّقْتُمُوْهُنَّ مِنْ قَبْلِ اَنْ تَمَسُّوْهُنَّ فَمَا لَكُمْ عَلَيْهِنَّ مِنْ عِدَّةٍ تَعْتَدُّوْنَهَا فَمَتِّعُوْهُنَّ وَسَرِّحُوْهُنَّ سَرَاحًا جَمِيْلًا	ऐ ईमान वालो! जब तुम मोमिन औरतों से निकाह करो, फिर उनहें छूने से पहले तलाक़ दे दो, तो उनके लिए कोई इद्दत नहीं जिसे तुम गिनो। तो उनहें कुछ दे दो और उनहें अच्छे तरीक़े से रुख़सत करो।	**49**
يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ اِنَّآ اَحْلَلْنَا لَكَ اَزْوَاجَكَ الّٰتِيْٓ اٰتَيْتَ اُجُوْرَهُنَّ وَمَا مَلَكَتْ يَمِيْنُكَ مِمَّآ اَفَاۤءَ اللّٰهُ عَلَيْكَ وَبَنٰتِ عَمِّكَ وَبَنٰتِ عَمّٰتِكَ وَبَنٰتِ خَالِكَ وَبَنٰتِ خٰلٰتِكَ الّٰتِيْ هَاجَرْنَ مَعَكَ وَامْرَاَةً مُّؤْمِنَةً اِنْ وَّهَبَتْ نَفْسَهَا لِلنَّبِيِّ اِنْ اَرَادَ النَّبِيُّ اَنْ يَّسْتَنْكِحَهَا خَالِصَةً لَّكَ مِنْ دُوْنِ الْمُؤْمِنِيْنَ قَدْ عَلِمْنَا مَا فَرَضْنَا عَلَيْهِمْ فِيْٓ اَزْوَاجِهِمْ وَمَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُمْ لِكَيْلَا يَكُوْنَ عَلَيْكَ حَرَجٌ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا	ऐ नबी! हमने तेरे लिए वह बीवियाँ हलाल कीं जिनहें तूने उनके महेर दिए और वह (लौंडियाँ) जो तेरे दाएँ हाथ ने मालकि कीं, जो अल्लाह ने तुझ पर फ़ज़्ल किया, और तेरी चचेरी बहन, ममेरी बहन, फुफेरी बहन और ख़ालेरी बहन जो तेरे साथ हजिरत कीं, और वह मोमिना औरत जो अपनी जान नबी को दे दे, अगर नबी उससे निकाह करना चाहे, ख़ास तौर पर तुझ के लिए, मोमिनों के सिवा। हम जानते हैं कि हमने उनके लिए उनकी बीवियों और उनकी लौंडियों के बारे में क्या हुक्म किया। ताकि तुझ पर कोई हरज न हो। और अल्लाह बहुत माफ़ करने वाला, बहुत रहम करने वाला है।	**50**
تُرْجِيْ مَنْ تَشَاۤءُ مِنْهُنَّ وَتُـْٔوِيْٓ اِلَيْكَ مَنْ تَشَاۤءُ وَمَنِ ابْتَغَيْتَ مِمَّنْ عَزَلْتَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكَ ذٰلِكَ اَدْنٰٓى اَنْ تَقَرَّ اَعْيُنُهُنَّ وَلَا يَحْزَنَّ وَيَرْضَيْنَ بِمَآ اٰتَيْتَهُنَّ كُلُّهُنَّ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَا فِيْ قُلُوْبِكُمْ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَلِيْمًا	तू (मुहम्मद) जिसे चाहे अपनी बीवियों में से टाल सकता है और जिसे चाहे (अपने पास) बुला सकता है। और जिसे तूने अलग किया हो, अगर उसे फिर बुलाना चाहे, तो तुझ पर कोई हरज नहीं। यह उनके दिलों की तसल्ली के ज़्यादा क़रीब है, और वे ग़मगीन न हों, और तूने जो कुछ उनहें दिया, उससे वे सब राज़ी हों। और अल्लाह वह जानता है जो (तेरे) दिल में है। और अल्लाह बहुत जानने वाला, बहुत सब्र करने वाला है।	**51**
لَا يَحِلُّ لَكَ النِّسَاۤءُ مِنْۢ بَعْدُ وَلَآ اَنْ تَبَدَّلَ بِهِنَّ مِنْ اَزْوَاجٍ وَّلَوْ اَعْجَبَكَ حُسْنُهُنَّ اِلَّا مَا مَلَكَتْ يَمِيْنُكَ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ رَّقِيْبًا	(मुहम्मद) तेरे लिए इसके बाद और औरतों से निकाह करना हलाल नहीं है, और न उनकी जगह दूसरी बीवियों को लेना, भले ही उनकी ख़ूबसूरती तुझे पसंद आए, सिवाय उन (लौंडियों) के जो तेरा दायाँ हाथ मालकि हो। और अल्लाह हर चीज़ का निगिरान है।	**52**

53	ऐ ईमान वालो! नबी क॓ घरो॑ म॑ दाख़लि न हो, सवाय इसक॓ कि तमुह॑ ख़ान॓ की इजाज़त दी जाए, बनि ख़ान॓ क॓ वक़्त का इंतज़ार कएि। लकेनि जब तमुह॑ बुलाया जाए, तो दाख़लि हो, और जब ख़ाना खा लो, तो चल॓ जाओ, बनि बातचीत को लंबा कएि। नशि्चति रूप स॓ यह नबी को तकलीफ दता॓ ह॑, फरि वह (नबी) तमु स॓ (बाहर जान॓ को कहन॓ म॑) शरम॑ करता ह॑, और अल्लाह हक़ स॓ नह॑ शरमाता। और जब तमु (नबी की बीवयिो) स॓ कछु माँगो, तो परद॓ क॓ पीछ॓ स॓ माँगो। यह तमुहार॓ और उनक॓ दलिो॑ क॓ लएि ज़्यादा पाकीज़ा ह॑ और तमुह॑ नबी को तकलीफ दनेा जायज़ नह॑, और न उनक॓ बाद उनकी बीवयिो॑ स॓ नकिाह करना कभी भी। नशि्चति रूप स॓, यह अल्लाह क॓ नज़दीक बहतु बड़ा (गनु्ाह) ह॑	يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَدْخُلُوْا بُيُوْتَ النَّبِيِّ اِلَّآ اَنْ يُّؤْذَنَ لَكُمْ اِلٰى طَعَامٍ غَيْرَ نٰظِرِيْنَ اِنٰىهُ وَلٰكِنْ اِذَا دُعِيْتُمْ فَادْخُلُوْا فَاِذَا طَعِمْتُمْ فَانْتَشِرُوْا وَلَا مُسْتَاْنِسِيْنَ لِحَدِيْثٍ اِنَّ ذٰلِكُمْ كَانَ يُؤْذِى النَّبِيَّ فَيَسْتَحْيٖ مِنْكُمْ وَاللّٰهُ لَا يَسْتَحْيٖ مِنَ الْحَقِّ وَاِذَا سَاَلْتُمُوْهُنَّ مَتَاعًا فَسْـَٔلُوْهُنَّ مِنْ وَّرَاۤءِ حِجَابٍ ذٰلِكُمْ اَطْهَرُ لِقُلُوْبِكُمْ وَقُلُوْبِهِنَّ وَمَا كَانَ لَكُمْ اَنْ تُؤْذُوْا رَسُوْلَ اللّٰهِ وَلَآ اَنْ تَنْكِحُوْٓا اَزْوَاجَه مِنْ بَعْدِه اَبَدًا اِنَّ ذٰلِكُمْ كَانَ عِنْدَ اللّٰهِ عَظِيْمًا
54	अगर तमु कछु जा॑हरि करो या छपुाओ, तो नशि्चति रूप स॓ अल्लाह हर चीज़ को खब़ू जानता ह॑	اِنْ تُبْدُوْا شَيْـًٔا اَوْ تُخْفُوْهُ فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمًا
55	नबी की बीवयिो॑ क॓ लएि कोई गनु्ाह नह॑ (कि व॓ बनि परद॓ क॓) अपन॓ बापो॑, अपन॓ बटेो॑, अपन॓ भाइयो॑, अपन॓ भाइयो॑ क॓ बटेो॑, अपनी बहनो॑ क॓ बटेो॑, अपनी (मोमनि) औरतो॑ और अपनी लौंडयिो॑ स॓ मलिी और (ऐ बीवयिो) अल्लाह स॓ डरती रहो। नशि्चति रूप स॓, अल्लाह हर चीज़ का गवाह ह॑	لَا جُنَاحَ عَلَيْهِنَّ فِيْٓ اٰبَاۤىِٕهِنَّ وَلَآ اَبْنَاۤىِٕهِنَّ وَلَآ اِخْوَانِهِنَّ وَلَآ اَبْنَاۤءِ اِخْوَانِهِنَّ وَلَآ اَبْنَاۤءِ اَخَوٰتِهِنَّ وَلَا نِسَاۤىِٕهِنَّ وَلَا مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُنَّ وَاتَّقِيْنَ اللّٰهَ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدًا
56	नशि्चति रूप स॓, अल्लाह और उसक॓ फरशि्त॓ नबी पर दरुद्द भजेत॓ ह॑। ऐ ईमान वालो! तमु भी उन पर दरुद्द और सलाम भजेो, बहतु-बहतु।	اِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓئِكَتَه يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا
57	नशि्चति रूप स॓, जो लोग अल्लाह और उसक॓ रसलू को तकलीफ दते॓ ह॑, अल्लाह न॓ उनह॑ दनुयिा और आख़रित म॑ लानत दी और उनक॓ लएि ज़लि्लत वाला अज़ाब तयैार कयिा ह॑	اِنَّ الَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَه لَعَنَهُمُ اللّٰهُ فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ وَاَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا مُّهِيْنًا
58	और जो लोग मोमनि मरदो॑ और औरतो॑ को बनि कसिी गनु्ाह क॓ तकलीफ दते॓ ह॑, नशि्चति रूप स॓, उनहो॑न॓ बोहतान और साफ़ गनु्ाह का बोझ उठाया।	وَالَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ بِغَيْرِ مَا اكْتَسَبُوْا فَقَدِ احْتَمَلُوْا بُهْتَانًا وَّاِثْمًا مُّبِيْنًا
59	ऐ नबी! अपनी बीवयिो॑, अपनी बटेयिो॑ और मोमनिो॑ की औरतो॑ स॓ कहो कि व॓ अपनी चादर॑ अपन॓ ऊपर डाल लो॑ यह ज़्यादा मनु्ासबि ह॑ ताकि उनह॑ पहचाना जाए और उनह॑ तकलीफ न दी जाए। और अल्लाह बहतु माफ़ करन॓ वाला, बहतु रहम करन॓ वाला ह॑	يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِّاَزْوَاجِكَ وَبَنٰتِكَ وَنِسَاۤءِ الْمُؤْمِنِيْنَ يُدْنِيْنَ عَلَيْهِنَّ مِنْ جَلَابِيْبِهِنَّ ذٰلِكَ اَدْنٰٓى اَنْ يُّعْرَفْنَ فَلَا يُؤْذَيْنَ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا
60	अगर मनु्ाफकि लोग और जनिक॓ दलिो॑ म॑ बीमारी ह॑ और मदीना म॑ अफवाह॑ फलैान॓ वाल॓ (बरुाई) स॓ बाज़ न आए, तो हम तझु॓ उनक॓ ख़लिाफ़ उकसाएँगे, फरि व॓ वहा॑ तर॓ साथ बहतु कम रह पाएँगे,	لَئِنْ لَّمْ يَنْتَهِ الْمُنٰفِقُوْنَ وَالَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ وَّالْمُرْجِفُوْنَ فِى الْمَدِيْنَةِ لَنُغْرِيَنَّكَ بِهِمْ ثُمَّ لَا يُجَاوِرُوْنَكَ فِيْهَآ اِلَّا قَلِيْلًا

مَلْعُوْنِيْنَ اَيْنَمَا ثُقِفُوْٓا اُخِذُوْا وَقُتِّلُوْا تَقْتِيْلًا	लानत कए गए; जहा कहीं व मलि, पकड़ जाए और सख़्ती स कतल कए जाए।	**61**
سُنَّةَ اللّٰهِ فِى الَّذِيْنَ خَلَوْا مِنْ قَبْلُ وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّةِ اللّٰهِ تَبْدِيْلًا	यह अलल़ाह की सन्नत ह जो पहल वालो म रही, और त अलल़ाह की सन्नत म कोई बदलाव नही पाएगा।	**62**
يَسْـَٔلُكَ النَّاسُ عَنِ السَّاعَةِ قُلْ اِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ اللّٰهِ وَمَا يُدْرِيْكَ لَعَلَّ السَّاعَةَ تَكُوْنُ قَرِيْبًا	लोग तझस उस घड़ी (क़यामत) क बार म पछत ह कहो, 'उसका इलम तो बस अलल़ाह क पास ह' और तझ क्या मालूम, शायद वह घड़ी क़रीब हो।	**63**
اِنَّ اللّٰهَ لَعَنَ الْكٰفِرِيْنَ وَاَعَدَّ لَهُمْ سَعِيْرًا	नशि़ति रूप स, अलल़ाह न काफरि पर लानत की और उनक लए सलुगती आग तयैार की,	**64**
خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا لَا يَجِدُوْنَ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا	जसिम व हमशेा रहगे; उनह न कोई सरपरसत मलिगेा और न मददगार।	**65**
يَوْمَ تُقَلَّبُ وُجُوْهُهُمْ فِى النَّارِ يَقُوْلُوْنَ يٰلَيْتَنَآ اَطَعْنَا اللّٰهَ وَاَطَعْنَا الرَّسُوْلَا	जसि दनि उनक चहेर आग म पलट जाएँगे, व कहगे, 'काश हमन अलल़ाह और उसक रसूल की इताअत की होती!'	**66**
وَقَالُوْا رَبَّنَآ اِنَّآ اَطَعْنَا سَادَتَنَا وَكُبَرَاءَنَا فَاَضَلُّوْنَا السَّبِيْلَا	और व कहगे, 'ऐ हमार रब! हमन अपन सरदारो और अपन बड़ो की बात मानी, तो उनहोन हम रासत स भटका दया।'	**67**
رَبَّنَآ اٰتِهِمْ ضِعْفَيْنِ مِنَ الْعَذَابِ وَالْعَنْهُمْ لَعْنًا كَبِيْرًا	ऐ हमार रब! उनह दोगना अज़ाब द और उन पर बड़ी लानत कर।	**68**
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ اٰذَوْا مُوْسٰى فَبَرَّاَهُ اللّٰهُ مِمَّا قَالُوْا وَكَانَ عِنْدَ اللّٰهِ وَجِيْهًا	ऐ ईमान वालो! मूसा को तकलीफ दने वालो की तरह न बनो, फरि अलल़ाह न उनह उस (बोहतान) स पाक कर दया जो उनहोन कहा। और वह अलल़ाह क नज़दीक इज़्ज़त वाला था।	**69**
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَقُوْلُوْا قَوْلًا سَدِيْدًا	ऐ ईमान वालो! अलल़ाह स डरत रहो और सच्ची बात कहो,	**70**
يُّصْلِحْ لَكُمْ اَعْمَالَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَقَدْ فَازَ فَوْزًا عَظِيْمًا	ताकि वह तमुहार कामो को सधुार और तमुहार गनुाहो को माफ़ कर। और जो कोई अलल़ाह और उसक रसूल की इताअत करगेा, नशि़ति रूप स, उसन बहत बड़ी कामयाबी हासलि की।	**71**
اِنَّا عَرَضْنَا الْاَمَانَةَ عَلَى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَالْجِبَالِ فَاَبَيْنَ اَنْ يَّحْمِلْنَهَا وَاَشْفَقْنَ مِنْهَا وَحَمَلَهَا الْاِنْسَانُ اِنَّهٗ كَانَ ظَلُوْمًا جَهُوْلًا	नशि़ति रूप स, हमन अमानत को आकाशो, धरती और पहाड़ो पर पशे कया, तो उनहोन उस उठान स इंकार कर दया और उसस डर गए, लकेनि इंसान न उस उठा लया। नशि़ति रूप स, वह बहत ज़ालमि, बहत जाहलि ह।	**72**

لِّيُعَذِّبَ اللّٰهُ الْمُنٰفِقِيْنَ وَالْمُنٰفِقٰتِ وَالْمُشْرِكِيْنَ وَالْمُشْرِكٰتِ وَيَتُوْبَ اللّٰهُ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا	तार्कि अल्लाह मुनाफिक मर्दों और औरतों और मुशरिक मर्दों और औरतों को अज़ाब दे, और मोमिन मर्दों और औरतों की तौबा कबूल करे और अल्लाह बहुत माफ़ करने वाला, बहुत रहम करने वाला है।	**73**

छंदों की संख्या	سبأ	مكية
५४	साबा - 34	मक्की

بسم الله الرحمن الرحيم

साबा (सबा)

1	सारी तारीफ़ अल्लाह के लिए है जिसके पास वह सब है जो आकाशों में और धरती पर है और आख़िरत में भी सारी तारीफ़ अल्लाह के लिए है और वही बहुत हिकमत वाला, बहुत ख़बर रखने वाला है।	اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ وَلَهُ الْحَمْدُ فِي الْاٰخِرَةِ وَهُوَ الْحَكِيْمُ الْخَبِيْرُ
2	वह जानता है जो धरती में दाख़िल होता है, जो उससे निकलता है, जो आकाश से उतरता है और जो उसकी तरफ़ चढ़ता है। और वही बहुत रहम करने वाला, बहुत माफ़ करने वाला है।	يَعْلَمُ مَا يَلِجُ فِي الْاَرْضِ وَمَا يَخْرُجُ مِنْهَا وَمَا يَنْزِلُ مِنَ السَّمَاۤءِ وَمَا يَعْرُجُ فِيْهَا وَهُوَ الرَّحِيْمُ الْغَفُوْرُ
3	और काफ़िर लोग कहते हैं, 'क़ियामत का दिन हम पर नहीं आएगा।' कहो, 'ज़रूर आएगा, मेरे रब की क़सम जो ग़ैब को जानता है, क़ियामत ज़रूर तुम पर आएगी। उसके लिए कुछ भी छिपा नहीं, चाहे वह ज़र्रा बराबर हो, आकाशों में हो या धरती पर, उससे छोटा हो या बड़ा, सब कुछ साफ़ किताब (लौह मकफ़ूज़) में (लिखा) है,	وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَا تَاْتِيْنَا السَّاعَةُ قُلْ بَلٰى وَرَبِّيْ لَتَاْتِيَنَّكُمْ عٰلِمِ الْغَيْبِ لَا يَعْزُبُ عَنْهُ مِثْقَالُ ذَرَّةٍ فِي السَّمٰوٰتِ وَلَا فِي الْاَرْضِ وَلَاۤ اَصْغَرُ مِنْ ذٰلِكَ وَلَاۤ اَكْبَرُ اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ
4	ताकि वह (अल्लाह) उन लोगों को बदला दे जो ईमान लाए और नेक काम किए। उनके लिए माफ़ी और इज़्ज़त वाला रिज़्क़ (जन्नत) है।	لِّيَجْزِيَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ كَرِيْمٌ
5	और जो लोग हमारी आयतों के ख़िलाफ़ कोशिश करते हैं यह समझकर कि वे (हमारे अज़ाब को) नाकाम कर देंगे, उनके लिए अज़ाब है, यानी बहुत दर्दनाक अज़ाब।	وَالَّذِيْنَ سَعَوْ فِيْۤ اٰيٰتِنَا مُعٰجِزِيْنَ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مِّنْ رِّجْزٍ اَلِيْمٌ
6	और जिन्हें इल्म दिया गया (अहले किताब) वे समझते हैं कि तुझ पर (मुहम्मद) तेरे रब की तरफ़ से जो वह्य उतारी गई, वही हक़ है और वह बहुत ताक़तवर, बहुत तारीफ़ वाले (अल्लाह) के रास्ते की हिदायत देती है।	وَيَرَى الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ الَّذِيْۤ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ هُوَ الْحَقَّ وَيَهْدِيْۤ اِلٰى صِرَاطِ الْعَزِيْزِ الْحَمِيْدِ
7	और काफ़िर लोग (अपने साथियों से) कहते हैं, 'क्या हम तुम्हें एक ऐसे शख़्स की ख़बर दें जो तुम्हें बताता है कि जब तुम्हारा जिस्म पूरी तरह टुकड़े-टुकड़े हो जाएगा, तो तुम ज़रूर नई तख़लीक़ में (उठाए) जाओगे।'	وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا هَلْ نَدُلُّكُمْ عَلٰى رَجُلٍ يُّنَبِّئُكُمْ اِذَا مُزِّقْتُمْ كُلَّ مُمَزَّقٍ اِنَّكُمْ لَفِيْ خَلْقٍ جَدِيْدٍ
8	क्या उसने अल्लाह के ख़िलाफ़ झूठ गढ़ लिया या वह पागल है?' (नहीं), बल्कि जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं लाते, वे अज़ाब और बहुत दूर की गुमराही में हैं।	اَفْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَمْ بِهٖ جِنَّةٌ بَلِ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ فِي الْعَذَابِ وَالضَّلٰلِ الْبَعِيْدِ

9	तो क्या उनहोंने आकाश और धरती को नहीं देखा जो उनके सामने और पीछे है? अगर हम चाहें, तो उनहें धरती में धँसा दें या उन पर आकाश से टुकड़े गिराएँ। निश्चित रूप से, इसमें हर उस बन्दे के लिए निशानी है जो (अल्लाह की तरफ) रुजू करता है।	اَفَلَمْ يَرَوْا اِلٰى مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ مِّنَ السَّمَاۤءِ وَالْاَرْضِ اِنْ نَّشَاْ نَخْسِفْ بِهِمُ الْاَرْضَ اَوْ نُسْقِطْ عَلَيْهِمْ كِسَفًا مِّنَ السَّمَاۤءِ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّكُلِّ عَبْدٍ مُّنِيْبٍ
10	और निश्चित रूप से, हमने दाऊद को अपनी तरफ़ से मेहरबानी दी। (हमने फ़रमाया), 'ऐ पहाड़ो! और परिंदो! दाऊद के साथ बार-बार तस्बीह करो,' और हमने उनके लिए लोहा नरम कर दिया,	وَلَقَدْ اٰتَيْنَا دَاوٗدَ مِنَّا فَضْلًا ۗيٰجِبَالُ اَوِّبِيْ مَعَهٗ وَالطَّيْرَ ۚوَاَلَنَّا لَهُ الْحَدِيْدَ
11	(यानी) बड़ी-बड़ी ज़िरह बनाओ और उनकी बुनाई का अंदाज़ा रखो; और नेक काम करो। निश्चित रूप से, मैं तुम्हारे हर काम को देखने वाला हूँ जो तुम करते हो।	اَنِ اعْمَلْ سٰبِغٰتٍ وَّقَدِّرْ فِى السَّرْدِ وَاعْمَلُوْا صَالِحًا ۗاِنِّيْ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ
12	और सुलैमान के लिए हमने हवा को (ताबे कर दिया), जिसकी सुबह की सैर एक महीने की सैर के बराबर थी और उसकी शाम की सैर एक महीने की सैर के बराबर थी और हमने उनके लिए ताँबे का सैलाब बहाया। और कुछ जिन्न उनके सामने (उनके हुक्म के तहत) काम करते थे, उनके रब की इजाज़त से। और उनमें से जो कोई हमारे हुक्म से भटके, हम उसे आग की लपटों वाले अज़ाब का मज़ा चखाते हैं।	وَلِسُلَيْمٰنَ الرِّيْحَ غُدُوُّهَا شَهْرٌ وَّرَوَاحُهَا شَهْرٌ ۚوَاَسَلْنَا لَهٗ عَيْنَ الْقِطْرِ ۗوَمِنَ الْجِنِّ مَنْ يَّعْمَلُ بَيْنَ يَدَيْهِ بِاِذْنِ رَبِّهٖ ۗوَمَنْ يَّزِغْ مِنْهُمْ عَنْ اَمْرِنَا نُذِقْهُ مِنْ عَذَابِ السَّعِيْرِ
13	वे (जिन्न) सुलैमान के लिए वह सब बनाते थे जो वह चाहता था, जैसे कि ऊँची इमारतें, मूर्तियाँ, तश्तरियाँ जो तालाब की तरह (बड़ी) थीं और हाँडियाँ जो (चूल्हे पर) स्थिर थीं। ऐ दाऊद के खानदान! शुक्र के लिए काम करो। और मेरे बन्दों में से बहुत कम शुक्र करने वाले हैं।	يَعْمَلُوْنَ لَهٗ مَا يَشَاۤءُ مِنْ مَّحَارِيْبَ وَتَمَاثِيْلَ وَجِفَانٍ كَالْجَوَابِ وَقُدُوْرٍ رّٰسِيٰتٍ ۗاِعْمَلُوْٓا اٰلَ دَاوٗدَ شُكْرًا ۗوَقَلِيْلٌ مِّنْ عِبَادِيَ الشَّكُوْرُ
14	तो जब हमने उस (सुलैमान) की मौत मुक़र्रर की, तो उनकी मौत की खबर उनहें (जिन्नों को) किसी ने नहीं दी सिवाय दीमक के, जो उनकी लाठी खा रही थी। तो जब वह गिर पड़े, तो जिन्नों को मालूम हुआ कि अगर वे ग़ैब को जानते होते, तो ज़िल्लत वाले अज़ाब में न रहते।	فَلَمَّا قَضَيْنَا عَلَيْهِ الْمَوْتَ مَا دَلَّهُمْ عَلٰى مَوْتِهٖٓ اِلَّا دَاۤبَّةُ الْاَرْضِ تَاْكُلُ مِنْسَاَتَهٗ ۚفَلَمَّا خَرَّ تَبَيَّنَتِ الْجِنُّ اَنْ لَّوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ الْغَيْبَ مَا لَبِثُوْا فِى الْعَذَابِ الْمُهِيْنِ
15	निश्चित रूप से, सबा की कौम के लिए उनके रहने की जगह में (रब की) निशानी थी, यानी दाईं और बाईं तरफ़ दो बाग, (उनसे कहा गया), 'अपने रब के रिज़्क़ से खाओ और उसका शुक्र करो। (तुम्हारा) मुल्क अच्छा (आरामदेह) मुल्क है और (तुम्हारा रब) बहुत माफ़ करने वाला रब है।'	لَقَدْ كَانَ لِسَبَاٍ فِيْ مَسْكَنِهِمْ اٰيَةٌ ۗجَنَّتٰنِ عَنْ يَّمِيْنٍ وَّشِمَالٍ ۗكُلُوْا مِنْ رِّزْقِ رَبِّكُمْ وَاشْكُرُوْا لَهٗ ۗبَلْدَةٌ طَيِّبَةٌ وَّرَبٌّ غَفُوْرٌ
16	लेकिन उनहोंने मुँह फेर लिया, तो हमने उन पर बड़ा सैलाब भेजा और उनके दोनों बागों को ऐसे दो बागों से बदल दिया जो कड़वे फल वाले (पेड़ों), खारनमा और थोड़े से सिदर के पेड़ों से भरे थे।	فَاَعْرَضُوْا فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ سَيْلَ الْعَرِمِ وَبَدَّلْنٰهُمْ بِجَنَّتَيْهِمْ جَنَّتَيْنِ ذَوَاتَيْ اُكُلٍ خَمْطٍ وَّاَثْلٍ وَّشَيْءٍ مِّنْ سِدْرٍ قَلِيْلٍ
17	इस तरह हमने उनकी कुफ़्र की वजह से उनहें सजा दी। और हम (ऐसी) सजा सिर्फ़ बहुत काफिर लोगों को ही देते हैं।	ذٰلِكَ جَزَيْنٰهُمْ بِمَا كَفَرُوْا ۗوَهَلْ نُجٰزِيْٓ اِلَّا الْكَفُوْرَ

وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ الْقُرَى الَّتِيْ بٰرَكْنَا فِيْهَا قُرًى ظَاهِرَةً وَّقَدَّرْنَا فِيْهَا السَّيْرَ سِيْرُوْا فِيْهَا لَيَالِيَ وَاَيَّامًا اٰمِنِيْنَ	**18**	और हमने उनके (सबा की कौम) और उन मुल्कों के बीच, जिन्हें हमने बरकत दी (शाम), कई क़रीबी बस्तियाँ बनाईं और उन बस्तियों के बीच सफ़र के मरहले मुक़र्रर किए। उन बस्तियों में रात और दिन अमन से सफ़र करो।
فَقَالُوْا رَبَّنَا بٰعِدْ بَيْنَ اَسْفَارِنَا وَظَلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ فَجَعَلْنٰهُمْ اَحَادِيْثَ وَمَزَّقْنٰهُمْ كُلَّ مُمَزَّقٍ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُوْرٍ	**19**	तो उन्होंने कहा, 'ऐ हमारे रब, हमारी सफ़र के मरहलों को दूर कर दे,' और (इसका मतलब) उन्होंने अपने आप पर ज़ुल्म किया; तो हमने उन्हें बातों का मज़मून बना दिया और उन्हें पूरी तरह ततिर-बतिर कर दिया। निश्चित रूप से, इसमें हर उस शख़्स के लिए निशानियाँ हैं जो सब्र करने वाला और शुक्र करने वाला हो।
وَلَقَدْ صَدَّقَ عَلَيْهِمْ اِبْلِيْسُ ظَنَّهٗ فَاتَّبَعُوْهُ اِلَّا فَرِيْقًا مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ	**20**	और निश्चित रूप से, इबलीस ने उनके बारे में अपने गुमान को सही पाया, तो उन्होंने उसकी पैरवी की, सिवाय कुछ मोमिनों के।
وَمَا كَانَ لَهٗ عَلَيْهِمْ مِّنْ سُلْطٰنٍ اِلَّا لِنَعْلَمَ مَنْ يُّؤْمِنُ بِالْاٰخِرَةِ مِمَّنْ هُوَ مِنْهَا فِيْ شَكٍّ وَرَبُّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ حَفِيْظٌ	**21**	और उस (इबलीस) को उनके ऊपर कोई इख़्तियार नहीं था, सिवाय इसके कि हम यह जुदा कर दें कि कौन आख़िरत पर ईमान लाता है और कौन उसमें शक करता है। और तेरा रब हर चीज़ का निगरानी करने वाला है।
قُلِ ادْعُوا الَّذِيْنَ زَعَمْتُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ لَا يَمْلِكُوْنَ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ فِي السَّمٰوٰتِ وَلَا فِي الْاَرْضِ وَمَا لَهُمْ فِيْهِمَا مِنْ شِرْكٍ وَّمَا لَهٗ مِنْهُمْ مِّنْ ظَهِيْرٍ	**22**	कहो (मुहम्मद), 'उन लोगों को बुलाओ जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा (ख़ुदा) समझते हो! उनके पास आकाशों और धरती में ज़र्रा बराबर भी इख़्तियार नहीं है, और न उनके पास (तख़लीक़ में) कोई हिस्सा है और न उनमें से कोई उसका मददगार है।'
وَلَا تَنْفَعُ الشَّفَاعَةُ عِنْدَهٗٓ اِلَّا لِمَنْ اَذِنَ لَهٗ حَتّٰٓى اِذَا فُزِّعَ عَنْ قُلُوْبِهِمْ قَالُوْا مَاذَا قَالَ رَبُّكُمْ قَالُوا الْحَقَّ وَهُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيْرُ	**23**	और उसके पास सिफ़ारिश सिर्फ़ उसी के लिए फ़ायदा देती है जिसके लिए उसने इजाज़त दी। यहाँ तक कि जब उनके दिलों से डर निकाल दिया जाता है, वे कहते हैं, 'तेरे रब ने क्या फ़रमाया?' वे जवाब देते हैं, '(वह बात) जो हक़ है,' और वही बहुत बुलंद, बहुत बड़ा है।
قُلْ مَنْ يَّرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ قُلِ اللّٰهُ وَاِنَّآ اَوْ اِيَّاكُمْ لَعَلٰى هُدًى اَوْ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ	**24**	कहो (मुहम्मद), 'कौन तुम्हें आकाश और धरती से रिज़्क़ देता है?' कहो, 'अल्लाह,' और निश्चित रूप से, हम या तुम (मुशरिक लोग), ज़रूर हिदायत पर हैं या साफ़ गुमराही में।
قُلْ لَّا تُسْـَٔلُوْنَ عَمَّآ اَجْرَمْنَا وَلَا نُسْـَٔلُ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ	**25**	कहो, 'तुमसे हमारे किए की जवाबदेही नहीं माँगी जाएगी और न हमसे तुम्हारे किए की जवाबदेही माँगी जाएगी।'
قُلْ يَجْمَعُ بَيْنَنَا رَبُّنَا ثُمَّ يَفْتَحُ بَيْنَنَا بِالْحَقِّ وَهُوَ الْفَتَّاحُ الْعَلِيْمُ	**26**	कहो, 'हमारा रब हम सबको जमा करेगा, फिर वह हमारे बीच हक़ के साथ फ़ैसला करेगा। और वही बहुत फ़ैसला करने वाला, बहुत जानने वाला है।'
قُلْ اَرُوْنِيَ الَّذِيْنَ اَلْحَقْتُمْ بِهٖ شُرَكَاءَ كَلَّا بَلْ هُوَ اللّٰهُ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ	**27**	कहो, 'मुझे उन शरीकों को दिखाओ जिन्हें तुमने उसके साथ मिलाया।' हरगिज़ नहीं, बल्कि वही अल्लाह बहुत ताक़तवर, बहुत हिकमत वाला है।

28	और हमन`े तुझ` (मुहम्मद) सारी इंसानी उम्मतों क`े लिए ख़ुशख़बरी दने`ेवाला और आगाह करन`ेवाला बनाकर भेजा, लकेनि ज़्यादातर लोग नहीं जानत`े।	وَمَآ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا كَآفَّةً لِّلنَّاسِ بَشِيْرًا وَّنَذِيْرًا وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ
29	और व`े कहत`े ह,ै 'यह वादा कब (पूरा होगा), अगर तुम सच`े हो?'	وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ
30	कहो, 'तुम्हार`े लिए एक वाद`े का दनि (क़यिामत) ह,ै तुम न उसम`ै एक पल की दरेी माँग सकत`े हो और न जलदी।'	قُلْ لَّكُمْ مِّيْعَادُ يَوْمٍ لَّا تَسْتَأْخِرُوْنَ عَنْهُ سَاعَةً وَّلَا تَسْتَقْدِمُوْنَ
31	और काफरि लोग कहत`े ह,ै 'हम न इस क़ुरआन पर ईमान लाएँग` और न उस कताि ब पर जो इसस`े पहल`े थी।' और (कतिना ख़ौफनाक होगा) अगर तू दखे़ ल`े जब ज़ालमि लोग अपन`े रब क`े सामन`े खड़े कएि जाएँ, उनम`े से कछु एक-दूसर`े को बात`ै लौटाएँ; जो लोग कमज़ोर समझ`े गए, व`े उनस`े जो घमंड करत`े थ,े कहग`ै, 'अगर तुम न होत,े तो हम ज़रूर मोमनि होत।े'	وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَنْ نُّؤْمِنَ بِهٰذَا الْقُرْاٰنِ وَلَا بِالَّذِيْ بَيْنَ يَدَيْهِ وَلَوْ تَرٰٓى اِذِ الظّٰلِمُوْنَ مَوْقُوْفُوْنَ عِنْدَ رَبِّهِمْ يَرْجِعُ بَعْضُهُمْ اِلٰى بَعْضِ ِالْقَوْلَ يَقُوْلُ الَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْا لِلَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا لَوْلَآ اَنْتُمْ لَكُنَّا مُؤْمِنِيْنَ
32	जो लोग घमंड करत`े थ,े व`े उनस`े जो कमज़ोर समझ`े गए, कहग`ै, 'क्या हमन`े तुम्ह`ै हदिायत स`े रोका जब वह तुम तक आई? (नहीं!) बल्क़ि तुम ख़ुद गुनाहगार थ।े'	قَالَ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا لِلَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْٓا اَنَحْنُ صَدَدْنٰكُمْ عَنِ الْهُدٰى بَعْدَ اِذْ جَاۗءَكُمْ بَلْ كُنْتُمْ مُّجْرِمِيْنَ
33	और जो लोग कमज़ोर समझ`े गए, व`े उनस`े जो घमंड करत`े थ,े कहग`ै, '(नहीं!) बल्क़ि तुम्हारी रात और दनि की मक्क़ारी (हम`ै रोकती थी), जब तुम हम`ै हुक़्म दते`े थ`े कि हम अल्लाह का इंकार कर`ै और उसक`े लिए शरीक बनाएँ।' और जब व`े अज़ाब दखे़ग`ै, तो पछतावा ज़ाहरि करग`ै। और हमन`े काफरिों क`े गल`े म`ै ज़ंजीर`ै डाल दी। उन्ह`ै सरिफ़ उसी का बदला दयिा जाता ह`ै जो उन्होंन`े कयिा।	وَقَالَ الَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْا لِلَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا بَلْ مَكْرُ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ اِذْ تَاْمُرُوْنَنَآ اَنْ نَّكْفُرَ بِاللّٰهِ وَنَجْعَلَ لَهٗٓ اَنْدَادًا وَاَسَرُّوا النَّدَامَةَ لَمَّا رَاَوُا الْعَذَابَ وَجَعَلْنَا الْاَغْلٰلَ فِيْٓ اَعْنَاقِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا هَلْ يُجْزَوْنَ اِلَّا مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ
34	और जब भी हमन`े किसी बस्त़ी म`ै कोई आगाह करन`ेवाला भजेा, उस बस्त़ी क`े रईस लोग कहत`े थ,े 'हम उस चीज़ को ज़रूर इंकार करत`े ह`ै जसिक`े साथ तुम भजे`े गए हो।'	وَمَآ اَرْسَلْنَا فِيْ قَرْيَةٍ مِّنْ نَّذِيْرٍ اِلَّا قَالَ مُتْرَفُوْهَآ اِنَّا بِمَآ اُرْسِلْتُمْ بِهٖ كٰفِرُوْنَ
35	और व`े कहत`े थ,े 'हमार`े पास तुमस`े ज़्यादा माल और औलाद ह`ै और हम`ै अज़ाब नहीं होगा।'	وَقَالُوْا نَحْنُ اَكْثَرُ اَمْوَالًا وَّاَوْلَادًا وَّمَا نَحْنُ بِمُعَذَّبِيْنَ
36	कहो, 'नशि्चति रूप स,े मरेा रब जसिक`े लिए चाहता ह`ै रज़िक़ को वुसअत दतेा ह`ै और जसिक`े लिए चाहता ह`ै तंग करता ह,ै लकेनि ज़्यादातर लोग नहीं जानत।े'	قُلْ اِنَّ رَبِّيْ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَاۗءُ وَيَقْدِرُ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ
37	और न तुम्हारा माल और न तुम्हारी औलाद वह चीज़ ह`ै जो तुम्ह`े हमार`े क़रीब लाती ह;ै बल्क़ि जो लोग ईमान लाए और नके काम कएि, वही ह`ै जो अपन`े कएि क`े बदल`े दोगुना सवाब पाएँग;े और व`े जन्नत की बलुंद जगहों म`ै अमन स`े होंग।े	وَمَآ اَمْوَالُكُمْ وَلَآ اَوْلَادُكُمْ بِالَّتِيْ تُقَرِّبُكُمْ عِنْدَنَا زُلْفٰٓى اِلَّا مَنْ اٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَاُولٰۗىِٕكَ لَهُمْ جَزَاۗءُ الضِّعْفِ بِمَا عَمِلُوْا وَهُمْ فِي الْغُرُفٰتِ اٰمِنُوْنَ

38	और जो लोग हमारी आयतों के ख़िलाफ़ कोशिश करते हैं ताकि (हमारे अज़ाब को) नाकाम कर दें, वही लोग अज़ाब में डाले जाएँगे।	وَالَّذِيْنَ يَسْعَوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِنَا مُعٰجِزِيْنَ اُولٰٓئِكَ فِي الْعَذَابِ مُحْضَرُوْنَ
39	कहो, 'निश्चित रूप से मेरा रब अपने बन्दों में से जिसके लिए चाहता है रिज़्क़ को वुसअत देता है और तंग करता है।' और जो कुछ तुम ख़र्च करते हो, अल्लाह उसकी जगह देता है और वही सबसे बेहतर रिज़्क़ देने वाला है।'	قُلْ اِنَّ رَبِّيْ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَاۗءُ مِنْ عِبَادِهٖ وَيَقْدِرُ لَهٗ وَمَآ اَنْفَقْتُمْ مِّنْ شَيْءٍ فَهُوَ يُخْلِفُهٗ وَهُوَ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ
40	और (याद करो) उस दिन (जब) अल्लाह उन सबको जमा करेगा, फिर वह फ़रिश्तों से फ़रमाएगा, 'क्या ये लोग तुम्हारी इबादत करते थे?'	وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ جَمِيْعًا ثُمَّ يَقُوْلُ لِلْمَلٰۗىِٕكَةِ اَهٰٓؤُلَاۗءِ اِيَّاكُمْ كَانُوْا يَعْبُدُوْنَ
41	फ़रिश्ते जवाब देंगे, 'तू बहत्त पाक है तू ही हमारा सरपरस्त है, वे नहीं; बल्कि उन्होंने जिन्नों की इबादत की; उनमें से ज़्यादातर उन पर ईमान लाते थे।'	قَالُوْا سُبْحٰنَكَ اَنْتَ وَلِيُّنَا مِنْ دُوْنِهِمْ بَلْ كَانُوْا يَعْبُدُوْنَ الْجِنَّ اَكْثَرُهُمْ بِهِمْ مُّؤْمِنُوْنَ
42	तो उस दिन तुममें से कोई एक-दूसरे को न फ़ायदा पहुँचा सकता है और न नुक़सान। और हम ज़ालिमों से कहेंगे, 'उस जहन्नम के अज़ाब को चखो जिसे तुम झुठलाते थे।'	فَالْيَوْمَ لَا يَمْلِكُ بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ نَّفْعًا وَّلَا ضَرًّا وَنَقُوْلُ لِلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ذُوْقُوْا عَذَابَ النَّارِ الَّتِيْ كُنْتُمْ بِهَا تُكَذِّبُوْنَ
43	और जब हमारी साफ़ आयतें उनके सामने पढ़ी जाती हैं, तो वे कहते हैं, 'यह शख़्स तो बस तुम्हें उस चीज़ से रोकना चाहता है जिसकी तुम्हारे बाप-दादा इबादत करते थे,' और वे कहते हैं, '(क़ुरआन) यह तो बस गढ़ा हुआ झूठ है।' और काफ़िर लोग हक़ के बारे में, जब वह उनके पास आया, कहते हैं, 'यह तो बस साफ़ जादू है।'	وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ قَالُوْا مَا هٰذَآ اِلَّا رَجُلٌ يُّرِيْدُ اَنْ يَّصُدَّكُمْ عَمَّا كَانَ يَعْبُدُ اٰبَاۗؤُكُمْ وَقَالُوْا مَا هٰذَآ اِلَّآ اِفْكٌ مُّفْتَرًى وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلْحَقِّ لَمَّا جَاۗءَهُمْ اِنْ هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ
44	और हमने उन्हें न कोई किताबें दीं जो वे पढ़ते हों और न तुमसे (मुहम्मद) पहले उनके पास कोई आगाह करने वाला भेजा।	وَمَآ اٰتَيْنٰهُمْ مِّنْ كُتُبٍ يَّدْرُسُوْنَهَا وَمَآ اَرْسَلْنَآ اِلَيْهِمْ قَبْلَكَ مِنْ نَّذِيْرٍ
45	और उनसे पहले वालों ने (रसूलों को) झुठलाया, हालाँकि (काफ़िर मक्का वालों को) उसका दसवाँ हिस्सा भी नहीं मिला जो हमने पहले वालों को दिया था, फिर भी उन्होंने मेरे रसूलों को झुठलाया। तो (देखो) मेरा ग़ुस्सा कैसा था।	وَكَذَّبَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَمَا بَلَغُوْا مِعْشَارَ مَآ اٰتَيْنٰهُمْ فَكَذَّبُوْا رُسُلِيْ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيْرِ
46	कहो, 'मैं तुम्हें सिर्फ़ एक बात की नसीहत करता हूँ कि तुम अल्लाह के लिए (इख़लास के साथ) दो-दो या अकेले-अकेले खड़े हो, फिर (मुहम्मद के बारे में) ग़ौर करो। तुम्हारा यह साथी ज़रा भी पागल नहीं है वह तो बस तुम्हारे लिए सख़्त अज़ाब से पहले आगाह करने वाला है।'	قُلْ اِنَّمَآ اَعِظُكُمْ بِوَاحِدَةٍ اَنْ تَقُوْمُوْا لِلّٰهِ مَثْنٰى وَفُرَادٰى ثُمَّ تَتَفَكَّرُوْا مَا بِصَاحِبِكُمْ مِّنْ جِنَّةٍ اِنْ هُوَ اِلَّا نَذِيْرٌ لَّكُمْ بَيْنَ يَدَيْ عَذَابٍ شَدِيْدٍ
47	कहो (मुहम्मद), 'जो कुछ मैंने तुमसे बदला माँगा, वह तुम्हारे लिए है। मेरा बदला तो बस अल्लाह से है, और वह हर चीज़ को ख़ूब जानता है।'	قُلْ مَا سَاَلْتُكُمْ مِّنْ اَجْرٍ فَهُوَ لَكُمْ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ وَهُوَ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ
48	कहो, 'निश्चित रूप से मेरा रब हक़ को वह्य करता है। वह सारी ग़ैब को ख़ूब जानता है।'	قُلْ اِنَّ رَبِّيْ يَقْذِفُ بِالْحَقِّ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ

قُلْ جَاءَ الْحَقُّ وَمَا يُبْدِئُ الْبَاطِلُ وَمَا يُعِيْدُ	कहो, 'हक़ आ चुका है और बातिल न शुरू कर सकता है और न दोहरा सकता है।'	**49**
قُلْ اِنْ ضَلَلْتُ فَاِنَّمَآ اَضِلُّ عَلٰى نَفْسِيْ وَاِنِ اهْتَدَيْتُ فَبِمَا يُوْحِيْٓ اِلَيَّ رَبِّيْ اِنَّهٗ سَمِيْعٌ قَرِيْبٌ	कहो, 'अगर मैं गुमराह हुआ, तो नफ़्सि रूप से मैं अपने लिए गुमराह हुआ; और अगर मुझे हिदायत मिली, तो यह उस वह्य की वजह से है जो मेरा रब मुझ पर उतारता है। नफ़्सि रूप से, वह बहुत सुनने वाला, बहुत क़रीब है।'	**50**
وَلَوْ تَرٰٓى اِذْ فَزِعُوْا فَلَا فَوْتَ وَاُخِذُوْا مِنْ مَّكَانٍ قَرِيْبٍ	और (कितना ख़ौफनाक होगा) अगर तू उन्हें (काफ़िरों को) देखे जब वे (क़ियामत के दिन) डर से घबरा जाएँ; फिर वे बच नहीं सकेंगे और उन्हें क़रीबी जगह से पकड़ लिया जाएगा (जहन्नम में ले जाने के लिए),	**51**
وَّقَالُوْٓا اٰمَنَّا بِهٖ وَاَنّٰى لَهُمُ التَّنَاوُشُ مِنْ مَّكَانٍ بَعِيْدٍ	और (जब) वे कहेंगे, 'हम उस पर ईमान लाए।' लेकिन वे इतनी दूर की जगह से (ईमान) कैसे हासिल कर सकते हैं?	**52**
وَقَدْ كَفَرُوْا بِهٖ مِنْ قَبْلُ وَيَقْذِفُوْنَ بِالْغَيْبِ مِنْ مَّكَانٍۢ بَعِيْدٍ	और नफ़्सि रूप से, उन्होंने इससे पहले अल्लाह को इंकार किया; और वे ग़ैब की बात को दूर की जगह से झुठलाते थे।	**53**
وَحِيْلَ بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ مَا يَشْتَهُوْنَ كَمَا فُعِلَ بِاَشْيَاعِهِمْ مِّنْ قَبْلُ اِنَّهُمْ كَانُوْا فِيْ شَكٍّ مُّرِيْبٍ	और उनके और उनकी ख़्वाहिशों के बीच रुकावट डाल दी गई, जैसा कि उनके जैसे पहले वालों के साथ किया गया। नफ़्सि रूप से, वे (दुनिया में) बहुत गहरे शक में थे।	**54**

छंदों की संख्या	فَاطِر	مكية
४५	फातिर - 35	मक्की

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

फातिर (सृष्टा)

1	सारी तारीफ़ अल्लाह के लिए है, जो आकाशों और धरती का ख़ालिक़ है, जिसने फ़रिश्तों को रसूल बनाया (तरह-तरह के काम निपटाने के लिए) जो परों वाले हैं, हर एक के (दो, तीन और चार) पर हैं। अल्लाह अपनी तख़लीक़ में जो चाहता है बढ़ाता है। निश्चित रूप से, अल्लाह हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है।	اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ فَاطِرِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ جَاعِلِ الْمَلٰٓئِكَةِ رُسُلًا اُولِيْٓ اَجْنِحَةٍ مَّثْنٰى وَثُلٰثَ وَرُبٰعَ يَزِيْدُ فِي الْخَلْقِ مَا يَشَآءُ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ
2	अल्लाह की जो रहमत इंसानों को दी गई, उसे कोई रोक नहीं सकता; और जो कुछ वह रोक ले, उसके बाद में कोई छुड़ा नहीं सकता। और वही बहुत ताक़तवर, बहुत हिकमत वाला है।	مَا يَفْتَحِ اللّٰهُ لِلنَّاسِ مِنْ رَّحْمَةٍ فَلَا مُمْسِكَ لَهَا وَمَا يُمْسِكْ فَلَا مُرْسِلَ لَهٗ مِنْۢ بَعْدِهٖ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ
3	ऐ इंसानो! अल्लाह की नेअमत को याद करो जो तुम पर है। क्या अल्लाह के सिवा कोई ख़ालिक़ है जो तुम्हें आकाश और धरती से रिज़्क़ दे? कोई ख़ुदा नहीं सिवाय उसके; तो तुम (तौहीद से) क्यों मुँह मोड़ते हो?	يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اذْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ هَلْ مِنْ خَالِقٍ غَيْرُ اللّٰهِ يَرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ فَاَنّٰى تُؤْفَكُوْنَ
4	और अगर वे तुझे (आगाह करने के बाद) झुठलाएँ, तो निश्चित रूप से, तुझसे पहले रसूलों को भी झुठलाया गया। और सारे काम अल्लाह की तरफ़ लौटाए जाते हैं।	وَاِنْ يُّكَذِّبُوْكَ فَقَدْ كُذِّبَتْ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِكَ وَاِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ
5	ऐ इंसानो! निश्चित रूप से, अल्लाह का वादा सच्चा है, तो दुनिया की ज़िंदगी तुम्हें धोखा न दे और न (शैतान) जो बड़ा धोखेबाज़ है, तुम्हें अल्लाह के बारे में धोखा दे।	يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ فَلَا تَغُرَّنَّكُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا وَلَا يَغُرَّنَّكُمْ بِاللّٰهِ الْغَرُوْرُ
6	निश्चित रूप से, शैतान तुम्हारा दुश्मन है, तो उसे दुश्मन ही समझो, क्योंकि निश्चित रूप से, शैतान सिर्फ़ अपनी जमात को बुलाता है ताकि वे आग की लपटों वाले जहन्नम के रहने वाले बनें।	اِنَّ الشَّيْطٰنَ لَكُمْ عَدُوٌّ فَاتَّخِذُوْهُ عَدُوًّا اِنَّمَا يَدْعُوْا حِزْبَهٗ لِيَكُوْنُوْا مِنْ اَصْحٰبِ السَّعِيْرِ
7	जो लोग काफ़िर हैं, उनके लिए बहुत सख़्त अज़ाब है और जो लोग ईमान लाए और नेक अमल करते हैं, उनके लिए माफ़ी और बड़ा सवाब है।	اَلَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ كَبِيْرٌ

8	तो क्या वह शख़्स जिसके बुरे काम को ख़ूबसूरत कर दिखाया गया, फिर वह उसे अच्छा समझता है? निश्चित रूप से, अल्लाह जिसे चाहता है गुमराह करता है और जिसे चाहता है हिदायत देता है तो (मुहम्मद) तू अपनी जान को उनके लिए ग़म में नाश न कर। निश्चित रूप से, अल्लाह ख़ूब जानता है जो वे करते हैं	اَفَمَنْ زُيِّنَ لَه سُوْءُ عَمَلِه فَرَاٰهُ حَسَنًا فَاِنَّ اللّٰهَ يُضِلُّ مَنْ يَّشَاۤءُ وَيَهْدِيْ مَنْ يَّشَاۤءُ فَلَا تَذْهَبْ نَفْسُكَ عَلَيْهِمْ حَسَرٰتٍ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِمَا يَصْنَعُوْنَ
9	और अल्लाह ही वह है जो हवाएँ भेजता है; फिर (वह हवा) बादलों को हिलाती है, तो हम उन बादलों को एक मरी हुई (बंजर) ज़मीन की तरफ़ ले जाते हैं, फिर उस बारिश से हम धरती को उसके मरने (सूखने) के बाद ज़िंदगी देते हैं। ऐसा ही क़ियामत का उठना है।	وَاللّٰهُ الَّذِيْٓ اَرْسَلَ الرِّيٰحَ فَتُثِيْرُ سَحَابًا فَسُقْنٰهُ اِلٰى بَلَدٍ مَّيِّتٍ فَاَحْيَيْنَا بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا كَذٰلِكَ النُّشُوْرُ
10	जो कोई इज़्ज़त चाहता है, तो (जान लो) सारी इज़्ज़त अल्लाह की है। उसी की तरफ़ उनके बात चढ़ती है, और नेक अमल को वह बुलंद करता है। और जो लोग बुराई की साज़िश करते हैं, उनके लिए बहुत सख़्त अज़ाब है, और उनकी बुरी साज़िश नाश हो जाएगी।	مَنْ كَانَ يُرِيْدُ الْعِزَّةَ فَلِلّٰهِ الْعِزَّةُ جَمِيْعًا اِلَيْهِ يَصْعَدُ الْكَلِمُ الطَّيِّبُ وَالْعَمَلُ الصَّالِحُ يَرْفَعُه وَالَّذِيْنَ يَمْكُرُوْنَ السَّيِّاٰتِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ وَمَكْرُ اُولٰۤئِكَ هُوَ يَبُوْرُ
11	और अल्लाह ने तुम्हें मिट्टी से बनाया, फिर नुत्फ़े से, फिर उसने तुम्हें जोड़े (मर्द और औरत) बनाया। और कोई औरत न गर्भ धारण करती है और न जनम देती है, मगर उसके इल्म से। और न किसी की उम्र बढ़ाई जाती है और न उसकी उम्र घटाई जाती है, मगर (यह सब) एक किताब (लौह मफ़्फ़ूज़) में (लिखा) है। निश्चित रूप से, यह अल्लाह के लिए आसान है।	وَاللّٰهُ خَلَقَكُمْ مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ جَعَلَكُمْ اَزْوَاجًا وَمَا تَحْمِلُ مِنْ اُنْثٰى وَلَا تَضَعُ اِلَّا بِعِلْمِه وَمَا يُعَمَّرُ مِنْ مُّعَمَّرٍ وَّلَا يُنْقَصُ مِنْ عُمُرِه اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ اِنَّ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرٌ
12	और दो समंदर एकसमान नहीं हैं; यह मीठा, ताज़ा, पीने में अच्छा और वह खारा और कड़वा। और (हर एक समंदर से) तुम ताज़ा गोश्त खाते हो और ज़ेवर निकालते हो जो तुम पहनते हो, और वहाँ तुम कश्तियाँ देखते हो जो समंदर को चीरती हुई चलती हैं ताकि तुम उसकी महेरबानी तलाश करो और ताकि तुम शुक्र करो।	وَمَا يَسْتَوِى الْبَحْرٰنِ هٰذَا عَذْبٌ فُرَاتٌ سَآئِغٌ شَرَابُه وَهٰذَا مِلْحٌ اُجَاجٌ وَمِنْ كُلٍّ تَاْكُلُوْنَ لَحْمًا طَرِيًّا وَّتَسْتَخْرِجُوْنَ حِلْيَةً تَلْبَسُوْنَهَا وَتَرَى الْفُلْكَ فِيْهِ مَوَاخِرَ لِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِه وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ
13	वह रात को दिन में दाख़िल करता है और दिन को रात में दाख़िल करता है और सूरज और चाँद को ताबे करता है, हर एक अपने मुक़र्रर वक़्त तक चलता है। यही अल्लाह तुम्हारा रब है, उसी की सारी बादशाही है। और जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो, वे एक तिल की छिलके जितना भी मालिक नहीं हैं।	يُوْلِجُ الَّيْلَ فِى النَّهَارِ وَيُوْلِجُ النَّهَارَ فِى الَّيْلِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ كُلٌّ يَّجْرِيْ لِاَجَلٍ مُّسَمًّى ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ لَهُ الْمُلْكُ وَالَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِه مَا يَمْلِكُوْنَ مِنْ قِطْمِيْرٍ
14	अगर तुम उन्हें पुकारो, तो वे तुम्हारी पुकार नहीं सुनते, और अगर सुन भी लें, तो तुम्हारी माँग पूरी नहीं कर सकते। और क़ियामत के दिन वे तुम्हारे शरीक़ को इंकार करेंगे। और कोई तुम्हें (अल्लाह) की तरह जो ख़ूब ख़बर रखता है, ख़बर नहीं दे सकता।	اِنْ تَدْعُوْهُمْ لَا يَسْمَعُوْا دُعَاۤءَكُمْ وَلَوْ سَمِعُوْا مَا اسْتَجَابُوْا لَكُمْ وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ يَكْفُرُوْنَ بِشِرْكِكُمْ وَلَا يُنَبِّئُكَ مِثْلُ خَبِيْرٍ

15	ऐ इंसानो! तुम ही अल्लाह के मोहताज हो; और अल्लाह वही है जो बहुत बेनियाज, बहुत तारीफ़ वाला है।	يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اَنْتُمُ الْفُقَرَاءُ اِلَى اللّٰهِ وَاللّٰهُ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ
16	अगर वह चाहे, तो तुम्हें नाश कर दे और नई मख़लूक़ लाए (तुम्हारी जगह)।	اِنْ يَّشَاْ يُذْهِبْكُمْ وَيَاْتِ بِخَلْقٍ جَدِيْدٍ
17	और यह अल्लाह के लिए मुश्किल नहीं है।	وَمَا ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ بِعَزِيْزٍ
18	और कोई गुनाहगार शख़्स किसी दूसरे के गुनाह का बोझ नहीं उठाएगा। और अगर कोई बोझ से लदा शख़्स (दूसरे को) उसका बोझ उठाने के लिए बुलाए, तो उसका कुछ भी बोझ नहीं उठाया जाएगा, चाहे वह उसका रिश्तेदार ही हो। नश्रिति रूप से, तुम सिर्फ़ उन लोगों को आगाह कर सकते हो जो अपने रब का ख़ौफ़ रखते हैं (हालाँकि) वे उसे देखते नहीं और जो नमाज़ क़ायम करते हैं और जो कोई अपने आप को पाक करता है, नश्रिति रूप से, वह अपने लिए नेकी करता है और अल्लाह की तरफ़ लौटना है।	وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰى وَاِنْ تَدْعُ مُثْقَلَةٌ اِلٰى حِمْلِهَا لَا يُحْمَلْ مِنْهُ شَيْءٌ وَّلَوْ كَانَ ذَا قُرْبٰى اِنَّمَا تُنْذِرُ الَّذِيْنَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَيْبِ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَمَنْ تَزَكّٰى فَاِنَّمَا يَتَزَكّٰى لِنَفْسِهٖ وَاِلَى اللّٰهِ الْمَصِيْرُ
19	और न अंधा और देखने वाला एकसमान है,	وَمَا يَسْتَوِى الْاَعْمٰى وَالْبَصِيْرُ
20	और न अंधेरा और रौशनी,	وَلَا الظُّلُمٰتُ وَلَا النُّوْرُ
21	और न छाँव और गर्मी,	وَلَا الظِّلُّ وَلَا الْحَرُوْرُ
22	और न ज़िंदगी और मौत एकसमान है। नश्रिति रूप से, अल्लाह जिसे चाहता है सुनाता है और तुम (मुहम्मद) क़ब्रों में रहने वालों को सुनाने की ताक़त नहीं रखते।	وَمَا يَسْتَوِى الْاَحْيَاءُ وَلَا الْاَمْوَاتُ اِنَّ اللّٰهَ يُسْمِعُ مَنْ يَّشَاءُ وَمَآ اَنْتَ بِمُسْمِعٍ مَّنْ فِى الْقُبُوْرِ
23	तुम तो बस एक आगाह करने वाले हो।	اِنْ اَنْتَ اِلَّا نَذِيْرٌ
24	नश्रिति रूप से, हमने तुम्हें हक़ के साथ भेजा, ख़ुशख़बरी देने वाला और आगाह करने वाला। और कोई उम्मत ऐसी नहीं जिसके पास आगाह करने वाला न आया हो।	اِنَّآ اَرْسَلْنٰكَ بِالْحَقِّ بَشِيْرًا وَّنَذِيْرًا وَاِنْ مِّنْ اُمَّةٍ اِلَّا خَلَا فِيْهَا نَذِيْرٌ
25	और अगर वे तुम्हें झुठलाएँ, तो नश्रिति रूप से, उनसे पहले वालों ने भी (रसूलों को) झुठलाया; जब उनके रसूल उनके पास साफ़ दलीलें (मोजिज़े), ज़बूर और रौशनी देने वाली किताब लेकर आए।	وَاِنْ يُّكَذِّبُوْكَ فَقَدْ كَذَّبَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ جَاءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ وَبِالزُّبُرِ وَبِالْكِتٰبِ الْمُنِيْرِ
26	फिर मैंने उन काफ़िरों को अज़ाब दिया, तो (देखो) मेरा ग़ुस्सा कैसा था।	ثُمَّ اَخَذْتُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَكَيْفَ كَانَ نَكِيْرِ

27	क्या तूने नहीं देखा कि अल्लाह आकाश से पानी उतारता है, फिर हम उससे तरह-तरह के फल पैदा करते हैं और पहाड़ों में सफ़ेद और लाल रंग की लकीरें हैं, तरह-तरह के रंगों की और (कुछ) बहुत काले।	اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَاۤءِ مَاۤءً فَاَخْرَجْنَا بِهٖ ثَمَرٰتٍ مُّخْتَلِفًا اَلْوَانُهَا وَمِنَ الْجِبَالِ جُدَدٌۢ بِيْضٌ وَّحُمْرٌ مُّخْتَلِفٌ اَلْوَانُهَا وَغَرَابِيْبُ سُوْدٌ
28	और इसी तरह इंसानों, चलने वाले जानवरों और मवेशियों में भी तरह-तरह के रंग (और क़िस्म) हैं। अल्लाह के बन्दों में से सिर्फ़ उलमा ही उससे डरते हैं। निश्चित रूप से, अल्लाह बहुत ताक़तवर, बहुत माफ़ करने वाला है।	وَمِنَ النَّاسِ وَالدَّوَآبِّ وَالْاَنْعَامِ مُخْتَلِفٌ اَلْوَانُهٗ كَذٰلِكَ اِنَّمَا يَخْشَى اللّٰهَ مِنْ عِبَادِهِ الْعُلَمٰٓؤُا اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ غَفُوْرٌ
29	निश्चित रूप से, जो लोग अल्लाह की किताब (क़ुरआन) को हमेशा पढ़ते हैं और नमाज़ क़ायम करते हैं और जो रिज़्क़ हमने उन्हें दिया, उसे छुपकर और खुल्लमखुल्ला ख़र्च करते हैं, वे ऐसी तिजारत की उम्मीद रखते हैं जो कभी नुक़सान न करे,	اِنَّ الَّذِيْنَ يَتْلُوْنَ كِتٰبَ اللّٰهِ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاَنْفَقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا وَّعَلَانِيَةً يَّرْجُوْنَ تِجَارَةً لَّنْ تَبُوْرَ
30	ताकि अल्लाह उन्हें उनका पूरा सवाब दे और अपनी मेहरबानी से और बढ़ाए। निश्चित रूप से, अल्लाह बहुत माफ़ करने वाला, बहुत शुक्र करने वाला है।	لِيُوَفِّيَهُمْ اُجُوْرَهُمْ وَيَزِيْدَهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ اِنَّهٗ غَفُوْرٌ شَكُوْرٌ
31	और जो कुछ हमने तुम्हारी पर वह्य किया (मुहम्मद) यानी किताब (क़ुरआन), वही हक़ है, जो पहले की किताबों की तस्दीक़ करता है। निश्चित रूप से, अल्लाह अपने बन्दों के हाल को ख़ूब जानता है, ख़ूब देखता है।	وَالَّذِيْٓ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ مِنَ الْكِتٰبِ هُوَ الْحَقُّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ اِنَّ اللّٰهَ بِعِبَادِهٖ لَخَبِيْرٌۢ بَصِيْرٌ
32	फिर हमने उस किताब को अपने बन्दों में से चुने हुए लोगों को वारिस बनाया, तो उनमें से कुछ अपने आप पर ज़ुल्म करते हैं, कुछ बीच के हैं और कुछ अल्लाह की इजाज़त से नेकी में सबसे आगे हैं। यही बहुत बड़ी महेरबानी है।	ثُمَّ اَوْرَثْنَا الْكِتٰبَ الَّذِيْنَ اصْطَفَيْنَا مِنْ عِبَادِنَا فَمِنْهُمْ ظَالِمٌ لِّنَفْسِهٖ وَمِنْهُمْ مُّقْتَصِدٌ وَمِنْهُمْ سَابِقٌۢ بِالْخَيْرٰتِ بِاِذْنِ اللّٰهِ ذٰلِكَ هُوَ الْفَضْلُ الْكَبِيْرُ
33	(उन्हें) अदन की जन्नत में मिलेगी, वे उनमें दाख़िल होंगे, वहाँ उन्हें सोने के कंगन और मोती पहनाए जाएँगे, और उनके कपड़े वहाँ रेशम के होंगे।	جَنّٰتُ عَدْنٍ يَّدْخُلُوْنَهَا يُحَلَّوْنَ فِيْهَا مِنْ اَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَّلُؤْلُؤًا وَلِبَاسُهُمْ فِيْهَا حَرِيْرٌ
34	और वे कहेंगे, 'सारी तारीफ़ अल्लाह के लिए है जिसने हमसे ग़म दूर किया। निश्चित रूप से, हमारा रब वाक़ई बहुत माफ़ करने वाला, बहुत शुक्र करने वाला है,	وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْٓ اَذْهَبَ عَنَّا الْحَزَنَ اِنَّ رَبَّنَا لَغَفُوْرٌ شَكُوْرٌ
35	जिसने अपनी मेहरबानी से हमें हमेशा रहने वाली जगह (जन्नत) में ठहराया; यहाँ न हमें थकान छूती है और न हमें कमज़ोरी।'	الَّذِيْٓ اَحَلَّنَا دَارَ الْمُقَامَةِ مِنْ فَضْلِهٖ لَا يَمَسُّنَا فِيْهَا نَصَبٌ وَّلَا يَمَسُّنَا فِيْهَا لُغُوْبٌ
36	और जो लोग काफ़िर हैं, उनके लिए जहन्नम की आग है। उन्हें न मारा जाएगा कि वे मर जाएँ, और न उनके अज़ाब को हल्का किया जाएगा। इसी तरह हम हर उस शख़्स को बदला देते हैं जो बहुत काफ़िर है।	وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَهُمْ نَارُ جَهَنَّمَ لَا يُقْضٰى عَلَيْهِمْ فَيَمُوْتُوْا وَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمْ مِّنْ عَذَابِهَا كَذٰلِكَ نَجْزِيْ كُلَّ كَفُوْرٍ

وَهُمْ يَصْطَرِخُوْنَ فِيْهَا رَبَّنَآ اَخْرِجْنَا نَعْمَلْ صَالِحًا غَيْرَ الَّذِيْ كُنَّا نَعْمَلُ اَوَلَمْ نُعَمِّرْكُمْ مَّا يَتَذَكَّرُ فِيْهِ مَنْ تَذَكَّرَ وَجَاۤءَكُمُ النَّذِيْرُ فَذُوْقُوْا فَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ نَّصِيْرٍ	37	और वे उस (जहन्नम) में चिल्लाएँगे, 'ऐ हमारे रब, हमें (जहन्नम से) निकाल दे, हम नेके काम करेंगे, जो पहले नहीं किए।' (उन्हें कहा जाएगा), 'क्या हमने तुम्हारी उम्र इतनी लंबी नहीं की कि जो गौर करना चाहता वह गौर कर लेता, हालाँकि तुम्हारे पास आगाह करने वाला आया था? तो (हमारा अज़ाब) चखो, और ज़ालिमों के लिए कोई मददगार नहीं है'
اِنَّ اللّٰهَ عَالِمُ غَيْبِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ	38	निश्चित रूप से, अल्लाह आकाशों और धरती की गैब को जानता है निश्चित रूप से, वह दिलों की बातों को खूब जानता है
هُوَ الَّذِيْ جَعَلَكُمْ خَلٰۤئِفَ فِى الْاَرْضِ فَمَنْ كَفَرَ فَعَلَيْهِ كُفْرُهٗ وَلَا يَزِيْدُ الْكٰفِرِيْنَ كُفْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ اِلَّا مَقْتًا وَلَا يَزِيْدُ الْكٰفِرِيْنَ كُفْرُهُمْ اِلَّا خَسَارًا	39	वही है जिसने तुम्हें धरती पर ख़लीफ़ा बनाया। जो कोई कुफ़्र करे, तो उसका कुफ़्र उसी पर पड़ेगा। और काफ़िरों का कुफ़्र उनके रब के पास बस गुस्सा बढ़ाता है और काफ़िरों का कुफ़्र उनकी ख़सारे को ही बढ़ाता है
قُلْ اَرَءَيْتُمْ شُرَكَآءَكُمُ الَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَرُوْنِيْ مَاذَا خَلَقُوْا مِنَ الْاَرْضِ اَمْ لَهُمْ شِرْكٌ فِى السَّمٰوٰتِ اَمْ اٰتَيْنٰهُمْ كِتٰبًا فَهُمْ عَلٰى بَيِّنَتٍ مِّنْهُ بَلْ اِنْ يَّعِدُ الظّٰلِمُوْنَ بَعْضُهُمْ بَعْضًا اِلَّا غُرُوْرًا	40	कहो, 'मुझे अपने उन शरीकों के बारे में बताओ जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो।' मुझे दिखाओ, इस धरती का कौन सा हिस्सा उन्होंने बनाया; या उनके पास आकाशों में कोई हिस्सा है; या क्या हमने उन्हें कोई किताब दी कि वे उससे साफ़ दलील लाएँ? बल्कि ज़ालिम लोग बस एक-दूसरे को धोखा देने का वादा करते हैं
اِنَّ اللّٰهَ يُمْسِكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ اَنْ تَزُوْلَا وَلَئِنْ زَالَتَاۤ اِنْ اَمْسَكَهُمَا مِنْ اَحَدٍ مِّنْ بَعْدِهٖ اِنَّهٗ كَانَ حَلِيْمًا غَفُوْرًا	41	निश्चित रूप से, अल्लाह ही आकाशों और धरती को थामे हुए है ताकि वे नाश न हों; और अगर वे नाश होने लगें, तो अल्लाह के सिवा कोई उन्हें थाम नहीं सकता। निश्चित रूप से, वह बहुत सब्र करने वाला, बहुत माफ़ करने वाला है
وَاَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ لَئِنْ جَاۤءَهُمْ نَذِيْرٌ لَّيَكُوْنُنَّ اَهْدٰى مِنْ اِحْدَى الْاُمَمِ فَلَمَّا جَاۤءَهُمْ نَذِيْرٌ مَّا زَادَهُمْ اِلَّا نُفُوْرًا	42	और उन्होंने अल्लाह के नाम पर सख़्त क़सम खाई कि अगर उनके पास कोई आगाह करने वाला आए, तो वे ज़रूर किसी भी उम्मत से ज़्यादा हिदायत पाएँगे लेकिन जब उनके पास आगाह करने वाला आया, तो इससे उनकी (हक़ से) दूरी ही बढ़ी,
اسْتِكْبَارًا فِى الْاَرْضِ وَمَكْرَ السَّيِّئِ وَلَا يَحِيْقُ الْمَكْرُ السَّيِّئُ اِلَّا بِاَهْلِهٖ فَهَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّا سُنَّتَ الْاَوَّلِيْنَ فَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّتِ اللّٰهِ تَبْدِيْلًا وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّتِ اللّٰهِ تَحْوِيْلًا	43	उनके धरती में घमंड और उनकी बुरी साज़िश की वजह से। बुरी साज़िश सिर्फ़ उसी को घेरती है जो उसे करता है वे तो बस पहले वालों के लिए मुक़र्रर सज़ा का इंतज़ार कर रहे हैं तो तू अल्लाह के तरीक़े में कोई बदलाव नहीं पाएगा, और न अल्लाह के तरीक़े में कोई टालने पाएगा।
اَوَلَمْ يَسِيْرُوْا فِى الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَكَانُوْۤا اَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُعْجِزَهٗ مِنْ شَيْءٍ فِى السَّمٰوٰتِ وَلَا فِى الْاَرْضِ اِنَّهٗ كَانَ عَلِيْمًا قَدِيْرًا	44	क्या उन्होंने धरती में सैर नहीं की, फिर देखा नहीं कि उनसे पहले वालों का अंजाम कैसा हुआ, हालाँकि वे उनसे ज़्यादा ताक़तवर थे? और न कोई चीज़ आकाशों में और न धरती में अल्लाह को कमज़ोर कर सकती है निश्चित रूप से, वह खूब जानने वाला, बहुत ताक़तवर है

وَلَوْ يُؤَاخِذُ اللّٰهُ النَّاسَ بِمَا كَسَبُوْا مَا تَرَكَ عَلٰى ظَهْرِهَا مِنْ دَابَّةٍ وَّلٰكِنْ يُّؤَخِّرُهُمْ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى فَاِذَا جَاۤءَ اَجَلُهُمْ فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِعِبَادِهٖ بَصِيْرًا	**45**	और अगर अल्लाह इंसानों को उनके किए की सजा देता, तो वह धरती पर एक भी चलने वाला जानवर न छोड़ता, लेकिन वह उनकी (सजा को) एक मुक़र्रर वक़्त तक टालता है फिर जब उनकी मुद्दत आती है, तो अल्लाह अपने बन्दों के हाल को ख़ूब देखता है।

छंदों की संख्या	يس	مكية
८३	हा-सनि - 36	मक्की

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

हा-सनि (यासीन)

1	या सीन	يٰسٓ
2	क़ुरआन की क़सम जो हिकमत से भरा है,	وَالْقُرْاٰنِ الْحَكِيْمِ
3	निश्चित रूप से, तू (मुहम्मद) रसूलों में से एक है,	اِنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ
4	(जो) सीधे रास्ते पर है,	عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ
5	(यह वह्य है) जो बहुत ताक़तवर, बहुत रहम करने वाले (अल्लाह) ने उतारा,	تَنْزِيْلَ الْعَزِيْزِ الرَّحِيْمِ
6	ताकि तू एक ऐसी कौम को आगाह करे जिसके बाप-दादा को पहले आगाह नहीं किया गया, इसलिए वे ग़ाफ़िल हैं।	لِتُنْذِرَ قَوْمًا مَّآ اُنْذِرَ اٰبَاؤُهُمْ فَهُمْ غٰفِلُوْنَ
7	निश्चित रूप से, उनमें से ज़्यादातर के ख़िलाफ़ (अज़ाब का) हुक्म पक्का हो गया, क्योंकि वे ईमान नहीं लाते।	لَقَدْ حَقَّ الْقَوْلُ عَلٰٓى اَكْثَرِهِمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ
8	निश्चित रूप से, हमने उनके गले में ज़ंजीरें डाल दीं, फिर उनकी ठुड्डी तक (हाथ) उठाए गए, इसलिए वे सिर ऊँचा किए हुए हैं।	اِنَّا جَعَلْنَا فِيْٓ اَعْنَاقِهِمْ اَغْلٰلًا فَهِيَ اِلَى الْاَذْقَانِ فَهُمْ مُّقْمَحُوْنَ
9	और हमने उनके सामने एक दीवार बनाई और उनके पीछे भी एक दीवार, और हमने उनकी आँखें ढक दीं ताकि वे देख न सकें।	وَجَعَلْنَا مِنْۢ بَيْنِ اَيْدِيْهِمْ سَدًّا وَّمِنْ خَلْفِهِمْ سَدًّا فَاَغْشَيْنٰهُمْ فَهُمْ لَا يُبْصِرُوْنَ
10	और उनके लिए एकसमान है, चाहे तू उन्हें आगाह करे या न करे, वे ईमान नहीं लाएँगे।	وَسَوَاۤءٌ عَلَيْهِمْ ءَاَنْذَرْتَهُمْ اَمْ لَمْ تُنْذِرْهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ
11	निश्चित रूप से, तू सिर्फ़ उन लोगों को आगाह करता है जो नसीहत की पैरवी करते हैं और जो रहमान से डरते हैं, हालाँकि वे उसे देखते नहीं। तो उन्हें माफ़ी और नेक बदले की ख़ुशख़बरी दे।	اِنَّمَا تُنْذِرُ مَنِ اتَّبَعَ الذِّكْرَ وَخَشِيَ الرَّحْمٰنَ بِالْغَيْبِ فَبَشِّرْهُ بِمَغْفِرَةٍ وَّاَجْرٍ كَرِيْمٍ
12	निश्चित रूप से, हम ही मुर्दों को ज़िंदगी देते हैं और हम ही वह लिखते हैं जो उन्होंने किया और जो निशानात वे छोड़ गए। और हर चीज़ को हमने एक साफ़ किताब (लौह मकफ़ूज़) में जमा किया।	اِنَّا نَحْنُ نُحْيِ الْمَوْتٰى وَنَكْتُبُ مَا قَدَّمُوْا وَاٰثَارَهُمْ وَكُلَّ شَيْءٍ اَحْصَيْنٰهُ فِيْٓ اِمَامٍ مُّبِيْنٍ

13	और उनके लिए एक मिसाल बयान कर, यानी एक बस्ती के रहनेवालों की, जब उनके पास रसूल आए;	وَاضْرِبْ لَهُمْ مَّثَلًا اَصْحٰبَ الْقَرْيَةِ اِذْ جَاءَهَا الْمُرْسَلُوْنَ
14	(यानी) जब हमने उनके पास दो रसूल भेजे, तो उन्होंने दोनों को झुठलाया; फिर हमने तीसरे (रसूल) के साथ ताक़त दी, तो उन (तीनों) ने कहा, 'निश्चित रूप से, हम तुम्हारे पास भेजे गए रसूल हैं'	اِذْ اَرْسَلْنَآ اِلَيْهِمُ اثْنَيْنِ فَكَذَّبُوْهُمَا فَعَزَّزْنَا بِثَالِثٍ فَقَالُوْٓا اِنَّآ اِلَيْكُمْ مُّرْسَلُوْنَ
15	उन्होंने (बस्ती वालों ने) जवाब दिया, 'तुम तो बस हमारे जैसे इंसान हो, और रहमान ने कुछ भी नहीं उतारा; तुम सरिफ़ झूठ बोलते हो।'	قَالُوْا مَآ اَنْتُمْ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا وَمَآ اَنْزَلَ الرَّحْمٰنُ مِنْ شَيْءٍ اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا تَكْذِبُوْنَ
16	वे बोले, 'हमारा रब जानता है कि निश्चित रूप से, हम तुम्हारे पास (उसके) रसूल हैं'	قَالُوْا رَبُّنَا يَعْلَمُ اِنَّآ اِلَيْكُمْ لَمُرْسَلُوْنَ
17	और हमारा फ़र्ज़ सरिफ़ (अल्लाह का हुक्म) साफ़-साफ़ पहुँचाना है'	وَمَا عَلَيْنَآ اِلَّا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ
18	उन्होंने जवाब दिया, 'निश्चित रूप से, तुम्हारी वजह से हम पर मुसीबत आई। अगर तुम (हमें दावत देना) न छोड़ोगे, तो हम तुम्हें ज़रूर संगसार करेंगे और तुम्हें हमसे दरदनाक अज़ाब ज़रूर चखना पड़ेगा।'	قَالُوْٓا اِنَّا تَطَيَّرْنَا بِكُمْ لَئِنْ لَّمْ تَنْتَهُوْا لَنَرْجُمَنَّكُمْ وَلَيَمَسَّنَّكُمْ مِّنَّا عَذَابٌ اَلِيْمٌ
19	वे (रसूल) बोले, 'तुम्हारी बदक़िस्मती तुम्हारे अपने कारण है। क्या इसलिए कि तुम्हें नसीहत दी गई? बल्कि तुम हद से गुज़रनेवाली कौम हो।'	قَالُوْا طَاۤئِرُكُمْ مَّعَكُمْ اَئِنْ ذُكِّرْتُمْ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ مُّسْرِفُوْنَ
20	और शहर के एक किनारे से एक शख़्स जलदबाज़ी में आया, उसने कहा, 'ऐ मेरी कौम! इन रसूलों की पैरवी करो।	وَجَاءَ مِنْ اَقْصَا الْمَدِيْنَةِ رَجُلٌ يَّسْعٰى قَالَ يٰقَوْمِ اتَّبِعُوا الْمُرْسَلِيْنَ
21	उन लोगों की पैरवी करो जो तुमसे कोई बदला नहीं माँगते; और वे हिदायत पानेवाले हैं।	اتَّبِعُوْا مَنْ لَّا يَسْـَٔلُكُمْ اَجْرًا وَّهُمْ مُّهْتَدُوْنَ
22	और मेरे लिए कोई वजह नहीं कि मैं उस (अल्लाह) की इबादत न करूँ जिसने मुझे पैदा किया और उसी की तरफ़ तुम सब लौटाए जाओगे।	وَمَا لِيَ لَآ اَعْبُدُ الَّذِيْ فَطَرَنِيْ وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ
23	क्या मैं उसके सिवा दूसरे ख़ुदाओं को अपनाऊँ? अगर रहमान मुझे कोई नुक़सान पहुँचाना चाहे, तो उनकी सिफ़ारिश मेरे कुछ काम न आएगी और न वे मुझे बचा सकेंगे।	ءَاَتَّخِذُ مِنْ دُوْنِهٖٓ اٰلِهَةً اِنْ يُّرِدْنِ الرَّحْمٰنُ بِضُرٍّ لَّا تُغْنِ عَنِّيْ شَفَاعَتُهُمْ شَيْـًٔا وَّلَا يُنْقِذُوْنِ
24	निश्चित रूप से, अगर मैं ऐसा करूँ, तो मैं साफ़ गुमराही में पड़ जाऊँगा।	اِنِّيْٓ اِذًا لَّفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ
25	निश्चित रूप से, मैं तुम्हारे रब पर ईमान लाया; तो मेरी (ईमान की) बात सुनो।'	اِنِّيْٓ اٰمَنْتُ بِرَبِّكُمْ فَاسْمَعُوْنِ
26	उसे कहा गया, 'जन्नत में दाख़िल हो।' उसने कहा, 'काश मेरी कौम जान लेती,	قِيْلَ ادْخُلِ الْجَنَّةَ قَالَ يٰلَيْتَ قَوْمِيْ يَعْلَمُوْنَ

27	जसिक`कारण मरे`रब न`मझु`माफ़ कयिा और मझु`इज़्ज़त बख़्शी।'	بِمَا غَفَرَ لِيْ رَبِّيْ وَجَعَلَنِيْ مِنَ الْمُكْرَمِيْنَ
28	और उसक`(मरन`क) बाद हमन`उसकी कौम पर न कोई लशक़र आसमान स`उतारा, और न हम`इसकी ज़रूरत थी।	وَمَآ اَنْزَلْنَا عَلٰى قَوْمِهٖ مِنْ بَعْدِهٖ مِنْ جُنْدٍ مِّنَ السَّمَاۤءِ وَمَا كُنَّا مُنْزِلِيْنَ
29	उनक`ख़लिाफ़ बस एक ज़ोर की आवाज़ थी; फरि तरु़त व`सब ख़ामोश हो गए।	اِنْ كَانَتْ اِلَّا صَيْحَةً وَّاحِدَةً فَاِذَا هُمْ خٰمِدُوْنَ
30	कतिना बड़ा अफ़सोस ह`उन बनद़ों पर, हर बार जब उनक`पास कोई रसलू आया, व`उसका मज़ाक उड़ात`थ।	يٰحَسْرَةً عَلَى الْعِبَادِ مَا يَأْتِيْهِمْ مِّنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ
31	क़या उनहोंन`नहीं दखेा कि उनस`पहल`कतिनी उम्मतों को हमन`हलाक कयिा? व`(लोग) उनक`पास (वापस) नहीं लौटत।	اَلَمْ يَرَوْا كَمْ اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنَ الْقُرُوْنِ اَنَّهُمْ اِلَيْهِمْ لَا يَرْجِعُوْنَ
32	और नशि़चति रप़ु स,`व`सब हमार`सामन`हाज़रि कए जाएँग।	وَاِنْ كُلٌّ لَّمَّا جَمِيْعٌ لَّدَيْنَا مُحْضَرُوْنَ
33	और उनक`लए एक नशिानी ह`मरी हई ज़मीन; हमन`उस`ज़िदगी दी और उससे`अनाज नकिाला, फरि व`उससे`ख़ात`ह।	وَاٰيَةٌ لَّهُمُ الْاَرْضُ الْمَيْتَةُ اَحْيَيْنٰهَا وَاَخْرَجْنَا مِنْهَا حَبًّا فَمِنْهُ يَأْكُلُوْنَ
34	और हमन`उसम`ख़जूरों और अंगूरों क`बाग़ बनाए और उसम`चशम़े फटून दए,	وَجَعَلْنَا فِيْهَا جَنّٰتٍ مِّنْ نَّخِيْلٍ وَّاَعْنَابٍ وَّفَجَّرْنَا فِيْهَا مِنَ الْعُيُوْنِ
35	ताकि व`उसक`फल खाएँ और जो उनक`हाथों न`बनाया। तो क़या व`शक्ऱ नहीं करत?	لِيَأْكُلُوْا مِنْ ثَمَرِهٖ وَمَا عَمِلَتْهُ اَيْدِيْهِمْ اَفَلَا يَشْكُرُوْنَ
36	वह बहत़ु पाक ह`जसिन`ज़मीन म`जो कछ़ उगता ह`और ख़द़ु उनकी और जो कछ़ व`नहीं जानत,`सबको जोड़े म`बनाया।	سُبْحٰنَ الَّذِيْ خَلَقَ الْاَزْوَاجَ كُلَّهَا مِمَّا تُنْۢبِتُ الْاَرْضُ وَمِنْ اَنْفُسِهِمْ وَمِمَّا لَا يَعْلَمُوْنَ
37	और उनक`लए एक नशिानी ह`रात; हम उससे`दनि को खींच लते`ह,`फरि तरु़त व`अंधेरे म`रह जात`ह।	وَاٰيَةٌ لَّهُمُ الَّيْلُ نَسْلَخُ مِنْهُ النَّهَارَ فَاِذَا هُمْ مُّظْلِمُوْنَ
38	और सूरज अपनी जगह पर चक्कर लगाता ह। यह बहत़ु ताक़तवर, सब कछ़ जानन`वाल`(अल्लाह) का तक़्दीर ह।	وَالشَّمْسُ تَجْرِيْ لِمُسْتَقَرٍّ لَّهَا ذٰلِكَ تَقْدِيْرُ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ
39	और चाँद क`लए हमन`मंज़लि`मक़ु़ऱर कीं, यहाँ तक कि वह पराुनी टहनी की तरह लौट आता ह।	وَالْقَمَرَ قَدَّرْنٰهُ مَنَازِلَ حَتّٰى عَادَ كَالْعُرْجُوْنِ الْقَدِيْمِ
40	न सूरज क`लए मम़ुकनि ह`कि वह चाँद को पकड़े, और न रात दनि स`पहल`आ सकती ह। और हर एक अपन`गोल`म`तरैता ह।	لَا الشَّمْسُ يَنْۢبَغِيْ لَهَآ اَنْ تُدْرِكَ الْقَمَرَ وَلَا الَّيْلُ سَابِقُ النَّهَارِ وَكُلٌّ فِيْ فَلَكٍ يَّسْبَحُوْنَ

41	और उनके लिए एक निशानी ह कि हमने उनकी औलाद को भरी हुई कश्ती में सवार किया,	وَاٰيَةٌ لَّهُمْ اَنَّا حَمَلْنَا ذُرِّيَّتَهُمْ فِى الْفُلْكِ الْمَشْحُوْنِ
42	और हमने उनके लिए वैसी ही दूसरी सवारियाँ बनाईं जो वे सवार करते हैं।	وَخَلَقْنَا لَهُمْ مِّنْ مِّثْلِهٖ مَا يَرْكَبُوْنَ
43	और अगर हम चाहें, तो उन्हें डुबो दें। फिर न उनके लिए कोई मददगार होगा और न वे बचाए जाएँगे,	وَاِنْ نَّشَاْ نُغْرِقْهُمْ فَلَا صَرِيْخَ لَهُمْ وَلَا هُمْ يُنْقَذُوْنَ
44	सिवाय हमारी तरफ़ से रहमत के और एक मुक़र्रर वक़्त तक ज़िंदगी की नेअमत के।	اِلَّا رَحْمَةً مِّنَّا وَمَتَاعًا اِلٰى حِيْنٍ
45	और जब उनसे कहा जाता है, 'उस (अज़ाब) से डरो जो तुम्हारे सामने (दुनिया में) है और जो आने वाला (आख़िरत में) है ताकि तुम पर रहम किया जाए।'	وَاِذَا قِيْلَ لَهُمُ اتَّقُوْا مَا بَيْنَ اَيْدِيْكُمْ وَمَا خَلْفَكُمْ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ
46	और जब भी अल्लाह की कोई निशानी उनके पास आती तो वे उससे मुँह मोड़ लेते थे।	وَمَا تَاْتِيْهِمْ مِّنْ اٰيَةٍ مِّنْ اٰيٰتِ رَبِّهِمْ اِلَّا كَانُوْا عَنْهَا مُعْرِضِيْنَ
47	और जब उनसे कहा जाता है, 'अल्लाह ने तुम्हें जो रिज़्क़ दिया, उसमें से ख़र्च करो,' तो काफ़िर लोग ईमान वालों से कहते हैं, 'क्या हम उसे खिलाएँ जिसे अगर अल्लाह चाहता तो वह ख़ुद खिलाता? तुम तो साफ़ गुमराही में हो।'	وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ اَنْفِقُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ قَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنُطْعِمُ مَنْ لَّوْ يَشَاۤءُ اللّٰهُ اَطْعَمَهٗٓ اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا فِىْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ
48	और वे (काफ़िर) कहते हैं, 'यह (क़ियामत का) वादा कब (पूरा होगा) अगर तुम सच्चे हो?'	وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ
49	वे बस एक ज़ोर की आवाज़ का इंतज़ार कर रहे हैं, जो उन्हें तबाह कर देगी जब वे आपस में झगड़ रहे होंगे।	مَا يَنْظُرُوْنَ اِلَّا صَيْحَةً وَّاحِدَةً تَاْخُذُهُمْ وَهُمْ يَخِصِّمُوْنَ
50	फिर न तो वे कोई वसीयत कर सकेंगे और न अपने घरवालों के पास लौट सकेंगे।	فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ تَوْصِيَةً وَّلَآ اِلٰٓى اَهْلِهِمْ يَرْجِعُوْنَ
51	फिर सूर फूँका जाएगा, तो तुरंत वे अपनी कब्रों से (ज़िंदगी में) निकलकर अपने रब की तरफ़ जाएँगे।	وَنُفِخَ فِى الصُّوْرِ فَاِذَا هُمْ مِّنَ الْاَجْدَاثِ اِلٰى رَبِّهِمْ يَنْسِلُوْنَ
52	वे कहेंगे, 'हाय हमारी तबाही! हम हमारे सोने की जगह (कब्र) से किसने उठाया?' यह वही है जो रहमान ने वादा किया था और रसूलों ने सच कहा।	قَالُوْا يٰوَيْلَنَا مَنْ بَعَثَنَا مِنْ مَّرْقَدِنَا هٰذَا مَا وَعَدَ الرَّحْمٰنُ وَصَدَقَ الْمُرْسَلُوْنَ
53	वह बस एक ज़ोर की आवाज़ होगी, फिर तुरंत वे सब हमारे सामने हाज़िर कर दिए जाएँगे।	اِنْ كَانَتْ اِلَّا صَيْحَةً وَّاحِدَةً فَاِذَا هُمْ جَمِيْعٌ لَّدَيْنَا مُحْضَرُوْنَ
54	तो उस दिन किसी शख़्स पर ज़रा भी ज़ुल्म नहीं होगा और तुम्हें सिर्फ़ उसी का बदला दिया जाएगा जो तुमने किया।	فَالْيَوْمَ لَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْـًٔا وَّلَا تُجْزَوْنَ اِلَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ

55	निश्चिति रूप से, जन्नत वाले उस दिन अपनी मशगूलियत में ख़ुशहाल होंगे।	اِنَّ اَصْحٰبَ الْجَنَّةِ الْيَوْمَ فِيْ شُغُلٍ فٰكِهُوْنَ
56	वे और उनकी जोड़ियाँ छाँव में होंगी, तख़्तों पर टेके लगाए।	هُمْ وَاَزْوَاجُهُمْ فِيْ ظِلٰلٍ عَلَى الْاَرَآئِكِ مُتَّكِـُٔوْنَ
57	उनके लिए वहाँ फल होंगे और जो कुछ वे माँगेंगे।	لَهُمْ فِيْهَا فَاكِهَةٌ وَّلَهُمْ مَّا يَدَّعُوْنَ
58	(उनके लिए) बहुत रहम करने वाले रब की तरफ़ से सलाम का पैग़ाम होगा।	سَلٰمٌ قَوْلًا مِّنْ رَّبٍّ رَّحِيْمٍ
59	(और काफ़िरों से कहा जाएगा), 'आज (मोमिनों से) अलग हो जाओ, ऐ गुनाहगारो!	وَامْتَازُوا الْيَوْمَ اَيُّهَا الْمُجْرِمُوْنَ
60	क्या मैंने तुमसे, ऐ आदम की औलाद, हुक्म नहीं दिया था कि तुम शैतान की इबादत न करो? निश्चिति रूप से, वह तुम्हारा साफ़ दुश्मन है,	اَلَمْ اَعْهَدْ اِلَيْكُمْ يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ اَنْ لَّا تَعْبُدُوا الشَّيْطٰنَ اِنَّه لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ
61	और यह कि तुम मेरी इबादत करो। यही सीधा रास्ता है।	وَاَنِ اعْبُدُوْنِيْ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ
62	और निश्चिति रूप से, उस (शैतान) ने तुम में से बहुतों को गुमराह किया। तो क्या तुम नहीं समझते?	وَلَقَدْ اَضَلَّ مِنْكُمْ جِبِلًّا كَثِيْرًا اَفَلَمْ تَكُوْنُوْا تَعْقِلُوْنَ
63	यह वह जहन्नम है जिसके बारे में तुम्हें आगाह किया गया था।	هٰذِه جَهَنَّمُ الَّتِيْ كُنْتُمْ تُوْعَدُوْنَ
64	आज इसमें दाख़िल हो, क्योंकि तुम इस झुठलाते थे।	اِصْلَوْهَا الْيَوْمَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ
65	आज हम उनके मुँह पर मुहर लगा देंगे; उनके हाथ हमसे बोलेंगे और उनके पाँव उन कामों की गवाही देंगे जो वे करते थे।	اَلْيَوْمَ نَخْتِمُ عَلٰٓى اَفْوَاهِهِمْ وَتُكَلِّمُنَآ اَيْدِيْهِمْ وَتَشْهَدُ اَرْجُلُهُمْ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ
66	और अगर हम चाहें, तो उनकी आँखों की रौशनी छीन लें; फिर वे रास्ता ढूँढ़ने के लिए दौड़ पड़ें तो वे कैसे देख सकते हैं?	وَلَوْ نَشَآءُ لَطَمَسْنَا عَلٰٓى اَعْيُنِهِمْ فَاسْتَبَقُوا الصِّرَاطَ فَاَنّٰى يُبْصِرُوْنَ
67	और अगर हम चाहें, तो उन्हें उनकी जगह पर मसख़ कर दें; फिर न वे आगे जा सकें और न पीछे लौट सकें।	وَلَوْ نَشَآءُ لَمَسَخْنٰهُمْ عَلٰى مَكَانَتِهِمْ فَمَا اسْتَطَاعُوْا مُضِيًّا وَّلَا يَرْجِعُوْنَ
68	और जिस किसी की उम्र हम लंबी करते हैं, हम उसे उसकी तख़लीक़ की शुरुआत की तरफ़ लौटा देते हैं तो क्या वे नहीं समझते?	وَمَنْ نُّعَمِّرْهُ نُنَكِّسْهُ فِى الْخَلْقِ اَفَلَا يَعْقِلُوْنَ
69	और हमने उसे (मुहम्मद को) शायरी नहीं सिखाई और न यह उनके लिए मुनासिब है। यह (क़ुरआन) तो बस एक नसीहत और साफ़ किताब है,	وَمَا عَلَّمْنٰهُ الشِّعْرَ وَمَا يَنْۢبَغِيْ لَه اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ وَّقُرْاٰنٌ مُّبِيْنٌ

70	ताकि वह (मुहम्मद) उन लोगों को आगाह कर जिनका दिल ज़िंदगी में है और ताकि काफ़िरों के ख़िलाफ़ (अज़ाब का) हुक्म पक्का हो।	لِّيُنْذِرَ مَنْ كَانَ حَيًّا وَّيَحِقَّ الْقَوْلُ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ
71	क्या उन्होंने नहीं देखा कि हमने उनके लिए अपने इख़्तियार से मवेशी बनाए, फिर वे उन पर क़ाबू पाते हैं?	اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّا خَلَقْنَا لَهُمْ مِّمَّا عَمِلَتْ اَيْدِيْنَآ اَنْعَامًا فَهُمْ لَهَا مٰلِكُوْنَ
72	और हमने उन्हें (मवेशियों को) उनके लिए ताबे कर दिया; फिर उनमें से कुछ उनकी सवारी हैं और कुछ को वे खाते हैं।	وَذَلَّلْنٰهَا لَهُمْ فَمِنْهَا رَكُوْبُهُمْ وَمِنْهَا يَأْكُلُوْنَ
73	और उनसे उन्हें तमाम फ़ायदे और पीने की चीज़ें मिलती हैं तो क्या वे शुक्र नहीं करते?	وَلَهُمْ فِيْهَا مَنَافِعُ وَمَشَارِبُ اَفَلَا يَشْكُرُوْنَ
74	और उन्होंने अल्लाह के सिवा माबूद ले लिए ताकि उनकी मदद हो।	وَاتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اٰلِهَةً لَّعَلَّهُمْ يُنْصَرُوْنَ
75	वे (माबूद) उनकी मदद नहीं कर सकते; बल्कि वे ख़ुद उनके लिए तैयार लश्कर हैं।	لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ نَصْرَهُمْ وَهُمْ لَهُمْ جُنْدٌ مُّحْضَرُوْنَ
76	तो उनकी बात तुझे (मुहम्मद) उदास न करे। निश्चित रूप से, हम जानते हैं जो वे छिपाते हैं और जो वे ज़ाहिर करते हैं।	فَلَا يَحْزُنْكَ قَوْلُهُمْ اِنَّا نَعْلَمُ مَا يُسِرُّوْنَ وَمَا يُعْلِنُوْنَ
77	और क्या मनुष्य ने यह नहीं देखा कि हमने उसे वीर्य की एक बूँद से पैदा किया है, फिर भी वह स्पष्ट शत्रु निकला!	اَوَلَمْ يَرَ الْاِنْسَانُ اَنَّا خَلَقْنٰهُ مِنْ نُّطْفَةٍ فَاِذَا هُوَ خَصِيْمٌ مُّبِيْنٌ
78	और उसने हमारे लिए मिसालें बनाईं और अपनी तख़लीक़ को भूल गया; उसने कहा, 'कौन उन हड्डियों को ज़िंदगी देगा, जो गल-लुहूर हो चुकी हैं?'	وَضَرَبَ لَنَا مَثَلًا وَّنَسِيَ خَلْقَه قَالَ مَنْ يُّحْيِ الْعِظَامَ وَهِيَ رَمِيْمٌ
79	कहो (मुहम्मद), 'वह (अल्लाह) उन्हें ज़िंदगी देगा जिसने उन्हें पहली बार बनाया। और वह हर मख़लूक़ के बारे में ख़ूब जानता है,	قُلْ يُحْيِيْهَا الَّذِيْٓ اَنْشَاَهَآ اَوَّلَ مَرَّةٍ وَهُوَ بِكُلِّ خَلْقٍ عَلِيْمٌ
80	वही (अल्लाह) जिसने तुम्हारे लिए हर दरख़्त से आग बनाई, फिर तुरंत तुम उससे आग जलाते हो।'	الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمْ مِّنَ الشَّجَرِ الْاَخْضَرِ نَارًا فَاِذَآ اَنْتُمْ مِّنْهُ تُوْقِدُوْنَ
81	क्या वह (अल्लाह) जिसने आकाशों और धरती को बनाया, उनके जैसे (उनके जिस्म) को फिर से बनाने की ताक़त नहीं रखता? हाँ, और वह बहुत बड़ा ख़ालिक, सब कुछ जानने वाला है।	اَوَلَيْسَ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِقٰدِرٍ عَلٰٓى اَنْ يَّخْلُقَ مِثْلَهُمْ بَلٰى وَهُوَ الْخَلّٰقُ الْعَلِيْمُ
82	निश्चित रूप से, उसका हुक्म जब वह किसी चीज़ को चाहता है, तो बस इतना कहता है, 'हो जा!' तो वह हो जाती है।	اِنَّمَآ اَمْرُه اِذَآ اَرَادَ شَيْـًٔا اَنْ يَّقُوْلَ لَه كُنْ فَيَكُوْنُ
83	तो वह बहुत पाक है जिसके हाथ में हर चीज़ की बादशाही है और उसी की तरफ़ तुम लौटाए जाओगे।	فَسُبْحٰنَ الَّذِيْ بِيَدِه مَلَكُوْتُ كُلِّ شَيْءٍ وَّاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ

छदों की संख्या	اَلصَّافَّات	مكية
१८२	क रेप्र म Saffat - 37	मक्की

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

क रेप्र म Saffat (पंक्तियाँ)

1	क़सम ह (फरिश्तों की) उन जमातों की जो सफ़ों में खड़े हैं,	وَالصّٰٓفّٰتِ صَفًّا
2	क़सम ह (उन फरिश्तों की) जो सख़्ती से रोकते हैं,	فَالزّٰجِرٰتِ زَجْرًا
3	क़सम ह (उन फरिश्तों की) जो नसीहत पढ़ते हैं,	فَالتّٰلِيٰتِ ذِكْرًا
4	निश्चित रूप से, तुम्हारा रब वाकई एक है।	اِنَّ اِلٰهَكُمْ لَوَاحِدٌ
5	आकाशों और धरती का रब और जो कुछ उनके बीच है और मशरिकों (सूरज के उगने की जगहों) का रब।	رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَرَبُّ الْمَشَارِقِ
6	निश्चित रूप से, हमने दुनिया के आकाश (जो सबसे क़रीब है) को तारों की ज़ीनत से सजाया।	اِنَّا زَيَّنَّا السَّمَاءَ الدُّنْيَا بِزِيْنَةِ الْكَوَاكِبِ
7	और (हमने) उसे हर नाफरमान शैतान से महफ़ूज़ किया,	وَحِفْظًا مِّنْ كُلِّ شَيْطٰنٍ مَّارِدٍ
8	वे (शैतान) मलायका की बातचीत को नहीं सुन सकते और हर तरफ से उन पर (आग) फेंकी जाती है,	لَا يَسَّمَّعُوْنَ اِلَى الْمَلَاِ الْاَعْلٰى وَيُقْذَفُوْنَ مِنْ كُلِّ جَانِبٍ
9	उन्हें भगाने के लिए, और उनके लिए हमेशा का अज़ाब है,	دُحُوْرًا وَّلَهُمْ عَذَابٌ وَّاصِبٌ
10	सिवाय (उस शैतान) के जो (बात) चुरा ले; तो उसे चमकता हुआ तारा पीछा करता है।	اِلَّا مَنْ خَطِفَ الْخَطْفَةَ فَاَتْبَعَهٗ شِهَابٌ ثَاقِبٌ
11	तो उन (मुश्रिकों मक्का) से पूछो, 'क्या उनकी तख़्लीक़ ज़्यादा मुश्किल है या वह जो हमने बनाया?' निश्चित रूप से, हमने उन्हें गीली मिट्टी से बनाया।	فَاسْتَفْتِهِمْ اَهُمْ اَشَدُّ خَلْقًا اَمْ مَّنْ خَلَقْنَا اِنَّا خَلَقْنٰهُمْ مِّنْ طِيْنٍ لَّازِبٍ
12	बल्कि तू (मुहम्मद) उनके इनकार पर हैरान है और वे (तेरी) हँसी उड़ाते हैं।	بَلْ عَجِبْتَ وَيَسْخَرُوْنَ
13	और जब उन्हें नसीहत दी जाती है, तो वे उस पर ग़ौर नहीं करते।	وَاِذَا ذُكِّرُوْا لَا يَذْكُرُوْنَ
14	और जब वे अल्लाह की कोई निशानी देखते हैं, तो उसका मज़ाक उड़ाते हैं।	وَاِذَا رَاَوْا اٰيَةً يَّسْتَسْخِرُوْنَ
15	और वे कहते हैं, 'यह तो बस साफ़ जादू है।	وَقَالُوْٓا اِنْ هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ

16	क़या जब हम मर जाए॰और मटि॰टी और हड़यिा॰ँ हो जाए॰, क़या वाकई हम॰दोबारा उठाया जाएगा?	ءَاِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَّعِظَامًا ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ
17	और क़या हमार॰पहल॰के॰बाप-दादा (भी उठाए जाएँगे)?'	اَوَاٰبَاؤُنَا الْاَوَّلُوْنَ
18	कहो (मुहम्मद), 'हा॰, और तमु ज़लील हो जाओग॰।'	قُلْ نَعَمْ وَاَنْتُمْ دٰخِرُوْنَ
19	तो नशि॰चति रप़ स॰, वह (क़यिामत) बस एक ज़ोर की आवाज़ ह॰; फरि तरु॰त व॰(सब कछु) दखे॰ लगे॰।	فَاِنَّمَا هِيَ زَجْرَةٌ وَّاحِدَةٌ فَاِذَا هُمْ يَنْظُرُوْنَ
20	और व॰कहगे॰, 'हाय हमारी तबाही! (काश) यही वह हसिाब का दनि ह॰।'	وَقَالُوْا يٰوَيْلَنَا هٰذَا يَوْمُ الدِّيْنِ
21	यह वह फ़सै॰ल॰का दनि ह॰जसि॰े तमु झठु॰लात॰े थ॰े।	هٰذَا يَوْمُ الْفَصْلِ الَّذِيْ كُنْتُمْ بِه تُكَذِّبُوْنَ
22	(मलायका स॰कहा जाएगा), 'ज़ालमिो॰ को उनक॰े हमजोलयिो॰ और जो कछु व॰पजू॰ते थ॰े, इकट॰ठा करो,	اُحْشُرُوا الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا وَاَزْوَاجَهُمْ وَمَا كَانُوْا يَعْبُدُوْنَ
23	अल॰लाह क॰सेवि, फरि उनह॰ जहन॰नम की राह दखि॰ाओ।	مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ فَاهْدُوْهُمْ اِلٰى صِرَاطِ الْجَحِيْمِ
24	उनह॰ (रक़ुन॰ की जगह) रोक लो, नशि॰चति रप़ स॰, उनस॰ सवाल कयिा जाएगा,	وَقِفُوْهُمْ اِنَّهُمْ مَّسْـُٔوْلُوْنَ
25	'तमु एक-दसू॰र॰ की मदद क़यो॰ नहीं॰ करत॰े?'	مَا لَكُمْ لَا تَنَاصَرُوْنَ
26	बल॰क़ि॰ व॰उस दनि (अल॰लाह क॰े फ़सै॰ल॰ क॰े सामन॰े) सरडै॰र कर दगे॰।	بَلْ هُمُ الْيَوْمَ مُسْتَسْلِمُوْنَ
27	और उनम॰े स॰े कछु॰ एक-दसू॰र॰ की तरफ़ महुँ॰ करक॰े आपस म॰े झगड़े॰।	وَاَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ يَّتَسَاءَلُوْنَ
28	नशि॰चति रप़ स॰, (उनक॰े ताबदेार) कहगे॰े (अपन॰े सरदारो॰ं स॰े), 'तमु ही हमार॰े पास दाहनिी॰ तरफ़ स॰े आए थ॰े।'	قَالُوْٓا اِنَّكُمْ كُنْتُمْ تَأْتُوْنَنَا عَنِ الْيَمِيْنِ
29	(उनक॰े सरदार) जवाब दगे॰, '(नही), बल॰क़ि॰ तमु ही मोमनि बनन॰े को तयैार न थ॰े,	قَالُوْا بَلْ لَّمْ تَكُوْنُوْا مُؤْمِنِيْنَ
30	जबक़ि॰ हमारा तमु पर कोई इख़॰तयिार न था, बल॰क़ि॰ तमु खदु॰ हद॰ स॰े गज़ु॰रन॰े वाली कौम थ॰े।	وَمَا كَانَ لَنَا عَلَيْكُمْ مِّنْ سُلْطٰنٍ بَلْ كُنْتُمْ قَوْمًا طٰغِيْنَ
31	तो हमार॰े रब का (अज़ाब का) फ़सै॰ला हम पर ठीक हो गया; हम ज़रू॰र (उस अज़ाब को) चखग॰े।	فَحَقَّ عَلَيْنَا قَوْلُ رَبِّنَآ اِنَّا لَذَآئِقُوْنَ
32	तो हमन॰े तमु॰हे॰ गमु॰राह कयिा, नशि॰चति रप़ स॰े, हम खदु॰ गमु॰राह थ॰े।'	فَاَغْوَيْنٰكُمْ اِنَّا كُنَّا غٰوِيْنَ
33	नशि॰चति रप़ स॰े, उस दनि व॰े (सब) अज़ाब म॰े शरीक होग॰े।	فَاِنَّهُمْ يَوْمَئِذٍ فِى الْعَذَابِ مُشْتَرِكُوْنَ

34	नश्ि़चति रप्र स, हम गन्ाहगारों क साथ ऐसा ही सल्ाूक करत हैं।	اِنَّا كَذٰلِكَ نَفْعَلُ بِالْمُجْرِمِيْنَ
35	नश्ि़चति रप्र स, जब उनस कहा जाता था, 'ला इलाहा इल्ललल्लाह' (कोई खद्दा नहीं सविाय अल्लाह क), तो व घमंड करत थे,	اِنَّهُمْ كَانُوْٓا اِذَا قِيْلَ لَهُمْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ يَسْتَكْبِرُوْنَ
36	और कहत थे, 'क्या हम अपन माबद्दों को एक पागल शायर की वजह स छोड़ द?'	وَيَقُوْلُوْنَ اَىِٕنَّا لَتَارِكُوْٓا اٰلِهَتِنَا لِشَاعِرٍ مَّجْنُوْنٍ
37	बल्क़ि वह (मह्म्मद) हक़ लकेर आए और रसूलों की तसद्दीक़ की।	بَلْ جَاۤءَ بِالْحَقِّ وَصَدَّقَ الْمُرْسَلِيْنَ
38	नश्ि़चति रप्र स, तमु जरूर दरद्नाक अज़ाब को चखोग।	اِنَّكُمْ لَذَاۤىِٕقُوا الْعَذَابِ الْاَلِيْمِ
39	और तमु्ह सरि़फ़ उसी का बदला दयिा जाएगा जो तमु न कयिा।	وَمَا تُجْزَوْنَ اِلَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ
40	लकेनि अल्लाह क बनद्दों को जो (गन्ाहों स) पाक कएि गए,	اِلَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلَصِيْنَ
41	उनक लएि मक़ुर्रर रज़िक़ ह,	اُولٰۤىِٕكَ لَهُمْ رِزْقٌ مَّعْلُوْمٌ
42	(यानी) फल। और व लोग ह जो इज़्ज़त पान वाल ह,	فَوَاكِهُ وَهُمْ مُّكْرَمُوْنَ
43	नअेमतों स भरी जन्नतों म,	فِيْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ
44	(व) एक-दूसर क सामन तख़्तों पर बठै होंग।	عَلٰى سُرُرٍ مُّتَقٰبِلِيْنَ
45	उनक पास (जन्नत क) चश्म स (पानी का) जाम घमुाया जाएगा,	يُطَافُ عَلَيْهِمْ بِكَاْسٍ مِّنْ مَّعِيْنٍ
46	(जो) सफ़द ह, पीन वालों क लएि लज़ीज,	بَيْضَاۤءَ لَذَّةٍ لِّلشّٰرِبِيْنَ
47	जसिम न कोई नक़ुसान ह और न व उसस नश म होंग।	لَا فِيْهَا غَوْلٌ وَّلَا هُمْ عَنْهَا يُنْزَفُوْنَ
48	और उनक पास (हूरें) होंगी जो खब्बसरूत आँखों वाली ह, अपनी नगिाह नीची रखती ह,	وَعِنْدَهُمْ قٰصِرٰتُ الطَّرْفِ عِيْنٌ
49	गोया व अच्छ स महफ़ूज़ अंड ह।	كَاَنَّهُنَّ بَيْضٌ مَّكْنُوْنٌ
50	फरि व एक-दूसर की तरफ़ महुँ करक बात करेंग।	فَاَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ يَّتَسَاۤءَلُوْنَ
51	उनम स एक कहगेा, 'नश्ि़चति रप्र स, मरेा (दनुयिा म) एक साथी था,	قَالَ قَاۤىِٕلٌ مِّنْهُمْ اِنِّيْ كَانَ لِيْ قَرِيْنٌ
52	जो कहता था, 'क्या तमु वाकई उन लोगों म हो जो (क़यिामत को) सच मानत ह?	يَّقُوْلُ اَىِٕنَّكَ لَمِنَ الْمُصَدِّقِيْنَ

53	जब हम मर जाएँऔर मटिट्टी और हड्डयिाँहो जाएँ,क्या वाकई हम(उठाकर) हसिाब लयिा जाएगा?'	ءَاِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَّعِظَامًا ءَاِنَّا لَمَدِيْنُوْنَ
54	वह कहगेा, 'क्या तमु (उस साथी को) दखेना चाहोगे?'	قَالَ هَلْ اَنْتُمْ مُّطَّلِعُوْنَ
55	तो वह झाकँगेा, फरि उस जेहन्नम की आग क॰बीच म॰दखेगेा।	فَاطَّلَعَ فَرَاٰهُ فِيْ سَوَاۤءِ الْجَحِيْمِ
56	वह कहगेा, 'अल्लाह की कसम, तनू मझु तकरीबन हलाक कर दयिा था,	قَالَ تَاللّٰهِ اِنْ كِدْتَّ لَتُرْدِيْنِ
57	और अगर मरे॰रब की नअेमत न होती, तो म॰भी उन लोगों म॰ होता जो (जहन्नम म॰) लाए गए।'	وَلَوْلَا نِعْمَةُ رَبِّيْ لَكُنْتُ مِنَ الْمُحْضَرِيْنَ
58	तो क्या हम (अब) नहीं मरगेै?	اَفَمَا نَحْنُ بِمَيِّتِيْنَ
59	सवािय हमारी पहली मौत (दनुयिा म॰) क॰, और हम॰ (इस आख़रित म॰) अजा़ब नहीं दयिा जाएगा?'	اِلَّا مَوْتَتَنَا الْاُوْلٰى وَمَا نَحْنُ بِمُعَذَّبِيْنَ
60	नशि्चति रप्प स॰, यह वाकई बहतु बड़ी कामयाबी ह॰ै	اِنَّ هٰذَا لَهُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ
61	ऐसी (कामयाबी) क॰लिए, जो लोग अमल कर सकत॰ह॰ै, उनह॰ै चाहिए कि अमल करें।	لِمِثْلِ هٰذَا فَلْيَعْمَلِ الْعٰمِلُوْنَ
62	क्या (जन्नत का खाना) यह महेमानी बहेतर ह॰ैया ज़क़्कमू का दरख़्त?	اَذٰلِكَ خَيْرٌ نُّزُلًا اَمْ شَجَرَةُ الزَّقُّوْمِ
63	नशि्चति रप्प स॰, हमन॰इस॰ (ज़क़्कमू क॰दरख़्त को) ज़ालमिों क॰ लिए अजा़ब बनाया।	اِنَّا جَعَلْنٰهَا فِتْنَةً لِّلظّٰلِمِيْنَ
64	नशि्चति रप्प स॰, यह वह दरख़्त ह॰ैजो जहन्नम की तह स॰ निकिलता ह॰ै,	اِنَّهَا شَجَرَةٌ تَخْرُجُ فِيْٓ اَصْلِ الْجَحِيْمِ
65	इसक॰गच्छु॰शैतानों क॰सरि जैसे ह॰ैं।	طَلْعُهَا كَاَنَّه رُءُوْسُ الشَّيٰطِيْنِ
66	तो नशि्चति रप्प स॰, व॰इसस॰ (उसक॰फल) खाएगँे और अपन॰पटे को उसस॰भर लगेै।	فَاِنَّهُمْ لَاٰكِلُوْنَ مِنْهَا فَمَالِـُٔوْنَ مِنْهَا الْبُطُوْنَ
67	फरि नशि्चति रप्प स॰, इसक॰बाद (ज़क़्कमू खान॰क॰) उनक॰लिए बहतु गरम् पानी म॰मलिा हआु पीना होगा।	ثُمَّ اِنَّ لَهُمْ عَلَيْهَا لَشَوْبًا مِّنْ حَمِيْمٍ
68	फरि नशि्चति रप्प स॰, उनकी बरगशत जहन्नम की ओर होगी।	ثُمَّ اِنَّ مَرْجِعَهُمْ لَاِلَى الْجَحِيْمِ
69	नशि्चति रप्प स॰, उनहोंन॰अपन॰बाप-दादा को गमुराह पाया,	اِنَّهُمْ اَلْفَوْا اٰبَاۤءَهُمْ ضَالِّيْنَ
70	फरि व॰जलद॰बाज़ी म॰उनक॰नक़श-ए-क़दम पर चल पड़े।	فَهُمْ عَلٰٓى اٰثٰرِهِمْ يُهْرَعُوْنَ
71	और नशि्चति रप्प स॰, उनस॰पहल॰ज़्यादातर पहल॰क॰लोग गमुराह हो चक्ु॰थ॰े,	وَلَقَدْ ضَلَّ قَبْلَهُمْ اَكْثَرُ الْاَوَّلِيْنَ

72	और नशि़चति रप़ स॒े हमन॓े उनक॓े बीच (रसूल) आगाह करन॓ेवाल॓े भेजे।	وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا فِيْهِمْ مُّنْذِرِيْنَ
73	तो दखे़ो, उन लोगों॑ का अंजाम कसै॓ा हआ॒ जनि़ह॓ आगाह कयि॓ा गया था,	فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُنْذَرِيْنَ
74	सवि॓ाय अलल़ाह क॓े बनद़ों॑ क॓े जो (गन्नाहों॑ स॓े) पाक कए॓ गए।	اِلَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلَصِيْنَ
75	और नशि़चति रप़ स॒े, नह़ न॓े हम॓े पक़ारा, तो हम वाकई॑ सबस॓े अच़्छ॓े जवाब दने॓ेवाल॓े हैं।	وَلَقَدْ نَادٰىنَا نُوْحٌ فَلَنِعْمَ الْمُجِيْبُوْنَ
76	हमन॓े उस॓े और उसक॓े ताबदेारों॑ को बड़ी॑ मसी़बत स॓े नजात दी।	وَنَجَّيْنٰهُ وَاَهْلَه مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيْمِ
77	और हमन॓े उसकी॑ औलाद को बाकी॑ रहन॓ेवाला बनाया।	وَجَعَلْنَا ذُرِّيَّتَه هُمُ الْبَاقِيْنَ
78	और हमन॓े नह़ क॓े लए॓ बाद म॑े आन॓ेवालों॑ म॑े (तारीफ) बाकी॑ रखी;	وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِى الْاٰخِرِيْنَ
79	'नह़ पर सलामती हो सार॓े जहान म॑ें'	سَلٰمٌ عَلٰى نُوْحٍ فِى الْعٰلَمِيْنَ
80	नशि़चति रप़ स॒े, हम नकेी करन॓ेवालों॑ को ऐसा ही बदला दते॓े हैं।	اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ
81	नशि़चति रप़ स॒े, वह हमार॓े ईमान वाल॓े बनद़ों॑ म॑े स॓े था।	اِنَّه مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِيْنَ
82	फरि हमन॓े बाकयिों॑ को डबो॒ दयि॓ा।	ثُمَّ اَغْرَقْنَا الْاٰخَرِيْنَ
83	और नशि़चति रप़ स॒े, इबऱाहीम उसकी जमात म॑े स॓े था।	وَاِنَّ مِنْ شِيْعَتِه لَاِبْرٰهِيْمَ
84	(याद करो) जब वह अपन॓े रब क॓े पास साफ़ दलि लकेर आया,	اِذْ جَاءَ رَبَّه بِقَلْبٍ سَلِيْمٍ
85	(याद करो) जब उसन॓े अपन॓े बाप और अपनी कौम स॓े कहा, 'यह क़या ह॓ै जो तमु॒ पज़ूत॓े हो?	اِذْ قَالَ لِاَبِيْهِ وَقَوْمِه مَاذَا تَعْبُدُوْنَ
86	क़या तमु॒ अलल़ाह क॓े सवि॓ा झठू॒े माबदूों॑ की ख़वाहशि करत॓े हो?	اَئِفْكًا اٰلِهَةً دُوْنَ اللّٰهِ تُرِيْدُوْنَ
87	तो तमु॒ सार॓े जहान क॓े रब क॓े बार॓े म॑े क़या गमु॒ान करत॓े हो?'	فَمَا ظَنُّكُمْ بِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ
88	फरि उसन॓े तारों॑ पर एक नज़र डाली,	فَنَظَرَ نَظْرَةً فِى النُّجُوْمِ
89	फरि उसन॓े (इबऱाहीम न॑े) कहा, 'नशि़चति रप़ स॒े, म॑ बैमार हूँ'	فَقَالَ اِنِّىْ سَقِيْمٌ
90	तो व॓े उसस॓े महुँ॑ मोड़कर चल॓े गए।	فَتَوَلَّوْا عَنْهُ مُدْبِرِيْنَ
91	फरि वह (इबऱाहीम) चपुक॓े स॓े उनक॓े बतुों॑ क॓े पास गया; फरि उसन॓े कहा, 'क़या तमु॒ (खाना) नहीं॑ खात?	فَرَاغَ اِلٰٓى اٰلِهَتِهِمْ فَقَالَ اَلَا تَأْكُلُوْنَ

92	क्या तमु जवाब नहीं दते?'	مَا لَكُمْ لَا تَنْطِقُوْنَ
93	फरि उसन (बतु की) तरफ मुहँ करक अपन दाहनि हाथ स उनह मारा।	فَرَاغَ عَلَيْهِمْ ضَرْبًا بِالْيَمِيْنِ
94	फरि व (उसकी कौम) जलदबाजी म उसक पास आए।	فَاَقْبَلُوْٓا اِلَيْهِ يَزِفُّوْنَ
95	उसन (इब्राहीम न) कहा, 'क्या तमु उन बतु की पजा करत हो जो तमुन खदु तराश है?	قَالَ اَتَعْبُدُوْنَ مَا تَنْحِتُوْنَ
96	जबकि अलाह ही न तमुह और तमुहार कृति को बनाया।'	وَاللّٰهُ خَلَقَكُمْ وَمَا تَعْمَلُوْنَ
97	व बोल, 'इसक लिए (इब्राहीम को जलान की) इमारत बनाओ; फरि इस आग की लपटो म डाल दो।'	قَالُوا ابْنُوْا لَه بُنْيَانًا فَاَلْقُوْهُ فِى الْجَحِيْمِ
98	तो उनहोन (इब्राहीम को जलाकर) उसका मकर करना चाहा, (लकेनि अलाह न उस बचा लिया), फरि हमन उनह जलील कर दिया।	فَاَرَادُوْا بِه كَيْدًا فَجَعَلْنٰهُمُ الْاَسْفَلِيْنَ
99	और उसन (इब्राहीम न) कहा, 'नश्चिति रप स, मझु अपन रब की तरफ जाना ह, वह मझु हदिायत दगे।	وَقَالَ اِنِّىْ ذَاهِبٌ اِلٰى رَبِّىْ سَيَهْدِيْنِ
100	ऐ मरे रब, मझु (ऐसा बटेा) अता कर जो नके लोगो म स हो।'	رَبِّ هَبْ لِىْ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ
101	तो हमन उस एक बहत सबर करन वाल बटे (इसमाइल) की खशुखबरी दी।	فَبَشَّرْنٰهُ بِغُلٰمٍ حَلِيْمٍ
102	फरि जब वह (बटेा) उस उमर तक पहचुँा कि उसक साथ महेनत कर सक, (इब्राहीम) न कहा, 'ऐ मरे बटे! नश्चिति रप स, मनै खवाब म दखेा कि म तझु जबह कर रहा हूँ तो सोच, तरेा क्या खयाल ह?' उसन (इसमाइल न) जवाब दिया, 'ऐ मरे अबबा! जो (अलाह) न तझु हकुम दिया, उस कर; इशंा अलाह त मझु सबर करन वालो म पाएगा।'	فَلَمَّا بَلَغَ مَعَهُ السَّعْيَ قَالَ يٰبُنَيَّ اِنِّىْٓ اَرٰى فِى الْمَنَامِ اَنِّىْٓ اَذْبَحُكَ فَانْظُرْ مَاذَا تَرٰى قَالَ يٰٓاَبَتِ افْعَلْ مَا تُؤْمَرُ سَتَجِدُنِىْٓ اِنْ شَاءَ اللّٰهُ مِنَ الصّٰبِرِيْنَ
103	फरि जब दोनो न सरडैर कर दिया और उसन (इब्राहीम न) अपन बटे को माथ क बल लटिा दिया, (अलाह का हकुम पूरा करन क लिए)।	فَلَمَّآ اَسْلَمَا وَتَلَّه لِلْجَبِيْنِ
104	तो हमन उस पकुारा, 'ऐ इब्राहीम!	وَنَادَيْنٰهُ اَنْ يّٰٓاِبْرٰهِيْمُ
105	नश्चिति रप स, तनू उस खवाब को सच कर दखिाया।' नश्चिति रप स, हम नकेी करन वालो को ऐसा ही बदला दते ह।	قَدْ صَدَّقْتَ الرُّءْيَا اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ
106	नश्चिति रप स, यह वाकई साफ इमतहिान था।	اِنَّ هٰذَا لَهُوَ الْبَلٰٓؤُا الْمُبِيْنُ
107	और हमन उस बटे को एक बड जबीहा स बदल दिया।	وَفَدَيْنٰهُ بِذِبْحٍ عَظِيْمٍ

108	और हमन इब्राहीम क लिए बाद म आन वालो म (तारीफ) बाकी रखी,	وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِى الْاٰخِرِيْنَ
109	'इब्राहीम पर सलामती हो।'	سَلٰمٌ عَلٰٓى اِبْرٰهِيْمَ
110	नशि्चति रप्र स, हम नकी करन वालो को ऐसा ही बदला दते हैं।	كَذٰلِكَ نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ
111	नशि्चति रप्र स, वह हमार ईमान वाल बनदो म स था।	اِنَّه مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِيْنَ
112	और हमन उस इसहाक की खशुखबरी दी, जो एक नबी था और नके लोगो म स था।	وَبَشَّرْنٰهُ بِاِسْحٰقَ نَبِيًّا مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ
113	और हमन उस और इसहाक को बरकत दी। और उनकी औलाद म स कछु न नकी की और कछु न खलु्लमखलु्ला अपन आप पर जलु्म कयिा।	وَبٰرَكْنَا عَلَيْهِ وَعَلٰٓى اِسْحٰقَ وَمِنْ ذُرِّيَّتِهِمَا مُحْسِنٌ وَّظَالِمٌ لِّنَفْسِه مُبِيْنٌ
114	और हमन मूसा और हारून पर बरकत अता की।	وَلَقَدْ مَنَنَّا عَلٰى مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ
115	और हमन दोनो को और उनकी कौम को बड़ी मसु्ीबत स नजात दी,	وَنَجَّيْنٰهُمَا وَقَوْمَهُمَا مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيْمِ
116	और हमन उनकी मदद की, तो व गा़लबि रहन वाल बन गए।	وَنَصَرْنٰهُمْ فَكَانُوْا هُمُ الْغٰلِبِيْنَ
117	और हमन दोनो को बहत्त साफ कतिाब दी,	وَاٰتَيْنٰهُمَا الْكِتٰبَ الْمُسْتَبِيْنَ
118	और हमन दोनो को सीधा रास्ता दखिाया।	وَهَدَيْنٰهُمَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ
119	और हमन दोनो क लिए बाद म आन वालो म (तारीफ) बाकी रखी,	وَتَرَكْنَا عَلَيْهِمَا فِى الْاٰخِرِيْنَ
120	'मूसा और हारून पर सलामती हो।'	سَلٰمٌ عَلٰى مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ
121	नशि्चति रप्र स, हम नकी करन वालो को ऐसा ही बदला दते हैं।	اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ
122	नशि्चति रप्र स, व दोनो हमार ईमान वाल बनदो म स थे।	اِنَّهُمَا مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِيْنَ
123	और नशि्चति रप्र स, इलयास वाकई रसलो म स था।	وَاِنَّ اِلْيَاسَ لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ
124	(याद करो) जब उसन अपनी कौम स कहा, 'कया तमु तकवा नहीं करत?	اِذْ قَالَ لِقَوْمِه اَلَا تَتَّقُوْنَ
125	कया तमु बअल की पजा करत हो और सबस अचछ खालकि को छोड़ दते हो?	اَتَدْعُوْنَ بَعْلًا وَّتَذَرُوْنَ اَحْسَنَ الْخٰلِقِيْنَ
126	(वही) अलला तमुहारा रब और तमुहार पहल क बाप-दादा का रब?'	اللّٰهَ رَبَّكُمْ وَرَبَّ اٰبَاۤئِكُمُ الْاَوَّلِيْنَ

127	लकेनि उन्होंन॰उस॰(इलय़ास को) झठुलाया, तो नशि़चति रप्र॰स॰ व॰(जहन॰नम म॰) लाए जाएँगे॰	فَكَذَّبُوْهُ فَاِنَّهُمْ لَمُحْضَرُوْنَ
128	सविाय अलल़ाह क॰बनद़ों॰क॰जो (गन्नाहों॰स॰) पाक कएि गए,	اِلَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلَصِيْنَ
129	और हमन॰इलय़ास क॰लएि बाद म॰आन॰वालों॰म॰(तारीफ) बाकी़ रखी़।	وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِى الْاٰخِرِيْنَ
130	'इलय़ास पर सलामती हो।'	سَلٰمٌ عَلٰٓى اِلْ يَاسِيْنَ
131	नशि़चति रप्र॰स॰ हम नकेी करन॰वालों॰को ऐसा ही बदला दते॰हैं।	اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ
132	नशि़चति रप्र॰स॰ वह हमार॰ईमान वाल॰बनद़ों॰म॰स॰थे।	اِنَّه مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِيْنَ
133	और नशि़चति रप्र॰स॰ लतू वाकई रसलूों॰म॰स॰थे।	وَاِنَّ لُوْطًا لَّمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ
134	(याद करो) जब हमन॰उस॰और उसक॰तमाम ताबदेारों॰को नजात दी,	اِذْ نَجَّيْنٰهُ وَاَهْلَه اَجْمَعِيْنَ
135	सविाय एक बढ़ी औरत (उसकी बीवी) क॰जो (शहर म॰) रहन॰ वालों॰क॰साथ थी।	اِلَّا عَجُوْزًا فِى الْغٰبِرِيْنَ
136	फरि हमन॰बाकयिों॰को हलाक कर दयिा।	ثُمَّ دَمَّرْنَا الْاٰخَرِيْنَ
137	और नशि़चति रप्र॰स॰ तमु (मकक़ा वाल॰) उनक॰(खंडहरों) पर स॰ सबुह क॰वक़त गज़ुर॰त॰हो,	وَاِنَّكُمْ لَتَمُرُّوْنَ عَلَيْهِمْ مُّصْبِحِيْنَ
138	और रात क॰वक़त। तो क़या तमु नहीं॰समझत॰?	وَبِالَّيْلِ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ
139	और नशि़चति रप्र॰स॰ यनूसु वाकई रसलूों॰म॰स॰थे,	وَاِنَّ يُوْنُسَ لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ
140	(याद करो) जब वह भागकर भरी हुई कश़ती की तरफ़॰गया,	اِذْ اَبَقَ اِلَى الْفُلْكِ الْمَشْحُوْنِ
141	फरि उसन॰केु डाला, तो वह हारन॰वालों॰म॰स॰हो गया।	فَسَاهَمَ فَكَانَ مِنَ الْمُدْحَضِيْنَ
142	तो उस॰एक बड़ी मछली न॰निगल लयिा, जबकि वह मलामत क॰ काबि़ल था।	فَالْتَقَمَهُ الْحُوْتُ وَهُوَ مُلِيْمٌ
143	तो अगर वह उन लोगों॰म॰न होता जो अलल़ाह की बहतु तसबी़ह करत॰हैं,	فَلَوْلَآ اَنَّه كَانَ مِنَ الْمُسَبِّحِيْنَ
144	तो वह (उस मछली क॰) पटे म॰क़यिामत क॰दनि तक रहता।	لَلَبِثَ فِيْ بَطْنِه اِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ
145	फरि हमन॰उस॰एक बंजर ज़मीन पर फकै दयिा, जबकि वह बीमार था।	فَنَبَذْنٰهُ بِالْعَرَاءِ وَهُوَ سَقِيْمٌ
146	फरि उसक॰लएि हमन॰लौकी की तरह का एक दरख़त उगाया।	وَاَنْبَتْنَا عَلَيْهِ شَجَرَةً مِّنْ يَّقْطِيْنٍ

147	और हमन उस एक लाख (लोगो) या उससे ज़्यादा की तरफ़ भेजा,	وَاَرْسَلْنٰهُ اِلٰى مِائَةِ اَلْفٍ اَوْ يَزِيْدُوْنَ
148	तो उनहोंन ईमान लाया, इसलिए हमन उनह एक मक़ररर वक़त तक ज़िंदगी की नअमत दी।	فَاٰمَنُوْا فَمَتَّعْنٰهُمْ اِلٰى حِيْنٍ
149	तो (महममद) उन (काफरिं मकका) स पछो, 'क्या तमहार रब क लिए बटेयिा हँ और उनक लिए बटे?'	فَاسْتَفْتِهِمْ اَلِرَبِّكَ الْبَنَاتُ وَلَهُمُ الْبَنُوْنَ
150	या क्या हमन मलायका को औरतों की शक्ल म बनाया, जबकि व गवाह थ?	اَمْ خَلَقْنَا الْمَلٰٓئِكَةَ اِنَاثًا وَّهُمْ شٰهِدُوْنَ
151	याद रखो, नशि्चति रप्र स, उनकी झठूी बातों म स व वाकई कहत हे,	اَلَآ اِنَّهُمْ مِّنْ اِفْكِهِمْ لَيَقُوْلُوْنَ
152	'अलल्लाह की औलाद ह' और नशि्चति रप्र स, व वाकई झठू हे,	وَلَدَ اللّٰهُ وَاِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ
153	क्या उसन (अलल्लाह न) बटेयिों को बटों पर तरजीह दी?	اَصْطَفَى الْبَنَاتِ عَلَى الْبَنِيْنَ
154	तमह क्या हो गया ह? तम कसै फ़सैला करत हो?	مَا لَكُمْ كَيْفَ تَحْكُمُوْنَ
155	तो क्या तम गौर नहीं करत?	اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ
156	या क्या तमहार पास कोई साफ़ दलील ह?	اَمْ لَكُمْ سُلْطٰنٌ مُّبِيْنٌ
157	(अगर ह) तो अपनी कतिाब लाओ अगर तम सचच हो।	فَأْتُوْا بِكِتٰبِكُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ
158	और उनहोंन (अलल्लाह और) जनि्नात क बीच नसब (रशि्ता) बनाया। और नशि्चति रप्र स, जनि्नात न जान लयिा कि व जरूर (जहनन्म म) लाए जाएँग,	وَجَعَلُوْا بَيْنَهٗ وَبَيْنَ الْجِنَّةِ نَسَبًا وَلَقَدْ عَلِمَتِ الْجِنَّةُ اِنَّهُمْ لَمُحْضَرُوْنَ
159	अलल्लाह उससे बहत पाक ह जो व बयान करत हे,	سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يَصِفُوْنَ
160	सविाय अलल्लाह क बनदों क जो (गन्ाहों स) पाक कए गए।	اِلَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلَصِيْنَ
161	तो नशि्चति रप्र स, तम और जो कछ तम पज्ूत हो,	فَاِنَّكُمْ وَمَا تَعْبُدُوْنَ
162	अलल्लाह क खलिाफ़ (कसिी को) गमराह नहीं कर सकत,	مَآ اَنْتُمْ عَلَيْهِ بِفٰتِنِيْنَ
163	सविाय उन लोगों क जो जहनन्म म जाएँग।	اِلَّا مَنْ هُوَ صَالِ الْجَحِيْمِ
164	और हम म स (मलायका म) कोई ऐसा नहीं जसिका मक़ररर मक़ाम न हो,	وَمَا مِنَّآ اِلَّا لَه مَقَامٌ مَّعْلُوْمٌ
165	और नशि्चति रप्र स, हम हमशेा सफ़ों म खड़े रहत हे (अलल्लाह क हुक्म को पूरा करन म)।	وَّاِنَّا لَنَحْنُ الصَّافُّوْنَ

166	और निश्चित रूप से हम वाकई तसबीह करते रहते हैं (अल्लाह की)।	وَاِنَّا لَنَحْنُ الْمُسَبِّحُوْنَ
167	और निश्चित रूप से वे (काफिर मक्का) वाकई कहते थे,	وَاِنْ كَانُوْا لَيَقُوْلُوْنَ
168	'काश हमारे पास पहले वालों की तरह कोई किताब होती,	لَوْ اَنَّ عِنْدَنَا ذِكْرًا مِّنَ الْاَوَّلِيْنَ
169	तो हम अल्लाह के पाक बन्दे होते।'	لَكُنَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلَصِيْنَ
170	लेकिन फिर भी उन्होंने (क़ुरआन को) झुठलाया; तो जल्द ही वे (इसके अंजाम को) जान पड़ेंगे।	فَكَفَرُوْا بِهٖ فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ
171	और निश्चित रूप से, हमारे रसूल बन्दों के लिए हमारा वादा पक्का हो चुका है,	وَلَقَدْ سَبَقَتْ كَلِمَتُنَا لِعِبَادِنَا الْمُرْسَلِيْنَ
172	(यानी) वे ज़रूर मदद पाएँगे।	اِنَّهُمْ لَهُمُ الْمَنْصُوْرُوْنَ
173	और निश्चित रूप से, हमारा लश्कर ही ग़ालिब रहेगा।	وَاِنَّ جُنْدَنَا لَهُمُ الْغٰلِبُوْنَ
174	तो (मुहम्मद) उनसे कुछ वक़्त तक मुँह फेरे लो,	فَتَوَلَّ عَنْهُمْ حَتّٰى حِيْنٍ
175	और उन्हें दिखा, तो जल्द ही वे (अज़ाब को) देख लेंगे।	وَّاَبْصِرْهُمْ فَسَوْفَ يُبْصِرُوْنَ
176	तो क्या वे हमारे अज़ाब को जल्दी माँगते हैं?	اَفَبِعَذَابِنَا يَسْتَعْجِلُوْنَ
177	तो जब (वह सज़ा) उनके आँगन में उतरेगी, तो बहुत बुरा होगा उन लोगों का सुबह, जिन्हें आगाह किया गया था।	فَاِذَا نَزَلَ بِسَاحَتِهِمْ فَسَاءَ صَبَاحُ الْمُنْذَرِيْنَ
178	और उनसे कुछ वक़्त तक मुँह फेरे लो।	وَتَوَلَّ عَنْهُمْ حَتّٰى حِيْنٍ
179	और देखा, तो जल्द ही वे (अज़ाब को) देख लेंगे।	وَّاَبْصِرْ فَسَوْفَ يُبْصِرُوْنَ
180	तुम्हारा रब, जो बहुत इज़्ज़त वाला है, उससे बहुत पाक है जो वे बयान करते हैं।	سُبْحٰنَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَ
181	और सारे रसूलों पर सलामती हो।	وَسَلٰمٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ
182	और सारी तारीफ़ अल्लाह के लिए है, सारे जहान के रब के लिए।	وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ

छंदों की संख्या	ص	مكية
८८	दख़द - 38	मक्की

بسم الله الرحمن الرحيم

दख़द (साद)

1	साद, क़ुरआन की क़सम जो नसीहत से भरा हुआ है।	ص وَالْقُرْاٰنِ ذِى الذِّكْرِ
2	लेकिन जो लोग काफ़िर हैं वे घमंड और दुश्मनी में हैं।	بَلِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِيْ عِزَّةٍ وَّشِقَاقٍ
3	उनसे पहले कितनी उम्मतों को हमने नष्ट किया, फिर उन्होंने मदद माँगी, जबकि (उस समय) भागकर बचने का वक़्त नहीं था।	كَمْ اَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنْ قَرْنٍ فَنَادَوْا وَّلَاتَ حِيْنَ مَنَاصٍ
4	और वे हैरान हैं कि उनके बीच से एक नसीहत देने वाला (रसूल) उनके पास आया; और काफ़िर लोग कहते हैं, 'यह शख़्स जादूगर है जो बहुत झूठ बोलता है।'	وَعَجِبُوْٓا اَنْ جَاءَهُمْ مُّنْذِرٌ مِّنْهُمْ وَقَالَ الْكٰفِرُوْنَ هٰذَا سٰحِرٌ كَذَّابٌ
5	क्या उसने तमाम ख़ुदाओं को एक ही ख़ुदा बना दिया? निश्चय ही, यह वाक़ई बहुत हैरान करने वाली बात है।	اَجَعَلَ الْاٰلِهَةَ اِلٰهًا وَّاحِدًا اِنَّ هٰذَا لَشَيْءٌ عُجَابٌ
6	फिर उनके सरदार चले गए (और कहने लगे), 'जाओ और अपने ख़ुदाओं की इबादत में डटे रहो, निश्चय ही यह वाक़ई एक ऐसी चीज़ है जो चाही गई है।	وَانْطَلَقَ الْمَلَاُ مِنْهُمْ اَنِ امْشُوْا وَاصْبِرُوْا عَلٰٓى اٰلِهَتِكُمْ اِنَّ هٰذَا لَشَيْءٌ يُّرَادُ
7	हमने यह बात आख़िरी दीन में कभी नहीं सुनी; यह (अल्लाह को एक मानना) बस एक बनाया हुआ झूठ है।	مَا سَمِعْنَا بِهٰذَا فِى الْمِلَّةِ الْاٰخِرَةِ اِنْ هٰذَآ اِلَّا اخْتِلَاقٌ
8	क्या हमारे बीच से उसी पर क़ुरआन उतारा गया? बल्कि वे मेरे क़ुरआन के बारे में शक में हैं, लेकिन उन्होंने अभी मेरा अज़ाब नहीं चखा।	اَؤُنْزِلَ عَلَيْهِ الذِّكْرُ مِنْ بَيْنِنَا بَلْ هُمْ فِيْ شَكٍّ مِّنْ ذِكْرِيْ بَلْ لَّمَّا يَذُوْقُوْا عَذَابِ
9	या क्या उनके पास तुम्हारे रब की रहमत का ख़ज़ाना है, जो बहुत इज़्ज़त वाला, बहुत देने वाला है?	اَمْ عِنْدَهُمْ خَزَاٰئِنُ رَحْمَةِ رَبِّكَ الْعَزِيْزِ الْوَهَّابِ
10	या क्या उनके पास आकाशों और धरती और उनके बीच की चीज़ों की बादशाहत है? (अगर है,) तो उन्हें चाहिए कि वे (आकाश की) सीढ़ियाँ चढ़ें।	اَمْ لَهُمْ مُّلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا فَلْيَرْتَقُوْا فِى الْاَسْبَابِ
11	(वे) वहाँ मौजूद एक बड़ी फ़ौज का समूह है जो हार जाएँगे।	جُنْدٌ مَّا هُنَالِكَ مَهْزُوْمٌ مِّنَ الْاَحْزَابِ
12	उनसे पहले नूह की क़ौम, आद और बहुत सारी फ़ौजों वाले फ़िरऔन ने भी (रसूलों को) झुठलाया था।	كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ وَّعَادٌ وَّفِرْعَوْنُ ذُو الْاَوْتَادِ

13	और (इसी तरह) समद्द, लत की कौम और ऐका क बाशदिों न भी। यही व गिरोह थ जो (रसलों क ख़लिाफ) एकजट हुए।	وَثَمُوْدُ وَقَوْمُ لُوْطٍ وَّاَصْحٰبُ لْـَٔيْكَةِ اُولٰٓئِكَ الْاَحْزَابُ
14	उन सभी न रसलों को झठलाया, तो मरे अज़ाब का हक़ बन गया।	اِنْ كُلٌّ اِلَّا كَذَّبَ الرُّسُلَ فَحَقَّ عِقَابِ
15	और व बस एक ही चीख़ का इंतज़ार कर रह ह, जसिक लिए कोई रक़ावट नहीं ह।	وَمَا يَنْظُرُ هٰٓؤُلَاءِ اِلَّا صَيْحَةً وَّاحِدَةً مَّا لَهَا مِنْ فَوَاقٍ
16	और उन्होंने कहा, 'ऐ हमारे रब! हसिाब क दनि स पहल हमार लिए वह अज़ाब जलदी कर द जो हमार लिए मक़ररर ह।'	وَقَالُوْا رَبَّنَا عَجِّلْ لَّنَا قِطَّنَا قَبْلَ يَوْمِ الْحِسَابِ
17	उनकी बातों पर सबर करो; और हमार बनद दाऊद को याद करो, जो ताकतवर थ; नशि्चय ही, व बहत आज़ाकारी थ।	اِصْبِرْ عَلٰى مَا يَقُوْلُوْنَ وَاذْكُرْ عَبْدَنَا دَاوٗدَ ذَا الْاَيْدِ اِنَّهٗ اَوَّابٌ
18	नशि्चय ही, हमन पहाड़ों को उनक साथ तसबीह करन क लिए ताब कर दयिा, शाम और सबह क वक़त।	اِنَّا سَخَّرْنَا الْجِبَالَ مَعَهٗ يُسَبِّحْنَ بِالْعَشِيِّ وَالْاِشْرَاقِ
19	और (हमन) पक्षयिों को भी, जो जमा होकर (तसबीह करत थ), ताब कर दयिा। हर एक बहत आज़ाकारी था।	وَالطَّيْرَ مَحْشُوْرَةً كُلٌّ لَّهٗ اَوَّابٌ
20	और हमन उनकी बादशाहत को मज़बत कयिा और उन्ह हकिमत दी और फसैला करन म बद्धमिानी दी।	وَشَدَدْنَا مُلْكَهٗ وَاٰتَيْنٰهُ الْحِكْمَةَ وَفَصْلَ الْخِطَابِ
21	और क्या तमु्ह उन लोगों की ख़बर पहचुी जो झगड़त हुए महिराब की दीवार चढ़ गए?	وَهَلْ اَتٰىكَ نَبَؤُا الْخَصْمِ اِذْ تَسَوَّرُوا الْمِحْرَابَ
22	जब व दाऊद क पास दाख़लि हुए, तो वह उनस डर गया। उन्होंने कहा, 'डरो मत! (हम) दो लोग ह जो आपस म झगड़ रह ह, हम म स एक न दूसर पर जलु्म कयिा ह; तो हमार बीच इंसाफ स फसैला करो और हक़ स न भटको, और हम सीध रास्त की हदिायत दो।'	اِذْ دَخَلُوْا عَلٰى دَاوٗدَ فَفَزِعَ مِنْهُمْ قَالُوْا لَا تَخَفْ خَصْمٰنِ بَغٰى بَعْضُنَا عَلٰى بَعْضٍ فَاحْكُمْ بَيْنَنَا بِالْحَقِّ وَلَا تُشْطِطْ وَاهْدِنَآ اِلٰى سَوَاءِ الصِّرَاطِ
23	नशि्चय ही, यह मरो भाई ह, उसक पास नन्यानव भड़े ह और मरे पास सरि्फ एक ह, फरि उसन कहा, 'इस मरे हवाल कर द' और उसन मझुस बहस म जीत हासलि की।	اِنَّ هٰذَآ اَخِيْ لَهٗ تِسْعٌ وَّتِسْعُوْنَ نَعْجَةً وَّلِيَ نَعْجَةٌ وَّاحِدَةٌ فَقَالَ اَكْفِلْنِيْهَا وَعَزَّنِيْ فِي الْخِطَابِ
24	उसन (दाऊद न) कहा, 'नशि्चय ही, उसन तमु्ह पर जलु्म कयिा कि तमु्हारी भड़े को अपनी भड़ों म शामलि करन की माँग की। वाक़ई, जो लोग एक-दूसर क साथी ह, उनम स बहत स एक-दूसर पर जलु्म करत ह, सवािय उन लोगों क जो ईमान लाए और नके काम कए; और ऐस लोग बहत कम ह।' और दाऊद न समझा कि हमन उसकी आज़माइश की; तो उसन अपन रब स माफी माँगी, फरि सजदा करत हुए गरि पड़ा और तौबा की।	قَالَ لَقَدْ ظَلَمَكَ بِسُؤَالِ نَعْجَتِكَ اِلٰى نِعَاجِهٖ وَاِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ الْخُلَطَاءِ لَيَبْغِيْ بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَقَلِيْلٌ مَّا هُمْ وَظَنَّ دَاوٗدُ اَنَّمَا فَتَنّٰهُ فَاسْتَغْفَرَ رَبَّهٗ وَخَرَّ رَاكِعًا وَّاَنَابَ

25	तो हमन॓उसकी (गलती) को माफ कर दयिा। और नशि्चय ही, उसक॓लिए हमार॓पास बहत्त करीबी मकाम ह॑और अच्छा ठकिाना ह॑।	فَغَفَرْنَا لَه ذٰلِكَ وَاِنَّ لَه عِنْدَنَا لَزُلْفٰى وَحُسْنَ مَاٰبٍ
26	(अल्लाह न॓फरमाया,) 'ऐ दाऊद! नशि्चय ही, हमन॓तमु्ह॑ धरती पर खलीफा बनाया, तो लोगों क॓बीच इंसाफ स॓फैसला करो और हवस का पालन न करो, क्योंकि यह तमु्ह॑ अल्लाह क॓रास्त॓स॓भटका दगेा। नशि्चय ही, जो लोग अल्लाह क॓रास्त॓स॓भटक जात॓ह॑, उनक॓लिए सख़्त अज़ाब ह॑, क्योंकि व॓हसिाब क॓दनि को भूल गए।'	يٰدَاوٗدُ اِنَّا جَعَلْنٰكَ خَلِيْفَةً فِى الْاَرْضِ فَاحْكُمْ بَيْنَ النَّاسِ بِالْحَقِّ وَلَا تَتَّبِعِ الْهَوٰى فَيُضِلَّكَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اِنَّ الَّذِيْنَ يَضِلُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ بِمَا نَسُوْا يَوْمَ الْحِسَابِ
27	और हमन॓आकाशों और धरती और उनक॓बीच की चीज़ों को बकेार नहीं बनाया। यह काफरिों का गमु्मान ह॑, तो काफरिों क॓लिए खराबी ह॑, क्योंकि व॓आग म॓जाएँगे।	وَمَا خَلَقْنَا السَّمَاءَ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا بَاطِلًا ذٰلِكَ ظَنُّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَوَيْلٌ لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنَ النَّارِ
28	क्या हम उन लोगों को, जो ईमान लाए और नके काम कएि, उनक॓बराबर कर॑जो धरती पर बगिाड़ करत॓ह॑? या क्या हम तकवा वालों को बरु॓लोगों क॓बराबर कर॑?	اَمْ نَجْعَلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ كَالْمُفْسِدِيْنَ فِى الْاَرْضِ اَمْ نَجْعَلُ الْمُتَّقِيْنَ كَالْفُجَّارِ
29	(यह) कताि ब (क़ुरआन) ह॑, जो हमन॓तमु्ह॑ पर उतारी, जो बरकतों स॓भरी ह॑, ताकि व॓इसकी आयतों पर गौर कर॑और बद्धमिान लोग नसीहत हासलि कर॑।	كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ اِلَيْكَ مُبٰرَكٌ لِّيَدَّبَّرُوْٓا اٰيٰتِه وَلِيَتَذَكَّرَ اُولُوا الْاَلْبَابِ
30	और हमन॓दाऊद को (उनक॓बटे॓) सलुमैान का तोहफा दयिा; वह बहत्त अच्छा बन्दा था। नशि्चय ही, वह बहत्त आज्ञाकारी था।	وَوَهَبْنَا لِدَاوٗدَ سُلَيْمٰنَ نِعْمَ الْعَبْدُ اِنَّه اَوَّابٌ
31	(याद करो) जब एक शाम को उनक॓सामन॓(घोड़े) पशे कएि गए, जो नरम थ॓, (लकेनि) बहत्त तज़े दौड़त॓थे।	اِذْ عُرِضَ عَلَيْهِ بِالْعَشِيِّ الصّٰفِنٰتُ الْجِيَادُ
32	तो उसन॓कहा, 'नशि्चय ही, मनै॓माल की मोहब्बत को अपन॓रब की याद पर तरजीह दी, यहाँ तक कि (सूरज) परद॓म॓चला गया।'	فَقَالَ اِنِّيْٓ اَحْبَبْتُ حُبَّ الْخَيْرِ عَنْ ذِكْرِ رَبِّيْ حَتّٰى تَوَارَتْ بِالْحِجَابِ
33	(उसन॓कहा,) 'उनह॑ (घोड़ों को) मरे॓पास वापस लाओ।' फरि उसन॓उनक॓पावँ और गरदन॓(हाथ फरेना) शरू॒कीं।	رُدُّوْهَا عَلَيَّ فَطَفِقَ مَسْحًا بِالسُّوْقِ وَالْاَعْنَاقِ
34	और हमन॓सलुमैान की आज़माइश की और उनक॓तख़्त पर एक जसिम् रख दयिा, फरि वह (अल्लाह की ओर) रज़ू॒हुआ।	وَلَقَدْ فَتَنَّا سُلَيْمٰنَ وَاَلْقَيْنَا عَلٰى كُرْسِيِّه جَسَدًا ثُمَّ اَنَابَ
35	उसन॓कहा, 'ऐ मरे॓रब! मझु॓माफ कर द॓और मझु॓ऐसी बादशाहत द॓जो मरे॓बाद कसिी क॓लिए न हो। नशि्चय ही, त॑ूबहत्त दने॓वाला ह॑।'	قَالَ رَبِّ اغْفِرْ لِيْ وَهَبْ لِيْ مُلْكًا لَّا يَنْبَغِيْ لِاَحَدٍ مِّنْ بَعْدِيْ اِنَّكَ اَنْتَ الْوَهَّابُ
36	तो हमन॓हवा को उसक॓लिए ताब॓कर दयिा, जो उसकी मरज़ी स॓नरमी स॓चलती थी, जहाँ वह चाहता था।	فَسَخَّرْنَا لَهُ الرِّيْحَ تَجْرِيْ بِاَمْرِه رُخَاءً حَيْثُ اَصَابَ

37	और शैतानों को (भी ताब`कर दिया), हर तरह क`बनुकर और गोताख़ोर को।	وَالشَّيٰطِيْنَ كُلَّ بَنَّاءٍ وَّغَوَّاصٍ
38	और (शैतानों म`से) जो बेड़ियों म`जकड़`हुए थे।	وَّاٰخَرِيْنَ مُقَرَّنِيْنَ فِى الْاَصْفَادِ
39	(हमन`कहा,) 'यह हमारी नमेत ह;ै तो इस`(दूसरों को) दो या अपन`पास रखो, बिना किसी हिसाब क`।'	هٰذَا عَطَاؤُنَا فَامْنُنْ اَوْ اَمْسِكْ بِغَيْرِ حِسَابٍ
40	और निश्चय ही, उसक`लिए हमार`पास करीबी मकाम ह`और अच्छा ठिकाना ह`।	وَاِنَّ لَه عِنْدَنَا لَزُلْفٰى وَحُسْنَ مَاٰبٍ
41	और हमार`बनद`अय्यूब को याद करो, जब उसन`अपन`रब को पुकारा, 'निश्चय ही, शैतान न`मुझ`तकलीफ और मुसीबत स`परेशान किया।'	وَاذْكُرْ عَبْدَنَآ اَيُّوْبَ اِذْ نَادٰى رَبَّه اَنِّيْ مَسَّنِيَ الشَّيْطٰنُ بِنُصْبٍ وَّعَذَابٍ
42	(अल्लाह न`फरमाया,) 'अपन`पाँव को ज़मीन पर मारो; यह ठंडा पानी ह`नहान`और पीन`क`लिए।'	اُرْكُضْ بِرِجْلِكَ هٰذَا مُغْتَسَلٌ بَارِدٌ وَّشَرَابٌ
43	और हमन`उस`उसकी (फरि स`इकट्ठी की गई) ख़ानदान दी और उनकी तादाद को दोगन्ना कर दिया, हमारी रहमत क`तौर पर और बद्धिमान लोगों क`लिए नसीहत क`तौर पर।	وَوَهَبْنَا لَه اَهْلَه وَمِثْلَهُمْ مَّعَهُمْ رَحْمَةً مِّنَّا وَذِكْرٰى لِاُولِى الْاَلْبَابِ
44	और (हमन`कहा,) 'अपन`हाथ स`(घास का) एक गच्छा लो, फरि उसस`(उस`) मारो और अपनी कसम न तोड़ो।' निश्चय ही, हमन`उस`सब्र करन`वाला पाया। वह बहत्त अच्छा बनद्रा था। निश्चय ही, वह बहत्त आज़ाकारी था।	وَخُذْ بِيَدِكَ ضِغْثًا فَاضْرِبْ بِّه وَلَا تَحْنَثْ اِنَّا وَجَدْنٰهُ صَابِرًا نِعْمَ الْعَبْدُ اِنَّه اَوَّابٌ
45	और हमार`बनद्रों इब्राहीम, इसहाक और याकूब को याद करो, जो बड़ी ताकत और (उच्च) ज़्ञान वाल`थे।	وَاذْكُرْ عِبٰدَنَآ اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ اُولِى الْاَيْدِيْ وَالْاَبْصَارِ
46	निश्चय ही, हमन`उनह`(उच्च) अख़लाक क`साथ ख़ास कर दिया, यानी हमशेा आख़रित की याद दलिान`वाला।	اِنَّآ اَخْلَصْنٰهُمْ بِخَالِصَةٍ ذِكْرَى الدَّارِ
47	और निश्चय ही, हमार`पास व`चन्न`हुए और सबस`अच्छ`लोगों म`स`ह`।	وَاِنَّهُمْ عِنْدَنَا لَمِنَ الْمُصْطَفَيْنَ الْاَخْيَارِ
48	और इस्माइल, इल्यास और ज़ुलकफ़िल को याद करो। व`सभी सबस`अच्छ`लोगों म`स`ह`।	وَاذْكُرْ اِسْمٰعِيْلَ وَالْيَسَعَ وَذَا الْكِفْلِ وَكُلٌّ مِّنَ الْاَخْيَارِ
49	यह एक नसीहत ह`और निश्चय ही, तकवा वालों क`लिए अच्छा ठिकाना ह`।	هٰذَا ذِكْرٌ وَاِنَّ لِلْمُتَّقِيْنَ لَحُسْنَ مَاٰبٍ
50	(यानी) जनन्त`जनिम`हमशेा रहन`वाल`बाग़ ह,ै जनिक`दरवाज़`उनक`लिए खोल`जाएँगे।	جَنّٰتِ عَدْنٍ مُّفَتَّحَةً لَّهُمُ الْاَبْوَابُ
51	वहा`व`तकिए पर टकि`होंग,े और वहा`व`बहत्त सार`फल और पये मागँगे।	مُتَّكِـِٔيْنَ فِيْهَا يَدْعُوْنَ فِيْهَا بِفَاكِهَةٍ كَثِيْرَةٍ وَّشَرَابٍ

52	और उनके साथ उनकी उम्र की, नज़रें नीची करने वाली (हूरें) होंगी।	وَعِنْدَهُمْ قٰصِرٰتُ الطَّرْفِ اَتْرَابٌ
53	यह वह (अज़ाब) है, तो उन्हें इसका स्वाद चखने दो, (उनका पये) बहुत गरम पानी और बहुत ठंडा पानी।	هٰذَا مَا تُوْعَدُوْنَ لِيَوْمِ الْحِسَابِ
54	और दूसरी तरह का (अज़ाब) जो इसके जैसा है	اِنَّ هٰذَا لَرِزْقُنَا مَا لَه مِنْ نَّفَادٍ
55	यह (जन्नत) है, और नाफरमानों के लिए बुरा ठिकाना है	هٰذَا وَاِنَّ لِلطّٰغِيْنَ لَشَرَّ مَاٰبٍ
56	(यानी) जहन्नम, जिसमें वे दाख़िल होंगे, और वह कितना बुरा ठिकाना है	جَهَنَّمَ يَصْلَوْنَهَا فَبِئْسَ الْمِهَادُ
57	यह (जहन्नम का अज़ाब) है, तो उन्हें इसका स्वाद चखने दो, (उनका पये) बहुत गरम पानी और बहुत ठंडा पानी।	هٰذَا فَلْيَذُوْقُوْهُ حَمِيْمٌ وَّغَسَّاقٌ
58	और दूसरी तरह का (अज़ाब) जो इसके जैसा है	وَّاٰخَرُ مِنْ شَكْلِهٖٓ اَزْوَاجٌ
59	(उन्हें कहा जाएगा,) 'यह तुम्हारे साथियों का बड़ा समूह है जो तुम्हारे साथ (जहन्नम में) घुस रहा है।' कोई स्वागत की बात नहीं है, क्योंकि निश्चय ही वे आग में जाएँगे।	هٰذَا فَوْجٌ مُّقْتَحِمٌ مَّعَكُمْ لَا مَرْحَبًا بِهِمْ اِنَّهُمْ صَالُوا النَّارِ
60	(उनके अनुयायी जवाब देते हैं,) 'बल्कि तुम्हीं (ज़्यादा हक़दार हो) कि तुम्हें स्वागत न मिले, क्योंकि तुमने ही हमें इस अज़ाब में डाला, तो यह बहुत बुरा ठिकाना है।'	قَالُوْا بَلْ اَنْتُمْ لَا مَرْحَبًا بِكُمْ اَنْتُمْ قَدَّمْتُمُوْهُ لَنَا فَبِئْسَ الْقَرَارُ
61	वे (फिर) कहते हैं, 'ऐ हमारे रब! जिसने हमें इस (अज़ाब) में डाला, उसके लिए जहन्नम में दोगुना अज़ाब बढ़ा दे।'	قَالُوْا رَبَّنَا مَنْ قَدَّمَ لَنَا هٰذَا فَزِدْهُ عَذَابًا ضِعْفًا فِي النَّارِ
62	और (नाफरमान लोग) कहते हैं, 'हम उन लोगों को क्यों नहीं देखते जिन्हें हम दुनिया में बुरा (नीच) समझते थे।'	وَقَالُوْا مَا لَنَا لَا نَرٰى رِجَالًا كُنَّا نَعُدُّهُمْ مِّنَ الْاَشْرَارِ
63	क्या हमने उन्हें मज़ाक बनाया था, या हमारी नज़रें उन्हें नहीं देख पा रही हैं?'	اَتَّخَذْنٰهُمْ سِخْرِيًّا اَمْ زَاغَتْ عَنْهُمُ الْاَبْصَارُ
64	निश्चय ही, ऐसा ही होगा, (यानी) जहन्नम के बाशिंदों के बीच झगड़ा।	اِنَّ ذٰلِكَ لَحَقٌّ تَخَاصُمُ اَهْلِ النَّارِ
65	कहो (मुहम्मद), 'निश्चय ही, मैं सिर्फ़ एक नसीहत देने वाला हूँ, अल्लाह के सिवा कोई ख़ुदा नहीं, जो एक है, बहुत इज़्ज़त वाला।'	قُلْ اِنَّمَآ اَنَا مُنْذِرٌ وَّمَا مِنْ اِلٰهٍ اِلَّا اللّٰهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ
66	आकाशों और धरती और उनके बीच की चीज़ों का रब, बहुत इज़्ज़त वाला, बहुत माफ करने वाला।	رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا الْعَزِيْزُ الْغَفَّارُ
67	कहो, 'यह (क़ुरआन) एक बड़ी ख़बर है'	قُلْ هُوَ نَبَؤٌا عَظِيْمٌ
68	जिससे तुम मुँह फेरे रहे हो।	اَنْتُمْ عَنْهُ مُعْرِضُوْنَ

69	मझु उस उच्च सभा (मलायका) क बार मे ज़रा भी इलम नहीं था जब व बहस कर रह थे।	مَا كَانَ لِيَ مِنْ عِلْمٍ بِالْمَلَإِ الْاَعْلٰٓى اِذْ يَخْتَصِمُوْنَ
70	मरे पास जो वह्य आई, वह यह ह कि म सरिफ़ एक साफ़ नसीहत दने वाला हूँ	اِنْ يُّوْحٰٓى اِلَيَّ اِلَّآ اَنَّمَآ اَنَا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ
71	(याद करो) जब तमुहार रब न फ़रिश्तो स कहा, 'नश्चिय ही, म मटि्टी स इंसान बनान वाला हूँ'	اِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلٰٓئِكَةِ اِنِّيْ خَالِقٌ بَشَرًا مِّنْ طِيْنٍ
72	फरि जब म उसकी रचना को पूरा कर लूँऔर उसम अपनी रूह फूँक दूँ तो तमु उसक लिए सजदा करत हुए झुक जाओ।'	فَاِذَا سَوَّيْتُه وَنَفَخْتُ فِيْهِ مِنْ رُّوْحِيْ فَقَعُوْا لَه سٰجِدِيْنَ
73	तो तमाम फ़रिश्तो न सजदा किया।	فَسَجَدَ الْمَلٰٓئِكَةُ كُلُّهُمْ اَجْمَعُوْنَ
74	सिवाय इबलीस क; उसन घमंड किया और वह काफ़िरो म स हो गया।	اِلَّآ اِبْلِيْسَ اِسْتَكْبَرَ وَكَانَ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ
75	(अल्लाह न) फ़रमाया, 'ऐ इबलीस, तमुह उस चीज़ को सजदा करन स क्या न रोका जसि मनै अपनी ताकत स बनाया? क्या तमुन घमंड किया या तमु (खदु को) ऊचँे दरज़ वालो म स समझत हो?'	قَالَ يٰٓاِبْلِيْسُ مَا مَنَعَكَ اَنْ تَسْجُدَ لِمَا خَلَقْتُ بِيَدَيَّ اَسْتَكْبَرْتَ اَمْ كُنْتَ مِنَ الْعَالِيْنَ
76	(इबलीस न) कहा, 'म उससे बेहतर हूँ क्योंकि तनू मझु आग स बनाया और उस मटि्टी स बनाया।'	قَالَ اَنَا خَيْرٌ مِّنْهُ خَلَقْتَنِيْ مِنْ نَّارٍ وَّخَلَقْتَه مِنْ طِيْنٍ
77	(अल्लाह न) फ़रमाया, 'तो यहा स नकिल जा! नश्चिय ही, तमु लानती हो।'	قَالَ فَاخْرُجْ مِنْهَا فَاِنَّكَ رَجِيْمٌ
78	और नश्चिय ही, मरी लानत तझु पर बदसतूर रहगेी जब तक कि हसिाब का दनि न आए।'	وَّاِنَّ عَلَيْكَ لَعْنَتِيْٓ اِلٰى يَوْمِ الدِّيْنِ
79	(इबलीस न) कहा, 'ऐ मरे रब! मझु उस दनि तक मोहलत द जब व (लोग) दोबारा उठाए जाएँगे।'	قَالَ رَبِّ فَاَنْظِرْنِيْٓ اِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ
80	(अल्लाह न) फ़रमाया, 'तो नश्चिय ही, तमु उन लोगो म स हो जनि्ह मोहलत दी गई ह'	قَالَ فَاِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِيْنَ
81	उस दनि तक जो वक़्त मक़ुररर किया गया ह (कयिामत का दनि)।	اِلٰى يَوْمِ الْوَقْتِ الْمَعْلُوْمِ
82	(इबलीस न) जवाब दयिा, 'तरी इज़्ज़त की कसम, म उन सबको गमुराह कर दूँगा।'	قَالَ فَبِعِزَّتِكَ لَاُغْوِيَنَّهُمْ اَجْمَعِيْنَ
83	सिवाय उन बनदो क जो उनक बीच स चनु गए ह'	اِلَّا عِبَادَكَ مِنْهُمُ الْمُخْلَصِيْنَ
84	(अल्लाह न) फ़रमाया, 'तो सच्चाई (मरी कसम) ह, और म सरिफ़ सच्चाई ही कहता हूँ'	قَالَ فَالْحَقُّ وَالْحَقَّ اَقُوْلُ

لَاَمْلَـئَنَّ جَهَنَّمَ مِنْكَ وَمِمَّنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ اَجْمَعِيْنَ	नश्चिय ही, म`जहन्नम को तुझस`और उन लोगों`स`भर दूँगा जो उनक`बीच स`तेरो अनसुरण करेंगे।'	**85**
قُلْ مَآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ وَّمَآ اَنَا مِنَ الْمُتَكَلِّفِيْنَ	कहो (मुहम्मद), 'म`इसक`(दावत क) लिए कोई जज़्या नहीं माँगता; और म`उन लोगों`म`स`नहीं हूँजो बनावटी बात`करत` हूँ'	**86**
اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعٰلَمِيْنَ	(क़ुआन) यह बस तमाम आलम क`लिए एक नसीहत हो	**87**
وَلَتَعْلَمُنَّ نَبَاَه بَعْدَ حِيْنٍ	और नश्चिय ही, तुम इसकी (क़ुआन की) ख़बर की सच्चाई को कुछ वक़्त बाद जान लोगे।	**88**

छंदों की संख़्या	اَلزُّمَر	مكية
७५	अज़्-जुमर - 39	मक्की

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अज़्-जुमर (समूह)

1	यह कताब (क़ुरआन) अल्लाह की तरफ़ से उतारी गई, जो बहुत इज़्ज़त वाला, बहुत हिकमत वाला है।	تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ
2	निश्चित रूप से, हमने यह कताब (क़ुरआन) तुम (मुहम्मद) पर हक़ के साथ उतारी। तो अल्लाह की इबादत ख़ालिस करके करो।	اِنَّآ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ فَاعْبُدِ اللّٰهَ مُخْلِصًا لَّهُ الدِّيْنَ
3	याद रखो! केवल अल्लाह के लिए ख़ालिस दीन है। और जो लोग उसके सिवा दूसरों को सरपरस्त बनाते हैं (कहते हैं), 'हम उनकी इबादत इसलिए करते हैं ताकि वे हमें अल्लाह के ज़्यादा क़रीब कर दें।' निश्चित रूप से, अल्लाह उनके बीच उनके इख़्तिलाफ़ की बाबत फ़ैसला करेगा। निश्चित रूप से, अल्लाह झूठे और बहुत इनकार करने वाले को हिदायत नहीं देता।	اَلَا لِلّٰهِ الدِّيْنُ الْخَالِصُ وَالَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَاۤءَ مَا نَعْبُدُهُمْ اِلَّا لِيُقَرِّبُوْنَآ اِلَى اللّٰهِ زُلْفٰى اِنَّ اللّٰهَ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ فِيْ مَا هُمْ فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِيْ مَنْ هُوَ كٰذِبٌ كَفَّارٌ
4	अगर अल्लाह कोई औलाद लेना चाहता, तो वह अपनी मख़लूक़ में से जो चाहता चुन लेता। वह बहुत पाक है। वही अल्लाह है जो वाहिद, ग़ालिब है।	لَوْ اَرَادَ اللّٰهُ اَنْ يَّتَّخِذَ وَلَدًا لَّاصْطَفٰى مِمَّا يَخْلُقُ مَا يَشَاۤءُ سُبْحٰنَهٗ هُوَ اللّٰهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ
5	उसने आकाशों और धरती को हक़ के साथ बनाया; वह रात को दिन पर डालता है और दिन को रात पर डालता है और उसने सूरज और चाँद को ताबे कर दिया, हर एक मुक़र्रर वक़्त तक चलता है। याद रखो! वही बहुत इज़्ज़त वाला, बहुत माफ़ करने वाला है।	خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ يُكَوِّرُ الَّيْلَ عَلَى النَّهَارِ وَيُكَوِّرُ النَّهَارَ عَلَى الَّيْلِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ كُلٌّ يَّجْرِيْ لِاَجَلٍ مُّسَمًّى اَلَا هُوَ الْعَزِيْزُ الْغَفَّارُ
6	उसने तुम्हें एक जान (आदम) से बनाया, फिर उससे उसकी जोड़ी बनाई और तुम्हारे लिए मवेशियों के आठ जोड़े उतारे। वह तुम्हें तुम्हारी माँ के पेट में एक के बाद एक हालत में तीन अँधेरों में बनाता है। यही अल्लाह है, तुम्हारा रब, उसी की बादशाही है। उसके सिवा कोई माबूद नहीं; तो तुम कहाँ भटकाए जा रहे हो?	خَلَقَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ ثُمَّ جَعَلَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَاَنْزَلَ لَكُمْ مِّنَ الْاَنْعَامِ ثَمٰنِيَةَ اَزْوَاجٍ يَخْلُقُكُمْ فِيْ بُطُوْنِ اُمَّهٰتِكُمْ خَلْقًا مِّنْۢ بَعْدِ خَلْقٍ فِيْ ظُلُمٰتٍ ثَلٰثٍ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ لَهُ الْمُلْكُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ فَاَنّٰى تُصْرَفُوْنَ

7	अगर तुम कुफ़्र करो (तो जान लो) कि निशि्चति रूप स अल्लाह को तुम्हारी ज़रूरत नहीं और वह अपने बन्दों के कुफ़्र को पसंद नहीं करता। और अगर तुम शुक्र करो, तो वह तुम्हारे शुक्र को पसंद करता है। कोई गुनाह उठाने वाला दूसरे का गुनाह नहीं उठाता। फिर तुम्हारी बरगश्त तुम्हारे रब की ओर होगी, फिर वह तुम्हें बताएगा जो तुम ने किया। निशि्चति रूप स, वह दिलों में छुपी बातों को बहुत अच्छ से जानता है।	اِنْ تَكْفُرُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ غَنِيٌّ عَنْكُمْ وَلَا يَرْضٰى لِعِبَادِهِ الْكُفْرَ وَاِنْ تَشْكُرُوْا يَرْضَهُ لَكُمْ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰى ثُمَّ اِلٰى رَبِّكُمْ مَّرْجِعُكُمْ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ
8	और जब इंसान को कोई मुसीबत छूती है, तो वह अपने रब की ओर रुजू करके उसे पुकारता है; लेकिन जब वह उस अपनी तरफ़ से कोई नअमत देता है, तो वह भूल जाता है जिसे (मुसीबत) के लिए उसने पहले अल्लाह को पुकारा था, और वह अल्लाह के लिए शरीक ठहराता है ताकि (लोगों को) उसके रास्त से भटकाए। कहो, 'अपने कुफ़्र में थोड़ा मज़ा ले लो। निशि्चति रूप स, तुम जहन्नम वालों में से हो।'	وَاِذَا مَسَّ الْاِنْسَانَ ضُرٌّ دَعَا رَبَّهٗ مُنِيْبًا اِلَيْهِ ثُمَّ اِذَا خَوَّلَهٗ نِعْمَةً مِّنْهُ نَسِيَ مَا كَانَ يَدْعُوْٓا اِلَيْهِ مِنْ قَبْلُ وَجَعَلَ لِلّٰهِ اَنْدَادًا لِّيُضِلَّ عَنْ سَبِيْلِهٖ قُلْ تَمَتَّعْ بِكُفْرِكَ قَلِيْلًا اِنَّكَ مِنْ اَصْحٰبِ النَّارِ
9	(क्या वह मुशि्रक बेहतर है) या वह शख़्स जो रात के वक़्त इबादत करता है, सजदा करता है और खड़ा रहता है, आख़िरत के अज़ाब से डरता है और अपने रब की रहमत की उम्मीद रखता है? कहो, 'क्या वे लोग जो जानते हैं और जो नहीं जानते, बराबर हैं?' निशि्चति रूप स, केवल अक़्लमंद लोग ही सबक़ लेते हैं।	اَمَّنْ هُوَ قَانِتٌ اٰنَاۤءَ الَّيْلِ سَاجِدًا وَّقَآئِمًا يَّحْذَرُ الْاٰخِرَةَ وَيَرْجُوْا رَحْمَةَ رَبِّهٖ قُلْ هَلْ يَسْتَوِى الَّذِيْنَ يَعْلَمُوْنَ وَالَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ اِنَّمَا يَتَذَكَّرُ اُولُوا الْاَلْبَابِ
10	कहो (ऐ मुहम्मद), 'ऐ मेरे बन्दो जो ईमान लाए! अपने रब से डरो।' जो लोग इस दुनिया में नेकी करते हैं, उनके लिए अच्छाई है और अल्लाह की धरती बहुत वसी है। केवल सब्र करने वालों को ही उनका अज्र बे-हिसाब पूरा दिया जाएगा।	قُلْ يٰعِبَادِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوْا رَبَّكُمْ لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوْا فِيْ هٰذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةٌ وَاَرْضُ اللّٰهِ وَاسِعَةٌ اِنَّمَا يُوَفَّى الصّٰبِرُوْنَ اَجْرَهُمْ بِغَيْرِ حِسَابٍ
11	कहो, 'निशि्चति रूप स, मुझे हुक्म दिया गया कि मैं अल्लाह की इबादत ख़ालिस करके (दीन में) करूँ	قُلْ اِنِّيْٓ اُمِرْتُ اَنْ اَعْبُدَ اللّٰهَ مُخْلِصًا لَّهُ الدِّيْنَ
12	और मुझे हुक्म दिया गया कि मैं सबसे पहले सरेडर करने वालों में से होऊँ।'	وَاُمِرْتُ لِاَنْ اَكُوْنَ اَوَّلَ الْمُسْلِمِيْنَ
13	कहो, 'निशि्चति रूप स, मुझे उस बड़े दिन के अज़ाब का डर है अगर मैं अपने रब की नाफ़रमानी करूँ।'	قُلْ اِنِّيْٓ اَخَافُ اِنْ عَصَيْتُ رَبِّيْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ
14	कहो, 'मैं केवल अल्लाह की इबादत करता हूँ अपने दीन में उसे ख़ालिस करके।'	قُلِ اللّٰهَ اَعْبُدُ مُخْلِصًا لَّهٗ دِيْنِيْ
15	तो तुम उसके सिवा जिसे चाहो पुकारो! (ऐ मुशि्रको)। कहो, 'निशि्चति रूप स, नुक़सान उठाने वाले वे हैं जो क़ियामत के दिन अपने और अपने घरवालों को नुक़सान पहुँचाएँ।' याद रखो! यही साफ़ नुक़सान है।	فَاعْبُدُوْا مَا شِئْتُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ قُلْ اِنَّ الْخٰسِرِيْنَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ وَاَهْلِيْهِمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ اَلَا ذٰلِكَ هُوَ الْخُسْرَانُ الْمُبِيْنُ
16	उनके ऊपर आग की तहें होंगी और उनके नीचे भी तहें होंगी जो उनके लिए तैयार की गई हैं। इस तरह अल्लाह अपने बन्दों को (अज़ाब से) डराता है। 'ऐ मेरे बन्दो, तो मुझ से डरो।'	لَهُمْ مِّنْ فَوْقِهِمْ ظُلَلٌ مِّنَ النَّارِ وَمِنْ تَحْتِهِمْ ظُلَلٌ ذٰلِكَ يُخَوِّفُ اللّٰهُ بِهٖ عِبَادَهٗ يٰعِبَادِ فَاتَّقُوْنِ

وَالَّذِيْنَ اجْتَنَبُوا الطَّاغُوْتَ اَنْ يَّعْبُدُوْهَا وَاَنَابُوْٓا اِلَى اللّٰهِ لَهُمُ الْبُشْرٰى فَبَشِّرْ عِبَادِ	**17**	और जो लोग तागूत से बचते हैं (यानी) उसकी इबादत नहीं करते और अल्लाह की ओर रुजू करते हैं, उनके लिए ख़ुशख़बरी है; इसलिए मेरे बन्दों को ख़ुशख़बरी दे,
الَّذِيْنَ يَسْتَمِعُوْنَ الْقَوْلَ فَيَتَّبِعُوْنَ اَحْسَنَه اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ هَدٰىهُمُ اللّٰهُ وَاُولٰٓئِكَ هُمْ اُولُوا الْاَلْبَابِ	**18**	(यानी) वे जो बात को सुनते हैं फिर उसमें से सबसे अच्छी बात की पैरवी करते हैं यही वे लोग हैं जिन्हें अल्लाह ने हिदायत दी और यही अक़्लमंद लोग हैं
اَفَمَنْ حَقَّ عَلَيْهِ كَلِمَةُ الْعَذَابِ اَفَاَنْتَ تُنْقِذُ مَنْ فِى النَّارِ	**19**	तो क्या (तुम बदलना चाहते हो) उन लोगों का हाल जिन पर अज़ाब का फ़ैसला हो चुका है? क्या तुम (ऐ मुहम्मद) उस शख़्स को बचा सकते हो जो आग में है?
لٰكِنِ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ لَهُمْ غُرَفٌ مِّنْ فَوْقِهَا غُرَفٌ مَّبْنِيَّةٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ وَعْدَ اللّٰهِ لَا يُخْلِفُ اللّٰهُ الْمِيْعَادَ	**20**	लेकिन जो लोग अपने रब से डरते हैं, उनके लिए जन्नत में ऊँची-ऊँची कोठरियाँ हैं, जिनके ऊपर और कोठरियाँ बनाई गई हैं, जिनके नीचे नहरें बहती हैं (यह) अल्लाह का वादा है अल्लाह अपने वादे के ख़िलाफ़ नहीं करता।
اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَاۤءِ مَاۤءً فَسَلَكَه يَنَابِيْعَ فِى الْاَرْضِ ثُمَّ يُخْرِجُ بِه زَرْعًا مُّخْتَلِفًا اَلْوَانُه ثُمَّ يَهِيْجُ فَتَرٰىهُ مُصْفَرًّا ثُمَّ يَجْعَلُه حُطَامًا اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَذِكْرٰى لِاُولِى الْاَلْبَابِ	**21**	क्या तुमने नहीं देखा कि अल्लाह आकाश से पानी उतारता है, फिर उस धरती में सरोतों के रूप में ले जाता है, फिर उसके ज़रिए हर तरह की रंग-बिरंगी खेती उगाता है, फिर वह सूख जाता है, फिर तुम उसे पीला देखते हो, फिर वह उसे चूर-चूर कर देता है निश्चित रूप से, इसमें अक़्लमंद लोगों के लिए सबक़ है
اَفَمَنْ شَرَحَ اللّٰهُ صَدْرَه لِلْاِسْلَامِ فَهُوَ عَلٰى نُوْرٍ مِّنْ رَّبِّه فَوَيْلٌ لِّلْقٰسِيَةِ قُلُوْبُهُمْ مِّنْ ذِكْرِ اللّٰهِ اُولٰٓئِكَ فِىْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ	**22**	तो क्या वह शख़्स जिसका दिल अल्लाह ने इस्लाम के लिए खोल दिया और उसे अपने रब की रौशनी मिली (उसके बराबर है जो दिल सख़्त है)? तो अफ़सोस है उन लोगों पर जिनके दिल अल्लाह की याद से सख़्त हो गए। वे साफ़ गुमराही में हैं
اَللّٰهُ نَزَّلَ اَحْسَنَ الْحَدِيْثِ كِتٰبًا مُّتَشَابِهًا مَّثَانِيَ تَقْشَعِرُّ مِنْهُ جُلُوْدُ الَّذِيْنَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ ثُمَّ تَلِيْنُ جُلُوْدُهُمْ وَقُلُوْبُهُمْ اِلٰى ذِكْرِ اللّٰهِ ذٰلِكَ هُدَى اللّٰهِ يَهْدِيْ بِه مَنْ يَّشَاۤءُ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَه مِنْ هَادٍ	**23**	अल्लाह ने सबसे अच्छी बात (यानी) क़ुरआन उतारा, जो एक जैसी (आयतों वाला) और बार-बार दोहराया गया है, जिससे उनके बदन काँप उठते हैं जो अपने रब से डरते हैं, फिर उनके बदन और दिल अल्लाह की याद से नरम हो जाते हैं यही अल्लाह की हिदायत है, जिसके ज़रिए वह जिसे चाहता है हिदायत देता है और जिसे अल्लाह गुमराह कर दे, उसके लिए कोई हिदायत देने वाला नहीं।
اَفَمَنْ يَّتَّقِيْ بِوَجْهِه سُوْٓءَ الْعَذَابِ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَقِيْلَ لِلظّٰلِمِيْنَ ذُوْقُوْا مَا كُنْتُمْ تَكْسِبُوْنَ	**24**	तो क्या वे लोग जो क़ियामत के दिन अपने चेहरों को बुरे अज़ाब से बचाते हैं (मोमिनों के बराबर हैं)? और ज़ालिमों से कहा जाएगा, 'जो तुमने कमाया, उसका मज़ा चखो।'
كَذَّبَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَاَتٰىهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُوْنَ	**25**	जो लोग उनसे पहले थे, उन्होंने (रसूलों को) झुठलाया, तो उनके पास अज़ाब उस तरफ़ से आया जिसका उन्हें गुमान न था।
فَاَذَاقَهُمُ اللّٰهُ الْخِزْيَ فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَكْبَرُ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ	**26**	तो अल्लाह ने उन्हें दुनिया की ज़िंदगी में ज़लील दी। और निश्चित रूप से, आख़िरत का अज़ाब उससे कहीं बड़ा है, काश वे जानते।

وَلَقَدْ ضَرَبْنَا لِلنَّاسِ فِيْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ لَّعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ	और नश्चिति रूप स,े हमन ेइस क़ुरआन म ेंइंसानों क ेलिए हर तरह की मिसाल ेंदी ंताकि व ेसबक़ ल ें।	**27**
قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا غَيْرَ ذِيْ عِوَجٍ لَّعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ	(यह) अरबी क़ुरआन ह,ै जिसम ंकोई टेढ़ापन नहीं ताकि व ेतक़वा इख़्तियार कर ें।	**28**
ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا رَّجُلًا فِيْهِ شُرَكَاءُ مُتَشٰكِسُوْنَ وَرَجُلًا سَلَمًا لِّرَجُلٍ هَلْ يَسْتَوِيٰنِ مَثَلًا اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ	अल्लाह न ेएक मिसाल दी (यानी) एक आदमी (ग़ुलाम) जो कई शरीकों का ह ैजो आपस म ंझगड़त ेह,ैं और एक ग़ुलाम जो सिर्फ़ एक शख़्स का ह ै क्या दोनों ग़ुलामों की हालत एक जैसी ह?ै सारी तारीफ़ अल्लाह क ेलिए ह,ै लेकिन ज़्यादातर लोग नहीं जानत े।	**29**
اِنَّكَ مَيِّتٌ وَّاِنَّهُمْ مَّيِّتُوْنَ	नश्चिति रूप स,े तमु (ऐ मुहम्मद) मरन ेवाल ेहो और व ेभी मरन ेवाल ेह ैं	**30**
ثُمَّ اِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ عِنْدَ رَبِّكُمْ تَخْتَصِمُوْنَ	फिर नश्चिति रूप स,े तमु क़ियामत क ेदिन अपन ेरब क ेसामन ेझगड़ोग े।	**31**
فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ كَذَبَ عَلَى اللّٰهِ وَكَذَّبَ بِالصِّدْقِ اِذْ جَاءَهٗ اَلَيْسَ فِيْ جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْكٰفِرِيْنَ	तो उस शख़्स स ेज़्यादा ज़ालिम कौन ह ैजो अल्लाह पर झठू गढ़ता ह ैऔर उस हक़ को झठुलाता ह ैजो उसक ेपास आया? क्या जहन्नम म ंकाफ़िरों क ेलिए ठिकाना नहीं?	**32**
وَالَّذِيْ جَاءَ بِالصِّدْقِ وَصَدَّقَ بِهٖ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُتَّقُوْنَ	और जो शख़्स हक़ लाया (मुहम्मद) और जिसन ेउसकी तस्दीक़ की, वही लोग तक़वा करन ेवाल ेह ैं	**33**
لَهُمْ مَّا يَشَاءُوْنَ عِنْدَ رَبِّهِمْ ذٰلِكَ جَزَاءُ الْمُحْسِنِيْنَ	उनक ेलिए उनक ेरब क ेपास वह सब ह ैजो व ेचाहत ेह ैं यही नेक काम करन ेवालों का बदला ह,ै	**34**
لِيُكَفِّرَ اللّٰهُ عَنْهُمْ اَسْوَاَ الَّذِيْ عَمِلُوْا وَيَجْزِيَهُمْ اَجْرَهُمْ بِاَحْسَنِ الَّذِيْ كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ	ताकि अल्लाह उनक ेसबस ेबुरे कामों को मिटा द ेजो उनहोंन ेकिए और उनह ेंउनक ेकिए स ेबहेतर बदला द े।	**35**
اَلَيْسَ اللّٰهُ بِكَافٍ عَبْدَهٗ وَيُخَوِّفُوْنَكَ بِالَّذِيْنَ مِنْ دُوْنِهٖ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ هَادٍ	क्या अल्लाह अपन ेबन्द ेक ेलिए काफ़ी नहीं? व ेतमुह ें(उन ससंाहनों स)े डरात ेह ैजो उसक ेसिवा ह ैं और जिस ेअल्लाह गमुराह कर द,े उसक ेलिए कोई हदिायत दने ेवाला नहीं।	**36**
وَمَنْ يَّهْدِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ مُّضِلٍّ اَلَيْسَ اللّٰهُ بِعَزِيْزٍ ذِى انْتِقَامٍ	और जिस ेअल्लाह हदिायत द,े उस ेकोई गमुराह नहीं कर सकता। क्या अल्लाह बहतु शक्तशिाली और इंतक़िाम लने ेवाला नहीं ह?ै	**37**

وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ لَيَقُوْلُنَّ اللّٰهُ ۚ قُلْ اَفَرَءَيْتُمْ مَّا تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اِنْ اَرَادَنِيَ اللّٰهُ بِضُرٍّ هَلْ هُنَّ كٰشِفٰتُ ضُرِّهٖۤ اَوْ اَرَادَنِيْ بِرَحْمَةٍ هَلْ هُنَّ مُمْسِكٰتُ رَحْمَتِهٖ ۚ قُلْ حَسْبِيَ اللّٰهُ ۗ عَلَيْهِ يَتَوَكَّلُ الْمُتَوَكِّلُوْنَ	और अगर तमु उनस`पछो, 'आकाशो और धरती को कसिन` बनाया?' तो व`ज़रू कहगे, `अल़लाह।' कहो, 'तो क़या तमुन` सोचा क जनिह` तमु अल़लाह क`सवि पक़ुारत`हो, अगर अल़लाह मझु`कोई नक़ुसान पहचुँाना चाह, तो क़या व`उस नक़ुसान को हटा सकत`ह, या अगर वह मझु`रहमत दनेा चाह, तो क़या व`उसकी रहमत को रोक सकत`ह?' कहो, 'मर`लिए अल़लाह काफ़ी ह, उसी पर तवक़्क़ुल करन`वाल`भरोसा करत`ह।'	**38**
قُلْ يٰقَوْمِ اعْمَلُوْا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ اِنِّيْ عَامِلٌ ۚ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ	कहो (ऐ मह़म्मद), 'ऐ मरी कौम! अपनी जगह पर काम करो, म` भी काम करता हू, फरि तमु जलद जान पड़ोग,	**39**
مَنْ يَّاْتِيْهِ عَذَابٌ يُّخْزِيْهِ وَيَحِلُّ عَلَيْهِ عَذَابٌ مُّقِيْمٌ	कसि`वह अज़ाब आएगा जो उस`ज़लील करगेा और जसि पर हमशेा का अज़ाब नाज़लि होगा।'	**40**
اِنَّاۤ اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ لِلنَّاسِ بِالْحَقِّ ۚ فَمَنِ اهْتَدٰى فَلِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ ضَلَّ فَاِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا ۚ وَمَاۤ اَنْتَ عَلَيْهِمْ بِوَكِيْلٍ	नशि़चति रप़ स, हमन`तमु पर यह कतिाब (क़ुरआन) इंसानो क` लएि हक़ क`साथ उतारी; तो जो हदिायत पाए, वह अपन`लएि, और जो गमुराह हो, तो नशि़चति रप़ स`उसकी गमुराही उसक` लएि ह, और तमु उनक`ज़मि़मदेार नहीं।	**41**
اَللّٰهُ يَتَوَفَّى الْاَنْفُسَ حِيْنَ مَوْتِهَا وَالَّتِيْ لَمْ تَمُتْ فِيْ مَنَامِهَا ۚ فَيُمْسِكُ الَّتِيْ قَضٰى عَلَيْهَا الْمَوْتَ وَيُرْسِلُ الْاُخْرٰۤى اِلٰۤى اَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ	अल़लाह कसिी की जान उसकी मौत क`वक़्त लतेा ह`और जो (अभी) नहीं मरा, उसकी जान उसकी नीद म`(रोकता ह); तो जसिकी मौत का फ़सैला हो चक़ुा, उसकी जान रोक लतेा ह`और बाकी को मक़ुऱ्रर वक़्त तक छोड़ दतेा ह, नशि़चति रप़ स`इसम` उन लोगो क`लएि नशिानयिा ह`जो सोचत`ह।	**42**
اَمِ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ شُفَعَآءَ ۭ قُلْ اَوَلَوْ كَانُوْا لَا يَمْلِكُوْنَ شَيْـًٔا وَّلَا يَعْقِلُوْنَ	क़या उनहो`अल़लाह क`सवि मददगार बनाए? कहो, 'क़या (तमु उनह`बनात`हो) भल`ही उनक`पास कछु भी न हो और व` समझ न रख़त`हो?'	**43**
قُلْ لِّلّٰهِ الشَّفَاعَةُ جَمِيْعًا ۭ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ ثُمَّ اِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ	कहो, 'हर तरह की मदद कवेल अल़लाह क`लएि ह, उसी की बादशाही ह`आकाशो और धरती की। फरि उसी की ओर तमु लौटाए जाओग।'	**44**
وَاِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَحْدَهُ اشْمَاَزَّتْ قُلُوْبُ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ ۚ وَاِذَا ذُكِرَ الَّذِيْنَ مِنْ دُوْنِهٖۤ اِذَا هُمْ يَسْتَبْشِرُوْنَ	और जब कवेल अल़लाह का ज़क़्र कयिा जाता ह, तो उनक` दलि जो आख़रित पर ईमान नहीं लात, सकिड़ु जात`ह। लकेनि जब उसक`सवि दसूरो का ज़क़्र कयिा जाता ह, तो व`अचानक ख़शु हो जात`ह।	**45**
قُلِ اللّٰهُمَّ فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ عٰلِمَ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ اَنْتَ تَحْكُمُ بَيْنَ عِبَادِكَ فِيْ مَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ	कहो, 'ऐ अल़लाह, आकाशो और धरती क`पदैा करन`वाल, जो ग़ब और ज़ाहरि को जानता ह, त ही अपन`बनद़ो क`बीच उनक` इख़्तलिाफ़ का फ़सैला करगेा।'	**46**

47	और अगर ज़ालिमों के पास वह सब कुछ हो जो धरती में है और उतना ही और, तो वे क़ियामत के दिन बुरे अज़ाब से अपनी जान छुड़ाने के लिए उसे दे देंगे। और उनके सामने अल्लाह की तरफ़ से वह (अज़ाब) ज़ाहिर होगा जिसका उन्हें गुमान न था।	وَلَوْ اَنَّ لِلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مَا فِى الْاَرْضِ جَمِيْعًا وَّمِثْلَهٗ مَعَهٗ لَافْتَدَوْا بِهٖ مِنْ سُوْٓءِ الْعَذَابِ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَبَدَا لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مَا لَمْ يَكُوْنُوْا يَحْتَسِبُوْنَ
48	और उनके लिए उनकी कमाई की बुराइयाँ ज़ाहिर होंगी और जो कुछ वे मज़ाक़ उड़ाते थे, वह उन्हें घेरे लेगा।	وَبَدَا لَهُمْ سَيِّاٰتُ مَا كَسَبُوْا وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ
49	तो जब इंसान को कोई मुसीबत छूती है, तो वह हमें पुकारता है, फिर जब हम उसे अपनी तरफ़ से कोई नेअमत देते हैं, तो वह कहता है, 'मुझे यह नेअमत मेरी अक़्ल की वजह से मिली।' बल्कि यह एक इम्तिहान है, लेकिन ज़्यादातर लोग नहीं जानते।	فَاِذَا مَسَّ الْاِنْسَانَ ضُرٌّ دَعَانَا ثُمَّ اِذَا خَوَّلْنٰهُ نِعْمَةً مِّنَّا قَالَ اِنَّمَآ اُوْتِيْتُهٗ عَلٰى عِلْمٍ بَلْ هِىَ فِتْنَةٌ وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ
50	निश्चित रूप से, उन लोगों ने जो उनसे पहले थे, यही बात कही, तो उनकी कमाई उनके कुछ काम न आई।	قَدْ قَالَهَا الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَمَآ اَغْنٰى عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ
51	तो उनकी कमाई की बुराइयों ने उन्हें पकड़ लिया। और इनमें से जो लोग ज़ालिम हैं, उनकी कमाई की बुराइयाँ भी उन्हें पकड़ लेंगी और वे बच नहीं सकते।	فَاَصَابَهُمْ سَيِّاٰتُ مَا كَسَبُوْا وَالَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْ هٰٓؤُلَآءِ سَيُصِيْبُهُمْ سَيِّاٰتُ مَا كَسَبُوْا وَمَا هُمْ بِمُعْجِزِيْنَ
52	क्या वे नहीं जानते कि अल्लाह जिसके लिए चाहता है, रिज़्क़ को वसी करता है और (जिसके लिए चाहता है) तंग करता है? निश्चित रूप से, इसमें उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो ईमान लाते हैं।	اَوَلَمْ يَعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ
53	कहो, 'ऐ मेरे बन्दो! जो अपनी जानों पर ज़्यादती कर चुके! अल्लाह की रहमत से मायूस न हो। निश्चित रूप से, अल्लाह सारे गुनाहों को माफ करता है। निश्चित रूप से, वही बहुत माफ करने वाला, बहुत रहम करने वाला है।'	قُلْ يٰعِبَادِيَ الَّذِيْنَ اَسْرَفُوْا عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ لَا تَقْنَطُوْا مِنْ رَّحْمَةِ اللّٰهِ اِنَّ اللّٰهَ يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ جَمِيْعًا اِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ
54	और अपने रब की ओर रुजू करो, और उसके सामने सरेंडर करो इससे पहले कि तुम पर अज़ाब आ जाए, फिर तुम्हारी कोई मदद न हो।	وَاَنِيْبُوْٓا اِلٰى رَبِّكُمْ وَاَسْلِمُوْا لَهٗ مِنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَكُمُ الْعَذَابُ ثُمَّ لَا تُنْصَرُوْنَ
55	और अपने रब की तरफ़ से तुम पर उतारी गई सबसे अच्छी चीज़ (क़ुरआन) की पैरवी करो, इससे पहले कि तुम पर अज़ाब अचानक आ जाए, और तुम्हें ख़बर भी न हो,	وَاتَّبِعُوْٓا اَحْسَنَ مَآ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَكُمُ الْعَذَابُ بَغْتَةً وَّاَنْتُمْ لَا تَشْعُرُوْنَ
56	ताकि कोई न कहे, 'हाय मेरी लापरवाही जो मैंने अल्लाह के हक़ में की, और निश्चित रूप से मैं मज़ाक़ उड़ाने वालों में था,'	اَنْ تَقُوْلَ نَفْسٌ يّٰحَسْرَتٰى عَلٰى مَا فَرَّطْتُّ فِىْ جَنْۢبِ اللّٰهِ وَاِنْ كُنْتُ لَمِنَ السّٰخِرِيْنَ
57	या (कोई न) कहे, 'काश अल्लाह ने मुझे हिदायत दी होती, तो मैं तक़वा करने वालों में होता,'	اَوْ تَقُوْلَ لَوْ اَنَّ اللّٰهَ هَدٰىنِىْ لَكُنْتُ مِنَ الْمُتَّقِيْنَ

58	या (कोई न) कहे जब वह अज़ाब देख ले, 'काश मुझे (दुनिया में) वापसी मिले, तो मैं नेके काम करने वालों में होता।'	اَوْ تَقُوْلَ حِيْنَ تَرَى الْعَذَابَ لَوْ اَنَّ لِيْ كَرَّةً فَاَكُوْنَ مِنَ الْمُحْسِنِيْنَ
59	नशि्चति रूप से, मेरी दलील तुम्हारे पास आई थी, लकेिन तुमने उन्हें झठुलाया, बलकि तुमने घमंड कयिा और काफरिों में से हो गए।	بَلٰى قَدْ جَاۤءَتْكَ اٰيٰتِيْ فَكَذَّبْتَ بِهَا وَاسْتَكْبَرْتَ وَكُنْتَ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ
60	और कयिामत के दनि तुम उन लोगों को देखोगे जो अल्लाह पर झठू गढ़ते थे, उनके चेहरे काले पड़ जाएँगे। कया जहन्नम में घमंड करने वालों का ठकिाना नही?	وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ تَرَى الَّذِيْنَ كَذَبُوْا عَلَى اللّٰهِ وُجُوْهُهُمْ مُّسْوَدَّةٌ اَلَيْسَ فِيْ جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْمُتَكَبِّرِيْنَ
61	और अल्लाह उन लोगों को बचाएगा जो तक़वा करते हैं उनकी कामयाबी की वजह से उन्हें न अज़ाब छूएगा और न वे गमगीन होंगे।	وَيُنَجِّى اللّٰهُ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا بِمَفَازَتِهِمْ لَا يَمَسُّهُمُ السُّوْۤءُ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ
62	अल्लाह हर चीज़ का पदैा करने वाला है और वह हर चीज़ का नगिहबान है।	اَللّٰهُ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ وَّهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ وَّكِيْلٌ
63	उसी के पास आकाशों और धरती की कंुजयिाँ (ख़ज़ाने) हैं और जो लोग अल्लाह की आयतों से कफ़ुर करते हैं, वही नक़ुसान उठाने वाले हैं।	لَه مَقَالِيْدُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ
64	कहो (ऐ मुहम्मद), 'कया तुम मुझे अल्लाह के सविा कसिी और की इबादत करने का हुक्म देते हो, ऐ जाहलिो?'	قُلْ اَفَغَيْرَ اللّٰهِ تَاْمُرُوْٓنِّيْۤ اَعْبُدُ اَيُّهَا الْجٰهِلُوْنَ
65	और नशि्चति रूप से, तुम्हें और तुमसे पहले वालों को वह्य की गई कि अगर तुमने शरिक कयिा, तो तुम्हारा अमल जाया हो जाएगा और तुम ज़रूर नक़ुसान उठाने वालों में हो जाओगे।	وَلَقَدْ اُوْحِيَ اِلَيْكَ وَاِلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكَ لَئِنْ اَشْرَكْتَ لَيَحْبَطَنَّ عَمَلُكَ وَلَتَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ
66	इसलिए, केवल अल्लाह की इबादत करो और शक़ुर करने वालों में से हो।	بَلِ اللّٰهَ فَاعْبُدْ وَكُنْ مِّنَ الشّٰكِرِيْنَ
67	और उन्होंने अल्लाह को उसकी शान के मुताबकि नहीं समझा, जबकि सारी धरती कयिामत के दनि उसकी मट्ठुी में होगी और आकाश उसकी दाहनिी हथेली में लपेटे जाएँगे। वह बहुत पाक है और उससे बहुत बलुंद है जो वे शरीक करते हैं।	وَمَا قَدَرُوا اللّٰهَ حَقَّ قَدْرِه وَالْاَرْضُ جَمِيْعًا قَبْضَتُه يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَالسَّمٰوٰتُ مَطْوِيّٰتٌ بِيَمِيْنِه سُبْحٰنَه وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ
68	और सूर फूंका जाएगा, तो जो (मख़लूक़) आकाशों और धरती में हैं, वे मर जाएँगे, सविाय उनके जनिहें अल्लाह चाहे। फरि उसके दोबारा फूंका जाएगा, तो वे अचानक खड़े हो जाएँगे (अल्लाह के फ़ैसले का) इंतज़ार करते हुए।	وَنُفِخَ فِي الصُّوْرِ فَصَعِقَ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِي الْاَرْضِ اِلَّا مَنْ شَاءَ اللّٰهُ ثُمَّ نُفِخَ فِيْهِ اُخْرٰى فَاِذَا هُمْ قِيَامٌ يَّنْظُرُوْنَ
69	और धरती (महशर का मदैान) अपने रब की रौशनी (इंसाफ) से चमक उठेगी; और (उनके अमल की) कताबि दी जाएँगी, और नबी और गवाह लाए जाएँगे, फरि उनके बीच हक़ के साथ फ़ैसला कयिा जाएगा, और उनकी कोई हक़तलफ़ी न होगी।	وَاَشْرَقَتِ الْاَرْضُ بِنُوْرِ رَبِّهَا وَوُضِعَ الْكِتٰبُ وَجِايْۤءَ بِالنَّبِيّٖنَ وَالشُّهَدَاۤءِ وَقُضِيَ بَيْنَهُمْ بِالْحَقِّ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ

وَوُفِّيَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ وَهُوَ اَعْلَمُ بِمَا يَفْعَلُوْنَ	और हर जान को उसकी कमाई क॰मुताबिक़ पूरा बदला दिया जाएगा और वह बहुत अच्छ॰से॰जानता ह॰जो व॰करत॰हैं।	**70**
وَسِيْقَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِلٰى جَهَنَّمَ زُمَرًا حَتّٰٓى اِذَا جَآءُوْهَا فُتِحَتْ اَبْوَابُهَا وَقَالَ لَهُمْ خَزَنَتُهَآ اَلَمْ يَأْتِكُمْ رُسُلٌ مِّنْكُمْ يَتْلُوْنَ عَلَيْكُمْ اٰيٰتِ رَبِّكُمْ وَيُنْذِرُوْنَكُمْ لِقَآءَ يَوْمِكُمْ هٰذَا قَالُوْا بَلٰى وَلٰكِنْ حَقَّتْ كَلِمَةُ الْعَذَابِ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ	और जो लोग काफ़रि ह॰, उन्ह॰जहन्नम की ओर झुंड क॰झुंड ल॰जाया जाएगा। यहा॰तक क॰जब व॰वहा॰पहुँचेंगे॰, उसक॰दरवाज़॰ख़ोल दिए जाएँग॰और उसक॰निगिहबान उनस॰कहेंग॰, 'क्या तुम्हार॰पास तुम्म॰स॰रसूल नहीं आए जो तुम्हार॰रब की आयत॰पढ़त॰थ॰और तुम्ह॰इस दिन की मुलाकात स॰आगाह करत॰थ॰?' व॰जवाब देंग॰, 'हा॰, आए थ॰, लेकिन काफ़िरों पर अज़ाब का फ़ैसला पक्का हो चुका ह॰।	**71**
قِيْلَ ادْخُلُوْٓا اَبْوَابَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا فَبِئْسَ مَثْوَى الْمُتَكَبِّرِيْنَ	(उनस॰) कहा जाएगा, 'जहन्नम क॰दरवाज़ों म॰दाख़िल हो जाओ, (तुम्) उसम॰हमशा॰रहोगे।' तो घमंड करन॰वालों का ठिकाना कितना बुरा ह॰।	**72**
وَسِيْقَ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ اِلَى الْجَنَّةِ زُمَرًا حَتّٰٓى اِذَا جَآءُوْهَا وَفُتِحَتْ اَبْوَابُهَا وَقَالَ لَهُمْ خَزَنَتُهَا سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ طِبْتُمْ فَادْخُلُوْهَا خٰلِدِيْنَ	और जो लोग अपन॰रब स॰डरत॰ह॰, उन्ह॰जन्नत की ओर झुंड क॰झुंड ल॰जाया जाएगा। यहा॰तक क॰जब व॰वहा॰पहुँचेंगे॰और उसक॰दरवाज़॰ख़ोल दिए जाएँग॰, उसक॰निगिहबान उनस॰कहेंग॰, 'तुम पर सलामती हो, तुम ख़ुशहाल हो! तो दाख़िल हो जाओ, तुम उसम॰हमशा॰रहोगे।'	**73**
وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ صَدَقَنَا وَعْدَه وَاَوْرَثَنَا الْاَرْضَ نَتَبَوَّاُ مِنَ الْجَنَّةِ حَيْثُ نَشَاءُ فَنِعْمَ اَجْرُ الْعٰمِلِيْنَ	और व॰कहेंग॰, 'सारी तारीफ़ अल्लाह क॰लिए ह॰जिसन॰हमस॰अपना वादा पूरा किया और हम॰यह जगह दी, जहा॰हम जन्नत म॰जहा॰चाह॰रह सकत॰ह॰।' तो यह अमल करन॰वालों का सबस॰अच्छा बदला ह॰।	**74**
وَتَرَى الْمَلٰٓئِكَةَ حَآفِّيْنَ مِنْ حَوْلِ الْعَرْشِ يُسَبِّحُوْنَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَقُضِيَ بَيْنَهُمْ بِالْحَقِّ وَقِيْلَ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ	और तुम (ऐ मुहम्मद) मलायका को देखोग॰जो अर्श क॰चारों ओर घरे॰हुए ह॰, अपन॰रब की तस्बीह करत॰हुए उसकी तारीफ़ करत॰ह॰; और उनक॰(अल्लाह क॰बन्दों) बीच हक़ क॰साथ फ़ैसला किया जाएगा और कहा जाएगा, 'सारी तारीफ़ अल्लाह क॰लिए ह॰, सार॰जहान क॰रब क॰लिए।'	**75**

छंदों की संख़्या	غَافِر	مكية
८५	ग़ाफिर - 40	मक्की

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

ग़ाफिर (क्षमाशील)

1	हा मीम	حٰمٓ
2	यह किताब (क़ुरआन) अल्लाह की तरफ़ से उतारी गई, जो बहुत शक्तिशाली, सब कुछ जानने वाला है,	تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ
3	जो गुनाहों को माफ करता है और तौबा क़बूल करता है और उसकी सजा सख़्त है; जो महेरबानी का मालिक है। उसके सिवा कोई माबूद नहीं। उसी की ओर (सब) लौटाए जाएँगे।	غَافِرِ الذَّنْبِ وَقَابِلِ التَّوْبِ شَدِيْدِ الْعِقَابِ ذِى الطَّوْلِ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ اِلَيْهِ الْمَصِيْرُ
4	अल्लाह की आयतों के बारे में कोई बहस नहीं करता, सिवाय उन लोगों के जो काफ़िर हैं। इसलिए (ऐ मुहम्मद) उनके मुल्कों में उनकी कामयाबी से धोखा न खाओ।	مَا يُجَادِلُ فِيْٓ اٰيٰتِ اللّٰهِ اِلَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَلَا يَغْرُرْكَ تَقَلُّبُهُمْ فِى الْبِلَادِ
5	उनसे पहले नूह की कौम और उनके बाद की बिरादरियों ने (रसूलों को) झुठलाया और हर उम्मत ने अपने रसूल के ख़िलाफ़ साज़िश की ताकि उसे पकड़ लें और उन्होंने बातिल (झूठ) दलीलों से बहस की ताकि हक़ को मिटा दें; इसलिए मैंने उन्हें (अज़ाब से) पकड़ लिया। तो मेरा अज़ाब कैसा था?	كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ وَّالْاَحْزَابُ مِنْ بَعْدِهِمْ وَهَمَّتْ كُلُّ اُمَّةٍ بِرَسُوْلِهِمْ لِيَأْخُذُوْهُ وَجَادَلُوْا بِالْبَاطِلِ لِيُدْحِضُوْا بِهِ الْحَقَّ فَاَخَذْتُهُمْ فَكَيْفَ كَانَ عِقَابِ
6	और इस तरह तुम्हारे रब का फ़ैसला काफ़िरों के हक़ में पक्का हो गया, कि निश्चित रूप से वे जहन्नम वाले हैं।	وَكَذٰلِكَ حَقَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ عَلَى الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَنَّهُمْ اَصْحٰبُ النَّارِ
7	(मलायका) जो अर्श को उठाए हुए हैं और जो उसके आसपास हैं, वे अपने रब की तसबीह करते हैं और उसकी तारीफ़ करते हैं और उस पर ईमान रखते हैं और उन लोगों के लिए माफ़ी माँगते हैं जो ईमान लाए (कहते हैं), 'ऐ हमारे रब, तेरी रहमत और इल्म हर चीज़ को घेरे हुए है, तो उन लोगों को माफ़ कर दे जो तौबा करते हैं और तेरे रास्ते पर चलते हैं और उन्हें जहन्नम की आग के अज़ाब से बचा।'	اَلَّذِيْنَ يَحْمِلُوْنَ الْعَرْشَ وَمَنْ حَوْلَهٗ يُسَبِّحُوْنَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَيُؤْمِنُوْنَ بِهٖ وَيَسْتَغْفِرُوْنَ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا رَبَّنَا وَسِعْتَ كُلَّ شَيْءٍ رَّحْمَةً وَّعِلْمًا فَاغْفِرْ لِلَّذِيْنَ تَابُوْا وَاتَّبَعُوْا سَبِيْلَكَ وَقِهِمْ عَذَابَ الْجَحِيْمِ
8	ऐ हमारे रब, उन्हें उन जन्नतों में दाख़िल कर दे जिनका तूने उनसे वादा किया, और उनके बाप-दादा, उनकी बीवियों और उनकी औलाद में से जो नेक हैं। निश्चित रूप से, तू ही बहुत शक्तिशाली, बहुत हिकमत वाला है,	رَبَّنَا وَاَدْخِلْهُمْ جَنّٰتِ عَدْنِ الَّتِيْ وَعَدْتَّهُمْ وَمَنْ صَلَحَ مِنْ اٰبَائِهِمْ وَاَزْوَاجِهِمْ وَذُرِّيّٰتِهِمْ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ
9	और उन्हें बुराइयों (के अंजाम) से बचा। और जिन्हें तूने उस दिन बुराइयों (के अंजाम) से बचाएगा, निश्चित रूप से, तूने उन पर रहमत की और यही बहुत बड़ी कामयाबी है।	وَقِهِمُ السَّيِّاٰتِ وَمَنْ تَقِ السَّيِّاٰتِ يَوْمَئِذٍ فَقَدْ رَحِمْتَه وَذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ

10	नश्‍चिति रूप स, जो लोग काफिर है, उनहे (क़यामत के दिन) पुकारा जाएगा, 'नश्‍चिति रूप स, अल्लाह की नफरत (तुमहार लिए) तुमहारी अपनी नफरत स कहीं ज़यादा बड़ी है, जब तुमहे ईमान की दावत दी गई तो तुमन इनकार किया।'	اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يُنَادَوْنَ لَمَقْتُ اللّٰهِ اَكْبَرُ مِنْ مَّقْتِكُمْ اَنْفُسَكُمْ اِذْ تُدْعَوْنَ اِلَى الْاِيْمَانِ فَتَكْفُرُوْنَ
11	व जवाब देंगे, 'ऐ हमार रब, तून हमे दो बार मारा और दो बार ज़िंदगी दी, तो हम अपन गुनाहों को मानते हैं तो क्या (जहन्नम स) निकलन की कोई राह है?'	قَالُوْا رَبَّنَآ اَمَتَّنَا اثْنَتَيْنِ وَاَحْيَيْتَنَا اثْنَتَيْنِ فَاعْتَرَفْنَا بِذُنُوْبِنَا فَهَلْ اِلٰى خُرُوْجٍ مِّنْ سَبِيْلٍ
12	यह इसलिए कि नश्‍चिति रूप स जब तुमहे केवल अल्लाह की इबादत की दावत दी गई तो तुमन इनकार किया। और अगर अल्लाह क साथ शरिक किया गया, तो तुमन यकीन किया। तो अब फ़ैसला अल्लाह क पास है जो बहुत बुलंद, बहुत बड़ा है	ذٰلِكُمْ بِاَنَّهٗٓ اِذَا دُعِيَ اللّٰهُ وَحْدَهٗ كَفَرْتُمْ وَاِنْ يُّشْرَكْ بِهٖ تُؤْمِنُوْا فَالْحُكْمُ لِلّٰهِ الْعَلِيِّ الْكَبِيْرِ
13	वही है जो तुमहे अपनी (कुदरत की) निशानिया दिखाता है और तुमहार लिए आकाश स रिज़्क उतारता है और कोई सबक नहीं लेता सिवाय उनक जो (अल्लाह की ओर) रुजूक करते है	هُوَ الَّذِيْ يُرِيْكُمْ اٰيٰتِهٖ وَيُنَزِّلُ لَكُمْ مِّنَ السَّمَاۤءِ رِزْقًا وَمَا يَتَذَكَّرُ اِلَّا مَنْ يُّنِيْبُ
14	तो अल्लाह की इबादत खालिस करक करो, भले ही काफिरों को यह नापसंद हो।	فَادْعُوا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ وَلَوْ كَرِهَ الْكٰفِرُوْنَ
15	(वही) बहुत बुलंद मरतबों वाला, अरश का मालिक है, जो अपनी मरज़ी स अपन बनदों म स जिस चाहता है, वह्य भेजता है, ताकि (लोगों को) मुलाकात क दिन (क़यामत) स आगाह कर,	رَفِيْعُ الدَّرَجٰتِ ذُو الْعَرْشِ يُلْقِي الرُّوْحَ مِنْ اَمْرِهٖ عَلٰى مَنْ يَّشَاۤءُ مِنْ عِبَادِهٖ لِيُنْذِرَ يَوْمَ التَّلَاقِ
16	(वह दिन) जब वे (कबरों स) निकलगे; उनकी कोई बात अल्लाह स छुपी नहीं होगी। (फिर अल्लाह कहेगा), 'आज की बादशाही किसकी है?' अल्लाह की, जो वाहिद, ग़ालिब है	يَوْمَ هُمْ بٰرِزُوْنَ لَا يَخْفٰى عَلَى اللّٰهِ مِنْهُمْ شَيْءٌ لِمَنِ الْمُلْكُ الْيَوْمَ لِلّٰهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ
17	आज हर शख़्स को उसकी कमाई क मुताबिक जज़ा दी जाएगी। आज कोई जुल्म नहीं होगा। नश्‍चिति रूप स, अल्लाह बहुत जलद हिसाब करन वाला है	اَلْيَوْمَ تُجْزٰى كُلُّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ لَا ظُلْمَ الْيَوْمَ اِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ
18	और उनहे उस दिन की खबरदार कर द जो करीब आ रहा है (क़यामत का दिन), जब दिल गम स गल तक आ जाएँगे। ज़ालिमों का कोई दोसत न होगा और न कोई मददगार जिसकी मदद कबूल हो।	وَاَنْذِرْهُمْ يَوْمَ الْاٰزِفَةِ اِذِ الْقُلُوْبُ لَدَى الْحَنَاجِرِ كٰظِمِيْنَ مَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ حَمِيْمٍ وَّلَا شَفِيْعٍ يُّطَاعُ
19	वह (नज़रों की) खियानत और जो कछ दिलों म छुपा है, उस जानता है	يَعْلَمُ خَاۤئِنَةَ الْاَعْيُنِ وَمَا تُخْفِي الصُّدُوْرُ
20	और अल्लाह हक क साथ फ़ैसला करता है जबकि जिनहे उसक सिवा पुकारा जाता है, वे कछ भी फ़ैसला नहीं कर सकते। नश्‍चिति रूप स, अल्लाह ही बहुत सुनन वाला, बहुत देखन वाला है	وَاللّٰهُ يَقْضِيْ بِالْحَقِّ وَالَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ لَا يَقْضُوْنَ بِشَيْءٍ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ السَّمِيْعُ الْبَصِيْرُ

21	क्या उन्होंने धरती में सैर नहीं की, फिर देखा कि उन लोगों का अंजाम कैसा हुआ जो उनसे पहले थे? वे उनसे ज़्यादा ताक़तवर थे और (उनकी) निशानात (सभ्यता) धरती में (ज़्यादा) थे, लेकिन अल्लाह ने उनके गुनाहों की वजह से उन्हें पकड़ लिया। और अल्लाह (के अज़ाब) से उन्हें कोई बचाने वाला न था।	اَوَلَمْ يَسِيْرُوْا فِى الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ كَانُوْا مِنْ قَبْلِهِمْ كَانُوْا هُمْ اَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً وَّاٰثَارًا فِى الْاَرْضِ فَاَخَذَهُمُ اللّٰهُ بِذُنُوْبِهِمْ وَمَا كَانَ لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ وَّاقٍ
22	यह इसलिए कि निश्चिति रूप से उनके पास उनके रसूल सुपष्ट निशानियों के साथ आए, फिर उन्होंने इनकार किया; तो अल्लाह ने उन्हें पकड़ लिया। निश्चिति रूप से, वह बहुत ताक़तवर, बहुत सख़्त सजा देने वाला है	ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَانَتْ تَّاْتِيْهِمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَكَفَرُوْا فَاَخَذَهُمُ اللّٰهُ اِنَّهٗ قَوِيٌّ شَدِيْدُ الْعِقَابِ
23	और निश्चिति रूप से, हमने मूसा को अपनी आयतों और सुपष्ट दलील के साथ भेजा,	وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى بِاٰيٰتِنَا وَسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ
24	फ़िरऔन, हामान और क़ारून की ओर; तो उन्होंने कहा, '(मूसा) जादूगर और झूठा है'	اِلٰى فِرْعَوْنَ وَهَامٰنَ وَقَارُوْنَ فَقَالُوْا سٰحِرٌ كَذَّابٌ
25	तो जब वह (मूसा) उनके पास हमारी तरफ़ से हक़ लेकर आया, तो उन्होंने कहा, 'उनके साथ ईमान लाने वालों के बेटों को क़त्ल कर दो और उनकी बेटियों को ज़िंदगी दे दो।' लेकिन काफ़िरों की साज़िश बेकार ही थी।	فَلَمَّا جَاءَهُمْ بِالْحَقِّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوا اقْتُلُوْٓا اَبْنَاءَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ وَاسْتَحْيُوْا نِسَاءَهُمْ وَمَا كَيْدُ الْكٰفِرِيْنَ اِلَّا فِيْ ضَلٰلٍ
26	और फ़िरऔन ने (अपने सरदारों से) कहा, 'मुझे मूसा को क़त्ल करने दो और उस अपने रब को पुकारने दो। निश्चिति रूप से, मुझे डर है कि वह तुम्हारा दीन बदल देगा या धरती में फ़साद फैलाएगा।'	وَقَالَ فِرْعَوْنُ ذَرُوْنِيْٓ اَقْتُلْ مُوْسٰى وَلْيَدْعُ رَبَّهٗ اِنِّيْٓ اَخَافُ اَنْ يُّبَدِّلَ دِيْنَكُمْ اَوْ اَنْ يُّظْهِرَ فِى الْاَرْضِ الْفَسَادَ
27	और (मूसा) ने कहा, 'निश्चिति रूप से, मैं अपने रब और तुम्हारे रब की पनाह माँगता हूँ हर उस शख़्स से जो घमंड करता है और हिसाब के दिन पर ईमान नहीं लाता।'	وَقَالَ مُوْسٰٓى اِنِّيْ عُذْتُ بِرَبِّيْ وَرَبِّكُمْ مِّنْ كُلِّ مُتَكَبِّرٍ لَّا يُؤْمِنُ بِيَوْمِ الْحِسَابِ
28	और फ़िरऔन के ख़ानदान में से एक मोमिन शख़्स ने, जो अपना ईमान छुपाए हुए था, कहा, 'क्या तुम एक शख़्स को इसलिए क़त्ल करोगे कि वह कहता है, "मेरा रब अल्लाह है," जबकि वह तुम्हारे पास तुम्हारे रब की सुपष्ट निशानियों के साथ आया है और अगर वह झूठा है, तो उसका झूठ उसी पर पड़ेगा; और अगर वह सच्चा है, तो वह तुम्हें जो धमकी दे रहा है, उसका कुछ हिस्सा तुम पर आ पड़ेगा। निश्चिति रूप से, अल्लाह उस शख़्स को हिदायत नहीं देता जो हद से गुज़रने वाला और झूठा है	وَقَالَ رَجُلٌ مُّؤْمِنٌ مِّنْ اٰلِ فِرْعَوْنَ يَكْتُمُ اِيْمَانَهٗٓ اَتَقْتُلُوْنَ رَجُلًا اَنْ يَّقُوْلَ رَبِّيَ اللّٰهُ وَقَدْ جَاءَكُمْ بِالْبَيِّنٰتِ مِنْ رَّبِّكُمْ وَاِنْ يَّكُ كَاذِبًا فَعَلَيْهِ كَذِبُهٗ وَاِنْ يَّكُ صَادِقًا يُّصِبْكُمْ بَعْضُ الَّذِيْ يَعِدُكُمْ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِيْ مَنْ هُوَ مُسْرِفٌ كَذَّابٌ
29	ऐ मेरी कौम! आज तुम्हारी बादशाही है, तुम धरती में ग़ालिब हो, लेकिन अगर अल्लाह का अज़ाब हम पर आ गया तो कौन हमारी मदद करेगा?' फ़िरऔन ने कहा, 'मैं तुम्हें वही दिखाता हूँ जो मुझे अच्छा लगता है, और मैं तुम्हें सिर्फ़ सही रास्ता दिखाता हूँ'	يٰقَوْمِ لَكُمُ الْمُلْكُ الْيَوْمَ ظٰهِرِيْنَ فِى الْاَرْضِ فَمَنْ يَّنْصُرُنَا مِنْۢ بَاْسِ اللّٰهِ اِنْ جَاءَنَا قَالَ فِرْعَوْنُ مَآ اُرِيْكُمْ اِلَّا مَآ اَرٰى وَمَآ اَهْدِيْكُمْ اِلَّا سَبِيْلَ الرَّشَادِ

وَقَالَ الَّذِيْٓ اٰمَنَ يٰقَوْمِ اِنِّيْٓ اَخَافُ عَلَيْكُمْ مِّثْلَ يَوْمِ الْاَحْزَابِ	और उस मोमनि शख़्स न`कहा, 'ऐ मरी कौम! नशि़ति रूप स,` मझ`तमुहार`लिए उस दनि का डर ह`जैब (लोग) एक-दूसर`को पक्कारगे,`	**30**
مِثْلَ دَأْبِ قَوْمِ نُوْحٍ وَّعَادٍ وَّثَمُوْدَ وَالَّذِيْنَ مِنْ بَعْدِهِمْ وَمَا اللّٰهُ يُرِيْدُ ظُلْمًا لِّلْعِبَادِ	(यानी) नहू की कौम, आद, समद्व और उनक`बाद वालों की तरह। जबकि अलल़ाह अपन`बनद़ों`पर जल़ुम़ नहीं`चाहता।'	**31**
وَيٰقَوْمِ اِنِّيْٓ اَخَافُ عَلَيْكُمْ يَوْمَ التَّنَادِ	और ऐ मरी कौम! नशि़ति रूप स,`मझ`तमुहार`लिए उस दनि का डर ह`जैब (लोग) एक-दूसर`को पक्कारगे,`	**32**
يَوْمَ تُوَلُّوْنَ مُدْبِرِيْنَ مَا لَكُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ عَاصِمٍ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ هَادٍ	(वह दनि) जब तमु पीछ`की ओर भागोग,` कोई तमुह`अलल़ाह (क`अज़ाब) स`बचान`वाला न होगा। और जसि`अलल़ाह गमुराह कर द,`उसक`लिए कोई हदिायत दने`वाला नहीं।	**33**
وَلَقَدْ جَاءَكُمْ يُوْسُفُ مِنْ قَبْلُ بِالْبَيِّنٰتِ فَمَا زِلْتُمْ فِيْ شَكٍّ مِّمَّا جَاءَكُمْ بِهٖ حَتّٰٓى اِذَا هَلَكَ قُلْتُمْ لَنْ يَّبْعَثَ اللّٰهُ مِنْ بَعْدِهٖ رَسُوْلًا كَذٰلِكَ يُضِلُّ اللّٰهُ مَنْ هُوَ مُسْرِفٌ مُّرْتَابٌ	और नशि़ति रूप स,` तमुहार`पास उसस`पहल`यूसुफ़ सपष्ट नशिानयों`क`साथ आया था, लकेनि तमु उसकी लाई हुई चीज़ों`पर शक करत`रह,` यहाँ`तक कि`जब वह मर गया, तो तमु`न`कहा, 'अलल़ाह इसक`बाद कोई रसूल नहीं भजेगा।' इस तरह अलल़ाह उस शख़्स को गमुराह करता ह`जो हद स`गज़ुर`न`वाला और शक करन`वाला ह,`	**34**
الَّذِيْنَ يُجَادِلُوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِ اللّٰهِ بِغَيْرِ سُلْطٰنٍ اَتٰىهُمْ كَبُرَ مَقْتًا عِنْدَ اللّٰهِ وَعِنْدَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كَذٰلِكَ يَطْبَعُ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ قَلْبِ مُتَكَبِّرٍ جَبَّارٍ	(यानी) व`लोग जो अलल़ाह की आयतों`क`बार`म`बनिा कसिी दलील क`जो उनक`पास आई हो, बहस करत`ह`ै (यह) अलल़ाह और मोमनिों`क`नज़द़ीक बहतु बड़ी नफरत की बात ह`ै इस तरह अलल़ाह हर घमंडी और ज़बरदसत़ी करन`वाल`क`दलि पर मह्र लगा दते`ा ह`ै	**35**
وَقَالَ فِرْعَوْنُ يٰهَامٰنُ ابْنِ لِيْ صَرْحًا لَّعَلِّيْٓ اَبْلُغُ الْاَسْبَابَ	और फरिऔन न`कहा, 'ऐ हामान! मरे`लिए एक ऊँचा महल बनाओ ताकि`म`दैरवाज़ों`तक पहचुँ सकूँ,	**36**
اَسْبَابَ السَّمٰوٰتِ فَاَطَّلِعَ اِلٰٓى اِلٰهِ مُوْسٰى وَاِنِّيْ لَاَظُنُّهٗ كَاذِبًا وَكَذٰلِكَ زُيِّنَ لِفِرْعَوْنَ سُوْٓءُ عَمَلِهٖ وَصُدَّ عَنِ السَّبِيْلِ وَمَا كَيْدُ فِرْعَوْنَ اِلَّا فِيْ تَبَابٍ	(यानी) आकाशों`क`दरवाज़ों`तक, ताकि`म`मैूसा क`रब को दखे सकूँ`लकेनि म`उस`झठूा समझता हूँ।' और इस तरह फरिऔन क`लिए उसकी बरुाई को खबूसूरत कर दखिाया गया, और वह (हक़ क़ी) रासत़`स`बनद़ कर दयिा गया; और फरिऔन की साज़शि बस नकुसान म`थी।	**37**
وَقَالَ الَّذِيْٓ اٰمَنَ يٰقَوْمِ اتَّبِعُوْنِ اَهْدِكُمْ سَبِيْلَ الرَّشَادِ	और उस मोमनि शख़्स न`कहा, 'ऐ मरी कौम! मरे`पीछ`चलो, म`ै तमुह`सही रासत़ा दखिाऊँगा।	**38**
يٰقَوْمِ اِنَّمَا هٰذِهِ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا مَتَاعٌ وَّاِنَّ الْاٰخِرَةَ هِيَ دَارُ الْقَرَارِ	ऐ मरी कौम! नशि़ति रूप स,`यह दनुयिा की ज़िंदगी बस (थोड़ी) मसत़ी ह`ै और नशि़ति रूप स,` आख़रित ही वह जगह ह`ै जो हमशे़ा की ह`ै	**39**
مَنْ عَمِلَ سَيِّئَةً فَلَا يُجْزٰٓى اِلَّا مِثْلَهَا وَمَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِّنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَاُولٰٓئِكَ يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ يُرْزَقُوْنَ فِيْهَا بِغَيْرِ حِسَابٍ	जो कोई बरु काम करता ह`ै उस`उसी क`बराबर जज़ा दी जाएगी। और जो कोई नकेी करता ह`ै चाह`मरद़ हो या औरत, और वह मोमनि हो, तो व`जनऩत म`दाखलि होंग,` उनह`वहाँ`बे-हसिाब रज़िक़ दयिा जाएगा।	**40**

41	और ऐ मेरी क़ौम! यह क्या बात है, मैं तुम्हें नजात की ओर बुलाता हूँ लेकिन तुम मुझे जहन्नम की ओर बुलाते हो?	وَيٰقَوْمِ مَا لِيْٓ اَدْعُوْكُمْ اِلَى النَّجٰوةِ وَتَدْعُوْنَنِيْٓ اِلَى النَّارِ
42	तुम मुझे अल्लाह से कुफ़्र करने और उसके साथ उस चीज़ को शरीक करने की दावत देते हो जिसका मुझे कोई इल्म नहीं, जबकि मैं तुम्हें (ईमान की दावत देता हूँ उसकी ओर जो बहुत शक्तिशाली, बहुत माफ करने वाला है।	تَدْعُوْنَنِيْ لِاَكْفُرَ بِاللّٰهِ وَاُشْرِكَ بِهٖ مَا لَيْسَ لِيْ بِهٖ عِلْمٌ وَّاَنَا اَدْعُوْكُمْ اِلَى الْعَزِيْزِ الْغَفَّارِ
43	बेशक, जिस चीज़ की ओर तुम मुझे बुलाते हो, उसकी कोई पुकार न दुनिया में है न आख़िरत में और निश्चित रूप से, हमारा लौटना अल्लाह की ओर है, और निश्चित रूप से, हद से गुज़रने वाले, वही जहन्नम वाले होंगे।	لَا جَرَمَ اَنَّمَا تَدْعُوْنَنِيْٓ اِلَيْهِ لَيْسَ لَهٗ دَعْوَةٌ فِي الدُّنْيَا وَلَا فِي الْاٰخِرَةِ وَاَنَّ مَرَدَّنَآ اِلَى اللّٰهِ وَاَنَّ الْمُسْرِفِيْنَ هُمْ اَصْحٰبُ النَّارِ
44	तो तुम जल्द ही मेरी कही बात को याद करोगे। और मैं अपना मामला अल्लाह के हवाले करता हूँ निश्चित रूप से, अल्लाह अपने बन्दों को बहुत अच्छे से देखता है।	فَسَتَذْكُرُوْنَ مَآ اَقُوْلُ لَكُمْ وَاُفَوِّضُ اَمْرِيْٓ اِلَى اللّٰهِ اِنَّ اللّٰهَ بَصِيْرٌۢ بِالْعِبَادِ
45	तो अल्लाह ने उस उनकी साज़िश की बुराइयों से बचा लिया, जबकि फ़िरऔन और उसकी क़ौम को बहुत बुरे अज़ाब ने घेर लिया।	فَوَقٰىهُ اللّٰهُ سَيِّاٰتِ مَا مَكَرُوْا وَحَاقَ بِاٰلِ فِرْعَوْنَ سُوْٓءُ الْعَذَابِ
46	उनके सामने जहन्नम की आग सुबह और शाम दिखाई जाती है, और क़ियामत के दिन (हुक्म होगा), 'फ़िरऔन और उसकी क़ौम को बहुत सख़्त अज़ाब में दाख़िल करो!'	اَلنَّارُ يُعْرَضُوْنَ عَلَيْهَا غُدُوًّا وَّعَشِيًّا وَيَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ اَدْخِلُوْٓا اٰلَ فِرْعَوْنَ اَشَدَّ الْعَذَابِ
47	और (याद करो), जब वे जहन्नम में एक-दूसरे से झगड़ेंगे, तो कमज़ोर लोग उनसे जो घमंड करते थे, कहेंगे, 'निश्चित रूप से, हम तुम्हारे पीछे चलने वाले थे, तो क्या तुम हम से जहन्नम की आग का कुछ हिस्सा हटा सकते हो?'	وَاِذْ يَتَحَاجُّوْنَ فِي النَّارِ فَيَقُوْلُ الضُّعَفٰٓؤُا لِلَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْٓا اِنَّا كُنَّا لَكُمْ تَبَعًا فَهَلْ اَنْتُمْ مُّغْنُوْنَ عَنَّا نَصِيْبًا مِّنَ النَّارِ
48	जो लोग घमंड करते थे, जवाब देंगे, 'निश्चित रूप से, हम सब इसमें हैं क्योंकि अल्लाह ने अपने बन्दों के बीच फ़ैसला कर दिया।'	قَالَ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْٓا اِنَّا كُلٌّ فِيْهَآ اِنَّ اللّٰهَ قَدْ حَكَمَ بَيْنَ الْعِبَادِ
49	और जो लोग जहन्नम में होंगे, वे जहन्नम के निगिहबानों से कहेंगे, 'अपने रब से दुआ करो कि वह एक दिन के लिए हम पर अज़ाब को हल्का कर दे।'	وَقَالَ الَّذِيْنَ فِي النَّارِ لِخَزَنَةِ جَهَنَّمَ ادْعُوْا رَبَّكُمْ يُخَفِّفْ عَنَّا يَوْمًا مِّنَ الْعَذَابِ
50	(जहन्नम के निगिहबान) कहेंगे, 'क्या तुम्हारे पास तुम्हारे रसूल सुस्पष्ट निशानियों के साथ नहीं आए थे?' वे जवाब देंगे, 'हाँ, आए थे।' (निगिहबान) कहेंगे, 'तो तुम ख़ुद दुआ करो!' लेकिन काफ़िरों की दुआ बेकार ही है।	قَالُوْٓا اَوَلَمْ تَكُ تَأْتِيْكُمْ رُسُلُكُمْ بِالْبَيِّنٰتِ قَالُوْا بَلٰى قَالُوْا فَادْعُوْا وَمَا دُعٰٓؤُا الْكٰفِرِيْنَ اِلَّا فِيْ ضَلٰلٍ
51	निश्चित रूप से, हम अपने रसूलों और उन लोगों की मदद करेंगे जो दुनिया की ज़िंदगी में और उस दिन ईमान लाए जब गवाह खड़े होंगे (क़ियामत का दिन),	اِنَّا لَنَنْصُرُ رُسُلَنَا وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَيَوْمَ يَقُوْمُ الْاَشْهَادُ

52	उस दिन जब ज़ालिमों की माफी माँगना उनके लिए कुछ काम न आएगा और उनके लिए लानत होगी और उनके लिए बुरा ठिकाना होगा।	يَوْمَ لَا يَنْفَعُ الظّٰلِمِيْنَ مَعْذِرَتُهُمْ وَلَهُمُ اللَّعْنَةُ وَلَهُمْ سُوْءُ الدَّارِ
53	और निश्चित रूप से हमने मूसा को हिदायत दी और बनी इसराइल को किताब (तौरात) की मीरास दी,	وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْهُدٰى وَاَوْرَثْنَا بَنِيْٓ اِسْرَاۤءِيْلَ الْكِتٰبَ
54	जो हिदायत और याददहानी है समझ वालों के लिए।	هُدًى وَّذِكْرٰى لِاُولِي الْاَلْبَابِ
55	तो (ऐ मुहम्मद) सब्र करो, निश्चित रूप से अल्लाह का वादा सच्चा है और अपने गुनाहों की माफी माँगो और अपने रब की तस्बीह और तारीफ सुबह और शाम करो।	فَاصْبِرْ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّاسْتَغْفِرْ لِذَنْۢبِكَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ بِالْعَشِيِّ وَالْاِبْكَارِ
56	निश्चित रूप से, जो लोग अल्लाह की आयतों के बारे में बिना किसी दलील के जो उनके पास आई हो, बहस करते हैं उनके दिलों में बस (बड़ाई की) ख़्वाहिश है जो वे कभी हासिल नहीं करेंगे, तो अल्लाह की पनाह माँगो। निश्चित रूप से, वह बहुत सुनने वाला, बहुत देखने वाला है।	اِنَّ الَّذِيْنَ يُجَادِلُوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِ اللّٰهِ بِغَيْرِ سُلْطٰنٍ اَتٰىهُمْ اِنْ فِيْ صُدُوْرِهِمْ اِلَّا كِبْرٌ مَّا هُمْ بِبَالِغِيْهِ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْبَصِيْرُ
57	निश्चित रूप से, आकाशों और धरती की पैदाइश इंसान की पैदाइश से कहीं ज़्यादा बड़ी है, लेकिन ज़्यादातर लोग नहीं जानते।	لَخَلْقُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ اَكْبَرُ مِنْ خَلْقِ النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ
58	और अंधा और देखने वाला बराबर नहीं, और न ही वे लोग जो ईमान लाए और नेक काम किए, उनके साथ जो बुराई करते हैं। बहुत कम ही लोग सबक लेते हैं।	وَمَا يَسْتَوِي الْاَعْمٰى وَالْبَصِيْرُ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَلَا الْمُسِيْۤءُ قَلِيْلًا مَّا تَتَذَكَّرُوْنَ
59	निश्चित रूप से, क़ियामत का दिन ज़रूर आएगा, इसमें कोई शक नहीं, लेकिन ज़्यादातर लोग ईमान नहीं लाते।	اِنَّ السَّاعَةَ لَاٰتِيَةٌ لَّا رَيْبَ فِيْهَا وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُوْنَ
60	और तुम्हारा रब कहता है, 'मुझसे दुआ करो, मैं तुम्हारी सुनूंगा। निश्चित रूप से, जो लोग मेरी इबादत से घमंड करते हैं, वे जहन्नम में ज़लील होकर दाख़िल होंगे।'	وَقَالَ رَبُّكُمُ ادْعُوْنِيْٓ اَسْتَجِبْ لَكُمْ اِنَّ الَّذِيْنَ يَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ عِبَادَتِيْ سَيَدْخُلُوْنَ جَهَنَّمَ دَاخِرِيْنَ
61	अल्लाह ही वह है जिसने तुम्हारे लिए रात बनाई ताकि तुम उसमें आराम करो; और (दिन को) रौशनी वाला बनाया। निश्चित रूप से, अल्लाह इंसानों पर बहुत मेहरबानी करता है, लेकिन ज़्यादातर लोग शुक्र नहीं करते।	اَللّٰهُ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الَّيْلَ لِتَسْكُنُوْا فِيْهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا اِنَّ اللّٰهَ لَذُوْ فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَشْكُرُوْنَ
62	यही अल्लाह है, तुम्हारा रब, हर चीज़ का पैदा करने वाला, उसके सिवा कोई माबूद नहीं; तो तुम कहाँ भटकाए जा रहे हो?	ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ فَاَنّٰى تُؤْفَكُوْنَ
63	इस तरह वे लोग भटकाए जाते हैं जो अल्लाह की आयतों को हमेशा झुठलाते हैं।	كَذٰلِكَ يُؤْفَكُ الَّذِيْنَ كَانُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ يَجْحَدُوْنَ

64	अल्लाह ही वह है जिसने तुम्हारे लिए धरती को ठहरने की जगह बनाया और आकाश को छत बनाया, और तुम्हें बनाया फिर तुम्हारी सूरत को खूबसूरत किया और तुम्हें अच्छी चीज़ों से रिज़्क़ दिया। यही अल्लाह है, तुम्हारा रब, बहुत बरकत वाला है अल्लाह, सारे जहान का रब।	اَللّٰهُ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ قَرَارًا وَّالسَّمَاۤءَ بِنَاۤءً وَّصَوَّرَكُمْ فَاَحْسَنَ صُوَرَكُمْ وَرَزَقَكُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ فَتَبٰرَكَ اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ
65	वही ज़िंदगी वाला है, उसके सिवा कोई माबूद नहीं; तो उसकी इबादत ख़ालिस करके करो। सारी तारीफ़ अल्लाह के लिए है, सारे जहान के रब के लिए।	هُوَ الْحَيُّ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ فَادْعُوْهُ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ
66	कहो (ऐ मुहम्मद), 'निश्चित रूप से, मुझे उन चीज़ों की इबादत करने से मना किया गया है जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो, जब मेरे पास मेरे रब की सुस्पष्ट दलील आई; और मुझे हुक्म दिया गया कि मैं सारे जहान के रब के सामने सरेंडर करूँ'	قُلْ اِنِّيْ نُهِيْتُ اَنْ اَعْبُدَ الَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ لَمَّا جَاۤءَنِيَ الْبَيِّنٰتُ مِنْ رَّبِّيْ وَاُمِرْتُ اَنْ اُسْلِمَ لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ
67	वही है जिसने तुम्हें मिट्टी से बनाया, फिर नुत्फ़े से, फिर ख़ून के लोथड़े से, फिर तुम्हें बच्चे के रूप में पैदा किया, फिर तुम बड़े हुए, फिर बूढ़े हुए। लेकिन तुममें से कुछ को इससे पहले मरने का हुक्म हुआ। (हमने ऐसा किया) ताकि तुम मुक़र्रर वक़्त तक पहुँचो, ताकि तुम समझो।	هُوَ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ مِنْ عَلَقَةٍ ثُمَّ يُخْرِجُكُمْ طِفْلًا ثُمَّ لِتَبْلُغُوْٓا اَشُدَّكُمْ ثُمَّ لِتَكُوْنُوْا شُيُوْخًا وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّتَوَفّٰى مِنْ قَبْلُ وَلِتَبْلُغُوْٓا اَجَلًا مُّسَمًّى وَّلَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ
68	वही है जो ज़िंदगी देता है और मौत देता है तो जब वह किसी काम का फ़ैसला करता है, तो बस कहता है, 'हो जा!' तो वह हो जाता है	هُوَ الَّذِيْ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ فَاِذَا قَضٰٓى اَمْرًا فَاِنَّمَا يَقُوْلُ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ
69	क्या तुम उन लोगों को नहीं देखा जो अल्लाह की आयतों के बारे में बहस करते हैं? वे कहाँ भटकाए जा रहे हैं?	اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ يُجَادِلُوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِ اللّٰهِ اَنّٰى يُصْرَفُوْنَ
70	जिन्होंने (क़ुरआन) और उस वह्य को झुठलाया जो हमने अपने रसूलों को भेजी। जल्द ही वे जान पड़ेंगे,	اَلَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِالْكِتٰبِ وَبِمَآ اَرْسَلْنَا بِهٖ رُسُلَنَا فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ
71	जब उनके गले में बेड़ियाँ और ज़ंजीर होंगी, और वे खींचे जाएँगे,	اِذِ الْاَغْلٰلُ فِيْٓ اَعْنَاقِهِمْ وَالسَّلٰسِلُ يُسْحَبُوْنَ
72	बेहद गरम पानी में, फिर आग में जलाए जाएँगे,	فِي الْحَمِيْمِ ثُمَّ فِي النَّارِ يُسْجَرُوْنَ
73	फिर उनसे कहा जाएगा, 'वे बुत कहाँ हैं जिन्हें तुम शरीक करते थे,	ثُمَّ قِيْلَ لَهُمْ اَيْنَ مَا كُنْتُمْ تُشْرِكُوْنَ
74	(जिन्हें तुम पुकारते थे) अल्लाह के सिवा?' वे जवाब देंगे, 'वे हमसे गायब हो गए, बल्कि हमने पहले कुछ भी नहीं पुकारा था।' इस तरह अल्लाह काफ़िरों को गुमराह करता है	مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ قَالُوْا ضَلُّوْا عَنَّا بَلْ لَّمْ نَكُنْ نَّدْعُوْا مِنْ قَبْلُ شَيْـًٔا كَذٰلِكَ يُضِلُّ اللّٰهُ الْكٰفِرِيْنَ
75	यह इसलिए कि तुम धरती में (हक़ को) न मानते हुए मस्ती करते थे और इसलिए कि तुम हमेशा मस्ती में रहते थे।	ذٰلِكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَفْرَحُوْنَ فِي الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَبِمَا كُنْتُمْ تَمْرَحُوْنَ

76	(कहा जाएगा), 'जहन्नम के दरवाज़ों में दाख़िल हो जाओ, और उसमें हमेशा रहो।' तो घमंड करने वालों का ठिकाना कितना बुरा है।	اُدْخُلُوْٓا اَبْوَابَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا فَبِئْسَ مَثْوَى الْمُتَكَبِّرِيْنَ
77	तो (ऐ मुहम्मद) सब्र करो, निश्चित रूप से, अल्लाह का वादा सच्चा है। भले ही हम तुम्हें उनकी कुछ सज़ा दिखाएँ जो हमने उनसे वादा की, या हम तुम्हें (उससे पहले) वफ़ात दे दें, फिर भी उनकी बरगश्त हमारी ओर होगी।	فَاصْبِرْ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ فَاِمَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ الَّذِيْ نَعِدُهُمْ اَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَاِلَيْنَا يُرْجَعُوْنَ
78	और निश्चित रूप से, हमने तुमसे पहले कई रसूल भेजे, उनमें से कुछ की ख़बर हमने तुम्हें बताई और कुछ की नहीं बताई। और कोई रसूल बिना अल्लाह की इजाज़त के कोई निशानी नहीं ला सकता। तो जब अल्लाह का हुक्म आएगा, (हर मामले का) हक़ के साथ फ़ैसला किया जाएगा। और उस वक़्त बातिल को थामने वाले नुक़सान में होंगे।	وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا رُسُلًا مِّنْ قَبْلِكَ مِنْهُمْ مَّنْ قَصَصْنَا عَلَيْكَ وَمِنْهُمْ مَّنْ لَّمْ نَقْصُصْ عَلَيْكَ وَمَا كَانَ لِرَسُوْلٍ اَنْ يَّأْتِيَ بِاٰيَةٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ فَاِذَا جَاۤءَ اَمْرُ اللّٰهِ قُضِيَ بِالْحَقِّ وَخَسِرَ هُنَالِكَ الْمُبْطِلُوْنَ
79	अल्लाह ही वह है जिसने तुम्हारे लिए मवेशी बनाए, कुछ को सवारी के लिए और कुछ को खाने के लिए।	اَللّٰهُ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَنْعَامَ لِتَرْكَبُوْا مِنْهَا وَمِنْهَا تَأْكُلُوْنَ
80	और तुम्हारे लिए (मवेशियों में) और भी फ़ायदे हैं और ताकि तुम उनके ज़रिए अपनी दिली की मुराद पूरी कर सको। और उन पर और जहाज़ों पर तुम सवार किए जाते हो।	وَلَكُمْ فِيْهَا مَنَافِعُ وَلِتَبْلُغُوْا عَلَيْهَا حَاجَةً فِيْ صُدُوْرِكُمْ وَعَلَيْهَا وَعَلَى الْفُلْكِ تُحْمَلُوْنَ
81	और वह तुम्हें अपनी (क़ुदरत की) निशानियाँ दिखाता है। तो तुम अल्लाह की किन निशानियों को झुठलाओगे?	وَيُرِيْكُمْ اٰيٰتِهٖ فَاَيَّ اٰيٰتِ اللّٰهِ تُنْكِرُوْنَ
82	तो क्या उन्होंने धरती में सैर नहीं की, फिर देखा कि उन लोगों का अंजाम कैसा हुआ जो उनसे पहले थे। वे ज़्यादा थे और ताक़त में और धरती में (सभ्यता की) निशानों में (उनसे बढ़कर) थे, फिर भी उनकी कमाई उनके कुछ काम न आई।	اَفَلَمْ يَسِيْرُوْا فِى الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ كَانُوْٓا اَكْثَرَ مِنْهُمْ وَاَشَدَّ قُوَّةً وَّاٰثَارًا فِى الْاَرْضِ فَمَآ اَغْنٰى عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ
83	तो जब उनके रसूल उनके पास सुस्पष्ट निशानियों के साथ आए, तो वे अपने पास के इल्म से ख़ुश हो गए और जो (अज़ाब) वे मज़ाक उड़ाते थे, उसने उन्हें घेर लिया।	فَلَمَّا جَاۤءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَرِحُوْا بِمَا عِنْدَهُمْ مِّنَ الْعِلْمِ وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ
84	तो जब उन्होंने हमारा अज़ाब देखा, तो कहा, 'हम केवल अल्लाह पर ईमान लाते हैं और उन चीज़ों से इनकार करते हैं जिन्हें हम उसके साथ शरीक करते थे।'	فَلَمَّا رَاَوْا بَأْسَنَا قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَحْدَهٗ وَكَفَرْنَا بِمَا كُنَّا بِهٖ مُشْرِكِيْنَ
85	तो जब उन्होंने हमारा अज़ाब देखा, तब उनका ईमान उनके लिए कुछ काम न आया। यही अल्लाह का दस्तूर है जो उसके बन्दों के लिए पहले से चल रहा है और उस वक़्त काफ़िर नुक़सान में पड़ गए।	فَلَمْ يَكُ يَنْفَعُهُمْ اِيْمَانُهُمْ لَمَّا رَاَوْا بَأْسَنَا سُنَّتَ اللّٰهِ الَّتِيْ قَدْ خَلَتْ فِيْ عِبَادِهٖ وَخَسِرَ هُنَالِكَ الْكٰفِرُوْنَ

छंदों की संख्या ५४	فُصِّلَت उधम मचाना - 41	مكية मक्की

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

उधम मचाना (सपष्ट)

1	हा मीम	حٰمٓ
2	(यह) वह्य ह ैउस (अल्लाह) की ओर स ेजो बहत्त रहम करन ेवाला, बहत्त महेरबान ह ै।	تَنْزِيْلٌ مِّنَ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
3	एक कतािब जसिकी आयत ैखलुी हइु और बयान की गई ह,ै अरबी कर्आन म,ैं उन लोगों क ेलिए जो समझ रखत ेह ैं।	كِتٰبٌ فُصِّلَتْ اٰيٰتُه قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا لِّقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ
4	खशुखबरी दने ेवाला और डरान ेवाला, लकेनि उनम ेंस ेअक्सर न ेमहुँ फरे लयिा, तो व ेसनुत ेनहीं।	بَشِيْرًا وَّنَذِيْرًا فَاَعْرَضَ اَكْثَرُهُمْ فَهُمْ لَا يَسْمَعُوْنَ
5	और उन्होंन ेकहा, 'हमार ेदलिों पर परद ेह ैउस चीज़ क ेलिए जसिकी ओर त ूहम ेंबलुाता ह,ै और हमार ेकानों म ेंबोझ ह,ै और हमार ेऔर तरे ेबीच परदा ह,ै तो त ूअपना काम कर, हम अपना काम करत ेह ैं'	وَقَالُوْا قُلُوْبُنَا فِيْٓ اَكِنَّةٍ مِّمَّا تَدْعُوْنَآ اِلَيْهِ وَفِيْٓ اٰذَانِنَا وَقْرٌ وَّمِنْۢ بَيْنِنَا وَبَيْنِكَ حِجَابٌ فَاعْمَلْ اِنَّنَا عٰمِلُوْنَ
6	कह द,े 'म ैंभी बस तमु्हारी तरह एक इंसान ह ूँ, मरे ेपास वह्य आती ह ैकि तमु्हारा माबद्ू बस एक माबद्ू ह,ै तो उसकी ओर सीध ेचलो और उसस ेमगफ़िरत माँगो। और मशु्रकिों क ेलिए बर्ा अंजाम ह ै'	قُلْ اِنَّمَآ اَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُوْحٰٓى اِلَيَّ اَنَّمَآ اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ فَاسْتَقِيْمُوْٓا اِلَيْهِ وَاسْتَغْفِرُوْهُ وَوَيْلٌ لِّلْمُشْرِكِيْنَ
7	जो लोग ज़कात नहीं दते ेऔर आख़रित को नहीं मानत।े	الَّذِيْنَ لَا يُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ كٰفِرُوْنَ
8	नशि्चय ही, जो लोग ईमान लाए और नके काम कए, उनक ेलिए ऐसा सवाब ह ैजो कभी खत्म नहीं होगा।	اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ اَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُوْنٍ
9	कह द,े 'कय़ा तमु उस (रब) को नहीं मानत ेजसिन ेज़मीन को दो मयिाद म ेंबनाया और तमु्न ेउसक ेलिए शरीक बनाए? वही सार ेजहान का रब ह ै'	قُلْ اَئِنَّكُمْ لَتَكْفُرُوْنَ بِالَّذِيْ خَلَقَ الْاَرْضَ فِيْ يَوْمَيْنِ وَتَجْعَلُوْنَ لَه اَنْدَادًا ذٰلِكَ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ
10	और उसन ेउस (ज़मीन) म ेंमज़बतू पहाड़ बनाए और उसम ेंबरकत दी, और उसन ेउसम ेंचार मयिाद म ेंउसकी रोज़ी तय की, उन लोगों क ेलिए जो माँगत ेह ैं।	وَجَعَلَ فِيْهَا رَوَاسِيَ مِنْ فَوْقِهَا وَبٰرَكَ فِيْهَا وَقَدَّرَ فِيْهَآ اَقْوَاتَهَا فِيْٓ اَرْبَعَةِ اَيَّامٍ سَوَاءً لِّلسَّاۤئِلِيْنَ

11	फिर वह आकाश की ओर मुड़ा और वह धुआँ था, तो उसने उससे और ज़मीन से कहा, 'मरे हुक्म से आओ, चाहे ख़ुशी से या मजबूरी में' दोनों ने कहा, 'हम ख़ुशी से आए।'	ثُمَّ اسْتَوٰٓى اِلَى السَّمَاۤءِ وَهِيَ دُخَانٌ فَقَالَ لَهَا وَلِلْاَرْضِ ائْتِيَا طَوْعًا اَوْ كَرْهًا قَالَتَآ اَتَيْنَا طَاۤىِٕعِيْنَ
12	फिर उसने दो मियाद में सात आकाश बनाए और हर आकाश में उसका हुक्म वह्य किया। और हमने निचले आकाश को सितारों से सजाया और (उसे) हिफाज़त के लिए बनाया। यह उस (अल्लाह) का इंतज़ाम है जो बहुत ताक़तवर, बहुत जानने वाला है।	فَقَضٰىهُنَّ سَبْعَ سَمٰوَاتٍ فِيْ يَوْمَيْنِ وَاَوْحٰى فِيْ كُلِّ سَمَاۤءٍ اَمْرَهَا وَزَيَّنَّا السَّمَاۤءَ الدُّنْيَا بِمَصَابِيْحَ وَحِفْظًا ذٰلِكَ تَقْدِيْرُ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ
13	फिर अगर वे मुँह फेरे लें तो कह दें, 'मैंने तुम्हें उस सआक़ (बिजली) से डराया जो आद और समूद पर गिरी थी।'	فَاِنْ اَعْرَضُوْا فَقُلْ اَنْذَرْتُكُمْ صٰعِقَةً مِّثْلَ صٰعِقَةِ عَادٍ وَّثَمُوْدَ
14	जब उनके पास रसूल उनके आगे और पीछे से आए (यह कहते हुए), 'अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न करो।' उन्होंने कहा, 'अगर हमारा रब चाहता, तो फ़रिश्तों को उतारता, तो हम उस वह्य को नहीं मानते जिसके लिए तुम भेजे गया।'	اِذْ جَاۤءَتْهُمُ الرُّسُلُ مِنْۢ بَيْنِ اَيْدِيْهِمْ وَمِنْ خَلْفِهِمْ اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّا اللّٰهَ قَالُوْا لَوْ شَاۤءَ رَبُّنَا لَاَنْزَلَ مَلٰۤىِٕكَةً فَاِنَّا بِمَآ اُرْسِلْتُمْ بِهٖ كٰفِرُوْنَ
15	रही बात आद की, तो उन्होंने ज़मीन में नाहक़ ग़ुरूर किया और कहा, 'हमसे ज़्यादा ताक़तवर कौन है?' क्या उन्होंने नहीं देखा कि अल्लाह, जिसने उन्हें बनाया, वह उनसे कहीं ज़्यादा ताक़तवर है? और वे हमारी निशानियों को नहीं मानते थे।	فَاَمَّا عَادٌ فَاسْتَكْبَرُوْا فِى الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَقَالُوْا مَنْ اَشَدُّ مِنَّا قُوَّةً اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ الَّذِيْ خَلَقَهُمْ هُوَ اَشَدُّ مِنْهُمْ قُوَّةً وَكَانُوْا بِاٰيٰتِنَا يَجْحَدُوْنَ
16	तो हमने उन पर कुछ बदक़िस्मत दिनों में सख़्त आँधी चलाई, ताकि उन्हें दुनिया की ज़िंदगी में ज़िल्लत का अज़ाब चखाएँ और आख़िरत का अज़ाब तो और ज़्यादा ज़िल्लत वाला है और उनकी कोई मदद नहीं होगी।	فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيْحًا صَرْصَرًا فِيْٓ اَيَّامٍ نَّحِسَاتٍ لِّنُذِيْقَهُمْ عَذَابَ الْخِزْيِ فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَخْزٰى وَهُمْ لَا يُنْصَرُوْنَ
17	और रही बात समूद की, तो हमने उन्हें हिदायत दी, लेकिन उन्होंने हिदायत की बजाय गुमराही को पसंद किया, तो उन्हें उस सआक़ ने पकड़ा जो ज़िल्लत वाला अज़ाब था, उनकी की हुई करतूतों की वजह से।	وَاَمَّا ثَمُوْدُ فَهَدَيْنٰهُمْ فَاسْتَحَبُّوا الْعَمٰى عَلَى الْهُدٰى فَاَخَذَتْهُمْ صٰعِقَةُ الْعَذَابِ الْهُوْنِ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ
18	और हमने उन लोगों को बचा लिया जो ईमान लाए और तक़वा रखते थे।	وَنَجَّيْنَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَكَانُوْا يَتَّقُوْنَ
19	और (याद कर) उस दिन को जब अल्लाह के दुश्मनों को जहन्नम की ओर हाँका जाएगा, फिर उन्हें अलग-अलग किया जाएगा।	وَيَوْمَ يُحْشَرُ اَعْدَاۤءُ اللّٰهِ اِلَى النَّارِ فَهُمْ يُوْزَعُوْنَ
20	यहाँ तक कि जब वे जहन्नम के पास पहुँचेंगे, तो उनके कान, उनकी आँखें और उनकी खाल उनके ख़िलाफ़ गवाही देंगी कि उन्होंने क्या किया।	حَتّٰٓى اِذَا مَا جَاۤءُوْهَا شَهِدَ عَلَيْهِمْ سَمْعُهُمْ وَاَبْصَارُهُمْ وَجُلُوْدُهُمْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ

21	और वे अपनी खालों से कहेंगे, 'तुमने हमारे ख़िलाफ़ गवाही क्यों दी?' वे जवाब देंगी, 'हमें उस अल्लाह ने बोलने की ताक़त दी जिसने हर चीज़ को बोलने की ताक़त दी, और उसी ने तुम्हें पहली बार बनाया और उसी की ओर तुम्हें लौटना है।'	وَقَالُوْا لِجُلُوْدِهِمْ لِمَ شَهِدْتُّمْ عَلَيْنَا قَالُوْٓا اَنْطَقَنَا اللّٰهُ الَّذِيْٓ اَنْطَقَ كُلَّ شَيْءٍ وَّهُوَ خَلَقَكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍ وَّاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ
22	और तुम अपनी सुनने की ताक़त, देखने की ताक़त और अपनी खालों की गवाही से नहीं छुप सकते थे, बल्कि तुमने ख़याल किया कि अल्लाह को तुम्हारे बहुत से कामों की ख़बर नहीं।	وَمَا كُنْتُمْ تَسْتَتِرُوْنَ اَنْ يَّشْهَدَ عَلَيْكُمْ سَمْعُكُمْ وَلَآ اَبْصَارُكُمْ وَلَا جُلُوْدُكُمْ وَلٰكِنْ ظَنَنْتُمْ اَنَّ اللّٰهَ لَا يَعْلَمُ كَثِيْرًا مِّمَّا تَعْمَلُوْنَ
23	और यही तुम्हारा वह ख़याल था जो तुमने अपने रब के बारे में किया, उसने तुम्हें बरबाद कर दिया, तो तुम नुक़सान उठाने वालों में शामिल हो गए।	وَذٰلِكُمْ ظَنُّكُمُ الَّذِيْ ظَنَنْتُمْ بِرَبِّكُمْ اَرْدٰىكُمْ فَاَصْبَحْتُمْ مِّنَ الْخٰسِرِيْنَ
24	अगर वे (अज़ाब में) सब्र करें, तो जहन्नम ही उनकी जगह है और अगर वे रहम की गुज़ारिश करें, तो वे उन लोगों में नहीं हैं जिन पर रहम किया जाए।	فَاِنْ يَّصْبِرُوْا فَالنَّارُ مَثْوًى لَّهُمْ وَاِنْ يَّسْتَعْتِبُوْا فَمَا هُمْ مِّنَ الْمُعْتَبِيْنَ
25	और हमने उनके लिए (शैतानों जैसे) साथी मुक़र्रर किए, जिन्होंने उनके लिए उनके आगे और पीछे की चीज़ों को ख़ूबसूरत कर दिखाया और उन पर वह हुक्म साबित हो गया जो उनसे पहले जिन्न और इंसान की उम्मतों पर साबित हुआ था। निश्चय ही, वे नुक़सान उठाने वाले थे।	وَقَيَّضْنَا لَهُمْ قُرَنَاءَ فَزَيَّنُوْا لَهُمْ مَّا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَحَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ فِيْٓ اُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ اِنَّهُمْ كَانُوْا خٰسِرِيْنَ
26	और काफ़िरों ने कहा, 'इस क़ुरआन को न सुनो और इसके ख़िलाफ़ शोर मचाओ, ताकि तुम ग़ालिब आ जाओ।'	وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَا تَسْمَعُوْا لِهٰذَا الْقُرْاٰنِ وَالْغَوْا فِيْهِ لَعَلَّكُمْ تَغْلِبُوْنَ
27	तो हम ज़रूर उन काफ़िरों को सख़्त अज़ाब चखाएँगे और ज़रूर हम उन्हें उनके किए की सबसे बुरी सज़ा देंगे।	فَلَنُذِيْقَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا عَذَابًا شَدِيْدًا وَّلَنَجْزِيَنَّهُمْ اَسْوَاَ الَّذِيْ كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ
28	यही अल्लाह के दुश्मनों की सज़ा है, जहन्नम; उसमें उनके लिए हमेशा की जगह है, उनकी हमारी आयतों को नहीं मानने की सज़ा के तौर पर।	ذٰلِكَ جَزَاۤءُ اَعْدَاۤءِ اللّٰهِ النَّارُ لَهُمْ فِيْهَا دَارُ الْخُلْدِ جَزَاۤءً بِمَا كَانُوْا بِاٰيٰتِنَا يَجْحَدُوْنَ
29	और काफ़िर कहेंगे, 'ऐ हमारे रब, हमें वे दो गरोह दिखा जिन्होंने हमें गुमराह किया, जिन्न और इंसान, ताकि हम उन्हें अपने पाँवों तले रखें ताकि वे सबसे नीचे हों।'	وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا رَبَّنَآ اَرِنَا الَّذَيْنِ اَضَلّٰنَا مِنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ نَجْعَلْهُمَا تَحْتَ اَقْدَامِنَا لِيَكُوْنَا مِنَ الْاَسْفَلِيْنَ
30	निश्चय ही, जो लोग कहते हैं, 'हमारा रब अल्लाह है' फिर वे उस पर क़ायम रहते हैं, उनके पास फ़रिश्ते उतरते हैं (यह कहते हुए), 'न डरो और न ग़मगीन हो; और उस जन्नत की ख़ुशख़बरी लो जो तुमसे वादा की गई थी।'	اِنَّ الَّذِيْنَ قَالُوْا رَبُّنَا اللّٰهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوْا تَتَنَزَّلُ عَلَيْهِمُ الْمَلٰۤئِكَةُ اَلَّا تَخَافُوْا وَلَا تَحْزَنُوْا وَاَبْشِرُوْا بِالْجَنَّةِ الَّتِيْ كُنْتُمْ تُوْعَدُوْنَ

نَحْنُ اَوْلِيَاؤُكُمْ فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَفِى الْاٰخِرَةِ وَلَكُمْ فِيْهَا مَا تَشْتَهِيْٓ اَنْفُسُكُمْ وَلَكُمْ فِيْهَا مَا تَدَّعُوْنَ	हम तुम्हारे सरपरस्त हैं दुनिया की ज़िंदगी में और आख़िरत में; और उसमें (जन्नत में) तुम्हारे लिए वह सब है जो तुम चाहते हो और वह सब है जो तुम माँगते हो।	**31**
نُزُلًا مِّنْ غَفُوْرٍ رَّحِيْمٍ	(यह) उस (अल्लाह) की मेहमाननवाज़ी है जो बहुत माफ़ करने वाला, बहुत मेहरबान है।	**32**
وَمَنْ اَحْسَنُ قَوْلًا مِّمَّنْ دَعَآ اِلَى اللّٰهِ وَعَمِلَ صَالِحًا وَّقَالَ اِنَّنِيْ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ	और उससे बेहतर कौन है जिसकी बात यह हो कि वह अल्लाह की ओर बुलाता है और नेक काम करता है और कहता है, 'निश्चय ही, मैं मुसलमानों में से हूँ (जो समर्पण करने वाले हैं)?'	**33**
وَلَا تَسْتَوِى الْحَسَنَةُ وَلَا السَّيِّئَةُ اِدْفَعْ بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ فَاِذَا الَّذِيْ بَيْنَكَ وَبَيْنَه عَدَاوَةٌ كَاَنَّه وَلِيٌّ حَمِيْمٌ	और नेकी और बदी बराबर नहीं। (बदी को) उस तरीक़े से दूर करो जो बेहतर हो, तो क्या जिसके और तुम्हारे बीच दुश्मनी थी, वह तुम्हारा गहरा दोस्त बन जाए।	**34**
وَمَا يُلَقّٰىهَآ اِلَّا الَّذِيْنَ صَبَرُوْا وَمَا يُلَقّٰىهَآ اِلَّا ذُوْ حَظٍّ عَظِيْمٍ	और यह सिर्फ़ उन लोगों को नसीब होता है जो सब्र करते हैं, और यह सिर्फ़ बहुत बड़े नसीब वालों को नसीब होता है।	**35**
وَاِمَّا يَنْزَغَنَّكَ مِنَ الشَّيْطٰنِ نَزْغٌ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ اِنَّه هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ	और अगर शैतान की ओर से कोई वसवसा (प्रलोभन) आए, तो अल्लाह की पनाह माँगो। निश्चय ही, वह बहुत सुनने वाला, बहुत जानने वाला है।	**36**
وَمِنْ اٰيٰتِهِ الَّيْلُ وَالنَّهَارُ وَالشَّمْسُ وَالْقَمَرُ لَا تَسْجُدُوْا لِلشَّمْسِ وَلَا لِلْقَمَرِ وَاسْجُدُوْا لِلّٰهِ الَّذِيْ خَلَقَهُنَّ اِنْ كُنْتُمْ اِيَّاهُ تَعْبُدُوْنَ	और उसकी निशानियों में से हैं रात और दिन, सूरज और चाँद। न सूरज को सजदा करो और न चाँद को, बल्कि उस अल्लाह को सजदा करो जिसने उन्हें बनाया, अगर तुम उसी की इबादत करते हो।	**37**
فَاِنِ اسْتَكْبَرُوْا فَالَّذِيْنَ عِنْدَ رَبِّكَ يُسَبِّحُوْنَ لَه بِالَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَهُمْ لَا يَسْـَٔمُوْنَ	फिर अगर वे ग़ुरूर करें, तो जो लोग तेरे रब के पास हैं, वे रात-दिन उसकी तसबीह करते हैं और वे थकते नहीं।	**38**
وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ اَنَّكَ تَرَى الْاَرْضَ خَاشِعَةً فَاِذَآ اَنْزَلْنَا عَلَيْهَا الْمَآءَ اهْتَزَّتْ وَرَبَتْ اِنَّ الَّذِيْٓ اَحْيَاهَا لَمُحْيِ الْمَوْتٰى اِنَّه عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ	और उसकी निशानियों में से है कि तू ज़मीन को सूखा हुआ देखता है, फिर जब हम उस पर पानी बरसाते हैं, तो वह हलचल होती है और फूलती है। निश्चय ही, जिसने उसे ज़िंदगी दी, वह मुर्दों को ज़िंदगी देने वाला है। निश्चय ही, वह हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है।	**39**
اِنَّ الَّذِيْنَ يُلْحِدُوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِنَا لَا يَخْفَوْنَ عَلَيْنَا اَفَمَنْ يُّلْقٰى فِى النَّارِ خَيْرٌ اَمَّنْ يَّاْتِيْٓ اٰمِنًا يَّوْمَ الْقِيٰمَةِ اِعْمَلُوْا مَا شِئْتُمْ اِنَّه بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ	निश्चय ही, जो लोग हमारी निशानियों को टेढ़ा करते हैं, वे हमसे छुपे नहीं। तो क्या वह जो आग में डाला जाएगा बेहतर है या वह जो क़ियामत के दिन अमन से आएगा? जो चाहो करो! निश्चय ही, वह जो कुछ तुम करते हो, उसे देखता है।	**40**
اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِالذِّكْرِ لَمَّا جَاءَهُمْ وَاِنَّه لَكِتٰبٌ عَزِيْزٌ	निश्चय ही, जो लोग क़ुरआन को नहीं मानते जब वह उनके पास आया (वे बरबाद होंगे), और निश्चय ही, यह एक इज़्ज़त वाली किताब है,	**41**

42	जिसके पास न पहले से और न बाद में कोई बातिल आ सकता है, (यह) उस (रब) की ओर से उतारी गई जो बहुत बुद्धिमान, बहुत तारीफ़ वाला है।	لَّا يَأْتِيْهِ الْبَاطِلُ مِنْ بَيْنِ يَدَيْهِ وَلَا مِنْ خَلْفِهٖ تَنْزِيْلٌ مِّنْ حَكِيْمٍ حَمِيْدٍ
43	तुझसे जो कुछ कहा जाता है, वह वही है जो तुझसे पहले के रसूलों से कहा गया था। निश्चय ही, तेरा रब बहुत माफ़ करने वाला और दर्दनाक अज़ाब देने वाला है।	مَا يُقَالُ لَكَ اِلَّا مَا قَدْ قِيْلَ لِلرُّسُلِ مِنْ قَبْلِكَ اِنَّ رَبَّكَ لَذُوْ مَغْفِرَةٍ وَّذُوْ عِقَابٍ اَلِيْمٍ
44	और अगर हम क़ुरआन को ग़ैर-अरबी ज़बान में बनाते, तो वे कहते, 'इसकी आयतें क्यों नहीं खोली?' क्या (क़ुरआन) ग़ैर-अरबी हो और (रसूल) अरबी? कह दे, 'यह उन लोगों के लिए हिदायत और शिफ़ा है जो ईमान लाए। और जो लोग ईमान नहीं लाते, उनके कानों में बोझ है, और यह (क़ुरआन) उनके लिए अंधेरा है। वे ऐसे है जैसे किसी को दूर से पुकारा जाए।'	وَلَوْ جَعَلْنٰهُ قُرْاٰنًا اَعْجَمِيًّا لَّقَالُوْا لَوْلَا فُصِّلَتْ اٰيٰتُه ءَاَعْجَمِيٌّ وَّعَرَبِيٌّ قُلْ هُوَ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا هُدًى وَّشِفَاۤءٌ وَالَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ فِيْٓ اٰذَانِهِمْ وَقْرٌ وَّهُوَ عَلَيْهِمْ عَمًى اُولٰٓئِكَ يُنَادَوْنَ مِنْ مَّكَانٍ بَعِيْدٍ
45	और हमने मूसा को किताब (तौरात) दी थी, फिर उसमें इख़्तिलाफ़ किया गया। और अगर तेरे रब की ओर से पहले से कोई हुक्म न होता, तो काफ़िरों का हिसाब कर लिया जाता। और निश्चय ही, वे इसके (क़ुरआन) बारे में गहरे शक में है।	وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ فَاخْتُلِفَ فِيْهِ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ وَاِنَّهُمْ لَفِيْ شَكٍّ مِّنْهُ مُرِيْبٍ
46	जो कोई नेक काम करता है, तो वह अपने लिए है और जो कोई बुरा काम करता है, तो वह अपने ख़िलाफ़ है। और तेरा रब अपने बंदों पर जुल्म करने वाला नहीं।	مَنْ عَمِلَ صَالِحًا فَلِنَفْسِهٖ وَمَنْ اَسَاۤءَ فَعَلَيْهَا وَمَا رَبُّكَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ
47	उसी के पास क़ियामत का इल्म लौटाया जाता है। कोई फल अपनी खोल से बाहर नहीं निकलता और न कोई औरत गर्भ धारण करती है और न जनम देती है, सिवाय उसके इल्म के। और जिस दिन वह (अल्लाह) उन्हें पुकारेगा, 'मेरे शरीक कहाँ है?' वे कहेंगे, 'हम तुझसे अर्ज़ करते है कि हम में से कोई इसकी गवाही नहीं दे सकता।'	اِلَيْهِ يُرَدُّ عِلْمُ السَّاعَةِ وَمَا تَخْرُجُ مِنْ ثَمَرٰتٍ مِّنْ اَكْمَامِهَا وَمَا تَحْمِلُ مِنْ اُنْثٰى وَلَا تَضَعُ اِلَّا بِعِلْمِهٖ وَيَوْمَ يُنَادِيْهِمْ اَيْنَ شُرَكَاۤءِيْ قَالُوْٓا اٰذَنّٰكَ مَا مِنَّا مِنْ شَهِيْدٍ
48	और जो कुछ वे पहले पूजते थे, वह उनसे ग़ायब हो जाएगा, और वे समझ जाएँगे कि उनके लिए (अज़ाब से) कोई रास्ता नहीं।	وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَدْعُوْنَ مِنْ قَبْلُ وَظَنُّوْا مَا لَهُمْ مِّنْ مَّحِيْصٍ
49	इंसान नेकी माँगने से नहीं थकता, और अगर उसे कोई मुसीबत छू ले, तो वह मायूस हो जाता है और निराश हो जाता है।	لَا يَسْـَٔمُ الْاِنْسَانُ مِنْ دُعَاۤءِ الْخَيْرِ وَاِنْ مَّسَّهُ الشَّرُّ فَيَـُٔوْسٌ قَنُوْطٌ
50	और अगर हम उसे अपनी रहमत का मज़ा चखाएँ, उस मुसीबत के बाद जो उसे छू चुकी थी, तो वह ज़रूर कहेगा, 'यह मेरा हक़ है, और मुझे नहीं लगता कि क़ियामत आएगी। और अगर मैं अपने रब की ओर लौटाया गया, तो मेरे लिए उसके पास बेहतरीन चीज़ होगी।' तो हम ज़रूर काफ़िरों को उनके किए की ख़बर देंगे और ज़रूर हम उन्हें सख़्त अज़ाब चखाएँगे।	وَلَىِٕنْ اَذَقْنٰهُ رَحْمَةً مِّنَّا مِنْ بَعْدِ ضَرَّاۤءَ مَسَّتْهُ لَيَقُوْلَنَّ هٰذَا لِيْ وَمَآ اَظُنُّ السَّاعَةَ قَاۤئِمَةً وَّلَىِٕنْ رُّجِعْتُ اِلٰى رَبِّيْٓ اِنَّ لِيْ عِنْدَهٗ لَلْحُسْنٰى فَلَنُنَبِّئَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِمَا عَمِلُوْا وَلَنُذِيْقَنَّهُمْ مِّنْ عَذَابٍ غَلِيْظٍ
51	और जब हम इंसान को नेअमत देते है, वह मुँह फेर लेता है और दूर चला जाता है (ग़ुरूर में); लेकिन जब उसे मुसीबत छूती है, तो वह बहुत दुआ माँगता है।	وَاِذَآ اَنْعَمْنَا عَلَى الْاِنْسَانِ اَعْرَضَ وَنَاٰ بِجَانِبِهٖ وَاِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ فَذُوْ دُعَاۤءٍ عَرِيْضٍ

قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ كَانَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ثُمَّ كَفَرْتُمْ بِه مَنْ اَضَلُّ مِمَّنْ هُوَ فِيْ شِقَاقٍ بَعِيْدٍ	कह द॓, 'तमुहारा क़या ख़याल ह॓, अगर (क़ुआन) अल्लाह की ओर स॓ हो, फरि तमुन॓ उस॓ नहीं माना। उसस॓ ज़यादा गमुराह कौन होगा जो हमशेा दूर की गमुराही म॓ हो?'	**52**
سَنُرِيْهِمْ اٰيٰتِنَا فِى الْاٰفَاقِ وَفِيْٓ اَنْفُسِهِمْ حَتّٰى يَتَبَيَّنَ لَهُمْ اَنَّهُ الْحَقُّ اَوَلَمْ يَكْفِ بِرَبِّكَ اَنَّه عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ	हम उनह॓ अपनी नशानयिा ँ हर तरफ़ और उनक॓ अपन॓ आप म॓ दखिाएँगे, ताकि उनक॓ लएि साफ़ हो जाए कि क़ुआन हक़ ह॓ै क़या यह काफ़ी नहीं कि तरेा रब हर चीज़ का गवाह ह॓ै	**53**
اَلَآ اِنَّهُمْ فِيْ مِرْيَةٍ مِّنْ لِّقَاءِ رَبِّهِمْ اَلَآ اِنَّه بِكُلِّ شَيْءٍ مُّحِيْطٌ	सनु,ो नशि़चय ही, व॓ अपन॓ रब स॓ मलिन॓ क॓ बार॓ म॓ शक म॓ ह॓ैं सनु,ो नशि़चय ही, वह हर चीज़ को घर॓े हुए ह॓ै	**54**

छंदों की संख्या	اَلشُّورٰى	مكية
५३	राख शूरा - 42	मक्की

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

राख शूरा (परामर्श)

1	हा मीम	حٰمٓ
2	ऐन सीन काफ़	عسق
3	इस तरह अल्लाह, जो बहुत ताक़तवर, बहुत बुद्धिमान है, तुझ (मुहम्मद) पर और तुझसे पहले वालों पर वह्य करता है	كَذٰلِكَ يُوْحِيْٓ اِلَيْكَ وَاِلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكَ اللّٰهُ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ
4	उसी का है जो कुछ आकाशों में है और जो कुछ ज़मीन में है और वही बहुत बुलंद, बहुत बड़ा है	لَه مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيْمُ
5	लगभग आकाश ऊपर से फट पड़ते हैं (अल्लाह की बड़ाई की वजह से) और फ़रिश्ते अपने रब की तस्बीह करते हैं और ज़मीन वालों के लिए मग़फ़िरत माँगते हैं। सुनो, निश्चय ही, अल्लाह ही बहुत माफ़ करने वाला, बहुत रहम करने वाला है	تَكَادُ السَّمٰوٰتُ يَتَفَطَّرْنَ مِنْ فَوْقِهِنَّ وَالْمَلٰٓئِكَةُ يُسَبِّحُوْنَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَيَسْتَغْفِرُوْنَ لِمَنْ فِى الْاَرْضِ اَلَآ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ
6	और जिन लोगों ने अल्लाह के सिवा दूसरों को सरपरस्त बनाया, अल्लाह उनकी निगरानी करता है; और तू (मुहम्मद) उनका ज़िम्मेदार नहीं है	وَالَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَآءَ اللّٰهُ حَفِيْظٌ عَلَيْهِمْ وَمَآ اَنْتَ عَلَيْهِمْ بِوَكِيْلٍ
7	और इस तरह हमने तुझ पर अरबी ज़बान में क़ुरआन की वह्य की, ताकि तू मक्का की माँ (बस्ती) और इसके आसपास वालों को चेतावनी दे और उस इकट्ठा होने वाले दिन (क़ियामत) के बारे में चेतावनी दे, जिसमें कोई शक नहीं। एक गिरोह जन्नत में जाएगा और एक गिरोह जहन्नम में	وَكَذٰلِكَ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا لِّتُنْذِرَ اُمَّ الْقُرٰى وَمَنْ حَوْلَهَا وَتُنْذِرَ يَوْمَ الْجَمْعِ لَا رَيْبَ فِيْهِ فَرِيْقٌ فِى الْجَنَّةِ وَفَرِيْقٌ فِى السَّعِيْرِ
8	और अगर अल्लाह चाहता, तो वह उन्हें एक ही उम्मत बना देता, लेकिन वह अपनी रहमत में जिसे चाहता है दाख़िल करता है और ज़ालिमों के लिए न कोई सरपरस्त है और न कोई मददगार।	وَلَوْ شَاءَ اللّٰهُ لَجَعَلَهُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّلٰكِنْ يُّدْخِلُ مَنْ يَّشَاءُ فِيْ رَحْمَتِه وَالظّٰلِمُوْنَ مَا لَهُمْ مِّنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ
9	क्या उन्होंने उसके सिवा दूसरों को सरपरस्त बनाया? जबकि अल्लाह, वही (असली) सरपरस्त है और वही मुर्दों को ज़िंदगी देता है, और वह हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है	اَمِ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِه اَوْلِيَآءَ فَاللّٰهُ هُوَ الْوَلِيُّ وَهُوَ يُحْيِ الْمَوْتٰى وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ

وَمَا اخْتَلَفْتُمْ فِيْهِ مِنْ شَيْءٍ فَحُكْمُهٗٓ اِلَى اللّٰهِ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبِّيْ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَاِلَيْهِ اُنِيْبُ	**10**	और तुम जिस चीज़ में भी इख़्तिलाफ़ करो, उसका फ़ैसला अल्लाह के पास है यही अल्लाह मेरा रब है उसी पर मैं भरोसा करता हूँ और उसी की ओर लौटता हूँ
فَاطِرُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ جَعَلَ لَكُمْ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ اَزْوَاجًا وَّمِنَ الْاَنْعَامِ اَزْوَاجًا يَذْرَؤُكُمْ فِيْهِ لَيْسَ كَمِثْلِهٖ شَيْءٌ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْبَصِيْرُ	**11**	(अल्लाह) आकाशों और ज़मीन का बनानेवाला। उसने तुम्हारे लिए तुम्हारी अपनी तरह से जोड़े बनाए, और मवेशियों में से भी जोड़े इस तरह वह तुम्हें बढ़ाता है उसके जैसा कुछ भी नहीं। और वही बहुत सुननेवाला, बहुत देखनेवाला है
لَهٗ مَقَالِيْدُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَاۤءُ وَيَقْدِرُ اِنَّهٗ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ	**12**	उसी के पास आकाशों और ज़मीन की ख़ज़ानों की कुंजियाँ हैं; वह जिसके लिए चाहता है रोज़ी को विस्तार देता है और जिसके लिए चाहता है तंग करता है। निश्चय ही, वह हर चीज़ को बहुत जाननेवाला है
شَرَعَ لَكُمْ مِّنَ الدِّيْنِ مَا وَصّٰى بِهٖ نُوْحًا وَّالَّذِيْٓ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ وَمَا وَصَّيْنَا بِهٖٓ اِبْرٰهِيْمَ وَمُوْسٰى وَعِيْسٰٓى اَنْ اَقِيْمُوا الدِّيْنَ وَلَا تَتَفَرَّقُوْا فِيْهِ كَبُرَ عَلَى الْمُشْرِكِيْنَ مَا تَدْعُوْهُمْ اِلَيْهِ اَللّٰهُ يَجْتَبِيْٓ اِلَيْهِ مَنْ يَّشَاۤءُ وَيَهْدِيْٓ اِلَيْهِ مَنْ يُّنِيْبُ	**13**	उसने तुम्हें वही दीन की वसीयत की जो नूह को दी थी और जो हमने तुम्हें (मुहम्मद) पर वह्य की और जो हमने इब्राहीम, मूसा और ईसा को वसीयत की, यानी कि दीन को क़ायम करो और उसमें फूट न डालो। मुशरिकों के लिए वह दीन बहुत भारी है जिसकी ओर तुम उन्हें बुलाता है। अल्लाह जिसे चाहता है तौहीद की ओर चुनता है और जो उसकी ओर लौटता है उसे हिदायत देता है।
وَمَا تَفَرَّقُوْٓا اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ مَا جَاۤءَهُمُ الْعِلْمُ بَغْيًاۢ بَيْنَهُمْ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى لَّقُضِيَ بَيْنَهُمْ وَاِنَّ الَّذِيْنَ اُوْرِثُوا الْكِتٰبَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ لَفِيْ شَكٍّ مِّنْهُ مُرِيْبٍ	**14**	और उन्होंने (अहल-ए-किताब ने) इख़्तिलाफ़ नहीं किया सिवाय इसके कि उनके पास इल्म (नबियों की दी हुई सच्चाई) आ चुका था, उनकी आपसी हसद की वजह से। और अगर तेरे रब की ओर से पहले से तय समय तक (अज़ाब को) टालने का फ़ैसला न होता, तो उनका हिसाब कर लिया जाता। और निश्चय ही, जिन लोगों ने उनके बाद किताब (तौरात और इंजील) को वारिस किया, वे इस (क़ुरआन) के बारे में गहरे शक में हैं।
فَلِذٰلِكَ فَادْعُ وَاسْتَقِمْ كَمَآ اُمِرْتَ وَلَا تَتَّبِعْ اَهْوَاۤءَهُمْ وَقُلْ اٰمَنْتُ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ مِنْ كِتٰبٍ وَاُمِرْتُ لِاَعْدِلَ بَيْنَكُمْ اَللّٰهُ رَبُّنَا وَرَبُّكُمْ لَنَآ اَعْمَالُنَا وَلَكُمْ اَعْمَالُكُمْ لَا حُجَّةَ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ اَللّٰهُ يَجْمَعُ بَيْنَنَا وَاِلَيْهِ الْمَصِيْرُ	**15**	इसलिए (उन्हें) ईमान की दावत दे और जैसा तुझे हुक्म दिया गया है, वैसा ही (ईमान और दावत पर) क़ायम रह और उनकी ख़्वाहिशों की परवी न कर और कह दे, 'मैं उस किताब पर ईमान लाया जो अल्लाह ने उतारी और मुझे हुक्म दिया गया कि तुम में इंसाफ़ करूँ। अल्लाह हमारा रब है और तुम्हारा रब। हमारे लिए हमारे आमाल और तुम्हारे लिए तुम्हारे आमाल। हमारे और तुम्हारे बीच कोई झगड़ा नहीं। अल्लाह हम सबको इकट्ठा करेगा और उसी की ओर लौटना है'
وَالَّذِيْنَ يُحَاۤجُّوْنَ فِى اللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ مَا اسْتُجِيْبَ لَهٗ حُجَّتُهُمْ دَاحِضَةٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَعَلَيْهِمْ غَضَبٌ وَّلَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ	**16**	और जो लोग (अल्लाह के दीन) के बारे में झगड़ते हैं, जब कि वह (दीन) क़बूल हो चुका है, उनका झगड़ा उनके रब के पास बेकार है उन पर (अल्लाह का) ग़ज़ब है और उनके लिए सख़्त अज़ाब है

اَللّٰهُ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ وَالْمِيْزَانَ وَمَا يُدْرِيْكَ لَعَلَّ السَّاعَةَ قَرِيْبٌ	अल्लाह ही न`े किताब (क़ुरआन) को हक़ और मीजान (इंसाफ) क`े साथ उतारा। और तुझ`े क्या मालूम, शायद क़ियामत का दिन क़रीब हो?	**17**
يَسْتَعْجِلُ بِهَا الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِهَا وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مُشْفِقُوْنَ مِنْهَا وَيَعْلَمُوْنَ اَنَّهَا الْحَقُّ اَلَآ اِنَّ الَّذِيْنَ يُمَارُوْنَ فِى السَّاعَةِ لَفِيْ ضَلٰلٍ بَعِيْدٍ	जो लोग क़ियामत पर यक़ीन नहीं रखत`े व`े चाहत`े ह`ैं कि वह जल्दी आए, और जो लोग ईमान लाए, व`े उसस`े डरत`े ह`ैं और यक़ीन रखत`े ह`ैं कि वह सच ह`ी सन्ुो, जो लोग क़ियामत क`े होन`े पर झगड़त`े ह`ैं, व`े साफ़ गुमराही म`ें ह`ैं।	**18**
اَللّٰهُ لَطِيْفٌۢ بِعِبَادِهٖ يَرْزُقُ مَنْ يَّشَاءُ وَهُوَ الْقَوِيُّ الْعَزِيْزُ	अल्लाह अपन`े बंदों पर बहुत नरम ह`ै, वह जिस`े चाहता ह`ै रोज़ी दता ह`ै और वही बहुत ताक़तवर, बहुत इज़्ज़त वाला ह`ै।	**19**
مَنْ كَانَ يُرِيْدُ حَرْثَ الْاٰخِرَةِ نَزِدْ لَه فِيْ حَرْثِه وَمَنْ كَانَ يُرِيْدُ حَرْثَ الدُّنْيَا نُؤْتِه مِنْهَا وَمَا لَه فِى الْاٰخِرَةِ مِنْ نَّصِيْبٍ	जो कोई आख़िरत का सवाब चाहता ह`ै, हम उसक`े लिए उस सवाब को और बढ़ा दग`े और जो कोई दन्ुिया का फ़ायदा चाहता ह`ै, हम उस`े उसम`ें स`े कछु दग`े, लकेिन आख़िरत म`ें उसका कोई हसि्सा नहीं होगा।	**20**
اَمْ لَهُمْ شُرَكٰٓؤُا شَرَعُوْا لَهُمْ مِّنَ الدِّيْنِ مَا لَمْ يَاْذَنْ بِهِ اللّٰهُ وَلَوْلَا كَلِمَةُ الْفَصْلِ لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ وَاِنَّ الظّٰلِمِيْنَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ	क्या उनक`े पास ऐस`े माबूद ह`ैं जो उनक`े लिए वह दीन मक़ुर्रर करत`े ह`ैं जिस`े अल्लाह न`े इजाज़त नहीं दी? और अगर अल्लाह की ओर स`े (अज़ाब को) टालन`े का फ़ैसला न होता, तो उनक`े बीच फ़ैसला कर दिया जाता। और नश्चिय ही, ज़ालिमों क`े लिए बहुत दर्दनाक अज़ाब ह`ै।	**21**
تَرَى الظّٰلِمِيْنَ مُشْفِقِيْنَ مِمَّا كَسَبُوْا وَهُوَ وَاقِعٌ بِهِمْ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فِيْ رَوْضَاتِ الْجَنّٰتِ لَهُمْ مَّا يَشَاءُوْنَ عِنْدَ رَبِّهِمْ ذٰلِكَ هُوَ الْفَضْلُ الْكَبِيْرُ	त्ज़ालिमों को उनक`े किए हुए (गुनाहो) की वजह स`े बहुत डर`े हुए दखे़ेगा, और (अज़ाब) उन पर पड़ रहा होगा। और जो लोग ईमान लाए और नके काम किए, व`े जन्नत क`े बागो़ं म`ें होंग, उनक`े पास उनक`े रब क`े यहा ँवह सब होगा जो व`े चाहत`े ह`ैं। यही वह बड़ी नअेमत ह`ै।	**22**
ذٰلِكَ الَّذِيْ يُبَشِّرُ اللّٰهُ عِبَادَهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ قُلْ لَّآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْرًا اِلَّا الْمَوَدَّةَ فِى الْقُرْبٰى وَمَنْ يَّقْتَرِفْ حَسَنَةً نَّزِدْ لَه فِيْهَا حُسْنًا اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ شَكُوْرٌ	यही वह (नअेमत) ह`ै जिसकी ख़ुशख़बरी अल्लाह अपन`े उन बंदों को दता ह`ै जो ईमान लाए और नके काम किए। कह द`े (मुहम्मद), 'म`ैं अपनी दावत पर तुमस`े कोई उजरत (बदला) नहीं माँगता सवाय रश्तिदेारी म`ें मोहब्बत क।' और जो कोई नकेी कमाता ह`ै, हम उसक`े लिए उसकी नकेी को और बढ़ा दग।े नश्चिय ही, अल्लाह बहुत माफ़ करन`े वाला, बहुत क़दर करन`े वाला ह`ै।	**23**
اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا فَاِنْ يَّشَاِ اللّٰهُ يَخْتِمْ عَلٰى قَلْبِكَ وَيَمْحُ اللّٰهُ الْبَاطِلَ وَيُحِقُّ الْحَقَّ بِكَلِمٰتِه اِنَّه عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ	या क्या व`े कहत`े ह`ैं, 'उस (मुहम्मद) न`े अल्लाह पर झठू गढ़ लिया।' अगर अल्लाह चाहता, तो वह तर`े दलि को मुहर कर दत`े। और अल्लाह बातलि को मटिा दत`े ह`ै और अपन`े कलाम (क़ुरआन) स`े हक़ को साबति करता ह`ै। नश्चिय ही, वह दलिों की बातों को बहुत जानन`े वाला ह`ै।	**24**
وَهُوَ الَّذِيْ يَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِه وَيَعْفُوْا عَنِ السَّيِّاٰتِ وَيَعْلَمُ مَا تَفْعَلُوْنَ	और वही ह`ै जो अपन`े बंदों की तौबा क़बूल करता ह`ै और उनकी ख़राबियों को माफ़ करता ह`ै और जो कछु तुम करत`े हो, उस`े जानता ह`ै,	**25**

وَيَسْتَجِيْبُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَيَزِيْدُهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ وَالْكٰفِرُوْنَ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ	और वह उन लोगों की (दुआ) क़बूल करता है जो ईमान लाए और नेके काम किए और अपनी फ़ज़्ल से उनकी (पहला) को और बढ़ा देता है और काफ़िरों के लिए सख़्त अज़ाब है	**26**
وَلَوْ بَسَطَ اللّٰهُ الرِّزْقَ لِعِبَادِهٖ لَبَغَوْا فِى الْاَرْضِ وَلٰكِنْ يُّنَزِّلُ بِقَدَرٍ مَّا يَشَآءُ اِنَّهٗ بِعِبَادِهٖ خَبِيْرٌۢ بَصِيْرٌ	और अगर अल्लाह अपने बंदों की रोज़ी को वसित़ार देता, तो वे ज़मीन में हद से गुज़र जाते, लेकिन वह मिक़दार के साथ उतारता है जो वह चाहता है। निश्चय ही, वह अपने बंदों की हालत को बहुत बारीकी से देखने वाला, बहुत देखने वाला है	**27**
وَهُوَ الَّذِيْ يُنَزِّلُ الْغَيْثَ مِنْۢ بَعْدِ مَا قَنَطُوْا وَيَنْشُرُ رَحْمَتَهٗ وَهُوَ الْوَلِيُّ الْحَمِيْدُ	और वही है जो उनके मायूस होने के बाद बारिश उतारता है और अपनी रहमत को फैलाता है और वही बहुत बड़ा सरपरस्त़, बहुत तारीफ़ वाला है	**28**
وَمِنْ اٰيٰتِهٖ خَلْقُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَثَّ فِيْهِمَا مِنْ دَآبَّةٍ وَهُوَ عَلٰى جَمْعِهِمْ اِذَا يَشَآءُ قَدِيْرٌ	और उसकी (बड़ाई की) निशानियों में से है आकाशों और ज़मीन की पैदाइश और उनमें जो रेंगने वाले मख़लूक़ात उसने फैलाए। और वह जब चाहता है, उन्हें इकट्ठा करने की पूरी क़ुदरत रखता है	**29**
وَمَآ اَصَابَكُمْ مِّنْ مُّصِيْبَةٍ فَبِمَا كَسَبَتْ اَيْدِيْكُمْ وَيَعْفُوْا عَنْ كَثِيْرٍ	और जो भी मुसीबत तुम्हें पहुँचती है, वह तुम्हारे अपने हाथों की कमाई की वजह से है, और वह बहुत सी (ख़राबियों) को माफ़ करता है	**30**
وَمَآ اَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ فِى الْاَرْضِ وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ	और तुम ज़मीन में (अल्लाह के सिकंजे से) बचकर भाग नहीं सकते, और अल्लाह के सिवा तुम्हारा न कोई सरपरस्त़ है और न कोई मददगार।	**31**
وَمِنْ اٰيٰتِهِ الْجَوَارِ فِى الْبَحْرِ كَالْاَعْلَامِ	और उसकी (बड़ाई की) निशानियों में से है समुद्र में चलने वाले जहाज़ जो पहाड़ों जैसे हैं	**32**
اِنْ يَّشَاْ يُسْكِنِ الرِّيْحَ فَيَظْلَلْنَ رَوَاكِدَ عَلٰى ظَهْرِهٖ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُوْرٍ	अगर वह चाहे, तो हवा को ठहरा दे, फिर वे (जहाज़) समुद्र की सतह पर रुके रहें। निश्चय ही, इसमें उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो सब्र करने वाले और बहुत शुक्र करने वाले हैं,	**33**
اَوْ يُوْبِقْهُنَّ بِمَا كَسَبُوْا وَيَعْفُ عَنْ كَثِيْرٍ	या वह उन (जहाज़ों) को उनके किए (गुनाहों) की वजह से तबाह कर दे, और वह बहुत कुछ माफ़ करता है,	**34**
وَّيَعْلَمَ الَّذِيْنَ يُجَادِلُوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِنَا مَا لَهُمْ مِّنْ مَّحِيْصٍ	और ताकि वे लोग जो हमारी निशानियों पर झगड़त़े हैं, जान लें कि उनके लिए कोई रास्त़ा नहीं बचेगा (अज़ाब से बचने का)।	**35**
فَمَآ اُوْتِيْتُمْ مِّنْ شَيْءٍ فَمَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَمَا عِنْدَ اللّٰهِ خَيْرٌ وَّاَبْقٰى لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَلٰى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ	जो कुछ तुम्हें दिया गया, वह दुनिया की ज़िंदगी की नेअमत है, और जो अल्लाह के पास है, वह उन लोगों के लिए बेहतर और हमेशा रहने वाला है जो ईमान लाए और अपने रब पर भरोसा करते हैं,	**36**
وَالَّذِيْنَ يَجْتَنِبُوْنَ كَبٰٓئِرَ الْاِثْمِ وَالْفَوَاحِشَ وَاِذَا مَا غَضِبُوْا هُمْ يَغْفِرُوْنَ	और जो लोग बड़े गुनाहों और बेहयाई की बातों से बचते हैं, और जब वे गुस्सा होते हैं, तो माफ़ कर देते हैं,	**37**

وَالَّذِيْنَ اسْتَجَابُوْا لِرَبِّهِمْ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاَمْرُهُمْ شُوْرٰى بَيْنَهُمْ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ	38	और जो लोग अपने रब की पुकार को क़बूल करते है और नमाज़ क़ायम करते है, और उनके मामले आपस मे मशवरे से तय होते है, और जो कछु हमने उनहे रोज़ी दी, उसमे से ख़र्च करते है,
وَالَّذِيْنَ اِذَآ اَصَابَهُمُ الْبَغْيُ هُمْ يَنْتَصِرُوْنَ	39	और जो लोग जब उन पर जुल्म होता है तो बदला लेते है।
وَجَزٰٓؤُا سَيِّئَةٍ سَيِّئَةٌ مِّثْلُهَا فَمَنْ عَفَا وَاَصْلَحَ فَاَجْرُهٗ عَلَى اللّٰهِ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الظّٰلِمِيْنَ	40	और बुराई का बदला उसी तरह की बुराई है, लेकिन जो माफ़ कर दे और इसलाह कर, तो उसका अजर अललाह के ज़िम्मे है। निशचय ही, वह ज़ालिमो को पसंद नहीं करता।
وَلَمَنِ انْتَصَرَ بَعْدَ ظُلْمِهٖ فَاُولٰٓئِكَ مَا عَلَيْهِمْ مِّنْ سَبِيْلٍ	41	और जो लोग जुल्म के बाद बदला लेते है, उनके ख़िलाफ़ कोई रास्ता नही।
اِنَّمَا السَّبِيْلُ عَلَى الَّذِيْنَ يَظْلِمُوْنَ النَّاسَ وَيَبْغُوْنَ فِى الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ	42	रास्ता तो बस उन लोगो के ख़िलाफ़ है जो लोगो पर जुल्म करते है और ज़मीन मे नाहक़ हद से गुज़रते है। उनके लिए दरदनाक अज़ाब है।
وَلَمَنْ صَبَرَ وَغَفَرَ اِنَّ ذٰلِكَ لَمِنْ عَزْمِ الْاُمُوْرِ	43	और जो कोई सबर करता है और माफ़ करता है, निशचय ही, यह दलिरी के कामो मे से है।
وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ وَّلِيٍّ مِّنْ بَعْدِهٖ وَتَرَى الظّٰلِمِيْنَ لَمَّا رَاَوُا الْعَذَابَ يَقُوْلُوْنَ هَلْ اِلٰى مَرَدٍّ مِّنْ سَبِيْلٍ	44	और जिसे अललाह गुमराह कर दे, उसके लिए उसके बाद कोई सरपरसत नहीं। और तू ज़ालिमो को देखेगा, जब वे अज़ाब देखेगे, तो कहगे, 'कया कोई रास्ता है वापस लौटने का?'
وَتَرٰىهُمْ يُعْرَضُوْنَ عَلَيْهَا خٰشِعِيْنَ مِنَ الذُّلِّ يَنْظُرُوْنَ مِنْ طَرْفٍ خَفِيٍّ وَقَالَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنَّ الْخٰسِرِيْنَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ وَاَهْلِيْهِمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ اَلَآ اِنَّ الظّٰلِمِيْنَ فِىْ عَذَابٍ مُّقِيْمٍ	45	और तू उनहे देखेगा जब वे अज़ाब के सामने पेश किए जाएँगे, ज़लिलत की हालत मे, चपुक-चपुक नज़र चराते हुए। और जो लोग ईमान लाए, वे कहगे, 'निशचय ही, नुक़सान उठाने वाले वे है जिनहोने क़ियामत के दिन खुद को और अपने घर वालो को नुक़सान पहुँचाया।' सुनो, निशचय ही, ज़ालिम लोग हमेशा के अज़ाब मे होगे।
وَمَا كَانَ لَهُمْ مِّنْ اَوْلِيَآءَ يَنْصُرُوْنَهُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ سَبِيْلٍ	46	और उनके लिए अललाह के सिवा कोई सरपरसत नहीं जो उनकी मदद करे और जिसे अललाह गुमराह कर दे, उसके लिए कोई रास्ता नही।
اِسْتَجِيْبُوْا لِرَبِّكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِىَ يَوْمٌ لَّا مَرَدَّ لَهٗ مِنَ اللّٰهِ مَا لَكُمْ مِّنْ مَّلْجَاٍ يَّوْمَئِذٍ وَّمَا لَكُمْ مِّنْ نَّكِيْرٍ	47	अपने रब की पुकार को क़बूल करो इससे पहले कि अललाह की ओर से वह दिन आए जिसे कोई ठुकरा नहीं सकता। उस दिन तुमहारे लिए न कोई पनाहगाह होगी और न तुम अपने गुनाहो का इंकार कर सकोगे।

فَاِنْ اَعْرَضُوْا فَمَآ اَرْسَلْنٰكَ عَلَيْهِمْ حَفِيْظًا اِنْ عَلَيْكَ اِلَّا الْبَلٰغُ وَاِنَّآ اِذَآ اَذَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنَّا رَحْمَةً فَرِحَ بِهَا وَاِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌۢ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ فَاِنَّ الْاِنْسَانَ كَفُوْرٌ	अगर व`मुँह फरे ल`, तो (याद रख) हमन`तुझ`उनका नगिरानी करन`वाला बनाकर नहीं भजेा। तरेा काम तो बस (रसिालत) पहचुँाना हौ और नशि्चय ही, जब हम इंसान को अपनी रहमत का मज़ा चखात`हे,ै तो वह उसस`खशु हो जाता ह;ै लकेनि अगर उनह`उनक`अपन`हाथों की कमाई की वजह स`कोई मसुीबत पहचुँती ह,ै तो नशि्चय ही, इंसान बहतु नाशक्रुा हौ	**48**
لِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ يَهَبُ لِمَنْ يَّشَآءُ اِنَاثًا وَّيَهَبُ لِمَنْ يَّشَآءُ الذُّكُوْرَ	अलल़ाह क`लएि ह`ैआकाशों और ज़मीन की बादशाही; वह जो चाहता ह`ैपदैा करता ह,ै जसि`चाहता ह`ैबटेयिाँ दतेा ह`ैऔर जसि`चाहता ह`ैबटे दतेा ह,ै	**49**
اَوْ يُزَوِّجُهُمْ ذُكْرَانًا وَّاِنَاثًا وَيَجْعَلُ مَنْ يَّشَآءُ عَقِيْمًا اِنَّه عَلِيْمٌ قَدِيْرٌ	या वह उनह`(बटे`और बटेयिा)ँ दोनों दतेा ह,ै और जसि`चाहता ह`ै बाझँ करता हौ नशि्चय ही, वह बहतु जानन`वाला, बहतु कद्रुत वाला हौ	**50**
وَمَا كَانَ لِبَشَرٍ اَنْ يُّكَلِّمَهُ اللّٰهُ اِلَّا وَحْيًا اَوْ مِنْ وَّرَآئِ حِجَابٍ اَوْ يُرْسِلَ رَسُوْلًا فَيُوْحِيَ بِاِذْنِه مَا يَشَآءُ اِنَّه عَلِيٌّ حَكِيْمٌ	और कसिी इंसान क`लएि मनुासबि नहीं कि अलल़ाह उसस`बात कर`सवािय वह्य क`ज़रएि या परद`क`पीछ`स`या एक रसलू (फ़रशि्ता) भजेकर, जो उसकी इजाज़त स`वह वह्य कर`जो वह चाहता हौ नशि्चय ही, वह बहतु बलुंद, बहतु बद्धुमिान हौ	**51**
وَكَذٰلِكَ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ رُوْحًا مِّنْ اَمْرِنَا مَا كُنْتَ تَدْرِيْ مَا الْكِتٰبُ وَلَا الْاِيْمَانُ وَلٰكِنْ جَعَلْنٰهُ نُوْرًا نَّهْدِيْ بِه مَنْ نَّشَآءُ مِنْ عِبَادِنَا وَاِنَّكَ لَتَهْدِيْٓ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ	और इस तरह हमन`तरे`पास अपनी वह्य स`एक रूह (क़ुरआन) भजेी। तझु`ेन मालमू था कि कतिाब क्या ह`ैऔर ईमान क्या ह,ै लकेनि हमन`इस`एक नरू बनाया, जसिक`ज़रएि हम अपन`बंदों म`स`जसि`चाहत`हे`ैहदिायत दते`हे`ैहौ और नशि्चय ही, त`ूसीध`रास्त`की ओर हदिायत करता ह,ै	**52**
صِرَاطِ اللّٰهِ الَّذِيْ لَه مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ اَلَآ اِلَى اللّٰهِ تَصِيْرُ الْاُمُوْرُ	(यानी) अलल़ाह का रास्ता, जसिक`लएि ह`ैजो कछु आकाशों म`ैह`ैऔर जो कछु ज़मीन म`हैौ सनुो, सार`ेमामल`अलल़ाह की ओर लौटत`हैौ	**53**

छंदों की संख्या	اَلزُّخْرُف	مكية
८९	अज़-ज़ुख़रुफ़ - 43	मक्की

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अज़-ज़ुख़रुफ़ (आभूषण)

1	हा मीम	حٰمٓ
2	साफ़ किताब (क़ुरआन) की क़सम।	وَالْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ
3	हमने इसे अरबी ज़बान में बनाया ताकि तुम समझ सको।	اِنَّا جَعَلْنٰهُ قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا لَّعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ
4	और निश्चय ही, यह (क़ुरआन) हमारे पास माँ की किताब में है, जो बहुत बुलंद और हिकमत से भरी है।	وَاِنَّهٗ فِيْٓ اُمِّ الْكِتٰبِ لَدَيْنَا لَعَلِيٌّ حَكِيْمٌ
5	तो क्या हम तुमसे यह पैग़ाम हटा दें, क्योंकि तुम हद से गुज़रने वाली क़ौम हो?	اَفَنَضْرِبُ عَنْكُمُ الذِّكْرَ صَفْحًا اَنْ كُنْتُمْ قَوْمًا مُّسْرِفِيْنَ
6	और हमने तुमसे पहले कितने नबी भेजे, हर बस्ती में चेतावनी देने वाले।	وَكَمْ اَرْسَلْنَا مِنْ نَّبِيٍّ فِى الْاَوَّلِيْنَ
7	और कोई नबी उनके पास नहीं आया, सिवाय इसके कि वे उसका मज़ाक़ उड़ाते थे।	وَمَا يَأْتِيْهِمْ مِّنْ نَّبِيٍّ اِلَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ
8	तो हमने उनसे ज़्यादा ताक़तवर लोगों को हलाक कर दिया, और पहले की क़ौमों की मिसाल गुज़र चुकी है।	فَاَهْلَكْنَآ اَشَدَّ مِنْهُمْ بَطْشًا وَّمَضٰى مَثَلُ الْاَوَّلِيْنَ
9	और अगर तुम उनसे पूछो, 'किसने आकाशों और ज़मीन को बनाया?' तो वे ज़रूर कहेंगे, 'उन्हें उसने बनाया जो बहुत ताक़तवर, बहुत जानने वाला है।'	وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ لَيَقُوْلُنَّ خَلَقَهُنَّ الْعَزِيْزُ الْعَلِيْمُ
10	वही जिसने तुम्हारे लिए ज़मीन को बिछौना बनाया और उसमें तुम्हारे लिए रास्ते बनाए ताकि तुम हिदायत पाओ।	الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ مَهْدًا وَّجَعَلَ لَكُمْ فِيْهَا سُبُلًا لَّعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ
11	और जिसने आकाश से पानी को मिक़दार के साथ उतारा, फिर हमने उसके ज़रिए मरी हुई ज़मीन को ज़िंदा किया। इसी तरह तुम (क़ब्रों से) निकाले जाओगे।	وَالَّذِيْ نَزَّلَ مِنَ السَّمَاۤءِ مَاۤءً بِقَدَرٍ فَاَنْشَرْنَا بِهٖ بَلْدَةً مَّيْتًا كَذٰلِكَ تُخْرَجُوْنَ
12	और जिसने हर चीज़ को जोड़ों में बनाया और तुम्हारे लिए जहाज़ और मवेशी बनाए जिन्हें तुम सवारी करते हो।	وَالَّذِيْ خَلَقَ الْاَزْوَاجَ كُلَّهَا وَجَعَلَ لَكُمْ مِّنَ الْفُلْكِ وَالْاَنْعَامِ مَا تَرْكَبُوْنَ

13	ताकि तुम उनकी पीठ पर बैठो, फिर जब तुम उस पर बैठ जाओ तो अपने रब की नेअमत को याद करो और कहो, 'महान है वह (अल्लाह) जिसने इसे हमारे लिए वश में किया, जबकि हम इसे वश में करने की ताक़त न रखते थे,'	لِتَسْتَوٗا عَلٰى ظُهُوْرِهٖ ثُمَّ تَذْكُرُوْا نِعْمَةَ رَبِّكُمْ اِذَا اسْتَوَيْتُمْ عَلَيْهِ وَتَقُوْلُوْا سُبْحٰنَ الَّذِيْ سَخَّرَ لَنَا هٰذَا وَمَا كُنَّا لَهٗ مُقْرِنِيْنَ
14	और निश्चय ही, हम अपने रब की ओर लौटेंगे।'	وَاِنَّآ اِلٰى رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُوْنَ
15	और उन्होंने उसके बंदों में से कुछ को उसका हिस्सा बनाया। निश्चय ही, इंसान साफ़ तौर पर नाशुक्रा है।	وَجَعَلُوْا لَهٗ مِنْ عِبَادِهٖ جُزْءًا اِنَّ الْاِنْسَانَ لَكَفُوْرٌ مُّبِيْنٌ
16	क्या उसने अपनी बनाई हुई चीज़ों में से बेटियाँ लीं और तुम्हें बेटों के साथ नवाज़ा?	اَمِ اتَّخَذَ مِمَّا يَخْلُقُ بَنٰتٍ وَّاَصْفٰىكُمْ بِالْبَنِيْنَ
17	और जब उनमें से किसी को उस (बेटी के जन्म) की ख़ुशख़बरी दी जाती है, जिसे उसने (अल्लाह) रहमान के लिए मिसाल बनाया, तो उसका चेहरा काला पड़ जाता है, क्योंकि वह ग़म और ग़ुस्से को दबाता है।	وَاِذَا بُشِّرَ اَحَدُهُمْ بِمَا ضَرَبَ لِلرَّحْمٰنِ مَثَلًا ظَلَّ وَجْهُهٗ مُسْوَدًّا وَّهُوَ كَظِيْمٌ
18	और क्या (अल्लाह का बच्चा) वह है जो ज़ेवरों में पाला जाता है और जो झगड़े में साफ़ दलील नहीं दे सकता?	اَوَمَنْ يُّنَشَّؤُا فِى الْحِلْيَةِ وَهُوَ فِى الْخِصَامِ غَيْرُ مُبِيْنٍ
19	और उन्होंने (अल्लाह) रहमान के बंदों, फ़रिश्तों को औरत बना लिया। क्या उन्होंने उनकी पैदाइश देखी? उनकी गवाही लिख ली जाएगी और उनसे हिसाब लिया जाएगा।	وَجَعَلُوا الْمَلٰٓئِكَةَ الَّذِيْنَ هُمْ عِبٰدُ الرَّحْمٰنِ اِنَاثًا اَشَهِدُوْا خَلْقَهُمْ سَتُكْتَبُ شَهَادَتُهُمْ وَيُسْـَٔلُوْنَ
20	और वे कहते हैं, 'अगर (अल्लाह) रहमान चाहता, तो हम उनकी इबादत न करते।' उनके पास इसका कोई इल्म नहीं। वे तो बस अटकलपच्चू करते हैं।	وَقَالُوْا لَوْ شَآءَ الرَّحْمٰنُ مَا عَبَدْنٰهُمْ مَا لَهُمْ بِذٰلِكَ مِنْ عِلْمٍ اِنْ هُمْ اِلَّا يَخْرُصُوْنَ
21	या क्या हमने उन्हें इससे पहले कोई किताब दी थी, जिसके साथ वे क़ायम हैं?	اَمْ اٰتَيْنٰهُمْ كِتٰبًا مِّنْ قَبْلِهٖ فَهُمْ بِهٖ مُسْتَمْسِكُوْنَ
22	बल्कि वे कहते हैं, 'निश्चय ही, हमने अपने बाप-दादा को एक दीन पर पाया, और हम उनके नक़्शे-क़दम पर हिदायत पाते हैं।'	بَلْ قَالُوْٓا اِنَّا وَجَدْنَآ اٰبَآءَنَا عَلٰٓى اُمَّةٍ وَّاِنَّا عَلٰٓى اٰثٰرِهِمْ مُّهْتَدُوْنَ
23	और इसी तरह, जब हमने तुझसे (मुहम्मद) पहले किसी बस्ती में कोई चेतावनी देने वाला भेजा, तो वहाँ के ऐश लोग हमेशा कहते थे, 'निश्चय ही, हमने अपने बाप-दादा को एक (दीन) पर पाया और हम उनके नक़्शे-क़दम की पैरवी करते हैं।'	وَكَذٰلِكَ مَآ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ فِيْ قَرْيَةٍ مِّنْ نَّذِيْرٍ اِلَّا قَالَ مُتْرَفُوْهَآ اِنَّا وَجَدْنَآ اٰبَآءَنَا عَلٰٓى اُمَّةٍ وَّاِنَّا عَلٰٓى اٰثٰرِهِمْ مُّقْتَدُوْنَ
24	(उस रसूल ने) कहा, 'क्या, भले ही मैं तुम्हारे लिए उस (दीन) से बेहतर हिदायत लाऊँ जो तुमने अपने बाप-दादा को मानते हुए पाया?' उन्होंने जवाब दिया, 'निश्चय ही, हम उस (दीन) को इंकार करते हैं जिसे तुम लेकर आए हो।'	قٰلَ اَوَلَوْ جِئْتُكُمْ بِاَهْدٰى مِمَّا وَجَدْتُّمْ عَلَيْهِ اٰبَآءَكُمْ قَالُوْٓا اِنَّا بِمَآ اُرْسِلْتُمْ بِهٖ كٰفِرُوْنَ

25	तो हमने उनहे हलाक कर दिया, तो देखो कि झुठ्ठा ठहराने वालों का अंजाम कैसा हुआ।	فَانْتَقَمْنَا مِنْهُمْ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِيْنَ
26	और (याद कर) जब इबराहीम ने अपने बाप और अपनी कौम से कहा, 'निश्चय ही, मै उससे बरी हूँ जिसकी तुम इबादत करते हो,	وَاِذْ قَالَ اِبْرٰهِيْمُ لِاَبِيْهِ وَقَوْمِهٖٓ اِنَّنِيْ بَرَاۤءٌ مِّمَّا تَعْبُدُوْنَ
27	सिवाय उस (अल्लाह) के जिसने मुझे पैदा किया; क्योंकि निश्चय ही, वह मुझे हिदायत देगा।'	اِلَّا الَّذِيْ فَطَرَنِيْ فَاِنَّهٗ سَيَهْدِيْنِ
28	और (इबराहीम) ने इस (तौहीद का कलमा) अपनी औलाद में हमेशा के लिए बाक़ी रखा ताकि वे (इसकी ओर) लौटें।	وَجَعَلَهَا كَلِمَةً بَاقِيَةً فِيْ عَقِبِهٖ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ
29	बल्कि मैने उनहे और उनके बाप-दादा को ज़िंदगी की नेअमतें दीं यहाँ तक कि उनके पास हक़ (क़ुरआन) और एक साफ़ बयान करने वाला रसूल आया।	بَلْ مَتَّعْتُ هٰٓؤُلَاۤءِ وَاٰبَاۤءَهُمْ حَتّٰى جَاۤءَهُمُ الْحَقُّ وَرَسُوْلٌ مُّبِيْنٌ
30	लेकिन जब हक़ (क़ुरआन) उनके पास आया, तो उनहोंने कहा, 'यह तो जादू है और निश्चय ही, हम इसके इंकार करते हैं'	وَلَمَّا جَاۤءَهُمُ الْحَقُّ قَالُوْا هٰذَا سِحْرٌ وَّاِنَّا بِهٖ كٰفِرُوْنَ
31	और वे (यह भी) कहते है, 'यह क़ुरआन इन दो शहरों (मक्का और ताइफ़) के किसी बड़े (अमीर और रसूख़ वाले) शख़्स पर क्यों नहीं उतारा गया?'	وَقَالُوْا لَوْلَا نُزِّلَ هٰذَا الْقُرْاٰنُ عَلٰى رَجُلٍ مِّنَ الْقَرْيَتَيْنِ عَظِيْمٍ
32	क्या वे तेरे रब की रहमत को बाँटते है? हम ही ने दुनिया की ज़िंदगी में उनकी रोज़ी का बँटवारा किया, और हमने उनके कुछ को कुछ के मुक़ाबले में दरजों में बुलंद किया, ताकि कुछ लोग कुछ को अपने मातहत करें और तेरे रब की रहमत उससे बेहतर है जो वे जमा करते हैं	اَهُمْ يَقْسِمُوْنَ رَحْمَتَ رَبِّكَ نَحْنُ قَسَمْنَا بَيْنَهُمْ مَّعِيْشَتَهُمْ فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَرَفَعْنَا بَعْضَهُمْ فَوْقَ بَعْضٍ دَرَجٰتٍ لِّيَتَّخِذَ بَعْضُهُمْ بَعْضًا سُخْرِيًّا وَرَحْمَتُ رَبِّكَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُوْنَ
33	और अगर ऐसा न होता कि सारे लोग एक ही उम्मत (कुफ़्र में) हो जाएँ, तो हम (अल्लाह) रहमान को इंकार करने वालों के लिए उनके घरों की छतें चाँदी की बना देते, और सीढ़ियाँ जिनपर वे चढ़ते,	وَلَوْلَآ اَنْ يَّكُوْنَ النَّاسُ اُمَّةً وَّاحِدَةً لَّجَعَلْنَا لِمَنْ يَّكْفُرُ بِالرَّحْمٰنِ لِبُيُوْتِهِمْ سُقُفًا مِّنْ فِضَّةٍ وَّمَعَارِجَ عَلَيْهَا يَظْهَرُوْنَ
34	और उनके घरों के दरवाज़े (चाँदी के) और तख़्त जिनपर वे टेकते,	وَلِبُيُوْتِهِمْ اَبْوَابًا وَّسُرُرًا عَلَيْهَا يَتَّكِـُٔوْنَ
35	और (सोने की) ज़ीनतें और यह सब कुछ दुनिया की ज़िंदगी की नेअमतें है, जबकि आख़िरत तेरे रब के पास परहेज़गारों के लिए है	وَزُخْرُفًا وَاِنْ كُلُّ ذٰلِكَ لَمَّا مَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةُ عِنْدَ رَبِّكَ لِلْمُتَّقِيْنَ
36	और जो कोई (अल्लाह) रहमान की नसीहत (क़ुरआन) से मुँह फेरे, हम उसके लिए एक शैतान मुक़र्रर कर देते है जो उसका जिगरी दोस्त बन जाता है	وَمَنْ يَّعْشُ عَنْ ذِكْرِ الرَّحْمٰنِ نُقَيِّضْ لَهٗ شَيْطٰنًا فَهُوَ لَهٗ قَرِيْنٌ

وَاِنَّهُمۡ لَيَصُدُّوۡنَهُمۡ عَنِ السَّبِيۡلِ وَيَحۡسَبُوۡنَ اَنَّهُمۡ مُّهۡتَدُوۡنَ	और निश्चय ही, वे (शैतान) उन्हें सही रास्त से रोकते हैं, जबकि वे गुमान करते हैं कि वे हिदायत पर हैं।	**37**
حَتّٰٓى اِذَا جَآءَنَا قَالَ يٰلَيۡتَ بَيۡنِىۡ وَبَيۡنَكَ بُعۡدَ الۡمَشۡرِقَيۡنِ فَبِئۡسَ الۡقَرِيۡنُ	यहाँ तक कि जब वह (मुँह फेरने वाला) हमारे पास (क़ियामत के दिन) आएगा, तो वह कहेगा, 'काश मेरे और तुम (शैतान) के बीच में पूरब और पश्चिम जितनी दूरी होती!' वाक़ई (यह शैतान) सबसे बुरा साथी है।	**38**
وَلَنۡ يَّنۡفَعَكُمُ الۡيَوۡمَ اِذۡ ظَّلَمۡتُمۡ اَنَّكُمۡ فِى الۡعَذَابِ مُشۡتَرِكُوۡنَ	और उस दिन (यह ख़्वाहिश) तुम्हें ज़रा भी फ़ायदा न देगी क्योंकि तुमने ज़ुल्म किया। निश्चय ही, तुम (सब) अज़ाब में शरीक हो।	**39**
اَفَاَنۡتَ تُسۡمِعُ الصُّمَّ اَوۡ تَهۡدِى الۡعُمۡىَ وَمَنۡ كَانَ فِىۡ ضَلٰلٍ مُّبِيۡنٍ	तो क्या तू (मुहम्मद) बहरे को सुनने वाला बना सकता है, या अंधे (दिल वाले) को और उस शख़्स को जो साफ़ गुमराही में है, हिदायत दे सकता है?	**40**
فَاِمَّا نَذۡهَبَنَّ بِكَ فَاِنَّا مِنۡهُمۡ مُّنۡتَقِمُوۡنَ	तो अगर हम तुझे (जीत से पहले) उठा लें, तो भी हम उनसे ज़रूर बदला लेंगे,	**41**
اَوۡ نُرِيَنَّكَ الَّذِىۡ وَعَدۡنٰهُمۡ فَاِنَّا عَلَيۡهِمۡ مُّقۡتَدِرُوۡنَ	या हम उन्हें वह (अज़ाब) दिखाएँगे जिसका हमने उनसे वादा किया था। निश्चय ही, हम उन पर पूरी क़ुदरत रखते हैं।	**42**
فَاسۡتَمۡسِكۡ بِالَّذِىۡۤ اُوۡحِىَ اِلَيۡكَ اِنَّكَ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسۡتَقِيۡمٍ	तो जो वह्य तुझ पर उतारी गई है, उसे मज़बूती से थामे रह, निश्चय ही, तू सीधे रास्ते पर है।	**43**
وَاِنَّهٗ لَذِكۡرٌ لَّكَ وَلِقَوۡمِكَ وَسَوۡفَ تُسۡـَٔـلُوۡنَ	और निश्चय ही, यह (क़ुरआन) तेरे और तेरी क़ौम के लिए एक ज़िक्र (शोहरत) है, और तुमसे (इसके बारे में) सवाल किया जाएगा।	**44**
وَسۡـَٔـلۡ مَنۡ اَرۡسَلۡنَا مِنۡ قَبۡلِكَ مِنۡ رُّسُلِنَاۤ اَجَعَلۡنَا مِنۡ دُوۡنِ الرَّحۡمٰنِ اٰلِهَةً يُّعۡبَدُوۡنَ	और उन रसूलों से पूछ, जिन्हें हमने तुझसे पहले भेजा, क्या हमने (अल्लाह) रहमान के सिवा और माबूद बनाए जिनकी इबादत की जाए?	**45**
وَلَقَدۡ اَرۡسَلۡنَا مُوۡسٰى بِاٰيٰتِنَاۤ اِلٰى فِرۡعَوۡنَ وَمَلَا۟ئِهٖ فَقَالَ اِنِّىۡ رَسُوۡلُ رَبِّ الۡعٰلَمِيۡنَ	और निश्चय ही, हमने मूसा को अपनी निशानियों के साथ फ़िरऔन और उसके सरदारों के पास भेजा। तो उसने कहा, 'निश्चय ही, मैं सारे जहानों के रब का रसूल हूँ।'	**46**
فَلَمَّا جَآءَهُمۡ بِاٰيٰتِنَاۤ اِذَا هُمۡ مِّنۡهَا يَضۡحَكُوۡنَ	तो जब वह (मूसा) उनकी ओर हमारी निशानियों को लेकर आया, तो वे तुरंत उन पर हँसने लगे।	**47**
وَمَا نُرِيۡهِمۡ مِّنۡ اٰيَةٍ اِلَّا هِىَ اَكۡبَرُ مِنۡ اُخۡتِهَا وَاَخَذۡنٰهُمۡ بِالۡعَذَابِ لَعَلَّهُمۡ يَرۡجِعُوۡنَ	और हमने जो भी निशानी उन्हें दिखाई, वह उससे पहले वाली से बड़ी थी। और हमने उन्हें अज़ाब से पकड़ा ताकि वे (सही रास्ते पर) लौट आएँ।	**48**
وَقَالُوۡا يٰۤاَيُّهَ السَّاحِرُ ادۡعُ لَنَا رَبَّكَ بِمَا عَهِدَ عِنۡدَكَ اِنَّنَا لَمُهۡتَدُوۡنَ	और वे कहने लगे, "ऐ जादूगर! अपने रब से हमारे लिए दुआ कर, जैसा कि उसने तुझसे वादा किया है; निश्चय ही, हम (अगर तेरी दुआ क़बूल हुई) तो हिदायत पाएँगे।'	**49**
فَلَمَّا كَشَفۡنَا عَنۡهُمُ الۡعَذَابَ اِذَا هُمۡ يَنۡكُثُوۡنَ	तो जब हमने उनसे वह अज़ाब हटा लिया, तो तुरंत वे अपने वादे से मुकर गए।	**50**

51	और फरिऔन न॓अपनी कौम को पुकारकर कहा, 'ऐ मरी कौम! क्या मिस्र की बादशाही मरी नहीं और य॓नदयाँ जो मरे॓नीच॓ बहती ह?ै क्या तुम नहीं दखेत?	وَنَادٰى فِرْعَوْنُ فِيْ قَوْمِهٖ قَالَ يٰقَوْمِ اَلَيْسَ لِيْ مُلْكُ مِصْرَ وَهٰذِهِ الْاَنْهٰرُ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِيْ اَفَلَا تُبْصِرُوْنَ
52	क्या म॓उस शख़्स (मूसा) स॓बेहतर नहीं, जो हक़ीर ह॓और जो मुश्क़िल स॓अपनी बात साफ़ कर पाता ह?ै	اَمْ اَنَا خَيْرٌ مِّنْ هٰذَا الَّذِيْ هُوَ مَهِيْنٌ ۙ وَّلَا يَكَادُ يُبِيْنُ
53	तो उस॓(मूसा को) सोन॓क॓कंगन क्यों नहीं पहनाए गए या फ़रिश्त॓उसक॓साथ-साथ उस॓साथ दने॓क॓लिए क्यों नहीं आए?'	فَلَوْلَآ اُلْقِيَ عَلَيْهِ اَسْوِرَةٌ مِّنْ ذَهَبٍ اَوْ جَاءَ مَعَهُ الْمَلٰٓئِكَةُ مُقْتَرِنِيْنَ
54	तो (फरिऔन न॓) अपनी बातों स॓अपनी कौम को बरगलाया, और उनहों॓न॓उसकी बात मानी। निश्चय ही, व॓फ़ासिक़ कौम थी।	فَاسْتَخَفَّ قَوْمَه فَاَطَاعُوْهُ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا فٰسِقِيْنَ
55	तो जब उनहों॓न॓हम॓गुस्सा दलिाया, तो हमन॓उनह॓सजा दी, और हमन॓उनह॓सबको (समद्रु म॓) डबो दयिा,	فَلَمَّآ اٰسَفُوْنَا انْتَقَمْنَا مِنْهُمْ فَاَغْرَقْنٰهُمْ اَجْمَعِيْنَ
56	तो हमन॓उनह॓पहल॓की (कौम) और बाद वालों क॓लिए सबक़ बनाया।	فَجَعَلْنٰهُمْ سَلَفًا وَّمَثَلًا لِّلْاٰخِرِيْنَ
57	और जब मरयिम क॓बटे॓(ईसा) को मसिाल बनाया गया, तो तुरंत तरी कौम (क़ुरैश) उसकी वजह स॓शोर मचान॓लगी।	وَلَمَّا ضُرِبَ ابْنُ مَرْيَمَ مَثَلًا اِذَا قَوْمُكَ مِنْهُ يَصِدُّوْنَ
58	और व॓बोल,े 'हमार॓माबूद बहेतर ह॓या वह (ईसा)?' उनहों॓न॓यह (मसिाल) तुझस॓सरिफ़ झगड़न॓क॓लिए दी, बलक़ि व॓तो झगड़ालू॒ कौम ह।ै	وَقَالُوْٓا ءَاٰلِهَتُنَا خَيْرٌ اَمْ هُوَ مَا ضَرَبُوْهُ لَكَ اِلَّا جَدَلًا بَلْ هُمْ قَوْمٌ خَصِمُوْنَ
59	वह (ईसा) बस एक ब[?][?][?] थ॓जनि पर हमन॓नअेमत (नबूवत) दी और हमन॓उनह॓बनी इसराइल क॓लिए मसिाल बनाया।	اِنْ هُوَ اِلَّا عَبْدٌ اَنْعَمْنَا عَلَيْهِ وَجَعَلْنٰهُ مَثَلًا لِّبَنِيْٓ اِسْرَاۤءِيْلَ
60	और अगर हम चाह,ें तो तुम म॓स॓कछु को फ़रिश्त॓बना द॓जो ज़मीन पर तुमहारा ख़लीफ़ा बन।ें	وَلَوْ نَشَاۤءُ لَجَعَلْنَا مِنْكُمْ مَّلٰٓئِكَةً فِى الْاَرْضِ يَخْلُفُوْنَ
61	और निश्चय ही, वह (ईसा) क़यिामत क॓आन॓की निशानी ह।ै इसलिए तुम इसम॓शक न करो और मरी परैवी करो। यही सीधा रास्ता ह।ै	وَاِنَّه لَعِلْمٌ لِّلسَّاعَةِ فَلَا تَمْتَرُنَّ بِهَا وَاتَّبِعُوْنِ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ
62	और शतैान तुमह॓कभी न भटकाए; निश्चय ही, शतैान तुमहारा साफ़ दुश्मन ह।ै	وَلَا يَصُدَّنَّكُمُ الشَّيْطٰنُ اِنَّه لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ
63	और जब ईसा साफ़ सबूत लकेर आया, तो उसन॓कहा, 'निश्चय ही, म॓तुमहार॓पास हकिमत लकेर आया हूँऔर ताकि तुम म॓स॒॓ कछु उन चीज़ों को साफ़ कर सकूँजनिम॓तुम इख़्तलिाफ़ करत॒॓ हो, तो अल्लाह स॓डरो और मरी इताअत करो।	وَلَمَّا جَاۤءَ عِيْسٰى بِالْبَيِّنٰتِ قَالَ قَدْ جِئْتُكُمْ بِالْحِكْمَةِ وَلِاُبَيِّنَ لَكُمْ بَعْضَ الَّذِيْ تَخْتَلِفُوْنَ فِيْهِ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ

64	निश्चय ही, अल्लाह, वही मेरा रब और तुम्हारा रब है, तो उसी की इबादत करो। यही सीधा रास्ता है।	اِنَّ اللّٰهَ هُوَ رَبِّيْ وَرَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْهُ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ
65	लेकिन उनके बीच के गिरोह आपस में इख़्तिलाफ़ करने लगे, तो ज़ालिम लोगों के लिए उस दर्दनाक दिन (क़ियामत) के अज़ाब की वजह से तबाही है।	فَاخْتَلَفَ الْاَحْزَابُ مِنْۢ بَيْنِهِمْ فَوَيْلٌ لِّلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْ عَذَابِ يَوْمٍ اَلِيْمٍ
66	क्या वे बस क़ियामत के दिन का इंतज़ार कर रहे हैं जो उनके पास अचानक आएगा, जबकि वे ग़ाफ़िल हों?	هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّا السَّاعَةَ اَنْ تَأْتِيَهُمْ بَغْتَةً وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ
67	उस दिन जिगरी दोस्त एक-दूसरे के दुश्मन होंगे, सिवाय परहेज़गारों के।	اَلْاَخِلَّاءُ يَوْمَئِذٍۢ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ اِلَّا الْمُتَّقِيْنَ
68	"ऐ मेरे बंदो! उस दिन तुम पर कोई ख़ौफ़ नहीं होगा और न तुम ग़मगीन होगे।	يٰعِبَادِ لَا خَوْفٌ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ وَلَآ اَنْتُمْ تَحْزَنُوْنَ
69	(यानी) वे लोग जो हमारी आयतों पर ईमान लाए और वे फ़रमाँबरदार रहे।	اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاٰيٰتِنَا وَكَانُوْا مُسْلِمِيْنَ
70	तुम और तुम्हारी बीवियाँ जन्नत में दाख़िल हो, तुम्हें ख़ुश किया जाएगा।"	اُدْخُلُوا الْجَنَّةَ اَنْتُمْ وَاَزْوَاجُكُمْ تُحْبَرُوْنَ
71	उनके लिए सोने की थालियाँ और प्याले फिराए जाएँगे, और उसमें (जन्नत में) वह सब होगा जो दिल चाहते हैं और जो आँखों को अच्छा लगता है और तुम उसमें हमेशा रहोगे।	يُطَافُ عَلَيْهِمْ بِصِحَافٍ مِّنْ ذَهَبٍ وَّاَكْوَابٍ وَفِيْهَا مَا تَشْتَهِيْهِ الْاَنْفُسُ وَتَلَذُّ الْاَعْيُنُ وَاَنْتُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ
72	और यही वह जन्नत है जो तुम्हें तुम्हारे किए हुए आमाल की वजह से वारिस बनाया गया।	وَتِلْكَ الْجَنَّةُ الَّتِيْٓ اُوْرِثْتُمُوْهَا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ
73	उसमें तुम्हारे लिए बहुत से फल होंगे जिनमें से तुम खाओगे।	لَكُمْ فِيْهَا فَاكِهَةٌ كَثِيْرَةٌ مِّنْهَا تَأْكُلُوْنَ
74	निश्चय ही, गुनाहगार लोग जहन्नम के अज़ाब में हमेशा रहेंगे।	اِنَّ الْمُجْرِمِيْنَ فِيْ عَذَابِ جَهَنَّمَ خٰلِدُوْنَ
75	उनके लिए (अज़ाब) हल्का न किया जाएगा, और वे उसमें मायूस होंगे।	لَا يُفَتَّرُ عَنْهُمْ وَهُمْ فِيْهِ مُبْلِسُوْنَ
76	और हमने उनका जुल्म नहीं किया, बल्कि उन्होंने ख़ुद अपने ऊपर जुल्म किया।	وَمَا ظَلَمْنٰهُمْ وَلٰكِنْ كَانُوْا هُمُ الظّٰلِمِيْنَ
77	और वे पुकारेंगे, "ऐ (फ़रिश्ता) मालिक! तेरा रब हमें ख़त्म कर दे।" वह जवाब देगा, "निश्चय ही, तुम (इस जहन्नम में) रहोगे।"	وَنَادَوْا يٰمٰلِكُ لِيَقْضِ عَلَيْنَا رَبُّكَ قَالَ اِنَّكُمْ مّٰكِثُوْنَ
78	निश्चय ही, हम तुम्हारे पास हक़ लेकर आए, लेकिन तुम में से अक्सर लोग हक़ से नफ़रत करते हैं।	لَقَدْ جِئْنٰكُمْ بِالْحَقِّ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَكُمْ لِلْحَقِّ كٰرِهُوْنَ

79	या क्या उनहोंने कोई मक्कारी की साज़िश रची? तो निश्चय ही, हम भी (उनकी साज़िश के ख़िलाफ़) साज़िश करने वाले हैं।	اَمۡ اَبۡرَمُوۡۤا اَمۡرًا فَاِنَّا مُبۡرِمُوۡنَ
80	या क्या वे समझते हैं कि हम उनकी गुप्त बात और सरगोशियाँ नहीं सुनते? बल्कि (हम सुनते हैं), और हमारे फ़रिश्ते उनके पास (उनके आमाल) लिखते रहते हैं।	اَمۡ يَحۡسَبُوۡنَ اَنَّا لَا نَسۡمَعُ سِرَّهُمۡ وَنَجۡوٰىهُمۡ ؕ بَلٰى وَرُسُلُنَا لَدَيۡهِمۡ يَكۡتُبُوۡنَ
81	कह दे (मुहम्मद), 'अगर (अल्लाह) रहमान का कोई बेटा होता, तो मैं सबसे पहले उसकी इज़्ज़त करने वाला होता।	قُلۡ اِنۡ كَانَ لِلرَّحۡمٰنِ وَلَدٌ ۖ فَاَنَا اَوَّلُ الۡعٰبِدِيۡنَ
82	महान है वह जो आकाशों और ज़मीन का रब है, अर्श का रब, उससे जो वे बयान करते हैं।	سُبۡحٰنَ رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ رَبِّ الۡعَرۡشِ عَمَّا يَصِفُوۡنَ
83	तो उन्हें (उनकी गुमराही में) डूबने दे और खेलने दे यहाँ तक कि वे उस दिन से मुलाक़ात करें जिसका उनसे वादा किया गया है।	فَذَرۡهُمۡ يَخُوۡضُوۡا وَيَلۡعَبُوۡا حَتّٰى يُلٰقُوۡا يَوۡمَهُمُ الَّذِىۡ يُوۡعَدُوۡنَ
84	और वही वह है जो आकाश में भी अद्वय है और ज़मीन में भी अद्वय है, और वही बहुत बुद्धिमान, बहुत जानने वाला है।	وَهُوَ الَّذِىۡ فِى السَّمَآءِ اِلٰهٌ وَّفِى الۡاَرۡضِ اِلٰهٌ ؕ وَهُوَ الۡحَكِيۡمُ الۡعَلِيۡمُ
85	और महान है वह जिसके पास आकाशों और ज़मीन की बादशाही है, और जो कुछ उनके बीच है; और उसी के पास क़ियामत का इल्म है और उसी की ओर तुम लौटाए जाओगे।	وَتَبٰرَكَ الَّذِىۡ لَهٗ مُلۡكُ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ وَمَا بَيۡنَهُمَا ۚ وَعِنۡدَهٗ عِلۡمُ السَّاعَةِ ۚ وَاِلَيۡهِ تُرۡجَعُوۡنَ
86	और वे लोग जिन्हें अल्लाह के सिवा पुकारते हैं, वे (आख़िरत में) सिफ़ारिश की ताक़त नहीं रखते; सिवाय उस शख़्स के जो हक़ (तौहीद) को मानता है और वे यक़ीन रखते हैं।	وَلَا يَمۡلِكُ الَّذِيۡنَ يَدۡعُوۡنَ مِنۡ دُوۡنِهِ الشَّفَاعَةَ اِلَّا مَنۡ شَهِدَ بِالۡحَـقِّ وَهُمۡ يَعۡلَمُوۡنَ
87	और अगर तू उनसे पूछे, 'उन्हें किसने पैदा किया,' तो वे ज़रूर कहेंगे, 'अल्लाह ने,' तो फिर वे कैसे भटकाए जाते हैं?	وَلَئِنۡ سَاَلۡتَهُمۡ مَّنۡ خَلَقَهُمۡ لَيَقُوۡلُنَّ اللّٰهُ ۚ فَاَنّٰى يُؤۡفَكُوۡنَ
88	और (अल्लाह ने सुना) उसकी (मुहम्मद की) पुकार, 'ऐ मेरे रब, निश्चय ही, ये लोग ऐसे हैं जो ईमान नहीं लाते।'	وَقِيۡلِهٖ يٰرَبِّ اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ قَوۡمٌ لَّا يُؤۡمِنُوۡنَ
89	तो उनसे मुँह फेर ले और कह दे, 'सलाम (अलविदा)।' फिर वे (अपने बुरे अंजाम को) जान लेंगे।	فَاصۡفَحۡ عَنۡهُمۡ وَقُلۡ سَلٰمٌ ؕ فَسَوۡفَ يَعۡلَمُوۡنَ

छंदों की संख़्या	اَلدُّخَان	مكية
५९	वज़्आपन डख़ान - 44	मक्की

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

वज़्आपन डख़ान (धुआँ)

1	हा मीम	حٰمٓ
2	साफ़ किताब (क़ुरआन) की क़सम,	وَالْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ
3	निश्चय ही, हमने इसे एक मुबारक रात में उतारा। निश्चय ही, हम ही चेतावनी देने वाले हैं।	اِنَّآ اَنْزَلْنٰهُ فِيْ لَيْلَةٍ مُّبٰرَكَةٍ اِنَّا كُنَّا مُنْذِرِيْنَ
4	उस (रात) में हर हिकमत वाली बात को साफ़ किया जाता है,	فِيْهَا يُفْرَقُ كُلُّ اَمْرٍ حَكِيْمٍ
5	(यह) हमारी ओर से एक हुक्म है। निश्चय ही, हम ही रसूलों को भेजने वाले हैं,	اَمْرًا مِّنْ عِنْدِنَا اِنَّا كُنَّا مُرْسِلِيْنَ
6	तेरे रब की रहमत के तौर पर। निश्चय ही, वह बहुत सुनने वाला, बहुत जानने वाला है,	رَحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ اِنَّه هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ
7	आकाशों और ज़मीन का रब और जो कुछ उनके बीच है, अगर तुम यक़ीन रखने वाले हो।	رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا اِنْ كُنْتُمْ مُّوْقِنِيْنَ
8	उसके सिवा कोई माबूद नहीं, वही ज़िंदगी देता है और वही मौत देता है (वही) तुम्हारा रब और तुम्हारे पहले के बाप-दादा का रब है।	لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ رَبُّكُمْ وَرَبُّ اٰبَآئِكُمُ الْاَوَّلِيْنَ
9	लेकिन वे शक में हैं, वे खेलते हैं।	بَلْ هُمْ فِيْ شَكٍّ يَّلْعَبُوْنَ
10	तो उस दिन का इंतज़ार कर जब आकाश साफ़ दिखाई देने वाला धुआँ लाएगा,	فَارْتَقِبْ يَوْمَ تَأْتِي السَّمَاءُ بِدُخَانٍ مُّبِيْنٍ
11	जो इंसानों को ढक लेगा। यह एक दर्दनाक अज़ाब है।	يَّغْشَى النَّاسَ هٰذَا عَذَابٌ اَلِيْمٌ
12	(वे दुआ करेंगे), 'ऐ हमारे रब, हम से इस अज़ाब को हटा दे। निश्चय ही, हम ईमान लाएँगे।'	رَبَّنَا اكْشِفْ عَنَّا الْعَذَابَ اِنَّا مُؤْمِنُوْنَ
13	उनके लिए चेतावनी कहाँ से आए, जबकि उनके पास पहले ही एक रसूल साफ़ बयान करने वाला आ चुका था,	اَنّٰى لَهُمُ الذِّكْرٰى وَقَدْ جَاءَهُمْ رَسُوْلٌ مُّبِيْنٌ
14	फिर भी वे उससे मुँह फेरे लेते हैं और कहते हैं, 'वह तो (किसी और से) सिखाया गया है और दीवाना है।'	ثُمَّ تَوَلَّوْا عَنْهُ وَقَالُوْا مُعَلَّمٌ مَّجْنُوْنٌ

15	नश्चिय ही, अगर हम इस अज़ाब को थोड़ा सा हटा दें, तो तुम फिर (कुफ़्र की ओर) लौट जाओगे।	اِنَّا كَاشِفُوا الْعَذَابِ قَلِيْلًا اِنَّكُمْ عَآئِدُوْنَ
16	(याद कर) उस दिन जब हम उन्हें सख़्ती से पकड़ेंगे। हम ज़रूर बदला लेंगे।	يَوْمَ نَبْطِشُ الْبَطْشَةَ الْكُبْرٰى اِنَّا مُنْتَقِمُوْنَ
17	और नश्चिय ही, उनसे पहले हमने फ़िरऔन की कौम को आज़माया और उनके पास एक इज़्ज़तदार रसूल आया,	وَلَقَدْ فَتَنَّا قَبْلَهُمْ قَوْمَ فِرْعَوْنَ وَجَآءَهُمْ رَسُوْلٌ كَرِيْمٌ
18	(जो कहता था), 'अल्लाह के बंदों (बनी इसराइल) को मेरे हवाले कर दो। नश्चिय ही, मैं तुम्हारे लिए भरोसेमंद रसूल हूँ,	اَنْ اَدُّوْٓا اِلَيَّ عِبَادَ اللّٰهِ اِنِّيْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِيْنٌ
19	और अल्लाह के सामने घमंड न करो। नश्चिय ही, मैं तुम्हारे पास साफ़ सबूत लेकर आया हूँ,	وَّاَنْ لَّا تَعْلُوْا عَلَى اللّٰهِ اِنِّيْٓ اٰتِيْكُمْ بِسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ
20	और नश्चिय ही, मैं अपने रब और तुम्हारे रब की पनाह माँगता हूँ कि तुम मुझे संगसार कर दो,	وَاِنِّيْ عُذْتُ بِرَبِّيْ وَرَبِّكُمْ اَنْ تَرْجُمُوْنِ
21	और अगर तुम मुझ पर ईमान नहीं लाते, तो मुझे (बनी इसराइल को ले जाने) दो।'	وَاِنْ لَّمْ تُؤْمِنُوْا لِيْ فَاعْتَزِلُوْنِ
22	फिर उसने (मूसा ने) अपने रब से दुआ की, 'नश्चिय ही, ये लोग गुनहगार कौम हैं (इनके लिए अज़ाब जल्दी कर दो)।'	فَدَعَا رَبَّهٗٓ اَنَّ هٰٓؤُلَآءِ قَوْمٌ مُّجْرِمُوْنَ
23	(अल्लाह ने फ़रमाया), 'इसलिए अपने बंदों के साथ रात में चल पड़, नश्चिय ही, तुम्हारा पीछा किया जाएगा,	فَاَسْرِ بِعِبَادِيْ لَيْلًا اِنَّكُمْ مُّتَّبَعُوْنَ
24	और समुद्र को खुला छोड़ दे; नश्चिय ही, वे एक ऐसी सेना हैं जो डुबो दी जाएगी।'	وَاتْرُكِ الْبَحْرَ رَهْوًا اِنَّهُمْ جُنْدٌ مُّغْرَقُوْنَ
25	उन्होंने कितने बाग़ और चश्मे छोड़े दिए,	كَمْ تَرَكُوْا مِنْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ
26	और खेत और शानदार ठिकाने,	وَّزُرُوْعٍ وَّمَقَامٍ كَرِيْمٍ
27	और नेअमतें जिनमें वे मज़े लेते थे,	وَّنَعْمَةٍ كَانُوْا فِيْهَا فٰكِهِيْنَ
28	ऐसा ही हुआ, और हमने वह (सब) दूसरी कौम को वारिस बनाया।	كَذٰلِكَ وَاَوْرَثْنٰهَا قَوْمًا اٰخَرِيْنَ
29	तो न आकाश ने उनके लिए आँसू बहाए और न ज़मीन ने, और न उन्हें कोई मोहलत दी गई।	فَمَا بَكَتْ عَلَيْهِمُ السَّمَآءُ وَالْاَرْضُ وَمَا كَانُوْا مُنْظَرِيْنَ
30	और नश्चिय ही, हमने बनी इसराइल को ज़लील करने वाली सज़ा से बचाया,	وَلَقَدْ نَجَّيْنَا بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ مِنَ الْعَذَابِ الْمُهِيْنِ
31	फ़िरऔन से (बचाया), नश्चिय ही, वह घमंडी था, हद से गुज़रने वालों में से था।	مِنْ فِرْعَوْنَ اِنَّهٗ كَانَ عَالِيًا مِّنَ الْمُسْرِفِيْنَ

32	और नश्चय ही, हमन`उनह़ूँ`(बनी इसराइल को) अपन`इलम़ क`साथ (उस दौर की) दूसरी कौमों`पर चुना।	وَلَقَدِ اخْتَرْنٰهُمْ عَلٰى عِلْمٍ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ
33	और हमन`उनह़ूँ`ऐसी नशानयिाँ`दीं`जनिम`साफ़ नअेमत थी।	وَاٰتَيْنٰهُمْ مِّنَ الْاٰيٰتِ مَا فِيْهِ بَلٰٓؤٌا مُّبِيْنٌ
34	नश्चय ही, य`(मुश़्रकि लोग) ज़रूर कहगे`,	اِنَّ هٰٓؤُلَاءِ لَيَقُوْلُوْنَ
35	'हमारी मौत बस यही (दुनयिा की) मौत ह`और हम (फरि) नहीं उठाए जाएँगे,	اِنْ هِيَ اِلَّا مَوْتَتُنَا الْاُوْلٰى وَمَا نَحْنُ بِمُنْشَرِيْنَ
36	तो हमार`बाप-दादा को (ज़िंदा) लाओ अगर तमु सचच`हो।'	فَأْتُوْا بِاٰبَاۤئِنَاۤ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ
37	क्या य`(मुश़्रकि लोग) बहेतर ह`या तबुब़ा की कौम और जो लोग उनस`पहल`थ`जनिह`हमन`हलाक कर दयिा क्योंकि व`गनुहगार थो	اَهُمْ خَيْرٌ اَمْ قَوْمُ تُبَّعٍ وَّالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ اَهْلَكْنٰهُمْ اِنَّهُمْ كَانُوْا مُجْرِمِيْنَ
38	और हमन`आकाशों और ज़मीन को और जो कछु उनक`बीच ह`, उस`खेल-खले म`नहीं बनाया।	وَمَا خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا لٰعِبِيْنَ
39	हमन`इन दोनों को हक़ (सचचाई) क`साथ बनाया, लकेनि अक़्सर लोग नहीं जानतो	مَا خَلَقْنٰهُمَاۤ اِلَّا بِالْحَقِّ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ
40	नश्चय ही, फ़ैसल`का दनि (क़यिामत) उनक`लएि सबक`लएि मक़ुर्रर वक़्त ह`,	اِنَّ يَوْمَ الْفَصْلِ مِيْقَاتُهُمْ اَجْمَعِيْنَ
41	(वह) दनि (जब) कोई दोसत़ कसिी दोसत़ क`लएि ज़रा भी काम न आएगा और उनकी कोई मदद नहीं की जाएगी,	يَوْمَ لَا يُغْنِيْ مَوْلًى عَنْ مَّوْلًى شَيْـًٔا وَّلَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ
42	सवािय उसक`जसि पर अल़्लाह रहम कर` नश्चय ही, वह बहतु ताक़तवर, बहतु रहम करन`वाला ह`	اِلَّا مَنْ رَّحِمَ اللّٰهُ اِنَّهٗ هُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ
43	नश्चय ही, ज़क़्कूम का दरख़्त,	اِنَّ شَجَرَتَ الزَّقُّوْمِ
44	गनुहगारों का खाना ह`	طَعَامُ الْاَثِيْمِ
45	वह जसै`पघिला हआु ताँबा जो पटे म`उबलता ह`,	كَالْمُهْلِ يَغْلِيْ فِي الْبُطُوْنِ
46	जसै`बहतु गरम पानी का उबलना।	كَغَلْيِ الْحَمِيْمِ
47	'उस`(गनुहगार को) पकड़ो फरि उस`जहन्नम क`बीच म`घसीट लो,	خُذُوْهُ فَاعْتِلُوْهُ اِلٰى سَوَاۤءِ الْجَحِيْمِ
48	फरि उसक`सरि पर बहतु गरम पानी का अज़ाब डालो।'	ثُمَّ صُبُّوْا فَوْقَ رَأْسِهٖ مِنْ عَذَابِ الْحَمِيْمِ
49	'(उस`कहा जाएगा) चख, नश्चय ही, त`बहतु ताक़तवर, बहतु इज़्ज़तदार था।'	ذُقْ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْكَرِيْمُ

50	नश्चिय ही, यही वह (अज़ाब) ह जिसक बार म तुम शक करत थ।	اِنَّ هٰذَا مَا كُنْتُمْ بِهٖ تَمْتَرُوْنَ
51	नश्चिय ही, परहज़ेगार लोग अमन की जगह म होंग,	اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِيْ مَقَامٍ اَمِيْنٍ
52	(यानी) बागों और चश्मों म,	فِيْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ
53	व बारीक रशेम और मोटा रशेम पहनगे, (बठै) आमन-सामन,	يَّلْبَسُوْنَ مِنْ سُنْدُسٍ وَّاِسْتَبْرَقٍ مُّتَقٰبِلِيْنَ
54	ऐसा ही होगा, फरि हम उनह बड़ी आँखो वाली हूरो स जोड़ दगे।	كَذٰلِكَ وَزَوَّجْنٰهُمْ بِحُوْرٍ عِيْنٍ
55	वहा व हर तरह क फल माग सकत ह, अमन और सकून क साथ,	يَدْعُوْنَ فِيْهَا بِكُلِّ فَاكِهَةٍ اٰمِنِيْنَ
56	व वहा (जनन्त म) पहली मौत (दन्यिा की) क सवि कोई मौत नहीं चखगे। अल्लाह न उनह जहनन्म क अज़ाब स बचाया,	لَا يَذُوْقُوْنَ فِيْهَا الْمَوْتَ اِلَّا الْمَوْتَةَ الْاُوْلٰى وَوَقٰىهُمْ عَذَابَ الْجَحِيْمِ
57	यह तरे रब की कृपा ह। यही वह बड़ी कामयाबी ह।	فَضْلًا مِّنْ رَّبِّكَ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ
58	नश्चिय ही, हमन इस क़ुरआन को तरी ज़बान म आसान कर दयिा ताकि व नसीहत ल।	فَاِنَّمَا يَسَّرْنٰهُ بِلِسَانِكَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ
59	तो इंतज़ार कर; नश्चिय ही, व भी (अज़ाब का) इंतज़ार कर रह ह।	فَارْتَقِبْ اِنَّهُمْ مُّرْتَقِبُوْنَ

छदों की संख़्या	اَلْجَاثِيَة	مكية
३७	अल-जथयिाह - 45	मक्की

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल-जथयिाह (घटुन टेके हुए)

1	हा मीम	حٰمٓ
2	यह कतािब अल़्लाह की ओर स उतारी गई ह, जो बहत़ ताक़तवर, बहत़ बद्धिमान ह।	تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ
3	नश्चिय ही, आकाशों और ज़मीन म मोमनिों क लिए (अल़्लाह की बड़ाई की) नशिानयिाँ ह।	اِنَّ فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ لَاٰيٰتٍ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ
4	और तमुहार सृज़न म और उन जीवति प्राणयिों म जो ज़मीन पर फलै हुए ह, उन लोगों क लिए (अल़्लाह की बड़ाई की) नशिानयिाँ ह जो यक़ीन रखत ह,	وَفِيْ خَلْقِكُمْ وَمَا يَبُثُّ مِنْ دَآبَّةٍ اٰيٰتٌ لِّقَوْمٍ يُّوْقِنُوْنَ
5	और रात और दनि क बदलन म और उस बारश िम जो अल़्लाह न आकाश स उतारी, फरि उसक ज़रए िउसन ज़मीन को उसकी मौत (सूख़ा) क बाद जद़िा कयिा; और हवाओं क चलन म, उन लोगों क लिए (अल़्लाह की बड़ाई की) नशिानयिाँ ह जो समझ रखत ह।	وَاخْتِلَافِ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ مِنَ السَّمَاۤءِ مِنْ رِّزْقٍ فَاَحْيَا بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا وَتَصْرِيْفِ الرِّيٰحِ اٰيٰتٌ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ
6	य अल़्लाह की आयत ह जो हम तमुह सचचाई क साथ पढ़कर सनुात ह; तो अल़्लाह और उसकी आयतों क बाद व और कसि बात पर ईमान लाएँगे।	تِلْكَ اٰيٰتُ اللّٰهِ نَتْلُوْهَا عَلَيْكَ بِالْحَقِّ فَبِاَيِّ حَدِيْثٍ بَعْدَ اللّٰهِ وَاٰيٰتِهٖ يُؤْمِنُوْنَ
7	हर उस शख़्स क लिए तबाही ह जो बहत़ झठू बोलता ह और बहत़ गनुाह करता ह,	وَيْلٌ لِّكُلِّ اَفَّاكٍ اَثِيْمٍ
8	जो अल़्लाह की आयतों को सनुता ह जब व उस पढ़कर सनुाई जाती ह, फरि भी वह घमंड करता ह जसै उसन उनह सनुा ही नहीं। तो उस दरद़नाक अज़ाब की चतेावनी द।	يَّسْمَعُ اٰيٰتِ اللّٰهِ تُتْلٰى عَلَيْهِ ثُمَّ يُصِرُّ مُسْتَكْبِرًا كَاَنْ لَّمْ يَسْمَعْهَا فَبَشِّرْهُ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ
9	और जब उस हमारी आयतों म स कछु मालूम होता ह, तो वह उनका मज़ाक़ उड़ाता ह। यही व लोग ह जनिक लिए ज़लील करन वाला अज़ाब ह।	وَاِذَا عَلِمَ مِنْ اٰيٰتِنَا شَيْـًٔا اتَّخَذَهَا هُزُوًا اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ
10	उनक सामन जहन्नम ह और जो कछु उनहोंन कयिा वह उनक लिए ज़रा भी काम न आएगा, और न ही व (माबद़) जनिह उनहोंन अल़्लाह क सवि हामी बनाया था। और उनक लिए बड़ा अज़ाब होगा।	مِنْ وَّرَآئِهِمْ جَهَنَّمُ وَلَا يُغْنِيْ عَنْهُمْ مَّا كَسَبُوْا شَيْـًٔا وَّلَا مَا اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَوْلِيَآءَ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ

11	यह (क़ुरआन) हदिायत ह। और जो लोग अपन रेब की आयतों को इंकार करत हैं, उनक लिए बहत दरदनाक सजा का अज़ाब होगा।	هٰذَا هُدًى وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ لَهُمْ عَذَابٌ مِّنْ رِّجْزٍ اَلِيْمٌ
12	अलल्लाह ही ह जसिन तमुहार लिए समदुर को वश म किया ताकि जहाज़ उस पर उसक हुक्म स चल सक, और ताकि तमु उसकी कृपा तलाश कर सको और ताकि तमु शक्र करो।	اَللّٰهُ الَّذِيْ سَخَّرَ لَكُمُ الْبَحْرَ لِتَجْرِيَ الْفُلْكُ فِيْهِ بِاَمْرِهٖ وَلِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ
13	और उसन तमुहार लिए आकाशों और ज़मीन म जो कछ ह, सबको उसकी ओर स (रहमत क तौर पर) वश म किया। नश्चिय ही, इसम उन लोगों क लिए (अलल्लाह की बड़ाई की) निशानियाँ ह जो सोचत हैं।	وَسَخَّرَ لَكُمْ مَّا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ جَمِيْعًا مِّنْهُ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ
14	(मुहम्मद) ईमान वालों स कह द कि व उन लोगों को माफ़ कर जो अलल्लाह क दनिों स नहीं डरत, क्योंकि वह हर कौम को उनक किए हए क मुताबकि बदला दगे।	قُلْ لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يَغْفِرُوْا لِلَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ اَيَّامَ اللّٰهِ لِيَجْزِيَ قَوْمًا بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ
15	जो कोई नके काम करता ह, तो वह अपन लिए करता ह, और जो कोई बरुाई करता ह, तो वह अपन खलिाफ़ करता ह, फरि तमु अपन रेब की ओर लौटाए जाओग।	مَنْ عَمِلَ صَالِحًا فَلِنَفْسِهٖ وَمَنْ اَسَاءَ فَعَلَيْهَا ثُمَّ اِلٰى رَبِّكُمْ تُرْجَعُوْنَ
16	और नश्चिय ही, हमन बनी इसराइल को कतिाब (तौरात), हकूमत और नबवूत दी, और हमन उनह अच्छी रोज़ी दी और उनह (उस दौर की) दूसरी कौमों पर फ़ज़ीलत दी।	وَلَقَدْ اٰتَيْنَا بَنِيْٓ اِسْرَاءِيْلَ الْكِتٰبَ وَالْحُكْمَ وَالنُّبُوَّةَ وَرَزَقْنٰهُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ وَفَضَّلْنٰهُمْ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ
17	और हमन उनह दीन क मामल म साफ़ सबूत दिए; फरि उनहोंन इलम क आन क बाद आपस म बस हसद की वजह स इख़्तलिाफ़ कयिा। नश्चिय ही, तरे रब कयिामत क दनि उनक उन इख़्तलिाफ़ों का फ़सैला करगे जो व करत रह।	وَاٰتَيْنٰهُمْ بَيِّنٰتٍ مِّنَ الْاَمْرِ فَمَا اخْتَلَفُوْٓا اِلَّا مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَهُمُ الْعِلْمُ بَغْيًا بَيْنَهُمْ اِنَّ رَبَّكَ يَقْضِيْ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ
18	फरि हमन तुझ (मुहम्मद) उस दीन की शरीअत पर कायम कयिा, तो उसकी परैवी कर और उन लोगों की ख़्वाहशिों की परैवी न कर जो नहीं जानत।	ثُمَّ جَعَلْنٰكَ عَلٰى شَرِيْعَةٍ مِّنَ الْاَمْرِ فَاتَّبِعْهَا وَلَا تَتَّبِعْ اَهْوَاءَ الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ
19	नश्चिय ही, व तुझ अलल्लाह क (अज़ाब) स ज़रा भी नहीं बचा सकत। और नश्चिय ही, ज़ालमि लोग एक-दूसर क हामी होत ह, जबकि अलल्लाह परहज़गार लोगों का हामी ह।	اِنَّهُمْ لَنْ يُّغْنُوْا عَنْكَ مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا وَاِنَّ الظّٰلِمِيْنَ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَاءُ بَعْضٍ وَاللّٰهُ وَلِيُّ الْمُتَّقِيْنَ
20	यह (क़ुरआन) इंसानों क लिए बसीरत (हदिायत) ह, और उन लोगों क लिए रहमत और हदिायत ह जो यकीन रखत हैं।	هٰذَا بَصَاىِٕرُ لِلنَّاسِ وَهُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّقَوْمٍ يُّوْقِنُوْنَ
21	क्या व लोग जो बरु काम करत हैं, यह गमुान करत हैं कि हम उनह उन लोगों जसैा करगे जो ईमान लाए और नके काम कए, कि उनकी ज़दिगी और मौत बराबर होगी? उनका यह अंदाज़ा बहत बरा ह।	اَمْ حَسِبَ الَّذِيْنَ اجْتَرَحُوا السَّيِّاٰتِ اَنْ نَّجْعَلَهُمْ كَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ سَوَاءً مَّحْيَاهُمْ وَمَمَاتُهُمْ سَاءَ مَا يَحْكُمُوْنَ

22	और अल्लाह न`आकाशों और ज़मीन को सच्चाई क`साथ बनाया और ताकि हर शख़्स को उसक`किए हुए का बदला दिया जाए, और उन पर जुल्म न हो।	وَخَلَقَ اللّٰهُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ وَلِتُجْزٰى كُلُّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ
23	तो क्या तू`उस शख़्स को देखा जिसन`अपनी ख़्वाहिश को अपना माबूद बना लिया और अल्लाह न`उस`अपन`इल्म क` साथ गुमराह रहन`दिया, और उसन`उसक`सुनन`और दिल पर मुहर लगा दी और उसकी नज़र पर परदा डाल दिया? तो अल्लाह क`बाद उस`कौन हिदायत द`सकता है? क्या तुम नसीहत नहीं लते?	اَفَرَءَيْتَ مَنِ اتَّخَذَ اِلٰهَهٗ هَوٰىهُ وَاَضَلَّهُ اللّٰهُ عَلٰى عِلْمٍ وَّخَتَمَ عَلٰى سَمْعِهٖ وَقَلْبِهٖ وَجَعَلَ عَلٰى بَصَرِهٖ غِشٰوَةً فَمَنْ يَّهْدِيْهِ مِنْۢ بَعْدِ اللّٰهِ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ
24	और व`कहत`ह`, 'यह (ज़िंदगी) बस हमारी दुनिया की ज़िंदगी ह`, हम मरत`ह`और जीत`ह`, और हम`बस वक़्त ही हलाक करता ह`' लेकिन उनक`पास इसका कोई इल्म नहीं, व`तो बस अटकलपच्चू करत`ह`।	وَقَالُوْا مَا هِيَ اِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا نَمُوْتُ وَنَحْيَا وَمَا يُهْلِكُنَا اِلَّا الدَّهْرُ وَمَا لَهُمْ بِذٰلِكَ مِنْ عِلْمٍ اِنْ هُمْ اِلَّا يَظُنُّوْنَ
25	और जब उनकी ओर हमारी साफ़ आयत`पढ़ी जाती ह`, तो उनकी कोई दलील नहीं होती सिवा इसक`कि व`कहत`ह`, 'हमार`बाप-दादा को ज़िंदा कर दो, अगर तुम सच्च`हो।'	وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ مَّا كَانَ حُجَّتَهُمْ اِلَّآ اَنْ قَالُوا ائْتُوْا بِاٰبَآئِنَآ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ
26	कह द`, 'अल्लाह ही तुम्ह`ज़िंदगी दता ह`फिर तुम्ह`मौत दता ह`, फिर वह तुम्ह`क़ियामत क`दिन जमा करगा जसिम`कोई शक नहीं; लकिन अक्सर लोग नहीं जानत`।'	قُلِ اللّٰهُ يُحْيِيْكُمْ ثُمَّ يُمِيْتُكُمْ ثُمَّ يَجْمَعُكُمْ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ لَا رَيْبَ فِيْهِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ
27	और आकाशों और ज़मीन की बादशाही अल्लाह की ह`और जसि दनि क़ियामत क़ायम होगी, उस दनि बातलि (गलत) काम करन`वाल`नुकसान म`होंग।	وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَيَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ يَوْمَئِذٍ يَّخْسَرُ الْمُبْطِلُوْنَ
28	और (उस दनि) तू`हर कौम को घुटनों क`बल बठै`दखेगा। हर कौम को उसक`आमाल की कताब क`पास बुलाया जाएगा। उस दनि तुम्ह`तुम्हार`किए हुए का बदला दिया जाएगा।	وَتَرٰى كُلَّ اُمَّةٍ جَاثِيَةً كُلُّ اُمَّةٍ تُدْعٰٓى اِلٰى كِتٰبِهَا اَلْيَوْمَ تُجْزَوْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ
29	(अल्लाह फ़रमाएगा), 'यह हमारी कताब ह`जो तुम्हार`बार`म`सच्चाई क`साथ बोलती ह`। नश्चिय ही, हमन`तुम्हार`किए हुए को लखिवाया था।'	هٰذَا كِتٰبُنَا يَنْطِقُ عَلَيْكُمْ بِالْحَقِّ اِنَّا كُنَّا نَسْتَنْسِخُ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ
30	तो जो लोग ईमान लाए और नके काम कए, उनका रब उन्ह`अपनी रहमत (जन्नत) म`दाख़लि करगा। यही वह साफ़ कामयाबी ह`।	فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَيُدْخِلُهُمْ رَبُّهُمْ فِيْ رَحْمَتِهٖ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْمُبِيْنُ
31	और जो लोग काफ़रि थ`(उनस`कहा जाएगा), 'क्या मरी आयत`तुम्ह`पढ़कर नहीं सुनाई गई थीं, लकिन तुमन`घमंड कयिा और तुम गुनहगार लोग बन गए?'	وَاَمَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا اَفَلَمْ تَكُنْ اٰيٰتِيْ تُتْلٰى عَلَيْكُمْ فَاسْتَكْبَرْتُمْ وَكُنْتُمْ قَوْمًا مُّجْرِمِيْنَ

وَاِذَا قِيْلَ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّالسَّاعَةُ لَا رَيْبَ فِيْهَا قُلْتُمْ مَّا نَدْرِيْ مَا السَّاعَةُ اِنْ نَّظُنُّ اِلَّا ظَنًّا وَّمَا نَحْنُ بِمُسْتَيْقِنِيْنَ	और जब (तुमसे) कहा गया, 'निश्चय ही, अल्लाह का वादा सच्चा है, और क़ियामत का दिन ऐसा है जिसमें कोई शक नहीं,' तुमने कहा, 'हम नहीं मालूम कि क़ियामत क्या है, हम तो बस गुमान करते है, और हम यक़ीन नहीं।'	**32**
وَبَدَا لَهُمْ سَيِّاٰتُ مَا عَمِلُوْا وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ	और उनके किए हुए बुरे काम उनके सामने ज़ाहिर हो जाएँगे, और वह (अज़ाब) जो वे मज़ाक़ उड़ाते थे, उन्हें घेरे लेगा।	**33**
وَقِيْلَ الْيَوْمَ نَنْسٰىكُمْ كَمَا نَسِيْتُمْ لِقَاءَ يَوْمِكُمْ هٰذَا وَمَأْوٰىكُمُ النَّارُ وَمَا لَكُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ	और उनसे कहा जाएगा, 'आज हम तुम्हें भुला जाते है जैसे तुमने इस दिन की मुलाक़ात को भुला दिया था; और तुम्हारा ठिकाना जहन्नम है और तुम्हारा कोई मददगार नहीं होगा।'	**34**
ذٰلِكُمْ بِاَنَّكُمُ اتَّخَذْتُمْ اٰيٰتِ اللّٰهِ هُزُوًا وَّغَرَّتْكُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا فَالْيَوْمَ لَا يُخْرَجُوْنَ مِنْهَا وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُوْنَ	ऐसा इसलिए कि तुमने अल्लाह की आयतों का मज़ाक़ उड़ाया और तुम्हें दुनिया की ज़िंदगी ने धोखा दिया।' तो आज वे न जहन्नम से निकाले जाएँगे और न उन्हें तौबा का मौक़ा दिया जाएगा।	**35**
فَلِلّٰهِ الْحَمْدُ رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَرَبِّ الْاَرْضِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ	तो सारी तारीफ़ अल्लाह के लिए है, जो आकाशों और ज़मीन का रब है, सारे जहानों का रब।	**36**
وَلَهُ الْكِبْرِيَاءُ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ	और उसी के लिए आकाशों और ज़मीन में सारी बड़ाई है, और वही बहुत ताक़तवर, बहुत बुद्धिमान है।	**37**

छंदों की संख्या ३५	اَلْأَحْقَاف Al Ahqaf - 46	مكية मक्की

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल Ahqaf (रेते के टीले)

1	हा मीम	حٰمٓ
2	यह किताब अल्लाह की ओर से उतारी गई है, जो बहुत ताक़तवर, बहुत बुद्धिमान है।	تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ
3	हमने आकाशों और ज़मीन को और जो कुछ उनके बीच है, उसे सच्चाई के साथ और एक मुक़र्रर वक़्त के लिए बनाया। लेकिन काफ़िर लोग उस चेतावनी से मुँह फेरे लेते हैं जो उन्हें दी गई।	مَا خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَآ اِلَّا بِالْحَقِّ وَاَجَلٍ مُّسَمًّى وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا عَمَّآ اُنْذِرُوْا مُعْرِضُوْنَ
4	कह दे (मुहम्मद), 'मुझे बताओ कि तुम अल्लाह के सिवा जिनकी इबादत करते हो, मुझे दिखाओ कि उन्होंने ज़मीन में क्या बनाया या उनके पास आकाशों (के सृजन) में कोई हिस्सा है? मेरे पास इस (क़ुरआन) से पहले की कोई किताब लाओ या प्राचीन लोगों के इल्म का कोई अवशेष, अगर तुम सच्चे हो।'	قُلْ اَرَءَيْتُمْ مَّا تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَرُوْنِيْ مَاذَا خَلَقُوْا مِنَ الْاَرْضِ اَمْ لَهُمْ شِرْكٌ فِي السَّمٰوٰتِ ائْتُوْنِيْ بِكِتٰبٍ مِّنْ قَبْلِ هٰذَآ اَوْ اَثٰرَةٍ مِّنْ عِلْمٍ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ
5	और उससे ज़्यादा गुमराह कौन हो सकता है जो अल्लाह के सिवा उन (माबूदों) की इबादत करता है जो क़ियामत के दिन तक उसकी दुआ क़बूल नहीं कर सकते और वे उनकी दुआओं से ग़ाफ़िल हैं?	وَمَنْ اَضَلُّ مِمَّنْ يَّدْعُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَنْ لَّا يَسْتَجِيْبُ لَهٗٓ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ وَهُمْ عَنْ دُعَآئِهِمْ غٰفِلُوْنَ
6	और जब लोग (क़ियामत के दिन) जमा किए जाएँगे, तो वे (माबूद) उनके दुश्मन बन जाएँगे और उनकी इबादत को इंकार करेंगे।	وَاِذَا حُشِرَ النَّاسُ كَانُوْا لَهُمْ اَعْدَآءً وَّكَانُوْا بِعِبَادَتِهِمْ كٰفِرِيْنَ
7	और जब उनकी ओर हमारी साफ़ आयतें पढ़ी जाती हैं, तो काफ़िर लोग, जब उनके पास सच्चाई आती है, कहते हैं, 'यह तो साफ़ जादू है।'	وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ قَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلْحَقِّ لَمَّا جَآءَهُمْ هٰذَا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ
8	बल्कि वे कहते हैं, 'उसने (मुहम्मद ने) इसे (क़ुरआन को) गढ़ लिया।' कह दे, 'अगर मैंने इसे गढ़ लिया, तो तुम मेरे लिए अल्लाह के (अज़ाब) से कुछ भी बचा नहीं सकते। वह बेहतर जानता है कि तुम इसके बारे में क्या बातें करते हो। मेरे और तुम्हारे बीच में वह गवाह के तौर पर काफ़ी है। वह बहुत माफ़ करने वाला, बहुत रहम करने वाला है।'	اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ قُلْ اِنِ افْتَرَيْتُهٗ فَلَا تَمْلِكُوْنَ لِيْ مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا هُوَ اَعْلَمُ بِمَا تُفِيْضُوْنَ فِيْهِ كَفٰى بِهٖ شَهِيْدًا بَيْنِيْ وَبَيْنَكُمْ وَهُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ
9	कह दे (मुहम्मद), 'मैं रसूलों में से पहला रसूल नहीं हूँ और मुझे नहीं मालूम कि मेरे और तुम्हारे साथ क्या किया जाएगा। मैं तो बस उसी वह्य की पैरवी करता हूँ जो मेरे पास आती है और मैं सरीह एक साफ़ चेतावनी देने वाला हूँ।'	قُلْ مَا كُنْتُ بِدْعًا مِّنَ الرُّسُلِ وَمَآ اَدْرِيْ مَا يُفْعَلُ بِيْ وَلَا بِكُمْ اِنْ اَتَّبِعُ اِلَّا مَا يُوْحٰٓى اِلَيَّ وَمَآ اَنَا اِلَّا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ

10	कह द, 'मुझे बताओ, अगर यह (क़ुरआन) वाक़ई अल्लाह की ओर से हो और तुमने इसे इंकार कर दिया, जबकि बनी इसराइल में से एक गवाह ने (इसके जैसी) सच्चाई को माना और ईमान लाया, और तुमने घमंड किया। निश्चय ही, अल्लाह ज़ालिम लोगों को हिदायत नहीं देता।'	قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ كَانَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ وَكَفَرْتُمْ بِهٖ وَشَهِدَ شَاهِدٌ مِّنْ بَنِيْٓ اِسْرَاۤءِيْلَ عَلٰى مِثْلِهٖ فَاٰمَنَ وَاسْتَكْبَرْتُمْ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ
11	और काफ़िर लोग ईमान वालों के बारे में कहते हैं, 'अगर यह (क़ुरआन) कुछ अच्छा होता, तो वे हमसे आगे न बढ़ जाते।' लेकिन चूँकि वे इससे हिदायत नहीं पाते, तो वे कहेंगे, 'यह तो पुराना झूठ है।'	وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَوْ كَانَ خَيْرًا مَّا سَبَقُوْنَآ اِلَيْهِ وَاِذْ لَمْ يَهْتَدُوْا بِهٖ فَسَيَقُوْلُوْنَ هٰذَآ اِفْكٌ قَدِيْمٌ
12	और इससे पहले मूसा की किताब हिदायत और रहमत के तौर पर थी। और यह (क़ुरआन) एक किताब है जो अरबी ज़बान में इसे तसदीक़ करती है ताकि ज़ालिम लोगों को चेतावनी दे और नेके काम करने वालों को ख़ुशख़बरी दे।	وَمِنْ قَبْلِهٖ كِتٰبُ مُوْسٰٓى اِمَامًا وَّرَحْمَةً وَهٰذَا كِتٰبٌ مُّصَدِّقٌ لِّسَانًا عَرَبِيًّا لِّيُنْذِرَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا وَبُشْرٰى لِلْمُحْسِنِيْنَ
13	निश्चय ही, जो लोग कहते हैं, 'हमारा रब अल्लाह है,' फिर वे उस पर क़ायम रहते हैं, उन पर न कोई ख़ौफ़ होगा और न वे ग़मगीन होंगे।	اِنَّ الَّذِيْنَ قَالُوْا رَبُّنَا اللّٰهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوْا فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ
14	वही जन्नत के बाशिंदे होंगे, हमेशा उसमें रहेंगे; उनके किए हुए (कामों) का बदला।	اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا جَزَاۤءً بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ
15	और हमने इंसान को हुक्म दिया कि वह अपने माँ-बाप के साथ अच्छा सुलूक करे। उसकी माँ ने उसे तकलीफ़ के साथ उठाया और तकलीफ़ के साथ उसे जना। उसका गर्भ में रहना और दूध छुड़ाना तीस महीने का है, यहाँ तक कि जब वह बड़ा हो गया और उसकी उम्र चालीस साल की हो गई, तो उसने दुआ की, 'ऐ मेरे रब, मुझे तौफ़ीक़ दे कि मैं तेरी उस नेअमत का शुक्र करूँ जो तूने मुझ पर और मेरे माँ-बाप पर की और ताकि मैं वह नेक काम करूँ जिससे तू राज़ी हो; और मेरे लिए मेरी औलाद में भलाई दे। मैं तेरी ओर तौबा करता हूँ और मैं मुसलमानों में से हूँ।'	وَوَصَّيْنَا الْاِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ اِحْسَانًا حَمَلَتْهُ اُمُّهٗ كُرْهًا وَّوَضَعَتْهُ كُرْهًا وَحَمْلُهٗ وَفِصٰلُهٗ ثَلٰثُوْنَ شَهْرًا حَتّٰٓى اِذَا بَلَغَ اَشُدَّهٗ وَبَلَغَ اَرْبَعِيْنَ سَنَةً قَالَ رَبِّ اَوْزِعْنِيْٓ اَنْ اَشْكُرَ نِعْمَتَكَ الَّتِيْٓ اَنْعَمْتَ عَلَيَّ وَعَلٰى وَالِدَيَّ وَاَنْ اَعْمَلَ صَالِحًا تَرْضٰىهُ وَاَصْلِحْ لِيْ فِيْ ذُرِّيَّتِيْ اِنِّيْ تُبْتُ اِلَيْكَ وَاِنِّيْ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ
16	वही वे लोग हैं जिनके नेके काम हम क़बूल करते हैं और जिनकी ख़ामियों को हम माफ़ करते हैं, (वे) जन्नत के बाशिंदे होंगे। यह वह सच्चा वादा है जो उनसे किया गया था।	اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ نَتَقَبَّلُ عَنْهُمْ اَحْسَنَ مَا عَمِلُوْا وَنَتَجَاوَزُ عَنْ سَيِّاٰتِهِمْ فِيْٓ اَصْحٰبِ الْجَنَّةِ وَعْدَ الصِّدْقِ الَّذِيْ كَانُوْا يُوْعَدُوْنَ
17	और वह शख़्स जो अपने माँ-बाप से कहता है, 'उफ़!' क्या तुम दोनों मुझे डराते हो कि मैं (क़ब्र से) उठाया जाऊँगा, जबकि मुझसे पहले कई कौमें गुज़र चुकी हैं? फिर उसके माँ-बाप अल्लाह से मदद माँगते हैं (और कहते हैं), 'तुझ पर अफ़सोस, ईमान ला! निश्चय ही, अल्लाह का वादा सच्चा है।' फिर वह कहता है, 'यह तो बस पुराने लोगों की कहानियाँ हैं।'	وَالَّذِيْ قَالَ لِوَالِدَيْهِ اُفٍّ لَّكُمَآ اَتَعِدَانِنِيْٓ اَنْ اُخْرَجَ وَقَدْ خَلَتِ الْقُرُوْنُ مِنْ قَبْلِيْ وَهُمَا يَسْتَغِيْثٰنِ اللّٰهَ وَيْلَكَ اٰمِنْ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ فَيَقُوْلُ مَا هٰذَآ اِلَّآ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ
18	वे वे लोग हैं जिन पर अज़ाब का हुक्म पक्का हो चुका है, उनके साथ उन कौमों के जो उनसे पहले गुज़र चुकीं, जिन्न और इंसानों में से। वे लोग नुक़सान उठाने वाले हैं।	اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ حَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ فِيْٓ اُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ اِنَّهُمْ كَانُوْا خٰسِرِيْنَ

وَلِكُلٍّ دَرَجٰتٌ مِّمَّا عَمِلُوْا وَلِيُوَفِّيَهُمْ اَعْمَالَهُمْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ	और हर एक क॰लिए उसक॰किए हुए (कामो) क॰मुताबकि॰दरज॰है॰ ताकि॰अल॰लाह उनक॰करमो॰का पूरा बदला द॰और उन पर जुल्म न हो।	**19**
وَيَوْمَ يُعْرَضُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا عَلَى النَّارِ اَذْهَبْتُمْ طَيِّبٰتِكُمْ فِيْ حَيَاتِكُمُ الدُّنْيَا وَاسْتَمْتَعْتُمْ بِهَا فَالْيَوْمَ تُجْزَوْنَ عَذَابَ الْهُوْنِ بِمَا كُنْتُمْ تَسْتَكْبِرُوْنَ فِى الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَبِمَا كُنْتُمْ تَفْسُقُوْنَ	और (याद कर) उस दनि जब काफ़रि॰ को जहन॰नम क॰सामन॰ पशे कयि जाएगा (और उनस॰कहा जाएगा), 'तमुन॰अपनी अच॰छी चीज़ो॰ को अपनी दन॰यि की ज़॰दिगी म॰ख़त॰म कर लयि और उनका मज़ा ल॰लयि, तो आज तमु॰ह॰ज़लील करन॰वाला अज़ाब दयि जाएगा क॰योंक॰ि तमु ज़मीन म॰नाहक़ घमंड करत॰े थ॰और क॰योंक॰ि तमु नाफ़रमानी करत॰े थ॰ो।'	**20**
وَاذْكُرْ اَخَا عَادٍ اِذْ اَنْذَرَ قَوْمَه بِالْاَحْقَافِ وَقَدْ خَلَتِ النُّذُرُ مِنْ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِه اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّا اللّٰهَ اِنِّيْٓ اَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ	और (हूद को) याद कर, जो आद कौम का भाई था, जब उसन॰े अपनी कौम को अहक़ाफ़ (बकुति-बकुति रते) म॰चेतावनी दी और नशि॰चय ही, उससे पहल॰और बाद म॰कई चेतावनी दने॰वाल॰े गज़ुर चुक॰े थ॰े (जो कहत॰े थ॰ी), 'अल॰लाह क॰सवि॰ा कसिी की इबादत न करो, मझु॰े डर ह॰ैक॰ि तमु पर एक बड॰े दनि का अज़ाब आएगा।'	**21**
قَالُوْٓا اَجِئْتَنَا لِتَاْفِكَنَا عَنْ اٰلِهَتِنَا فَاْتِنَا بِمَا تَعِدُنَآ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ	उनहो॰ंने॰जवाब दयि, 'क॰या त॰ूहमार॰े पास आया ह॰ैताक॰ि हम॰े हमार॰े माबदो॰ं स॰े फरे द॰? तो हमार॰े पास वह (अज़ाब) ला जो तू॰े हम॰े धमकाया, अगर त॰ूसच॰ा ह॰ै'	**22**
قَالَ اِنَّمَا الْعِلْمُ عِنْدَ اللّٰهِ وَاُبَلِّغُكُمْ مَّآ اُرْسِلْتُ بِه وَلٰكِنِّيْٓ اَرٰىكُمْ قَوْمًا تَجْهَلُوْنَ	उसन॰े (हूद न॰े) कहा, 'इसका इलम॰ तो बस अल॰लाह क॰े पास ह॰ै और म॰ैसरि॰फ़ वही पहच॰ुाता हू॰ँजो मझु॰े वह॰य क॰े ज़रि॰ए भजेा गया ह॰ै लकेनि म॰ैतमु॰ह॰े एक नादान कौम दखे॰ता हू॰ँ'	**23**
فَلَمَّا رَاَوْهُ عَارِضًا مُّسْتَقْبِلَ اَوْدِيَتِهِمْ قَالُوْا هٰذَا عَارِضٌ مُّمْطِرُنَا بَلْ هُوَ مَا اسْتَعْجَلْتُمْ بِه رِيْحٌ فِيْهَا عَذَابٌ اَلِيْمٌ	फरि जब उनहो॰ंने॰इस॰े (अज़ाब को) अपनी वादयो॰ं की ओर बादल क॰े रूप॰ म॰ैआत॰े दखे॰ा, तो उनहो॰ंने॰कहा, 'यह तो बादल ह॰ैजो हम पर बारशि करेगा।' (हूद न॰े कहा), 'नहीं, यह वह चीज़ ह॰ैजसिक॰े लए तमु जलद॰ी माग॰ँ रह॰े थ॰े, एक हवा जसिम॰ैदरद॰नाक अज़ाब ह॰ै'	**24**
تُدَمِّرُ كُلَّ شَيْءٍ بِاَمْرِ رَبِّهَا فَاَصْبَحُوْا لَا يُرٰى اِلَّا مَسٰكِنُهُمْ كَذٰلِكَ نَجْزِى الْقَوْمَ الْمُجْرِمِيْنَ	वह हर चीज़ को अपन॰े रब क॰े हुक॰म स॰े हलाक कर दगेी। फरि व॰े ऐस॰े हो गए क॰ि उनक॰े घरो॰ं क॰े सवि॰ा कछु नज़र नहीं आया। इस तरह हम गनु॰हगार कौम को बदला दत॰े ह॰ैं	**25**
وَلَقَدْ مَكَّنّٰهُمْ فِيْمَآ اِنْ مَّكَّنّٰكُمْ فِيْهِ وَجَعَلْنَا لَهُمْ سَمْعًا وَّاَبْصَارًا وَّاَفْـِٕدَةً فَمَآ اَغْنٰى عَنْهُمْ سَمْعُهُمْ وَلَآ اَبْصَارُهُمْ وَلَآ اَفْـِٕدَتُهُمْ مِّنْ شَيْءٍ اِذْ كَانُوْا يَجْحَدُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِه يَسْتَهْزِءُوْنَ	और नशि॰चय ही, हमन॰े उनह॰ें वह मकाम (ख़शु॰हाली और ताक़त) दयि जो हमन॰े तमु॰ह॰ें नहीं दयि और हमन॰े उनह॰ें सनु॰न॰े की ताक़त, दखे॰न॰े की ताक़त और दलि दए, लकेनि उनकी सनु॰न॰े की ताक़त, दखे॰न॰े की ताक़त और उनक॰े दलिो॰ं न॰े उनह॰ें कछु फ़ायदा न दयि, क॰योंक॰ि व॰े अल॰लाह की आयतो॰ं को इंकार करत॰े थ॰े और वह (अज़ाब) जसिका व॰े मज़ाक़ उड़ात॰े थ॰े, उनह॰ें घरे लयि।	**26**
وَلَقَدْ اَهْلَكْنَا مَا حَوْلَكُمْ مِّنَ الْقُرٰى وَصَرَّفْنَا الْاٰيٰتِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ	और नशि॰चय ही, हमन॰े तमु॰ह॰ारे आसपास की बसत॰ियो॰ं को हलाक कर दयि और हमन॰े बार-बार अपनी नशिानयि॰ाँ बयान कीं, ताक॰ि व॰े (तौबा करक॰े) लौट आएँ।	**27**

فَلَوْلَا نَصَرَهُمُ الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ قُرْبَانًا اٰلِهَةً ۭ بَلْ ضَلُّوْا عَنْهُمْ ۚ وَذٰلِكَ اِفْكُهُمْ وَمَا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ	**28**	तो क्यों न उन (माबूदों और बतों) ने उनकी मदद की जिन्हें उन्होंने अल्लाह के सिवा (उसके क़रीब होने के लिए) माबूद बनाया था? बल्कि वे उनसे ग़ायब हो गए। और यही उनका झूठ था और जो कुछ वे गढ़त थे।
وَاِذْ صَرَفْنَآ اِلَيْكَ نَفَرًا مِّنَ الْجِنِّ يَسْتَمِعُوْنَ الْقُرْاٰنَ ۚ فَلَمَّا حَضَرُوْهُ قَالُوْٓا اَنْصِتُوْا ۚ فَلَمَّا قُضِيَ وَلَّوْا اِلٰى قَوْمِهِمْ مُّنْذِرِيْنَ	**29**	और (याद कर) जब हमने तेरे (मुहम्मद) पास कुछ जिन्नों का एक गरोह भेजा जो (क़ुरआन की) तिलावत सुन रहे थे, तो जब वे इस सुनने के लिए हाज़िर हुए, तो उन्होंने कहा, 'ख़ामोश हो जाओ (इस सुनने के लिए)!' फिर जब यह ख़त्म हुआ, तो वे अपनी कौम की ओर चेतावनी देने के लिए लौट गए।
قَالُوْا يٰقَوْمَنَآ اِنَّا سَمِعْنَا كِتٰبًا اُنْزِلَ مِنْۢ بَعْدِ مُوْسٰى مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ يَهْدِيْٓ اِلَى الْحَقِّ وَاِلٰى طَرِيْقٍ مُّسْتَقِيْمٍ	**30**	उन्होंने कहा, 'ऐ हमारी कौम! हमने एक किताब (क़ुरआन) सुनी जो मूसा के बाद उतारी गई, जो पहले आई (किताबों) की तसदीक़ करती है, जो सच्चाई और सीधे रास्त की ओर हिदायत देती है।'
يٰقَوْمَنَآ اَجِيْبُوْا دَاعِيَ اللّٰهِ وَاٰمِنُوْا بِهٖ يَغْفِرْ لَكُمْ مِّنْ ذُنُوْبِكُمْ وَيُجِرْكُمْ مِّنْ عَذَابٍ اَلِيْمٍ	**31**	ऐ हमारी कौम! अल्लाह की ओर बुलाने वाले (मुहम्मद) की बात मानो। और उस पर ईमान लाओ, तो वह तुम्हारे गुनाहों को माफ़ करेगा और तुम्हें दरदनाक अज़ाब से बचाएगा।
وَمَنْ لَّا يُجِبْ دَاعِيَ اللّٰهِ فَلَيْسَ بِمُعْجِزٍ فِي الْاَرْضِ وَلَيْسَ لَهٗ مِنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَاۗءُ ۭ اُولٰۗىِٕكَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ	**32**	और जो कोई अल्लाह की ओर बुलाने वाले (मुहम्मद) की बात न माने, तो वह ज़मीन में अल्लाह के (अज़ाब) से बच नहीं सकता, और उसके लिए अल्लाह के सिवा कोई हामी नहीं होगा। वे लोग साफ़ गुमराही में हैं।
اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَلَمْ يَعْيَ بِخَلْقِهِنَّ بِقٰدِرٍ عَلٰٓى اَنْ يُّحْيِۦَ الْمَوْتٰى ۭ بَلٰٓى اِنَّهٗ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ	**33**	और क्या उन्होंने नहीं देखा कि अल्लाह, जिसने आकाशों और ज़मीन को बनाया और उसके बनाने में थका नहीं, वह मुर्दों को ज़िंदा करने की ताक़त रखता है? बेशक; निश्चय ही, वह हर चीज़ पर क़ादिर है।
وَيَوْمَ يُعْرَضُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا عَلَي النَّارِ ۭ اَلَيْسَ هٰذَا بِالْحَقِّ ۭ قَالُوْا بَلٰى وَرَبِّنَا ۭ قَالَ فَذُوْقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ	**34**	और (याद कर) उस दिन जब काफ़िरों को जहन्नम के सामने पेश किया जाएगा, (उनसे पूछा जाएगा), 'क्या यह (अज़ाब) सच नहीं है?' वे जवाब देंगे, 'हाँ, हमारे रब की क़सम, यह सच है।' वह (अल्लाह) फ़रमाएगा, 'तो इस अज़ाब को चखो क्योंकि तुम इंकार करते थे।'
فَاصْبِرْ كَمَا صَبَرَ اُولُوا الْعَزْمِ مِنَ الرُّسُلِ وَلَا تَسْتَعْجِلْ لَّهُمْ ۭ كَاَنَّهُمْ يَوْمَ يَرَوْنَ مَا يُوْعَدُوْنَ ۙ لَمْ يَلْبَثُوْٓا اِلَّا سَاعَةً مِّنْ نَّهَارٍ ۭ بَلٰغٌ ۚ فَهَلْ يُهْلَكُ اِلَّا الْقَوْمُ الْفٰسِقُوْنَ	**35**	तो (मुहम्मद) सब्र कर, जैसे कि मज़बूत इरादे वाले रसूलों ने सब्र किया और उनके लिए (अज़ाब को) जल्दी न माँग। जिस दिन वे उस अज़ाब को देखेंगे जो उनसे वादा किया गया, उन्हें लगेगा जैसे वे (दुनिया में) बस दिन के एक हिस्से के लिए ठहरे थे। तेरा काम सरिफ़ (पैग़ाम) पहुँचाना है। तो कोई हलाक नहीं किया जाता सिवाय फ़ासिक़ (नाफ़रमान) कौम को।

छंदों की संख्या	مُحَمَّد	मदनी
३८	मुहम्मद - 47	मदनी

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

मुहम्मद (मुहम्मद)

1	जो लोग काफ़िर है और (लोगों को) अल्लाह के रास्त से रोकते है, अल्लाह उनके सारे कर्मों को मिटा देता है।	اَلَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَضَلَّ اَعْمَالَهُمْ
2	और जो लोग अल्लाह पर ईमान लाए और अच्छे काम किए और मुहम्मद पर उतारी गई (वह्य) पर ईमान लाए; और वही उनके रब से सच्चाई है; अल्लाह उनकी ख़ामियों को मिटा देता है और उनकी हालत को सुधारता है।	وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَاٰمَنُوْا بِمَا نُزِّلَ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّهُوَ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّهِمْ كَفَّرَ عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ وَاَصْلَحَ بَالَهُمْ
3	ऐसा इसलिए, क्योंकि काफ़िर लोग बातिल (ग़लत रास्त) की पैरवी करते है और मोमिन लोग अपने रब से आई सच्चाई की पैरवी करते है। इस तरह अल्लाह इंसानों के लिए मिसाल बयान करता है।	ذٰلِكَ بِاَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوا اتَّبَعُوا الْبَاطِلَ وَاَنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّبَعُوا الْحَقَّ مِنْ رَّبِّهِمْ كَذٰلِكَ يَضْرِبُ اللّٰهُ لِلنَّاسِ اَمْثَالَهُمْ
4	तो जब तुम काफ़िरों से (जंग के मैदान में) मुक़ाबला करो, तो उनकी गरदनें मारो। फिर जब तुम उन्हें पूरी तरह हरा दो, तो उन्हें (क़ैद) बाँध लो, और इसके बाद तुम उन्हें या तो आज़ाद कर सकते हो या फिर (उनसे) फ़िरौती ले सकते हो जब तक जंग ख़त्म न हो जाए। ऐसा ही है, और अगर अल्लाह चाहता तो वह ख़ुद उन्हें हलाक कर देता, लेकिन वह तुम्हें एक-दूसरे से आज़माना चाहता है और जो लोग अल्लाह के रास्त में शहीद हो गए, अल्लाह उनके कर्मों को ज़ाया नहीं करता।	فَاِذَا لَقِيْتُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَضَرْبَ الرِّقَابِ حَتّٰٓى اِذَآ اَثْخَنْتُمُوْهُمْ فَشُدُّوا الْوَثَاقَ فَاِمَّا مَنًّا بَعْدُ وَاِمَّا فِدَاۤءً حَتّٰى تَضَعَ الْحَرْبُ اَوْزَارَهَا ذٰلِكَ وَلَوْ يَشَاۤءُ اللّٰهُ لَانْتَصَرَ مِنْهُمْ وَلٰكِنْ لِّيَبْلُوَا بَعْضَكُمْ بِبَعْضٍ وَالَّذِيْنَ قُتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَلَنْ يُّضِلَّ اَعْمَالَهُمْ
5	अल्लाह उन्हें हिदायत देगा और उनकी हालत को सुधारेगा,	سَيَهْدِيْهِمْ وَيُصْلِحُ بَالَهُمْ
6	और उन्हें उस जन्नत में दाख़िल करेगा जिसे उसने उनके लिए बयान किया है।	وَيُدْخِلُهُمُ الْجَنَّةَ عَرَّفَهَا لَهُمْ
7	ऐ ईमान वालो! अगर तुम (अल्लाह के दीन की) मदद करोगे, तो वह तुम्हारी मदद करेगा और तुम्हारे क़दमों को मज़बूत करेगा।	يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنْ تَنْصُرُوا اللّٰهَ يَنْصُرْكُمْ وَيُثَبِّتْ اَقْدَامَكُمْ
8	और जो लोग काफ़िर है, तो उनके लिए तबाही है और अल्लाह उनके सारे कर्मों को मिटा देता है।	وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَتَعْسًا لَّهُمْ وَاَضَلَّ اَعْمَالَهُمْ
9	ऐसा इसलिए कि उन्होंने उस (क़ुरआन) को नापसंद किया जो अल्लाह ने उतारा, तो अल्लाह ने उनके सारे कर्मों को मिटा दिया।	ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَرِهُوْا مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ فَاَحْبَطَ اَعْمَالَهُمْ

10	तो क्या उनहोंने ज़मीन में सैर नहीं की कि वे देखते कि उन लोगों का अंजाम कैसा हुआ जो उनसे पहले थे। अल्लाह ने उनहें हलाक कर दिया, और काफ़िरों के लिए भी ऐसा ही (अंजाम) होगा।	اَفَلَمْ يَسِيْرُوْا فِى الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۭ دَمَّرَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ ۭ وَلِلْكٰفِرِيْنَ اَمْثَالُهَا
11	ऐसा इसलिए कि अल्लाह उन लोगों का हामी है जो ईमान लाए; जबकि काफ़िरों का कोई हामी नहीं है।	ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ مَوْلَى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَاَنَّ الْكٰفِرِيْنَ لَا مَوْلٰى لَهُمْ
12	निश्चय ही, अल्लाह उन लोगों को जो ईमान लाए और अच्छे काम किए, उन जन्नतों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें बहती हैं और जो लोग काफ़िर हैं, वे (दुनिया की) मज़े लेते हैं और वैसे खाते हैं जैसे जानवर खाते हैं; और (आख़िरत में) जहन्नम ही उनकी जगह होगी।	اِنَّ اللّٰهَ يُدْخِلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۭ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا يَتَمَتَّعُوْنَ وَيَاْكُلُوْنَ كَمَا تَاْكُلُ الْاَنْعَامُ وَالنَّارُ مَثْوًى لَّهُمْ
13	और कितने ही शहर थे जिनके (लोग) तेरे उस शहर (मक्का) के लोगों से ज़्यादा ताक़तवर थे जिनहोंने तुझे निकाला। हमने उनहें हलाक कर दिया; तो उनका कोई मददगार नहीं था।	وَكَاَيِّنْ مِّنْ قَرْيَةٍ هِيَ اَشَدُّ قُوَّةً مِّنْ قَرْيَتِكَ الَّتِيْٓ اَخْرَجَتْكَ اَهْلَكْنٰهُمْ فَلَا نَاصِرَ لَهُمْ
14	तो क्या वह शख़्स जो अपने रब की ओर से आए सपष्ट सबूत पर क़ायम है, उस शख़्स जैसा है जिसके लिए उसकी बुरी हरकतें अच्छी बना दी गई और वह अपनी ख़्वाहिशों की परैवी करता है?	اَفَمَنْ كَانَ عَلٰي بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّهٖ كَمَنْ زُيِّنَ لَهٗ سُوْۗءُ عَمَلِهٖ وَاتَّبَعُوْٓا اَهْوَاۗءَهُمْ
15	उन परहेज़गारों के लिए जन्नत की मिसाल, जो उनसे वादा की गई है; वहाँ नहरें हैं जिनका पानी ख़राब नहीं होता, और दूध की नहरें जिनका सवाद नहीं बदलता, और ख़मर (शराब जो नशा न दे) की नहरें जो पीने वालों के लिए लज़ीज़ है, और शहद की साफ़ नहरें। वहाँ उनके लिए हर तरह के फल और उनके रब से माफ़ी है। क्या वे उनके जैसे हैं जो जहन्नम में हमेशा रहेंगे, और उनहें खौलता हुआ पानी पिलाया जाएगा जो उनकी अंतड़ियों को काट देगा?	مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِيْ وُعِدَ الْمُتَّقُوْنَ ۭ فِيْهَآ اَنْهٰرٌ مِّنْ مَّاۗءٍ غَيْرِ اٰسِنٍ ۚ وَاَنْهٰرٌ مِّنْ لَّبَنٍ لَّمْ يَتَغَيَّرْ طَعْمُهٗ ۚ وَاَنْهٰرٌ مِّنْ خَمْرٍ لَّذَّةٍ لِّلشّٰرِبِيْنَ ۚ وَاَنْهٰرٌ مِّنْ عَسَلٍ مُّصَفًّى ۭ وَلَهُمْ فِيْهَا مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ وَمَغْفِرَةٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ ۭ كَمَنْ هُوَ خَالِدٌ فِي النَّارِ وَسُقُوْا مَاۗءً حَمِيْمًا فَقَطَّعَ اَمْعَاۗءَهُمْ
16	और उनमें से कुछ लोग तेरी बात सुनते हैं (मुहम्मद), लेकिन जब वे तेरे पास से निकलते हैं, तो वे उन लोगों से जो इल्म दिए गए हैं (नबी के सहाबा), कहते हैं, 'उसने अभी क्या कहा?' यही वे लोग हैं जिनके दिलों पर अल्लाह ने मुहर लगा दी और वे अपनी ख़्वाहिशों की परैवी करते हैं।	وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّسْتَمِعُ اِلَيْكَ ۚ حَتّٰٓى اِذَا خَرَجُوْا مِنْ عِنْدِكَ قَالُوْا لِلَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ مَاذَا قَالَ اٰنِفًا ۭ اُولٰۗىِٕكَ الَّذِيْنَ طَبَعَ اللّٰهُ عَلٰي قُلُوْبِهِمْ وَاتَّبَعُوْٓا اَهْوَاۗءَهُمْ
17	और जो लोग हिदायत पा चुके हैं, अल्लाह उनकी हिदायत को और बढ़ाता है और उनहें उनके तक़वे का सवाब देता है।	وَالَّذِيْنَ اهْتَدَوْا زَادَهُمْ هُدًى وَّاٰتٰىهُمْ تَقْوٰىهُمْ
18	तो वे और क्या इंतज़ार कर रहे हैं सिवाय क़ियामत के दिन के, जो उनके पास अचानक आएगा, क्योंकि उसकी निशानियाँ तो पहले ही आ चुकी हैं। तो जब (क़ियामत का दिन) आ जाएगा, तब उनकी समझ का क्या फ़ायदा?	فَهَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّا السَّاعَةَ اَنْ تَاْتِيَهُمْ بَغْتَةً ۚ فَقَدْ جَاۗءَ اَشْرَاطُهَا ۚ فَاَنّٰى لَهُمْ اِذَا جَاۗءَتْهُمْ ذِكْرٰىهُمْ

19	तो जान लो कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद (पूज्य) नहीं है और अपने गुनाहों की माफी माँगो और मोमिन मर्दों और औरतों के (गुनाहों की माफी माँगो)। और अल्लाह तुम्हारे काम करने की जगह और रहने की जगह को जानता है।	فَاعْلَمْ اَنَّه لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاسْتَغْفِرْ لِذَنْۢبِكَ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مُتَقَلَّبَكُمْ وَمَثْوٰىكُمْ
20	और ईमान वाले कहते हैं, 'क्यों न एक सूरह (जिहाद के हुक्म के साथ) उतारी गई?' तो जब एक साफ़ सूरह उतारी गई जिसमें जंग का ज़िक्र था, तो तुम देखा कि जिनके दिलों में बीमारी है, वे तुम्हें ऐसे देखते हैं जैसे कोई मौत के डर से बेहोश हो रहा हो। लेकिन यह उनके लिए ज़्यादा मुनासिब था।	وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَوْلَا نُزِّلَتْ سُوْرَةٌ فَاِذَآ اُنْزِلَتْ سُوْرَةٌ مُّحْكَمَةٌ وَّذُكِرَ فِيْهَا الْقِتَالُ رَاَيْتَ الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ يَّنْظُرُوْنَ اِلَيْكَ نَظَرَ الْمَغْشِيِّ عَلَيْهِ مِنَ الْمَوْتِ فَاَوْلٰى لَهُمْ
21	(उनके लिए बेहतर था) अल्लाह की इताअत करना और अच्छी बात कहना। क्योंकि जब (जंग का) हुक्म पक्का हो गया (तो वे इसे नापसंद करते हैं)। अगर वे अल्लाह पर सच्चे तौर पर ईमान लाते, तो यह उनके लिए बेहतर होता।	طَاعَةٌ وَّقَوْلٌ مَّعْرُوْفٌ فَاِذَا عَزَمَ الْاَمْرُ فَلَوْ صَدَقُوا اللّٰهَ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ
22	तो क्या अगर तुम्हें हुकूमत मिल जाए, तो तुम ज़मीन में फ़साद फैलाओगे और अपने रिश्तों को तोड़ दोगे?	فَهَلْ عَسَيْتُمْ اِنْ تَوَلَّيْتُمْ اَنْ تُفْسِدُوْا فِي الْاَرْضِ وَتُقَطِّعُوْٓا اَرْحَامَكُمْ
23	यही वे लोग हैं जिन पर अल्लाह ने लानत की; फिर उसने उनकी सुनने की ताक़त छीन ली और उनकी नज़र को अंधा कर दिया।	اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ لَعَنَهُمُ اللّٰهُ فَاَصَمَّهُمْ وَاَعْمٰٓى اَبْصَارَهُمْ
24	तो क्या वे क़ुरआन पर ग़ौर नहीं करते या उनके दिलों पर ताले लग गए हैं?	اَفَلَا يَتَدَبَّرُوْنَ الْقُرْاٰنَ اَمْ عَلٰى قُلُوْبٍ اَقْفَالُهَا
25	निश्चय ही, जो लोग हिदायत साफ़ होने के बाद (कुफ़्र की ओर) पलट गए, शैतान ने उन्हें बहकाया और उनकी उम्मीदों को लंबा किया।	اِنَّ الَّذِيْنَ ارْتَدُّوْا عَلٰٓى اَدْبَارِهِمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْهُدَى الشَّيْطٰنُ سَوَّلَ لَهُمْ وَاَمْلٰى لَهُمْ
26	ऐसा इसलिए कि उन्होंने उन लोगों (यहूदियों) से कहा जो अल्लाह के उतारे हुए (क़ुरआन) को नापसंद करते थे, 'हम कुछ मामलों में तुम्हारी बात मानेंगे,' लेकिन अल्लाह उनके राज़ों को जानता है।	ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَالُوْا لِلَّذِيْنَ كَرِهُوْا مَا نَزَّلَ اللّٰهُ سَنُطِيْعُكُمْ فِيْ بَعْضِ الْاَمْرِ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ اِسْرَارَهُمْ
27	तो क्या होगा जब फ़रिश्ते (मौत के) उनकी जान निकालेंगे, उनके चेहरों और पीठों पर मारते हुए?	فَكَيْفَ اِذَا تَوَفَّتْهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ يَضْرِبُوْنَ وُجُوْهَهُمْ وَاَدْبَارَهُمْ
28	ऐसा इसलिए कि उन्होंने उसकी पैरवी की जो अल्लाह को गुस्सा दिलाता है और उस चीज़ को नापसंद किया जो उसकी रज़ा का कारण है; इसलिए अल्लाह ने उनके सारे कर्मों को मिटा दिया।	ذٰلِكَ بِاَنَّهُمُ اتَّبَعُوْا مَآ اَسْخَطَ اللّٰهَ وَكَرِهُوْا رِضْوَانَه فَاَحْبَطَ اَعْمَالَهُمْ
29	या क्या वे जिनके दिलों में बीमारी है, यह गुमान करते हैं कि अल्लाह उनकी कटुता को ज़ाहिर नहीं करेगा?	اَمْ حَسِبَ الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ اَنْ لَّنْ يُّخْرِجَ اللّٰهُ اَضْغَانَهُمْ

وَلَوْ نَشَاءُ لَاَرَيْنٰكَهُمْ فَلَعَرَفْتَهُمْ بِسِيْمٰهُمْ وَلَتَعْرِفَنَّهُمْ فِيْ لَحْنِ الْقَوْلِ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ اَعْمَالَكُمْ	और अगर हम चाह, तो हम उनह तुझ दिखा द, फरि तू उनक नशानो स उनह पहचान ल, या तू उनह जरू उनकी बातो की लहजा स पहचान लगेा। और अल्लाह तरे करमो को जानता ह	**30**
وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ حَتّٰى نَعْلَمَ الْمُجٰهِدِيْنَ مِنْكُمْ وَالصّٰبِرِيْنَ وَنَبْلُوَا اَخْبَارَكُمْ	और हम जरू तमुह आजमाएँगे ताकि हम उन लोगो को जान ल जो तमु म स जहिाद करन वाल और सबर करन वाल ह, और हम तमुहारी खबरो को परख।	**31**
اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَشَاقُّوا الرَّسُوْلَ مِنْ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْهُدٰى لَنْ يَّضُرُّوا اللّٰهَ شَيْـًٔا وَسَيُحْبِطُ اَعْمَالَهُمْ	नशि्चय ही, जो लोग काफरि ह और (लोगो को) अल्लाह क रासत स रोकत ह और रसलू का वरिोध करत ह, हदिायत साफ होन के बाद, व अल्लाह को जरा भी नकुसान नहीं पहचुा सकत और वह जलद ही उनक करमो को मटिा दगेा।	**32**
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ وَلَا تُبْطِلُوْٓا اَعْمَالَكُمْ	ऐ ईमान वालो! अल्लाह की इताअत करो और रसलू की इताअत करो और अपन करमो को बकेार न करो।	**33**
اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ثُمَّ مَاتُوْا وَهُمْ كُفَّارٌ فَلَنْ يَّغْفِرَ اللّٰهُ لَهُمْ	नशि्चय ही, जो लोग काफरि ह और (लोगो को) अल्लाह क रासत स रोकत ह, फरि कफुर की हालत म मर जात ह, तो अल्लाह उनह माफ नहीं करगेा।	**34**
فَلَا تَهِنُوْا وَتَدْعُوْٓا اِلَى السَّلْمِ وَاَنْتُمُ الْاَعْلَوْنَ وَاللّٰهُ مَعَكُمْ وَلَنْ يَّتِرَكُمْ اَعْمَالَكُمْ	तो तमु कमजोर न पड़ो और सलुह की पशेकश न करो, कयोंकि तमु ही बलुद हो और अल्लाह तमुहार साथ ह और वह तमुहार करमो को जरा भी कम नहीं करगेा।	**35**
اِنَّمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ وَّلَهْوٌ وَاِنْ تُؤْمِنُوْا وَتَتَّقُوْا يُؤْتِكُمْ اُجُوْرَكُمْ وَلَا يَسْـَٔلْكُمْ اَمْوَالَكُمْ	नशि्चय ही, दनुयिा की जदिगी तो बस खले और तमाशा ह अगर तमु ईमान लाओ और तकवा इख्तयिार करो, तो अल्लाह तमुह तमुहारा सवाब दगेा और वह तमुस तमुहारा माल नहीं माँगेगा।	**36**
اِنْ يَّسْـَٔلْكُمُوْهَا فَيُحْفِكُمْ تَبْخَلُوْا وَيُخْرِجْ اَضْغَانَكُمْ	अगर वह तमुस तमुहारा माल माँग और तमु पर जोर डाल (कि सब द दो), तो तमु कजंसी करोग और वह तमुहारी कटवा को जाहरि कर दगेा।	**37**
هٰٓاَنْتُمْ هٰٓؤُلَآءِ تُدْعَوْنَ لِتُنْفِقُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَمِنْكُمْ مَّنْ يَّبْخَلُ وَمَنْ يَّبْخَلْ فَاِنَّمَا يَبْخَلُ عَنْ نَّفْسِهٖ وَاللّٰهُ الْغَنِيُّ وَاَنْتُمُ الْفُقَرَاءُ وَاِنْ تَتَوَلَّوْا يَسْتَبْدِلْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ ثُمَّ لَا يَكُوْنُوْٓا اَمْثَالَكُمْ	दखेो, तमु वही लोग हो जनिह अल्लाह क रासत म खरच करन क लएि बलुाया जाता ह फरि तमु म स कछु लोग कजंसी करत ह, और जो कोई कजंसी करता ह, वह अपन खलिाफ कजंसी करता ह और अल्लाह बनेयिाज ह और तमु लोग मोहताज हो। और अगर तमु (सही रासत स) महुँ फरे लो, तो वह तमुहारी जगह दसूरी कौम लाएगा, और व तमु जसै (नाफरमान) नहीं होगे।	**38**

छंदों की संख्या	اَلْفَتْح	مدنية
२९	अल-फतह - 48	मदनी

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल-फतह (विजय)

1	निश्चय ही, हमने तुझे (मुहम्मद) एक स्पष्ट जीत दी।	اِنَّا فَتَحْنَا لَكَ فَتْحًا مُّبِيْنًا
2	ताकि अल्लाह तुझे तेरे पिछले और आने वाले गुनाहों की माफी दे, और तुझ पर अपनी नेअमत को पूरा करे, और तुझे सीधा रास्ता दिखाए,	لِّيَغْفِرَ لَكَ اللّٰهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْۢبِكَ وَمَا تَاَخَّرَ وَيُتِمَّ نِعْمَتَه عَلَيْكَ وَيَهْدِيَكَ صِرَاطًا مُّسْتَقِيْمًا
3	और ताकि अल्लाह तुझे एक मज़बूत (पक्की) मदद दे।	وَّيَنْصُرَكَ اللّٰهُ نَصْرًا عَزِيْزًا
4	वही है जिसने मोमिनों के दिलों में सकून उतारा ताकि वे अपने ईमान पर और ईमान बढ़ाएँ और आकाशों और ज़मीन की सेनाएँ अल्लाह की हैं, और अल्लाह सब कुछ जानने वाला, बहुत बुद्धिमान है;	هُوَ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ السَّكِيْنَةَ فِيْ قُلُوْبِ الْمُؤْمِنِيْنَ لِيَزْدَادُوْٓا اِيْمَانًا مَّعَ اِيْمَانِهِمْ وَلِلّٰهِ جُنُوْدُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا
5	ताकि वह मोमिन मर्दों और औरतों को उन जन्नतों में दाखिल कर जिनके नीचे नहरें बहती हों वे वहाँ हमेशा रहेंगे और वह उनकी ख़ामियों को मिटा देगा। और अल्लाह के नज़दीक यह एक बड़ी कामयाबी है,	لِّيُدْخِلَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا وَيُكَفِّرَ عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ وَكَانَ ذٰلِكَ عِنْدَ اللّٰهِ فَوْزًا عَظِيْمًا
6	और वह मुनाफिक़ मर्दों और औरतों को, और मुश्रिक मर्दों और औरतों को अज़ाब दे, जो अल्लाह के बारे में बुरा गुमान करते हैं उनके लिए बुरा अंजाम है, और अल्लाह उन पर गुस्सा है और उसने उन पर लानत की और उनके लिए जहन्नम तैयार की। और वह बहुत बुरा ठिकाना है।	وَّيُعَذِّبَ الْمُنٰفِقِيْنَ وَالْمُنٰفِقٰتِ وَالْمُشْرِكِيْنَ وَالْمُشْرِكٰتِ الظَّاۤنِّيْنَ بِاللّٰهِ ظَنَّ السَّوْءِ عَلَيْهِمْ دَاۤىِٕرَةُ السَّوْءِ وَغَضِبَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ وَلَعَنَهُمْ وَاَعَدَّ لَهُمْ جَهَنَّمَ وَسَاۤءَتْ مَصِيْرًا
7	और आकाशों और ज़मीन की सेनाएँ अल्लाह की हैं और अल्लाह बहुत ताक़तवर, बहुत बुद्धिमान है।	وَلِلّٰهِ جُنُوْدُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَكَانَ اللّٰهُ عَزِيْزًا حَكِيْمًا
8	निश्चय ही, हमने तुझे (मुहम्मद) गवाह, खुशखबरी देने वाला और डराने वाला बनाकर भेजा,	اِنَّآ اَرْسَلْنٰكَ شَاهِدًا وَّمُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا
9	ताकि तुम सब अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाओ, उसकी (दीन की) मदद करो, उसकी बड़ाई करो, और सुबह-शाम उसकी तसबीह करो।	لِّتُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَتُعَزِّرُوْهُ وَتُوَقِّرُوْهُ وَتُسَبِّحُوْهُ بُكْرَةً وَّاَصِيْلًا

10	नश्चिय ही, जो लोग तुझसे (मुहम्मद) बअैत करते हैं, वे असल में अल्लाह से बअैत करते हैं। अल्लाह का हाथ उनके हाथों के ऊपर है। तो जो कोई अपनी बअैत तोड़े, वह अपने ख़िलाफ़ तोड़ता है; और जो कोई अल्लाह से किए अपने वादे को पूरा करे, तो वह उसे बड़ा सवाब देगा।	اِنَّ الَّذِيْنَ يُبَايِعُوْنَكَ اِنَّمَا يُبَايِعُوْنَ اللّٰهَ يَدُ اللّٰهِ فَوْقَ اَيْدِيْهِمْ ۚ فَمَنْ نَّكَثَ فَاِنَّمَا يَنْكُثُ عَلٰى نَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ اَوْفٰى بِمَا عٰهَدَ عَلَيْهُ اللّٰهَ فَسَيُؤْتِيْهِ اَجْرًا عَظِيْمًا
11	जो बद्दू लोग (हुदैबिया में) पीछे रह गए, वे तुझसे कहेंगे, 'हम अपने माल और परिवार में उलझे हुए थे, तो हमारे लिए माफी माँग लो।' वे अपने मुँह से वह कहते हैं जो उनके दिलों में नहीं है। कह दे, 'तो कौन अल्लाह के सामने तुम्हारे लिए कुछ कर सकता है अगर वह तुम्हारे लिए नुक़सान चाहे या तुम्हारे लिए फायदा चाहे? नश्चिय ही, अल्लाह उससे पूरी तरह वाक़िफ़ है जो तुम करते हो।'	سَيَقُوْلُ لَكَ الْمُخَلَّفُوْنَ مِنَ الْاَعْرَابِ شَغَلَتْنَآ اَمْوَالُنَا وَاَهْلُوْنَا فَاسْتَغْفِرْ لَنَا ۚ يَقُوْلُوْنَ بِاَلْسِنَتِهِمْ مَّا لَيْسَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ ۗ قُلْ فَمَنْ يَّمْلِكُ لَكُمْ مِّنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا اِنْ اَرَادَ بِكُمْ ضَرًّا اَوْ اَرَادَ بِكُمْ نَفْعًا ۗ بَلْ كَانَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا
12	बल्कि (शुरू में) तुमने गुमान किया कि रसूल और मोमिन कभी अपने परिवारों के पास वापस नहीं आएँगे, और यह बात तुम्हारे दिलों में अच्छी लगी, और तुमने बुरा गुमान किया, इसलिए तुम एक नष्ट होने वाली कौम बन गए।	بَلْ ظَنَنْتُمْ اَنْ لَّنْ يَّنْقَلِبَ الرَّسُوْلُ وَالْمُؤْمِنُوْنَ اِلٰٓى اَهْلِيْهِمْ اَبَدًا وَّزُيِّنَ ذٰلِكَ فِيْ قُلُوْبِكُمْ وَظَنَنْتُمْ ظَنَّ السَّوْءِ ۖ وَكُنْتُمْ قَوْمًا بُوْرًا
13	और जो कोई अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान नहीं लाए, तो नश्चिय ही, हमने काफ़िरों के लिए जलती हुई आग तैयार की है।	وَمَنْ لَّمْ يُؤْمِنْ بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ فَاِنَّآ اَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ سَعِيْرًا
14	और आकाशों और ज़मीन की बादशाही सरिफ़ अल्लाह की है। वह जिसे चाहे माफ़ करता है और जिसे चाहे अज़ाब देता है। और अल्लाह बहुत माफ़ करने वाला, बहुत रहम करने वाला है।	وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۗ يَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ۗ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا
15	जब तुम माल-ए-ग़नीमत लेने के लिए जाओगे, तो वे बद्दू लोग जो पीछे रह गए थे, कहेंगे, 'हमें तुम्हारे साथ जाने दो।' वे अल्लाह के वादे को बदलना चाहते हैं। कह दे, 'तुम कतई हमारे साथ नहीं चल सकते। अल्लाह ने पहले ही ऐसा तय कर दिया था।' तो वे कहेंगे, 'बल्कि तुम हमसे जलन करते हो।' जबकि वे बहुत कम समझते हैं।	سَيَقُوْلُ الْمُخَلَّفُوْنَ اِذَا انْطَلَقْتُمْ اِلٰى مَغَانِمَ لِتَاْخُذُوْهَا ذَرُوْنَا نَتَّبِعْكُمْ ۚ يُرِيْدُوْنَ اَنْ يُّبَدِّلُوْا كَلٰمَ اللّٰهِ ۗ قُلْ لَّنْ تَتَّبِعُوْنَا كَذٰلِكُمْ قَالَ اللّٰهُ مِنْ قَبْلُ ۚ فَسَيَقُوْلُوْنَ بَلْ تَحْسُدُوْنَنَا ۗ بَلْ كَانُوْا لَا يَفْقَهُوْنَ اِلَّا قَلِيْلًا
16	उन बद्दू लोगों से कह दे जो पीछे रह गए, 'तुम्हें एक बहुत ताक़तवर कौम (से जंग) के लिए बुलाया जाएगा, तुम्हें उनसे लड़ना होगा जब तक कि वे सरेंडर न कर दें। अगर तुम (इस बुलावे की) इताअत करो, तो अल्लाह तुम्हें अच्छा सवाब देगा, लेकिन अगर तुम पहले की तरह मुँह फेर लो, तो वह तुम्हें दर्दनाक अज़ाब देगा।'	قُلْ لِّلْمُخَلَّفِيْنَ مِنَ الْاَعْرَابِ سَتُدْعَوْنَ اِلٰى قَوْمٍ اُولِيْ بَاْسٍ شَدِيْدٍ تُقَاتِلُوْنَهُمْ اَوْ يُسْلِمُوْنَ ۚ فَاِنْ تُطِيْعُوْا يُؤْتِكُمُ اللّٰهُ اَجْرًا حَسَنًا ۚ وَاِنْ تَتَوَلَّوْا كَمَا تَوَلَّيْتُمْ مِّنْ قَبْلُ يُعَذِّبْكُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا

لَيْسَ عَلَى الْاَعْمٰى حَرَجٌ وَّلَا عَلَى الْاَعْرَجِ حَرَجٌ وَّلَا عَلَى الْمَرِيْضِ حَرَجٌ وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ يُدْخِلْهُ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ وَمَنْ يَّتَوَلَّ يُعَذِّبْهُ عَذَابًا اَلِيْمًا	न तो अंधों पर कोई गुनाह है, न लँगड़ों पर, और न बीमारों पर (अगर वे जंग में न जाएँ)। जो कोई अल्लाह और उसके रसूल की इताअत करे, उसे वह उन जन्नतों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें बहती हैं, लेकिन जो कोई मुँह फेरे, उसे वह दरदनाक अज़ाब देगा।	17
لَقَدْ رَضِيَ اللّٰهُ عَنِ الْمُؤْمِنِيْنَ اِذْ يُبَايِعُوْنَكَ تَحْتَ الشَّجَرَةِ فَعَلِمَ مَا فِيْ قُلُوْبِهِمْ فَاَنْزَلَ السَّكِيْنَةَ عَلَيْهِمْ وَاَثَابَهُمْ فَتْحًا قَرِيْبًا	निश्चय ही, अल्लाह उन मोमिनों से राज़ी हुआ जब उनहोंने तुझसे (मुहम्मद) पेड़ के नीचे बैअत की। उसने उनके दिलों में जो था उसे जाना, फिर उसने उन पर सकीना उतारा और उनहें एक क़रीबी जीत से नवाज़ा,	18
وَّمَغَانِمَ كَثِيْرَةً يَّاْخُذُوْنَهَا وَكَانَ اللّٰهُ عَزِيْزًا حَكِيْمًا	और बहुत सारा माल-ए-ग़नीमत जो वे हासिल करेंगे। और अल्लाह बहुत ताक़तवर, बहुत बुद्धिमान है।	19
وَعَدَكُمُ اللّٰهُ مَغَانِمَ كَثِيْرَةً تَاْخُذُوْنَهَا فَعَجَّلَ لَكُمْ هٰذِهٖ وَكَفَّ اَيْدِيَ النَّاسِ عَنْكُمْ وَلِتَكُوْنَ اٰيَةً لِّلْمُؤْمِنِيْنَ وَيَهْدِيَكُمْ صِرَاطًا مُّسْتَقِيْمًا	अल्लाह ने तुमसे बहुत सारे माल-ए-ग़नीमत का वादा किया है जो तुम हासिल कर सकते हो, तो उसने यह (माल-ए-ग़नीमत) तुम्हारे लिए जल्दी कर दिया और उसने इंसानों के हाथों को तुम से (नुक़सान पहुँचाने से) रोका (ताकि तुम उसका शुक्र करो) और ताकि यह मोमिनों के लिए एक निशानी हो और वह तुम्हें सीधे रास्ते की हिदायत दे।	20
وَّاُخْرٰى لَمْ تَقْدِرُوْا عَلَيْهَا قَدْ اَحَاطَ اللّٰهُ بِهَا وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرًا	और (जीत) उन दूसरी जगहों पर जो तुम अनुमान नहीं लगा सकते, लेकिन निश्चय ही, अल्लाह ने उनहें तय किया है और अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है।	21
وَلَوْ قَاتَلَكُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوَلَّوُا الْاَدْبَارَ ثُمَّ لَا يَجِدُوْنَ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا	और अगर वे काफ़िर तुमसे लड़ते, तो ज़रूर पीठ फेरकर भाग जाते (हार जाते) और उनहें न कोई हिफ़ाज़त करने वाला मिलता और न मदद करने वाला।	22
سُنَّةَ اللّٰهِ الَّتِيْ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلُ وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّةِ اللّٰهِ تَبْدِيْلًا	(ऐसा ही) अल्लाह का नियम है, जो पहले से चला आ रहा है, और तुम अल्लाह के नियम में कोई बदलाव नहीं पाओगे।	23
وَهُوَ الَّذِيْ كَفَّ اَيْدِيَهُمْ عَنْكُمْ وَاَيْدِيَكُمْ عَنْهُمْ بِبَطْنِ مَكَّةَ مِنْ بَعْدِ اَنْ اَظْفَرَكُمْ عَلَيْهِمْ وَكَانَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرًا	और वही है जिसने मक्का के बीच में उनके हाथों को तुम से और तुम्हारे हाथों को उनसे (नुक़सान पहुँचाने से) रोका, इसके बाद कि अल्लाह ने तुमहें उन पर जीत दी। और अल्लाह वह सब देख रहा है जो तुम करते हो।	24
هُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْكُمْ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَالْهَدْيَ مَعْكُوْفًا اَنْ يَّبْلُغَ مَحِلَّهٗ وَلَوْلَا رِجَالٌ مُّؤْمِنُوْنَ وَنِسَاۤءٌ مُّؤْمِنٰتٌ لَّمْ تَعْلَمُوْهُمْ اَنْ تَطَـُٔوْهُمْ فَتُصِيْبَكُمْ مِّنْهُمْ مَّعَرَّةٌۢ بِغَيْرِ عِلْمٍ لِيُدْخِلَ اللّٰهُ فِيْ رَحْمَتِهٖ مَنْ يَّشَاۤءُ لَوْ تَزَيَّلُوْا لَعَذَّبْنَا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا	वही लोग हैं जिनहोंने कुफ़्र किया और तुमहें मस्जिद-ए-हराम में (दाख़िल होने से) रोका और क़ुरबानी के जानवरों को उनके (क़ुरबानी के) ठिकाने तक पहुँचने से रोका। और अगर कुछ ईमान वाले मर्द और औरतें न होतीं जिनहें तुम नहीं जानते थे, तो तुम उनहें (ग़लती से) क़त्ल कर देते और तुमहें बिना जाने नुक़सान उठाना पड़ता। क्योंकि अल्लाह जिसे चाहता है, उसे अपनी रहमत में दाख़िल करता है। अगर वे अलग हो जाते, तो हम उनमें से काफ़िरों को दरदनाक अज़ाब देते।	25

اِذْ جَعَلَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِيْ قُلُوْبِهِمُ الْحَمِيَّةَ حَمِيَّةَ الْجَاهِلِيَّةِ فَاَنْزَلَ اللّٰهُ سَكِيْنَتَه عَلٰى رَسُوْلِه وَعَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَاَلْزَمَهُمْ كَلِمَةَ التَّقْوٰى وَكَانُوْٓا اَحَقَّ بِهَا وَاَهْلَهَا وَكَانَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمًا	जब काफ़िरों ने अपने दिलों में जहालत की ग़ैरत को जगह दी, तो अल्लाह ने अपने रसूल और मोमिनों पर सकून उतारा; और (अल्लाह ने) उन पर तक़वा की बात को लाज़िम किया और वे इसके ज़्यादा हक़दार और योग्य थे। और अल्लाह हर चीज़ को जानने वाला है।	26
لَقَدْ صَدَقَ اللّٰهُ رَسُوْلَهُ الرُّءْيَا بِالْحَقِّ لَتَدْخُلُنَّ الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ اِنْ شَاۤءَ اللّٰهُ اٰمِنِيْنَ مُحَلِّقِيْنَ رُءُوْسَكُمْ وَمُقَصِّرِيْنَ لَا تَخَافُوْنَ فَعَلِمَ مَا لَمْ تَعْلَمُوْا فَجَعَلَ مِنْ دُوْنِ ذٰلِكَ فَتْحًا قَرِيْبًا	निश्चय ही, अल्लाह ने अपने रसूल के सपने को सच कर दिखाया कि तुम, अगर अल्लाह ने चाहा, तो मस्ज़िद-ए-हराम में सलामती के साथ दाख़िल होगे, अपने सिर मुंडवाते हुए और (बाल) छोटे करवाते हुए, और तुम्हें कोई डर नहीं होगा। तो अल्लाह ने वह जाना जो तुम नहीं जानते थे और इसके अलावा उसने एक क़रीबी जीत दी।	27
هُوَ الَّذِيْٓ اَرْسَلَ رَسُوْلَه بِالْهُدٰى وَدِيْنِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَه عَلَى الدِّيْنِ كُلِّه وَكَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا	वही है जिसने अपने रसूल को हिदायत और सच्चे दीन के साथ भेजा ताकि उसे सारे दीनों पर ग़ालिब कर दे और अल्लाह गवाह के तौर पर काफ़ी है।	28
مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ وَالَّذِيْنَ مَعَه اَشِدَّاۤءُ عَلَى الْكُفَّارِ رُحَمَاۤءُ بَيْنَهُمْ تَرٰىهُمْ رُكَّعًا سُجَّدًا يَّبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانًا سِيْمَاهُمْ فِيْ وُجُوْهِهِمْ مِّنْ اَثَرِ السُّجُوْدِ ذٰلِكَ مَثَلُهُمْ فِي التَّوْرٰىةِ وَمَثَلُهُمْ فِي الْاِنْجِيْلِ كَزَرْعٍ اَخْرَجَ شَطْـَٔه فَاٰزَرَه فَاسْتَغْلَظَ فَاسْتَوٰى عَلٰى سُوْقِه يُعْجِبُ الزُّرَّاعَ لِيَغِيْظَ بِهِمُ الْكُفَّارَ وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ مِنْهُمْ مَّغْفِرَةً وَّاَجْرًا عَظِيْمًا	मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं और जो लोग उनके साथ हैं, वे काफ़िरों के ख़िलाफ़ सख़्त हैं, लेकिन आपस में महेरबान हैं। तुम उन्हें रुकू और सजदा करते देखते हो, अल्लाह की कृपा और उसकी रज़ा की तलाश में। उनके चेहरों पर सजदों के निशान दिखते हैं। यही उनकी सिफ़त तौरात में (बयान की गई है) और उनकी सिफ़त इंजील में (बयान की गई है), जैसे एक बीज जो अपनी कली निकालता है, फिर उसे मज़बूत करता है, फिर वह बड़ा होता है और अपने तने पर सीधा खड़ा होता है; वह उन बोने वालों को खुश करता है क्योंकि अल्लाह (मोमिनों की ताक़त से) काफ़िरों को गुस्सा दिलाना चाहता है। अल्लाह ने उनमें से जो ईमान लाए और अच्छे काम किए, उनके लिए माफी और बड़ा सवाब वादा किया है।	29

छंदों की संख्या	اَلْحُجُرَات	مدنية
१८	अल-Hujurat - 49	मदनी

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल-Hujurat (कमरे)

1	ऐ ईमान वालो! अल्लाह और उसके रसूल के आगे न बढ़ो और अल्लाह से डरो। निश्चय ही, अल्लाह सब कुछ सुनने वाला, सब कुछ जानने वाला है।	يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُقَدِّمُوْا بَيْنَ يَدَيِ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَاتَّقُوا اللّٰهَ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ
2	ऐ ईमान वालो! अपनी आवाज़ को नबी की आवाज़ से ऊँचा न करो, और न ही उसके साथ वैसी ज़ोर की आवाज़ में बात करो जैसी तुम आपस में एक-दूसरे से करते हो, नहीं तो तुम्हारे सारे करम बेकार हो जाएँगे और तुम्हें पता भी नहीं चलेगा।	يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَرْفَعُوْٓا اَصْوَاتَكُمْ فَوْقَ صَوْتِ النَّبِيِّ وَلَا تَجْهَرُوْا لَهٗ بِالْقَوْلِ كَجَهْرِ بَعْضِكُمْ لِبَعْضٍ اَنْ تَحْبَطَ اَعْمَالُكُمْ وَاَنْتُمْ لَا تَشْعُرُوْنَ
3	निश्चय ही, जो लोग रसूलुल्लाह के सामने अपनी आवाज़ को धीमा करते हैं, वे वही लोग हैं जिनके दिलों को अल्लाह ने तक़वा के लिए आज़माया है। उनके लिए माफ़ी और बड़ा सवाब है।	اِنَّ الَّذِيْنَ يَغُضُّوْنَ اَصْوَاتَهُمْ عِنْدَ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ امْتَحَنَ اللّٰهُ قُلُوْبَهُمْ لِلتَّقْوٰى لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ عَظِيْمٌ
4	निश्चय ही, जो लोग तुझे (मुहम्मद) कमरों के बाहर से पुकारते हैं, उनमें से ज़्यादातर समझ नहीं रखते।	اِنَّ الَّذِيْنَ يُنَادُوْنَكَ مِنْ وَّرَاۤءِ الْحُجُرٰتِ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ
5	और अगर वे सब्र करते जब तक तू उनके पास बाहर न आ जाए, तो यह उनके लिए बेहतर होता। और अल्लाह बहुत माफ़ करने वाला, बहुत रहम करने वाला है।	وَلَوْ اَنَّهُمْ صَبَرُوْا حَتّٰى تَخْرُجَ اِلَيْهِمْ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ
6	ऐ ईमान वालो! अगर कोई फ़ासिक़ तुम्हारे पास कोई ख़बर लाए, तो उसकी तहक़ीक़ कर लो, ताकि तुम नादानी (लापरवाही) में किसी क़ौम को नुक़सान न पहुँचाओ, फिर तुम्हें अपने किए पर पछतावा हो।	يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنْ جَاۤءَكُمْ فَاسِقٌۢ بِنَبَاٍ فَتَبَيَّنُوْٓا اَنْ تُصِيْبُوْا قَوْمًۢا بِجَهَالَةٍ فَتُصْبِحُوْا عَلٰى مَا فَعَلْتُمْ نٰدِمِيْنَ
7	और जान लो कि तुम्हारे बीच में रसूलुल्लाह मौजूद हैं। अगर वह कई मामलों में तुम्हारी बात मान लेते, तो तुम मुश्क़िल में पड़ जाते। लेकिन अल्लाह ने तुम्हें ईमान से मोहब्बत दी और उसे तुम्हारे दिलों में ख़ूबसूरत बनाया, और तुम्हें कुफ़्र, फ़िस्क़ और नाफ़रमानी से नफ़रत दी। यही लोग सही रास्ते पर चलने वाले हैं।	وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ فِيْكُمْ رَسُوْلَ اللّٰهِ لَوْ يُطِيْعُكُمْ فِيْ كَثِيْرٍ مِّنَ الْاَمْرِ لَعَنِتُّمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ حَبَّبَ اِلَيْكُمُ الْاِيْمَانَ وَزَيَّنَهٗ فِيْ قُلُوْبِكُمْ وَكَرَّهَ اِلَيْكُمُ الْكُفْرَ وَالْفُسُوْقَ وَالْعِصْيَانَ اُولٰٓئِكَ هُمُ الرّٰشِدُوْنَ
8	यह अल्लाह की कृपा और नेअमत है। और अल्लाह सब कुछ जानने वाला, बहुत बुद्धिमान है।	فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَنِعْمَةً وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ

وَاِنْ طَآىِٕفَتٰنِ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ اقْتَتَلُوْا فَاَصْلِحُوْا بَيْنَهُمَا فَاِنْ بَغَتْ اِحْدٰىهُمَا عَلَى الْاُخْرٰى فَقَاتِلُوا الَّتِيْ تَبْغِيْ حَتّٰى تَفِيْٓءَ اِلٰٓى اَمْرِ اللّٰهِ فَاِنْ فَاۤءَتْ فَاَصْلِحُوْا بَيْنَهُمَا بِالْعَدْلِ وَاَقْسِطُوْا اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِيْنَ	और अगर मोमनिों की दो जमात आपस म लड़ पड़, तो उनक बीच सुलह कराओ। अगर उनम से एक (जमात) दूसरी पर जुल्म कर, तो उस ज़ालमि (जमात) स लड़ो, यहा तँक कि वह अल्लाह क हुक्म की ओर लौट आए। अगर वह लौट आए, तो उनक बीच इंसाफ़ क साथ सुलह कराओ, और इंसाफ़ स काम लो। नशि्चय ही, अल्लाह इंसाफ़ करन वालो स मोहब्बत करता ह।	9
اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ اِخْوَةٌ فَاَصْلِحُوْا بَيْنَ اَخَوَيْكُمْ وَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ	नशि्चय ही, मोमनि आपस म भाई ह, इसलिए अपन दो भाइयो (क बीच) सुलह कराओ और अल्लाह स डरो ताकि तमु पर रहम कयि जाए।	10
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا يَسْخَرْ قَوْمٌ مِّنْ قَوْمٍ عَسٰٓى اَنْ يَّكُوْنُوْا خَيْرًا مِّنْهُمْ وَلَا نِسَاۤءٌ مِّنْ نِّسَاۤءٍ عَسٰٓى اَنْ يَّكُنَّ خَيْرًا مِّنْهُنَّ وَلَا تَلْمِزُوْٓا اَنْفُسَكُمْ وَلَا تَنَابَزُوْا بِالْاَلْقَابِ بِئْسَ الِاسْمُ الْفُسُوْقُ بَعْدَ الْاِيْمَانِ وَمَنْ لَّمْ يَتُبْ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ	ऐ ईमान वालो! कोई कौम दूसरी कौम का मज़ाक न उड़ाए, हो सकता ह कि व (जनिका मज़ाक उड़ाया गया) उनस (मज़ाक उड़ान वालो स) बहेतर हो, और न ही औरत दूसरी औरतो का मज़ाक उड़ाए, हो सकता ह कि व (जनिका मज़ाक उड़ाया गया) उनस (मज़ाक उड़ान वालयिो स) बहेतर हो। और न तमु एक-दूसर को तान मारो और न एक-दूसर को बुर नामो स पुकारो। ईमान लान क बाद फ़ासकि (बुरा) नाम बहतु ख़राब ह और जो तौबा न कर, वही लोग ज़ालमि ह।	11
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اجْتَنِبُوْا كَثِيْرًا مِّنَ الظَّنِّ اِنَّ بَعْضَ الظَّنِّ اِثْمٌ وَّلَا تَجَسَّسُوْا وَلَا يَغْتَبْ بَّعْضُكُمْ بَعْضًا اَيُحِبُّ اَحَدُكُمْ اَنْ يَّاْكُلَ لَحْمَ اَخِيْهِ مَيْتًا فَكَرِهْتُمُوْهُ وَاتَّقُوا اللّٰهَ اِنَّ اللّٰهَ تَوَّابٌ رَّحِيْمٌ	ऐ ईमान वालो! बहतु ज़यादा गमुान करन स बचो, कयोंकि कछु गमुान गनुाह ह, और न तमु दूसरो की ख़ामयिाँ तलाश करो और न तमु म स कोई एक-दूसर की पीठ पीछ बुराई कर। कया तमु म स कोई अपन मर हुए भाई का गोश्त खाना पसंद करगे? तमुह तो इसस नफ़रत होगी। और अल्लाह स डरो, नशि्चय ही, अल्लाह बहतु तौबा क़बूल करन वाला, बहतु रहम करन वाला ह।	12
يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّا خَلَقْنٰكُمْ مِّنْ ذَكَرٍ وَّاُنْثٰى وَجَعَلْنٰكُمْ شُعُوْبًا وَّقَبَاۤىِٕلَ لِتَعَارَفُوْا اِنَّ اَكْرَمَكُمْ عِنْدَ اللّٰهِ اَتْقٰىكُمْ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ خَبِيْرٌ	ऐ लोगो! नशि्चय ही, हमन तमुह एक मरद और एक औरत स बनाया, फरि तमुह कौमो और क़बीलो म बाँटा ताकि तमु एक-दूसर को पहचानो। नशि्चय ही, अल्लाह क यहा सबस ज़यादा इज़्ज़त वाला वह ह जो सबस ज़यादा परहज़गार ह। नशि्चय ही, अल्लाह सब कछु जानन वाला, हर चीज़ स वाकफ़ि ह।	13
قَالَتِ الْاَعْرَابُ اٰمَنَّا قُلْ لَّمْ تُؤْمِنُوْا وَلٰكِنْ قُوْلُوْٓا اَسْلَمْنَا وَلَمَّا يَدْخُلِ الْاِيْمَانُ فِيْ قُلُوْبِكُمْ وَاِنْ تُطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ لَا يَلِتْكُمْ مِّنْ اَعْمَالِكُمْ شَيْـًٔا اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ	अरब क बदद (गवँार) लोग कहत ह, 'हम ईमान लाए।' (उनस) कह द, 'तमु ईमान नहीं लाए, बलक़ि कहो कि 'हम इसलाम क़बूल कर चुक ह,' कयोंकि ईमान अभी तमुहार दलिो म दाख़लि नहीं हआु। और अगर तमु अल्लाह और उसक रसूल की इताअत करो, तो वह तमुहार करमो का सवाब ज़रा भी कम नहीं करगे। नशि्चय ही, अल्लाह बहतु माफ़ करन वाला, बहतु रहम करन वाला ह।	14
اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ثُمَّ لَمْ يَرْتَابُوْا وَجٰهَدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۭ اُولٰٓئِكَ هُمُ الصّٰدِقُوْنَ	नशि्चय ही, असली मोमनि व ह जो अल्लाह और उसक रसूल पर ईमान लाए, फरि उनहोन कोई शक नहीं कयि और उनहोन अपन माल और जान स अल्लाह क रास्त म जहिाद कयि। यही लोग सचचे ह।	15

قُلْ اَتُعَلِّمُوْنَ اللّٰهَ بِدِيْنِكُمْ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ	(उनसे) कह द,े 'क्या तमु अल्लाह को अपनी दीनदारी (यक़ीन) क बारे मे बताओग,े जबकि अल्लाह जानता है कि आकाशो मे क्या है और ज़मीन मे क्या है, और अल्लाह हर चीज़ को जानने वाला है?'	**16**
يَمُنُّوْنَ عَلَيْكَ اَنْ اَسْلَمُوْا قُلْ لَّا تَمُنُّوْا عَلَيَّ اِسْلَامَكُمْ بَلِ اللّٰهُ يَمُنُّ عَلَيْكُمْ اَنْ هَدٰىكُمْ لِلْاِيْمَانِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ	वे तुझ पर अपने इस्लाम लाने का एहसान जताते है कह द,े 'अपने इस्लाम लाने का मुझ पर एहसान न जताओ, बल्कि अल्लाह ने तमु पर एहसान किया कि उसने तमुहे ईमान की हिदायत दी, अगर तमु सच्चे हो।'	**17**
اِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ غَيْبَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌ بِمَا تَعْمَلُوْنَ	निश्चय ही, अल्लाह आकाशों और ज़मीन की ग़ैब (छिपी) चीज़ों को जानता है और अल्लाह वह सब देख रहा है जो तमु करते हो।	**18**

छंदों की संख्या	ق	مكية
४५	कफ़ - 50	मक्की

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

कफ़ (काफ)

1	काफ़। उस सम्मानित क़ुरआन की सौगंध,	ق وَالْقُرْاٰنِ الْمَجِيْدِ
2	(वे इस स्वीकार नहीं करते) बल्कि वे हैरान हैं कि उनके अपने बीच से एक नसीहत देने वाला (रसूल) उनके पास आया, तो काफ़िरों ने कहा, 'यह तो बहुत ही अजीब बात है,	بَلْ عَجِبُوْٓا اَنْ جَاۤءَهُمْ مُّنْذِرٌ مِّنْهُمْ فَقَالَ الْكٰفِرُوْنَ هٰذَا شَيْءٌ عَجِيْبٌ
3	क्या जब हम मर जाएँगे और मिट्टी हो जाएँगे (फिर ज़िंदा होंगे)? यह तो एक असंभव वापसी है,	ءَاِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا ذٰلِكَ رَجْعٌۢ بَعِيْدٌ
4	निश्चय ही, हम जानते हैं कि ज़मीन ने उनके (शरीरों) में से क्या खाया, क्योंकि हमारे पास एक अच्छी तरह सुरक्षित किताब (लौह-ए-महफ़ूज़) है,	قَدْ عَلِمْنَا مَا تَنْقُصُ الْاَرْضُ مِنْهُمْ وَعِنْدَنَا كِتٰبٌ حَفِيْظٌ
5	बल्कि उन्होंने सच्चाई को झुठलाया जब वह उनके पास आई, तो वे एक उलझन भरी हालत में हैं,	بَلْ كَذَّبُوْا بِالْحَقِّ لَمَّا جَاۤءَهُمْ فَهُمْ فِيْٓ اَمْرٍ مَّرِيْجٍ
6	तो क्या उन्होंने अपने ऊपर के आकाश को नहीं देखा, कि हमने उसे कैसे बनाया और सजाया, और उसमें कोई दरार नहीं है?,	اَفَلَمْ يَنْظُرُوْٓا اِلَى السَّمَاۤءِ فَوْقَهُمْ كَيْفَ بَنَيْنٰهَا وَزَيَّنّٰهَا وَمَا لَهَا مِنْ فُرُوْجٍ
7	और ज़मीन को हमने बिछाया और उस पर मज़बूत पहाड़ खड़े किए और उसमें हर तरह की ख़ूबसूरत वनस्पति उगाई,	وَالْاَرْضَ مَدَدْنٰهَا وَاَلْقَيْنَا فِيْهَا رَوَاسِيَ وَاَنْۢبَتْنَا فِيْهَا مِنْ كُلِّ زَوْجٍۢ بَهِيْجٍ
8	(यह सब कुछ) उन लोगों के लिए नसीहत और अंतर्दृष्टि है जो (अल्लाह की ओर) रुजू करते हैं,	تَبْصِرَةً وَّذِكْرٰى لِكُلِّ عَبْدٍ مُّنِيْبٍ
9	और हमने आकाश से बरकत वाला पानी उतारा, फिर उसके द्वारा बाग़ और अनाज की फसलें उगाईं,	وَنَزَّلْنَا مِنَ السَّمَاۤءِ مَاۤءً مُّبٰرَكًا فَاَنْۢبَتْنَا بِهٖ جَنّٰتٍ وَّحَبَّ الْحَصِيْدِ
10	और ऊँची-ऊँची खजूरें जिनमें गुथे हुए फल हैं,	وَالنَّخْلَ بٰسِقٰتٍ لَّهَا طَلْعٌ نَّضِيْدٌ
11	(यह सब) हमारे बन्दों के लिए रिज़्क़ के तौर पर, और हमने उस (पानी) से एक मुर्दा (बंजर) ज़मीन को ज़िंदा किया। ऐसा ही (क़ब्रों से) निकलना होगा,	رِّزْقًا لِّلْعِبَادِ وَاَحْيَيْنَا بِهٖ بَلْدَةً مَّيْتًا كَذٰلِكَ الْخُرُوْجُ
12	उनसे पहले नूह की क़ौम, रस्स के लोग और समूद ने (रसूलों को) झुठलाया,	كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ وَّاَصْحٰبُ الرَّسِّ وَثَمُوْدُ

13	और आद, फ़िरऔन और लूत की कौम न`भी,	وَعَادٌ وَّفِرْعَوْنُ وَاِخْوَانُ لُوْطٍ
14	और ऐका क`लोग और तबुब़ा की कौम न`भी। इन सबन`रसूलों` को झठ्लाया, तो मरी धमकी सच हो गई (उन पर),	وَّاَصْحٰبُ الْاَيْكَةِ وَقَوْمُ تُبَّعٍ كُلٌّ كَذَّبَ الرُّسُلَ فَحَقَّ وَعِيْدِ
15	तो क्या हम पहली सृष़्टि स`थक गए? (बलिक़ुल नही) बलक़ि व`नई सृष़्टि कि`बार`मे`शक म`है,	اَفَعَيِيْنَا بِالْخَلْقِ الْاَوَّلِ بَلْ هُمْ فِيْ لَبْسٍ مِّنْ خَلْقٍ جَدِيْدٍ
16	और नशि़्चय ही, हमन`इंसान को बनाया और हम जानत`हैकि उसका दलि क्या फ़ुसफ़ुसाता ह, और हम उसकी रग-ए-जान स` भी ज़्यादा क़रीब ह,	وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ وَنَعْلَمُ مَا تُوَسْوِسُ بِهٖ نَفْسُه وَنَحْنُ اَقْرَبُ اِلَيْهِ مِنْ حَبْلِ الْوَرِيْدِ
17	(याद कर) जब दो फ़रिश़्त`(उसक`करमों को) लखित`ह, एक दाईं ओर बठैता ह और दूसरा बाईं ओर,	اِذْ يَتَلَقَّى الْمُتَلَقِّيٰنِ عَنِ الْيَمِيْنِ وَعَنِ الشِّمَالِ قَعِيْدٌ
18	वह कोई बात नहीं बोलता जसिक`पास एक नगिरानी करन` वाला फ़रिश़्ता तयैार न हो (लखिन`के`लए),	مَا يَلْفِظُ مِنْ قَوْلٍ اِلَّا لَدَيْهِ رَقِيْبٌ عَتِيْدٌ
19	और मौत की सख़्ती सचमचु आएगी। यही वह चीज़ ह जसिस`तू बचना चाहता था,	وَجَاءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ذٰلِكَ مَا كُنْتَ مِنْهُ تَحِيْدُ
20	और सूर फूँका जाएगा। यही वह दनि ह जसिकी धमकी दी गई थी,	وَنُفِخَ فِى الصُّوْرِ ذٰلِكَ يَوْمُ الْوَعِيْدِ
21	हर शख़्स अपन`साथ एक (फ़रिश़्ता) हाकँन`वाल`और एक (फ़रिश़्ता) गवाह क`साथ आएगा,	وَجَاءَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّعَهَا سَائِقٌ وَّشَهِيْدٌ
22	नशि़्चय ही, तू इस (घटना) स`ग़ाफ़लि था, तो हमन`तेर`सामन` स`परदा हटा दयिा, और आज तरी नज़र बहतु तज़े ह,	لَقَدْ كُنْتَ فِيْ غَفْلَةٍ مِّنْ هٰذَا فَكَشَفْنَا عَنْكَ غِطَاءَكَ فَبَصَرُكَ الْيَوْمَ حَدِيْدٌ
23	और उसका साथी (फ़रिश़्ता) कहगेा, 'यह (करमों का लखेा) मर` पास तयैार ह,	وَقَالَ قَرِيْنُه هٰذَا مَا لَدَيَّ عَتِيْدٌ
24	(अल्लाह फ़रमाएगा), 'तमु दोनों हर ज़दि्दी काफ़रि को जहन्नम की आग म`डाल दो,'	اَلْقِيَا فِيْ جَهَنَّمَ كُلَّ كَفَّارٍ عَنِيْدٍ
25	जो बहतु अचछाई करन`स`रुकता था, हद स`आग`बढ़ता था और शक म`पड़ता था,	مَنَّاعٍ لِّلْخَيْرِ مُعْتَدٍ مُّرِيْبِ
26	जसिन`अल्लाह क`साथ दूसरा माबद्ध बनाया, तो उस`सख़्त अज़ाब म`डाल दो,'	الَّذِيْ جَعَلَ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ فَاَلْقِيٰهُ فِى الْعَذَابِ الشَّدِيْدِ
27	उसका साथी (शतैान) कहगेा, 'ऐ हमार`रब! मनै`उस`गमुराह नहीं कयिा, बलक़ि वह खद्ध ही साफ़ गमुराही म`था,'	قَالَ قَرِيْنُه رَبَّنَا مَآ اَطْغَيْتُه وَلٰكِنْ كَانَ فِيْ ضَلٰلٍ بَعِيْدٍ

28	(अल्लाह) फ़रमाएगा, 'मेरे सामने झगड़ा न करो, और निश्चय ही, मैंने तुम्हें पहले ही धमकी दी थी,'	قَالَ لَا تَخْتَصِمُوْا لَدَيَّ وَقَدْ قَدَّمْتُ اِلَيْكُمْ بِالْوَعِيْدِ
29	मेरे यहाँ बात नहीं बदली जाती, और मैं अपने बन्दों पर ज़ुल्म नहीं करता,	مَا يُبَدَّلُ الْقَوْلُ لَدَيَّ وَمَآ اَنَا بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ
30	(याद कर) उस दिन जब हम जहन्नम से पूछेंगे, 'क्या तू भर गया?' वह कहेगा, 'क्या और कुछ बाकी है?',	يَوْمَ نَقُوْلُ لِجَهَنَّمَ هَلِ امْتَلَاْتِ وَتَقُوْلُ هَلْ مِنْ مَّزِيْدٍ
31	और जन्नत को परहेज़गारों के क़रीब लाया जाएगा, न कि दूर,	وَاُزْلِفَتِ الْجَنَّةُ لِلْمُتَّقِيْنَ غَيْرَ بَعِيْدٍ
32	(कहा जाएगा), 'यह वह है जो तुमसे वादा किया गया था, हर उस शख़्स के लिए जो (अल्लाह की ओर) रुजू करने वाला, (उसके हुक़्म का) पालन करने वाला था,'	هٰذَا مَا تُوْعَدُوْنَ لِكُلِّ اَوَّابٍ حَفِيْظٍ
33	जो अल्लाह रहमान से डरता था, हालाँकि वह उसे देख नहीं सकता था, और वह तौबा करने वाला दिल लेकर आया,	مَنْ خَشِيَ الرَّحْمٰنَ بِالْغَيْبِ وَجَاءَ بِقَلْبٍ مُّنِيْبٍ
34	(उनसे कहा जाएगा), 'इसमें सलामती के साथ दाख़िल हो जाओ। यही हमेशा रहने वाला दिन है,'	ادْخُلُوْهَا بِسَلٰمٍ ذٰلِكَ يَوْمُ الْخُلُوْدِ
35	उनके लिए वहाँ जो कुछ वे चाहेंगे, वह होगा, और हमारे पास और भी (नेअमतें) हैं,	لَهُمْ مَّا يَشَاءُوْنَ فِيْهَا وَلَدَيْنَا مَزِيْدٌ
36	और हमने उनसे पहले कितनी क़ौमों को नष्ट किया, जो उनसे (इन बाद वालों से) ज़्यादा ताकतवर थीं। उन्होंने कई शहरों में घूम-फिरकर देखा। क्या कोई बचने की जगह थी (उनके लिए)?,	وَكَمْ اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْنٍ هُمْ اَشَدُّ مِنْهُمْ بَطْشًا فَنَقَّبُوْا فِي الْبِلَادِ هَلْ مِنْ مَّحِيْصٍ
37	निश्चय ही, इसमें उस शख़्स के लिए नसीहत है जिसके पास दिल है या जो (सच को) सुनता है और वह गवाह है,	اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَذِكْرٰى لِمَنْ كَانَ لَه قَلْبٌ اَوْ اَلْقَى السَّمْعَ وَهُوَ شَهِيْدٌ
38	और निश्चय ही, हमने आकाश और ज़मीन और जो कुछ उनके बीच है, उसे छह दिनों में बनाया, और हमें ज़रा भी थकान नहीं हुई,	وَلَقَدْ خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ وَّمَا مَسَّنَا مِنْ لُّغُوْبٍ
39	तो (मुहम्मद) सब्र कर उनके कहने पर, और अपने रब की तारीफ़ के साथ तसबीह कर सूरज निकलने से पहले और डूबने से पहले,	فَاصْبِرْ عَلٰى مَا يَقُوْلُوْنَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوْعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ الْغُرُوْبِ
40	और रात में और हर नमाज़ के बाद उसकी तसबीह कर,	وَمِنَ الَّيْلِ فَسَبِّحْهُ وَاَدْبَارَ السُّجُوْدِ
41	और सुन (उस दिन की पुकार को) जब पुकारने वाला (फ़रिश्ता) क़रीब से पुकारेगा,	وَاسْتَمِعْ يَوْمَ يُنَادِ الْمُنَادِ مِنْ مَّكَانٍ قَرِيْبٍ
42	(यानी) उस दिन जब वे सचमुच में एक ज़ोरदार आवाज़ सुनेंगे। यही वह दिन है जब (क़ब्रों से) निकलना होगा,	يَوْمَ يَسْمَعُوْنَ الصَّيْحَةَ بِالْحَقِّ ذٰلِكَ يَوْمُ الْخُرُوْجِ

43	नश्चिय ही, हम ही ज़िंदगी देते हैं और हम ही मारते हैं, और हमारी ओर ही (सबकी) वापसी है,	اِنَّا نَحْنُ نُحْيٖ وَنُمِيْتُ وَاِلَيْنَا الْمَصِيْرُ
44	(यानी) उस दिन जब ज़मीन फट जाएगी, वे जल्दी-जल्दी निकलेंगे। यह हमारे लिए एक आसान जमा करना है,	يَوْمَ تَشَقَّقُ الْاَرْضُ عَنْهُمْ سِرَاعًا ذٰلِكَ حَشْرٌ عَلَيْنَا يَسِيْرٌ
45	हम बेहतर जानते हैं कि वे क्या कहते हैं, और तू (मुहम्मद) उन पर ज़बरदस्ती करने वाला नहीं है तो क़ुरआन के ज़रिए उस शख़्स को नसीहत दे जो मेरी धमकी से डरता है,	نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَا يَقُوْلُوْنَ وَمَآ اَنْتَ عَلَيْهِمْ بِجَبَّارٍ فَذَكِّرْ بِالْقُرْاٰنِ مَنْ يَّخَافُ وَعِيْدِ

छदों की संख़्या	اَلذّٰرِيَات	مكية
६०	अध-धारयिात - 51	मक्की

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अध-धारयिात (ततिर-बतिर हवाएँ)

1	उन हवाओं की सौगंध जो धूल उड़ाती ह,	وَالذّٰرِيٰتِ ذَرْوًا
2	और उन बादलों की जो (बारशि) लिए हुए ह,	فَالْحٰمِلٰتِ وِقْرًا
3	और उन (जहाजों) की जो आसानी स चलत ह,	فَالْجٰرِيٰتِ يُسْرًا
4	और उन (फ़रशि़तों) की जो काम बाँटत ह,	فَالْمُقَسِّمٰتِ اَمْرًا
5	नशि़चय ही, जो तमुस वादा कयिा गया ह, वह सच़्चा ह,	اِنَّمَا تُوْعَدُوْنَ لَصَادِقٌ
6	और नशि़चय ही, (पनुरज़ननन का) दनि ज़रूर आएगा,	وَّاِنَّ الدِّيْنَ لَوَاقِعٌ
7	उस आकाश की सौगंध जसिम रास्त ह,	وَالسَّمَاءِ ذَاتِ الْحُبُكِ
8	नशि़चय ही, तमु लोग अलग-अलग मतों म हो,	اِنَّكُمْ لَفِيْ قَوْلٍ مُّخْتَلِفٍ
9	उस (क़ुरआन और रसूल) स वही मुँह फरेता ह जसि फरे दयिा गया ह,	يُّؤْفَكُ عَنْهُ مَنْ اُفِكَ
10	व लोग लानत क हकदार ह जो बहुत झठू बोलत ह,	قُتِلَ الْخَرّٰصُوْنَ
11	(यानी) व लोग जो नादानी और लापरवाही म डूब हुए ह,	الَّذِيْنَ هُمْ فِيْ غَمْرَةٍ سَاهُوْنَ
12	व पूछत ह, 'वह (पनुरज़ननन का) दनि कब आएगा?',	يَسْـَٔلُوْنَ اَيَّانَ يَوْمُ الدِّيْنِ
13	(वह पनुरज़ननन का दनि) वह दनि ह जब उनह आग म अज़ाब दयिा जाएगा,	يَوْمَ هُمْ عَلَى النَّارِ يُفْتَنُوْنَ
14	(उनस कहा जाएगा), 'इस अपन अज़ाब को चखो। यही वह अज़ाब ह जसिे तमु जलद़ी माँगत थे,'	ذُوْقُوْا فِتْنَتَكُمْ هٰذَا الَّذِيْ كُنْتُمْ بِهٖ تَسْتَعْجِلُوْنَ
15	नशि़चय ही, परहज़ेगार लोग बागों (जननत) और चशमों म होंग,	اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِيْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ
16	व वह सब लगे जो उनक रब न उनह दयिा। नशि़चय ही, व पहल (दनुयिा म) अचछ काम करन वाल थे,	اٰخِذِيْنَ مَآ اٰتٰىهُمْ رَبُّهُمْ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَبْلَ ذٰلِكَ مُحْسِنِيْنَ

17	व`रात म`बहत्त कम सोत`थ,	كَانُوْا قَلِيْلًا مِّنَ الَّيْلِ مَا يَهْجَعُوْنَ
18	और रात क`आख़िरी हिस्स`मे`वे`(अल्लाह स) माफी माँगत`थ,	وَبِالْاَسْحَارِ هُمْ يَسْتَغْفِرُوْنَ
19	और उनक`माल म`माँगन`वाल`और न माँगन`वाल`ग़रीबों का हक़ था,	وَفِيْٓ اَمْوَالِهِمْ حَقٌّ لِّلسَّاۤىِٕلِ وَالْمَحْرُوْمِ
20	और ज़मीन म`उन लोगों क`लिए (अल्लाह की) निशानियाँ ह`जो यक़ीन करत`ह,	وَفِى الْاَرْضِ اٰيٰتٌ لِّلْمُوْقِنِيْنَ
21	और तमुहार`अपन`आप म`भी। तो क्या तमु गौर नहीं करत?,	وَفِيْٓ اَنْفُسِكُمْ اَفَلَا تُبْصِرُوْنَ
22	और आकाश म`तमुहारा रज़िक़ ह`और वह जो तमुस`वादा कयिा गया ह,	وَفِى السَّمَاۤءِ رِزْقُكُمْ وَمَا تُوْعَدُوْنَ
23	तो आकाश और ज़मीन क`रब की सौगंध, निशि्चय ही, जो वादा कयिा गया ह, वह सच ह, जसै`कि तमु बोलत`हो,	فَوَرَبِّ السَّمَاۤءِ وَالْاَرْضِ اِنَّهٗ لَحَقٌّ مِّثْلَ مَآ اَنَّكُمْ تَنْطِقُوْنَ
24	क्या तझु तक (महु्मम्द) इब्राहमि क`सम्मानति महेमानों (फ़रि्शतो) की ख़बर पहचुँी?,	هَلْ اَتٰىكَ حَدِيْثُ ضَيْفِ اِبْرٰهِيْمَ الْمُكْرَمِيْنَ
25	(याद कर) जब व`उसक`पास आए और बोल, `सलाम,' इब्राहमि न`जवाब दयिा, 'सलामनु' (सलाम)। (व) लोग थ`जनि्ह`वह नहीं जानता था,	اِذْ دَخَلُوْا عَلَيْهِ فَقَالُوْا سَلٰمًا قَالَ سَلٰمٌ قَوْمٌ مُّنْكَرُوْنَ
26	तो वह चपुक`स`अपन`परविार क`पास गया और एक मोटा बछड़ा (भना हआु) लाया,	فَرَاغَ اِلٰٓى اَهْلِهٖ فَجَاۤءَ بِعِجْلٍ سَمِيْنٍ
27	और उस`उनक`सामन`रखा (लकेनि उनहों`नहीं खाया)। इब्राहमि न`कहा, 'तमु खात`क्यों नही?',	فَقَرَّبَهٗٓ اِلَيْهِمْ قَالَ اَلَا تَاْكُلُوْنَ
28	तो वह (इब्राहमि) उनस`डर गया। उनहों`कहा, 'डरो मत,' और उनहों`उस`एक वदि्वान बटे`(इसहाक) की खशुखबरी दी,	فَاَوْجَسَ مِنْهُمْ خِيْفَةً قَالُوْا لَا تَخَفْ وَبَشَّرُوْهُ بِغُلٰمٍ عَلِيْمٍ
29	फरि उसकी बीवी चीखती हई आई और अपन`चहेर`पर हाथ मारकर बोली, '(म`तो) एक बढ़ी, बाझँ औरत ह',	فَاَقْبَلَتِ امْرَاَتُهٗ فِيْ صَرَّةٍ فَصَكَّتْ وَجْهَهَا وَقَالَتْ عَجُوْزٌ عَقِيْمٌ
30	उनहों`कहा, 'ऐसा ही तरो रब कहता ह, नशि्चय ही, वही बहत्त बद्धिमान, सब कछु जानन`वाला ह,	قَالُوْا كَذٰلِكِ قَالَ رَبُّكِ اِنَّهٗ هُوَ الْحَكِيْمُ الْعَلِيْمُ
31	उसन`(इब्राहमि न) कहा, 'ऐ दतूो, तमुहारा क्या ज़रूरी काम ह?',	قَالَ فَمَا خَطْبُكُمْ اَيُّهَا الْمُرْسَلُوْنَ
32	उनहों`जवाब दयिा, 'नशि्चय ही, हम`एक गनुहगार कौम (लतू की कौम) की ओर भजेा गया ह,	قَالُوْٓا اِنَّآ اُرْسِلْنَآ اِلٰى قَوْمٍ مُّجْرِمِيْنَ

33	ताकि हम उन पर (कठोर) मिट्टी के पत्थर बरसाएँ,	لِنُرْسِلَ عَلَيْهِمْ حِجَارَةً مِّنْ طِيْنٍ
34	जो तेरे रब की ओर से उन लोगों के लिए निशान किए गए हैं जो हद से आगे बढ़ गए हैं।	مُّسَوَّمَةً عِنْدَ رَبِّكَ لِلْمُسْرِفِيْنَ
35	तो हमने उस (शहर) में जो लोग ईमान वाले थे, उन्हें निकाल लिया,	فَاَخْرَجْنَا مَنْ كَانَ فِيْهَا مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ
36	लेकिन हमने उसमें (शहर में) सिर्फ़ एक घर मुसलमानों का (लूत का) मिला,	فَمَا وَجَدْنَا فِيْهَا غَيْرَ بَيْتٍ مِّنَ الْمُسْلِمِيْنَ
37	और हमने उसमें (शहर में) एक निशानी छोड़ दी उन लोगों के लिए जो दर्दनाक अज़ाब से डरते हैं।	وَتَرَكْنَا فِيْهَآ اٰيَةً لِّلَّذِيْنَ يَخَافُوْنَ الْعَذَابَ الْاَلِيْمَ
38	और मूसा में (अल्लाह की ताकत की निशानियाँ हैं) जब हमने उसे फ़िरऔन के पास साफ़ मुजिज़ा लेकर भेजा,	وَفِيْ مُوْسٰٓى اِذْ اَرْسَلْنٰهُ اِلٰى فِرْعَوْنَ بِسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ
39	लेकिन उसने (फ़िरऔन ने) अपनी ताकत के साथ मुँह फेर लिया और कहा, 'जादूगर या पागल,'	فَتَوَلّٰى بِرُكْنِهٖ وَقَالَ سٰحِرٌ اَوْ مَجْنُوْنٌ
40	तो हमने उसे और उसकी सेना को पकड़ लिया और उन्हें समुद्र में फेंक दिया, और वह निंदनीय था,	فَاَخَذْنٰهُ وَجُنُوْدَهٗ فَنَبَذْنٰهُمْ فِى الْيَمِّ وَهُوَ مُلِيْمٌ
41	और आद में (निशानियाँ हैं), जब हमने उनके ऊपर एक बंजर हवा भेजी,	وَفِيْ عَادٍ اِذْ اَرْسَلْنَا عَلَيْهِمُ الرِّيْحَ الْعَقِيْمَ
42	वह कुछ भी नहीं छोड़ती थी जिस पर गुज़रती थी, बल्कि उसे राख की तरह बना देती थी,	مَا تَذَرُ مِنْ شَيْءٍ اَتَتْ عَلَيْهِ اِلَّا جَعَلَتْهُ كَالرَّمِيْمِ
43	और समूद में (निशानियाँ हैं), जब उनसे कहा गया, 'कुछ समय तक मज़े कर लो,'	وَفِيْ ثَمُوْدَ اِذْ قِيْلَ لَهُمْ تَمَتَّعُوْا حَتّٰى حِيْنٍ
44	लेकिन उन्होंने अपने रब के हुक्म की नाफ़रमानी की, तो एक ज़ोरदार आवाज़ ने उन्हें पकड़ लिया, जबकि वे देख रहे थे,	فَعَتَوْا عَنْ اَمْرِ رَبِّهِمْ فَاَخَذَتْهُمُ الصّٰعِقَةُ وَهُمْ يَنْظُرُوْنَ
45	और वे न खड़े हो सके और न अपनी मदद कर सके,	فَمَا اسْتَطَاعُوْا مِنْ قِيَامٍ وَّمَا كَانُوْا مُنْتَصِرِيْنَ
46	और उससे पहले नूह की कौम को (नष्ट किया गया)। निश्चय ही, वे अवज्ञाकारी लोग थे,	وَقَوْمَ نُوْحٍ مِّنْ قَبْلُ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا فٰسِقِيْنَ
47	और हमने ही आकाश को अपनी ताकत से बनाया, और निश्चय ही, हम उसे और विस्तृत करने वाले हैं,	وَالسَّمَاءَ بَنَيْنٰهَا بِاَيْدٍ وَّاِنَّا لَمُوْسِعُوْنَ
48	और हमने ज़मीन को बिछाया, और हम कितने अच्छे बिछाने वाले हैं,	وَالْاَرْضَ فَرَشْنٰهَا فَنِعْمَ الْمٰهِدُوْنَ

49	और हर चीज़ को हमने जोड़े-जोड़े में बनाया ताकि तुम नसीहत हासिल करो,	وَمِنْ كُلِّ شَيْءٍ خَلَقْنَا زَوْجَيْنِ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ
50	तो (अल्लाह की ओर) भागो। निश्चय ही, मैं तुम्हारे लिए अल्लाह की ओर से एक साफ़ नसीहत देने वाला हूँ	فَفِرُّوْٓا اِلَى اللّٰهِ اِنِّيْ لَكُمْ مِّنْهُ نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ
51	और अल्लाह के साथ कोई दूसरा माबूद न बनाओ। निश्चय ही, मैं तुम्हारे लिए उसकी ओर से एक साफ़ नसीहत देने वाला हूँ	وَلَا تَجْعَلُوْا مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ اِنِّيْ لَكُمْ مِّنْهُ نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ
52	इसी तरह, जब भी उनके पहले के लोगों के पास कोई रसूल आया, उन्होंने ज़रूर कहा, 'जादूगर या पागल,'	كَذٰلِكَ مَآ اَتَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا قَالُوْا سَاحِرٌ اَوْ مَجْنُوْنٌ
53	क्या उन्होंने एक-दूसरे को यही बात सिखाई? बल्कि वे हद से आगे बढ़ने वाले लोग हैं	اَتَوَاصَوْا بِهٖ بَلْ هُمْ قَوْمٌ طَاغُوْنَ
54	तो (मुहम्मद) उनसे मुँह फेर लो, और तुम पर कोई इल्ज़ाम नहीं है	فَتَوَلَّ عَنْهُمْ فَمَآ اَنْتَ بِمَلُوْمٍ
55	और नसीहत देते रहो, क्योंकि नसीहत मोमिनों के लिए फायदा देती है	وَذَكِّرْ فَاِنَّ الذِّكْرٰى تَنْفَعُ الْمُؤْمِنِيْنَ
56	मैंने जिन्न और इंसान को सिर्फ़ इसलिए बनाया ताकि वे मेरी इबादत करें	وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْاِنْسَ اِلَّا لِيَعْبُدُوْنِ
57	मैं उनसे कोई रिज़्क़ नहीं चाहता और न चाहता हूँ कि वे मुझे खाना खिलाएँ	مَآ اُرِيْدُ مِنْهُمْ مِّنْ رِّزْقٍ وَّمَآ اُرِيْدُ اَنْ يُّطْعِمُوْنِ
58	निश्चय ही, अल्लाह ही रिज़्क़ देने वाला है, जो बहुत ताकतवर और मज़बूत है	اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الرَّزَّاقُ ذُو الْقُوَّةِ الْمَتِيْنُ
59	तो निश्चय ही, ज़ालिमों के लिए (अज़ाब का) हिस्सा है, जैसे उनके पहले के साथियों का हिस्सा था; तो उन्हें मुझसे जल्दी माँगने को न कहें	فَاِنَّ لِلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ذَنُوْبًا مِّثْلَ ذَنُوْبِ اَصْحٰبِهِمْ فَلَا يَسْتَعْجِلُوْنِ
60	तो उन लोगों के लिए तबाही है जो उस दिन को झुठलाते हैं जो उनके लिए वादा किया गया है (क़ियामत का दिन),	فَوَيْلٌ لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ يَّوْمِهِمُ الَّذِيْ يُوْعَدُوْنَ

छंदों की संख़्या	اَلطُّور	مكية
४९	एट-Tur - 52	मक्की

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

एट-Tur (पहाड़)

1	सनिाई पहाड़ की सौगंध,	وَالطُّوْرِ
2	और उस कताब की सौगंध जो लखिी गई ह,ै	وَكِتٰبٍ مَّسْطُوْرٍ
3	खलु ेहुए पन्नों पर,	فِيْ رَقٍّ مَّنْشُوْرٍ
4	बतैलु मअमूर (काबा) की सौगंध,	وَّالْبَيْتِ الْمَعْمُوْرِ
5	ऊँचे कएि गए छत (आकाश) की सौगंध,	وَالسَّقْفِ الْمَرْفُوْعِ
6	लहरों स ेभर ेसमदु्र की सौगंध,	وَالْبَحْرِ الْمَسْجُوْرِ
7	नश्चिय ही, तरे ेरब का अज़ाब ज़रू होगा,	اِنَّ عَذَابَ رَبِّكَ لَوَاقِعٌ
8	कोई चीज़ उस ेरोक नहीं सकती,	مَّا لَهٗ مِنْ دَافِعٍ
9	उस दनि जब आकाश बहतु ज़ोर स ेहलि जाएगा,	يَّوْمَ تَمُوْرُ السَّمَاءُ مَوْرًا
10	और पहाड़ चल पड़ेंगे (इधर-उधर),	وَّتَسِيْرُ الْجِبَالُ سَيْرًا
11	तो उस दनि उन लोगों क ेलएि तबाही होगी जो (सत्य को) झठुलात ेह,ैं	فَوَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ
12	जो लोग बकेार की बातों (पापों) म ेंखलेत ेरहत ेह,ैं	الَّذِيْنَ هُمْ فِيْ خَوْضٍ يَّلْعَبُوْنَ
13	उस दनि उन्ह ेंजहन्नम की आग की ओर बहतु ज़ोर स ेधकेला जाएगा,	يَوْمَ يُدَعُّوْنَ اِلٰى نَارِ جَهَنَّمَ دَعًّا
14	(उनस ेकहा जाएगा), 'यह वही जहन्नम ह ैजसि ेतमु झठुलात े थ,े'	هٰذِهِ النَّارُ الَّتِيْ كُنْتُمْ بِهَا تُكَذِّبُوْنَ
15	तो क्या यह जाद ूहै? या तमु दखे नहीं?,	اَفَسِحْرٌ هٰذَآ اَمْ اَنْتُمْ لَا تُبْصِرُوْنَ
16	इसम ेंदाख़लि हो जाओ (इसकी गरमी को चखो); चाह ेतमु सब्र करो या न करो, तमुहार ेलएि एक समान ह;ै तमुह ेंबस उसी का बदला दयिा जा रहा ह ैजो तमुन ेकयिा,	اِصْلَوْهَا فَاصْبِرُوْٓا اَوْ لَا تَصْبِرُوْا سَوَآءٌ عَلَيْكُمْ اِنَّمَا تُجْزَوْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ

17	निश्चय ही, परहेज़गार लोग जन्नतों और ख़ुशियों में होंगे,	اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِيْ جَنّٰتٍ وَّنَعِيْمٍ
18	वे उससे ख़ुश होंगे जो उनके रब ने उन्हें दिया, और उनका रब उन्हें जहन्नम के अज़ाब से बचाएगा,	فٰكِهِيْنَ بِمَآ اٰتٰىهُمْ رَبُّهُمْ وَوَقٰىهُمْ رَبُّهُمْ عَذَابَ الْجَحِيْمِ
19	(उनसे कहा जाएगा), 'खाओ और पियो, ख़ुशी के साथ, उसका बदला जो तुमने किया,'	كُلُوْا وَاشْرَبُوْا هَنِيْٓـًٔا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ
20	वे एक के बाद एक रखे गए तख़्तों पर टिके होंगे, और हम उन्हें ख़ूबसूरत आँखों वाली हूरों से जोड़ा करेंगे,	مُتَّكِـِٕيْنَ عَلٰى سُرُرٍ مَّصْفُوْفَةٍ وَزَوَّجْنٰهُمْ بِحُوْرٍ عِيْنٍ
21	और जो लोग ईमान लाए और उनकी संतान जो उनके ईमान में उनके साथ चली, हम उन्हें उनकी संतानों के साथ (जन्नत में) मिलाएँगे, और हम उनके अच्छे कर्मों की सवाब में ज़रा भी कमी नहीं करेंगे। हर इंसान अपने किए से बंधा है,	وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَاتَّبَعَتْهُمْ ذُرِّيَّتُهُمْ بِاِيْمَانٍ اَلْحَقْنَا بِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ وَمَآ اَلَتْنٰهُمْ مِّنْ عَمَلِهِمْ مِّنْ شَيْءٍ كُلُّ امْرِئٍ بِمَا كَسَبَ رَهِيْنٌ
22	और हम उन्हें उनके मनचाहे फल और मांस की बहतायत देंगे,	وَاَمْدَدْنٰهُمْ بِفَاكِهَةٍ وَّلَحْمٍ مِّمَّا يَشْتَهُوْنَ
23	(जन्नत में) वे एक-दूसरे को ऐसे प्याले देंगे जिनमें न बेकार की बात होगी और न पाप,	يَتَنَازَعُوْنَ فِيْهَا كَأْسًا لَّا لَغْوٌ فِيْهَا وَلَا تَأْثِيْمٌ
24	और उनके आसपास नौजवान (लड़के) उनकी सेवा के लिए घूमेंगे, जैसे वे छिपे हुए मोती हों,	وَيَطُوْفُ عَلَيْهِمْ غِلْمَانٌ لَّهُمْ كَاَنَّهُمْ لُؤْلُؤٌ مَّكْنُوْنٌ
25	और वे एक-दूसरे की ओर मुँह करके आपस में बात करेंगे,	وَاَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ يَّتَسَاءَلُوْنَ
26	वे कहेंगे, 'निश्चय ही, हम पहले अपने परिवार के बीच (अज़ाब से) डरते थे,'	قَالُوْٓا اِنَّا كُنَّا قَبْلُ فِيْٓ اَهْلِنَا مُشْفِقِيْنَ
27	तो अल्लाह ने हम पर कृपा की और हमें जहन्नम के अज़ाब से बचाया,	فَمَنَّ اللّٰهُ عَلَيْنَا وَوَقٰىنَا عَذَابَ السَّمُوْمِ
28	निश्चय ही, हम पहले से उसकी इबादत करते थे। वही बहुत अच्छा करने वाला और रहम करने वाला है,	اِنَّا كُنَّا مِنْ قَبْلُ نَدْعُوْهُ اِنَّهٗ هُوَ الْبَرُّ الرَّحِيْمُ
29	तो (मुहम्मद) नसीहत दे, क्योंकि तू अपने रब की कृपा से न ज्योतिषी है और न पागल,	فَذَكِّرْ فَمَآ اَنْتَ بِنِعْمَتِ رَبِّكَ بِكَاهِنٍ وَّلَا مَجْنُوْنٍ
30	क्या वे कहते हैं, 'वह एक कवि है जिसके लिए हम दुर्भाग्य की प्रतीक्षा करते हैं?,	اَمْ يَقُوْلُوْنَ شَاعِرٌ نَّتَرَبَّصُ بِهٖ رَيْبَ الْمَنُوْنِ
31	कह दे (मुहम्मद), 'प्रतीक्षा करो! मैं भी तुम्हारे साथ प्रतीक्षा करने वालों में हूँ'	قُلْ تَرَبَّصُوْا فَاِنِّيْ مَعَكُمْ مِّنَ الْمُتَرَبِّصِيْنَ
32	क्या उनकी अक़्ल उन्हें यह (इलज़ाम) लगाने का हुक्म देती है, या वे हद से आगे बढ़ने वाले लोग हैं?,	اَمْ تَأْمُرُهُمْ اَحْلَامُهُمْ بِهٰذَآ اَمْ هُمْ قَوْمٌ طَاغُوْنَ

33	या व॒ेकहत॒े ह॑ै, 'उसन॒े (कु़रआन को) बनाया ह॑ै' नही! बलक़ि व॒े ही ईमान नहीं लात॒े,	اَمْ يَقُوْلُوْنَ تَقَوَّلَه بَلْ لَّا يُؤْمِنُوْنَ
34	तो उनह॒े चाहिए कि व॒े (कु़रआन) जसैी कोई चीज़ लाए ँअगर व॒े सचच॒े ह॑ै,	فَلْيَأْتُوْا بِحَدِيْثٍ مِّثْلِه اِنْ كَانُوْا صٰدِقِيْنَ
35	क़या व॒ेबनि कसिी आधार क॒े पदैा कए गए, या व॒े ख़दु अपन॒े रचयति ह॑ै?	اَمْ خُلِقُوْا مِنْ غَيْرِ شَيْءٍ اَمْ هُمُ الْخٰلِقُوْنَ
36	या उनहो॑न॒े आकाश और ज़मीन को बनाया? बलक़ि व॒े (सत॒य को) यक़ीन नहीं करत॒े,	اَمْ خَلَقُوا السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بَلْ لَّا يُوْقِنُوْنَ
37	या उनक॒े पास तर॒े रब की ख़जान॒े ह॑ै, या व॒े हाकमि ह॑ै?	اَمْ عِنْدَهُمْ خَزَاۤئِنُ رَبِّكَ اَمْ هُمُ الْمُصَيْطِرُوْنَ
38	या उनक॒े पास कोई सीढ़ी ह॑ै (आकाश तक) जसिस॒े व॒े (ग़ब॒े की बात) सनु॒त ह॑ै? तो उनक॒े सनु॒न॒े वाल॒े को चाहिए कि व॒ह साफ़ सबू॒त लाए,	اَمْ لَهُمْ سُلَّمٌ يَّسْتَمِعُوْنَ فِيْهِ فَلْيَأْتِ مُسْتَمِعُهُمْ بِسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ
39	या क़या उसक॒े (अल॒लाह क॑े) लिए बटेयिा ँह॑ै और तमु॒हार॒े लिए बटे?	اَمْ لَهُ الْبَنٰتُ وَلَكُمُ الْبَنُوْنَ
40	या क़या तू (मह॒मम॒द) उनस॒े कोई इनाम माँगता ह॑ै कि व॒े करज़॒ क॒े बोझ स॒े दब॒े ह॑ै?	اَمْ تَسْـَٔلُهُمْ اَجْرًا فَهُمْ مِّنْ مَّغْرَمٍ مُّثْقَلُوْنَ
41	या उनक॒े पास ग़ब॒े का इलम॒ ह॑ै कि व॒े उस॒े लखित॒े ह॑ै?	اَمْ عِنْدَهُمُ الْغَيْبُ فَهُمْ يَكْتُبُوْنَ
42	या व॒े कोई चाल चलना चाहत॒े ह॑ै? लकेनि जो काफ़रि ह॑ै, वही चाल म॒े फँस जाएँग,	اَمْ يُرِيْدُوْنَ كَيْدًا فَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا هُمُ الْمَكِيْدُوْنَ
43	या उनक॒े पास अल॒लाह क॒े सवि कोई और माबद॒ ह॑ै? अल॒लाह उसस॒े बहत॒ु पवत्रि ह॑ै जो व॒े शरि॑क करत॒े ह॑ै	اَمْ لَهُمْ اِلٰهٌ غَيْرُ اللّٰهِ سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ
44	और अगर व॒े आकाश स॒े टकुड़॒े गरित॒े दखे़॑, तो कहग॑े, 'यह तो बस ढरे सार॒े बादल ह॑ै'	وَاِنْ يَّرَوْا كِسْفًا مِّنَ السَّمَاۤءِ سَاقِطًا يَّقُوْلُوْا سَحَابٌ مَّرْكُوْمٌ
45	तो उनह॒े छोड़ द॒े, यहा ँतक कि व॒े उस दनि स॒े मलि॑ जसि पर उनह॒े बहेोश कर दयिा जाएगा,	فَذَرْهُمْ حَتّٰى يُلٰقُوْا يَوْمَهُمُ الَّذِيْ فِيْهِ يُصْعَقُوْنَ
46	जसि दनि उनकी कोई चाल उनक॒े लिए काम नहीं आएगी और न उनकी कोई मदद होगी,	يَوْمَ لَا يُغْنِيْ عَنْهُمْ كَيْدُهُمْ شَيْـًٔا وَّلَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ
47	और नशि॑चय ही, ज़ालमिो॑ क॒े लिए उसस॒े अलग और अज़ाब ह॑ै लकेनि उनम॒े स॒े ज़यादातर नहीं जानत॒े,	وَاِنَّ لِلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا عَذَابًا دُوْنَ ذٰلِكَ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ

وَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ فَإِنَّكَ بِأَعْيُنِنَا وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ حِيْنَ تَقُوْمُ	और (मुहम्मद) अपने रब के हुक्म की प्रतीक्षा में सब्र कर, क्योंकि तू हमारी निगरानी में है, और अपने रब की तारीफ़ के साथ तसबीह कर जब तू खड़ा हो,	**48**
وَمِنَ الَّيْلِ فَسَبِّحْهُ وَإِدْبَارَ النُّجُوْمِ	और रात के कुछ हिस्से में और तारों के डूबने (फ़ज़र) के समय उसकी तसबीह कर,	**49**

छंदों की संख़्या	اَلنَّجْم	مكية
६२	एक-नाज़्म - 53	मक्की

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

एक-नाज़्म (तारा)

1	तार`की सौगंध जब वह डूबता ह,ै	وَالنَّجْمِ اِذَا هَوٰى
2	तुम्हारा साथी (मुह़म्मद) न भटका ह`ैऔर न गलती की ह,ै	مَا ضَلَّ صَاحِبُكُمْ وَمَا غَوٰى
3	और वह (क़ुरआन) जो वह कहता ह,ै`वह उसकी अपनी इच्छा स` नहीं ह,ै	وَمَا يَنْطِقُ عَنِ الْهَوٰى
4	यह (क़ुरआन) तो बस वह़्य ह`ैजो उस पर उतारा गया ह,ै	اِنْ هُوَ اِلَّا وَحْيٌ يُّوْحٰى
5	जसि`उस`(जबिरील) न`सिखाया, जो बहुत शक़्तिशाली ह,ै	عَلَّمَهٗ شَدِيْدُ الْقُوٰى
6	जो बहुत दृढ़ ह;ै फिर वह (जबिरील) अपन`असली रूप (जो सुंदर और शक़्तिशाली ह)ै म`पऱकट हुआ,	ذُوْ مِرَّةٍ فَاسْتَوٰى
7	जब वह सबस`ऊँचे`उफ़क़् (क्षितिज) पर था,	وَهُوَ بِالْاُفُقِ الْاَعْلٰى
8	फिर वह (जबिरील) नज़्दीक आया (मुह़म्मद क`पास), और और नज़्दीक हुआ,	ثُمَّ دَنَا فَتَدَلّٰى
9	यहा`ँतक कि उसकी दूरी (लगभग) दो धनुष की लंबाई थी या उसस`भी कम,	فَكَانَ قَابَ قَوْسَيْنِ اَوْ اَدْنٰى
10	फिर उसन`(जबिरील न)ै अल्लाह क`बनद्`(मुह़म्मद) को वह वह़्य दी जो अल्लाह न`उतारी थी,	فَاَوْحٰٓى اِلٰى عَبْدِهٖ مَآ اَوْحٰى
11	उसक`(मुह़म्मद क)ी दलि न`उस चीज़् को नहीं झठुलाया जो उसन`देखा,	مَا كَذَبَ الْفُؤَادُ مَا رَاٰى
12	तो क्या तुम (मुश्रकि लोग) उस चीज़् क`बार`मे`जो उसन`देखा, उसस`बहस करना चाहत`हो?,	اَفَتُمٰرُوْنَهٗ عَلٰى مَا يَرٰى
13	और नश्चिय ही, उसन`(मुह़म्मद न)ी उस`(जबिरील को) एक और बार (उसक`असली रूप म)ी दखेा,	وَلَقَدْ رَاٰهُ نَزْلَةً اُخْرٰى
14	सदिरतुल मुन्तहा क`पास,	عِنْدَ سِدْرَةِ الْمُنْتَهٰى
15	जो जन्नतुल मअवा (रहन`की जन्नत) क`करीब ह,ै	عِنْدَهَا جَنَّةُ الْمَاْوٰى

16	जब सदिरतुल मुन्तहा को (प्रकाश और रहस्यों ने) ढक लिया था,	اِذْ يَغْشَى السِّدْرَةَ مَا يَغْشٰى
17	उसकी (मुहम्मद की) नज़र न तो भटकी और न हद से आगे बढ़ी,	مَا زَاغَ الْبَصَرُ وَمَا طَغٰى
18	निश्चय ही, उसने अपने रब की सबसे बड़ी निशानियों में से कुछ देखीं,	لَقَدْ رَاٰى مِنْ اٰيٰتِ رَبِّهِ الْكُبْرٰى
19	क्या तुमने लात और उज़्ज़ा को देखा?,	اَفَرَءَيْتُمُ اللّٰتَ وَالْعُزّٰى
20	और तीसरी, मनात को?,	وَمَنٰوةَ الثَّالِثَةَ الْاُخْرٰى
21	क्या तुम्हारे लिए बेटे और उसके (अल्लाह के) लिए बेटियाँ?,	اَلَكُمُ الذَّكَرُ وَلَهُ الْاُنْثٰى
22	यह तो बहुत बड़ा अन्यायपूर्ण बँटवारा है,	تِلْكَ اِذًا قِسْمَةٌ ضِيْزٰى
23	ये (लात, उज़्ज़ा, मनात) बस कुछ नाम हैं जिन्हें तुमने और तुम्हारे बाप-दादों ने गढ़ लिया, जिनके लिए अल्लाह ने कोई सबूत नहीं उतारा। वे तो बस अपनी ख़्वाहिशों और अनुमानों के पीछे चलते हैं, हालाँकि उनके रब की ओर से हिदायत आ चुकी है,	اِنْ هِيَ اِلَّآ اَسْمَآءٌ سَمَّيْتُمُوْهَآ اَنْتُمْ وَاٰبَآؤُكُمْ مَّآ اَنْزَلَ اللّٰهُ بِهَا مِنْ سُلْطٰنٍ اِنْ يَّتَّبِعُوْنَ اِلَّا الظَّنَّ وَمَا تَهْوَى الْاَنْفُسُ وَلَقَدْ جَآءَهُمْ مِّنْ رَّبِّهِمُ الْهُدٰى
24	क्या इंसान को वही मिलेगा जो वह चाहता है?,	اَمْ لِلْاِنْسَانِ مَا تَمَنّٰى
25	बल्कि आख़िरत और दुनिया (का मालिक) तो अल्लाह ही है,	فَلِلّٰهِ الْاٰخِرَةُ وَالْاُوْلٰى
26	और आकाशों में कितने ही फ़रिश्ते हैं, उनकी सिफ़ारिश (मदद) किसी काम की नहीं, सिवाय इसके कि अल्लाह जिसे चाहे और जिससे ख़ुश हो, उसे इजाज़त दे,	وَكَمْ مِّنْ مَّلَكٍ فِي السَّمٰوٰتِ لَا تُغْنِيْ شَفَاعَتُهُمْ شَيْـًٔا اِلَّا مِنْ بَعْدِ اَنْ يَّاْذَنَ اللّٰهُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَرْضٰى
27	निश्चय ही, जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं लाते, वे फ़रिश्तों को औरतों के नाम देते हैं,	اِنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ لَيُسَمُّوْنَ الْمَلٰٓئِكَةَ تَسْمِيَةَ الْاُنْثٰى
28	और उनके पास इसके बारे में कोई इल्म नहीं है वे तो बस अनुमान के पीछे चलते हैं, और अनुमान सच्चाई के सामने कुछ काम नहीं आता,	وَمَا لَهُمْ بِهٖ مِنْ عِلْمٍ اِنْ يَّتَّبِعُوْنَ اِلَّا الظَّنَّ وَاِنَّ الظَّنَّ لَا يُغْنِيْ مِنَ الْحَقِّ شَيْـًٔا
29	तो (मुहम्मद) उस व्यक्ति से मुँह फेर लो जो हमारी नसीहत से मुँह मोड़ता है और केवल दुनिया की ज़िंदगी चाहता है,	فَاَعْرِضْ عَنْ مَّنْ تَوَلّٰى عَنْ ذِكْرِنَا وَلَمْ يُرِدْ اِلَّا الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا
30	यह उनकी बुद्धि की हद है निश्चय ही, तेरा रब अच्छी तरह जानता है कि कौन उसकी राह से भटक गया और कौन हिदायत पर है,	ذٰلِكَ مَبْلَغُهُمْ مِّنَ الْعِلْمِ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيْلِهٖ وَهُوَ اَعْلَمُ بِمَنِ اهْتَدٰى

31	और अल्लाह ही का ह जो कछ आकाशों म ह और जो कछ ज़मीन म ह ताकि वह बराई करन वालों को उनक कए का बदला द और अच्छाई करन वालों को बहेतर इनाम (जन्नत) द,	وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ لِيَجْزِيَ الَّذِيْنَ اَسَاۗءُوْا بِمَا عَمِلُوْا وَيَجْزِيَ الَّذِيْنَ اَحْسَنُوْا بِالْحُسْنٰى
32	(यानी) व लोग जो बड़ गन्नाहों और बहेयाई स बचत ह, सविाय छोटी-मोटी गलतयिों को नशि्चय ही, तरो रब बहत्त ज़्यादा माफ करन वाला ह वह तमु्ह अच्छी तरह जानता ह, जब उसन तमु्ह मटि्टी स बनाया और जब तम अपनी माओं क पटे म भ्रण थो तो अपन आप को पवति्र न समझो। वह अच्छी तरह जानता ह कि परहज़गार कौन ह,	اَلَّذِيْنَ يَجْتَنِبُوْنَ كَبٰۗىِٕرَ الْاِثْمِ وَالْفَوَاحِشَ اِلَّا اللَّمَمَ ۭ اِنَّ رَبَّكَ وَاسِعُ الْمَغْفِرَةِ ۭ هُوَ اَعْلَمُ بِكُمْ اِذْ اَنْشَاَكُمْ مِّنَ الْاَرْضِ وَاِذْ اَنْتُمْ اَجِنَّةٌ فِيْ بُطُوْنِ اُمَّهٰتِكُمْ ۚ فَلَا تُزَكُّوْٓا اَنْفُسَكُمْ ۭ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنِ اتَّقٰى
33	क्या तन उस व्यक्ति को देखा जो (कर्आन स) मह फरे लता ह?,	اَفَرَءَيْتَ الَّذِيْ تَوَلّٰى
34	और उसन थोड़-सा (वायदा कयि हआ) दयि और फरि रक गया,	وَاَعْطٰى قَلِيْلًا وَّاَكْدٰى
35	क्या उसक पास गबै का इलम ह कि वह (सब कछ) दख सकता ह?,	اَعِنْدَهٗ عِلْمُ الْغَيْبِ فَهُوَ يَرٰى
36	या उस वह नहीं बताया गया जो मसूा की कतिाबों म था?,	اَمْ لَمْ يُنَبَّاْ بِمَا فِيْ صُحُفِ مُوْسٰى
37	और इब्राहमि की (कतिाबों म), जो हमशेा अपन वायद पूर करता था?,	وَاِبْرٰهِيْمَ الَّذِيْ وَفّٰٓى
38	(यानी) कि कोई गन्हगार कसिी और क गन्नाह का बोझ नहीं उठाएगा,	اَلَّا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰى
39	और यह कि इंसान को वही मलिगेा जो उसन मेहनत स कमाया,	وَاَنْ لَّيْسَ لِلْاِنْسَانِ اِلَّا مَا سَعٰى
40	और नशि्चय ही, उसकी महेनत को बाद म दखिाया जाएगा,	وَاَنَّ سَعْيَهٗ سَوْفَ يُرٰى
41	फरि उस उसका पूरा-पूरा बदला दयि जाएगा,	ثُمَّ يُجْزٰىهُ الْجَزَاۗءَ الْاَوْفٰى
42	और नशि्चय ही, तर रब की ओर ही (सब कछ की) आख़रिी मंज़लि ह,	وَاَنَّ اِلٰى رَبِّكَ الْمُنْتَهٰى
43	और नशि्चय ही, वही ह जो हसँाता ह और रलाता ह,	وَاَنَّهٗ هُوَ اَضْحَكَ وَاَبْكٰى
44	और नशि्चय ही, वही ह जो मारता ह और ज़दिगी दता ह,	وَاَنَّهٗ هُوَ اَمَاتَ وَاَحْيَا
45	और नशि्चय ही, वही ह जसिन नर और मादा की जोड़ी बनाई,	وَاَنَّهٗ خَلَقَ الزَّوْجَيْنِ الذَّكَرَ وَالْاُنْثٰى
46	मनी स, जब वह नकिाली जाती ह,	مِنْ نُّطْفَةٍ اِذَا تُمْنٰى

47	और नश्चिय ही, वही ह जो दूसरी बार सृजन (क़यामत क बाद) करेगा,	وَاَنَّ عَلَيْهِ النَّشْاَةَ الْاُخْرٰى
48	और नश्चिय ही, वही ह जो धन और तृप्त दिता ह,	وَاَنَّه هُوَ اَغْنٰى وَاَقْنٰى
49	और नश्चिय ही, वही सरि (तार) का रब ह,	وَاَنَّه هُوَ رَبُّ الشِّعْرٰى
50	और नश्चिय ही, उसी न पहुनी आद कौम को नष्ट कयि,	وَاَنَّه اَهْلَكَ عَادًا الْاُوْلٰى
51	और समद कौम को, उसन किसी को नहीं छोड़ (ज़दि),	وَثَمُوْدَا فَمَآ اَبْقٰى
52	और उससे पहल नूह की कौम को। नश्चिय ही, वे सबस ज़्यादा ज़ालमि और सरकश थ,	وَقَوْمَ نُوْحٍ مِّنْ قَبْلُ اِنَّهُمْ كَانُوْا هُمْ اَظْلَمَ وَاَطْغٰى
53	और उसन लूत की कौम क शहर को उलट-पलुट कर नष्ट कर दयि,	وَالْمُؤْتَفِكَةَ اَهْوٰى
54	तो उस (उस शहर को) (अज़ाब क) टक्रुड़ो न ढक लयि,	فَغَشّٰىهَا مَا غَشّٰى
55	तो तू अपन रेब की कौन सी नमेत पर शक करता ह?,	فَبِاَيِّ اٰلَاۤءِ رَبِّكَ تَتَمَارٰى
56	यह (मुहम्मद) उन नसीहत दने वालो म से एक ह जो पहल आए थ,	هٰذَا نَذِيْرٌ مِّنَ النُّذُرِ الْاُوْلٰى
57	वह (क़यामत) जो नज़दीक ह, और नज़दीक आ चुकी ह,	اَزِفَتِ الْاٰزِفَةُ
58	उस (क़यामत को) अल्लाह क सवि कोई ज़ाहरि नहीं कर सकता,	لَيْسَ لَهَا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ كَاشِفَةٌ
59	तो क्या तमु इस ख़बर (क़ुरआन) पर हरैान होत हो?,	اَفَمِنْ هٰذَا الْحَدِيْثِ تَعْجَبُوْنَ
60	और हसँत हो और रोत नहीं?,	وَتَضْحَكُوْنَ وَلَا تَبْكُوْنَ
61	जबकि तमु (इससे) बपेरवाह हो,	وَاَنْتُمْ سٰمِدُوْنَ
62	तो अल्लाह क सामन सजदा करो और उसकी इबादत करो,	فَاسْجُدُوْا لِلّٰهِ وَاعْبُدُوْا

छंदों की संख़्या	اَلْقَمَر	مكية
५५	अल कमर - 54	मक्की

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल कमर (चंद्रमा)

1	जब (क़ियामत का) समय नज़्दीक आएगा, चाँद फट जाएगा,	اِقْتَرَبَتِ السَّاعَةُ وَانْشَقَّ الْقَمَرُ
2	और अगर व॒ (मुश्रिक लोग) कोई निशानी (मुज़िज़ा) दे॒ख॒त॑ हैं, तो मुँह फे॒रे॒ ल॒ते॑ हैं॒ और कह॒त॑ हैं॒, "यह तो लगातार जाद॒ू है॒"	وَاِنْ يَّرَوْا اٰيَةً يُّعْرِضُوْا وَيَقُوْلُوْا سِحْرٌ مُّسْتَمِرٌّ
3	और उन्होंन॒े (मुह॒म्मद को) झुठलाया और अपनी इच्छाओं॑ का पालन कि॒या, जबकि॒ हर मामल॒े का एक नि॑श्चित फैसला है॒,	وَكَذَّبُوْا وَاتَّبَعُوْٓا اَهْوَاءَهُمْ وَكُلُّ اَمْرٍ مُّسْتَقِرٌّ
4	और निश्चय ही उनक॒े पास कुछ कहानिय॒ाँ आई॑ जिनम॒े (कुफ़्र क॒े ख़िलाफ) चेतावनी थी,	وَلَقَدْ جَاءَهُمْ مِّنَ الْاَنْبَاءِ مَا فِيْهِ مُزْدَجَرٌ
5	(यह) एक पूर्ण बुद्धिमत्ता है॒, लेकिन चेतावनिय॒ाँ उनक॒े लिए बेकार रहीं,	حِكْمَةٌۢ بَالِغَةٌ فَمَا تُغْنِ النُّذُرُ
6	तो (मुह॒म्मद) तुम॒ उनस॒े मुँह फे॒रे॒ लो उस दिन जब पुकारन॒े॒वाला (फ़रिश्ता) उन्ह॒े॒ एक अप्रिय चीज़ (क़ियामत क॒े दिन) की ओर बुलाएगा,	فَتَوَلَّ عَنْهُمْ يَوْمَ يَدْعُ الدَّاعِ اِلٰى شَيْءٍ نُّكُرٍ
7	उनकी नज़र॒ें झुकी होंगी, जब व॒े कब्रों॑ स॒े निकलेंगे॑, जैसे॒ व॒े टिड्डिय॒ाँ हों॑ जो उड़ रही हों॑,	خُشَّعًا اَبْصَارُهُمْ يَخْرُجُوْنَ مِنَ الْاَجْدَاثِ كَاَنَّهُمْ جَرَادٌ مُّنْتَشِرٌ
8	व॒े आज्ञाकारी होकर उस पुकारन॒े॒वाल॒े॒ की ओर जल्दी आएँगे॑। काफ़िर कहेंगे॑, "यह एक कठिन दिन है॒"	مُّهْطِعِيْنَ اِلَى الدَّاعِ يَقُوْلُ الْكٰفِرُوْنَ هٰذَا يَوْمٌ عَسِرٌ
9	उनस॒े पहल॒े नूह की कौम न॒े भी (रसूल को) झुठलाया, फिर उन्होंन॒े हमार॒े बन्द॒े (नूह) को झुठलाया और कहा, "वह पागल है॒" और उस॒े धमकिय॒ों क॒े साथ भगा दिया गया,	كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ فَكَذَّبُوْا عَبْدَنَا وَقَالُوْا مَجْنُوْنٌ وَّازْدُجِرَ
10	तो उसन॒े॒ (नूह न॒े) अपन॒े रब स॒े फरियाद की, "निश्चय ही म॒ैं हार गया हूँ॒, तो (मेरी) मदद कर,"	فَدَعَا رَبَّهٗٓ اَنِّيْ مَغْلُوْبٌ فَانْتَصِرْ
11	फिर हमन॒े आकाश क॒े दरवाज़॒े खोल दिए और (तेज़) बहता हुआ पानी उतारा,	فَفَتَحْنَآ اَبْوَابَ السَّمَاءِ بِمَاءٍ مُّنْهَمِرٍ
12	और हमन॒े ज़मीन स॒े चश्म॒े फूट॒न॒े दिए, तो (सारा) पानी मिल गए और एक निश्चित (बाद॒ की) स्थिति पैदा हो गई,	وَّفَجَّرْنَا الْاَرْضَ عُيُوْنًا فَالْتَقَى الْمَاءُ عَلٰٓى اَمْرٍ قَدْ قُدِرَ

13	और हमन`उस`(नूह को) तख़्तों और कीलों स`बनी (नाव) पर सवार कयि,	وَحَمَلْنٰهُ عَلٰى ذَاتِ اَلْوَاحٍ وَّدُسُرٍ
14	जो हमारी नगिरानी म`तरै रही थी, यह उसका इनाम था जसि` (उसकी कौम न) झठुलाया था,	تَجْرِيْ بِاَعْيُنِنَا جَزَاءً لِّمَنْ كَانَ كُفِرَ
15	और नश्चिय ही, हमन`उस (नाव) को एक नशिानी (सबक) बनाया। तो क्या कोई ह`जो सबक ल?,	وَلَقَدْ تَّرَكْنٰهَآ اٰيَةً فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ
16	तो मरो अज़ाब और मरी चतेावनी कतिनी भयानक थी!,	فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِيْ وَنُذُرِ
17	और नश्चिय ही, हमन`कुरआन को चतेावनी क`लएि आसान कयि, तो क्या कोई ह`जो सबक ल?,	وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْاٰنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ
18	आद की कौम न`भी (चतेावनी को) झठुलाया। तो मरो अज़ाब और मरी चतेावनी कतिनी भयानक थी!,	كَذَّبَتْ عَادٌ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِيْ وَنُذُرِ
19	नश्चिय ही, हमन`उनक`ऊपर एक बहतु तज़े हवा भजेी, एक लगातार दरुभाग्यपरूण दनि पर,	اِنَّآ اَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيْحًا صَرْصَرًا فِيْ يَوْمِ نَحْسٍ مُّسْتَمِرٍّ
20	जो इंसानों को उखाड़ दती थी, जसै`वे खजरू क`पड़े हों जो जड़ों समते गरि गए हों,	تَنْزِعُ النَّاسَ كَاَنَّهُمْ اَعْجَازُ نَخْلٍ مُّنْقَعِرٍ
21	तो मरो अज़ाब और मरी चतेावनी कतिनी भयानक थी!,	فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِيْ وَنُذُرِ
22	और नश्चिय ही, हमन`कुरआन को चतेावनी क`लएि आसान कयि, तो क्या कोई ह`जो सबक ल?,	وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْاٰنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ
23	समदू की कौम न`भी चतेावनयिों को झठुलाया,	كَذَّبَتْ ثَمُوْدُ بِالنُّذُرِ
24	तो व`बोल, 'क्या हम अपन`बीच क`एक साधारण इंसान का अनसुरण कर? अगर ऐसा कयि तो हम नश्चिय ही भटक जाएँग`और पागल हो जाएँग,`	فَقَالُوْٓا اَبَشَرًا مِّنَّا وَاحِدًا نَّتَّبِعُهٗٓ اِنَّآ اِذًا لَّفِيْ ضَلٰلٍ وَّسُعُرٍ
25	क्या हमार`बीच उसी पर वह्य नाज़लि हई? बल्कि वह (सालहे) तो बहतु बड़ा झठूा और घमंडी ह,ै	ءَاُلْقِيَ الذِّكْرُ عَلَيْهِ مِنْ بَيْنِنَا بَلْ هُوَ كَذَّابٌ اَشِرٌ
26	व`जलद्ी ही जान लगे`कि असल म`बहतु बड़ा झठूा और घमंडी कौन ह,ै	سَيَعْلَمُوْنَ غَدًا مَّنِ الْكَذَّابُ الْاَشِرُ
27	नश्चिय ही, हम उनक`लएि एक ऊँटनी भजेगे`जो उनकी आज़माइश होगी, तो (सालहे) तमु उनकी प्रतीक्षा करो और धरैय रखो,	اِنَّا مُرْسِلُوا النَّاقَةِ فِتْنَةً لَّهُمْ فَارْتَقِبْهُمْ وَاصْطَبِرْ
28	और उन्ह`बता द`कि पानी उनक`और (ऊँटनी) क`बीच बँटा हआु ह;ै हर एक को अपनी बारी पर पीन`का हक़ ह,ै	وَنَبِّئْهُمْ اَنَّ الْمَاءَ قِسْمَةٌ بَيْنَهُمْ كُلُّ شِرْبٍ مُّحْتَضَرٌ

29	फरि उन्होंन`अपन`साथी को बुलाया, तो उसन`(ऊँटनी को) पकड़ा और काट डाला,	فَنَادَوْا صَاحِبَهُمْ فَتَعَاطٰى فَعَقَرَ
30	तो मरो अज़ाब और मरी चेतावनी कितनी भयानक थी!,	فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِيْ وَنُذُرِ
31	हमन`उनक`ऊपर एक ज़ोरदार आवाज़ भेजी जो गड़गड़ाहट की तरह थी, तो व`सूख़ा`तनों`की तरह हो गए जो सड़ चुक`थे,	اِنَّآ اَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ صَيْحَةً وَّاحِدَةً فَكَانُوْا كَهَشِيْمِ الْمُحْتَظِرِ
32	और निश्चय ही, हमन`क़ुरआन को चेतावनी क`लिए आसान कयि, तो क्या कोई ह`जो सबक ल?,	وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْاٰنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ
33	लूत की कौम न`भी चेतावनियों`को झठुलाया,	كَذَّبَتْ قَوْمُ لُوْطٍ بِالنُّذُرِ
34	निश्चय ही, हमन`उनक`ऊपर एक तूफ़ान भेजा जो पत्थर बरसाता था, सविाय लूत क`परिवार को हमन`उन्ह`भोर होन`स` पहल`बचा लयि,	اِنَّآ اَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ حَاصِبًا اِلَّآ اٰلَ لُوْطٍ نَجَّيْنٰهُمْ بِسَحَرٍ
35	यह हमारी ओर स`एक नमेत थी। इस तरह हम कृतज्ञ लोगों`को इनाम दते`ह,	نِّعْمَةً مِّنْ عِنْدِنَا كَذٰلِكَ نَجْزِيْ مَنْ شَكَرَ
36	और निश्चय ही, उस (लूत) न`उन्ह`हमार`अज़ाब की चेतावनी दी थी, लकेनि उन्होंन`हमारी चेतावनियों`को झठुलाया,	وَلَقَدْ اَنْذَرَهُمْ بَطْشَتَنَا فَتَمَارَوْا بِالنُّذُرِ
37	और निश्चय ही, उन्होंन`उस`उसक`महेमानों (क`लिए) ललचाया, तो हमन`उनकी आँख`अंधी कर दीं, फरि (कहा), 'अब मरे`अज़ाब और मरी चेतावनी को चखो!',	وَلَقَدْ رَاوَدُوْهُ عَنْ ضَيْفِهٖ فَطَمَسْنَآ اَعْيُنَهُمْ فَذُوْقُوْا عَذَابِيْ وَنُذُرِ
38	और निश्चय ही, अगली सबुह उन्ह`एक स्थायी अज़ाब न`घरे लयि,	وَلَقَدْ صَبَّحَهُمْ بُكْرَةً عَذَابٌ مُّسْتَقِرٌّ
39	तो मरे`अज़ाब और मरी चेतावनी को चखो!,	فَذُوْقُوْا عَذَابِيْ وَنُذُرِ
40	और निश्चय ही, हमन`क़ुरआन को चेतावनी क`लिए आसान कयि, तो क्या कोई ह`जो सबक ल?,	وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْاٰنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ
41	और निश्चय ही, फ़िरऔन क`परिवार को चेतावनियाँ दी गई थीं,	وَلَقَدْ جَاءَ اٰلَ فِرْعَوْنَ النُّذُرُ
42	उन्होंन`हमार`सार`मुजिज़ों`को झठुलाया, तो हमन`उन्ह`एक ऐस` अज़ाब स`पकड़ा जो बहतु शक्तिशाली और सर्वशक्तमिान का था,	كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا كُلِّهَا فَاَخَذْنٰهُمْ اَخْذَ عَزِيْزٍ مُّقْتَدِرٍ
43	क्या तमुहार`(कौम मुशरिक क) काफ़िर उनस`बेहतर ह, या तमुहार`लिए पुरानी किताबों म`(अज़ाब स) छूट का कोई ज़मानतनामा ह?,	اَكُفَّارُكُمْ خَيْرٌ مِّنْ اُولٰٓئِكُمْ اَمْ لَكُمْ بَرَاءَةٌ فِي الزُّبُرِ
44	या व`कहत`ह, 'हम एकजुट समूह ह`जो ज़रूर जीत जाएगा,'	اَمْ يَقُوْلُوْنَ نَحْنُ جَمِيْعٌ مُّنْتَصِرٌ
45	वह समूह निश्चय ही हार जाएगा और व`पीछ`हट जाएँगे,	سَيُهْزَمُ الْجَمْعُ وَيُوَلُّوْنَ الدُّبُرَ

46	बल्कि क़ियामत का दिन ही वह समय है जो उनके लिए वादा किया गया है और क़ियामत का दिन ज़्यादा भयानक और कड़वा है,	بَلِ السَّاعَةُ مَوْعِدُهُمْ وَالسَّاعَةُ اَدْهٰى وَاَمَرُّ
47	निश्चय ही, गुनहगार लोग (दुनिया में) भटकाव में है और (आख़िरत में) जहन्नम में होंगे,	اِنَّ الْمُجْرِمِيْنَ فِيْ ضَلٰلٍ وَّسُعُرٍ
48	उस दिन उन्हें उनके चेहरों पर घसीटकर जहन्नम की आग में ले जाया जाएगा। (उन्हें कहा जाएगा), 'जहन्नम की आग का स्पर्श चखो,'	يَوْمَ يُسْحَبُوْنَ فِى النَّارِ عَلٰى وُجُوْهِهِمْ ذُوْقُوْا مَسَّ سَقَرَ
49	निश्चय ही, हमने हर चीज़ को एक निश्चित माप के साथ बनाया,	اِنَّا كُلَّ شَيْءٍ خَلَقْنٰهُ بِقَدَرٍ
50	और हमारा आदेश बस एक ही शब्द का है, जैसे आँख का झपकना,	وَمَآ اَمْرُنَآ اِلَّا وَاحِدَةٌ كَلَمْحٍ بِالْبَصَرِ
51	और निश्चय ही, हमने तुम जैसे (काफ़िरों) को पहले ही नष्ट कर दिया। तो क्या कोई है जो सबक ले?,	وَلَقَدْ اَهْلَكْنَآ اَشْيَاعَكُمْ فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ
52	और जो कुछ उन्होंने किया, वह किताबों में दर्ज़ है,	وَكُلُّ شَيْءٍ فَعَلُوْهُ فِى الزُّبُرِ
53	और हर छोटी और बड़ी चीज़ लिखी हुई है,	وَكُلُّ صَغِيْرٍ وَّكَبِيْرٍ مُّسْتَطَرٌ
54	निश्चय ही, परहेज़गार लोग बाग़ों और नदियों में होंगे,	اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِيْ جَنّٰتٍ وَّنَهَرٍ
55	एक ऐसी जगह पर जो सर्वशक्तिमान रब के पास पसंद की जाएगी,	فِيْ مَقْعَدِ صِدْقٍ عِنْدَ مَلِيْكٍ مُّقْتَدِرٍ

छंदों की संख्या	اَلرَّحْمٰن	مكية
७८	उपकारी - 55	मदनी

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

उपकारी (दयाल)

1	(अल्लाह) जो बहुत दयाल है,	اَلرَّحْمٰنُ
2	जिसने क़ुरआन सिखाया,	عَلَّمَ الْقُرْاٰنَ
3	उसने इंसान को बनाया,	خَلَقَ الْاِنْسَانَ
4	उसे बोलने की कला सिखाई,	عَلَّمَهُ الْبَيَانَ
5	सूरज और चाँद एक हिसाब के साथ चलते हैं,	اَلشَّمْسُ وَالْقَمَرُ بِحُسْبَانٍ
6	और पौधे और पेड़, दोनों (उसके सामने) झुकते हैं,	وَّالنَّجْمُ وَالشَّجَرُ يَسْجُدَانِ
7	और उसने आकाश को ऊँचा किया और संतुलन बनाया,	وَالسَّمَاءَ رَفَعَهَا وَوَضَعَ الْمِيْزَانَ
8	ताकि तुम उस संतुलन को बिगाड़ो नहीं,	اَلَّا تَطْغَوْا فِى الْمِيْزَانِ
9	और उस संतुलन को न्याय के साथ क़ायम रखो और उसे कम न करो,	وَاَقِيْمُوا الْوَزْنَ بِالْقِسْطِ وَلَا تُخْسِرُوا الْمِيْزَانَ
10	और उसने ज़मीन को मख़लूक़ के लिए बिछाया,	وَالْاَرْضَ وَضَعَهَا لِلْاَنَامِ
11	उसमें फल और खजूर के पेड़ हैं जिनमें मंजर के आवरण हैं,	فِيْهَا فَاكِهَةٌ وَّالنَّخْلُ ذَاتُ الْاَكْمَامِ
12	और दाने जो छिलके वाले हैं और सुगंधित फूल,	وَالْحَبُّ ذُو الْعَصْفِ وَالرَّيْحَانُ
13	तो तुम अपने रब की कौन सी नेमत को झुठलाओगे?,	فَبِاَيِّ اٰلَاۤءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ
14	उसने इंसान को सूखी मिट्टी से बनाया जैसे मिट्टी के बर्तन,	خَلَقَ الْاِنْسَانَ مِنْ صَلْصَالٍ كَالْفَخَّارِ
15	और उसने जिन्न को बिना धुएँ की आग की लौ से बनाया,	وَخَلَقَ الْجَآنَّ مِنْ مَّارِجٍ مِّنْ نَّارٍ
16	तो तुम अपने रब की कौन सी नेमत को झुठलाओगे?,	فَبِاَيِّ اٰلَاۤءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ
17	वह दो पूरब और दो पश्चिम का रब है,	رَبُّ الْمَشْرِقَيْنِ وَرَبُّ الْمَغْرِبَيْنِ

18	तो तुम अपने रेब की कौन सी नमेत को झठुलाओगे?,	فَبِاَيِّ اٰلَاۤءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ
19	उसने दो समद्रुों को बहने देयिा जो (आखरि मे) मलि जाते हैं,	مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ يَلْتَقِيٰنِ
20	उन दोनों के बीच एक रुकावट है जसिे वे पार नहीं करते,	بَيْنَهُمَا بَرْزَخٌ لَّا يَبْغِيٰنِ
21	तो तुम अपने रेब की कौन सी नमेत को झठुलाओगे?,	فَبِاَيِّ اٰلَاۤءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ
22	उन दोनों से मोती और मूँगा नकिलता है,	يَخْرُجُ مِنْهُمَا اللُّؤْلُؤُ وَالْمَرْجَانُ
23	तो तुम अपने रेब की कौन सी नमेत को झठुलाओगे?,	فَبِاَيِّ اٰلَاۤءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ
24	उसी के हैं वे जहाज़ जो समद्रु मे पहाड़ों की तरह तरैते हैं,	وَلَهُ الْجَوَارِ الْمُنْشَاٰتُ فِي الْبَحْرِ كَالْاَعْلَامِ
25	तो तुम अपने रेब की कौन सी नमेत को झठुलाओगे?,	فَبِاَيِّ اٰلَاۤءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ
26	ज़मीन पर जो कछु भी है वह नष्ट हो जाएगा,	كُلُّ مَنْ عَلَيْهَا فَانٍ
27	लकेनि तुम्हारे रेब का चहेरा, जो महानता और सम्मान का मालकि है, हमशेा रहगेा,	وَّيَبْقٰى وَجْهُ رَبِّكَ ذُو الْجَلٰلِ وَالْاِكْرَامِ
28	तो तुम अपने रेब की कौन सी नमेत को झठुलाओगे?,	فَبِاَيِّ اٰلَاۤءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ
29	आकाशों और ज़मीन मे जो कछु है, वह उससे माँगता है हर वक़्त वह व्यस्त रहता है,	يَسْـَٔلُه مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ كُلَّ يَوْمٍ هُوَ فِيْ شَاْنٍ
30	तो तुम अपने रेब की कौन सी नमेत को झठुलाओगे?,	فَبِاَيِّ اٰلَاۤءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ
31	हम तुम दोनों, ऐ इंसान और जनि्न, की पूरी तरह जाचँ करेंगे!,	سَنَفْرُغُ لَكُمْ اَيُّهَ الثَّقَلٰنِ
32	तो तुम अपने रेब की कौन सी नमेत को झठुलाओगे?,	فَبِاَيِّ اٰلَاۤءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ
33	ऐ जनि्न और इंसान के समहू! अगर तुम आकाशों और ज़मीन के कोनों को भदेने की ताकत रखते हो, तो भदे लो। तुम इस बनिा (अल्लाह की) ताकत के नहीं भदे सकते,	يٰمَعْشَرَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ اِنِ اسْتَطَعْتُمْ اَنْ تَنْفُذُوْا مِنْ اَقْطَارِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ فَانْفُذُوْا لَا تَنْفُذُوْنَ اِلَّا بِسُلْطٰنٍ
34	तो तुम अपने रेब की कौन सी नमेत को झठुलाओगे?,	فَبِاَيِّ اٰلَاۤءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ
35	तुम पर (जनि्न और इंसान) आग की लपटें और पघिला हुआ ताँबा भजेा जाएगा, फरि तुम उससे बच नहीं सकोगे,	يُرْسَلُ عَلَيْكُمَا شُوَاظٌ مِّنْ نَّارٍ وَّنُحَاسٌ فَلَا تَنْتَصِرَانِ
36	तो तुम अपने रेब की कौन सी नमेत को झठुलाओगे?,	فَبِاَيِّ اٰلَاۤءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ

37	तो जब आकाश फट जाएगा और गुलाब की तरह लाल हो जाएगा, जैसे (चमकता) तेल,	فَاِذَا انْشَقَّتِ السَّمَاءُ فَكَانَتْ وَرْدَةً كَالدِّهَانِ
38	तो तुम अपने रब की कौन सी नेमत को झुठलाओगे?,	فَبِاَيِّ اٰلَاۤءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ
39	उस दिन इंसान और जिन्न से उनके गुनाहों के बारे में नहीं पूछा जाएगा,	فَيَوْمَئِذٍ لَّا يُسْـَٔلُ عَنْ ذَنْۢبِهٖۤ اِنْسٌ وَّلَا جَانٌّ
40	तो तुम अपने रब की कौन सी नेमत को झुठलाओगे?,	فَبِاَيِّ اٰلَاۤءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ
41	गुनहगारों को उनकी निशानियों से पहचाना जाएगा, फिर उनकी माथे की चोटी और पैरों को पकड़ लिया जाएगा,	يُعْرَفُ الْمُجْرِمُوْنَ بِسِيْمٰهُمْ فَيُؤْخَذُ بِالنَّوَاصِيْ وَالْاَقْدَامِ
42	तो तुम अपने रब की कौन सी नेमत को झुठलाओगे?,	فَبِاَيِّ اٰلَاۤءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ
43	यह वह जहन्नम है जिसे गुनहगार लोग झुठलाते थे,	هٰذِهٖ جَهَنَّمُ الَّتِيْ يُكَذِّبُ بِهَا الْمُجْرِمُوْنَ
44	वे वहाँ और उबलते पानी के बीच चक्कर लगाएँगे,	يَطُوْفُوْنَ بَيْنَهَا وَبَيْنَ حَمِيْمٍ اٰنٍ
45	तो तुम अपने रब की कौन सी नेमत को झुठलाओगे?,	فَبِاَيِّ اٰلَاۤءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ
46	और जो अपने रब के सामने खड़े होने से डरता है, उसके लिए दो जन्नतें हैं,	وَلِمَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ جَنَّتٰنِ
47	तो तुम अपने रब की कौन सी नेमत को झुठलाओगे?,	فَبِاَيِّ اٰلَاۤءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ
48	वे दोनों जन्नतें तरह-तरह के पेड़ों और फलों से भरी होंगी,	ذَوَاتَاۤ اَفْنَانٍ
49	तो तुम अपने रब की कौन सी नेमत को झुठलाओगे?,	فَبِاَيِّ اٰلَاۤءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ
50	उन दोनों जन्नतों में दो उमड़ते हुए चश्मे होंगे,	فِيْهِمَا عَيْنٰنِ تَجْرِيٰنِ
51	तो तुम अपने रब की कौन सी नेमत को झुठलाओगे?,	فَبِاَيِّ اٰلَاۤءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ
52	उन दोनों जन्नतों में हर तरह के फल जोड़े-जोड़े में होंगे,	فِيْهِمَا مِنْ كُلِّ فَاكِهَةٍ زَوْجٰنِ
53	तो तुम अपने रब की कौन सी नेमत को झुठलाओगे?,	فَبِاَيِّ اٰلَاۤءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ
54	वे मोटी रेशम की कालीनों पर टिके होंगे और दोनों जन्नतों के फल पास में (लटकते) होंगे,	مُتَّكِـِٕيْنَ عَلٰى فُرُشٍۭ بَطَاۤئِنُهَا مِنْ اِسْتَبْرَقٍ وَجَنَا الْجَنَّتَيْنِ دَانٍ
55	तो तुम अपने रब की कौन सी नेमत को झुठलाओगे?,	فَبِاَيِّ اٰلَاۤءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ

56	उन जन्नतों में ऐसी हूरें होंगी जो नज़रें नीची रखती हैं, जिन्हें न इंसान ने छुआ और न जिन्न ने,	فِيْهِنَّ قٰصِرٰتُ الطَّرْفِ لَمْ يَطْمِثْهُنَّ اِنْسٌ قَبْلَهُمْ وَلَا جَانٌّ
57	तो तुम अपने रब की कौन सी नमेत को झठुलाओगे?,	فَبِاَيِّ اٰلَاۤءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ
58	वे जैसे याकूत और मूँगे की मणियाँ होंगी,	كَاَنَّهُنَّ الْيَاقُوْتُ وَالْمَرْجَانُ
59	तो तुम अपने रब की कौन सी नमेत को झठुलाओगे?,	فَبِاَيِّ اٰلَاۤءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ
60	क्या नेकी का बदला नेकी के सिवा कछु और हो सकता है?,	هَلْ جَزَاءُ الْاِحْسَانِ اِلَّا الْاِحْسَانُ
61	तो तुम अपने रब की कौन सी नमेत को झठुलाओगे?,	فَبِاَيِّ اٰلَاۤءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ
62	और उन दो जन्नतों के अलावा दो और जन्नतें हैं,	وَمِنْ دُوْنِهِمَا جَنَّتٰنِ
63	तो तुम अपने रब की कौन सी नमेत को झठुलाओगे?,	فَبِاَيِّ اٰلَاۤءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ
64	वे दोनों (जन्नतें) गहरे हरे रंग की होंगी,	مُدْهَامَّتٰنِ
65	तो तुम अपने रब की कौन सी नमेत को झठुलाओगे?,	فَبِاَيِّ اٰلَاۤءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ
66	उनमें दो उमड़ते हुए चश्मे होंगे,	فِيْهِمَا عَيْنٰنِ نَضَّاخَتٰنِ
67	तो तुम अपने रब की कौन सी नमेत को झठुलाओगे?,	فَبِاَيِّ اٰلَاۤءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ
68	उन दोनों जन्नतों में फल, खजूर और अनार होंगे,	فِيْهِمَا فَاكِهَةٌ وَّنَخْلٌ وَّرُمَّانٌ
69	तो तुम अपने रब की कौन सी नमेत को झठुलाओगे?,	فَبِاَيِّ اٰلَاۤءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ
70	उन जन्नतों में अच्छी और खूबसूरत हूरें होंगी,	فِيْهِنَّ خَيْرٰتٌ حِسَانٌ
71	तो तुम अपने रब की कौन सी नमेत को झठुलाओगे?,	فَبِاَيِّ اٰلَاۤءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ
72	हूरें जो खेमों में सुरक्षित रखी गई हैं,	حُوْرٌ مَّقْصُوْرٰتٌ فِى الْخِيَامِ
73	तो तुम अपने रब की कौन सी नमेत को झठुलाओगे?,	فَبِاَيِّ اٰلَاۤءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ
74	उन्हें पहले ने इंसान ने छुआ और न जिन्न ने,	لَمْ يَطْمِثْهُنَّ اِنْسٌ قَبْلَهُمْ وَلَا جَانٌّ
75	तो तुम अपने रब की कौन सी नमेत को झठुलाओगे?,	فَبِاَيِّ اٰلَاۤءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ

مُتَّكِـِٕيْنَ عَلٰى رَفْرَفٍ خُضْرٍ وَّعَبْقَرِيٍّ حِسَانٍ	**76**	व हेर तकियों और ख़ूबसूरत कालीनों पर टकि होंग,
فَبِاَيِّ اٰلَاۤءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ	**77**	तो तुम अपन रेब की कौन सी नमेत को झठुलाओग?,
تَبٰرَكَ اسْمُ رَبِّكَ ذِى الْجَلٰلِ وَالْاِكْرَامِ	**78**	तरे रेब का नाम, जो महानता और सम्मान का मालकि ह, बहतु पवतिर ह,

छंदों की संख्या	اَلْوَاقِعَة	مكية
९६	अल-Waqi'ah - 56	मक्की

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल-Waqi'ah (घटना)

1	जब क़ियामत का दिन आएगा,	اِذَا وَقَعَتِ الْوَاقِعَةُ
2	उसके होने को झुठलाया नहीं जा सकता,	لَيْسَ لِوَقْعَتِهَا كَاذِبَةٌ
3	(यह घटना) एक समूह को नीचा करेगी और दूसरे को ऊँचा करेगी,	خَافِضَةٌ رَّافِعَةٌ
4	जब ज़मीन को बहुत ज़ोर से हिलाया जाएगा,	اِذَا رُجَّتِ الْاَرْضُ رَجًّا
5	और पहाड़ पूरी तरह चूर-चूर कर दिए जाएँगे,	وَّبُسَّتِ الْجِبَالُ بَسًّا
6	तो वे धूल बन जाएँगे जो उड़ती रहेगी,	فَكَانَتْ هَبَاءً مُّنْۢبَثًّا
7	और तुम तीन समूहों में बँट जाओगे,	وَّكُنْتُمْ اَزْوَاجًا ثَلٰثَةً
8	यानी दाहिनी तरफ़ वाले, कितने सम्मानित हैं दाहिनी तरफ़ वाले,	فَاَصْحٰبُ الْمَيْمَنَةِ مَآ اَصْحٰبُ الْمَيْمَنَةِ
9	और बाईं तरफ़ वाले, कितने दुखी हैं बाईं तरफ़ वाले,	وَاَصْحٰبُ الْمَشْـَٔمَةِ مَآ اَصْحٰبُ الْمَشْـَٔمَةِ
10	और जो सबसे पहले (ईमान लाए), वही सबसे पहले (जन्नत में) दाख़िल होंगे,	وَالسّٰبِقُوْنَ السّٰبِقُوْنَ
11	वे ही हैं जो (अल्लाह के) करीब होंगे,	اُولٰٓئِكَ الْمُقَرَّبُوْنَ
12	ख़ुशियों भरी जन्नत में होंगे,	فِيْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ
13	पुराने लोगों में से एक बड़ा समूह,	ثُلَّةٌ مِّنَ الْاَوَّلِيْنَ
14	और बाद वालों में से एक छोटा समूह,	وَقَلِيْلٌ مِّنَ الْاٰخِرِيْنَ
15	वे सोने और जवाहरात से जड़े तख़्तों पर होंगे,	عَلٰى سُرُرٍ مَّوْضُوْنَةٍ
16	वे एक-दूसरे के सामने टेकिकर बैठे होंगे,	مُّتَّكِـِٕيْنَ عَلَيْهَا مُتَقٰبِلِيْنَ
17	उनके आसपास हमेशा जवान रहने वाले नौजवान होंगे,	يَطُوْفُ عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ مُّخَلَّدُوْنَ

18	गलिास, सराही और बहत पानी स भर पयाल लेकर,	بِاَكْوَابٍ وَّاَبَارِيْقَ وَكَأْسٍ مِّنْ مَّعِيْنٍ
19	जनिस ने सरिदरद होगा और न नशा,	لَّا يُصَدَّعُوْنَ عَنْهَا وَلَا يُنْزِفُوْنَ
20	और जो फल व चनुगे,	وَفَاكِهَةٍ مِّمَّا يَتَخَيَّرُوْنَ
21	और जो पकषी का मास व चाहगे,	وَلَحْمِ طَيْرٍ مِّمَّا يَشْتَهُوْنَ
22	और खबसरूत आखों वाली हरू होगी,	وَحُوْرٌ عِيْنٌ
23	जसै अचछी तरह सरकषति मोती,	كَاَمْثَالِ اللُّؤْلُؤِ الْمَكْنُوْنِ
24	उनक कए हए कारयो क बदल म,	جَزَاءً بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ
25	वहा वे कोई बकेार बात नही सनुगे,	لَا يَسْمَعُوْنَ فِيْهَا لَغْوًا وَّلَا تَأْثِيْمًا
26	बलक सलाम की बात सनुगे,	اِلَّا قِيْلًا سَلٰمًا سَلٰمًا
27	और दाहनी तरफ वाल, दाहनी तरफ वाल कौन ह?,	وَاَصْحٰبُ الْيَمِيْنِ مَآ اَصْحٰبُ الْيَمِيْنِ
28	(व) बनिा काटो वाल बदिारा क पडो क बीच होग,	فِيْ سِدْرٍ مَّخْضُوْدٍ
29	और कले क पडो क बीच, जनिक फल एक क ऊपर एक होग,	وَّطَلْحٍ مَّنْضُوْدٍ
30	और फलै हई छावँ म,	وَّظِلٍّ مَّمْدُوْدٍ
31	और लगातार बहन वाल पानी म,	وَّمَاءٍ مَّسْكُوْبٍ
32	और बहत सार फलो म,	وَّفَاكِهَةٍ كَثِيْرَةٍ
33	जो न खतम होग और न लने म मना होग,	لَّا مَقْطُوْعَةٍ وَّلَا مَمْنُوْعَةٍ
34	और मोट, नरम गददो पर,	وَّفُرُشٍ مَّرْفُوْعَةٍ
35	हमन उनह (हरूो को) खास तौर पर बनाया,	اِنَّآ اَنْشَاْنٰهُنَّ اِنْشَاءً
36	और उनह कवारी बनाया,	فَجَعَلْنٰهُنَّ اَبْكَارًا
37	जो पयार करन वाली और एक उमर की होगी,	عُرُبًا اَتْرَابًا
38	दाहनी तरफ वालो क लिए,	لِّاَصْحٰبِ الْيَمِيْنِ
39	पराने लोगो म स एक बडा समहू,	ثُلَّةٌ مِّنَ الْاَوَّلِيْنَ

40	और बाद वालों में से भी एक बड़ा समूह,	وَثُلَّةٌ مِّنَ الْاٰخِرِيْنَ
41	और बाईं तरफ़ वाले, कितने दुखी हैं बाईं तरफ़ वाले,	وَاَصْحٰبُ الشِّمَالِ مَآ اَصْحٰبُ الشِّمَالِ
42	(वो) बहुत गरम हवा और उबलते पानी की सज़ा में होंगे,	فِيْ سَمُوْمٍ وَّحَمِيْمٍ
43	और काले धुएँ की छाँव में,	وَّظِلٍّ مِّنْ يَّحْمُوْمٍ
44	जो न ठंडी होगी और न सुख़द,	لَّا بَارِدٍ وَّلَا كَرِيْمٍ
45	निश्चय ही, वे पहले (दुनिया में) ऐशो-आराम में थे,	اِنَّهُمْ كَانُوْا قَبْلَ ذٰلِكَ مُتْرَفِيْنَ
46	और बड़े गुनाह करते रहे,	وَكَانُوْا يُصِرُّوْنَ عَلَى الْحِنْثِ الْعَظِيْمِ
47	और वे कहते थे, 'जब हम मर जाएँगे और मिट्टी व हड्डियाँ बन जाएँगे, क्या हम फिर से उठाए जाएँगे?,	وَكَانُوْا يَقُوْلُوْنَ اَئِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَّعِظَامًا ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ
48	क्या हमारे पुराने पूर्वज भी (उठाए जाएँगे)?',	اَوَاٰبَاؤُنَا الْاَوَّلُوْنَ
49	कह दो, '(हाँ), निश्चय ही पुराने और बाद वाले लोग,	قُلْ اِنَّ الْاَوَّلِيْنَ وَالْاٰخِرِيْنَ
50	सभी एक निश्चित समय पर, एक ज्ञात दिन में इकट्ठा किए जाएँगे,	لَمَجْمُوْعُوْنَ اِلٰى مِيْقَاتِ يَوْمٍ مَّعْلُوْمٍ
51	फिर निश्चय ही तुम, ऐ भटके हुए और झुठलाने वाले लोगो!,	ثُمَّ اِنَّكُمْ اَيُّهَا الضَّآلُّوْنَ الْمُكَذِّبُوْنَ
52	निश्चय ही ज़क़्क़ूम का पेड़ खाओगे,	لَاٰكِلُوْنَ مِنْ شَجَرٍ مِّنْ زَقُّوْمٍ
53	और उससे अपने पेट भरोगे,	فَمَالِـُٔوْنَ مِنْهَا الْبُطُوْنَ
54	उसके बाद तुम बहुत गरम पानी पियोगे,	فَشٰرِبُوْنَ عَلَيْهِ مِنَ الْحَمِيْمِ
55	और ऐसे पियोगे जैसे बहुत प्यासा ऊँट पीता है,	فَشٰرِبُوْنَ شُرْبَ الْهِيْمِ
56	यह उनके लिए क़ियामत के दिन का आतिथ्य होगा,	هٰذَا نُزُلُهُمْ يَوْمَ الدِّيْنِ
57	हमने तुम्हें बनाया, फिर तुम (पुनर्जनन) को सत्य क्यों नहीं मानते?,	نَحْنُ خَلَقْنٰكُمْ فَلَوْلَا تُصَدِّقُوْنَ
58	क्या तुमने उस (बीज) को देखा जो तुम निकालते हो?,	اَفَرَءَيْتُمْ مَّا تُمْنُوْنَ
59	क्या तुमने उसे बनाया, या हम इसके रचयिता हैं?,	ءَاَنْتُمْ تَخْلُقُوْنَهٗٓ اَمْ نَحْنُ الْخٰلِقُوْنَ

60	हमने तुममें से हर एक की मृत्यु निश्चित की है और हम कमज़ोर नहीं है,	نَحْنُ قَدَّرْنَا بَيْنَكُمُ الْمَوْتَ وَمَا نَحْنُ بِمَسْبُوْقِيْنَ
61	कि तुम्हारी जगह तुम जैसे लोगों को लाएँ (दुनिया में) और तुम्हें (आख़िरत में) ऐसी हालत में उठाएँ जो तुम नहीं जानते,	عَلٰٓى اَنْ نُّبَدِّلَ اَمْثَالَكُمْ وَنُنْشِئَكُمْ فِيْ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ
62	और निश्चय ही तुम पहली सृष्टि को जान चुके हो, फिर तुम सबक क्यों नहीं लेते?,	وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ النَّشْاَةَ الْاُوْلٰى فَلَوْلَا تَذَكَّرُوْنَ
63	क्या तुमने उस बीज को देखा जो तुम बोते हो?,	اَفَرَءَيْتُمْ مَّا تَحْرُثُوْنَ
64	क्या तुम उसे उगाते हो, या हम उसे उगाने वाले है?,	ءَاَنْتُمْ تَزْرَعُوْنَهٗٓ اَمْ نَحْنُ الزّٰرِعُوْنَ
65	अगर हम चाहें, तो उसे पूरी तरह चूर-चूर कर दें, फिर तुम हैरान होकर कहोगे,	لَوْ نَشَاۤءُ لَجَعَلْنٰهُ حُطَامًا فَظَلْتُمْ تَفَكَّهُوْنَ
66	(कहते हुए), 'निश्चय ही, हम बहुत नुक़सान में है,	اِنَّا لَمُغْرَمُوْنَ
67	बल्कि हम कुछ भी हासिल नहीं कर सके,'	بَلْ نَحْنُ مَحْرُوْمُوْنَ
68	क्या तुमने उस पानी को देखा जो तुम पीते हो?,	اَفَرَءَيْتُمُ الْمَاۤءَ الَّذِيْ تَشْرَبُوْنَ
69	क्या तुमने उसे बादल से उतारा, या हम उतारने वाले है?,	ءَاَنْتُمْ اَنْزَلْتُمُوْهُ مِنَ الْمُزْنِ اَمْ نَحْنُ الْمُنْزِلُوْنَ
70	अगर हम चाहें, तो उसे खारा कर दें, फिर तुम कृतज्ञ क्यों नहीं होते?,	لَوْ نَشَاۤءُ جَعَلْنٰهُ اُجَاجًا فَلَوْلَا تَشْكُرُوْنَ
71	तो क्या तुमने उस आग को देखा जो तुम जलाते हो (लकड़ी से)?,	اَفَرَءَيْتُمُ النَّارَ الَّتِيْ تُوْرُوْنَ
72	क्या तुमने उसका पेड़ उगाया, या हमने उसे उगाया?,	ءَاَنْتُمْ اَنْشَاْتُمْ شَجَرَتَهَآ اَمْ نَحْنُ الْمُنْشِـُٔوْنَ
73	हमने उसे (आग को) याददाश्त और मुसाफिरों के लिए उपयोगी बनाया,	نَحْنُ جَعَلْنٰهَا تَذْكِرَةً وَّمَتَاعًا لِّلْمُقْوِيْنَ
74	तो अपने महान रब के नाम की तसबीह कर,	فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيْمِ
75	फिर मैं तारों के डूबने की जगहों की सौगंध लेता हूँ,	فَلَآ اُقْسِمُ بِمَوٰقِعِ النُّجُوْمِ
76	और निश्चय ही यह बहुत बड़ी सौगंध है, अगर तुम जानते,	وَاِنَّهٗ لَقَسَمٌ لَّوْ تَعْلَمُوْنَ عَظِيْمٌ
77	और निश्चय ही यह बहुत सम्मानित क़ुरआन है,	اِنَّهٗ لَقُرْاٰنٌ كَرِيْمٌ
78	जो एक सुरक्षित किताब (लौह महफ़ूज़) में है,	فِيْ كِتٰبٍ مَّكْنُوْنٍ

79	जसि कोई नहीं छू सकता सविाय उन दासों क जो पवत्रि कए गए ह,	لَّا يَمَسُّه اِلَّا الْمُطَهَّرُوْنَ
80	जो सार जहानों क रब की ओर स उतारा गया ह,	تَنْزِيْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ
81	क्या तमु इस ख़बर (क़ुरआन) को हलक़ म लते हो?,	اَفَبِهٰذَا الْحَدِيْثِ اَنْتُمْ مُّدْهِنُوْنَ
82	और तमु जो रज़िक़ (अल्लाह स) पात हो, उस झठुलान का ज़रयि बनात हो?,	وَتَجْعَلُوْنَ رِزْقَكُمْ اَنَّكُمْ تُكَذِّبُوْنَ
83	तो फरि क्यों (रोकत नहीं) जब (रूह) गल तक पहचुँ जाती ह,	فَلَوْلَآ اِذَا بَلَغَتِ الْحُلْقُوْمَ
84	और तमु उस समय दखे रह होत हो,	وَاَنْتُمْ حِيْنَئِذٍ تَنْظُرُوْنَ
85	और हम उसस तमुस ज़्यादा करीब होत ह, लकेनि तमु नहीं दखेत,	وَنَحْنُ اَقْرَبُ اِلَيْهِ مِنْكُمْ وَلٰكِنْ لَّا تُبْصِرُوْنَ
86	तो अगर तमु (अल्लाह क) क़ाब़ू म नहीं हो,	فَلَوْلَآ اِنْ كُنْتُمْ غَيْرَ مَدِيْنِيْنَ
87	तो उस (रूह) को वापस क्यों नहीं लात, अगर तमु सच्च हो?,	تَرْجِعُوْنَهَآ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ
88	अगर वह (मरन वाला) उनम स ह जो (अल्लाह क) करीब कए गए ह,	فَاَمَّآ اِنْ كَانَ مِنَ الْمُقَرَّبِيْنَ
89	तो उस शांति, रज़िक़ और ख़शुयिों भरी जन्नत मलिगेी,	فَرَوْحٌ وَّرَيْحَانٌ وَّجَنَّتُ نَعِيْمٍ
90	और अगर वह दाहनिी तरफ़ वालों म स ह,	وَاَمَّآ اِنْ كَانَ مِنْ اَصْحٰبِ الْيَمِيْنِ
91	तो (फ़रिश्त कहगे), 'तझु पर सलाम हो, ऐ दाहनिी तरफ़ वाल!',	فَسَلٰمٌ لَّكَ مِنْ اَصْحٰبِ الْيَمِيْنِ
92	और अगर वह उन लोगों म स ह जो झठुलान वाल और भटक हुए ह,	وَاَمَّآ اِنْ كَانَ مِنَ الْمُكَذِّبِيْنَ الضَّآلِّيْنَ
93	तो उस उबलत पानी का आतथि्य मलिगेा,	فَنُزُلٌ مِّنْ حَمِيْمٍ
94	और वह जहन्नम म जलाया जाएगा,	وَّتَصْلِيَةُ جَحِيْمٍ
95	नश्चि य ही, यह पूर्ण यक़ीन की बात ह,	اِنَّ هٰذَا لَهُوَ حَقُّ الْيَقِيْنِ
96	तो अपन महान रब क नाम की तसबीह कर,	فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيْمِ

छदों की संख़्या	اَلْحَدِيد	मदनी
२९	अल हादीद - 57	मदनी

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल हादीद (लोहा)

1	जो कछ आकाशो म है और जो कछ धरती म है, वह अल्लाह की तस्बीह करता है वही बहत शक्तिशाली, बहत हकिमत वाला है	سَبَّحَ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ
2	उसी की बादशाही है आकाशो और धरती की, वह जदिगी दता है और मौत दता है, और वह हर चीज पर कदरत रखता है	لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ
3	वही पहला है, वही आखरी है, वही ज़ाहरि है और वही बातनि है; और वह हर चीज को जानने वाला है	هُوَ الْاَوَّلُ وَالْاٰخِرُ وَالظَّاهِرُ وَالْبَاطِنُ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ
4	वही है जसिने आकाशो और धरती को छह दनिो म बनाया; फरि वह अरश पर वराजमान हआ। वह जानता है जो कछ धरती म दाखलि होता है और जो कछ उसम से नकिलता है, जो कछ आकाश से उतरता है और जो कछ उसकी ओर चढ़ता है और वह तमहारे साथ है जहा कहीं तम हो। और अल्लाह वह सब दखेता है जो तम करते हो।	هُوَ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ يَعْلَمُ مَا يَلِجُ فِي الْاَرْضِ وَمَا يَخْرُجُ مِنْهَا وَمَا يَنْزِلُ مِنَ السَّمَاۤءِ وَمَا يَعْرُجُ فِيْهَا وَهُوَ مَعَكُمْ اَيْنَ مَا كُنْتُمْ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ
5	उसी की बादशाही है आकाशो और धरती की। और सार मामले अल्लाह की ओर लौटाए जाते है	لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ
6	वह रात को दनि म दाखलि करता है और दनि को रात म दाखलि करता है और वह दलिो की बातो को बहत अच्छ से जानता है	يُوْلِجُ الَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُوْلِجُ النَّهَارَ فِي الَّيْلِ وَهُوَ عَلِيْمٌ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ
7	अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाओ और उस माल म से खरच करो (अल्लाह क रास्त म) जसिका उसने तमह नायब बनाया है तो तमम से जो लोग ईमान लाए और (अपना माल) खरच कयिा, उनके लिए बहत बड़ा इनाम है	اٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَاَنْفِقُوْا مِمَّا جَعَلَكُمْ مُّسْتَخْلَفِيْنَ فِيْهِ فَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَاَنْفَقُوْا لَهُمْ اَجْرٌ كَبِيْرٌ
8	और तम अल्लाह पर ईमान क्यो नही लाते, जबकि रसूल तमह अपने रब पर ईमान लाने की दावत दते हो? और उसने तमस (वफादारी का) अहद लयिा है, अगर तम मोमनि हो।	وَمَا لَكُمْ لَا تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالرَّسُوْلُ يَدْعُوْكُمْ لِتُؤْمِنُوْا بِرَبِّكُمْ وَقَدْ اَخَذَ مِيْثَاقَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ

هُوَ الَّذِيْ يُنَزِّلُ عَلٰى عَبْدِهٖٓ اٰيٰتٍۢ بَيِّنٰتٍ لِّيُخْرِجَكُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ۭ وَاِنَّ اللّٰهَ بِكُمْ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ	**9**	वही ह जिसने अपने बन्दे (मुहम्मद) पर सुपष्ट आयतें (क़ुरआन) उतारीं ताकि वह तुम्हें अंधेरों से नूर की ओर निकाले और निश्चित रूप से, तुम्हारे लिए अल्लाह बहुत मेहरबान, बहुत रहम करने वाला है।
وَمَا لَكُمْ اَلَّا تُنْفِقُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَلِلّٰهِ مِيْرَاثُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ لَا يَسْتَوِيْ مِنْكُمْ مَّنْ اَنْفَقَ مِنْ قَبْلِ الْفَتْحِ وَقَاتَلَ ۭ اُولٰۗىِٕكَ اَعْظَمُ دَرَجَةً مِّنَ الَّذِيْنَ اَنْفَقُوْا مِنْۢ بَعْدُ وَقَاتَلُوْا ۭ وَكُلًّا وَّعَدَ اللّٰهُ الْحُسْنٰى ۭ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ	**10**	और तुम अल्लाह के रास्ते में अपना माल क्यों नहीं ख़र्च करते, जबकि आकाशों और धरती की मीरास अल्लाह के लिए है? तुममें से जो लोग (मक्का की) फ़तह से पहले ख़र्च करते थे और जंग करते थे, वे बराबर नहीं। उनकी मरतबा उन लोगों से ज़्यादा है जो इसके बाद ख़र्च करते हैं और जंग करते हैं। और अल्लाह ने दोनों के लिए बेहतर (इनाम) का वादा किया है। और अल्लाह वह सब बहुत बारीकी से देखता है जो तुम करते हो।
مَنْ ذَا الَّذِيْ يُقْرِضُ اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا فَيُضٰعِفَهٗ لَهٗ وَلَهٗٓ اَجْرٌ كَرِيْمٌ	**11**	जो कोई अल्लाह को अच्छा क़र्ज़ देता है, तो अल्लाह उसे कई गुना करके लौटाएगा, और उसके लिए इज़्ज़त वाला इनाम है।
يَوْمَ تَرَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ يَسْعٰى نُوْرُهُمْ بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَبِاَيْمَانِهِمْ بُشْرٰىكُمُ الْيَوْمَ جَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۭ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ	**12**	उस दिन तुम मोमिन मर्दों और औरतों को देखोगे कि उनका नूर उनके आगे और उनकी दाईं तरफ़ चमक रहा होगा, (उनसे कहा जाएगा), 'आज तुम्हारे लिए ख़ुशख़बरी है, (वह) जन्नत है जिसके नीचे नहरें बहती हैं, वे उसमें हमेशा रहेंगे। यही बहुत बड़ी कामयाबी है।'
يَوْمَ يَقُوْلُ الْمُنٰفِقُوْنَ وَالْمُنٰفِقٰتُ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوا انْظُرُوْنَا نَقْتَبِسْ مِنْ نُّوْرِكُمْ قِيْلَ ارْجِعُوْا وَرَاۗءَكُمْ فَالْتَمِسُوْا نُوْرًا ۭ فَضُرِبَ بَيْنَهُمْ بِسُوْرٍ لَّهٗ بَابٌۢ بَاطِنُهٗ فِيْهِ الرَّحْمَةُ وَظَاهِرُهٗ مِنْ قِبَلِهِ الْعَذَابُ	**13**	उस दिन मुनाफ़िक़ मर्द और औरतें मोमिनों से कहेंगे, 'हमारा इंतज़ार करो! हम तुम्हारा नूर लेना चाहते हैं।' (उनसे) कहा जाएगा, 'पीछे लौट जाओ और (अपने लिए) नूर तलाश करो।' फिर उनके बीच एक दीवार खड़ी कर दी जाएगी जिसमें दरवाज़ा होगा। इसके अंदर रहमत होगी और इसके बाहर सज़ा होगी।
يُنَادُوْنَهُمْ اَلَمْ نَكُنْ مَّعَكُمْ ۭ قَالُوْا بَلٰى وَلٰكِنَّكُمْ فَتَنْتُمْ اَنْفُسَكُمْ وَتَرَبَّصْتُمْ وَارْتَبْتُمْ وَغَرَّتْكُمُ الْاَمَانِيُّ حَتّٰى جَاۗءَ اَمْرُ اللّٰهِ وَغَرَّكُمْ بِاللّٰهِ الْغَرُوْرُ	**14**	मुनाफ़िक़ मोमिनों को पुकारेंगे, 'क्या हम तुम्हारे साथ नहीं थे?' वे जवाब देंगे, 'हाँ, लेकिन तुमने अपने आप को नुक़सान पहुँचाया, और (बस) इंतज़ार करते रहे, और (अल्लाह के वादे पर) शक किया और ख़्वाहिशों ने तुम्हें धोखा दिया यहाँ तक कि अल्लाह का हुक्म आ गया; और शैतान ने तुम्हें अल्लाह के बारे में धोखा दिया।
فَالْيَوْمَ لَا يُؤْخَذُ مِنْكُمْ فِدْيَةٌ وَّلَا مِنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۭ مَاْوٰىكُمُ النَّارُ ۭ هِيَ مَوْلٰىكُمْ ۭ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ	**15**	तो आज न तुमसे कोई फ़िरौती क़बूल होगी और न काफ़िरों से। तुम्हारा ठिकाना जहन्नम है। वही तुम्हारा आश्रय है, और वह बहुत बुरा ठिकाना है।
اَلَمْ يَاْنِ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنْ تَخْشَعَ قُلُوْبُهُمْ لِذِكْرِ اللّٰهِ وَمَا نَزَلَ مِنَ الْحَقِّ ۙ وَلَا يَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلُ فَطَالَ عَلَيْهِمُ الْاَمَدُ فَقَسَتْ قُلُوْبُهُمْ ۭ وَكَثِيْرٌ مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ	**16**	क्या मोमिनों के लिए वह वक़्त नहीं आया कि उनके दिल अल्लाह की याद और उस हक़ के सामने झुक जाएँ जो उन पर उतारा गया, और वे उन लोगों की तरह न हों जिन्हें उससे पहले किताब दी गई, फिर उनके ऊपर लंबा वक़्त गुज़र गया तो उनके दिल सख़्त हो गए। और उनमें से बहुत से फ़ासिक़ हो गए।

اِعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ يُحْيِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا قَدْ بَيَّنَّا لَكُمُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ	जान लो कि अल्लाह धरती को उसकी मौत (सूखने) के बाद ज़िंदगी देता है। निश्चित रूप से, हमने तुम्हारे लिए (हमारी कुदरत की) निशानियाँ साफ़ कर दी हैं ताकि तुम समझो।	**17**
اِنَّ الْمُصَّدِّقِيْنَ وَالْمُصَّدِّقٰتِ وَاَقْرَضُوا اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا يُّضٰعَفُ لَهُمْ وَلَهُمْ اَجْرٌ كَرِيْمٌ	निश्चित रूप से, जो मर्द और औरतें सदका देते हैं और अल्लाह को अच्छा क़र्ज़ देते हैं, उनके लिए वह कई गुना किया जाएगा; और उनके लिए इज़्ज़त वाला इनाम है।	**18**
وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖٓ اُولٰٓئِكَ هُمُ الصِّدِّيْقُوْنَ وَالشُّهَدَاۤءُ عِنْدَ رَبِّهِمْ لَهُمْ اَجْرُهُمْ وَنُوْرُهُمْ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَآ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ	और जो लोग अल्लाह और उसके रसूलों पर ईमान लाए, वही लोग अपने रब के पास सच्चे और गवाह हैं। उनके लिए इनाम और नूर है। लेकिन जो लोग काफ़िर हुए और हमारी आयतों को झुठलाया, वही लोग जहन्नम वाले हैं।	**19**
اِعْلَمُوْٓا اَنَّمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ وَّلَهْوٌ وَّزِيْنَةٌ وَّتَفَاخُرٌۢ بَيْنَكُمْ وَتَكَاثُرٌ فِى الْاَمْوَالِ وَالْاَوْلَادِ كَمَثَلِ غَيْثٍ اَعْجَبَ الْكُفَّارَ نَبَاتُهٗ ثُمَّ يَهِيْجُ فَتَرٰىهُ مُصْفَرًّا ثُمَّ يَكُوْنُ حُطَامًا وَفِى الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ شَدِيْدٌ وَّمَغْفِرَةٌ مِّنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانٌ وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا مَتَاعُ الْغُرُوْرِ	जान लो, निश्चित रूप से, दुनिया की ज़िंदगी बस खेल और तमाशा, ज़ीनत और आपस में फ़ख़्र करना और माल और औलाद में बढ़ने की होड़ है, जैसे बारिश जिसके पौधे किसानों को हैरान करते हैं, फिर वह सूख जाता है और तुम उसका रंग पीला देखते हो फिर वह टुकड़े-टुकड़े हो जाता है। और आख़िरत में (तो) सख़्त सज़ा है और अल्लाह की माफ़ी और उसकी रज़ा है। और दुनिया की ज़िंदगी बस धोखे की मस्ती है।	**20**
سَابِقُوْٓا اِلٰى مَغْفِرَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا كَعَرْضِ السَّمَاۤءِ وَالْاَرْضِ اُعِدَّتْ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ ذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَاۤءُ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ	अपने रब की माफ़ी और उस जन्नत की ओर दौड़ो जिसकी चौड़ाई आकाशों और धरती जितनी है, जो अल्लाह और उसके रसूलों पर ईमान लाने वालों के लिए तैयार की गई है। यही अल्लाह की मेहरबानी है, जिसे वह जिसे चाहता है देता है। और अल्लाह बहुत बड़ी मेहरबानी वाला है।	**21**
مَآ اَصَابَ مِنْ مُّصِيْبَةٍ فِى الْاَرْضِ وَلَا فِيْٓ اَنْفُسِكُمْ اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ مِّنْ قَبْلِ اَنْ نَّبْرَاَهَا اِنَّ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرٌ	कोई मुसीबत न धरती में आती है और न तुम्हारी जान पर, मगर वह किताब (लौह महफ़ूज़) में लिखी हुई है इससे पहले कि हम उसे पैदा करें। निश्चित रूप से, यह अल्लाह के लिए आसान है।	**22**
لِّكَيْلَا تَأْسَوْا عَلٰى مَا فَاتَكُمْ وَلَا تَفْرَحُوْا بِمَآ اٰتٰىكُمْ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُوْرِ	ताकि तुम उस चीज़ पर अफ़सोस न करो जो तुमसे छूट गई, और उस चीज़ पर ज़्यादा ख़ुश न हो जो उसने तुम्हें दी। और अल्लाह हर घमंडी और फ़ख़्र करने वाले को पसंद नहीं करता,	**23**
الَّذِيْنَ يَبْخَلُوْنَ وَيَأْمُرُوْنَ النَّاسَ بِالْبُخْلِ وَمَنْ يَّتَوَلَّ فَاِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ	जो लोग कंजूसी करते हैं और दूसरों को कंजूसी करने का हुक्म देते हैं। और जो कोई मुँह मोड़ता है, तो निश्चित रूप से, अल्लाह, वही बहुत बेनियाज़, बहुत तारीफ़ वाला है।	**24**

لَقَدْ اَرْسَلْنَا رُسُلَنَا بِالْبَيِّنٰتِ وَاَنْزَلْنَا مَعَهُمُ الْكِتٰبَ وَالْمِيْزَانَ لِيَقُوْمَ النَّاسُ بِالْقِسْطِ وَاَنْزَلْنَا الْحَدِيْدَ فِيْهِ بَأْسٌ شَدِيْدٌ وَّمَنَافِعُ لِلنَّاسِ وَلِيَعْلَمَ اللّٰهُ مَنْ يَّنْصُرُه وَرُسُلَه بِالْغَيْبِ اِنَّ اللّٰهَ قَوِيٌّ عَزِيْزٌ	नश़िचति रप़ स,े हमन`ेअपन`ेरसलूों को सप़षट नशिानयिों क`े साथ भजेा और उनक`ेसाथ कतिाब और मीज़ान (इंसाफ) उतारा ताकि लोग इंसाफ करी और हमन`ेलोहा बनाया जसिम`ेसख़त ताक़त ह`ैऔर इंसानों क`ेलिए बहत़ स`ेफायद`ेह,ैं और ताकि अल़लाह जान`ेकि कौन (उसक`ेदीन) और उसक`ेरसलूों की मदद करता ह,ै हालाकँि (अल़लाह) दखिाई नहीं दतेा। नश़िचति रप़ स,े अल़लाह बहत़ ताक़तवर, बहत़ शक़तशिाली ह।ै	25
وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا وَّاِبْرٰهِيْمَ وَجَعَلْنَا فِيْ ذُرِّيَّتِهِمَا النُّبُوَّةَ وَالْكِتٰبَ فَمِنْهُمْ مُّهْتَدٍ وَكَثِيْرٌ مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ	और नश़िचति रप़ स,े हमन`ेनह़ और इब्राहीम को भजेा और उनकी औलाद म`ेनबव़त और कतिाब दी, तो उनम`ेस`ेकछु न`े हदिायत पाई और उनम`ेस`ेबहत़ स`ेफ़ासकि हो गए।	26
ثُمَّ قَفَّيْنَا عَلٰٓى اٰثَارِهِمْ بِرُسُلِنَا وَقَفَّيْنَا بِعِيْسَى ابْنِ مَرْيَمَ وَاٰتَيْنٰهُ الْاِنْجِيْلَ وَجَعَلْنَا فِيْ قُلُوْبِ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُ رَأْفَةً وَّرَحْمَةً وَرَهْبَانِيَّةَ ِابْتَدَعُوْهَا مَا كَتَبْنٰهَا عَلَيْهِمْ اِلَّا ابْتِغَاءَ رِضْوَانِ اللّٰهِ فَمَا رَعَوْهَا حَقَّ رِعَايَتِهَا فَاٰتَيْنَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْهُمْ اَجْرَهُمْ وَكَثِيْرٌ مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ	फरि हमन`ेउनक`ेनक़श़-ेकदम पर अपन`ेरसलूों को भजेा और ईसा बनि मरयम को भजेा; और हमन`ेउनह`ेइंजील दी और उनक`े पीछ`ेचलन`ेवालों क`ेदलिों म`ेनरमी और रहम डाला। और उनहों`ने रहबानयित इजाद की, जसि`ेहमन`ेउनक`ेलिए फऱ़ज़ नहीं कयिा था (हमन`ेतो कवेल) अल़लाह की रज़ा तलाश करन`ेका हक़म दयिा था), लकेनि उनहों`ेइस`ेअचछ`ेस`ेन नभिाया। तो उनम`ेस` जो ईमान लाए, हमन`ेउनह`ेउनका इनाम दयिा, और उनम`ेस` बहत़ स`ेफ़ासकि हो गए।	27
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَاٰمِنُوْا بِرَسُوْلِهٖ يُؤْتِكُمْ كِفْلَيْنِ مِنْ رَّحْمَتِهٖ وَيَجْعَلْ لَّكُمْ نُوْرًا تَمْشُوْنَ بِهٖ وَيَغْفِرْ لَكُمْ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ	ऐ ईमान वालो! अल़लाह स`ेडरो और उसक`ेरसलू (मह़मम़द) पर ईमान लाओ, वह तमु़ह`ेअपनी रहमत का दोहरा हसि़सा दगेा, और तमु़हार`ेलिए नूर बनाएगा जसिक`ेसाथ तमु चल सकोग`ेऔर वह तमु़ह`ेमाफ करगेा। और अल़लाह बहत़ माफ करन`ेवाला, बहत़ रहम करन`ेवाला ह।ै	28
لِّئَلَّا يَعْلَمَ اَهْلُ الْكِتٰبِ اَلَّا يَقْدِرُوْنَ عَلٰى شَيْءٍ مِّنْ فَضْلِ اللّٰهِ وَاَنَّ الْفَضْلَ بِيَدِ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَاءُ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ	ताकि कतिाब वाल`ेजान ल`ेकि व`ेअल़लाह की महेरबानी पर कछु भी क़ब़ज़ा नहीं कर सकत`े(अगर व`ेमह़मम़द पर ईमान न लाएँ), और यह कि महेरबानी अल़लाह क`ेहाथ म`ेह,ै वह जसि`े चाहता ह`ैदतेा ह।ै और अल़लाह बहत़ बड़ी महेरबानी वाला ह।ै	29

छंदों की संख्या	اَلْمُجَادِلَة	मदनी
२२	अल-Mujadilah - 58	मदनी

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल-Mujadilah (विवाद)

1	निश्चित रूप से, अल्लाह ने उस औरत की बात सुन ली जो तुमसे (ऐ मुहम्मद) अपने शौहर के बारे में गफ़्तगू करती है और अल्लाह से अपनी शिकायत करती है, और अल्लाह तुम दोनों की बातचीत सुनता है। निश्चित रूप से, अल्लाह सब कुछ सुनने वाला, सब कुछ देखने वाला है।	قَدْ سَمِعَ اللّٰهُ قَوْلَ الَّتِيْ تُجَادِلُكَ فِيْ زَوْجِهَا وَتَشْتَكِيْٓ اِلَى اللّٰهِ وَاللّٰهُ يَسْمَعُ تَحَاوُرَكُمَا اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌۢ بَصِيْرٌ
2	तुममें से जो लोग अपनी बीवियों को ज़िहार करते हैं (उन्हें अपनी माँ समझते हैं), उनकी बीवियाँ उनकी माएँ नहीं हैं। उनकी माएँ तो केवल वही औरतें हैं जिन्होंने उन्हें जनम दिया। और निश्चित रूप से, वे वास्तव में बहुत नापसंद और झूठी बात कहते हैं। और निश्चित रूप से, अल्लाह बहुत माफ करने वाला, बहुत बख़्शने वाला है।	اَلَّذِيْنَ يُظٰهِرُوْنَ مِنْكُمْ مِّنْ نِّسَاۤىِٕهِمْ مَّا هُنَّ اُمَّهٰتِهِمْ اِنْ اُمَّهٰتُهُمْ اِلَّا الّٰۤـِٔيْ وَلَدْنَهُمْ وَاِنَّهُمْ لَيَقُوْلُوْنَ مُنْكَرًا مِّنَ الْقَوْلِ وَزُوْرًا وَاِنَّ اللّٰهَ لَعَفُوٌّ غَفُوْرٌ
3	और जो लोग अपनी बीवियों को ज़िहार करें, फिर अपनी कही हुई बात वापस लें, तो (उन पर) एक गुलाम को आज़ाद करना ज़रूरी है इससे पहले कि दोनों आपस में मिलें। यही तुम्हें सिखाया जाता है, और अल्लाह वह सब बहुत बारीकी से देखता है जो तुम करते हो।	وَالَّذِيْنَ يُظٰهِرُوْنَ مِنْ نِّسَاۤىِٕهِمْ ثُمَّ يَعُوْدُوْنَ لِمَا قَالُوْا فَتَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّتَمَاۤسَّا ذٰلِكُمْ تُوْعَظُوْنَ بِهٖ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ
4	तो जो कोई (गुलाम आज़ाद करने में) सक्षम न हो, तो उसे दो महीने लगातार रोज़ा रखना है इससे पहले कि दोनों आपस में मिलें। लेकिन जो कोई (यह भी) न कर सके, तो (उसे) साठ मिस्कीनों को खाना खिलाना है। यह इसलिए कि तुम अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाओ। यही अल्लाह के हुक़्म हैं, और इनकार करने वालों के लिए बहुत दरदनाक सजा है।	فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ شَهْرَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ مِنْ قَبْلِ اَنْ يَّتَمَاۤسَّا فَمَنْ لَّمْ يَسْتَطِعْ فَاِطْعَامُ سِتِّيْنَ مِسْكِيْنًا ذٰلِكَ لِتُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَتِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ وَلِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابٌ اَلِيْمٌ
5	निश्चित रूप से, जो लोग अल्लाह और उसके रसूल का विरोध करते हैं, वे ज़लील किए जाएँगे जैसे कि उनसे पहले वाले ज़लील किए गए। और निश्चित रूप से, हमने सुस्पष्ट निशानियाँ उतारीं। और इनकार करने वालों के लिए ज़लील करने वाली सजा है।	اِنَّ الَّذِيْنَ يُحَاۤدُّوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ كُبِتُوْا كَمَا كُبِتَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَقَدْ اَنْزَلْنَآ اٰيٰتٍۢ بَيِّنٰتٍ وَلِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ
6	उस दिन अल्लाह उन सब को उठाएगा, फिर उन्हें बताएगा कि उन्होंने क्या किया। अल्लाह ने उसका हिसाब रखा है, भले ही वे उसे भूल गए हों। और अल्लाह हर चीज़ का गवाह है।	يَوْمَ يَبْعَثُهُمُ اللّٰهُ جَمِيْعًا فَيُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوْا اَحْصٰىهُ اللّٰهُ وَنَسُوْهُ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ

7	क्या तुमने नहीं देखा कि अल्लाह वह सब जानता है जो आकाशों में है और जो धरती में है? तीन लोगों की कोई गुप्त बातचीत नहीं होती, मगर वह उसका चौथा है और न पाँच लोगों की, मगर वह उसका छठा है और न उससे कम या ज़्यादा, मगर वह उनके साथ होता है जहाँ कहीं वे हों। फिर वह उन्हें क़ियामत के दिन बताएगा कि उन्होंने क्या किया। निश्चित रूप से, अल्लाह हर चीज़ को जानने वाला है।	اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ مَا يَكُوْنُ مِنْ نَّجْوٰى ثَلٰثَةٍ اِلَّا هُوَ رَابِعُهُمْ وَلَا خَمْسَةٍ اِلَّا هُوَ سَادِسُهُمْ وَلَآ اَدْنٰى مِنْ ذٰلِكَ وَلَآ اَكْثَرَ اِلَّا هُوَ مَعَهُمْ اَيْنَ مَا كَانُوْا ثُمَّ يُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوْا يَوْمَ الْقِيٰمَةِ اِنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ
8	क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जिन्हें गुप्त बातचीत करने से मना किया गया, फिर वे उसी मना की हुई चीज़ को दोहराते हैं और गुप्त बातचीत करते हैं गुनाह, दुश्मनी और रसूल की नाफरमानी के लिए। और जब वे तुम्हारे पास आते हैं (ऐ मुहम्मद), तो वे उस तरह सलाम करते हैं जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए तय नहीं किया। और वे अपने दिलों में कहते हैं, 'अल्लाह हमें हमारी बातों की सजा क्यों नहीं देता?' उनके लिए जहन्नम की आग काफी है जिसमें वे दाखिल होंगे तो वह बहुत बुरा ठिकाना है।	اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ نُهُوْا عَنِ النَّجْوٰى ثُمَّ يَعُوْدُوْنَ لِمَا نُهُوْا عَنْهُ وَيَتَنٰجَوْنَ بِالْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ وَمَعْصِيَتِ الرَّسُوْلِ وَاِذَا جَاءُوْكَ حَيَّوْكَ بِمَا لَمْ يُحَيِّكَ بِهِ اللّٰهُ وَيَقُوْلُوْنَ فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ لَوْلَا يُعَذِّبُنَا اللّٰهُ بِمَا نَقُوْلُ حَسْبُهُمْ جَهَنَّمُ يَصْلَوْنَهَا فَبِئْسَ الْمَصِيْرُ
9	ऐ ईमान वालो! जब तुम गुप्त बातचीत करो, तो गुनाह, दुश्मनी और रसूल की नाफरमानी की बात न करो। बल्कि नेकी और तक़वा की बात करो। और उस अल्लाह से डरो जिसके पास तुम जमा किए जाओगे।	يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا تَنَاجَيْتُمْ فَلَا تَتَنَاجَوْا بِالْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ وَمَعْصِيَتِ الرَّسُوْلِ وَتَنَاجَوْا بِالْبِرِّ وَالتَّقْوٰى وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِيْٓ اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ
10	निश्चित रूप से, गुप्त बातचीत शैतान की तरफ से है, ताकि ईमान वालों को दुख हो, जबकि (वह बातचीत) उन्हें बिना अल्लाह की इजाज़त के कोई नुकसान नहीं पहुँचाती। और ईमान वालों को अल्लाह पर भरोसा करना चाहिए।	اِنَّمَا النَّجْوٰى مِنَ الشَّيْطٰنِ لِيَحْزُنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَلَيْسَ بِضَاۤرِّهِمْ شَيْـًٔا اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ
11	ऐ ईमान वालो! जब तुमसे कहा जाए, 'मजलिसों में जगह बनाओ,' तो जगह बनाओ, अल्लाह तुम्हारे लिए जगह बनाएगा। और जब कहा जाए, 'उठो,' तो उठो, अल्लाह तुममें से ईमान वालों और इल्म वालों के दरजे बढ़ाएगा। और अल्लाह वह सब बहुत बारीकी से देखता है जो तुम करते हो।	يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا قِيْلَ لَكُمْ تَفَسَّحُوْا فِي الْمَجٰلِسِ فَافْسَحُوْا يَفْسَحِ اللّٰهُ لَكُمْ وَاِذَا قِيْلَ انْشُزُوْا فَانْشُزُوْا يَرْفَعِ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَالَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ دَرَجٰتٍ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ
12	ऐ ईमान वालो! जब तुम रसूल से खास बातचीत करो, तो उस बातचीत से पहले (मिस्कीनों को) सदका दो। यह तुम्हारे लिए बेहतर और ज़्यादा पाक है लेकिन अगर तुम्हें (सदका देने के लिए) कुछ न मिले, तो निश्चित रूप से, अल्लाह बहुत माफ करने वाला, बहुत रहम करने वाला है।	يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا نَاجَيْتُمُ الرَّسُوْلَ فَقَدِّمُوْا بَيْنَ يَدَيْ نَجْوٰىكُمْ صَدَقَةً ذٰلِكَ خَيْرٌ لَّكُمْ وَاَطْهَرُ فَاِنْ لَّمْ تَجِدُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ
13	क्या तुम डर गए कि रसूल से बातचीत से पहले सदका देने से (ग़रीब हो जाओगे)? लेकिन अगर तुमने ऐसा नहीं किया और अल्लाह ने तुम्हें माफ कर दिया, तो नमाज़ क़ायम करो, और ज़कात अदा करो और अल्लाह और उसके रसूल की इताअत करो! और अल्लाह वह सब बहुत बारीकी से देखता है जो तुम करते हो।	ءَاَشْفَقْتُمْ اَنْ تُقَدِّمُوْا بَيْنَ يَدَيْ نَجْوٰىكُمْ صَدَقٰتٍ فَاِذْ لَمْ تَفْعَلُوْا وَتَابَ اللّٰهُ عَلَيْكُمْ فَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَاللّٰهُ خَبِيْرٌ بِمَا تَعْمَلُوْنَ

14	क्या तुमने उन (मुनाफिकों) को नहीं देखा जो उस कौम को दोस्त बनाते हैं जिस पर अल्लाह का ग़ज़ब उतरा? वे न तुममें से हैं और न उनमें से और वे झूठ पर क़सम खाते हैं, जबकि वे जानते हैं।	اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ تَوَلَّوْا قَوْمًا غَضِبَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ مَا هُمْ مِّنْكُمْ وَلَا مِنْهُمْ وَيَحْلِفُوْنَ عَلَى الْكَذِبِ وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ
15	अल्लाह ने उनके लिए बहुत सख़्त सज़ा तैयार की है। निश्चित रूप से, जो कुछ वे करते थे, वह बहुत बुरा था।	اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ عَذَابًا شَدِيْدًا اِنَّهُمْ سَاۤءَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ
16	उन्होंने अपनी क़समों को ढाल बनाया, फिर (लोगों को) अल्लाह के रास्ते से रोका। तो उनके लिए ज़लील करने वाली सज़ा है।	اِتَّخَذُوْٓا اَيْمَانَهُمْ جُنَّةً فَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَلَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ
17	न उनके माल और न उनके बच्चे अल्लाह के सामने कुछ काम आएँगे। वे जहन्नम वाले हैं, उसमें हमेशा रहेंगे।	لَنْ تُغْنِيَ عَنْهُمْ اَمْوَالُهُمْ وَلَآ اَوْلَادُهُمْ مِّنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا ۗ اُولٰۤىِٕكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ
18	(याद करो) उस दिन जब अल्लाह उन सब को उठाएगा, तो वे उससे (कहेंगे कि वे मुशरिक नहीं थे) उसी तरह क़सम खाएँगे जैसे तुमसे क़सम खाते थे; और वे समझते हैं कि उन्हें कुछ (फायदा) हासिल होगा। जान लो, कि वे वास्तव में झूठे हैं।	يَوْمَ يَبْعَثُهُمُ اللّٰهُ جَمِيْعًا فَيَحْلِفُوْنَ لَهٗ كَمَا يَحْلِفُوْنَ لَكُمْ وَيَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ عَلٰى شَيْءٍ ۗ اَلَآ اِنَّهُمْ هُمُ الْكٰذِبُوْنَ
19	शैतान ने उन पर क़ब्ज़ा कर लिया, फिर उन्हें अल्लाह की याद भुला दी; यही शैतान की जमात है। जान लो, कि शैतान की जमात ही नुक़सान उठाने वाली है।	اِسْتَحْوَذَ عَلَيْهِمُ الشَّيْطٰنُ فَاَنْسٰىهُمْ ذِكْرَ اللّٰهِ ۗ اُولٰۤىِٕكَ حِزْبُ الشَّيْطٰنِ ۗ اَلَآ اِنَّ حِزْبَ الشَّيْطٰنِ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ
20	निश्चित रूप से, जो लोग अल्लाह और उसके रसूल का विरोध करते हैं, वे बहुत ज़लील लोगों में से हैं।	اِنَّ الَّذِيْنَ يُحَاۤدُّوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗٓ اُولٰۤىِٕكَ فِى الْاَذَلِّيْنَ
21	अल्लाह ने लिख दिया है, "मैं और मेरे रसूल ज़रूर ग़ालिब होंगे।" निश्चित रूप से, अल्लाह बहुत ताक़तवर, बहुत शक्तिशाली है।	كَتَبَ اللّٰهُ لَاَغْلِبَنَّ اَنَا۠ وَرُسُلِيْ ۗ اِنَّ اللّٰهَ قَوِيٌّ عَزِيْزٌ
22	तुम (ऐ मुहम्मद) किसी ऐसी कौम को नहीं पाओगे जो अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखती हो और उन लोगों से मोहब्बत करे जो अल्लाह और उसके रसूल का विरोध करते हैं, भले ही वे उनके बाप, उनके बेटे, उनके भाई या उनके ख़ानदान वाले हों। यही लोग हैं जिनके दिलों में अल्लाह ने ईमान लिख दिया और उन्हें अपनी तरफ़ से रूहानी ताक़त दी। और वह उन्हें ऐसी जन्नतों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें बहती हैं, वे उसमें हमेशा रहेंगे। अल्लाह उनसे राज़ी है और वे उसकी (रहमत की) बख़्शिश से ख़ुश हैं। यही अल्लाह की जमात है। जान लो, निश्चित रूप से, अल्लाह की जमात ही कामयाब है।	لَا تَجِدُ قَوْمًا يُّؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ يُوَاۤدُّوْنَ مَنْ حَاۤدَّ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَلَوْ كَانُوْٓا اٰبَاۤءَهُمْ اَوْ اَبْنَاۤءَهُمْ اَوْ اِخْوَانَهُمْ اَوْ عَشِيْرَتَهُمْ ۗ اُولٰۤىِٕكَ كَتَبَ فِيْ قُلُوْبِهِمُ الْاِيْمَانَ وَاَيَّدَهُمْ بِرُوْحٍ مِّنْهُ ۗ وَيُدْخِلُهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۗ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ ۗ اُولٰۤىِٕكَ حِزْبُ اللّٰهِ ۗ اَلَآ اِنَّ حِزْبَ اللّٰهِ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ

छंदों की संख्या	اَلْحَشْر	مدنية
२४	अल हश्र - 59	मदनी

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल हश्र (निर्वासन)

1	जो कुछ आकाशों में है और जो कुछ धरती में है, वह अल्लाह की तस्बीह करता है; और वही बहुत शक्तिशाली, बहुत हिकमत वाला है।	سَبَّحَ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ
2	वही है जिसने किताब वालों में से काफिरों को उनके घरों से पहली बार निकाला। तुमने नहीं सोचा था कि वे निकलेंगे और वे यक़ीन रखते थे कि उनके क़िले उन्हें अल्लाह (की सजा) से बचा लेंगे; तो अल्लाह ने उन पर (सजा) उस तरफ़ से भेजी जिसका उन्हें गुमान न था। और अल्लाह ने उनके दिलों में डर डाल दिया; कि उन्होंने अपने घरों को अपने हाथों से और मोमिनों के हाथों से तबाह किया। तो ऐ नज़र वालो, इस से सबक़ बनाओ!	هُوَ الَّذِيْٓ اَخْرَجَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ مِنْ دِيَارِهِمْ لِاَوَّلِ الْحَشْرِ مَا ظَنَنْتُمْ اَنْ يَّخْرُجُوْا وَظَنُّوْٓا اَنَّهُمْ مَّانِعَتُهُمْ حُصُوْنُهُمْ مِّنَ اللّٰهِ فَاَتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ حَيْثُ لَمْ يَحْتَسِبُوْا وَقَذَفَ فِيْ قُلُوْبِهِمُ الرُّعْبَ يُخْرِبُوْنَ بُيُوْتَهُمْ بِاَيْدِيْهِمْ وَاَيْدِي الْمُؤْمِنِيْنَ فَاعْتَبِرُوْا يٰٓاُولِي الْاَبْصَارِ
3	और अगर अल्लाह ने उनके लिए निकाल जाने का हुक्म न लिखा होता, तो वह उन्हें दुनिया में सजा देता। और आख़िरत में उनके लिए आग की सजा है।	وَلَوْلَآ اَنْ كَتَبَ اللّٰهُ عَلَيْهِمُ الْجَلَاۤءَ لَعَذَّبَهُمْ فِي الدُّنْيَا وَلَهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ عَذَابُ النَّارِ
4	यह इसलिए कि उन्होंने अल्लाह और उसके रसूल का विरोध किया। और जो कोई अल्लाह का विरोध करता है, तो निश्चित रूप से, अल्लाह की सजा बहुत सख़्त है।	ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ شَاۤقُّوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَمَنْ يُّشَاۤقِّ اللّٰهَ فَاِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ
5	जो खजूर के पेड़ तुमने काटे (काफिरों के) या जिन्हें तुमने उनकी जड़ों पर खड़ा छोड़ दिया, तो (यह) अल्लाह की इजाज़त से हुआ; और इसलिए कि वह फ़ासिक लोगों को ज़लील करना चाहता था।	مَا قَطَعْتُمْ مِّنْ لِّيْنَةٍ اَوْ تَرَكْتُمُوْهَا قَاۤىِٕمَةً عَلٰٓى اُصُوْلِهَا فَبِاِذْنِ اللّٰهِ وَلِيُخْزِيَ الْفٰسِقِيْنَ
6	और जो कुछ (फ़ै) अल्लाह ने अपने रसूल को उनसे दिया, उसके लिए तुमने घोड़े दौड़ाए न ऊँट, लेकिन अल्लाह अपने रसूलों को जिस पर चाहता है, क़ाबू देता है। और अल्लाह हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है।	وَمَآ اَفَاۤءَ اللّٰهُ عَلٰى رَسُوْلِهٖ مِنْهُمْ فَمَآ اَوْجَفْتُمْ عَلَيْهِ مِنْ خَيْلٍ وَّلَا رِكَابٍ وَّلٰكِنَّ اللّٰهَ يُسَلِّطُ رُسُلَهٗ عَلٰى مَنْ يَّشَاۤءُ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ

مَآ اَفَاءَ اللّٰهُ عَلٰى رَسُوْلِهٖ مِنْ اَهْلِ الْقُرٰى فَلِلّٰهِ وَلِلرَّسُوْلِ وَلِذِى الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ وَابْنِ السَّبِيْلِ كَيْ لَا يَكُوْنَ دُوْلَةً بَيْنَ الْاَغْنِيَاءِ مِنْكُمْ وَمَآ اٰتٰىكُمُ الرَّسُوْلُ فَخُذُوْهُ وَمَا نَهٰىكُمْ عَنْهُ فَانْتَهُوْا وَاتَّقُوا اللّٰهَ اِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ	जो कछ (फ) अल्लाह न अपन रसूल को बस्तियों क लोगों स दयिा, वह अल्लाह, रसूल, रसूल क रशि़तेदारों, यतीमों, मसि़कीनों और मुसाफरिों क लिए ह, ताकि यह माल कवेल तुम स अमीरों क बीच न घूमो जो कछ रसूल तुम्हे द, उस कबूल करो। और जो कछ वह तुम्हे मना कर, उससे रुक जाओ। और अल्लाह स डरो। नशि़चति रूप स, अल्लाह की सजा बहुत सख़्त हो	**7**
لِلْفُقَرَاءِ الْمُهٰجِرِيْنَ الَّذِيْنَ اُخْرِجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ وَاَمْوَالِهِمْ يَبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانًا وَّيَنْصُرُوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ اُولٰٓئِكَ هُمُ الصّٰدِقُوْنَ	(यह माल) उन ग़रीब मुहाजरिों क लिए भी ह जो अपन घरों और अपनी दौलत स नकिाल गए, ताकि अल्लाह की मेहरबानी और रज़ा हासलि कर और (ताकी) अल्लाह और उसक रसूल की मदद कर। यही लोग सच्च हो	**8**
وَالَّذِيْنَ تَبَوَّءُو الدَّارَ وَالْاِيْمَانَ مِنْ قَبْلِهِمْ يُحِبُّوْنَ مَنْ هَاجَرَ اِلَيْهِمْ وَلَا يَجِدُوْنَ فِيْ صُدُوْرِهِمْ حَاجَةً مِّمَّآ اُوْتُوْا وَيُؤْثِرُوْنَ عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ وَلَوْ كَانَ بِهِمْ خَصَاصَةٌ وَمَنْ يُّوْقَ شُحَّ نَفْسِهٖ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ	और (अंसार) जो लोग मदीना म पहल स बस और ईमान लाए (मुहाजरिों क आन स पहल), व उन लोगों स मोहबब्त करत ह जो उनक पास हजिरत करक आए। और उनक दलिों म उस चीज़ क लिए कोई हसरत नहीं जो (मुहाजरिों) को दी गई; और व (मुहाजरिों) को अपन ऊपर तरजीह दते ह, हालाकँि उनकी अपनी ज़रूरत हो। और जो कोई अपनी कंजूसी स बचा लिया गया, वही लोग कामयाब हो	**9**
وَالَّذِيْنَ جَاءُوْ مِنْ بَعْدِهِمْ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا وَلِاِخْوَانِنَا الَّذِيْنَ سَبَقُوْنَا بِالْاِيْمَانِ وَلَا تَجْعَلْ فِيْ قُلُوْبِنَا غِلًّا لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا رَبَّنَآ اِنَّكَ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ	और जो लोग उनक बाद आए (मुहाजरि और अंसार), व कहत ह, 'ऐ हमार रेब, हम और हमार उन भाइयों को माफ कर द जिनहोंन हमस पहल ईमान लाया, और हमार दलिों म ईमान वालों क लिए कोई हसद न डाल। ऐ हमार रेब, नशि़चति रूप स, तू बहुत मेहरबान, बहुत रहम करन वाला हो'	**10**
اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ نَافَقُوْا يَقُوْلُوْنَ لِاِخْوَانِهِمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ لَئِنْ اُخْرِجْتُمْ لَنَخْرُجَنَّ مَعَكُمْ وَلَا نُطِيْعُ فِيْكُمْ اَحَدًا اَبَدًا وَّاِنْ قُوْتِلْتُمْ لَنَنْصُرَنَّكُمْ وَاللّٰهُ يَشْهَدُ اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ	क्या तुमन उन मुनाफकिों को नहीं दखेा जो अपन उन भाइयों स कहत ह जो कताब वालों म स काफरि ह, 'नशि़चति रूप स, अगर तुम्हे नकिाला गया तो हम भी तुम्हार साथ नकिलगे; और हम तुम्हार लिए कसिी की बात कभी नहीं मानगे, और अगर तुमस जंग की गई तो हम ज़रूर तुम्हारी मदद करगे।' और अल्लाह गवाही दता ह कि व वास्तव म झूठ हो	**11**
لَئِنْ اُخْرِجُوْا لَا يَخْرُجُوْنَ مَعَهُمْ وَلَئِنْ قُوْتِلُوْا لَا يَنْصُرُوْنَهُمْ وَلَئِنْ نَّصَرُوْهُمْ لَيُوَلُّنَّ الْاَدْبَارَ ثُمَّ لَا يُنْصَرُوْنَ	नशि़चति रूप स, अगर व नकिाल गए, तो य मुनाफकि उनक साथ नहीं नकिलगे, और अगर उनस जंग की गई, तो य उनकी मदद नहीं करगे; और अगर मदद करगे भी तो पीठ फरेकर भाग जाएँग, फरि उन्हे कोई मदद नहीं मलिगेी।	**12**
لَاَنْتُمْ اَشَدُّ رَهْبَةً فِيْ صُدُوْرِهِمْ مِّنَ اللّٰهِ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَفْقَهُوْنَ	नशि़चति रूप स, उनक दलिों म तुम (मुसलमानो) स डर अल्लाह स ज़्यादा हो यह इसलिए कि व लोग समझत नहीं।	**13**

14	व तमुस एक साथ नहीं लड़ेंगे, सिवाय मज़बूत क़िलों में या दीवारों के पीछे से। उनके आपस में दुश्मनी बहुत सख़्त है। तुम समझते हो कि वे एक हैं, जबकि उनके दिल बटे हुए हैं। यह इसलिए कि वे लोग समझते नहीं।	لَا يُقَاتِلُوْنَكُمْ جَمِيْعًا اِلَّا فِيْ قُرًى مُّحَصَّنَةٍ اَوْ مِنْ وَّرَاۤءِ جُدُرٍ بَاْسُهُمْ بَيْنَهُمْ شَدِيْدٌ تَحْسَبُهُمْ جَمِيْعًا وَّقُلُوْبُهُمْ شَتّٰى ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَعْقِلُوْنَ
15	(वे) उन लोगों की तरह हैं जो उनसे थोड़ा पहले थे (यहूदी), जिन्होंने अपने करमों का बुरा नतीजा भोगा। और उनके लिए दर्दनाक सजा है।	كَمَثَلِ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ قَرِيْبًا ذَاقُوْا وَبَالَ اَمْرِهِمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ
16	(मुनाफिकों की मिसाल) उस शैतान की तरह है जब वह इंसान से कहता है, 'काफिर हो जा!' फिर जब वह काफिर हो जाता है, तो कहता है, 'मैं तुझसे बरी हूँ, क्योंकि मुझे अल्लाह, सारे जहान के रब से डर है।'	كَمَثَلِ الشَّيْطٰنِ اِذْ قَالَ لِلْاِنْسَانِ اكْفُرْ فَلَمَّا كَفَرَ قَالَ اِنِّيْ بَرِيْۤءٌ مِّنْكَ اِنِّيْٓ اَخَافُ اللّٰهَ رَبَّ الْعٰلَمِيْنَ
17	तो दोनों का अंजाम यह हुआ कि वे आग में गए, उसमें हमेशा रहेंगे। यही ज़ालिमों का बदला है।	فَكَانَ عَاقِبَتَهُمَآ اَنَّهُمَا فِى النَّارِ خٰلِدَيْنِ فِيْهَا وَذٰلِكَ جَزٰۤؤُا الظّٰلِمِيْنَ
18	ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरो और हर शख़्स यह देखे कि उसने कल (आख़िरत) के लिए क्या किया, और अल्लाह से डरो। निश्चित रूप से, अल्लाह वह सब बहुत बारीकी से देखता है जो तुम करते हो।	يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَلْتَنْظُرْ نَفْسٌ مَّا قَدَّمَتْ لِغَدٍ وَاتَّقُوا اللّٰهَ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ
19	और उन लोगों की तरह न हो जाओ जिन्होंने अल्लाह को भुला दिया, तो अल्लाह ने उन्हें उनकी अपनी ज़ात भुला दी। यही लोग फ़ासिक़ हैं।	وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ نَسُوا اللّٰهَ فَاَنْسٰىهُمْ اَنْفُسَهُمْ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ
20	नरक वाले और जन्नत वाले बराबर नहीं; जन्नत वाले ही कामयाब लोग हैं।	لَا يَسْتَوِيْٓ اَصْحٰبُ النَّارِ وَاَصْحٰبُ الْجَنَّةِ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ هُمُ الْفَاۤئِزُوْنَ
21	अगर हमने यह क़ुरआन किसी पहाड़ पर उतारा होता, तो तुम उसे अल्लाह के डर से झुका हुआ और टुकड़े-टुकड़े देखते। और ये मिसालें हम लोगों के लिए इसलिए बयान करते हैं ताकि वे सोचें।	لَوْ اَنْزَلْنَا هٰذَا الْقُرْاٰنَ عَلٰى جَبَلٍ لَّرَاَيْتَهٗ خَاشِعًا مُّتَصَدِّعًا مِّنْ خَشْيَةِ اللّٰهِ وَتِلْكَ الْاَمْثَالُ نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُوْنَ
22	वही अल्लाह है जिसके सिवा कोई माबूद नहीं। वह ग़ैब और ज़ाहिर को जानने वाला है, वही बहुत मेहरबान, बहुत रहम करने वाला है।	هُوَ اللّٰهُ الَّذِيْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ
23	वही अल्लाह है जिसके सिवा कोई माबूद नहीं। बादशाह, बहुत पवित्र, बहुत सलामती देने वाला, अमन देने वाला, निगरानी करने वाला, बहुत शक्तिशाली, बहुत ज़बरदस्त, सारी बड़ाई वाला, अल्लाह उससे पाक है जिसे वे शरीक करते हैं।	هُوَ اللّٰهُ الَّذِيْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ اَلْمَلِكُ الْقُدُّوْسُ السَّلٰمُ الْمُؤْمِنُ الْمُهَيْمِنُ الْعَزِيْزُ الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ
24	वही अल्लाह है जो पैदा करने वाला, बनाने वाला, रूप देने वाला है, उसके लिए सबसे अच्छे नाम हैं। जो कुछ आकाशों और धरती में है, वह उसकी तसबीह करता है। और वही बहुत शक्तिशाली, बहुत हिकमत वाला है।	هُوَ اللّٰهُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ لَهُ الْاَسْمَاۤءُ الْحُسْنٰى يُسَبِّحُ لَهٗ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ

छंदों की संख़्या	اَلْمُمْتَحَنَة	मदनी
१३	अल-Mumtahanah - 60	मदनी

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल-Mumtahanah (परीक्षति)

1	ऐ ईमान वालो! मरे और तमुहार दुश्मनों को अपन दोसत न बनाओ कि तमु उनह (मुहम्मद की ख़बर) मोहबबत की वजह स बताओ; हालाकँि उनहोंन उस हक़ को ठुकरा दिया जो तमुहार पास आया। व रसूल और तमुह इसलिए निकालत ह कयोंकि तमु अलल्लाह, अपन रब पर ईमान लाए। अगर तमु वासतव म मरे रासत म जिहाद करन और मरी रज़ा हासलि करन क लिए निकल हो (तो ऐसा न करो)। तमु उनह गपुत रूप स (मुहम्मद की ख़बर) मोहबबत की वजह स बतात हो, और म बेहतर जानता हू जो तमु छपिात हो और जो तमु ज़ाहरि करत हो। और तमुम स जो कोई ऐसा करता ह, नशि्चति रूप स, वह सीध रासत स भटक गया ह।	يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوْا عَدُوِّيْ وَعَدُوَّكُمْ اَوْلِيَاءَ تُلْقُوْنَ اِلَيْهِمْ بِالْمَوَدَّةِ وَقَدْ كَفَرُوْا بِمَا جَاءَكُمْ مِّنَ الْحَقِّ يُخْرِجُوْنَ الرَّسُوْلَ وَاِيَّاكُمْ اَنْ تُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ رَبِّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ خَرَجْتُمْ جِهَادًا فِيْ سَبِيْلِيْ وَابْتِغَاءَ مَرْضَاتِيْ تُسِرُّوْنَ اِلَيْهِمْ بِالْمَوَدَّةِ وَاَنَا اَعْلَمُ بِمَآ اَخْفَيْتُمْ وَمَآ اَعْلَنْتُمْ وَمَنْ يَّفْعَلْهُ مِنْكُمْ فَقَدْ ضَلَّ سَوَاءَ السَّبِيْلِ
2	अगर व तमुह पकड़ ल, तो व तमुहार लिए दुश्मन बन जाएँग और तमुह नकुसान पहचुँान क लिए अपन हाथ और ज़बान छोड़ दगे और व चाहत ह कि तमु (फरि स) काफरि हो जाओ।	اِنْ يَّثْقَفُوْكُمْ يَكُوْنُوْا لَكُمْ اَعْدَاءً وَّيَبْسُطُوْٓا اِلَيْكُمْ اَيْدِيَهُمْ وَاَلْسِنَتَهُمْ بِالسُّوْٓءِ وَوَدُّوْا لَوْ تَكْفُرُوْنَ
3	तमुहार रशि्तदेार और तमुहार बचच कयिामत क दनि तमुहार लिए कोई फायदा नहीं दगे। वह तमुहार बीच जदुाई कर दगे। और अलल्लाह वह सब दखेता ह जो तमु करत हो।	لَنْ تَنْفَعَكُمْ اَرْحَامُكُمْ وَلَآ اَوْلَادُكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ يَفْصِلُ بَيْنَكُمْ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ
4	नशि्चति रूप स, इबराहीम और उनक साथ वालो म तमुहार लिए अचछी मसिाल ह, जब उनहोंन अपनी कौम स कहा, 'हम तमुस और तमुहार उन माबदूो स बरी ह जनिह तमु अलल्लाह क सवािय पजूत हो, हम तमुहारा (कफ़ुर) इंकार करत ह और हमार और तमुहार बीच दुश्मनी और नफरत हमशेा क लिए जाहरि हो गई, जब तक कि तमु कवेल अलल्लाह पर ईमान न लाओ,' सवािय इबराहीम क अपन बाप स कहन क कि, 'म नशि्चति रूप स तमुहार लिए माफी माँगूँगा, लकेनि म तमुहार लिए अलल्लाह की सजा को कछु भी नहीं रोक सकता।' (इबराहीम न कहा), 'ऐ हमार रब, हम कवेल तझु पर भरोसा करत ह और कवेल तझु की ओर रजू करत ह और कवेल तझु की ओर लौटना ह,	قَدْ كَانَتْ لَكُمْ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ فِيْٓ اِبْرٰهِيْمَ وَالَّذِيْنَ مَعَه اِذْ قَالُوْا لِقَوْمِهِمْ اِنَّا بُرَءٰٓؤُا مِنْكُمْ وَمِمَّا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ كَفَرْنَا بِكُمْ وَبَدَا بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمُ الْعَدَاوَةُ وَالْبَغْضَاءُ اَبَدًا حَتّٰى تُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ وَحْدَه اِلَّا قَوْلَ اِبْرٰهِيْمَ لِاَبِيْهِ لَاَسْتَغْفِرَنَّ لَكَ وَمَآ اَمْلِكُ لَكَ مِنَ اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ رَبَّنَا عَلَيْكَ تَوَكَّلْنَا وَاِلَيْكَ اَنَبْنَا وَاِلَيْكَ الْمَصِيْرُ
5	ऐ हमार रब, हम काफरि क लिए आज़माइश न बना। और हम माफ कर द, ऐ हमार रब। नशि्चति रूप स, त बहत शकति्शाली, बहत हकिमत वाला ह।	رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَاغْفِرْ لَنَا رَبَّنَا اِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ

لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِيْهِمْ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ لِّمَنْ كَانَ يَرْجُوا اللّٰهَ وَالْيَوْمَ الْاٰخِرَ وَمَنْ يَّتَوَلَّ فَاِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ	नशि्चति रूप स,े उनमे(इब्राहीम और उनकी कौम मी) तमुहारे लिए अचछी मिसाल ह;ै (वह) उस वयकति के लिए जो अलल़ाह (के इनाम) और आख़िरत के दिन की उममीद रखता ह,ै और जो कोई मुहँ मोड़ता ह,ै तो नशि्चति रूप स,े अलल़ाह, वही बहतु बेनियाज, बहतु तारीफ़ वाला हो	**6**
عَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّجْعَلَ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَ الَّذِيْنَ عَادَيْتُمْ مِّنْهُمْ مَّوَدَّةً وَاللّٰهُ قَدِيْرٌ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ	शायद अलल़ाह तमुहारे और उन लोगों के बीच मोहबबत पैदा कर द,े जिनस े तमुने दशुमनी की। अलल़ाह बहतु कदुरत वाला हो और अलल़ाह बहतु माफ करने वाला, बहतु रहम करने वाला हो	**7**
لَا يَنْهٰكُمُ اللّٰهُ عَنِ الَّذِيْنَ لَمْ يُقَاتِلُوْكُمْ فِي الدِّيْنِ وَلَمْ يُخْرِجُوْكُمْ مِّنْ دِيَارِكُمْ اَنْ تَبَرُّوْهُمْ وَتُقْسِطُوْٓا اِلَيْهِمْ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِيْنَ	अलल़ाह तमुह उन लोगों के साथ अचछा बरताव करने और इंसाफ करने स ेनहीं रोकता जो तमुस दीन के मामल े मे नहीं लड़े और न तमुह तमुहार े घरों स ेनिकाला। नशि्चति रूप स,े अलल़ाह इंसाफ करने वालों स ेमोहबबत करता हो	**8**
اِنَّمَا يَنْهٰكُمُ اللّٰهُ عَنِ الَّذِيْنَ قَاتَلُوْكُمْ فِي الدِّيْنِ وَاَخْرَجُوْكُمْ مِّنْ دِيَارِكُمْ وَظَاهَرُوْا عَلٰٓى اِخْرَاجِكُمْ اَنْ تَوَلَّوْهُمْ وَمَنْ يَّتَوَلَّهُمْ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ	नशि्चति रूप स,े अलल़ाह तमुह केवल उन लोगों को दोसत बनान स ेरोकता ह जो तमुस दीन के मामल े मे लड़ और तमुह तमुहार े घरों स ेनिकाला और (दूसरों की) मदद की तमुह निकालन े मी जो कोई उनह दोसत बनाता ह,ै वही लोग ज़ालिम हो	**9**
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا جَاۗءَكُمُ الْمُؤْمِنٰتُ مُهٰجِرٰتٍ فَامْتَحِنُوْهُنَّ اَللّٰهُ اَعْلَمُ بِاِيْمَانِهِنَّ فَاِنْ عَلِمْتُمُوْهُنَّ مُؤْمِنٰتٍ فَلَا تَرْجِعُوْهُنَّ اِلَى الْكُفَّارِ لَا هُنَّ حِلٌّ لَّهُمْ وَلَا هُمْ يَحِلُّوْنَ لَهُنَّ وَاٰتُوْهُمْ مَّآ اَنْفَقُوْا وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ اَنْ تَنْكِحُوْهُنَّ اِذَآ اٰتَيْتُمُوْهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ وَلَا تُمْسِكُوْا بِعِصَمِ الْكَوَافِرِ وَسْـَٔلُوْا مَآ اَنْفَقْتُمْ وَلْيَسْـَٔلُوْا مَآ اَنْفَقُوْا ذٰلِكُمْ حُكْمُ اللّٰهِ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ	ऐ ईमान वालो! जब मोमनि औरत तमुहार पास हजिरत करक आए,ँ तो उनकी (ईमान की) जाचँ करो। अलल़ाह उनक ईमान को बेहतर जानता ह;ै अगर तमुह पता चल कि व (वासतव म)ी मोमनि ह,ै तो उनह काफिरों (उनक शौहरो) की ओर वापस न करो। व उनक लिए हलाल नहीं ह और व काफरि उनक लिए हलाल नहीं हो और (उनक शौहरो) को वह महर द दो जो उनहोन दयिा था। और तमुहार लिए कोई गनुाह नहीं कि तमु उनस निकाह करो जब तमु उनह (महर) द दो। और काफरि औरतो क इशक़ को न पकड़ो, और जो कछु तमुने खरच कयिा उसकी माँग करो, और व जो कछु खरच कर उस माँगी यह अलल़ाह का हकुम ह;ै वह तमुहार बीच फसैला करता हो और अलल़ाह सब कछु जानन वाला, बहतु हकिमत वाला हो	**10**
وَاِنْ فَاتَكُمْ شَيْءٌ مِّنْ اَزْوَاجِكُمْ اِلَى الْكُفَّارِ فَعَاقَبْتُمْ فَاٰتُوا الَّذِيْنَ ذَهَبَتْ اَزْوَاجُهُمْ مِّثْلَ مَآ اَنْفَقُوْا وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِيْٓ اَنْتُمْ بِهٖ مُؤْمِنُوْنَ	और अगर तमुहारी बीवयिों म स ेकोई काफरिों की ओर चली जाए और तमुने (उन पर) जीत हासलि की, तो जनिकी बीवयिाँ चली गई उनह (लटूी हई दौलत स)ी उतना द दो जतिना उनहोन महर म दयिा था। और उस अलल़ाह स डरो जसिम तमु ईमान रखत हो।	**11**

يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ اِذَا جَاءَكَ الْمُؤْمِنٰتُ يُبَايِعْنَكَ عَلٰٓى اَنْ لَّا يُشْرِكْنَ بِاللّٰهِ شَيْـًٔا وَّلَا يَسْرِقْنَ وَلَا يَزْنِيْنَ وَلَا يَقْتُلْنَ اَوْلَادَهُنَّ وَلَا يَأْتِيْنَ بِبُهْتَانٍ يَّفْتَرِيْنَهٗ بَيْنَ اَيْدِيْهِنَّ وَاَرْجُلِهِنَّ وَلَا يَعْصِيْنَكَ فِيْ مَعْرُوْفٍ فَبَايِعْهُنَّ وَاسْتَغْفِرْ لَهُنَّ اللّٰهَ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ	ऐ नबी! जब मोमनि औरत॑ तमुहार॑ पास बअैत (वफादारी की कसम) क॑लिए आएँ कि व॑अल्लाह क॑साथ किसी को शरीक नहीं करगी, न चोरी करगी, न जनिा करगी, न अपन॑ बच्चों को कत्ल करगी, न अपन॑ हाथों और परैों क॑बीच कोई झठू गढ़गी और न अच्छ॑ काम म॑ तमुहारी नाफरमानी करगी, तो उनकी बअैत कबूल करो और उनक॑ लिए अल्लाह स॑ माफी माँगो। नश्चिति रूप स॑, अल्लाह बहतु माफ करन॑ वाला, बहतु रहम करन॑ वाला ह॑	**12**
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَوَلَّوْا قَوْمًا غَضِبَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ قَدْ يَئِسُوْا مِنَ الْاٰخِرَةِ كَمَا يَئِسَ الْكُفَّارُ مِنْ اَصْحٰبِ الْقُبُوْرِ	ऐ ईमान वालो! उन लोगों को अपन॑ मददगार न बनाओ जनि पर अल्लाह का गज़ब उतरा, नश्चिति रूप स॑, व॑ आख़रित स॑ नराश हो चक॑ ह॑ जैसै॑ कि काफरि कबर्ों म॑ नराश हो चक॑ ह॑	**13**

छंदों की संख्या	اَلصَّفّ	मदनी
१४	अस-सफ़्फ़ - 61	मदनी

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अस-सफ़्फ़ (पंक्तियाँ)

1	जो कुछ आकाशों में है और जो कुछ धरती में है, वह अल्लाह की तसबीह करता है; और वही बहुत शक्तिशाली, बहुत हिकमत वाला है।	سَبَّحَ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ
2	ऐ ईमान वालो! तुम ऐसी बात क्यों कहते हो जो तुम करते नहीं?	يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لِمَ تَقُوْلُوْنَ مَا لَا تَفْعَلُوْنَ
3	यह अल्लाह के पास बहुत नापसंद है कि तुम वह कहो जो तुम करते नहीं।	كَبُرَ مَقْتًا عِنْدَ اللّٰهِ اَنْ تَقُوْلُوْا مَا لَا تَفْعَلُوْنَ
4	निश्चित रूप से, अल्लाह उन लोगों से मोहब्बत करता है जो उसके रास्ते में कतारबद्ध होकर जंग करते हैं, जैसे कि वे एक मज़बूत इमारत हों।	اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الَّذِيْنَ يُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِهٖ صَفًّا كَاَنَّهُمْ بُنْيَانٌ مَّرْصُوْصٌ
5	और (याद करो) जब मूसा ने अपनी कौम से कहा, 'ऐ मेरी कौम! तुम मुझे क्यों सताते हो, हालाँकि तुम अच्छी तरह जानते हो कि मैं तुम्हारे लिए अल्लाह का रसूल हूँ।' तो जब वे (सच्चाई से) भटक गए, तो अल्लाह ने उनके दिलों को भटका दिया। और अल्लाह फ़ासिक़ कौम को हिदायत नहीं देता।	وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ يٰقَوْمِ لِمَ تُؤْذُوْنَنِيْ وَقَدْ تَّعْلَمُوْنَ اَنِّيْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَيْكُمْ فَلَمَّا زَاغُوْٓا اَزَاغَ اللّٰهُ قُلُوْبَهُمْ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ
6	और (याद करो) जब ईसा बिन मरयम ने कहा, 'ऐ बनी इसराइल! मैं तुम्हारे लिए अल्लाह का रसूल हूँ, जो मेरे पहले की किताब तौरात की तसदीक़ करता हूँ और एक रसूल की खुशखबरी देता हूँ जो मेरे बाद आएगा, जिसका नाम अहमद (मुहम्मद) है।' लेकिन जब वह उनके पास स्पष्ट निशानियों के साथ आया, तो उन्होंने कहा, 'यह तो स्पष्ट जादू है।'	وَاِذْ قَالَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ يٰبَنِيْٓ اِسْرَاۤءِيْلَ اِنِّيْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَيْكُمْ مُّصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيَّ مِنَ التَّوْرٰىةِ وَمُبَشِّرًا بِرَسُوْلٍ يَّاْتِيْ مِنْۢ بَعْدِي اسْمُهٗٓ اَحْمَدُ فَلَمَّا جَاۤءَهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ قَالُوْا هٰذَا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ
7	और उससे ज़्यादा ज़ालिम कौन हो सकता है जो अल्लाह पर झूठ गढ़ता है, जबकि उसे इस्लाम की ओर बुलाया जाता है? और अल्लाह ज़ालिम लोगों को हिदायत नहीं देता।	وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ وَهُوَ يُدْعٰٓى اِلَى الْاِسْلَامِ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ
8	वे अपने मुँह (बातों) से अल्लाह के नूर (दीन) को बुझाना चाहते हैं, लेकिन अल्लाह अपने नूर को पूरा करेगा, भले ही काफ़िरों को यह नापसंद हो।	يُرِيْدُوْنَ لِيُطْفِـُٔوْا نُوْرَ اللّٰهِ بِاَفْوَاهِهِمْ وَاللّٰهُ مُتِمُّ نُوْرِهٖ وَلَوْ كَرِهَ الْكٰفِرُوْنَ
9	वही है जिसने अपने रसूल को हिदायत और सच्चे दीन के साथ भेजा, ताकि वह उस हर दीन पर ग़ालिब कर दे, भले ही मुशरिकों को यह नापसंद हो।	هُوَ الَّذِيْٓ اَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰى وَدِيْنِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُوْنَ

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا هَلْ اَدُلُّكُمْ عَلٰى تِجَارَةٍ تُنْجِيْكُمْ مِّنْ عَذَابٍ اَلِيْمٍ	ऐ ईमान वालो! क्या मै तुम्हे ऐसा व्यापार बताऊँ जो तुम्हे दरदनाक सजा से बचा ले?	**10**
تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَتُجَاهِدُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ بِاَمْوَالِكُمْ وَاَنْفُسِكُمْ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ	वह यह कि तुम अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाओ और अल्लाह के रास्त मे अपने माल और अपनी जान से जहिाद करो। यही तुम्हारे लिए बहेतर ह अगर तुम जानत हो,	**11**
يَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ وَيُدْخِلْكُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ وَمَسٰكِنَ طَيِّبَةً فِيْ جَنّٰتِ عَدْنٍ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ	नशि्चति रूप से, अल्लाह तुम्हारे गुनाहों को माफ कर देगा और तुम्हे ऐसी जन्नतो मे दाखलि करेगा जनिके नीचे नहर बहती ह, और जन्नत-ए-अदन मे अचछ ठकिानों मी यही सबस बड़ी कामयाबी ह।	**12**
وَاُخْرٰى تُحِبُّوْنَهَا نَصْرٌ مِّنَ اللّٰهِ وَفَتْحٌ قَرِيْبٌ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ	और (एक और) महेरबानी जो तुम्हे पसंद ह, (वह ह) अल्लाह की मदद और जलदी मलिने वाली कामयाबी। और मोमनिों को खुशखबरी दो।	**13**
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْٓا اَنْصَارَ اللّٰهِ كَمَا قَالَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ لِلْحَوَارِيّٖنَ مَنْ اَنْصَارِيْٓ اِلَى اللّٰهِ قَالَ الْحَوَارِيُّوْنَ نَحْنُ اَنْصَارُ اللّٰهِ فَاٰمَنَتْ طَّآئِفَةٌ مِّنْ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ وَكَفَرَتْ طَّآئِفَةٌ فَاَيَّدْنَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا عَلٰى عَدُوِّهِمْ فَاَصْبَحُوْا ظٰهِرِيْنَ	ऐ ईमान वालो! अल्लाह के दीन के मददगार बनो, जसै ईसा बनि मरयम ने अपने वफादार हवारयिों से कहा, 'कौन मरे मददगार बनगे अल्लाह के दीन के लए?' उनके वफादार हवारयिों ने कहा, 'हम अल्लाह के दीन के मददगार ह,' तो बनी इसराइल मे से एक गरिह ने ईमान लाया और एक गरिह काफरि रहा; फरि हमने ईमान वालों को उनके दशु्मनों के खलिाफ ताकत दी, तो वे ग़ालबि हो गए।	**14**

छदों की संख़्या	اَلْجُمُعَة	मदनी
११	अल- जमुा - 62	मदनी

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल- जमुा (शक़्रवार)

1	जो कछु आकाशों म॑ह॒ और जो कछु धरती म॑ह॒, वह अल्लाह की तसबीह करता ह॒ै वह बादशाह, बहत्त पवत्रि, बहत्त शक़्तिशाली, बहत्त हकिमत वाला ह॒ै	يُسَبِّحُ لِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ الْمَلِكِ الْقُدُّوْسِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ
2	वही ह॒ै जसिन॑ ेएक अनपढ़ कौम क॑ बीच, उनह॑ीं म॑ स॑ ेएक रसलू भजेा, जो उनकी आयत॑ पढ़कर सनु्ाता ह॒ै, उनकी (रहू॑ों को) पाक करता ह॒ै और उनह॑ कतिाब और हकिमत (सनु्नत) सखिाता ह॒ै, हालाकँ इसस॑ पेहल॑ े वे॑ स्पष्ट गमुराही म॑ थे।	هُوَ الَّذِىْ بَعَثَ فِى الْاُمِّيّٖنَ رَسُوْلًا مِّنْهُمْ يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِهٖ وَيُزَكِّيْهِمْ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَاِنْ كَانُوْا مِنْ قَبْلُ لَفِىْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ
3	और (उस॑) दसूरी कौम क॑ लए॑ (भी भजेा), जो अभी उनस॑ नहीं॑ मलिी। और वह बहत्त शक़्तिशाली, बहत्त हकिमत वाला ह॒ै	وَّاٰخَرِيْنَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوْا بِهِمْ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ
4	यही अल्लाह की महेरबानी ह॒ै, जसि॑ े वह जसि॑ े चाहता ह॒ै देता ह॒ै; और अल्लाह बहत्त बड़ी महेरबानी वाला ह॒ै	ذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَاءُ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ
5	उन लोगों॑ की मसिाल, जनिह॒ें तौरात ल॑ जान॑ का काम सौपा गया, फरि उनहो॑ने॑ उस॑ े(अमल म॑) नहीं॑ उठाया, उस गध॑े की तरह ह॒ै जो मोटी-मोटी कतिाब॑ ढोता ह॒ै बहत्त बरी मसिाल ह॒ै उस कौम की, जसिन॑ े अल्लाह की आयतों॑ को झठुलाया। और अल्लाह ज़ालमि लोगों॑ को हदिायत नहीं॑ देता।	مَثَلُ الَّذِيْنَ حُمِّلُوا التَّوْرٰىةَ ثُمَّ لَمْ يَحْمِلُوْهَا كَمَثَلِ الْحِمَارِ يَحْمِلُ اَسْفَارًا بِئْسَ مَثَلُ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ
6	कहो (ऐ मह्मम्द), 'ऐ यहद्दी लोगो! अगर तमु समझत॑ हो कि॑ तमु ही अल्लाह क॑ पय़ार॑ हो, दसूरों॑ क॑ मक़ाबल॑, तो अपनी मौत की तमन्ना करो, अगर तमु सच॑ हो।'	قُلْ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ هَادُوْٓا اِنْ زَعَمْتُمْ اَنَّكُمْ اَوْلِيَاءُ لِلّٰهِ مِنْ دُوْنِ النَّاسِ فَتَمَنَّوُا الْمَوْتَ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ
7	और व॑ कभी उस मौत की तमन्ना नहीं॑ करगे॑, क़्योंकि॑ उनक॑ े हाथों॑ न॑ जो बरुाइया॑ँ कीं। और अल्लाह ज़ालमि लोगों॑ को बहत्त अच्छ॑ े स॑ े जानता ह॒ै	وَلَا يَتَمَنَّوْنَهٗٓ اَبَدًا بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالظّٰلِمِيْنَ
8	कहो, 'नश्चिति रू॒प स॑, वह मौत जसि॑ स॑ े तमु भागत॑ े हो, वह तमु॑स॑ े ज़रू॒ मलिगी, फरि तमु उसकी ओर लौटाए जाओग॑ े जो ग़ैब और ज़ाहरि को जानता ह॒ै, फरि वह तमु॑ह॒ बताएगा जो कछु तमु॑न॑ े कयिा।'	قُلْ اِنَّ الْمَوْتَ الَّذِىْ تَفِرُّوْنَ مِنْهُ فَاِنَّهٗ مُلٰقِيْكُمْ ثُمَّ تُرَدُّوْنَ اِلٰى عٰلِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا نُوْدِيَ لِلصَّلٰوةِ مِنْ يَّوْمِ الْجُمُعَةِ فَاسْعَوْا اِلٰى ذِكْرِ اللّٰهِ وَذَرُوا الْبَيْعَ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ	ऐ ईमान वालो! जब जमुे के दिनि नमाज़ के लिए पुकारा जाए, तो अल्लाह की याद की ओर जल्दी करो और खरीद-फरोख़्त छोड़ दो। यही तमुहार लिए बेहतर है अगर तमु जानत हो।	**9**
فَاِذَا قُضِيَتِ الصَّلٰوةُ فَانْتَشِرُوْا فِى الْاَرْضِ وَابْتَغُوْا مِنْ فَضْلِ اللّٰهِ وَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَثِيْرًا لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ	जब नमाज़ पूरी हो जाए, तो धरती म फैल जाओ, अल्लाह की महेरबानी तलाश करो और अल्लाह को बहतु-बहतु याद करो ताकि तमु कामयाब हो।	**10**
وَاِذَا رَاَوْا تِجَارَةً اَوْ لَهْوًا انْفَضُّوْٓا اِلَيْهَا وَتَرَكُوْكَ قَآئِمًا قُلْ مَا عِنْدَ اللّٰهِ خَيْرٌ مِّنَ اللَّهْوِ وَمِنَ التِّجَارَةِ وَاللّٰهُ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ	और जब वे व्यापार या खेल-तमाशा देखते हैं, तो वे उसकी ओर दौड़ पड़ते हैं और तमुहे (ऐ मुहम्मद) खड़ा हुआ छोड़ देते हैं। कहो, 'जो कछु अल्लाह के पास है, वह खेल और व्यापार से बेहतर है, और अल्लाह सबसे अच्छा रोज़ी देने वाला है।	**11**

छंदों की संख्या	اَلْمُنَافِقُون	मदनी
११	अल Munafiqun - 63	मदनी

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल Munafiqun (पाखंडी)

1	जब मुनाफिक लोग तुम्हारे पास आते हैं (ऐ मुहम्मद), वे कहते हैं, 'हम गवाही देते हैं कि तुम निश्चित रूप से अल्लाह के रसूल हो।' और अल्लाह जानता है कि तुम वास्तव में उसके रसूल हो; और अल्लाह गवाही देता है कि मुनाफिक लोग वास्तव में झूठे हैं।	اِذَا جَآءَكَ الْمُنٰفِقُوْنَ قَالُوْا نَشْهَدُ اِنَّكَ لَرَسُوْلُ اللّٰهِ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ اِنَّكَ لَرَسُوْلُهٗ وَاللّٰهُ يَشْهَدُ اِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ لَكٰذِبُوْنَ
2	उन्होंने अपनी कसमों को ढाल बनाया, फिर उन्होंने (लोगों को) अल्लाह के रास्ते से रोका। निश्चित रूप से, जो कुछ उन्होंने किया, वह बहुत बुरा है।	اِتَّخَذُوْٓا اَيْمَانَهُمْ جُنَّةً فَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اِنَّهُمْ سَآءَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ
3	यह इसलिए कि उन्होंने पहले ईमान लाया, फिर काफिर हो गए, तो उनके दिलों पर मुहर लगा दी गई, इसलिए वे समझ नहीं सकते।	ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ اٰمَنُوْا ثُمَّ كَفَرُوْا فَطُبِعَ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَهُمْ لَا يَفْقَهُوْنَ
4	और जब तुम उन्हें देखते हो, उनकी शारीरिक बनावट तुम्हें प्रभावित करती है और अगर वे बोलते हैं, तो तुम उनकी बातों को सुनते हो। वे ऐसे हैं जैसे लकड़ी के ठूंठ जो टिके हुए हों। वे हर चीख को अपने खिलाफ समझते हैं वे ही असली दुश्मन हैं, तो उनसे सावधान रहो; अल्लाह उन्हें नष्ट कर दे वे कैसे (सच्चाई से) भटकाए जा रहे हैं?	وَاِذَا رَاَيْتَهُمْ تُعْجِبُكَ اَجْسَامُهُمْ وَاِنْ يَّقُوْلُوْا تَسْمَعْ لِقَوْلِهِمْ كَاَنَّهُمْ خُشُبٌ مُّسَنَّدَةٌ يَحْسَبُوْنَ كُلَّ صَيْحَةٍ عَلَيْهِمْ هُمُ الْعَدُوُّ فَاحْذَرْهُمْ قَاتَلَهُمُ اللّٰهُ اَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ
5	और जब उनसे कहा जाता है, 'आओ (ईमान लाओ), ताकि रसूलुल्लाह तुम्हारे लिए माफी माँगें,' तो वे मुँह फेर लेते हैं और तुम देखते हो कि वे घमंड में मुँह मोड़ते हैं।	وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ تَعَالَوْا يَسْتَغْفِرْ لَكُمْ رَسُوْلُ اللّٰهِ لَوَّوْا رُءُوْسَهُمْ وَرَاَيْتَهُمْ يَصُدُّوْنَ وَهُمْ مُّسْتَكْبِرُوْنَ
6	उनके लिए बराबर है कि तुम (ऐ मुहम्मद) उनके लिए माफी माँगो या न माँगो, अल्लाह उन्हें नहीं बख्शेगा; निश्चित रूप से, अल्लाह फासिक लोगों को हिदायत नहीं देता।	سَوَآءٌ عَلَيْهِمْ اَسْتَغْفَرْتَ لَهُمْ اَمْ لَمْ تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ لَنْ يَّغْفِرَ اللّٰهُ لَهُمْ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ
7	वे वही हैं जो (अंसार से) कहते हैं, 'रसूलुल्लाह के साथ वालों (मुहाजिरों) को खैरात न दो ताकि वे तितर-बितर हो जाएँ,' हालाँकि आकाशों और धरती के खज़ाने अल्लाह के पास हैं, लेकिन मुनाफिक लोग समझते नहीं।	هُمُ الَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ لَا تُنْفِقُوْا عَلٰى مَنْ عِنْدَ رَسُوْلِ اللّٰهِ حَتّٰى يَنْفَضُّوْا وَلِلّٰهِ خَزَآئِنُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَلٰكِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ لَا يَفْقَهُوْنَ

يَقُوْلُوْنَ لَئِنْ رَّجَعْنَآ اِلَى الْمَدِيْنَةِ لَيُخْرِجَنَّ الْاَعَزُّ مِنْهَا الْاَذَلَّ ۗ وَلِلّٰهِ الْعِزَّةُ وَلِرَسُوْلِهٖ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ وَلٰكِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ	**8**	व॒कहत॒है॒ 'नशि्चति रू्प स॒े, अगर हम मदीना (बनी मसु॒तलकि॒ की जंग स॒) वापस लौट॒े, तो ताकतवर लोग वहा॑ँ स॒े कमज़ो॒र लोगों॑ को नकिाल दगे॑ो।' हालाकँि॑ ताकत तो कवेल अल॒लाह, उसक॒े रसलू और मोमनिों॑ क॒े लए॑ ह॒ै, लकेनि मन्ुाफकि लोग जानत॒े नह॑ीं।
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُلْهِكُمْ اَمْوَالُكُمْ وَلَآ اَوْلَادُكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ ۗ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ	**9**	ऐ ईमान वालो! तमु॒हारा माल और तमु॒हार॒े बचच॒े तमु॒ह॒ अल॒लाह की याद स॒े गा़फलि न कर॒ो और जो कोई ऐसा करता ह॒ै, वही लोग नक़ुसान उठान॒े वाल॒े ह॒ै॑।
وَاَنْفِقُوْا مِنْ مَّا رَزَقْنٰكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ اَحَدَكُمُ الْمَوْتُ فَيَقُوْلَ رَبِّ لَوْلَآ اَخَّرْتَنِيْٓ اِلٰٓى اَجَلٍ قَرِيْبٍ فَاَصَّدَّقَ وَاَكُنْ مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ	**10**	और उस चीज़ म॒े स॒े ख़रच॒ करो जो हमन॒े तमु॒ह॒ दी, इसस॒े पहल॒े क॒ि तमु॒म॒े स॒े कसिी की मौत आए; फरि वह कह॒े (पछतात॒े हुए), 'ऐ मर॒े रब, काश त॒ू मर॒ी मौत को थोड़ा और टाल द॒े, ताक॒ि म॒ै ख़रैात कर सक॒ूँ और नके लोगों॑ म॒े शामलि हो सक॒ूँ।'
وَلَنْ يُّؤَخِّرَ اللّٰهُ نَفْسًا اِذَا جَاۤءَ اَجَلُهَا ۗ وَاللّٰهُ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ	**11**	और अल॒लाह कसिी की मौत को नह॑ीं टालता जब उसका वक॒त आ जाता ह॒ै और अल॒लाह वह सब बहत॒ु बारीकी स॒े दखे॒ता ह॒ै जो तमु॒ करत॒े हो।

छंदों की संख्या	اَلتَّغَابُن	मदनी
१८	अत-तगाबनु - 64	मदनी

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अत-तगाबनु (पारस्परिक धोखा)

1	जो कुछ आकाशों में है और जो कुछ धरती में है, वह अल्लाह की तस्बीह करता है; उसी का सारा मुल्क है और उसी के लिए सारी तारीफ़ है; और वह हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है।	يُسَبِّحُ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ
2	वही है जिसने तुम्हें पैदा किया, फिर तुममें से कुछ काफ़िर है और कुछ मोमिन है और अल्लाह वह सब देखता है जो तुम करते हो।	هُوَ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ فَمِنْكُمْ كَافِرٌ وَّمِنْكُمْ مُّؤْمِنٌ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ
3	उसने आकाशों और धरती को हक़ के साथ बनाया, उसने तुम्हारी शक्ल बनाई और तुम्हारी शक्ल को ख़ूबसूरत किया, और उसी की ओर लौटना है।	خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ وَصَوَّرَكُمْ فَاَحْسَنَ صُوَرَكُمْ وَاِلَيْهِ الْمَصِيْرُ
4	वह जानता है जो कुछ आकाशों और धरती में है, और वह जानता है जो तुम छिपाते हो और जो तुम ज़ाहिर करते हो। और अल्लाह दिलों की हर बात को बहुत अच्छे से जानता है।	يَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَيَعْلَمُ مَا تُسِرُّوْنَ وَمَا تُعْلِنُوْنَ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ
5	क्या तुम्हें उन लोगों की ख़बर नहीं पहुँची जो तुमसे पहले काफ़िर थे? तो उन्होंने अपने करमों का बुरा नतीजा भोगा, और उनके लिए दर्दनाक सजा है।	اَلَمْ يَأْتِكُمْ نَبَؤُا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَبْلُ فَذَاقُوْا وَبَالَ اَمْرِهِمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ
6	यह इसलिए कि उनके पास उनके रसूल सुस्पष्ट निशानियों के साथ आए, फिर भी उन्होंने कहा, 'क्या इंसान हमें रास्ता दिखाएगा?' तो उन्होंने इनकार किया और मुँह मोड़ लिया, और अल्लाह ने (उनकी परवाह न की, क्योंकि) अल्लाह बेनियाज़ और तारीफ़ के लायक है।	ذٰلِكَ بِاَنَّهُ كَانَتْ تَّأْتِيْهِمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَقَالُوْٓا اَبَشَرٌ يَّهْدُوْنَنَا فَكَفَرُوْا وَتَوَلَّوْا وَّاسْتَغْنَى اللّٰهُ وَاللّٰهُ غَنِيٌّ حَمِيْدٌ
7	काफ़िरों ने दावा किया कि वे (मरने के बाद) कभी नहीं उठाए जाएँगे। कहो, 'हाँ, मेरे रब की क़सम, तुम ज़रूर उठाए जाओगे, फिर तुम्हें वह सब बताया जाएगा जो तुमने किया। और यह अल्लाह के लिए आसान है।'	زَعَمَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَنْ لَّنْ يُّبْعَثُوْا قُلْ بَلٰى وَرَبِّيْ لَتُبْعَثُنَّ ثُمَّ لَتُنَبَّؤُنَّ بِمَا عَمِلْتُمْ وَذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرٌ
8	तो अल्लाह और उसके रसूल और उस नूर (अल-क़ुरआन) पर ईमान लाओ जो हमने उतारा। और अल्लाह वह सब बहुत बारीकी से देखता है जो तुम करते हो।	فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَالنُّوْرِ الَّذِيْٓ اَنْزَلْنَا وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ

9	(याद करो) उस दिन को जब अल्लाह तुम्हें जमा होने के दिन इकट्ठा करेगा, यही वह दिन है जब सारी गलतियाँ ज़ाहिर होंगी। और जो कोई अल्लाह पर ईमान लाए और नेके काम करे, निश्चित रूप से अल्लाह उसकी गलतियों को मिटा देगा और उसे ऐसी जन्नतों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें बहती हैं, वे उसमें हमेशा-हमेशा रहेंगे। यही सबसे बड़ी कामयाबी है।	يَوْمَ يَجْمَعُكُمْ لِيَوْمِ الْجَمْعِ ذٰلِكَ يَوْمُ التَّغَابُنِ وَمَنْ يُّؤْمِنْ بِاللّٰهِ وَيَعْمَلْ صَالِحًا يُّكَفِّرْ عَنْهُ سَيِّاٰتِهٖ وَيُدْخِلْهُ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ
10	और जो लोग काफ़िर हुए और हमारी आयतों को झुठलाया, वे नरक के लोग होंगे, वे उसमें हमेशा रहेंगे। और वह बहुत बुरा ठिकाना है।	وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَآ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ
11	कोई मुसीबत किसी पर नहीं आती सिवाय अल्लाह की इजाज़त के; और जो कोई अल्लाह पर ईमान लाता है, निश्चित रूप से अल्लाह उसके दिल को हिदायत देगा। और अल्लाह हर चीज़ को बहुत अच्छे से जानता है।	مَآ اَصَابَ مِنْ مُّصِيْبَةٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ وَمَنْ يُّؤْمِنْ بِاللّٰهِ يَهْدِ قَلْبَهٗ وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ
12	और अल्लाह की आज्ञा मानो और रसूल की आज्ञा मानो। अगर तुम मुँह मोड़ते हो, तो हमारे रसूल की ज़िम्मेदारी केवल (अल्लाह का पैग़ाम) साफ़-साफ़ पहुँचाना है।	وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ فَاِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَاِنَّمَا عَلٰى رَسُوْلِنَا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ
13	(वही) अल्लाह है, उसके सिवा कोई इबादत के लायक नहीं। और मोमिनों को अल्लाह पर भरोसा करना चाहिए।	اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ
14	ऐ ईमान वालो! निश्चित रूप से, तुम्हारी बीवियों और तुम्हारे बच्चों में से कुछ तुम्हारे लिए दुश्मन हैं, तो उनके प्रति सावधान रहो; और अगर तुम माफ कर दो और नरमी करो और (उन्हें) क्षमा कर दो, तो निश्चित रूप से, अल्लाह बहुत माफ करने वाला, बहुत रहम करने वाला है।	يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنَّ مِنْ اَزْوَاجِكُمْ وَاَوْلَادِكُمْ عَدُوًّا لَّكُمْ فَاحْذَرُوْهُمْ وَاِنْ تَعْفُوْا وَتَصْفَحُوْا وَتَغْفِرُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ
15	निश्चित रूप से, तुम्हारा माल और तुम्हारे बच्चे तुम्हारे लिए एक आज़माइश है, और अल्लाह के पास बहुत बड़ा इनाम है।	اِنَّمَآ اَمْوَالُكُمْ وَاَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ وَاللّٰهُ عِنْدَهٗٓ اَجْرٌ عَظِيْمٌ
16	तो अल्लाह से डरो जितना तुम कर सकते हो और सुनो और आज्ञा मानो; और अपनी भलाई के लिए खर्च करो। और जो कोई अपनी कंजूसी से बचाया गया, वही लोग कामयाब हैं।	فَاتَّقُوا اللّٰهَ مَا اسْتَطَعْتُمْ وَاسْمَعُوْا وَاَطِيْعُوْا وَاَنْفِقُوْا خَيْرًا لِّاَنْفُسِكُمْ وَمَنْ يُّوْقَ شُحَّ نَفْسِهٖ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ
17	अगर तुम अल्लाह को अच्छा कर्ज़ दो, तो वह निश्चित रूप से तुम्हारे लिए उसे कई गुना कर देगा और तुम्हें माफ कर देगा। और अल्लाह बहुत शुक्रगुज़ार, बहुत सहनशील है।	اِنْ تُقْرِضُوا اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا يُّضٰعِفْهُ لَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ وَاللّٰهُ شَكُوْرٌ حَلِيْمٌ
18	वह ग़ैब और ज़ाहिर को जानने वाला है, वह बहुत शक्तिशाली, बहुत हिकमत वाला है।	عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ

छंदों की संख्या	اَلطَّلَاق	मदनी
१२	अत-तलाक - 65	मदनी

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अत-तलाक (तलाक)

1	ऐ नबी! जब तुम अपनी बीवियों को तलाक़ दो, तो उन्हें उनकी इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) के समय पर तलाक़ दो, जो उचित हो, और उस इद्दत की गिनती करो, और अपने रब अल्लाह से डरो। उन्हें उनके घरों से न निकालो और न उन्हें (खुद) निकलने दो, सिवाय इसके कि वे कोई स्पष्ट बुरा काम करें। ये अल्लाह के नियम हैं, और जो कोई अल्लाह के नियमों को तोड़ता है, निश्चित रूप से, उसने अपने आप पर जुल्म किया। तुम नहीं जानते, शायद इसके बाद अल्लाह कोई नई बात पैदा कर दे।	يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ اِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَاءَ فَطَلِّقُوْهُنَّ لِعِدَّتِهِنَّ وَاَحْصُوا الْعِدَّةَ وَاتَّقُوا اللّٰهَ رَبَّكُمْ لَا تُخْرِجُوْهُنَّ مِنْۢ بُيُوْتِهِنَّ وَلَا يَخْرُجْنَ اِلَّآ اَنْ يَّاْتِيْنَ بِفَاحِشَةٍ مُّبَيِّنَةٍ وَتِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ وَمَنْ يَّتَعَدَّ حُدُوْدَ اللّٰهِ فَقَدْ ظَلَمَ نَفْسَهٗ لَا تَدْرِيْ لَعَلَّ اللّٰهَ يُحْدِثُ بَعْدَ ذٰلِكَ اَمْرًا
2	तो जब वे अपनी इद्दत के अंत के नज़दीक हों, तो उन्हें अच्छे तरीके से (वापस) ले लो या उन्हें अच्छे तरीके से छोड़ दो और तुम्में से दो इंसाफ करने वाले गवाहों को गवाह बनाओ और अल्लाह के लिए गवाही को सही रखो। यह शिक्षा उस व्यक्ति के लिए दी गई है जो अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखता है। जो कोई अल्लाह से डरता है, निश्चित रूप से वह उसके लिए निकास का रास्ता बनाएगा,	فَاِذَا بَلَغْنَ اَجَلَهُنَّ فَاَمْسِكُوْهُنَّ بِمَعْرُوْفٍ اَوْ فَارِقُوْهُنَّ بِمَعْرُوْفٍ وَّاَشْهِدُوْا ذَوَيْ عَدْلٍ مِّنْكُمْ وَاَقِيْمُوا الشَّهَادَةَ لِلّٰهِ ذٰلِكُمْ يُوْعَظُ بِهٖ مَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّهٗ مَخْرَجًا
3	और उसे ऐसी दिशा से रोज़ी देगा जिसका उसे गुमान भी न हो। और जो कोई अल्लाह पर भरोसा करता है, निश्चित रूप से अल्लाह उसकी ज़रूरतों को पूरा करेगा। निश्चित रूप से, अल्लाह अपने काम को पूरा करता है। निश्चित रूप से, अल्लाह ने हर चीज़ के लिए एक निश्चित माप बनाया है।	وَّيَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ وَمَنْ يَّتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ فَهُوَ حَسْبُهٗ اِنَّ اللّٰهَ بَالِغُ اَمْرِهٖ قَدْ جَعَلَ اللّٰهُ لِكُلِّ شَيْءٍ قَدْرًا
4	तुम्हारी बीवियों में से जो औरतें मासिक धर्म से रुक गई हों (रजोनिवृत्ति), अगर तुम्हें उनके इद्दत के बारे में शक हो, तो उनकी इद्दत तीन महीने है; और ऐसी औरतें जो मासिक धर्म नहीं देखतीं, (उनके लिए भी यही है)। और जो औरतें गर्भवती हों, उनकी इद्दत तब तक है जब तक वे अपने बच्चे को जन्म न दे दें। और जो कोई अल्लाह से डरता है, निश्चित रूप से वह उसके लिए उसके मामले में आसानी बनाएगा।	وَالّٰٓـِٔيْ يَئِسْنَ مِنَ الْمَحِيْضِ مِنْ نِّسَاۗىِٕكُمْ اِنِ ارْتَبْتُمْ فَعِدَّتُهُنَّ ثَلٰثَةُ اَشْهُرٍ وَّالّٰٓـِٔيْ لَمْ يَحِضْنَ وَاُولَاتُ الْاَحْمَالِ اَجَلُهُنَّ اَنْ يَّضَعْنَ حَمْلَهُنَّ وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّهٗ مِنْ اَمْرِهٖ يُسْرًا
5	यह अल्लाह का हुक्म है जो उसने तुम्हारे लिए उतारा; जो कोई अल्लाह से डरता है, निश्चित रूप से अल्लाह उसकी गलतियों को मिटा देगा और उसके लिए इनाम को बढ़ा देगा।	ذٰلِكَ اَمْرُ اللّٰهِ اَنْزَلَهٗٓ اِلَيْكُمْ وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يُكَفِّرْ عَنْهُ سَيِّاٰتِهٖ وَيُعْظِمْ لَهٗٓ اَجْرًا

6	उनह़ें (बीवियों को) वहा़ँ ठहराओ जहा़ँ तुम रहत॓ हो, अपनी हसैयित क॓ मुत़ाबकि, और उनह़ें तंग करन॓ क॓ लिए नुक़सान न पहुँचाओ ताकि उनका दलि तंग हो। और अगर व॓ (तलाक़ दी गई बीवियाँ) गरभवती हों, तो उनह़ें उनकी रोज़ी दो जब तक व॓ जनम़ न द॓, फरि अगर व॓ तुमह़ार॓ (बच्चों) को दूध पलिाएँ, तो उनह़ें उसका बदला दो; और तुम आपस म॓ अच्छ॓ तरीक॓ स॓ मशवरा करो; और अगर तुमह़ें कोई मुश्क़लि हो, तो कोई दूसरी औरत उसक॓ लिए (बच्च॓ को) दूध पलिा सकती ह॓	اَسْكِنُوْهُنَّ مِنْ حَيْثُ سَكَنْتُمْ مِّنْ وُّجْدِكُمْ وَلَا تُضَاۤرُّوْهُنَّ لِتُضَيِّقُوْا عَلَيْهِنَّ وَاِنْ كُنَّ اُولٰتِ حَمْلٍ فَاَنْفِقُوْا عَلَيْهِنَّ حَتّٰى يَضَعْنَ حَمْلَهُنَّ فَاِنْ اَرْضَعْنَ لَكُمْ فَاٰتُوْهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ وَاْتَمِرُوْا بَيْنَكُمْ بِمَعْرُوْفٍ وَاِنْ تَعَاسَرْتُمْ فَسَتُرْضِعُ لَهٗۤ اُخْرٰى
7	जो व्यक़्त॓ क॓ पास समृद्धि हो, उस॓ अपनी हसैयित क॓ मुत़ाबकि ख़र्च करना चाहि, और जसिक॓ पास रोज़ी सीमति हो, उस॓ उस धन स॓ ख़र्च करना चाहि जो अल़्लाह न॓ उस॓ दयिा। अल़्लाह कसिी को उसस॓ ज़्यादा बोझ नहीं दत॓ा जो उसन॓ उस॓ दयिा। अल़्लाह जलद़ ही तंगी क॓ बाद आसानी दग॓ा।	لِيُنْفِقْ ذُوْ سَعَةٍ مِّنْ سَعَتِهٖ وَمَنْ قُدِرَ عَلَيْهِ رِزْقُهٗ فَلْيُنْفِقْ مِمَّاۤ اٰتٰىهُ اللّٰهُ لَا يُكَلِّفُ اللّٰهُ نَفْسًا اِلَّا مَاۤ اٰتٰىهَا سَيَجْعَلُ اللّٰهُ بَعْدَ عُسْرٍ يُّسْرًا
8	और कतिन॓ ही शहरों (क॓ लोग) थ॓ जनिह़ोंन॓ अपन॓ रब क॓ हुक़्म और उसक॓ रसूलों की अवज्ञा की, तो हमन॓ उन शहरों क॓ लोगों का सख़्त हसिाब लयिा, और हमन॓ उनह़ें (आख़रित म॓) भयंकर सजा दी,	وَكَاَيِّنْ مِّنْ قَرْيَةٍ عَتَتْ عَنْ اَمْرِ رَبِّهَا وَرُسُلِهٖ فَحَاسَبْنٰهَا حِسَابًا شَدِيْدًا وَّعَذَّبْنٰهَا عَذَابًا نُّكْرًا
9	तो उनहोंन॓ अपन॓ कर्मों का बुरा नतीजा भोगा, और उनक॓ कर्मों का परणिाम बहत़ बड़ा नुक़सान था।	فَذَاقَتْ وَبَالَ اَمْرِهَا وَكَانَ عَاقِبَةُ اَمْرِهَا خُسْرًا
10	अल़्लाह न॓ उनक॓ लिए सख़्त सजा तयैार की ह॓, तो ऐ बुद्धमिान लोगो, जो ईमान लाए हो, अल़्लाह स॓ डरो! नश्चिति रूप स॓, अल़्लाह न॓ तुमह़ार॓ लिए एक चेतावनी उतारी ह॓,	اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ عَذَابًا شَدِيْدًا فَاتَّقُوا اللّٰهَ يٰۤاُولِى الْاَلْبَابِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قَدْ اَنْزَلَ اللّٰهُ اِلَيْكُمْ ذِكْرًا
11	(यानी) एक रसूल जो तुमह़ें अल़्लाह की आयत॓ पढ़कर सुनाता ह॓ जो (हर तरह क॓ हुक़्म को) स्पष्ट करती ह॓, ताकि वह उन लोगों को जो ईमान लाए और नके काम कए, अंधरों स॓ नूर की ओर नकिाल॓ और जो कोई अल़्लाह पर ईमान लाए और नके काम कर॓, नश्चिति रूप स॓ वह उस॓ ऐसी जनन्तों म॓ दाख़लि करग॓ा जनिक॓ नीच॓ नहर॓ बहती ह;ं व॓ उसम॓ हमश॓ा-हमश॓ा रहग॓ें। नश्चिति रूप स॓, अल़्लाह न॓ उसक॓ लिए अच्छी रोज़ी दी ह॓।	رَّسُوْلًا يَّتْلُوْا عَلَيْكُمْ اٰيٰتِ اللّٰهِ مُبَيِّنٰتٍ لِّيُخْرِجَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ مِنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ وَمَنْ يُّؤْمِنْ بِاللّٰهِ وَيَعْمَلْ صَالِحًا يُّدْخِلْهُ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَاۤ اَبَدًا قَدْ اَحْسَنَ اللّٰهُ لَهٗ رِزْقًا
12	अल़्लाह वही ह॓ जसिन॓ सात आकाश बनाए और ज़मीन की रचना भी उसी तरह की। उसका हुक़्म उन पर लागू होता ह॓, ताकि तुम जान लो कि अल़्लाह हर चीज़ पर क़ुदरत रखता ह॓, और अल़्लाह का ज़्ञान वास्तव म॓ हर चीज़ को घरे॓ हुए ह॓।	اَللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ وَّمِنَ الْاَرْضِ مِثْلَهُنَّ يَتَنَزَّلُ الْاَمْرُ بَيْنَهُنَّ لِتَعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۙ وَّاَنَّ اللّٰهَ قَدْ اَحَاطَ بِكُلِّ شَيْءٍ عِلْمًا

छंदों की संख़्या	اَلتَّحْرِيم	मदनी
१२	एट-Tahrim - 66	मदनी

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

एट-Tahrim (निषिधे)

1	ऐ नबी! तमु उस चीज़ को क्यों हराम करत`हो जो अल्लाह न` तमुहार`लिए हलाल की? क्या तमु अपनी बीवियों को खुश करना चाहत`हो? और अल्लाह बहतु माफ करन`वाला, बहतु रहम करन`वाला ह।	يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ لِمَ تُحَرِّمُ مَآ اَحَلَّ اللّٰهُ لَكَ تَبْتَغِيْ مَرْضَاتَ اَزْوَاجِكَ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ
2	अल्लाह न`तमुहार`लिए तमुहारी क़समों को तोड़न`का रास्ता निर्धारित किया ह। और अल्लाह तमुहारा रब ह,ै और वह बहतु जानन`वाला, बहतु हकिमत वाला ह।	قَدْ فَرَضَ اللّٰهُ لَكُمْ تَحِلَّةَ اَيْمَانِكُمْ وَاللّٰهُ مَوْلٰىكُمْ وَهُوَ الْعَلِيْمُ الْحَكِيْمُ
3	और जब नबी न`अपनी एक बीवी स`एक बात गपुत रप़ स`कही, तो उसन`वह बात (दसूरी को) बता दी, और अल्लाह न`उस`नबी को ज़ाहिर कर दिया। फिर नबी न`उसका कछु हिस्सा बताया और कछु हिस्स`स`रेक गए। तो जब उसन`अपनी बीवी को यह बताया, तो वह बोली, 'यह तमुह`किसन`बताया?' उसन`कहा, 'मझु`उसन`बताया जो बहतु जानन`वाला, बहतु खबर रखन`वाला ह।'	وَاِذْ اَسَرَّ النَّبِيُّ اِلٰى بَعْضِ اَزْوَاجِهٖ حَدِيْثًا فَلَمَّا نَبَّاَتْ بِهٖ وَاَظْهَرَهُ اللّٰهُ عَلَيْهِ عَرَّفَ بَعْضَهٗ وَاَعْرَضَ عَنْ بَعْضٍ فَلَمَّا نَبَّاَهَا بِهٖ قَالَتْ مَنْ اَنْۢبَاَكَ هٰذَا قَالَ نَبَّاَنِيَ الْعَلِيْمُ الْخَبِيْرُ
4	अगर तमु दोनों (बीवियाँ) अल्लाह की ओर तौबा करो, क्योंकि तमुहार`दिल भटक गए ह। और अगर तमु दोनों नबी क`ख़िलाफ़ एक-दसूर`की मदद करोगी, तो निश्चित रप़ स`अल्लाह उसका मालिक ह,ै और जबिरील और नके मोमनि लोग, और इसक`बाद फ़रिश्त`उसकी मदद करन`वाल`ह।	اِنْ تَتُوْبَآ اِلَى اللّٰهِ فَقَدْ صَغَتْ قُلُوْبُكُمَا وَاِنْ تَظٰهَرَا عَلَيْهِ فَاِنَّ اللّٰهَ هُوَ مَوْلٰىهُ وَجِبْرِيْلُ وَصَالِحُ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمَلٰٓئِكَةُ بَعْدَ ذٰلِكَ ظَهِيْرٌ
5	शायद उसका रब, अगर उसन`तमुह`तलाक़ द`दिया, तो उस`तमुस`बहेतर बीवियाँ द`द, जो मसुलमि, ईमान वाली, आज्ञाकारी, तौबा करन`वाली, इबादत करन`वाली, रोज़ा रखन`वाली हों, चाह`वे पहल`विवाहित हों`या कँवारी।	عَسٰى رَبُّهٗٓ اِنْ طَلَّقَكُنَّ اَنْ يُّبْدِلَهٗٓ اَزْوَاجًا خَيْرًا مِّنْكُنَّ مُسْلِمٰتٍ مُّؤْمِنٰتٍ قٰنِتٰتٍ تٰٓئِبٰتٍ عٰبِدٰتٍ سٰٓئِحٰتٍ ثَيِّبٰتٍ وَّاَبْكَارًا
6	ऐ ईमान वालो! अपन`आप को और अपन`परिवार को उस आग स` बचाओ जसिका ईधन लोग और पत्थर होंग, जसिक`ऊपर सख़्त मज़िाज वाल`फ़रिश्त`होंग, जो अल्लाह की आज्ञा की अवज्ञा नहीं करत`जो उनह`हुक़्म दिया जाता ह,ै और वही करत`ह`जो उनह`करन`का हुक़्म होता ह।	يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قُوْٓا اَنْفُسَكُمْ وَاَهْلِيْكُمْ نَارًا وَّقُوْدُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ عَلَيْهَا مَلٰٓئِكَةٌ غِلَاظٌ شِدَادٌ لَّا يَعْصُوْنَ اللّٰهَ مَآ اَمَرَهُمْ وَيَفْعَلُوْنَ مَا يُؤْمَرُوْنَ
7	ऐ काफ़िर लोगो! आज कोई बहाना न पेश करो। निश्चित रप़ स,` तमुह`केवल उसी का बदला दिया जा रहा ह`जो तमुन`किया।	يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَا تَعْتَذِرُوا الْيَوْمَ اِنَّمَا تُجْزَوْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ

8	ऐ ईमान वालो! अल्लाह की ओर पूरी तरह शुद्ध तौबा करो, शायद तुम्हारा रब तुम्हारी गलतियों को मिटा दे और तुम्हें ऐसी जन्नत में दाख़िल करे जिसके नीचे नहरें बहती हैं, उस दिन जब अल्लाह नबी को और उनके साथ ईमान वालों को निराश नहीं करेगा; उनका नूर उनके सामने और उनकी दाहिनी ओर चमकेगा, और वे कहेंगे, 'ऐ हमारे रब, हमारे लिए हमारा नूर पूरा कर और हमें माफ कर; निश्चित रूप से, तू हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है'	يَٰٓأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا تُوْبُوْٓا اِلَى اللّٰهِ تَوْبَةً نَّصُوْحًا عَسٰى رَبُّكُمْ اَنْ يُّكَفِّرَ عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ وَيُدْخِلَكُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ يَوْمَ لَا يُخْزِى اللّٰهُ النَّبِيَّ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَه نُوْرُهُمْ يَسْعٰى بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَبِاَيْمَانِهِمْ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَآ اَتْمِمْ لَنَا نُوْرَنَا وَاغْفِرْ لَنَا اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ
9	ऐ नबी! काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों के ख़िलाफ़ जिहाद करो और उनके साथ सख़्ती करो। उनका ठिकाना जहन्नम का नरक है और वह बहुत बुरा ठिकाना है।	يَٰٓأَيُّهَا النَّبِيُّ جَاهِدِ الْكُفَّارَ وَالْمُنٰفِقِيْنَ وَاغْلُظْ عَلَيْهِمْ وَمَأْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ
10	अल्लाह ने काफ़िरों के लिए नूह की बीवी और लूत की बीवी की मिसाल दी। वे दोनों हमारे दो नेक बंदों की निगरानी में थीं; फिर भी दोनों ने अपने-अपने शौहरों के साथ ख़ियानत की, लेकिन दोनों शौहर उन्हें अल्लाह की (सज़ा) से ज़रा भी नहीं बचा सके; और उनसे कहा गया, 'नरक में उन लोगों के साथ दाख़िल हो जाओ जो (नरक में) दाख़िल हो रहे हैं'	ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوا امْرَاَتَ نُوْحٍ وَّامْرَاَتَ لُوْطٍ كَانَتَا تَحْتَ عَبْدَيْنِ مِنْ عِبَادِنَا صَالِحَيْنِ فَخَانَتٰهُمَا فَلَمْ يُغْنِيَا عَنْهُمَا مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا وَّقِيْلَ ادْخُلَا النَّارَ مَعَ الدّٰخِلِيْنَ
11	और अल्लाह ने ईमान वालों के लिए फ़िरऔन की बीवी की मिसाल दी, जब उसने कहा, 'ऐ मेरे रब, मेरे लिए अपने पास जन्नत में एक घर बना और मुझे फ़िरऔन और उसके कामों से बचा, और मुझे ज़ालिम क़ौम से नजात दे,'	وَضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوا امْرَاَتَ فِرْعَوْنَ اِذْ قَالَتْ رَبِّ ابْنِ لِيْ عِنْدَكَ بَيْتًا فِى الْجَنَّةِ وَنَجِّنِيْ مِنْ فِرْعَوْنَ وَعَمَلِه وَنَجِّنِيْ مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ
12	और मरयम बिन्ते इमरान, जिसने अपनी शर्मगाह की हिफ़ाज़त की, तो हमने उसमें अपनी रूह से कुछ फूँक दिया; और उसने अपने रब के कलिमों और उसकी किताबों की तस्दीक़ की; और वह आज्ञाकारी लोगों में से थी।	وَمَرْيَمَ ابْنَتَ عِمْرٰنَ الَّتِيْٓ اَحْصَنَتْ فَرْجَهَا فَنَفَخْنَا فِيْهِ مِنْ رُّوْحِنَا وَصَدَّقَتْ بِكَلِمٰتِ رَبِّهَا وَكُتُبِه وَكَانَتْ مِنَ الْقٰنِتِيْنَ

छंदों की संख्या	اَلْمُلْك	مكية
30	अल-मुल्क - 67	मक्की

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल-मुल्क (राज्य)

1	महासचु ि है अल्लाह जो (सार) मुल्क का मालकि ह,ै और वह हर चीज़ पर कद्रुत रखता ह।ै	تَبٰرَكَ الَّذِيْ بِيَدِهِ الْمُلْكُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرُ
2	जसिन मौत और ज़िंदगी को पदै कयि, ताकि वह तमुहारी आज़माइश कर कि तमुम स कौन अपन करमो म सबस बेहतर ह और वह बहतु शक़्तशिाली, बहतु माफ करन वाला ह।ै	الَّذِيْ خَلَقَ الْمَوْتَ وَالْحَيٰوةَ لِيَبْلُوَكُمْ اَيُّكُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْغَفُوْرُ
3	जसिन सात आकाशों को परत-दर-परत बनाया। तमु रब रहमान की रचना म कोई असंतलुन नहीं दखेोगो।	الَّذِيْ خَلَقَ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ طِبَاقًا مَا تَرٰى فِيْ خَلْقِ الرَّحْمٰنِ مِنْ تَفٰوُتٍ فَارْجِعِ الْبَصَرَ هَلْ تَرٰى مِنْ فُطُوْرٍ
4	तो फरि स दखेो, कय़ा तमु कोई कमी दखेत हो?	ثُمَّ ارْجِعِ الْبَصَرَ كَرَّتَيْنِ يَنْقَلِبْ اِلَيْكَ الْبَصَرُ خَاسِئًا وَّهُوَ حَسِيْرٌ
5	फरि अपनी नज़र को दोबारा फरो, तो तमुहारी नज़र थककर और हारकर तमुहार पास लौट आएगी।	وَلَقَدْ زَيَّنَّا السَّمَاءَ الدُّنْيَا بِمَصَابِيْحَ وَجَعَلْنٰهَا رُجُوْمًا لِّلشَّيٰطِيْنِ وَاَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابَ السَّعِيْرِ
6	और नशि्चति रप़ स काफरिों क लएि उनक रब की यातना ह,ै जो बहतु बड़ी ह।ै	وَلِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ عَذَابُ جَهَنَّمَ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ
7	जब उनह नरक म डाला जाएगा, तो व उसकी भयंकर आवाज़ सनुगे जब वह भड़क रही होगी।	اِذَآ اُلْقُوْا فِيْهَا سَمِعُوْا لَهَا شَهِيْقًا وَّهِيَ تَفُوْرُ
8	वह लगभग फट जाएगी गसु्स सो हर बार जब उसम एक समहू डाला जाएगा, उसक रखवाल उनस पछूगे, 'कय़ा तमुहार पास कोई चतेावनी दने वाला नहीं आया?'	تَكَادُ تَمَيَّزُ مِنَ الْغَيْظِ كُلَّمَآ اُلْقِيَ فِيْهَا فَوْجٌ سَاَلَهُمْ خَزَنَتُهَآ اَلَمْ يَاْتِكُمْ نَذِيْرٌ
9	व कहगे, 'हा,ँ नशि्चति रप़ स, हमार पास एक चतेावनी दने वाला आया था, लकेनि हमन उस झठुलाया और कहा, 'अल्लाह न कछु भी नहीं उतारा, तमु तो वास्तव म बड़ी गमुराही म हो।'	قَالُوْا بَلٰى قَدْ جَاءَنَا نَذِيْرٌ فَكَذَّبْنَا وَقُلْنَا مَا نَزَّلَ اللّٰهُ مِنْ شَيْءٍ اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا فِيْ ضَلٰلٍ كَبِيْرٍ
10	और व कहगे, 'काश हमन (पहल) सनुा होता या समझा होता, तो हम धधकती नरक क लोगों म न होत।'	وَقَالُوْا لَوْ كُنَّا نَسْمَعُ اَوْ نَعْقِلُ مَا كُنَّا فِيْٓ اَصْحٰبِ السَّعِيْرِ

11	तो उन्होंने अपने गुनाहों को कबूल किया। लेकिन धधकती नरक के लोगों के लिए (अल्लाह की रहमत से) बहुत दूर है।	فَاعْتَرَفُوْا بِذَنْۢبِهِمْ فَسُحْقًا لِّاَصْحٰبِ السَّعِيْرِ
12	निश्चित रूप से, जो लोग अपने रब से डरते हैं, जो उनके लिए अनदेखा है, उनके लिए माफी और बड़ा इनाम है।	اِنَّ الَّذِيْنَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَيْبِ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ كَبِيْرٌ
13	और अपनी बात को छिपाओ या ज़ाहिर करो। निश्चित रूप से, वह दिलों की हर बात को जानता है।	وَاَسِرُّوْا قَوْلَكُمْ اَوِ اجْهَرُوْا بِهٖ ۗاِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ
14	क्या वह जो पैदा करता है, वह नहीं जानता? और वह बहुत सूक्ष्म, बहुत जानकार है।	اَلَا يَعْلَمُ مَنْ خَلَقَ وَهُوَ اللَّطِيْفُ الْخَبِيْرُ
15	वही है जिसने तुम्हारे लिए धरती को आसान बनाया, तो उसके हर कोने में चलो और उसकी रोज़ी का हिस्सा खाओ। और उसी की ओर तुम्हें (पुनरुत्थान के बाद) लौटना है।	هُوَ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ ذَلُوْلًا فَامْشُوْا فِيْ مَنَاكِبِهَا وَكُلُوْا مِنْ رِّزْقِهٖ ۗوَاِلَيْهِ النُّشُوْرُ
16	क्या तुम्हें यकीन है कि वह जो आकाश में है, वह तुम्हें धरती में नहीं धँसाएगा जब वह अचानक हिलने लगेगी?	ءَاَمِنْتُمْ مَّنْ فِى السَّمَاۤءِ اَنْ يَّخْسِفَ بِكُمُ الْاَرْضَ فَاِذَا هِيَ تَمُوْرُ
17	या क्या तुम्हें यकीन है कि वह जो आकाश में है, वह तुम पर पथरीला तूफ़ान नहीं भेजेगा? फिर तुम जान लोगे कि मेरी चेतावनी कैसी थी।	اَمْ اَمِنْتُمْ مَّنْ فِى السَّمَاۤءِ اَنْ يُّرْسِلَ عَلَيْكُمْ حَاصِبًا ۗفَسَتَعْلَمُوْنَ كَيْفَ نَذِيْرِ
18	और निश्चित रूप से, उनके पहले के लोगों ने भी (अपने रसूलों को) झुठलाया। तो मेरी नाराज़गी कितनी भयंकर थी!	وَلَقَدْ كَذَّبَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيْرِ
19	क्या उन्होंने उन परिंदों को नहीं देखा जो उनके ऊपर अपने परों को फैलाते और सिकोड़ते हैं? उन्हें (हवा में) कोई नहीं थामता सिवाय रहमान के। निश्चित रूप से, वह हर चीज़ को देखने वाला है।	اَوَلَمْ يَرَوْا اِلَى الطَّيْرِ فَوْقَهُمْ صٰٓفّٰتٍ وَّيَقْبِضْنَ ۛمَا يُمْسِكُهُنَّ اِلَّا الرَّحْمٰنُ ۗاِنَّهٗ بِكُلِّ شَيْءٍۢ بَصِيْرٌ
20	या वह कौन है जो तुम्हारी सेना बनकर तुम्हारी मदद करेगा सिवाय रहमान के? काफ़िर तो बस धोखे में हैं।	اَمَّنْ هٰذَا الَّذِيْ هُوَ جُنْدٌ لَّكُمْ يَنْصُرُكُمْ مِّنْ دُوْنِ الرَّحْمٰنِ ۗاِنِ الْكٰفِرُوْنَ اِلَّا فِيْ غُرُوْرٍ
21	या वह कौन है जो तुम्हें रोज़ी देगा अगर वह अपनी रोज़ी रोक ले? बल्कि वे घमंड और नफ़रत में डटे रहते हैं।	اَمَّنْ هٰذَا الَّذِيْ يَرْزُقُكُمْ اِنْ اَمْسَكَ رِزْقَهٗ ۗبَلْ لَّجُّوْا فِيْ عُتُوٍّ وَّنُفُوْرٍ
22	क्या वह व्यक्ति जो चेहरे के बल रेंगता है, वह ज़्यादा सही रास्ते पर है या वह जो सीधा चलता है सही रास्ते पर?	اَفَمَنْ يَّمْشِيْ مُكِبًّا عَلٰى وَجْهِهٖٓ اَهْدٰٓى اَمَّنْ يَّمْشِيْ سَوِيًّا عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ
23	कहो (मुहम्मद), 'वही है जिसने तुम्हें पैदा किया और तुम्हारे लिए सुनने, देखने और दिल की समझ दी। (लेकिन) तुम बहुत कम शुक्र करते हो।'	قُلْ هُوَ الَّذِيْٓ اَنْشَاَكُمْ وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَالْاَفْـِٕدَةَ ۗقَلِيْلًا مَّا تَشْكُرُوْنَ

قُلْ هُوَ الَّذِيْ ذَرَاَكُمْ فِى الْاَرْضِ وَاِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ	कहो, 'वही ह जैसिन तमुह धरती पर फलैाया, और उसी की ओर तमुह इकटठा कयिा जाएगा।'	**24**
وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ	और व केहत हे, 'यह धमकी कब आएगी अगर तमु सचच हो?'	**25**
قُلْ اِنَّمَا الْعِلْمُ عِنْدَ اللّٰهِ وَاِنَّمَآ اَنَا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ	कहो (महममद), 'नशिचति रप स, उस (कयामत क दनि) का जञान कवेल अलल़ाह क पास हो और म तो कवेल एक साफ़ चतेावनी दने वाला हूँ'	**26**
فَلَمَّا رَاَوْهُ زُلْفَةً سِيْٓـَٔتْ وُجُوْهُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَقِيْلَ هٰذَا الَّذِيْ كُنْتُمْ بِهٖ تَدَّعُوْنَ	तो जब व यातना को नजद़ीक दखेगे, तो काफरि क चहेर उदास हो जाएगे और उनस कहा जाएगा, 'यही वह (यातना) ह जसि तमु मागँत थे।'	**27**
قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ اَهْلَكَنِيَ اللّٰهُ وَمَنْ مَّعِيَ اَوْ رَحِمَنَا فَمَنْ يُّجِيْرُ الْكٰفِرِيْنَ مِنْ عَذَابٍ اَلِيْمٍ	कहो (महममद), 'सोचो, अगर अलल़ाह मझु और मरे साथ वालो को खतम कर द या हम पर रहम कर, (तो हम जननत म होग), फरि काफरि को दरद़नाक यातना स कौन बचा सकता ह?'	**28**
قُلْ هُوَ الرَّحْمٰنُ اٰمَنَّا بِهٖ وَعَلَيْهِ تَوَكَّلْنَا فَسَتَعْلَمُوْنَ مَنْ هُوَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ	कहो, 'वह रहमान ह, हम उस पर ईमान लाए और उसी पर हमन भरोसा कयिा। तो तमु जलद़ ही जान लोग कि कौन साफ़ गमुराही म ह।'	**29**
قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ اَصْبَحَ مَاؤُكُمْ غَوْرًا فَمَنْ يَّأْتِيْكُمْ بِمَاۤءٍ مَّعِيْنٍ	कहो (महममद), 'मझु बताओ, अगर तमुहारा पानी का सऱोत सूख जाए, तो कौन तमुह बहता हआु पानी दगेा?'	**30**

छंदों की संख्या	اَلْقَلَم	مكية
५२	अल Qalam - 68	मक्की

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल Qalam (कलम)

1	नून। क़सम ह क़ैलम की और जो कछ व लेखित हे,	ن وَالْقَلَمِ وَمَا يَسْطُرُوْنَ
2	अपन रेब की कृपा स तमु (महुम्मद) पागल नहीं हो।	مَآ اَنْتَ بِنِعْمَةِ رَبِّكَ بِمَجْنُوْنٍ
3	और नश्चिति रूप स तमुह एक ऐसा बड़ा इनाम मलिगेा जो कभी खतम नहीं होगा।	وَاِنَّ لَكَ لَاَجْرًا غَيْرَ مَمْنُوْنٍ
4	और नश्चिति रूप स तमु बहत ही उच्च नतैकि चरित्र वाल हो।	وَاِنَّكَ لَعَلٰى خُلُقٍ عَظِيْمٍ
5	तो तमु जलद ही देखोग और व (काफरि) भी देखेगे,	فَسَتُبْصِرُ وَيُبْصِرُوْنَ
6	तमुम स कौन पागल ह?	بِاَيِّىكُمُ الْمَفْتُوْنُ
7	नश्चिति रूप स, तमुहारा रब वह ह जो सबस बेहतर जानता ह कि कौन उसकी राह स भटक गया ह; और वही सबस बेहतर जानता ह कि कौन मारगदरशन पराप्त करन वाला ह।	اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيْلِهٖ وَهُوَ اَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِيْنَ
8	तो तमु उन लोगों की बात न मानो जो (अलल्लाह की आयतों को) झठुलात ह।	فَلَا تُطِعِ الْمُكَذِّبِيْنَ
9	व चाहत ह कि तमु नरम पड़ जाओ ताकि व भी नरम पड़ जाएँ।	وَدُّوْا لَوْ تُدْهِنُ فَيُدْهِنُوْنَ
10	और तमु हर उस वयक्ति की बात न मानो जो कसम खान वाला और तचछ समझन वाला ह,	وَلَا تُطِعْ كُلَّ حَلَّافٍ مَّهِيْنٍ
11	जो नदिा करन वाला ह, जो इधर-उधर फतिना फलैाता ह,	هَمَّازٍ مَّشَّاءٍ بِنَمِيْمٍ
12	जो हर अचछी चीज़ को रोकता ह, जो हद स बढ़न वाला और बहत गनुाह करन वाला ह,	مَّنَّاعٍ لِّلْخَيْرِ مُعْتَدٍ اَثِيْمٍ
13	जो कठोर सवभाव का ह, इसक अलावा उसकी बरुाई क लिए भी मशहूर ह,	عُتُلٍّ بَعْدَ ذٰلِكَ زَنِيْمٍ
14	कयोंकि वह धनी और बहत सतानों वाला ह।	اَنْ كَانَ ذَا مَالٍ وَّبَنِيْنَ
15	जब उसको हमारी आयत पढ़कर सनुाई जाती ह, तो वह कहता ह, "(यह तो) परुान लोगों की कहानयिा हैं"	اِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِ اٰيٰتُنَا قَالَ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ

16	हम जलद ही उसकी नाक पर निशान लगा देंगे।	سَنَسِمُه عَلَى الْخُرْطُوْمِ
17	निश्चिति रूप से, हमने उनकी (मक्का के मुश्रिकों की) आज़माइश की जैसे हमने बाग़ वालों की आज़माइश की, जब उन्होंने क़सम खाई कि वे सुबह को (उसके फल) ज़रूर तोड़ लेंगे,	اِنَّا بَلَوْنٰهُمْ كَمَا بَلَوْنَآ اَصْحٰبَ الْجَنَّةِ اِذْ اَقْسَمُوْا لَيَصْرِمُنَّهَا مُصْبِحِيْنَ
18	लेकिन उन्होंने (यह कहकर) नहीं छोड़ा, 'इंशा अल्लाह।'	وَلَا يَسْتَثْنُوْنَ
19	फिर उस बाग़ पर तुम्हारे रब की ओर से एक आपदा आई जब वे सो रहे थे।	فَطَافَ عَلَيْهَا طَآئِفٌ مِّنْ رَّبِّكَ وَهُمْ نَآئِمُوْنَ
20	तो वह बाग़ रात की तरह काला हो गया,	فَاَصْبَحَتْ كَالصَّرِيْمِ
21	फिर सुबह को उन्होंने एक-दूसरे को पुकारा।	فَتَنَادَوْا مُصْبِحِيْنَ
22	'जल्दी चलो अपने बाग़ की ओर, अगर तुम्हें फल तोड़ना है'	اَنِ اغْدُوْا عَلٰى حَرْثِكُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰرِمِيْنَ
23	तो वे चुपके-चुपके बात करते हुए चल पड़े,	فَانْطَلَقُوْا وَهُمْ يَتَخَافَتُوْنَ
24	'आज कोई ग़रीब वहाँ तुम्हारे पास न आए।'	اَنْ لَّا يَدْخُلَنَّهَا الْيَوْمَ عَلَيْكُمْ مِّسْكِيْنٌ
25	और वे सुबह-सुबह दृढ़ निश्चय के साथ गए।	وَّغَدَوْا عَلٰى حَرْدٍ قٰدِرِيْنَ
26	लेकिन जब उन्होंने अपने बाग़ को देखा, तो कहा, 'निश्चिति रूप से, हम रास्ता भटक गए हैं'	فَلَمَّا رَاَوْهَا قَالُوْٓا اِنَّا لَضَآلُّوْنَ
27	बल्कि (कहा), 'हम तो सब कुछ खो चुके हैं'	بَلْ نَحْنُ مَحْرُوْمُوْنَ
28	उनमें से सबसे समझदार ने कहा, 'क्या मैंने तुमसे नहीं कहा था कि तुम अपने रब की तसबीह क्यों नहीं करते?'	قَالَ اَوْسَطُهُمْ اَلَمْ اَقُلْ لَّكُمْ لَوْلَا تُسَبِّحُوْنَ
29	वे बोले, 'महासच्चि है हमारे रब की, निश्चिति रूप से, हम ज़ालिम थे।'	قَالُوْا سُبْحٰنَ رَبِّنَآ اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ
30	फिर वे एक-दूसरे की ओर मुख़ातिब हुए और एक-दूसरे को दोष देने लगे।	فَاَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ يَّتَلَاوَمُوْنَ
31	वे बोले, 'हाय हमारी मुसीबत! निश्चिति रूप से, हम हद से बढ़ने वाले थे।	قَالُوْا يٰوَيْلَنَآ اِنَّا كُنَّا طٰغِيْنَ
32	'शायद हमारा रब हमें इसके बदले इससे बेहतर (बाग़) दे दे, निश्चिति रूप से, हम अपने रब से क़ुरबत माँगते हैं'	عَسٰى رَبُّنَآ اَنْ يُّبْدِلَنَا خَيْرًا مِّنْهَآ اِنَّآ اِلٰى رَبِّنَا رٰغِبُوْنَ
33	ऐसी ही यातना है, और आख़िरत की यातना तो और भी बड़ी है, काश वे जानते।	كَذٰلِكَ الْعَذَابُ وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَكْبَرُ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ

34	निश्चिति रूप से, डर रखने वालों के लिए उनके रब के पास सुखों से भरी जन्नत है।	اِنَّ لِلْمُتَّقِيْنَ عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ
35	क्या हम मुसलमिों को गुनाहगारों की तरह करेंगे?	اَفَنَجْعَلُ الْمُسْلِمِيْنَ كَالْمُجْرِمِيْنَ
36	तुम्हें क्या हो गया? तुम कैसे फ़ैसला करते हो?	مَا لَكُمْ كَيْفَ تَحْكُمُوْنَ
37	क्या तुम्हारे पास कोई किताब है जिसमें तुम पढ़ते हो,	اَمْ لَكُمْ كِتٰبٌ فِيْهِ تَدْرُسُوْنَ
38	कि तुम्हारे लिए इसमें वह सब है जो तुम चुनते हो?	اِنَّ لَكُمْ فِيْهِ لَمَا تَخَيَّرُوْنَ
39	या तुम्हारे पास हमारी ओर से कोई क़सम है, जो क़यामत के दिन तक लागू रहे, कि तुम्हारे लिए वही होगा जो तुम फ़ैसला करते हो?	اَمْ لَكُمْ اَيْمَانٌ عَلَيْنَا بَالِغَةٌ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ اِنَّ لَكُمْ لَمَا تَحْكُمُوْنَ
40	उनसे पूछो, 'उनमें से कौन इसका ज़िम्मेदार है?'	سَلْهُمْ اَيُّهُمْ بِذٰلِكَ زَعِيْمٌ
41	या उनके पास कोई साझीदार हैं? तो उन्हें अपने साझीदारों को लाने दो अगर वे सच्चे हैं।	اَمْ لَهُمْ شُرَكَاءُ فَلْيَأْتُوْا بِشُرَكَآئِهِمْ اِنْ كَانُوْا صٰدِقِيْنَ
42	(याद करो) उस दिन को जब टाँगें खोली जाएँगी और उन्हें सजदा करने के लिए बुलाया जाएगा; तो वे सक्षम नहीं होंगे,	يَوْمَ يُكْشَفُ عَنْ سَاقٍ وَّيُدْعَوْنَ اِلَى السُّجُوْدِ فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ
43	उनकी नज़रें नीचे की ओर होंगी, अपमान से ढकी होंगी। और निश्चिति रूप से, पहले (दुनिया में) उन्हें सजदा करने के लिए बुलाया गया था जब वे सुरक्षित थे (लेकिन उन्होंने नहीं किया)।	خَاشِعَةً اَبْصَارُهُمْ تَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ وَقَدْ كَانُوْا يُدْعَوْنَ اِلَى السُّجُوْدِ وَهُمْ سٰلِمُوْنَ
44	तो मुझे और उन लोगों को छोड़ दो जो इस बात (अल-क़ुरआन) को झुठलाते हैं। हम उन्हें धीरे-धीरे उस दिशा से सजा देंगे जिसे वे नहीं जानते,	فَذَرْنِيْ وَمَنْ يُّكَذِّبُ بِهٰذَا الْحَدِيْثِ سَنَسْتَدْرِجُهُمْ مِّنْ حَيْثُ لَا يَعْلَمُوْنَ
45	और मैं उन्हें मोहलत देता हूँ, निश्चिति रूप से, मेरी योजना बहुत मज़बूत है।	وَاُمْلِيْ لَهُمْ اِنَّ كَيْدِيْ مَتِيْنٌ
46	क्या तुम (मुहम्मद) उनसे कोई इनाम माँगते हो, जिससे वे क़र्ज़ के बोझ तले दबे हों?	اَمْ تَسْـَٔلُهُمْ اَجْرًا فَهُمْ مِّنْ مَّغْرَمٍ مُّثْقَلُوْنَ
47	या उनके पास ग़ैब (अदृश्य) का ज्ञान है, तो वे उसे लिख लेते हैं?	اَمْ عِنْدَهُمُ الْغَيْبُ فَهُمْ يَكْتُبُوْنَ
48	तो तुम (मुहम्मद) अपने रब के फ़ैसले के प्रति धैर्य रखो, और उस (यूनुस) की तरह न बनो जो मछली (के पेट) में था जब उसने दुखी मन से दुआ की।	فَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ وَلَا تَكُنْ كَصَاحِبِ الْحُوْتِ اِذْ نَادٰى وَهُوَ مَكْظُوْمٌ
49	अगर उसे जल्दी ही उसके रब की कृपा न मिलती, तो वह निश्चिति रूप से बंजर ज़मीन पर तिरस्कृत हालत में फेंके दिया जाता।	لَوْلَآ اَنْ تَدٰرَكَهُ نِعْمَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ لَنُبِذَ بِالْعَرَآءِ وَهُوَ مَذْمُوْمٌ

فَاجْتَبٰىهُ رَبُّه فَجَعَلَه مِنَ الصّٰلِحِيْنَ	फरि उसक रेब न उस चना और उस नेके लोगों म शामलि कयिा।	**50**
وَاِنْ يَّكَادُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَيُزْلِقُوْنَكَ بِاَبْصَارِهِمْ لَمَّا سَمِعُوا الذِّكْرَ وَيَقُوْلُوْنَ اِنَّه لَمَجْنُوْنٌ	और नशि्चति रूप स, काफरि लोग अपनी नज़रों स तमु्ह फसिला दनेा चाहत ह, जब व अल-कुरआन सनुत ह और कहत ह, 'वह (महु्मम्द) तो सचमचु पागल ह'	**51**
وَمَا هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعٰلَمِيْنَ	जबकि (अल-कुरआन) तो सार जहानों क लएि एक चतेावनी क सविा कछु नहीं ह	**52**

छंदों की संख्या	اَلْحَاقَّة	मक्की
५२	अल-Haqqah - 69	مكية

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल-Haqqah (अनिवार्य)

1	क़यामत का दिन,	اَلْحَاقَّةُ
2	क़यामत का दिन क्या है?	مَا الْحَاقَّةُ
3	और तुम्हें क्या मालूम कि क़यामत का दिन क्या है?	وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا الْحَاقَّةُ
4	समूद और आद की कौम ने क़यामत के दिन को झुठलाया।	كَذَّبَتْ ثَمُوْدُ وَعَادٌ بِالْقَارِعَةِ
5	तो जहाँ तक समूद की बात है, उन्हें एक बहुत तेज़ आवाज़ से नष्ट कर दिया गया,	فَاَمَّا ثَمُوْدُ فَاُهْلِكُوْا بِالطَّاغِيَةِ
6	जबकि आद की कौम को, उन्हें एक बहुत ठंडी तूफ़ानी हवा से नष्ट कर दिया गया,	وَاَمَّا عَادٌ فَاُهْلِكُوْا بِرِيْحٍ صَرْصَرٍ عَاتِيَةٍ
7	अल्लाह ने उस हवा को उन पर सात रात और आठ दिन लगातार भेजा; तो तुम उस समय आद की कौम को देखते, जो मरे हुए पड़े थे जैसे खजूर के पेड़ के खोखले तने।	سَخَّرَهَا عَلَيْهِمْ سَبْعَ لَيَالٍ وَّثَمٰنِيَةَ اَيَّامٍ حُسُوْمًا فَتَرَى الْقَوْمَ فِيْهَا صَرْعٰى كَاَنَّهُمْ اَعْجَازُ نَخْلٍ خَاوِيَةٍ
8	तो क्या तुम्हें उनमें से कोई बचा हुआ दिखा?	فَهَلْ تَرٰى لَهُمْ مِّنْ بَاقِيَةٍ
9	फिर फ़िरऔन और उसके पहले के लोग और (वे) शहर जो बड़े गुनाह की वजह से उलट दिए गए।	وَجَاءَ فِرْعَوْنُ وَمَنْ قَبْلَه وَالْمُؤْتَفِكٰتُ بِالْخَاطِئَةِ
10	तो उन्होंने अपने रब के रसूल की अवज्ञा की, तो अल्लाह ने उन्हें बहुत सख़्त यातना दी।	فَعَصَوْا رَسُوْلَ رَبِّهِمْ فَاَخَذَهُمْ اَخْذَةً رَّابِيَةً
11	निश्चित रूप से, जब पानी (पहाड़ों तक) बढ़ गया, हमने तुम्हारे (पूर्वजों को) नाव में ले लिया,	اِنَّا لَمَّا طَغَا الْمَاءُ حَمَلْنٰكُمْ فِى الْجَارِيَةِ
12	ताकि हम उस (घटना) को तुम्हारे लिए एक चेतावनी बनाएँ और ताकि सुनने वाला कान उस पर ध्यान दे।	لِنَجْعَلَهَا لَكُمْ تَذْكِرَةً وَّتَعِيَهَآ اُذُنٌ وَّاعِيَةٌ
13	तो जब सूर एक बार फूँका जाएगा,	فَاِذَا نُفِخَ فِى الصُّوْرِ نَفْخَةٌ وَّاحِدَةٌ
14	और धरती और पहाड़ों को उठा लिया जाएगा, फिर उन्हें एक बार में टकरा दिया जाएगा।	وَّحُمِلَتِ الْاَرْضُ وَالْجِبَالُ فَدُكَّتَا دَكَّةً وَّاحِدَةً

15	तो उस दिन क़यामत का दिन हो जाएगा,	فَيَوْمَئِذٍ وَّقَعَتِ الْوَاقِعَةُ
16	और आकाश फट जाएगा, क्योंकि उस दिन आकाश नाज़ुक हो जाएगा।	وَانْشَقَّتِ السَّمَاءُ فَهِيَ يَوْمَئِذٍ وَّاهِيَةٌ
17	और फ़रिश्ते आकाश के किनारों पर होंगे। उस दिन आठ फ़रिश्ते तुम्हारे रब के अर्श (सिंहासन) को उनके सिरों के ऊपर उठाएंगे।	وَّالْمَلَكُ عَلٰٓى اَرْجَآئِهَا وَيَحْمِلُ عَرْشَ رَبِّكَ فَوْقَهُمْ يَوْمَئِذٍ ثَمٰنِيَةٌ
18	उस दिन तुम (अपने रब के सामने) पेश किए जाओगे, तुम्हारा कोई भी भेद (अल्लाह से) छिपा नहीं रहेगा।	يَوْمَئِذٍ تُعْرَضُوْنَ لَا تَخْفٰى مِنْكُمْ خَافِيَةٌ
19	तो जहाँ तक उस व्यक्ति का सवाल है जिसे उसकी किताब दाहिने हाथ में दी जाएगी, तो वह कहेगा, 'लो, मेरी किताब पढ़ो!'	فَاَمَّا مَنْ اُوْتِيَ كِتٰبَهٗ بِيَمِيْنِهٖ فَيَقُوْلُ هَاۤؤُمُ اقْرَءُوْا كِتٰبِيَهْ
20	निश्चित रूप से, मुझे यक़ीन था कि मुझे (एक दिन) अपने हिसाब का सामना करना पड़ेगा।	اِنِّيْ ظَنَنْتُ اَنِّيْ مُلٰقٍ حِسَابِيَهْ
21	तो वह एक ऐसी ज़िंदगी में होगा जो रज़ामंदी वाली है,	فَهُوَ فِيْ عِيْشَةٍ رَّاضِيَةٍ
22	एक ऊँची जन्नत में,	فِيْ جَنَّةٍ عَالِيَةٍ
23	जिसके फल नज़दीक होंगे,	قُطُوْفُهَا دَانِيَةٌ
24	(उनसे कहा जाएगा), 'खाओ और पियो सुख के साथ, उन कर्मों की वजह से जो तुमने बीते हुए दिनों में किए।'	كُلُوْا وَاشْرَبُوْا هَنِيْٓـًٔا بِمَآ اَسْلَفْتُمْ فِي الْاَيَّامِ الْخَالِيَةِ
25	और जहाँ तक उस व्यक्ति का सवाल है जिसे उसकी किताब बाएँ हाथ में दी जाएगी, तो वह कहेगा, 'काश मुझे मेरी किताब न दी गई होती।'	وَاَمَّا مَنْ اُوْتِيَ كِتٰبَهٗ بِشِمَالِهٖ فَيَقُوْلُ يٰلَيْتَنِيْ لَمْ اُوْتَ كِتٰبِيَهْ
26	ताकि मुझे अपने हिसाब का पता न चलता।	وَلَمْ اَدْرِ مَا حِسَابِيَهْ
27	काश (मौत) ही वह चीज़ होती जो सब कुछ ख़त्म कर देती।	يٰلَيْتَهَا كَانَتِ الْقَاضِيَةَ
28	मेरा धन मेरे लिए बिलकुल काम नहीं आया।	مَآ اَغْنٰى عَنِّيْ مَالِيَهْ
29	मेरी सत्ता मुझसे छिन गई।	هَلَكَ عَنِّيْ سُلْطٰنِيَهْ
30	(अल्लाह फ़रमाता है), 'उसे पकड़ो और उसकी गरदन में बेड़ियाँ डालो।'	خُذُوْهُ فَغُلُّوْهُ
31	फिर उसे धधकती हुई आग के नरक में डाल दो।	ثُمَّ الْجَحِيْمَ صَلُّوْهُ
32	फिर उसे सत्तर हज़ार हस्त लंबी ज़ंजीर से बाँध दो।	ثُمَّ فِيْ سِلْسِلَةٍ ذَرْعُهَا سَبْعُوْنَ ذِرَاعًا فَاسْلُكُوْهُ

33	निश्चिति रूप स,े यही वह व्यक्ति था जो अल्लाह महान पर ईमान नहीं लाया।	اِنَّه كَانَ لَا يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ الْعَظِيْمِ
34	और न ही उसने (दूसरों को) गरीबों को खाना देने के लिए प्रेरित किया।	وَلَا يَحُضُّ عَلٰى طَعَامِ الْمِسْكِيْنِ
35	तो आज यहाँ उसके लिए कोई दोस्त नहीं है	فَلَيْسَ لَهُ الْيَوْمَ هٰهُنَا حَمِيْمٌ
36	और उसके लिए कोई खाना नहीं है सिवाय खून और मवाद के।	وَّلَا طَعَامٌ اِلَّا مِنْ غِسْلِيْنٍ
37	इसे कोई नहीं खाता सिवाय गुनाहगारों के।	لَّا يَأْكُلُه اِلَّا الْخٰطِـُٔوْنَ
38	तो मैं कसम खाता हूँ उस चीज़ की जो तुम देखते हो,	فَلَآ اُقْسِمُ بِمَا تُبْصِرُوْنَ
39	और उस चीज़ की जो तुम नहीं देखते।	وَمَا لَا تُبْصِرُوْنَ
40	निश्चिति रूप स,े यह (अल-क़ुरआन) एक नबी के रसूल को उतारा गया वह्य है,	اِنَّه لَقَوْلُ رَسُوْلٍ كَرِيْمٍ
41	और यह (अल-क़ुरआन) किसी कवि की बात नहीं है, तुम बहुत कम उस पर ईमान लाते हो।	وَّمَا هُوَ بِقَوْلِ شَاعِرٍ قَلِيْلًا مَّا تُؤْمِنُوْنَ
42	और न ही यह किसी ज्योतिषी की बात है, तुम बहुत कम इससे सबक लेते हो।	وَلَا بِقَوْلِ كَاهِنٍ قَلِيْلًا مَّا تَذَكَّرُوْنَ
43	यह (अल-क़ुरआन) सारे जहानों के रब की ओर से उतारा गया वह्य है।	تَنْزِيْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ
44	और अगर उसने (मुहम्मद ने) हमारी ओर से कुछ बात गढ़ ली होती,	وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضَ الْاَقَاوِيْلِ
45	तो हम निश्चिति रूप से उसे उसके दाहिने हाथ से पकड़ लेते।	لَاَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِيْنِ
46	फिर हम उसकी दिल की नस काट देते।	ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِيْنَ
47	तो तुममें से कोई भी (हमें) उसे (सजा देने से) रोक नहीं सकता था।	فَمَا مِنْكُمْ مِّنْ اَحَدٍ عَنْهُ حٰجِزِيْنَ
48	और निश्चिति रूप स,े यह (अल-क़ुरआन) डर रखने वालों के लिए एक सबक है।	وَاِنَّه لَتَذْكِرَةٌ لِّلْمُتَّقِيْنَ
49	और निश्चिति रूप स,े हम जानते हैं कि तुममें से कुछ लोग (इसे) झुठलाते हैं।	وَاِنَّا لَنَعْلَمُ اَنَّ مِنْكُمْ مُّكَذِّبِيْنَ
50	और निश्चिति रूप स,े यह (अल-क़ुरआन) काफिरों के लिए (आखिरत में) पछतावा लाएगा।	وَاِنَّه لَحَسْرَةٌ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ
51	और निश्चिति रूप स,े यह (अल-क़ुरआन) यकीनन सत्य है।	وَاِنَّه لَحَقُّ الْيَقِيْنِ

52	तो अपने महान रब के नाम के साथ तसबीह करो।	فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيْمِ

छंदों की संख्या	اَلْمَعَارِج	مكية
४४	अल-Ma'arij - 70	मक्की

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल-Ma'arij (चढ़ती सीढ़ियाँ)

1	किसी ने उस यातना के बारे में पूछा जो निश्चित रूप से होने वाली है,	سَاَلَ سَاۤىِٕلٌۢ بِعَذَابٍ وَّاقِعٍ
2	काफिरों के लिए, जिसे कोई भी रोक नहीं सकता,	لِّلْكٰفِرِيْنَ لَيْسَ لَهٗ دَافِعٌ
3	(यातना) अल्लाह की ओर से, जो ऊँचाइयों का मालिक है।	مِّنَ اللّٰهِ ذِى الْمَعَارِجِ
4	फरिश्ते और जिब्रील उसके रब के पास (चढ़ते हैं) एक दिन में, जो पचास हज़ार साल के बराबर है।	تَعْرُجُ الْمَلٰٓئِكَةُ وَالرُّوْحُ اِلَيْهِ فِيْ يَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهٗ خَمْسِيْنَ اَلْفَ سَنَةٍ
5	तो (मुहम्मद) तुम अच्छे धैर्य के साथ धैर्य रखो।	فَاصْبِرْ صَبْرًا جَمِيْلًا
6	वे (काफिर) इस (यातना को) दूर (असंभव) मानते हैं,	اِنَّهُمْ يَرَوْنَهٗ بَعِيْدًا
7	जबकि हम इसे नज़दीक (निश्चित) मानते हैं।	وَّنَرٰىهُ قَرِيْبًا
8	(याद करो) उस दिन को जब आकाश पिघले हुए ताँबे की तरह हो जाएगा,	يَوْمَ تَكُوْنُ السَّمَاۤءُ كَالْمُهْلِ
9	और पहाड़ रुई की तरह (उड़ते हुए) हो जाएंगे,	وَتَكُوْنُ الْجِبَالُ كَالْعِهْنِ
10	और कोई भी करीबी दोस्त अपने दोस्त से नहीं पूछेगा,	وَلَا يَسْـَٔلُ حَمِيْمٌ حَمِيْمًا
11	जबकि वे एक-दूसरे को देख रहे होंगे। उस दिन, गुनाहगार चाहेगा कि वह अपनी यातना से छुटकारा पाने के लिए अपने बच्चों को दे दे,	يُبَصَّرُوْنَهُمْ يَوَدُّ الْمُجْرِمُ لَوْ يَفْتَدِيْ مِنْ عَذَابِ يَوْمِىِٕذٍۢ بِبَنِيْهِ
12	और अपनी पत्नी और अपने भाई को,	وَصَاحِبَتِهٖ وَاَخِيْهِ
13	और अपने परिवार को जो (दुनिया में) उसका रक्षक था,	وَفَصِيْلَتِهِ الَّتِيْ تُـْٔوِيْهِ
14	और धरती पर मौजूद सभी लोगों को, फिर वह उम्मीद करेगा कि (यह छुटकारा) उसे बचा लेगा।	وَمَنْ فِى الْاَرْضِ جَمِيْعًا ثُمَّ يُنْجِيْهِ
15	हरगिज़ नहीं! निश्चित रूप से, वह नरक की आग है जो भड़क रही है,	كَلَّا اِنَّهَا لَظٰى

16	जो सरि की ख़ाल को उधड़े दती है	نَزَّاعَةً لِّلشَّوٰى
17	जो उस व्यक्ति को बुलाती है जो पीठ फरेता है और मुँह मोड़ता है (धर्म स),	تَدْعُوْا مَنْ اَدْبَرَ وَتَوَلّٰى
18	और उस व्यक्ति को जो (धन) इकट्ठा करता है और उसे जमा करता है	وَجَمَعَ فَاَوْعٰى
19	निश्चित रूप स, इंसान को शकियती स्वभाव क साथ पदा कयिा गया है	اِنَّ الْاِنْسَانَ خُلِقَ هَلُوْعًا
20	जब उस मुसीबत छूती है, वह शकियत करता है,	اِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ جَزُوْعًا
21	और जब उस भलाई (धन) मलिती है, वह कंजूस हो जाता है,	وَّاِذَا مَسَّهُ الْخَيْرُ مَنُوْعًا
22	सवािय उन लोगों क जो नमाज़ पढ़ते हैं,	اِلَّا الْمُصَلِّيْنَ
23	वे जो अपनी नमाज़ पर हमशेा कायम रहते हैं,	الَّذِيْنَ هُمْ عَلٰى صَلَاتِهِمْ دَاۤئِمُوْنَ
24	और वे जनिक धन म एक नश्चित हसि्सा तय कयिा गया है,	وَالَّذِيْنَ فِيْٓ اَمْوَالِهِمْ حَقٌّ مَّعْلُوْمٌ
25	उस (गरीब) क लिए जो माँगता है और जो नहीं माँगता,	لِّلسَّاۤئِلِ وَالْمَحْرُوْمِ
26	और वे जो बदल के दनि पर यकीन करते हैं,	وَالَّذِيْنَ يُصَدِّقُوْنَ بِيَوْمِ الدِّيْنِ
27	और वे जो अपने रब की यातना स डरते हैं,	وَالَّذِيْنَ هُمْ مِّنْ عَذَابِ رَبِّهِمْ مُّشْفِقُوْنَ
28	निश्चित रूप स, अपने रब की यातना स कोई भी सुरक्षति महसूस नहीं करता (उसके आन से),	اِنَّ عَذَابَ رَبِّهِمْ غَيْرُ مَاْمُوْنٍ
29	और वे जो अपनी शर्मगाहों की हफिाज़त करते हैं,	وَالَّذِيْنَ هُمْ لِفُرُوْجِهِمْ حٰفِظُوْنَ
30	सवािय अपनी पत्नयिों या उन दासयिों क जो उनक पास हैं, तो निश्चित रूप स उन पर कोई इलज़ाम नहीं है	اِلَّا عَلٰٓى اَزْوَاجِهِمْ اَوْ مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُمْ فَاِنَّهُمْ غَيْرُ مَلُوْمِيْنَ
31	तो जो कोई इसक अलावा (जसै ज़ना, समलगैकिता और लसेबयिन) की तलाश करता है, वे ही लोग हैं जो हद स बढ़ जाते हैं	فَمَنِ ابْتَغٰى وَرَاۤءَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْعَادُوْنَ
32	और वे जो अपनी अमानतों और अपने वादों की हफिाज़त करते हैं,	وَالَّذِيْنَ هُمْ لِاَمٰنٰتِهِمْ وَعَهْدِهِمْ رٰعُوْنَ
33	और वे जो अपनी गवाही पर दृढ़ रहते हैं,	وَالَّذِيْنَ هُمْ بِشَهٰدٰتِهِمْ قَاۤئِمُوْنَ
34	और वे जो अपनी नमाज़ की हफिाज़त करते हैं	وَالَّذِيْنَ هُمْ عَلٰى صَلَاتِهِمْ يُحَافِظُوْنَ

35	वे लोग जन्नत में सम्मानित किए जाएंगे।	أُولٰٓئِكَ فِيْ جَنّٰتٍ مُّكْرَمُوْنَ
36	तो काफ़िर लोग तुम्हारे सामने (मुहम्मद) समूहों में जल्दी-जल्दी क्यों आ रहे हैं,	فَمَالِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا قِبَلَكَ مُهْطِعِيْنَ
37	दाएँ और बाएँ से, समूहों में?	عَنِ الْيَمِيْنِ وَعَنِ الشِّمَالِ عِزِيْنَ
38	क्या उन काफ़िरों में से हर एक व्यक्ति उस जन्नत में दाख़िल होना चाहता है जो सुखों से भरी है?	اَيَطْمَعُ كُلُّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ اَنْ يُّدْخَلَ جَنَّةَ نَعِيْمٍ
39	हरगिज़ नहीं! निश्चित रूप से, हमने उन्हें उसी चीज़ से बनाया जिसे वे जानते हैं।	كَلَّا اِنَّا خَلَقْنٰهُمْ مِّمَّا يَعْلَمُوْنَ
40	तो मैं क़सम खाता हूँ उस रब की जो (सूरज, चाँद और तारों के) उदय और अस्त का मालिक है, निश्चित रूप से, हम पूरी तरह सक्षम हैं,	فَلَآ اُقْسِمُ بِرَبِّ الْمَشٰرِقِ وَالْمَغٰرِبِ اِنَّا لَقٰدِرُوْنَ
41	उन्हें उनसे बेहतर लोगों से बदलने के लिए, और हम हराया नहीं जा सकता।	عَلٰٓى اَنْ نُّبَدِّلَ خَيْرًا مِّنْهُمْ وَمَا نَحْنُ بِمَسْبُوْقِيْنَ
42	तो उन्हें (गुमराही में) डूबने दो और खेलने दो, यहाँ तक कि वे उस दिन से मिलें जिसका उन्हें वादा किया गया है,	فَذَرْهُمْ يَخُوْضُوْا وَيَلْعَبُوْا حَتّٰى يُلٰقُوْا يَوْمَهُمُ الَّذِيْ يُوْعَدُوْنَ
43	(यानी) उस दिन जब वे अपनी क़ब्रों से जल्दी-जल्दी निकलेंगे, मानो वे (दुनिया में) अपने मूर्तियों की ओर तेज़ी से जा रहे हों,	يَوْمَ يَخْرُجُوْنَ مِنَ الْاَجْدَاثِ سِرَاعًا كَاَنَّهُمْ اِلٰى نُصُبٍ يُّوْفِضُوْنَ
44	उनकी नज़र नीचे की ओर होगी, अपमान से ढकी होगी। यही वह दिन है जिसका उन्हें वादा किया गया था।	خَاشِعَةً اَبْصَارُهُمْ تَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ ذٰلِكَ الْيَوْمُ الَّذِيْ كَانُوْا يُوْعَدُوْنَ

छंदों की संख्या	نُوح	مكية
२८	नूह - 71	मक्की

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

नूह (नूह)

1	निश्चिति रूप से, हमने नूह को उनकी कौम के पास (यह हुक्म देकर) भेजा, 'अपनी कौम को चेतावनी दो इससे पहले कि उनके पास दर्दनाक यातना आए।'	اِنَّآ اَرْسَلْنَا نُوْحًا اِلٰى قَوْمِهٖٓ اَنْ اَنْذِرْ قَوْمَكَ مِنْ قَبْلِ اَنْ يَّأْتِيَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ
2	उन्होंने (नूह ने) कहा, 'ऐ मेरी कौम! निश्चिति रूप से, मैं तुम्हारे लिए एक स्पष्ट चेतावनी देने वाला हूँ,	قَالَ يٰقَوْمِ اِنِّيْ لَكُمْ نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ
3	(यानी) अल्लाह की इबादत करो, उससे डरो और मेरी बात मानो,	اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَاتَّقُوْهُ وَاَطِيْعُوْنِ
4	निश्चिति रूप से, वह तुम्हारे कुछ गुनाहों को माफ कर देगा और तुम्हें (उम्र) उस निर्धारित समय तक के लिए बढ़ाएगा। निश्चिति रूप से, अल्लाह का निश्चित समय जब आता है, उसे टाला नहीं जा सकता, काश तुम जानते।'	يَغْفِرْ لَكُمْ مِّنْ ذُنُوْبِكُمْ وَيُؤَخِّرْكُمْ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى اِنَّ اَجَلَ اللّٰهِ اِذَا جَاءَ لَا يُؤَخَّرُ لَوْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ
5	उन्होंने (नूह ने) कहा, 'ऐ मेरे रब! निश्चिति रूप से, मैंने अपनी कौम को रात-दिन बुलाया,	قَالَ رَبِّ اِنِّيْ دَعَوْتُ قَوْمِيْ لَيْلًا وَّنَهَارًا
6	लेकिन मेरे बुलाने ने उनकी गुमराही को और बढ़ा दिया।	فَلَمْ يَزِدْهُمْ دُعَاۤءِيْٓ اِلَّا فِرَارًا
7	और निश्चिति रूप से, मैंने जब भी उन्हें बुलाया ताकि तू उन्हें माफ कर दे, उन्होंने अपनी उंगलियों को अपने कानों में डाल लिया और अपने कपड़ों में लिपट लिया, और वे अड़ गए और बहुत घमंड करने लगे।	وَاِنِّيْ كُلَّمَا دَعَوْتُهُمْ لِتَغْفِرَ لَهُمْ جَعَلُوْٓا اَصَابِعَهُمْ فِيْٓ اٰذَانِهِمْ وَاسْتَغْشَوْا ثِيَابَهُمْ وَاَصَرُّوْا وَاسْتَكْبَرُوا اسْتِكْبَارًا
8	फिर निश्चिति रूप से, मैंने उन्हें खुलआम बुलाया,	ثُمَّ اِنِّيْ دَعَوْتُهُمْ جِهَارًا
9	फिर मैंने उनके लिए खुलकर ऐलान किया और गुप्त रूप से भी उन्हें समझाया।	ثُمَّ اِنِّيْٓ اَعْلَنْتُ لَهُمْ وَاَسْرَرْتُ لَهُمْ اِسْرَارًا
10	तो मैंने कहा, 'अपने रब से माफी माँगो; निश्चिति रूप से, वह बहुत माफ करने वाला है,	فَقُلْتُ اسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ اِنَّهٗ كَانَ غَفَّارًا
11	वह तुम पर आकाश से मूसलाधार बारिश बरसाएगा,	يُّرْسِلِ السَّمَاۤءَ عَلَيْكُمْ مِّدْرَارًا
12	और वह तुम्हारी दौलत और संतानों को बढ़ाएगा, और तुम्हारे लिए बाग़ बनाएगा और तुम्हारे लिए नदियाँ बनाएगा।'	وَّيُمْدِدْكُمْ بِاَمْوَالٍ وَّبَنِيْنَ وَيَجْعَلْ لَّكُمْ جَنّٰتٍ وَّيَجْعَلْ لَّكُمْ اَنْهٰرًا
13	तुम्हें क्या हो गया कि तुम अल्लाह की महिमा से नहीं डरते?	مَا لَكُمْ لَا تَرْجُوْنَ لِلّٰهِ وَقَارًا

14	और नशि़चति रप्ू स,े उसन ेतमुह ेकई चरणों म ेबनाया।	وَقَدْ خَلَقَكُمْ اَطْوَارًا
15	क़या तमुन ेनहीं दखेा कि अल़लाह न ेसात आकाशों को परत-दर-परत कसै ेबनाया?	اَلَمْ تَرَوْا كَيْفَ خَلَقَ اللّٰهُ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ طِبَاقًا
16	और वहा ँउसन ेचाँद को रौशनी दने ेवाला बनाया और सूरज को एक चमकता हआु दीपक बनाया?	وَّجَعَلَ الْقَمَرَ فِيْهِنَّ نُوْرًا وَّجَعَلَ الشَّمْسَ سِرَاجًا
17	और अल़लाह न ेतमुह ेधरती स ेउगाया, धीर-े धीर ेबढ़त ेहए,	وَاللّٰهُ اَنْۢبَتَكُمْ مِّنَ الْاَرْضِ نَبَاتًا
18	फरि वह तमुह ेउसम ेवापस कर दगेा और फरि तमुह े(उससे) नकिालगेा।	ثُمَّ يُعِيْدُكُمْ فِيْهَا وَيُخْرِجُكُمْ اِخْرَاجًا
19	और अल़लाह न ेतमुह ारे लएि धरती को एक बछिौना बनाया,	وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ بِسَاطًا
20	ताकि तमु उसम ेचौड़े रास़तों स ेचल सको।'	لِّتَسْلُكُوْا مِنْهَا سُبُلًا فِجَاجًا
21	नूह न ेकहा, 'ऐ मरे ेरब! नशि़चति रप्ू स,े उनहोंन ेमरेी अवज़ा की और उसका अनसुरण कयिा जसिक ेधन और सतंानों न ेउसकी हानि को और बढ़ाया।	قَالَ نُوْحٌ رَّبِّ اِنَّهُمْ عَصَوْنِيْ وَاتَّبَعُوْا مَنْ لَّمْ يَزِدْهُ مَالُه وَوَلَدُه اِلَّا خَسَارًا
22	और उनहोंन ेबहत बड़ी साज़शि रची।	وَمَكَرُوْا مَكْرًا كُبَّارًا
23	और उनहोंन ेकहा, 'अपन ेदवेताओं को कभी न छोड़ो और न ही वद्द को छोड़ो, और न ही सवा, यगसू, यऊक और नसर् को छोड़ो।'	وَقَالُوْا لَا تَذَرُنَّ اٰلِهَتَكُمْ وَلَا تَذَرُنَّ وَدًّا وَّلَا سُوَاعًا وَّلَا يَغُوْثَ وَيَعُوْقَ وَنَسْرًا
24	और नशि़चति रप्ू स,े उनहोंन ेबहत सार ेलोगों को गमुराह कयिा; और त ूज़ालमिों क ेलएि गमुराही क ेसवि और कछु न बढ़ा।	وَقَدْ اَضَلُّوْا كَثِيْرًا وَلَا تَزِدِ الظّٰلِمِيْنَ اِلَّا ضَلٰلًا
25	उनक ेगनुाहों की वजह स ेउनह ेडबुो दयिा गया, फरि उनह ेनरक म ेडाला गया, तो उनह ेअल़लाह क ेसवि कोई मददगार न मलिा।	مِمَّا خَطِيْٓـٰتِهِمْ اُغْرِقُوْا فَاُدْخِلُوْا نَارًا فَلَمْ يَجِدُوْا لَهُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَنْصَارًا
26	और नूह न ेकहा, 'ऐ मरे ेरब! धरती पर काफरिों म ेस ेएक भी व्यक़ति को न छोड़।	وَقَالَ نُوْحٌ رَّبِّ لَا تَذَرْ عَلَى الْاَرْضِ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ دَيَّارًا
27	नशि़चति रप्ू स,े अगर त ूउनह ेछोड़ दगेा, तो व ेतरे ेबंदों को गमुराह करगे,े और व ेकवेल दषु्ट और कृतघ्न सतंान ेही पदैा करगे।ं	اِنَّكَ اِنْ تَذَرْهُمْ يُضِلُّوْا عِبَادَكَ وَلَا يَلِدُوْٓا اِلَّا فَاجِرًا كَفَّارًا
28	ऐ मरे ेरब! मझु,े मरे ेमाता-पति को, और उस व्यक़ति को जो मरे ेघर म ेईमान क ेसाथ दाख़लि हआु, और सभी ईमान वाल ेपरुुषों और महलिाओं को माफ कर। और ज़ालमिों क ेलएि वनिाश क ेसवि और कछु न बढ़ा।'	رَبِّ اغْفِرْ لِيْ وَلِوَالِدَيَّ وَلِمَنْ دَخَلَ بَيْتِيَ مُؤْمِنًا وَّلِلْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ وَلَا تَزِدِ الظّٰلِمِيْنَ اِلَّا تَبَارًا

छदों की संख्या	اَلْجِنّ	مكية
२८	अल जनिन - 72	मक्की

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल जनिन (जनिन)

1	कहो (मुहम्मद), 'मेरे पास वह्य हुआ है कि जनिनों के एक समूह ने (क़ुरआन का) सुनना किया,' फिर उनहोंने कहा, 'हमने एक आशचर्यजनक पढ़ाई सुनी है (अल-क़ुरआन),	قُلْ اُوْحِيَ اِلَيَّ اَنَّهُ اسْتَمَعَ نَفَرٌ مِّنَ الْجِنِّ فَقَالُوْٓا اِنَّا سَمِعْنَا قُرْاٰنًا عَجَبًا
2	जो सही रासत की ओर मारगदरशन करता है, तो हमने उस पर ईमान लाया। और हम अपने रब के साथ किसी को भी शरीक नहीं करेंगे,	يَّهْدِيْٓ اِلَى الرُّشْدِ فَاٰمَنَّا بِهٖ وَلَنْ نُّشْرِكَ بِرَبِّنَآ اَحَدًا
3	और नशिचति रूप से हमारे रब की महिमा बहुत ऊँची है, उसने न तो पतनी ली और न ही संतान।	وَّاَنَّهٗ تَعٰلٰى جَدُّ رَبِّنَا مَا اتَّخَذَ صَاحِبَةً وَّلَا وَلَدًا
4	और नशिचति रूप से हमारे बीच का नादान पहले अललाह के खलिाफ हद से जयादा (बात) कहता था,	وَّاَنَّهٗ كَانَ يَقُوْلُ سَفِيْهُنَا عَلَى اللّٰهِ شَطَطًا
5	और नशिचति रूप से हमने सोचा था कि इंसान और जनिन अललाह के खलिाफ झूठी बात नहीं कहेंगे,	وَّاَنَّا ظَنَنَّآ اَنْ لَّنْ تَقُوْلَ الْاِنْسُ وَالْجِنُّ عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا
6	और नशिचति रूप से कुछ इंसान पुरुष जनिनों के कुछ पुरुषों से पनाह माँगते थे, लेकिन उनहोंने (जनिनों ने) उनहें (इंसानों को) और अधकि गमुराह कर दिया।	وَّاَنَّهٗ كَانَ رِجَالٌ مِّنَ الْاِنْسِ يَعُوْذُوْنَ بِرِجَالٍ مِّنَ الْجِنِّ فَزَادُوْهُمْ رَهَقًا
7	और नशिचति रूप से उनहोंने (जनिनों ने) तमु (मकका के मुशरकिों) की तरह सोचा था कि अललाह किसी को (कयामत के दनि) फिर से नहीं उठाएगा।	وَّاَنَّهُمْ ظَنُّوْا كَمَا ظَنَنْتُمْ اَنْ لَّنْ يَّبْعَثَ اللّٰهُ اَحَدًا
8	और नशिचति रूप से हम (जनिनों) ने आकाश (के रहसय) को जानने की कोशशि की, तो हमने उसे मजबूत पहरे और आग के तीरों से भरा पाया,	وَّاَنَّا لَمَسْنَا السَّمَاۤءَ فَوَجَدْنٰهَا مُلِئَتْ حَرَسًا شَدِيْدًا وَّشُهُبًا
9	और नशिचति रूप से हम (जनिन) पहले आकाश में कुछ जगहों पर बैठकर (उसकी) समाचार सुनने की कोशशि करते थे। लेकिन अब जो कोई (ऐसा) सुनने की कोशशि करता है, वह आग के तीरों को उसका इंतज़ार करते हुए पाता है।	وَّاَنَّا كُنَّا نَقْعُدُ مِنْهَا مَقَاعِدَ لِلسَّمْعِ فَمَنْ يَّسْتَمِعِ الْاٰنَ يَجِدْ لَهٗ شِهَابًا رَّصَدًا
10	और नशिचति रूप से हम (जनिन) नहीं जानते कि धरती पर रहने वालों के लिए बुराई का इरादा है या उनके रब ने उनके लिए भलाई चाही है।	وَّاَنَّا لَا نَدْرِيْٓ اَشَرٌّ اُرِيْدَ بِمَنْ فِي الْاَرْضِ اَمْ اَرَادَ بِهِمْ رَبُّهُمْ رَشَدًا

11	और नशि़चति रप्र स`हम म`स`कछु नके ह`और कछु इसक` वपिरीत ह`; हम अलग-अलग रास्तों पर ह`	وَّاَنَّا مِنَّا الصّٰلِحُوْنَ وَمِنَّا دُوْنَ ذٰلِكَ كُنَّا طَرَآىِٕقَ قِدَدًا
12	और नशि़चति रप्र स`हमन`जाना कि हम न तो धरती पर अल़लाह को हरा सकत`ह`और न ही भागकर उसस`बच सकत`ह`	وَّاَنَّا ظَنَنَّآ اَنْ لَّنْ نُّعْجِزَ اللّٰهَ فِى الْاَرْضِ وَلَنْ نُّعْجِزَهٗ هَرَبًا
13	और नशि़चति रप्र स`जब हमन`मार्ग़दर्श़न (अल-क़ुरआन) सन्ना, तो हमन`उस पर ईमान लाया। तो जो कोई अपन`रब पर ईमान लाए, उस`न तो नक़ुसान का डर होगा और न ही अन्य़ाय का।	وَّاَنَّا لَمَّا سَمِعْنَا الْهُدٰٓى اٰمَنَّا بِهٖ فَمَنْ يُّؤْمِنْ بِرَبِّهٖ فَلَا يَخَافُ بَخْسًا وَّلَا رَهَقًا
14	और नशि़चति रप्र स`हम म`स`कछु मसु़लमि ह`और कछु ज़ालमि ह` तो जनिहोंन`इस़लाम कबलू कयिा, उनहोंन`सही रास़ता चन्ना।	وَّاَنَّا مِنَّا الْمُسْلِمُوْنَ وَمِنَّا الْقٰسِطُوْنَ فَمَنْ اَسْلَمَ فَاُولٰٓئِكَ تَحَرَّوْا رَشَدًا
15	और जो ज़ालमि ह`, व`जहन्नम की आग क`लएि ईंधन बनगे`।	وَاَمَّا الْقٰسِطُوْنَ فَكَانُوْا لِجَهَنَّمَ حَطَبًا
16	और (अल़लाह कहता ह`), 'अगर व`लोग सीध`रास़त`पर कायम रह`, तो हम उनह`प्रचुर पानी पलिाएंग`,	وَّاَنْ لَّوِ اسْتَقَامُوْا عَلَى الطَّرِيْقَةِ لَاَسْقَيْنٰهُمْ مَّآءً غَدَقًا
17	तार्कि हम उनकी आजमाइश कर`। और जो कोई अपन`रब क` ज़क्रि स`मह़ँ फरे`, उस`वह कठोर यातना म`डालगेा।'	لِّنَفْتِنَهُمْ فِيْهِ وَمَنْ يُّعْرِضْ عَنْ ذِكْرِ رَبِّهٖ يَسْلُكْهُ عَذَابًا صَعَدًا
18	और नशि़चति रप्र स`मसज़दि अल़लाह क`लएि ह`। तो तमु उनक` अंदर अल़लाह क`सविा कसिी की इबादत न करो।	وَّاَنَّ الْمَسٰجِدَ لِلّٰهِ فَلَا تَدْعُوْا مَعَ اللّٰهِ اَحَدًا
19	और नशि़चति रप्र स`जब अल़लाह का बंदा (मह़ुम्मद) उसकी इबादत (नमाज) क`लएि खड़ा हआु, तो व`(जनिन्) उसक`चारों ओर भीड़ लगाकर इकट्ठा हो गए।	وَّاَنَّهٗ لَمَّا قَامَ عَبْدُ اللّٰهِ يَدْعُوْهُ كَادُوْا يَكُوْنُوْنَ عَلَيْهِ لِبَدًا
20	कहो (मह़ुम्मद), 'नशि़चति रप्र स`मै`कवेल अपन`रब की इबादत करता ह`ूँऔर उसक`साथ कसिी को शरीक नहीं करता।'	قُلْ اِنَّمَآ اَدْعُوْا رَبِّيْ وَلَآ اُشْرِكُ بِهٖٓ اَحَدًا
21	कहो (मह़ुम्मद), 'म`तमुहार`लएि न तो नक़ुसान को रोक सकता ह`ूँऔर न ही भलाई ला सकता ह`ूँ'	قُلْ اِنِّيْ لَآ اَمْلِكُ لَكُمْ ضَرًّا وَّلَا رَشَدًا
22	कहो (मह़ुम्मद), 'नशि़चति रप्र स`कोई भी मझु`(अल़लाह की) यातना स`नहीं बचा सकता और न ही मझु`उसक`सविा कोई आश्ऱय मलिेगा।'	قُلْ اِنِّيْ لَنْ يُّجِيْرَنِيْ مِنَ اللّٰهِ اَحَدٌ ۙ وَّلَنْ اَجِدَ مِنْ دُوْنِهٖ مُلْتَحَدًا
23	'(म`कवेल) अल़लाह की ओर स`(चतेावनी) और उसका पगैाम पहचुँाता ह`ूँ और जो कोई अल़लाह और उसक`रसलू की अवज़्ञा करेगा, तो नशि़चति रप्र स`उसक`लएि जहन्नम की आग ह`, जसिम`व`हमशेा-हमशेा रहगे`।'	اِلَّا بَلٰغًا مِّنَ اللّٰهِ وَرِسٰلٰتِهٖ ۭ وَمَنْ يَّعْصِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَاِنَّ لَهٗ نَارَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا
24	यहा`तँक कि जब व`उस (यातना) को दखेंगे`जसिका उनह`वादा कयिा गया ह`, तब उनह`पता चलगेा कि कसिका मददगार सबस` कमज़ोर ह`और कसिकी सख़्या सबस`कम ह`	حَتّٰٓى اِذَا رَاَوْا مَا يُوْعَدُوْنَ فَسَيَعْلَمُوْنَ مَنْ اَضْعَفُ نَاصِرًا وَّاَقَلُّ عَدَدًا

25	कहो (मुहम्मद), 'मैनहीं जानता कितुमसेवादा की गई यातना करीब हैया मरेरेब नेउसकेलिए लंबा समय तय किया है'	قُلْ اِنْ اَدْرِيْٓ اَقَرِيْبٌ مَّا تُوْعَدُوْنَ اَمْ يَجْعَلُ لَه رَبِّيْٓ اَمَدًا
26	वह (अल्लाह) ग़ैब (अदृश्य) को जानता है, लेकिनि वह अपने ग़ैब को किसी को नहीं दिखाता,	عٰلِمُ الْغَيْبِ فَلَا يُظْهِرُ عَلٰى غَيْبِهٖٓ اَحَدًا
27	सिवाय उस रसूल के जिसेवह पसंद करता है, तो निश्चित रूप से वह उसकेआगेऔर पीछे (फरिश्तों को) रखवाल बेनाता है	اِلَّا مَنِ ارْتَضٰى مِنْ رَّسُوْلٍ فَاِنَّه يَسْلُكُ مِنْ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِه رَصَدًا
28	ताकि वह जान लेकि रसूलों ने अपनेरेब केपैगाम को पहुँचा दिया है, और (उसका ज्ञान) उस सब को घेरे लेता है जो उनके पास है, और वह हर चीज़ को एक-एक करकेगिनता है	لِّيَعْلَمَ اَنْ قَدْ اَبْلَغُوْا رِسٰلٰتِ رَبِّهِمْ وَاَحَاطَ بِمَا لَدَيْهِمْ وَاَحْصٰى كُلَّ شَيْءٍ عَدَدًا

छंदों की संख्या
२०

اَلْمُزَّمِّل
अल-मज़्ज़म्मलि - 73

مكية
मक्की

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल-मज़्ज़म्मलि (लपिटा हुआ)

1	हे कफ़न वाले (मुहम्मद)!	يٰٓاَيُّهَا الْمُزَّمِّلُ
2	रात को (नमाज़ के लिए) उठो, सिवाय इसके कि थोड़ा सा हिस्सा,	قُمِ الَّيْلَ اِلَّا قَلِيْلًا
3	(यानी) उसका आधा या उससे थोड़ा कम,	نِّصْفَهٗٓ اَوِ انْقُصْ مِنْهُ قَلِيْلًا
4	या उससे (आधे से) ज़्यादा, और अल-क़ुरआन को धीरे-धीरे पढ़ो।	اَوْ زِدْ عَلَيْهِ وَرَتِّلِ الْقُرْاٰنَ تَرْتِيْلًا
5	निश्चित रूप से, हम तुम पर एक भारी बात उतारने वाले हैं।	اِنَّا سَنُلْقِيْ عَلَيْكَ قَوْلًا ثَقِيْلًا
6	निश्चित रूप से, रात का उठना (आत्मा को) अधिक प्रभावित करता है, और (उस समय का पढ़ना) अधिक गहरा असर करता है।	اِنَّ نَاشِئَةَ الَّيْلِ هِيَ اَشَدُّ وَطْـًٔا وَّاَقْوَمُ قِيْلًا
7	निश्चित रूप से, दिन में तुम्हें लंबे-चौड़े कामों में बहुत व्यस्तता रहती है।	اِنَّ لَكَ فِى النَّهَارِ سَبْحًا طَوِيْلًا
8	और अपने रब का नाम ज़िक्र करो, और पूरी तरह से उसकी इबादत करो।	وَاذْكُرِ اسْمَ رَبِّكَ وَتَبَتَّلْ اِلَيْهِ تَبْتِيْلًا
9	(वह) पूरब और पश्चिम का रब है, उसके सिवा कोई और रब नहीं, तो उसे अपना संरक्षक बनाओ।	رَبُّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ فَاتَّخِذْهُ وَكِيْلًا
10	और (मुहम्मद) उनके कहे पर धैर्य रखो और उन्हें अच्छे तरीके से छोड़ दो।	وَاصْبِرْ عَلٰى مَا يَقُوْلُوْنَ وَاهْجُرْهُمْ هَجْرًا جَمِيْلًا
11	और मुझे उन लोगों के साथ (निपटने के लिए) छोड़ दो जो (सत्य को) झुठलाते हैं, जो हर तरह की सुख-सुविधाएँ रखते हैं, और उन्हें थोड़ा समय दो।	وَذَرْنِيْ وَالْمُكَذِّبِيْنَ اُولِى النَّعْمَةِ وَمَهِّلْهُمْ قَلِيْلًا
12	निश्चित रूप से, हमारे पास (भारी) बेड़ियाँ और धधकती आग है,	اِنَّ لَدَيْنَآ اَنْكَالًا وَّجَحِيْمًا
13	और (ऐसा) भोजन जो गले में अटक जाए और दर्दनाक यातना।	وَّطَعَامًا ذَا غُصَّةٍ وَّعَذَابًا اَلِيْمًا

يَوْمَ تَرْجُفُ الْاَرْضُ وَالْجِبَالُ وَكَانَتِ الْجِبَالُ كَثِيْبًا مَّهِيْلًا	(याद करो) उस दिन को जब धरती और पहाड़ ज़ोर से हिलेंगे, और पहाड़ रेते के ढेरे बन जाएंगे जो बिखर जाएंगे।	**14**
اِنَّآ اَرْسَلْنَآ اِلَيْكُمْ رَسُوْلًا شَاهِدًا عَلَيْكُمْ كَمَآ اَرْسَلْنَآ اِلٰى فِرْعَوْنَ رَسُوْلًا	निश्चित रूप से, हमने तुम्हारे पास एक रसूल (मुहम्मद) भेजा है, जो तुम पर गवाह है, जैसे हमने फ़िरऔन के पास एक रसूल भेजा था।	**15**
فَعَصٰى فِرْعَوْنُ الرَّسُوْلَ فَاَخَذْنٰهُ اَخْذًا وَّبِيْلًا	लेकिन फ़िरऔन ने उस रसूल की अवज्ञा की, तो हमने उसे भारी सजा दी।	**16**
فَكَيْفَ تَتَّقُوْنَ اِنْ كَفَرْتُمْ يَوْمًا يَّجْعَلُ الْوِلْدَانَ شِيْبًا	फिर तुम कैसे अपनी रक्षा करोगे अगर तुम उस दिन को नकारते रहे जो बच्चों को बूढ़ा कर देगा?	**17**
السَّمَاءُ مُنْفَطِرٌ بِهٖ كَانَ وَعْدُهٗ مَفْعُوْلًا	(वह दिन जब) आकाश फट जाएगा; उसका वादा पूरा होगा।	**18**
اِنَّ هٰذِهٖ تَذْكِرَةٌ فَمَنْ شَاءَ اتَّخَذَ اِلٰى رَبِّهٖ سَبِيْلًا	निश्चित रूप से, यह (आयत) एक चेतावनी है, तो जो चाहे वह अपने रेब की ओर जाने का रास्ता अपनाए।	**19**
اِنَّ رَبَّكَ يَعْلَمُ اَنَّكَ تَقُوْمُ اَدْنٰى مِنْ ثُلُثَيِ الَّيْلِ وَنِصْفَهٗ وَثُلُثَهٗ وَطَآئِفَةٌ مِّنَ الَّذِيْنَ مَعَكَ وَاللّٰهُ يُقَدِّرُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ عَلِمَ اَنْ لَّنْ تُحْصُوْهُ فَتَابَ عَلَيْكُمْ فَاقْرَءُوْا مَا تَيَسَّرَ مِنَ الْقُرْاٰنِ عَلِمَ اَنْ سَيَكُوْنُ مِنْكُمْ مَّرْضٰى وَاٰخَرُوْنَ يَضْرِبُوْنَ فِى الْاَرْضِ يَبْتَغُوْنَ مِنْ فَضْلِ اللّٰهِ وَاٰخَرُوْنَ يُقَاتِلُوْنَ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَاقْرَءُوْا مَا تَيَسَّرَ مِنْهُ وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَاَقْرِضُوا اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا وَمَا تُقَدِّمُوْا لِاَنْفُسِكُمْ مِّنْ خَيْرٍ تَجِدُوْهُ عِنْدَ اللّٰهِ هُوَ خَيْرًا وَّاَعْظَمَ اَجْرًا وَاسْتَغْفِرُوا اللّٰهَ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ	निश्चित रूप से, तुम्हारा रब जानता है कि तुम रात के दो-तिहाई हिस्से, या आधे हिस्से, या एक-तिहाई हिस्से में (नमाज़ के लिए) उठते हो, और तुम्हारे साथ के कुछ लोग भी। और अल्लाह रात और दिन का हिसाब रखता है वह जानता है कि तुम इसे पूरी तरह गिन नहीं सकते, इसलिए उसने तुम पर नरमी की। तो जितना आसान हो अल-क़ुरआन पढ़ो। वह जानता है कि तुममें से कुछ बीमार होंगे, और कुछ लोग अल्लाह का फज़्ल (रिज़्क़) तलाश करने के लिए धरती पर सफर करेंगे, और कुछ लोग अल्लाह की राह में जिहाद करेंगे। तो जितना आसान हो अल-क़ुरआन पढ़ो, और नमाज़ क़ायम करो, और ज़कात दो, और अल्लाह को अच्छा क़र्ज़ दो। और जो कुछ तुम अपने लिए आगे भेजते हो नेकी के रूप में, उसे तुम अल्लाह के पास बेहतर और बड़े इनाम के रूप में पाओगे। और अल्लाह से माफी माँगो। निश्चित रूप से, अल्लाह बहुत माफ करने वाला, बहुत दयालु है।	**20**

छंदों की संख़्या	اَلْمُدَّثِّر	مكية
५६	अल-Muddaththir - 74	मक्की

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल-Muddaththir (ढका हुआ)

1	ऐ कपड़े में लिपटे हुए (नबी),	يٰٓاَيُّهَا الْمُدَّثِّرُ
2	उठो और चेतावनी दो,	قُمْ فَاَنْذِرْ
3	और अपने रब की महिमा करो,	وَرَبَّكَ فَكَبِّرْ
4	और अपने कपड़े साफ रखो,	وَثِيَابَكَ فَطَهِّرْ
5	और गंदगी से दूर रहो,	وَالرُّجْزَ فَاهْجُرْ
6	और (किसी पर) उपकार करके उसका बदला न माँगो,	وَلَا تَمْنُنْ تَسْتَكْثِرُ
7	और अपने रब के लिए धैर्य रखो।	وَلِرَبِّكَ فَاصْبِرْ
8	फिर जब नरसिंगा फूँका जाएगा,	فَاِذَا نُقِرَ فِى النَّاقُوْرِ
9	तो वह दिन एक कठिन दिन होगा,	فَذٰلِكَ يَوْمَئِذٍ يَّوْمٌ عَسِيْرٌ
10	काफ़िरों के लिए, जो आसान नहीं होगा।	عَلَى الْكٰفِرِيْنَ غَيْرُ يَسِيْرٍ
11	मुझे उस व्यक्ति के साथ अकेला छोड़ दो जिसे मैंने अकेले पैदा किया,	ذَرْنِيْ وَمَنْ خَلَقْتُ وَحِيْدًا
12	और जिसे मैंने बहुत सारा धन दिया,	وَّجَعَلْتُ لَهٗ مَالًا مَّمْدُوْدًا
13	और बेटों को जो उसके सामने रहते हैं,	وَّبَنِيْنَ شُهُوْدًا
14	और जिसके लिए मैंने (जीवन की) हर सुविधा दी।	وَّمَهَّدْتُّ لَهٗ تَمْهِيْدًا
15	फिर भी वह चाहता है कि मैं और बढ़ाऊँ।	ثُمَّ يَطْمَعُ اَنْ اَزِيْدَ
16	हरगिज़ नहीं! निश्चित रूप से, उसने हमारी आयतों (अल-क़ुरआन) का विरोध किया।	كَلَّا اِنَّهٗ كَانَ لِاٰيٰتِنَا عَنِيْدًا
17	मैं उसे एक थकाने वाली चढ़ाई का बोझ डालूँगा।	سَاُرْهِقُهٗ صَعُوْدًا

18	नश्‍चिति रूप स, उसने सोचा और (कुछ) तय किया,	اِنَّه فَكَّرَ وَقَدَّرَ
19	तो उस पर हाय! उसने कैसे तय किया?	فَقُتِلَ كَيْفَ قَدَّرَ
20	फिर स, उस पर हाय! उसने कैसे तय किया?	ثُمَّ قُتِلَ كَيْفَ قَدَّرَ
21	फिर उसने (गहराई स) सोचा,	ثُمَّ نَظَرَ
22	फिर वह उदास होकर चहेरा लटकाने लगा,	ثُمَّ عَبَسَ وَبَسَرَ
23	फिर वह (सत्य स) मुँह फेरे लिया और घमंड करने लगा,	ثُمَّ اَدْبَرَ وَاسْتَكْبَرَ
24	फिर उसने कहा, '(अल-क़ुरआन) तो बस एक जादू है जो (पहले के लोगों स) सीखा गया है'	فَقَالَ اِنْ هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ يُّؤْثَرُ
25	यह तो बस इंसान की बात है'	اِنْ هٰذَآ اِلَّا قَوْلُ الْبَشَرِ
26	मैं उसे जलद ही (नरक) सक़र में डालूँगा,	سَاُصْلِيْهِ سَقَرَ
27	और तुम्हें क्या पता कि सक़र क्या है?	وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا سَقَرُ
28	वह (सक़र) न तो कुछ छोड़ता है और न ही बाकी रखता है,	لَا تُبْقِيْ وَلَا تَذَرُ
29	जो इंसान की खाल को जला देता है'	لَوَّاحَةٌ لِّلْبَشَرِ
30	उसके ऊपर उनन्नीस (फ़रिश्‍ते पहरेदार) हैं'	عَلَيْهَا تِسْعَةَ عَشَرَ
31	और हमने नरक के रखवाले केवल फ़रिश्‍तों को बनाया; और हमने उनकी संख्या केवल काफ़िरों के लिए एक आजमाइश के रूप में तय की, ताकि जिन्हें किताब दी गई वे यकीन करें, और जो ईमान लाए उनकी आस्था बढ़े, और जिन्हें किताब दी गई और मोमिन लोग शक न करें; और ताकि जिनके दिलों में बीमारी है और काफ़िर (कहें), 'अल्लाह ने इस (संख्या) के साथ क्या उदाहरण देना चाहा?' इस तरह अल्लाह जिसे चाहता है, गुमराह करता है और जिसे चाहता है, हिदायत देता है और तुम्हारे रब की सेनाओं को कोई नहीं जानता सिवाय उसके। और सक़र कुछ और नहीं, बल्कि इंसानों के लिए एक चेतावनी है।	وَمَا جَعَلْنَآ اَصْحٰبَ النَّارِ اِلَّا مَلٰٓئِكَةً وَّمَا جَعَلْنَا عِدَّتَهُمْ اِلَّا فِتْنَةً لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِيَسْتَيْقِنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ وَيَزْدَادَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِيْمَانًا وَّلَا يَرْتَابَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ وَالْمُؤْمِنُوْنَ وَلِيَقُوْلَ الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ وَّالْكٰفِرُوْنَ مَاذَآ اَرَادَ اللّٰهُ بِهٰذَا مَثَلًا كَذٰلِكَ يُضِلُّ اللّٰهُ مَنْ يَّشَآءُ وَيَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ وَمَا يَعْلَمُ جُنُوْدَ رَبِّكَ اِلَّا هُوَ وَمَا هِيَ اِلَّا ذِكْرٰى لِلْبَشَرِ
32	नहीं! चाँद की कसम,	كَلَّا وَالْقَمَرِ
33	और रात की कसम जब वह गुज़र जाए,	وَالَّيْلِ اِذْ اَدْبَرَ
34	और सुबह की कसम जब वह चमकने लगे,	وَالصُّبْحِ اِذَآ اَسْفَرَ

35	नश्चिति रूप स,े (सकऱ) एक बहतु बड़ी (वपितत़ा) ह,ै	اِنَّهَا لَاِحْدَى الْكُبَرِ
36	इंसानों क ेलएि चेतावनी क ेरूप म,ें	نَذِيْرًا لِّلْبَشَرِ
37	(यानी) तमुम ेंस ेजो चाह ेआग ेबढ़ ेया पीछ ेहट ो।	لِمَنْ شَاءَ مِنْكُمْ اَنْ يَّتَقَدَّمَ اَوْ يَتَاَخَّرَ
38	हर व्यक़्ति अपन ेकएि की जमि्मदेारी लगेा,	كُلُّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ رَهِيْنَةٌ
39	सविाय दाएँ हाथ वालों क,े	اِلَّآ اَصْحٰبَ الْيَمِيْنِ
40	जो जन्नत म ेंहोंग,े व ेएक-दसूर स ेपूछगे,ें	فِيْ جَنّٰتٍ يَتَسَاءَلُوْنَ
41	पापयिों की हालत क ेबार ेम,ें	عَنِ الْمُجْرِمِيْنَ
42	'कसि चीज़ न ेतमु्ह ेंनरक) सकऱ म ेंडाला?'	مَا سَلَكَكُمْ فِيْ سَقَرَ
43	व ेजवाब दगें,े 'हम उन लोगों म ेंस ेनहीं थ ेजो नमाज़ पढ़त ेथ,े	قَالُوْا لَمْ نَكُ مِنَ الْمُصَلِّيْنَ
44	और हम गरीबों को खाना नहीं खलित ेथ,े	وَلَمْ نَكُ نُطْعِمُ الْمِسْكِيْنَ
45	बलक़ि हम उन लोगों क ेसाथ (बकेार की) बात ेकरत ेथ ेजो ऐसी बात ेकरत ेथ,े	وَكُنَّا نَخُوْضُ مَعَ الْخَآئِضِيْنَ
46	और हम बदल ेके दनि को झठुलात ेथ,े	وَكُنَّا نُكَذِّبُ بِيَوْمِ الدِّيْنِ
47	यहा ँतक कि हमार ेपास मौत आ गई।'	حَتّٰٓى اَتٰىنَا الْيَقِيْنُ
48	तो उनक ेलएि अब सफिारशि करन ेवालों की सफिारशि कोई काम नहीं आएगी।	فَمَا تَنْفَعُهُمْ شَفَاعَةُ الشّٰفِعِيْنَ
49	फरि क्या वजह ह ैकि व े(काफरि) इस चेतावनी (अल्लाह की) स ेमहुँ फरे रह ेह?ै	فَمَا لَهُمْ عَنِ التَّذْكِرَةِ مُعْرِضِيْنَ
50	मानो व ेडर ेहुए जंगली गध ेहों,	كَاَنَّهُمْ حُمُرٌ مُّسْتَنْفِرَةٌ
51	जो शरे स ेभाग रह ेहों।	فَرَّتْ مِنْ قَسْوَرَةٍ
52	बलक़ि उनम ेंस ेहर एक चाहता ह ैकि उस ेखलुी कताब की आयत ेंदी जाएँ।	بَلْ يُرِيْدُ كُلُّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ اَنْ يُّؤْتٰى صُحُفًا مُّنَشَّرَةً
53	नहीं! वास्तव म,ें व ेआखरित स ेनहीं डरत।े	كَلَّا بَلْ لَّا يَخَافُوْنَ الْاٰخِرَةَ
54	नहीं! नश्चिति रूप स,े (अल-कुरआन) एक चेतावनी ह।ै	كَلَّآ اِنَّه تَذْكِرَةٌ

55	तो जो चाह,े वह इससे सबक ल े	فَمَنْ شَاءَ ذَكَرَه
56	और व े(अल-कुरआन) स े सबक नहीं लगे, े सिवाय इसक े कि अल्लाह चाह े वही वह रब ह ै जिसस े डरना चाहिए और जो माफी दने े का हकदार ह ै	وَمَا يَذْكُرُوْنَ اِلَّآ اَنْ يَّشَاءَ اللّٰهُ هُوَ اَهْلُ التَّقْوٰى وَاَهْلُ الْمَغْفِرَةِ

छंदों की संख्या	اَلْقِيَامَة	मक्की
४०	अल-Qiyamah - 75	مكية

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल-Qiyamah (पुनरुत्थान)

1	मैं क़ियामत के दिन की कसम खाता हूँ	لَآ اُقْسِمُ بِيَوْمِ الْقِيٰمَةِ
2	और मैं उस आत्मा की कसम खाता हूँ जो हमेशा (खुद को) पछताती है।	وَلَآ اُقْسِمُ بِالنَّفْسِ اللَّوَّامَةِ
3	क्या इंसान सोचता है कि हम उसकी हड्डियों को फिर से इकट्ठा नहीं करेंगे?	اَيَحْسَبُ الْاِنْسَانُ اَلَّنْ نَّجْمَعَ عِظَامَه
4	(बल्कि) हम उसकी उंगलियों को भी पूरी तरह से व्यवस्थित करने में सक्षम हैं।	بَلٰى قٰدِرِيْنَ عَلٰٓى اَنْ نُّسَوِّيَ بَنَانَه
5	लेकिन इंसान निरंतर पाप करने की इच्छा रखता है।	بَلْ يُرِيْدُ الْاِنْسَانُ لِيَفْجُرَ اَمَامَه
6	वह पूछता है, 'क़ियामत का दिन कब आएगा?'	يَسْـَٔلُ اَيَّانَ يَوْمُ الْقِيٰمَةِ
7	तो जब आँख डर से फटी की फटी रह जाएंगी,	فَاِذَا بَرِقَ الْبَصَرُ
8	और चाँद की रोशनी गायब हो जाएगी,	وَخَسَفَ الْقَمَرُ
9	और सूरज और चाँद को एक साथ लाया जाएगा,	وَجُمِعَ الشَّمْسُ وَالْقَمَرُ
10	उस दिन इंसान कहेगा, 'भागने की जगह कहाँ है?'	يَقُوْلُ الْاِنْسَانُ يَوْمَئِذٍ اَيْنَ الْمَفَرُّ
11	नहीं! कोई आश्रय की जगह नहीं है!	كَلَّا لَا وَزَرَ
12	उस दिन तुम्हारे रब की ओर ही लौटना होगा।	اِلٰى رَبِّكَ يَوْمَئِذِ الْمُسْتَقَرُّ
13	उस दिन इंसान को बताया जाएगा कि उसने क्या किया और क्या छोड़ दिया।	يُنَبَّؤُا الْاِنْسَانُ يَوْمَئِذٍ بِمَا قَدَّمَ وَاَخَّرَ
14	बल्कि इंसान स्वयं अपने खिलाफ गवाह होगा,	بَلِ الْاِنْسَانُ عَلٰى نَفْسِه بَصِيْرَةٌ
15	भले ही वह अपने बहाने पेश करे।	وَّلَوْ اَلْقٰى مَعَاذِيْرَه
16	(मुहम्मद) तुम अपनी जीभ को (अल-कुरआन पढ़ने के लिए) जल्दबाजी में न हिलाओ।	لَا تُحَرِّكْ بِه لِسَانَكَ لِتَعْجَلَ بِه

17	निश्चिति रूप से, हम ही इसे (तुम्हारे सीने में) इकट्ठा करेंगे और इसे पढ़वाएंगे।	اِنَّ عَلَيْنَا جَمْعَه وَقُرْاٰنَه
18	जब हम इसे पढ़ चुके हों, तो तुम उसके पढ़ने का अनुसरण करो।	فَاِذَا قَرَأْنٰهُ فَاتَّبِعْ قُرْاٰنَه
19	फिर निश्चिति रूप से, हम ही इसे स्पष्ट करेंगे।	ثُمَّ اِنَّ عَلَيْنَا بَيَانَه
20	नहीं! बल्कि तुम दुनिया की ज़िंदगी से प्यार करते हो,	كَلَّا بَلْ تُحِبُّوْنَ الْعَاجِلَةَ
21	और आख़िरत को नज़रअंदाज करते हो।	وَتَذَرُوْنَ الْاٰخِرَةَ
22	उस दिन (मोमिनों के) चेहरे चमकते हुए होंगे,	وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ نَّاضِرَةٌ
23	अपने रब की ओर देखते हुए।	اِلٰى رَبِّهَا نَاظِرَةٌ
24	और उस दिन (काफ़िरों के) चेहरे मलिन होंगे,	وَوُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ بَاسِرَةٌ
25	वे यक़ीन करेंगे कि उन पर एक भयानक विपत्ति आने वाली है।	تَظُنُّ اَنْ يُّفْعَلَ بِهَا فَاقِرَةٌ
26	नहीं! जब (रूह) गले तक पहुँच जाएगी,	كَلَّآ اِذَا بَلَغَتِ التَّرَاقِيَ
27	और कहा जाएगा, 'कौन है जो (इसे) ठीक कर सकता है?'	وَقِيْلَ مَنْ رَاقٍ
28	और उसे यक़ीन हो जाएगा कि यह (दुनिया से) बिछड़ने का समय है,	وَّظَنَّ اَنَّهُ الْفِرَاقُ
29	और एक टाँग दूसरी टाँग से लिपट जाएगी,	وَالْتَفَّتِ السَّاقُ بِالسَّاقِ
30	उस दिन तुम्हें अपने रब की ओर हाँका जाएगा।	اِلٰى رَبِّكَ يَوْمَئِذِ الْمَسَاقُ
31	क्योंकि उसने (अल-क़ुरआन और रसूल को) सच नहीं माना और नमाज़ नहीं पढ़ी,	فَلَا صَدَّقَ وَلَا صَلّٰى
32	बल्कि उसने (रसूल को) झुठलाया और (सत्य से) मुँह फेर लिया,	وَلٰكِنْ كَذَّبَ وَتَوَلّٰى
33	फिर वह अपनी क़ौम के पास घमंड से चला गया।	ثُمَّ ذَهَبَ اِلٰٓى اَهْلِه يَتَمَطّٰى
34	हाय तुम पर! तो हाय!	اَوْلٰى لَكَ فَاَوْلٰى
35	फिर से, हाय तुम पर (इंसान)! तो हाय!	ثُمَّ اَوْلٰى لَكَ فَاَوْلٰى
36	क्या इंसान सोचता है कि उसे यूँ ही (बिना जवाबदेही के) छोड़ दिया जाएगा?	اَيَحْسَبُ الْاِنْسَانُ اَنْ يُّتْرَكَ سُدًى

37	क्या वह पहले एक बद्ध वीर्य नहीं था जो (गर्भ में) डाला गया,	اَلَمْ يَكُ نُطْفَةً مِّنْ مَّنِيٍّ يُّمْنٰى
38	फिर वह एक चपिकने वाला पदार्थ बना, फिर अल्लाह ने उसे बनाया और पूर्ण किया,	ثُمَّ كَانَ عَلَقَةً فَخَلَقَ فَسَوّٰى
39	फिर उसने उससे नर और मादा का जोड़ा बनाया।	فَجَعَلَ مِنْهُ الزَّوْجَيْنِ الذَّكَرَ وَالْاُنْثٰى
40	क्या (वह अल्लाह जो ऐसा करता है) मृतकों को जीवित करने में सक्षम नहीं है?	اَلَيْسَ ذٰلِكَ بِقٰدِرٍ عَلٰٓى اَنْ يُّحْيِۦَ الْمَوْتٰى

छंदों की संख्या	اَلْإِنسَان	مدنية
३१	अल-इंसान - 76	मदनी

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल-इंसान (मानव)

1	क्या इंसान के लिए वह समय नहीं आया, जब वह कुछ भी ऐसा नहीं था जिसका ज़िक्र किया जा सके?	هَلْ اَتٰى عَلَى الْاِنْسَانِ حِيْنٌ مِّنَ الدَّهْرِ لَمْ يَكُنْ شَيْـًٔا مَّذْكُوْرًا
2	निश्चित रूप से, हमने इंसान को एक मिश्रित बूंद (वीर्य) से पैदा किया, जिसे हम आजमाना चाहते थे (आदेश और निषेध के साथ), इसलिए हमने उसे सुनने और देखने वाला बनाया।	اِنَّا خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنْ نُّطْفَةٍ اَمْشَاجٍ نَّبْتَلِيْهِ فَجَعَلْنٰهُ سَمِيْعًا بَصِيْرًا
3	निश्चित रूप से, हमने उसे सीधा रास्ता दिखाया; कोई कृतज्ञ होता है और कोई काफिर।	اِنَّا هَدَيْنٰهُ السَّبِيْلَ اِمَّا شَاكِرًا وَّاِمَّا كَفُوْرًا
4	निश्चित रूप से, हमने काफिरों के लिए जंजीरें, बेड़ियाँ और धधकती आग तैयार की है।	اِنَّآ اَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ سَلٰسِلَا وَاَغْلٰلًا وَّسَعِيْرًا
5	निश्चित रूप से, नेक काम करने वाले लोग एक प्याले से पिएंगे जिसमें कपूर का मिश्रण होगा,	اِنَّ الْاَبْرَارَ يَشْرَبُوْنَ مِنْ كَاْسٍ كَانَ مِزَاجُهَا كَافُوْرًا
6	(वह) एक झरना (जन्नत में) है जिससे अल्लाह के बंदे पीते हैं और वे इसे बहुत अच्छे से बहा सकते हैं।	عَيْنًا يَّشْرَبُ بِهَا عِبَادُ اللّٰهِ يُفَجِّرُوْنَهَا تَفْجِيْرًا
7	वे अपनी मन्नतें पूरी करते हैं और उस दिन से डरते हैं जिसकी यातना हर जगह फैली होगी।	يُوْفُوْنَ بِالنَّذْرِ وَيَخَافُوْنَ يَوْمًا كَانَ شَرُّهٗ مُسْتَطِيْرًا
8	और वे अपनी पसंद का भोजन गरीबों, यतीमों और बंदियों को देते हैं,	وَيُطْعِمُوْنَ الطَّعَامَ عَلٰى حُبِّهٖ مِسْكِيْنًا وَّيَتِيْمًا وَّاَسِيْرًا
9	(यह कहते हुए), 'हम तुम्हें भोजन केवल अल्लाह की प्रसन्नता की आशा में दे रहे हैं, हम तुमसे न तो कोई बदला चाहते हैं और न ही शुक्रिया।'	اِنَّمَا نُطْعِمُكُمْ لِوَجْهِ اللّٰهِ لَا نُرِيْدُ مِنْكُمْ جَزَآءً وَّلَا شُكُوْرًا
10	निश्चित रूप से, हम अपने रब की यातना से डरते हैं उस दिन (जब) लोग मलिन चेहरों के साथ कष्ट में होंगे।	اِنَّا نَخَافُ مِنْ رَّبِّنَا يَوْمًا عَبُوْسًا قَمْطَرِيْرًا
11	तो अल्लाह ने उन्हें उस दिन की परेशानी से बचाया, और उन्हें चमक और खुशी दी।	فَوَقٰىهُمُ اللّٰهُ شَرَّ ذٰلِكَ الْيَوْمِ وَلَقّٰىهُمْ نَضْرَةً وَّسُرُوْرًا

12	और उनके धैर्य के बदले में उसने उन्हें जन्नत और (रेशमी) वस्त्र दिए।	وَجَزٰىهُمْ بِمَا صَبَرُوْا جَنَّةً وَّحَرِيْرًا
13	वहाँ वे तख़्तों पर टिककर बैठेंगे, वहाँ वे न तो (सूरज की) तपिश देखेंगे और न ही अत्यधिक ठंड।	مُّتَّكِـِٕيْنَ فِيْهَا عَلَى الْاَرَآئِكِ لَا يَرَوْنَ فِيْهَا شَمْسًا وَّلَا زَمْهَرِيْرًا
14	और (पेड़ों की) छाया उनके ऊपर करीब होगी और (फलों को) तोड़ना बहुत आसान होगा।	وَدَانِيَةً عَلَيْهِمْ ظِلٰلُهَا وَذُلِّلَتْ قُطُوْفُهَا تَذْلِيْلًا
15	और उनके लिए चाँदी के बर्तन और कॉसिट्ल जैसे साफ प्याले घुमाए जाएंगे,	وَيُطَافُ عَلَيْهِمْ بِاٰنِيَةٍ مِّنْ فِضَّةٍ وَّاَكْوَابٍ كَانَتْ قَوَارِيْرَا
16	चाँदी से बने साफ कॉसिट्ल, जिनका आकार वे अपनी इच्छा के अनुसार निर्धारित करेंगे।	قَوَارِيْرَا مِنْ فِضَّةٍ قَدَّرُوْهَا تَقْدِيْرًا
17	और वहाँ उन्हें एक प्याले में अदरक मिश्रित पेय दिया जाएगा।	وَيُسْقَوْنَ فِيْهَا كَاْسًا كَانَ مِزَاجُهَا زَنْجَبِيْلًا
18	(जो) एक झरने से आएगा (जन्नत में) जिसका नाम सलसबील है।	عَيْنًا فِيْهَا تُسَمّٰى سَلْسَبِيْلًا
19	और उनके चारों ओर हमेशा जवान रहने वाले युवक होंगे। जब तुम उन्हें देखोगे, तो उन्हें बिखरे हुए मोती समझोगे।	وَيَطُوْفُ عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ مُّخَلَّدُوْنَ اِذَا رَاَيْتَهُمْ حَسِبْتَهُمْ لُؤْلُؤًا مَّنْثُوْرًا
20	और जब तुम वहाँ (जन्नत में) देखोगे, तो तुम्हें तरह-तरह की नेमतें और एक विशाल राज्य दिखाई देगा।	وَاِذَا رَاَيْتَ ثَمَّ رَاَيْتَ نَعِيْمًا وَّمُلْكًا كَبِيْرًا
21	वे हरे रेशम और मोटे रेशम के कपड़े पहनेंगे और चाँदी के कंगन पहनेंगे, और उनका रब उन्हें शुद्ध (और पवित्र) पेय देगा।	عٰلِيَهُمْ ثِيَابُ سُنْدُسٍ خُضْرٌ وَّاِسْتَبْرَقٌ وَّحُلُّوْٓا اَسَاوِرَ مِنْ فِضَّةٍ وَسَقٰىهُمْ رَبُّهُمْ شَرَابًا طَهُوْرًا
22	यह तुम्हारा बदला है, और तुम्हारी महेनत को स्वीकार और सराहा गया है (अल्लाह द्वारा)।	اِنَّ هٰذَا كَانَ لَكُمْ جَزَآءً وَّكَانَ سَعْيُكُمْ مَّشْكُوْرًا
23	निश्चित रूप से, हमने ही तुम पर (मुहम्मद) अल-क़ुरआन को धीरे-धीरे उतारा है।	اِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْقُرْاٰنَ تَنْزِيْلًا
24	तो अपने रब के आदेश को धैर्य के साथ निभाओ, और उनके बीच के पापी या काफ़िर की बात न मानो।	فَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ وَلَا تُطِعْ مِنْهُمْ اٰثِمًا اَوْ كَفُوْرًا
25	और अपने रब का नाम सुबह और शाम ज़िक्र करो।	وَاذْكُرِ اسْمَ رَبِّكَ بُكْرَةً وَّاَصِيْلًا
26	और रात के कुछ हिस्से में, उसकी इबादत में सजदा करो और रात के लंबे हिस्से में उसकी तसबीह करो।	وَمِنَ الَّيْلِ فَاسْجُدْ لَه وَسَبِّحْهُ لَيْلًا طَوِيْلًا

27	नश्चिति रूप स,े य े(काफिर) लोग दनुयिा की ज़िंदगी स पे्यार करत हैं और एक भारी दनि (आख़रित) को पीछ छोड़ दते हैं।	اِنَّ هٰٓؤُلَاۤءِ يُحِبُّوْنَ الْعَاجِلَةَ وَيَذَرُوْنَ وَرَاۤءَهُمْ يَوْمًا ثَقِيْلًا
28	हमन उनह पैदा कयिा और उनक जोड़ों को मज़बूत कयिा। लकेनि, अगर हम चाह, तो हम उनकी जगह उनक जसै और लोगों को ला सकत हैं।	نَحْنُ خَلَقْنٰهُمْ وَشَدَدْنَآ اَسْرَهُمْ وَاِذَا شِئْنَا بَدَّلْنَآ اَمْثَالَهُمْ تَبْدِيْلًا
29	नश्चिति रूप स,े (य आयत) एक चतेावनी ह, तो जो चाह वह अपन रेब की ओर जान का रास्ता अपनाए।	اِنَّ هٰذِهٖ تَذْكِرَةٌ فَمَنْ شَاۤءَ اتَّخَذَ اِلٰى رَبِّهٖ سَبِيْلًا
30	लकेनि तमु (उस रास्त को) नहीं चनु सकत, सवािय इसक कि अल्लाह चाह। नश्चिति रूप स,े अल्लाह सर्वज्ञानी, सर्वबद्धिमान ह।	وَمَا تَشَاۤءُوْنَ اِلَّآ اَنْ يَّشَاۤءَ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا حَكِيْمًا
31	वह जसि चाहता ह, अपनी रहमत (जन्नत) म दाख़लि करता ह और ज़ालमिों क लिए उसन दर्दनाक यातना तयैार की ह।	يُّدْخِلُ مَنْ يَّشَاۤءُ فِيْ رَحْمَتِهٖ وَالظّٰلِمِيْنَ اَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا

छंदों की संख्या	اَلْمُرْسَلَات	مكية
५०	अल-Mursalat - 77	मक्की

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल-Mursalat (दूत)

1	उन (फरिश्तों) की कसम जो भलाई लाने के लिए भेजे गए,	وَالْمُرْسَلٰتِ عُرْفًا
2	और (फरिश्तों) की कसम जो तेजी से उड़ते हैं,	فَالْعٰصِفٰتِ عَصْفًا
3	और (फरिश्तों) की कसम जो (अल्लाह की रहमत) को व्यापक रूप से फैलाते हैं,	وَّالنّٰشِرٰتِ نَشْرًا
4	और (फरिश्तों) की कसम जो (अच्छे और बुरे के बीच) स्पष्ट रूप से भेद करते हैं,	فَالْفٰرِقٰتِ فَرْقًا
5	और (फरिश्तों) की कसम जो वह्य (ईशवाणी) पहुँचाते हैं,	فَالْمُلْقِيٰتِ ذِكْرًا
6	(ताकी) बहाने खत्म कर या चेतावनी दी	عُذْرًا اَوْ نُذْرًا
7	निश्चित रूप से, जो तुमसे वादा किया गया है, वह अवश्य होगा।	اِنَّمَا تُوْعَدُوْنَ لَوَاقِعٌ
8	तो जब तारे मिटा दिए जाएंगे,	فَاِذَا النُّجُوْمُ طُمِسَتْ
9	और जब आकाश फट जाएगा,	وَاِذَا السَّمَاءُ فُرِجَتْ
10	और जब पहाड़ धूल में बदल दिए जाएंगे,	وَاِذَا الْجِبَالُ نُسِفَتْ
11	और जब रसूलों के लिए समय निर्धारित किया जाएगा।	وَاِذَا الرُّسُلُ اُقِّتَتْ
12	(निश्चित रूप से उनसे कहा जाएगा), 'किस दिन तक (काफिरों की यातना) को टाला गया?'	لِاَيِّ يَوْمٍ اُجِّلَتْ
13	फैसले के दिन तक।	لِيَوْمِ الْفَصْلِ
14	और तुम्हें क्या पता कि फैसले का दिन क्या है?	وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا يَوْمُ الْفَصْلِ
15	उस दिन उन लोगों के लिए हाय, जो (सत्य को) झुठलाते हैं!	وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ
16	क्या हमने पहले के लोगों को नष्ट नहीं किया?	اَلَمْ نُهْلِكِ الْاَوَّلِيْنَ

17	फरि हमन`बाद म`आन`वालो`(क`लिए यातना) को पीछ`कयि।	ثُمَّ نُتْبِعُهُمُ الْاٰخِرِيْنَ
18	इसी तरह हम पापयिो`क`साथ व्यवहार करत`हो	كَذٰلِكَ نَفْعَلُ بِالْمُجْرِمِيْنَ
19	उस दनि उन लोगो`क`लिए हाय, जो (सत्य को) झठुलात`हो	وَيْلٌ يَّوْمَىِٕذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ
20	क्या हमन`तमु्ह`एक तचु्छ पानी (वीर्य) स`नहीं बनाया,	اَلَمْ نَخْلُقْكُّمْ مِّنْ مَّاۤءٍ مَّهِيْنٍ
21	फरि उस`एक मजबतू स्थान (गर्भाशय) म`रेख,	فَجَعَلْنٰهُ فِيْ قَرَارٍ مَّكِيْنٍ
22	एक नश्चिति समय तक,	اِلٰى قَدَرٍ مَّعْلُوْمٍ
23	फरि हमन`(उसका रूप) नरि्धारति कयि, तो (हम ही) सबस`अच्छ`नरि्धारक ह	فَقَدَرْنَا فَنِعْمَ الْقٰدِرُوْنَ
24	उस दनि उन लोगो`क`लिए हाय, जो (सत्य को) झठुलात`हो	وَيْلٌ يَّوْمَىِٕذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ
25	क्या हमन`धरती को (लोगो`क) एकत्र होन`का स्थान नहीं बनाया,	اَلَمْ نَجْعَلِ الْاَرْضَ كِفَاتًا
26	जो जीवति ह`और जो मर चक्ु ह,`उनक`लिए?	اَحْيَاۤءً وَّاَمْوَاتًا
27	और हमन`उसम`ऊचँ`पहाड़ बनाए, और तमु्ह`मीठा पानी पलिाया?	وَّجَعَلْنَا فِيْهَا رَوَاسِيَ شٰمِخٰتٍ وَّاَسْقَيْنٰكُمْ مَّاۤءً فُرَاتًا
28	उस दनि उन लोगो`क`लिए हाय, जो (सत्य को) झठुलात`हो	وَيْلٌ يَّوْمَىِٕذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ
29	(कहा जाएगा), 'जाओ उस (यातना) की ओर जसि`तमु झठुलात`थ'	اِنْطَلِقُوْۤا اِلٰى مَا كُنْتُمْ بِهٖ تُكَذِّبُوْنَ
30	जाओ उस धएु`की छाया की ओर जो तीन शाखाओ`वाली ह,	اِنْطَلِقُوْۤا اِلٰى ظِلٍّ ذِيْ ثَلٰثِ شُعَبٍ
31	जो न तो आश्रय दतेी ह`और न ही नरक की लपटो`स`बचाती ह	لَا ظَلِيْلٍ وَّلَا يُغْنِيْ مِنَ اللَّهَبِ
32	नश्चिति रूप स,`(नरक) ऐसी चगिारयिा`उगलता ह`जैसै`महल,	اِنَّهَا تَرْمِيْ بِشَرَرٍ كَالْقَصْرِ
33	मानो व`पीले`ऊटँो`की कतार ह`।	كَاَنَّهٗ جِمٰلَتٌ صُفْرٌ
34	उस दनि उन लोगो`क`लिए हाय, जो (सत्य को) झठुलात`हो	وَيْلٌ يَّوْمَىِٕذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ
35	यह वह दनि ह`जब व`बोल नहीं`सकग`,े	هٰذَا يَوْمُ لَا يَنْطِقُوْنَ
36	और उन्ह`बहान`बनान`की अनमुति नहीं दी जाएगी।	وَلَا يُؤْذَنُ لَهُمْ فَيَعْتَذِرُوْنَ

37	उस दिन उन लोगों के लिए हाय, जो (सत्य को) झुठलाते हैं।	وَيْلٌ يَّوْمَىِٕذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ
38	यह फ़ैसले का दिन है, हमने तुम्हें और पहले के लोगों को एकत्र किया है।	هٰذَا يَوْمُ الْفَصْلِ جَمَعْنٰكُمْ وَالْاَوَّلِيْنَ
39	तो अगर तुम्हारे पास कोई चाल है, तो मेरे ख़िलाफ़ वह चाल चलो।	فَاِنْ كَانَ لَكُمْ كَيْدٌ فَكِيْدُوْنِ
40	उस दिन उन लोगों के लिए हाय, जो (सत्य को) झुठलाते हैं।	وَيْلٌ يَّوْمَىِٕذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ
41	निश्चित रूप से, धर्मपरायण लोग छायादार (स्वर्ग के पेड़ों) और झरनों के बीच होंगे,	اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِيْ ظِلٰلٍ وَّعُيُوْنٍ
42	और उन फलों के बीच जो उन्हें पसंद हैं।	وَّفَوَاكِهَ مِمَّا يَشْتَهُوْنَ
43	(उनसे कहा जाएगा), 'खाओ और पियो सुख के साथ, इसके बदले में जो तुमने किया।'	كُلُوْا وَاشْرَبُوْا هَنِيْٓـًٔا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ
44	निश्चित रूप से, हम इस तरह नेके काम करने वालों को पुरुस्कार देते हैं।	اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ
45	उस दिन उन लोगों के लिए हाय, जो (सत्य को) झुठलाते हैं।	وَيْلٌ يَّوْمَىِٕذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ
46	(काफ़िरों से कहा जाएगा), 'खाओ और थोड़े समय के लिए (दुनिया में) आनंद लो, निश्चित रूप से तुम दुराचारी हो!'	كُلُوْا وَتَمَتَّعُوْا قَلِيْلًا اِنَّكُمْ مُّجْرِمُوْنَ
47	उस दिन उन लोगों के लिए हाय, जो (सत्य को) झुठलाते हैं।	وَيْلٌ يَّوْمَىِٕذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ
48	और जब उनसे कहा जाता है, 'रुकू करो,' तो वे रुकू नहीं करते।	وَاِذَا قِيْلَ لَهُمُ ارْكَعُوْا لَا يَرْكَعُوْنَ
49	उस दिन उन लोगों के लिए हाय, जो (सत्य को) झुठलाते हैं।	وَيْلٌ يَّوْمَىِٕذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ
50	तो (अल-क़ुरआन के अलावा) वे किस शिक्षा पर ईमान लाएंगे?	فَبِاَيِّ حَدِيْثٍ بَعْدَهٗ يُؤْمِنُوْنَ

छदों की संख़्या	اَلنَّبَأ	مكية
४०	एक-नव - 78	मक्की

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

एक-नव (समाचार)

1	व ऐक-दूसर स केसि बार मे सवाल करत हे?	عَمَّ يَتَسَاءَلُوْنَ
2	उस बड़ी ख़बर (क़यामत क दिनि) क बार मे,	عَنِ النَّبَإِ الْعَظِيْمِ
3	जसिक बार मे व आपस म मतभदे करत हे।	الَّذِيْ هُمْ فِيْهِ مُخْتَلِفُوْنَ
4	नही! व जलद ही जान लगे,	كَلَّا سَيَعْلَمُوْنَ
5	फरि स नही! व जलद ही जान लगे,	ثُمَّ كَلَّا سَيَعْلَمُوْنَ
6	क़या हमन धरती को बछिौना नहीं बनाया?	اَلَمْ نَجْعَلِ الْاَرْضَ مِهٰدًا
7	और पहाड़ों को खट्टूँयिा नहीं बनाया?	وَّالْجِبَالَ اَوْتَادًا
8	और हमन तमुह जोड़ों म पदैा कयि,	وَّخَلَقْنٰكُمْ اَزْوَاجًا
9	और हमन तमुहारी नींद को वशि्राम क लएि बनाया,	وَّجَعَلْنَا نَوْمَكُمْ سُبَاتًا
10	और हमन रात को परदा बनाया,	وَّجَعَلْنَا الَّيْلَ لِبَاسًا
11	और हमन दनि को आजीवकिा कमान के लएि बनाया,	وَّجَعَلْنَا النَّهَارَ مَعَاشًا
12	और हमन तमुहार ऊपर सात मज़बूत (आकाश) बनाए,	وَبَنَيْنَا فَوْقَكُمْ سَبْعًا شِدَادًا
13	और हमन ऐक चमकता हुआ दीपक (सूरज) बनाया,	وَّجَعَلْنَا سِرَاجًا وَّهَّاجًا
14	और हमन बादलों स मूसलाधार पानी बरसाया,	وَّاَنْزَلْنَا مِنَ الْمُعْصِرٰتِ مَاءً ثَجَّاجًا
15	ताकि हम उस पानी स अनाज उगाएँ,	لِّنُخْرِجَ بِهٖ حَبًّا وَّنَبَاتًا
16	और घन बाग-बगीचे।	وَّجَنّٰتٍ اَلْفَافًا
17	नशि्चति रूप स, फसैल का दनि एक नरि्धारति समय ह,	اِنَّ يَوْمَ الْفَصْلِ كَانَ مِيْقَاتًا

18	(वह दनि) जब नरसगिा फूँका जाएगा और तमु झुंडों म आओग,	يَّوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّوْرِ فَتَأْتُوْنَ اَفْوَاجًا
19	और आकाश खोल दयिा जाएगा और वह दवार बन जाएगा,	وَّفُتِحَتِ السَّمَاۤءُ فَكَانَتْ اَبْوَابًا
20	और पहाड़ हटा दिए जाएंगे और व भ्रम बन जाएंगे।	وَّسُيِّرَتِ الْجِبَالُ فَكَانَتْ سَرَابًا
21	नश्चिति रूप स, नरक एक घात म है,	اِنَّ جَهَنَّمَ كَانَتْ مِرْصَادًا
22	अतचिारयिों के लिए एक ठकिाना,	لِّلطّٰغِيْنَ مَاٰبًا
23	जो उसम लंब समय तक रहगे।	لّٰبِثِيْنَ فِيْهَاۤ اَحْقَابًا
24	वहा वं ने तो ठंडक का सवाद चखगे और न ही पये,	لَا يَذُوْقُوْنَ فِيْهَا بَرْدًا وَّلَا شَرَابًا
25	सविाय खौलत पानी और मवाद क,	اِلَّا حَمِيْمًا وَّغَسَّاقًا
26	उनक करमों का उचति बदला।	جَزَاۤءً وِّفَاقًا
27	क्योंकि व हसिाब की उमीद नहीं करत थ,	اِنَّهُمْ كَانُوْا لَا يَرْجُوْنَ حِسَابًا
28	और उनहोंने हमारी आयतों को पूरी तरह झठुलाया।	وَّكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا كِذَّابًا
29	और हमने हर चीज़ को लखिकर रखा ह।	وَكُلَّ شَيْءٍ اَحْصَيْنٰهُ كِتٰبًا
30	तो (उनस कहा जाएगा), 'अब सवाद लो, हम तमुहारी यातना को और बढ़ाएंगे।'	فَذُوْقُوْا فَلَنْ نَّزِيْدَكُمْ اِلَّا عَذَابًا
31	नश्चिति रूप स, धरमपरायण लोगों के लिए सफलता ह,	اِنَّ لِلْمُتَّقِيْنَ مَفَازًا
32	बाग-बगीच और अंगूर,	حَدَاۤئِقَ وَاَعْنَابًا
33	और समवयसक यवुतयिां,	وَّكَوَاعِبَ اَتْرَابًا
34	और भरे हुए पयाले।	وَّكَاْسًا دِهَاقًا
35	वहा वं ने तो वयरथ बात सनुगे और न ही झठू,	لَا يَسْمَعُوْنَ فِيْهَا لَغْوًا وَّلَا كِذّٰبًا
36	तमुहार रब की ओर स एक परुसकार, एक परयापत दने।	جَزَاۤءً مِّنْ رَّبِّكَ عَطَاۤءً حِسَابًا
37	वह आकाशों और धरती और जो कछु उनक बीच ह, उसका रब, जो अतयंत दयाल ह; कोई भी उसस बात करने की हमिमत नहीं करगेा।	رَّبِّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا الرَّحْمٰنِ لَا يَمْلِكُوْنَ مِنْهُ خِطَابًا

يَوْمَ يَقُوْمُ الرُّوْحُ وَالْمَلٰٓئِكَةُ صَفًّا لَّا يَتَكَلَّمُوْنَ اِلَّا مَنْ اَذِنَ لَهُ الرَّحْمٰنُ وَقَالَ صَوَابًا	उस दिन जब रूह और फ़रिश्ते पंक्तियों में खड़े होंगे, कोई नहीं बोलेगा सिवाय उसके जिसे अत्यंत दयालु अनुमति देगा और जो सत्य बोलेगा।	**38**
ذٰلِكَ الْيَوْمُ الْحَقُّ فَمَنْ شَاۤءَ اتَّخَذَ اِلٰى رَبِّهٖ مَاٰبًا	वह सच्चा दिन है, तो जो चाहे वह अपने रब की ओर एक ठिकाना बनाए।	**39**
اِنَّآ اَنْذَرْنٰكُمْ عَذَابًا قَرِيْبًا ۙ يَّوْمَ يَنْظُرُ الْمَرْءُ مَا قَدَّمَتْ يَدَاهُ وَيَقُوْلُ الْكٰفِرُ يٰلَيْتَنِيْ كُنْتُ تُرٰبًا	निश्चित रूप से, हमने तुम्हें चेतावनी दी है एक निकटवर्ती यातना के बारे में, उस दिन जब इंसान देखेगा कि उसने अपने हाथों से क्या भेजा, और काफ़िर कहेगा, 'काश मैं मिट्टी होता!'	**40**

छंदों की संख्या	اَلنَّازِعَات	مكية
४६	एक-Nazi'at - 79	मक्की

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

एक-Nazi'at (उखाड़ने वाले)

1	उन (फरिश्तों) की कसम जो (प्राण) को कठोरता से खींचते हैं,	وَالنّٰزِعٰتِ غَرْقًا
2	उन (फरिश्तों) की कसम जो (प्राण) को नरमी से खींचते हैं,	وَّالنّٰشِطٰتِ نَشْطًا
3	उन (फरिश्तों) की कसम जो आकाश से तेजी से उतरते हैं,	وَّالسّٰبِحٰتِ سَبْحًا
4	और (फरिश्तों) की कसम जो तेजी से आगे बढ़ते हैं,	فَالسّٰبِقٰتِ سَبْقًا
5	और (फरिश्तों) की कसम जो (दुनिया के) मामलों को व्यवस्थित करते हैं,	فَالْمُدَبِّرٰتِ اَمْرًا
6	(निश्चित रूप से, तुम पुनरुज्जीवित करोगे) उस दिन जब पहली तुरही की आवाज़ विशेष को हिलाएगी,	يَوْمَ تَرْجُفُ الرَّاجِفَةُ
7	(पहली तुरही) के बाद दूसरी तुरही की आवाज़ आएगी।	تَتْبَعُهَا الرَّادِفَةُ
8	उस समय मनुष्यों के दिल बहुत डरेंगे,	قُلُوْبٌ يَّوْمَئِذٍ وَّاجِفَةٌ
9	उनकी निगाहें झुक जाएंगी।	اَبْصَارُهَا خَاشِعَةٌ
10	(काफिर) कहते हैं, "क्या हम वास्तव में अपनी पुरानी ज़िंदगी में लौटाए जाएंगे?	يَقُوْلُوْنَ ءَاِنَّا لَمَرْدُوْدُوْنَ فِى الْحَافِرَةِ
11	क्या (हम पुनरुज्जीवित करेंगे) जब हम टूटी-फूटी हड्डियाँ बन चुके होंगे?'	ءَاِذَا كُنَّا عِظَامًا نَّخِرَةً
12	वे कहते हैं, 'अगर ऐसा है, तो यह एक नुकसानदायक वापसी होगी।'	قَالُوْا تِلْكَ اِذًا كَرَّةٌ خَاسِرَةٌ
13	तो यह वापसी केवल एक ही तुरही की आवाज़ से होगी।	فَاِنَّمَا هِىَ زَجْرَةٌ وَّاحِدَةٌ
14	और उसी क्षण वे (नई) धरती पर जीवित हो जाएंगे।	فَاِذَا هُمْ بِالسَّاهِرَةِ
15	क्या तुम्हें (मुहम्मद) मूसा की कहानी सुनाई गई है?	هَلْ اَتٰىكَ حَدِيْثُ مُوْسٰى
16	जब उनके रब ने उन्हें पवित्र घाटी तुवा में बुलाया;	اِذْ نَادٰىهُ رَبُّهٗ بِالْوَادِ الْمُقَدَّسِ طُوًى

17	(कहा,) 'फ़िरौन क॰पास जाओ! नश्चिति रूप स॰वह हद स॰गुज़र चुका ह,ै	اِذْهَبْ اِلٰى فِرْعَوْنَ اِنَّه طَغٰى
18	और उसस॰कहो, 'क्या तुम्हारा मन (पथभ्रष्टता स)ै शुद्ध होन॰का ह,ै	فَقُلْ هَلْ لَّكَ اِلٰٓى اَنْ تَزَكّٰى
19	और म॰तुम्ह॰तुम्हार॰रेब क॰मार्ग पर ल॰जाऊँगा ताकि तुम उसस॰ डरो?'	وَاَهْدِيَكَ اِلٰى رَبِّكَ فَتَخْشٰى
20	फ़िर (मूसा) न॰उस॰एक बड़ा चमत्कार दिखाया।	فَاَرٰىهُ الْاٰيَةَ الْكُبْرٰى
21	लेकिन उसन॰(फ़िरौन न)ै झुठलाया और अवज्ञा की।	فَكَذَّبَ وَعَصٰى
22	फ़िर वह पलट गया और (मूसा का) विरोध करन॰की कोशिश करन॰लगा।	ثُمَّ اَدْبَرَ يَسْعٰى
23	फ़िर उसन॰(अपन॰सरदारों को) इकट्ठा किया और (अपन॰लोगों को) पुकारा।	فَحَشَرَ فَنَادٰى
24	(और) कहा, 'म॰ैही तुम्हारा सबस॰ऊँचा रब हूँ'	فَقَالَ اَنَا رَبُّكُمُ الْاَعْلٰى
25	तो अल्लाह न॰उस॰आख़िरत की यातना और दुनिया की सजा स॰ दंडित किया।	فَاَخَذَهُ اللّٰهُ نَكَالَ الْاٰخِرَةِ وَالْاُوْلٰى
26	नश्चिति रूप स,े इसम॰उन लोगों क॰लिए सबक ह॰जो (अल्लाह स)ै डरत॰हैं	اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَعِبْرَةً لِّمَنْ يَّخْشٰى
27	क्या तुम्हारी सृष्टि अधिक कठिन ह॰या उस आकाश की जिस॰ उसन॰बनाया?	ءَاَنْتُمْ اَشَدُّ خَلْقًا اَمِ السَّمَاۤءُ بَنٰىهَا
28	उसन॰उसकी संरचना को ऊँचा किया और उस॰पूर्ण किया,	رَفَعَ سَمْكَهَا فَسَوّٰىهَا
29	और उसकी रात को अंधेरी बनाया, और उसक॰दिन को उज़्ज़वल बनाया।	وَاَغْطَشَ لَيْلَهَا وَاَخْرَجَ ضُحٰىهَا
30	और इसक॰बाद धरती को फैलाया।	وَالْاَرْضَ بَعْدَ ذٰلِكَ دَحٰىهَا
31	उसस॰उसन॰जल क॰स्रोत निकाल,े और (वहाँ) वनस्पतियाँ उगाईं।	اَخْرَجَ مِنْهَا مَاۤءَهَا وَمَرْعٰىهَا
32	और पहाड़ों को उसन॰मजबूती स॰स्थापित किया।	وَالْجِبَالَ اَرْسٰىهَا
33	(यह सब) तुम्हार॰और तुम्हार॰पशुओं क॰लिए सुख-सुविधा क॰ लिए।	مَتَاعًا لَّكُمْ وَلِاَنْعَامِكُمْ
34	फ़िर जब बड़ी विपत्ति (क़यामत का दिन) आएगी,	فَاِذَا جَاۤءَتِ الطَّآمَّةُ الْكُبْرٰى
35	वह दिन जब इंसान को (अपन॰किए) याद आएंग,े	يَوْمَ يَتَذَكَّرُ الْاِنْسَانُ مَا سَعٰى

36	और नरक हर दखेन वाल के लिए सपष्ट रप से दखिाई दगेा।	وَبُرِّزَتِ الْجَحِيْمُ لِمَنْ يَّرٰى
37	तो जो व्यक्ति हद स गेज़रा,	فَاَمَّا مَنْ طَغٰى
38	और दनुयिा की ज़िंदगी को प्राथमकिता दी,	وَاٰثَرَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا
39	तो नशि्चति रप से, नरक उसका ठकिाना होगा।	فَاِنَّ الْجَحِيْمَ هِيَ الْمَأْوٰى
40	और जो लोग अपन रेब की महानता स डर और अपनी नफ़्स की इच्छाओं को रोका,	وَاَمَّا مَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّه وَنَهَى النَّفْسَ عَنِ الْهَوٰى
41	तो नशि्चति रप से, जन्नत उनका ठकिाना होगा।	فَاِنَّ الْجَنَّةَ هِيَ الْمَأْوٰى
42	व (काफरि) तमुस (मुहम्मद) क़यामत क बार म पछूत ह, 'यह कब होगा?'	يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ السَّاعَةِ اَيَّانَ مُرْسٰىهَا
43	तमुह (इसक समय) का उल्लेख करन की क्या आवश्यकता ह?	فِيْمَ اَنْتَ مِنْ ذِكْرٰىهَا
44	इसका अंत (समय का नरि्धारण) तमुहार रेब क पास ह।	اِلٰى رَبِّكَ مُنْتَهٰىهَا
45	तम (मुहम्मद) कवेल उस व्यक्ति क लिए चतेावनी दने वाल हो जो उसस (क़यामत स) डरता ह।	اِنَّمَآ اَنْتَ مُنْذِرُ مَنْ يَّخْشٰىهَا
46	जसि दनि व क़यामत को दखेग (उसक भयानक माहौल क कारण), उनह लगगेा जसै व (दनुयिा म) कवेल एक शाम या सबुह क लिए रक थे।	كَاَنَّهُمْ يَوْمَ يَرَوْنَهَا لَمْ يَلْبَثُوْٓا اِلَّا عَشِيَّةً اَوْ ضُحٰىهَا

छंदों की संख़्या	عَبَسَ	مكية
४२	अबासा - 80	मक्की

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अबासा (भौंह चढ़ान वाला)

1	वह (मुहम्मद) मुंह फरेकर पलट गया,	عَبَسَ وَتَوَلّٰٓى
2	क्योंकि एक अंधा व्यक्ति (अब्दुल्लाह बिन उम्मी मक्तूम) उसके पास आया था।	اَنْ جَاۤءَهُ الْاَعْمٰى
3	और क्या तुम्हें (मुहम्मद) पता है, शायद वह अपने आप को (पापों से) शुद्ध करना चाहता हो,	وَمَا يُدْرِيْكَ لَعَلَّهٗ يَزَّكّٰٓى
4	या वह (शिक्षा) प्राप्त करना चाहता हो, जो उसके लिए लाभकारी हो?	اَوْ يَذَّكَّرُ فَتَنْفَعَهُ الذِّكْرٰى
5	रहा वह व्यक्ति जो स्वयं को सरवसंपन्न मानता है (कुरैश के सरदार),	اَمَّا مَنِ اسْتَغْنٰى
6	तो तुम (मुहम्मद) उसका ध्यान रखते हो,	فَاَنْتَ لَهٗ تَصَدّٰى
7	हालांकि तुम पर कोई दोष नहीं अगर वह शुद्ध (ईमान) नहीं लाता।	وَمَا عَلَيْكَ اَلَّا يَزَّكّٰى
8	और रहा वह व्यक्ति जो तुम्हारे पास जल्दी से (शिक्षा प्राप्त करने) आया,	وَاَمَّا مَنْ جَاۤءَكَ يَسْعٰى
9	जबकि वह (अल्लाह से) डरता था,	وَهُوَ يَخْشٰى
10	तुम (मुहम्मद) ने उसे नजरअंदाज कर दिया।	فَاَنْتَ عَنْهُ تَلَهّٰى
11	हरगिज़ नहीं (ऐसा करो)! निश्चित रूप से, (अल्लाह की शिक्षाएँ) एक चेतावनी है,	كَلَّآ اِنَّهَا تَذْكِرَةٌ
12	तो जो कोई चाहे, वह निश्चित रूप से इस पर ध्यान देगा,	فَمَنْ شَاۤءَ ذَكَرَهٗ
13	(यह) उन किताबों में है जो (अल्लाह के पास) सम्मानित है,	فِيْ صُحُفٍ مُّكَرَّمَةٍ
14	जो ऊँची और पवित्र है,	مَّرْفُوْعَةٍ مُّطَهَّرَةٍ
15	दूतों (फरिश्तों) के हाथों में,	بِاَيْدِيْ سَفَرَةٍ
16	जो सम्मानित और नेक हैं	كِرَامٍۢ بَرَرَةٍ

17	हाय इंसान! वह कितना कृतघ्न है!	قُتِلَ الْاِنْسَانُ مَآ اَكْفَرَه
18	उस (अल्लाह) ने किस चीज़ से बनाया?	مِنْ اَيِّ شَيْءٍ خَلَقَه
19	एक बूंद वीर्य से, उसने उसे बनाया फिर उसका निर्धारण किया।	مِنْ نُّطْفَةٍ خَلَقَه فَقَدَّرَه
20	फिर उसका रास्ता आसान किया,	ثُمَّ السَّبِيْلَ يَسَّرَه
21	फिर उसे मृत्यु दी और उसे दफनाया,	ثُمَّ اَمَاتَه فَاَقْبَرَه
22	फिर जब वह चाहेगा, उसे पुनर्जनन करेगा।	ثُمَّ اِذَا شَاءَ اَنْشَرَه
23	हरगिज़ नहीं (ऐसा करो)! उस (इंसान) ने अभी तक वह नहीं किया जो (अल्लाह) ने उसे आदेश दिया था।	كَلَّا لَمَّا يَقْضِ مَآ اَمَرَه
24	तो इंसान को अपने भोजन पर ध्यान देना चाहिए।	فَلْيَنْظُرِ الْاِنْسَانُ اِلٰى طَعَامِه
25	हमने ही आकाश से प्रचुर मात्रा में पानी बरसाया,	اَنَّا صَبَبْنَا الْمَاءَ صَبًّا
26	फिर हमने धरती को अच्छी तरह से चीरा,	ثُمَّ شَقَقْنَا الْاَرْضَ شَقًّا
27	और वहाँ हमने अनाज उगाए,	فَاَنْۢبَتْنَا فِيْهَا حَبًّا
28	और अंगूर और सब्ज़ियाँ,	وَّعِنَبًا وَّقَضْبًا
29	और जैतून और खजूर के पेड़,	وَّزَيْتُوْنًا وَّنَخْلًا
30	और घने बाग-बगीचे,	وَّحَدَآئِقَ غُلْبًا
31	और फल और चारा,	وَفَاكِهَةً وَّاَبًّا
32	(यह सब) तुम्हारे और तुम्हारे पशुओं के लिए सुख-सुविधा के लिए।	مَتَاعًا لَّكُمْ وَلِاَنْعَامِكُمْ
33	फिर जब वह कानों को बहरे करने वाली आवाज़ (दूसरा नरसिंगा) आएगी,	فَاِذَا جَآءَتِ الصَّآخَّةُ
34	उस दिन इंसान अपने भाई से भागेगा,	يَوْمَ يَفِرُّ الْمَرْءُ مِنْ اَخِيْهِ
35	और अपनी माँ और अपने बाप से,	وَاُمِّه وَاَبِيْهِ
36	और अपनी पत्नी और अपने बच्चों से।	وَصَاحِبَتِه وَبَنِيْهِ
37	उस दिन उनमें से हर व्यक्ति के पास अपनी व्यस्तता होगी।	لِكُلِّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ يَوْمَئِذٍ شَاْنٌ يُّغْنِيْهِ

38	उस दिन कछ चहेर चमकत हेए होंग,	وُجُوْهٌ يَّوْمَىِٕذٍ مُّسْفِرَةٌ
39	हसँत और खशी स भर होंग,	ضَاحِكَةٌ مُّسْتَبْشِرَةٌ
40	और उस दिन कछ चहेर धूल स ढक होंग (मलिन),	وَوُجُوْهٌ يَّوْمَىِٕذٍ عَلَيْهَا غَبَرَةٌ
41	अधेर स ढक हेए (अपमान और कषट स गरसत)।	تَرْهَقُهَا قَتَرَةٌ
42	व ही काफिर और दराचारी लोग हौ	اُولٰٓئِكَ هُمُ الْكَفَرَةُ الْفَجَرَةُ

छदों की संख़्या	اَلتَّكْوِير	مكية
२९	अत-तकवरि - 81	मक्की

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अत-तकवरि (लपटेना)

1	जब सूरज लपटे लिया जाएगा,	اِذَا الشَّمْسُ كُوِّرَتْ
2	और जब तारे गिरि जाएंग,	وَاِذَا النُّجُوْمُ انْكَدَرَتْ
3	और जब पहाड़ नष्ट कर दिए जाएंग,	وَاِذَا الْجِبَالُ سُيِّرَتْ
4	और जब गर्भवती ऊँटनियों को छोड़ दिया जाएगा (लावारिस),	وَاِذَا الْعِشَارُ عُطِّلَتْ
5	और जब जंगली जानवरों को एकत्र किया जाएगा,	وَاِذَا الْوُحُوْشُ حُشِرَتْ
6	और जब समुद्रों को गर्म किया जाएगा,	وَاِذَا الْبِحَارُ سُجِّرَتْ
7	और जब आत्माओं को (शरीरों के साथ) मिला दिया जाएगा,	وَاِذَا النُّفُوْسُ زُوِّجَتْ
8	और जब जीवित दफनाई गई बालिकाओं से पूछा जाएगा,	وَاِذَا الْمَوْءٗدَةُ سُئِلَتْ
9	किस पाप के लिए उसे मारा गया?	بِاَيِّ ذَنْۢبٍ قُتِلَتْ
10	और जब कर्मों की किताब खोल दी जाएंगी,	وَاِذَا الصُّحُفُ نُشِرَتْ
11	और जब आकाश को हटा दिया जाएगा,	وَاِذَا السَّمَآءُ كُشِطَتْ
12	और जब जहन्नम की आग भड़का दी जाएगी,	وَاِذَا الْجَحِيْمُ سُعِّرَتْ
13	और जब जन्नत को नजदीक लाया जाएगा,	وَاِذَا الْجَنَّةُ اُزْلِفَتْ
14	हर आत्मा जान लेगी कि उसने क्या किया।	عَلِمَتْ نَفْسٌ مَّآ اَحْضَرَتْ
15	मैं सितारों की कसम खाता हूँ,	فَلَآ اُقْسِمُ بِالْخُنَّسِ
16	जो परिक्रमा करते हैं और डूब जाते हैं,	الْجَوَارِ الْكُنَّسِ
17	रात की कसम जब वह गहरा जाए,	وَالَّيْلِ اِذَا عَسْعَسَ

18	और सुबह की कसम जब फजर उभर,	وَالصُّبْحِ اِذَا تَنَفَّسَ
19	नशि्चति रूप स (अल-कुरआन) एक महान दूत (जबि्रील) द्वारा लाया गया अल्लाह का वचन ह,	اِنَّه لَقَوْلُ رَسُوْلٍ كَرِيْمٍ
20	जो शक्ति रखता ह और (अल्लाह) क सहिासन क मालकि क पास उच्च स्थान रखता ह,	ذِيْ قُوَّةٍ عِنْدَ ذِى الْعَرْشِ مَكِيْنٍ
21	वहा (फरशि्तो क आलम म) उसकी आज्ञा मानी जाती ह और उस पर भरोसा कयिा जाता ह।	مُّطَاعٍ ثَمَّ اَمِيْنٍ
22	और तुम्हारा साथी (मुहम्मद) पागल नहीं ह।	وَمَا صَاحِبُكُمْ بِمَجْنُوْنٍ
23	और नशि्चति रूप स, उसन (जबि्रील को) सपष्ट कषितिज पर दखेा ह।	وَلَقَدْ رَاٰهُ بِالْاُفُقِ الْمُبِيْنِ
24	और वह (मुहम्मद) गबै (अदृश्य) को बतान मे कंजूस नहीं ह।	وَمَا هُوَ عَلَى الْغَيْبِ بِضَنِيْنٍ
25	और (अल-कुरआन) शतैान क शापति शब्द नहीं ह,	وَمَا هُوَ بِقَوْلِ شَيْطٰنٍ رَّجِيْمٍ
26	तो तुम कहा जँा रह हो?	فَاَيْنَ تَذْهَبُوْنَ
27	(अल-कुरआन) समसत वशि्व क लिए एक चतेावनी ह,	اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعٰلَمِيْنَ
28	(यह) तुम म स उस व्यकति क लिए ह जो सीधा रासता अपनाना चाहता ह।	لِمَنْ شَاءَ مِنْكُمْ اَنْ يَّسْتَقِيْمَ
29	और तुम (उस रासत को) नहीं चुन सकत सविाय इसक कि अल्लाह, समसत वशि्व का रब, इस चाह।	وَمَا تَشَاءُوْنَ اِلَّآ اَنْ يَّشَاءَ اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ

छंदों की संख्या	اَلْإِنْفِطَار	مكية
१९	अल-इनफ़तार - 82	मक्की

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल-इनफ़तार (फटना)

1	जब आकाश फट जाएगा,	اِذَا السَّمَاءُ انْفَطَرَتْ
2	और जब तारे बिखिरकर गिरि जाएंग,	وَاِذَا الْكَوَاكِبُ انْتَثَرَتْ
3	और जब समद्र उमड़ पड़ेगे,	وَاِذَا الْبِحَارُ فُجِّرَتْ
4	और जब कबर उखाड़ दी जाएंगी,	وَاِذَا الْقُبُوْرُ بُعْثِرَتْ
5	(तब) हर आतमा जान लेगी कि उसने क्या किया और क्या छोड़ दिया।	عَلِمَتْ نَفْسٌ مَّا قَدَّمَتْ وَاَخَّرَتْ
6	ऐ इंसान! क्या चीज़ ने तमुहे तमुहार महान रब के प्रति अवज्ञा करने के लिए बहकाया,	يٰٓاَيُّهَا الْاِنْسَانُ مَا غَرَّكَ بِرَبِّكَ الْكَرِيْمِ
7	जिसने तमुह पैदा किया, फिर तमुहारी रचना को पूरण किया और तमुहार शरीर को संतुलित बनाया,	الَّذِيْ خَلَقَكَ فَسَوّٰىكَ فَعَدَلَكَ
8	जो भी रप वह चाहता, उसने तमुहार शरीर को संरचित किया।	فِيْٓ اَيِّ صُوْرَةٍ مَّا شَاۤءَ رَكَّبَكَ
9	हरगिज़ नहीं! बलकि तमु प्रतिफल के दिन को झठलाते हो।	كَلَّا بَلْ تُكَذِّبُوْنَ بِالدِّيْنِ
10	और निश्चित रप से तमुहार लिए (फरिश्ते) हैं जो (तमुहारे करमों की) निगिरानी करते हैं,	وَاِنَّ عَلَيْكُمْ لَحٰفِظِيْنَ
11	जो (अल्लाह के समक्ष) समानित हैं और (तमुहारे करमों का) लेखा-जोखा रखते हैं,	كِرَامًا كٰتِبِيْنَ
12	वे जानते हैं कि तमु क्या करते हो।	يَعْلَمُوْنَ مَا تَفْعَلُوْنَ
13	निश्चित रप से नेक लोग वास्तव में (स्वरग में) आनंद में होंगे,	اِنَّ الْاَبْرَارَ لَفِيْ نَعِيْمٍ
14	और निश्चित रप से दराचारी लोग वास्तव में नरक में होंगे।	وَّاِنَّ الْفُجَّارَ لَفِيْ جَحِيْمٍ
15	वे प्रतिफल के दिन उसमें प्रवेश करेंगे।	يَّصْلَوْنَهَا يَوْمَ الدِّيْنِ
16	और वे उस नरक से कभी बाहर नहीं निकल सकेंगे।	وَمَا هُمْ عَنْهَا بِغَاۤئِبِيْنَ

وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا يَوْمُ الدِّيْنِ	और क्या तमु जानत`े हो कि प्रतफिल का दनि क्या ह?ै	**17**
ثُمَّ مَآ اَدْرٰىكَ مَا يَوْمُ الدِّيْنِ	फरि स,े क्या तमु जानत`े हो कि प्रतफिल का दनि क्या ह?ै	**18**
يَوْمَ لَا تَمْلِكُ نَفْسٌ لِّنَفْسٍ شَيْـًٔا وَالْاَمْرُ يَوْمَىِٕذٍ لِّلّٰهِ	(वह दनि) जब कोई भी व्यक्त कि सी अन्य की सहायता करन` े म`ें पूरी तरह असमर्थ होगा। और उस दनि सारा अधकिार अल्लाह क`े हाथ म`ें होगा।	**19**

छंदों की संख्या	اَلْمُطَفِّفِينَ	مكية
३६	अल-Mutaffifin - 83	मक्की

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल-Mutaffifin (धोखबेाज)

1	उन लोगों के लिए हाय, जो धोखा दते हे (नाप-तौल म)!	وَيْلٌ لِّلْمُطَفِّفِيْنَ
2	(व) लोग जो जब दूसरों स नाप लते हे, तो पूरा मांगत हे,	الَّذِيْنَ اِذَا اكْتَالُوْا عَلَى النَّاسِ يَسْتَوْفُوْنَ
3	और जब व दूसरों के लिए नापत या तौलत हे, तो कम करत हे।	وَاِذَا كَالُوْهُمْ اَوْ وَّزَنُوْهُمْ يُخْسِرُوْنَ
4	क्या व नहीं सोचत कि निश्चति रूप स व पुनरुज्जनन कए जाएंग,	اَلَا يَظُنُّ اُولٰٓئِكَ اَنَّهُمْ مَّبْعُوْثُوْنَ
5	एक महान दनि पर,	لِيَوْمٍ عَظِيْمٍ
6	(वह दनि) जब सभी लोग वशि्व क स्वामी क सामन खड़े होंग।	يَّوْمَ يَقُوْمُ النَّاسُ لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ
7	हरगज़ि नही! नश्चिति रूप स दुराचारयिों का लखा-जोखा सज्जिीन म संगृहीत हे।	كَلَّآ اِنَّ كِتٰبَ الْفُجَّارِ لَفِيْ سِجِّيْنٍ
8	और क्या तमु जानत हो कि सज्जिीन क्या ह?	وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا سِجِّيْنٌ
9	(वह) एक कताब ह जसिम (करमों का) लखा-जोखा हे।	كِتٰبٌ مَّرْقُوْمٌ
10	उस दनि उन लोगों के लिए हाय, जो (सत्य को) झठुलात हे!	وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ
11	(व) लोग जो (प्रतफिल क दनि को) झठुलात हे।	الَّذِيْنَ يُكَذِّبُوْنَ بِيَوْمِ الدِّيْنِ
12	और कोई भी (प्रतफिल क दनि को) नहीं झठुलाता सवाय हर उस व्यक्ति के जो हद स गज़ुरता ह और पापी ह,	وَمَا يُكَذِّبُ بِهٖٓ اِلَّا كُلُّ مُعْتَدٍ اَثِيْمٍ
13	जो जब हमार आयत उस सनुाई जाती ह, तो कहता ह, 'य तो पुराने लोगों की कहानयिाँ हैं'	اِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِ اٰيٰتُنَا قَالَ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ
14	हरगज़ि नही! बल्कि उनके करमों न उनके दलिों को ढक लयिा हे।	كَلَّا بَلْ رَانَ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ
15	हरगज़ि नही! नश्चिति रूप स व उस दनि अपने रब को दखेने स वंचति रहेंगे।	كَلَّآ اِنَّهُمْ عَنْ رَّبِّهِمْ يَوْمَئِذٍ لَّمَحْجُوْبُوْنَ
16	फरि, नश्चिति रूप स वे नरक म प्रवेश करेंगे।	ثُمَّ اِنَّهُمْ لَصَالُوا الْجَحِيْمِ

17	फिर, उनसे कहा जाएगा, 'यही वह (यातना) है जिसे तुम झुठलाते थे।'	ثُمَّ يُقَالُ هٰذَا الَّذِيْ كُنْتُمْ بِهٖ تُكَذِّبُوْنَ
18	हरगिज़ नहीं! निश्चित रूप से नेकों के लोगों का लेखा-जोखा इल्लियीन में संगृहीत है।	كَلَّآ اِنَّ كِتٰبَ الْاَبْرَارِ لَفِيْ عِلِّيِّيْنَ
19	और क्या तुम जानते हो कि इल्लियीन क्या है?	وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا عِلِّيُّوْنَ
20	(वह) एक किताब है जिसमें (कर्मों का) लेखा-जोखा है,	كِتٰبٌ مَّرْقُوْمٌ
21	जिसे (अल्लाह के) निकट लाए गए (फरिश्ते) देखते हैं।	يَّشْهَدُهُ الْمُقَرَّبُوْنَ
22	निश्चित रूप से नेकों के लोग वास्तव में (स्वर्ग में) आनंद में होंगे,	اِنَّ الْاَبْرَارَ لَفِيْ نَعِيْمٍ
23	वे (ऊँचे) आसनों पर बैठकर दृश्य देखेंगे।	عَلَى الْاَرَآئِكِ يَنْظُرُوْنَ
24	तुम उनके चेहरों से आनंदमय जीवन की चमक देख सकते हो।	تَعْرِفُ فِيْ وُجُوْهِهِمْ نَضْرَةَ النَّعِيْمِ
25	उन्हें शुद्ध (गरै-नशीली) शराब दी जाएगी जो (स्थान पर) मुहरबंद है,	يُسْقَوْنَ مِنْ رَّحِيْقٍ مَّخْتُوْمٍ
26	जिसकी मुहर कस्तूरी की है और इसके लिए लोगों को प्रतिस्पर्धा करनी चाहिए।	خِتٰمُه مِسْكٌ وَفِيْ ذٰلِكَ فَلْيَتَنَافَسِ الْمُتَنٰفِسُوْنَ
27	और इसका मिश्रण तस्नीम से है,	وَمِزَاجُه مِنْ تَسْنِيْمٍ
28	(वह) एक स्रोत है जिससे (अल्लाह के) निकट लोग पीते हैं।	عَيْنًا يَّشْرَبُ بِهَا الْمُقَرَّبُوْنَ
29	निश्चित रूप से पापी लोग वे थे जो पहले विश्वासियों का मजाक उड़ाते थे।	اِنَّ الَّذِيْنَ اَجْرَمُوْا كَانُوْا مِنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يَضْحَكُوْنَ
30	और जब वे (विश्वासी) उनके सामने से गुज़रते थे, तो वे एक-दूसरे को आँख मारते थे,	وَاِذَا مَرُّوْا بِهِمْ يَتَغَامَزُوْنَ
31	और जब वे अपने लोगों के पास लौटते थे, तो खुशी-खुशी लौटते थे।	وَاِذَا انْقَلَبُوْٓا اِلٰٓى اَهْلِهِمُ انْقَلَبُوْا فَكِهِيْنَ
32	और जब वे (विश्वासियों को) देखते थे, तो कहते थे, 'निश्चित रूप से ये लोग भटके हुए हैं,	وَاِذَا رَاَوْهُمْ قَالُوْٓا اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ لَضَآلُّوْنَ
33	हालाँकि (पापी लोग) उन्हें (विश्वासियों का) रक्षक बनाकर नहीं भेजे गए थे।	وَمَآ اُرْسِلُوْا عَلَيْهِمْ حٰفِظِيْنَ
34	तो आज, विश्वासी लोग काफिरों का मजाक उड़ाएंगे,	فَالْيَوْمَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنَ الْكُفَّارِ يَضْحَكُوْنَ
35	वे (ऊँचे) आसनों पर बैठकर दृश्य देखेंगे।	عَلَى الْاَرَآئِكِ يَنْظُرُوْنَ

هَلْ ثُوِّبَ الْكُفَّارُ مَا كَانُوْا يَفْعَلُوْنَ	क्या काफिरों को उनके किए का बदला (सजा) नहीं दिया गया?	**36**

छंदों की संख्या	اَلْإِنْشِقَاق	مكية
२५	अल-इंशिकाक - 84	मक्की

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल-इंशिकाक (विभाजन)

1	जब आकाश फट जाएगा,	اِذَا السَّمَاءُ انْشَقَّتْ
2	और अपने रब की आज्ञा मानेगा, और उसे मानना ही चाहिए,	وَاَذِنَتْ لِرَبِّهَا وَحُقَّتْ
3	और जब ज़मीन समतल कर दी जाएगी,	وَاِذَا الْاَرْضُ مُدَّتْ
4	और उसने अपने अंदर जो कुछ है उसे उगल दिया और ख़ाली हो गई,	وَاَلْقَتْ مَا فِيْهَا وَتَخَلَّتْ
5	और अपने रब की आज्ञा मानेगी, और उसे मानना ही चाहिए,	وَاَذِنَتْ لِرَبِّهَا وَحُقَّتْ
6	ऐ इंसान! निश्चय ही तू अपने रब की ओर महेनत करता हुआ जा रहा है, तो तू उससे मिलेगा,	يٰٓاَيُّهَا الْاِنْسَانُ اِنَّكَ كَادِحٌ اِلٰى رَبِّكَ كَدْحًا فَمُلٰقِيْهِ
7	तो जिसका हिसाब उसकी दाहिनी ओर से दिया जाएगा,	فَاَمَّا مَنْ اُوْتِيَ كِتٰبَه بِيَمِيْنِه
8	उसका हिसाब आसान तरीके से लिया जाएगा,	فَسَوْفَ يُحَاسَبُ حِسَابًا يَّسِيْرًا
9	और वह ख़ुशी-ख़ुशी अपने परिवार (जो ईमान वाले हैं) के पास लौटेगा,	وَّيَنْقَلِبُ اِلٰٓى اَهْلِه مَسْرُوْرًا
10	और जिसका हिसाब उसकी पीठ के पीछे से दिया जाएगा,	وَاَمَّا مَنْ اُوْتِيَ كِتٰبَه وَرَاءَ ظَهْرِه
11	तो वह चिल्लाएगा, 'हाय मेरी तबाही!',	فَسَوْفَ يَدْعُوْا ثُبُوْرًا
12	और वह भड़कती हुई आग (जहन्नम) में दाख़िल होगा,	وَّيَصْلٰى سَعِيْرًا
13	निश्चय ही, वह पहले (दुनिया में) अपने परिवार (जो काफ़िर थे) के बीच ख़ुशहाल था,	اِنَّه كَانَ فِيْٓ اَهْلِه مَسْرُوْرًا
14	निश्चय ही, उसने सोचा कि वह (अपने रब के पास) कभी नहीं लौटेगा,	اِنَّه ظَنَّ اَنْ لَّنْ يَّحُوْرَ
15	ऐसा नहीं, निश्चय ही उसका रब उसे हमेशा देख रहा था,	بَلٰٓى اِنَّ رَبَّه كَانَ بِه بَصِيْرًا
16	तो मैं शपथ लेता हूँ उस लालिमा की जो सूर्यास्त के समय होती है,	فَلَآ اُقْسِمُ بِالشَّفَقِ

17	रात की और जो कछु उसन`ढेक लयिा,	وَالَّيْلِ وَمَا وَسَقَ
18	चादँ की जब वह पूरणमिा बनता ह,ै	وَالْقَمَرِ اِذَا اتَّسَقَ
19	नशि्चय ही, तमु्र एक सत़र स`ेदूसर`ेसत़र की ओर बढत़`ेजाओग` (जि़दंगी म),ें	لَتَرْكَبُنَّ طَبَقًا عَنْ طَبَقٍ
20	फरि व`ेईमान क्यो`ं नहीं`लात?े,	فَمَا لَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ
21	और जब उनक`ेसामन`ेक़ुरआन पढ़ा जाता ह,ै तो व`ेसजदा नहीं`करत,े	وَاِذَا قُرِئَ عَلَيْهِمُ الْقُرْاٰنُ لَا يَسْجُدُوْنَ
22	बलक़ि व`ेकाफरि लोग (उस)ेझठुलात`ेह,ैं	بَلِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يُكَذِّبُوْنَ
23	और अल्लाह अचछी तरह जानता ह`ैकि व`ेअपन`ेदलिो`ं म`ेक्या छपिात`ेह,ैं	وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا يُوْعُوْنَ
24	तो उनह`ैएक दरद़नाक अज़ाब की खबर सन्ुा द,े	فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ
25	सविाय उन लोगो`ं क`ेजो ईमान लाए और अचछ`ेकरम कएि, उनक`ेलएि ऐसा इनाम ह`ैजो कभी खतम नहीं`होगा,	اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ اَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُوْنٍ

छंदों की संख्या	اَلْبُرُوج	مكية
२२	अल-बरुज़ - 85	मक्की

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल-बरुज़ (नक्षत्र)

1	आकाश की सौगंध जिसमें तारों के समूह हैं,	وَالسَّمَاءِ ذَاتِ الْبُرُوْجِ
2	और उस वादा किए गए दिन की सौगंध,	وَالْيَوْمِ الْمَوْعُوْدِ
3	साक्षी देने वाले और साक्षी बनाए गए की सौगंध,	وَشَاهِدٍ وَّمَشْهُوْدٍ
4	वे लोग नष्ट हो गए जिन्होंने खाई बनाई (यानी यमन के नजरान के सरदार),	قُتِلَ اَصْحٰبُ الْاُخْدُوْدِ
5	जो आग से भरी थी और उसमें लकड़ियाँ थीं,	النَّارِ ذَاتِ الْوَقُوْدِ
6	जब वे उसके आसपास बैठे थे,	اِذْ هُمْ عَلَيْهَا قُعُوْدٌ
7	और वे देख रहे थे कि उन्होंने मोमिनों के साथ क्या किया,	وَّهُمْ عَلٰى مَا يَفْعَلُوْنَ بِالْمُؤْمِنِيْنَ شُهُوْدٌ
8	और उन्होंने मोमिनों को केवल इसलिए सताया क्योंकि वे अल्लाह पर ईमान लाए, जो बहुत शक्तिशाली और प्रशंसनीय है,	وَمَا نَقَمُوْا مِنْهُمْ اِلَّآ اَنْ يُّؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَمِيْدِ
9	जिसके पास आकाशों और ज़मीन का राज्य है और अल्लाह हर चीज़ का गवाह है,	الَّذِيْ لَه مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ
10	निश्चय ही, जिन लोगों ने मोमिन पुरुषों और महिलाओं को आज़माइश में डाला (उन्हें मारा, सताया) और फिर तौबा नहीं की, उनके लिए जहन्नम का अज़ाब है और उनके लिए जलाने वाला अज़ाब है,	اِنَّ الَّذِيْنَ فَتَنُوا الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ ثُمَّ لَمْ يَتُوْبُوْا فَلَهُمْ عَذَابُ جَهَنَّمَ وَلَهُمْ عَذَابُ الْحَرِيْقِ
11	निश्चय ही, जो लोग ईमान लाए और अच्छे कर्म किए, उनके लिए ऐसी जन्नतें हैं जिनके नीचे नदियाँ बहती हैं, यही सबसे बड़ी कामयाबी है,	اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ جَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْكَبِيْرُ
12	निश्चय ही, तेरे रब का अज़ाब बहुत सख़्त है,	اِنَّ بَطْشَ رَبِّكَ لَشَدِيْدٌ
13	निश्चय ही, वही है जो सृष्टि की शुरुआत करता है और उसे फिर से ज़िंदा करता है,	اِنَّه هُوَ يُبْدِئُ وَيُعِيْدُ

14	और वही बहत क्षमाशील, बहत दयालु है,	وَهُوَ الْغَفُوْرُ الْوَدُوْدُ
15	जो अर्श का मालिक है और बहत महिमावान है,	ذُو الْعَرْشِ الْمَجِيْدُ
16	वह जो चाहता है, करने में पूर्ण समर्थ है,	فَعَّالٌ لِّمَا يُرِيْدُ
17	क्या तुम्हें तक उन सेनाओं की ख़बर पहुँची जो (सत्य की) विरोधी थ,	هَلْ اَتٰىكَ حَدِيْثُ الْجُنُوْدِ
18	(यानी) फ़िरऔन और समूद?,	فِرْعَوْنَ وَثَمُوْدَ
19	निश्चय ही, काफ़िर लोग (हमेशा) झठलाते हैं,	بَلِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِيْ تَكْذِيْبٍ
20	जबकि अल्लाह उनके पीछे से घेरे लेता है (ताकि वे बच न सकें),	وَّاللّٰهُ مِنْ وَّرَآئِهِمْ مُّحِيْطٌ
21	बल्कि (जो झठलाया गया) वह बहत सम्मानित क़ुरआन है,	بَلْ هُوَ قُرْاٰنٌ مَّجِيْدٌ
22	जो (लौह महफ़ूज़ में) सुरक्षित स्थान पर है,	فِيْ لَوْحٍ مَّحْفُوْظٍ

छदों की संख़्या	اَلطَّارِق	مكية
१७	एट-तारकि - 86	मक्की

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

एट-तारकि (रात का तारा)

1	आकाश की सौगंध और उसकी जो रात मे आता है,	وَالسَّمَاءِ وَالطَّارِقِ
2	और तुझे क्या पता कि वह रात मे आने वाला क्या है?,	وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا الطَّارِقُ
3	(वह है) चमकता हुआ तारा,	النَّجْمُ الثَّاقِبُ
4	हर इंसान पर एक रक्षक (फ़रिश्ता) है,	اِنْ كُلُّ نَفْسٍ لَّمَّا عَلَيْهَا حَافِظٌ
5	तो इंसान को देखना चाहिए कि वह किस चीज़ से बनाया गया है,	فَلْيَنْظُرِ الْاِنْسَانُ مِمَّ خُلِقَ
6	वह एक उछलते हुए पानी (मनी) से बनाया गया,	خُلِقَ مِنْ مَّاءٍ دَافِقٍ
7	जो रीढ़ की हड्डी और सीने की हड्डियों के बीच से निकलता है,	يَّخْرُجُ مِنْ بَيْنِ الصُّلْبِ وَالتَّرَاىِٕبِ
8	निश्चय ही, अल्लाह उसे (मृत्यु के बाद) वापस लाने मे पूरी तरह समर्थ है,	اِنَّه عَلٰى رَجْعِهٖ لَقَادِرٌ
9	उस दिन जब सारी गुप्त बातें ज़ाहिर हो जाएँगी,	يَوْمَ تُبْلَى السَّرَاىِٕرُ
10	तो इंसान के पास न कोई ताकत होगी और न कोई सहायक,	فَمَا لَه مِنْ قُوَّةٍ وَّلَا نَاصِرٍ
11	आकाश की सौगंध जिसमे बारिश है,	وَالسَّمَاءِ ذَاتِ الرَّجْعِ
12	और ज़मीन की सौगंध जिसमे पौधे उगते है,	وَالْاَرْضِ ذَاتِ الصَّدْعِ
13	निश्चय ही, (क़ुरआन) सत्य और असत्य को अलग करने वाला फ़रमान है,	اِنَّه لَقَوْلٌ فَصْلٌ
14	और (क़ुरआन) कोई मज़ाक नहीं है,	وَّمَا هُوَ بِالْهَزْلِ
15	निश्चय ही, वे (काफ़िर) चाल चलते है,	اِنَّهُمْ يَكِيْدُوْنَ كَيْدًا
16	और मै भी एक पक्की चाल चलता हूँ,	وَّاَكِيْدُ كَيْدًا

فَمَهِّلِ الْكٰفِرِيْنَ اَمْهِلْهُمْ رُوَيْدًا	इसलिए उन काफ़िरों को कुछ समय की मोहलत द॓द॓, उनह॑ थोड़ा वक़्त द॓,	**17**

छंदों की संख्या	اَلْأَعْلَى	मक्की
१९	अल-ए' ला - 87	مكية

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल-ए' ला (सर्वोच्च)

1	अपने सबसे उच्च रब के नाम की तसबीह कर,	سَبِّحِ اسْمَ رَبِّكَ الْاَعْلَى
2	जिसने सृजन किया, फिर उसे पूर्ण किया,	الَّذِيْ خَلَقَ فَسَوّٰى
3	जिसने (हर चीज़ का) अंदाज़ा निर्धारित किया और मार्गदर्शन दिया,	وَالَّذِيْ قَدَّرَ فَهَدٰى
4	और जिसने हरी घास उगाई,	وَالَّذِيْٓ اَخْرَجَ الْمَرْعٰى
5	फिर उसे सूखा और काला कर दिया,	فَجَعَلَه غُثَاءً اَحْوٰى
6	हम तुझ पर (क़ुरआन) पढ़ेंगे ताकि तू भूले नहीं,	سَنُقْرِئُكَ فَلَا تَنْسٰٓى
7	सिवाय इसके कि अल्लाह चाहे। निश्चय ही, वह ज़ाहिर और छिपे हुए को जानता है,	اِلَّا مَا شَاءَ اللّٰهُ اِنَّه يَعْلَمُ الْجَهْرَ وَمَا يَخْفٰى
8	और हम तुझे आसानी (ख़ुशी) का रास्ता आसान कर देंगे,	وَنُيَسِّرُكَ لِلْيُسْرٰى
9	इसलिए नसीहत दे, क्योंकि नसीहत फ़ायदा देती है,	فَذَكِّرْ اِنْ نَّفَعَتِ الذِّكْرٰى
10	जो (अल्लाह से) डरता है, वह नसीहत ग्रहण करेगा,	سَيَذَّكَّرُ مَنْ يَّخْشٰى
11	और सबसे बदनसीब (काफ़िर) उससे दूर रहेगा,	وَيَتَجَنَّبُهَا الْاَشْقَى
12	(वही) जो सबसे बड़ी आग (जहन्नम) में दाख़िल होगा,	الَّذِيْ يَصْلَى النَّارَ الْكُبْرٰى
13	फिर वह वहाँ न मरेगा और न जीएगा,	ثُمَّ لَا يَمُوْتُ فِيْهَا وَلَا يَحْيٰى
14	निश्चय ही, वह कामयाब हुआ जिसने (ईमान लाकर) अपने आप को पवित्र किया,	قَدْ اَفْلَحَ مَنْ تَزَكّٰى
15	और अपने रब का नाम याद किया, फिर उसने नमाज़ पढ़ी,	وَذَكَرَ اسْمَ رَبِّه فَصَلّٰى
16	जबकि तुम (काफ़िर लोग) दुनिया की ज़िंदगी को चुनते हो,	بَلْ تُؤْثِرُوْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا
17	हालाँकि आख़िरत की ज़िंदगी बेहतर और स्थायी है,	وَالْاٰخِرَةُ خَيْرٌ وَّاَبْقٰى

18	निश्चय ही, यह बात पहले की किताबों में है,	اِنَّ هٰذَا لَفِى الصُّحُفِ الْاُوْلٰى
19	(यानी) इब्राहिम और मूसा की किताबों में,	صُحُفِ اِبْرٰهِيْمَ وَمُوْسٰى

छंदों की संख़्या	اَلْغَاشِيَة	مكية
२६	अल-ग़शियाह - 88	मक्की

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल-ग़शियाह (आच्छादति करन वाला)

1	क्या तुझ तक (क़ियामत) की ख़बर पहुँची?,	هَلْ اَتٰىكَ حَدِيْثُ الْغَاشِيَةِ
2	उस दिन कई चेहरे झुके हुए और अपमानित होंगे,	وُجُوْهٌ يَّوْمَىِٕذٍ خَاشِعَةٌ
3	(क्योंकी) उन्होंने मेहनत की और थक गए,	عَامِلَةٌ نَّاصِبَةٌ
4	वे बेहतु गरम आग (जहन्नम) में दाख़िल होंगे,	تَصْلٰى نَارًا حَامِيَةً
5	उन्हें बेहतु गरम चश्म का पानी पलाया जाएगा,	تُسْقٰى مِنْ عَيْنٍ اٰنِيَةٍ
6	उनके लिए काँटेदार पेड़ के सिवा कोई खाना नहीं होगा,	لَيْسَ لَهُمْ طَعَامٌ اِلَّا مِنْ ضَرِيْعٍ
7	जो न तो मोटा करता है और न भूख़ मिटाता है,	لَّا يُسْمِنُ وَلَا يُغْنِيْ مِنْ جُوْعٍ
8	उस दिन कई चेहरे चमकते हुए होंगे,	وُجُوْهٌ يَّوْمَىِٕذٍ نَّاعِمَةٌ
9	अपने प्रयासों से ख़ुश होंगे,	لِّسَعْيِهَا رَاضِيَةٌ
10	(वे) ऊँची जन्नत में होंगे,	فِيْ جَنَّةٍ عَالِيَةٍ
11	वहाँ कोई बेकार बात नहीं सुनाई देगी,	لَّا تَسْمَعُ فِيْهَا لَاغِيَةً
12	वहाँ बहती हुई नदियाँ होंगी,	فِيْهَا عَيْنٌ جَارِيَةٌ
13	वहाँ ऊँचे-ऊँचे तख़्त होंगे,	فِيْهَا سُرُرٌ مَّرْفُوْعَةٌ
14	और पास में रखे हुए जाम होंगे,	وَّاَكْوَابٌ مَّوْضُوْعَةٌ
15	और तकियों की कतारें होंगी,	وَّنَمَارِقُ مَصْفُوْفَةٌ
16	और बिछे हुए कालीन होंगे,	وَّزَرَابِيُّ مَبْثُوْثَةٌ
17	क्या वे ऊँटों को नहीं देखते कि वे कैसे बनाए गए?,	اَفَلَا يَنْظُرُوْنَ اِلَى الْاِبِلِ كَيْفَ خُلِقَتْ

18	और आकाश को, कि वह कैसे ऊँचा किया गया?,	وَاِلَى السَّمَاءِ كَيْفَ رُفِعَتْ
19	और पहाड़ों को, कि वे कैसे खड़े किए गए?,	وَاِلَى الْجِبَالِ كَيْفَ نُصِبَتْ
20	और ज़मीन को, कि वह कैसे बिछाई गई?,	وَاِلَى الْاَرْضِ كَيْفَ سُطِحَتْ
21	तो (ऐ मुहम्मद) नसीहत दो, क्योंकि तुम्हें नसीहत देने वाला हो,	فَذَكِّرْ اِنَّمَآ اَنْتَ مُذَكِّرٌ
22	तुम उन पर हाकिम नहीं हो,	لَّسْتَ عَلَيْهِمْ بِمُصَيْطِرٍ
23	सिवाय उस व्यक्ति के जो मुँह फेरे और काफ़िर हो,	اِلَّا مَنْ تَوَلّٰى وَكَفَرَ
24	तो अल्लाह उसे सबसे बड़े अज़ाब से सज़ा देगा,	فَيُعَذِّبُهُ اللّٰهُ الْعَذَابَ الْاَكْبَرَ
25	निश्चय ही, हमारी ओर उनकी वापसी है,	اِنَّ اِلَيْنَآ اِيَابَهُمْ
26	फिर निश्चय ही, उनका हिसाब करना हमारा काम है,	ثُمَّ اِنَّ عَلَيْنَا حِسَابَهُمْ

छंदों की संख्या	اَلْفَجْر	مكية
30	अल-फजर - 89	मक्की

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल-फजर (प्रभात)

1	फ़जर की सौगंध,	وَالْفَجْرِ
2	दस रातों की सौगंध,	وَلَيَالٍ عَشْرٍ
3	जोड़ और बेजोड़ की सौगंध,	وَّالشَّفْعِ وَالْوَتْرِ
4	रात की सौगंध जब वह गुज़र जाती है,	وَالَّيْلِ اِذَا يَسْرِ
5	क्या इसमें उन लोगों के लिए सौगंध है जो समझ रखते हैं?,	هَلْ فِيْ ذٰلِكَ قَسَمٌ لِّذِيْ حِجْرٍ
6	क्या तूने (मुहम्मद) नहीं देखा कि तेरे रब ने आद क़ौम के साथ क्या किया?,	اَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِعَادٍ
7	(यानी) इरम के बाशिंदों, जिनके पास ऊँचे-ऊँचे भवन थे,	اِرَمَ ذَاتِ الْعِمَادِ
8	जो दूसरी जगहों पर कभी नहीं बनाए गए,	الَّتِيْ لَمْ يُخْلَقْ مِثْلُهَا فِى الْبِلَادِ
9	और समूद क़ौम के साथ, जो घाटी में बड़े-बड़े पत्थर तराशते थे,	وَثَمُوْدَ الَّذِيْنَ جَابُوا الصَّخْرَ بِالْوَادِ
10	और फ़िरऔन के साथ, जिसके पास (बड़े-बड़े) खंभे थे,	وَفِرْعَوْنَ ذِى الْاَوْتَادِ
11	जिन्होंने देश में जुल्म किया,	الَّذِيْنَ طَغَوْا فِى الْبِلَادِ
12	और वहाँ बहुत सी तबाही मचाई,	فَاَكْثَرُوْا فِيْهَا الْفَسَادَ
13	इसलिए तेरे रब ने उन पर अज़ाब की चाबुक बरसाई,	فَصَبَّ عَلَيْهِمْ رَبُّكَ سَوْطَ عَذَابٍ
14	निश्चय ही, तेरा रब पूरी तरह निगरानी करता है,	اِنَّ رَبَّكَ لَبِالْمِرْصَادِ
15	तो इंसान के बारे में, जब उसका रब उसे आज़माता है, उसे इज़्ज़त और नेअमत देता है, तो वह कहता है, 'मेरे रब ने मुझे इज़्ज़त दी,'	فَاَمَّا الْاِنْسَانُ اِذَا مَا ابْتَلٰىهُ رَبُّه فَاَكْرَمَه وَنَعَّمَه فَيَقُوْلُ رَبِّيْٓ اَكْرَمَنِ
16	लेकिन जब वह उसे आज़माता है और उसकी रोज़ी तंग करता है, तो वह कहता है, 'मेरे रब ने मुझे अपमानित किया,'	وَاَمَّآ اِذَا مَا ابْتَلٰىهُ فَقَدَرَ عَلَيْهِ رِزْقَه فَيَقُوْلُ رَبِّيْٓ اَهَانَنِ

17	हरगज़ि नही! बलक़ि तमु यतीम की इज़्ज़त नहीं करत,	كَلَّا بَلْ لَّا تُكْرِمُوْنَ الْيَتِيْمَ
18	और एक-दूसर को ग़रीब को ख़ाना ख़लिान क लिए नहीं उकसात,	وَلَا تَحٰٓضُّوْنَ عَلٰى طَعَامِ الْمِسْكِيْنِ
19	और तमु वरिासत का माल (हलाल-हराम मलिाकर) खा जात हो,	وَتَأْكُلُوْنَ التُّرَاثَ اَكْلًا لَّمًّا
20	और तमु धन स अत्यधकि मोहब्बत करत हो,	وَّتُحِبُّوْنَ الْمَالَ حُبًّا جَمًّا
21	नहीं, जब ज़मीन को बार-बार हलिाकर चूर-चूर कर दयिा जाएगा,	كَلَّآ اِذَا دُكَّتِ الْاَرْضُ دَكًّا دَكًّا
22	और तरे रब आएगा और फ़रिश्त कतार म होंग,	وَّجَاءَ رَبُّكَ وَالْمَلَكُ صَفًّا صَفًّا
23	और उस दनि जहन्नम को लाया जाएगा, उस दनि इंसान को समझ आएगा, लकेनि उस समझ का क्या फ़ायदा?,	وَجِايْٓءَ يَوْمَىِٕذٍ بِجَهَنَّمَ يَوْمَىِٕذٍ يَّتَذَكَّرُ الْاِنْسَانُ وَاَنّٰى لَهُ الذِّكْرٰى
24	वह कहगेा, 'काश! मनै अपनी ज़िंदगी क लिए कछु भजेा होता,'	يَقُوْلُ يٰلَيْتَنِيْ قَدَّمْتُ لِحَيَاتِيْ
25	उस दनि कोई उस जसैा (अल्लाह) अज़ाब नहीं दगेा,	فَيَوْمَىِٕذٍ لَّا يُعَذِّبُ عَذَابَهٗٓ اَحَدٌ
26	और कोई उस जसैा (अल्लाह) बाँध नहीं सकगेा,	وَّلَا يُوْثِقُ وَثَاقَهٗٓ اَحَدٌ
27	ऐ शांत आत्मा!,	يٰٓاَيَّتُهَا النَّفْسُ الْمُطْمَىِٕنَّةُ
28	अपन रेब की ओर लौट आ, संतषु्ट और उसस संतषु्ट होकर,	ارْجِعِيْٓ اِلٰى رَبِّكِ رَاضِيَةً مَّرْضِيَّةً
29	तो मरे बंदो क समहू म शामलि हो जा,	فَادْخُلِيْ فِيْ عِبٰدِيْ
30	और मरी जनन्त म दाख़लि हो,	وَادْخُلِيْ جَنَّتِيْ

छंदों की संख्या	اَلْبَلَد	مكية
२०	अल-बलाद - 90	मक्की

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल-बलाद (नगर)

1	मैं इस शहर (मक्का) की सौगंध लेता हूँ,	لَآ اُقْسِمُ بِهٰذَا الْبَلَدِ
2	और तू (मुहम्मद) इस शहर में रहने वाला है,	وَاَنْتَ حِلٌّۢ بِهٰذَا الْبَلَدِ
3	और बाप और उसकी संतान की सौगंध,	وَوَالِدٍ وَّمَا وَلَدَ
4	निश्चय ही, हमने इंसान को मुश्क़िलों में बनाया,	لَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ فِيْ كَبَدٍ
5	क्या वह (इंसान) समझता है कि कोई उस पर क़ाबू नहीं पा सकता?,	اَيَحْسَبُ اَنْ لَّنْ يَّقْدِرَ عَلَيْهِ اَحَدٌ
6	वह कहता है, 'मैंने बहुत सारा धन ख़र्च किया,'	يَقُوْلُ اَهْلَكْتُ مَالًا لُّبَدًا
7	क्या वह समझता है कि कोई उसे देख नहीं रहा?,	اَيَحْسَبُ اَنْ لَّمْ يَرَه اَحَدٌ
8	क्या हमने उसके लिए दो आँखें नहीं बनाईं?,	اَلَمْ نَجْعَلْ لَّه عَيْنَيْنِ
9	और एक जीभ और दो होंठ?,	وَلِسَانًا وَّشَفَتَيْنِ
10	और हमने उसे दो रास्ते (नेकी और बदी) दिखाए?,	وَهَدَيْنٰهُ النَّجْدَيْنِ
11	लेकिन उसने वह रास्ता नहीं चुना जो कठिन और ऊँचा है?,	فَلَا اقْتَحَمَ الْعَقَبَةَ
12	और तुझे क्या पता कि वह कठिन और ऊँचा रास्ता क्या है?,	وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا الْعَقَبَةُ
13	(वह है) ग़ुलाम को आज़ाद करना,	فَكُّ رَقَبَةٍ
14	या भुखमरी के दिन खाना देना,	اَوْ اِطْعَامٌ فِيْ يَوْمٍ ذِيْ مَسْغَبَةٍ
15	(किसी) यतीम को जो रिश्तेदार हो,	يَّتِيْمًا ذَا مَقْرَبَةٍ
16	या किसी ग़रीब को जो बहुत तंगहाल हो,	اَوْ مِسْكِيْنًا ذَا مَتْرَبَةٍ

ثُمَّ كَانَ مِنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ وَتَوَاصَوْا بِالْمَرْحَمَةِ	फरि वह उन लोगों मे शामलि हो जो ईमान लाए और एक-दूसर को सबर की नसीहत करत है और एक-दूसर को रहम करन की नसीहत करत हे,	**17**
اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْمَيْمَنَةِ	व (ईमान वाल और नसीहत करन वाल) दाहनी तरफ क लोग ह,	**18**
وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِنَا هُمْ اَصْحٰبُ الْمَشْئَمَةِ	और जो लोग हमारी आयतों को झठुलात ह, व बाई तरफ क लोग ह,	**19**
عَلَيْهِمْ نَارٌ مُّؤْصَدَةٌ	व ऐसी आग मे होंग जो चारों तरफ स बंद ह,	**20**

छदों की संख़्या	اَلشَّمْس	مكية
१५	ऐश-शमेस - 91	मक़्की

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

ऐश-शमेस (सूरय)

1	सूरज की सौगंध और उसकी रौशनी की,	وَالشَّمْسِ وَضُحٰىهَا
2	चाँद की सौगंध जब वह उसके पीछे चलता है,	وَالْقَمَرِ اِذَا تَلٰىهَا
3	दिन की सौगंध जब वह (सूरज की रौशनी को) प्रकट करता है,	وَالنَّهَارِ اِذَا جَلّٰىهَا
4	रात की सौगंध जब वह (सूरज को) ढक लेती है,	وَالَّيْلِ اِذَا يَغْشٰىهَا
5	आकाश की सौगंध और उसकी रचना की,	وَالسَّمَاءِ وَمَا بَنٰىهَا
6	धरती की सौगंध और उसकी विस्तार की,	وَالْاَرْضِ وَمَا طَحٰىهَا
7	नफ़्स (आत्मा) की सौगंध और उसकी संरचना की,	وَنَفْسٍ وَّمَا سَوّٰىهَا
8	जिसने उसे उसकी बुराई और नेकी की प्रेरणा दी,	فَاَلْهَمَهَا فُجُوْرَهَا وَتَقْوٰىهَا
9	निश्चय ही, वह सफल हुआ जिसने उसे (नफ़्स को) पवित्र किया,	قَدْ اَفْلَحَ مَنْ زَكّٰىهَا
10	और वह नाकाम रहा जिसने उसे दूषित किया,	وَقَدْ خَابَ مَنْ دَسّٰىهَا
11	(क़ौम) समूद ने अपनी सरकशी में (सत्य को) झुठलाया,	كَذَّبَتْ ثَمُوْدُ بِطَغْوٰىهَآ
12	जब उनमें सबसे बदनसीब व्यक्ति उठा,	اِذِ انْۢبَعَثَ اَشْقٰىهَا
13	तो अल्लाह के रसूल ने उनसे कहा, 'अल्लाह की ऊँटनी और उसके पानी पीने (के हक) को (मानो),'	فَقَالَ لَهُمْ رَسُوْلُ اللّٰهِ نَاقَةَ اللّٰهِ وَسُقْيٰهَا
14	लेकिन उन्होंने उसे झुठलाया और उस (ऊँटनी) को मार डाला, तो उनके रब ने उनके गुनाहों की वजह से उन पर अज़ाब भेजा और उन्हें बराबर कर दिया,	فَكَذَّبُوْهُ فَعَقَرُوْهَا فَدَمْدَمَ عَلَيْهِمْ رَبُّهُمْ بِذَنْۢبِهِمْ فَسَوّٰىهَا
15	और वह (अल्लाह) इसके (अज़ाब के) परिणाम से नहीं डरता,	وَلَا يَخَافُ عُقْبٰىهَا

छंदों की संख्या	اَلَّيْل	مكية
२१	अल-layl - 92	मक्की

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल-layl (रात)

1	रात की सौगंध जब वह (दिन के उजाले को) ढक लेती है,	وَالَّيْلِ اِذَا يَغْشٰى
2	दिन की सौगंध जब वह पूरी तरह चमक उठता है,	وَالنَّهَارِ اِذَا تَجَلّٰى
3	पुरुष और स्त्री की सृष्टि की सौगंध,	وَمَا خَلَقَ الذَّكَرَ وَالْاُنْثٰى
4	निश्चय ही, तुम्हारे प्रयास विभिन्न प्रकार के हैं,	اِنَّ سَعْيَكُمْ لَشَتّٰى
5	तो जो कोई (अल्लाह के रास्ते में) देता है और डरता है,	فَاَمَّا مَنْ اَعْطٰى وَاتَّقٰى
6	और सबसे अच्छे (जन्नत के) इनाम को सत्य मानता है,	وَصَدَّقَ بِالْحُسْنٰى
7	तो हम उसके लिए आसानी (ख़ुशी) का रास्ता सरल कर देंगे,	فَسَنُيَسِّرُه لِلْيُسْرٰى
8	और जो कोई कंजूसी करता है और ख़ुद को आत्मनिर्भर समझता है,	وَاَمَّا مَنْ بَخِلَ وَاسْتَغْنٰى
9	और सबसे अच्छे (इनाम) को झुठलाता है,	وَكَذَّبَ بِالْحُسْنٰى
10	तो हम उसके लिए कठिनाई (दुख़) का रास्ता सरल कर देंगे,	فَسَنُيَسِّرُه لِلْعُسْرٰى
11	और उसका धन उसके लिए लाभकारी नहीं होगा जब वह नष्ट हो जाएगा,	وَمَا يُغْنِيْ عَنْهُ مَالُه اِذَا تَرَدّٰى
12	निश्चय ही, हम ही हिदायत देने वाले हैं,	اِنَّ عَلَيْنَا لَلْهُدٰى
13	और निश्चय ही, हमारे पास ही आख़िरत और दुनिया है,	وَاِنَّ لَنَا لَلْاٰخِرَةَ وَالْاُوْلٰى
14	तो मैं तुम्हें उस आग से डराता हूँ जो भड़क रही है,	فَاَنْذَرْتُكُمْ نَارًا تَلَظّٰى
15	जिसमें केवल सबसे बदनसीब व्यक्ति प्रवेश करेगा,	لَا يَصْلٰىهَآ اِلَّا الْاَشْقَى
16	जो (सत्य को) झुठलाता है और (ईमान से) मुंह मोड़ता है,	الَّذِيْ كَذَّبَ وَتَوَلّٰى
17	और उस (आग) से वह व्यक्ति बचाया जाएगा जो सबसे अधिक डरने वाला है,	وَسَيُجَنَّبُهَا الْاَتْقَى

18	जो अपने धन को (अल्लाह के रास्ते में) खर्च करता है ताकि (अपने आप को) पवित्र करे,	الَّذِيْ يُؤْتِيْ مَالَه يَتَزَكّٰى
19	और किसी ने भी उस को कोई उपकार नहीं किया जिसका बदला देना हो,	وَمَا لِاَحَدٍ عِنْدَه مِنْ نِّعْمَةٍ تُجْزٰىٓ
20	बल्कि (वह देता है) केवल अपने सबसे उच्च रब की प्रसन्नता की तलाश में,	اِلَّا ابْتِغَاءَ وَجْهِ رَبِّهِ الْاَعْلٰى
21	और निश्चय ही, वह जल्द ही पूरी तरह संतुष्ट हो जाएगा,	وَلَسَوْفَ يَرْضٰى

छंदों की संख़्या	اَلضُّحٰى	مكية
११	वज़्आपन-दह्आ - 93	मक्की

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

वज़्आपन-दह्आ (सुबह)

1	दह्आ (सुबह के समय जब सूरज थोड़ा ऊपर चढ़ता है) की सौगंध,	وَالضُّحٰى
2	और रात की सौगंध जब वह शांत हो जाती है,	وَالَّيْلِ اِذَا سَجٰى
3	तेरे रब ने तुझे (मुहम्मद) न छोड़ा और न ही तुझसे नफरत की,	مَا وَدَّعَكَ رَبُّكَ وَمَا قَلٰى
4	और निश्चय ही, जो बाद में है वह तेरे लिए पहले से बेहतर है,	وَلَلْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لَّكَ مِنَ الْاُوْلٰى
5	और निश्चय ही, तेरा रब तुझे जल्द ही इतना देगा कि तू संतुष्ट हो जाएगा,	وَلَسَوْفَ يُعْطِيْكَ رَبُّكَ فَتَرْضٰى
6	क्या उसने तुझे यतीम नहीं पाया, फिर उसने तुझे आश्रय दिया?,	اَلَمْ يَجِدْكَ يَتِيْمًا فَاٰوٰى
7	और उसने तुझे भटका हुआ नहीं पाया, फिर उसने तुझे हिदायत दी?,	وَوَجَدَكَ ضَآلًّا فَهَدٰى
8	और उसने तुझे तंगदस्त नहीं पाया, फिर उसने तुझे परयाप्ती दी?,	وَوَجَدَكَ عَآئِلًا فَاَغْنٰى
9	तो यतीम के प्रति तू ज़ुल्म न कर,	فَاَمَّا الْيَتِيْمَ فَلَا تَقْهَرْ
10	और मांगने वाले को तू न डांट,	وَاَمَّا السَّآئِلَ فَلَا تَنْهَرْ
11	और अपने रब की नेमतों को (शुक्र के साथ) ज़ाहिर कर,	وَاَمَّا بِنِعْمَةِ رَبِّكَ فَحَدِّثْ

छंदों की संख़्या	اَلشَّرْح	مكية
८	ऐश-Sharh - 94	मक्की

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

ऐश-Sharh (वसि़्तार)

1	क़्या हमन तेरे (मुहम्मद) सीन को चौड़ा नहीं कयि?,	اَلَمْ نَشْرَحْ لَكَ صَدْرَكَ
2	और हमन तुझस तेरा बोझ उतार दयि,	وَوَضَعْنَا عَنْكَ وِزْرَكَ
3	जो तेरी पीठ पर भारी था,	الَّذِيْٓ اَنْقَضَ ظَهْرَكَ
4	और हमन तेरा नाम बुलंद कयि,	وَرَفَعْنَا لَكَ ذِكْرَكَ
5	नशि़्चय ही, हर कठनिाई क साथ आसानी ह,	فَاِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا
6	नशि़्चय ही, हर कठनिाई क साथ आसानी ह,	اِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا
7	तो जब तू (किसी काम स) फारग़ि हो, तो (दूसर काम म) महेनत कर,	فَاِذَا فَرَغْتَ فَانْصَبْ
8	और अपन रेब की ओर ही रुझान रख,	وَاِلٰى رَبِّكَ فَارْغَبْ

छदों की संख़्या	اَلتِّين	مكية
८	पर टनि - 95	मक़्की

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पर टनि (अंजीर)

1	अंजीर और ज़ैतून की सौगंध,	وَالتِّيْنِ وَالزَّيْتُوْنِ
2	सनिाई पहाड़ की सौगंध,	وَطُوْرِ سِيْنِيْنَ
3	और इस सुरक्षति शहर (मक़्का) की सौगंध,	وَهٰذَا الْبَلَدِ الْاَمِيْنِ
4	नश्चिय ही, हमने इंसान को सबसे अच्छे रूप में बनाया,	لَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ فِيْٓ اَحْسَنِ تَقْوِيْمٍ
5	फरि हमने उसे सबसे नचिले स्थान पर लौटा दयिा,	ثُمَّ رَدَدْنٰهُ اَسْفَلَ سٰفِلِيْنَ
6	सवािय उन लोगों के जो ईमान लाए और अच्छे करम कएि; उनके लएि ऐसा इनाम है जो कभी खत्म नहीं होगा,	اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَلَهُمْ اَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُوْنٍ
7	फरि इन (स्पष्ट तथ्यों) के बाद, क्या चीज़ उन्हें (आख़रित की) दनि को झठुलाने के लएि उकसाती है?,	فَمَا يُكَذِّبُكَ بَعْدُ بِالدِّيْنِ
8	क्या अल्लाह सबसे अधकि न्यायी हाकमि नहीं है?,	اَلَيْسَ اللّٰهُ بِاَحْكَمِ الْحٰكِمِيْنَ

छंदों की संख्या	اَلْعَلَق	مكية
١٩	अल-'Alaq - 96	मक्की

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल-'Alaq (रक़्त का थक्क़ा)

1	अपने रेब के नाम से पढ़, जिसने सृज़न किया,	اِقْرَأْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِيْ خَلَقَ
2	उसने इंसान को ख़ून के थक्क़े से बनाया,	خَلَقَ الْاِنْسَانَ مِنْ عَلَقٍ
3	पढ़, और तेरा रब सबसे उदार है,	اِقْرَأْ وَرَبُّكَ الْاَكْرَمُ
4	जिसने क़लम के द्वारा (इंसान को) सिखाया,	الَّذِيْ عَلَّمَ بِالْقَلَمِ
5	उसने इंसान को वह सिखाया जो वह नहीं जानता था,	عَلَّمَ الْاِنْسَانَ مَا لَمْ يَعْلَمْ
6	नहीं; निश्चय ही इंसान हद से आगे बढ़ जाता है,	كَلَّآ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَيَطْغٰٓى
7	जब वह ख़ुद को आत्मनिर्भर देखता है,	اَنْ رَّاٰهُ اسْتَغْنٰى
8	निश्चय ही, तेरे रेब की ओर ही वापसी है,	اِنَّ اِلٰى رَبِّكَ الرُّجْعٰى
9	क्या ख़याल है उस व्यक्ति के बारे में जो रोकता है,	اَرَاَيْتَ الَّذِيْ يَنْهٰى
10	एक ब[?][?][?] को जब वह नमाज़ पढ़ता है,	عَبْدًا اِذَا صَلّٰى
11	क्या ख़याल है अगर वह (जो नमाज़ पढ़ता है) हिदायत पर हो,	اَرَاَيْتَ اِنْ كَانَ عَلَى الْهُدٰٓى
12	या वह (अल्लाह से) डरने का आदेश देता हो?,	اَوْ اَمَرَ بِالتَّقْوٰى
13	क्या ख़याल है अगर वह (जो रोकता है) झुठलाए और मुँह फेरे?,	اَرَاَيْتَ اِنْ كَذَّبَ وَتَوَلّٰى
14	क्या वह नहीं जानता कि निश्चय ही अल्लाह देख रहा है?,	اَلَمْ يَعْلَمْ بِاَنَّ اللّٰهَ يَرٰى
15	नहीं, अगर वह (ऐसा करना) नहीं रोकेगा, तो हम उसकी चोटी पकड़कर (नरक में) खींच लेंगे,	كَلَّا لَئِنْ لَّمْ يَنْتَهِ لَنَسْفَعًا بِالنَّاصِيَةِ
16	(वही) चोटी जो झुठलाने वाले और अवज्ञाकारी की है,	نَاصِيَةٍ كَاذِبَةٍ خَاطِئَةٍ
17	तो उसे अपने साथियों को बुला ले (बचाने के लिए),	فَلْيَدْعُ نَادِيَهٗ

سَنَدْعُ الزَّبَانِيَةَ	हम ज़बानिया (पापियों को सजा दने॓वाल॓ फरशि॒तो) को बुलाएंग,	**18**
كَلَّا لَا تُطِعْهُ وَاسْجُدْ وَاقْتَرِبْ	नहीं, तमु उसकी बात न मानो; और सजदा करो और (अल॒लाह क॓) करीब आओ,	**19**

छंदों की संख्या	اَلْقَدْر	مكية
५	अल-कादर - 97	मक्की

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल-कादर (महिमा की रात)

1	निश्चय ही, हमने इसे (क़ुरआन) क़द्र की रात में उतारा,	اِنَّآ اَنْزَلْنٰهُ فِيْ لَيْلَةِ الْقَدْرِ
2	और तुम्हें क्या पता कि क़द्र की रात क्या है?,	وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا لَيْلَةُ الْقَدْرِ
3	क़द्र की रात हज़ार महीनों से बेहतर है,	لَيْلَةُ الْقَدْرِ خَيْرٌ مِّنْ اَلْفِ شَهْرٍ
4	उसमें फ़रिश्ते और रूह (जिब्रील) अपने रब की अनुमति से हर काम के लिए उतरते हैं,	تَنَزَّلُ الْمَلٰٓئِكَةُ وَالرُّوْحُ فِيْهَا بِاِذْنِ رَبِّهِمْ مِنْ كُلِّ اَمْرٍ
5	वह रात सुबह Tradeshows:	سَلٰمٌ هِيَ حَتّٰى مَطْلَعِ الْفَجْرِ

छदों की संख्या	اَلْبَيِّنَة	मदनी
८	अल-Bayyinah - 98	मदनी

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल-Bayyinah (सपष्ट परमाण)

1	कतिाबवाले और मशुरिकों म से जो काफरि ह, व (अपन धरम को) तब तक नहीं छोड़गे जब तक उनक पास सपष्ट परमाण न आए,	لَمْ يَكُنِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ وَالْمُشْرِكِيْنَ مُنْفَكِّيْنَ حَتّٰى تَأْتِيَهُمُ الْبَيِّنَةُ
2	(अरथात) अलल्लाह (महुम्मद) का एक रसलू जो पवतिर पष्ठों (कुरान) का पाठ करता ह,	رَسُوْلٌ مِّنَ اللّٰهِ يَتْلُوْا صُحُفًا مُّطَهَّرَةً
3	जनिम सत्य और सीधी बात ह,	فِيْهَا كُتُبٌ قَيِّمَةٌ
4	और कतिाबवालों म फट तब तक नहीं पड़ी, जब तक उनक पास सपष्ट परमाण नहीं आया,	وَمَا تَفَرَّقَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ اِلَّا مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَتْهُمُ الْبَيِّنَةُ
5	जबकि उनह केवल यह आदशे दयिा गया था कि व अलल्लाह की इबादत कर, केवल उसी क परति निषठा रखत हुए, और नमाज़ कायम कर और ज़कात द, और यही सचचा धरम ह,	وَمَآ اُمِرُوْٓا اِلَّا لِيَعْبُدُوا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ حُنَفَاءَ وَيُقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوا الزَّكٰوةَ وَذٰلِكَ دِيْنُ الْقَيِّمَةِ
6	नशि्चय ही, कतिाबवाले और मशुरिकों म से जो काफरि ह, व जहन्नम की आग म होंग; व उसम हमशेा रहगे। व सबस बरु पराणी ह,	اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ وَالْمُشْرِكِيْنَ فِيْ نَارِ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا اُولٰٓئِكَ هُمْ شَرُّ الْبَرِيَّةِ
7	नशि्चय ही, जो लोग ईमान लाए और अचछे करम कए, व सबस अचछे पराणी ह,	اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ اُولٰٓئِكَ هُمْ خَيْرُ الْبَرِيَّةِ
8	उनका बदला उनक रब क पास अदन की जनन्त ह, जसिक नीच नहर बहती ह; व उसम हमशेा रहगे। अलल्लाह उनस परसन्न ह और व उसस परसन्न हो यह उस वयकति क लए ह जो अपन रब स डरता ह,	جَزَآؤُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنّٰتُ عَدْنٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ ذٰلِكَ لِمَنْ خَشِيَ رَبَّه

छंदों की संख्या	اَلزَّلْزَلَة	مدنية
८	अज़-ज़लज़लाह - 99	मदनी

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अज़-ज़लज़लाह (भूकंप)

1	जब धरती को भयंकर गति से हिलाया जाएगा,	اِذَا زُلْزِلَتِ الْاَرْضُ زِلْزَالَهَا
2	और धरती ने अपने भारी बोझों को बाहर निकाल दिया,	وَاَخْرَجَتِ الْاَرْضُ اَثْقَالَهَا
3	और मनुष्य पूछेगा, 'इस धरती को क्या हो गया?',	وَقَالَ الْاِنْسَانُ مَا لَهَا
4	उस दिन धरती अपनी ख़बर सुनाएगी,	يَوْمَئِذٍ تُحَدِّثُ اَخْبَارَهَا
5	क्योंकि निश्चय ही तुम्हारा रब ने उसे ऐसा आदेश दिया है,	بِاَنَّ رَبَّكَ اَوْحٰى لَهَا
6	उस दिन लोग अपनी कब्रों से समूहों में निकलेंगे, ताकि उन्हें उनके सभी कर्मों का बदला दिखाया जाए,	يَوْمَئِذٍ يَّصْدُرُ النَّاسُ اَشْتَاتًا لِّيُرَوْا اَعْمَالَهُمْ
7	तो जो कोई ज़र्रा बराबर भी भलाई करेगा, वह उसका बदला देखेगा,	فَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَّرَه
8	और जो कोई ज़र्रा बराबर भी बुराई करेगा, वह उसका बदला देखेगा,	وَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَّرَه

छंदों की संख्या	اَلْعَادِيَات	مكية
११	अल-'adiyat - 100	मक्की

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल-'adiyat (दौड़ने वाले घोड़े)

1	उन घोड़ों की सौगंध जो तेज़ी से दौड़ते हुए हांफते हैं,	وَالْعٰدِيٰتِ ضَبْحًا
2	और उन घोड़ों की जो (अपने खुरों के प्रहार से) चिंगारियां उड़ाते हैं,	فَالْمُوْرِيٰتِ قَدْحًا
3	और उन घोड़ों की जो सुबह के समय अचानक हमला करते हैं,	فَالْمُغِيْرٰتِ صُبْحًا
4	जो धूल उड़ाते हैं,	فَاَثَرْنَ بِهٖ نَقْعًا
5	फिर शत्रुओं के समूह के बीच में घुस जाते हैं,	فَوَسَطْنَ بِهٖ جَمْعًا
6	निश्चय ही, मनुष्य अपने रब के प्रति बहुत अकृतज्ञ है,	اِنَّ الْاِنْسَانَ لِرَبِّهٖ لَكَنُوْدٌ
7	और निश्चय ही, वह (मनुष्य) अपनी अकृतज्ञता को स्वयं देखता (स्वीकार करता) है,	وَاِنَّهٗ عَلٰى ذٰلِكَ لَشَهِيْدٌ
8	और निश्चय ही, वह धन के प्रति अत्यधिक प्रेम रखता है,	وَاِنَّهٗ لِحُبِّ الْخَيْرِ لَشَدِيْدٌ
9	क्या वह नहीं जानता कि जब कब्रों में जो कुछ है, उसे निकाला जाएगा,	اَفَلَا يَعْلَمُ اِذَا بُعْثِرَ مَا فِى الْقُبُوْرِ
10	और जो कुछ दिलों में छिपा है, उसे प्रकट किया जाएगा?,	وَحُصِّلَ مَا فِى الصُّدُوْرِ
11	निश्चय ही, उस दिन उनका रब उनकी स्थिति के बारे में पूर्ण रूप से जानने वाला होगा,	اِنَّ رَبَّهُمْ بِهِمْ يَوْمَئِذٍ لَّخَبِيْرٌ

छंदों की संख़्या	اَلْقَارِعَة	مكية
११	अल-Qari'ah - 101	मक्की

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल-Qari'ah (आपदा)

1	क़ियामत का दिन,	اَلْقَارِعَةُ
2	क़ियामत का दिन क्या है?,	مَا الْقَارِعَةُ
3	और तुम्हें क्या पता कि क़ियामत का दिन क्या है?,	وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا الْقَارِعَةُ
4	उस दिन लोग उड़ते हुए टिड्डियों की तरह होंगे,	يَوْمَ يَكُوْنُ النَّاسُ كَالْفَرَاشِ الْمَبْثُوْثِ
5	और पहाड़ बिखरे हुए ऊन की तरह होंगे,	وَتَكُوْنُ الْجِبَالُ كَالْعِهْنِ الْمَنْفُوْشِ
6	तो जिसके अच्छे कर्मों का वज़न भारी होगा,	فَاَمَّا مَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِينُه
7	वह सुख़द जीवन में होगा,	فَهُوَ فِيْ عِيْشَةٍ رَّاضِيَةٍ
8	और जिसके अच्छे कर्मों का वज़न हल्का होगा,	وَاَمَّا مَنْ خَفَّتْ مَوَازِيْنُه
9	उसका ठिकाना हावियां नरक होगा,	فَاُمُّه هَاوِيَةٌ
10	और तुम्हें क्या पता कि हावियां क्या है?,	وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا هِيَهْ
11	(वह) बहुत गर्म आग है,	نَارٌ حَامِيَةٌ

छदों की संख़्या	اَلتَّكَاثُر	مكية
८	अत-तकाथरु - 102	मक्की

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अत-तकाथरु (पृ़तसिपरधा)

1	समय की सौगध,	اَلْهٰكُمُ التَّكَاثُرُ
2	नशि़चय ही, इंसान घाट मे है,	حَتّٰى زُرْتُمُ الْمَقَابِرَ
3	सविाय उन लोगों क जो ईमान लाए और नके कार्य कए तथा सत्य क लए एक-दूसर को नसीहत दी और धरै्य क लए एक-दूसर को नसीहत दी।	كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُوْنَ
4	फरि कदापि नही! तमु्ह जलद्द ही पता चलगेा।	ثُمَّ كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُوْنَ
5	कदापि नही! यदि तमु नशि़चति रूप स जानत,	كَلَّا لَوْ تَعْلَمُوْنَ عِلْمَ الْيَقِيْنِ
6	तो तमु नशि़चय ही जहन्नम की आग दखेत,	لَتَرَوُنَّ الْجَحِيْمَ
7	फरि तमु नशि़चय ही उस अपनी आँखों स देखोग,	ثُمَّ لَتَرَوُنَّهَا عَيْنَ الْيَقِيْنِ
8	फरि उस दनि तमु्स उन नअेमतों (दनुयिावी वभैव) क बार मे अवशय् पछूा जाएगा।	ثُمَّ لَتُسْـَٔلُنَّ يَوْمَئِذٍ عَنِ النَّعِيْمِ

छंदों की संख़्या	اَلْعَصْر	مكية
३	अल-असर - 103	मक्की

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल-असर (समय)

1	नमाज़ेअसर की क़सम	وَالْعَصْرِ
2	बशेक इन्सान घाटमेंहै	اِنَّ الْاِنْسَانَ لَفِيْ خُسْرٍ
3	मगर जो लोग ईमान लाए, और अच्छेकाम करतेरहेऔर आपस मेंहक़ का हुक़्म और सबर की वसीयत करतेरहे	اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَتَوَاصَوْا بِالْحَقِّ وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ

छंदों की संख्या	اَلْهُمَزَة	مكية
९	अल Humazah - 104	मक्की

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल Humazah (नदिक)

1	हर उस व्यक्ति के लिए हाय, जो चुगली करता और निंदा करता है,	وَيْلٌ لِّكُلِّ هُمَزَةٍ لُّمَزَةٍ
2	जो धन इकट्ठा करता और उसे गिनता रहता है,	الَّذِيْ جَمَعَ مَالًا وَّعَدَّدَه
3	वह (इंसान) समझता है कि उसका धन उसे हमेशा बनाए रखेगा।	يَحْسَبُ اَنَّ مَالَه اَخْلَدَه
4	कदापि नहीं! निश्चय ही वह हुतमह (नरक) में डाला जाएगा।	كَلَّا لَيُنْۢبَذَنَّ فِى الْحُطَمَةِ
5	और क्या तुम जानते हो कि हुतमह (नरक) क्या है?	وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا الْحُطَمَةُ
6	(वह) अल्लाह की आग (अज़ाब) है जो प्रज्वलित की गई है,	نَارُ اللّٰهِ الْمُوْقَدَةُ
7	जो (जलाकर) दिलों तक पहुँचती है।	الَّتِيْ تَطَّلِعُ عَلَى الْاَفْـِٕدَةِ
8	निश्चय ही, वह आग उन पर पूरी तरह बंद कर दी गई है,	اِنَّهَا عَلَيْهِمْ مُّؤْصَدَةٌ
9	(जबकि वे) लंबे खंभों से बंधे हुए हैं।	فِيْ عَمَدٍ مُّمَدَّدَةٍ

छंदों की संख़्या	اَلْفِيل	مكية
५	अल-फ़लि - 105	मक्की

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल-फ़लि (हाथी)

1	क्या तुमने (मुहम्मद) नहीं देखा कि तुम्हारे रब ने हाथी वालों के साथ क्या किया?	اَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِاَصْحٰبِ الْفِيْلِ
2	क्या उसने उनकी चाल को व्यर्थ नहीं कर दिया?	اَلَمْ يَجْعَلْ كَيْدَهُمْ فِيْ تَضْلِيْلٍ
3	और उसने उनके ख़िलाफ़ झुंड में उड़ने वाले पक्षियों को भेजा,	وَّاَرْسَلَ عَلَيْهِمْ طَيْرًا اَبَابِيْلَ
4	जो उन पर पकी हुई मिट्टी के पत्थरों से प्रहार करते थे,	تَرْمِيْهِمْ بِحِجَارَةٍ مِّنْ سِجِّيْلٍ
5	इस प्रकार उसने उन्हें खाए हुए पत्तों जैसा कर दिया।	فَجَعَلَهُمْ كَعَصْفٍ مَّأْكُوْلٍ

छंदों की संख़्या	قُرَيْش	مكية
४	क़ुरैश - 106	मक्की

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

क़ुरैश (क़ुरैश)

1	क़ुरैश की आदत के कारण,	لِاِيْلٰفِ قُرَيْشٍ
2	(अर्थात) उनकी सर्दी और गर्मी के मौसम में यात्रा करने की आदत।	اٖلٰفِهِمْ رِحْلَةَ الشِّتَآءِ وَالصَّيْفِ
3	इसलिए उन्हें इस घर (काबा) के रब की उपासना करनी चाहिए,	فَلْيَعْبُدُوْا رَبَّ هٰذَا الْبَيْتِ
4	जिसने उन्हें भूख मिटाने के लिए भोजन दिया और उन्हें भय से सुरक्षित किया।	الَّذِيْٓ اَطْعَمَهُمْ مِّنْ جُوْعٍ وَّاٰمَنَهُمْ مِّنْ خَوْفٍ

छंदों की संख़्या	اَلْمَاعُون	مكية
७	अल-माउन - 107	मक्की

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल-माउन (सहायता)

1	क्या तुम जानते हो वह व्यक्ति जो धर्म को झुठलाता है?	اَرَءَيْتَ الَّذِيْ يُكَذِّبُ بِالدِّيْنِ
2	वही वह व्यक्ति है जो अनाथ को डाँटता है,	فَذٰلِكَ الَّذِيْ يَدُعُّ الْيَتِيْمَ
3	और गरीबों को खाना खिलाने के लिए प्रोत्साहित नहीं करता।	وَلَا يَحُضُّ عَلٰى طَعَامِ الْمِسْكِيْنِ
4	तो उन लोगों के लिए हाय, जो नमाज़ पढ़ते हैं,	فَوَيْلٌ لِّلْمُصَلِّيْنَ
5	(अर्थात) वे लोग जो अपनी नमाज़ के प्रति लापरवाह हैं,	الَّذِيْنَ هُمْ عَنْ صَلَاتِهِمْ سَاهُوْنَ
6	जो दिखावा करते हैं,	الَّذِيْنَ هُمْ يُرَاءُوْنَ
7	और सहायता (देने से) इंकार करते हैं।	وَيَمْنَعُوْنَ الْمَاعُوْنَ

छंदों की संख़्या	اَلْكَوْثَر	مكية
3	अल-कौथर - 108	मक्की

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल-कौथर (पृ़चरुता)

1	नशि़चय ही, हमन`े तमुह़ (मह़ममद) बहत्ताायत वाली नमेत दी ह़ै	اِنَّآ اَعْطَيْنٰكَ الْكَوْثَرَ
2	इसलएि अपन`े रब क`े लएि नमाज़ पढ़ो और क़ुरबानी करो (अल्लाह की इबादत और नकिटता क`े लएि)।	فَصَلِّ لِرَبِّكَ وَانْحَرْ
3	नशि़चय ही, जो लोग तमुस`बरै करत`े ह,ैं वही कट`े हुए (अल्लाह की रहमत स)ै ह़ै	اِنَّ شَانِئَكَ هُوَ الْاَبْتَرُ

छंदों की संख़्या	اَلْكَافِرُون	مكية
६	अल-काफ़िरुन - 109	मक्की

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल-काफ़िरुन (अवशिष्ट)

1	कहो (मुहम्मद), 'ऐ काफ़िरो!	قُلْ يٰٓاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ
2	मैं उसकी पूजा नहीं करूँगा जिसकी तुम पूजा करते हो,	لَآ اَعْبُدُ مَا تَعْبُدُوْنَ
3	और तुम उसकी पूजा करने वाले नहीं हो जिसकी मैं पूजा करता हूँ,	وَلَآ اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَآ اَعْبُدُ
4	और मैं कभी उसकी पूजा करने वाला नहीं हूँ जिसकी तुम पूजा करते हो,	وَلَآ اَنَا عَابِدٌ مَّا عَبَدْتُّمْ
5	और तुम कभी उसकी पूजा करने वाले नहीं हो जिसकी मैं पूजा करता हूँ	وَلَآ اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَآ اَعْبُدُ
6	तुम्हारे लिए तुम्हारा धर्म, और मेरे लिए मेरा धर्म।'	لَكُمْ دِيْنُكُمْ وَلِيَ دِيْنِ

छंदों की संख़्या	اَلنَّصْر	مدنية
३	एक-नसर - 110	मदनी

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

एक-नसर (सहायता)

1	जब अल्लाह की सहायता और वजिय आएगी,	اِذَا جَاءَ نَصْرُ اللّٰهِ وَالْفَتْحُ
2	और तमु दखे ोग े कि लोग समहू ों म ंे अल्लाह क े धर्म म ंे प्रवशे कर रह े ह,ैं	وَرَاَيْتَ النَّاسَ يَدْخُلُوْنَ فِيْ دِيْنِ اللّٰهِ اَفْوَاجًا
3	तो अपन े रब की प्रशंसा क े साथ तस्बीह करो और उसस े क्षमा माँगो। नश्चिय ही, वह अत्यंत क्षमाशील ह ै	فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَاسْتَغْفِرْهُ اِنَّه كَانَ تَوَّابًا

छंदों की संख्या	اَلْمَسَد	مكية
५	अल-मसद्द - 111	मक्की

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल-मसद्द (रेशा)

1	अबू लहब के दोनों हाथ नष्ट हो जाएँ और वह स्वयं नष्ट हो गया!	تَبَّتْ يَدَآ اَبِيْ لَهَبٍ وَّتَبَّ
2	उसके धन और उसकी कमाई ने उसके कोई लाभ नहीं दिया।	مَآ اَغْنٰى عَنْهُ مَالُه وَمَا كَسَبَ
3	वह जल्दी ही भड़कती आग (नरक) में प्रवेश करेगा।	سَيَصْلٰى نَارًا ذَاتَ لَهَبٍ
4	और उसकी पत्नी भी, जो लकड़ी ढोने वाली (फितना फैलाने वाली) है।	وَّامْرَاَتُه حَمَّالَةَ الْحَطَبِ
5	उसके गले में खजूर की रस्सी का फंदा होगा।	فِيْ جِيْدِهَا حَبْلٌ مِّنْ مَّسَدٍ

छंदों की संख़्या	اَلْإِخْلَاص	مكية
४	अल इख़लास - 112	मक्की

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल इख़लास (शुद्धता)

1	कहो (मुहम्मद), 'वह अल्लाह है, जो एकमात्र है'	قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ
2	अल्लाह वह है जिससे सब कुछ माँगा जाता है	اَللّٰهُ الصَّمَدُ
3	(अल्लाह) न तो जनन करता है और न ही जनन किया गया है	لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُوْلَدْ
4	और उसके समान कोई भी चीज नहीं है	وَلَمْ يَكُنْ لَّه كُفُوًا اَحَدٌ

छंदों की संख़्या	اَلْفَلَق	مكية
५	अल-फलक - 113	मक्की

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल-फलक (प्रभात)

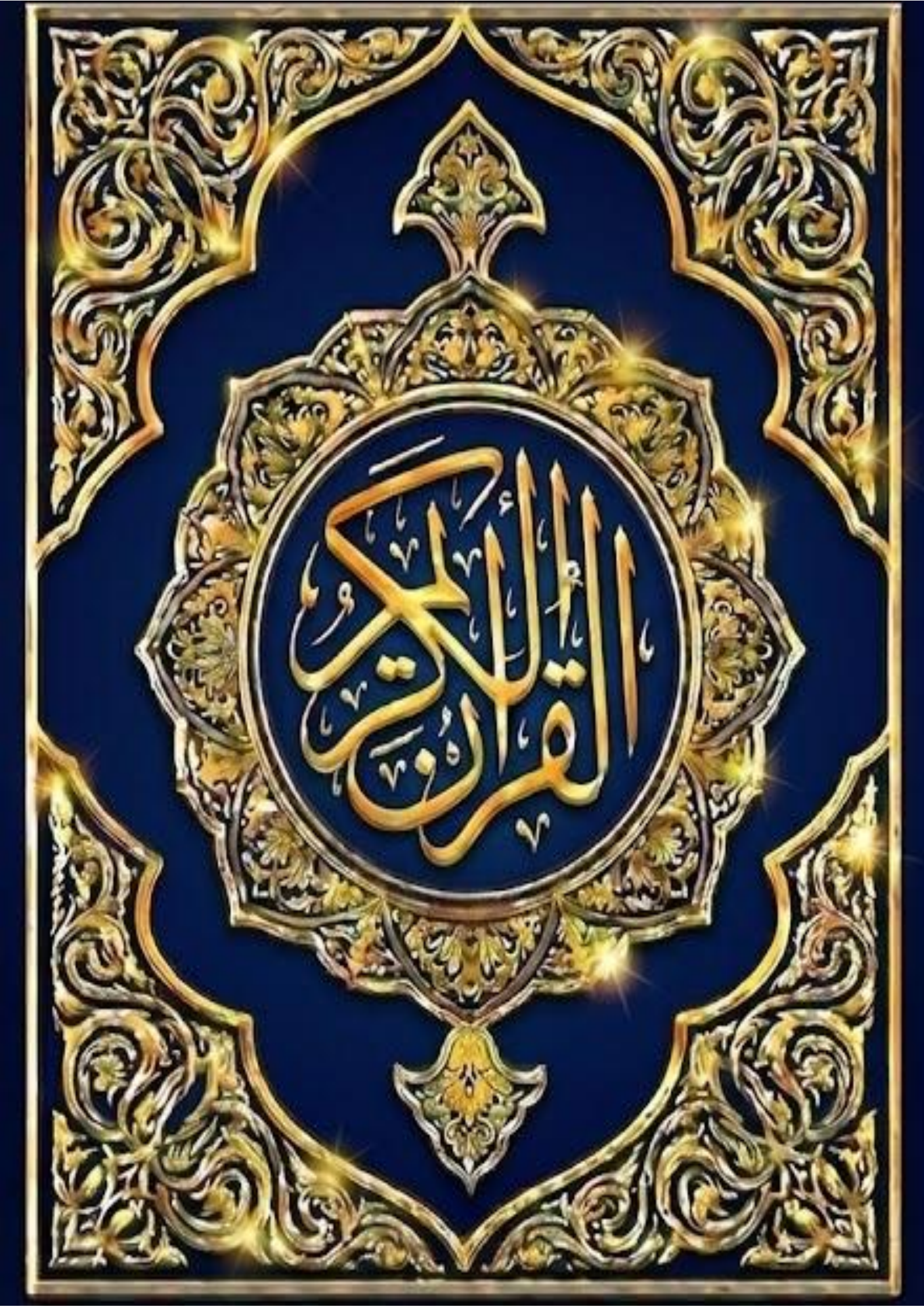
1	कहो, 'मैं उस रब की शरण माँगता हूँ जो सूरज (फजर) का स्वामी है,'	قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ
2	उस बुराई से जो उसने बनाई,	مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ
3	और रात की बुराई से जब वह गहन अंधकारमय हो,	وَمِنْ شَرِّ غَاسِقٍ اِذَا وَقَبَ
4	और उन जादूगरनियों की बुराई से जो गांठों (रस्सियों) पर फूँक मारती हैं,	وَمِنْ شَرِّ النَّفّٰثٰتِ فِى الْعُقَدِ
5	और उस हसद करने वाले की बुराई से जब वह हसद करता हो।'	وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ اِذَا حَسَدَ

छदों की संख़्या	اَلنَّاس	مكية
६	एक-नसै - 114	मक्की

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

एक-नसै (मानवजाती)

1	कहो, 'म मैानवों क रेब की शरण माँगता हूँ	قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ
2	मानवों का राजा,	مَلِكِ النَّاسِ
3	मानवों का उपास्य,	اِلٰهِ النَّاسِ
4	उस शैतान की बुराई स जो छपिता ह,	مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ الْخَنَّاسِ
5	जो मानवों क दिलों म बुराई फसुफसुाता ह,	الَّذِيْ يُوَسْوِسُ فِيْ صُدُوْرِ النَّاسِ
6	जनि्नों और मानवों (क समहू) स'	مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ


القرآن الكريم